

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

صَحِيحُ بَخَارِي

सहीह बुखारी

मय तर्जुमा व तफसीर

जिल्द दोम (दूसरी)

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस सैयदुल फ़क़हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी



प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअत

जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

© सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित

अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) के ख़लीफ़ा नज़ीर अहमद बिन मुहम्मद दाऊद राज़ ने सहीह बुखारी की उर्दू शरह के हिन्दी अनुवाद सम्बंधित समस्त अधिकार जमीयत अहले हदीस जोधपुर (प्रकाशक) के नाम कर दिये हैं। इस किताब में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है। कोई व्यक्ति/संस्था/समूह/प्रकाशन आदि इस पुस्तक की आंशिक अथवा पूरी सामग्री किसी भी रूप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्जे-खर्चे के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब	: सहीह बुखारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीर)
मुर्त्तिब (अरबी)	: अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह	: अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-घ़ानी	: सलीम ख़िलजी
तफ़्हीह (Proof Checking)	: जमशेद आलम सलफ़ी

कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग	: ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.)
एवं लेज़र टाइपसेटिंग	khaleejmedia78@yahoo.in #91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग	: मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन	: मुहम्मद निसार खिलजी, बिलाल खिलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव	: फैज़ल मोदी

ता'दाद पेज	(जिल्द-2)	: 640 पेज
प्रकाशन	(प्रथम संस्करण)	: शाबान 1432 हिजरी (जुलाई 2011 ईस्वी)
ता'दाद	(प्रथम संस्करण)	: 2400
क़ीमत	(जिल्द-2)	: ₹ 450/-
प्रिण्टिंग	: अनमोल प्रिण्टर्स, जोधपुर (0291-2742426)	
प्रकाशक	: जमीयत अहले हदीस जोधपुर (राज.)	

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़

तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1

(फ़ोन): 99296-77000, 92521-83249,

93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशनल

जामिया नगर, नई दिल्ली-25

(फ़ोन): 011-6986973

93125-08762

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून

सफ़ा नं.

मज़मून

सफ़ा नं.

नमाज़ में कपड़ों में गिरह लगाना	21
नमाज़ी बालों को न समेटे	21
नमाज़ में कपड़ा न समेटना चाहिए	22
सज्दे में तस्बीह और दुआ करना	22
दोनों सज्दों के दरम्यान ठहरना	23
नमाज़ी सज्दे में अपने बाजू न बिछाए	25
नमाज़ की ताक़ रकअत में थोड़ी देर बैठें	25
रकअत से उठते वक़्त ज़मीन का सहारा लेना	26
जब दो रकअत पढ़कर उठें तो तक़बीर कहें	26
→ तशहहुद में बैठने का मसनून तरीक़ा	27
जो तशहहुदे-अव्वल को वाजिब न जाने	29
पहले क़अदह में तशहहुद पढ़ना	30
आख़िरी क़अदह में तशहहुद पढ़ना	31
सलाम फेरने से पहले की दुआओं का बयान	32
तशहहुद के बाद की दुआओं का बयान	33
अगर नमाज़ में पेशानी या नाक पर मिट्टी लग जाए..	34
सलाम फेरने का तरीक़ा	34
इमाम के बाद मुक़तदी का सलाम फेरना	35
इमाम को सलाम करने की ज़रूरत नहीं	35
नमाज़ के बाद ज़िक़े-इलाही करना	38
इमाम सलाम फेरने के बाद लोगों की तरफ़ मुंह कर ले	39
सलाम के बाद इमाम उसी जगह नफ़्स पढ़ सकता है	40
अगर इमाम लोगों को नमाज़ पढ़ाकर	42
नमाज़ पढ़ाकर दाएँ या बाएँ दोनों तरफ़	42
लहसुन, प्याज़ वगैरह के मुता'ल्लिक़ अह्दादीश	43
बच्चों के लिए वुजू और गुस्ल	45
औरतों का रात और सुबह के वक़्त मसाजिद में आना	49

लोगों का नमाज़ के बाद इमाम के उठने का इंतज़ार करना	51
औरतों का मदों के पीछे नमाज़ पढ़ना	53
सुबह की नमाज़ के बाद औरतों का जल्दी जाना	53
औरत मस्जिद में जाने के लिए ख़ाविन्द से इजाज़त ले	54

किताबुल जुम्अ:

जुम्अ: की नमाज़ फ़र्ज़ है	61
जुम्अ: के दिन नहाने की फ़ज़ीलत	61
जुम्अ: के दिन खुशबू लगाना	63
जुम्अ: की नमाज़ के लिए बालों में तेल लगाना	65
जुम्अ: के दिन उम्दा कपड़े पहनना	66
जुम्अ: के दिन मिस्वाक करना	64
दूसरे की मिस्वाक इस्ते'माल करना	67
जुम्अ: के दिन नमाज़े-फ़ज़्र में कौनसी सूरत पढ़ें	69
गाँव और शहर दोनों जगह जुम्अ: दुरुस्त है	70
जिन के लिए नमाज़े-जुम्अ: माफ़ है	78
अगर बारिश हो रही हो तो नमाज़े-जुम्अ: वाजिब नहीं	81
जुम्अ: के लिए कितनी दूर वालों को आना चाहिए	81
जुम्अ: का वक़्त कब शुरू होगा	83
जुम्अ: जब सख़्त गर्मी में आ पड़े	85
जुम्अ: की नमाज़ के लिए चलने का बयान	85
नमाज़े-जुम्अ: के दिन जहाँ दो आदमी बैठें हों	87
किसी मुसलमान भाई को उसकी जगह से...	88
जुम्अ: के दिन अज़ान का बयान	89
इमाम मिम्बर पर बैठे-बैठे अज़ान का जवाब दे	89
जुम्अ: की अज़ान ख़त्म होने तक इमाम मिम्बर पर रहे	90
जुम्अ: की अज़ान खुत्बे के वक़्त देना	91
खुत्बा मिम्बर पर पढ़ना	92

फ़ेहरीस्ते-मज़ामीन

मज़मून

सफ़ा नं.

मज़मून

सफ़ा नं.

खुत्बा खड़े होकर पढ़ना	93
इमाम जब खुत्बा दे तो लोग इमाम की तरफ़ रुख करें	94
खुत्बे में हुम्दो-एना के बाद अम्मः बा'द कहना	94
जुम्अः के दिन दोनों खुत्बों के बीच बैठना	99
खुत्बा कान लगाकर सुनना	99
इमाम खुत्बा की हालत में किसी शख्स को	100
दौराने-खुत्बा दो रकअत पढ़ना	101
खुत्बे में दोनों हाथ उठाकर दुआ करना	103
जुम्अः के खुत्बे में बारिश की दुआ करना	103
जुम्अः के वक़्त चुप रहना	105
जुम्अः के दिन कुबूलियते-दुआ की साअत	105
अगर जुम्अः की नमाज़ में कुछ लोग चले जाएं	106
जुम्अः के पहले और बाद की सुन्नतों का बयान	107
सूरह जुम्अः में फ़र्माने-बारी का बयान	107
जुम्अः की नमाज़ के बाद सोना	108

किताब सलातुल-ख़ौफ़

ख़ौफ़ की नमाज़ पैदल और सवार होकर पढ़ना	112
नमाज़े-ख़ौफ़ में नमाज़ी एक-दूसरे की	113
जब फ़तह के इम्कानात शुरू हो	113
जो दुश्मन के पीछे लगा हो या दुश्मन के पीछे हो...	115
हमला करने से पहले सुबह की नमाज़ अन्धेरे में	116

किताबुल-ईदैन

दोनों ईदों का बयान और उनमें ज़ैबो-ज़ीनत करना	120
ईद के दिन बरछों और पालों से खेलना	121
ईद के दिन पहली सुन्नत क्या है?	122
ईदुल-फ़ितर में नमाज़ से पहले खाना	124
ईदुल-अज़हा के दिन खाना	124

ईदगाह में मिम्बर न ले जाना	126
नमाज़े-ईद खुत्बे से पहले अज़ान और इक़ामत के बग़ैर	127
ईद में नमाज़ के बाद खुत्बा पढ़ना	128
ईद के दिन और हरम के अन्दर हथियार बाँधना महरूह है	130
ईद की नमाज़ के लिए सवेरे जाना	131
अय्यामे-तशरीक़ में अमल की फ़ज़ीलत का बयान	132
तकबीर मीना के दिनों में...	133
बरछी का सुतरा बनाना	134
इमाम के आगे ईद के दिन नेज़ा लेकर चलना	135
औरतों का ईदगाह में जाना	135
बच्चों का ईद के खुत्बे में शिरकत करना	137
इमाम खुत्ब-ए-ईद में लोगों की तरफ़ मुंह करके खड़ा हो	137
ईदगाह में निशान लगाना	138
ईद के दिन औरतों को नसीहत करना	138
ईद के दिन अगर किसी औरत के पास दुपट्टा न हो	140
हाइज़ा औरतें नमाज़ से अलग रहें	141
ईदगाह में नह्स् और ज़िब्ह करना	142
ईद के खुत्बे में इमाम का बातें करना	142
ईदगाह में आने व जाने के रास्ते अलग-अलग हो	144
अगर किसी को जमाअत से ईद की नमाज़ न मिले	144
ईदगाह में नमाज़ से पहले नफ़ल पढ़ना	145

किताबुल वित्र

वित्र का बयान	147
वित्र के अवक़ात का बयान	150
एक रकअत वित्र पढ़ने का बयान	151
वित्र के लिए घरवालों को जगाना	152
वित्र की नमाज़ रात को तमाम नमाज़ों के बाद पढ़ी जाए	152
वित्र सवारी पर पढ़ना	152

فهریسته-مزامین

مزمون	سفا ن	مزمون	سفا ن
نمازے-ویتر سافر میں پढ़نا	153	پوروائے کے زیریے مہری مدد کی गई	176
کونوت رکوع سے پہلے اور رکوع کے बाद	153	جلجلالا اور کثامت کی نشانیاں	177
کیتاबول इस्तिस्काअ		आयते-शरीफा 'वतज्जलून रिज्जकुम' की तफसीर	178
पानी की नमाज़ के लिए जंगल में निकलना	157	अल्लाहत आला के सिवा किसी को नहीं मालूम	
कुरैश के काफ़िरोں पर बद-दुआ करना	157	कि बारिश कब होगी	179
कहूत के वक्त लोग इमाम से पानी की दुआ		कितாबुल कुसूफ	
का कह सकते हैं	4	सूरज ग्रहण की नमाज़ का बयान	182
इस्तिस्काअ में चादर उलटना	159	सूरज ग्रहण में इदका-ख़ैरात करना	185
अल्लाह कहूत भेज कर इन्तिक़ाम लेता है	161	ग्रहण में नमाज़ के लिए पुकारना	186
जामा-मस्जिद में बारिश की दुआ करना	162	ग्रहण की नमाज़ में इमाम का ख़ुत्बा पढ़ना	187
मिम्बर पर पानी के लिए दुआ करना	164	सूरज का कुसूफ और खुसूफ दोनों कह सकते हैं	188
पानी की दुआ करने में नमाज़े-जुम्अ: को काफ़ी समझना	165	अल्लाह अपने बन्दों को ग्रहण से डराता है	189
जब बारिश की क़ुरत से रास्ते बन्द हो जाएँ	165	सूरज ग्रहण में अज़ाबे-क़र से पनाह माँगना	190
जब नबी करीम (ﷺ) ने मस्जिद में पानी की दुआ की....	166	ग्रहण की नमाज़ में लम्बा सज़्दा करना	191
इमाम से दुआ-ए-इस्तिस्काअ की दरख़वास्त	166	सूरज ग्रहण की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना	192
कहूत में मुशिकीन दुआ की दरख़वास्त करें तो....	167	सूरज ग्रहण में औरतों का मर्दों के साथ नमाज़ पढ़ना	194
जब बारिश हद से ज़्यादा हो.....	169	सूरज ग्रहण में गुलाम आज़ाद करना	195
इस्तिस्काअ में खड़े होकर ख़ुत्बे में दुआ माँगना	169	कुसूफ की नमाज़ मस्जिद में पढ़नी चाहिए	195
नमाज़े-इस्तिस्काअ में बुलन्द आवाज़ से क़िरअत करना	170	सूरज ग्रहण किसी के पैदा होने या मरने से नहीं होता	197
इस्तिस्काअ में नबी (ﷺ) ने लोगों की तरफ.....	170	सूरज ग्रहण में अल्लाह को याद करना	198
नमाज़े-इस्तिस्काअ दो रकअत हैं	171	सूरज ग्रहण में दुआ करना	199
ईदगाह में बारिश की दुआ करना	172	ग्रहण के ख़ुत्बे में इमाम का अम्म: बअद कहना	199
इस्तिस्काअ में क़िब्ला की तरफ मुँह करना	172	चौद ग्रहण की नमाज़ पढ़ना	200
इमाम के साथ लोगों का भी हाथ उठाना	173	जब इमाम ग्रहण की नमाज़ में पहली रकअत लम्बी कर दे	201
इमाम का इस्तिस्काअ में दुआ के लिए हाथ उठाना	173	ग्रहण की नमाज़ में पहली रकअत का लम्बा करना	201
बारिश बरसते वक्त क्या करें	174	ग्रहण की नमाज़ में बुलन्द आवाज़ से क़िरअत करना	201
उस शाख़्स के बारे में जो बारिश में खड़ा रहा....	175		
जब हवा चलती	176		

فہرستہ-مجامین

مجموعہ

صفحہ نمبر

مجموعہ

صفحہ نمبر

کتابتہ سجدتہ کورآن

سجد-ع-تلاوت اور اس کے سجدت ہونے کا بیان	204
التلاوت لایم مایم تانجیل میں سجدت کرنا	205
سورہ سجدہ میں سجدت کرنا	206
سورہ نجم میں سجدت کا بیان	206
مسلمانوں کا مسجید کے ساتھ سجدت کرنا	207
سجدت کی آیات پڑھ کر سجدت کرنا	208
سورہ سجده میں سجدت کرنا	208
سجدت والا اسی وقت سجدت کرے.....	209
ایمام جب سجدت کی آیات پڑھے...	209
اللہ نے سجد-ع-تلاوت کو واجب نہیں کیا	210
جس نے نماز میں آیت-سجدت تلاوت کی.....	211
جو شخص سجود کی وجہ سے سجد-ع-تلاوت کی جگہ نہ پاے	211

کتابتہ تکریمہ رسالت

نماز میں کس کرنے کا بیان.....	212
مینا میں نماز کس کرنا	215
4 حج کے موقع پر نبی کریم (ﷺ) نے کتنا	
کھانا کھا تھا	216
نماز کتنی مسافرت میں کس کرنی چاہیے	217
جب آدمی سفر کی نیابت سے اپنی بستی سے....	218
مغرب کی نماز سفر میں بھی تین رکعت ہے	220
نفل نماز ساری پر، اگرچہ ساری کا رکھ کسی	
طرف ہو	221
ساری پر اشارے سے نماز پڑھنا	222
نماز فجر نماز کے لیے ساری سے اتر جائے	222
نفل نماز گھر پر بیٹھتے ادا کرنا	224
سفر میں جس نے سجدتوں کو نہیں پڑھا	225

سفر میں نماز-فجر کی سجدتوں کا پڑھنا	226
سفر میں مغرب اور عشا ایک ساتھ ملا کر پڑھنا	227
جب مغرب اور عشا ملا کر پڑھے تو...	230
مسافر جب سورج ڈلنے سے پہلے کھڑے کرے...	231
سفر اگر سورج ڈلنے کے بعد.....	231
نماز بیٹھ کر پڑھنے کا بیان	232
بیٹھ کر اشاروں سے نماز پڑھنا	233
جب بیٹھ کر نماز پڑھنے کی طاقت نہ ہو	234
اگر کسی شخص نے بیٹھ کر نماز شروع کی.....	234

کتابتہ تہجد

رات میں تہجد پڑھنا	234
رات کی نماز کی فضیلت کا بیان	237
رات کی نمازوں میں لمبے سجدے کرنا	238
مریض بیماری میں تہجد ترک کر سکتا ہے	240
رات کی نماز اور نوافل پڑھنے کی رغبت	240
آہنگر (ﷺ) اور رات کی نماز	243
جو شخص سہری کے وقت سو گیا	243
سہری کے بعد نماز-فجر پڑھنے تک نہ سونا	245
رات کے کھانا میں نماز کو لمبا کرنا	246
نماز-نہی رات والی کیسی تھی؟	246
آہنگر (ﷺ) کی نماز رات میں.....	247
جب آدمی رات میں نماز نہ پڑھے تو شہتان کا گودی	
پر گھر لگانا	249
جو شخص سوتا رہے اور صبح کی نماز نہ پڑھے	250
آخر رات میں دُعا اور نماز کا بیان	250
جو شخص رات میں شروع میں سو جائے اور صبح میں جاوے	252
نبی کریم (ﷺ) کا رجمان اور گھر رجمان میں....	253
دن میں اور رات میں باوجود رہنے کی فضیلت	258

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.	मज़मून	सफ़ा नं.
इबादत में बहुत सज़्ज़ी उठाना मकरूह है	258	नमाज़ में बात करना मना है	290
जो शख्स रात को इबादत किया करता था,		नमाज़ में मदों का सुब्हानल्लाह और	
फिर तर्क कर दिया	259	अलहम्दुलिल्लाह कहना	291
जिस शख्स की रात को आँख खुले फिर वो नमाज़ पढ़े	261	नमाज़ में नाम लेकर दुआ या बद्-दुआ करना	292
फ़ज़ की सुन्नतों को हमेशा पढ़ना	263	औरतों के लिए सिर्फ़ ताली बजाना	292
फ़ज़ की सुन्नत पढ़कर दाईं करवट पर लेट जाना	264	जो शख्स नमाज़ में उल्टे पाँव सरक जाए	293
फ़ज़ की सुन्नत पढ़कर बातें करना और न लेटना	265	अगर कोई नमाज़ पढ़ रहा हो और उसकी माँ उसको बुलाए	294
नफ़ल नमाज़ें दो-दो रकअत करके पढ़ना	265	नमाज़ में कंकरीयाँ हटाना	295
फ़ज़ की सुन्नतों के बाद बातें करना	269	नमाज़ में सज्दे के लिए कपड़ा बिछाना	295
फ़ज़ की सुन्नतों को लाज़िम कर लेना	269	नमाज़ में कौन-कौन से काम दुरुस्त हैं	296
फ़ज़ की सुन्नतों में किरअत कैसी करें?	270	अगर आदमी नमाज़ में हो और उसका जानवर भाग पड़े...	297
फ़ज़ों के बाद सुन्नतों का बयान	271	अगर कोई मर्द मसला न जानने की वजह से	299
जिस ने फ़ज़ के बाद सुन्नत नहीं पढ़ी	271	नमाज़ी से अगर कोई कहे कि आगे बढ़ जा...	300
सफ़र में चाश्त की नमाज़ पढ़ना	272	नमाज़ में सलाम का जवाब ना देना	300
चाश्त की नमाज़ पढ़ना और उसको ज़रूरी न जानना	273	नमाज़ में अगर कोई हादसा पेश आए तो	5
चाश्त की नमाज़ अपने शहर में पढ़ें	274	हाथ उठाकर दुआ करना	301
जुहर से पहले दो रकअत सुन्नत पढ़ना	275	नमाज़ में कमर पर हाथ रखना कैसा है?	303
मग़िब से पहले सुन्नत पढ़ना	276	आदमी नमाज़ में किसी बात का फ़िक्र करे ...	303
नफ़ल नमाज़ें जमाअत से पढ़ना	277	सज्द-ए-सह्व का बयान	306
घर में नफ़ल पढ़ना	280	अगर चार रकअत नमाज़ में पहला क़अदह न करे...	306
मक्का और मदीना में नमाज़ की फ़ज़ीलत	281	अगर किसी ने पाँच रकअत नमाज़ पढ़ ली	307
मस्जिदे-कुबा की फ़ज़ीलत	285	अगर कोई दो या तीन रकअत के बाद सलाम फेर ले	308
मस्जिदे-कुबा में हर हफ़्ते हाजिरी	286	सह्व के सज्दों के बाद फिर तशहहुद न पढ़ें....	308
मस्जिदे-कुबा में सवार और पैदल आना	286	सह्व के सज्दों में तकबीर कहना	309
आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र और मिम्बर के दरम्यानी हिस्से		अगर नमाज़ी को ये याद न रहे कि तीन रकअत पढ़ी है...	310
की फ़ज़ीलत	286	सज्द-ए-सह्व फ़र्ज़ और नफ़ल दोनों ही	
मस्जिदे बैतुल-मक्दिस का बयान	287	नमाज़ों में करना चाहिए	311
नमाज़ में हाथ से नमाज़ का कोई काम न करना	288	अगर नमाज़ी से कोई बात करे और वो सुनकर....	312
		नमाज़ में इशारा करना	313

फ़ैहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून

सफ़ा नं.

मज़मून

सफ़ा नं.

किताबुल जनाइज़

जनाज़ों के बाब में अहदीये-वारिदह	317
जनाज़े में शरीक होने का हुक्म	318
मय्यित को जब कफ़न में लपेटा जा चुका हो..	319
आदमी खुद मौत की ख़बर मय्यित के वारिषों को सुना सकता है	323
जनाज़ा तैयार हो तो लोगों को ख़बर कर देना	324
उस शख्स की फ़ज़ीलत जिसकी औलाद मर जाए...	325
किसी मर्द का किसी औरत से यह कहना कि सब्र कर	327
मय्यित को पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल देना	327
मय्यित को ताक़ मर्तबा गुस्ल देना मुस्तहब है	328
गुस्ले-मय्यित दाईं तरफ़ से शुरू किया जाए....	329
पहले मय्यित के अज़ा-ए-बुजू को धोना चाहिए	329
क्या औरत को मर्द के इज़ार का कफ़न दिया जा सकता है?	330
गुस्ल के आख़िर में काफूर का इस्तेमाल किया जाए	330
मय्यित औरत हो तो उसके सर के बाल खोलना	331
मय्यित पर कपड़ा क्योंकि लपेटा जाए	331
औरत के बाल तीन लट्टों में कर दिए जाएँ....	332
कफ़न के लिए सफ़ेद कपड़े बेहतर हैं	333
दो कपड़ों में कफ़न देना	334
मय्यित को खुशबू लगाना	334
महरम को क्योंकि कफ़न दिया जाए	335
क़मीज़ में कफ़न देना...	335
बग़ैर क़मीज़ के कफ़न देना	337
अमामे के बग़ैर कफ़न देना	337
माल में से पहले कफ़न की तैयारी करना	338
अगर मय्यित के पास एक ही कपड़ा निकले	339
जब कफ़न का कपड़ा छोटा हो	339

5

जिन्होंने अपना कफ़न खुद तैयार रखा हो...	340
औरतों का जनाज़े के साथ जाना	341
औरत का अपने ख़ाविन्द के सिवा और किसी पर	
सोग करना कैसा है?	341
क़ब्रों की ज़ियारत करना	343
मय्यित पर उसके घरवालों के रोने से अज़ाब होता है	344
मय्यित पर नोहा करना मकरूह है	350
रोने की मुमानअत का बयान	352
ग़िरेबान चाक करने वाले हम में से नहीं है	352
सअद बिन ख़ौला की वफ़ात	352
ग़मी के वक़्त सर मुण्डवाने की मुमानअत	354
रुख़सार पीटने वाले हम में से नहीं	355
वावैला करने की मुमानअत	355
जो शख्स मुसीबत के वक़्त ग़मगीन दिखाई दे	356
जो शख्स (सब्र करते हुए) अपना रंज ज़ाहिर न करे	357
सब्र वो है जो मुसीबत आते ही किया जाए	359
फ़रज़न्दे-रसूल (ﷺ) की वफ़ात और आप (ﷺ)	
का इज़हारे-ग़म	359
मरीज़ के पास रोना कैसा है?	360
किसी भी तरह के नोहा से मना करना चाहिए	361
जनाज़ा देखकर खड़े हो जाना	364
अगर कोई जनाज़ा देखकर खड़ा हो जाए	
तो उसे कब बैठना चाहिए?	364
जो शख्स जनाज़े के साथ हो....	365
यहूदी का जनाज़ा देखकर खड़े होना	366
मर्द ही जनाज़े को उठाए	367
जनाज़े को जल्दी ले चलना	368
नेक मय्यित का कहना मुझे जल्दी ले चलो	368

फेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
जनाजे की नमाज़ में दो या तीन सफ़ें करना		जब एक मुश्कि मरते वक़्त कलम-ए-तय्यबा पढ़ ले	400
जनाजे की नमाज़ में सफ़ें बाँधना	369	क़ब्र पर खज़ूर की डालियाँ लगाना	402
जनाजे की नमाज़ में बच्चे भी मर्दों के बराबर खड़े हों	371	क़ब्रों के पास आलिम का बैठना और	
जनाजे पर नमाज़ का मशरूअ होना	371	लोगों को नसीहत करना	403
जनाजे के साथ जाने की फ़ज़ीलत	373	जो शख्स खुदकशी करे, उसकी सज़ा	405
जो शख्स दफ़न होने तक ठहरा रहे	374	मुनाफ़िकों पर नमाज़े-जनाज़ा पढ़ना	406
बच्चों का भी नमाज़े जनाज़ा में शरीक होना	374	लोगों की ज़बान पर मय्यित की तारीफ़ हो तो बेहतर है	408
नमाज़े-जनाज़ा ईदगाह में और मस्जिद में जायज़ है	375	अज़ाबे-क़ब्र का बयान	409
क़ब्रों पर मस्जिद बनाना मकरूह है	377	क़ब्र के अज़ाब से पनाह माँगना	412
निफ़ास वाली औरत पर नमाज़े-जनाज़ा पढ़ना	380	ग़ीबत और पेशाब की आलूदगी से क़ब्र का अज़ाब होना	417
औरत और मर्द की नमाज़े-जनाज़ा में कहाँ खड़े हो	380	मुर्दे को दोनों वक़्त सुबह और शाम उसका	5
नमाज़े-जनाज़ा में चार तकबीरें कहना	381	ठिकाना दिखाया जाता है	418
नमाज़े-जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी है	381	मय्यित का चारपाई पर बात करना	419
मुर्दे को दफ़न करने के बाद क़ब्र पर नमाज़े-जनाज़ा पढ़ना	385	मुसलमानों की नाबालिग़ औलाद कहाँ रहेगी	419
मुर्दा लौटकर जाने वालों की जूतों की आवाज़ सुनता है	386	मुश्किन की नाबालिग़ औलाद कहाँ रहेगी	422
जो शख्स अर्जे-मुक़द्दस या ऐसी ही किसी बरकत वाली...	387	पीर के दिन मरने की फ़ज़ीलत	6
रात में दफ़न करना कैसा है?	388	नागहानी मौत का बयान	429
क़ब्र पर मस्जिद ता'मीर करना कैसा है?	388	रसूले-करीम (ﷺ) और सहाबा की क़ब्रों का बयान	430
औरत की क़ब्र में कौन उतरे	389	मुर्दों को बुरा कहने की मुमानअत	435
शहीद की नमाज़े-जनाज़ा	390	बुरे मुर्दे की बुराई बयान करना दुरुस्त है	436
दो या तीन आदमियों को एक क़ब्र में दफ़न करना	391		
शहीदों का गुस्ल नहीं	392	किताबुज़्ज़कात	
बग़ली क़ब्रों में कौन आगे रखा जाए	392	ज़कात के मसाइल का बयान	437
इज़ख़र और सूखी घास क़ब्रों में बिछाना	393	ज़कात देने पर बैअत करना	443
क्या मय्यित को किसी खास वजह से क़ब्र		ज़कात न अदा करने वाले का गुनाह	444
से निकाला जा सकता है?	394	जिस माल की ज़कात दे दी जाए वो ख़ज़ाना नहीं है	446
बग़ली या सन्दूकी क़ब्र बनाना	396	अल्लाह की राह में माल खर्च करने की फ़ज़ीलत	451
एक बच्चा इस्लाम लाया फिर उसका इन्तेक़ाल हो गया...	396	सदके में रियाकारी करना	451
		चोरी के माल से ख़ैरात कुबूल नहीं	452

फेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं	मजमून	सफा नं
हलाल कमाई में से ख़ैरात कुबूल होती है	452	ऊँटों की ज़कात का बयान	484
जब कोई सद्क़े लेने वाला न रहेगा	453	जिसके पास इतने ऊँट हो कि ज़कात में ...	485
जहन्नम की आग से बचो, ख़्वाह ख़जूर सद्क़ा करो	456	बकरियों की ज़कात का बयान	486
तन्दुरुस्ती में सद्क़ा देने की फ़ज़ीलत	457	ज़कात में ऐबदार जानवर न ले जाए	487
सबके सामने सद्क़ा करना जायज़ है	461	बकरी का बच्चा ज़कात में लेना	488
छुपकर ख़ैरात करना अफ़ज़ल है	461	ज़कात में माल छौंट कर न लिया जाए	489
ला-इल्मी में किसी मालदार को सद्क़ा दे दिया	462	पाँच ऊँटों से कम में ज़कात नहीं है	489
अगर बाप नावाकिफ़ी की वजह से अपने बेटे		गाय-बैल की ज़कात का बयान	491
को ख़ैरात दे दे	463	अपने रिश्तेदारों को ज़कात देना	492
ख़ैरात दाहिने हाथ से देना बेहतर है	464	घोड़ों की ज़कात ज़रूरी नहीं है	494
जिसने अपने ख़िदमतगार को सद्क़ा देने का	465	लौण्डी-गुलामों में ज़कात नहीं	495
सद्क़ा वही बेहतर है जिसके बाद भी आदमी....	466	यतीमों पर सद्क़ा करना बहुत बड़ा इ़वाब है	496
एहसान जताने की मज़म्मत	469	औरत का अपने शौहर या यतीम बच्चों को ज़कात देना	497
ख़ैरात में जल्दी करना बेहतर है	469	ज़कात के कुछ मस़ारिफ़ा का बयान	499
लोगों को सद्क़े की तरफ़ीब दिलाना	469	सवाल से बचने का बयान	502
जहाँ तक हो सके ख़ैरात करना	471	सूरह वज़ज़ारियात की एक आयत की तशरीह	505
सद्क़ा-ख़ैरात से गुनाह माफ़ होते हैं	471	अगर कोई शख्स अपनी दौलत.....	505
जिसने हालते-कुफ़्र व शिर्क में सद्क़ा दिया	472	सूरह बक्रह की एक आयत-शरीफ़ा का बयान	507
सद्क़े में ख़ादिम व नौकर का इ़वाब	473	ख़जूर के दरख़्तों पर अन्दाज़ा कर लेना दुरुस्त है	510
औरत का इ़वाब जब वो अपने शौहर की चीज़ में से....	474	पैदावार से दसवें हिस्से की तफ़सील	513
सूरह वल्लैल की एक आयत-मुबारका	475	पाँच वस्क़ से कम में ज़कात नहीं	514
सद्क़ा देने वाले और बख़ील की मि़धाल	476	ख़जूर के फल तोड़ने के वक़्त ज़कात ली जाए	514
मेहनत और सौदागिरी के माल में से ख़ैरात करना...	477	जो शख्स अपना मेवे या ख़जूर का दरख़्त बेच डाले	515
हर मुसलमान पर सद्क़ा करना ज़रूरी है	478	अपने सद्क़े की चीज़ को वापस ख़रीदना	516
ज़कात या सद्क़े में कितना माल देना दुरुस्त है	479	रसूले-करीम (ﷺ) और आपकी औलाद पर	
ज़कात में दीगर अस्बाब का लेना	480	सद्क़ा का ह़राम होना	517
ज़कात लेते वक़्त जो माल जुदा-जुदा हो	483	जब सद्क़ा मुहताज की मिल्क हो जाए	519
अगर दो आदमी साझी हो तो ज़कात	483	मालदारों से ज़कात वसूली जाए और....	520

फ़ेहरिस्ते-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
इमाम की तरफ़ से ज़कात देने वाले के हक़ में	521	जुलहुलैफ़ा में एहराम बाँधते वक़्त नमाज़ पढ़ना	548
जो माल समन्दर से निकाला जाए	522	नबी करीम (ﷺ) का शजरह पर से गुज़र कर चलना	549
रिकाज़ में पाँचवा हिस्सा वाजिब है	523	वादी-ए-अतीक़ मुबारक वादी है	549
तहसीलदारों को भी ज़कात से दिया जाएगा	526	अगर कपड़ों पर ख़लूक लगी हो तो उसको धोना	550
ज़कात के ऊँटों को दाग़ लगाना	527	एहराम बाँधते वक़्त खुशबू लगाना	552
सदक़-ए-फ़ित्र का फ़र्ज़ होना	527	बालों को जमा कर एहराम बाँधना	553
सदक़-ए-फ़ित्र का लौण्डी-गुलामों पर भी फ़र्ज़ होना	529	मस्जिदे जुलहुलैफ़ा के पास एहराम बाँधना	553
सदक़-ए-फ़ित्र में एक साअ ज़ौ देना	530	महरम को कौनसे कपड़े पहनना दुरुस्त नहीं	554
गेंहूँ वगैरह भी एक साअ है	530	हज्ज के लिए सवारी का बयान	555
ख़जूर भी एक साअ निकाली जाए	531	महरम के लिए चादर तहबन्द वगैरह	555
मुनक्का भी एक साअ दिया जाए	531	जुलहुलैफ़ा में सुबह तक ठहरना	557
सदक़-ए-फ़ित्र नमाज़े-ईद से पहले अदा करना	531	लब्बैक बुलन्द आवाज़ से कहना	557
सदक़-ए-फ़ित्र आज़ाद और गुलाम पर	532	लब्बैक से पहले तस्बीह, तहमीद व तकबीर	559
सदक़-ए-फ़ित्र बड़ों और छोटों पर	533	जब सवारी खड़ी हो उस वक़्त लब्बैक पुकारना	559
किताबुल हज्ज		किब्ला रख़ होकर लब्बैक पुकारना	560
हज्ज और उमरह के मसाइल का बयान	534	नाले में उतरते वक़्त लब्बैक कहना	561
सूरह हज्ज की एक आयत की तफ़सीर	538	हैज़ व निफ़ास वाली औरतों का एहराम	562
पालान पर सवार होकर हज्ज करना	540	एहराम में आहज़रत (ﷺ) जैसी निय्यत करना	563
हज्जे-मबरूर की फ़ज़ीलत	542	सूरह बक़र की एक आयत की तफ़सीर	565
हज्ज और उमरह की मीक़ात का बयान	543	हज्जे-तमत्तोअ, क़िरान और इफ़राद का बयान	568
सबसे बेहतर ज़ादे-राह तक़वा है	544	लब्बैक में हज्ज का नाम लेना	575
मक्का वाले हज्ज का एहराम कहाँ से बाँधे	545	नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में तमत्तोअ का जारी होना	575
मदीना वालों का मीक़ात	545	तमत्तोअ या कुर्बानी का हुक्म उन लोगों के लिए...	576
शाम वालों का मीक़ात	546	मक्का में दाख़िल होते वक़्त गुस्ल करना	577
नज्द वालों का मीक़ात	546	मक्का में रात और दिन में दाख़िल होना	578
जो लोग मीक़ात के उधर रहते हों....	547	मक्का में किधर से दाख़िल हों?	578
यमन वालों का मीक़ात	547	मक्का से जाते वक़्त किधर से जाएँ?	579
इराक़ वालों का मीक़ात	548	फ़ज़ाइले-मक्का और का'बा की ता'मीर	581

فہرستہ-مجاہدین

مجاہدین	صفحہ نم	مجاہدین	صفحہ نم
ہرم کی جہان کی فزلیات	590	اس شاکس کے بارے میں جیسے تہاف کی	615
مککا شریف کے घर-مکان میرا ہو سکتے ہیں	591	جیسے مکامہ-عبراہیم کے پیچھے تہاف	
نہی کریم (ﷺ) مککا میں کہاں اترے تھے؟	592	کی دو رکعتیں پڑھی	616
سورہ عبراہیم کی ایک آیت	594	سورہ اور اس کے بعد تہاف کرنا	616
سورہ مائدہ کی ایک آیت	594	مہر آدھی سوار ہو کر تہاف کر سکتا ہے	617
کا'با پر گیلان چڑھنا	596	ہاجیوں کو پانی پیلانا	618
کا'با کے گیلان کا بیان	597	جہان کا بیان	619
ہجرے-اسعد کا بیان	599	کیلان کرنے والا ایک تہاف کرتے یا دو کرتے...	621
کا'با کا دروازہ اندر سے بند کر لینا اور اس کے....	602	کعبہ کا تہاف چوڑ کرنے کے بعد کرنا	623
کا'با کے اندر نماز پڑھنا	602	سفا و مرہ کی سہی واجب ہے	625
جو کا'با میں داخل نہ ہو!	603	سفا اور مرہ کے درمیان کس طرح دوڑے	627
جیسے کا'با کے چاروں کونوں میں تکبیر کہی	603	ہجہ والی اور تہاف کے سوا تمام	
رمل کی ابتداء کسے ہوئی؟	604	ارکان بجا لائے	634
اب کوئی مککا میں آئے تو پہلے ہجرے-اسعد کو....	604	جو شاکس مککا میں رہتا ہو...	637
ہجہ اور ہمرہ میں رمل کرنے کا بیان	605	آٹویں جیلہجہ کو نمازے-زور کہاں پڑی جائے	639
ہجرے-اسعد کو چڑھی سے چھنا اور چومنا	606		
دونوں ارکان-یمانی کا استلام	607		
ہجرے-اسعد کو بوسہ دینا	607		
ہجرے-اسعد کے سامنے پہنچ کر اس کی طرف اشارہ کرنا	608		
ہجرے-اسعد کے سامنے آکر تکبیر کہنا	608		
جو شاکس مککا آئے تو اپنے घर	609		
اورتے بھی مہوں کے ساتھ تہاف کریں	610		
تہاف میں باتیں کرنا	612		
تہاف میں کسی کو بندھا دیکھو....	612		
بیتللاہ کا تہاف کوئی گنگا ہو کر نہ کرے....	612		
تہاف کرتے ہوئے درمیان میں ٹھر جائے	613		
تہاف کے ساتھ چکر کے بعد دو رکعت پڑھنا	613		
جو شاکس پہلے تہاف کے بعد.....	614		

फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
इस्लाम के इब्तिदाई दौर का आगाज़	21	नमाज़े-जुम्अ शहर और गाँव दोनों जगह दुरुस्त है	72
जल्सा-ए-इस्तिराहत सुन्नत है	24	कर्या की सहीह ता'रीफ़	73
इमाम शौकानी का एक इशदि-गिरामी	25	ता'दाद के मुता'ल्लिक अहले-ज़ाहिर का फ़त्वा	74
हनफ़िय्या का एक क़यासे-फ़ासिद बमुक़ाबिले-नस्र	26	मुता'ल्लिके जुम्अ: चन्द आप़ार....	75
हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) की एक वसिय्यत	27	वन्हे-तस्मिया बाबत जुम्अ:	79
क़अदह का मसनून तरीक़ा	29	गुस्ते-जुम्अ: मुस्तहब है	82
शिक़ की बुराई का बयान	32	जुम्अ: का वक़्त ज़वाल के बाद शुरू होता है	84
बहुत से मक़ासिद पर मुश्तमिल एक पाकीज़ा दुआ	34	इमाम बुख़ारी और रिवायते-हदीष	87
एक मुतजिमे-बुख़ारी का इशदि पर तज़ाद	39	आदाबे-जुम्अ: का बयान	88
मुआनिदीने-इस्लाम पर एक फटकार का बयान	42	अज़ाने-इष्मानी का बयान	91
मुस्तहब काम को वाजिब करना शैतान की तरफ़ से है	43	मिम्बरे-नबवी का बयान	93
बेजा राय-ए-क़यास से काम लेना....	46	एक मोअज़ज़ा-ए-नबवी का बयान	93
अम्बिया का ख़वाब भी वद्व के हुक्म में है	47	ख़ुत्व-ए-जुम्अ: सामेईन की मादरी ज़बान में	94
एक हदीष के तर्जुमे में तहरीफ़	49	मस्जिदे-नबवी में आखिरी ख़ुत्व-ए-नबवी	99
ये ईमान है या कुफ़ कि पैग़म्बर का फ़र्म्दा....	52	ख़ुसूसी वसिय्यते-नबवी अन्सार के मुता'ल्लिक....	100
इमाम बुख़ारी मुत्तहिदे-मुत्लक़	54	ख़ुत्बा सुनने के आदाब	100
मसाजिद में नमाज़ के लिए औरतों का आना	55	बहालते-ख़ुत्व-ए-जुम्अ: दो रकअत	
ह़ालात हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.)	55	तहिय्यतुल-मस्जिद	101
हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के ह़ालात	58	हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) का फैसला	102
फ़ज़ाइले-यौमुल जुम्अ:	60	दुआ-ए-इस्तिस्काअ का बयान	104
हरम शरीफ़ में कअब बिन लोय का वअज़	60	जुम्अ: में साअते-कुबूलियत	105
मुर्ग़ व अण्डे की कुर्बानी मजाज़न है	64	शाने-सहाबा के मुता'ल्लिक एक ए'तिराज़	106
नाकिदीने-बुख़ारी शरीफ़ के लिए एक तंबीह	65	क़नाअते-सहाबा का बयान	108
एक सहाबी ताजिरे-पारचह का बयान	66	नमाज़े-जुम्अ: का वक़्त ज़वाल के बाद ही है	109
दस उमूरे-फ़ितरत का बयान	68	ख़ौफ़ की नमाज़ का बयान	109
जुम्अ: के दिन नमाज़े-फ़ज़ में सूरह सज्दा और सूरह दह्र	70	नमाज़े-ख़ौफ़ मसनून नहीं	110

फेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

मजामन	सफा नं.	मजामन	सफा नं.
गज्वा-ए-जातुरिकाअ का बयान	112	इस्तिस्काअ की तशरीह	156
रेल-मोटर वगैरह में नमाज के मुता'ल्लिक	113	कुफ्रारे-कुरेश के लिए बद-दुआ	159
जंगे-तसतर का बयान	114	मुदों को वसीला बनाकर दुआ जायज नहीं	160
सहबा (रज़ि.) के एक इत्तिहाद का बयान	116	इस्तिस्काअ में हज़रत अब्बास (रज़ि.) की दुआ	161
सलातुल-खौफ की मज़ीद तफ़्सीलात	117	फ़ारुके-आज़म इन्तिक़ाल के वक़्त	164
ईद की वजहे-तस्मिया	118	मायूसकुन मौकों पर बद-दुआ....	168
तकबीराते-ईदैन का बयान	119	नमाज़े-इस्तिस्काअ और इमाम अबू हनीफ़ा	171
मुगल शहज़ादों का एक इशारा	121	दुआओं में हाथ उठाने का बयान	174
योमे-बआष का बयान	123	नज़्द से मुता'ल्लिक मज़ीद तशरीह	178
खुराफ़ाते-सूफिया की तदीद	123	ग़ैब की कुन्जियों का बयान	180
मुसन्ना की तहक्कीक	125	इत्तिहाई नामुनासिब बात	181
हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) और		ज़ल्म-ए-हैय्यत का ख़याल-इल्मे यक़ीनी.....	184
मरवान का वाकिआ	127	सिफ़ाते-इलाहिया को बग़ैर तावील के तस्लीम	
आजकल ख़ुत्बा-ए-जुम्अ: से पहले एक और इज़ाफ़ा	127	करना चाहिए	186
हज़ाज बिन यूसुफ़ के एक और ज़ुल्म का बयान	130	इमाम-मुज्ताहिद से भी ग़लती हो सकती है	188
जिलहिज्जा के दस दिनों में तकबीर कहना	133	ग्रहण वक़्ते-मुकररह पर होता है	190
लफ़ज़े-मिना की तहक्कीक	134	अज़ाबे-क़न्न की तशरीह	191
ईदैन की नमाज़ जंगल में	135	अहनाफ़ की एक क़ाबिले-तहसीन बात	192
औरतों का ईदगाह में जाना	136	क़न्न का अज़ाब व प़वाब बरहक़ है	196
ख़तीबतुन्निसाअ का ज़िक्र करना	140	मालूमाते-साइन्सी सब कुदरत की निशानियाँ हैं	198
तरगीबे-दुआ	141	एक क़यासी फ़त्वे की तस्दीद	200
कुर्बानी शआइरे-इस्लाम में से है	142	हफ़िया चाँद ग्रहण में नमाज़ के कायल नहीं	201
ईदैन में रास्ता बदलने की हिकमत	144	हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर चूक गए	202
ईदगाह में और कोई नमाज़े-नफ़्त	146	नमाज़े-कुसूफ़ में क़िराते ज़हरी सुन्नत है	203
वित्र एक मुस्तक़िल नमाज़ है	147	दुआ-ए-सज़्द-ए-तिलावत का बयान	204
हुज़ूर (ﷺ) ने खुद वित्र एक रक़अत पढ़ी	148	जुम्अ: के रोज़ नमाज़े-फ़ज़ की माख़सूस सूरतें	205
अहनाफ़ के दलाइल	151	सज़्द-ए-तिलावत वाजिब नहीं	204
सत्तर क़ारी जो शहीद हो गए थे	155	क़स्र की तशरीह	212
कुनूत की सहीह दुआएँ	155	हज़रत इब्माम ने क्यों इतमाम किया	212

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मजामीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
क़स्र की मुद्दत	217	नज़्मों-नज़्म में सीरते-नबवी का बयान जायज़ है	262
हज़्जाज बिन यूसुफ़ ज़ालिम की शिकायत		तदीदे महफ़िले-मोलादे मुरव्वजा	262
ख़लीफ़ा के सामने	224	लैलतुल-क़द्र सिर्फ़ माहे-रमज़ान में होती है	263
किसी बुजुर्ग के इस्तक़बाल के लिए चलकर जाना	225	सुन्नते-फ़ज़ के बाद लेटने के बारे में एक तब्स्सरा	264
सफ़र में सुन्नत न पढ़ना भी सुन्नते-नबवी है	226	हदीषे-इस्तिख़ारा मसनूना	247
अहले-हदीष का अमल सुन्नते-नबवी के मुताबिक़ है	226	नमाज़े-चाश्त के बारे में एक तत्तबीक़	273
सफ़र में सुन्नतों पर इमाम अहमद (रह.) का फ़त्वा	227	जमाअते-मसिब से पहले दो रकअत नपल	276
जमा-तक़दीम और जमा-ताख़ीर का बयान	228	फ़तहे-कुस्तुनुनिया 10 हिजरी में	279
नमाज़ बैठकर पढ़ना	233	शेख़ मुहियुद्दीन इब्ने अरबी की एक शिकायत	279
लफ़्ज़े-तहज़ुद की तशरीह	237	मस्जिदे-अक़्सा की वजहे-तस्मिया	281
हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के एक		हदीष ला तुशदुरिहाल पर एक तब्स्सरा	282
जवाब का बयान	238	अहले-बिदाअत को हौज़े-कौषर से दूर कर दिया जाएगा	287
हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की वालिदा की नसीहत	238	हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) के कुछ ह्वालात	290
सुन्नते-फ़ज़ के बाद लेटने का बयान	239	अस्सलामु अलैक अय्युहन्नीबिय्य का बयान	292
सुन्नते-फ़ज़ के बाद लेटने की दुआ	239	अत्तहिय्यातु लिल्लाहि की वज़ाहत	292
शाने-नुज़ूल सूरह वज्रुहा	240	औरतों का नमाज़ में ताली बजाना	293
तक़दीर का सद्दीह मतलब क्या है?	241	ज़ुरैज और उसकी माँ का वाकिआ	295
तरावीह का मसनून अदद ग्यारह रकअत हैं	243	शैतान का हज़रत उमर (रज़ि.) से डरना	297
मुरा को बुरा मत कहो वो नमाज़ के लिए जगाता है	244	ख़वारिज का बयान	298
फ़ज़ की नमाज़ अन्धेरे में शुरू करना	245	कोख़ पर हाथ रखने की मुमानअत में हिकमत	303
वित्र एक रकअत पढ़ना भी सहीह है	247	हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और कषरते-अह्वादीष	305
नबी करीम (ﷺ) की रात की इबादत	249	सज्द-ए-सह्व के बाद तशह्हुद नहीं है	306
गाफ़िल आदमी के कान में शैतान का पेशाब करना	250	खिलाफ़ते-सिद्दीकी हक़ बजानिब थी	314
अल्लाह का अर्श पर मुस्तवी होना बरहक़ है	251	नमाज़े-जनाज़ा 1 हिजरी में मशरूअ हुई	316
सात कुआनी आयात से इस्तवा-अलल अर्श		मरने वाले के लिए तल्कीन का मतलब	317
का पुबूत	251	सात हिदायाते-नबवी का बयान	319
ग्यारह रकअत तरावीह पर तफ़सीली तब्स्सरा	253	हुकूके-मुस्लिम बर मुस्लिम पाँच हैं	319
फ़ज़ीलते-बिलाल (रज़ि.)	258	ख़ुत्ब-ए-सिद्दीकी वफ़ाते-नबवी पर	321
रात के वक़्त बेदारी की दुआ	261	मुवाख़ाते-अन्सार व मुहाजिरीन	322

फ़ेहरिस्त तथरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.	मज़मून	सफ़ा नं.
एक बातिल ए'तिराज का जवाब	322	नमाज़े-जनाज़ा भी एक नमाज़ है	372
जनाज़ा ग़ायबाना जुम्हूर का मस्लक है	323	तकबीराते-जनाज़ा दर रफ़उल्यदेन का बयान	372
नाबालिग़ औलाद के मरने पर अज़े-अज़ीम	326	लफ़्जे-क़ीरात शरई इस्तिलाह में	374
मोमिन मरने से नापाक नहीं हो जाता	328	इस्लामी अदालत में किसी ग़ैर-मुस्लिम का मुकद्दमा	377
बिदाआते-मुरव्वजा की तर्दीद	333	क़न्नपरस्ती की मज़म्मत पर एक मक़ाला	378
मुहरिम मर जाए तो उसका एहराम बाक़ी रहेगा	334	नमाज़े-जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ना फ़र्ज़ है	382
अब्दुल्लाह बिन उबय मशहूर मुनाफ़िक़ का बयान	336	इस बारे में उलमा-ए-अहनाफ़ का फ़त्वा	383
हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) का एक		क़न्न के सवालात और उनके जवाबात	387
इब्रतअंगेज़ बयान	337	क़न्न पर मस्जिद ता'मीर करना मज़ तफ़्सीलात	389
मुस्अब बिन इमैर (रज़ि.) का बयान	338	एक इन्तिहाई लश्व व ग़लत तसव्वुर	390
औरतों के लिए जनाज़े के साथ जाना जायज़ नहीं	341	हुर्मते-मक्का मुकर्रमा	394
अल्लामा ऐनी (रह.) का एक इब्रतअंगेज़ बयान	344	छह माह बाद एक लाश क़न्न से निकाली गई	395
मौजूदा ज़माने में बिदाआते-ज़ियारत का बयान	344	हदीष बाबत इब्ने सय्याद	398
नोहा की वजह से मय्यत को अज़ाब होगा या नहीं	346	एक यहूदी बच्चे का कुबूले-इस्लाम	400
शाने-इष्मानी का बयान	348	अबू तालिब की वफ़ात का बयान	401
नोहा जो हराम है, उसकी ता'रीफ़	349	क़न्न पर खज़ूर की डालियाँ लगाना	403
इस्लामी खानदानी-निज़ाम के सुनहरे उसूल	353	अज़ाबे-क़न्न बरहक़ है	403
हुज़ूर (ﷺ) की एक पेशगोई जो हर्फ़-ब-हर्फ़ पूरी हुई	354	क़न्निस्तान में भी ग़ाफ़लत शिआरी	404
ज़मान-ए-नबवी के कुछ शुद्दाए-किराम	357	क़न्निस्तान में एक ख़ुत्ब-ए-नबवी	404
अबू तलहा (रज़ि.) और उनकी बीवी उम्मे सुलेम (रज़ि.)		ख़ुदकशी संगीन जुर्म है	405
और उनके बच्चे का इत्तिक़ाल करना	358	मुनाफ़िक़ों की नमाज़े-जनाज़ा	407
मुसीबत के वक़्त सन्न की फ़ज़ीलत	359	मय्यत की नेकियों का ज़िक़े-ख़ैर करना	409
फ़रज़न्दे-रसूल (ﷺ) का इत्तिक़ाल	360	अज़ाबे-क़न्न का तफ़्सीली बयान	413
हज़रत सअद बिन इबादा अन्सारी (रज़ि.) का इन्तक़ाल	361	चुग़ली और ग़ीबत और पेशाब में बेएहतियाती	417
हज़रत ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) के कुछ हालात	362	क़न्नों में मुर्दे को उसका आखिरी ठिकाना दिखाया जाना	418
हज़रत जा'फ़र तैयार (रज़ि.) के कुछ हालात	363	मुसलमान बच्चे जन्मती हैं	420
बैअते बमअना हलफ़नामा	364	मुस्लिम की नाबालिग़ औलाद के बारे में	422
जनाज़े में शिरकत करने वाले कब बैठें	366	इमाम बुखारी (रह.) तवक्कुफ़ को तरजीह देते हैं	423
यहूदियों के लिए भी किसी क़दर रहमत व शफ़क़त थी	366	एक इश्क़ाल का जवाब	423
नमाज़े-जनाज़ा ग़ायबाना की मज़ीद तफ़्सीलात	370		

फेहरिस्त तशरीहे-मजाजीन

मजमून	सफा नं.	मजमून	सफा नं.
एक इबरत अंगेज़ ख्वाबे-रसूल (ﷺ)	424	एक इशदि-नबवी	467
हज़रत सिद्दीके-अकबर (रज़ि.) का आखिरी वक़्त	428	हलाल रोज़ी के लिए तर्ग़ीब	468
मरने के बाद सालेहीन के पड़ोस की तमन्ना करना	428	तअज़ीले-ज़कात के मुता'ल्लिक	469
नागहानी मौत से कोई ज़रर नहीं	430	औरतों को एक ख़ास हिदायते-नबवी	473
वफ़ाते-नबवी (ﷺ) का बयान	430	एक हदीष मुख्तलिफ़ तरीकों से	474
ख़िलाफ़ते-वलीद बिन अब्दुल मलिक का एक वाकिआ	431	एक बख़ील और मुतसद्दिक की मिषाल	477
अपनी क़ब्र के बारे में हज़रत आइशा रज़ि. की वसियत	432	चाँदी वग़ैरह के निस्साब के मुता'ल्लिक	
हज़रत फ़ारूके-आज़म के आखिरी लम्हात	434	एक अहम बयान	480
कुछ हालात फ़ारूके-आज़म (रज़ि.)	434	ज़ेवर की ज़कात के बारे में	481
आज की नामो-निहाद जम्हूरियत के लिए एक सबक	435	वाकिआ हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) की एक वज़ाहत	482
शाने-नुज़ूल सूरह तब्बत यदा अबी लहब....	436	मुसलमानाने-हिन्द के लिए एक सबक-आमोज़ हदीष	485
तफ़सीलात तक्सीमे-ज़कात	437	ज़कात के मुता'ल्लिक एक तफ़सीली मक्तूबे-गिरामी	486
अहले-हदीषों पर एक इल्ज़ाम और उसका जवाब	441	उन्हीं के फ़कीरों में ज़कात तक्सीम करने का मतलब	489
मुर्तदीन पर जिहादे-सिद्दीके-अकबर (रज़ि.)	443	शर्त वुजूबे-अशर	490
तफ़्ज़े कन्ज़ की तफ़सीर	444	अराज़ी हिन्द के बारे में एक तफ़सील	491
औक़िया, साअ, मुद वग़ैरह की तफ़सीर	447	गाय-बैल की ज़कात से मुता'ल्लिक	492
हालाते-हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.)	448	मुहताज रिस्तेदारों को ज़कात देना	492
फ़वाइद अज़ हदीषे अबूज़र और मुआविया (रज़ि.)	449	तिजारती अमवाल में ज़कात	495
अल्लाह के दोनों हाथ दाहिने हैं	453	क़ानेअ और हरीस की मिषाल	497
कुर्बे-क़यामत एक इन्क़लाब का बयान	454	मुहताज औलाद पर ज़कात	498
अमने-आम और हुकूमते-सरूदिया अरबिया	455	एक वज़ाहत अज़ इमामुल हिन्द मौलाना आज़ाद मरहूम	500
एक औरत का अपने बच्चों के लिए ज़ुब-ए-मुहब्बत	458	फ़ी सबीलिल्लाह की तफ़सीर अज़	
सदक़ा-ख़ैरात तन्दुरुस्ती में बेहतर	459	नवाब सिद्दीक हसन खान (रह.)	500
एक उम्मुल-मोमिनीन से मुता'ल्लिक बशारते-नबवी	560	अल्लामा शौकानी की वज़ाहत	501
बनी इस्राईल के एक सख़ी का वाकिआ	462	तीन अस्हाब का एक वाकिआ	501
उलमा व फ़ुक़हा की खिदमत में एक गुज़ारिश	464	हालाते-हज़रत जुबैर बिन अवा़म (रज़ि.)	503
इस्त्वा-अलल अर्श और जहते-फ़ौक़ का बयान	465	हालाते-हज़रत हक़ीम बिन हिज़ाम (रज़ि.)	504
कुछ अहम उमूर मुता'ल्लिक सदक़ा व ख़ैरात	466	सवाल की तीन किस्मों की तफ़सील	506
हज़रत क़अब बिन मालिक (रज़ि.) के लिये		मुगीरा बिन शुअबा (रज़ि.) की एक तहरीर	
		हज़रत मुआविया (रज़ि.) के नाम	508



मजमून

सफा नं.

मजमून

सफा नं.

एक कयासी फत्वा	510	एहराम में क्या हिकमत है?	566
अमन का एक परवाना बहुक्मे-सरकारे दो आलम (ﷺ) 511		लब्बैक पुकारने में क्या हिकमत है?	566
जंगे-तबूक का कुछ बयान	512	हज़रत अली (रज़ि.) का एक इशारे-गिरामी	570
तरकारियों की ज़कात के बारे में	514	एक ईमान अफ़रोज़ तक्वीर	571
हर हाल में मालिक को अपना माल बेचना दुरुस्त है	515	अदना सुन्नत की पैरवी भी बेहतर है	573
अमवाले-ज़कात के लिए इमाम की तौलियत ज़रूरी है	520	हज़रत इब्माम रज़ि. व हज़रत अली रज़ि. का एक मसला	574
बनी इस्राईल के दो शख्सों का वाकिआ	523	हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) का	
रिकाज़ और मअदन की तथरीह	524	बैतुल्लाह को ता'मीर करना	584
बअजुन्नास की तथरीह व तदीद	524	अक़्शर अंबिया ने बैतुल्लाह की ज़ियारत की है	586
रिकाज़ के मुता'ल्लिक तफ़्सीलात पर एक इशारा	525	ता'मीरे-इब्राहीमी का बयान	586
साअे हिजाजी की तफ़्सील	529	ता'मीरे-कु़रैश वग़ैरह	588
गन्दुम का फ़ित्रा निस्फ़ साअ	530	हुक्मते-सऊदिया का ज़िक्रे-ख़ैर	591
सदक-ए-फ़ित्र की तफ़्सीलात	533	एक मोअज़ज़ा-ए-नबवी का बयान	593
किताबुल हज्ज और उमरह का बयान	534	इब्राहीमी दुआ का बयान	594
फ़ज़ाइले-हज्ज के बारे में तफ़्सीली बयान	534	याजूज-माजूज पर एक तफ़्सील	596
फ़र्ज़ियते-हज्ज की शराइत का बयान	536	ग़िलाफ़े-का'बा की तफ़्सीली कैफ़ियत	597
हज्ज के महीनों और अय्याम का बयान	537	हज्जे-अस्वद पर कुछ तफ़्सीलात	598
हज्जे-बदल का तफ़्सीली बयान	537	अहदे-जाहिलियत के एक ग़लत तसव्वुर की इस्लाह	601
फ़ज़ीलते-का'बा तौरात शरीफ़ में	539	चश्म-ए-ज़मज़म के तारीख़ी हालात	619
सफ़रे-हज्ज सादगी के साथ होना चाहिए	540	तवाफ़ की दुआएँ	629
तन्ईम से उमरह करने के मुता'ल्लिक	541	मसला मुता'ल्लिके-तवाफ़	629
हज्जे मबरूर की तफ़्सीलात	542	तवाफ़ की किस्मों का बयान	631
हदीप्ते मुरसल की ता'रीफ़	544	कोहे-सफ़ा पर चढ़ाई	632
वादी-ए-अतीक का बयान	550	ज़रूरी मसाइल	634
मुकल्लिदीने-जामिदीन के लिए काबिले-ग़ौर	552	सई के बाद	634
एहराम के फ़वाइद व मनाफ़ेअ	555	आबे-ज़मज़म पीने के आदाब	634
अल्फ़ाज़े-लब्बैक की तफ़्सील	558	तर्जुमा में खुली हुई तहरीफ़	637
हज़रत-भूसा (अलैहिस्सलाम) से मुलाक़ात	561	असल मसला	637
हज़रत उमर (रज़ि.) की एक राय पर तब्सरा	565	हाकिमे-इस्लाम की इताअत वाजिब है	639

ता'प्पुरात

अल्लाह रब्बुल आलमीन का बेइन्तहा शुक्र व एहसान है कि उसने जमीअत अहले हदीष जोधपुर-राजस्थान को इस बात की तौफीक बख्शी कि जमाअती कारकर्दगियों के तहत जिस बात की ज़रूरत एक लम्बे अर्से से महसूस की जा रही थी, या'नी बुखारी शरीफ के हिन्दी तर्जुमे व तशरीह की, वो अज़ीमुश्शान अमल और कारे-नुमायाँ अल्लाह रब्बुल आलमीन की इस्तिआनत (मदद) और अहबाबे-जमाअत की दुआओं से अंजाम पिज़ीर हुआ है।

कुतुबे अह्दादीष की सरदार, अस् सहीहल कुतुब बुखारी शरीफ के हिन्दी तर्जुमे की अवाम की सहूलत को मदेनज़र रखते हुए सादा, सलीस व आम-फ़हम ज़बान में शरीअत की ता'लीमात को आम करने के ज़िम्न में यह एक मुस्तहसन क़दम है क्योंकि कुआन व हदीष ये दो ही चीज़ें इन्सान की फ़लाह व बहबूद, दुनियावी और उख़रवी नजात की ज़ामिन है। जैसा कि अल्लाह रब्बुल आलमीन का फ़र्मान है, 'जिसने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की उसने बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।' (सूरह अल अहज़ाब) और जैसा कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) का इश्राद है, 'अद दीनु युस्क्रन' या'नी दीन आसान है। इसकी आसानी की दलील यह है कि अल्लाह रब्बुल आलमीन ने वक़्तन-फ़वक़्तन हर ज़माने में, हर हालात में अपने बन्दों के ज़रिये से ही बन्दों की रुशदो-हिदायत व दीन को समझाने के लिये सहूलियात मुहैया फ़र्माता रहता है। चुनाँचे आज जो ये बुखारी शरीफ का जो हिन्दी नुस्खा आपके हाथों में है, वो अरबाबे-जमाअत की एक ह्वीर कोशिश थी जो अल्लाह की मदद ही से मुकम्मल हो सकी है। अल्लाह रब्बुल आलमीन का शुक्र व एहसान है कि उसने हमारी सहूलत के लिये दीन को आसान बनाया। जमाअत का एक बहुत बड़ा तबक्का जो अरबी-उर्दू से वाकिफ़ नहीं है, वह भी अब इल्म व हिदायत के इस नूरानी सरचश्मे से फ़ैज़याब हो सकता है।

अख़ीर में अल्लाह रब्बुल आलमीन से ये दुआ व दरख्वास्त है कि ऐ बारे-इलाहा! इस मुकद्दस किताब के हिन्दी तर्जुमे में जिन हज़रात की जिस किस्म का भी तआवुन रहा है; ऐ अल्लाह! तू उसे कुबूल फ़र्मा। मअन तमाम मुस्लिमों को इस पर अमल-दरामद करने की तौफीक अता फ़र्मा। ऐ अल्लाह! तमाम अहबाबे-जमाअत को इस कारे-ख़ैर की बरकतों से फ़ैज़याब फ़र्मा और इसे दुनिया व आख़िरत की भलाई का ज़रिया बना। अल्लाह रब्बुल आलमीन से यह भी दुआ है कि बुखारी शरीफ का ये हिन्दी नुस्खा तमाम मुसलमानों के नजात का ज़रिया बने और इसके ज़रिये हमारे मुआशरे की इस्लाह हो। आमीन! तक्रब्बल या रब्बल आलमीन!!

ख़ैर-अन्देश व तालिबे-दुआ,

अब्दुर्हीम ख़ताई

वल्द मौलाना अब्दुल क़य्यूम ख़ताई रहमानी (गुफ़िरइल मन्त्रान)

अर्ज-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुज़ारिशत)

कारेईने किराम! अल्लाह रब्बुल-इज्जत के फ़ज़ल व एहसानो—क़रम से सहीह बुखारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की तीसरी जिल्द आपके हाथों में सौंपी जा रही है। पहली व दूसरी जिल्द से यक़ीनन आपने फ़ैज़ हासिल किया होगा। इस तीसरी जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी हासिल करेंगे, जिनकी हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है। पहली जिल्द के पेज नं. 23-24 पर इसी कॉलम में काफ़ी-कुछ वज़ाहत की जा चुकी है चन्द अहम व ज़रूरी बातें इसलिये दोहराई जा रही हैं ताकि शुरूआती दो जिल्द पढ़ चुके कारेईन व मुअतरिज़ीन के सवालात के तसल्लीबख़श जवाब मिल सकें।

01. बेहद सावधानी के साथ इसकी तस्हीह व नज़रे-घ़ानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अरबी के माहिर आलिम मौलाना जमशेद आलम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अरबी हर्फ़ (ٹ) के लिये हिन्दी अक्षर 'ष' इस्तेमाल पर एतिराज़ जताया है, सहीह बुखारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर हदीष 'इन्नमल अअमालु बिन्नियात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अमल का दारोमदार निय्यत पर है।' हमारी निय्यत यह है कि अरबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुज़ारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालआ करें।

02. इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास हफ़ों को अलग तरह से लिखा गया है मिश्राल के तौर पर:—(ا) के लिये अ, (ع) के लिये अ; (ٹ) के लिये ष, (س) के लिये स, (ش) के लिये श, (ص) के लिये स; (ح) के लिये ह, (ه) के लिये ह, (خ) के लिये ख, (غ) के लिये ग, (ف) के लिये फ़, (ك) के लिये क, (ق) के लिये क़ लिखा गया है। (ج) के लिये ज का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हफ़ों के लिये सहीह विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; असीर, अलिफ़ (ا)—सीन (س) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है कैदी। अषीर, अलिफ़ (ا) ये (ٹ) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है ख़ालिफ़। असीर अैन (ع) सीन (س) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है मुश्किल। असीर अैन (ع) साद (ص) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है अंगूर की चाशनी (शरीर)। अषीर अैन (ع) ये (ٹ) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है धूल। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में सहीह तलफ़्फ़ूज़ (उच्चारण) के लिये हद-दर्जा कोशिश की गई है।

03. मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मेटर की एडिटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस्हीह (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाइनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी है, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। ऐ अल्लाह! मेरे वालिद—वालदा को अपने अर्श के साये तले, अपनी रहमत की पनाह नसीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने-इस्लाम का फ़हम अता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़ताओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअमतेँ अता फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है। आमीन! तक्ब्बल या रब्बल आलमीन!!

व सल्लल्लाहु तआला अला नबिय्यिना व अला आलिही व अस्सलामु अलैहि व अल्वाइहि व बारिक व सल्लिम.

सलीम खिलजी.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

चौथा पारा

बाब 132 : कपड़ों में गिरह लगाना और बाँध लेना कैसा है? और जो शख्स शर्मगाह के खुल जाने के खौफ से कपड़े को जिस्म से लपेट ले तो क्या हुक्म है?

814. हमसे मुहम्मद बिन क़ज़ीर ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार के वास्ते से ख़बर दी, उन्होंने सहल बिन सअद से, उन्होंने कहा कि कुछ लोग ओहज़रत (ﷺ) के साथ तहबंद छोटे होने की वजह से उन्हें गर्दनो से बाँध कर नमाज़ पढ़ते थे और औरतों से कह दिया गया था कि जब तक मर्द अच्छी तरह बैठ न जाएं तब तक तुम अपने सरो को (सज्दे से) न उठाओ। (राजेअ : 362)

۱۳۶- بَابُ عَقْدِ الْيَابِ وَشَدِّ
هُوَ مَنْ ضَمَّ إِلَيْهِ ثَوْبَهُ إِذَا خَافَ أَنْ
تَنْكَشِفَ عَوْرَتُهُ

۸۱۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ:
أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ
سَعْدٍ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يُصَلُّونَ مَعَ النَّبِيِّ
ﷺ وَهُمْ عَالِدُوا أَرْزِهِمْ مِنَ الصَّغَرِ عَلَى
رِقَابِهِمْ، فَقِيلَ لِلنِّسَاءِ لَا تَرَفَعْنَ رُؤُوسَكُمْ
حَتَّى يَسْتَوِيَ الرُّجَالُ جُلُوسًا.

[راجع: ۳۶۲]

तस्रीह: ये इस्लाम का इब्तिदाई (शुरूआती) दौर था। सहाबा किराम (रज़ि.) हर तरह से तंगियों का शिकार थे। कुछ लोगों के पास तन ढाँकने के लिये सिर्फ़ एक ही तहबन्द होता था। कई बार वो भी नाकाफ़ी होता इसलिये औरतों को जो जमाअत में शिर्कत करती थीं, उन्हें ये हुक्म दिया गया। इससे गर्ज ये थी कि औरतों की निगाह मर्दों के सतर पर न पड़े। ऐसी तंग हालत में भी औरतों को नमाज़ बाजमाअत में पर्दे के साथ शिर्कत करना ज़मान-ए-नबवी (ﷺ) में मामूली मसला था यही मसला आज भी है। अल्लाह ने क समझ दे और अमले ख़ैर की मुसलमानों को तौफ़ीक़ दे, आमीन!

बाब 137 : इस बारे में कि नमाज़ी (सज्दे में)

बालों को न समेटे

815. हमसे अबुन नोअमान बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, अम्प बिन दीनार से बयान किया, उन्होंने ताऊस से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से, आप ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) को हुक्म था कि सात

۱۳۷- بَابُ لَا يَكْفُ شَعْرًا

۸۱۵- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ
- وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ - عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ
عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((أَمَرَ

हड्डियों पर सज्दा करें और बाल और कपड़े न समेटें।

(राजेअ : 809)

النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَسْجُدَ عَلَى سَجْدَةٍ أَكْبَرٍ،
وَلَا يَكْفُ شَعْرَةً وَلَا ثَوْبَةً.

[راجع: ٨٠٩]

तशरीह : शारिहीन लिखते हैं कि व मुनासबतु हाज़िहित्तुर्जुमति लिअहकामिस्सुजूदि मिन जिहितिन अन्नश्शअर यस्जुदु मअर्रासि इजा लम यकुफ़ औ यलिफ़ या'नी बाब और हदीष में मुताबकत ये है कि जब बालों को लपेटा न जाए तो वो भी सर के साथ सज्दा करते हैं जैसे दूसरी रिवायत में है सुनन अबू दाऊद में मफूअन रिवायत है कि बालों के जोड़े पर शैतान बैठ जाता है। सात अज़ा जिनका सज्दे में ज़मीन पर लगना फ़र्ज़ है। उनकी तफ़्सीली बयान तीसरे पारे में गुज़र चुका है।

बाब 138 : इस बयान में कि नमाज़ में कपड़ा न समेटना चाहिये

١٣٨ - بَابُ لَا يَكْفُ ثَوْبَةً فِي

الصَّلَاةِ

816. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अवाना बज़ाह ने, अम्म बिन दीनार से बयान किया, उन्होंने ताऊस से, उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे सात हड्डियों पर इस तरह सज्दा करने का हुक्म हुआ है कि न बाल समेटूं और न कपड़े। (राजेअ : 809)

٨١٦ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا
أَبُو عَوَانَةَ عَنْ عَمْرِو عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ
عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ
قَالَ: ((أَمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةٍ، لَا
أَكْفُ شَعْرًا وَلَا ثَوْبًا)). [راجع: ٨٠٩]

तशरीह : मतलब ये है कि नमाज़ पूरे इन्हिमाक (यकसू होकर) और इस्तिराक़ (तल्लीनता) के साथ पढ़ी जाए। सर के बाल अगर इतने बड़े हैं कि सज्दे के वक़्त ज़मीन पर पड़ जाएँ या नमाज़ पढ़ते वक़्त कपड़े गर्द आलूद हो जाएँ तो कपड़े और बालों को गर्दों-गुबार से बचाने के लिये समेटना न चाहिये कि ये नमाज़ में खुशूअ और इस्तिराक़ के खिलाफ़ है। और नमाज़ की असल रूह खुशूअ-खुजूअ है जैसा कि कुआन शरीफ़ में है, 'अल्लज़ीन हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन' या'नी मोमिन वो हैं जो खुशूअ के साथ दिल लगाकर नमाज़ पढ़ते हैं। दूसरी आयत 'हाफ़िज़ु अल-इस्सलवाति व-इस्सलातिल उस्ता वकूमू लिह्लाहि क़ानितीन' का भी यही तफ़ाज़ा है या'नी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ास तौर से दरम्यान वाली नमाज़ की और अल्लाह के लिये फ़र्माबरदार बन्दे बनकर खड़े हो जाओ। यहाँ भी कुनूत से खुशूअ व खुजूअ मुराद है।

बाब 139 : सज्दे में तस्बीह

और दुआ का बयान

817. हमसे मुसहद बिन मुस्हरद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, सुफ़यान प्रौरि से, उन्होंने कहा कि मुझसे मन्ज़ूर बिन मुअतमिर ने मुस्लिम बिन सबीह से बयान किया, उन्होंने मस्रूक़ से, उनसे हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) सज्दा और रुकूअ में अक़बर ये पढ़ा करते थे, सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक्

١٣٩ - بَابُ التَّسْبِيحِ وَالْدُّعَاءِ فِي

السُّجُودِ

٨١٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى
عَنْ سَفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ عَنْ
مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُكَبِّرُ أَنْ
يَقُولَ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ: ((سُبْحَانَكَ

اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَدِّكَ، اللَّهُ اغْفِرْ لِي)).
अल्लाहुम्मफिरली (इस दुआ को पढ़कर) आप कुआन के हुक्म पर अमल करते थे। (राजेअ: 714)

يَاؤُلُ الْاَقْرَانِ. [راجع: ٧٩٤]

तशरीह: सूरह 'इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि' में है, 'फ़सब्बिह बिहमदि रब्बिक वस्तर्फिहु' (अपने रब की पाकी बयान करो और उससे बख्शिष मांगो); इस हुक्म की रोशनी में आप (ﷺ) सज्दा और रुकूअ में ज़िक्र की गई दुआ पढ़ा करते थे। जिसका तर्जुमा ये है कि या अल्लाह! मैं तेरी हम्द के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ। या अल्लाह! तू मुझको बख्श दे। इस दुआ में तस्बीह और तहमीद और इस्तिफ़ार तीनों मौजूद हैं, इसलिये रुकूअ और सज्दा में इसका पढ़ना अफ़ज़ल है इसके अलावा रुकूअ में सुब्हान रब्बियलअज़ीम और सज्दा में सुब्हान रब्बियलआला मसनूना दुआएँ भी आयाते कुआनिया ही की ता'मील हैं जैसा कि मुख्तलिफ़ आयात में हुक्म है। एक रिवायत में है कि सूरह 'इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि' के नुज़ूल के बाद आप (ﷺ) हमेशा रुकूअ और सज्दों में इस दुआ को पढ़ते रहे। या'नी सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहमदिक अल्लाहुम्मफिरली अल्लामा इमाम शौकानी (रह.) इसका मतलब यँ बयान फ़र्माते हैं कि बितीफ़ीक़ि ली व हिदायतिक व फ़ज़्लिक अलय्या सुब्हानक ला बिहौली व कुव्वती या'नी या अल्लाह! मैं सिर्फ़ तेरी तौफ़ीक़ और हिदायत और फ़ज़ल से तेरी पाकी बयान करता हूँ। अपनी तरफ़ से इस कारे अज़ीम के लिये मुझमें कोई ताक़त नहीं है। कुछ रिवायात में रुकूअ और सज्दों में ये दुआ पढ़नी भी औहज़रत (ﷺ) से प्राबित है, 'सुब्बुहुन कुद्दुसुन रब्बुल मलाइकति वरूह' (अहमद, मुस्लिम वग़ैरह) या'नी मेरा रुकूअ या सज्दा उस ज़ाते वाहिद के लिये है जो तमाम नुक्सी और शरीकों से पाक है वो मुकद्दस है वो फ़रिश्तों का और जिब्रैल का भी रब है।

बाब 140 : दोनों सज्दों के

बीच ठहरना

(818) हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब सुखितयानी से बयान किया, उन्होंने अबू क़िलाबा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से, कि मालिक बिन हुवैरिष (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि मैं तुम्हें नबी करीम (ﷺ) की नमाज़ क्यों न सिखा दूँ। अबू क़तादा ने कहा ये नमाज़ का वक़्त नहीं था (मगर आप हमें सिखाने के लिये) खड़े हुए। फिर रुकूअ किया और तकबीर कही फिर सर उठाया और थोड़ी देर खड़े रहे। फिर सज्दा किया और थोड़ी देर के लिये सज्दे से सर उठाया और फिर सज्दा किया और सज्दे से थोड़ी देर के लिये सर उठाया। उन्होंने हमारे शैख़ उमर बिन सलमा नमाज़ में एक ऐसी चीज़ किया करते थे कि दूसरे लोगों को इसी तरह करते मैंने नहीं देखा। आप तीसरी या चौथी रुकूअत पर (सज्दे से फ़ारिग़ होकर खड़े होने से पहले) बैठते थे (या'नी जल्सा-ए-इस्तिराहत करते थे फिर नमाज़ सिखलाने के बाद) (राजेह: 688)

١٤٠ - بَابُ الْمَكْتُبَيْنِ

السَّجْدَتَيْنِ

٨١٨ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّ مَالِكَ بْنَ الْخُوَيْرِثِ قَالَ لِأَصْحَابِهِ: أَلَا أَنْتَبَهُمْ صَلَاةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ - قَالَ وَذَلِكَ فِي غَيْرِ حِينَ صَلَاةٍ - فَقَامَ، ثُمَّ رَكَعَ فَكَبَّرَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَامَ هُنَيْئَةً، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيْئَةً - ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيْئَةً فَصَلَّى صَلَاةَ عُمَرُو بْنِ سَلَمَةَ شَيْخِنَا هَذَا - قَالَ أَيُّوبُ: كَانَ يَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ أَرَهُمْ يَفْعَلُونَهُ، كَانَ يَقْعُدُ فِي الثَّالِفَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ. [راجع: ٦٧٧]

٨١٩ - فَاتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَاتَيْنَا عِنْدَهُ فَقَالَ

(819) (मालिक बिन हुवैरिष ने बयान किया कि) हम नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) के यहाँ ठहरे रहे आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि (बेहतर है) तुम अपने घरों को वापस जाओ, देखो! ये नमाज़ फलों वक्रत और ये नमाज़ फलों वक्रत पर पढ़ना। जब नमाज़ का वक्रत हो जाए तो एक शख्स तुम में से अज्ञान दे और जो तुम में बड़ा हो वो नमाज़ पढ़ाए। (राजेअ: 628)

((لَوْ رَجَعْتُمْ إِلَىٰ أَهْلِيكُمْ، صَلُّوا صَلَاةَ كَذَا فِي حِينَ كَذَا، صَلُّوا صَلَاةَ كَذَا فِي حِينَ كَذَا، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَلْيُؤْذَنُوا أَحَدَكُمْ، وَلْيُؤْمِكُمْ أَكْبَرُكُمْ)).

[راجع: ٦٢٨]

तशरीह: मुराद जल्स-ए-इस्तिराहत है जो पहली और तीसरी रकअत के ख़ात्मे पर सज्दा से उठते हुए थोड़ी देर बैठ लेने को कहते हैं। कुछ नुस्खों में ये इबारत धुम्म सजद धुम्म रफ़अ रासहु हनिया एक ही बार है चुनाँचे नुस्ख-ए-कस्तलानी में भी ये इबारत एक ही बार है और यही सही मा'लूम होता है। अगर दो बार हो फिर भी मतलब यही होगा कि दूसरा सज्दा करके ज़रा बैठ गये, जल्स-ए-इस्तिराहत किया, फिर खड़े हुए। ये जल्स-ए-इस्तिराहत मुस्तहब है और इस हदीष से प्राबित है कि शारेहीन लिखते हैं कि 'बिज़ालिक अखजल्दमा मुशशफ़िइ व ताइफतुमिन अहलिल हदीषि व जहबु इला सुन्नति जल्सतिल्इस्तिराहति' या 'नी इस हदीष की बिना पर इमाम शाफ़िई और जमाअते अहले हदीष ने जल्स-ए-इस्तिराहत को सुन्नत तस्लीम किया है। कुछ अइम्मा इसके क़ाइल नहीं हैं। कुछ सहाबा से भी इसका तर्क (छोड़ना) मन्कूल है जिसका मतलब ये है कि ये जलसा फ़र्ज़ और वाजिब नहीं है मगर उसके सुन्नत और मुस्तहब होने से इंकार करना भी सही नहीं है।

(820) हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम साएक़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अहमद मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह जुबैरी ने कहा कि हमसे मिरअर बिन कुदाम ने हकम उतैबा कूफ़ी से उन्होंने अब्दुरहमान बिन अबी लैला से उन्होंने बराअ बिन आजिब (रज़ि.) से उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) का सज्दा, रुकूअ और दोनों के दरम्यान बैठने की मित्रदार तक़रीबन बराबर होती थी। (राजेअ: 892)

٨٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الزُّبَيْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا مِسْقَرٌ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: كَانَ سُجُودُ النَّبِيِّ ﷺ وَرُكُوعُهُ وَقُعُودُهُ بَيْنَ السُّجُودَيْنِ قُرَيْبًا مِنَ السَّوَاءِ.

[راجع: ٧٩٢]

तशरीह: कस्तलानी ने कहा ये जमाअत की नमाज़ का ज़िक्र है अकेले आदमी को इख्तियार है कि वो ए' तदाल और कोमा से रुकूअ और सज्दे दो गुना करे हदीष की मुताबक़त बाब के तर्जुमा से ज़ाहिर है।

(821) हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन यज़ीद ने प्राबित से बयान किया, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने जिस तरह नबी करीम (ﷺ) नमाज़ पढ़ते देखा था बिल्कुल उसी तरह तुम लोगों को नमाज़ पढ़ाने में किसी किसिम की कोई कमी नहीं छोड़ता हूँ। प्राबित ने बयान किया कि हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) एक ऐसा अमल करते थे जैसे मैं तुम्हें करते नहीं देखता। जब वो रुकूअ से सर उठाते तो इतनी देर तक खड़े रहते कि देखने वाला

٨٢١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: إِنِّي لَا أَلُو أَنْ أَصَلِّيَ بِكُمْ كَمَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي بِنَا - قَالَ ثَابِتٌ: كَانَ أَنَسٌ يَصْنَعُ شَيْئًا لَمْ أَرَكُم تَصْنَعُونَهُ - كَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَامَ حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ قَدْ نَسِيَ، وَبَيْنَ

समझता कि भूल गये हैं और इसी तरह दोनों सज्दों के दरम्यान इतनी देर तक बैठे रहते कि देखने वाला समझता कि भूल गये हैं।

(राजेअ : 800)

السَّجْدَتَيْنِ حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ قَدْ نَسِيَ.

[راجع : ٨٠٠]

तशरीह : हजरत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम फ़मति हैं कि हमारे इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) ने इसी पर अमल किया है और दोनों सज्दों के बीच में बार-बार 'रब्बिफ़िरली' कहना मुस्तहब जाना है जैसे हुजैफ़ा (रज़ि.) की हदीष में वारिद है कि हाफ़िज़ (रह.) ने कहा इस हदीष से मा'लूम होता है कि जिन लोगों से प्राबित ने ये बातचीत की वो दोनों सज्दों के बीच न बैठते होंगे; लेकिन हदीष पर चलने वाला जब हदीष सही हो जाए तो किसी के विरोध की परवाह नहीं करता। हजरत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़मति हैं, 'बक्रद तरकन्नामु हाज़िहिस्सुन्नतष्याबितत बिल्अह्वादीषिस्सहीहत मुहदिषुहुम व फ़कीहुम व मुज्तहिदुहुम व मुकल्लिदुहुम फ़लैतशिअरी मल्लजी अवौव अलैहि ज़ालिक वल्लाहुलमुस्तज़ान' या 'नी सद अफ़सोस कि लोगों ने इस सुन्नत को जो अह्वादीषे सहीहा से प्राबित है, छोड़ रखा है यहाँ तक कि उनके मुहदिष और फ़कीह और मुज्तहिद और मुकल्लिद सब ही इस सुन्नत के छोड़ने वाले नज़र आते हैं मुझे नहीं मा'लूम कि इसके लिये उन लोगों ने कौनसा बहाना तलाश किया है और अल्लाह ही मददगार है।

दोनों सज्दों के बीच ये दुआ भी मसनून है, 'अल्लाहुम्मफ़िरली वहमनी वज्बुनी वहदिनी वजुवनी।

बाब 141 : इस बारे में कि नमाज़ी सज्दे में अपने दोनों बाजूओं को (जानवर की तरह) ज़मीन पर न बिछाए और हुमैद ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने सज्दा किया और दोनों हाथ ज़मीन पर रखे बाजू नहीं बिछाए, न उनको पहलू से मिलाया

(822) हमसे मुहम्मद बिन बशार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि सज्दे में ए'तिदाल को मलहूज रखे और अपने बाजू कुत्तों की तरह न फैलाया करो। (राजेअ : 691)

तशरीह : क्योंकि इस तरह बाजू बिछा देना सुस्ती और काहिली की निशानी है। कुत्ते के साथ तशबीह (तुलना करना) और भी मुज़म्मत की बात है। उसका पूरा लिहाज़ रखना चाहिये। इमाम क़स्तलानी ने कहा कि अगर कोई ऐसा करे तो नमाज़ मकरूहे तंजीही होगी।

बाब 142 : उस शख्स के बारे में जो शख्स नमाज़ की ताक़ रकअत (पहली और तीसरी) में थोड़ी देर बैठे और उठ जाए

(823) हमसे मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हुशैम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा ख़ालिद हज़्ज़ा ने ख़बर दी, अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि मुझे मालिक बिन हुवैरिष

١٤١- بَابُ لَا يَفْعَرُشُ ذِرَاعَيْهِ فِي

السُّجُودِ

وَقَالَ أَبُو خَتْمَةَ: سَجَدَ النَّبِيُّ ﷺ وَوَضَعَ

يَدَيْهِ خَيْرَ مَقْعَرِشٍ وَلَا قَابِضُهُمَا.

٨٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ:

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ

عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اغْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ

وَلَا تَبْسُطُوا أَعْدَكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ

الْكَلْبِ)). [راجع : ٦٤١]

١٤٢- بَابُ مَنْ اسْتَوَى قَاعِدًا فِي

وَتَرَى مِنْ صَلَاتِهِ ثُمَّ نَهَضَ

٨٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّاحِحِ قَالَ:

أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ خَالِدٍ

أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ

लैसी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा, आप (ﷺ) जब ताक़रक़अत में होते, उस वक़्त तक न उठते जब तक थोड़ी देर बैठ न लेते।

اللَّيْسِيُّ (أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي، فَإِذَا كَانَ فِي وَتَرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا).

ताक़रक़अतों के बाद या'नी पहली और तीसरी रक़अत के दूसरे सज्दे से जब उठे तो थोड़ी देर बैठकर फिर उठना; इसको जलस-ए-इस्तिराहत कहते हैं जो सुन्नत सहीहा से प्राबित है।

बाब 143 : इस बारे में कि रक़अत से उठते वक़्त ज़मीन का किस तरह से सहारा लें

١٤٣ - بَابُ كَيْفَ يَغْتَمِدُ عَلَى

الْأَرْضِ إِذَا قَامَ مِنَ الرُّكْعَةِ

(824) हमसे मअली बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उन्होंने अय्यूब सुखितयानी से, उन्होंने अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि हज़रत मालिक बिन हुवैरिष (रज़ि.) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए और आपने हमारी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ाई। आपने फ़र्माया कि मैं नमाज़ पढ़ा रहा हूँ लेकिन मेरी निधयत किसी फ़र्ज़ की अदायगी नहीं है बल्कि मैं सिर्फ़ तुम को ये दिखाना चाहता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) किस तरह नमाज़ पढ़ा करते थे। अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया कि मैंने अबू क़तादा से पूछा कि मालिक (रज़ि) किस तरह नमाज़ पढ़ते थे? तो उन्होंने फ़र्माया कि हमारे शैख़ अमर बिन सलमा की तरह। अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया कि शैख़ तमाम तकबीरात कहते थे और जब दूसरे सज्दे से सर उठाते तो थोड़ी देर बैठते और ज़मीन का सहारा लेकर फिर उठते। (राजेअ : 688)

٨٢٤ - حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ: جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فَصَلَّى بِنَا فِي مَسْجِدِنَا هَذَا فَقَالَ: إِنِّي لِأَصَلِّي بِكُمْ وَمَا أُرِيدُ الصَّلَاةَ، لَكِنْ أُرِيدُ أَنْ أَرِيَكُمْ كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي. قَالَ أَيُّوبُ: فَقُلْتُ لِأَبِي قِلَابَةَ وَكَيْفَ كَانَتْ صَلَاتُهُ؟ قَالَ: مِثْلَ صَلَاةِ شَيْخِنَا هَذَا - يَعْنِي عَمْرُو بْنُ سَلَمَةَ - قَالَ أَيُّوبُ: وَكَانَ ذَلِكَ الشَّيْخُ يُتِمُّ التَّكْبِيرَ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ عَنِ السُّجُودِ الثَّانِيَةِ جَلَسَ وَاعْتَمَدَ عَلَى الْأَرْضِ، ثُمَّ

قَامَ. [راجع: ٦٧٧]

तशरीह : या'नी जलस-ए-इस्तिराहत करके फिर दोनों हाथ ज़मीन पर टेककर उठते जैसे बूढ़ा शख्स दोनों हाथों पर आटा गूंधने में टेका देता है। हन्फिया ने जो इसके खिलाफ़ तिमिज़ी की हदीष से दलील ली कि आँहज़रत (ﷺ) अपने पांव की उँगलियों पर खड़े होते थे; ये हदीष ज़ईफ़ है। इसके अलावा इससे ये निकलता है कि कभी आप (ﷺ) ने जलस-ए-इस्तिराहत किया और कभी नहीं किया। अहले हदीष का यही मज़हब है और जलस-ए-इस्तिराहत को मुस्तहब कहते हैं। और इसकी कोई दलील नहीं है कि आँहज़रत (ﷺ) ने कमजोरी या बीमारी की वजह से ऐसा किया और ये कहना कि नमाज़ का मौज़ूअ इस्तिराहत नहीं है कयास है, बमुकाबले दलील और वो फ़ासिद है। (मौलाना वहीदुज्जमाँ)

बाब 144 : जब दो रक़अत पढ़कर उठ तो तकबीर कहे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) तीसरी रक़अत के लिये उठते वक़्त तकबीर कहा करते थे

١٤٤ - بَابُ يُكَبِّرُ وَهُوَ يَنْهَضُ مِنَ

السُّجُودَيْنِ وَكَانَ ابْنُ الزُّبَيْرِ يُكَبِّرُ فِي

نَهْضَتِهِ

(825) हमसे यह्या बिन झालेह ने बयान किया, कहा कि हमसे फुलैह बिन सुलैमान ने, उन्होंने सईद बिन हारिष से, उन्होंने कहा कि हमें अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने नमाज़ पढ़ाई और जब उन्होंने सज्दे से सर उठाया तो पुकार कर तकबीर कही फिर जब सज्दा किया तो ऐसा ही किया फिर सज्दे से सर उठाया तो भी ऐसा ही किया इसी तरह जब दो रकअत पढ़कर खड़े हुए उस वक़्त भी आपने बुलन्द आवाज़ से तकबीर कही और फ़र्माया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को इसी तरह करते देखा।

(826) हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ग़ीलान बिन जरिर ने बयान किया, उन्होंने मुतरफ़ बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने कहा कि मैंने और इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) की इज्तिदा में नमाज़ पढ़ी। आपने जब सज्दा किया, सज्दे से सर उठाया दो रकअत के बाद खड़े हुए तो हर मर्तबा तकबीर कही। जब आपने सलाम फेर दिया तो इमरान बिन हुसैन ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा कि उन्होंने वाक़ई हमें हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की तरह नमाज़ पढ़ाई है या ये कहा कि मुझे उन्होंने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की नमाज़ याद दिला दी। (राजेअ: 783)

٨٢٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ مَعْنَدِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: صَلَّى لَنَا أَبُو سَعِيدٍ، فَجَهَرَ بِالتَّكْبِيرِ حِينَ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ وَحِينَ سَجَدَ وَحِينَ رَفَعَ وَحِينَ قَامَ مِنَ الرُّكْعَتَيْنِ وَقَالَ: هَكَذَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ.

٨٢٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا غِيْلَانُ بْنُ جَرِيرٍ عَنْ مُطَرِّفٍ قَالَ: صَلَّيْتُ أَنَا وَعِمْرَانُ صَلَاةَ خَلْفِ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَطَهِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَكَانَ إِذَا سَجَدَ كَبَّرَ، وَإِذَا رَفَعَ كَبَّرَ، وَإِذَا نَهَضَ مِنَ الرُّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ. فَلَمَّا سَلَّمَ أَخَذَ عِمْرَانُ بِيَدِي فَقَالَ: لَقَدْ صَلَّيْنَا بِمَا هَذَا صَلَاةَ مُحَمَّدٍ ﷺ - أَوْ قَالَ - لَقَدْ ذَكَّرَنِي هَذَا صَلَاةَ مُحَمَّدٍ.

❦ [راجع: ٧٨٣]

तशरीह: कुछ अइम्म-ए-बनी उमय्या ने बाआवाज़े बुलन्द इस तरह तकबीर कहना छोड़ दिया था जो कि उस्व-ए-नबवी (ﷺ) के खिलाफ़ था। इस वाक़िआ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि दौरे सलफ़ में मुसलमानों को उस्व-ए-रसूल (ﷺ) की इताअत का बेहद इश्तियाक़ (शौक़) रहता था। ख़ास तौर पर नमाज़ के बारे में उनकी कोशिश होती कि वो ऐन सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुताबिक़ नमाज़ अदा कर सकें। इस दौरे अख़ीर में सिर्फ़ अपने-अपने फ़र्ज़ी इमामों की तक्लीद का ज़ुब़्बा बाक़ी रह गया है। हालाँकि एक मुसलमान का अव्वलीन मक्सद सुन्नते नबवी की तलाश होना चाहिये। इमाम अबू हनीफ़ा ने स़ाफ़ फ़र्मा दिया है कि हर वक़्त सहीह हदीष की तलाश में रहो। अगर मेरा कोई मसला हदीष के खिलाफ़ नज़र आए तो उसे छोड़ दो और सहीह हदीषे नबवी (ﷺ) पर अमल करो। हज़रत इमाम की इस पाकीज़ा वसियत पर अमल करनेवाले आज कितने हैं? ये हर समझदार मुसलमान को ग़ौर करने की चीज़ है। यूँ ही लकीर के फ़कीर होकर रस्मी नमाज़ें अदा करते रहना सुन्नते नबवी को तलाश न करना किसी बा-बसो़रत मुसलमान का काम नहीं, वफ़ाक़रनल्लाहु लिमा युहिबु व यज़ी।

बाब 145 : तशह्हुद में बैठने का

मसनून तरीक़ा!

हज़रत उम्मे दर्दा (रज़ि.) फ़कीहा थीं और वो नमाज़ में (वक़ते

١٤٥- بَابُ مَنَةِ الْجُلُوسِ فِي

التَّسْبِيحِ

وَكَانَتْ أُمُّ الدَّرْدَاءِ تَجْلِسُ فِي صَلَاتِهَا

तशहहुद) मर्दों की तरह बैठती थीं।

(827) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन कासिम के वास्ते से बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से उन्होंने खबर दी कि हजरत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) को हमेशा देखते कि आप नमाज़ में चार जानू बैठते हैं। मैं अभी नौझ्र था, मैंने भी इसी तरह करना शुरू कर दिया। लेकिन हजरत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने इससे रोका और फ़र्माया कि नमाज़ में सुन्नत ये है कि (तशहहुद में) दायीं पाँव खड़ा रखे और बायीं पाँव फैला दे, मैंने कहा कि आप तो इसी (मेरी) तरह करते हैं। आप बोले कि (कमज़ोरी की वजह से) मेरे पाँव मेरा बोझ नहीं उठा पाते।

तशरीह: हजरत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) आखिर में कमज़ोरी की वजह से तशहहुद में चार जानू बैठते थे ये सिर्फ़ उज़्र की वजह से था वरना मसनून तरीका यही है कि दायीं पाँव खड़ा रहे और बाएँ को फैलाकर उस पर बैठा जाए इसे तवरक कहते हैं और तों के लिये भी यही मसनून है। बाब और हदीज़ में मुताबकत ज़ाहिर है।

(828) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैब्र ने बयान किया, उन्होंने ख़ालिद से बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अग्र हलहला ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अग्र बिन अता ने बयान किया (दूसरी सनद) और कहा कि मुझे से लैब्र ने बयान किया, और उनसे यज़ीद बिन अबी हब्बीब और यज़ीद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अग्र बिन हलहला ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अग्र बिन अता ने बयान किया कि वो नबी करीम (ﷺ) के चन्द सहाबा (रज़ि.) के साथ बैठे हुए थे कि नबी करीम (ﷺ) की नमाज़ का ज़िक्र होने लगा तो अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) की नमाज़ तुम सबसे ज़्यादा याद है, मैंने आपको देखा कि जब आप तकबीर कहते तो अपने हाथों को कन्धों तक ले जाते, जब आप रुकूअ करते तो घुटनों को अपने हाथों से पूरी तरह पकड़ लेते और पीठ को झुका देते। फिर जब रुकूअ से सर उठाते तो इस तरह सीधे खड़े हो जाते कि तमाम जोड़ सीधे हो जाते।

جَلَسَ الرَّجُلُ، وَكَانَتْ لَقِيَّتُهُ
٨٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ
مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ
عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ كَانَ
يَرَى عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
يَتَرَوَّعُ فِي الصَّلَاةِ إِذَا جَلَسَ، فَقَعَلْتُ وَأَنَا
يَوْمَئِذٍ حَدِيثُ السَّنِّ، فَهَآئِلِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ
عُمَرَ وَقَالَ: إِنَّمَا سُنَّةُ الصَّلَاةِ أَنْ تَنْصَبَ
رِجْلَكَ الْيُمْنَى وَتَنْتَبِي السُّوْرَى، فَقُلْتُ:
إِنَّكَ تَفْعَلُ ذَلِكَ، فَقَالَ: إِنَّ رِجْلِي لَا
تَحْمِلَانِي.

٨٢٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا
الْثَّيْتُ عَنْ خَالِدٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ
عَمْرٍو بْنِ خَلْفَةَ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ عَمْرٍو
بْنِ عَطَاءٍ ح قَالَ: وَحَدَّثَنِي الثَّيْتُ عَنْ
يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ وَيَزِيدَ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ
مُحَمَّدٍ بْنِ عَمْرٍو بْنِ خَلْفَةَ عَنْ مُحَمَّدٍ
بْنِ عَمْرٍو بْنِ عَطَاءٍ: أَنَّهُ كَانَ جَالِسًا مَعَ
نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَذَكَّرْنَا صَلَاةَ
النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ: (وَأَنَا
كُنْتُ أَحْفَظُكُمْ لِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ،
رَأَيْتُهُ إِذَا كَبَّرَ جَعَلَ يَدَيْهِ جِذَاءً مَنَكِبَيْهِ،
وَإِذَا رَكَعَ أَمَكَّنَ يَدَيْهِ مِنْ رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ
خَضَعَ ظَهْرَهُ، فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ اسْتَوَى حَتَّى

जब आप सज्दा करते तो आप अपने हाथों को (ज़मीन पर) इस तरह रखते कि न बिल्कुल फैले हुए होते और न सिमटे हुए; पाँव की अंगुलियों के मुँह क़िब्ला की तरफ़ रखते। जब आप (ﷺ) दो रक़अत के बाद बैठते तो बाएँ पाँव पर बैठते और दायाँ पाँव खड़ा रखते और जब आख़िरी रक़अत में बैठते तो बाएँ पाँव को आगे कर लेते और दाएँ को खड़ा कर देते फिर मक़अद पर बैठते। लैष ने यज़ीद बिन हबीब से और यज़ीद बिन मुहम्मद बिन हल्हला से सुना और मुहम्मद बिन हल्हला ने इब्ने अताअ से, और अबू स़ालेह ने लैष से कुल्लू फ़क्रारिन मकानहुन क़ल किया है और इब्ने मुबारक ने यज़ीद बिन अय्यूब से बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझ से यज़ीद बिन अबी हबीब ने बयान किया कि मुहम्मद बिन अम्र बिन हल्हला ने उनसे हदीस में कुल्लू फ़क्रारिन बयान किया।

يَعُوذُ كُلُّ فَقَارٍ مَكَانَهُ، فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ خَزْرَ مَفْرُوحٍ وَلَا قَابِضُهُمَا، وَاسْتَقْبَلَ بِأَطْرَافِ أَصَابِعِ رِجْلَيْهِ الْقِبْلَةَ، فَإِذَا جَلَسَ فِي الرُّكْعَتَيْنِ جَلَسَ عَلَى رِجْلِهِ الْيُسْرَى وَتَصَبَّ الْيُمْنَى، وَإِذَا جَلَسَ فِي الرُّكْعَةِ الْآخِرَةِ قَلَّمَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَتَصَبَّ الْآخِرَى وَقَعَدَ عَلَى مَقْعَدَيْهِ وَسَمِعَ اللَّيْثُ يُرِيدُ بْنُ أَبِي حَنْبَلٍ، وَيُرِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ خَلْحَلَةَ، وَإِنَّ خَلْحَلَةَ مِنْ أَهْلِ حَطَاءٍ. وَقَالَ أَبُو صَالِحٍ عَنْ اللَّيْثِ: كُلُّ فَقَارٍ. وَقَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي يُرِيدُ بْنُ أَبِي حَنْبَلٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ عَمْرٍو بْنَ خَلْحَلَةَ (كُلُّ فَقَارٍ).

तशरीह: सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा में दस बैठने वाले अज़्हाबे किराम (रज़ि.) में सहल बिन सईद और अबू हमैद साइदी और मुहम्मद बिन मुस्लिमा और अबू हुरैरह और अबू क़तादा (रज़ि.) के नाम बतलाए गए हैं। बाक़ी के नाम मा'लूम नहीं हो सके। ये हदीस मुख्तलिफ़ सनदों के साथ कहीं मुज्जमल और कहीं मुफ़रसल मरवी है। इसमें दूसरे कायदे में तो इसका ज़िक्र है या'नी सुरीन (कूल्हों) पर बैठना। दाएँ पाँव को खड़ा करना और बाएँ को आगे करके तले से दाएँ तरफ़ बाहर निकालना और दोनों सुरीन ज़मीन में मिलाकर बाएँ रान पर बैठना ये तवरक़ चार रक़अत वाली नमाज़ में और नमाज़े फ़ज़्र की आख़िरी रक़अत में करना चाहिये। इमाम शाफ़िई, इमाम अहमद बिन हंबल का यही मसलक है आख़िर हदीस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक की जो रिवायत है उसे फ़यांबी और जौज़नी और इब्राहीम हबी ने मिलाया है। सुनन नमाज़ के सिलसिले में ये हदीस एक उसूली तफ़्सीली बयान की हैषियत रखती है।

बाब 146 : उस शख़्स की दलील जो पहले तशह्हुद को (चार रक़अत या तीन रक़अत नमाज़ में) वाजिब नहीं जानता (या'नी फ़र्ज़) क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) दो रक़अत पढ़कर खड़े हो गये और बैठे नहीं

बावजूद ये है कि लोगों ने सुबहानल्लाह कहा लेकिन आप न बैठे; अगर तशह्हुदे-अव्वल फ़र्ज़ होता तो ज़रूर बैठ जाते जैसे कोई रुक़अ या सज्दा भूल जाए और याद आए तो उसी वक़्त लौटना ज़रूरी है। इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) ने कहा कि ये तशह्हुद वाजिब है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उसको हमेशा किया और भूल गए तो सज्द-ए-सहव से उसका तदारुक़ किया। (मौलाना वहीदुज्जमाँ)

١٤٦ - بَابُ مَنْ لَمْ يَرَ التَّشَهُّدَ
الْأَوَّلَ وَاجِبًا لِأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَامَ مِنَ
الرُّكْعَتَيْنِ وَلَمْ يَرْجِعْ

(829) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि शुऐब ने हमें खबर दी, उन्होंने जुहरी से खबर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुर्रहमान बिन हुरमुज ने बयान किया जो मौला बिन अब्दुल मुत्तलिब (या मौला रबीआ बिन हारिष) थे, कि अब्दुल्लाह बिन बुहैना (रज़ि.) जो सहाबी-ए-रसूल (ﷺ) और बनू अब्दे मनाफ़ के हलीफ़ कबीले अज्दे-शनूआ से ता'ल्लुक रखते थे, ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें जुहर की नमाज़ पढ़ाई और दो रक़अत पर बैठने के बजाय खड़े हो गए, चुनौचे सारे लोग भी उनके साथ खड़े हो गये। जब नमाज़ खत्म होने वाली थी और लोग आपके सलाम फेरने का इन्तिज़ार कर रहे थे तो आप ने अल्लाहु अक्बर कहा और सलाम फेरने से पहले दो सज्दे किये, फिर सलाम फेरा। (दीगर मक़ामात : 830, 1229, 1225, 1230, 668)

۸۲۹- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ هُرْمُزٍ مَوْلَى بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ - وَقَالَ مَرَّةً: مَوْلَى رِبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ - أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ ابْنَ بُحَيْنَةَ وَهُوَ مِنْ أَزْدِ شَوْءَةَ، وَهُوَ خَلِيفٌ لِبَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِهِمْ الظُّهْرَ، فَقَامَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ لَمْ يَجْلِسْ! فَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ، حَتَّى إِذَا قَضَى الصَّلَاةَ وَانْتَظَرَ النَّاسُ تَسْلِيمَهُ كَثُرَ وَهُوَ جَالِسٌ، فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ، ثُمَّ سَلَّمَ.

[أطرافه في : ۸۳۰، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵]

[۱۲۳۰، ۱۲۶۷].

तशरीह : अल्लामा शौकानी (रह.) ने इस मसले पर यूँ बाब मुनअक़िद फ़र्माया है बाबुन अल्लअम्न बित्तशहदुदिल अव्वलि व सुक़ुतुहु बिस्सहवि या'नी तशहदुदे अव्वल के लिये हुक्म है और वो भूल से रह जाए तो सज्द-ए-सहव से साक़ित हो जाता है। हदीषे इब्ने मसऊद (रज़ि.) में जो लफ़्ज़ फक़ूला अत्तहिद्य्यातु वारिद हुए हैं उस पर अल्लामा फ़र्माते हैं कि फ़ीहि दलीलुन लिमन क़ाल बिबुजूबित्तशहदुदिलऔसति वहुव अहमद फिल्मशहूदि अय्यनहू वल्लैषु व इस्हाक़ व हुव कौलुशशाफ़िइ व इलैहि ज़हब दाउद अबू ज़ौर व रहावुन्नववी अन जुम्हूरिलमुहदिषीन या'नी उसमें उन हज़रात की दलील है जो दरम्यानी तशहदुद को वाजिब कहते हैं इमाम अहमद से भी यही मन्कूल है और दीगर अइम्म-ए-मज़क़ूरिन से भी बल्कि इमाम नववी (रह.) ने उसे जुम्हूरे मुहदिषीने किराम (रह.) से नक़ल किया है।

हदीषे मज़क़ूर से इमाम बुखारी (रह.) ने यही ष़ाबित फ़र्माया है कि तशहदुदे अव्वल अगर फ़र्ज़ होता तो आप उसे ज़रूर लौटाते मगर ये ऐसा ही कि अगर रह जाए तो सज्द-ए-सहव से उसकी तलाफ़ी (भरपाई) हो जाती है। रिवायत में अब्दुल्लाह बिन बुहैना के हलीफ़ होने का ज़िक्र है जाहिलियत के ज़माने में जब कोई शख्स या कबीला किसी दूसरे से ये अहद कर लेता कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा, तुम्हारे दोस्त का दोस्त और दुश्मन का दुश्मन तो उसे उस क़ौम का हलीफ़ कहा जाता था सहाबी मज़क़ूर बनी अब्दे मुनाफ़ के हलीफ़ थे।

बाब 147 : पहले क़अदे में तशहदुद पढ़ना

(830) हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे बकर बिन मुज़िर ने जा'फ़र बिन रबीआ से बयान किया, उन्होंने अअरज़ से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना (रज़ि.) ने, कहा कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़े-जुहर

۱۴۷- بَابُ الشَّهَادَةِ فِي الْأُولَى

۸۳۰- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرٌ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رِبِيعَةَ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ قَالَ: (صَلَّى

पढ़ाई। आपको चाहिये था बैठना लेकिन आप (भूल कर) खड़े हो गये फिर नमाज़ के आखिर में बैठे ही बैठे दो सज्दे किये।

(राजेअ : 829)

بَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ الظُّهْرَ، فَقَامَ وَعَلَيْهِ جُلُوسٌ. فَلَمَّا كَانَ فِي آخِرِ صَلَاتِهِ سَجَدَ

سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ. [راجع : ٨٢٩]

और तशहूद नहीं पढ़ा। हदीस में अलैहिल जुलूस के अल्फाज़ बतलाते हैं कि आपको बैठना चाहिये था मगर आप भूल गए जुलूस से तशहूद मुराद है। बाब के तर्जुमे की मुताबकत ज़ाहिर है।

बाब 148 : आखिरी कअदे में तशहूद पढ़ना

(831) हमसे अबू नुऐम फुजैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने शक्रीक बिन सलमा से बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन मस्रूद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब हम नबी करीम (ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ते तो कहते (तर्जुमा) सलाम हो जिब्रईल और मीकाईल पर और फ़लां पर (अल्लाह पर सलाम) नबी करीम (ﷺ) एक रोज़ हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया, अल्लाह तो खुद सलाम है (तुम क्या अल्लाह को सलाम करते हो) इसलिये जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो ये कहे (तर्जुमा) तमाम आदाबे-बन्दगी, तमाम इबादात और तमाम बेहतरीन ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं, आप (ﷺ) पर सलाम और अल्लाह के तमाम मालेहीन बन्दों पर सलाम। जब तुम ये कहोगे तो तुम्हारा सलाम आसमान व ज़मीन में जहाँ कोई अल्लाह का नेक बन्दा है, उसको पहुँच जाएगा। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

(दीगर मक़ामात : 830, 1202, 623, 6250, 6328, 7381)

١٤٨ - بَابُ التَّشَهُّدِ فِي الْآخِرَةِ

٨٣١ - حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا خَلْفَ النَّبِيِّ ﷺ قُلْنَا: السَّلَامُ عَلَى جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ، السَّلَامُ عَلَى فَلَانٍ وَفُلَانٍ. فَاتَّفَقَتْ إِلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّلَامُ، فَإِذَا صَلَّيْنَا أَخَذَكُمْ فَلْيَقُلْ: التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ: السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ - فَإِنَّكُمْ إِذَا قُلْتُمُوهَا أَصَابَتْ كُلَّ عَبْدٍ لِلَّهِ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ - أَشْهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ)).

[أطرافه بي : ٨٣٥، ١٢٠٢، ٦٢٣٠]

[٦٢٦٥، ٦٣٢٨، ٧٣٨١]

तशरीह : ये क़ायदे की दुआ है जिसे तशहूद कहते हैं। बन्दा पहले कहता है कि 'तहिय्यात सल्लावात और तय्यिबात' अल्लाह तआला के लिये हैं। ये तीन अल्फाज़ कौलो- फ़ेअल की तमाम महासिन को शामिल है या'नी तमाम ख़ैर और भलाई अल्लाह तआला के लिये प्रामाणिक है और उसी की तरफ़ से है। फिर नबी करीम (ﷺ) पर दरूद भेजा गया और उसमें ख़ि़ताब की ज़मीर इख़्तियार की गई क्योंकि सज़ाबा को ये दुआ सिखाई गई थी और आप (ﷺ) उस वक़्त मौजूद थे। अब जिन अल्फाज़ के साथ हमें ये दुआ पहुँची है उसी तरह पढ़नी चाहिये (तफ़हीमुल बुखारी) सलाम दरहक़ीक़त दुआ है। या'नी तुम सलामत रहो अल्लाह को ऐसी दुआ देने की हाज़त नहीं क्योंकि वो हर एक आफ़त और तग़य्युर (बदलाव) से पाक है। वो अज़ली अबदी है उसमें कोई ऐब और नुक्स नहीं। वो सारी क़यनात को खुद सलामती बख़्शने वाला और सबकी परवरिश करने वाला है। इसीलिये उसका नाम सलाम हुआ। इसी दुआ में लफ़्ज़े अतहिय्यात और सल्लावात और तय्यिबात वारिद होते हैं। तहिय्यात के मा'नी सलामती, बक्रा, अज़मत हर नुक्स से पाकी हर किस्म की ता'ज़ीम मुराद है। ये इबादाते कौली पर

सलावात इबादाते फ़ेअली पर और तय्यिबात इबादाते माली पर भी बोला गया है। (फ़तुहल बारी)

पस ये तीनों किस्म की इबादतें एक अल्लाह के लिये मख्सूस हैं जो लोग इन इबादात में किसी गैरुल्लाह को शरीक करते हैं चाहे वो फरिश्ते हों या इंसान या और कुछ; जो ख़ालिक का हक़ छीनकर मख़लूक को देते हैं; यही वो जुल्मे अज़ीम है जिसे कुआन मजीद में शिर्क कहा गया है जिसके बारे में अल्लाह का इश्राद है, 'व मय्युशिक बिल्लाहि फ़क़द हरमल्लाहु अलैहिल्जन्नत व मावाहुन्नार' या 'नी शिर्क करनेवालों पर जन्नत हराम है और वो हमेशा जहन्नम में रहेंगे। इबादाते क़ौली में जुबान से उठते-बैठते, चलते फिरते उसका नाम लेना, इबादाते फ़ेअली में रकूअ, सज्दा, क़याम, इबादाते माली में हर किस्म का सदका, ख़ैरात और न्याज़ो-नज़्र वगैरह वगैरह मुराद है।

बाब 149 : (तशहहुद के बाद) सलाम फेरने से पहले की दुआ

(833) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें अम्र बिन जुबैर ने ख़बर दी, उन्हें नबी करीम (ﷺ) की जोज़: मुतहहरा हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ में ये दुआ पढ़ते थे (तर्जुमा) ऐ अल्लाह! क़ब्र के अज़ाब से मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से तेरी पनाह माँगता हूँ। दज्जाल के फ़ित्ने से तेरी पनाह माँगता हूँ और ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ गुनाहों से और क़र्ज़ से। किसी (या) नी उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि.) ने औहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि आप (ﷺ) तो क़र्ज़ से बहुत ही ज़्यादा पनाह माँगते हैं! इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई मकरूज़ हो जाए तो वो झूठ बोलता है और वा' दाख़िलाफ़ी करता है।

(दीगर मक़ामात : 833, 2397, 6368, 6280, 6386, 6388, 8129)

(833) और इसी सनद के साथ जुहरी से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मुझे उर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को नमाज़ में दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह माँगते सुना। (राजेअ : 832)

वइज़ा वअद अख़्लफ़ के बाद कुछ नुस्खों में ये इबारात ज़ाइद है, व क़ाल मुहम्मदुब्नु यूसुफ़ समिअतु ख़लफ़ब्नि आमिरिन यक़ूल फिल्मसीहि लेस बैनुहुमा फ़र्कुन व हुमा वाहिदुन अहदुहुमा ईसा अलैहिस्सलाम वल्लाख़रू अहज्जाल या 'नी मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने कहा इमाम बुखारी (रह.) ने कहा मैंने ख़लफ़ बिन आमिर से सुना 'मसीह' और मसीह' में कुछ फ़र्क़ नहीं दोनों एक हैं हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को मसीह कहते हैं और दज्जाल को भी मसीह कहते हैं।

١٤٩- بَابُ الدُّعَاءِ قَبْلَ السَّلَامِ

٨٣٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا

شُعَيْبُ بْنُ الرَّهْزِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنَا غُرُوثُ بْنُ

الرَّائِبِ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرْتُهُ

أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَذْهَبُ فِي الصَّلَاةِ:

((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ،

وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ،

وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَفِتْنَةِ

الْمَمَاتِ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ

الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ)). فَقَالَ لَهُ قَائِلٌ: مَا

أَكْثَرَ مَا تَسْتَعِينُ مِنَ الْمَغْرَمِ؟ فَقَالَ: ((إِنْ

الرَّجُلُ إِذَا غَرِمَ حَدَّثَ فَكَذَّبَ، وَوَعَدَ

فَأَخْلَفَ)).

[أطرافه في : ٨٣٣، ٢٣٩٧، ٦٣٦٨،

٦٢٧٥، ٦٣٧٦، ٦٣٧٧، ٧١٢٩].

٨٣٢- وَعَنْ الرَّهْزِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي

غُرُوثُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ:

((سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَسْتَعِينُ فِي

صَلَاتِهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَالِ)). [راجع: ٨٣٢]

(834) हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैस बिन सअद ने यज़ीद बिन अबी हबीब से बयान किया, उनसे अबुल खैर मुशिद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने, उनसे अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज किया कि आप मुझे ऐसी दुआ सिखा दीजिए जिसे मैं नमाज़ में पढ़ा करूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये दुआ पढ़ा करो (तर्जुमा) ऐ अल्लाह! मैं अपनी जान पर (गुनाह करके) बहुत ज़्यादा जुल्म किया, पस गुनाहों को तेरे सिवा कोई दूसरा मुआफ़ करने वाला नहीं, मुझे अपने पास से भरपूर अता फ़र्मा और मुझ पर रहम कर कि मफ़िरत करने वाला और रहम करने वाला बेशक व शुब्हा तू ही है।

(दीगर मक़ामात : 6326, 7388)

बाब 150 : बाब तशहहद के बाद जो दुआ इख़ितयार की जाती है उसका बयान और ये बयान कि इस दुआ का पढ़ना कुछ वाजिब नहीं है

(835) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हम से यज़्ज़ा बिन सईद क़त्तान ने आ'मश से बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे शक्कीक ने अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने फ़र्माया कि (पहले) जब हम नबी करीम (ﷺ) के साथ पढ़ते तो हम (क़अदे में) ये कहा करते थे कि उसके बन्दों की तरफ़ से अल्लाह पर सलाम हो और फ़लों पर और फ़लों पर सलाम हो। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये न कहो कि अल्लाह पर सलाम हो, क्योंकि अल्लाह तो खुद सलाम है, बल्कि ये कहो (तर्जुमा) आदाबे-बन्दगी और तमाम इबादत और तमाम पाकीज़ा ख़ैरातें अल्लाह ही के लिये हैं आप पर ऐ नबी सलाम हो और अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल हो हम पर और अल्लाह के इलाहे बन्दों पर सलाम हो और जब तुम ये कहोगे तो आसमान पर अल्लाह के तमाम बन्दों पर पहुँचेगा। आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि आसमान और ज़मीन के दरम्यान तमाम बन्दों को पहुँचेगा, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) उसके बन्दे और

۸۳۴- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ: عَلَّمَنِي دُعَاءَ أَذْغُرُ بِهِ لِي صَلَاتِي. قَالَ: ((قُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلَا يَغْفِرُ اللُّثُوبَ إِلَّا أَنْتَ فَاعْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ، وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ)).

[طرفاء ۲ : ۶۳۲۶, ۷۳۸۸]

۱۵۰- بَابُ مَا يُتَخَيَّرُ مِنَ الدُّعَاءِ

بَعْدَ الشَّهَادَةِ، وَلَيْسَ بِوَاجِبٍ

۸۳۵- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ الْأَعْمَشِ قَالَ حَدَّثَنِي شَيْقِي عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كُنَّا إِذَا كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الصَّلَاةِ قُلْنَا: السَّلَامُ عَلَى اللَّهِ مِنْ عِبَادِهِ، السَّلَامُ عَلَى فُلَانٍ وَفُلَانٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَقُولُوا السَّلَامُ عَلَى اللَّهِ، فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّلَامُ، وَلَكِنْ قُولُوا: التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ! فَإِنَّكُمْ إِذَا قُلْتُمْ أَصَابَ كُلَّ عَبْدٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ - أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. ثُمَّ

रसूल हैं। इसके बाद दुआ का इख्तियार है जो उसे पसन्द हो करे।

(राजेअ: 831)

يَتَخَيَّرُ مِنَ الدُّعَاءِ أَغْبَجَهُ إِلَيْهِ فَيَدْعُو))

[راجع: ٨٣١]

तशरीह: ये लफ्ज आम है दीन और दुनिया के बारे में हर एक किस्म की दुआ मांग सकता है और मुझको हैरत है कि हन्फिया ने कैसे कहा है कि फ़लों किस्म को दुआ नमाज़ में मांग सकता है फ़लों किस्म की नहीं मांग सकता। नमाज़ में अपने बन्दे को मालिक की बारगाह में बारयाबी का शर्फ़ हासिल होता है फिर अपनी अपनी लियाक़त और हौसले के मुवाफ़िक़ हर बन्दा अपने मालिक से मअरूज़ा (गुज़ारिश, अनुरोध) करता है और मालिक अपने करम और रहम से इनायत फ़र्माता है। अगर सिर्फ़ दीन के बारे में ही दुआ मांगना नमाज़ में जाइज़ हों और दुआएँ जाइज़ न हों तो दूसरे मतलब किस से मांगे किसी सहीह हदीष में है कि अल्लाह से अपनी सब हाजते मांगो यहाँ तक कि जूती का तस्मा भी टूट जाए या हाण्डी में नमक न हो तो भी अल्लाह से कहो। (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम) मुतर्जिम का कहना है कि दुआएँ माफ़ूरा हमारे बेशतर मक़ासिद व मतालिब पर आधारित मौजूद हैं इनका पढ़ना बरकत का कारण होगा। हदीष नम्बर 832, 833, 834 में जामेअ दुआएँ और आखिर में सब मक़ासिद पर मुस्तमिल पाकीज़ा दुआये काफ़ी है, रखना आतिना फ़िहुनिया हसनतव्वफ़िलआखिरति हसनतव्व वकिना अज़ाबन्नार।

बाब 151 : अगर नमाज़ में पेशानी या नाक से मिट्टी लग जाए तो न पोछें जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो। इमाम बुख़ारी ने कहा मैंने अब्दुल्लाह बिन जुबैर हुमैदी को देखा कि वो इसी हदीष से ये दलील लेते थे कि नमाज़ में अपनी पेशानी न पोछे

١٥١- بَابُ مَنْ لَمْ يَمْسَحْ جِهَتَهُ
وَأَلْفَهُ حَتَّى صَلَّى قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ :
رَأَيْتُ الْحَمْدِيَّ يَخْجُ بِهَذَا
الْحَدِيثِ أَنْ لَا يَمْسَحَ الْجِهَةَ فِي
الصَّلَاةِ.

(836) हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम दस्तवाई ने यह्या बिन अबी कबीर से बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से दरयाफ़्त किया, तो आपने बतलाया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को कीचड़ में सज्दा करते हुए देखा। मिट्टी का अन्नर आप (ﷺ) की पेशानी पर साफ़ ज़ाहिर था।

(राजेअ: 669)

٨٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ:
حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ
قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ فَقَالَ:
رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَسْجُدُ فِي الْمَاءِ
وَالطِّينِ، حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ الطِّينِ فِي جَنْبَيْهِ.

[راجع: ٦٦٩]

मा'लूम हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी पेशानी मुबारक से पानी और कीचड़ के निशानात को साफ़ नहीं फ़र्माया था। इमाम हुमैदी के इस्तिदलाल की बुनियाद यही है।

बाब 152 : सलाम फेरने का बयान

(837) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब जुहरी ने हिन्द बिन्त हारिष से हदीष बयान की

١٥٢- بَابُ التَّسْلِيمِ
٨٣٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ
حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا
الزُّهْرِيُّ عَنْ هِنْدِ بِنْتِ الْحَارِثِ أَنَّ أُمَّ

कि (उम्मुल मोमिनीन हज़रत) उम्मे सलमा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब (नमाज़ से) सलाम फेरते तो सलाम के ख़त्म होते ही औरतें खड़ी हो जाती (बाहर आने के लिये) और आप (ﷺ) खड़े होने से पहले थोड़ी देर ठहरे रहते थे। इब्ने शिहाब (रह.) ने कहा मैं समझता हूँ और पूरा इल्म तो अल्लाह ही को है, आप इसलिये ठहर जाते थे कि औरतें जल्दी चली जाएँ और मर्द नमाज़ से फ़ारिग होकर उनको न पाएँ।

(दीगर मक़ामात : 839, 850)

سَلَمَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءَ حِينَ يَقْضِي تَسْلِيمَهُ، وَمَكَثَ يَسِيرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : فَأَرَى - وَاللَّهُ أَكْثَرُ - أَنْ مَكَّاهُ لِكَيْ تَنْفُذَ النِّسَاءَ قَبْلَ أَنْ يُذَرِكَهُنَّ مَنْ انْصَرَفَ مِنَ الْقَوْمِ.

[طرفاء في : ٨٤٩، ٨٥٠.]

तशरीह : सलाम फेरना इमाम अहमद और इमाम शाफिई और इमाम मालिक और जुम्हूर उलमा और अहले हदीष के नज़दीक फ़र्ज़ और नमाज़ का एक रुकन है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) लफ़्ज़ सलाम को फ़र्ज़ नहीं जानते बल्कि नमाज़ के खिलाफ़ कोई काम करके नमाज़ से निकलना फ़र्ज़ जानते हैं और हमारी दलील ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हमेशा सलाम फेरा और फ़र्माया कि नमाज़ से निकलना सलाम फेरना है। (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम)

बाब 153 : इस बारे में कि इमाम के सलाम फेरते ही मुक्तदी को भी सलाम फेरना चाहिये और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) इस बात को मुस्तहब जानते थे कि मुक्तदी भी उसी वक़्त सलाम फेरे जब इमाम सलाम फेरे

١٥٣ - بَابُ يُسَلِّمُ حِينَ يُسَلِّمُ
الإِمَامَ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَسْتَحِبُّ إِذَا سَلَّمَ الإِمَامُ أَنْ يُسَلِّمَ مَنْ خَلْفَهُ.

(836) हमसे हिब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें मअमर बिन राशिद ने जुहरी से ख़बर दी, उन्हें महमूद बिन रबीअ अन्सारी ने, उन्हें इब्बान बिन मालिक (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर जब आप (ﷺ) ने सलाम फेरा तो हमने भी फेरा। (राजेअ : 424)

٨٣٨ - حَدَّثَنَا حِثَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ : أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُخْبَرٍ بْنِ الرَّبِيعِ عَنْ عَيْنَانَ بْنِ مَالِكٍ قَالَ : (صَلَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ، فَسَلَّمْنَا حِينَ سَلَّمَ). [راجع : ٤٢٤]

तशरीह : इमाम बुखारी (रह.) का मक़सदे बाब ये है कि मुक्तदियों को सलाम फेरने में देर न करनी चाहिये बल्कि इमाम के साथ ही साथ वो भी सलाम फेर दें।

बाब 154 : इस बारे में कि इमाम को सलाम करने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ़ नमाज़ के दो सलाम काफ़ी है

١٥٤ - بَابُ مَنْ لَمْ يَرِدْ السَّلَامُ عَلَى الإِمَامِ ، وَاکْتَفَى بِتَسْلِيمِ الصَّلَاةِ

ये बात लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने मालिकिया का रद्द किया है जो कहते हैं कि मुक्तदी इमाम को भी सलाम करे।

(839) हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमें

٨٣٩ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ : أَخْبَرَنَا عَبْدُ

अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, कहा कि हमें मअमर ने जुहरी से खबर दी, कहा कि मुझे महमूद बिन रबीअ ने खबर दी, वो कहते थे कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) पूरी तरह याद हैं और आप का मेरे घर के डोल से कुल्ली करना भी याद है (जो आपने मेरे मुँह पर डाली थी) (राजेअ : 88)

(840) उन्होंने बयान किया कि मैंने इब्नान बिन मालिक अन्सारी से सुना, फिर बनू सालिम के एक शख्स से इसकी मज़ीद तस्दीक हुई। इब्नान (रज़ि.) ने कहा कि मैं अपनी क़ौम बनू सालिम की इमामत किया करता था। मैंने आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हुजूर मेरी आँख खराब हो गई है और (बरसात में) पानी से भरे हुए नाले मेरे और मेरी क़ौम की मस्जिद के बीच रुकावट बन जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे मकान पर तशरीफ़ लाकर किसी एक जगह नमाज़ अदा फ़र्माएँ ताकि मैं उसे अपनी नमाज़ के लिये मुक़रर कर लूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि इशाअल्लाह मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पूरी करूँगा। सुबह को जब दिन चढ़ गया तो नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए। अबूबक्र (रज़ि.) आपके साथ थे। आपने (अन्दर आने की) इजाज़त चाही और मैंने दे दी। आप बैठे नहीं बल्कि पूछा कि घर के किस हिस्से में नमाज़ पढ़ना चाहते हो। एक जगह की तरफ़ जिसे मैंने नमाज़ पढ़ने के लिये पसन्द किया था, इशारा किया। आप (नमाज़ के लिये) खड़े हुए और हमने आपके पीछे सफ़ बनाई। फिर आपने सलाम फेरा और जब आपने सलाम फेरा तो हमने भी फेरा। (राजेअ : 424)

اللَّهُ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ وَزَعَمَ أَنَّهُ عَقَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، وَعَقَلَ مَجَّةً مَجَّهَا مِنْ ذَلْوٍ كَانَتْ فِي دَارِهِمْ. [راجع: ٧٧]

٨٤٠- قَالَ : سَمِعْتُ عِيْنَانَ بْنَ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيَّ - ثُمَّ أَحَدَ بَنِي سَالِمٍ - قَالَ : كُنْتُ أَصَلِّيَ لِقَوْمِي بَنِي سَالِمٍ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ : إِنِّي أَنْكَرْتُ بَصَرِي، وَإِنْ السَّيُولُ تَحُولُ بَيْنِي وَبَيْنَ مَسْجِدِ قَوْمِي، فَلَوِ دِدْتُ أَنَّكَ جِئْتَ فَصَلَّيْتَ فِي بَيْتِي مَكَانًا أَتَّخِذُهُ مَسْجِدًا. فَقَالَ : ((أَقْلُ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ)). فَقَدَا عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَبُوبَكْرٍ مَعَهُ بَعْدَ مَا اشْتَدَّ النَّهَارُ فَاسْتَاذَنَ النَّبِيُّ ﷺ فَأَذِنْتُ لَهُ، فَلَمْ يَخْلِسْ حَتَّى قَالَ : ((أَيْنَ تُحِبُّ أَنْ أَصَلِّيَ مِنْ بَيْتِكَ؟)) فَأَشَارَ إِلَيْهِ مِنَ الْمَكَانِ الَّذِي أَحَبُّ أَنْ يُصَلِّيَ فِيهِ، فَقَامَ فَصَلَّفَنِي خَلْفَهُ، ثُمَّ سَلَّمَ، وَسَلَّمْنَا حِينَ سَلَّمَ. [راجع: ٤٢٤]

तशरीह : जुम्हूर फुक़हा के नज़दीक नमाज़ में दो सलाम हैं। लेकिन इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक अकेले नमाज़ पढ़नेवाले के लिये सिर्फ़ एक सलाम काफ़ी है और नमाज़ बाजमाअत हो रही हो तो दो सलाम होने चाहिये। इमाम के लिये भी और मुक़्तदी के लिये भी लेकिन अगर मुक़्तदी इमाम के बिलकुल पीछे है या नी न दाएँ तरफ़ न बाएँ तरफ़ तो उसे तीन सलाम फेरने पड़ेंगे। एक दाएँ तरफ़ के नमाज़ियों के लिये दूसरा बाएँ तरफ़ के नमाज़ियों के लिये और तीसरा इमाम के लिये। गोया इस सलाम में भी उन्होंने मुलाकात के सलाम के आदाब का लिहाज़ रखा है। इमाम बुखारी (रह.) जुम्हूर के मसलक की तर्जुमानी कर रहे हैं (तफ़्हीमुल बुखारी)। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस हदीष को कई जगह लाए हैं और इससे अनेक मसाइल का इस्तिबात फ़र्माया है यहाँ इस हदीष से बाब का मतलब यूँ निकाला कि ज़ाहिर ये है कि मुक़्तदियों का सलाम भी आँहज़रत (ﷺ) के सलाम की तरह था और अगर मुक़्तदियों ने कोई तीसरा सलाम कहा होता तो उसको ज़रूर बयान करते। ये भी हदीष से निकला कि मा'ज़रीन (असमर्थों) के लिये और नवाफ़िल के लिये घर के किसी हिस्से में नमाज़ की जगह तय कर दी जाए तो इसकी इजाज़त है। ये भी प्राबित है कि किसी वाक़ई अहलुल्लाह बुजुर्ग से इस क़िस्म की दरख़्वास्त जाइज़ है।

बाब 155 : नमाज़ के बाद ज़िक्र इलाही करना

(841) हमसे इस्हाक़ बिन नसर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुर्रज़ाक़ बिन हमाम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल मलिक बिन जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझको अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के गुलाम अबू मअबद ने उन्हें ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र, फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग होने पर नबी करीम (ﷺ) के ज़मान-ए-मुबारक में जारी था।

इन्हे अब्बास ने फ़र्माया कि मैं ज़िक्र सुनकर लोगों की नमाज़ से फ़राग़त को समझ जाता था।

(842) हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मुझे अबू मअबद ने इन्हे अब्बास (रज़ि.) से ख़बर दी कि आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) की नमाज़ ख़त्म होने को तक़बीर की वजह से समझ जाता था। अली बिन मदीनी ने कहा कि हमसे सुफ़यान ने अम्र के हवाले से बयान किया कि अबू मअबद इन्हे अब्बास के गुलामों में सबसे ज़्यादा क़ाबिले ए'तिमाद थे। अली बिन मदीनी ने बताया कि उनका नाम नाफ़िज़ था। (रज़ेअ 841)

(843) हमसे मुहम्मद बिन अबी बकर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया, उनसे सुमय ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह ज़क्वान ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नादार लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि अमीर व रईस लोग बुलन्द दर्जात और हमेशा रहने वाली जन्नत हासिल कर चुके, हालाँकि जिस तरह हम नमाज़ें पढ़ते हैं वो भी पढ़ते हैं और जैसे हम रोज़े रखते हैं वो भी

١٥٥- بَابُ الذِّكْرِ بَعْدَ الصَّلَاةِ

٨٤١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي مَعْبُدٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ: (أَنْ رَفَعَ الصَّوْتُ بِالذِّكْرِ - حِينَ يَنْصَرِفُ النَّاسُ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ - كَانَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ).

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ((كُنْتُ أَغْلَمُ إِذَا انْصَرَفُوا بِذَلِكَ إِذَا سَمِعْتُهُ)).

[طرفه في : ٨٤٢].

٨٤٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ أَبِي مَعْبُدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ أَغْرِفُ انْقِضَاءَ صَلَاةِ النَّبِيِّ ﷺ بِالْكُتُبِ)). قَالَ عَلِيُّ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرُو قَالَ كَانَ أَبُو مَعْبُدٍ أَصْلَقُ مَوَالِي ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ عَلِيُّ وَاسْمُهُ نَافِلٌ. [راجع: ٨٤١]

٨٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ سَمْعٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ الْفُقَرَاءُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: ذَهَبَ أَهْلُ الدُّلُورِ مِنَ الْأَمْوَالِ بِالذَّرَجَاتِ الْعُلَى وَالنَّعِيمِ الْمُقِيمِ: يُصَلُّونَ كَمَا نُصَلِّي، وَيَصُومُونَ كَمَا نَصُومُ، وَلَهُمْ

रखते हैं, लेकिन माल व दौलत की वजह से उन्हें हम पर फौक्रियत (श्रेष्ठता) हासिल है कि उसकी वजह से वो हज्ज करते हैं, इम्रह करते हैं, जिहाद करते हैं और स्रदक्रे देते हैं (और हम मुहताजी की वजह से इन कामों को नहीं कर पाते) इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें एक ऐसा अमल बताता हूँ कि अगर तुम उसकी पाबन्दी करोगे तो जो लोग तुम से आगे बढ़ चुके हैं, उन्हें तुम पा लोगे और तुम्हारे मर्तबे तक फिर कोई नहीं पहुँच सकता और तुम सबसे अच्छे हो जाओगे, सिवा उनके जो यही अमल शुरू कर दे, हर नमाज़ के बाद तैंतीस-तैंतीस मर्तबा तस्बीह (सुब्हानल्लाह) तस्मीद (अल्हम्दुलिल्लाह) तकबीर (अल्लाहु अक्बर) कहा करो। फिर हममें इखितलाफ़ हो गया, किसी ने कहा कि हम तस्बीह तैंतीस मर्तबा, तस्मीद तैंतीस मर्तबा और तकबीर चौतीस मर्तबा कहेंगे। मैंने इस पर आप (ﷺ) से दोबारा मा'लूम किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अक्बर कहो, ताकि हर एक इनमें से तैंतीस मर्तबा हो जाए।

(दीगर मक्कामात : 6329)

(844) हमसे मुहम्मद बिन यस्फ़ फ़र्याबी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान प्रौरी ने अब्दुल मलिक बिन इमैर से बयान किया, उनसे मुगीरा बिन शुअबा के कातिब वर्राद ने, उन्होंने बयान किया कि मुझसे मुगीरा बिन शुअबा (रज़ि.) ने मुआविया (रज़ि.) को एक ख़त में लिखवाया कि नबी करीम (ﷺ) हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़ते थे (तर्जुमा) अल्लाह के सिवा कोई लायक़े-इबादत नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाहत उसी की है और तमाम ता'रीफ़ उसी के लिये है। वो हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह! जिसे तू दे उससे रोकने वाला कोई नहीं और किसी मालदार को उसकी दौलत व माल तेरी बारगाह में कोई नफ़ा न पहुँचा सकेगी। शुअबा ने भी अब्दुल मलिक से इसी तरह रिवायत की है। हसन ने फ़र्माया कि (हदीष में लफ़ज़) जद के मा'नी मालदारी है और हकीम, क़ासिम बिन मुख़ैमरह से वो वर्राद के वास्ते से इसी तरह रिवायत करते हैं।

فَضْلُ أَمْوَالٍ يَخْجُونَ بِهَا وَيَعْمُرُونَ، وَيَجَاهِدُونَ وَيَتَصَدَّقُونَ. فَقَالَ: ((أَلَا أَخَذْتُكُمْ بِمَا إِنْ أَخَذْتُمْ بِهِ أَذْرَكْتُمْ مِنْ سَبَقِكُمْ، وَلَمْ يُدْرِكْكُمْ أَحَدٌ بَعْدَكُمْ، وَكُنْتُمْ خَيْرَ مَنْ أَنْتُمْ بَيْنَ ظَهْرَانِي إِلَّا مَنْ عَمِلَ مِثْلَهُ: تُسَبِّحُونَ وَتُحَمِّدُونَ وَتُكَبِّرُونَ خَلْفَ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ)). فَأَخْبَلْنَا بَيْنَنَا: فَقَالَ بَعْضُنَا نُسَبِّحُ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، وَنَحْمَدُ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، وَنُكَبِّرُ أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ. فَوَجَعْتُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: ((تَقُولُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ حَتَّى يَكُونَ مِنْهُنَّ كُلُّهُنَّ ثَلَاثٌ وَثَلَاثُونَ)).

[طرفه ١ : ٦٣٢٩].

٨٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ وَرَادِ بْنِ كَاتِبِ الْمُخَيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: أَمْلَى عَلَيَّ الْمُخَيْرَةُ بْنُ شُعْبَةَ - فِي كِتَابِ إِلَى مُعَاوِيَةَ - أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ فِي ذِكْرِ كُلِّ صَلَاةٍ مَكْتُوبَةٍ: ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُغْطِي لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ)). وَقَالَ شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بِهَذَا وَقَالَ الْحَسَنُ: جَدُّ غِنَى وَعَنِ الْحَكَمِ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُخَيْرَةَ عَنْ وَرَادٍ بِهَذَا.

(दीगर मक्कामात : 1488, 2408, 5980, 6330, 6473, 6610, 7262)

बाब 156 : इमाम जब सलाम फेर चुके तो लोगों की तरफ मुँह करे

(845) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुरैज बिन आज़िम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबूरजाअ इमरान बिन तमीम ने समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) से नक़ल किया, उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) जब नमाज़े (फ़र्ज़) पढ़ा चुकते तो हमारी तरफ मुँह करते।

(दीगर मक्कामात : 1143, 1386, 2080, 2791, 3336, 3354, 4673)

तशरीह : इससे साफ़ मा'लूम हुआ कि नमाज़े फ़र्ज़ के बाद सुन्नत तरीक़ा यही है कि सलाम फेरने के बाद इमाम दाएँ या बाएँ मुँह फेरकर मुक्तदियों की तरफ मुँह करके बैठे। मगर स़द अफ़सोस कि एक देवबन्दी साहबे मुतर्जिम शारेह बुखारी फ़र्माते हैं आजकल दाएँ या बाएँ तरफ़ रुख़ करके बैठने का आम रिवाज है इसकी कोई असल नहीं न ये सुन्नत है न मुस्तहब जाइज़ ज़रूर है (तफ़्हीमुल बुखारी पारानं. 4 पेज नं. 22) फिर हदीषे मज़कूर मुनाकिदा बाब का मफ़हूम क्या है? इसका जवाब फ़ाज़िल मौसूफ़ ये देते हैं कि मुसन्नफ़ (रह.) ये बताना चाहते हैं कि नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद अगर इमाम अपने घर जाना चाहता है तो घर चला जाए लेकिन अगर मस्जिद में बैठना चाहता है तो सुन्नत ये है कि दूसरे मौजूदा लोगों की तरफ़ रुख़ करके बैठे (हवाला मज़कूर) नाज़िरीन खुद ही अंदाज़ा लगा सकते हैं कि फ़ाज़िल शारेह बुखारी के दोनों बयानात में किस क़दर तज़ाद (विरोधाभास) है। इज़रत इमाम बुखारी (रह.) के बाब और हदीष का मफ़हूम ज़ाहिर है।

(846) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अनबी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक से बयान किया, उन्होंने स़ालेह बिन कैसान से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इतैबा बिन मस्ज़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें हुदैबिया में सुबह की नमाज़ पढ़ाई और रात को बारिश हो चुकी थी, नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद आपने लोगों की तरफ़ मुँह किया और फ़र्माया मा'लूम है तुम्हारे रब ने क्या फ़र्माया है। लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ख़ूब जानते हैं (आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि) तुम्हारे रब का इश़ाद है कि सुबह हुई तो मेरे कुछ बन्दे मुझ पर ईमान लाए और कुछ मेरे मुन्किर हुए, जिसने कहा कि

[أطرافه في : ٢٤٠٨ ، ١٤٧٧ ، ٥٩٧٥ ، ٦٦١٥ ، ٦٤٧٣ ، ٦٣٣٠ ، ٧٢٩٢ .]

١٥٦- بَابُ يَسْتَقْبِلُ الْإِمَامُ النَّاسَ إِذَا صَلَّيَ

٨٤٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا جُرَيْجُ بْنُ خَارِجٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا صَلَّى صَلَاةً أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ.

[أطرافه في : ١١٤٣ ، ١٣٨٦ ، ٢٠٨٥ ، ٢٧٩١ ، ٣٣٣٦ ، ٣٣٥٤ ، ٤٦٧٤ .]

٨٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ أَنَّهُ قَالَ: صَلَّيْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَاةَ الصُّبْحِ بِالْحُدَيْبِيَةِ - عَلَى إِبْرِ سَمَاءَ كَانَتْ مِنَ اللَّيْلِ - فَلَمَّا انْصَرَفَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: ((هَلْ تَذَرُونَ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ غَرَّوَجَلٌ؟)) قَالُوا : اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَكْبَرُ. قَالَ: ((أَصْبَحَ مِنْ

अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से तुम्हारे लिये बारिश हुई तो वो मेरा मोमिन है और सितारों का मुन्किर और जिसने कहा कि फलों तारे की फलानी जगह पर आने से बारिश हुई तो मेरा मुन्किर है और सितारों का मोमिन।

(दीगर मक़ामात : 1037, 4147, 4503)

عِبَادِي مُؤْمِنِينَ بَيْنِي وَكَافِرًا: فَلَمَّا مَنَّ عَلَيْنَا بِمُطَرٍّ بَفَضْلِ اللَّهِ وَرَحْمَتِهِ فَذَلِكَ مُؤْمِنٌ بَيْنِي وَكَافِرٌ بِالْكَوْكَبِ، وَأَمَّا مَنْ قَالَ: بَنُو كَذَا وَكَذَا: فَذَلِكَ كَافِرٌ بَيْنِي وَمُؤْمِنٌ بِالْكَوْكَبِ)).

[أطرافه في : ١٠٣٨، ٤١٤٧، ٤٥٠٣].

कुफ़्र से हकीकती कुफ़्र मुराद है मा'लूम हुआ कि जो कोई सितारों को मुअज़्ज़िर (प्रभावशाली) जाने वो हदी़ष की रू से काफ़िर है। पानी बरसाना अल्लाह का काम है सितारे क्या कर सकते हैं।

(847) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने यज़ीद बिन हारून से सुना, उन्हें हुमैद जैली ने ख़बर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक रात (इशा की) नमाज़ में देर फ़र्माई तक्ररीबन आधी रात तक। फिर आख़िर हुज़े से बाहर तशरीफ़ लाए और नमाज़ के बाद हमारी तरफ़ मुँह किया और फ़र्माया कि दूसरे लोग नमाज़ पढ़ कर सो चुके, लेकिन तुम लोग जब तक नमाज़ का इन्तज़ार करते रहे गोया नमाज़ ही में रहे (या'नी तुमको नमाज़ का इबाब मिलता रहा)

(राजेअ : 572)

٨٤٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ سَمِعَ يَزِيدَ بْنَ هَارُونَ قَالَ: أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الصَّلَاةَ ذَاتَ لَيْلَةٍ إِلَى شَطْرِ اللَّيْلِ، ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْنَا، فَلَمَّا صَلَّى أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ: ((إِنَّ النَّاسَ لَفِي صَلَاتِهِمْ يَرْجِعُونَ، وَإِنَّمَا أَنْتُمْ فِي صَلَاتِكُمْ مَا أَنْتُمْ فِي صَلَاتِكُمْ)).

[راجع : ٥٧٢]

इन तमाम रिवायतों से ज़ाहिर हुआ कि सलाम फेरने के बाद इमाम मुक़तदियों की तरफ़ मुतवज्जह होकर बैठे, फिर तस्बीह तहलील करे या लोगों को मसले-मसाइल बतलाए या फिर उठकर चला जाए।

बाब 157 : सलाम के बाद इमाम उसी जगह

ठहरकर (नफ़्ल वग़ैरह) पढ़ सकता है

(848) और हमसे आदम बिन अबी अयास ने कहा कि उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे नाफ़ेअ ने, फ़र्माया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) (नफ़्ल) उसी जगह पढ़ते थे जिस जगह फ़र्ज़ पढ़ते थे और क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बकर ने भी इसी तरह किया है और अबू हुरैरह (रज़ि.) से मफ़ूअन रिवायत है कि इमाम अपनी (फ़र्ज़ पढ़ने की जगह) पर नफ़्ल न पढ़े और ये सहीह नहीं।

(849) हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने

١٥٧- بَابُ مَكَثِ الْإِمَامِ فِي

مُصَلَّاهُ بَعْدَ السَّلَامِ

٨٤٨- وَقَالَ لَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ يُصَلِّي فِي مَكَانِهِ الَّذِي صُلِّيَ فِيهِ الْقَرِيعَةُ، وَفَعَلَهُ الْقَاسِمُ، وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَفَعَهُ : لَا يَنْطَوِّعُ الْإِمَامُ فِي مَكَانِهِ. وَلَمْ يَصُحَّ.

٨٤٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا

बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्नाहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुहरी ने हिन्द बिन हारिष से बयान किया, उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब सलाम फेरते तो कुछ देर अपनी जगह बैठे रहते।

(राजेअ : 873)

(850) और अबू सईद बिन अबी मरयम ने कहा कि हमें नाफ़ेअ बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया कि इब्ने शिहाब जुहरी ने उन्हें लिख भेजा कि मुझसे हिन्द बिन हारिष फ़रासिया ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की पाक बीवी उम्मे सलमा (रज़ि.) ने (हिन्द उनकी सुहबत में रहती थीं) उन्होंने फ़र्माया कि जब नबी करीम (ﷺ) सलाम फेरते तो औरतें लौट कर जाने लगतीं और नबी करीम (ﷺ) के उठने से पहले अपने घरों में दाख़िल हो चुकी होतीं।

(राजेअ : 838)

और इब्ने वुहैब ने यूनुस के वास्ते से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उन्हें हिन्द बिन हारिष कुरशिया ने ख़बर दी और इब्मान बिन उमर ने कहा कि हमें यूनुस ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे हिन्द कुरशिया ने बयान किया, मुहम्मद बिन वलीद जुबैदी ने कहा कि मुझको जुहरी ने ख़बर दी कि हिन्द बिन हारिषा कुरशिया ने उन्हें ख़बर दी। और वो बनू ज़हैर के हलीफ़ मअबद बिन मिस्दाद की बीवी थीं और नबी करीम (ﷺ) की अज़वाजे-मुतद्हरात की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करती थी और शुऐब ने जुहरी से इस हदीष को रिवायत किया, उन्होंने कहा, मुझसे हिन्द कुरशिया ने हदीष बयान की, और इब्ने अबी अतीक ने जुहरी के वास्ते से बयान किया और उनसे हिन्द फ़रासिया ने बयान किया। लैष ने कहा कि मुझसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे कुरैश की एक औरत ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करके बयान किया।

إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ هِنْدِ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ (رَأَتْ النَّبِيَّ ﷺ) كَانَ إِذَا سَلَّمَ يَمْكُثُ فِي مَكَانِهِ يَسِيرًا. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَتَرَى - وَاللَّهِ أَغْلَمُ - لِكَيْ يَنْفَدَ مِنْ يَنْصَرِفَ مِنَ

النِّسَاءِ. [راجع: ٨٧٣]

٨٥٠ - وَقَالَ ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا نَافِعُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ كَتَبَ إِلَيْهِ قَالَ: حَدَّثَنِي هِنْدُ بِنْتُ الْحَارِثِ الْفَرَّاسِيَّةُ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ - وَكَانَتْ مِنْ صَوَاحِبَاتِهَا - قَالَتْ: (كَانَ يُسَلِّمُ فَيَنْصَرِفُ النِّسَاءُ فَيَدْخُلْنَ بُيُوتَهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَنْصَرِفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ). [راجع: ٨٣٧]

وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي هِنْدُ الْفَرَّاسِيَّةُ. وَقَالَ غُثَمَانُ بْنُ عُثْمَرَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي هِنْدُ الْفَرَّاسِيَّةُ. وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ أَنَّ هِنْدَ بِنْتَ الْحَارِثِ الْفَرَّاسِيَّةَ أَخْبَرَتْهُ - وَكَانَتْ تَحْتَ مَعْبِدِ بْنِ السَّقْدَادِ وَهُوَ خَلِيفُ بَنِي زُهْرَةَ - وَكَانَتْ تَدْخُلُ عَلَى أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي هِنْدُ الْفَرَّاسِيَّةُ. وَقَالَ ابْنُ أَبِي عَتِيقٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدِ الْفَرَّاسِيَّةِ. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَهُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ امْرَأَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ حَدَّثَتْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तशरीह : इन सनदों के बयान करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज ये है कि हिन्द की निस्बत का इख्तिलाफ़ प्राबित करें किसी ने उनको फ़रासिया कहा किसी ने कुरशिया और रद्द किया उस शख्स पर जिसने कुरशिया को तस्हीफ़ करार दिया क्योंकि लैष की रिवायत में उसके कुरशिया होने की तस्हीह है मगर लैष की रिवायत मौसूल नहीं है इसलिये कि हिन्द फ़रासिया या कुरशिया ने आँहज़रत से नहीं सुना मक्क़दे बाब व हदीष ज़ाहिर है कि जहाँ फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी गई हो वहाँ नफ़ल भी पढ़ी जा सकती है मगर दीगर रिवायत की बिना पर ज़रा जगह बदल ली जाए या कुछ कलाम कर लिया जाए ताकि फ़र्ज़ और नफ़ल नमाज़ों में इख्तिलाफ़ का वहम न हो सके।

बाब 158 : अगर इमाम लोगों को नमाज़ पढ़ाकर किसी काम का ख़याल करे और ठहरे नहीं बल्कि लोगों की गर्दन फाँदता चला जाए तो क्या है

(851) हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल ने बयान किया, कहा कि हमसे ईसा बिन यूनुस ने इमर बिन सईद से ये हदीष बयान की, उन्होंने कहा कि मुझे इब्ने अबी मुलैका ने ख़बर दी, उनसे अब्दुल बिन हारिष (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने मदीना में नबी करीम (ﷺ) की इस्तिदा में एक मर्तबा अस्त्र की नमाज़ पढ़ी। सलाम फेरने के बाद आप (ﷺ) जल्दी से उठ खड़े हुए और सफ़ों को चीरते हुए आप अपनी किसी बीबी के हुजे में गये। लोग आप (ﷺ) की तेज़ी की वजह से घबरा गए। फिर जब आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और जल्दी की वजह से लोगों के तअज्जुब को महसूस फ़र्माया तो फ़र्माया कि हमारे पास एक सोने का डला (तक्सीम करने से) बच गया था मुझे उसमें दिल लगा रहना बुरा मा'लूम हुआ, मैंने उसे बाँट देने का हुक्म दिया।

(दीगर मक़ामात : 1221, 1430, 6270)

तशरीह : इस हदीष से मा'लूम हुआ कि फ़र्ज़ के बाद इमाम को अगर कोई फ़ौरी ज़रूरत मा'लूम हो जाए तो वो खड़ा होकर जा सकता है क्योंकि फ़र्ज़ों के सलाम के बाद इमाम को ख़वाह-मख़वाह अपनी जगह ठहरे रहना कुछ लाज़िम या वाजिब नहीं है। इस वाकिअे से ये भी मा'लूम हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) को अपनी पैग़म्बराना ज़िम्मेदारियों का किस शिद्दत से एहसास रहता था कि सोने का एक तौला भी घर में सिर्फ़ बर्तौर अमानत ही एक रात के लिये रख लेना नागवार मा'लूम हुआ। फिर उन मुआनिदीन (निन्दा करने वालों) पर फटकार हो जो ऐसे पाक पैग़म्बर फ़िदा अबी व उम्मी की शान में गुस्ताख़ी करते हैं और नरज़ुबिल्लाह आप (ﷺ) पर दुनियादारी का ग़लत इल्ज़ाम लगाते रहते हैं। 'हदाहुमुल्लाह'

बाब 159 : नमाज़ पढ़कर दायें या बाएँ दोनों

तरफ़ फिर बैठना या पलटना दुरुस्त है

और हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) दायें और बाएँ दोनों तरफ़

۱۵۸- بَابُ مَنْ صَلَّى بِالنَّاسِ فَلَاكَرَ حَاجَةً فَخَطَّاهُمْ

۸۵۱- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ قَالَ: حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُثْبَةَ قَالَ: صَلَّيْتُ وَرَاءَ النَّبِيِّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ الْقَصْرِ، فَسَلَّمْتُ، فَقَامَ مُسْرِعًا فَخَطَّاهُ رِقَابَ النَّاسِ إِلَى يَنْضِي حُجْرٍ بِسَائِهِ، فَفَزِعَ النَّاسُ مِنْ سُرْعَتِهِ، فَخَرَجَ عَلَيْهِمْ فَرَأَى أَنَّهُمْ عَجِبُوا مِنْ سُرْعَتِهِ فَقَالَ: ((ذَكَرْتُ شَيْئًا مِنْ بَيْتٍ عِنْدَنَا، فَكُوهْتُ أَنْ يَخْبِسَنِي، فَأَمَرْتُ بِقِسْمَتِهِ)).

(أطرافه ١ : ١٢٢١، ١٤٣٠، ١٢٢٧٥)

۱۵۹- بَابُ الْإِنْفِتَالِ وَالْإِنْجِرَافِ

عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَالِ

وَكَانَ آتِسَ يَنْقِيلَ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ،

मुड़ते थे, और अगर कोई दायें तरफ़ ख़वामख़वाह क़स्द करके मुड़ता तो इस पर आप ए'तिराज़ करते थे।

(852) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने सुलैमान से बयान किया, उनसे अम्मार बिन इमैर ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन मस्क़द (रज़ि.) ने फ़र्माया कि कोई शख़्स अपनी नमाज़ में से कुछ भी शैतान का हिस्सा न लगाए, इस तरह की दाहिनी तरफ़ ही लौटना अपने लिये ज़रूरी क़रार दे ले। मैंने नबी करीम (ﷺ) को अक़्बर बाएँ तरफ़ से लौटते देखा।

तशीह : मा'लूम हुआ कि किसी मुबाह्र या मुस्तहब काम को लाज़िम या वाज़िब कर लेना शैतान की अगवाही है। इब्ने मुनीर ने कहा मुस्तहब काम को अगर कोई लाज़िम क़रार दे तो वो मकरूह हो जाता है। जब मुबाह्र काम को लाज़िम क़रार देने से शैतान का हिस्सा समझा जाए तो जो काम मकरूह या बिदअत है उसको कोई लाज़िम क़रार दे ले और उसके न करने पर अल्लाह के बन्दों को सताए या उनका ऐब करे तो उस पर शैतान का क्या तसल्लुत (प्रभुत्व, ग़लबा) है समझ लेना चाहिये। हमारे ज़माने में ये बला बहुत फैली हुई है। बेअसल कामों को अवाम क्या बल्कि ख़ास ने लाज़िम क़रार दे लिया है। (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ) तीजा, फ़ातिहा, चहल्लुम वग़ैरह सब इसी क़िस्म के काम हैं।

बाब 160 : लह्सुन, प्याज़ और गंदने के

मुता'ल्लिक़ जो रिवायात आई हैं उनका बयान

और नबी करीम (ﷺ) का इशार्द है कि जिस ने लह्सुन या प्याज़ भूख़ या इसके अलावा किसी वजह से खाई हो वो हमारी मस्जिद के पास न फटके।

(853) हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, कहा कि हमसे यहा बिन सईद क़त्तान ने, अब्दुल्लाह बुक़ैरी से बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने इब्ने इमर (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जंगे-ख़ैबर के मौक़े पर कहा था कि जो शख़्स इस पेड़ या'नी लह्सुन को खाए हुए हो, उसे हमारी मस्जिद में न आना चाहिये (कच्चा लह्सुन या प्याज़ मुराद है कि इससे मुँह में बदबू पैदा हो जाती है)।

(दीगर मक़ामात : 4210, 4217, 4218, 5521, 5522)

(854) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया,

وَيَغِيبُ عَلَى مَنْ يَتَوَخَّى - أَوْ مَنْ يَغْمِدُ - الْإِنْفِتَالُ عَنْ يَمِينِهِ.

٨٥٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ عَمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ عَنِ الْأَسْوَدِ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: لَا يَجْعَلُ أَحَدُكُمْ لِلشَّيْطَانِ شَيْئًا مِنْ صَلَاتِهِ يَرَى أَنْ حَقًّا عَلَيْهِ أَنْ لَا يَنْصَرِفَ إِلَّا عَنْ يَمِينِهِ، لَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ كَثِيرًا يَنْصَرِفُ عَنْ يَسَارِهِ.

١٦٠- بَابُ مَا جَاءَ فِي الثُّومِ النَّيِّ

وَالْبَصَلِ وَالْكُرْثِ

وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ أَكَلَ الثُّومَ أَوْ الْبَصَلَ مِنَ الْجُوعِ أَوْ غَيْرِهِ فَلَا يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا)).

٨٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ فِي غَزْوَةِ خَيْبَرَ: ((مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ - يَعْنِي الثُّومَ - فَلَا يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا)).

[أطرافه في : ٤٢١٥، ٤٢١٧، ٤٢١٨،

٨٥٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ:

कहा कि हमसे अबू आसिम बिन जिहाक बिन मुखल्लद ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने खबर दी, कहा कि मुझे अता बिन अबी रिबाह ने खबर दी, कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शाख्स ये पेड़ खाए (आप (ﷺ) की मुराद लहसुन थी) तो वो हमारी मस्जिद में न आए। अता ने कहा, मैंने जाबिर से पूछा कि आपकी मुराद इससे क्या थी? उन्होंने जवाब दिया कि आपकी मुराद सिर्फ़ कच्चे लहसुन से थी। मुखल्लद बिन यज़ीद ने इब्ने जुरैज के वास्ते से (अलअन्या के बजाय) इल्ला नतनहून क़ल किया है। (या'नी आपकी मुराद सिर्फ़ लहसुन की बदबू से थी) (दीगर मक़ामात : 700, 5452, 7359)

तशरीह : किसी भी बदबूदार चीज़ को मस्जिद में ले जाना या उसके खाने के बाद मस्जिद में जाना बुरा है। वजह ज़ाहिर है कि लोग उसकी बदबू की वजह से तकलीफ़ महसूस करेंगे और फिर मस्जिद एक पाक और मुक़द्स जगह है जहाँ अल्लाह का ज़िक्र होता है। आजकल बीड़ी, सिगरेट वालों के लिये भी लाज़िम है कि मुँह साफ़ करके बदबू दूर करके मिस्वाक से मुँह को रगड़-रगड़कर मस्जिद में आएँ अगर नमाज़ियों को उनकी बदबू से तकलीफ़ हुई तो ज़ाहिर है कि ये कितना गुनाह होगा। कच्चा लहसुन, प्याज़ और सिगरेट बीड़ी वगैरह बदबूदार चीज़ों का एक ही हुक्म है इतना फ़र्क़ ज़रूर है कि प्याज़, लहसुन की बू अगर दूर की जा सके तो उनका इस्तेमाल जाइज़ है जैसा कि पकाकर उनकी बू को दफ़ा कर दिया जाता है।

(855) हमसे सईद बिन उफ़ैर ने, कहा कि हमसे इब्ने वुहैब ने यूनस से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कि अता जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो लहसुन या प्याज़ खाए हुए हो तो वो हमसे दूर रहे या (ये कहा कि उसे) हमारी मस्जिद से दूर रहना चाहिये या उसे अपने घर में ही बैठना चाहिये। नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक हाण्डी लाई गई, जिसमें कई किसिम की हरी तरकारियाँ थीं। (प्याज़ या गन्दना भी) आप (ﷺ) ने उसमें बू महसूस की और उसके मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया। इस सालन में जितनी तरकारियाँ डाली गई थी वो आप को बता दी गई। वहाँ एक सहाबी मौजूद थे आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी तरफ़ ये सालन बढ़ा दो। आप (ﷺ) ने उसे खाना पसन्द नहीं फ़र्माया और फ़र्माया कि तुम लोग खालो। मेरी जिनसे सरगोशी रहती है, तुम्हारी नहीं रहती और अहमद बिन झालेह ने इब्ने वुहैब से यूनस क़ल किया कि थाल आप (ﷺ) की ख़िदमत में लाई गई थी। इब्ने वुहैब ने कहा कि तबक़ जिसमें हरी तरकारियाँ थी और लैज़ और अबू सफ़वान ने यूनस से

حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي غَطَاءٌ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ - يُرِيدُ الثُّومَ - فَلَا يَفْشَانَا فِي مَسَاجِدِنَا)). قُلْتُ: مَا يَعْني بِهِ؟ قَالَ: مَا أَرَاهُ يَعْني إِلَّا نِيْنَهُ. وَقَالَ مَخْلَدٌ ابْنُ يُزَيْدٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ: إِلَّا نَتَهُ. [أطرافه في : ٨٥٥، ٥٤٥٢، ٧٣٥٩.]

٨٥٥- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ غَفِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ زَعَمَ غَطَاءٌ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ زَعَمَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلًا فَلْيَغْتَرِلْنَا - أَوْ فَلْيَغْتَرِلْ مَسْجِدَنَا - وَلْيَغْتَرِلْ فِي بَيْتِهِ)). وَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَتَى بِقِنْدَرٍ فِيهِ خَضِرَاتٌ مِنْ بَقُولٍ فَوَجَدَ لَهَا رِيْحًا، فَسَأَلَ، فَأَخْبَرَ بِمَا فِيهَا مِنَ الْبَقُولِ فَقَالَ: ((فَرُبُّوْهَا)) - إِلَى بَعْضِ أَصْحَابِهِ كَانَ مَعَهُ - فَلَمَّا رَأَاهُ كَرِهَ أَكْلَهَا قَالَ: ((كُلْ، فَإِنِّي أَنَا جِي مِنْ لَا تَأْجِي)). وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ وَهْبٍ (أَيْ بِنْتِ) قَالَ ابْنُ وَهْبٍ: يَعْني طَبَقًا فِيهِ خَضِرَاتٌ. وَلَمْ يَذْكُرِ اللَّيْثُ وَأَبُو صَفْوَانَ عَنْ يُونُسَ

रिवायत में हाण्डी नहीं बयान किया है। इमाम बुखारी (रह.) ने (या सईद या इब्ने वुहैब ने कहा) मैं नहीं कह सकता कि ये खुद जुहरी का क़ौल है या हदीष में दाखिल है। (राजेअ : 804)

856. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, उनसे अब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, उनसे अब्दुल अजीज बिन सुहैब ने बयान किया कि हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से एक शख्स ने पूछा कि आपने नबी करीम (ﷺ) से लहसुन के बारे में क्या सुना है। उन्होंने बताया कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स इस पेड़ को खाए वो हमारे करीब न आए, हमारे साथ नमाज़ न पढ़े। (दीगर मक़ामात : 5451)

मक़सद यही है कि इन चीज़ों को कच्चा खाने से मुँह में बदबू हो जाती है वो दूसरे साथियों के लिये तकलीफ़देह है लिहाज़ा इन चीज़ों के खाने वालों को चाहिये कि जिस तौर पर मुम्किन हो उनकी बदबू का इज़ाला (निवारण) करके मस्जिद में आएँ। बीड़ी-सिगरेट के लिये भी यही हुक्म है।

बाब 161 : इस बारे में कि बच्चों के लिये वुजू और उन पर गुस्ल और वुजू और जमाअत, ईदैन, जनाज़ों में उनकी हाज़िरी और उनकी सफ़्रों में शिरकत कब ज़रूरी होगी और क्योंकर होगी

857. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, उसने शुअबा ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मुझसे एक ऐसे शख्स ने ख़बर दी जो (एक मर्तबा) नबी करीम (ﷺ) के साथ एक अकेली अलग-थलग टूटी हुई क़ब्र पर से गुज़र रहे थे, वहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ाई और लोग आप (ﷺ) के पीछे सफ़्र बाँधे हुए थे। सुलैमान ने कहा कि मैंने शुअबी से पूछा कि अबू अम्र आपसे ये किसने बयान किया तो उन्होंने कहा कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने।

(दीगर मक़ामात : 1247, 1319, 1321, 1322, 1326, 1336, 1340)

قِصَّة الْقَدْرِ، فَلَا أَذْرِي هُوَ مِنْ قَوْلِ الزُّهْرِيِّ أَوْ فِي الْخَدِيثِ. [راجع: ٨٥٤]

٨٥٦- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْقَيْسِ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ أَنَسًا: مَا سَمِعْتَ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ فِي الثُّومِ؟ فَقَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ فَلَا يَقْرَبْنَا وَلَا يُصَلِّيَنَّ مَعَنَا)).

[طوله في : ٥٤٥١].

١٦١- بَابُ وُضُوءِ الصِّبْيَانِ، وَمَتَى يَجِبُ عَلَيْهِمُ الْغُسْلُ وَالطُّهُورُ؟ وَحُضُورِهِمُ الْجَمَاعَةَ وَالْعِيدَيْنِ وَالْجَنَائِزَ وَصُفُوفِهِمْ

٨٥٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَرُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ سَلِيمَانَ الشَّيْبَانِيَّ قَالَ: (سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ مَرَّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى قَبْرِ مَيْمُونٍ فَأَمَّهُمْ وَصَلُّوا عَلَيْهِ. فَقُلْتُ: يَا أَبَا عَمْرٍو مَنْ حَدَّثَكَ؟ فَقَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ).

[أطرافه في : ١٢٤٧، ١٣١٩، ١٣٢١]

[١٣٢٢، ١٣٢٦، ١٣٣٦، ١٣٤٠].

तशरीह : हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से ये प्राबित किया है कि बच्चे अगरचे नाबालिग़ हों मगर 8-10 साल की उम्र में जब वो नमाज़ पढ़ने लगें तो उनको वुजू करना होगा और वो जमाअत व ईदैन व जनाज़ में भी शिरकत कर सकते हैं जैसाकि यहाँ इस रिवायत में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का ज़िक्र है जो अभी नाबालिग़ थे मगर यहाँ उनका सफ़्र में शामिल होना प्राबित है पस अगरचे बच्चे बालिग़ होने पर ही मुकल्लफ़ होंगे मगर आदत डालने के लिये नाबालिग़ी के

ज़माने ही से उनको इन बातों पर अमल कराना चाहिये हज़रत मौलाना वहीदुज़्जमाँ साहब मरहूम फ़र्माते हैं कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने साफ़ यूँ नहीं कहा कि लड़कों पर वुजू वाजिब है या नहीं क्योंकि सूरते पानी में लड़कों की नमाज़ बेवुजू दुरुस्त होती और सूरते ऊला में लड़कों को वुजू और नमाज़ के छोड़ने पर अज़ाब लाज़िम आता सिर्फ़ इस क़दर बयान कर दिया जितना हदीषों से मा'लूम होता है कि लड़के अहज़रत (ﷺ) के ज़माने में नमाज़ वग़ैरह में शरीक होते और ये उनकी कमाले एहतियाज़ है। अहले हदीष की शान यही होनी चाहिये कि आयते करीमा ला तुक़दिमु बैन यदइल्लाहि व रसूलिही (अल हज़रात : 1) अल्लाह और उसके रसूल से आगे मत बढ़ो; के तहत सिर्फ़ उसी पर इक्तिफ़ा करें जो कुर्आन व हदीष में वारिद हो आगे बेजा राय, क़यास, तावीले फ़ासिद से काम न लें खुसूसन नरस के मुकाबले पर क़यास करना इबलीस का काम है।

858. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सफ़वान बिन सुलैम ने अताअ से बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जुम्आ के दिन हर बालिग़ के लिये गुस्ल ज़रूरी है।

(दीगर मक़ामात : 879, 880, 890, 2665)

۸۵۸- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي صَفْوَانُ بْنُ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْفَسْلُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ)).

[أطرافه في: ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۹۰]

[۲۶۶۵]

तशरीह: मा'लूम हुआ कि गुस्ल वाजिब उस वक़्त होता है जबकि बच्चे बालिग़ हो जाएँ वो भी बसूरते एहतिलाम गुस्ल वाजिब होगा और गुस्ले जुम्आ के बारे में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि लोगों के पास शुरू इस्लाम में कपड़े बहुत कम थे इसलिये काम करने में पसीना से कपड़ों में बदबू पैदा हो जाती थी और इसलिये उस वक़्त जुम्आ के दिन गुस्ल करना वाजिब था। फिर जब अल्लाह तआला ने मुसलमानों को फ़राख़ी दी तो ये वुजूब बाज़ी नहीं रहा। अब भी ऐसे लोगों पर गुस्ल ज़रूरी है जिनके पसीने की बदबू से लोग तकलीफ़ महसूस करें। गुस्ल सिर्फ़ बालिग़ पर वाजिब होता है उसी को बयान करने के लिये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये हदीष यहाँ लाए हैं। इमाम मालिक (रह.) के नज़दीक जुम्आ का गुस्ल वाजिब है।

859. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने अम्र बिन दीनार से बयान किया, कहा कि मुझे कुरैब ने ख़बर दी इब्ने अब्बास से, उन्होंने बयान किया कि एक रात मैं अपनी खाला मैमूना (रज़ि.) के यहाँ सोया था और रसूले-करीम (ﷺ) भी वहाँ सो गये। फिर रात का एक हिस्सा जब गुज़र गया, आप खड़े हुए और लटकी हुई मशक से हल्का सा वुजू किया। अम्र (हदीष के रावी ने) इस वुजू को बहुत ही हल्का बतलाया। (या'नी इसमें आप ﷺ ने बहुत कम पानी इस्ते'माल फ़र्माया) फिर आप (ﷺ) नमाज़ के लिये खड़े हुए, उसके बाद मैंने भी उठकर उसी तरह वुजू किया जैसे आप (ﷺ)

۸۵۹- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ عُمَرَ قَالَ: أَخْبَرَنِي كُرَيْبٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: (بِتُّ عِنْدَ خَالَتِي مَيْمُونَةَ لَيْلَةً، فَنَامَ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا كَانَ فِي نَعْفِ اللَّيْلِ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَتَوَضَّأَ مِنْ شَيْءٍ مَعْلُوقٍ وَضُوءًا خَفِيفًا - يُخَفِّفُهُ عَمَرُو وَيُقَلِّلُهُ جِدًّا - ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي، فَكُنْتُ فَتَوَضَّأْتُ نَحْوًا

ने किया था, फिर मैं आप (ﷺ) के बाएँ तरफ़ खड़ा हो गया। लेकिन आप (ﷺ) ने मुझे दाहिनी तरफ़ फेर दिया। फिर अल्लाह तआला ने जितना चाहा आपने नमाज़ पढ़ी फिर आप लेट गये फिर सो गये। यहाँ तक कि आप खरटिलेने लगे। आखिर मोअज़्ज़िन ने आकर आपको नमाज़ की ख़बर दी और आप उसके साथ नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले गए और नमाज़ पढ़ाई मगर (नया) वुजू नहीं किया। सुफ़यान ने कहा, हमने अम्र बिन दीनार से कहा कि लोग कहते हैं कि (सोते वक़्त) आप (ﷺ) की (सिर्फ़) आँखें सोती थीं लेकिन दिल नहीं सोता था। अम्र बिन दीनार ने जवाब दिया कि मैंने अब्द बिन उमैर से सुना, वो कहते थे कि अंबिया का ख़वाब भी वही होता है। फिर अब्द ने इस आयत की तिलावत की (तर्जुमा) मैंने ख़वाब देखा है कि तुम्हें ज़िबह कर रहा हूँ। (राजेअ: 117)

مِمَّا تَوَضَّأَ، ثُمَّ جَنَّتْ فَقُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ، فَخَوَّلَنِي فَجَعَلَنِي عَنْ يَمِينِهِ، ثُمَّ صَلَّى مَا شَاءَ اللَّهُ، ثُمَّ اضْطَجَعَ قَنَامَ حَتَّى نَفَخَ قَاتَاهُ الْمُنَادِي يَأْذُنُهُ بِالصَّلَاةِ لِقَامَ مَعَهُ إِلَى الصَّلَاةِ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأَ. فَلَمَّا لِعَمْرُو: إِنَّ نَاسًا يَقُولُونَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَامَ عَنْهُ وَلَا يَنَامُ قَلْبُهُ. قَالَ عَمْرُو: سَمِعْتُ عُبَيْدَ بْنَ عَمْرِو يَقُولُ: (إِنَّ رُؤْيَا الْأَنْبِيَاءِ وَخِي) ثُمَّ قَرَأَ: هَوَانِي أَرَى فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ. [راجع: ١١٧]

तशरीह: बाब का तर्जुमा इससे निकला कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने वुजू किया और नमाज़ में शरीक हुए हालाँकि उस वक़्त वो नाबालिग़ लड़के थे आयते मज़क़ूर सूरह साफ़फ़ात में है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से कहा था कि मैंने ख़वाब में देखा कि तुझे ज़िबह कर रहा हूँ। यहाँ ख़वाब बर्मा' नी वद्व है साहिबे ख़ैर जारी लिखते हैं, वलम्मा कानत वद्वान लम यकुन नौमुहुम नौम ग़फ़लतिन मुदियतुन इललहदषि बल नौमु तनब्बुहिन वयत्तकुजिन व इन्तिबाहिन व इन्तिजारिन लिलवद्वहि' का ख़वाब भी वद्व है तो उनका सोना न ऐसी ग़फ़लत का सोना जिससे वुजू करना फ़र्ज़ लाज़िम आए बल्कि वो सोना महज़ होशियार होना और वद्व का इतिज़ार करने का सोना है।

860. हमसे इस्माईल बिन उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा से बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि (उनकी माँ) इस्हाक़ की दादी मुलैका (रज़ि.) ने रसूल (ﷺ) को खाने पर बुलाया जिसे उन्होंने आप (ﷺ) के लिये बतौर-जियाफ़त तैयार किया था। आप (ﷺ) ने खाना खाया फिर फ़र्माया चलो मैं तुम्हें नमाज़ पढ़ा दूँ। हमारे यहाँ एक बोरिया था जो पुराना होने की वजह से स्याह (काला) हो गया था। मैंने उसे पानी से साफ़ किया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हुए और (पीछे) मेरे साथ यतीम लड़का (जुमैरा बिन सअद) खड़ा हुआ। मेरी बूढ़ी दादी (मुलैका उम्मे सुलैम) हमारे पीछे खड़ी हुई। फिर आप (ﷺ) ने हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ: 380)

٨٦٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ جَدَّتَهُ مَلِكَةَ دَعَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِيُطْعِمَ صَغْتَهُ، فَكَانَ مِنْهُ فَقَالَ: ((قُومُوا فَلَا صَلَاتِي بِكُمْ)). فَقُمْتُ إِلَى خَصِيرٍ لَنَا قَدْ اسْوَدَّ مِنْ طَوْلٍ مَا لَبِثَ، فَطَضَخْتُهُ بِمَاءٍ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَعِيَ وَالْعَجُوزُ مِنْ وَرَائِي، فَصَلَّى بِنَا رَكَعَتَيْنِ. [راجع: ٣٨٠]

तशरीह: यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बताना चाहते हैं कि यतीम लफ़्ज़ से बचपन समझ में आता है क्योंकि बालिग़ को यतीम नहीं कहते। गोया एक बच्चा जमाअत में शरीक हुआ और नबी करीम (ﷺ) ने उस पर नापसंदीदगी का इज़हार नहीं फ़र्माया। इस हदीष से ये भी निकला कि दिन को नफ़ल नमाज़ ऐसे मौकों पर जमाअत से भी पढ़ी जा सकती है और

ये भी मा'लूम हुआ कि मकान पर नफ़ल वगैरह नमाज़ों के लिये कोई जगह खास कर लेना भी सही है। सहीह यही है कि हज़रत उम्मे मुलैका इस्हाक़ की दादी हैं, 'जज़म बिही जमाअतुन व सहहहुन्नववी' कुछ लोगों ने उन्हें अनस (रज़ि.) की दादी करार दिया है, इब्ने हज़र का यही क़ौल है।

861. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब जुहरी ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि मैं एक गधी पर सवार होकर आया। अभी मैं जवानी के करीब था (लेकिन बालिग़ न था) और आँहज़रत (ﷺ) मीना में लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। आप के सामने दीवार वगैरह (आड़) न थी। मैं सफ़्र के एक हिस्से के आगे से गुज़र कर उतरा। गधी चरने के लिये छोड़ दी और ख़ुद सफ़्र में शामिल हो गया। किसी ने मुझ पर ए'तिराज़ नहीं किया (हालाँकि मैं बालिग़ न था) (राजेअ: 76)

٨٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ : (أَقْبَلْتُ رَاكِبًا عَلَى حِمَارٍ أَنَا وَآنَا يَوْمَئِذٍ قَدْ نَاهَرَتْ الْإِخْلَامُ، وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي بِالنَّاسِ بَيْنِي إِلَى غَيْرِ جِدَارٍ، فَمَرَرْتُ بَيْنَ يَدَيْ بَعْضِ الصَّفِّ، فَتَرَلْتُ وَأَرْسَلْتُ الْأَنَانَ تَوْنَعُ، وَدَخَلْتُ فِي الصَّفِّ، فَلَمْ يُنْكِرْ ذَلِكَ عَلَيَّ أَحَدٌ). [راجع: ٧٦]

तशरीह: इस हदीस से भी इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब साबित किया है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) उस वक़्त नाबालिग़ थे, उनका सफ़्र में शरीक होना और वुजू करना नमाज़ पढ़ना साबित हुआ। ये भी मा'लूम हुआ कि बुलूग़त (जवान होने) से पहले भी लड़को को ज़रूर, ज़रूर नमाज़ की आदत डलवाना चाहिये। इसीलिये सात साल की उम्र से नमाज़ का हुक़म करना ज़रूरी है और दस साल की उम्र होने पर उनको धमकाकर भी नमाज़ का आदी बनाना चाहिये।

862. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे इर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक रात इशा में देर की और अयाश ने हमसे अब्दुल अअला से बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मअमर ने जुहरी से बयान किया, उनसे इर्वा ने, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशा में एक मर्तबा देर की, यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने आवाज़ दी कि औरतें और बच्चे सो गये। उन्होंने फ़र्माया कि फिर नबी करीम (ﷺ) बाहर आए और फ़र्माया कि (इस वक़्त) रुए-ज़मीन पर तुम्हारे सिवा और कोई इस नमाज़ को नहीं पढ़ता, उस ज़माने में मदीना वालों के सिवा और कोई नमाज़ नहीं पढ़ता था। (राजेअ: 566)

٧٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ : (أَعْتَمَ النَّبِيُّ ﷺ). قَالَ عِيَّاشٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : (أَعْتَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي الْعِشَاءِ حَتَّى نَادَاهُ عُمَرُ: قَدْ نَامَ النِّسَاءُ وَالصِّبْيَانُ) قَالَتْ : فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ : ((إِنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ يُصَلِّي هَذِهِ الصَّلَاةَ غَيْرَكُمْ. وَلَمْ يَكُنْ أَحَدٌ يَوْمَئِذٍ يُصَلِّي غَيْرَ

أَهْلِ الْمَدِينَةِ). [راجع: ٥٦٦]

इसलिये कि इस्लाम सिर्फ मदीना तक ही महदूद था, खास तौर से बा-जमाअत का सिलसिला मदीना ही में था।

इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस से बाब का मतलब यूँ निकाला कि उस वक़्त इशा की नमाज़ पढ़ने के लिये बच्चे भी आते रहते होंगे, तभी तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि औरतें और बच्चे सो गए। पस जमाअत में औरतों का बच्चों के साथ शरीक होना भी प्राबित हुआ, 'वज़ज़ाहिरू मिन कलामि उमर अन्नहू शाहदन्निसा अल्लाती हज़र्न फिल्मस्जिदि क़द निम्न व सिब्बानुहुन्न मअहुन्न.' (हाशिया बुखारी) या 'नी ज़ाहिरे कलामे उमर से यही है कि उन्होंने उन औरतों का मुशाहिदा किया जो मस्जिद में अपने बच्चों समेत नमाज़े इशा के लिये आई थीं और वो सो गई जबकि उनके बच्चे भी उनके साथ थे।

863. हमसे उमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ध़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझ से अब्दुरहमान बिन आबिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना और उनसे एक शख़्स ने ये पूछा था कि क्या तुमने (औरतों का) निकलना ईद के दिन आहज़रत (ﷺ) के साथ देखा है? उन्होंने कहा हाँ, देखा है। अगर मैं आप का रिश्तेदार-अज़ीज़ न होता तो कभी न देखता। (या) 'नी मेरी कमसिनी और क़राबत की वजह से आहज़रत मुझ को अपने साथ रखते थे) क़ज़ीर बिन सल्ल के मकान के पास जो निशान हैं, पहले वहाँ आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए, वहाँ आप (ﷺ) ने खुत्बा सुनाया फिर आप औरतों के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें भी वा'ज़ व नसीहत की। आप (ﷺ) ने उनसे ख़ैरात करने के लिये कहा। चुनाँचे औरतों ने अपने छल्ले और अंगूठियाँ उतार-उतार कर बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डालनी शुरू कर दी। आख़िर आप (ﷺ) बिलाल (रज़ि.) के साथ घर तशरीफ़ लाए। (राजेअ: 98)

٨٦٣ - حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَاصِمٍ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ لَهُ رَجُلٌ: شَهِدْتَ الْخُرُوجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْ لَا مَكَانِي مِنْهُ مَا شَهِدْتُهُ - يَحْيَى مِنْ صِفَرِهِ - ((الْعَلَمُ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيرِ بْنِ الصَّلْتِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ آتَى النِّسَاءَ فَوَعظَهُنَّ وَذَكَرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ أَنْ يَتَصَدَّقْنَ، فَجَعَلَتِ الْمَرْأَةُ تُهْرِي بِيَدِهَا إِلَى حَلَقِهَا تُلْقِي فِي ثَوْبِ بِلَالٍ، ثُمَّ آتَى هُوَ وَبِلَالٌ أَتَيْتُ)).

[راجع: ٩٨]

तशरीह: हज़रत इब्ने अब्बास कमसिन थे, बावजूद उसके ईद में शरीक हुए यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है और उससे औरतों का ईदगाह में जाना भी प्राबित हुआ। चुनाँचे अहनाफ़ के यहाँ ईदगाह में औरतों का जाना जाइज़ नहीं है, इसीलिये एक बुखारी शरीफ़ के देवबन्दी नुस्खे में तर्जुमा ही बदल दिया गया है। चुनाँचे वो तर्जुमा यूँ करते हैं कि 'उनसे एक शख़्स ने यूँ पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) के साथ आप ईदगाह गए थे। हालाँकि पूछा ये जा रहा था कि क्या तुमने ईद के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ औरतों का निकलना देखा है, उन्होंने कहा कि हाँ ज़रूर देखा है। ये बदला हुआ तर्जुमा देवबन्दी तफ़्हीमुल बुखारी पारा नं. 4 पेज नं. 32 पर देखा जा सकता है। ग़ालिबन ऐसे ही हज़रत के लिये कहा गया है कि खुद बदलते नहीं कुआँन को बदल देते हैं। वफ़ाक़नल्लाहु लिमा युहिबु व यज़ा आमीन।

बाब 162 : औरतों का रात में और

(सुबह के वक़्त) अंधेरे में मस्जिद में जाना

١٦٢ - بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ إِلَى

الْمَسَاجِدِ بِاللَّيْلِ وَالْعَلَسِ

864. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से खबर दी, उन्होंने कहा कि मुझे इर्वा बिन यज़ीद ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया, आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मर्तबा इशा की नमाज़ में इतनी देरी की कि इमर (रज़ि.) को कहना पड़ा कि औरतें और बच्चे सो गये। फिर नबी करीम (ﷺ) (हुज्रे से) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि देखो रूए-ज़मीन पर इस नमाज़ का (इस वक़्त) तुम्हारे सिवा और कोई इन्तिज़ार नहीं कर रहा है। उन दिनों मदीना के सिवा और कहीं नमाज़ नहीं पढ़ी जाती थी और लोग इशा की नमाज़ शफ़क़ डूबने के बाद से रात की पहली तिहाई गुज़रने तक पढ़ा करते थे।

(राजेअ : 566)

٨٦٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: (أَعْتَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْعَمَةِ حَتَّى نَادَاهُ عُمَرُ: نَامَ النِّسَاءُ وَالصِّبْيَانُ)، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا يَنْتَظِرُهَا أَحَدٌ غَيْرُكُمْ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ)). وَلَا يُصَلِّي يَوْمَئِذٍ إِلَّا بِالْمَتَرَيْنِ، وَكَانُوا يُصَلُّونَ الْعَمَةَ فِيمَا بَيْنَ أَنْ يَغِيْبَ الشَّفَقُ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ الْأَوَّلِ.

[راجع : ٥٦٦]

तशरीह : मा' लूम हुआ कि औरतें भी नमाज़ के लिये हाज़िर थीं, तभी तो हज़रत इमर (रज़ि.) ने ये जुम्ला बाआवाज़े बुलन्द फ़र्माया ताकि आप (ﷺ) तशरीफ़ लाएँ और नमाज़ पढ़ाएँ। बाब का तर्जुमा इसी से निकलता है कि औरतें और बच्चे सो गए क्योंकि इससे मा' लूम होता है कि औरतें भी रात को नमाज़े इशा के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उसके बाद जो हदीष इमाम बुखारी (रह.) ने बयान की उससे भी यही निकलता है कि रात को औरत मस्जिद में जा सकती है। दूसरी हदीष में है कि अल्लाह की बन्दियों को मस्जिद में जाने से न रोको, ये हदीषें इसको ख़ास करती हैं या'नी रात को रोकना मना है। अब औरतों का जमाअत में आना मुस्तहब है या मुबाह इसमें इख़ितलाफ़ है। कुछ ने कहा जवान औरत को मुबाह है और बूढ़ी को मुस्तहब है। हदीष से ये भी निकला कि औरतें ज़रूरत के लिये बाहर निकल सकती हैं। इमाम अबू हनीफ़ा ने कहा कि मैं औरतों का जुम्मे में आना मकरूह जानता हूँ और बुढ़िया इशा और फ़ज़्र की जमाअत में आ सकती है और नमाज़ों में न आए और अबू यूसुफ़ ने कहा बुढ़िया हर एक नमाज़ के लिये मस्जिद में आ सकती है और जवान का आना मकरूह है। कस्तलानी (मौलाना वहीदुज़्जमौ मरहूम) हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का क़ौल ख़िलाफ़े हदीष होने की वजह से हुज्जत नहीं जैसा कि ख़ुद हज़रत इमाम की वसिय्यत है कि मेरा क़ौल ख़िलाफ़े हदीष हो तो छोड़ दो।

865. हमसे अबैदुल्लाह बिन मूसा ने हन्ज़ला बिन अबी सुप्रथान से बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन इमर ने, उनसे उनके बाप इब्ने इमर (रज़ि.) ने, वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते थे कि आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी बीवियाँ तुमसे रात में मस्जिद आने की इजाज़त माँगे तो तुम लोग उन्हें इसकी इजाज़त दे दिया करो।

अबैदुल्लाह के साथ इस हदीष को शुअबा ने भी आ'मश से रिवायत किया, उन्होंने मुजाहिद से, उन्होंने इब्ने इमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

(दीगर मक़ामात : 873, 899, 900, 5238)

٨٦٥- حَدَّثَنَا غَيْثُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ حَنْظَلَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَكُمْ نِسَاءُكُمْ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسْجِدِ فَأَذِنُوا لَهُنَّ)).

تَابَعَهُ شُعْبَةُ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[أطرافه في : ٨٧٣, ٨٩٩, ٩٠٠]

बाब 163 : लोगों का नमाज़ के बाद इमाम के उठने का इन्तिज़ार करना

866. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्मान बिन इमर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें यूसुस बिन यज़ीद ने जुहरी से खबर दी, उन्होंने कहा कि मुझे हिन्द बिनत हारिष ने खबर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोज़: मुतहहरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने उन्हें खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में औरतें फ़र्ज नमाज़ से सलाम फेरने के फौरन बाद (बाहर आने के लिये) उठ जाती थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) और मर्द नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठे रहते। जब तक अल्लाह को मन्ज़ूर होता। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उठते तो दूसरे मर्द भी खड़े हो जाते।

इस हदीस से भी औरतों का जमाअत में शरीक होना श्राबित हुआ।

867. हमसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा क़अम्बी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से बयान किया। (दूसरी सनद) और हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक (रह.) ने यह्या बिन सईद अन्सारी से खबर दी, उन्हें इमर बिनत अब्दुरहमान ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ लेते फिर औरतें चादर में लिपट कर (अपने घरों को) वापस हो जाती थी। अंधेरे से उनकी पहचान न हो सकती।

(राजेअ : 372)

868. हमसे मुहम्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा कि हमसे बिश्र बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम औज़ाई ने खबर दी, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी क़रीर ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अन्सारी ने, उनसे उनके वालिद अबू क़तादा अन्सारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं नमाज़ के लिये खड़ा होता हूँ, मेरा इरादा ये होता है कि नमाज़ लम्बी करूँ लेकिन किसी बच्चे के

۱۶۳- بَابُ انْتِظَارِ النَّاسِ قِيَامَ

الإمام العالم

۸۶۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمرَ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي هِنْدُ بِنْتُ الْحَارِثِ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا ((أَنَّ النَّسَاءَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ كُنَّ إِذَا سَلِمْنَ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ قُمْنَ وَتَبَتِ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَمَنْ صَلَّى مِنَ الرِّجَالِ مَا شَاءَ اللَّهُ، فَإِذَا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَامَ الرِّجَالُ)).

۸۶۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَرَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيُصَلِّي الصُّبْحَ فَيَنْصَرِفُ النَّسَاءَ مُتَلَفَعَاتٍ يَمْرُوهُنَّ مَا يُغْفَلْنَ مِنَ الْغَلَسِ)).

[راجع: ۳۷۲]

۸۶۸- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرٌ قَالَ أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ الْأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنِّي لِأَقُومُ إِلَى الصَّلَاةِ

रोने की आवाज़ सुनकर नमाज़ को मुख़्तस़र (छोटी) कर देता हूँ
कि मुझे उसकी माँ को तकलीफ़ देना बुरा मा'लूम होता है।
(राजेअ : 707)

وَأَنَا أَرِيدُ أَنْ أَطَوِّلَ فِيهَا، فَاسْتَعْبَكَا
الصَّبِيَّ فَاتَّخَذُوهُ فِي صَلَاتِي كِرَامِيَةً أَوْ
أَشَقَّ عَلَى أُمِّهِ. [راجع : ٧٠٧]

फ़तजव्वज़ु अय फ़ख़फ़ क़ाल इब्नु साबित अत्तजव्वज़ु हाहुना युरादु बिही तकलीलुल क़िराति वदलीलु अलैहि
मा रवाहु इब्नु अबी शैबत अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) क़रअ फ़िरकअतिल बिसूरतिन नहवसित्तीन आयतन फ़समिअ
बुकाअ सबिथ्यिन फ़क़रअ फ़िफ़ानिध्यति बिग़लाषि आयातिन व मुताबकतुल हदीषि लिचर्जुमति तुफ़हमु मिन
क़ौलिही कराहियतुन अन अशहू अला उम्मतिन लिअन्नहू यदुल्लु अला हुज़ूरिन्निसाइ इलल मसाजिदि
मअन्नबिथ्यि (ﷺ) व हुब अअम्मु मिन अय्यकून बिल्लैलि औ बिन्नहारि क़ालहुल ऐनी. (हाशिया बुखारी शरीफ़,
पेज नं. 120) या'नी यहाँ तख़फ़ीफ़ (कमी) करने से क़िरअत में तख़फ़ीफ़ मुराद है जैसा कि इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है
कि आँहज़रत (ﷺ) ने पहली रकअत में तक्रीबन साठ आयतें पढ़ी थी जब किसी बच्चे का रोना मा'लूम हुआ तो दूसरी रकअत
में आपने सिर्फ़ तीन आयतों पर इक्तिफ़ा फ़र्माया और बाब व हदीष में मुताबकत इससे ये है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं
औरतों की तकलीफ़ को मकरूह जानता हूँ। मा'लूम हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) के साथ औरतें मसाजिद में आया करती थीं।
रात हो या दिन ये आम है।

869. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा
कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने यह्या बिन सईद से ख़बर दी, उनसे
अम्रा बिनत अब्दुरह्मान ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने,
उन्होंने फ़र्माया कि आज औरतों में जो नई बात पैदा हो गई है, अगर
रसूलुल्लाह (ﷺ) उन्हें देख लेते तो उनको मस्जिद में आने से रोक
देते, जिस तरह बनी इस्राईल की औरतों को रोक दिया गया था।
मैंने पूछा क्या बनी इस्राईल की औरतों को रोक दिया गया था?
आपने फ़र्माया कि हाँ।

٨٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ:
أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ
عُمَرَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: (لَوْ أَدْرَاكَ رَسُولُ
اللَّهِ ﷺ مَا أَخَذَتِ النِّسَاءُ لَمَنَعَهُنَّ
الْمَسْجِدَ كَمَا مَنَعَتْ إِسْرَائِيلَ).
قُلْتُ لِعُمَرَ: أَوْ مَنَعْنَ؟ قَالَتْ: نَعَمْ.

तशरीह : हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं कि इससे ये नहीं निकलता है कि हमारे ज़माने में औरतों का मस्जिद में जाना मना है
क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने न ये ज़माना पाया न मना किया और शरीअत के अहक़ाम किसी के क़यास और राय
से नहीं बदल सकते। मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम फ़र्माते हैं कि ये उम्मुल मोमिनीन की राय थी कि अगर आँहज़रत (ﷺ) ये
ज़माना पाते तो ऐसा करते और शायद उनके नज़दीक औरतों का मस्जिद में जाना मना होगा। इसलिये बेहतर ये है कि फ़साद
और फ़िल्से का ख़याल रखा जाए और इससे परहेज़ किया जाए क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने भी ख़ुशबू लगाकर और ज़ीमत करके
औरतों को निकलने से मना किया। इसी तरह रात की कैद भी लगाई और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने जब ये हदीष
बयान की कि अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों में जाने से न रोको तो उनके बेटे वाकिद या बिलाल ने कहा कि हम
तो रोकेंगे। अब्दुल्लाह ने उनको एक घूँसा लगाया और सख़्त सुस्त कहा और एक रिवायत में यूँ है कि मरने तक बात न की और
यही सज़ा है उस नालायक़ की जो आँहज़रत (ﷺ) की हदीष सुनकर सर न झुकाए और अदब के साथ तस्लीम न करे। वकीअ
ने कहा कि शिआर या'नी कुर्बानी के ऊँट का कोहान चीरकर ख़ून निकाल देना सुन्नत है। एक शख्स बोला अब हनीफ़ा तो इसको
मुषला कहते हैं। वकीअ ने कहा तू इस लायक़ है कि कैद रहे जब तक तू तौबा न करे, मैं तो आँहज़रत (ﷺ) की हदीष बयान
करता हूँ और तू अब हनीफ़ा का क़ौल लाता है। इस रिवायत से मुकल्लिदीने बेइस्साफ़ को सबक़ लेना चाहिये। अगर उमर फ़ारूक़
(रज़ि.) ज़िन्दा होते और उनके सामने कोई हदीष के ख़िलाफ़ किसी मुत्तहिद का क़ौल लाता तो गर्दन मारने का हुक्म देते अरे
लोगों! हाय ख़राबी!! ये ईमान है या कुफ़्र कि पैग़म्बर का फ़र्मादा सुनकर फिर दूसरों की राय और क़यास को उसके ख़िलाफ़

मंजूर करते हो तुम जानो अपने पैगम्बर को जो जवाब क़यामत के दिन देना हो वो दे लेना। वमّا अलैना इल्लल बलाग़ (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)

बाब 164 : औरतों का मर्दों के पीछे

नमाज़ पढ़ना

870. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने जुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिनत हारिष ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं और आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। जुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था ताकि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

871. हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारी पीछे थीं। (राजेअ: 380)

बाब 165 : सुबह की नमाज़ पढ़कर औरतों का जल्दी से चला जाना और मस्जिद में कम ठहरना

872. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा कि हमसे फुलैज बिन सुलैमान ने अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम से बयान किया, उनसे उन के बाप (क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बकर) ने उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ मुँह अंधेरे पढ़ते थे। मुसलमानों की औरतें जब (नमाज़ पढ़कर) वापस होतीं तो अंधेरे की वजह से उनकी पहचान न होती या वो एक दूसरे को न

١٦٤ - بَابُ صَلَاةِ النِّسَاءِ خَلْفَ

الرِّجَالِ

٨٧٠ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدَ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِينَ يَقْضِي تَسْلِيمَهُ، وَيَمْكُثُ هُوَ فِي مَقَامِهِ يَسِيرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَ: نَرَى - وَاللَّهِ أَغْلَمَ - أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يَذْرُكَهُنَّ الرِّجَالُ.

٨٧١ - حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: (صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِ أُمِّ سَلِيمٍ فَقَمْتُ وَتَيَّمْتُ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سَلِيمٍ خَلْفَتَا).

[راجع: ٣٨٠]

١٦٥ - بَابُ سُرْعَةِ انْصِرَافِ النِّسَاءِ

مِنَ الصُّبْحِ وَقَلِيلَ مَقَامِهِنَّ فِي

الْمَسْجِدِ

٨٧٢ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي الصُّبْحَ بِفَلَسٍ فَيَنْصَرِفْنَ نِسَاءَ الْمُؤْمِنِينَ لَا يَعْرِفْنَ مِنَ الْفَلَسِ، أَوْ

पहचान सकती। (राजेअ: 382)

لَا يَغْرِفُ بَغْضُهُنَّ بَغْضًا)). [راجع: 372]

तशरीह: नमाज़ खत्म होते ही औरतें वापस हो जाती थीं इसलिये उनकी वापसी के वक़्त भी इतना अँधेरा रहता था कि एक-दूसरी को पहचान नहीं सकती थी। लेकिन मर्द फ़ज्र के बाद आम तौर से नमाज़ के बाद मस्जिद में कुछ देर के लिये ठहरते थे। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) को अल्लाह पाक ने इज्तिहाद का दर्ज-ए-कामिल अता फ़र्माया था। इसी आधार पर आपने अपनी जामिउलसहीह में एक-एक हदीष से बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया है। हदीषे मज़कूर पीछे भी कई बार ज़िक्र हो चुकी है। हज़रत इमाम ने इससे फ़ज्र की नमाज़ अब्बले वक़्त ग़लस (अंधेरे) में पढ़ने का इफ़्बात फ़र्माया है और यहाँ औरतों का शरीके जमाअत होना और सलाम के बाद उनका फ़ौरन मस्जिद से चले जाना वग़ैरह मसाइल बयान फ़र्माएँ हैं। ता'ज़ुब है उन अक्ल के दुश्मनों पर जो हज़रत इमाम जैसे मुज्ताहिदे मुत्तलक की दिरायत का इन्कार करते हैं और आपको सिर्फ़ रिवायात का इमाम तस्लीम करते हैं। हालाँकि रिवायत और दिरायत दोनों में आपकी महारते ताम्मा श्राबित है और मज़ीद ख़ूबी ये है कि आपकी दिरायत व तफ़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ कुआन और हदीष पर है, राय और क़यास पर नहीं। जैसा कि दूसरे अइम्म-ए-मुज्ताहिदीन में से कुछ हज़रत का हाल है जिनके तफ़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ राय और क़यास पर है। हज़रत इमामे बुखारी (रह.) को अल्लाह ने जो मुक़ाम अता फ़र्माया था वो उम्मत में बहुत कम लोगों के हिस्से में आया है। अल्लाह ने आपको पैदा ही इसलिये फ़र्माया था कि शरीअते मुहम्मदिया को कुआनो-सुन्नत की बुनियाद पर इस दर्जा मुज़बित फ़र्माएँ कि क़यामत के लिये उम्मत इससे बेनियाज़ होकर बेघड़क शरीअत पर अमल करती रहे। आयते शरीफ़ा, 'व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यलहकू बिहिम' (अल जुम्आ 3) की मिस्ताक़ बेशक व शुब्हा इन्हीं मुहदिषीने किराम (रह.) अज्मईन की जमाअत है।

बाब 166 : औरत मस्जिद में जाने के लिये अपने ख़ाविन्द से इजाज़त ले

873. हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे जुहरी ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर ने, उनसे उनके बाप ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है कि आपने फ़र्माया कि जब तुम में से किसी की बीवी (नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद में आने की) उससे इजाज़त माँगे तो शौहर को चाहिये कि उसको न रोके। (राजेअ: 865)

١٦٦ - بَابُ اسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ

رَوْجَهَا بِالْخُرُوجِ إِلَى الْمَسْجِدِ

٨٧٣ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَرْبُودُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ مَقْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَأْذَنْتِ امْرَأَةً أَحَدَكُمْ فَلَا يَمْنَعُهَا)).

[راجع: ٨٦٥]

तशरीह: इजाज़त दे इसलिये कि बीवी कोई हमारी लौण्डी नहीं है हमारी तरह वो भी आज़ाद है सिर्फ़ निकाह के मुआहिदे की वजह से वो हमारे मातहत है। शरीअते मुहम्मदी में औरत और मर्द के (इन्सानी) हुकूक बराबर तस्लीम किये गए हैं। अब अगर इस ज़माने के मुसलमान अपनी शरीअत के बरखिलाफ़ औरतों को कैदी और लौण्डी बनाकर रखें तो उसका इल्ज़ाम उन पर है न कि शरीअते मुहम्मदी पर। जिन पादरियों ने शरीअते मुहम्मदी को बदनाम किया कि इस शरीअत में औरतों को मुत्तलक आज़ादी नहीं, उनकी नादानी है। (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम)

हन्फ़िया के यहाँ मसाजिद में नमाज़ के लिये औरतों का आना दुस्त नहीं है इस सिलसिले में उनकी बड़ी दलील हज़रते आइशा (रज़ि.) की हदीष है जिनके अल्फ़ाज़ ये हैं क़ालत लौ अदरकन्नबिय्यु (ﷺ) मा अहदषन्निसाउ लमन अहुन्नल्मस्जिद कमा मुनिअत निसाउ बनी इस्राईल अखरजहुशैखानिया'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) उन चीज़ों को पा लेते जो आज औरतों ने ईजाद कर ली है तो आप उनको मसाजिद आने से मना फ़र्मा देते जैसा कि बनी इस्राईल की औरतों को रोक दिया गया था। इसके जवाब में अल मुहदिषुल कबीर अल्लामा अब्दुलहमान मुबारकपुरी (रह.) अपनी मशहूर किताब

इब्कारुल मिनन फ़ी तन्कीदी आषारिस्सुनन पेज नं. 101 पर फ़र्माते हैं, लायतरत्तबु अला ज़ालिकत गय्युरिल हुक्मि लिअन्नहा अल क़तुहु अला शर्ति लम यूजद बिनाअन अला ज़न्निन ज़न्नतहु फ़क़ालत लौ राअ लमनअ फ़युक़ालु लम यरा व लम यमनअ फ़स्तमरलहुक्मु हत्ता अन्न आइशत लम तुसरिह बिन मनइ व इन कान कलामुहा युशइरु बिअन्नहा कानत तरा अल्मन्अ य अयज़न फ़क़द अलिमुल्लाहु सुब्हानहु मा सयदिन्न फ़मा औहा इला नबिथ्यिही बिमन्इहिन्न व लौ कान मा अहदन्न यस्तल्लिजु मनअहुन्न मिनल मसाजिद लकान मनअहुन्न मिन ग़ैरिहा कल्अस्वाक़ औला व अयज़न फ़लअहदाषु इन्नम वक़अ मिन बअज़िन्निसाइ ला मिन जमीइहिन्न फ़इन्न तअय्युनल मनइ फ़ल्यकुन लम अहदषतक़ालुहुल हाफ़िज़ फ़ी फ़तहिल्बारी (जिल्द 1 स. 471) व क़ाल फ़ीहि वल्औला अय्यन्जुर इला मा यग़शा मिन्हुल फ़साद फ़यज्जनिबु लिइशारति ॥ इला ज़ालिक बिमनइत्ततयुब्बि वज़्जीनति व क़ज़ालिकत्तक़ईदि बिल्लैलि इन्तिहा. इस इबारत का खुलासा ये है कि इस कौले आइशा (रज़ि.) के आधार पर मसाजिद में औरतों की हाज़िरी का हुक्म नहीं बदल सकता। इसलिये कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उसे जिस शर्त के साथ मुअल्लक़ फ़र्माया वो पाई नहीं गई। उन्होने ये गुमान किया कि अगर आँहज़रत (रज़ि.) देखते तो मना फ़र्मा देते, पस कहा जा सकता है न आपने देखा न मना फ़र्माया। पस हुक्मे नबवी अपनी हालत में जारी रहा। यहाँ तक कि खुद हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी मना की सराहत नहीं फ़र्माई। अगरचे उनके कलाम से मना के लिये इशारा निकलता है और ये भी है कि अल्लाह पाक को ज़रूर मा' लूम था कि आइन्दा औरतों में क्या-क्या नए उमूर पैदा होंगे मगर फिर भी अल्लाह पाक ने अपने रसूले करीम (ﷺ) की तरफ़ औरतों को मसाजिद से रोकने के बारे में बहाना ज़िल नहीं फ़र्माई। और अगर औरतों की नई-नई बातों की इजाद पर उनको मसाजिद से रोकना लाज़िम आता तो मसाजिद के अलावा दूसरे मुकामात बाज़ार वग़ैरह से भी उनको ज़रूर-ज़रूर मना किया जाता। और ये भी है कि नए नए उमूर का इहदास कुछ औरतों से वक़ूअ में आया न कि सब औरतों की तरफ़ से। पस अगर मना करना ही मुतअय्यिन होता तो सिर्फ़ उन्हीं औरतों के लिये होना था जो इहदास की मुर्तकिब होती हों। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने फ़तुल बारी में ऐसा फ़र्माया है और ये भी कहा है कि बेहतर ये है कि इन उमूर पर ग़ौर किया जाए जिनसे फ़साद का डर हो। पस इनसे परहेज़ किया जाए जैसा कि आँहज़रत (रज़ि.) का इशार्द है कि औरतों के लिये खुशबू लगा करके या ज़ेबो-ज़ीनत करके निकलना मना है। इसी तरह रात की भी कैद लगाई गई। मक्क़द ये है कि हन्फ़िया का कौले आइशा (रज़ि.) के आधार पर औरतों को मसाजिद से रोकना दुरुस्त नहीं है और औरतें शरई कायदों के तहत मसाजिद में जाकर नमाज़ बा-जमाअत में शिर्कत कर सकती है। ईदगाह में उनकी हाज़िरी के लिये खुसूसी ताक़ीद की है जैसा कि अपने मुक़ाम पर मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) बयान किया गया है।

बनी इस्राईल की औरतों की मुखालफ़त के बारे में हज़रत मौलाना मरहूम फ़र्माते हैं, 'कुल्लु मुनिअन्निसाउल्मसाजिद कान फ़ी बनी इस्राईल शुम्म अबाहल्लाहु लहुन्नल्लुख़ु इलल्मसाजिदि लिउम्मति मुहम्मद (ﷺ) बिबअिज़ल्कुयूदि कमा क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ)' (इवाला मज्कूर) या 'नी मैं कहता हूँ कि औरतों को बनी इस्राईल के दौर में मसाजिद से रोक दिया गया था। फिर उम्मत मुहम्मदी (ﷺ) में उसे कुछ पाबन्दियों के साथ मुबाह कर दिया गया जैसा कि फ़र्माने रिसालत है कि रात में जब औरतें तुमसे मसाजिद में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त मांगे तो तुम उनको इजाज़त दे दो। और फ़र्माया कि अल्लाह की मसाजिद से अल्लाह की बन्दियों को मना न करो जैसा कि यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने सराहत के साथ बयान किया है।

बुखारी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की मरबियात बक़्शरत आई है इसलिये मुनासिब होगा कि क़ारेइने किराम को इन बुजुर्गों के मुख्तसर हालाते जिंदगी से वाकिफ़ कर दिया जाए ताकि इन हज़रात की जिंदगी हमारे लिये भी मशअले राह बन सके। यहाँ भी अनेक अहादीष इन हज़रात से मरवी हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) :

हुज़ूर नबी-ए-करीम (ﷺ) के चचाज़ाद भाई थे। वालिदा गिरामी का नाम उम्मे फ़ज़ल लुबाबा और बाप का नाम हज़रत अब्बास था। हिज़रत से पहले सिर्फ़ तीन साल पहले उस इहाता में पैदा हुए जहाँ हुज़ूर नबी-ए-करीम अपने तमाम ख़ानदान वालों के साथ कैदे मिह्न में महसूर थे। आपकी वालिदा गिरामी बहुत पहले ईमान ला चुकी थीं और ग़ौ आपका इस्लाम लाना फ़त्हे मक्का के बाद का वाकिआ बताया जाता है। ताहम एक मुस्लिम माँ की आगोश में आप इस्लाम से पूरी तरह मानूस (परिचित)

हो चुके थे और पैदा होते ही हुजूर नबी करीम (ﷺ) का लुआबे दहन आपके मुँह में पड़ चुका था। बचपन ही से आपको हुजूर नबी करीम (ﷺ) से इस्तिफ़ाज़ा व मोहबत का मौक़ा मिला और अपनी ख़ाला उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) के यहाँ आते और हुजूर (ﷺ) की दुआएँ लेते रहे। उसी उम्र में कई बार हुजूर (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ने का भी इतिफ़ाक़ हुआ।

अभी तेरह ही साल के थे हुजूर (ﷺ) ने रहलत फ़र्माई। अहद फारूकी में सित्रे शबाब (जवानी) को पहुँचकर उस दौर की इल्मी सुहबतों में शरीक हुए और अपने जौहरे दिमाग़ का मुजाहिदा (प्रदर्शन) करने लगे। हज़रत उमर (रज़ि.) आपको शूयूख़े बद्र के साथ बिठाया करते थे और बराबर हिम्मत अफ़जाई करते। पेचीदा मसाइल हल कराते और जिहानत की दाद देते थे। 17 हिजरी में ये आलम हो गया था कि जब मुहिमे मिस्र में शाहे अफ़्रीका जर्जिया से मुक़ालमा (Debate) हुआ तो वो आपकी काबिलियते इल्मी देखकर हैरान रह गया था। 25 हिजरी में आप अमीरुल हज्ज बनाकर मक्का मुअज्जमा भेजे गए और आपकी ग़ैर मौजूदगी ही में हज़रत उम्मान (रज़ि.) की शहादत का वाकिआ हाइला पेश आ गया।

इल्मो फ़ज़ल में आपका मर्तबा बहुत बुलन्द है। एक वहीदुल अज़र और यगाना रोज़गार हस्ती थे। कुआन, तफ़सीर, हदीष, फ़िक़ह, अदब, शाइरी आयते कुआनी के शाने नुजूल और नासिख़ व मन्सूख़ में अपनी नज़ीर रखते थे। एक बार शक्कीक़ ताबेई के बयान के मुताबिक़ हज्ज के मौक़े पर सूरह नूर की तफ़सीर जो बयान की वो इतनी बेहतर थी कि अगर उसे फ़ारस और रोम के लोग सुन लेते तो यकीनन इस्लाम ले आते। (मुस्तदरके हाकिम)

कुआनि करीम की फ़हम में बड़े-बड़े सद्दाबा से बाज़ी ले जाते थे। तफ़सीर में आप हमेशा जामेअ और कराईने अक्ल मफ़हूम को इख़्तियार किया करते थे। सूरह कौषर में लफ़्ज़े कौषर की मुख़्तलिफ़ तफ़ासीर की गई मगर आपने उसे ख़ैरे-क़षीर से ता'वीर किया। कुआनि करीम की आयते पाक, ला तह्सबन्नज़ज़ीन यफ़रहून बिमा अतव (आले इमरान, 188) अल्ख़ या'नी 'जो लोग अपने किये पर खुश होते हैं और जो नहीं किया है उस पर ता'रीफ़ चाहते हैं ऐसे लोगों की निस्बत हर्गिज़ ये ख़याल न करो कि वो अज़ाब से बच जाएँगे बल्कि उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।' ये चीज़ फ़ितरते इंसानी के ख़िलाफ़ है और बहुत ही कम लोग इस ज़ब्बे से ख़ाली नज़र आते हैं। मुसलमान इस पर परेशान थे आख़िर मरवान ने आपको बुलाकर पूछा कि हममें से कौन है जो इस ज़ब्बे से ख़ाली है। फ़र्माया हम लोगों से उसका कोई रिश्ता नहीं; नीज़ बताया ये उन अहले किताब के बारे में है जिनसे हुजुरे करीम (ﷺ) ने किसी अम्र के बारे में इस्तिफ़सार किया उन्होंने असल बात को जो उनकी किताब में थी छिपाकर एक फ़र्ज़ी जवाब दे दिया और उस पर खुशनुदी के तालिब हुए और अपने इस चालाकी पर मसरूर (खुश) हुए। हमारे नज़दीक़ आम तौर पर इसका ये मा'ना भी हो सकते हैं कि जो लोग खुफ़िया तौर पर दरपे आज़ाद रहते हैं। बज़ाहिर हमदर्द बनकर जड़ें काटते रहते हैं और मुँह पर ये कहते हैं कि हमने फ़लाँ ख़िदमत की, फ़लाँ एहसान किया और उस पर शुक्रिये के तालिब होते हैं और अपनी चालाकी पर खुश होते हैं और दिल में कहते हैं कि ख़ूब बेवकूफ़ बनाया। वो लोग अज़ाबे इलाही से हर्गिज़ नहीं बच सकते कि ये एक फ़रेब है।

इल्मे हदीष के भी असातीन समझे जाते थे। 1660 अहदीष आपसे मरवी है। अरब के गोशा-गोशा में पहुँचकर खुर्मने इल्म का ढेर लगा लिया। फ़िक़हो-फ़राइज़ में भी यगाना हैथियत हासिल थी। अबूबक्र मुहम्मद बिन मूसा (ख़लीफ़ा मामून रशीद के पोते) ने आपके फ़तावा भी जिल्दों में जमा किये थे। इल्मे फ़राइज़ और हि़साब में भी मुमताज़ (श्रेष्ठ) थे। अरबों में शाइरी लाज़िमे-शराफ़त समझी जाती थी बिल खुसूस कुरैश की आतिश बयानी तो मशहूर थी। आप शे'र गोई के साथ फ़ज़ीह भी थे। तक्रीर इतनी शीरी होती थी कि लोगों की जुबान से बेसाख़्ता मरहबा निकल जाता था। गर्ज़ ये कि आप इस अहद के तमाम इल्म के मुंतही और फ़ाज़िले अजल थे।

आपका मदरसा था हल्क-ए-दर्स बहुत वसीअ और मशहूर था और दूर-दूर से लोग आते थे और अपने दिलचस्पी और मज़ाक़ के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ इल्म की तहसील करते। मकान के सामने इतना मजमा होता था कि आना-जाना बन्द हो जाता था। अबू सालेह ताबेई का बयान है कि आपकी इल्मी मजलिस वो मजलिस थी कि अगर सारा कुरैश इस पर फ़ख़ करे तो जाइज़ है। हर फ़न के तालिब व साइल बारी-बारी आते और आपसे तसल्लीबख़्श जवाब पाकर वापस लौटते। वाजेह रहे कि उस वक़्त तक किताबी ता'लीम का रिवाज न था और न किताबें मौजूद थीं। इल्मो-फ़ुनून का इहि़सार सिर्फ़ हाफ़ज़ा

(यादाश्त) पर था। अल्लाह ने उस ज़माने की जरूरतों के मुताबिक लोगों के हाफ़िज़े भी इतने कच्ची (मज़बूत) कर दिये थे कि आज उसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। एक-एक शख्स को दस-दस, बीस-बीस हजार अहादीष और अशआर का याद कर लेना तो एक आम तूल उरूद वाकिआ था। सात-सात और आठ-आठ लाख अहादीष के हाफ़िज़ मौजूद थे जिन्हें हाफ़िज़े के साथ फ़हमो-जहानत से भी हिस्सा मिला था। वो मतलअे अनवार बन जाते थे। आज दो हजार अहादीष का हाफ़िज़ भी बमुश्किल ही से कहीं नज़र आते हैं और हमें उस ज़माने के बुजुर्गों के हाफ़िज़े की दास्तानें अफ़साना (क़िस्से-कहानियाँ) मा'लूम होती हैं। सफ़रो-हज़र हर हालत में फ़ैज़ रसानी का सिलसिला ज़ारी था और तालिबाने हुज़ूम का एक सैलाब उमड़ा रहता था।

नौ मुसलमानों की ता'लीम व तल्कीन के लिये आपने मख़सूस तर्जुमान (प्रतिनिधि) मुकर्रर कर रखे थे ताकि उन्हें अपने सवाल में ज़हमत न हो। ईरान व रोम तक से लोग ज़ूक-दर-ज़ूक चले आते थे, शागिर्दों की ता'दाद हज़ारों तक पहुँच चुकी थी और उनमें क़सूरत उन बुजुर्गों की थी जो हाफ़िज़ा के साथ साथ फ़हमो-फ़रासत और ज़िहानत के हाਮिल थे। इल्मी मुजाकरों के दिन मुकर्रर थे। किसी रोज़ लड़ाइयों के वाकिआत का तज़क़िरा करते। किसी दिन शे'रो-शाइरी का चर्चा होता। किसी दिन तफ़सीर कुआन पर रोशनी डालते। किसी रोज़ फ़िक़ह का दर्स देते। किसी दिन अय्याम अरब की दास्तान सुनाते। बड़े से बड़ा आलिम भी आपकी सुहबत में बैठता, उसकी गर्दन भी आपके कमाले इल्म के सामने झुक जाती।

तमाम जलीलुल क़दर सहाबा किराम (रज़ि.) को आपकी कमसिनी के बावजूद आपके फ़ज़लो इल्म का ए'तिराफ़ था। हज़रत फ़ारूके अज़म आपके ज़हन-रसा की ता'रीफ़ में हमेशा रत्बुल्लिसान रहे। हज़रत ताऊस यमानी फ़र्माया करते थे कि मैंने पाँचों सहाबा को देखा। उनमें जब किसी मसले पर इख़ितलाफ़ हुआ तो आख़री फैसला आप ही की राय पर हुआ। हज़रत कासिम बिन मुहम्मद का बयान है कि आप से ज़्यादा किसी का फ़त्वा सुन्नते नबवी के मुशाबेह नहीं देखा। हज़रत मुजाहिद ताबेई कहा करते थे कि हमने आपके फ़त्वा से बेहतर किसी शख्स का फ़त्वा नहीं देखा। एक बुजुर्ग ताबेई का बयान है कि मैंने आपसे ज़्यादा सुन्नत का आलिम साइबुराय और बड़ा दक्कीकुन नज़र किसी को नहीं पाया। हज़रत उबैद इब्ने कअब भी बहुत बड़े आलिम थे। उन्होंने इब्तिदा ही में आपकी ज़िहानत व तबाई देखकर फ़र्मा दिया था कि एक दिन यह शख्स उम्मत का ज़बरदस्त आलिम और फ़ाज़िल होगा।

तमाम मुआस्सिरीन (समकालीन लोग) आपकी हद दर्ज़ा इज़्ज़त करते थे। एक बार आप सवार होने लगे तो हज़रत ज़ैद बिन स़ाबित ने पहले तो आपकी रक्बाब थाम ली और फिर बढ़कर हाथ चूमे।

नबी करीम (ﷺ) की ज़ाते करीम से ग़ैर मामूली शैफ़तगी व गरवीदगी हासिल थी। हुज़ूर की बीमारी की कर्ब और वफ़ात की हालत याद होती तो बेकरार हो जाते। रोते और कई बार इस क़दर रोते कि रीशे मुबारक (दाढ़ी) आंसुओं से तर हो जाती। बचपन ही से ख़िदमत नबवी (ﷺ) में मसरत हासिल होने लगी और खुद हुज़ूर (ﷺ) भी आपसे ख़िदमत लिया करते थे। एहतिराम की ये हालत थी कि कमसिनी के बावजूद नमाज़ में भी आपके बराबर खड़ा होना गुस्ताख़ी तसव्वुर करते थे और बेहद अदब मलहूज़ रखते थे। उम्महातुल मोमिनीन (रज़ि.) के साथ भी इज़्ज़त व तकरीम के साथ पेश आते रहते थे। रसूले करीम (ﷺ) ने दुआ दी थी कि अल्लाह तआला इब्ने अब्बास (रज़ि.) को दीन की समझ और कुआन की तफ़सीर का इल्म अता फ़र्मा। एक बार आपके अदब से खुश होकर आपके लिये फ़हमो-फ़रासत की दुआ अता फ़र्माई। ये उसी का नतीजा था कि आप जवान होकर सर आमद रोज़गार बन गए और मतलअे अख़लाक रोशन हो गया। सहाबा के आख़िर ज़माने में नौ मुस्लिम अज्मियों के ज़रिये से ख़ैरो-शर और क़ज़ा और क़दर की बहष इराक़ में पैदा हो चुकी थी। आप नाबीना हो चुके थे। मगर जब मा'लूम हुआ कि एक शख्स तक्दीर का मुन्किर है तो आपने फ़र्माया मुझे उसके पास ले चलो। पूछा गया कि क्या करोगे? फ़र्माया कि नाक काट लूँगा और गर्दन हाथ में आएगी तो उसे तोड़ दूँगा क्योंकि मैंने हुज़ूर नबी करीम (ﷺ) से सुना कि तक्दीर का इंकार इस उम्मत का पहला शिर्क है। मैं उस ज़ात की क़सम खाकर कहता हूँ जिसके हाथ में मेरी जान है कि ऐसे लोगों की बुरी राय यहीं तक महदूद न रहेगी बल्कि जिस तरह उन्होंने अल्लाह को शर की तक्दीर से मुअत्तल कर दिया उसी तरह उसकी ख़ैर की तक्दीर से भी मुंकिर हो जाएँगे।

यूँ तो आपकी ज़िंदगी का हर शो'बा अहम व दिलकश है लेकिन जो चीज़ सबसे ज़्यादा नुमायों है वो ये है कि किसी

की तरफ से बुराई व मुखासिमत का जुहूर उसकी हक़ीकी अज़मत और खूबियों के ए'तिराफ़ में मानेअ नहीं होता था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने खिलाफ़त का दा'वा किया और आपको भी अपनी बेअत पर मज़बूर करने की कोशिश की। इस ज़ोर व शोर के साथ कि जब आपने इससे इंकार किया तो यही नहीं कि आपको ज़िन्दा आग में जला डालने की धमकी दी बल्कि आपके काशानाए मुअल्ला (घर) के आसपास सूखी लकड़ियों के अंबार भी इसी मक़सद से लगवा दिए और बमुश्किल आपकी जान बच सकी। इससे भी ज़्यादा ये कि उन्हीं की बदौलत ज़वारे हरम छोड़कर आपको ताइफ़ जाना पड़ा ज़ाहिर है कि ये ज़्यादतियाँ थीं और आपको उनके हाथ से बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ी थी। लेकिन जब इब्ने मुलैका ने आपसे कहा कि लोगों ने इब्ने जुबैर के हाथ पर बेअत शुरू कर दी है समझ में नहीं आता कि उनके अंदर आखिर वो कौनसी खूबियाँ और मफ़ाख़िर हैं जिनके आधार पर उन्हें खिलाफ़त का दा'वा करने की ज़ुरअत हुई है और इतने बड़े हौसले से काम लिया है। फ़र्माया, ये तुमने क्या कहा? इब्ने जुबैर (रज़ि.) से ज़्यादा मफ़ाख़िर का हामिल कौन हो सकता है। बाप वो हैं जो ह्वारो-ए-रसूल (ﷺ) के मुअज़्ज़ लक़ब से मुलक़ब थे। माँ अस्मा-ज़ातुन्नित़ाक़ थीं। नाना वो हैं जिनका इस्मे गिरामी अबूबक्र (रज़ि.) और लक़ब रफ़ीक़े-गार है। उनकी ख़ाला हुज़ूर (ﷺ) की महबूबतरीन जोज़ा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) थीं और उनके वालिदे मुहतरम की फूफी उम्मुल मोमिनीन हज़रत बीवी ख़दीजा (रज़ि.) हरमे मुहतरमे रसूले करीम (ﷺ) थीं और दादी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) खुद हुज़ूर नबी करीम (ﷺ) की फूफी थीं। ये तो हैं इनके खानदानी मफ़ाख़िर। ज़ाती हैषियत से बहुत बुलन्द है और बेहद मुस्ताज़ हैं। क़ारी-ए-कुआन हैं, बेमिस्ल बहादुर और अदीमुन्नज़ीर मुदब्बिर हैं, रुवातुल अरब में से हैं। बहुत पाकबाज़ हैं। उनकी नमाज़ें पूरे खुशूअ व खुजूअ की नमाज़ें हैं। फिर उनसे ज़्यादा खिलाफ़त का मुस्तहिक़ और कौन हो सकता है। वो खड़े हुए हैं और बजा तौर पर खड़े हुए हैं। उनका बेअत लेना बजा है। अल्लाह की क़सम! अगर वो मेरे साथ कोई एहसान करेंगे तो ये एक अज़ीज़ाना एहसान होगा और मेरी परवरिश करेंगे तो ये अपने एक हमसर मुहतरम की परवरिश होगी। 68 हिज़री में आपने वफ़ात पाई। इतिक़ाल के वक़्त आयते करीमा 'या अय्यतुहन्नफ़सुल मुत्मिन्ना' (अल फ़ज: 27) के मिस्दाक़ हुए (रज़ि. व रज़ाह)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) :

हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म के यगाना-ए-रोज़गार साहबज़ादे और अपने अहद के ज़माने के ज़बरदस्त जय्यिद आलिम थे। बाप के इस्लाम लाने के वक़्त आपकी उम्र सिर्फ़ पाँच साल थी। ज़मान-ए-बेअत के दूसरे साल कत्मे अदम से पर्दे-ए-वजूद पर जलवा अफ़रोज़ हुए। होश सम्भाला तो घर के दरो-दीवार इस्लाम की शुआओं (किरणों) से मुनव्वर थे। बाप के साथ ग़ैर शक़री तौर पर इस्लाम कुबूल किया। चूँकि मक्का में ज़ुल्मो-तुयान की गर्ज बराबर बढ़ती जा रही थी इसलिये अपने खानदान वालों के साथ आप भी हिज़रत कर गए। तेरह साल ही की उम्र थी कि ग़ज्व-ए-बद्र में शिक़त के लिये बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और कमसिनी की वजह से वापस कर दिये गये। अगले साल ग़ज्व-ए-उहद में भी इसी आधार पर शरीक न किये गए। अलबत्ता 15 साल की उम्र हो जाने पर ग़ज्व-ए-अहज़ाब में ज़रूर शरीक हुए जो 5 हिज़री में वाक़ेअ हुआ था। 6 हिज़री में बैअते रिज़वान का भी शरफ़ हासिल किया। ग़ज्व-ए-ख़ैबर में भी बड़ी जांबाज़ी के साथ लड़े। इसी सफ़र में हलालो-हराम के बारे में जो अहक़ाम दरबारे रिसालत से सादिर हुए थे आप उनके रावी हैं। उसके बाद फ़तहे मक्का ग़ज्व-ए-हुनैन और मुहासिरा-ए-ताइफ़ में भी शरीक हुए। ग़ज्व-ए-तबूक़ में जा रहे थे कि हुज़ूरे नबी करीम (ﷺ) ने हज़र की तरफ़ से गुज़रते हुए, जहाँ क़दीम आद समूद की आबादियों के खंडहरात थे, फ़र्माया कि :-

'उन लोगों के मसाकिन में दाख़िल न हो जिन्होंने अल्लाह की नाफ़रमानी करके अपने ऊपर ज़ुल्म किया कि मुबादा तुम भी इस अज़ाब में मुब्तला हो जाओ जिसमें वो मुब्तला हो गए थे और अगर गुज़रना ही है तो ये करो कि डर और ख़शियते इलाही से रोते हुए गुज़र जाओ।'

जोशे जिहाद! अहदे फ़ारूक़ी में जो फ़तूह़ात (जीतें) हुई उसमें आप सिपाहियाना हैषियत से बराबर लड़ते रहे, जंगे नहाबन्द में बीमार हुए तो आपने अज़ख़ुद ये किया 'प्याज़ को दवा में पकाते थे और जब उसमें प्याज़ का मज़ा आ जाता था तो उसे निकाल कर दवा पी लेते थे। ग़ालिबन पेचिस की बीमारी हो गई होगी। शाम व मिस्र की फ़तूह़ात में भी मुजाहिदाना हिस्से लेते रहे लेकिन इतिज़ामी

उमूर में हिस्से लेने का कोई मौका न मिला कि हज़रत फ़ारूके आ'ज़म अपने खानदान व कबीला के अफ़राद को अलग रखते रहे। अहद उम्माती में आपकी काबिलियत के मद्देनज़र आपको अहद क़ज़ा पेश किया गया (क़ाज़ी बनाने की पेशकश की गई) लेकिन आपने ये फ़र्माकर इंकार कर दिया कि क़ाज़ी तीन किस्म के होते हैं जाहिल, आलिमे मसाइल अलहुनिया (दुनियावी मसाइल के आलिम) कि ये दोनों जहन्नमी है। तीसरे वो हैं जो सहीह इज्तिहाद करते हैं उन्हें न अज़ाब है न फ़वाब और साफ़ कह दिया कि मुझे कहीं का आमिल न बनाइए। उसके बाद अमीरुल मोमिनीन ने भी इसरार न किया अलबत्ता उस अहद के जिहाद के मोर्चों में ज़रूर शरीक रहे। त्यूनिश, अल ज़ाज़र (अल्जीरिया), मराकश, खुरासान और तब्रिस्मान के युद्धों में लड़े। जिस क़दर मनासिब (पदों) और ओहदों की कुबूलयित से घबराते थे, जिहादों में उसी क़दर जोश-ख़रोश और शौक व दिल बस्तगी के साथ हिस्सा लेते थे।

आख़िर ज़मान-ए-उम्माती में जो फ़ितने रूनुमा (प्रकट) हुए आप उनसे बिल्कुल किनाराकश रहे। उनकी शहादत के बाद आपकी ख़िदमत में ख़िलाफ़त का ए'जाज़ पेश किया और अंदमे कुबूलियत के सिलसिले में क़त्ल की धमकी दी गई लेकिन आपने फ़ितनों (उपद्रवों) को देखते हुए इस अज़ीमुशान ए'जाज़ से भी इंकार कर दिया और कोई इअतिनाअन की। उसके बाद आपने इस शर्त पर हज़रत अली (रज़ि.) के हाथ पर बेअत कर ली कि वो खाना-जंगियों (गृहयुद्धों) में कोई हिस्सा न लेंगे। चुनाँचे जंगे जमल व सिफ़फ़ीन में शिरकत न की। ताहम अफ़सोस करने वाले थे और कहा करते थे कि :-

'गो मैंने हज़रत अली क़रमल्लाहु वज्हुहू की तरफ़ से अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाता लेकिन हक़ पर मुक़ाबला भी अफ़ज़ल है।' (मुस्तदरक)

फ़ैसला ग़ालिबी सुनने के लिये दूमतुल जन्दाल में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अली क़रमल्लाह वज्हु के बाद अमीर मुआविया (रज़ि.) के हाथ पर बेअत कर ली और शौक़े जिहाद में उस अहद के तमाम मअरकों में नीज़ मुहिमे कुस्तुनुन्या में शामिल हुए। यज़ीद के हाथ पर फ़ितन-ए-इख़िलाफ़े उम्मत से दामन बचाए रखने के लिये बिला तामील बेअत कर ली और फ़र्माया कि ये ख़ैर है तो हम इस पर राज़ी हैं और अगर ये शर है तो हमने सब्र किया। आजकल लोग फ़ितनों से बचना तो दरकिनार अपने ज़ाती मक़ासिद के लिये फ़ितने पैदा करते हैं और अल्लाह के ख़ौफ़ से उनके जिस्म पर लरज़ा तारी नहीं होता। फिर ये बेअत हक़ीक़तन न किसी डर के आधार पर थी और न आप किसी लालच में आए थे। तनतना और हक़परस्ती का ये आलम था कि अम्मे हक़ के मुक़ाबले में किसी बड़ी से बड़ी शख़्सियत को भी ख़ातिर में नहीं लाते थे।

बाब 167 : औरतों का मर्दों के पीछे

नमाज़ पढ़ना

874. हमसे अबू नुएम फ़ुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान इब्ने डययना ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारे पीछे थीं।

875. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने जुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिनत हारिष ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं

۱۶۷- بَابُ صَلَاةِ النِّسَاءِ خَلْفَ

الرُّجَالِ

۸۷۴- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ (صَلَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِ أُمِّ سَلِيمٍ فَقُمْتُ وَتَيْمٌ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سَلِيمٍ خَلْفًا).

۸۷۵- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدٍ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِينَ

और आँह ज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। जुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था कि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

(राजेअ : 380)

يَقْضَى تَسْلِيمَهُ، وَهُوَ يَمْكُثُ فِي مَقَامِهِ
يَسِيرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَتْ تُرَى - وَاللَّهِ
أَعْلَمُ - أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ
النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يَنْدَرِكَ هُنَّ الرِّجَالُ.

[راجع : 380]

11. किताबुल जुम्आ

किताब जुम्आ के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तशीह : लफ्ज़े जुम्आ मीम के साकिन के साथ और जुम्आ मीम की फ़तह के साथ दोनों तरह से बोला गया। अल्लामा शौकानी फ़र्माते हैं, 'क़ाल फिलफतहि कदिखतुलिफ फी तस्मियतिल्यौमि बिलजुम्अति मअल्इत्तिफ़ाकि अलाअन्नहू कान लयुसम्मा फिल्जाहिलियति वल्लअरूबति बिफत्हिलऐनि व जम्मिराई व बिल्वहदति अल्लअ' या 'नी जुम्आ की वजहे तस्मिया में इख़िताफ़ है इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि अहदे जाहिलियत में उसको यौमे ठरूबा कहा करते थे। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उस दिन मख़लूक की ख़िल्फ़त तक्मील को पहुँची इसलिये उसे जुम्आ कहा गया। कुछ लोग कहते हैं कि तख़लीके आदम की तक्मील इसी दिन हुई इसलिये इसे जुम्आ कहा गया। इब्ने हुमैद में सनदे सहीह से मरवी है कि हज़रत असद बिन ज़रारह के साथ अंसार ने जमा होकर नमाज़ अदा की और हज़रत असद बिन ज़रारह ने उनको वा'ज फ़र्माया। पस उसका नाम उन्होंने जुम्आ रख दिया क्योंकि वो सब इसमें जमा हुए। ये भी है कि कअब बिन लवी उस दिन अपनी क़ौम को हरमे शरीफ़ में जमा करके उनको वा'ज किया करता था और कहा करता था कि इस हरम से एक नबी का जुहूर होने वाला है। यौमे अरूबा का नाम सबसे पहले यौमे जुम्आ कअब बिन लवी ही ने रखा। ये दिन बड़ी फ़ज़ीलत रखता है। इसमें एक घड़ी ऐसी है जिसमें जो नेक दुआ की जाए कुबूल होती है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अपने रविश के मुताबिक़ नमाज़े जुम्आ की फ़र्जियत के लिये आयते कुर्आनी से इस्तिदलाल फ़र्माया जैसा कि नीचे के बाब से ज़ाहिर है कि हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैखुल हदीष मुबारक पुरी फ़र्माते हैं, 'वज़कर इब्नुल क़थ्थिम फिल्हुदा सफ़ा 102, 118 जिल्द-01 लियौमिलजुम्अति धलाषव्व धलाधीन खुसूसियतन ज़कर बअज़हल्हाफ़िज़ु फिल्फतहि मुलख़िख़सम्मिन अहब्बिल्वुकूफ़ि अलैहा फल्यर्जिअ इलैहिमा' (मिर्आत जिल्द नं. 2, पेज नं. 272) या 'नी जुम्आ के दिन 33 खुसूसियात हैं जैसा कि अल्लामा इब्ने क़थ्थिम ने ज़िक़्र किया है कुछ उनमें से हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने फ़त्हुल बारी में भी नक़ल की हैं। तफ़सीलात का शौक़ रखनेवाले उन किताबों की तरफ़ रुजूअ फ़र्माएँ।

बाब 1 : जुम्आ की नमाज़ फ़र्ज़ है

अल्लाह तआला के इस फ़र्मान की वजह से कि 'जुम्आ के दिन नमाज़ के लिये अज़ान दी जाए तो तुम अल्लाह की याद के लिये चल खड़े हो और ख़रीदो—फ़रोख़्त छोड़ दो कि ये तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम कुछ ज़मानते हो।' (आयत में) फ़सऔ फ़म्ज़ू के मा'नी में है (या'नी चल खड़े हो)

١ - بَابُ فَرَضِ الْجُمُعَةِ

لِقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ، ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ فَاسْعَوْا:

तशरीह: एक बार ऐसा हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) खुत्बा-ए-जुम्आ दे रहे थे। अचानक तिजाराती काफ़िला तिजारात का माल लेकर मदीना में आ गया और ख़बर पाकर लोग उस काफ़िले से माल ख़रीदने के लिये जुम्आ का खुत्बा और नमाज़ छोड़कर चले गए। आँहज़रत (ﷺ) के साथ सिर्फ़ 12 आदमी रह गए। उस वक़्त इताब (ग़ज़बनाकी) के लिये अल्लाह ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर ये 12 नमाज़ी भी मस्जिद में न रह जाते तो मदीना वालों पर ये वादी आग़ बनकर भड़क उठती। न जाने वालों में हज़रात शौख़ैन भी थे (इब्ने क़प्पीर)। इस वाकिआ के आधार पर ख़रीदो—फ़रोख़्त छोड़ने का बयान एक इतिफ़ाकी चीज़ है जो शाने नुज़ूल के ए'तिबार से सामने आई। इससे ये इस्तिदलाल कि जुम्आ सिर्फ़ वहाँ फ़र्ज़ है जहाँ लेन—देन होता हो। ये इस्तिदलाल सही नहीं बल्कि सही यही है कि जहाँ मुसलमानों की जमाअत मौजूद हो वहाँ जुम्आ फ़र्ज़ है वो जगह शहर हो या देहात तफ़सील आगे आ रही है।

876. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, कहा कि हमें अबुज़िनाद ने बयान किया, उनसे ख़बीआ बिन हारिज़ के गुलाम अब्दुर्रहमान बिन हुर्मुज़ अअरज ने बयान किया कि उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और आप (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि हम दुनिया में तमाम उम्मतों के बाद होने के बावजूद क़यामत में सबसे आगे रहेंगे फ़र्क सिर्फ़ ये है कि किताब उन्हें हमसे पहले दी गई थी। यही (जुम्आ) उनका भी दिन था जो तुम पर फ़र्ज़ हुआ है। लेकिन उनका उसके बारे में इख़ितलाफ़ हुआ और अल्लाह तआला ने हमें ये दिन बता दिया इसलिये लोग इसमें हमारे ताबेअ होंगे। यहूद दूसरे दिन होंगे और नसारा तीसरे दिन। (राजेअ: 238)

٨٧٦ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ أَنَّ عِنْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمَزٍ الْأَعْرَجِ مَوْلَى رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : «نَحْنُ الْأَعْرَبُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ : بَيْنَهُمْ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِنَا، ثُمَّ هَذَا يَوْمُهُمُ الَّذِي لَوْحُنْ عَلَيْهِمْ فَاحْتَلَفُوا فِيهِ، فَهَذَا اللَّهُ لَهُ، فَالْأَنْبَاءُ لَنَا فِيهِ تَبَعٌ : الْيَهُودُ غَدًا، وَالنَّصَارَى بَعْدَ غَدٍ» . [راجع : ٢٣٨]

बाब 2 : जुम्आ के दिन नहाने की फ़ज़ीलत और इस बारे में बच्चों और औरतों पर जुम्आ की नमाज़ के लिये आना फ़र्ज़ है या नहीं?

٢ - بَابُ فَضْلِ الْغُسْلِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

وَمَنْ عَلَى الصَّبِيِّ شُهُودُ يَوْمِ

الْجُمُعَةِ، أَوْ عَلَى النِّسَاءِ؟

(877) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया,

٨٧٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ :

उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने नाफेअ से खबर दी और उनको हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें से जब कोई शख्स जुम्आ की नमाज़ के लिये आना चाहे तो उसे गुस्ल कर लेना चाहिये। (दीगर मक़ाम : 896, 919)

(878) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्माअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुवैरिया बिन अस्माअ ने इमाम मालिक से बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) जुम्आ के दिन खड़े खुत्बा दे रहे थे कि इतने में नबी अकरम (ﷺ) के अगले सहाबा मुहाजिरिन में से एक बुजुर्ग तशरीफ़ लाए (या'नी हजरत उम्मान रज़ि.) उमर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि भला ये कौनसा वक्त्र है तो उन्होंने कहा कि मैं मशगूल हो गया था और घर वापस आते ही अज़ान की आवाज़ सुनी, इसलिये मैं वुजू से ज़्यादा और कुछ (गुस्ल) न कर सका। हजरत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अच्छा वुजू भी। हालाँकि आपको मा'लूम है कि नबी करीम (ﷺ) गुस्ल के लिये कहते थे।

(दीगर मक़ाम : 882)

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمْ الْجُمُعَةَ فَلْيَغْتَسِلْ). [طرفه في : ٨٩٤، ٩١٩].

٨٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَسْمَاءَ قَالَ: حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا (أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ تَيَسَّمَا هُوَ قَائِمٌ فِي الْخُطْبَةِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِذْ دَخَلَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ الْأَوَّلِينَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، فَادَّاهُ عُمَرُ: رَأَيْتُ مَسَاعِدَ هَذِهِ؟ قَالَ: إِنِّي شَغِلْتُ فَلَمْ أَتَقَلِّبْ إِلَى أَهْلِي حَتَّى سَمِعْتُ النَّادِينَ، فَلَمْ أَرِذْ أَنْ تَوَضَّأْتُ. قَالَ: وَالْوُضُوءُ أَيُّهَا؟ وَقَدْ عَلِمْتُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَأْمُرُ بِالْغُسْلِ).

[طرفه في : ٨٨٢].

तशरीह : या'नी हजरत उमर (रज़ि.) ने उन्हें देर से आने पर टोका आपने उज़्र बयान करते हुए फ़र्माया कि मैं गुस्ल भी नहीं कर सका बल्कि सिर्फ़ वुजू करके चला आया हूँ। इस पर हजरत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि गोया आप (ﷺ) ने सिर्फ़ देर में आने पर ही इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि एक दूसरी फ़ज़ीलत गुस्ल को भी छोड़ आए हैं। इस मौक़े पर क़ाबिले ग़ौर बात ये है कि हजरत उमर (रज़ि.) ने इनसे गुस्ल के लिये फिर नहीं कहा वरना अगर जुम्आ के दिन गुस्ल फ़र्ज़ या वाजिब होता तो हजरत उमर (रज़ि.) को ज़रूर कहना चाहिये था और यही वजह थी कि दूसरे बुजुर्ग सहाबी जिनका नाम दूसरी रिवायतों में हजरत उम्मान (रज़ि.) आता है, उन्होंने भी गुस्ल को ज़रूरी ना समझकर सिर्फ़ वुजू पर इक्तिफ़ा किया था। हम इससे पहले भी जुम्आ के दिन गुस्ल पर एक नोट लिख आए हैं। हजरत उमर (रज़ि.) के तर्ज़े अमल से ये भी मा'लूम होता है कि खुत्बा के दौरान इमाम अम्रो—नहीं कर सकता है (अच्छे—बुरे के लिये टोक सकता है) लेकिन आम लोगों को इसकी इजाज़त नहीं है। बल्कि उन्हें ख़ामोशी और इत्मीनान के साथ खुत्बा सुनना चाहिये। (तफ़हीमुल बुखारी)

(879) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने हदीष बयान की। उन्होंने कहा कि हमें मालिक ने सफ़वान बिन सुलैम के वास्ते से खबर दी, उन्हें अत्ता बिन यसार ने, उन्हें हजरत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जुम्आ के दिन हर बालिग़ के

٨٧٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ غَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ:

लिये गुस्ल ज़रूरी है। (राजेअ : 857)

बाब 3 : जुम्आ के दिन नमाज़ के लिये खुश्बू लगाना

(880) हमसे अली बिन मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हम हरमी बिन अम्पारा ने खबर दी उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा बिन हिजाज ने अबूबक्र बिन मुकदिर से बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अमर बिन सुलैम अंसारी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं गवाह हूँ कि अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि मैं गवाह हूँ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जुम्आ के दिन हर जवान पर गुस्ल, मिस्वाक और खुश्बू लगाना अगर मयस्सर हो, ज़रूरी है। अमर बिन सुलैम ने कहा कि गुस्ल के बारे में तो मैं गवाही देता हूँ कि वो वाजिब है लेकिन मिस्वाक और खुश्बू का इल्म अल्लाह तआला को ज़्यादा है कि वो भी वाजिब हैं या नहीं। लेकिन हदीष में इसी तरह है। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) ने फ़र्माया कि अबूबक्र बिन मुकदिर मुहम्मद बिन मुकदिर के भाई थे और उनका नाम मा'लूम नहीं (अबूबक्र उनकी कुत्रियत थी) बुकैर बिन अंशज। सईद बिन अबी हिलाल और बहुत से लोग उनसे रिवायत करते हैं। और मुहम्मद बिन मुकदिर उनके भाई की कुत्रियत अबूबक्र और अबू अब्दुल्लाह भी थी। (राजेअ : 858)

बाब 4 : जुम्आ की नमाज़ को जाने की फ़ज़ीलत

(881) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान के गुलाम सुमय से खबर दी, जिन्हें अबू मालेह सिमान ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स जुम्आ के दिन गुस्ले जनाबत करके नमाज़ पढ़ने जाए तो गोया उसने एक ऊँट की कुर्बानी दी (अगर पहले वक़्त मस्जिद में पहुँचा) और अगर बाद में गया तो गोया एक गाय की कुर्बानी दी और जो तीसरे नम्बर पर गया तो गोया उसने एक साँग वाले मेंढे की कुर्बानी दी

((غُسْلُ يَوْمِ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ

مُحْتَلِمٍ)). [راجع: ٨٥٨]

٣- بَابُ الطَّيِّبِ لِلْجُمُعَةِ

٨٨٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنَا حَرَمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا ثَعْلَبَةُ عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ الْمُنْكَبِرِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ سَلِيمٍ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: أَشْهَدُ عَلَى أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: أَشْهَدُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الْفَسْلُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ، وَأَنْ يَسْتَنْ، وَأَنْ يَمْسَ طَبِيبًا إِنْ وَجَدَهُ)). قَالَ عَمْرُو: أَمَا الْفَسْلُ فَأَشْهَدُ أَنَّهُ وَاجِبٌ، وَأَمَّا الْإِسْتِنَانُ وَالطَّيِّبُ فَأَشْهَدُ أَعْلَمُ أَوْاجِبٌ هُوَ أَمْ لَا، وَلَكِنْ هَكَذَا فِي الْغَلِيظِ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: هُوَ أَخُو مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَبِرِ، وَلَمْ يُسَمَّ أَبُو بَكْرٍ هَذَا. رَوَاهُ عَنْهُ بَكْرُ بْنُ الْأَشَجِّ وَسَعِيدُ بْنُ أَبِي هِلَالٍ وَعِدَّةٌ. وَكَانَ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَبِرِ يُكْنَى بِأَبِي بَكْرٍ وَأَبِي عَبْدِ اللَّهِ.

[راجع: ٨٥٨]

٤- بَابُ فَضْلِ الْجُمُعَةِ

٨٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ اغْتَسَلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ غُسْلَ الْجَنَابَةِ ثُمَّ رَاحَ فَكَأَنَّمَا قَرَّبَ بَدَنَةً،

और जो कोई चौथे नम्बर पर गया तो उसने गोया एक मुर्गी की कुर्बानी दी और जो कोई पाँचवें नम्बर पर गया उसने गोया अण्डा अल्लाह की राह में दिया। लेकिन जब इमाम खुत्बा के लिये बाहर आ जाता है तो मलाइका (फ़रिश्ते) खुत्बा सुनने में मशगूल हो जाते हैं।

وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الثَّانِيَةِ لَكَانَ قَرِيبَ بَقْرَةٍ، وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الثَّالِثَةِ لَكَانَ قَرِيبَ كَبْشًا أَقْرَنَ، وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الرَّابِعَةِ لَكَانَ قَرِيبَ دَجَاجَةٍ، وَمَنْ رَاحَ فِي السَّاعَةِ الْخَامِسَةِ لَكَانَ قَرِيبَ يَتْمَنَةٍ. فَإِذَا خَرَجَ الْإِمَامُ حَضَرَتِ الْمَلَائِكَةُ يَسْتَمِعُونَ الدُّعَاءَ.

इस हदीस में प्रवाब के 5 दर्जे बयान किये गए हैं। ज़ुम्अे में हाज़िरी का वक़्त सुबह ही से शुरू हो जाता है और सबसे पहला प्रवाब उसी को मिलेगा जो अव्वल वक़्त ज़ुम्आ के लिये मस्जिद में आ जाए। सलफ़े उम्मत का इसी पर अमल था कि वो ज़ुम्आ के दिन सुबह सवेरे मस्जिद में चले जाते और नमाज़ के बाद घर जाते। फिर खाना खाते और कैल्ला करते। दूसरी अहादीस में है कि जब इमाम खुत्बा के लिये निकलता है तो प्रवाब लिखने वाले फ़रिश्ते भी मस्जिद में आ जाते हैं और खुत्बा सुनने में मशगूल हो जाते हैं। मुर्ग के साथ अण्डे का भी ज़िक्र है। उसे हकीकत पर महमूल किया जाए तो अण्डे की भी हकीकी कुर्बानी जाइज़ होगी जिसका कोई भी कायल नहीं। प्राबित हुआ कि यहाँ मजाज़न कुर्बानी का लफ़्ज़ बोला गया है जो तकर्रब इल्लल्लाह के मा'नी में है (कमा सयाती)।

बाब 5 :

(882) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे शैबान बिन अब्दुर्रहमान ने यह्या बिन अबी कबीर से बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ज़ुम्अे कि दिन खुत्बा दे रहे थे कि एक बुजुर्ग (उम्मान रज़ि.) दाख़िल हुए। इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया कि आप लोग नमाज़ के लिये आने में क्यों देर करते हैं। (अव्वल वक़्त क्यों नहीं आते) आने वाले बुजुर्ग ने फ़र्माया कि देर सिर्फ़ इतनी हुई कि अज़ान सुनते ही मैंने वुजू किया (और फिर हाज़िर हुआ) आपने फ़र्माया कि क्या आप लोगों ने नबी करीम (ﷺ) से ये हदीस नहीं सुनी है कि जब कोई ज़ुम्आ के लिये जाए तो गुस्ल कर लेना चाहिये। (राजेअ : 878)

٨٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى هُوَ ابْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَوْمَ يَخْطُبُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِذْ دَخَلَ رَجُلٌ. فَقَالَ عُمَرُ: (لِمَ تَخْتَبِئُونَ عَنِ الصَّلَاةِ؟) فَقَالَ الرَّجُلُ: مَا هُوَ إِلَّا أَنْ تَسْمِعُوا النَّبِيَّ ﷺ فَتَوَضَّأْتَ فَقَالَ: أَلَمْ تَسْمِعُوا النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: «إِذَا رَاحَ أَخَذَكُمْ إِلَى الْجُمُعَةِ فَلْيَغْتَسِلُوا».

[راجع: ٨٧٨]

तशरीह :

इस हदीस की मुनासबत बाब के तर्जुमे से यही है कि हज़रत इमर (रज़ि.), हज़रत उम्मान (रज़ि.) जैसे ज़लीलुल क़द्र सहाबी पर ख़फ़ा हुए अगर ज़ुम्अे की नमाज़ फ़ज़ीलत वाली न होती तो नाराज़गी की ज़रूरत क्या थी? पस ज़ुम्अे की नमाज़ की फ़ज़ीलत प्राबित हुई और यही बाब का तर्जुमा है। कुछ ने कहा कि और नमाज़ों के लिये कुआन शरीफ़ में ये हुक्म हुआ, इज़ा कुम तुम इलमसलाति फ़ग़िसलू वुजूहकुम (अल माइदा: 6) या'नी वुजू करो और ज़ुम्अे की नमाज़ के लिये आँहज़रत ने गुस्ल करने का हुक्म दिया तो मा'लूम हुआ कि ज़ुम्अे की नमाज़ का दर्जा और नमाज़ों से बढ़कर है और दूसरी नमाज़ों पर उसकी फ़ज़ीलत प्राबित हुई। यही बाब का तर्जुमा है। (वहीदी)

यहाँ अदना ताम्मुल से मा'लूम हो सकता है कि हज़रत सय्यिदुल मुहदिप्पीन इमाम बुखारी (रह.) को अल्लाह पाक ने हदोष नबवी के मताल्लिब पर किस क़दर गहरी नज़र अता फ़र्माई थी। इसीलिये हज़रत अल्लामा अब्दुल कुदूस बिन हमाम अपने चंद मशाइख़ से नक़ल करते हैं कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी किताब के फ़िक़ही तराजिम व अबवाब भी मस्जिदे नबवी के उस हिस्से में बैठकर लिखते हैं जिसको आँहज़रत (ﷺ) ने ज़न्नत की एक क्यारी बतलाया है। उस ख़ानकाही और रियाज़त के साथ सोलह साल की मुदत में ये अदीमुन्नज़ीर किताब मुकम्मल हुई जिसका लक़ब बग़ैर किसी तरहदु के 'असहहुल कुतुब बअद किताबिल्लाह' करार पाया उम्मत के लाखों करोड़ों मुहदिप्पीन और उलमाने सख़्त से सख़्त कसौटी पर उसे कसा मगर जो लक़ब इस तस्नीफ़ का मशहूर हो चुका था वो पत्थर की लकीर था, न मिटता था न मिटा। इस हकीकत बाहिरा के बावजूद उन सतही नाफ़िदीने ज़माना (आलोचकों) पर सख़्त अफ़सोस है जो आज क़लम हाथ में लेकर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) और उनकी अदीमुल मिशाल किताब पर तन्कीद करने के लिये गुस्ताख़ी करते हैं और अपनी कम अक़ली को ज़ाहिर करते हैं। देवबन्द से ताल्लुक रखने वाले हज़रत हों या किसी और जगह से, उन पर बाज़ेह होना चाहिये कि उनकी ये बेकार सी कोशिश हज़रत इमाम बुखारी और उनकी जलीलुल क़द्र किताब की ज़रा बराबर भी शान न घटा सकेगी। हाँ! ये ज़रूर है कि जो कोई आसमान की तरफ़ धूके तो उसका धूक उलटा उसके मुँह पर ही आएगा कि क़ानूने कुदरत यही है। बुखारी शरीफ़ की इल्मी खुसूसियात के लिये एक मुस्तफ़िल तस्नीफ़ और एक रोशनतरीन फ़ाज़िलाना दिमाग़ की ज़रूरत है। ये किताब सिर्फ़ अहदादीषे सहीहा ही का मज्मूआ नहीं बल्कि उसूलो अक़ाइद, इबादात व मुआमलात, ग़ज़ावत व सियर, इस्लामी मुआशरत व तमहुन, मसाइल सियासत व सलतनत की एक जामेअ एनसाइक्लोपीडिया है। आज के नौजवान रोशनदिमाग़ मुसलमानों को इस किताब से जो कुछ तशफ़्फ़ी हासिल हो सकती है वो किसी दूसरी जगह न मिलेगी। इस हदीष से ये भी प्राबित है कि बड़े लोगों को चाहिये कि नेक कामों का हुक्म फ़र्माते रहें और इस बारे में किसी का लिहाज़ न करें। जिनको नसीहत की जाए उनका भी फ़र्ज़ है कि तस्लीम करने में किसी किस्म का देरा (आपत्ति) न करें और बिला चूँ चरा नेक कामों के लिये सरेख़म तस्लीम कर दें। हज़रत उमर (रज़ि.) की दानाई देखिये कि हज़रत इमाम (रज़ि.) का जवाब सुनते ही ताड़ गए आप बग़ैर गुस्ल के जुम्आ के लिये आ गए हैं। उससे गुस्ले जुम्आ की अहमियत भी प्राबित हुई।

बाब 6 : जुम्आ की नमाज़ के लिये बालों

में तेल का इस्ते'माल

(883) हमसे आदम बिन अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अबी जिब ने सईद मन्बरी से बयान किया, कहा कि मुझे मेरे बाप अबू सईद मन्बरी ने अब्दुल्लाह बिन वदीआ से ख़बर दी, उनसे हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स जुम्आ के दिन गुस्ल करे और ख़ूब अच्छी तरह से पाकी हासिल करे और तेल इस्ते'माल करे या घर में जो ख़ुशबू मयस्सर हो इस्ते'माल करे फिर नमाज़ के लिये निकले और मस्जिद में पहुँचकर दो आदमियों के बीच न घुसे, फिर जितनी हो सके नफ़ल नमाज़ पढ़े और जब इमाम ख़ुत्बा शुरू करे तो ख़ामोश सुनता रहे तो उसके जुम्आ से लेकर दूसरे जुम्आ तक सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। (दीगर मक्काम : 910)

मा'लूम हुआ कि जुम्आ का दिन एक सच्चे मुसलमान के लिये ज़ाहिर व बातिन हर किस्म की मुकम्मल पाकी हासिल करने का दिन है।

(884) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें

٦- بَابُ الدُّهْنِ لِلْجُمُعَةِ

٨٨٣- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُئْبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمُقْبِرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ ابْنِ وَدِيعَةَ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : (لَا يَغْتَسِلُ رَجُلٌ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَيَتَطَهَّرُ مَا سَطَعَ مِنْ طَهْرٍ وَيَذِينُ مِنْ دُفْيَةٍ أَوْ يَمَسُّ مِنْ طِيبٍ بَيْنَهُ، ثُمَّ يَخْرُجُ فَلَا يَفْرُقُ بَيْنَ اثْنَيْنِ، ثُمَّ يُصَلِّي مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ يَنْصَبُ إِذَا تَكَلَّمَ الْإِمَامُ، إِلَّا غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الْأُخْرَى)). [طرفه ١ : ٩١٠].

٨٨٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا

शुऐब ने जुहदी से खबर दी कि ताऊस बिन कैसान ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से पूछा कि लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है कि जुम्आ के दिन अगरचे जनाबत न हो लेकिन गुस्ल करो और अपने सर धोया करो और खुशबू लगाया करो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि गुस्ल का हुक्म तो ठीक है लेकिन खुशबू के बारे में मुझे इल्म नहीं।

(दीगर मक़ाम : 885)

(885) हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हिशाम बिन यूसुफ़ ने खबर दी, कि उन्हें इब्ने जुरैज ने खबर दी, उन्होंने कहा कि मुझे इब्राहीम बिन मैसरा ने ताऊस से खबर दी और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने, आपने जुम्आ के दिन गुस्ल के बारे में नबी करीम (ﷺ) की हदीष का ज़िक्र किया तो मैंने कहा कि क्या तेल और खुशबू का इस्तेमाल भी ज़रूरी है? आपने फ़र्माया कि मुझे मा'लूम नहीं। (राजेज़ : 886)

तेल और खुशबू के बारे में हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) की जो हदीष ऊपर ज़िक्र हुई है ग़ालिबन हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) को उसका इल्म न हो सका।

बाब 7 : जुम्आ के दिन उम्दा से उम्दा कपड़े पहने जो उसको मिल सके

(886) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने नाफ़ेअ से खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने (रेशम का) धारीदार जोड़ा मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर लटका देखा तो कहने लगे कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! बेहतर हो अगर आप इसे ख़रीद लें और जुम्आ के दिन और वफ़ूद (प्रतिनिधि मण्डल) जब आपके पास आएँ तो उनकी मुलाक़ात के लिये आप उसे पहना करें। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे तो वही पहन सकता है जिसका आख़िरत में कोई हिस्सा न हो। उसके बाद

شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ طَاوُسٌ : قُلْتُ لَابْنِ عَبَّاسٍ : ذَكِّرُوا أَنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : ((اغْتَسِلُوا يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاغْسِلُوا رُؤُوسَكُمْ وَإِنْ لَمْ تَكُونُوا جُنُبًا وَأَصْبَحُوا مِنْ الطَّيِّبِ)). قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : أَمَّا الْفَسَلُ فَنَعَمْ ، وَأَمَّا الطَّيْبُ فَلَا أَذْرِي ،

[طرفه في : ٨٨٥]

٨٨٥- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ : أَخْبَرَنَا هِشَامُ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ : أَخْبَرَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَيْسَرَةَ عَنْ طَاوُسٍ : (عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ ذَكَرَ قَوْلَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْفَسَلِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ ، فَقُلْتُ لَابْنِ عَبَّاسٍ : أَيَسُّ طَيِّبًا أَوْ دُفْنًا إِنْ كَانَ عِنْدَ أَهْلِهِ؟ فَقَالَ : لَا أَعْلَمُهُ).

[راجع : ٨٨٤]

٧- بَابُ يَلْبَسُ أَحْسَنَ

مَا يَجِدُ

٨٨٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ غُمَرَ ((أَنَّ غُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَأَى خَلَّةَ سَيِّرَاءَ عِنْدَ بَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ اشْتَرَيْتَ هَذِهِ فَلَبِستَهَا يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَلَلْوَلَدُ إِذَا قَدِمُوا عَلَيْكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لَا خَلَاقَ لَهُ فِي الْآخِرَةِ)). ثُمَّ جَاءَتْ رَسُولَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास इसी तरह के कुछ जोड़े आए तो उसमें से एक जोड़ा आपने उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) को अता फर्माया। उन्होंने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप मुझे ये जोड़ा पहना रहे हैं हालाँकि उससे पहले उतारिद के जोड़े के बारे में आपने कुछ ऐसा फर्माया था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया कि मैंने उसे तुम्हें खुद पहनने के लिये नहीं दिया है, चूनाँचे हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसे अपने एक मुशरिक भाई को पहना दिया जो मक्के में रहता था। (दीगर मक़ाम : 938, 2104, 2612, 2619, 3054, 5841, 5981, 6081)

اللَّهُ ﷻ مِنْهَا خَلَّلَ، فَأَغَطَى عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مِنْهَا خَلَّةً، فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، كَسَوْنِيهَا وَقَدْ قُلْتُ لِي خَلَّةٌ غَطَّارِدٌ مَا قُلْتُ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷻ: ((إِنِّي لَمْ أَكْسُكَهَا لِتَلْبَسَهَا)). فَكَسَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ أَخَاهُ بِمَنْكَةِ مُشْرِكًا.

[أطرافه في: 938, 2104, 2612, 2619, 3054, 5841, 5981, 6081]

[2619, 5981, 6081, 3054, 5841, 5981, 6081]

[6081]

तशीह : उतारिद बिन हाजिब बिन ज़रारह तमीमी (रज़ि.) कपड़े के व्यापारी थे। ये चादरें बेच रहे थे इसलिये उसको उनकी तरफ़ मन्सूख किया गया। ये वपद बनी तमीम में आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम कुबूल किया। बाब का तर्जुमा यहाँ से निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) की खिदमत में शरीफ़ में हज़रत उमर (रज़ि.) ने जुम्मे के दिन उम्दा कपड़े पहनने की दरख्वास्त पेश की। आँहज़रत (ﷺ) ने उस जोड़े को इसलिये नापसंद फर्माया कि वो रेशमी था और मर्द के लिये ख़ालिस रेशम का इस्तेमाल करना हुराम है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने मुशरिक भाई को उसे बतौर हदिया दे दिया। इससे पता चला कि काफ़िर, मुशरिक जब तक इस्लाम कुबूल न करें वो फुरुआते इस्लाम के मुकल्लफ़ नहीं होते। ये भी मा'लूम हुआ कि अपने मुशरिक, काफ़िरों, रिश्तेदारों के साथ हुस्ने-सुलूक करना मना नहीं है बल्कि मुम्किन हो तो ज़्यादा से ज़्यादा करना चाहिये ताकि उनको इस्लाम में रग़बत पैदा हो।

बाब 8 : जुम्मे के दिन मिस्वाक करना

और अबू सईद (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है कि मिस्वाक करनी चाहिये।

(887) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने अबुज्जिनाद से ख़बर दी, उनसे अज़रज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया कि अगर मुझे अपनी उम्मत या लोगों की तकलीफ़ का ख़याल न होता तो मैं हर नमाज़ के लिये उनको मिस्वाक का हुक्म देता। (दीगर मक़ाम : 7240)

8- بَابُ السَّوَاكِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

وَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: يَسْتَأْنِ.

887- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷻ قَالَ: ((لَوْ لَا أَنِ اشْتَقُّ عَلَى أُمَّتِي - أَوْ عَلَى النَّاسِ - لِأَمَرْتَهُمْ بِالسَّوَاكِ مَعَ كُلِّ صَلَاةٍ)). [طرفه في: 7240]

हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह देहलवी (रह.) अपनी मशहूर किताब हुज्जतुल्लाहिल बालिगा में रिवायत की गई अहदीये मिस्वाक के बारे में फर्माते हैं, 'अकूलु मअनाहू लौ ला ख़ौफल हरज लजअलतुस्सिवाक शर्तन लिस्सलाति कल्वुजुइ व क़द वरद बिहाज़लउसलूबि अहदीषुक़रीन जिहा व हिय दलाइलुन वाज़िहतुन अला अन्न इज्तिहादन्नबियि

(*) मदखलन फिल्हुदुदशरइय्यति व अन्नहा मनुतुन बिल्मक्रासिदि व अन्न रफअल्बुरुजि मिनल उसूलिल्लती बुनिय अलेहिशराइउ कौलरवी फी सिफति तसव्वुकिही (*) आ आ कअन्नहू यतहव्वउ उकूलु यम्बसी लिल्इन्सानि अय्यबलुग बिस्सवाकि अक्रासिल्फमि कयुखिजल्हल्क बस्सदर वल्इस्तिस्काअ फ़िस्सवाकि युजिहबु' (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा पेज नं. 949, 450)

या'नी जो हुजूर करीम (ﷺ) का इर्शाद है अगर मैं अपनी उम्मत पर दुश्वार न जानता तो उनको हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता। उसके बारे में मैं कहता हूँ कि इसके मा'नी ये हैं कि अगर तंगी का डर न होता तो मिस्वाक करने को वुजू की तरह नमाज़ की सिहत के लिये शर्त करार दे देता और इस तरह की बहुत सी अहादीष वारिद हैं। जो इस अमर की सफ़ा दलालत करती है कि नबी करीम (ﷺ) के इज्तिहाद को हुदूदे शरईया में दखल है और हुदूदे शरईया मक्रासिद पर मब्नी है और उम्मत से तंगी का रफ़ा करना मिन्जुम्ता इन उसूलों के हैं जिन पर अहकामे शरईया मब्नी है। नबी करीम (ﷺ) के मिस्वाक करने की कैफ़ियत के बारे में जो रावी का बयान है कि आप मिस्वाक करते वक़्त अअ अअ की आवाज़ निकालते जैसे कोई कै करते वक़्त करता है। इसके बारे में मैं कहता हूँ कि इंसान को मुनासिब है कि अच्छी तरह से मुँह के अंदर मिस्वाक करे और हलक और सीने का बलग़म निकाले और मुँह में ख़ूब अंदर तक मिस्वाक करने से मज़े क़ला दूर हो जाता है और आवाज़ सफ़ा हो जाती है और मुँह खुशबूदार हो जाता है। क़ालन्नबिय्यु (ﷺ) अशरुम्मिनल फ़ित्रति क़स्सुशशवारिब व इफ़ाउल्लिहया वस्सिवाक अल्बु या'नी आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया दस बातें फ़ितरत में से हैं मूँछों का तरशवाना, दाढ़ी का बढ़ाना, मिस्वाक करना, नाक में पानी डालना, नाखून कतरवाना, उंगलियों के जोड़ों का धोना, बग़ल के बाल उखाड़ना, ज़ेरे नाफ़ के बाल सफ़ा करना, पानी से इस्तिजा करना। रावी कहता है कि दसवीं बात मुझको याद नहीं रही वो ग़ालिबन कुल्ली करना है। मैं कहता हूँ कि ये तहारतें हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम से मन्कूल हैं और तमाम उममे हनीफ़िया में बराबर ज़ारी रही हैं और उनके दिलों में पेवस्त हैं। इसी वजह से उनका नाम फ़ितरत रखा गया (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा, जिल्द नं. 1 पेज नं. 447)

(888) हमसे अबू मअमर अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा कि हमसे शुएब बिन हबहाब ने बयान किया, कहा कि हमसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुमसे मिस्वाक के बारे में बहुत कुछ कह चुका हूँ।

۸۸۸- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَارِثُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ الْحَجَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا آسَرٌ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَكثَرْتُ عَلَيْكُمْ فِي السَّوَالِ)).

(889) हमसे मुहम्मद बिन क़रीर ने बयान किया, कहा कि हमें सुफयान श़ौरी ने मंसूर बिन मअमर और हुसैन बिन अब्दुरहमान से ख़बर दी, उन्हें अबू वाइल ने, उन्हें हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब रात को उठते तो मुँह को मिस्वाक से ख़ूब सफ़ा करते। (राजेअ: 245)

۸۸۹- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ وَخُصَيْنٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ خُذَيْفَةَ قَالَ: (كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَشُورُنْ لَهَ).

[راجع: ۲۴۵]

इन तमाम अहादीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि जुम्आ की नमाज़ के लिये भी मिस्वाक करना चाहिये। जब आँहज़रत (ﷺ) ने हर नमाज़ के लिये मिस्वाक की ताईद फ़र्माई तो जुम्आ की नमाज़ के लिये भी इसकी ताईद षाबित हुई इसलिये भी कि जुम्आ ज़्यादा लोगों का इज्तिमा होता है इसलिये मुँह का सफ़ा करना ज़रूरी है ताकि मुँह की बदबू से लोगों को तकलीफ़ न हो।

बाब 9 : जो शख्स दूसरे की मिस्वाक इस्ते'माल करे

(890) हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुलैमान बिन हिलाल ने बयान किया कि हिशाम बिन उर्वा ने कहा कि मुझे मेरे बाप उर्वा बिन जुबैर ने उम्पुल मोमिनीन हजरत आइशा (रज़ि.) से खबर दी। उन्होंने कहा कि अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (एक बार) आए। उनके हाथ में मिस्वाक थी जिसे वो इस्ते'माल किया करते थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बीमारी की हालत में उनसे कहा अब्दुर्रहमान! ये मिस्वाक मुझे दे दे, उन्होंने दे दी। मैंने उसे सिरे को पहले तोड़ा या'नी इतनी लकड़ी निकाल दी जो अब्दुर्रहमान अपने मुँह में लगाया करते थे, फिर उसे चबाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को दे दिया। आँहजरत (ﷺ) ने उससे दाँत झाफ़ किये और आप (ﷺ) उस वक़्त मेरे सीने पर टेक लगाए हुए थे।

(दीगर मक़ाम : 1389, 3100, 3774, 4438, 4446, 4449, 4450, 4451, 5217, 6510)

तर्हीह : इस हदीष से प्राबित हुआ कि दूसरे की मिस्वाक उससे लेकर इस्ते'माल की जा सकती है और ये भी प्राबित हुआ कि दूसरा आदमी मिस्वाक को अपने मुँह से चबाकर अपने भाई को दे सकता है और ये भी प्राबित हुआ कि बवक़ते ज़रूरत अपने किसी भाई से जिन पर हमको भरोसा व ए'तिमाद हो कोई ज़रूरत की चीज़ उससे तलब कर सकते हैं, तआवुने बाहमी (आपसी सहयोग) का यही मफ़हूम है। इस हदीष से हजरत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी प्राबित हुई कि मर्जुल मौत में उनको आँहजरत (ﷺ) की खुसूसी ख़िदमात करने का शरफ़ (श्रेय) हासिल हुआ। अल्लाह की मार उन बुरे शाइरोँ पर जो हजरत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) की शाने अक्दस में कलिमाते गुस्ताख़ी इस्ते'माल करके अपने आफ़िबत ख़राब करते हैं।

बाब 10 : जुम्आ के दिन नमाज़े फ़ज़्र में कौनसी सूरह पढ़ी जाए?

(891) हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान घौरी ने सअद बिन इब्राहीम के वास्ते से बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुर्मुज़ ने, उनसे हजरत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जुम्आ के दिन फ़ज़्र की नमाज़ में 'अलिफ़ लाम मीम तंज़ीलुल और हलअता अलल इंसान' पढ़ा करते थे।

(दीगर मक़ाम : 1068)

٩- بَابُ مَنْ تَسَوَّكَ بِسِوَاكِ غَيْرِهِ

٨٩٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ قَالَ: قَالَ هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: (دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ وَمَعَهُ سِوَاكٌ يَسْتَنْ بِهِ، فَظَنَرْتُ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ - ﷺ -، فَقُلْتُ لَهُ: أَغْطِي هَذَا السَّوَاكَ يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ، فَأَعْطَانِي، فَصَمَّمْتُهُ ثُمَّ مَضَعْتُهُ، فَأَعْطَيْتُهُ رَسُولُ اللَّهِ - ﷺ -، فَاسْتَنْ بِهِ وَهُوَ مُسْتَبِدٌّ إِلَى صَدْرِي).

[أطرافه في : ١٣٨٩, ٣١٠٠, ٣٧٧٤]

[٤٤٣٨, ٤٤٤٦, ٤٤٤٩, ٤٤٥٠]

[٤٤٥١, ٥٢١٧, ٦٥١٠]

٩- بَابُ مَا يُقْرَأُ فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ

يَوْمَ الْجُمُعَةِ

٨٩١- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ - ابْنِ هُرْمَزٍ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ «أَلَمْ تَنْزِيلُ» السَّجْدَةِ وَ«قُلْ آتَى عَلَى الْإِنْسَانِ»)).

[أطرافه في : ١٠٦٨]

तबरानी की रिवायत है कि आप हमेशा ऐसा किया करते थे। उन सूरतों में इंसान की पैदाइश और क़यामत वग़ैरह का ज़िक्र है और ये जुम्आ के दिन ही वाक़ेअ होगी। इस हदीष से मालिकिया का रद्द हुआ जो नमाज़ में सज्दे वाली सूरत पढ़ना मकरूह जानते हैं। अबू दाऊद की रिवायत है कि नमाज़ में भी सज्दे की सूरत पढ़ी और सज्दा किया। (वहीदी) अल्लामा शौकानी इस बारे में कई अहदीष नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं, 'व हाज़िहिल्लिअहदीषु फीहा मशरूइय्यतु किराति तन्ज़ीलिलस्सज्दति व हल अता अलल्इन्सानि क़ालल्इराक़ी व मिम्मन कान यफ़अलुहु मिनस्सहाबति अब्दुल्लाहिबिन् अब्बास व मिनत्ताबिईन इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ व हुव मज़हबश़ाफ़िई व अहमद व अम्हाबुल्अहदीष' (नैलुल औतार) या'नी इन अहदीष से प्राबित हुआ कि जुम्आ के दिन फ़ज़्र की नमाज़ की पहली रकअत में अलिफ़ लाम तंज़ील सज्दा दूसरी में हल अता अलल इंसान पढ़ना अफ़ज़ल है। सहाबा में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) और ताबेई में से इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान का यही अमल था और इमाम श़ाफ़िई और इमाम अहमद और अहले हदीष का यही मज़हब है।

अल्लामा क़स्तलानी फ़र्माते हैं कि 'वत्ताअबीरू बिक्कान यशूरू बिमवाज़बतिही अलैहिस्सलाम अलल्किराति बिहिमा फीहा' या'नी हदीष मज़कूर में लफ़्ज़े काना बतला रहा है कि औहज़रत (ﷺ) ने जुम्आ के दिन फ़ज़्र की नमाज़ में इन सूरतों पर मवाज़बत या'नी हमेशगी फ़र्माई है। अगरचे कुछ उलमा मवाज़बत को नहीं मानते मगर तबरानी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से 'युदीमु बिज़ालिक' लफ़्ज़ मौजूद है। या'नी आप (ﷺ) ने इस अमल पर मुदावमत फ़र्माई (क़स्तलानी) कुछ लोगों ने दा'वा किया था कि अहले मदीना ने ये अमल छोड़ दिया था, इसका जवाब अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) इन लफ़्ज़ों में दिया है, 'व अम्मा दअ्वाहु अन्ननास तरकुलअमल बिही फ़ बाज़िलतुन लिअम्मन अक्षर अहलिलइल्मि मिनस्सहाबति वत्ताबिईन क़द क़ालू बिही कमा नक़लहुबुल्मुन्ज़िर व ग़ैरहु हत्ता अन्नहु प्राबितुन अन इब्राहीम इब्नि औफ़ वल्अस्सअद व हुव मिन किबारित्ताबिईन मिन अहलिलमदीनति अन्नहु अम्मनास बिल्मदीनति बिहिमा फिल्फ़जि यौमल्जुम्आति अख़रजहु इब्नु अबी शैबत बिइस्नादिन सहीहिन' अलख़ (फ़तुहल बारी) या'नी ये दा'वा कि लोगों ने इस पर अमल करना छोड़ दिया था झूठ है। इसलिये कि अक़सर अहले इल्म सहाबा व ताबेईन इसके क़ाइल हैं जैसा कि इब्ने मुज़िर वग़ैरह ने नक़ल किया है यहाँ तक कि इब्राहीम इब्ने औफ़ से भी प्राबित है जो मदीना के बड़े ताबेईन में से हैं कि उन्होंने जुम्आ के दिन लोगों को फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ाई और इन्हीं दो सूरतों को पढ़ा। इब्ने अबी शैबा ने इसे सहीह सनद से रिवायत किया है।

बाब 11 : गांव और शहर दोनों जगह जुम्आ

दुरुस्त है

(892) हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ऩा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू आमिर अर्रदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन तह्म़ान ने बयान किया, उनसे अबू जम्हूर ज़र बिन अब्दुर्रहमान ज़ब्ज़ी ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) की मस्जिद के बाद सबसे पहला जुम्आ बनू क़ैस की मस्जिद में हुआ जो बेहरीन के मुल्क जुवाषी में थी।

(दीगर मक़ाम : 4371)

(893) हमसे बिश्र बिन मुहम्मद मर्वज़ी ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें यूनस बिन

١١- بَابُ الْجُمُعَةِ فِي الْقَرْيَةِ

وَالْمَدَن

٨٩٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْقَدِيعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الصُّبَيْعِيِّ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: (إِنَّ أَوَّلَ جُمُعَةٍ جُمِعَتْ - بَعَثَ جُمُعَةً فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ - فِي مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجَوَالَى مِنَ الْيَمْعُونِ).

[طرفه ب : ٤٣٧١].

٨٩٣- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ

यज़ीद ने जुहरी से ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने इब्ने आमिर से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ये कहते हुए सुना कि तुममें से हर शख्स निगहबान है और लैष ने इसमें ये ज़्यादाती की कि यूनुस ने बयान किया कि रुज़ैक बिन हकीम ने इब्ने शिहाब को लिखा। उन दिनों मैं भी वादिउल कुरा में इब्ने शिहाब के पास ही था कि क्या मैं जुम्हा पढ़ सकता हूँ। रुज़ैक (ऐला के आसपास) एक ज़मीन काश्त करवा रहे थे। वहाँ हब्शा वगैरह के कुछ लोग मौजूद थे। उस ज़माने में रुज़ैक ऐला में (हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की तरफ से) हाकिम थे। इब्ने शिहाब (रह.) ने उन्हें लिखवाया, मैं वहीं सुन रहा था कि रुज़ैक जुम्हा पढ़ाएँ। इब्ने शिहाब रुज़ैक को ये ख़बर दे रहे थे कि सालिम ने उनसे हदीष बयान की कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया कि तुममें से हर एक निगराँ हैं और उसके मातहतों के बारे में उससे सवाल होगा। इमाम निगराँ हैं और उससे सवाल उसकी रिज़ाया के बारे में होगा। इंसान अपने घर का निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत (प्रजा) के बारे में सवाल होगा। औरत अपने शौहर के घर की निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। ख़ादिम अपने आका के माल का निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। इब्ने इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मेरा ख़याल है कि आप (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया कि इंसान अपने बाप के माल का निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा और तुममें से हर शख्स निगराँ हैं और सबसे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा।

(दीगर मक़ाम : 2409, 2554, 2751)

عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ غَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «كُلُّكُمْ رَاعٍ» وَزَادَ اللَّيْثُ قَالَ يُؤْتَى كَتَبَ رَزِيقُ بْنُ حَكِيمٍ إِلَى ابْنِ شِهَابٍ - وَأَنَا مَعَ يَوْمَيْلٍ بِوَادِي الْقَرْيَ - : هَلْ تَرَى أَنْ أَجْمَعَ؟ وَرَزِيقُ غَابِلٌ عَلَى أَرْضٍ يَعْمَلُهَا وَفِيهَا جَمَاعَةٌ مِنَ السُّودَانِ وَغَيْرِهِمْ، وَرَزِيقُ يَوْمَنْدٍ عَلَى أَيْلَةٍ، فَكَتَبَ ابْنُ شِهَابٍ - وَأَنَا أَسْمَعُ - يَأْمُرُهُ أَنْ يُجْمَعَ، يُخْبِرُهُ أَنْ سَأَلِمَا حَدَّثَهُ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ غَمَرَ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ: الْإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي أَهْلِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْئُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْعَادِمُ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ» - قَالَ: وَحَسِبْتُ أَنَّ قَدْ قَالَ: «وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي مَالِ أَبِيهِ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ».

[أطرافه في : ٢٤٠٩، ٢٥٥٤، ٢٧٥١]

तशरीह: मुज्तहिदे मुत्लक हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द फ़र्माया है जो जुम्हों की सिहत के लिये शहर और हाकिम वगैरह की क़यूद लगाते हैं और गांव में जुम्हों के लिये इंकार करते हैं। हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ साहब शारेहे बुखारी फ़र्माते हैं कि इससे इमाम बुखारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द किया जो जुम्हों के लिये शहर की कैद करते हैं। अहले हदीष का मज़हब ये है कि जुम्हों की शर्तें जो हन्फियों ने लगाई हैं वो सब बेदलील हैं और जुम्हा दूसरी नमाज़ों की तरह है सिर्फ़ जमाअत इसमें शर्त है। इमाम के सिवा एक आदमी और होना और नमाज़ से पहले दो ख़ुत्बे पढ़ना सुन्नत है बाक़ी

कोई शर्त नहीं है। दारुल हुरब और काफ़िरों के मुल्क में भी हज़रत इमाम ने बाब में लफ़्ज़े कुरा और मुद्न इस्ते' माल किया कुरा क़र्या की जमा है जो उमूमन गांव ही पर बोला जाता है और मुद्न मदीना की जमा है जिसका इत्लाक़ शहर पर होता है।

अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, 'फ़ी हाज़िहित्तर्जमति इशारतुन इला ख़िलाफ़िम्मन ख़ुस्सल्जुम्अत बिल्मुद्नुन दुनल्कुरा' या'नी इस बाब में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उन लोगों के ख़िलाफ़ इशारा फ़र्माया है जो जुम्अे की शहरों के साथ ख़ास करके देहात में इक़ामते जुम्आ का इंकार करते हैं। आपने इस हदीष को बतौर दलील पेश किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मस्जिदे नबवी के बाद पहला जुम्आ अब्दुल कैस नामी क़बीले की मस्जिद में क़ायम किया गया जो जुवाषी नाम गांव में थी और वो गांव बहरीन के इलाके में वाक़ेअ था। ज़ाहिर है कि ये जुम्आ आँहज़रत (ﷺ) की इजाज़त ही से क़ायम किया गया। सहाबा किराम (रिज.) की मजाल न थी कि आँहज़रत (ﷺ) की इजाज़त के बग़ैर वो कोई काम कर सकें। जुवाषी उस वक़्त एक गांव था मगर हनफ़ी हज़रात फ़र्माते हैं कि वो शहर था हालाँकि हदीषे मज़कूर से उसका गाँव होना ज़ाहिर है जैसा कि वक़्कोअ की रिवायत में साफ़ मौजूद है, 'अन्नहा क़र्यतुम्मिन क़ुरा लबहरीन' या'नी जुवाषी बहरीन के देहात में एक गांव था। कुछ रिवायतों में क़ुरा अब्दुल कैस भी आया है कि वो क़बीला अब्दुल कैस का एक गाँव था। (क़स्तलानी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं कि मुम्किन है कि बाद में इसकी आबादी बढ़ गई हो और वो शहर हो गया हो मगर इक़ामते जुम्आ के वक़्त वो गांव ही था। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने मज़ीद वज़ाहत के लिये हज़रत इब्ने शिहाब (रह.) का फ़र्मान ज़िक़र किया कि उन्होंने रुज़ैक नामी एक बुजुर्ग को जो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की तरफ़ से ऐला के गवर्नर थे और एक गांव में जहाँ उनकी ज़मींदारी थी, रहते थे। उनको उस गांव में जुम्आ क़ायम करने के लिये इजाज़त नामा लिखा।

इमाम क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं कि अम्लाहु इब्नु शिहाब मिन कातिबिही फ़समिअहू यूनुस मिन्हु या'नी इब्ने शिहाब जुहरी ने अपने कातिब से उस इजाज़तनामे को लिखवाया और यूनुस ने उनसे उस वक़्त उसे सुना और इब्ने शिहाब ने ये हदीष पेश करके उनको बतलाया कि वो गांव और देहात ही में है लेकिन उसको जुम्आ पढ़ना चाहिये क्योंकि वो अपने रिआया का जो वहाँ रहती है। इस तरह अपने नौकर-चाकरों का निगाहबान है जैसे बादशाह निगाहबान होता है तो बादशाह की तरह उसको भी अहक़ामे शरइया क़ायम करना चाहिये जिनमें से एक इक़ामते जुम्आ भी है। इब्ने शिहाब जुहरी वादी-ए-कुरा में थे जो मदीना मुनव्वरा के पास एक गांव हैं जिसे आँहज़रत (ﷺ) ने सात हिजरी जमादिल आख़िर में फ़तह किया था। फ़तहूल बारी में है कि ज़ैन बिन मुनीर ने कहा कि इस वाक़िआ से प्राबित होता है कि जुम्आ बादशाह की इजाज़त के बग़ैर भी क़ायम हो जाता है। जब कोई जुम्आ क़ायम करने के क़ाबिल इमाम ख़तीब वहाँ मौजूद हों और इससे गांव में भी जुम्आ का होना प्राबित हुआ।

गांव में जुम्आ की सेहत के लिये सबसे बड़ी दलील कुअने पाक की आयते करीमा है जिसमें फ़र्माया 'या अय्युहल्लज़ीन आमनू इज़ा नुदिय लिस्सलाति मिंय्यौमिल जुम्अति फ़स्औ इला ज़िम्बिल्लाहि व ज़रुल्बैअ' (आयत अल जुम्आ, 9) 'ऐ ईमानवालों! जब जुम्आ के दिन नमाज़े जुम्आ के लिये अज़ान दी जाए तो अल्लाह के ज़िक़र के लिये चलो और ख़रीदो-फ़रोख़्त छोड़ दो।' इस आयते करीमा में ईमानवाले आम हैं वो शहरों या देहाती। सब इसमें दाख़िल हैं जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि 'अल्जुम्अतु हक्कुन वाजिबुन अला कुल्लि मुस्लिमिन फ़ी जमाअतिन इल्ला अर्बअतुन अब्दुम मम्लूकुन औ इम्रातुन औ सबिय्युन औ मरीजुन' (स्वाहु अबू दाऊद वल हाकिम) या'नी जुम्आ हर मुसलमान पर हक्क और वाजिब है कि वो जमाअत के साथ अदा करे मगर गुलाम औरत और बच्चे और मरीज़ पर जुम्आ फ़र्ज नहीं। एक और हदीष में है, 'मन कान यूमिनु बिल्लाहि वल्यौमिल आख़िरी फ अलैहिल्लजुम्अतु इल्ला मरीजुन औ मुसाफ़िरुन औ इम्रातुन औ सबिय्युन औ मम्लूकुन फ मनिस्तगना बिलहविन औ तिजारतिन इस्तगनल्लाहु अन्हु वल्लाहु ग़निय्युन हमीद' (स्वाहु दारे कुत्नी) या'नी जो शख्स अल्लाह और क़यामत के दिन पर यकीन रखता है उस पर जुम्आ फ़र्ज है मगर मरीज़, मुसाफ़िर, गुलाम और बच्चे और औरत पर जुम्आ फ़र्ज नहीं है। पर जो कोई खेल-तमाशा या तिजारत की वजह से बेपरवाही करे तो अल्लाह पाक भी उससे बेपरवाही करेगा क्योंकि अल्लाह बेनियाज़ और महमूद है।

आयते शरीफा में खरीदो-फ़रोख़्त के ज़िक्र से कुछ दिमागों से जुम्अे का शहर होना निकाला है हालाँकि ये इस्तिदलाल बिल्कुल ग़लत है। आयते शरीफा में खरीदो-फ़रोख़्त का इसीलिये ज़िक्र आया कि नुज़ूले आयत के वक़्त ऐसा वाक़िआ पेश आया था कि मुसलमान एक तिजाराती काफ़िले के आ जाने से जुम्आ छोड़कर खरीद-फ़रोख़्त के लिये दौड़ पड़े थे इसलिये आयत में खरीदो-फ़रोख़्त छोड़ने का ज़िक्र आ गया और अगर उसको इसी तरह मान लिया जाए तो कौनसा गांव आज ऐसा है जहाँ कमो-बेश खरीदो-फ़रोख़्त का सिलसिला ज़ारी न रहता हो। पस इस आयत से जुम्अे के लिये शहर का ख़ास करना बिल्कुल ऐसा है जैसा कि कोई डूबनेवाला तिनके का सहारा हासिल करे।

एक हदीष में साफ़ गांव का लफ़्ज़ मौजूद है। चुनाँचे आहज़रत (रज़ि.) फ़र्माते हैं, 'अल्जुम्अतु वाजिबतुन अला कुल्लि कर्यतिन फीहा इमामुन इल्लम यकूनु इल्ला अब्रअतुन' (रवाहु दारे कुत्नी, पेज नं. 26) या 'नी हर ऐसे गांव वालों पर जिसमें नमाज़ पढ़ाने वाला इमाम मौजूद हों जुम्आ वाजिब है अगरचे चार ही आदमी हों। ये रिवायत भले ही कमज़ोर है मगर पहली रिवायतों की ताईद व तक़वियत उसे हासिल है। लिहाज़ा इससे भी इस्तिदलाल दुरुस्त है। इसमें उन लोगों का भी रद्द है जो स्नेहते जुम्आ के लिये कम-अज़कम 40 आदमियों का शर्त होना करार देते हैं।

अकाबिरे सहाबा से भी गांव में जुम्आ पढ़ना प्राबित है। चुनाँचे हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) का इशार्द है कि तुम जहाँ कहीं हो जुम्आ पढ़ लिया करो। अता इब्ने मैमून अबू राफ़ेअ से रिवायत करते हैं कि 'अन्न अब्बा हुरैरत कतब इला उमर यस्अलुहु अनिल्जुम्अति व हुब बिल्बहरैनि फ़क़तब इलैहिम अन तज्मिऊ हैषु मा कुन्तुम अख़रजहु इब्नु ख़ुज़ैमत व सहहू व इब्नु अबी शैबत व लब्बैहकी व क़ाल हाज़लअषर इस्नादुहु सहीहुन' (फ़तहुल बारी, पेज नं. 486) हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बहरीन से हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) के पास ख़त लिखकर पूछा था कि बहरीन में जुम्आ पढ़ें या न पढ़ें तो हज़रते उमर (रज़ि.) ने जवाब में लिखा था कि तुम जहाँ कहीं भी हो जुम्आ पढ़ लिया करो।

इसका मतलब हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) बयान फ़र्माते हैं, 'क़ालशशाफ़िई मअनाहु फी अय्यि कर्यतिन कुन्तुम लिअन्न मकामहुम बिल्बहरैनि इन्नमा कान फिल्कुरा' (अतअलीकुलमुगनी अलद्वार कुत्नी) कि ये मा'नी है कि तुम जिस गांव में भी मौजूद हों (जुम्आ पढ़ लिया करो) क्योंकि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) (सवाल करने वाले) गांव में ही मुक़ीम थे और हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) बयान करते हैं कि 'व हाज़ा मा यशतमिलुलमुदुन वल्कुरा' (फ़तहुल बारी, पेज नं. 486) फ़ारूक़ी हुक़म शहरों और देहातों को बराबर शामिल हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) खुद गांव में जुम्आ पढ़ने के न सिर्फ़ क़ाइल थे बल्कि सबको हुक़म देते थे। चुनाँचे लैष बिन सअद (रह.) फ़र्माते हैं, 'इन्न अहललइस्कन्दरियति व मदाइन मिस्र व मदाइन सवाहिलिहा कानू यज्मऊनल्जुम्अत अला अहदि उमर बिल्ख़ाबि व इप्मान बिअम्मिहिमा व फीहिमा रिजालुम्मिनस्साबति' (अतअलीकुलमुगनी अलद्वार कुत्नी, जिल्द नं. 1, पेज नं. 166) इस्कंदरिया और मिस्र के आसपास वाले हज़रत उमर व इप्मान (रज़ि.) के ज़माने में इन दोनों की इशार्द से जुम्आ पढ़ा करते थे। हालाँकि वहाँ सहाबा किराम (रज़ि.) की एक जमाअत भी मौजूद थी और वलीद बिन मुस्लिम फ़र्माते हैं कि 'सअल्लुल्लैषबन सअदिन (अय अनितज्मीइ फिल्कुरा) फ़क़ाल कुल्लु मदीनतिन औ कर्यतिन फीहा जमाअतुन उमिरु बिल्जुम्अति फइन्न अहल मिस्र व सवाहिलिहा कानू यज्मऊनल्जुम्अत अला अहदि उमर व इप्मान बिअम्मिहिमा व फीहिमा रिजालुम्मिनस्साबति' दारे कुत्नी पेज नं. 166, फ़तहुल बारी, पेज नं. 486)

नीज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) भी गांव और शहर के बाहर रहनेवालों पर जुम्अे की नमाज़ फ़र्ज़ होने के क़ाइल थे। चुनाँचे अब्दुर्रज़ाक़ ने सहीह सनद के साथ हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की है कि 'इन्नहु कान यरा अहललिमयाहि बैन मक़त वल्मदीनति यज्मऊन फ़ला यईबु अलैहिम' (फ़तहुल बारी, जिल्द नं. 1, पेज नं. 486 वत्तालीकुल मुगनी अलद्वारिल कुत्नी, पेज नं. 166) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) मक्का और मदीना के दरम्यान पानी के पास उतरते हुए वहाँ के देहाती लोगों को जुम्आ पढ़ते देखते तो भी उनको न मना करते और न उनको बुरा कहते और वलीद बिन मुस्लिम रिवायत करते हैं कि 'युर्वा अन शैबान अन मौला लाल सईदिबिल्आसि अन्नहु सअलबन उमर अनिल्कुल्लती बैन मक्कत वल्मदीनति मा तरा लिजुम्अति क़ाल नअम इज़ा कान अलैहिम अमीरुन फ़त्यज्मअ' (रवाहुल बैहकी वत्तअलीक़, पेज नं. 166)

सईद बिन आस के मौला ने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से उनके गांव के बारे में पूछा जो मक्का और मदीना के दरम्यान

में हैं कि उन गांवों में जुम्आ है या नहीं तो हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ! जब कोई अमीर (इमाम नमाज़ पढ़ाने वाला) हो तो जुम्आ उनको पढ़ाए।

नीज़ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) भी देहात में जुम्आ पढ़ने का हुक्म दिया करते थे। चुनाँचे जा'फ़र बिन बुर्कान (रह.) रिवायत करते हैं कि 'कतब उमरुब्नु अब्दिलअज़ीज़ इला अदी बिन अदी अल्किन्दी उन्जुर कुल्ल कर्यतिन अहलु करारिन लैसू हुम बिअहलि उमूदिन यन्तकिलून फ़अम्मिर अलैहिम अमीरन शुम्म मुहु फल्यज्मअबिहिम' (रवाहुल्बैहकी फ़िल मअरिफ़ह वतालीकुल मुनी अलदरुल कुत्नी, पेज नं. 166) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने अदी इब्ने अदी अलकुन्दी के पास लिखकर भेजा कि हर ऐसे गांव को देखो जहाँ के लोग उसी जगह मुस्तक़िल तौर पर नमाज़ पढ़ते हैं। सुतून वालों (खानाबदोशों) की तरह इधर-उधर फिरते व मुंतक़िल नहीं होते। उस गांववालों पर एक अमीर (इमाम) मुकर्रर कर दो कि उनको जुम्आ पढ़ाता रहे।

हज़रत अबूज़र (सहाबी रज़ि.) रब्ज़ा गांव में रहने के बावजूद वहीं चंद सहाबा के साथ बराबर जुम्आ पढ़ते थे। चुनाँचे इब्ने हज़र (रह.) मुहल्ला में फ़र्माते हैं कि 'सहीहुन अन्नहू कान बिउष्मान अब्दुन अस्वदु अमीरुन लहू अलरब्जति युसल्ली खल्फ़हू अबूज़र (रज़ि.) मिनस्रहाबति अल्जुम्अत वग़ैरहा' (कुबैरि शर्हु मुनीह, पेज नं. 512) सहीहसनद से ये साबित है कि हज़रत उष्मान (रज़ि.) का एक सियाह फ़ाम गुलाम रब्ज़ा में हुक्मत की तरफ़ से अमीर (इमाम) था। हज़रत अबूज़र (रज़ि.) और दीगर सहाबा किराम (रज़ि.) उसके पीछे जुम्आ पढ़ा करते थे।

नीज़ हज़रत अनस (रज़ि.) शहरे बस्रा के पास मौज़अे ज़ाविया में रहते थे। कभी तो जुम्आ की नमाज़ पढ़ने के लिये बस्रा आते थे और कभी जुम्आ की नमाज़ मौज़अे ज़ाविया ही में पढ़ लेते थे। बुखारी शरीफ़, जिल्द नं. 1, पेज नं. 123 में है 'व कान अनसुन फ़ी कस्बिन अहयानन यज्मड़ व अहयान ला यज्मड़ व हुव बिज़्ज़ावियति अला फ़र्सखैनि' इस इबारत का मुख़्तसर मतलब ये है कि हज़रत अनस (रज़ि.) जुम्आ की नमाज़ कभी ज़ाविया ही में पढ़ लेते थे और कभी ज़ाविया में भी नहीं पढ़ते थे बल्कि बस्रा में आकर के जुम्आ पढ़ते थे।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़तुल बारी में यही मतलब बयान करते हैं, 'कौलुहू यज्मड़ अय युसल्ली अल्जुम्अत बिमन मअहू व यशहदुल्जुम्अतल्बस्मत' या'नी कभी जुम्आ की नमाज़ (ज़ाविया में) अपने साथियों को पढ़ाते या जुम्आ के लिये बस्रा तशरीफ़ लाते और यही मतलब अल्लामा ऐनी (रह.) ने इम्दा क़ारी, सफ़ा नं. 274, जिल्द नं. 3 में फ़र्माते हैं।

हज़रत अनस (रज़ि.) ईद की नमाज़ भी इसी ज़ाविया में पढ़ लिया करते थे। चुनाँचे बुखारी शरीफ़, पेज नं. 134 में है कि, 'वअमर अनसुब्नु मालिक मौलाहुब्न अबी इत्बत बिज़्ज़ावियति फजमअ अहलहू व बनीहि व सल्ला कसलातिल्मिस्वि व तक्बीरिहिम' हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने अपने आज्ञादकता गुलाम इब्ने इतैबा को ज़ाविया में हुक्म दिया और अपने तमाम घरवालों बेटों वग़ैरह को जमा करके शहरवालों की तरह ईद की नमाज़ पढ़ी। अल्लामा ऐनी (रह.) ने भी इम्दतुल क़ारी, पेज नं. 400/जिल्द नं. 3 में इसी तरह बयान किया है। इन आधार से साफ़ मा'लूम होता है कि सहाबा किराम (रज़ि.) जुम्आ और ईदन की नमाज़ शहरवालों की तरह गांव में भी पढ़ा करते थे।

नबी (ﷺ) ने खुद गांव में जुम्आ पढ़ा है:

रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मक्का मुकर्रमा से हिजरात करके मदीना तय्यिबा तशरीफ़ ले गए थे तो बनी मालिक के गांव में जुम्आ की नमाज़ पढ़ी थी। इब्ने हज़म (रह.) मुहल्ला में फ़र्माते हैं कि 'व मिन आज्ञामिल्बुहानि अला सिहहतिहा फिल्कुरा अन्नन्नबिदय्य (ﷺ) अतल्मदीनत व इन्नमा हिय कर्यतुन सिगारुन मुतफरिक्तुन फ़बना मस्जिदहू फी बनी मालिक बिन नज्जार व जमअ फीहि फ़ी कर्यतिन लैसत बिल्कबीरति हुनालिक' (औनुल्माबूद शरह अबू दाऊद, जिल्द नं. 1, पेज नं. 414) देहात व गांव में जुम्आ पढ़ने की सेहत पर सबसे बड़ी दलील ये है कि नबी करीम (ﷺ) जब मदीने में तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त मदीने के छोटे-छोटे अलग-अलग गांव बसे हुए थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी मालिक बिन नज्जार में मस्जिद बनाई और उसी गांव में जुम्आ पढ़ा जो न तो शहर था और न बड़ा गांव ही था।

और हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने तल्ख़ीसुल हबीर, पेज नं. 132 में फ़र्माते हैं कि 'वरवल्बैहकी फिल्मअरिफ़ति

अन मुगाजिबि इस्हाक व मूसब उक्बत उन्नबिथि (ﷺ) हीन रकिब मिन बनी अमरिबि औफ फी हिज्रतिही इलल्मुदीनति मर अला बनी सालिम व हिय कर्यतुन बैन कुबा वल्मदीनति फअदरकल्हुल्जुम्अतु फसल्ला बिहिमल्जुम्अत व कानत अव्वलु जुम्अतिन सल्लाह हीन कदिम' इमामे बैहकी (रह.) ने अल मअरिफा में इब्ने इस्हाक व मूसा बिन उक्बा के मगाजी से रिवायत किया है कि हिजरत के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) जिस वक़्त बनी अमर बिन औफ (कुबा) से सवार होकर मदीना की तरफ़ रवाना हुए तो बनी सालिम के पास से आपका गुजर हुआ वो कुबा व मदीना के बीच एक गांव था तो उसी जगह जुम्आ ने आपको पा लिया या'नी जुम्आ का वक़्त हो गया तो सबके साथ (उसी गांव में) जुम्आ की नमाज़ पढ़ी। मदीना तशरीफ़ लाने के वक़्त सबसे पहला यही जुम्आ आपने पढ़ा है।

खुलासतुल वफ़ा पेज नं. 196 में है, 'व लि इब्नि इस्हाक फअदरकल्हुल्जुम्अतु फी बनी सालिमिबि औफ फसल्लाहा फी बत्निल्वादी वादी जी रानूना फकानत अव्वलु जुम्अतिन सल्लाहा बिल्मदीनति' और सीरते इब्ने हिशाम में है कि 'फअदकत्सल्लाहि (ﷺ) अल्जुम्अतु फी बनी सालिम बिन औफ फसल्लाहा फिल्मस्जिदिल्लजी फी बत्निल वादी रानूना' या'नी वादी (मैदान) रानूना की मस्जिद में आपने जुम्आ की नमाज़ पढ़ी।

और आप के हिजरत करने से पहले कुछ सहाबा किराम जो पहले हिजरत करके मदीना तय्यिबा तशरीफ़ ला चुके थे वो अपने इज्तिहाद से कुछ गांव में जुम्आ पढ़ते थे फिर हुजूर (ﷺ) ने उनको मना नहीं किया जैसे असअद बिन ज़रारह (रज़ि.) ने हज़्मुन नबीत (गांव) में जुम्आ पढ़ाया। अबू दाऊद शरीफ़ में है, 'लिअन्नहू अव्वलु मन जमअ बिना फी हजमिन्नबीत मिन हुरा बनी बयाजा फी नक्रीइन युक्कालु नकीउल्खज़मात अल्हदीष' (अल हदीष) हुरा बनी बयाज़ह एक गांव का नाम था जो मदीना तय्यिबा से एक मील की दूरी पर आबाद था।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र तल्खीसुल हबीर, पेज नं. 133 में फ़र्माते हैं, 'हरंतु बनी बयाजा कर्यतुन अला मीलिम्मिनल मदीनति' और खुलासतुल वफ़ा में है, 'वमसवाबु अन्नहू बिहज़मिन्नबीति मिन हरति बनी बयाजा सलमत व लिजा कालन्नववी अन्नहू कर्यतुन यक्करबुल्मदीनत अला मीलिम्मिम्ननाज़िलि बनी सलमत कालहुल्डमामु अहमद कमा नक्लहुशैबु' इस इबारत का मतलब ये है कि हुरा बनी बयाजा मदीने के पास एक मील की दूरी पर एक गांव है उसी गांव में असअद बिन ज़रारह (रज़ि.) ने जुम्आ की नमाज़ पढ़ाई थी।

इसीलिये इमामे ख़ताबी (रह.) शरह अबी दाऊद में फ़र्माते हैं कि व मिनल हदीषि मिनल्फ़िह अन्नल्जुम्अत जवाज़ुहा फिल्कुरा कजवाज़िहा फिल्मुदुनि वल्अम्मारि इस हदीष से ये समझा जाता है कि देहात में जुम्आ पढ़ना जाइज़ है जैसे कि शहरों में जाइज़ है।

इन अहदादीष व आधार से साफ़ तौर पर मा'लूम हो गया कि सहाबा किराम (रज़ि.) देहात में हमेशा जुम्आ पढ़ा करते थे और अज़ ख़ुद हुजूर (ﷺ) ने पढ़ाया और पढ़ने का हुक्म दिया है कि अल्जुम्अतु वाजिबतुन अला कुल्लि कर्यतिन (दारे कुत्नी, पेज नं. 165) हर गांव वालों पर जुम्आ फ़र्ज़ है।

हज़रत उमर फ़ारूक (रज़ि.) ने भी अपनी ख़िलाफ़त के दौर में देहात में जुम्आ पढ़ने का हुक्म दिया और हज़रत उमर बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) के दौर में भी सहाबा किराम (रज़ि.) गांव में जुम्आ पढ़ा करते थे। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) और हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने भी देहात में जुम्आ पढ़ने का हुक्म दिया।

इन तमाम अहदादीष व आधार के होते हुए कुछ लोग देहात में जुम्आ बन्द कराने की कोशिश में लगे रहते हैं। हालाँकि जुम्आ तमाम मुसलमानों के लिये ईद है। ख़्वाह शहरों ही या देहाती। तर्गीब व तरहीब, पेज नं. 195/ जिल्द नं. 1 में है कि अन अनसिबि मालिक (रज़ि.) क़ाल उरिजतिल्जुम्अतु अला रसूलिल्लाहि (ﷺ) जाअ बिहा जिब्रइलु अलैहिस्सलाम फी कल्मिअतिल्बैजाई फी वस्तिहा कन्नुक्ततिल्सौदाइ फ़क़ाल मा हाज़ा या जिब्रील क़ाल हाज़िहिल्जुम्अतु यअरिज़ुहा अलैक रब्बुक लितकून लक ईदन व लिक़्ौमिक मिम्बअदिक अल्हदीष रवाहुत्तबरानी फिल्औस्ति बिइस्नादिन जय्यिदिन हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जिब्रइल अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जुम्आ को सफ़ेद आइने की तरह एक पल्ले में लाकर पेश फ़र्माया। उसके बीच में एक स्याह नुक्ता सा था। नबी करीम (ﷺ) ने पूछा कि ऐ जिब्रइल! ये क्या है? हज़रत जिब्रइल अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि ये वो जुम्आ है जिसको आपका रब आपके सामने पेश करता है ताकि आपके और आपकी उम्मत के वास्ते ये ईद होकर रहे।

इस हदीस से मा'लूम हुआ कि जुम्आ तमाम उम्मत मुहम्मदिया के लिये ईद है, उसमें शहरी व देहाती की कोई तख्सीस नहीं है। अब देहातियों को इस ईद (जुम्आ) से महरूम रखना इस्माफ के खिलाफ है। ईमान, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात वगैरह जैसे देहाती पर बराबर फ़र्ज़ हैं। इसी तरह जुम्आ भी देहाती व ग़ैर देहाती पर बराबर फ़र्ज़ है। अगर गांव वालों पर जुम्आ फ़र्ज़ न होता तो अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) अलग करके ख़ारिज कर देते जैसे मुसाफ़िरी, मरीज़ वगैरह को अलग किया गया है हालाँकि किसी आयत या हदीस मफ़ूअ सहीह में इसका इस्तिस्नाअ नहीं किया गया।

मानेईने जुम्आ (जुम्आ से मना करने वालों) की दलील:—

हज़रत अली (रज़ि.) का अषर (क़ौल) 'ला जुम्अत व ला तशरीक इल्ला फी मिस्र जामिअ' मानेईन की सबसे बड़ी दलील है मगर ये क़ौल मज़कूर बाला अह्दास व आधार के मुआरिज़ व मुखालिफ़ होने के अलावा उनका ज़ाती इज्तिहाद है और हुर्मत और बुजुबे इज्तिहाद से श्राबित नहीं होते क्योंकि उसके लिये नस्से क़तई होना शर्त है। चुनाँचे मज्मूअल अन्हार, पेज नं. 109 में इस अषर के बाद लिखा है, 'लाकिन हाज़ा मुश्किलुन जिद्दा लिअन्नशर्त हुव फ़र्ज़ुन ला यम्बुतु इल्ला बिक़तइय्यिन।'।

फिर मिस्र जामेअ की ता'रीफ़ में इस क़दर इख़िलाफ़ है कि अगर उसको मोतबर समझा जाए तो देहात तो देहात ही है आजकल हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े शहरों में भी जुम्आ पढ़ा जाना नाजाइज़ हो जाएगा क्योंकि मिस्र जामेअ की ता'रीफ़ में अमीर व क़ाज़ी व अहकामे शरई का निफ़ाज़ और हुदूद का ज़ारी हो जाना शर्त है। हालाँकि इस वक़्त हिन्दुस्तान में न कोई शरई हाकिम व क़ाज़ी है, न हुदूद ही का इजराअ है और न हो सकता है। बल्कि अक़सर इस्लामी मुल्कों में भी हुदूद का निफ़ाज़ नहीं है तो उस क़ौल के मुताबिक़ शहरों में भी न होना चाहिये और उन शर्तों का पुबूत न कुआन मजौद से है और न सहीह हदीसों से है।

और ला जुम्अत में ला नफ़ी कमाल का भी हो सकता है या'नी कामिल जुम्आ शहर ही में होता है क्योंकि वहाँ जमाअत ज़्यादा होती है और शहर के ए'तिबार से देहात में जमाअत कम होती है। इसलिये शहर की हैषियत से देहात में प्रवाब कम मिलेगा। जैसे जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने से सत्ताइस दर्जे ज़्यादा प्रवाब मिलता है और अलग पढ़ने से इतना प्रवाब नहीं मिलता तो ला जुम्अता अल्सुख में कमाल और ज़्यादा तो प्रवाब की नफ़ी है फ़र्ज़ियत की नफ़ी नहीं है।

अगर बिल फ़र्ज़ उस तौजीह को तस्लीम न किया जाए तो देहातियों के लिये कुर्बानी और बक़र ईद के दिनों की तक्बीरें वगैरह भी नाजाइज़ होनी चाहिये क्योंकि कुर्बानी नमाज़े ईद के ताबेअ व मातहत है और जब मत्बूअ (नमाज़े ईद) ही नहीं तो ताबेअ (कुर्बानी) कैसे जाइज़ हो सकती है? जो लोग देहात में जुम्आ पढ़ने से रोकते हैं उनको चाहिये कि देहातियों को कुर्बानी से भी रोक दें।

और अषर मज़कूर पर उनका ख़ुद भी अमल नहीं क्योंकि तमाम फ़ुक़हा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अगर इमाम के हुक्म से गांव में मस्जिद बनाई जाए तो उसी के हुक्म से गांव में जुम्आ भी पढ़ सकते हैं। चुनाँचे दुर्रे मुख़्तार, जिल्द: अब्वल / पेज नं. 537 में हैं कि इज़ा बुनिय मस्जिदुन फिरस्ताकि बिअमिलिइमामि फ़हुव अमर बिल्जुम्अति इत्तिफ़ाक़न अला मा क़ालहुस्सरख़सी वर्स्ताक़ कमा फिल्कामूस जब गांव में इमाम के हुक्म से मस्जिद बनाई जाए तो वहाँ बइत्तिफ़ाक़ फ़ुक़हा जुम्आ की नमाज़ पढ़ी जाएगी।

इससे साफ़ मा'लूम होता है कि जुम्आ के लिये मिस्र (शहर) होना ज़रूरी नहीं बल्कि देहात में भी जुम्आ हो सकता है। इमाम मुहम्मद (रह.) भी इसी तरह फ़र्माते हैं। 'हत्ता लौ बुइज़ इला क़र्यतिन नाइबन लिइकामतिल्हुदूद वल्किस्मासि तज़ीरू मिस्रन फइज़ा उज़िलुहू तल्हक़ बिल्कुरा' (ऐनी शरह बुखारी, पेज नं. 26 व कुबैरी शरह मुनिह, पेज नं. 514) अगर किसी नाइब को हुदूदो-क़िस्मास जाइज़ करने के लिये किसी गांव में भेजे तो वो गांव (शहर) हो जाएगा जब नाइब को मअज़ूल (अलग-अलग) कर देगा तो वो गांव के साथ मिल जाएगा या'नी फिर गांव हो जाएगा।

बहरकेफ़ जुम्आ के लिये मिस्र होना (शरअन) शर्त नहीं है बल्कि आबादी व बस्ती व जमाअत होना ज़रूरी है और हो सकता है कि हज़रत अली (रज़ि.) के क़ौल फ़ी मिस्रे जामेअ से बस्ती ही मुराद हो क्योंकि बस्ती शहर व देहात दोनों को

शामिल है इसलिये लफ्जे क़र्या से कभी शहर और कभी गांव मुराद लेते हैं। लेकिन इसके असली मा'नी वही बस्ती के हैं।

अल्लामा क़स्तलानी (रह.) शरह बुखारी, जिल्द नं. 2, पेज नं. 138 में लिखते हैं, 'वलक़र्यतु वाहिदतुल्कुरा कुल्लु मकानिन इत्तसलत फीहिल्अब्नियतु वत्तख़ज़ क़रारन व यक़उ ज़ालिक अलल्मुदुनि व ग़ैरहा' (और लिसानुल अरब, पेज नं. 637 जिल्द में है, 'वलक़र्यतु मिनल्मसाकिनि वल्अब्नियति व वज़्जियाइ व क़द तुल्लकु अलल्मुदुनि व फिल्हदीषि उमिरत बिक्क़र्यतिन ताकुलुल्कुरा व हिय मदीनतुर्सूलि (ﷺ) अयज़न व जाअ फी कुल्लि कारिन व बादिन बादिल्लज़ी यन्ज़िलुल्क़र्यत वल्बादी।'

इन इबारतों से मा'लूम होता है कि करिआ के मा'नी मुल्लक़ बस्ती के हैं और मिस्र जामेअ का मा'नी भी बस्ती के हैं क्योंकि अहले लुगत ने करिआ की तफ़सीर में लफ्जे मिस्त्रे जामेअ इख़्तियार किया है।

चुनाँचे इसी लिसानुल अरब में है, 'क़ाल इब्नु सय्थिदा अल्क़र्यतु वल्क़र्यतु लुगतानि अल्मिस्लजामिअ अत्तहज़ीबुल्मक्सूरतु यमानिया वमिन धम्मा इज़्तमऊ अललक़ुरा' और कामूस, पेज नं. 285, 'अल्क़र्यतुल्मिस्न अल्मिस्लजामिअ' और अल मुंजिद, पेज नं. 661 में है, 'अल्क़र्यतु वल्क़र्यतुज्जैअतु अल्मिस्लजामिअ।'

इन इबारतों से साफ़ मा'लूम होता है कि करिआ और मिस्त्रे जामेअ दोनों एक ही चीज़ हैं और करिआ के मा'नी बस्ती के हैं तो मिस्त्रे जामेअ के मा'ना भी बस्ती के हैं और बस्ती शहर और गांव दोनों को शामिल है। पस हज़रत अली (रज़ि.) के अफ़र का मतलब ये हुआ कि जुम्आ बस्ती में होना चाहिये या'नी शहर व देहात दोनों जगह होना चाहिये।

मुनासिब होगा इस बहस को ख़त्म करते हुए हज़रत मौलाना इबंदुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष मुबारकपुरी महज़िल्लुहुल आली का फ़ाजिलाना तब्सरा (आपकी काबिले क़द्र किताब, मिर्आत, जिल्द नं. 2, पेज नं. 288 से) शाएकीन के सामने पेश कर दिया जाए। हज़रत मौसूफ़ फ़र्माते हैं, 'वज़्तलफू अयज़न फी महल्लि इक्क़मतिल्जुम्अति फ़क़ाल अबू हनीफ़त व अम्हाबुहु ला तसिहहु इल्ला फी मिस्न जामिअ व जहबल्अइम्मतुष़लाषतु इला जवाज़िहा व सिहहतिहा फिल्मुदुनि वल्कुरा जमीअन वस्तदल्ल अबू हनीफ़त बिमा रुविय अन अलिथ्यिन मफूअन ला जुम्अत व ला तशरीक इल्ला फी मिस्न जामिअ व क़द ज़अफ़ अहमदु व ग़ैरहू रफ़अहू व सहह इब्नु हज़म वग़ैरहू वफ़क़हू व लिल्ज़िहतिहादि फीहि फ़ला युन्तहज़ु लिल्इहतिजाजि बिही फ़ज़लन अन अय्युख़म्मिस बिही उमूलुलआयति औ युक्क़य्यदु बिही इल्लाकुहा मअ अन्नल्हनफियत क़द फी तहदीदिमिस्लिजामिअ व जब्नुहु इला अक्क़ालिन क़षीरतिन मुतबायनतिन व मुतनाक्क़ज़तिन मुतख़ालफतिन जिहा क़मा ला यख़फी अला मन तालज़ कुतुब फुरुइहिम व हाज़ा यदुल्लु अला अन्नहू लम यतअय्यन इन्दहुम मअनल्हदीषि वराज़िहु इन्दना मा जहब इलै हिल्अइम्मतुष़लाषतु मिन अदमि इश्तिरातिल्मिस्नि व जवाज़िहा फिल्कुरा लिज़ूमिल्आयति व इतलाकिहा व अदमि वुजूदि मा यदुल्लु अला तख़सीसिहा वला बुदलिमय्युक़य्यिद ज़ालिक बिल्मिस्लिजामिअ अय्यांतिय बिदलीलिन क़ातिइन मिन किताबिन औ सुन्नतिन मुतवातरतिन और ख़बरुन मशहुरुन बिल्मअनल्मुस्तहिली इन्दल्मुहद्दीषीन व अलत्तन्ज़ीलि बिख़बरिन वाहिदिन मफूअन सरीहिन सहीहिन यदुल्लु अलत्तख़सीसि बिल्मिस्लिजामिअ'।

ख़ुलासा इस इबारत का ये है कि इलमाने महल्ले इक्क़मत ज़ुम्आ में इख़िलाफ़ किया है चुनाँचे हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और आप के अम्हाब का क़ौल है कि ज़ुम्आ सिर्फ़ मिस्त्रे जामेअ ही में सही है और तीनों इमाम हज़रत इमाम शafiई, इमाम मालिक, इमाम अहमद (रह.) फ़र्माते हैं कि शहरों के अलावा गांव-बस्तियों में भी ज़ुम्आ हर जगह सही और दुस्त है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने इस हदीष से दलील ली है जो मफूअन हज़रत अली से मरवी है कि ज़ुम्आ और ईद सही नहीं मगर मिस्त्रे जामेअ में। इमाम अहमद वग़ैरह ने इस रिवायत के मफूअ होने को ज़ईफ़ कहा है और अल्लामा इब्ने हज़म वग़ैरह ने इसका मौक़ूफ़ होना सही तस्लीम किया है। चौंकिये मौक़ूफ़ है और इसमें इज्तिहाद के लिये काफ़ी गुंजाइश है इसलिये ये इहतिजाज के काबिल नहीं है और इस वजह से भी कि इससे कुअनि पाक की आयत 'इज़ा नूदिय लिस्सलाति मिय्यौमिल्जुम्अति फ़स्औ इला ज़िक्क़िहाहि' जो मुल्लक़ है। इसका मुक़य्यिद होना लाज़िम आता है। फिर हन्फ़िया खुद मिस्त्र की ता'रीफ़ में भी मुख़्तलिफ़ हैं। जबकि इनके यहाँ बसिलसिल-ए-ता'रीफ़ मिस्त्रे जामेअ अक्वाल बेहद मुताज़ाद (विरोधाभाषी) और मुतनाक्क़िज़ नीज़ मुतबाइन है जैसा कि उनकी कुतुबे फुरुअ के मुतालआ करनेवाले हज़रात पर मख़फ़ी नहीं है। ये दलील है कि फ़िला हकीक़त इस हदीष के कोई सही मा'नी उनके यहाँ भी मुत्अय्यिन (निर्धारित) नहीं है। पस हमारे

नज़दीक यही राजेह है कि तीनों इमाम जिघर गए हैं कि जुम्आ के लिये मिस्र शर्त नहीं है और जुम्आ शहर की तरह गांव-बस्तियों में भी जाइज है और यही फ़त्वा सही है। क्योंकि कुर्आ न मजीद की आयत मज़कूर जिससे जुम्आ की फ़र्जियत हर मुसलमान पर प्राबित होती है (सिवाए उनके जिनको शारेअ ने अलग कर दिया है) ये आयत आम है जो शहरो-देहाती जुम्आ मुसलमान को शामिल है और मिस्रे जामेअ की शर्त के लिये जो आयत के अमूम को ख़ास करे कोई दलील वक्रतेअ कुर्आनो-हदीष से मुतावातिर या ख़बरे मशहूर जो मुहद्दीषीन के नज़दीक क़ाबिले कुबूल और लायके इस्तिदलाल हो, नहीं है। नॉज़ कोई ख़बरे वाहिद, मर्फूअ, सरीह, सहीह भी ऐसी नहीं है जो आयत को मिस्रे जामेअ के साथ ख़ास कर सके।

ता'दाद के बारे में हज़रत मौलाना शैख़ुल हदीष (रह.) फ़मति हैं कि 'बराजिह इन्दी मा ज़हब इलैहि अहलु ज़ाहिरि अन्नहू तसिहलु जुम्अतु बिघ्नेनि लिअन्नहू लम यकुम दलीलुन अला इश्तिराति अदनिन मख़सूसिन व क्रद म्दहतिलज्जमाअतु फी साइरिस्मलवाति बिघ्नेनि व ला फरक बैनहुमा व बैनलजुम्अति फी ज़ालिक व लम याति नम्सुन मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिअन्नलजुम्अत ला तुन्अकदु इल्ला बिकज़ा अलख़' (मिज़ात, जिल्द नं. 2, पेज नं. 288) या'नी इस बारे में कि जुम्आ के लिये नमाज़ियों की कितनी ता'दाद ज़रूरी है। मेरे नज़दीक इसको तर्जीह हासिल है जो अहले ज़ाहिर का फ़त्वा है कि बिला शक़ जुम्आ दो नमाज़ियों के साथ भी सही है इसलिये कि अददे मख़सूस के शर्त होने के बारे में कोई दलील नहीं हो सकती और दूसरी नमाज़ों के जमाअत भी दो नमाज़ियों के साथ सही है और पंज वक़ता नमाज़ और जुम्आ में इस बारे में कोई फ़र्क़ नहीं है और न कोई नस्से सरीह रसूले करीम (ﷺ) से इस बारे में वारिद हुई है कि जुम्आ का इन्ज़िफ़ाद इतनी ता'दाद के बग़ैर सही नहीं। इस बारे में कोई हदीष सहीह मर्फूअ रसूलुल्लाह (ﷺ) से मन्कूल नहीं है।

इस मक़ाला को इसलिये लम्बा दिया गया कि हालाते मौजूदा में उलेम-ए-किराम ग़ौर करें और जहाँ भी मुसलमान की जमाअत मौजूद हो वो क़स्बा हो या शहर या गांव हर जगह जुम्आ कायम कराएँ क्योंकि शाने-इस्लाम इसके कायम करने में है और जुम्आ छोड़ने में बहुत से नुक़सानात हैं जबकि इमामाने हिदायत में से तीनों इमाम इमामे शाफ़िई, इमामे मालिक और इमामे अहमद बिन हंबल (रह.) भी गांव में जुम्आ के हक़ में हैं फिर इसके छोड़ने पर ज़ोर देकर अपनी तक्लीदे जामिद का घुबूत देना कोई अक्लमन्दी नहीं है। बल्लाहु यहदी मय्यंशाउ इला सिरातिम् मुस्तक़ीम

बाब 12 : जो लोग जुम्आ की नमाज़ के लिये न आएँ जैसे औरतें बच्चे, मुसाफ़िर और मा'ज़ूर वग़ैरह उन पर गुस्ल वाजिब नहीं है

और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा गुस्ल उसी को वाजिब है जिस पर जुम्आ वाजिब है।

894. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शोएब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने (अपने वालिद) अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से सुना फ़मति थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना कि तुममें से जो शख़्स जुम्आ पढ़ने आए तो गुस्ल करे। (राजेअ: 877)

895. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्तमा क़अम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सफ़वान बिन सुलैम

١٢- بَابُ قُلْ عَلَى مَنْ لَمْ يَشْهَدْ الْجُمُعَةِ غُسْلٌ مِنَ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ وَغَيْرِهِمْ؟

وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ: إِنَّمَا الْغُسْلُ عَلَى مَنْ تَجَبَّ عَلَيْهِ الْجُمُعَةُ.

٨٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : سَوِغَتْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((مَنْ جَاءَ مِنْكُمْ الْجُمُعَةَ فَلْيَغْتَسِلْ)). [راجع: ٨٧٧]

٨٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ

ने, उनसे अता बिन यसार ने, उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर बालिग़ के ऊपर जुम्आ के दिन गुस्ल बाजिब है। (राजेअ: 858)

يَسَارٌ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «غُسْلُ يَوْمِ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ».

[راجع: ٨٥٨]

896. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन ताऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ताऊस ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हम (दुनिया में) तो बाद में आए लेकिन क्रयामत के दिन सबसे आगे होंगे, फ़र्क सिर्फ़ ये है किताब यहूद और नसारा को हमसे पहले दी गई और हमें बाद में। तो ये दिन (जुम्आ) वो है जिसके बारे में अहले किताब ने इख़्तिलाफ़ किया। अल्लाह तआला ने हमें ये दिन बतला दिया (उसके बाद) दूसरा दिन (हफ़्ता) यहूद का दिन था और तीसरा दिन (इतवार) नसारा का। आप फिर ख़ामोश हो गए। (राजेअ: 238)

٨٩٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ «نَحْنُ الْآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، يَدُ اللَّهِ أَوْثَرُ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِنَا وَأَوْثَرَنَا مِنْ بَعْدِهِمْ، فَهَذَا الْيَوْمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ فَهَذَا لِلَّهِ لَهُ، فَهَذَا لِلْيَهُودِ، وَبَعْدَ غَدٍ لِلنَّصَارَى» فَسَكَتَ.

[راجع: ٢٣٨]

897. इस हदीष की रिवायत अबान बिन सालेह ने मुजाहिद से की है, उनसे ताऊस ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला का हर मुसलमान पर हक़ है कि हर सात दिन में एक दिन (जुम्आ में) गुस्ल करे। (दीगर मक़ाम: 898, 3487)

٨٩٧- ثُمَّ قَالَ: «حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ أَنْ يَغْتَسِلَ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمًا يَغْتَسِلُ فِيهِ رَأْسُهُ وَجَسَدُهُ».

[طرفاء في: ٨٩٨، ٣٤٨٧]

898. इस हदीष की रिवायत अबान बिन सालेह ने मुजाहिद से की है, उसने ताऊस ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला का हर मुसलमान पर हक़ है, हर सात दिन में एक दिन (जुम्आ में) गुस्ल करे। (राजेअ: 897)

٨٩٨- رَوَاهُ أَبَانُ بْنُ صَالِحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «(لِلَّهِ تَعَالَى عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ حَقٌّ أَنْ يَغْتَسِلَ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمًا)».

[راجع: ٨٩٧]

तशरीह: या'नी ये दिन जुम्आ का वो दिन है जिसकी ता'ज़ीम इबादत इलाही के लिये फ़र्ज़ की गई थी। अल्लामा क़स्तलानी (रह.) ने चंद आधार ज़िक्र किये हैं जिनसे प़ाबित होता है कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत को खास दिन अल्लाह की इबादत के लिये मुक़र्रर किया था और वो जुम्आ का दिन था लेकिन नाफ़र्मांनी की वजह से अपने इज्तिहाद को दख़ल देकर उसे छोड़ दिया और कहने लगे कि हफ़्ते (शनिवार) का दिन ऐसा है कि उसमें अल्लाह ने तमाम दुनिया की ख़िलक़त (रचना) करने के बाद आराम फ़र्माया था पस हमको भी मुनासिब है कि हम हफ़्ते को इबादत का दिन मुक़र्रर करें। और नसारा कहने लगे कि इतवार के दिन अल्लाह ने मख़लूक की ख़िलक़त (रचना) शुरू की, मुनासिब है कि उसको हम अपनी इबादत का दिन ठहरा लें। पस इन लोगों ने इसमें इख़्तिलाफ़ किया और हमको अल्लाह ने सराहतन बतला दिया कि जुम्आ का ही दिन बेहतर है।

इब्ने सीरीन से मरवी है कि मदीने के लोग आँहज़रत (ﷺ) के आने से पहले जबकि अभी सूरह जुम्आ भी नाज़िल नहीं हुई थी एक दिन जमा हुए और कहने लगे कि यहूद और नसारा ने एक दिन जमा होकर इबादत के लिये मुकर्रर किये हुए हैं क्यूँ न हम भी एक दिन मुकर्रर करके अल्लाह की इबादत किया करें। सो उन्होंने अरूबा का दिन मुकर्रर किया और असअद बिन ज़रारह को इमाम बनाया और जुम्आ अदा किया। उस दिन ये आयत नाज़िल हुई, 'इज़ा नूदिय लिस्सलाति मिंय्यौमिल जुम्अति फ़स्औ इला ज़िविरल्लाहि' (अल जुम्आ, आयत नं. 9) इसको अल्लामा इब्ने हज़र ने सहीह सनद के साथ अब्दुर्रज़ाक से नक़ल फ़र्माया और कहा है कि इसका शाहिद इस्नाद हसन के साथ अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माज़ा ने निकाला।

उस्ताज़ुना व मौलाना हज़रत मुहदिष अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं कि 'सुम्पियतिलजुम्अतु लिइज्तिमाइन्नासि फीहा व कान यौमलजुम्अति युसम्मल्लअरूबा' या 'नी जुम्आ इसलिये नाम पड़ा कि लोग इसमें जमा होते हैं और ज़मान-ए-जाहिलियत में इसका नाम यौमे अरूबा था। इसकी फ़ज़ीलत के बारे में इमामे तिमिज़ी (रह.) हदीष लाए हैं, 'अन अबी हुरैरत अनिन्नबिद्यि (ﷺ) क़ाल खैरु यौमिन त़लअत फीहिश्शम्सु यौमलजुम्अति फीहि ख़ुलिक आदमु व फीहि उदखिललज़न्नत व फीहि उख़रेज मिन्हा व ला तकूमस्साअतु इल्ला फी यौमिलजुम्अति' 'या' नी तमाम दिनों में बेहतरीन दिन जिसमें सूरज तुलूअ होता है वो जुम्अे का दिन है, इसमें आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी दिन में जन्नत में दाख़िल किये गए और इस दिन उनका जन्नत से निकलना हुआ और क़यामत भी इस दिन क़ायम होगी।'

फ़ज़ाइले जुम्आ पर मुस्तक़िल किताबें लिखी गई हैं। ये उम्मत की हफ़्तावारी ईद है मगर स़द अफ़सोस कि जिन हज़रात ने देहात में जुम्आ बन्द कराने की तहरीक चलाई इससे कितने ही देहात के मुसलमान जुम्आ से इस दर्जा ग़ाफ़िल हो गए कि उनको ये भी ख़बर नहीं कि आज जुम्अे का दिन है। इसकी ज़िम्मेदारी उन उलमा पर आइद होती है। काश! ये लोग हालाते मौजूदा का जाइज़ा लेकर मफ़ादे उम्मत पर ग़ौर कर सकते।

बाब 13 :

(899) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे वरका बिन अमर ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि औरतों को रात के वक़्त मस्जिदों में आने की इजाज़त दे दिया करो। (राजेअ : 865)

(900) हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया कि कहा हमसे अब्दुल्लाह इब्ने उमर ने बयान किया। उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) की एक बीवी थीं जो सुबह और इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़ने के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उनसे कहा गया कि बावजूद यह जानते हुए कि हज़रत उमर (रज़ि.) इस बात को मकरूह जानते हैं और वो ग़ैरत महसूस करते हैं फिर आप मस्जिद में क्यूँ जाती हैं। इस पर उन्होंने कहा कि

باب - ۱۳

۸۹۹- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ عُمَرَ بْنِ دِينَارٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : «رَأَيْتُنَا لِلنِّسَاءِ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسَاجِدِ» . [راجع : ۸۶۵]

۹۰۰- حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ : كَانَتْ امْرَأَةٌ لِعُمَرَ تَتَشَهُدُ صَلَاةَ الصُّبْحِ وَالْمِشَاءِ فِي الْجَمَاعَةِ فِي الْمَسْجِدِ . فَقِيلَ لَهَا : لِمَ تَخْرُجِينَ وَقَدْ تَعْلَمِينَ أَنَّ عُمَرَ يَكْرَهُ ذَلِكَ وَتَعَارَى قَالَتْ : وَمَا يَمْنَعُهُ أَنْ يَنْهَانِي؟ قَالَ :

फिर वो मुझे मना क्यों नहीं कर देते। लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की उस हदीस की वजह से कि अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों में आने से नरोको। (राजेअ: 865)

बाब 14 : अगर बारिश हो रही हो तो जुम्आ में हाज़िर होना वाजिब नहीं

(901) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अलिया ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें साहिबुज्जियादी अब्दुल हमीद ने खबर दी, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन सीरीन के चचाज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन हारिष ने बयान किया, कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.) ने अपने मुअज्जिन को एक बार बारिश के दिन कहा कि 'अशहदुअन्ना मुहम्मदुरसूलुल्लाह' के बाद हय्या अलससलाह (नमाज़ की तरफ आओ) न कहना बल्कि ये कहना 'मल्लूफी बुयुतिकुम' (अपने घरों में नमाज़ पढ़ लो) लोगों ने इस बात पर ता'जुब किया तो आपने फ़र्माया कि इसी तरह मुझसे बेहतर इंसान (रसूलुल्लाह (ﷺ)) ने किया था। बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है और मैं मकरूह जानता हूँ कि तुम्हें घरों से बाहर निकालकर मिट्टी और कीचड़ फिसलान में चलाऊँ। (राजेअ: 616)

तशरीह: हज़रत इब्ने अब्बास (रजि.) का ये मतलब था कि बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है मगर हालते बारिश में ये अज़ीमत रुख़सत से बदल जाती है। लिहाज़ा क्यों न इस रुख़सत से तुमको फ़ायदा पहुँचाऊँ कि तुम कीचड़ में फिसलने और बारिश में भीगने से बच जाओ।

बाब 15 : जुम्आ के लिये कितनी दूर वालों को आना चाहिये और किन लोगों पर जुम्आ वाजिब है?

क्योंकि अल्लाह तआला का (सूरह जुम्आ में) इशार्द है 'जब जुम्आ के दिन नमाज़ के लिये अज़ान हो (तो अल्लाह का जिक्र की तरफ दौड़ो) अता बिन रिबाह ने कहा कि जब तुम ऐसी बस्ती में हो जहाँ जुम्आ हो रहा हो और जुम्आ के दिन नमाज़ के लिये अज़ान दी जाए तो तुम्हारे लिये जुम्आ की नमाज़ पढ़ने आना वाजिब है। अज़ान सुनी हो या न सुनी हो। और हज़रत अनस बिन मालिक (रजि.)

يَنْمَعُ قَوْلَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَمْتَرُوا إِثَاءَ اللَّهِ مَسَاجِدَ اللَّهِ)). [راجع: ٨٦٥]

١٤- بَابُ الرُّخْصَةِ إِنْ لَمْ يَخْضُرِ الْجُمُعَةُ فِي الْمَطَرِ

٩٠١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ صَاحِبُ الزِّيَادِيِّ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْحَارِثِ ابْنُ عَمِّ مُحَمَّدِ بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ لِمُؤَذِّبِهِ فِي يَوْمٍ مَطِيرٍ: إِذَا قُلْتَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولَ اللَّهِ فَلَا تَقُلْ: حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ، قُلْ: صَلُّوا فِي بُيُوتِكُمْ. فَكَانَ النَّاسُ اسْتَكْرَؤًا، فَقَالَ: لَعَلَّهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي، إِنَّ الْجُمُعَةَ عَزْمَةٌ، وَإِنِّي كَرِهْتُ أَنْ أُخْرِجَكُمْ فَيَمَشُّوا فِي الطِّينِ وَالْدُّخَانِ.

[راجع: ٦١٦]

١٥- بَابُ مِنْ أَيْنَ تُؤْتَى الْجُمُعَةُ، وَعَلَى مَنْ تَجِبُ؟

لِقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَإِذَا تَوَدَّى لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ﴾ [سُورَةُ الْجُمُعَةِ: ٩]. وَقَالَ عَطَاءٌ: إِذَا كُنْتَ فِي قَرْيَةٍ جَامِعَةٍ فَتَوَدَّى بِالصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَحَقُّ عَلَيْكَ أَنْ تَشْهَدَهَا، سَوَّغَتِ النَّتَاءُ أَوْ لَمْ

(बसरा से) छः मील दूर मुकाम ज़ाविया में रहते थे, आप यहाँ कभी अपने घर में जुम्आ पढ़ लेते और कभी यहाँ जुम्आ नहीं पढ़ते।

تَسْمَعُهُ. وَكَانَ أَسْرَ رَحِيٍّ اللَّهُ عَنْهُ فِي
قَصْرِهِ أَحْتَا لَا يُجْمَعُ، وَأَحْتَا لَا يُجْمَعُ،
وَهُوَ بِأَلْيَاؤِهِ عَلَى قَرَنَيْنِ.

तशरीह : आयते मज़कूरा सूरह जुम्आ से जुम्हरे इलमा ने ये प्राबित किया है कि जहाँ तक अज़ान पहुँच सकती हो वहाँ तक के लोगों को जुम्आ में हाज़िर होना फ़र्ज़ है। इमाम शाफ़िई (रह.) ने कहा कि आवाज़ पहुँचने से ये मुराद है कि मुअज़्जिन आवाज़ बुलन्द हो और कोई शोर न हो। ऐसी हालत में जितनी दूर तक भी आवाज़ पहुँचे। अबू दाऊद में हदीस है कि जुम्आ हर उस शख्स पर वाजिब है जो अज़ान सुने। इससे ये भी प्राबित हुआ कि शहर हो या देहात। जहाँ भी मुसलमान रहते हों और अज़ान होती हो, वहाँ जुम्आ की अदायगी ज़रूरी है। (वहीदी) अज़ान का सुनना बर्तौर शर्त नहीं है। कुआन में लफ़्ज़ 'इज़ा नूदियाहि फ़तफ़कर.'

(902) हमसे अहमद बिन झालेह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अमर बिन हारिज़ ने ख़बर दी, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी जा'फ़र ने कि मुहम्मद बिन जा'फ़र बिन जुबैर ने उनसे बयान किया, उनसे इव्वान बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत्तह़रा ने, आपने कहा कि लोग जुम्आ की नमाज़ पढ़ने अपने घरों से और मदीना के पास गांव से (मस्जिदे नबवी में) बारी-बारी आया करते थे। लोग गर्दों-गुबार में चले आते, गर्द में अटे हुए और पसीने में सराबोर। इस क्रूर पसीना होता कि थमता नहीं था। उसी हालत में एक आदमी रसूले करीम (ﷺ) के पास आया। आपने फ़र्माया कि तुम लोग इस दिन (जुम्आ में) गुस्ल कर लिया करते तो बेहतर होता।

٩٠٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ:
حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي
عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي
جَعْفَرٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جَعْفَرٍ بْنَ الزُّبَيْرِ
حَدَّثَهُ عَنْ هُرَيْرَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ
زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: كَانَ النَّاسُ يَتَأَبَّوْنَ
يَوْمَ الْجُمُعَةِ مِنْ مَنَازِلِهِمْ وَالْقَوَائِمِ فَهَاتُونَ
فِي الْغُبَارِ بَعْثَتُهُمُ الْغُبَارَ وَالْفَرْقَ،
فَيَخْرُجُ مِنْهُمْ الْفَرْقُ، فَاتَى رَسُولَ اللَّهِ
ﷺ إِنْسَانٌ مِنْهُمْ - وَهُوَ عَيْنِي - فَقَالَ
النَّبِيُّ ﷺ: (لَوْ أَنَّكُمْ تَطَهَّرْتُمْ يَوْمَكُمْ هَذَا).

तशरीह : जुम्आ के दिन गुस्ल करना मूजिबे अज़रो-ज़बाब है मगर ये गुस्ल वाजिब है या मुस्तहब, इसमें इख़तिलाफ़ है। कुछ अह्लादीष में इसके लिये लफ़्ज़े वाजिब इस्ते'माल हुआ है और कुछ में सैगा-ए-अमर भी है जिससे उसका वाजिब होना प्राबित होता है। मगर एक रिवायत में समुरा इब्ने जुंदब (रज़ि.) से इन जुम्लों में भी मरवी है, 'अन्न नबियल्लाहि (ﷺ) क़ाल मन तवज़ज़अ लिलजुम्अति फबिहा व निअमत व मनिगतसल फ़ज़ालिक अफ़ज़ल' (रवाहुलख़म्मसतु इल्लबु माजा) या'नी अहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है कि जिसने जुम्आ के लिये वुजू किया पस अच्छा किया और बहुत ही अच्छा किया और जिसने गुस्ल भी कर लिया पस ये गुस्ल अफ़ज़ल है। इस हदीस को तिमिज़ी ने हसन कहा है। इसी आधार पर अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, 'क़ालन्नववी फहुकियवुजूबुहु अन ताइफतिम्मिस्सलफ़ि हकौहु अन बअज़िस्सहाबति व बिही क़ाल अहलुजज़ाहिर' (हदीसे बुखारी के तहत) सलफ़ में से एक जमाअत से गुस्ले जुम्आ का वुजूब नक़ल हुआ है। कुछ सहाबा से भी ये मन्कूल है और अहले ज़ाहिर का यही फ़त्वा है।

मगर दूसरी रिवायत के आधार पर हज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व ज़हब जुम्हूरुल इलमा मिनस्सलफ़ि वलख़लाफ़ि व फ़ुक़हाउल अम्सारि इला अन्नहा मुस्तहबुन (नैल) या'नी सलफ़ और ख़लफ़ से जुम्हूर इलमा, फ़ुक़हा-ए-अम्सार इस तरफ़ गए हैं कि ये मुस्तहब है जिन रिवायत में हक़ और वाजिब का लफ़्ज़ आया है उससे मुराद ताक़ीद है और वो वुजूब मुराद नहीं है जिनके छोड़ने से गुनाह लाज़िम आए। हाँ जिन लोगों का ये हाल हो वो हफ़्ता भर न नहाते

हों और उनके जिस्मो-लिबास से बदबू आ रही हो उनके लिये गुस्ले जुम्आ जरूरी है और अल्लामा अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, 'कुल्लु क्रद जाअ फी हाज़लबाबि अहादीथुन मुख्तलिफ़तुन बअज़ुहा अला अन्नलगुस्ल यौमलजुम्अति वाजिबुन व बअज़ुहा यदुल्लु अन्नहु मुस्तहबुन वज़्ज़ाहिरु इन्दी अन्नहु सुन्नतुन मुअक़दतुन व बिहाज़ा यहसुलुलजमउ बैनलअहादीथिलमुख्तलिफ़ति वल्लाहु तआला आलमु' (तोहफ़तुल अहवज़ी) या'नी मैं कहता हूँ कि इस मसले में मुख्तलिफ़ अहादीष आई हैं। कुछ से वुजूबे गुस्ल श्रावित होता है और कुछ से सिर्फ़ इस्तिस्बाब और मेरे नज़दीक ज़ाहिरे मसला ये है कि गुस्ले जुम्आ सुन्नते मुअक़दा है और इसी तरह मुख्तलिफ़ अहादीषे वारिदा में तल्बीक दी जा सकती है। अहादीषे मज़कूरा से ये भी ज़ाहिर है कि अहले देहात जुम्आ के लिये ज़रूर हाज़िर हुआ करते थे क्योंकि नबी करीम (ﷺ) की इक़तिदा उनके लिये बाज़िषे स़द फ़ख़ थी और वो अहले देहात भी ऐसे कि ऊँट और बकरियों के चरानेवाले, ग़रीबी की ज़िंदगी गुज़ारनेवाले, कुछ दफ़ा गुस्ल के लिये मौक़ा भी नहीं मिलता और बदन के पसीनों की बू आती रहती थी।

अगर इस्लाम में अहले देहात के लिये जुम्आ की अदायगी मुआफ़ होती तो ज़रूर कभी न कभी आँहज़रत (ﷺ) उनसे फ़र्मा देते कि तुम लोग इस क़दर मेहनत और मशक़त क्यों उठाते हो, तुम्हारे लिये जुम्आ की हाज़री फ़र्ज़ नहीं है मगर आप (ﷺ) ने एक बार भी कभी ऐसा नहीं कहा जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि जुम्आ हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है हाँ जिनको खुद साहिबे शरीअत ने अलग कर दिया उन पर फ़र्ज़ नहीं है। इससे ये भी ज़ाहिर है कि गुस्ले जुम्आ बहरहाल होना चाहिये क्योंकि इस्लाम में सफ़ाई-सुथराई की बड़ी ताक़ीद है।

कुआन मजीद में अल्लाह पाक ने फ़र्माया, 'इन्नल्लाह युहिबुल्लाबीन व युहिबुल मुततहिरीन' (अल बकर: 222) 'बेशक अल्लाह पाक तौबा करनेवालों और पाकी हासिल करने वालों को दोस्त रखता है।' गुस्ल भी पाकी हासिल करने का अहम ज़रिया है, इस्लाम में ये उसूल मुकरर किया गया कि बग़ैर पाकी हासिल किये नमाज़ ही दुस्त न होगी जिसमें बवक़ते ज़रूरत इस्तिज़ा, गुस्ल, वुजू सब तरीक़े दाख़िल हैं।

हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहम्मिद देहलवी फ़र्माते हैं, 'क़ालन्नबिय्यु (ﷺ) अचुहूर शतरुल्ईमानि अकूलु अल्मुरादु बिल्ईमानि हाहुना हयअतुन नफ़सानिय्यतुन मुक्कबतुन मिन नूस्तिहारति वल्अख़बाति वल्इत्सानि औज़हु मिन्हु फी हाज़लमज़ना वला शक़ अन्नचुहूर शतरूह' (हुज्जतुलहिल बालिगा) या'नी नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तहारात आधा ईमान है, मैं कहता हूँ कि यहाँ ईमान से एक ऐसी हैयते नफ़सानियाँ मुराद है जो नूर तहारात और खुशूअ से मुक्कब है और लफ़्ज़े एहसान इस मा'नी में ईमान से ज़्यादा वाज़ेह है और इसमें कोई शक़ नहीं कि तहारात इसका आधा है।

ख़ुलासतुल मराम ये है कि जुम्आ के दिन खास तौर पर नहा-धोकर खूब पाक-साफ़ होकर नमाज़े जुम्आ की अदायगी के लिये जाना मौजिबे स़द अज़री-श्रावब है और नहाने-धोने से सफ़ाई-सुथराई का हसूल सेहते ज़िस्मानी के लिये भी मुफीद है। जो लोग रोज़ाना गुस्ल के आदी हैं उनका तो ज़िक़्र ही क्या है मगर जो लोग किसी वजह से रोज़ाना गुस्ल नहीं कर सकते। कम-अज़ कम जुम्आ के दिन वो ज़रूर-ज़रूर गुस्ल करके सफ़ाई हासिल करें। जुम्आ के दिन गुस्ल के अलावा ब वक़ते जनाबत मदों-औरत दोनों के लिये गुस्ल वाजिब है। ये मसला अपनी जगह पर तफ़सील से आ चुका है।

बाब 16 : जुम्आ का वक़्त सूरज ढलने से शुरू होता है

और हज़रत उमर और हज़रत अली और नोअमान बिन बशीर और अमर बिन हुरैष (रिज़.) से इसी तरह मरवी है।

(903) हमसे अब्दान अब्दुल्लाह बिन इम्रान ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें

١٦- بَابُ وَقْتِ الْجُمُعَةِ إِذَا رَأَى الشَّمْسُ وَكَذَلِكَ يُذَكَّرُ عَنْ عَمْرٍ وَعَلِيٍّ وَالْعَمَّانِ بْنِ بَشِيرٍ وَعَمْرٍو بْنِ حُرَيْثٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ.

٩٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا بِحَقِّ بْنِ سَعِيدٍ أَنَّهُ سَأَلَ

यह्या बिन सईद ने खबर दी कि उन्होंने इमह बिन्ते अब्दुर्रहमान से जुम्आ के दिन गुस्ल के बारे में पूछा। उन्होंने बयान किया हज्रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती थीं कि लोग अपने कामों में मशगूल रहते और जुम्आ के लिये उसी हालत (पैल-कुचैल) में चले आते, इसलिये उनसे कहा गया कि काश! तुम लोग (कभी) गुस्ल कर लिया करते। (दीगर मक़ाम: 2071)

عَمْرَةَ عَنِ الْفَسْلِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَالَتْ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: (كَانَ النَّاسُ مَهْنَةً أَنْفُسِهِمْ، وَكَانُوا إِذَا رَأَوْا إِلَى الْجُمُعَةِ رَأَوْا فِي حَتَبِهِمْ، فَقِيلَ لَهُمْ: لَوْ اغْتَسَلْتُمْ). [طرفه ن: ٢٠٧١]

तशरीह: बाब और हदीष में मुताबकत लफ़्ज़े हदीष 'नुबक्किरु बिलजुम्आति' से है। अल्लामा ऐनी फ़र्माते हैं, लिअन्नरवाह ला यकूनु इल्ला बअदज्जवाल इमाम बुखारी (रह.) ने इससे श्राबित फ़र्माया कि सहाबा किराम जुम्आ की नमाज़ के लिये ज़वाल के बाद आया करते थे। मा'लूम हुआ कि जुम्आ का वक़्त बादे ज़वाल होता है।

(904) हमसे सुरैज बिन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे इम्रान इब्ने अब्दुर्रहमान बिन इम्रान तेमी ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जुम्आ की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जब सूरज ढल जाता।

٩٠٤- حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النَّمْعَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عُثْمَانَ التَّحِيّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: (أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُعَلِّي الْجُمُعَةَ حِينَ تَبْدَأُ الشَّمْسُ).

(905) हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, कहा कि हमें हुमैद तवील ने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से खबर दी। आपने फ़र्माया कि हम जुम्आ सवेरे पढ़ लिया करते और जुम्आ के बाद आराम करते थे। (दीगर मक़ाम: 940)

٩٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا حَمِيدٌ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: (كُنَّا نَبْكَرُ بِالْجُمُعَةِ، وَنَقِيلُ بَعْدَ الْجُمُعَةِ). [طرفه ن: ٩٤٠]

तशरीह: इमाम बुखारी (रह.) ने वही मज़हब इख्तियार किया जो जुम्हूर का है कि जुम्आ का वक़्त ज़वाले आफ़ताब से शुरू होता है क्योंकि वो जुहर का कायमे मुक़ाम है कुछ अहदीष से जुम्आ ज़वाल से पहले भी जाइज़ मा'लूम होता है; यहाँ लफ़्ज़ नुबक्किरु बिल जुम्आति या'नी सहाबा कहते हैं कि हम जुम्आ की नमाज़ के लिये जल्दी जाया करते थे (इससे ज़वाल से पहले गुंजाइश निकलती है) उसके बारे में अल्लामा इमाम शौकानी मरहूम (रह.) फ़र्माते हैं, ज़ाहिर ज़ालिक अन्नहुम कानू युसल्लूनल्जुम्आत बाकिरन्नहारि क़ालल्हाफ़िज़ु लाकिन तरीक़ल्जम्इ औला मिन दअवत्तआरुज़ि व क़द तक़रूरुन अन्नत्तक्बीर युत्लकु अला फ़िअलिशशैफ़ी अव्वलि वक्तिही औ तक्दीमिही अला ग़ैरिही व हुवल्लमुरादु हाहुनल्मअना अन्नहुम कानू यब्दऊन बिम्सलाति क़बल्क़ैलूलति बिखिलाफ़िम्मा जरत बिही आदतुहुम फी सलातिज़्ज़ुहरि फिल्हरि फइन्नहुम कानू यक्नीलून शुम्प युसल्लून लिमशरूइय्यतिल्इब्रादि

या'नी हदीषे बाला से ज़ाहिर होता है कि वो जुम्आ अव्वले दिन में अदा कर लिया करते थे। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं कि दोनों अहदीष में तआरुज़ पैदा करने से बेहतर ये है कि उनमें तत्बीक दी जाए। ये अपने मुहक्क़ है कि तक्बीर का लफ़्ज़ किसी काम का अव्वले वक़्त में करने पर बोला जाता है या उसका ग़ैर पर मुक़द्दम करना यहाँ यही मुराद है। मा'नी ये हुआ कि वो कैलूला से पहले जुम्आ की नमाज़ पढ़ लिया करते थे। बख़िलाफ़े जुहर के क्योंकि गर्मियों में उनकी आदत ये थी कि पहले कैलूला करते और फिर जुहर की नमाज़ अदा करते ताकि ठण्डा वक़्त करने की मशरूइय्यत पर अमल हो।

मगर लफ़्ज़ हीन तमीलुशशम्सु (या'नी आँहज़रत ﷺ सूरज ढलने पर जुम्आ अदा फ़र्माया करते थे) पर अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, फीहि बिमुवाज़बतिही अला मलातिलजुम्अति इजा ज़ालतिशशम्सु या'नी इसस ज़ाहिर होता है कि आप हमेशा ज़वाले शम्स के बाद नमाज़े जुम्आ पढ़ा करते थे इसामे बुखारी (रह.) और जुम्हूर का मसला यही है, अगरचे कुछ सहाबा और सल्फ़ से ज़वाल से पहले भी जुम्आ का जवाज़ मन्कूल है मगर इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक तर्ज़ीह इसी मसलक को हासिल है। ऐसा ही अल्लामा अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, 'वज़ाहिरुल अल्मअमूल अलैहि हुब मा ज़हब इलैहिलजुम्हूरु मिन अन्नहू ला तजुजुल्जम्अतु इल्ला बअद ज़वालिशशम्सि व अम्मा मा ज़हब इलैहि बअजुहुम मिन अन्नहा तजुजु कबलज़्ज़वालि फलैस फीहि हदीषुन महीहुन मरीहुन वल्लाहु आलमु' (तोहफ़तुल अहवज़ी)

बाब 17 : जब जुम्आ सख़्त गर्मी में आ पड़े

١٧- بَابُ إِذَا اشْتَدَّ الْحَرُّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

(906) हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मज़दमी ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमसे हरमी बिन अम्मार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू ख़लदः जिनका नाम ख़ालिद बिन दीनार है, ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने फ़र्माया कि अगर सर्दी ज़्यादा पड़ती तो नबी करीम (ﷺ) नमाज़ सवेरे पढ़ लेते। लेकिन जब गर्मी ज़्यादा होती तो ठण्डे वक़्त में नमाज़ पढ़ते। आपकी मुराद जुम्आ की नमाज़ से थी। यूनुस बिन बुक्कैर ने कहा कि हमें अबू ख़लदः ने ख़बर दी। उन्होंने सिर्फ़ नमाज़ कहा। जुम्आ का ज़िक्र नहीं किया और बिशर बिन प्राबित ने कहा कि हमसे अबू ख़लदः ने बयान किया कि अमीर ने हमें जुम्आ की नमाज़ पढ़ाई। फिर हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा कि नबी करीम (ﷺ) जुहर की नमाज़ किस वक़्त पढ़ते थे।

٩٠٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ السُّقْمِيُّ قَالَ : حَدَّثَنَا حَرْمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو خَلْدَةَ - هُوَ خَالِدُ بْنُ دِينَارٍ - قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ : (كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا اشْتَدَّ الْبَرْدُ بَكَرَ بِالصَّلَاةِ. وَإِذَا اشْتَدَّ الْحَرُّ أَبْرَدَ بِالصَّلَاةِ) يَغْيِي الْجُمُعَةَ. قَالَ يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ : أَخْبَرَنَا أَبُو خَلْدَةَ وَقَالَ : (بِالصَّلَاةِ) وَلَمْ يَذْكُرِ الْجُمُعَةَ. وَقَالَ بِشْرُ بْنُ قَابَسٍ : حَدَّثَنَا أَبُو خَلْدَةَ قَالَ : (صَلَّى بِنَا أَمِيرَ الْجُمُعَةِ، ثُمَّ قَالَ لَأَنَسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، كَيْفَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي الظُّهْرَ؟).

तशरीह : अमीर से हक़म बिन अबू अक़ील प्रक़फी मुराद हैं जो हज़ाब बिन यूसुफ़ की तरफ़ से नाईब थे। 'इस्तदल्ल बिही इब्नु बत्ताल अला अन्न वक्तलजुम्अति वक्तुज्जुहर लिअन्न अनसन सवा बैनहुमा फ़ी जवाबिही लिलहुक्मिलमज्कूर हीन क़ील कैफ़ कानन्नबियु (ﷺ) युसल्लिज्जुहर' (या'नी) इससे इब्ने बत्ताल ने इस्तिदलाल किया कि जुम्आ और जुहर का वक़्त एक ही है क्योंकि हज़रत अनस (रज़ि.) ने जवाब में जुम्आ और जुहर को बराबर किया; जबकि उनसे पूछा गया कि जुहूर (ﷺ) जुहर की नमाज़ किस वक़्त पढ़ा करते थे?

बाब 18 : जुम्आ की नमाज़ के लिये चलने का बयान

और अल्लाह तआला ने (सूरह जुम्आ) में फ़र्माया कि 'अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ तेज़ी के साथ चलो' और इसकी तपसीर जिसने ये कहा कि 'सई' के मा'नी अमल करना और चलना जैसे सूरह बनी

١٨- بَابُ الْمَشْيِ إِلَى الْجُمُعَةِ،

وَقَوْلِ اللَّهِ غَرَّوَجَلٌ: ﴿فَاسْتَوُوا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ﴾ وَمَنْ قَالَ السَّعْيُ الْقَمَلُ وَاللَّحَابُ يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَسَعَى لَهَا سَعْيَهَا﴾.

इस्राईल में है 'सअलहा सअयहा' यहाँ सई के यही मा'नी हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि खरीदो—फ़रोख़्त जुम्'अ के अज़ान होते ही ह़राम हो जाती है। अता ने कहा कि तमाम कारोबार उस वक़्त ह़राम हो जाते हैं। इब्राहीम बिन सअद ने जुहरी का ये क़ौल नक़ल किया कि जुम्'अ के दिन जब मुअज़्ज़िन अज़ान दे तो मुसाफ़िर भी शिर्कत करे।

तफ़्सीह: यहाँ सई के मा'नी अमल के हैं। या'नी जिसने अमल किया आख़िरत के लिये वो अमल जो दरकार है इब्ने मुनीर ने कहा कि जब सई का हुक्म हुआ और बेअ मना हुई तो मा'लूम हुआ कि सई से वो महल मुराद है जिसमें अल्लाह की इबादत हो। मतलूब आयत का ये है कि जब जुम्'आ की अज़ान हो तो अल्लाह का काम करो दुनिया का काम छोड़ दो।

(907) हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबाय्या बिन रिफ़ाअ बिन राफ़ेअ बिन ख़दीज ने बयान किया, उन्होंने ने बयान किया कि मैं जुम्'अ के लिये जा रहा था। रास्ते में अबू अब्स (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि जिसके क़दम अल्लाह की राह में गुबार आलूद हो गए अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ पर ह़राम कर देगा।

(दीगर मक़ाम : 2811)

तफ़्सीह: इदीष और तर्जुमा में मुताबक़त लफ़्ज़े फ़ी सबीलिल्लाह से होती है इसलिये जुम्'अ के लिये चलना फ़ी सबीलिल्लाह ही में चलना है। गोया हज़रत अबू अब्स अब्दुर्रहमान अंसारी बद्री सहाबी मशहूर ने जुम्'आ को भी जिहाद के हुक्म में दाख़िल फ़र्माया। फिर अफ़सोस है उन हज़रत पर जिन्होंने कितने ही देहात में जुम्'आ न होने का फ़त्वा देकर देहाती मुसलमानों को जुम्'अ के प्रवाब से महरूम कर दिया। देहात में बहुत कम लोग ऐसे हैं जो शहरों में जुम्'आ अदा करने के लिये जाएँ। वो नमाज़ पंज वक़्ता तक में सुस्ती करते हैं नमाज़े जुम्'आ के लिये इन हज़रत इलमा ने छूट दे दी जिससे उनको काफ़ी सहारा मिल गया। इनालिल्लाह!

(908) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, कहा कि हमसे जुहरी ने सईद और अबू सलमा से बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (दूसरी सनद से बयान किया) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने और उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, वो अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते थे कि आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये कहते हुए सुना कि जब

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : يَحْرُمُ الْبَيْعُ حِينَئِذٍ. وَقَالَ عَطَاءٌ : يَحْرُمُ الصَّنَاعَاتُ كُلُّهَا. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ : عَنْ الزُّهْرِيِّ : إِذَا أَدَّنَ الْمُؤَذِّنُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَهُوَ مُسَائِرٌ فَلَيْتَهُ أَنْ يَشْهَدَ.

٩٠٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ : حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي مَرْثَمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ وَفَاعَةَ قَالَ : أَدْرَكْتَنِي أَبُو عَصِيٍّ وَأَنَا أَذْهَبُ إِلَى الْجُمُعَةِ فَقَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ : ((مَنْ أَهْبَرَتْ لِقَاءَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَرَمَهُ اللَّهُ عَلَى النَّارِ)).

[طرفه ٣ : ٢٨١١].

٩٠٨- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَبٍ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيدٍ وَأَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. وَحَدَّثَنَا أَبُو الِیْمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرْتَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ

नमाज़ के लिये तक्बीर कही जाए तो दौड़ते हुए मत आओ बल्कि (अपनी मामूली रफ्तार से) आओ और पूरे इत्मीनान के साथ फिर नमाज़ का जो हिस्सा (इमाम के साथ) पा लो उसे पढ़ लो और जो रह जाए तो उसे बाद में पूरा कर लो।

(राजेअ: 636)

यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि जुम्आ की नमाज़ भी एक नमाज़ है और उसके लिये दौड़ना मना होकर मामूली चाल से चलने का हुक्म हुआ। यही बाब का तर्जुमा है।

(909) हमसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू कुतैबा बिन कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अली बिन मुबारक ने यह्या बिन अबी क़ज़ीर से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने — (इमाम बुख़ारी (रह.) कहते हैं कि मुझे यक़ीन है कि) अब्दुल्लाह ने अपने बाप अबू क़तादा से रिवायत की है, वो नबी करीम (ﷺ) से रावी हैं कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब तक मुझे देख न लो सफ़बन्दी के लिये खड़े न हुआ करो और आहिस्तगी से चलना लाज़िम कर लो। (राजेअ: 637)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने एहतिyात की राह से उसमें शक किया कि ये हदीष अबू क़तादा के बेटे अब्दुल्लाह ने अपने बाप से मौसूलन रिवायत की या अब्दुल्लाह ने उसको मुर्सलन रिवायत किया। शायद ये हदीष उन्होंने इस किताब में अपनी याद से लिखी। इस वजह से उनको शक रहा लेकिन इस्माईली ने इसी सनद से उसको निकाला। इसमें शक नहीं है अब्दुल्लाह से उन्होंने अबू क़तादा से रिवायत की। मौसूलन ऐसे बहुत से बयानात से वाजेह है कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) रिवायते हदीष में इतिहाई एहतिyात मलहूज रखते थे। फिर अफ़सोस है उन लोगों पर जो सहीह मफ़ूअ अह्दादीष का इन्कार करते हैं। हदाहुमुल्लाह

बाब 19 : जुम्आ के दिन जहाँ दो आदमी बैठे हों उनके बीच में न दाखिल हो

(910) हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी उन्होंने कहा कि हमें इब्ने अबी जिब ने ख़बर दी, उन्हें सईद मक्बरी ने, उन्हें उनके बाप अबू सईद ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वदीआ ने, उन्हें सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने जुम्आ के दिन गुस्ल किया और ख़ूब पाकी हासिल की और तेल या खुशबू इस्तेमाल की, फिर जुम्आ के लिये चला और दो आदमियों के बीच न घुसा

قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «إِذَا أَقِمْتَ الصَّلَاةَ فَلَا تَأْتُوا تَسْعُونَ، وَتَأْتُوا تَمَشُونَ وَعَلَيْكُمْ السَّكِينَةُ، فَمَا أَدْرَاكُمْ فَصَلُّوا، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَبْسُوا».

[راجع: 636]

٩٠٩- حَدَّثَنِي حَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قَتَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ لَا أَعْلَمُهُ إِلَّا عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَا تَقْرَبُوا حَتَّى تَوُضُوا وَعَلَيْكُمْ السَّكِينَةُ. [راجع: 637]

١٩- بَابُ لَا يَفْرُقُ بَيْنَ الثَّيْنِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

٩١٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي ذُئْبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ بِنِ وَدِيعَةَ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَنْ اغْتَسَلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَتَطَهَّرَ بِمَا اسْتَطَاعَ مِنْ طَهْرٍ، ثُمَّ ادْفَنَ أَوْ مَسَّ مِنْ

और जितनी उसकी किस्मत में थी, नमाज़ पढ़ी, फिर जब इमाम बाहर आया और खुत्बा शुरू किया तो खामोश हो गया, उसके उस जुम्'अे में से दूसरे जुम्'अे तक के तमाम गुनाह बख्श दिए जाएंगे। (राजेअ: 883)

طَيْبٌ، ثُمَّ رَاحَ وَلَمْ يُفَرِّقْ بَيْنَ التَّيْنِ
فَصَلَّى مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ إِذَا خَرَجَ الْإِمَامُ
أَنْصَتَ، غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ
الْأُخْرَى)). [راجع: ٨٨٣]

तशरीह: आदाबे जुम्'आ में से ज़रूरी अदब है कि आने वाला निहायत ही अदब व मतानत के साथ जहाँ जगह पाए बैठ जाए। किसी की गर्दन फलाँगकर आगे न बढ़ें क्योंकि ये शर'अन मम्नूअ और मअयूब है। इससे ये भी वाज़ेह हो गया कि शरीअते इस्लामी में किसी को तकलीफ़ देना ख़्वाह वो तकलीफ़ बनाम इबादते नमाज़ ही में क्यों न हों। वो अल्लाह के नज़दीक गुनाह है। इसी मज़मून की अगली हदीस में मज़ीद तफ़सील आ रही है।

बाब 20 : जुम्'अे के दिन किसी मुसलमान भाई को उसकी जगह से उठाकर खुद वहाँ न बैठे

(911) हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी (रह.) ने बयान किया, कहा कि हमें मुख़लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मैंने नाफ़ेअ से सुना, उन्होंने कहा मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया है कि कोई शख्स अपने मुसलमान भाई को उठाकर उसकी जगह खुद बैठ जाए। मैंने नाफ़ेअ से पूछा कि क्या ये जुम्'अे के लिये है तो उन्होंने जवाब दिया कि जुम्'अे और ग़ैर जुम्'आ सबके लिये यही हुक्म है। (दीगर मक़ाम: 6269, 6270)

٢٠ - بَابُ لَا يُقِيمُ الرَّجُلُ أَخَاهُ يَوْمَ
الْجُمُعَةِ وَيَقْعُدُ فِي مَكَابِهِ

٩١١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ نَافِعًا قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقِيمَ الرَّجُلُ أَخَاهُ مِنْ مَقْعَدِهِ وَيَجْلِسَ فِيهِ)). قُلْتُ لِنَافِعٍ: الْجُمُعَةُ؟ قَالَ: الْجُمُعَةُ وَغَيْرُهَا.

[طرفاه: ٦٢٦٩، ٦٢٧٠].

ता'जुब है उन लोगों पर जो अल्लाह की मसजिद यहाँ तक कि का'बा मुअज्जमा और मदीनतुल मुनव्वरा में प्रवाब के लिये दौड़ते हैं और दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाकर उनकी जगह पर कब्ज़ा करते हैं। बल्कि कुछ मर्तबा इग़ाड़ा-फ़साद तक नौबत पहुँचाकर फिर वहाँ नमाज़ पढ़ते और अपने नफ़्स को खुश करते हैं कि वो इबादते इलाही कर रहे हैं। उनको मा'लूम होना चाहिये कि उन्होंने इबादत का सही मफ़हूम नहीं समझा बल्कि कुछ नमाज़ी तो ऐसे हैं कि उनको हकीकते इबादत का पता नहीं है। 'अल्लाहुम्म हईम अला उम्मति हबीबिक (ﷺ)'

यहाँ मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम फ़मति हैं कि मस्जिद अल्लाह की है। किसी के बाबा-दादा की मिल्कियत नहीं जो नमाज़ी पहले आया और किसी जगह बैठ गया वही उसी जगह का हक़दार है। अब बादशाह या वज़ीर भी आए तो उसको उठाने का हक़ नहीं रखता। (वहीदी)

बाब 21 : जुम्'अे के दिन अज़ान का बयान

(912) हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने जुहरी के वास्ते से बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि नबी करीम (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र और हज़रत

٢١ - بَابُ الْأَذَانِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

٩١٢ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَيْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ السَّيِّبِ بْنِ يَزِيدٍ قَالَ: (كَانَ النَّبِيُّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَوَّلَهُ إِذَا

उमर (रज़ि.) के ज़माने में जुम्आ की पहली अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर ख़ुत्बा के लिये बैठते लेकिन हज़रत उस्मान (रज़ि.) के ज़माने में जब मुसलमानों की क़रत हो गई तो वो मुक़ामे ज़ौरा से एक और अज़ान दिलवाने लगे। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) फ़रमाते हैं कि ज़ौरा मदीना के बाज़ार में एक जगह है। (दीगर मक़ाम : 913, 915, 916)

جَلَسَ الْإِمَامُ عَلَى الْمِنْبَرِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَلَمَّا كَانَ عَفْصَان رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَكَثُرَ النَّاسُ - زَادَ النَّدَاءَ الثَّلَاثَ عَلَى الزُّوَرَاءِ قَالَ أَبُو عُبَيْدٍ اللَّهُ الزُّوَرَاءُ مَوْضِعٌ بِالسُّوقِ بِالْمَدِينَةِ. [أطرافه 3: 913, 915, 916].

तशरीह : मा'लूम हुआ कि असल अज़ाने जुम्आ वही थी जो आँहज़रत (ﷺ) और शौखेन के मुबारक ज़मानों में इमाम के मिम्बर पर आने के वक़्त दी जाती थी। बाद में हज़रत उस्मान गनी (रज़ि.) ने लोगों को आगाह करने के लिये बाज़ार में एक अज़ान का और इज़ाफ़ा कर दिया ताकि वक़्त से लोग जुम्आ के लिये तैयार हो सकें। हज़रत उस्मान (रज़ि.) की तरह बवक़ते ज़रूरत मस्जिद से बाहर किसी मुनासिब जगह पर ये अज़ान अगर अब भी दी जाए तो जाइज़ है मगर जहाँ ज़रूरत न हो वहाँ सुन्नत के मुताबिक़ सिर्फ़ ख़ुत्बा ही के वक़्त ख़ूब आवाज़ से एक ही अज़ान देनी चाहिये।

बाब 22 : जुम्आ के लिये एक मुअज़्जिन मुक़र्रर करना

(913) हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबू सलमा माजिशून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि जुम्आ में तीसरी अज़ान हज़रत उस्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) ने बढ़ाई जबकि मदीना में लोग ज़्यादा हो गए थे जबकि नबी करीम (ﷺ) के एक ही मुअज़्जिन थे। (आप (ﷺ) के दौर में) जुम्आ की अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर बैठता।

(राजेअ : 912)

۲۲- بَابُ الْمُؤَذِّنِ الْوَاحِدِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

۹۱۳- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عُبَيْدُ الْقَيْسِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُونُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ : (أَنَّ الَّذِي زَادَ الثَّلَاثِينَ الثَّلَاثَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ عَفْصَانُ بْنُ عَفْصَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - حِينَ كَثُرَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ - وَلَمْ يَكُنْ لِلنَّبِيِّ ﷺ مُؤَذِّنٌ غَيْرَ وَاحِدٍ، وَكَانَ الثَّلَاثِينَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ حِينَ يَجْلِسُ الْإِمَامُ يَخْبِي عَلَى الْمِنْبَرِ.

[راجع : 912]

इससे उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) जब मिम्बर पर जाते तो तीन मुअज़्जिन एक के बाद एक अज़ान देते। एक मुअज़्जिन का मतलब ये है कि जुम्आ की अज़ान ख़ास, एक मुअज़्जिन हज़रत बिलाल (रज़ि.) ही दिया करते थे वरना वैसे तो ज़मान-ए-नबवी में कई मुअज़्जिन मुक़र्रर थे जो बारी-बारी अपने वक़्तों पर अज़ान दिया करते थे।

बाब 23 : इमाम मिम्बर पर बैठे बैठे अज़ान सुनकर उसका जवाब दे

(914) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने

۲۳- بَابُ يُجِيبُ الْإِمَامَ عَلَى الْمُنْبَرِ إِذَا سَمِعَ النَّدَاءَ

۹۱۴- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا

कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्होंने कहा कि हमें अबूबक्र बिन उम्मान बिन सहल बिन हनीफ ने खबर दी, उन्हें अबू उमामा बिन सहल बिन हनीफ ने, उन्होंने कहा मैंने मुआविया बिन अबी सुफयान (रज़ि.) को देखा आप मिम्बर पर बैठे, मुअज़िन ने अज़ान दी 'अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर' मुआविया (रज़ि.) ने जवाब दिया 'अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर' मुअज़िन ने कहा 'अशहदु अल्लाह इलाहा इलल्लाह' मुआविया (रज़ि.) ने जवाब दिया व अना और मैं भी तौहीद की गवाही देता हूँ मुअज़िन ने कहा 'अशहदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलल्लाह' मुआविया (रज़ि.) ने जवाब दिया 'व अना' मैं भी गवाही देता हूँ मुहम्मद (ﷺ) की रिसालत की' जब मुअज़िन अज़ान कह चुका तो आपने कहा हाज़िरीन! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना उस जगह या'नी मिम्बर पर आप बैठे थे मुअज़िन ने अज़ान दी तो आप यही फ़र्मा रहे थे जो तुमने मुझको कहते हुए सुना।

(राजेअ : 612)

अज़ान के जवाब में सुनने वाले वही अल्फ़ाज़ कहते जाएँ जो मुअज़िन से सुनते हैं। इस तरह उनको वही प्रवाब मिलेगा जो मुअज़िन को मिलता है।

बाब 24 : जुम्आ की अज़ान ख़त्म होने तक इमाम मिम्बर पर बैठा रहे

(915) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने अक़ील के वास्ते से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कि साइब बिन यज़ीद ने उन्हें ख़बर दी कि जुम्आ की दूसरी अज़ान का हुक्म हज़रत इब्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) ने उस वक़्त दिया जब नमाज़ी बहुत ज़्यादा हो गए थे और जुम्आ के दिन अज़ान उस वक़्त होती जब इमाम मिम्बर पर बैठा करता था। (राजेअ : 912)

साहिबे तफ़्हीमुल बुखारी हनफ़ी, देवबन्दी कहते हैं कि मतलब ये है कि जुम्आ की अज़ान का तरीक़ा पंजवक़्ता अज़ान से अलग था और दोनों में अज़ान नमाज़ से कुछ पहले दी जाती थी लेकिन जुम्आ की अज़ान के साथ ही ख़ुत्बा शुरू हो जाता था और उसके बाद फ़ौरन नमाज़ शुरू कर दी जाती। याद रहे कि आजकल जुम्आ का ख़ुत्बा शुरू होने पर इमाम के सामने धीरे से मुअज़िन जो अज़ान देते हैं वो ख़िलाफ़े सुन्नत है। ख़ुत्बा की अज़ान भी बुलन्द जगह पर बुलन्द आवाज़ से होनी चाहिये। इब्ने मुनीर कहते हैं कि इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से कूफ़ा वालों का रद्द किया जो कहते हैं कि ख़ुत्बा से पहले मिम्बर पर बैठना मशरूअ नहीं है।

أَبُو بَكْرٍ بْنُ عُمَانَ بْنِ سَهْلٍ بْنُ حَنْفٍ عَنْ
أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلٍ بْنِ حَنْفٍ قَالَ:
سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِي سُفْيَانَ وَهُوَ جَالِسٌ
عَلَى الْمِنْبَرِ أَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ قَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ
اللَّهُ أَكْبَرُ، قَالَ مُعَاوِيَةُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ
أَكْبَرُ، قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ،
فَقَالَ مُعَاوِيَةُ قَالَ أَشْهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ
اللَّهِ قَالَ مُعَاوِيَةُ: وَأَنَا. فَلَمَّا أَنْ لَفَضَى
التَّائِيذِينَ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنِّي سَمِعْتُ
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى هَذَا الْمَجْلِسِ - حِينَ
أَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ - يَقُولُ مَا سَمِعْتُمْ مِنِّي مِنْ
مَقَالِي. [راجع: ٦١٢]

٢٤- بَابُ الْجُلُوسِ عَلَى الْمِنْبَرِ

عِنْدَ التَّائِيذِينَ

٩١٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا
اللَيْثُ بْنُ عَقِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ
السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ أَخْبَرَهُ (أَنَّ التَّائِيذِينَ يَوْمَ
الْجُمُعَةِ أَمَرَ بِهِ عُثْمَانُ - حِينَ كَثُرَ أَهْلُ
الْمَسْجِدِ - وَكَانَ التَّائِيذِينَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ
حِينَ يَجْلِسُ الْإِمَامُ). [راجع: ٩١٢]

बाब 25 : जुम्आ की अज़ान खुल्बा के वक्त देना

(916) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमको यूनुस बिन यज़ीद ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से ये सुना था कि जुम्आ की पहली अज़ान रसूलुल्लाह (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में उस वक़्त होती थी जब इमाम मिम्बर पर बैठता। जब हज़रत उमरान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) का दौर आया और नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ गई तो आपने जुम्आ के दिन एक तीसरी अज़ान का हुक्म दिया, ये अज़ान मुक़ामे ज़ौरा पर दी गई और बाद में यही दस्तूर क़ायम रहा।

٢٥- بَابُ التَّادِيْنِ عِنْدَ الْمُحَطَّةِ
٩١٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقْلَبٍ قَالَ:
أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ
الرُّهْرِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ
يَقُولُ: «إِنَّ الْأَذَانَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ كَانَ
أَوَّلَهُ حِينَ يَجْلِسُ الْإِمَامُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ عَلَى
الْمِمْبَرِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ
وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، فَلَمَّا كَانَ فِي
خَلْفَةِ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - وَكَثُرُوا
- أَمَرَ عُثْمَانُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ بِالْأَذَانِ
الثَّالِثِ، فَأَذَّنَ بِهِ عَلَى الزُّوْرَاءِ، فَتَبَتِ
الْأَمْرُ عَلَى ذَلِكَ. [راجع: ٩١٦]

तशीह: तीसरी उसको इसलिये कहा कि तक्बीर भी अज़ान है। हज़रत उमरान (रज़ि.) के बाद से फिर यही तरीका जारी हो गया कि जुम्आ में एक पहली अज़ान होती है फिर जब इमाम मिम्बर पर जाता है तो दूसरी अज़ान देते हैं। फिर नमाज़ शुरू करते वक़्त तीसरी अज़ान या'नी तक्बीर कहते हैं। गो हज़रत उमरान (रज़ि.) का काम बिदअत नहीं हो सकता इसलिये कि वो खुलाफ़-ए-राशिदीन में है मगर उन्होंने ये अज़ान एक ज़रूरत से बढ़ाई कि मदीना की आबादी दूर-दूर तक पहुँच गई थी और खुल्बा की अज़ान सबके जमा होने के लिये काफ़ी न थी। आते-आते ही नमाज़ ख़त्म हो जाती थी। मगर जहाँ ये ज़रूरत न हो तो वहाँ ब-मौजिबे सुन्नते नबवी (ﷺ) सिर्फ़ खुल्बा ही की अज़ान देना चाहिये और ख़ूब बुलन्द आवाज़ से न कि जैसा कि जाहिल लोग खुल्बा के वक़्त आहिस्ता-आहिस्ता अज़ान देते हैं, इसकी कोई दलील नहीं है। इन्ने अबी शैबा ने इन्ने उमर से निकाला तीसरी अज़ान बिदअत है या'नी एक नई बात है जो आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में न थी। अब इस सुन्नते नबवी को सिवाय अहले हदीष के और कोई बजा नहीं लाते जहाँ देखो सुन्नते उमरान की रिवाज़ है। (मौलाना वहीदुज्जमाँ) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने जो इसे बिदअत कहा उसकी तौजीह में हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़रमते हैं, 'फयहूतमिलु अय्यकून ज़ालिक अला सबीलिल्इन्कारि व यहूतमिलु अय्युरीद अन्नहू लम्यकुन फी ज़मनिन्नबिय्य (ﷺ) व कुल्लु मा लम्यकुन फी ज़मनिही युसम्मा बिदअतुन।' (नेनुल औतार)

या'नी एहतिमाल है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने इन्कार के तौर पर ऐसा कहा हो और ये भी अन्देशा है कि उनकी मुराद ये हो कि ये अज़ान रसूले करीम (ﷺ) के अहदे मुबारक में न थी और जो आपके ज़माने में न हो उसको (लुखी हैषियत से) बिदअत या'नी नई चीज़ कहा जाता है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़रमते हैं कि 'बलगनी अन्न अहलल्मगरिबिल्अदना अल्आन ला ताज़ीन इन्दहुम सिब मरतिन' या'नी मुझे ख़बर पहुँची है कि पश्चिम वालों का अमल अब भी सिर्फ़ सुन्नते नबवी (ﷺ) या'नी एक ही अज़ान पर है।

जुम्हूर उलम-ए-अहले हदीष का मसलक भी यही है कि सुन्नते नबवी पर अमल बेहतर है और अगर हज़रत उमरान (रज़ि.) के ज़माने में जैसी ज़रूरत महसूस हो तो मस्जिद से बाहर किसी मुनासिब जगह पर ये अज़ान कह दी जाए तो कोई मुजायका नहीं है।

जिन लोगों ने अज़ाने उमरान को भी मसनून करार दिया उनका क़ौल महल्ले नज़र है। चुनाँचे हज़रत मौलाना

अब्दुर्हमान मुबारकपुरी (रह.) ने बड़ी तपसील से इस अमर पर रोशनी डाली। आखिर में आप फर्माते हैं, 'अन्नल्इस्तिदलाल अला कौनिल्अजानिल्झालिषि हुक् मिम मुज्ताहिदाति इष्मान अमन मस्नूनन लैस बितामिन अला तरा अन्नब्न उमर कालल्अजानुल्अव्वलु यौमल्जुम्अति बिदअतुन फलौ कान हाजल्इस्तिदलालु ताम्मन व कानल्अजानुष्झालिषु अमन मस्नून लम युत्लक अलैहि लफ़्जुल्बिदअति ला अला सबीलिल्इन्कारि व ला सबीलि गैरिल्इन्कारि फइन्नल्अमल्मस्नून ला यजुजु अय्युत्लक अलैहि लफ़्जुल्बिदअति बिअय्यि मअनन कान फतफक्कर।' (तोहफतुल अहवज़ी)

बाब 26 : खुत्बा मिम्बर पर पढ़ना

और हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने मिम्बर पर खुत्बा पढ़ा।

(917) हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यअकूब बिन अब्दुर्हमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल क़ारी कुरशी इस्कंदरानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू हाज़िम बिन दीनार ने बयान किया कुछ लोग हज़रत सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) के पास आए। उनका आपस में इस पर इख़िलाफ़ था कि मिम्बरे नबवी अला म्हाबिबिहस्सलातु वस्सलाम की लकड़ी किस पेड़ की थी। इसलिये सअद (रज़ि.) से उसके बारे में पूछा गया। आपने फ़र्माया अल्लाह गवाह है मैं जानता हूँ कि मिम्बरे नबवी किस लकड़ी का था। पहले दिन जब वो रखा गया और सबसे पहले जब रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठे तो मैं उसको भी जानता हूँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अंसार की फ़लों औरत के पास जिनका हज़रत सअद (रज़ि.) ने नाम भी बताया था। आदमी भेजा कि वो अपने बड़ई गुलाम से मेरे लिये लकड़ी जोड़ देने के लिये कहें। ताकि जब मुझे लोगों से कुछ कहना हो तो उस पर बैठा करूँ चुनौचे उन्होंने अपने गुलाम से कहा और वो गाबा के झाऊ की लकड़ी से उसे बनाकर लाया। अंसारी ख़ातून ने उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में भेज दिया। ओहूज़ूर (ﷺ) ने उसे यहाँ रखवाया मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसी पर (खड़े होकर) नमाज़ पढ़ाई। उसी पर खड़े-खड़े तक्बीर कही। उसी पर रुकूअ किया। फिर उलटे पाँव लौटे और मिम्बर की जड़ में सज्दा किया और फिर दोबारा उसी तरह किया जब आप (ﷺ) नमाज़ से

٢٦- بَابُ الْخُطْبَةِ عَلَى الْمِنْبَرِ

وَقَالَ أَنَسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: خَطَبَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ.

٩١٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا

يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مُحَمَّدٍ بْنِ

عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْقَارِيِّ الْقُرَشِيُّ

الْإِسْكَنْدَرَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ بْنُ

دِينَارٍ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ

السَّاعِدِيَّ، وَقَدْ امْتَرَوْا فِي الْمِنْبَرِ مِمَّ

عُودُهُ؟ فَسَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: وَاللَّهِ

لَا عَرِفُ مِمَّا هُوَ، وَلَقَدْ رَأَيْتُهُ أَوَّلَ يَوْمٍ

وُضِعَ، وَأَوَّلَ يَوْمٍ جَلَسَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

ﷺ: أَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ - إِلَى فُلَاتَةٍ -

امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ قَدْ سَمِعَتْ سَهْلَ -

مُرِي غُلَامِكَ النَّجَارَ أَنْ يَعْمَلَ لِي أَعْوَادًا

أَجْلِسُ عَلَيْهَا إِذَا كَلَّمْتُ النَّاسَ، فَلَمَرْتُهُ

فَعَمِلَهَا مِنْ طَرَلَاءِ الْغَابَةِ، ثُمَّ جَاءَ بِهَا

فَأَرْسَلْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَمَرَ بِهَا

فَوَضِعَتْ هَا هُنَا. ثُمَّ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ

ﷺ صَلَّى عَلَيْهَا، وَكَبَّرَ وَهُوَ عَلَيْهَا، ثُمَّ

رَفَعَ وَهُوَ عَلَيْهَا، ثُمَّ تَوَلَّى الْقَهْقَرَى

فَسَجَدَ فِي أَصْلِ الْمِنْبَرِ. ثُمَّ عَادَ. فَلَمَّا

فَرَغَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: ((أَيُّهَا

फ़ारिग हुए तो लोगों को खिताब फ़र्माया। लोगों! मैंने ये इसलिये किया कि तुम मेरी पैरवी करो और मेरी तरह नमाज़ पढ़ना सीख लो (राजेअ: 377)

तशरीह: या'नी खड़े-खड़े उन लकड़ियों पर वा'ज़ कहा करो जब बैठने की ज़रूरत हो तो उन पर बैठ जाओ। पस बाब का तर्जुमा निकल आया। कुछ ने कहा कि इमाम बुखारी (रह.) ने ये हदीष लाकर उसके दूसरे तरीक की तरफ़ इशारा किया जिसको तबरानी ने निकाला कि आपने इस मिम्बर पर खुत्बा पढ़ा। गाबा नामी एक गांव मदीने के करीब था। वहाँ झाऊ के पेड़ बहुत थे। आप (ﷺ) इसलिये उलटे पांव उतरे ताकि मुँह क़िब्ला ही की तरफ़ रहे।

(918) हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र बिन अबी क़शीर ने बयान किया, कहा कि मुझे यज़्ज़ा बिन सईद ने ख़बर दी, कहा कि मुझे हफ़्स बिन अब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि एक खज़ूर का तना था जिस पर नबी करीम (ﷺ) टेक लगाकर खड़े हुआ करते थे। जब आपके लिये मिम्बर बन गया (आपने उस तने पर टेक नहीं लगाया) तो हमने उससे रोने की आवाज़ सुनी जैसे दस महीने की गाभिन कैटनी आवाज़ करती है। नबी करीम (ﷺ) ने मिम्बर से उतरकर अपना हाथ उस पर रखा (तब वो आवाज़ मौक़ूफ़ हुई) और सुलैमान ने यज़्ज़ा से यह हदीष बयान की कि मुझे हफ़्स बिन अब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर से सुना। (राजेअ: 449)

तशरीह: सुलैमान की रिवायत को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने अलमातुन्नबुव्वा में निकाला। इस हदीष में अनस के बेटे का नाम मज़कूर है। ये लकड़ी औहज़रत (ﷺ) की जुदाई में रोने लगीं। जब आपने अपना दस्ते मुबारक उस पर रखा तो उसको तसल्ली हो गई। क्या मोमिनो को इस लकड़ी के बराबर भी औहज़रत (ﷺ) से मुहब्बत नहीं जो आपके कलाम पर दूसरों की राय क़यास को मुक़द्दम समझते हैं। (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम) औहज़रत (ﷺ) की जुदाई में उसे लकड़ी का रोना ये मौअज़िज़ाते नबविया में से है।

(919) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे सालिम ने, उनसे उनके बाप ने फ़र्माया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप (ﷺ) ने मिम्बर पर खुत्बा देते हुए फ़र्माया कि जो जुम्आ के लिये आए वो पहले गुस्ल कर लिया करे।

(राजेअ: 877)

(इस हदीष से मिम्बर प्राबित हुआ)

बाब 27 : खुत्बा खड़े होकर पढ़ना

और हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) खड़े होकर

النَّاسُ، إِنَّمَا صَنَعْتُ هَذَا لِتَأْتُوا بِي، وَتَعْلَمُوا صَلَاتِي)). (راجع: 377)

٩١٨- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ : حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي ابْنُ أَنَسٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ : (كَانَ جَذَعٌ يَقُومُ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمَّا وَجَعَ لَهُ الْغَيْرُ سَمِعْنَا لِلْجَذَعِ بَغْلَ أَصْوَاتِ الْبُشَارِ، حَتَّى نَزَلَ النَّبِيُّ ﷺ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهِ). قَالَ سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى أَخْبَرَنِي خُصُّ بْنُ عُثَيْدٍ أَنَّ ابْنَ أَنَسٍ سَمِعَ جَابِرًا.

(راجع: 449)

٩١٩- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنُبٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ : ((مَنْ جَاءَ إِلَى الْحُجْمَةِ فَلْيَقْتَسِلْ)). (راجع: 877)

٢٧- بَابُ الْخُطْبَةِ قَائِمًا

وَقَالَ أَنَسٌ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ قَائِمًا.

खुत्बा दे रहे थे।

(920) हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर क्वारीरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे खालिद बिन हारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर ने नाफेअ से बयान किया, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) खड़े होकर खुत्बा देते थे, फिर बैठ जाते और फिर खड़े होते जैसे तुम लोग भी आजकल करते हो।

(दीगर मक़ाम : 928)

٩٢٠- حَدَّثَنَا عُمَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ قَالَ : حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ : حَدَّثَنَا عُمَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ قَائِمًا، ثُمَّ يَقْعُدُ، ثُمَّ يَقُومُ، كَمَا يَفْعَلُونَ الْآنَ.

[طرفه ١ : ٩٢٨.]

शाफ़िइया ने कहा कि क़याम खुत्बा की शर्त है क्योंकि कुआन शरीफ वतरकूका काइमा (अल जुमुआ : 11) और हदीषों से ये प्राबित है कि आपने हमेशा खड़े होकर खुत्बा पढ़ा। अब्दुरहमान बिन अबिल हक़म बैठकर खुत्बा पढ़ रहा था तो क़अब बिन उज्रा सहाबी (रज़ि.) ने इस पर ए'तिराज़ किया।

बाब 28 : इमाम जब खुत्बा दे तो लोग

इमाम की तरफ़ मुँह कर लें और अब्दुल्लाह बिन उमर और अनस (रज़ि.) ने खुत्बा में इमाम की तरफ़ मुँह किया।

(921) हमसे मुआज़ बिन फुज़ाला ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम दस्तवाई ने यह्या बिन अबी क़सीर से बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबी मैमूना ने, उन्होंने कहा हमसे अता बिन यसार ने बयान किया, उन्होंने अबूसईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) एक दिन मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और हम सब आप (ﷺ) के आसपास बैठ गए। (दीगर मक़ाम : 1465, 2842, 6427)

और सबने आप (ﷺ) की तरफ़ मुँह किया। बाब का यही मतलब है। खुत्बा का अव्वलीन मक्सद इमाम के ख़िताब को पूरी तवज्जह से सुनना और दिल में जगह देना और उस पर अमल करने का अज़म करना है, इससे ये भी ज़ाहिर हुआ कि इमाम का ख़िताब इस तौर पर हो कि सुननेवाले उसे समझ लें। उसी से सुननेवालों की मादरी जुबान में खुत्बा होना प्राबित होता है या'नी आयात व अहदीष पढ़-पढ़कर सुननेवालों की मादरी जुबान में समझाई जाएँ और सुननेवाला इमाम की तरफ़ मुँह करके पूरी तवज्जह से सुने।

बाब 29 : खुत्बा में अल्लाह की हम्दो-शना के बाद अम्मा बअद कहना इसको इकिमा ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से (922) और महमूद बिन ग़ैलान (इमाम बुखारी के उस्ताज़) ने कहा

٢٨- بَابُ يَسْتَقْبِلُ الْإِمَامَ الْقَوْمُ، وَاسْتَقْبَالَ النَّاسُ الْإِمَامَ إِذَا خَطَبُوا اسْتَقْبَلَ ابْنُ عُمَرَ وَأَنْسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا الْإِمَامَ ٩٢١- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذَةَ قَالَ : حَدَّثَنَا هِشَامُ عَنْ يَحْيَى عَنْ هِلَالِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ قَالَ : إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَلَسَ ذَاتَ يَوْمٍ عَلَى الْمَيْمَنَةِ، وَجَلَسْنَا حَوْلَهُ. [أطرافه ١ : ١٤٦٥, ٢٨٤٢, ٦٤٢٧.]

٢٩- بَابُ مَنْ قَالَ فِي الْخُطْبَةِ بَعْدَ التَّاءِ : أَمَّا بَعْدُ وَآهْ عِزْمَةٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ٩٢٢- وَقَالَ مَخْمُودٌ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ

कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, कि मुझे फातिमा बिनते मुंजिर ने खबर दी, उनसे अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि मैं आइशा (रज़ि.) के पास गई। लोग नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने (उस बेवक्त नमाज़ पर ता'जुब से पूछा कि) ये क्या है? हज़रत आइशा (रज़ि.) ने सिर से आसमान की तरफ इशारा किया। मैंने पूछा क्या कोई निशानी है? उन्होंने सर के इशारे से हाँ कहा (क्योंकि सूरज गहन हो गया था) अस्माने कहा कि नबी करीम (ﷺ) देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। यहाँ तक कि मुझको गंभीर आने लगी। करीब ही एक मश्क में पानी भरा रखा था। मैं उसे खोलकर अपने सर पर पानी डालने लगी। फिर जब सूरज साफ़ हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ खत्म कर दी। उसके बाद आप (ﷺ) ने खुत्बा दिया, पहले अल्लाह तआला की उसकी शान के मुनासिब ता'रीफ़ बयान की। उसके बाद फ़र्माया अम्मा बअद! इतना फ़र्माना था कि कुछ अंसारी औरतें शोर करने लगीं। इसलिये मैं उनकी तरफ़ बढ़ी ताकि उन्हें चुप कराऊँ (ताकि रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात अच्छी तरह सुन सकूँ मगर मैं आपका कलाम न सुन सकी) तो पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क्या फ़र्माया? उन्होंने बताया कि आपने फ़र्माया कि बहुत सी चीज़ें जो मैंने इससे पहले नहीं देखी थीं, आज अपनी इस जगह से मैंने उसको देखा लिया। यहाँ तक कि जन्नत और जहन्नम तक मैंने आज देखी। मुझे वहाँ के ज़रिये ये भी बताया गया कि क़ब्रों में तुम्हारी ऐसी आजमाइश होगी जैसे काने दज्जाल के सामने या उसके करीब करीब। तुममें से हर एक के पास फ़रिश्ता आएगा और पूछेगा कि तू उस शख्स के बारे में क्या ए'तिक़ाद (यक़ीन) रखता था? मोमिन या ये कहा कि यक़ीन रखनेवाला (हिशाम को शक़ था) कहेगा कि वो मुहम्मद रसूलुल्लाह हैं, हमारे पास हिदायत और वाज़ेह दलाइल लेकर आए, इसलिये हम उन पर ईमान लाए, उनकी दा'वत कुबूल की, उनकी इतिबा की और उनकी तस्दीक़ की। अब उससे कहा जाएगा कि तू तो मालेह है, आराम से सो जा। हम पहले ही जानते थे कि तेरा उन पर ईमान है। हिशाम ने शक़ के इज़हार के साथ कहा कि रहा मुनाफ़िक़ या शक़ करनेवाला तो जब उससे पूछा जाएगा कि तू उस शख्स के बारे में क्या कहता है तो वो

قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُزْرَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي
لَاطِمَةُ بِنْتُ الْمُثَنَّى عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي
بَكْرٍ قَالَتْ: دَخَلْتُ عَلَى عَجِشَةَ وَهِيَ
اللَّهُ عَنْهَا وَالنَّاسُ يُصَلُّونَ، قُلْتُ: مَا شَأْنُ
النَّاسِ؟ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا إِلَى السَّمَاءِ،
فَقُلْتُ: أَهْ؟ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا - أَيْ نَعَمْ -
قَالَتْ: فَأَطَاعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ جُنَّتَ حَتَّى
تَجَلَّتِ الْغُشَى وَإِلَى جَنْبِ قِرْبَةٍ فِيهَا مَاءٌ
فَفَتَحْتُهَا، فَجَعَلْتُ أَصْبُ مِنْهَا عَلَى
رَأْسِي، فَأَنْصَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَلَمْ
تَجَلَّ الشَّمْسُ، فَعَطَبَ النَّاسُ وَخَوَدَ
اللَّهُ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ)).
قَالَتْ: وَلَقَطَ بِسُورَةٍ مِنَ الْأَنْصَارِ،
فَالْتَفَتَاتِ إِلَيْهِمْ لَأَسْكَنَهُنَّ. قُلْتُ لِمَ عَجِشَةُ:
مَا قَالَ؟ قَالَتْ قَالَ: ((مَا مِنْ شَيْءٍ لَمْ
أَكُنْ أَرِيئُهُ إِلَّا وَلَقَدْ رَأَيْتُهُ فِي مَقَامِي هَذَا
حَتَّى الْجَنَّةِ وَالنَّارِ. وَإِنَّ قَدْ أَوْحَى إِلَيَّ
أَنْكُمْ تَقْتُلُونَ فِي الْقُبُورِ مِثْلَ - أَوْ قَرِيبَ -
مِنْ - فَبَيْنَ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ، يُؤْتَى
أَحَدُكُمْ فَيَقَالُ لَهُ: مَا عَلِمْتَ بِهَذَا الرَّجُلِ؟
فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ - أَوْ قَالَ: الْمُؤْمِنُ، شَكَّ
هِشَامٌ - فَيَقُولُ هُوَ رَسُولُ اللَّهِ، هُوَ
مُحَمَّدٌ ﷺ، جَاءَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى لَأَمَنَّا
وَأَجَبْنَا، وَاتَّبَعْنَا وَصَدَّقْنَا، فَيَقَالُ لَهُ: نَمَّ
صَالِحًا، قَدْ كُنَّا نَعْلَمُ إِنْ كُنْتَ تَزُومُ بِهِ.
وَأَمَّا الْمُنَافِقُ - أَوْ قَالَ: الْمُرْتَابُ، شَكَّ
هِشَامٌ - فَيَقَالُ لَهُ: مَا عَلِمْتَ بِهَذَا

जवाब देगा कि मुझे नहीं मा'लूम मैंने लोगों को जो कहते हुए सुना उसी के मुताबिक मैंने भी कहा। हिशाम ने बयान किया कि फातिमा बिनते मुज़िर ने जो कुछ कहा था। मैंने वो सब याद रखा। लेकिन उन्होंने क़न्न में मुनाफ़िकों पर सख़्त अज़ाब के बारे में जो कुछ कहा वो मुझे याद नहीं रहा। (राजेअ : 86)

ये हदीष यहाँ इसलिये लाई गई है कि इसमें ये ज़िक्र है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने ख़ुत्बा में अम्मा बअद का लफ़्ज़ इस्ते'माल किया। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) बताना चाहते हैं कि ख़ुत्बा में अम्मा बअद कहना सुन्नत है। कहा जाता है कि सबसे पहले हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ये कहा था। आपका फ़ज़िल ख़िताब भी यही है पहले अल्लाह पाक की हम्दो—प्रना फिर नबी करीम (ﷺ) पर सलातो—सलाम भेजा गया और अम्मा बअद ने उस तम्हीद को असल ख़िताब से जुदा कर दिया। अम्मा बअद का मतलब ये है कि हम्दो—सलात के बाद अब असल ख़ुत्बा शुरू होगा।

(923) हमसे मुहम्मद बिन मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम ने जरीर बिन हाज़िम से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इमाम हुसैन बज़री से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमने अमर बिन तल्लिब (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास कुछ माल आया था कोई चीज़ आई। आपने कुछ सहाबा को उसमें से अंता किया और कुछ को नहीं दिया। फिर आप (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि जिन लोगों को आपने नहीं दिया था उन्हें उसका रंज हुआ, इसलिये आप (ﷺ) ने अल्लाह की हम्दो—प्रना की फिर फ़र्माया अम्मा बअद! अल्लाह की क़सम! मैं कुछ लोगों को देता हूँ और कुछ को नहीं देता लेकिन मैं जिसको नहीं देता वो मेरे नज़दीक उनसे ज़्यादा महबूब हैं जिनको मैं देता हूँ। मैं तो उन लोगों को देता हूँ जिनके दिलों में बेसब्री और लालच पाता हूँ लेकिन जिनके दिल अल्लाह तअराला ने ख़ैर और बेनियाज़ बनाए हैं, मैं उन पर भरोसा करता हूँ। अमर बिन तल्लिब भी उन्हीं लोगों में से हैं। अल्लाह की क़सम! मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये एक कलिमा सुख़ ऊँटों से ज़्यादा महबूब है।

(दीगर मक़ाम : 3145, 7535)

الرَّجُلُ؟ فَيَقُولُ: لَا أَدْرِي، سَمِعْتُ النَّاسَ يَقُولُونَ شَيْئًا، فَقُلْتُ: قَالَ وَشَيْئًا: فَلَقَدْ قَالَتْ لِي فَاطِمَةُ فَأَوْعَيْتُهُ، غَيْرَ أَنَّهُ ذَكَرَتْ مَا يُغْلَظُ عَلَيْهِ. [راجع: ٨٦]

٩٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ جَرِيرِ بْنِ حَارِثٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَعْلِبٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ آتَى بِنَالٍ - أَوْ سَبِيٍّ - فَقَسَمَهُ، فَأَعْطَى رَجُلًا وَتَرَكَ رَجُلًا. فَبَلَغَهُ أَنَّ الْبَيْنَ تَرَكَ عَصَوًا. ((فَجِئَ بِهِ إِلَهُ ثُمَّ أَتَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «أَمَّا بَعْدُ فَوَ اللَّهِ إِنِّي لَأَعْطِي الرَّجُلَ وَأَذْغُ الرَّجُلَ وَالَّذِي أَذْغُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنَ الَّذِي أَعْطِي، وَلَكِنْ أُعْطِيَ الْقَوَامَا إِمَّا أَرَى فِي قُلُوبِهِم مِّنَ الْجَوَاحِ وَالْهَلْجِ، وَأَكْبَلُ الْقَوَامَا إِلَى مَا جَعَلَ اللَّهُ فِي قُلُوبِهِمُ الْيَسَى وَالْخَيْرِ، فَيُنْهَوْنَ عَنْهُ بَيْنَ تَعْلِبٍ»)) فَوَ اللَّهِ مَا أَحَبُّ إِلَيَّ بِكَلِمَةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ حَمْرُ النَّصَمِ.

[طرفاه: ٣١٤٥ : ٣٧٠٣٠]

तशरीह : सुब्हानल्लाह सहाबा (रज़ि.) के नज़दीक आँहज़रत (ﷺ) का एक हुक्म फ़र्माना जिससे आपकी रज़ामन्दी हो सारी दुनिया का माल व दौलत मिलने से ज़्यादा पसंद था। इस हदीष से आँहज़रत (ﷺ) का कमाले खुल्क़ प्राबित हुआ कि आप किसी की नाराज़गी पसंद नहीं फ़र्माते थे। न किसी की दिल शिकनी। आप (ﷺ) ने ऐसा ख़ुत्बा सुनाया कि जिन लोगों को नहीं दिया था वो उनसे भी ज़्यादा खुश हुए जिनको दिया था। (वहीदी) आप (ﷺ) ने यहाँ भी लफ़्ज़े अम्मा बअद! इस्ते'माल फ़र्माया। यही मक्सूदे बाब है।

(924) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने अक्लील से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने ने कहा कि मुझे उर्वा ने खबर दी कि हजरत आइशा (रजि.) ने उन्हें खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रात के वक़्त उठकर मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और चंद सहाबा भी आपकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ने खड़े हो गए। सुबह को उन सहाबा (रजि.) ने दूसरे लोगों से इसका ज़िक्र किया चुनाँचे (दूसरे दिन) उससे भी ज़्यादा जमा हो गए और आपके पीछे नमाज़ पढ़ी। दोपहरी सुबह को उसका चर्चा और ज़्यादा हुआ फिर क्या था तीसरे रात बड़ी ता'दाद में लोग जमा हो गए और जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उठे तो सहाबा (रजि.) ने आपके पीछे नमाज़ शुरू कर दी। चौथी रात जो आई तो मस्जिद में नमाज़ियों की क़प्रत की वजह से तिल रखने की जगह नहीं था। लेकिन आज रात नबी करीम (ﷺ) ने ये नमाज़ न पढ़ाई और फ़ज्र की नमाज़ के बाद लोगों से फ़र्माया, पहले आप (ﷺ) ने कलिम-ए-शहादत पढ़ा फिर फ़र्माया। अम्मा बअद! मुझे तुम्हारी उस हाज़िरी से कोई डर नहीं लेकिन मैं इस बात से डरता हूँ कि कहीं ये नमाज़ तुम पर फ़र्ज़ न कर दी जाए, फिर तुमसे ये अदा न हो सके। इस रिवायत की मुताबअत यूनुस ने की है।

(राजेअ: 729)

ये हदीष कई जगह आई है यहाँ इस मक़सद के तहत लाई गई है कि आँहज़रत (ﷺ) ने बा'ज़ में लफ़्ज़े अम्मा बअद इस्ते'माल फ़र्माया।

(925) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से खबर दी, उन्होंने कहा कि मुझे उर्वा ने अबू हुमैद साएदी (रजि.) से खबर दी कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़े इशा के बाद खड़े हुए। पहले आपने कलिम-ए-शहादत पढ़ा, फिर अल्लाह तआला के लायक़ उसकी ता'रीफ़ की, फिर फ़र्माया अम्मा बअद! जुहरी के साथ इस रिवायत की मुताबअत अबू मुआविया और अबू उसामा ने हिशाम दस्तवाई से की, उन्होंने ने अपने वालिद उर्वा से इसकी रिवायत की, उन्होंने अबू हुमैद से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया अम्मा बअद! और अबुल यमान के साथ इस हदीष को मुहम्मद बिन यह्या ने भी सुफ़यान से रिवायत किया, उसमें सिर्फ़ अम्मा बअद है।

٩٢٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ غَزِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَرَجَ لَيْلَةً مِنْ جَوْفِ اللَّيْلِ فَصَلَّى فِي الْمَسْجِدِ، فَصَلَّى رَجُلًا بِصَلَاتِهِ، فَأَصْبَحَ النَّاسُ فَتَحَدَّثُوا، فَاجْتَمَعَ أَكْثَرُ مِنْهُمْ فَصَلُّوا مَعَهُ، فَأَصْبَحَ النَّاسُ فَتَحَدَّثُوا، فَكَثُرَ أَهْلُ الْمَسْجِدِ مِنَ اللَّيْلِ الثَّالِثَةِ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَصَلُّوا بِصَلَاتِهِ. فَلَمَّا كَانَتِ اللَّيْلَةُ الرَّابِعَةُ عَجَزَ الْمَسْجِدُ عَنْ أَهْلِهِ حَتَّى خَرَجَ لِصَلَاةِ الصُّبْحِ. فَلَمَّا قَضَى الْفَجْرَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَسَمَهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّهُ لَمْ يَخَفْ عَلَى مَكَانِكُمْ، لَكِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَفْرُضَ عَلَيْكُمْ فَتُعْجِزُوا عَنْهَا)). تَابِعَهُ يُونُسُ.

[راجع: ٧٢٩]

٩٢٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنِي شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَامَ عَشِيَّةً بَعْدَ الصَّلَاةِ فَتَشَهَّدَ وَأَتَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ)). تَابِعَهُ أَبُو مُعَاوِيَةَ وَأَبُو أَسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ)). تَابِعَهُ الْقَدَنِيُّ عَنْ سَفْيَانَ فِي ((أَمَّا بَعْدُ)).

(दीगर मक़ाम : 1500, 2597, 6636, 6979, 7174, 7197)

[أطرافه في : ١٥٠٠, ٢٥٩٧, ٦٦٣٦, ٦٩٧٩, ٧١٧٤, ٧١٩٧]

ये एक लम्बी हदीष का टुकड़ा है जिसे खुद हज़रत इमाम (रह.) ने ईमान और नुज़ूर में निकाला है। हुआ ये कि आँहज़रत (ﷺ) ने इब्नुल बतिया नामी एक सहाबी को ज़कात वसूल करने के लिये भेजा था जब वो ज़कात का माल लाया गया तो कुछ चीज़ों की निस्बत कहने लगा कि ये मुझको बतौर तोहफ़ा मिली हैं, उस वक़्त आपने इशा के बाद ये ख़ुत्बा सुनाया और बताया कि इस तरह सरकारी सफ़र में तुमको ज़ाती तोहफ़े लेने का हक़ नहीं है जो भी मिला है वो सब बैतुलमाल में दाख़िल करना होगा।

(926) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, कहा कि मुझसे अली बिन हुसैन ने मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से हदीष बयान की कि नबी करीम (ﷺ) खड़े हुए। मैंने सुना कि कलिम-ए-शहादत के बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया अम्मा बअद! शुऐब के साथ इस रिवायत की मुताबअत मुहम्मद बिन कलीद जुबैदी ने जुहरी से की है।

(दीगर मक़ाम : 3110, 3714, 3729, 3767, 5230, 5278)

٩٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ عَنِ الْمُسَوِّدِ بْنِ مَعْرُومَةَ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَسَمِعْتُهُ حِينَ تَشْهَدُ وَ يَقُولُ: ((أَمَّا بَعْدُ)). تَابِعَهُ الزُّبَيْدِيُّ عَنْ الزُّهْرِيِّ.

[أطرافه في : ٣١١٠, ٣٧١٤, ٣٧٢٩, ٣٧٦٧, ٥٢٣٠, ٥٢٧٨]

जुबैदी की रिवायत को तबरानी ने शामियों की सनद में क़स्ल (मिलान) किया है।

(927) हमसे इस्माईल बिन अबान ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमसे इब्ने ग़सील अब्दुरहमान बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अम्बास (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए। मिम्बर पर ये आप (ﷺ) की आख़िरी बैठक थी। आप (ﷺ) दोनों शानों से चादर लपेटे हुए थे और सरे मुबारक पर एक पट्टी बाँध रखी थी। आपने हम्दो-शना के बाद फ़र्माया लोगों! मेरी बात सुनो। चुनौचे लोग आप (ﷺ) की तरफ़ कलामे मुबारक सुनने के लिये मुतवज्जह हो गए। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अम्मा बअद! ये क़बीला अंसार के लोग (आनेवाले दौर में) ता'दाद में बहुत कम हो जाएँगे पस मुहम्मद (ﷺ) की उम्मत का जो शख्स भी हाकिम हुआ और उसे नफ़ा व नुक़सान पहुँचाने की ताक़त हो तो अंसार के नेक लोगों की नेकी कुबूल करे और उनके बुरे की बुराई से दरगुज़र करे।

٩٢٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ الْفَيْسَلِ قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرَمَةُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ الْمِنْبَرَ وَكَانَ آخِرَ مَجْلِسٍ جَلَسَهُ مُصْطَفًى بِلُحْفَةٍ عَلَى مَنْكِبَيْهِ قَدْ غَضِبَ رَأْسُهُ بِبَعْضِهَا ذَسِمَةً، فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَتَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَيُّهَا النَّاسُ إِلَيَّ)). فَقَامُوا إِلَيْهِ. ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ هَذَا الْحَيَّ مِنَ الْإِنْسَانِ يَقُولُونَ وَيَكْثُرُ النَّاسُ. فَمَنْ وَلِيَ شَيْئًا مِنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ ﷺ فَاسْتَطَاعَ أَنْ يَنْصُرَ إِلَيْهِ أَحَدًا أَوْ يَنْفَعَهُ إِلَيْهِ أَحَدًا فَلْيَقْبَلْ مِنْ مُحْسِنِهِمْ، وَتَجَوَّزْ عَنْ

(दीगर मक़ाम : 3628, 3700)

[مسنيهم].. [طرفاء في : ٣٦٢٨ ، ٣٨٠٠]

तशरीह : ये आपका मस्जिद नबवी में आखिरी खुत्बा था। आपकी इस पेशीनगोई के मुताबिक अंसार अब दुनिया में कमी में ही मिलते हैं। दूसरे शयूखे अरब की नस्लें तमाम आलमे इस्लामी में फैली हुई हैं। इस शाने करीमी पर कुर्बान जाईए। इस एहसान के बदले में कि अंसार ने आप (ﷺ) की और इस्लाम की कसमपुर्सी और मुसीबत के वक़्त मदद की थी। आप (ﷺ) अपनी तमाम उम्मत को इसकी तल्कीन फ़र्मा रहे हैं कि अंसार को अपना मुहसिन समझो उनमें जो अच्छे हों उनके साथ हुस्ने मुआमलात बढ़-चढ़कर करो और बुरों से दरगुजर करो कि उनके आबा (पूर्वजों) ने इस्लाम की बड़ी कसमपुर्सी के आलम में मदद की थी। इस बाब में जितनी हदीषें आई हैं यहाँ इनका ज़िक्र सिर्फ़ इसी वजह से हुआ है कि किसी खुत्बा वग़ैरह के मौके पर अम्मा बअद का उसमें ज़िक्र है। क़स्तलानी ने कहा कि हदीष का मतलब ये नहीं है कि अंसार पर से हूदूदे शरइया उठा दी जाएँ। हूदूद तो आँहज़रत (ﷺ) ने हर अमीर-ग़रीब सब पर क़ायम करने की ताक़ीद फ़र्माई है। यहाँ अंसार की ख़फ़ीफ़ ग़लतियाँ मुराद हैं कि उनसे दरगुजर किया जाए।

हज़रत इमामुल अइम्मा इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब के तहत मुख्तलिफ़ अह्लादीष रिवायत की है। इन सबमें बाब का तर्जुमा लफ़्ज़े अम्मा बअद से निकाला है। आँहज़रत (ﷺ) अपने हर ख़िताब में अल्लाह की हम्दो-शना के बाद लफ़्ज़े अम्मा बअद का इस्ते'माल किया करते थे। गुज़िस्ता से पेवस्ता हदीष में इशा के बाद आपके एक ख़िताबे आम का ज़िक्र है जिसमें आपने लफ़्ज़ अम्मा बअद इस्ते'माल किया। आपने इब्ने बतिय्या को ज़कात वसूल करने लिये भेजा था। जब वो ज़कात का माल लेकर वापस हुए तो कुछ चीज़ों के बारे में वो कहने लगे कि ये मुझको बतौर तोहफ़ा मिली हैं। उस वक़्त आप (ﷺ) ने इशा के बाद ये वा'ज़ फ़र्माया और उस पर सख़्त इज़हारे नाराज़गी फ़र्माया कि कोई शख्स सरकारी तौर पर तहज़ील ज़कात के लिये जाए तो उसका क्या हक़ है कि वो इस सफ़र में अपनी ज़ात के लिये तोहफ़े कुबूल करे। हालाँकि उसको जो भी मिलेगा वो सब इस्लामी बैतुलमाल का हक़ है। इस हदीष को इमाम बुखारी (रह.) ने ईमान व नुज़ूर में पूरे तौर पर नक़ल किया है।

गुज़िस्ता हदीष में है कि आँहज़रत (ﷺ) के एक आखिरी और बिलकुल आखिरी ख़िताबे आम का तज़क़िरा है जो आपने मर्जुल मौत की हालत में पेश फ़र्माया और जिसमें आपने हम्दो-शना के बाद लफ़्ज़े अम्मा बअद इस्ते'माल किया फिर अंसार के बारे में वसिय्यत फ़र्माई कि मुस्तक़बल में मुसलमान इन्क़ितदार वाले लोगों का फ़र्ज होगा कि वो अंसार के हुक्क का ख़ास ख़याल रखें। उनमें अच्छे लोगों को निगाहे एहतिराम से देखें और बुरे लोगों से दरगुजर करें। फिल वाक़ेअ अंसार क़यामत तक के लिये उम्मत मुस्लिमा में अपनी ख़ास तारीख़ के मालिक हैं जिसको इस्लाम का सुनहरी दौर कहा जा सकता है। ये अंसार ही का इतिहास है। पस अंसार की इज्जतो-एहतिराम हर मुसलमान का मज़हबी फ़रीज़ा है।

बाब 30 : जुम्आ के दिन दोनों खुत्बों के बीच में बैठना

(928) हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे बिशर बिन मुफज़ल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह इमरी ने नाफ़ेअ से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) (जुम्आ के दिन) दो खुत्बे देते और दोनों के बीच में बैठते थे।

(खुत्बए जुम्आ के बीच में ये बैठना भी मसनून तरीक़ा है)

बाब 31 : जुम्आ के दिन खुत्बा

٣٠- بَابُ الْقَعْدَةِ بَيْنَ الْخُطْبَتَيْنِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

٩٢٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا بَشَرُ بْنُ الْمُفْضَلِ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ خُطْبَتَيْنِ يَقْعُدُ بَيْنَهُمَا)).

[راجع: ٩٢٠]

٣١- بَابُ الْإِسْتِمَاعِ إِلَى الْخُطْبَةِ

कान लगाकर सुनना

يَوْمَ الْجُمُعَةِ

(929) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे अबू अब्दुल्लाह सुलैमान अगर ने, उनसे अबू हरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्मया कि जब जुम्ह्रे का दिन आता है तो फ़रिश्ते ज़ामा मस्जिद के दरवाज़े पर आने वालों के नाम लिखते हैं, सबसे पहले आनेवाले को कैंट की कुर्बानी देने वाले की तरह लिखा जाता है। उसके बाद आनेवाला गाय की कुर्बानी देनेवाले की तरह फिर मेंढे की कुर्बानी का प्रवाब रहता है, उसके बाद मुर्गी का, उसके बाद अण्डे का। लेकिन जब इमाम (खुत्बा देने के लिये) बाहर आ जाता है तो ये फ़रिश्ते अपने दफ़ातिर बन्द कर देते हैं और खुत्बा सुनने में मशगूल हो जाते हैं।

(दीगर मक़ाम : 3211)

٩٢٩- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَيْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الْأَعْوَرِّ عَنْ أَبِي مُرَيْزَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا كَانَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَقَفَتِ الْمَلَائِكَةُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ يَكْتُبُونَ الْأَوَّلَ فَلِلْأَوَّلِ وَمِثْلَ الْمُهْجَرِ كَمِثْلِ الَّذِي يَهْدِي بَدَنَةً، ثُمَّ كَالَّذِي يَهْدِي بَقَرَةً، ثُمَّ كَبْشًا، ثُمَّ دَجَاجَةً، ثُمَّ بَيْضَةً. فَإِذَا خَرَجَ الْإِمَامُ طَوَرًا صُحُفُهُمْ وَيَسْتَمِعُونَ الدُّعَاءَ)).

[طرفه في : ٣٢١١].

तशरीह : इस हदीष में सिलसिलेवार ज़िक्रे प्रवाब मुख्तलिफ़ जानवरों के साथ मुर्गी और अण्डे का भी ज़िक्र है। इसके बारे में हज़रत मौलाना शैखुल हदीष अब्दुल्लाह साहब मुबारकपुरी फ़र्माते हैं, 'बल्मुश्किलु जिकरु हज़ाजति बल्बैज तिलिअन्नल्हदय ला यकूनु मिनुमा वाजिबुन बिअन्नहू मिन बाबिल्मुशाकलति अय मिन तस्मिय्यंतिशैइ बिस्मि करीनिही बल्मुरादु बिल्अहदादि हुना अत्तमहुक लिमा दल्ल अलैहि लफ़्ज़ु करब फी रिवायतिन उख़रा व हुव यज़ूज़ बिहिमा' (मिज़ात, जिल्द 2, पेज नं. 293) या 'नी मुर्गी और अण्डे का भी ज़िक्र आया है हालाँकि उनकी कुर्बानी नहीं होती। इसका जवाब दिया गया कि ये ज़िक्र बाबे मुशकिला में है। या 'नी किसी चीज़ का ऐसा नाम रख देना जो उसके करीना का नाम हो। यहाँ कुर्बानी से मुराद सदका करना है जिस पर कुछ रिवायत में हैं कि आमदा लफ़्ज़ करब-दलालत करता है और कुर्बत में रज़ा-ए-इलाही हासिल करने के लिये इन दोनों चीज़ों को भी ख़ैरात में दिया जा सकता है। हज़रत इमामुल मुहदिज़ीन ने इस हदीष से ये प्रबित किया कि नमाज़ियों को खुत्बा कान लगाकर के सुनना चाहिये क्योंकि फ़रिश्ते भी कान लगाकर सुनते हैं। शाफ़िइया के नज़दीक खुत्बे की हालत में कलाम करना मकरूह है लेकिन हुराम नहीं है। हन्फ़िया के नज़दीक खुत्बे के वक़्त नमाज़ और कलाम दोनों मना है। कुछ ने कहा कि दुनिया का बेकार कलाम मना है। मगर ज़िक्र या दुआ मना नहीं है और इमाम अहमद का ये क़ौल है कि जो खुत्बा सुनता हो या 'नी खुत्बा की आवाज़ उसको पहुँचती हो उसको मना है और जो न सुनता हो उसको मना नहीं। शौकानी (रह.) ने अहले हदीष का मज़हब ये लिखा है कि खुत्बे के वक़्त ख़ामोश रहें। सय्यद अल्लामा ने कहा कि तहिय्यतुल मस्जिद मुस्तज़्ना (अलग) है। जो शख्स मस्जिद में आए और खुत्बा हो रहा हो तो दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद ही पढ़ ले। इसी तरह इमाम का किसी ज़रूरत से बात करना जैसे सहीह अहदादीष में वारिद है। मुस्लिम की रिवायत में ये ज़्यादा है कि (तहिय्यतुल मस्जिद) की हल्की-फुल्की दो रकअतें पढ़ ले। यही अहले हदीष और इमाम अहमद की दलील है कि खुत्बे की हालत में तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ लेना चाहिये। हदीष से ये निकला कि इमाम खुत्बे की हालत में ज़रूरत से बात कर सकता है और यही बाब का तर्जुमा है। हल्की-फुल्की का मतलब ये है कि किरअत को लम्बा न करे। ये मतलब नहीं कि जल्दी-जल्दी पढ़ ले।

बाब 32 : इमाम खुत्बा की हालत में किसी शख्स को जो आए दो रकअत तहिय्यतुल

٣٢- بَابُ إِذَا رَأَى الْإِمَامَ رَجُلًا جَاءَ وَهُوَ يَخْطُبُ أَمْرًا أَنْ يُصَلِّيَ

मस्जिद पढ़ने का हुक्म दे सकता है

(930) हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख्स आया नबी करीम (ﷺ) जुम्आ का खुत्बा दे रहे थे। आप (ﷺ) ने पूछा कि ऐ फ़लाँ! क्या तुमने (तहिय्यतुल मस्जिद की) नमाज़ पढ़ ली? उसने कहा कि नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा उठ और दो रकअत नमाज़ पढ़ ले।

(दीगर मक़ाम: 931, 1162)

बाब 33 : जब इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो और कोई मस्जिद में आए तो हल्की सी दो रकअत नमाज़ पढ़ ले

(931) हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने अमर से बयान किया, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना कि एक शख्स जुम्आ के दिन मस्जिद में आया। नबी करीम (ﷺ) ख़ुत्बा पढ़ रहे थे। आप (ﷺ) ने उससे पूछा कि क्या तुमने (तहिय्यतुल मस्जिद की) नमाज़ पढ़ ली? आने वाले ने जवाब दिया कि नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उठो और दो रकअत नमाज़ (तहिय्यतुल मस्जिद) पढ़ लो। (राजेअ: 930)

رَكَعَتَيْنِ

۹۳۰- حَدَّثَنَا أَبُو الثَّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ النَّاسَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَالَ: ((أَصَلَّيْتَ يَا فُلَانٌ؟)) فَقَالَ: لَا. قَالَ: ((قُمْ فَارَكَعْ)).

[طرفاء بی: ۹۳۱، ۱۱۶۲].

۳۳- بَابُ مَنْ جَاءَ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ

صَلَّى رَكَعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ

۹۳۱- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ سَعْدٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: دَخَلَ رَجُلٌ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فَقَالَ: ((أَصَلَّيْتَ؟)) قَالَ: لَا. قَالَ: ((فَصَلِّ رَكَعَتَيْنِ)).

[راجع: ۹۳۰]

तशरीह: जुम्आ के दिन हालते ख़ुत्बा में कोई शख्स आए तो उसे ख़ुत्बा ही की हालत में दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े बग़ैर नहीं बैठना चाहिये। ये एक ऐसा मसला है जो हदीषे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से जिसे हज़रत इमामुल मुहद्दिषीन ने यहाँ नक़ल फ़र्माया है। रोज़े रोशन की तरह षाबित है। हज़रत इमाम तिमिज़ी (रह.) ने 'बाबुन फिरकअतैनि इज़ा जाअरजुलु बल्इमामु यख़्तुबु' के तहत इसी हदीष को नक़ल फ़र्माया है। आख़िर में फ़र्माते हैं कि हाज़ा हदीषुन हसनुन सहीहुन ये हदीष बिलकुल हसन सहीह है। इसमें साफ़ बयान है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुत्बा की ही हालत में एक आने वाले शख्स (सुलैक ग़ल्फ़ानी नामी) को दो रकअत पढ़ने का हुक्म फ़र्माया था। कुछ ज़ईफ़ रिवायतों में मज़कूर है कि जिस हालत में उस शख्स ने दो रकअत पढ़ी आँहज़रत (ﷺ) ने अपना ख़ुत्बा बन्द कर दिया था। ये रिवायत सनद के ए'तिबार से लायक़े हुज्जत नहीं है और बुख़ारी शरीफ़ की मज़कूर हदीष हसन सहीह है। जिसमें आँहज़रत (ﷺ) की हालते ख़ुत्बा ही में उसके दो रकअत पढ़ने का ज़िक्र है। लिहाज़ा उसके मुक़ाबले पर ये रिवायत क़ाबिले हुज्जत नहीं।

देवबन्दी हज़रात कहते हैं कि आने वाले शख्स को आँहज़रत (ﷺ) ने दो रकअत नमाज़ का हुक्म बेशक फ़र्माया मगर अभी आपने ख़ुत्बा शुरू ही नहीं किया था। इसका ये मतलब है कि रावी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) जो साफ़ लफ़्ज़ों में 'अन्न नबिय्य (ﷺ) यख़्तुबुन्नास यौमल्जुम्अति' (या'नी आँहज़रत (ﷺ) लोगों को ख़ुत्बा सुना रहे थे) नक़ल फ़र्मा रहे हैं नज़्जुबिल्लाह! उनका ये बयान ग़लत है और अभी आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुत्बा शुरू ही नहीं फ़र्माया था ये किस क़दर जुअर्त है कि एक सहाबी-ए-रसूल (ﷺ) को ग़लतबयानी का मुर्तकिब समझा जाए और कुछ ज़ईफ़ रिवायत का सहारा लेकर

मुहद्दिशीन किराम की फुकाहते हदीष और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) के बयान की निहायत बेबाकी के साथ तग़लीत की जाए। हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने इस सिलसिले की दूसरी हदीष अब्दुल्लाह बिन अबी मुसह से यूँ नक़ल फ़र्माई है, 'अन्न अबी सईद दिलख़ुदरी दख़ल यौमल्जुम्अति व मर्वानु यख़तुबु फ़क्राम युसल्ली फ़जा अल्हरसु लियजिलसूहु फ़ अबी हत्ता सल्ल फ़लम्मा इन्सरफ़ आतैनाहू फ़कुल्ना रहिमकल्लाहु इन्न कादू लयक्रऊ बिक मा कुन्तु लिअत्रुकहुमा बअद शैइन राइतुहू मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) शुम्मज़कर अन्न रज़ुलन जाअ यौमल्जुम्अति फी हैयअतिन वन्नबिय्यु (ﷺ) यख़तुबु यौमल्जुम्अति फ़अमरहू फ़सल्ल रकअतैनि वन्नबिय्यु (ﷺ) ख़तुबु' या'नी अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) सहाबी रसूल (ﷺ) जुम्अे के दिन मस्जिद में इस हालत में आए कि मरवान ख़ुत्बा दे रहा था। ये नमाज़ (तहिय्यतुल मस्जिद) पढ़ने खड़े हुए ये देखकर सिपाही आए और उनको ज़बरदस्ती नमाज़ से रोकना चाहा मगर ये न माने और पढ़कर ही सलाम फेरा। अब्दुल्लाह बिन अबी मुसहद कहते हैं कि नमाज़ के बाद हमने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से मुलाक़ात की और कहा कि वो सिपाही आप पर हमलावर होना ही चाहते थे। आपने फ़र्माया कि मैं भी इन दो रकअतों को छोड़नेवाला ही नहीं था, ख़वाह सिपाही लोग कुछ भी करते क्योंकि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा है आप (ﷺ) जुम्अे के दिन ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक आदमी परेशान शक़ल में मस्जिद में आया। ओहज़रत (ﷺ) ने उसको उसी हालत में दो रकअत पढ़ लेने का हुक्म फ़र्माया। वो नमाज़ पढ़ता रहा और ओहज़रत (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे।

दो आदिल गवाह! हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) दोनों आदिल गवाहों का बयान क़ारेईन के सामने है। इसके बाद मुख्तलिफ़ तावीलात या कमज़ोर रिवायात का सहारा लेकर उन दोनों सहाबियों की तग़लीत के दर पे होना किसी भी अहले इल्म की शान के खिलाफ़ है। हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रह.) आगे फ़र्माते हैं कि हज़रत इब्ने इयैना (रज़ि.) और हज़रत अबू अब्दुर्रहमान मुक्बरी (रज़ि.) दोनों बुजुर्गों का यही मामूल था कि वो इस हालते मज़कूर में उन दोनों रकअतों को नहीं छोड़ा करते थे। हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने इस सिलसिले की दीगर रिवायात की तरफ़ भी इशारा किया है जिनमें हज़रत जाबिर (रज़ि.) की एक और रिवायत तबरानी में यूँ मज़कूर है, 'अन्न जाबिरिन क़ाल दख़लन्नुअमानिब्नि नौफ़ल व रसूलुल्लाहि (ﷺ) अलल्मिम्बरियख़तुबु यौमल्जुम्अति फ़क्राल लहुन्नबिय्यु (ﷺ) सल्ल रकअतैनि व तजव्वज़ फीहिमा फइज़ा अता अहदुकुम यौमल्जुम्अति वल्इमामु यख़तुबु फलियुसल्लि रकअतैनि व लियुखफिफ़हुमा कज़ा फ़ी कूतिल्मुअतज़ी व तुहफतिल्अहवज़ी' (जिल्द नं. 2, पेज नं. 264) या'नी एक बुजुर्ग नौअमान बिन नौफ़ल नामी मस्जिद में आए और नबी करीम (ﷺ) जुम्अे के दिन मिम्बर पर ख़ुत्बा दे रहे थे। आप (ﷺ) ने उनको हुक्म फ़र्माया कि उठकर दो रकअत पढ़कर बैठे और उनको हल्का करके पढ़े और जब भी कोई तुममें से इस हालत में मस्जिद में आए कि इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो वो हल्की दो रकअतें पढ़कर ही बैठे और उनको हल्का पढ़े। हज़रत अल्लामा नववी शारेह मुस्लिम फ़र्माते हैं, 'हाज़िहिल्अह्दादीषु कुल्लुहा यअनी अल्लती रवाहा मुस्लिम सरीहतुन फिहलालति लिमज्हबिश्शाफ़िइ व अहमद व इस्हाक़ व फ़ुक्रहाइल्मुहद्दिशीन अन्नहू इज़ा दख़लल्जामिअ यौमल्जुम्अति वल्इमामु यख़तुबु यस्तहिब्बु लहू अय्युंसल्लिय रकअतैनि तहिय्यतल्मस्जिद व यकरहल्जुलूस कबल अय्युंसल्लियहुमा व अन्नहू यस्तहिब्बु अय्यतजव्वज़ फीहिमा यस्मउ बअदहुमा अल्ख़ुत्बत व हुकिय हाजल्मज्हबु अनिल्हसनिल्बस्री व गैरहू मिनल्मुतक़द्दिमीन' (तोहफ़तुल अहवज़ी) या'नी इन सारी अह्दादीष से सराहत के साथ प्राबित है कि इमाम जब ख़ुत्ब-ए-जुम्आ दे रहा हो और कोई आने वाला आए तो उसे चाहिये कि दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद अदा करके ही बैठे। बग़ैर इन दोनों रकअतों के उसका बैठना मकरूह है और मुस्तहब है कि हल्का पढ़े ताकि फिर ख़ुत्बा सुन सके। यही मसलक इमामे हसन बसरी वग़ैरह मुतक़द्दिमीन का है। हज़रत इमामे तिर्मिज़ी (रह.) ने दूसरे हज़रात का मसलक भी ज़िक्र किया है जो इन दो रकअतों के काइल नहीं है। फिर हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने अपना फ़ैसला इन लफ़्ज़ों में दिया है, वल्क़ौलु अव्वलु असहृहु या'नी इन्हीं हज़रात का मसलक सही है जो इन दो रकअतों के पढ़ने के काइल हैं। इस तफ़्सील के बाद भी अगर कोई शख़्स इन दो रकअतों को नाजाइज़ तसव्वुर करे तो ये ख़ुद उसकी ज़िम्मेदारी है।

आख़िर में हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिष देहलवी (रह.) का इशार्द भी सुन लीजिए, आप फ़र्माते हैं, 'फइज़ा जाअ वल्इमामु यख़तुबु फ़ल्यक़ अ रकअतैनि वल्यतजव्वज़ फीहिमा रिआयतन

लिमुन्नतिरतिबति व अदबिल्बुत्बति जमीअन बिकदरिल्इम्कानि व ला तगतर्फी हाज़िहिल्मस्अलति बिमा यल्हजु बिही अहलु बलदिक फइन्नल्हदीप्र सहीहुन वाजिबुन इत्तिबाउद्दु' (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा : जिल्द नं. 2, पेज नं. 101) या'नी जब कोई नमाज़ी ऐसे हाल में मस्जिद में आए कि इमाम खुत्बा दे रहा हो तो दो हल्की रकअत पढ़ ले ताकि सुन्नते रातिबा और अदबे खुत्बा दोनों की रियायत हो सके और इस मसले के बारे में तुम्हारे शहर के लोग जो शोर करते हैं (और इन रकअतों के पढ़ने से रोकते हैं, उनके धोखे में न आना क्योंकि इस मसले के हक में हदीसे सहीह वारिद है जिसकी इत्तेबा (पैरवी) वाजिब है, वबिल्लाहि तौफ़ीक़।

बाब 34 : खुत्बा में दोनों हाथ उठाकर दुआ माँगना

(932) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अनस ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, (दूसरी सनद) और हम्माद ने यूनुस से भी रिवायत की अब्दुल अज़ीज़ और यूनुस दोनों ने प्राबित से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) जुम्अे का खुत्बा दे रहे थे कि एक शख्स खड़ा हो गया और कहने लगा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मवेशी और बकरियाँ हलाक हो गईं (बारिश न होने की वजह से) आप (ﷺ) दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह तआला बारिश बरसाए। चूनोंचे आप (ﷺ) ने दोनों हाथ फैलाए और दुआ की।

(दीगर मक्काम : 933, 1013, 1014, 1015, 1016, 1017, 1018, 1019, 1021, 1029, 1033, 3582, 6093, 6342)

बाब 35 : जुम्अे के खुत्बे में बारिश के लिये दुआ करना

933. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम अबू अम्र औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में क्रहत (अकाल) पड़ा, आप (ﷺ) खुत्बा दे रहे थे कि एक देहाती ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जानवर मर गये और अहलो-अयाल दानों को तरस गये। आप हमारे लिये अल्लाह तआला से दुआ फ़र्माएँ। आप (ﷺ) ने दोनों

۳۴- بَابُ رَفْعِ اليَدَيْنِ فِي الْخُطْبَةِ

۹۳۲- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الْقَزِّيزِ عَنْ أَنَسٍ، وَعَنْ يُونُسَ عَنْ قَابَتِ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: ((تَمَّ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِذْ قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْكَ الْكُرَاعُ هَلْكَ الشَّاءُ، فَاذْغِ اللَّهُ أَنْ يَسْقِيَنَا، فَمَدَّ يَدَيْهِ وَدَعَا)).

[أطرافه في : ۹۳۳، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴]

۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸

۱۰۱۹، ۱۰۲۱، ۱۰۲۹، ۱۰۳۳

[۶۳۴۲، ۶۰۹۳، ۳۵۸۲]

۳۵- بَابُ الْإِمْتِسَاءِ فِي الْخُطْبَةِ

يَوْمَ الْجُمُعَةِ

۹۳۳- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرِو قَالَ حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: أَصَابَتْ النَّاسَ سَنَةٌ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَيَسَمُ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ قَامَ أَعْرَابِي فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلْكَ الْمَالُ، وَجَاعَ الْعِيَالُ، فَاذْغِ اللَّهُ لَنَا. ((وَرَفَعَ

हाथ उठाए, बादल का एक टुकड़ा भी आसमान पर नज़र नहीं आ रहा था। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अभी आप (ﷺ) ने हाथों को नीचे भी नहीं किया था कि पहाड़ों की तरह घटा उमड़ आई और आप (ﷺ) अभी मिम्बर से उतरे भी नहीं थे कि मैंने देखा कि बारिश का पानी आप (ﷺ) की रीशे मुबारक से टपक रहा था। उस दिन उसके बाद और लगातार अगले जुम्आ तक बारिश होती रही।

(दूसरे जुम्आ को) यही देहाती फिर खड़ा हुआ या कहा कि कोई दूसरा शख्स खड़ा हुआ और कहने लगा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! इमारतें मुनहदिम हो गईं और जानवर डूब गए। आप (ﷺ) हमारे लिये अल्लाह से दुआ कीजिए। आप (ﷺ) ने दोनों हाथ उठाए और दुआ की कि ऐ अल्लाह! अब दूसरी तरफ़ बारिश बरसा और हमसे रोक दे। आप (ﷺ) हाथ से बादल के लिये जिस तरफ़ इशारा करते, उधर मतलब सफ़ा हो जाता। सारा मदीना तालाब की तरह बन गया था और क़नात का नाला महीना भर बहता रहा और आसपास से आने वाले भी अपने यहाँ भरपूर बारिश की ख़बर देते रहे। (राजेअ: 932)

يَذِيهِ) - وَمَا نَرَى فِي السَّمَاءِ قُرْعَةً -
فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا وَضَعَهَا حَتَّى تَزَالَ
السَّحَابُ أَشْثَالَ الْجِبَالِ، ثُمَّ لَمْ يَزَلْ
عَنْ مَنَبَرِهِ حَتَّى رَأَيْتُ الْمَطَرَ يَصَادِرُ عَلَى
لِحْيَتِهِ ﷺ. فَطُيِّرْنَا يَوْمَئِذٍ ذَلِكَ، وَبَيْنَ
الْقَدْبِ وَتَبَعْدِ الْقَدْبِ، وَالَّذِي يَلِيهِ حَتَّى
الْجُمُعَةِ الْآخِرَى.

فَقَامَ ذَلِكَ الْأَعْرَابِيُّ - أَوْ قَالِ غَيْرُهُ -
فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ تَهْتَدُمُ الْبَنَاءُ، وَتُحْرَقُ
الْمَنَازِلُ، فَادْعُ اللَّهَ لَنَا. فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ:
(اللَّهُمَّ خَوَّلِنَا وَلَا عَلَيْنَا). لَمَّا يَشِيرُ
بِيَدِهِ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ السَّحَابِ إِلَّا
الْفَرْجَتِ، وَصَارَتِ الْمَدِينَةُ مِثْلَ الْجَوْبَةِ.
وَسَأَلَ الْوَادِي قَعْدَةَ شَهْرٍ، وَلَمْ يَجْمَعْ
أَحَدٌ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلَّا حَدَّثَ بِالْجَوْدِ).

[راجع: ٩٣٢]

तशीह: बाब और नक़लकर्दा हदीष से ज़ाहिर है कि इमाम बक्कते ज़रूरत जुम्आ के ख़ुत्बा में भी बारिश के लिये दुआ कर सकता है और ये भी प्राबित हुआ कि किसी ऐसी अवामी ज़रूरत के लिये दुआ करने की दरख्वास्त बहालते ख़ुत्बा इमाम से की जा सकती है और ये भी कि इमाम ऐसी दरख्वास्त पर ख़ुत्बा ही में तवज्जह कर सकता है। जिन हज़रात ने ख़ुत्बा को नमाज़ का दर्जा देकर उसमें बक्कते ज़रूरत तकल्लुम को भी मना बतलाया है। इस हदीष से ज़ाहिर है कि उनका ये ख़याल सही नहीं है।

अल्लामा शौकानी (रह.) इस वाक़िअे पर लिखते हैं, 'व फिलहदीषि फवाइदुमिन्हा जवाज़ुलमुकालमति मिनलख़तीबि हाललख़ुत्वति व तक्वाराहुआइ व इदखालल्इस्तिस्काइ फी ख़ुत्वतिन वहुआउ बिही अलल्मिम्बरी व तर्कु तहवीलिरिदाई वल्इस्तिक्बालि वल्इज्तिजाइ बिमलालिल्जुम्अति अन मलालिल्इस्तिस्काइ कमा तक्वहम व फीहि इल्मुम्पिन अलामिन्नुबुव्वति फ़ीहि इजाबतुल्लाहि तआला दुआअ नबिथ्यिही व इम्तिषालस्सहाबि अम्परहू कमा वकअ कभीरुम्पिनरिवायाति व गैर ज़ालिक मिनल्फवाइदि' (नेलुल औतार) या 'नी इस हदीष से बहुत से मसाइल निकलते हैं मफलन हालते ख़ुत्बा में ख़तीब से बात करने का जवाज़ नीज़ दुआ करना (और उसके लिये हाथों को उठाकर दुआ करना) और ख़ुत्ब-ए-जुम्आ में इस्तिस्काअ की दुआ और इस्तिस्काअ के लिये ऐसे मौक़े पर चादर उलटने-पलटने को छोड़ देना और का'बा की ओर सूख़ भी न होना और नमाज़े जुम्आ को नमाज़े इस्तिस्काअ के बदले में काफ़ी समझना। और उसमें आपकी नुबुव्वत की एक अहम दलील भी है कि अल्लाह ने आपकी दुआ कुबूल फ़र्माई और बादलों को आपका फ़र्मान तस्लीम करने पर मामूर फ़र्मा दिया और भी बहुत से फ़वाइद हैं। आपने किन लफ़ज़ों में दुआ-ए-इस्तिस्काअ की। इस बारे में भी कई रिवायात हैं जिनमें जामेअ दुआएँ ये हैं, 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिलआलमीनरहमानिररहीम मालिकि यौमिदीन ला इलाहा इल्लल्लाहु यफ़अलुल्लाहु मा युरीदु अल्लाहुम्मा अन्त अल्लाह ला इलाहा इल्ला अन्त अन्तलगनी व नहनुल्फु क़राउ अन्जिल अलैनल्गौष मा अन्ज़लत लना कुव्वतन व बलागन इला हीन

अल्लाहुम्मस्किना गैषन मुगीषन मरीअन मरीअन तबक़न गदकन आज़िलन गैर राइषिन अल्लाहुम्म अस्क्री इबादक व बहाइमक वन्शुर रहमतक वहइ बलदकल्मय्यत' ये भी मशरूअ अमर है कि ऐसे मौकों पर अपने में से किसी नेक बुजुर्ग को दुआ के लिये आगे किया जाए और वो अल्लाह से रो-रोकर दुआ करे और लोग पीछे से आमीन-आमीन कहकर गिरया व ज़ारी के साथ अल्लाह से पानी का सवाल करें।

बाब 36 : जुम्अे के दिन ख़ुत्बा के वक़्त चुप रहना

और ये भी लगव हरकत है कि अपने पास बैठे हुए शख्स से कोई कहे कि 'चुप रह' सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि इमाम जब ख़ुत्बा शुरू करे तो ख़ामोश हो जाना चाहिये।

(934) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने अक़ील से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्हें अबू हु़रैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो और तू अपने पास बैठे हुए आदमी से कहे कि 'चुप रह' तो तूने ख़ुद एक लगव हरकत की।

बाब 37 : जुम्अे के दिन वो घड़ी जिसमें दुआ कुबूल होती है

(935) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने इमाम मालिक (रह.) से बयान किया, उनसे अबुज्जिनाद ने, उनसे अब्दुरहमान अअरज ने, उनसे अबू हु़रैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुम्अे के ज़िक्र में एक बार फ़र्माया कि इस दिन एक ऐसी घड़ी आती है जिसमें अगर कोई मुसलमान बन्दा खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो और कोई चीज़ अल्लाह पाक से मांग रहा हो तो अल्लाह पाक उसे वो चीज़ ज़रूर देता है। हाथ के इशारे से आपने बतलाया कि वो साअत बहुत थोड़ी सी है। (दीगर मक़ाम : 5294, 6400)

۳۶- بَابُ الْإِنْصَاتِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ

وَإِذَا قَالَ لِصَاحِبِهِ أَنْصِتْ فَقَدْ لَفَا. وَقَالَ سَلْمَانُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الْإِمَامُ)).

۹۳۴- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَبِّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قُلْتُ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ: أَنْصِتْ - وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ - فَقَدْ لَفَوْتُ)).

۳۷- بَابُ السَّاعَةِ الَّتِي فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ

۹۳۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ذَكَرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِنَاعَةٍ لَا يُؤَلِّقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي يَسْأَلُ اللَّهَ شَيْئًا إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ)) وَأَشَارَ بِيَدِهِ يَقْلِّلُهَا.

[طرفاه ي : ۵۲۹۴، ۶۴۰۰]

तस्रीह : इस घड़ी की तअय्युन (निर्धारण) में इख़िलाफ़ है कि ये घड़ी किस वक़्त आती है कुछ रिवायत में इसके लिये वो वक़्त बतलाया गया है जब इमाम नमाज़े जुम्अा शुरू करता है। गोया नमाज़ ख़त्म होने तक बीच में ये घड़ी आती है कुछ रिवायत में तुलूअे फ़ज़ से उसका वक़्त बतलाया गया है। कुछ रिवायत में अम्र से मरिब तक का वक़्त बतलाया गया है। ह्वाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़तुहल बारी में बहुत तफ़सील के साथ इन सारी रिवायत पर रोशनी डाली है और इस बारे

में उलमा-ए-इस्लाम व फुकहा-ए-इज़ाम के 43 अक्वाल नकल किये हैं। इमाम शौकानी (रह.) ने अल्लामा इब्ने मुनीर का खयाल इन लफ्जों में नकल फर्माया है, 'कालबुलमुनीर इज़ाउलिम अन्न फ़ाइदतल्लइब्हामि लिहाज़िहिस्साअति व लैलतिल्कद्रिबअप्पुदवाई अलल्इब्शारि मिन्मुसलाति वहुआइ व लौ वकअल्बयानु लत्तकलत्रासु अला ज़ालिक व तरकू मा अदाहा फ़ल्अजब बअद ज़ालिक मिम्मय्यत्तकिलु फी तलबि तहदीहिहा व काल फ़ी मौज़इन आखर युहसिनु जम्अल्अक्वालि फतकूनु साअ तुल्इजाबति वाहिदतन मिन्हा ला युअय्यनुहा फयुसादिफ़हा मनिज्त्तहद फी जमीइहा' (नैनुल अवतार) या 'नी इस घड़ी के पोशीदा रखने में और इसी तरह लैलतुल कद्र के पोशीदा रखने में फ़ायदा ये है कि उनकी तलाश के लिये बक़रत नमाज़े नफ़ल अदा की जाए और दुआएँ की जाएँ, इस सूरत में वो ज़रूर-ज़रूर घड़ी किसी न किसी साअत में उसे हासिल होगी। अगर इनको ज़ाहिर कर दिया जाता तो लोग भरोसा करके बैठ जाते और सिर्फ़ उस घड़ी में इबादत करते। पस ता' जब उस शरूस् पर जो इसे महदूद वक़्त में पा लेने पर भरोसा किये हुए हैं। बेहतर है कि मज़कूरा बाला अक्वाल को बई सूरत (उसी तरह) जमा किया जाए कि इजाबत (कुबूल करने) की घड़ी वो एक ही साअत है जिसे मुतअय्यिन नहीं किया जा सकता। पस जो तमाम औकात में उसके लिये कोशिश करेगा वो ज़रूर उसे किसी न किसी वक़्त में पा लेगा। इमाम शौकानी (रह.) ने अपना फ़ैसला इन लफ्जों में दिया है, 'वल्लकौलु बिअन्नहा आखिर साअतिम्मिनल्यौमि हुव अर्जहुल्अक्वालि व इलैहि ज़हबल्जुम्हूरु' अल्लख इस बारे में राजेह कौल यही है कि वो घड़ी आखिर दिन में बादे अम्र तक आती है और जुम्हूरे सहाबा व ताबेईन व अइम्म-ए-दीन का यही खयाल है।

बाब 38 : अगर जुम्अे की नमाज़ में कुछ लोग इमाम को छोड़कर चले जाएँ तो इमाम और बाक़ी नमाज़ियों की नमाज़ सहीह हो जाएगी

۳۸- بَابُ إِذَا نَفَرَ النَّاسُ عَنِ الْإِمَامِ فِي صَلَاةِ الْجُمُعَةِ لِفَصْلَةِ الْإِمَامِ وَمَنْ بَقِيَ جَائِزَةٌ

(936) हमसे मुआविया बिन अमर ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ाइदा ने हुसैन से बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी ज़अदि ने, उन्होंने कहा कि हमसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया हम नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे, इतने में अनाज लादे हुए एक तिजारीती क़ाफ़िला उधर से गुज़रा। लोग खुत्बा छोड़कर उधर चल दिये। नबी करीम (ﷺ) के साथ कुल बारह आदमी रह गए। उस वक़्त सूरह जुम्आ की ये आयत उतरी, (तर्जुमा) 'और जब ये लोग तिजारत और खेल देखते हैं तो उस तरफ़ दौड़ पड़ते हैं और आपको खड़ा छोड़ देते हैं।' (दीगर मक़ाम : 2058, 2064, 4899)

۹۳۶- حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْفَرِ قَالَ: حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: بَيْنَمَا نُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ أَتَانَا عَيْرٌ تَحْمِلُ طَعَامًا، فَاتَّفَعُوا إِلَيْهَا حَتَّى مَا بَقِيَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَّا إِنَا عَشْرٌ وَجَلَاءُ. فَتَرَلْتُ هَذِهِ الْآيَةَ: ﴿وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا﴾.

[أطرافه ٣: ٢٠٥٨، ٢٠٦٤، ٤٨٩٩].

तशरीह : एक मरतबा मदीने में गल्ले (अनाज) की सख़्त कमी थी कि एक तिजारीती क़ाफ़िला अनाज लेकर मदीना आया उसकी ख़बर सुनकर कुछ लोग जुम्अे के दिन ऐन खुत्बे के हालात में बाहर निकल गए। इस पर ये आयते करीमा नाज़िल हुई। हज़रत इमाम ने इस वाक़िअे से ये प्राबित फ़र्माया कि अहनाफ़ और शवाफ़िअ जुम्अे की सेहत के लिये जो ख़ास क़ैद लगाते हैं वो सही नहीं है। इतनी ता' दाद ज़रूर हो जिसे जमाअत कहा जा सके। आँहज़रत (ﷺ) के साथ से अक़्बर लोग चले गए फिर भी आपने नमाज़े जुम्आ अदा की। यहाँ ये ए' तिराज़ होता है कि सहाबा की शान खुद कुर्आन में यूँ है, रिज़ालुल

लातुल्हीहिम तिजारतुन अल्ख (अन्नूर, 37) या'नी मेरे बन्दे तिजारत वगैरह में ग़ाफ़िल होकर मेरी याद कभी न छोड़ते। सो इसका जवाब है कि ये वाक़िया इस आयत से नुज़ूल के पहले का है बाद में वो हज़रत अपने कामों से रुक गए और सही मा'नों में इस आयत के मिस्दाक़ बन गए थे। रिज्जानुल्लाहि अज्मईन व अरज़ाहुम (आमीन)

बाब 39 : जुम्आ के बाद और उससे पहले सुन्नत पढ़ना

938. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने नाफ़ेअ से ख़बर दी, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जुहर से पहले दो रकअत, उसके बाद दो रकअत और मरिब के बाद दो रकअत अपने घर में पढ़ते और इशा के बाद दो रकअतें पढ़ते औ जुम्आ के बाद दो रकअतें जब घर वापस होते तब पढ़ा करते थे।

(दीगर मक़ाम : 1165, 1172, 1180)

क्योंकि जुहर की जगह जुम्आ की नमाज़ है इसलिये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इशाद फ़र्माया कि जो सुन्नते जुहर से पहले और पीछे मसनून है वही जुम्आ के पहले और पीछे भी मसनून हैं, कुछ दूसरी हदीष में इन सुन्नतों का ज़िक्र भी आया है जुम्आ के बाद की सुन्नतें अक़र आप (ﷺ) घर में पढ़ा करते थे।

बाब 40 : अल्लाह अज़ज़ व जल्ल का (सूरह जुम्आ में) ये फ़र्माना कि जब जुम्आ की नमाज़ ख़त्म हो जाए तो अपने काम काज के लिये ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह के फ़ज़ल (रिज़क या इल्म) को ढूँढो

(938) हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू ग़स्सान मुहम्मद बिन मत्तर मदनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने सहल बिन सअद के वास्ते से बयान किया। उन्होंने बयान किया कि हमारे यहाँ एक औरत थी जो नालों पर अपने एक खेत में चुकंदर बोती। जुम्आ का दिन आता तो वो चुकंदर उखाड़ लाती और उसे एक हाण्डी में पकाती फिर ऊपर से एक मुट्ठी जौ का आटा छिड़क देती। इस तरह ये चुकंदर गोشت की तरह हो जाते। जुम्आ से वापसी

۳۹- بَابُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْجُمُعَةِ

وَقَبْلَهَا

۹۳۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي قَبْلَ الظُّهْرِ رَكْعَتَيْنِ وَبَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ، وَبَعْدَ الْمَغْرِبِ رَكْعَتَيْنِ فِي بَيْتِهِ، وَبَعْدَ الْمَشَاءِ رَكْعَتَيْنِ. وَكَانَ لَا يُصَلِّي بَعْدَ الْجُمُعَةِ حَتَّى يَنْصَرِفَ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ)).

[أطرافه في : ۱۱۶۵، ۱۱۷۲، ۱۱۸۰.]

۴۰- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿إِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ﴾

۹۳۸- حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَسَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: كَانَتْ فَيْئًا امْرَأَةٌ تَجْعَلُ عَلَى أَرْبَعَاءٍ فِي مَرْزَعَةٍ لَهَا مِلْقًا، فَكَانَتْ إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ تَنْزِعُ أَصُولَ السَّلْقِ فَتَجْعَلُهُ فِي قِنَرٍ ثُمَّ تَجْعَلُ عَلَيْهِ قَبْضَةً مِنْ شَعِيرٍ تَطْحَنُهَا فَتَكُونُ

में हम उन्हें सलाम करने के लिये हाज़िर होते तो यही पकवान हमारे आगे कर देती और हम उसे चाट जाते। हम लोग हर जुम्आ को उनके उस खाने के आरज़ूमंद रहा करते थे।

(दीगर मक़ाम : 939, 941, 2349, 5304, 6248, 6279)

أَمْرُ السَّلَاقِ عَرَفَهُ. وَكُنَّا نَعْمَرُفُ مِنْ صَلَاةِ الْجُمُعَةِ فَسَلَّمُ عَلَيْهَا، فَتَقَرَّبُ ذَلِكَ الطَّعَامُ إِلَيْنَا فَلَقَعْنَاهُ، وَكُنَّا نَتَمَنَّى يَوْمَ الْجُمُعَةِ لَطْعَامِهَا ذَلِكَ. [أطرافه في : ٩٣٩، ٩٤١، ٢٣٤٩]

[٦٢٧٩، ٦٢٤٨، ٥٣٠٤]

तशरीह : बाब की मुनासबत इस तरह है कि सहाबा किराम जुम्आ की नमाज़ के बाद रिज़्क की तलाश में निकलते और उस औरत के घर पर इस उम्मीद पर आते कि वहाँ खाना मिलेगा। अल्लाहु अकबर! आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में भी सहाबा ने कैसी तकलीफ़ उठाई कि चुकन्दर की जड़ें और मुट्ठी भर जौ का आटा ग़नीमत समझते और उसी पर क़नाअत करते। रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

(939) हमसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा क़अम्बी ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, अपने बाप से और उनसे सहल बिन सअद ने यही बयान किया और फ़र्माया कि दोपहर का सोना और दोपहर का खाना जुम्आ की नमाज़ के बाद रखते थे। (राजेअ : 938)

٩٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَارِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ بِهِذَا وَقَالَ: مَا كُنَّا نَقِيلُ وَلَا نَتَغَدَّى إِلَّا بَعْدَ الْجُمُعَةِ. [راجع: ٩٣٨]

बाब 41 : जुम्आ की नमाज़ के बाद सोना

٤١- بَابُ الْقَائِلَةِ بَعْدَ الْجُمُعَةِ

(940) हमसे मुहम्मद बिन इब्नबा शैबानी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू इस्हाक़ फ़ज़ारी इब्राहीम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना। आप फ़र्माते थे कि हम जुम्आ सवेरे पढ़ते, उसके बाद दोपहर की नींद लेते थे। (राजेअ : 905)

٩٤٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَفِيَةَ الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ: كُنَّا نُبَكِّرُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ ثُمَّ نَقِيلُ. [راجع: ٩٠٥]

(941) हमसे सईद बिन बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम ने सहल बिन सअद (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने बतलाया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ जुम्आ पढ़ते, फिर दोपहर की नींद लिया करते थे। (राजेअ : 938)

٩٤١- حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَارِمٍ عَنْ سَهْلِ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْجُمُعَةَ، ثُمَّ تَكُونُ الْقَائِلَةُ. [راجع: ٩٣٨]

तशरीह : हज़रत इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, 'व ज़ाहिरु ज़ालिक अन्नहुम कानू युसल्लून लजुम्आत बाकिरन्नहारि कालल्ह्याफ़िज़ु लाकिन तरीकुलजम्इ औला मिन दअवत्तआरुज़ि व क़द तक्रूरुन व अन्नत्तब्कीर मुतलकु अ ला ज़अलिशैइ फी अब्वलि वक्तिही व तन्नदीमिही अला गैरिही व हुवलमुरादु हाहुना अन्नहुम कानू यब्दऊनम्सलात क़बलल्कैलूलति बिखिलाफ़िम्माजरत बिही आदतुहुम फी सलातिज़ज़हरि फिलहरि कानू यक्कीलून शुम्म युसल्लून लिमशरूइयतिल्इब्रादि वल्मुरादु बिल्काइलतिल्मज़कूरति फिलहदीषि नौमु

निसिफ़न्नहारि' (नैनुल औतार) या'नी ज़ाहिर ये है कि वो सहाबा किराम जुम्अे की नमाज़ चढ़ते हुए दिन में अदा कर लेते थे हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं कि तआरूज़ पैदा करने से बेहतर है कि दोनों किस्म की अह्रादीष में तत्बीक दी जाए और ये मुकर्रर हो चुका है कि तब्कीर का लफ़्ज़ किसी काम को उसका अव्वल वक़्त में करने या ग़ैर पर उसे मुकद्दम करने पर बोला जाता है। और यहाँ यही मुराद है वो सहाबा किराम (रज़ि.) जुम्अे की नमाज़ रोज़ाना की आदत कैलूला के अव्वल वक़्त में पढ़ लिया करते थे। हालाँकि गर्मियों में उनकी आदत थी कि वो ठण्डे के ख़्याल से पहले कैलूला करते और बाद में जुहर की नमाज़ पढ़ते। मगर जुम्अे की नमाज़ कुछ मर्तबा ख़िलाफ़े आदत कैलूला से पहले ही पढ़ लिया करते थे। कैलूला दोपहर के सोने पर बोला जाता है। खुलासा ये है कि जुम्अे को बाद ज़वाल अव्वल वक़्त पर पढ़ना इन रिवायात का मतलब और मंशा है। इस तरह जुम्आ अव्वल वक़्त और आख़िर वक़्त दोनों में पढ़ा जा सकता है। कुछ हज़रात ज़वाल से पहले भी जुम्आ के क़ाइल हैं। मगर तर्जीह ज़वाल के बाद ही को है और यही इमाम बुखारी (रह.) का मसलक मा'लूम होता है। एक लम्बी तप्सील के बाद हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष मह फ़यूजुहुम फ़र्माते हैं, 'व क़द ज़हर बिमा ज़कर्ना अन्नहू लैस फी सलातिल्जुम्अति क़ब्ल ज़वालि हदीषुन सहीहुन सरीहुन फल्लकौलुराजिहु हुब मा क़ाल बिहील्जुम्अरू क़ाल शैख़ुना फी शहिंतिमिज़ी वज्जाहिरू अल्मा'मूलु अलैहि हुब मा ज़हब इलैहिल्जुम्अरू मिन अन्नहू ला तजुज़ुल्जुम्अतु इल्ला बअद जवालिशाम्सि व अम्मा मा ज़हब इलैहि बअजुहुम मन तजव्वज़ क़ब्ल ज़वालिन फलैस फीहि हदीषुन सहीहुन सरीहुन इन्तिहा' (मिज़ात, जिल्द नं. 2, पेज नं. 203) खुलासा ये है कि जुम्आ ज़वाल से पहले दुरुस्त नहीं उसी क़ौल को तर्जीह हासिल है। ज़वाल से पहले जुम्आ के बाद सहीह होने में कोई हदीष सहीह सरीह वारिद नहीं हुई पस जुम्हूर ही का मसलक सहीह है। वल्लाहु अज़लम बिस्सवाब.

12. किताबुल खौफ़

खौफ़ का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : खौफ़ की नमाज़ का बयान

١ - بَابُ صَلَاةِ الْخَوْفِ

और अल्लाह पाक ने (सूरह निसा) में फ़र्माया और जब तुम मुसाफ़िर हो तो तुम पर गुनाह नहीं अगर नमाज़ कम कर दो। फ़र्माने इलाही (अज़ाबुम्महीना) तक। (सूरह निसा : 101-102)

وَقُولِ اللَّهُ تَعَالَى: هُوَ إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ إِلَى قَوْلِهِ عَذَابًا مُّهِينًا [النساء: 101-102].

तशरीह :

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) अपनी रविश के मुताबिक़ सलाते खौफ़ के इब्बात के लिये आयते कुआनी को नक़ल फ़र्माकर इशारा किया कि आगे आने वाली अह्रादीष को इस आयत की तप्सीर समझना चाहिये।

खौफ़ की नमाज़ उसको कहते हैं जो हालते जिहाद में अदा की जाती है। जब इस्लाम और दुश्माने इस्लाम की जंग हो रही हो और फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आ जाए और डर हो कि अगर हम नमाज़ में खड़े होंगे तो दुश्मन पीछे से हमलावर हो जाएगा

ऐसी हालत में ख़ौफ़ की नमाज़ अदा करना जाइज़ है और इसका जवाज़ किताबो-सुन्नत दोनों से प्राबित है। अगर मुकाबले का वक़्त हो तो उसकी सूरत ये है कि फ़ौज़ दो हिस्सों में तक्सीम हो जाए। मुजाहिदीन का हर हिस्सा नमाज़ में इमाम के साथ शरीक हों और आधी नमाज़ अलग से पढ़ लें। जब तक दूसरी जमाअत दुश्मन के मुकाबले पर रहे और इस हालते नमाज़ में आमदो-रफ़्त मुआफ़ है और हथियार और ज़िरह और सिपर साथ रखें और अगर इतनी भी फ़ुर्सत न हो तो जमाअत मौकूफ़ करें, तन्हा पढ़ लें, प्यादा (पैदल सैनिक) पढ़ लें या सवार (सैनिक); शिद्दे जंग हों तो इशारे से पढ़ ले अगर ये भी फ़ुर्सत न मिलें तो तवक्कुफ़ करें जब तक जंग ख़त्म हो।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, 'फ़रज़ल्लाहुस्सलात अला नबिय्यिकुम फिलहज़ि अर्बअन फिस्सफ़रि रकअतैनि व फिलख़ौफ़ि रकअतन' (रवाहु अहमद व मुस्लिम व अबू दाऊद व निसाई) या'नी अल्लाह ने हमारे नबी (ﷺ) पर हज़रत में चार रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की और सफ़र में दो रकअत और ख़ौफ़ में सिर्फ़ एक रकअत।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के मुनअकिदा बाब में वारिद पूरी आयत ये हैं, व इज़ा ज़रबुतुम फिल अज़ि फलैस अलैकुम जुनाहुन अन तक्सुरू मिनस्सलाति इन ख़िफ़्तुम अय्यंप्तिनकुमुल्लज़ीन कफ़रु इन्नल काफ़िरीन कानू लकुम अदुव्वम मुबीन. व इज़ा कुन्ता फ़ीहिम फ़अकम्त लहुमुस्सलाह (अन निसा : 101, 102) या'नी जब तुम ज़मीन में सफ़र करने को जाओ तो तुम्हें नमाज़ का कस्र (कम) करना जाइज़ है। अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुमको सताएंगे वाकई काफ़िर लोग तुम्हारे सरीह दुश्मन हैं। और जब ऐ नबी! आप उनमें हो और नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ने लगे तो चाहिये कि उन हाज़िरीन में से एक जमाअत आपके साथ खड़ी हो जाए और अपने हथियार साथ लिये रहें फिर जब पहली रकअत का दूसरा सज्दा कर चुके तो तुमसे पहली जमाअत पीछे चली जाए और दूसरी जमाअत वाले जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी वो आ जाएँ और आपके साथ एक रकअत पढ़ लें और अपना बचाव और हथियार साथ ही रखें। काफ़िरों की ये दिली आरज़ू है कि किसी तरह तुम अपने हथियारों और सामान से ग़ाफ़िल हो जाओ तो तुम पर वो एक ही दफ़ा टूट पड़ें। आख़िर आयत तक।

नमाज़े ख़ौफ़, हदीषों में पाँच छः तरह से आई हैं जिस वक़्त जैसा मौक़ा मिले पढ़ लेनी चाहिये। आगे हदीषों में उन सूरतों का बयान आ रहा है। मौलाना वहीदुज़्ज़माँ फ़र्माते हैं कि अक़षर उलमा के नज़दीक ये आयत क़स्रे सफ़र के बारे में हैं। कुछ ने कहा ख़ौफ़ की नमाज़ के बाब में है, इमामे बुखारी (रह.) ने इसको इख़्तियार किया है। चुनाँचे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से पूछा गया कि हम ख़ौफ़ की क़स्र तो अल्लाह की किताब में देखते हैं, मगर सफ़र की क़स्र नहीं पाते। उन्होंने कहा हमने अपने नबी (ﷺ) को जैसा करते देखा वैसा ही हम भी करते हैं; या'नी गोया ये हुक्म अल्लाह की किताब में न सही पर हदीष में तो है और हदीष भी कुआन की तरह वाजिबुल अमल है।

हज़रत इब्ने कय्यिम ने ज़ादुल मआद में नमाज़े ख़ौफ़ की जुम्ला तज़िया करने के बाद लिखा है कि उनसे नमाज़ छः तरीक़े के साथ अदा करना मा'लूम होता है। इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) फ़र्माते हैं जिस तरीक़े पर चाहें और जैसा मौक़ा हो ये नमाज़ उस तरह पढ़ी जा सकती है।

कुछ हज़रात ने ये भी कहा कि ये नमाज़े ख़ौफ़ आँहज़रत (ﷺ) के बाद मंसूख़ हो गई मगर ये ग़लत है। जुम्हूर उलमा-ए-इस्लाम का उसकी मशरूईयत पर इतिफ़ाक़ है। आपके बाद भी सद्दाबा मुजाहिदीन में कितनी बार मैदाने जंग में ये नमाज़ अदा की है।

शेख़ुल हदीष हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब मुबारकपुरी फ़र्माते हैं, 'फ़इन्नस्सहाबत अज्मऊ अला सलातिलख़ौफ़ि फ़रूविय अन्न अलिय्यन सल्ला मअरसूलिल्लाहि (ﷺ) सलातलख़ौफ़ि लैलतहरीरि व सल्लाहा मुसलअशरी बिअस्फ़हान बिअस्हाबिही रूविय अन्न सईदब्नल्आसि कान अमीरन अलल्ज़ैशि बितबिस्तान फ़क़ाल अय्युकुम सल्ला मअरसूलिल्लाहि (ﷺ) सलातलख़ौफ़ि फ़क़ाल हुजैफ़तु अना फ़क़हमहू फ़सल्ला बिहिम कालज़ज़ैलई दलीलुल्लुम्हूरि वुजूबुलइत्तिबाइ वत्तासी बिन्नबिय्यि (ﷺ) व क़ौलुहू सल्लू कमा राइतुमूनी इसल्ली अल्ब' (मिआत, जिल्द नं. 2, पेज नं. 318) या'नी सलाते ख़ौफ़ पर सद्दाबा का इज़्माअ है जैसाकि मरवी है कि हज़रत अली (रज़ि.) ने लैलतुल हरीरा में ख़ौफ़ की नमाज़ अदा की और अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने अस्फ़हान की जंग में

अपने साथियों के साथ खौफ़ की नमाज़ पढ़ी और हज़रत सईद बिन आस ने जो जंगे तजिस्तान में अमीर लश्कर थे, फौजियों से कहा कि तुममें कोई ऐसा बुजुर्ग है जिसने आँहज़रत (ﷺ) के साथ खौफ़ की नमाज़ अदा की हो। चुनौती हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ मैं मौजूद हूँ। पस उन्हें को आगे बढ़ाकर नमाज़ अदा की गई। ज़ेलई ने कहा कि सलाते खौफ़ पर जुम्हूर की दलील यही है कि आँहज़रत (ﷺ) की इतिबा और इक्तिदा वाजिब है। आपने फ़र्माया है कि जैसे तुमने मुझको नमाज़ अदा करते देखा है वैसे ही तुम भी अदा करो पस उन लोगों का क़ौल ग़लत है जो सलाते खौफ़ को अब मंसूख कहते हैं।

मतलब ये है कि अव्वल सबने आँहज़रत (ﷺ) के साथ नमाज़ की निय्यत बाँधी, दो सफ़ हो गए। एक सफ़ तो आँहज़रत (ﷺ) के मुत्तसिल, दूसरी सफ़ उनके पीछे और ये इस हालत में है जब दुश्मन क़िबले की जानिब हो और सबका मुँह क़िबले ही की तरफ़ हो, ख़ैर अब पहली सफ़ वालों ने आपके साथ रूक़ूअ और सज्दा किया और दूसरी सफ़ वाले खड़े-खड़े उनकी द्विफ़ाज़त करते रहे, उसके बाद पहली सफ़ वाले रूक़ूअ और सज्दा करके दूसरी सफ़ वालों की जगह पर द्विफ़ाज़त के लिये खड़े रहे और दूसरी सफ़ वाले उनकी जगह पर आकर रूक़ूअ और सज्दा में गए। रूक़ूअ और सज्दा करके क़याम में आँहज़रत (ﷺ) के साथ शरीक हो गए और दूसरी रक़अत का रूक़ूअ और सज्दा आँहज़रत (ﷺ) के साथ किया जब आप (ﷺ) अतहिय्यात पढ़ने लगे तो पहली सफ़ वाले रूक़ूअ व सज्दा में गए फिर सबने एक साथ सलाम फेरा जैसे एक साथ निय्यत बाँधी थी। (शरह वहीदी)

(942) हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने जुहरी से पूछा क्या नबी करीम (ﷺ) ने सलाते खौफ़ पढ़ी थी? इस पर उन्होंने फ़र्माया कि हमें सालिम ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन ज़मर (रज़ि.) ने बतलाया कि मैं नजद की तरफ़ नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा (ज़ातुर्रिकाअ) में शरीक था। दुश्मन से मुकाबले के वक़्त हमने सफ़ें बाँधीं, उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें खौफ़ की नमाज़ पढ़ाई (तो हममें से) एक जमाअत आप (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ने में शरीक हो गई और दूसरा गिरोह दुश्मन के मुकाबले में खड़ा रहा। फिर रसूल करीम (ﷺ) ने अपनी इक्तिदा में नमाज़ पढ़नेवालों के साथ एक रूक़ूअ और दो सज्दे किये। फिर ये लोग लौटकर उस जमाअत की जगह आ गए जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी थी। अब दूसरी जमाअत आई। उनके साथ भी आपने एक रूक़ूअ और दो सज्दे किये। फिर आप (ﷺ) ने सलाम फेर दिया। उस गिरोह में से हर शख्स खड़ा हुआ और उसने अकेले अकेले एक रूक़ूअ किया और दो सज्दे अदा किये।

(दीगर मक़ाम : 943, 4132, 4535)

٩٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: سَأَلْتُ مَوْلَى النَّبِيِّ ﷺ - يَغْنِي صَلَاةَ الْخَوْفِ - قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: (غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَبْلَ تَجْدٍ، فَأَوَّاتِنَا الْعَدُوُّ فَصَافَقْنَا لَهُمْ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي لَنَا، فَقَامَتِ طَائِفَةٌ مَعَهُ، وَأَبْلَتِ طَائِفَةٌ عَلَى الْعَدُوِّ، وَرَكَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمَنْ مَعَهُ وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ انْصَرَفُوا مَكَانَ الطَّائِفَةِ الَّتِي لَمْ تُصَلِّ، فَبَايَعُوا فَرَكَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِهِمْ رُكْعَةً وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، فَقَامَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ فَرَكَعَ لِنَفْسِهِ رُكْعَةً وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ).

[أطرافه (١): ٩٤٣، ٤١٣٢، ٤١٣٢]

[٤٥٣٥]

तशरीह: नजद लुगत में बुलन्दी को कहते हैं और अरब में ये इलाक़े वो हैं जो तेहामा और यमन से लेकर इराक़ और शाम तक फैला हुआ है जिहादे मज़कूर सात हिजरी में बनी ग़ाफ़ान के काफ़िरों से हुआ था। इस रिवायत से मा'लूम

होता है कि फ़ौज के दो हिस्से किये गये और हर हिस्से ने रसूले करीम (ﷺ) के साथ एक-एक रकअत बारी-बारी अदा की फिर दूसरी रकअत उन्होंने अकेले-अकेले अदा की। कुछ रिवायतों में यूँ है कि हर हिस्सा एक रकअत पढ़कर चला गया और जब दूसरा गिरोह पूरी नमाज़ पढ़ गया तो ये गिरोह दोबारा आया और एक रकअत अकेले-अकेले पढ़कर सलाम फेरा।

फुटपट हो जाएँ या'नी भिड़ जाएँ सफ़ बाँधने का मौक़ा न मिले तो जो जहाँ खड़ा हो वहीं नमाज़ पढ़ लें। कुछ ने कहा क़ायामा का लफ़्ज़ यहाँ (रावी की तरफ़ से) ग़लत है सहीह क़ायम है और पूरी इबारत यूँ है, 'इज़ख़तलतू क़ाइमन फइन्नमा हुवज़िक्क वल्इशारतु बिर्रसि' या'नी जब काफ़िर और मुसलमान लड़ाई में ख़लत-मलत हो जाएँ तो सिर्फ़ जुबान से क़िरअत और रकूअ सच्चे के बदल सर से इशारे करना काफ़ी है। (शरह वहीदी)

क़ाल इब्नु कुदामा यज़ू अय्युसल्लिय सलातल्खौफ़ि अला कुल्लि सिफ़तिन सल्लाहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) क़ाल अहमदु कुल्लु हदीधिन युर्वा फी अब्बाबि सलातिल्खौफ़ि फल्अमलु बिही जाइज़ुन व क़ाल सिक्तत औजहिन औ सबआ युर्वा फीहा कुल्लुहा जाइज़ुन' (मिर्आतुल मसाबिह, जिल्दनं. 2, पेज नं. 319) या'नी इब्ने कुदामा ने कहा कि जिन-जिन तरीक़ों से खौफ़ की नमाज़ आँहज़रत (ﷺ) से नक़ल हुई है इन सबके मुताबिक़ जैसा हो खौफ़ की नमाज़ अदा करना जाइज़ है। इमाम अहमद ने भी ऐसा ही कहा है और ये फ़र्माया है कि नमाज़ छः सात तरीक़ों से जाइज़ है जो मुख़्तलिफ़ अह्लादीष में मरवी हैं, 'क़ालब्नु अब्बासिन वल्हसनुल्बसरी व अता व ताउस व मुजाहिद वल्हकमुब्नु उतैबा व क़तादा व इस्फ़ाक़ वज़ज़ह्हाक़ वप्पारी अन्नहा रकअतुन इन्द शिदतिल्कितालि यूमी ईमाउ' (हवाला मज़कूर) या'नी मज़कूरा जुम्ला अकाबिरे इस्लाम कहते हैं कि शिदते किताल के वक़्त एक रकअत बल्कि महज़ इशारों से भी अदा कर लेना जाइज़ है।

बाब खौफ़ की नमाज़ पैदल और सवार होकर पढ़ना

۲- بَابُ صَلَاةِ الْخَوْفِ رِجَالًا

कुआन शरीफ़ में 'रिजालन राजिल' की जमाअ है
(या'नी प्यादा/पैदल चलने वाला)

وَرُكْبَانًا رِجَالًا : قَائِمًا

तशरीह: या'नी कुआनी आयते करीमा 'फ़इन ख़िफ़्तुम फ़ रिजालन अव रुक्बाना' में लफ़्ज़े रिजालन राजिलुन की जमा है न कि रजुलुन की। राजिल के मा'नी पैदल चलने वाला और रजुलुन के मा'नी मर्द। इसी फ़र्क़ को ज़ाहिर करने के लिये इमाम ने बतलाया कि आयते शरीफ़ा में रिजालन राजिलुन की जमा है या'नी पैदल चलनेवाले रजुलुन बमा'नी मर्द की जमा नहीं है।

(943) हमसे सईद बिन यह्या बिन सईद कुरशी ने बयान किया, कहा कि मुझसे से मेरे बाप यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इब्रबा ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने मुजाहिद के क़ौल की तरह बयान किया कि जब जंग में लोग एक-दूसरे से गठ जाएँ तो खड़े खड़े नमाज़ पढ़ लें और इब्ने इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अपनी रिवायत में इज़ाफ़ा और किया है कि अगर काफ़िर बहुत सारे हों कि मुसलमानों को दम न लेने दें तो खड़े खड़े और सवार रहकर (जिस तौर मुम्किन हो) इशारों से ही सही मगर नमाज़ पढ़ लें। (राजेअ: 942)

۹۴۳- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَىٰ بْنِ سَعِيدٍ الْقُرَشِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ نَحْوًا مِنْ قَوْلِ مُجَاهِدٍ إِذَا اخْتَلَطُوا قِيَامًا. وَزَادَ ابْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَأِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَلْيُصَلُّوا قِيَامًا وَرُكْبَانًا)).

[راجع: ۹۴۲]

अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, 'क़ौल मक्सूदुहु अन्नसल्लात ला तस्कुतु इन्दल्इज़ि अनिन्नुज़ूलि

अनिल अराबति वला तुअख़ख़रू अन वक्तिहा बल तुसल्ला अला अय्यि वजिहिन हसलतिल्कुदरतु अलैहि बिदलीलिल्आयति' (फ़तहुल बारी) या'नी मक्सूद ये है कि नमाज़ उस वक़्त भी साक़ित नहीं होती जबकि नमाज़ी सवारी से उतरने से आजिज़ हों और न वो वक़्त से मुअख़ख़र (देर से) की जा सकती है बल्कि हर हालत में अपनी कुदरत के मुताबिक उसे पढ़ना ही होगा जैसा कि आयते बाला उस पर दलील है।

ज़मान-ए-हाज़िरा (वर्तमान) में रेलों-मोटरो, हवाई जहाजों में बहुत से ऐसे ही मौक़े आ जाते हैं कि उनसे उतरना नामुम्किन हो जाता है। बहरहाल नमाज़ जिस तौर पर भी मुम्किन हो वक़्त मुक़रर पर पढ़ लेनी चाहिये। ऐसी ही दुश्वारियों के पेशेनज़र शारेह अलैहिर्रहमा ने दो नमाज़ों को एक वक़्त में जमा करके अदा करना जाइज़ करार दिया है। और सफ़र में क़स् और बवक़्ते जिहाद और भी मज़ीद रियायत कर दी गई। मगर नमाज़ को मुआफ़ नहीं किया गया।

बाब 3 : खौफ़ की नमाज़ में नमाज़ी एक-दूसरे की हिफ़ाज़त करते हैं

۳- بَابُ يَحْرُسُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا فِي صَلَاةِ الْخَوْفِ

या'नी एक गिरोह नमाज़ पढ़े और दूसरा उनकी हिफ़ाज़त करे फिर वो गिरोह नमाज़ पढ़े और पहला गिरोह उनकी जगह आ जाए।

(944) हमसे हययह बिन शुरैह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन हर्ब ने जुबैदी से बयान किया, उनसे शुस्री ने, उनसे इब्नेदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन मसऊद (रज़ि.) ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) खड़े हुए और दूसरे लोग भी आप (ﷺ) की इम्तिदा में खड़े हुए। हुज़ूर (ﷺ) ने तक्बीर कही तो लोगों ने भी तक्बीर कही। आप (ﷺ) ने रुकूअ किया तो लोगों ने आपके साथ रुकूअ और सज्दा कर लिया था वो खड़े खड़े अपने भाइयों की निगरानी करते रहे। और दूसरा गिरोह आया। (जो अब तक हिफ़ाज़त के लिये दुश्मन के मुकाबले में खड़ा रहा बाद में) उसने भी रुकूअ और सज्दे किये सब लोग नमाज़ में थे लेकिन लोग एक दूसरे की हिफ़ाज़त कर रहे थे।

۹۴۴- حَدَّثَنَا خُوَيْرَةُ بْنُ شَرْحِبِلٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَامَ النَّبِيُّ ﷺ وَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ فَكَبَّرُوا وَكَبَّرُوا مَعَهُ، وَرَكَعَ وَرَكَعَ نَاسٌ مِنْهُمْ، ثُمَّ سَجَدُوا وَسَجَدُوا مَعَهُ. ثُمَّ قَامَ لِلْعَائِدَةِ فَقَامَ الَّذِينَ سَجَدُوا وَحَرَسُوا إِخْوَانَهُمْ، وَأَتَتِ الطَّائِفَةُ الْأُخْرَى فَرَكَعُوا وَسَجَدُوا مَعَهُ، وَالنَّاسُ كُلُّهُمْ فِي صَلَاةٍ وَلَكِنْ يَحْرُسُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا.

बाब 4 : इस बारे में कि उस वक़्त (जब दुश्मन के) क़िलों की फ़तह के इम्किनात रोशन हों और जब दुश्मन से मुठभेड़ हो रही हो तो उस वक़्त नमाज़ पढ़े या नहीं

۴- بَابُ الصَّلَاةِ عِنْدَ مُنَاصَصَةِ الْحُصُونِ وَلِقَاءِ الْعَدُوِّ

और इमाम औज़ाई ने कहा कि जब फ़तह सामने हो और नमाज़ पढ़नी मुम्किन न रहे तो इशारे से नमाज़ पढ़ लें। हर शख्स अकेले अकेले अगर इशारा भी न कर सकें तो लड़ाई के ख़त्म होने तक या अमन होने तक नमाज़ मौक़ूफ़ रखें, उसके बाद दो रकअतें पढ़ लें।

وَقَالَ الْأَوْزَاعِيُّ: إِنْ كَانَ تَهَيُّاً لِّلْفَتْحِ وَلَمْ يَقْبِرُوا عَلَى الصَّلَاةِ صَلُّوا لِإِمَاءِ كُلِّ امْرِئٍ لِنَفْسِهِ، فَإِنْ لَمْ يَقْبِرُوا عَلَى

अगर दो रकअत न पढ़ सकें तो एक ही रूकूअ और दो सज्दे कर लें
अगर ये भी न हो सके तो सिर्फ तक्बीरे तहरीमा काफ़ी नहीं है,
अमन होने तक नमाज़ में देर करें. मक्हूल ताबेई का यही क़ौल है.

और हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि सुबह रोशनी
में तुस्तर के क़िले पर जब चढ़ाई हो रही थी उस वक़्त मैं मौजूद था।
लड़ाई की आग ख़ूब भड़क रही थी तो लोग नमाज़ न पढ़ सके।
जब दिन चढ़ गया उस वक़्त सुबह की नमाज़ पढ़ी गई। अबू मूसा
अशअरी भी साथ थे फिर क़िला फ़तह हो गया। हज़रत अनस
(रज़ि.) ने कहा कि उस दिन जो नमाज़ हमने पढ़ी (गो वो सूरज
निकलने के बाद पढ़ी) उससे इतनी खुशी हुई कि सारी दुनिया
मिलने से इतनी खुशी न होगी।

तुस्तर अह्वाज़ के शहरों में से एक शहर है। वहाँ का क़िला सख़्त जंग के बाद ज़मान-ए-फ़ारूकी, बीस हिजरी में जीता गया।
इस तअलीक़ को इब्ने सअद और इब्ने अबी शैबा ने वस्ल (मिलान) किया। अबू मूसा अशअरी उस फ़ौज के अफ़सर थे।
जिसने इस क़िले पर चढ़ाई की थी। इस नमाज़ की खुशी हुई थी कि ये मुजाहिदों की नमाज़ थी। न आजकल के बुज़दिल
मुसलमानों की नमाज़। कुछ ने कहा कि हज़रत अनस (रज़ि.) ने नमाज़ फ़ौत होने पर अफ़सोस किया। या'नी अगर ये नमाज़
वक़्त पर पढ़ लेते तो सारी दुनिया के मिलने से ज़्यादा मुझको खुशी होती। मगर पहले मा'नी को तर्ज़ीह है।

(945) हमसे यह्या इब्ने जा'फ़र ने बयान किया कि हमसे वकीअ
ने अली बिन मुबारक से बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़सीर
ने, उनसे अबू सलमा ने, उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी
(रज़ि.) ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) ग़रध-ए-ख़ंदक के दिन
कुफ़फ़ार को बुरा-भला कहते हुए आए और कहने लगे कि या
रसूलल्लाह (ﷺ)! सूरज डूबने ही को है और मैंने तो अब तक अम्र
की नमाज़ नहीं पढ़ी, इस पर हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह
की क़सम! मैंने भी अभी तक नहीं पढ़ी। उन्होंने बयान किया कि
फिर आप बुतहान की तरफ़ गए (जो मदीना में एक मैदान था) और
वुजू करके आपने वहाँ सूरज डूबने के बाद अम्र की नमाज़ पढ़ी,
फिर उसके बाद नमाज़े मरिब पढ़ी।

(राजेअ: 596)

الْإِيمَاءُ أُخْرُوا الصَّلَاةَ حَتَّى يَنْكَشِفَ
الْقِتَالُ أَوْ يَأْمَنُوا فَيَصَلُّوا وَكَعْتَيْنِ، فَإِنْ لَمْ
يَقْبِرُوا صَلُّوا رَكْعَةً وَصَلُّوا حَتَّى يَأْمَنُوا
يَقْبِرُوا لَا يُجْزِيهِمُ التَّكْبِيرُ، وَتُؤْخَرُ عَنْهَا
حَتَّى يَأْمَنُوا. بِهِ قَالَ مَكْحُولٌ.

وَقَالَ أَنَسٌ: خَصَرْتُ عِنْدَ مُنَافِضَةِ حِصْنِ
تُسْتَرٍ عِنْدَ إِصَاةَةِ الْفَجْرِ - وَاشْتَدَّ الْحِجَالُ
الْقِتَالِ - فَلَمْ يَقْبِرُوا عَلَى الصَّلَاةِ، فَلَمْ
يُصَلِّ إِلَّا بَعْدَ ارْتِفَاعِ النَّهَارِ، فَصَلَّيْنَاهَا
وَلَحْنُ مَعَ أَبِي مُوسَى الْقَطِيعِ لَنَا. قَالَ أَنَسٌ
وَمَا تَسْرِي بِطَلْعِ الصَّلَاةِ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا.

٩٤٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ : حَدَّثَنَا وَكِيعٌ
عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي
كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ
قَالَ: (جَاءَ عُمَرُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَجَعَلَ
يَسُبُّ كُفَّارَ قُرَيْشٍ وَيَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ،
مَا صَلَّيْتُ الْعَصْرَ حَتَّى كَادَتْ الشَّمْسُ
أَنْ تَغِيبَ. فَقَالَ: النَّبِيُّ ﷺ: ((وَأَنَا وَاللَّهِ
مَا صَلَّيْتُهَا بَعْدَ)). قَالَ: فَزَلَّ إِلَى بَطْحَانَ
فَوَضَّأَ وَصَلَّى الْعَصْرَ بَعْدَ مَا غَابَتِ
الشَّمْسُ، ثُمَّ صَلَّى الْمَغْرِبَ بَعْدَهَا).

[راجع: ٥٩٦]

तशरीह: बाब का तर्जुमा इस हदीष से ये निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) को लड़ाई में मसरूफ़ रहने से बिलकुल नमाज़ की

फुर्सत न मिली तो आपने नमाज़ में देर की। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि मुम्किन है कि उस वक़्त तक खौफ़ की नमाज़ का हुक्म नहीं उतरा होगा या नमाज़ का आपको ख़याल न रहा होगा या ख़याल होगा मगर तह़रत करने का मौक़ा न मिला होगा।

‘क़ौल अख़्ख़र हा अमदन लिअन्नहू कानत कब्ल नुज़ूलि सलातिलखौफि ज़हब इलैहिलज़ुम्हूरू कमा क़ाल इब्नु रुश्द व जज़िम इब्नुल्कय्थिम फिलहुदा वल्हाफ़िज़ु फिलफतहि वल्कुतुबी फी शर्हि मुस्लिम व अयाज़ फफिशिफा वज़ज़ैलई फी नसबिराया वब्नुल्कस्सार व हाज़ा हुवराजिह इन्दना’ (मिअ़ातुल्मफ़ातीह, जिल्द नं. 2, पेज नं. 318) या ‘नी कहा गया कि (शिद्दे जंग की वजह से) आप (ﷺ) ने अमदन (जान-बूझकर) नमाज़े अस्त्र को मुअख़्ख़र फ़र्माया इसलिये कि उस वक़्त तक सलाते खौफ़ का हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था। बक़ौले इब्ने रुश्द जुम्हूर का यही क़ौल है और अल्लामा इब्ने क़य्थिम (रह.) ने ज़ादुल मज़ाद में इस ख़याल पर जज़म किया है और हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने फ़तहुल बारी में और कुतुबी ने शरह मुस्लिम, अल क़ाज़ी अयाज़ ने शिफ़ा में और ज़ैलई ने नसबुराया में, इब्ने क़स्सार ने इसी ख़याल को तर्जीह दी है और हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब शैखुल हदीथ मुअल्लिफ़ मिअ़ातुल मफ़ातीह फ़र्माते हैं कि हमारे नज़दीक भी इसी ख़याल को तर्जीह हासिल है।

बाब 5 : जो दुश्मन के पीछे लगा हो या दुश्मन उसके पीछे लगा हो वो सवार रहकर इशारे ही से नमाज़ पढ़ ले

और वलीद बिन मुस्लिम ने कहा मैंने इमाम औज़ाई से शर्हबील बिन सम्त और उनके साथियों की नमाज़ का ज़िक्र किया कि उन्होंने सवारी पर ही नमाज़ पढ़ ली, तो उन्होंने कहा कि हमारा भी यही मज़हब है जब नमाज़ के क़ज़ा होने का डर हो। और वलीद ने आँहज़रत (ﷺ) के इस इशारे से दलील ली कि कोई तुममें से अस्त्र की नमाज़ न पढ़े मगर बनी कुरैज़ा के पास पहुँचकर।

(946) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा कि हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने नाफ़ेअ से, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) ग़ज़व-ए-ख़ंदक्र से फ़ारिग हुए तो (अबू सुफ़यान लौटा) हमसे आपने फ़र्माया कोई शख्स बनू कुरैज़ा के मुहल्ले में पहुँचने से पहले नमाज़े अस्त्र न पढ़े। लेकिन जब अस्त्र का वक़्त आया तो कुछ सहाबा (रज़ि.) ने रास्ते में ही नमाज़ पढ़ ली और कुछ सहाबा (रज़ि.) ने कहा कि हम बनू कुरैज़ा के मुहल्ले में पहुँचने पर नमाज़े अस्त्र पढ़ेंगे और कुछ हज़रात का ख़याल ये हुआ कि हमें नमाज़ पढ़ लेनी चाहिये क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) का मक्क़सद ये नहीं था कि नमाज़ क़ज़ा कर लें। फिर जब आपसे उसका ज़िक्र किया गया तो आप (ﷺ) ने किसी पर भी मलामत नहीं फ़र्माई। (दीगर मक़ाम : 4119)

٥- بَابُ صَلَاةِ الطَّالِبِ وَالْمَطْلُوبِ

رَاكِبًا وَإِنَّمَاءً

وَقَالَ الْوَلِيدُ: ذَكَرْتُ لِلْأَوْزَاعِيِّ صَلَاةَ شَرْحَبِيلِ بْنِ السَّمْطِ وَأَصْحَابِهِ عَلَى ظَهْرِ الدَّابَّةِ فَقَالَ: كَذَلِكَ الْأَمْرُ عِنْدَنَا إِذَا تَخَوَّفَ الْقَوْتُ. وَاصْحَحَ الْوَلِيدُ بِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا يُصَلِّيَنَّ أَحَدُ الْعَمْرَةِ إِلَّا فِي بَيْتِ قَرْيَةٍ)).

٩٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَنَا لَمَّا رَجَعَ مِنَ الْأَخْزَابِ: ((لَا يُصَلِّيَنَّ أَحَدُ الْعَمْرَةِ إِلَّا فِي بَيْتِ قَرْيَةٍ)). فَأَذْرَكَ بَعْضُهُمُ الْعَمْرَةَ فِي الطَّرِيقِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَا نُصَلِّي حَتَّى نَأْتِيَهَا، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: بَلْ نُصَلِّي، لَمْ يُرَدِّ مِنَّا ذَلِكَ. فَلَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُعْتَفَ أَحَدًا مِنْهُمْ.

[أطرافه في: ٤١١٩].

तशरीह : तालिब या'नी दुश्मन की तलाश में निकलने वाले; मत्लूब या'नी जिसकी तलाश में दुश्मन लगा हो। ये उस वक़्त का वाक़िया है जब ग़ज़्व-ए-अहज़ाब ख़त्म हो गया और कुफ़्रार नाकाम होकर चले गए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़ौरन ही मुजाहिदीन को हुक्म दिया कि इसी हालत में बनू कुरैज़ा के मुहल्ले में चलें जहाँ मदीना के यहूदी रहते थे। जब आँहज़रत (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो उन यहूदियों ने एक मुआहिदे के तहत एक-दूसरे के ख़िलाफ़ किसी जंगी कार्रवाई में हिस्सा न लेने का अहद किया था। मगर ख़ुफ़िया तौर पर यहूदी पहले भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ साजिशें करते रहे और उस मौक़ा पर तो उन्होंने खुलकर कुफ़्रार का साथ दिया। यहूद ने ये समझकर भी इसमें शिक़्त की थी कि ये आखिरी और फ़ैसलाकुन लड़ाई थी और मुसलमानों की शिकस्त (हार) इसमें यक़ीनी है। मुआहिदे की रू से यहूदियों की इस जंग में शिक़्त एक संगीन जुर्म था इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने चाहा कि बग़ैर किसी मुहल्लत के उन पर हमला किया जाए और इसीलिये आपने फ़र्माया था कि नमाज़े अम्र बनू कुरैज़ा में जाकर पढ़ी जाए क्योंकि रास्ते में अगर कहीं नमाज़ के लिये ठहरते तो देर हो जाती। चुनाँचे कुछ सहाबा (रज़ि.) ने भी इससे यही समझा कि आपका मक़सद सिर्फ़ जल्द से जल्द बनू कुरैज़ा पहुँचना था। इससे ये प्राबित हुआ कि बहालते मजबूरी तालिब और मत्लूब दोनों सवारी पर नमाज़ इशारे से पढ़ सकते हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) का यही मज़हब है और इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद के नज़दीक जिसके पीछे दुश्मन लगा हो वो तो अपने बचाव के लिये सवारी पर इशारे ही से नमाज़ पढ़ सकता है और जो खुद दुश्मन के पीछे लगा हो तो उसको दुरुस्त नहीं और इमाम मालिक (रह.) ने कहा कि उसको उस वक़्त दुरुस्त है जब दुश्मन के निकल जाने का डर हो। वलीद ने इमामे औज़ाई (रह.) के मज़हब पर हदीष 'ला युमल्लियन्न अहदुल अलअम्र' से दलील ली कि सहाबा बनू कुरैज़ा के तालिब थे। या'नी उनके पीछे और बनू कुरैज़ा मत्लूब थे और आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ क़ज़ा हो जाने की उनके लिये परवाह न की। जब तालिब को नमाज़ क़ज़ा करना दुरुस्त हुआ तो इशारे से सवारी पर पढ़ लेना बतरीक़े औला दुरुस्त होगा हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के इस्तिदलाल इसीलिये इस हदीष से सही है। बनू कुरैज़ा पहुँचने वाले सहाबा (रज़ि.) में से हर एक ने अपने इज्तिहाद और राय पर अमल किया। कुछ ने ये ख़याल किया कि आँहज़रत (ﷺ) का हुक्म का ये मतलब है कि जल्द जाओ बीच में ठहरो नहीं तो हम नमाज़ क्यूँ क़ज़ा करें। उन्होंने सवारी पर पढ़ ली। कुछ ने ख़याल किया कि हुक्म बजा लाना ज़रूरी है, नमाज़ भी अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की रज़ामन्दी के लिये पढ़ते हैं तो आपके हुक्म की ता'मील में अगर नमाज़ में देर हो जाएगी तो हम कुछ गुनाहगार न होंगे। (अल ग़ज़) फ़रीक़ैन की निय्यत बख़ैर थी इसलिये कोई मलामत के लायक़ न ठहरा। मा'लूम हुआ कि अगर मुज्ताहिद ग़ौर करें और फिर उसके इज्तिहाद में ग़लती हो जाए तो उसके मुआख़ज़ा (पकड़) न होगी। अल्लामा नववी (रह.) ने कहा इस पर इत्तिफ़ाक़ है। इसका मतलब ये नहीं कि हर मुज्ताहिद सवाब पर है।

बाब 6 : हमला करने से पहले सुबह की नमाज़ अँधेरे में जल्दी पढ़ लेना चाहिये इसी तरह लड़ाई में (तुलूअे फ़ज्र के बाद फ़ौरन अदा कर लेना चाहिये)

(947) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब और प्राबित बिनानी ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ अँधेरे ही में पढ़ा दी, फिर सवार हुए (फिर आप ख़ैबर पहुँच गए और वहाँ के यहूदियों को आपके आने की इत्तिहा हो गई) और फ़र्माया अल्लाहु अकबर ख़ैबर पर बर्बादी आ गई। हम तो जब किसी क़ौम के आंगन में उतर जाँए तो डराए हुए लोगों की

٦- بَابُ التَّكْبِيرِ وَالْفَلَاسِ بِالصُّبْحِ،

وَالصَّلَاةِ عِنْدَ الْإِغَارَةِ وَالْحَرْبِ

٩٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ

بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ وَكَاتِبِ

الْبَنَانِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ

ﷺ صَلَّى الصُّبْحَ بِفَلَاسٍ، ثُمَّ رَكِبَ فَقَالَ:

((اللَّهُ أَكْبَرُ، خَرَبَتْ خَيْبَرُ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا

بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُتَلَبِّسِينَ)).

فَنَخْرُجُوا يَسْتَقُونَ فِي السَّكَلِ وَيَقُولُونَ:

सुबह मन्हूस होगी। उस वक़्त ख़ैबर के यहूदी गलियों में ये कहते हुए भाग रहे थे कि मुहम्मद (ﷺ) लश्कर समेत आ गए। रावी ने कहा कि (रिवायत में) लफ़्ज़ ख़मीस लश्कर के मा'नी में है। आख़िर रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़तह हुई। लड़ने वाले जवान क़त्ल कर दिये गए, औरतें और बच्चे क़ैद हुए। इत्तिफ़ाक़ से सफ़िया दहिया क़ल्बी के हिस्से में आई। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) को मिलीं और आप (ﷺ) ने उनसे निकाह किया और आज़ादी उनका महर क़रार पाया। अब्दुल अज़ीज़ ने घाबित से पूछा अबू मुहम्मद! क्या तुमने अनस (रज़ि.) से पूछा था कि हज़रत सफ़िया का महर आपने मुक़र्रर क्या था उन्होंने ज़वाब दिया कि ख़ुद उन्हीं को उनके महर में दे दिया था। कहा कि अबू मुहम्मद इस पर मुस्कराए। (राजेज़: 371)

مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ - قَالَ: وَالْخَمِيسُ الْخَمِيسُ - فَظَهَرَ عَلَيْهِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَقَتَلَ الْمُقَاتِلَةَ وَسَيَّ الدَّرَارِي، فَصَارَتْ صَفِيَّةً لِدُخْيَةِ الْكَلْبِيِّ، وَصَارَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ تَزَوَّجَهَا، وَجَعَلَ صَدَاقَهَا عِتْقَهَا. فَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ لِفَابِسَ: يَا أَبَا مُحَمَّدٍ، أَنْتَ سَأَلْتَ أَنَسًا مَا أَهْمَرَهَا؟ فَقَالَ: أَمَرَهَا نَفْسَهَا. قَالَ فَتَبَسَّمَ. يَعْنِي تَعَالَى تَمَّ الْخُزْءُ الْأَوَّلُ وَيَلْبِوُ الْخُزْءُ الْثَانِي وَأَوَّلُهُ كِتَابُ الْعَيْنَيْنِ. [راجع: ٣٧١]

तशरीह: बाब का तर्जुमा इससे ये निकलता है कि आप (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ सवेरे अँधेरे में पढ़ ली और सवार होते वक़्त नारा-ए-तक्वीर बुलन्द किया। ख़मीस लश्कर को इसलिये कहते हैं कि पाँच टुकड़ियाँ होती हैं मुकद्दमा, साक़ा, मैमना, मैसरह, क़ल्ब। सफ़िया शहज़ादी थीं, आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी दिलजोई और ख़ानदानी शराफ़त के आधार पर उन्हें अपने हरम में ले लिया और आज़ाद फ़र्मा दिया उन्हीं को उनके महर में देने का मतलब उनको आज़ाद कर देना है, बाद में ये ख़ातून एक बेहतरीन वफ़ादार प्राबित हुई। उम्माहातुल मोमिनीन में उनका भी बड़ा मुक़ाम है। (रज़ि.)। अल्लामा ख़ताब बग़दादी लिखते हैं कि हज़रत सफ़िया हुय्यि बिन अख़तब की बेटी हैं जो बनी इस्राईल में से थी और हारून इब्ने इमरान अलैहिस्सलाम के नवासे थे। ये सफ़िया किनाना बिन अबी अल हक़ीक़ की बीवी थीं जो जंगे ख़ैबर में ब-माहे मुहर्रम सात हिजरी क़त्ल किया गया और ये क़ैद हो गईं तो इनकी शराफ़ते नस्बी की वजह से आँहज़रत (ﷺ) ने इनको अपने हरम में दाख़िल कर लिया। पहले दहिय्या बिन ख़लीफ़ा क़ल्बी के हिस्सा-ए-ग़नीमत में लगा दी गई थीं। बाद में आँहज़रत (ﷺ) ने उनका हाल मा'लूम फ़र्माकर सात गुलामों के बदले उनको दहिय्या क़ल्बी से हासिल कर लिया। उसके बाद ये ब-रज़ा व राबत (ख़ुशी-ख़ुशी) इस्लाम ले आईं और आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी ज़ोजियत से मुशरफ़ फ़र्माया और उनको आज़ाद कर दिया और उनकी आज़ादी ही को उनका मेहर मुक़र्रर फ़र्माया। हज़रत सफ़िया ने पचास हिजरी में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ी में सुपुर्दे खाक की गईं। उनसे हज़रत अनस और इब्ने इमर (रज़ि.) रिवायत करते हैं हुय्य में याये मुहम्मला का पेश और नीचे दो लफ़्ज़ों वाली याअ का ज़बर और दूसरी याअ पर तशदीद है।

स़लाते खौफ़ के बारे में अल्लामा शौकानी ने बहुत काफ़ी तफ़्सीलात पेश की हैं और छः सात तरीक़ों से उसके पढ़ने का ज़िक्र किया है। अल्लामा फ़र्माते हैं, 'व क़दख़तुलिफ़ फ़ी अददिल्अन्वाइल्वारिदति फ़ी स़लातिल्खौफ़ि फ़क़ालब्नु क़स्सार अल्मालिकी अन्नन्नबिय्य (ﷺ) स़ल्लाहा फ़ी अशरति मवात्तिन व क़ालन्नववी अन्नहू यब्लुगुमज्मूअ अन्वाई स़लातिल्खौफ़ि सित्त अशर वज्हन कुल्लुहा जाइज़तुन व क़ाललख़त्ताबी स़लातुल्खौफ़ि अन्वाइन स़ल्लाहन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ी अय्यामिन मुख्तलिफ़तिन व अश्कालिन मुतबायनतिन यतहरा मा हुव अहवतु लिस्सलाति व अबलगु फ़िल्हिरासति.' (नैलुल औतार)

या'नी स़लाते खौफ़ की किस्मों में इख़ितालाफ़ है इब्ने क़स्सार मालिकी ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसे दस जगह पढ़ा है और नववी कहते हैं कि उस नमाज़ की तमाम किस्में सोलह तक पहुँची हैं और वो सब जाइज़ हैं। ख़त्ताबी ने कहा कि स़लातुल खौफ़ को आँहज़रत (ﷺ) ने अय्यामे मुख्तलिफ़ा में मुख्तलिफ़ तरीक़ों से अदा फ़र्माया है। इसमें ज़्यादा क़ाबिले ग़ौर चीज़ यही रही है कि नमाज़ के लिये भी हर मुम्किन एहतियात से काम लिया जाए और उसका भी ख़याल रखा जाए कि

हिफाज़त और निगाहबानी में भी फ़र्क़ न आने पाए। अल्लामा इब्ने हज़म ने इसके चौदह तरीक़े बतलाए हैं और एक मुस्तक़िल रिसाले में इन सबका ज़िक्र फ़र्माया है।

अल हम्दुलिल्लाह कि अवाख़िरे मुहर्रम 1389 हिजरी में किताब सलातुल ख़ौफ़ की तबीज़ से फ़रागत हासिल हुई, अल्लाह तआला उन लज़िशों को मुआफ़ फ़र्माए जो इस मुबारक किताब का तर्जुमा लिखने और तशरीहात पेश करने में मुतज़िम् से हुई होंगी। वो ग़लतियाँ यक़ीनन मेरी तरफ़ से हैं। अल्लाह के हबीब (ﷺ) के फ़रामीने आलिया का मुक़ाम बुलन्द व बरतर है, आपकी शान ऊतीतु ज़वामिडल कलिम है। अल्लाह से मुकरर दुआ है कि वो मेरी लज़िशों को मुआफ़ फ़र्माकर अपने दामने रहमत में ढांप ले और उस मुबारक किताब के तमाम क़द्रदानों को बरकाते दारेन से नवाज़े, आमीन या रब्बल आलमीना

13. किताबुल ईदैन

किताब ईदैन के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तशरीह: ईद की वजहे तस्मिया के बारे में हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब शैखुल हदीष मुबारकपुरी दाम फ़ैजुह फ़र्माते हैं, 'व अस्लुलईदि ऊदुन लिअन्नहू मुश्तक्कुन मिन आद यऊदु ऊदुनव हुवरूजूअ कुल्लिबतिल्वावु याअ लिसुकूनिहा वल्कस्सु मा कब्लहा कमा फिल्मीज़ानि वल्मीक़ाति व जम्उहू आयादुन लुजूमुल्याई फिल्वाहिदि व लिल्फ़र्कि बैनहू व बैन आवादिल्ख़िब सुम्मिया ईदैन लिक्फ़रति अवाइदिल्लाहि तआला फ़ीहिमा औ लिअन्नहू यऊदुन इलैहिमा मरतन बअद उख़ा औ लितक़सूरिहिमा व ऊदिहिमा लिक्ल्लि आमिन औ लिऊदिस्सुरि बिऊदिहिमा काल फिल्अज़हार कुल्लु इज्तिमाइन लिस्सुरि फ़हुव इन्दलअरबि ईदुन यऊदुस्सुरु बिऊदिय व क़ील इन्नल्लाह तआला यऊदु अललअयादि बिल्मग़फ़िरति वरहमति व क़ील तिफ़ालन बिऊदिही अला मन अदरकहू कमा सुम्मियतल्क़ाफ़िलतु तुफ़ावलन लिरूजूइहा व क़ील लिऊदिही बअज़ुल्मबाहाति फ़ीहिमा वाजिबन कल्फ़िन्नि व क़ील लिअन्नहू युआदु फ़ीहिमतक्वबीरात वल्लाहु तआला आलाम' (मिआत, जिल्द : 2/327)

या'नी ईद की असल लफ़ज़ ऊद है जो आद यऊद से मुश्तक़ है जिसके मा'नी रूजूअ करने के हैं, ऊद का वाव याअ से बदल गया है इसलिये कि वो साकिन है और माक़बल इसके कसरा है जैसा कि लफ़ज़े मीज़ान और मीक़ात में वाव याअ से बदल गया है ईद की जमा आयाद है। इसलिये कि वाहिद में लफ़ज़ 'याअ' का लुजूम है या लफ़ज़े ऊद ब-मा'नी लक़डी की जमा आवाद से फ़र्क़ ज़ाहिर करना मक्सूद है। उनका ईदैन नाम इसलिये रखा गया कि उन दोनों में इनायाते इलाही बेपायाँ होती हैं या इसलिये उनको ईदैन कहा गया कि मुसलमान हर साल इन दिनों की तरफ़ लौटते रहते हैं या ये कि ये दोनों दिन हर साल लौट-लौटकर मुकरर आते रहते हैं या ये कि उनके लौटने से मुसरत लौटती है। अरबों की इस्तिलाह में हर वो इज्तिमाअ जो खुशी और मुसरत का इज्तिमाअ हो ईद कहलाता था, इसलिये उन दिनों को भी जो मुसलमान के लिये इतिहाई खुशी के दिन

हैं ईदैन कहा गया। या ये भी कि उन दिनों में अपने बन्दों पर अल्लाह अपनी बेशुमार रहमतों का इआदा फ़र्माता है या इसलिये कि जिस तरह बतौर नेक फ़ाल जाने वाले गिरोह को क़ाफ़िला कहते हैं जिसके लफ़्ज़ी मा'नी आने वाले के हैं या इसलिये भी कि उनमें कुछ मुबाह्र काम वुजूब की तरफ़ लौट जाते हैं जैसे कि उस दिन ईदुल फ़ित्र में रोज़ा रखना वाजिब तौर पर न रखने की तरफ़ लौट गया है या इसलिये कि इन दिनों में तकबीरात को बार-बार लौटा-लौटा कर कहा जाता है इसलिये इनको लफ़्ज़ ईदैन से ता'बीर किया गया है इन दिनों के मुक़रर करने में क्या-क्या फ़वाइद और मसालेह हैं, इसी मज़मून में शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी ने अपनी मशहूर किताब हज्जतुल्लाहिल बालिगा में बड़ी तफ़्सील के साथ अहसन तौर पर बयान फ़र्माया है। इसको वहाँ मुलाहिज़ा किया जा सकता है।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने नमाज़े ईदैन के बारे में तकबीरात की बाबत कुछ नहीं बतलाया, अगरचे इस बारे में अक़षर अह्दादीष व अक्वाले सहाबा मौजूद हैं मगर वो हज़रत इमाम की शराइत पर नहीं थे। इसलिये आपने उनमें से किसी का भी ज़िक्र नहीं किया। इमाम शौकानी (रह.) ने नैलुल औतार में इस सिलसिले के दस क़ौल नक़ल किये हैं जिनमें से जिसे तर्ज़ीह हासिल हैं वो ये है, 'अहदुहा अन्नहु युक्बिबू फिलकुला सबअन कबललकिराति व फ़िषानियति ख़म्सन कबललकिराति क़ाललइराक़ी व हुव क़ौलु अक्षरि अहलिलइल्मि मिनससहाबति वत्ताबिईन वलअइम्मति क़ाल व हुव मर्विययुन अन इमर व अलिथ्यिन व अबी हुरैत व अबी सईदिन अलख' या'नी पहला क़ौल ये है कि पहली रकअत में क़िरअत से पहले सात तकबीरें और दूसरी रकअत में क़िरअत से पहले पाँच तकबीरें कही जाएँ। सहाबा और ताबेईन और अइम्म-ए-किराम में से अक़षर अहले इल्म का यही मसलक है, इस बारे में जो अह्दादीष मरवी हैं उनमें से चंद ये हैं।

'अन अमिबिनि शुऐबिन अन अबीहि अन जहिही अन्नन्नबिथ्य कब्बर फी ईदिन घनतय अफ़रत तकबीरतन सबअन फिलकुला व ख़म्सन फिलआख़िरति व लम युसल्लि कबलहा व ला बअदहा' (रवाहु अहमद वब्नु माजा क़ाल अहमद अना अज्जबु इला हाज़ा)

या'नी हज़रत अम् बिन शुऐब ने अपने बाप से, उन्होंने अपने दादा से रिवायत किया कि नबी (ﷺ) ने ईद में बारह तकबीरों से नमाज़ पढ़ाई पहली रकअत में आप (ﷺ) ने सात तकबीरें कहीं और दूसरी रकअत में पाँच तकबीरें कहीं। इमाम अहमद फ़र्माते हैं कि मेरा अमल भी यही है।

'व अन अमिबिनि औफिलमुजनी (रज़ि.) अन्नन्नबिथ्य कब्बर फिलईदिनि फिलकुला सबअन कबललकिराति व फ़िषानियति ख़म्सन कबललकिराति रवाहुतिर्मिज़ी व क़ाल हुव अहसन शुईन फी हाज़ल्बाबि अनिन्नबिथ्य (ﷺ)'

या'नी अम् बिन औफ़ मुज़नी से रिवायत है कि बेशक नबी करीम (ﷺ) ने ईदैन की पहली रकअत में क़िरअत से पहले सात तकबीरें कहीं और दूसरी रकअत में क़िरअत से पहले पाँच तकबीरें। इमाम तिर्मिज़ी फ़र्माते हैं कि इस मसले के बारे में ये बेहतरीन हदीष है जो नबी करीम (ﷺ) से मरवी है।

अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं कि इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने किताब अल इललुल मुफ़रदह में फ़र्माया, सअलतु मुहम्मदब्न इस्माईल (अल बुखारी) अन हाज़ल्हदीषि फ़क़ाल लैस फी हाज़ल्बाबि शौउन अस्तह्मु मिन्हु व बिही अक़लु इन्तिहा'

यानी सहीह हदीष के बारे में मैंने हज़रत इमाम बुखारी (रह.) से पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि इस मसले के बारे में उससे ज़्यादा कोई हदीष सहीह नहीं है और मेरा भी यही मज़हब है, इस बारे में और भी कई अह्दादीष मरवी है।

हफ़िया का मसलक इस बारे में ये है कि पहली रकअत में तकबीरें तहरीमा के बाद क़िरअत से पहले तीन तकबीरें कही जाएँ और दूसरी रकअत में क़िरअत के बाद तीन तकबीरें। कुछ सहाबा से ये मसलक भी नक़ल किया गया है कि जैसा कि नैलुल औतार, पेज नं. 299 पर मन्कूल है मगर इस बारे की रिवायत जुअफ़ से खाली नहीं हैं जैसा कि अल्लामा शौकानी (रह.) ने तसरीह फ़र्माई है, 'फ़मन शाअ फ़ल्यजिअ इलैहि' हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, 'व अम्मा मा ज़हब इलैहि अहलुलकूफ़ति फलम यरिद फीहि हदीधुन मफ़ुइन गैर हदीषि अबू मूसा अलअशरी व क़द अरफ़्तु अन्नहु ला यस्तुहू लिलइहतिजाजि' (तोहफ़तुल अहवज़ी) या'नी कूफ़ा वालों के मसलक के शुबूत में कोई

हदीस मरफूअ वारिद नहीं हुई, सिर्फ हजरत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) से रिवायत की गई है जो काबिले हुज्जत नहीं है।

हुज्जतुल हिन्द हजरत शाह वलीउल्लाह मुहदिप् देहलवी (रह.) ने इस बारे में बहुत ही बेहतर फैसला दिया है। चुनाँचे आपके अल्फाजे मुबारक ये हैं, 'युकब्बिरु फिल्ऊला सबअन कबलल्किराति वफ़्फ़ानियति खम्सन कबलल्किराति व अमलुल्कूफियिन अय्युं कब्बिर अर्बअन कतवबीरिल्जनाइजि फिल्ऊला कबलल्किराति व फिफ़ानियति बअदहा व हुमा सुन्नतानि व अमलुल्हरमैनि अर्जुहू' (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा, जिल्द: 2/ पेज नं. 106) या 'नी पहली रकअत में क़िरअत से पहले सात तक्बीरें और दूसरी रकअत में क़िरअत से पहले पांच तक्बीरें कहनी चाहिये मगर कूफ़ावालों का अमल ये है कि पहली रकअत में तक्बीरात जनाज़ा की तरह क़िरअत से पहले चार तक्बीरें कही जाएँ और दूसरी रकअत में क़िरअत के बाद ये दोनों तरीक़े सुन्नत हैं। मगर हरमेन शरीफ़ेन या 'नी कि मदीना वालों का अमल जो पहले बयान किया गया है, तर्जीह उसको हासिल है (कूफ़ावालों का अमल मरजूह है)।

ईद की नमाज़ फ़र्ज़ है या सुन्नत इस बारे में उलमा मुख्तलिफ़ हैं। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक जिन पर जुम्आ फ़र्ज़ है उन पर ईदेन की नमाज़ फ़र्ज़ है। इमाम मालिक (रह.) और इमाम शाफ़िई (रह.) इसे सुन्नते मुअक्किदा क़रार देते हैं। इस पर हजरत मौलाना अबैदुल्लाह साहब शैखुल हदीस मुबारकपुरी फ़र्माते हैं, 'वर्राजिह इन्दी मा ज़हब इलैहि अबू हनीफ़त मिन अन्नहा वाजिबतुन अललआयानि लिक्कौलिही तआला फ़सल्लि लिर्बिबिका वन्हर वलअम्हू यन्नतजिल्बुजूब व लिमुदाबमतिल्लिबियि (ﷺ) अला फिअलिहा मिन गैरि तर्किन व लिअन्नहा मिन आलामिदीनिज़्ज़ाहिरति फ़कानत वाजिबतुन अलख' (मिआत, जिल्द नं. 3/ पेज नं. 327) या 'नी मेरे नज़दीक तर्जीह उसी ख़याल को हासिल है जिसकी तरफ़ हजरत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) गये हैं कि ये आयान पर वाजिब है जैसा कि अल्लाह पाक ने कुर्आन में बसैगा अम् फ़र्माया, फ़सल्लि लिर्बिबिका वन्हर (अल कौषर : 2) 'अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ और कुर्बानी कर।' सैगा-ए-अम् वुजूब को चाहता है और इसलिये भी कि नबी करीम (ﷺ) ने इस पर हमेशगी फ़र्माई और ये दीन के ज़ाहिर निशानों में से एक अहमतरिनी निशान है।

बाब 01 : दोनों ईदों का बयान और उनमें ज़ेबो- ज़ीनत करने का बयान

948. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि हजरत इमर (रज़ि.) एक मोटे रेशमी कपड़े का चोगा लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए जो बाज़ार में बिक रहा था। कहने लगे या रसूलुल्लाह (ﷺ) आप इसे ख़रीद लीजिए और ईद और वुफ़ूद की पज़ीराई के लिये इसे पहन कर ज़ीनत फ़र्माया कीजिए। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किये तो वो पहनेगा जिसका (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं। इसके बाद जब तक अल्लाह ने चाहा इम्र रही, फिर एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) खुद उनके पास एक रेशमी चोगा तोहफ़े में भेजा हजरत इमर (रज़ि.) उसे लिये हुए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपने तो ये फ़र्माया कि इसको वही पहनेगा जिसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। फिर आप (ﷺ) ने ये मेरे

१ - بَابُ فِي الْعِيدَيْنِ وَالتَّجَمُّلِ

فِيهِمَا

٩٤٨ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ قَالَ: أَخَذَ عُمَرُ جُبَّةً مِنْ إِسْتَرْقٍ كُنَاعٍ فِي السُّوقِ فَأَخَذَهَا، فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، ابْنِعْ هَذِهِ، تَجَمَّلُ بِهَا لِلْعِيدِ وَالْوُفُودِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذِهِ لِبَاسٌ مِنْ لَا خَلَاقَ لَهُ)). فَلَبِثَ عُمَرُ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَلْبِثَ، ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِجُبَّةٍ دِيْبَاجٍ، فَأَقْبَلَ بِهَا عُمَرُ فَأَتَى بِهَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّكَ قُلْتَ هَذِهِ

पास क्यों भेजा? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने इसे तेरे पहनने को नहीं भेजा बल्कि इसलिये कि तुम इसे बेचकर इसकी कीमत अपने काम में लाओ। (राजेज़ : 886)

لَبَسَ مَنْ لَا خَلَقَ لَهُ، وَارْتَلَتْ إِلَيَّ
بِهِلِهِ الْجُبَّةَ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:
(تَبِعَهَا وَتَصِيبُ بِهَا حَاجَتَكَ)).

[راجع : ٨٨٦]

तशरीह : इस हदीष में है कि आँहज़रत (ﷺ) से हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि ये जुब्बा आप ईद के दिन पहना कीजिए, इसी तरह वुफूद (प्रतिनिधि मण्डल) आते रहते हैं उनसे मुलाक़ात के लिये भी आप (ﷺ) इसका इस्तेमाल कीजिए। लेकिन वो जुब्बा रेशमी था इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उससे इकार कर दिया कि रेशम मर्दों के लिये हुराम है। इससे मा'लूम हुआ कि ईद के दिन जाइज़ लिबासों के साथ आराइश करनी चाहिये इस सिलसिले में दूसरी अह्दादीष भी आई हैं।

मौलाना वहीदुज्जमाँ इस हदीष के ज़ेल में फ़र्माते हैं कि सुब्हानल्लाह! इस्लाम की भी क्या इम्दा ता'लीम है कि मर्दों को छोटा मोटा सूती ऊनी कपड़ा काफी है रेशमी और बारीक कपड़े ये औरतों को सजावार (शोभनीय) हैं। इस्लाम ने मुसलमानों को मज़बूत, मेहनती, ज़फ़ाक़श सिपाही बनने की ता'लीम दी है न कि औरतों की तरह बनाव-सिंगार करने और नाज़ुक बदन बनने की। इस्लाम ने ऐशो-इशरत का नाज़ाइज़ अस्बाब मघलन शराबखोरी वगैरह बिल्कुल बन्द कर दिया लेकिन मुसलमान अपने पैग़म्बर की ता'लीम को छोड़कर नशा और अव्याशी में मशगूल हैं और औरतों की तरह चिकन और मलमल और गोटा किनारी के कपड़े पहनने लगे। हाथों में कड़े और पाँव में मेहन्दी, आख़िर अल्लाह तआला ने उनसे हुकूमत छीन ली और दूसरी मर्दाना क़ौम को अत्ता कर दी। ऐसे जनाने मुसलमानों को डूबकर मर जाना चाहिये, बेग़ैरत! बेहया!! कमबख़्त। (वहीदी) मौलाना का इशारा उन मुग़ल शहज़ादों की तरफ़ है जो ऐशो-आराम में पड़कर ज़वाल (पतन) का सबब बने, आजकल मुसलमानों के कॉलेज में पढ़ने वाले नौजवानों का क्या हाल है, जो जनाना बनने में शायद मुग़ल शहज़ादों से भी आगे बढ़ने की कोशिशों में मसरूफ़ (व्यस्त) है जिनका हाल ये है,

न पढ़ते तो खाते सौ तरह कमाकर
वो खोए गए उलटे ता'लीम पाकर

बाब 02 : ईद के दिन बरछियों

और ढालों से खेलना

949. हमसे अहमद बिन ईसा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, कहा कि मुझे उमर बिन हारिष ने ख़बर दी कि मुहम्मद बिन अब्दुरहमान असदी ने उनसे बयान किया, उनसे उर्बा ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने, उन्होंने बतलाया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) मेरे घर तशरीफ़ लाए, उस वक़्त मेरे पास (अन्सार की) दो लड़कियाँ जंगे-बआष के क़िस्मों की नज़में पढ़ रही थीं। आप (ﷺ) बिस्तर पर लेट गये और अपना चेहरा दूसरी तरफ़ फेर लिया। इसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और मुझे डाँटा और फ़र्माया कि ये शैतानी बाज़ा नबी करीम (ﷺ) की मौजूदगी में? आख़िर नबी करीम (ﷺ)

٢- بَابُ الْحِرَابِ وَالذُّوقِ يَوْمَ

الْيَدِ

٩٤٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو بْنُ مُحَمَّدَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَسَدِيُّ حَدَّثَنَا عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ وَعِنْدِي جَارِيَتَانِ تَغْنِيَانِ بِغَنَاءٍ بُعِثَتْ، فَاضْطَجَعَ عَلَى الْفِرَاشِ وَحَوْلَ وَجْهَهُ. وَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَاتَهَرَّزَنِي وَقَالَ مِرْمَارَةُ الشَّيْطَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ! فَأَقْبَلَ عَلَيَّ رَسُولُ

उनकी तरफ मुतवज्जह हुए और फर्माया कि जाने दो, खामोश रहो। फिर जब हजरत अबूबक्र (रज़ि.) दूसरे काम में लग गये तो मैंने उन्हें इशारा किया और वो चली गई।

(दीगर मक़ामात : 952, 987, 2907, 2908, 3530, 3931)

950. और ये ईद का दिन था। हब्शा से कुछ लोग ढालों और बरछियों से खेल रहे थे। अब या ख़ुद मैंने कहा या नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया कि क्या तुम ये खेल देखोगी? मैंने कहा, जी हाँ। फिर आप (ﷺ) ने मुझे अपने पीछे खड़ा कर लिया। मेरा रुख़सार आपके रुख़सार पर था और आप फर्मा रहे थे, खेलो-खेलो ऐ बन् (अरफ़िदा)! ये हब्शा के लोगों का लक़ब था। फिर जब मैं थक गई तो आप (ﷺ) ने फर्माया, बस! मैंने कहा, जी हाँ! आप (ﷺ) ने फर्माया जाओ।

कुछ लोगों ने कहा कि हदीष और बाब के तर्जुमे में मुताबक़त नहीं, 'व अजाब इब्नुल्मुनीर फिलहाशियति बिअन्न मुरादल्बुखारी अल्इस्तिदलालु अला अन्नल्ईद यन्तज़िर फीहि मिनल्इम्बिसाति मा ला यन्तज़िरु फ़ी गैरिही व लैस फित्तर्जुमति अयज़न तक्वियदुह'। (फ़तुहल बारी)

या'नी इब्ने मुनीर ने ये जवाब दिया कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का इस्तिदलाल इस अम्र के लिये है कि ईद में इस क़दर मुस्तरत होती है जो उसके गैर (या'नी अन्य दिनों) में नहीं होती। और तर्जुमा में हब्शियों के खेल का ज़िक्र ईद से पहले के लिये नहीं है बल्कि ज़ाहिर है कि हब्शियों का ये खेल ईदगाह से वापसी पर था क्योंकि औहज़रत (ﷺ) शुरु दिन ही में नमाज़ ईद के लिये निकल जाया करते थे।

बाब 3 : इस बारे में कि मुसलमानों के लिये ईद के दिन पहली सुन्नत क्या है

951. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्हें जुबैद बिन हारिष ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने शुअबी से सुना, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप (ﷺ) ने ईद के दिन ख़ुत्बा देते हुए फर्माया कि पहला काम जो हम आज के दिन (ईदुल अज़हा में) करते हैं, ये कि पहले हम नमाज़ पढ़ें, फिर वापस आकर कुर्बानी करें। जिसने इस तरह किया वो हमारे तरीक़े पर चला।

(दीगर मक़ामात : 955, 965, 968, 976, 983, 5545, 5556, 5557, 5560, 5563, 6673)

اللّٰهُ أَقْبَلَ: ((دَعَهُمَا)). فَلَمَّا خَلَّ غَمَزْتُهُمَا فَخَرَجَتْ.

[أطرافه في : ٩٥٢، ٩٨٧، ٢٩٠٧،

٢٩٠٨، ٣٥٣٠، ٣٩٣١].

٩٥٠ - وَكَانَ يَوْمَ عِيدٍ يَلْعَبُ السُّودَانُ بِاللِّزْقِ وَالْحِرَابِ، فَإِنَّمَا سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَإِنَّمَا قَالَ: ((أَشْتَهِيَنَّ تَنْظُرِيَنَّ؟)) فَقُلْتُ: نَعَمْ. وَ أَقَامَنِي وَرَدَّاهُ، خَذَنِي عَلَى عَدُوِّهِ وَقَوَّ يَقُولُ: ((دُونَكُمْ يَا نَبِيَّ أَرْفَدَهُ)). حَتَّى إِذَا مَلِئْتُ قَالَ: ((حَسْبُكَ؟)) قُلْتُ:

٣- بَابُ سُنةِ الْعِيدَيْنِ لِأَهْلِ الْإِسْلَامِ

(الدُّعَاءُ فِي الْعِيدِ)

٩٥١ - حَدَّثَنَا حَبَّاجٌ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنِي زَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ عَنِ الثَّوَالِي قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ فَقَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ بِهِ مِنْ يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ، ثُمَّ نَرْجِعَ فَتَحَرَّ، فَمَنْ قَلَّ فَقَدْ أَصَابَ شَيْئًا)).

[أطرافه في : ٩٥٥، ٩٦٥، ٩٦٨، ٩٧٦،

٩٨٣، ١٠٠٤٥، ١٠٠٥٦، ١٠٠٥٧]

[११७३, १०६३, १०६१]

952. हमसे अबू बरिद बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वाने, उनसे उनके बाप (उर्वाने बिन यज़ीद) ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने, आपने बतलाया कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) तशरीफ लाए तो मेरे पास अन्सार की दो लड़कियाँ वो अशआर गारही थी जो अन्सार ने बआष की जंग के मौक़े पर कहे थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि ये (पेशेवर) गानेवालियाँ नहीं थीं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के घर में ये शैतानी बाजे? और ये ईद का दिन था। आखिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र से फ़र्माया, ऐ अबूबक्र! हर क़ौम की ईद होती है और आज हमारी ईद है।

(राजेअ : 949)

'क़ाललख़त्ताबी यौमु बुआषिन यौमुन मशहूदुन मिन अर्यमिलअरबि कानत फीहि मक्कतलतुन अज़ीमतुन लिलऔसि वलख़ज़रजि वलक्रियतिलहरबतु क़ाइमतन मिअतव्वंइशरीन सनतन इललइस्लामि अला मा ज़कर इब्नु इस्हाक़' या'नी ख़त्ताबी ने कहा कि यौमे बुआष तारीखे अरब में एक अज़ीम लड़ाई के नाम से मशहूर है। जिसमें औस और ख़जरज के दो बड़े क़बीलों की जंग हुई थी जिसका सिलसिला नस्ल दर नस्ल एक सौ बीस साल तक जारी रहा, यहाँ तक कि इस्लाम का दौर आया और ये क़बीले मुसलमान हुए।

दूसरी रिवायत में है कि ये गाना दुफ़ के साथ हो रहा था। बुआष एक क़िला है जिस पर औस और ख़जरज की जंग एक सौ बीस साल से जारी थी। इस्लाम की बरकत से ये जंग ख़त्म हो गई और दोनों क़बीलों में उल्फ़त पैदा हो गई। इस जंग की मज़लूम रूदाद थी जो ये बच्चियाँ गा रही थीं। जिनमें एक हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) की लड़की थी और दूसरी हस्सान बिन षाबित की लड़की थी। (फ़तुल बारी)

इस हदीष से मा'लूम ये हुआ कि ईद के दिन ऐसे गाने में मुजाइका (आपत्ति) नहीं क्योंकि ये दिन शरअन खुशी का दिन है। फिर अगर छोटी लड़कियाँ किसी की ता'रीफ़ या किसी की बहादुरी के अशआर अच्छी आवाज़ से पढ़ें तो जाइज़ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने इसकी रुख़सत (छूट) दी। लेकिन इसमें भी शर्त ये है कि गाने वाली जवान औरत न हो और उसका मज़मून शरअे-शरीफ़ के खिलाफ़ न हो और सूफ़ियों ने जो इस बाब में ख़ुराफ़ात और बिदअत निकाली हैं उनकी हुरमत में भी किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है और नुफ़ूसे शह्वानियाँ बहुत से सूफ़ियों पर ग़ालिब आ गए। यहाँ तक कि बहुत सूफी दीवानों और बच्चों की तरह नाचते हैं और उनको तकरूब इलल्लाह का वसीला जानते हैं और नेक काम समझते हैं। और ये बिला शक़ व शुब्हा ज़िनादिका की अलामत है और बेहूदा लोगों का क़ौल, वल्लहुल मुस्तअनू. (तश्हीलुल क़ारी, पारा नं. 4, पेज नं. 362-39)

बनू अफ़िदा हब्शियों का लक़ब है। आप (ﷺ) ने बच्चों और ढालों से उनके जंगी करतबों का मुलाहज़ा फ़र्माया और उन पर खुशी का इज़हार किया। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक्क़दे बाब यही है कि ईद के दिन अगर ऐसे जंगी करतब दिखलाए जाएँ तो जाइज़ है। इस हदीष से और भी बहुत सी बातों का पुबूत मिलता है। मशलन ये कि शौहर की मौजूदगी में बाप अपनी बेटी को अदब की बात बतला सकता है, ये भी मा'लूम हुआ कि अपने बड़ों के सामने बात करने में शर्म करना मुनासिब है, ये भी ज़ाहिर हुआ कि शागिर्द अगर उस्ताज़ के पास कोई अम्रे मक्रूहा देखे तो वो अज़ाहे अदब नेक निप्यती से इस्लाह का मशवरा दे सकता है और भी कई उमूर पर इस हदीष से रोशनी पड़ती है जो मामूली ग़ौरे-फ़िक़र से वाज़ेह हो सकते हैं।

۹۵۲ - حَدَّثَنَا عُمَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ وَثَّامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ أَبُو بَكْرٍ وَجَنَدِي جَارِيَانِ مِنْ جَوَارِي الْأَنْصَارِ ثَمَنَانِ بِمَا تَقَاوَلَتِ الْأَنْصَارُ يَوْمَ بُعَاثٍ، قَالَتْ: وَلَيْسَتْ بِمُعْتَبِرِينَ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمَّا امْرَأَتُ الشَّيْطَانِ لِي يَمُوتَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ وَذَلِكَ لِي يَوْمَ عَيْدٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَا أَيُّهَا بَكْرُ، إِنَّ لِكُلِّ قَوْمٍ عَيْدًا، وَهَذَا عَيْدُنَا)). [راجع: ۹۴۹]

बाब 4 : ईदुल फ़ितर में नमाज़ के लिये जाने से पहले कुछ खा लेना

953. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया कि हम को सईद बिन सुलैमान ने खबर दी कि हमें हुशैम बिन बशीर ने खबर दी, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने खबर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, आपने बतलाया कि रसूले-करीम (ﷺ) ईदुल-फ़ितर के दिन न निकलते जब तक कि आप (ﷺ) चन्द खजूर न खा लेते और मुरजी बिन रजाअ ने कहा कि मुझ से अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा कि मुझ से अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से, फिर यही हदीस बयान की कि आप तक्रा अदद खजूरें खाते थे।

मा'लूम हुआ कि ईदुल फ़ित्र में नमाज़ के लिये निकलने से पहले चंद खजूरें अगर मयस्सर हों तो खा लेना सुन्नत है।

बाब 5 : बक्र ईद के दिन खाना

इस बाब में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने वो स़ाफ़ हदीस न ला सके जो इमाम अहमद व तिर्मिज़ी (रह.) ने रिवायत की है कि बक्र ईद के दिन आप (ﷺ) लौटकर अपनी कुर्बानी में से खाते। वो हदीस भी थी मगर उन शराइत के मुताबिक न थी जो हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के शराइत हैं, इसलिये आप (रह.) उसको न ला सके।

945. हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन अला ने अय्यूब सुखितयानी से, उन्होंने मुहम्मद बिन सीरीन से बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स नमाज़ से पहले कुर्बानी कर दे उसे दोबारा कुर्बानी करनी चाहिये। इस पर एक शख्स (अबू बुर्दा) ने खड़े होकर कहा किये ऐसा दिन है जिस दिन गोश्त की ख्वाहिश ज़्यादा होती है और उसने अपने पड़ोसियों की तंगी का बयान किया। नबी करीम (ﷺ) ने उसको सच्चा समझा, उस शख्स ने कहा कि मेरे पास एक साल की पठिया है जो गोश्त की दो बकरियों से भी मुझे ज़्यादा प्यारी है। नबी करीम (ﷺ) ने इस पर उसे इजाज़त दे दी कि वही कुर्बानी करे। अब मुझे मा'लूम नहीं कि ये इजाज़त दूसरों के लिये भी है या नहीं।

(दीगर मक़ामात : 984, 5546, 5549, 5561)

ये इजाज़त ख़ास अबू बुर्दा (रज़ि.) के लिये थी जैसा कि आगे आ रहा है। हज़रत अनस (रज़ि.) को उनकी खबर नहीं हुई इसलिये उन्होंने ऐसा कहा।

४ - بَابُ الْأَكْلِ يَوْمَ الْفِطْرِ قَبْلَ

الْخُرُوجِ

٩٥٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا مَعْنَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ بْنُ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَا يَفْذُو يَوْمَ الْفِطْرِ حَتَّى يَأْكُلَ نَمْرَاتٍ)). وَقَالَ مُرْجَأُ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنِي عُثَيْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَأْكُلُهُنَّ وَتَرَا)).

५ - بَابُ الْأَكْلِ يَوْمَ النَّحْرِ

٩٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ مَسْرُورٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلَاةِ فَلْيَعِدْ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: هَذَا يَوْمٌ يُشْتَهَى فِيهِ اللَّحْمُ، وَذَكَرَ مِنْ جِبَرَاتِهِ، فَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ صَدَقَهُ، قَالَ: وَعِنْدِي بَذْعَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتِي لَحْمٍ. فَرَحِمْتَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ، فَلَا أَذْرِي أَبْلَغْتَ الرُّحْمَةَ مِنْ سِوَاهُ أَمْ لَا.

[أطرافه ٣: ٩٨٤, ٥٥٤٦, ٥٥٤٩]

[٥٥٦١]

955. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरिर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे शुअबी ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने, आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल अज़हा की नमाज़ के बाद खुत्बा देते हुए फ़र्माया कि जिस शख्स ने हमारी नमाज़ की सी नमाज़ पढ़ी और हमारी कुर्बानी की तरह कुर्बानी की उसकी कुर्बानी सहीह हुई। लेकिन जो शख्स नमाज़ से पहले कुर्बानी करे, वो नमाज़ से पहले ही गोश्त खाता है मगर वो कुर्बानी नहीं। बराअ के मामू अबू बुर्दा बिन नयार ये सुनकर बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने अपनी बकरी की कुर्बानी नमाज़ से पहले कर दी, मैंने सोचा कि ये खाने-पीने का दिन है। मेरी बकरी अगर घर पर पहला ज़बीहा बने तो बहुत अच्छा हो। इस खयाल से मैंने बकरी जिब्ह कर दी और नमाज़ से पहले ही उसका गोश्त भी खा लिया। इस पर आपने फ़र्माया कि फिर तुम्हारी बकरी गोश्त की बकरी हुई। अबू बुर्दा बिन नयार ने अर्ज किया कि मेरे पास एक साल की पठिया है और वो मुझे गोश्त की दो बकरियों से भी अजीज़ है। क्या उससे मेरी कुर्बानी हो जाएगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, लेकिन तुम्हारे बाद किसी की कुर्बानी इस इम्र के नीचे से नाकाफ़ी होगी।

(राजेअ: 951)

٩٥٥ - حَدَّثَنَا غُمَّانُ قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الشَّغْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الْأَضْحَى بَعْدَ الصَّلَاةِ فَقَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا وَنَسَكَ نُسُكَنَا فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ، وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلَاةِ فَإِنَّهُ قَبْلَ الصَّلَاةِ وَلَا نُسُكَ لَهُ)). فَقَالَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ يَحْيَى عَنْ الْبَرَاءِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنِّي نَسَكْتُ شَاةً قَبْلَ الصَّلَاةِ وَعَرَفْتُ أَنَّ الْيَوْمَ يَوْمُ الْإِكْلِ وَشُرْبِ، وَاحْتَسَبْتُ أَنْ تَكُونَ شَاةً أَوْ لَمْ تَكُنْ تَذْبَحْ لِي نَبِيٍّ، فَذَبَحْتُ شَاةً وَتَقَدَّسْتُ قَبْلَ أَنْ آتِيَ الصَّلَاةَ. قَالَ: ((شَاةُكَ شَاةٌ لَحْمٌ)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنِ عَيْنَانَا عَنَّا لَنَا جَذَعَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْنِ الْقَصْبَرِيِّ عَنِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ. وَلَكِنْ تَجَرِّي عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)).

[راجع: ٩٥١]

तशरीह: क्योंकि कुर्बानी में मुसन्ना बकरी ज़रूरी है जो दूसरे साल में हो और दाँत निकाल चुकी हो। बग़ैर दाँत निकाले बकरी कुर्बानी के लायक नहीं होती। अल्लामा शौकानी (रह.) नैलुल औतार में इस हदीष की शरह में फ़र्माते हैं, 'कौलुहु अल्मुसन्नतु काललउलमाउ अल्मुसन्नतु हियन्नियतु मिन कुल्लि शैइन मिनल्ज़बिलि वल्बक्रि वल्गनमि फमा फौक्रहा' मस्जिद में है, 'अन्नियतु जम्झू बनाया वहिय इस्नानि मुकद्दमुल्फमि घनतानि मिन फौक्किन व घनतानि मिन अस्फल' या' नी बनाया के सामने के ऊपर-नीचे के दाँत को कहते हैं। इस लिहाज़ से हदीष के ये मा' नी होते हैं दाँत वाले जानवरों को कुर्बानी करो। इससे लाज़िम यही नतीजा निकला कि खीरे की कुर्बानी न करो इसलिये एक रिवायत में है, 'युन्फा मिनज़ज़हाया अल्लती लम तुसन्निन' कुर्बानी के जानवरों में से वो जानवर निकाल डाला जाएगा जिसके दाँत न उगे होंगे, अगर मजबूरी की हालत में मुसन्ना न मिले मुश्किल व दुश्वार हो तो जिज़अतुम मिनज़ज़ाअ भी कर सकते हैं। जैसा कि इसी हदीष के आखिर में आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'इल्ला अय्यअम्रि अलैकुम फतज़ब्हु जिज़अतम्मिनज़ज़ानि लुगातुल्हदीष' में लिखा है कि पांचवें बरस में जो ऊँट लगा हो और दूसरे बरस में जो गाय-बकरी लगी हो और चौथे बरस में जो घोड़ा लगा हो। कुछ ने कहा जो गाय तीसरे बरस में लगी हो, जो भेड़ एक बरस की हो गई। जैसा कि हदीष में है,

'ज़हैना मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिल्ज़िज़्ज़ि मिनज़ज़ानि वप्पनियथि मिनल्मअज़ि' हमने आँहज़रत (ﷺ) के साथ एक बरस की भेड़ और दो बरस की (जो तीसरे में लगी हैं) बकरी कुर्बानी की और तफ़सीर इब्ने कषीर में है कि बकरी पन्ना वो है कि जो दो साल गुज़ार चुकी हो और जिज़आ उसको कहते हैं जो साल भर का हो गया हो।

बाब 6 : ईदगाह में खाली जाना

मिम्बर न ले जाना

956 : हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे जैद बिन असलम ने ख़बर दी, उन्हें अयाज़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सरह ने, उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने, आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ईदुल-फ़ितर और ईदुल अज़हा के दिन (मदीने के बाहर) ईदगाह तशरीफ़ ले जाते तो सबसे पहले आप नमाज़ पढ़ाते, नमाज़ से फ़ारिग होकर आप (ﷺ) लोगों के सामने खड़े होते। तमाम लोग अपनी मफ़ों में बैठे रहते। आप (ﷺ) उन्हें वा'ज'व नसीहत फ़र्माते, अच्छी बातों का हुक्म देते। अगर जिहाद के लिये कहीं लश्कर भेजने का इरादा होता तो उसको अलग करते, किसी और बात का हुक्म देना होता तो वो हुक्म देते। उसके बाद शहर को वापस तशरीफ़ लाते। अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया लोग बराबर इसी सुन्नत पर कायम रहे, लेकिन मुआविया के ज़माने में मरवान जो मदीना का हाकिम था, फिर मैं उसके साथ ईदुल-फ़ितर या ईदुल-अज़हा की नमाज़ के लिये निकला, हम जब ईदगाह पहुँचे तो वहाँ मैंने क़प्पीर बिन मल्लत का बना हुआ एक मिम्बर देखा। जाते ही मरवान ने चाहा कि इस पर नमाज़ से पहले (खुत्बा देने के लिये चढ़े) इसलिये मैंने उनका दामन पकड़कर खींचा और लेकिन वो झटक ऊपर चढ़ गया और नमाज़ से पहले खुत्बा दिया। मैंने इससे कहा कि वल्लाह! तुमने (नबी करीम ﷺ की सुन्नत को) बदल दिया। मरवान ने कहा कि ऐ अबू सअद! अब वो ज़माना गुज़र गया जिसको तुम जानते हो। अबू सअद ने कहा कि अल्लाह की क़सम मैं जिस ज़माने को जानता हूँ, उस ज़माने से बेहतर है जो मैं नहीं जानता। मरवान ने कहा कि हमारे दौर में लोग नमाज़ के बाद नहीं बैठते, इसलिये मैंने नमाज़ से पहले खुत्बा को कर दिया।

٦- بَابُ الْخُرُوجِ إِلَى الْمُصَلَّى

بِفَيْرٍ مِنْبَرٍ

٩٥٦- حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدٌ عَنْ عِيَاضِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي سَرْحٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْرُجُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَالْأَضْحَى إِلَى الْمُصَلَّى، فَأَوَّلُ شَيْءٍ يَبْدَأُ بِهِ الصَّلَاةَ، ثُمَّ يَنْصَرِفُ فَيَقُومُ مُقَابِلَ النَّاسِ - وَالنَّاسُ جُلُوسٌ عَلَى صُفُوفِهِمْ - فَيُعْطِهِمْ رُؤُوسَهُمْ، وَيَأْمُرُهُمْ. فَإِنْ كَانَ يُرِيدُ أَنْ يَقْطَعَ بَعْثًا لِقَعَةٍ أَوْ يَأْمُرَ بِشَيْءٍ أَمَرَ بِهِ، ثُمَّ يَنْصَرِفُ)). فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ: فَلَمْ يَزَلِ النَّاسُ عَلَى ذَلِكَ حَتَّى غَرَجَتْ مَعَ مَرْوَانَ - وَهُوَ أَمِيرُ الْمَدِينَةِ - فِي أَضْحَى أَوْ فِطْرٍ، فَلَمَّا إِنَّمَا الْمُصَلَّى إِذَا مِنْبَرٌ بَنَاهُ كَثِيرُ بْنُ الصَّلْتِ، فَإِذَا مَرْوَانُ يُرِيدُ أَنْ يَرْتَفِعَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ، فَجَبَذَتْ بِقَوِيهِ، فَجَبَذَنِي، فَارْتَفَعَ فَخَطَبَ قَبْلَ الصَّلَاةِ، فَقُلْتُ لَهُ: غَيْرْتُمْ وَاللَّهِ، فَقَالَ: يَا أَبَا سَعِيدٍ لَقَدْ ذَهَبَ مَا تَعْلَمُ، فَقُلْتُ مَا أَغْلَمَ وَاللَّهِ خَيْرٌ مِمَّا لَا أَغْلَمُ. فَقَالَ: إِنَّ النَّاسَ لَمْ يَكُونُوا يَجْلِسُونَ لَنَا بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَجَعَلَهَا قَبْلَ الصَّلَاةِ.

तशरीह : हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद बाब ये बतलाना है कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में ईदगाह में मिम्बर नहीं रखा जाता था और नमाज़ के लिये कोई खास इमारत न थी। मैदान में ईदुल फ़ित्र और बक़र ईद की नमाज़ें पढ़ी जाती थीं। मरवान जब मदीना का हाकिम हुआ तो उसने ईदगाह में खुत्बे के लिये मिम्बर भिजवाया और ईदैन में खुत्बा

नमाज़ के बाद में देना चाहिये था लेकिन मरवान ने सुन्नत के खिलाफ पहले ही खुत्बा शुरू कर दिया। सद् अफ़सोस कि इस्लाम की फ़ितरी सादगी जल्दी ही बदल गई फिर उनमें दिन ब दिन इज़ाफ़े होते रहे। उलम-ए-अहनाफ़ ने आजकल नया इज़ाफ़ा कर डाला कि नमाज़ और खुत्बे से पहले कुछ वा'ज़ करते हैं और घण्टा आधा घण्टा खर्च करने के बाद में नमाज़ और खुत्बा सिर्फ़ रस्मी तौर पर चंद मिनटों में ख़त्म कर दिया जाता है। आज कोई कभीर बिन सलत नहीं जो इन इख़्तिराज़त पर नोटिस ले।

बाब 7 : नमाज़े-ईद के लिये पैदल या सवार होकर जाना और नमाज़ का खुत्बे से पहले अज़ान और इक्रामत के बग़ैर होना

957. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िर हज़ाज़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उन्होंने उबैदुल्लाह बिन इमर से बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ईदुल अज़हा या ईदुल फ़ितर की नमाज़ पहले पढ़ते और खुत्बा नमाज़ के बाद में देते थे। (दीगर मक़ाम : 963)

۷- بَابُ الْمَشْيِ وَالرُّكُوبِ إِلَى

الْعِيدِ وَالصَّلَاةِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ

وَبَغَيْرِ أَذَانٍ وَلَا إِقَامَةٍ

۹۵۷ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنْ عَتِيدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو (أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي فِي الْأَضْحَى وَالْفَيْطْرِ، ثُمَّ يَخُطِّبُ بَعْدَ الصَّلَاةِ). (طَرَفُهُ ۳: ۹۶۳).

तशरीह : बाब की हदीषों में से नहीं निकलता कि ईद की नमाज़ के लिये सवारी पर जाना या पैदल जाना। मगर इमामे बुखारी (रह.) ने सवारी पर जाने की मुमानअत मज़कूर न होने से ये निकाला कि सवारी पर भी जाना मना नहीं है। गो पैदल जाना अफ़ज़ल है। शाफ़िई ने कहा कि हमें जुहरी से पहुँचा कि आहज़रत (ﷺ) ईद में या जनाज़े में कभी सवार होकर नहीं गए और तिर्मिज़ी ने हज़रत अली (रज़ि.) से निकाला कि ईद की नमाज़ के लिये पैदल जाना सुन्नत है। (वहीदी)

इस बाब की ख़ियायत में न पैदल चलने का ज़िक्र है और सवारी पर चलने की मुमानअत है। जिसे इमाम बुखारी (रह.) ने इशारा किया कि दोनों तरह से ईदगाह जाना सही है अगरचे पैदल चलना सुन्नत है और उसी में ज़्यादा प्रबाब है क्योंकि ज़मीन पर जिस क़दर भी नक्शे-क़दम होंगे हर क़दम के बदले दस-दस नेकियों का प्रबाब मिलेगा लेकिन अगर कोई मा'ज़ूर हो या ईदगाह दूर हो तो सवारी पर जाना भी जाइज़ है। कुछ शारेहीन ने आहज़रत (ﷺ) के बिलाल (रज़ि.) पर तकिया लगाने से सवारी का जवाज़ प्राबित किया है। वल्लाहु अज़लाम!!

958. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमें हिशाम ने ख़बर दी कि इब्ने जुरैज ने उन्हें ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे अताअ बिन अबी रबाह ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से ख़बर दी कि आपको मैंने ये कहते हुए सुना कि नबी करीम (ﷺ) ईदुल फ़ितर के दिन ईदगाह तशरीफ़ ले गये और पहले नमाज़ पढ़ाई और फिर खुत्बा सुनाया।

(दीगर मक़ामात : 961, 978)

959. फिर इब्ने जुरैज ने कहा कि मुझे अताअ ने ख़बर दी कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इब्ने जुबैर (रज़ि.) के पास एक शख्स को उस ज़माने में भेजा, जब (शुरू-शुरू उनकी ख़िलाफ़त का ज़माना

۹۵۸ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: (أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمَ الْفَيْطْرِ قَبْدًا بِالصَّلَاةِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ).

(طَرَفُهُ ۳: ۹۶۱, ۹۷۸).

۹۵۹ - قَالَ: وَأَخْبَرَنِي عَطَاءٌ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَرْسَلَ إِلَى ابْنِ الزُّبَيْرِ فِي أَوَّلِ مَا

था, आपने कहलाया कि) ईदुल फ़ितर की नमाज़ के लिये अज़ान नहीं दी जाती थी और ख़ुत्बा नमाज़ के बाद होता था।

960. और मुझे अता ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) और जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) के वास्ते से ख़बर दी कि ईदुल फ़ितर या ईदुल अज़हा की नमाज़ के लिये नबी करीम (ﷺ) और ख़ुल्फ़-ए-राशिदीन के अहद में अज़ान नहीं दी जाती थी।

961. और जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि (ईद के दिन) नबी करीम (ﷺ) खड़े हुए, पहले आपने नमाज़ पढ़ी फिर ख़ुत्बा दिया, उससे फ़ारिग होकर आप (ﷺ) औरतों की तरफ़ गये और उन्हें नज़ीहत की। आप (ﷺ) बिलाल (रज़ि.) के हाथ का सहारा लिये हुए थे और बिलाल (रज़ि.) ने अपना कपड़ा फैला रखा था, औरतें इसमें ख़ैरात डाल रही थीं। मैंने इस पर अताअ से पूछा कि क्या इस ज़माने में भी इमाम पर ये हक़ समझते हैं कि नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद वो औरतों के पास आकर उन्हें नज़ीहत करे। उन्होंने फ़र्माया कि बेशक! ये उन पर हक़ है और सबब क्या जो वो ऐसा न करें। (राजेअ: 957)

तशरीह: यज़ीद बिन मुआविया की वफ़ात के बाद 62 हिजरी में अब्दुल्लाह बिन जुबैर की बेअत की गई। इसलिये कुछ ने ये निकाला कि इमामे बुखारी (रह.) का तर्जुम-ए-बाब यूँ प्राबित होता है कि हज़रत (ﷺ) ने बिलाल (रज़ि.) पर टेक दिया। मा'लूम हुआ कि बवक्ते ज़रूरत ईद में सवार होकर भी जाना सही है। रिवायत में औरतों को अलग वा'ज़ भी मज़कूर है। लिहाज़ा इमाम को चाहिये कि ईद में मदों को वा'ज़ सुनाकर औरतों को भी दीन की बातें समझाएँ और नेक कामों की राबत दिलाए।

बाब 8 : ईद में नमाज़ के बाद ख़ुत्बा पढ़ना

962. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इब्ने ज़ुऐज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे हसन बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्हें ताऊस ने, उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि मैं ईद के दिन नबी करीम (ﷺ) और अबूबक्र, उमर और उस्मान (रज़ि.) सबके साथ गया हूँ, ये लोग पहले नमाज़ पढ़ते, फिर ख़ुत्बा दिया करते थे।

(राजेअ: 98)

963. हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा

بُويحَ لَه: أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ يُؤَذِّنُ بِالصَّلَاةِ يَوْمَ الْفِطْرِ، وَإِنَّمَا الْخُطْبَةُ بَعْدَ الصَّلَاةِ.

٩٦٠ - وَأَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَعَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: لَمْ يَكُنْ يُؤَذِّنُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَلَا يَوْمَ الْأَضْحَى.

٩٦١ - وَعَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَامَ قَبْدًا بِالصَّلَاةِ ثُمَّ عَطَبَ النَّاسَ بَعْدَ، فَلَمَّا فَرَغَ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ تَوَلَّى فَأَتَى النِّسَاءَ فَلَذَّكَرَهُنَّ وَهُوَ يَمُوسًا عَلَى يَدِ بِلَالٍ، وَبِلَالٌ بِاسِطٌ ثَوْبُهُ يُلْقِي فِيهِ النِّسَاءُ صَدَقَةً)) قَالَ: فَلْتٌ لِقَطْعِهِ: أَرَى حَقًّا عَلَى الْإِمَامِ الْآنَ أَنْ يَأْتِيَ النِّسَاءَ فَلَذَّكَرَهُنَّ حِينَ يَفْرُغُ؟ قَالَ: إِنْ ذَلِكَ لَحَقٌّ عَلَيْهِمْ، وَمَا لَهُمْ أَنْ لَا يَفْعَلُوا؟ [راجع: ٩٥٨]

٨- بَابُ الْخُطْبَةِ بَعْدَ الْعِيدِ

٩٦٢ - حَدَّثَنَا أَبُو حَاصِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((شَهِدْتُ الْعِيدَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَابْنَيْ بَكْرٍ وَعُمَرَ وَغُفْمَانَ وَحَبِيبٍ اللَّهُ عَلَيْهِمْ فَكَلَّمَهُمْ كَمَا نُوا يَصَلُّونَ قَبْلَ الْخُطْبَةِ)).

[راجع: ٩٨]

٩٦٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ:

कि हमसे अबू उसामा हम्माद बिन अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह ने नाफ़ेअ से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने किनबी करीम (ﷺ) ईदैन की नमाज़ खुत्बे से पहले पढ़ा करते थे।

(राजेअ: 957)

964. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उन्होंने अदी बिन घाबित से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि आँहज़स्त (ﷺ) ने ईदुल फ़ितर के दिन दो रकअतें पढ़ीं न उनसे पहले कोई नफ़ल पढ़ा न उनके बाद, फिर (खुत्बा पढ़कर) आप औरतों के पास आए और बिलाल आप के साथ थे। आपने औरतों से फ़र्माया, ख़ैरात करो। वो ख़ैरात देने लगीं, कोई अपनी बाली पेश करने लगी कोई अपना हार देने लगी।

(राजेअ: 98)

965. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ैद ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअबी से सुना, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम इस दिन पहले नमाज़ पढ़ेंगे फिर खुत्बा देने के बाद वापस होकर कुर्बानी करेंगे। जिसने इस तरह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ अमल किया और जिसने नमाज़ से पहले कुर्बानी की तो उसका ज़बीहा गोश्त का जानवर है, जिसे वो घरवालों के लिये लाया है। कुर्बानी से उसका कोई भी ता'ल्लुक नहीं। एक अन्सारी (रज़ि.) जिनका नाम अबू बुर्दा बिन नयार था, बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं तो (नमाज़ से पहले ही) कुर्बानी करदी लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है जो दूँदी हुई बकरी से भी अच्छी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा इसी को बकरी के बदले में कुर्बानी कर लो और तुम्हारे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी।

(राजेअ: 901)

حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَيْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُصَلُّونَ الْعِيدَيْنِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ)).

[راجع: ٩٥٧]

٩٦٤ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جَبْرِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى يَوْمَ الْفِطْرِ رَكَعَتَيْنِ لَمْ يُصَلِّ قَبْلَهَا وَلَا بَعْدَهَا. ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلَالٌ، فَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلْنَ يُلْقِينَ، تُلْقِي الْمَرْأَةُ خُرْصَهَا وَمِخَابَهَا)).

[راجع: ٩٨]

٩٦٥ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ عَنْ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ أَوَّلَ مَا تَبَدَّلَ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ ثُمَّ نَرْجِعَ فَتَنْحَرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ نَحَرَ قَبْلَ الصَّلَاةِ فَإِنَّمَا هُوَ لَبَحْمٍ لَدَنَمَ لِأَهْلِهِ، لَيْسَ مِنَ النَّسْكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نَيَّارٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَهَبَتْ وَعِنْدِي جِلْدَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اجْعَلْهُ مَكَانَهُ وَلَمْ تُؤْثِرِي - أَوْ تَجْزِي -

عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

बाब 9 : ईदैन के दिन और हरम के अन्दर

हथियार बाँधना मकरूह है

और इमाम हसन बसरी (रह.) ने फ़र्माया कि ईद के दिन हथियार ले जाने की मुमानअत थी मगर जब दुश्मन का खौफ़ होता

966. हमसे जियाद बिन यहा अबू सुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुर्रहमान महरबी ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन सोक्रा ने सईद बिन जुबैर से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं (हज्ज) के दिन इब्ने उमर (रज़ि.) के साथ था, जब नेजे की आनी आपके तलवों में चुभ गई, जिसकी वजह से आपका पाँव रक्ताब से छिपक गया। तब मैंने उतरकर उसे निकाला, ये बाक़िया मीना में पेश आया था। जब हज्जाज को मा'लूम हुआ जो उस ज़माने में इब्ने जुबैर (रज़ि.) के क़त्ल के बाद हिजाज़ का अमीर था तो बीमारपुर्सी के लिये आया। हज्जाज ने कहा कि काश! हमें मा'लूम हो जाता कि किसने आपको ज़ख़मी किया है। इस पर इब्ने उमर ने फ़र्माया कि तूने ही तो मुझको नेज़ा मारा है। हज्जाज ने पूछा कि वो कैसे? आपने फ़र्माया कि तुम उस दिन हथियार अपने साथ लाए जिस दिन पहले कभी हथियार साथ नहीं लाया जाता था। (ईदैन के दिन) तुम हथियार हरम में लाए हालाँकि हरम में हथियार नहीं लाया जाता था।

(दीगर मक़ाम : 967)

967. हमसे अहमद बिन यज़कूब ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्हाक़ बिन सईद बिन उमर बिन सईद बिन आस ने अपने बाप से बयान किया, उन्होंने कहा कि हज्जाज अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के पास आया मैं भी आपकी ख़िदमत में मौजूद था। हज्जाज ने मिज़ाज पूछा, अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अच्छा हूँ। उसने पूछा कि आपको ये बरखा किसने मारा? इब्ने उमर ने फ़र्माया कि मुझे उस शख़्स ने मारा है जिसने उस दिन हथियार साथ ले जाने की इज़ाज़त दी, जिस दिन हथियार साथ नहीं ले जाया जाता था। आपकी मुराद हज्जाज ही से थी।

(राजेअ : 966)

9- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنْ حَمَلِ

السَّلَاحِ فِي الْعِيدِ وَالْحَرَمِ

وَقَالَ الْحَسَنُ: نُهُوا أَنْ يَحْمِلُوا السَّلَاحَ يَوْمَ عِيدِهِ، إِلَّا أَنْ يَخَافُوا عَدُوًّا.

966- حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى أَبُو السَّكِينِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُوْفَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جَبْرِ قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ ابْنِ عُمَرَ حِينَ أَصَابَهُ سَيْانُ الرَّمْحِ فِي اخْتَصَرِ لَدُنْهُ، فَلَزِقَتْ لَدُنْهُ بِالرَّكَابِ، فَزَلَّتْ فَتَرَعَهَا. وَذَلِكَ بِسِنَى - قَبْلَ الْخُجَاجِ فَجَعَلَ يَفُودُهُ. فَقَالَ الْخُجَاجُ: لَوْ نَعْلَمُ مَنْ أَصَابَكَ. فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: أَنْتَ أَصَبْتَنِي. فَقَالَ: وَكَيْفَ؟ قَالَ: حَمَلْتَ السَّلَاحَ فِي يَوْمٍ لَمْ يَكُنْ يُحْمَلُ فِيهِ، وَأَذَعَلْتَ السَّلَاحَ الْحَرَمَ، وَلَمْ يَكُنِ السَّلَاحُ يُدْخَلُ الْحَرَمَ)). [طريقه له : 967].

967- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يَحْيَى عَنْ سَعِيدِ بْنِ جَبْرِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُعَاوِي عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((دَخَلَ الْخُجَاجُ عَلَى ابْنِ عُمَرَ وَأَنَا عِنْدَهُ، فَقَالَ: كَيْفَ هُوَ؟ فَقَالَ: صَالِحٌ. فَقَالَ: مَنْ أَصَابَكَ؟ قَالَ: أَصَابَنِي مَنْ أَمَرَ بِحَمَلِ السَّلَاحِ فِي يَوْمٍ لَا يَحِلُّ فِيهِ حَمَلُهُ)) يَحْيَى الْخُجَاجُ. [راجع : 966]

तशरीह :

हज्जाज ज़ालिम ने दिल में अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से दुश्मनी रखता था क्योंकि उन्होंने उसको का'बा पर मुन्जनीक लगाने और अब्दुल्लाह बिन जुबैर के क़त्ल करने पर मलामत की थी। दूसरे अब्दुल मलिक बिन मरवान

ने जो खलीफ़-ए-वक़्त था, ने हज्जाज को ये कहला भेजा था कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की इताअत करता रहे। ये अमर उस मरदूद पर शाक गुज़रा और उसने चुपके से एक शख्स को इशारा कर दिया। उसने ज़हर आलूद बर्छा अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के पांव में घुसेड़ दिया। खुद ही तो ये शरारत की और खुद ही क्या मिस्कीन बनकर अब्दुल्लाह (रज़ि.) की इयादत को आया? वाहरे मकार! अल्लाह को क्या जवाब देगा। आखिर अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने जो अल्लाह के बड़े मक्बूल बन्दे और बड़े आलिम और आबिद और ज़ाहिद और सहाबी-ए-रसूल (ﷺ) थे, उनका फ़रेब पहचान लिया और फ़र्माया कि तुमने ही तो मारा है और तू ही कहता है हम मुजरिम को पा लें तो उसको सख़्त सज़ा दें,

जफ़ा कर दी वो खुदक़शी ब तेरो जुल्म मारा

बहाना में बराए पुरशिसे बीमारी आई

(मौलाना बहीदुज्जमाँ मरहूम)

इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि दुनियादार मुसलमानों ने किस-किस तरह से इलम-ए-इस्लाम को तकलीफ़ दी है फिर भी वो मर्दाने हक़-परस्त अम्मे हक़ की दा'वत देते रहे, आज भी इलमा को इन बुजुर्गों की इक्तिदा लाज़िमी है।

बाब 10 : ईद की नमाज़ के लिये सवैरे जाना

और अब्दुल्लाह बिन खुस्स सहाबी ने (मुल्के शाम में इमाम के देर से निकलने पर ए'तिराज़ किया) फ़र्माया कि हम तो नमाज़ से इस वक़्त फ़ारिग हो जाया करते थे। या'नी जिस वक़्त नफ़ल नमाज़ पढ़ना दुरुस्त होता है।

तशरीह : या'नी इश्राक़ की नमाज़ मतलब ये है कि सूरज एक नेज़ा या दो नेज़ा हो जाए। बस यही ईद की नमाज़ का अफ़ज़ल वक़्त है और जो लोग ईद की नमाज़ में देर करते हैं वो बिदअती हैं खुसूसन ईदुल अज़हा की नमाज़ और जल्द पढ़नी चाहिये ताकि लोग कुर्बानी वगैरह से जल्दी फ़ारिग हो जाएँ और सुन्नत के मुवाफ़िक़ कुर्बानी में से खाएँ। हदीष में है कि आँहज़रत (ﷺ) ईदुल फ़ित्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जब सूरज दो नेज़े बलन्द होता और ईदुल अज़हा की नमाज़ जब एक नेज़ा बलन्द होता। (मौलाना बहीदुज्जमाँ)

968. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने ज़ैद से बयान किया, उनसे शुअबी ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने कुर्बानी के दिन खुत्बा दिया और आपने फ़र्माया कि इस दिन सबसे पहले हमें नमाज़ पढ़नी चाहिये, फिर (खुत्बे के बाद) वापस आकर कुर्बानी करनी चाहिये, जिसने इस तरह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले जिब्ह कर दिया तो ये एक ऐसा गोश्त होगा जिसे उसने अपने घरवालों के लिये जल्दी से तैयार कर लिया है। ये कुर्बानी क़त्अन नहीं। इस पर मेरे मामू अबू बुर्दा बिन नयार ने खड़े होकर कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने तो नमाज़ के पढ़ने से पहले ही जिब्ह कर दिया। अल्बत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है, जो दाँत निकली हुई बकरी से भी ज़्यादा बेहतर है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसके बदले मैं इसे समझ लो या ये फ़र्माया कि इसे जिब्ह कर लो और तुम्हारे बाद ये

١٠- بَابُ التَّكْبِيرِ إِلَى الْعِيدِ

وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بُسَيْرٍ : إِنَّ كُنَّا فَرَعْنَا فِي هَذِهِ السَّاعَةِ. وَذَلِكَ حِينَ النَّسِيحِ.

٩٦٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ زَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ الثَّوْرِيِّ بْنِ عَارِبٍ قَالَ: سَمِعْنَا النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ النُّحْرِ فَقَالَ: «إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ بِهِ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ، ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَسْحَرُ، فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ أَصَابَ مَسْنَأً، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ عَجَلَةٌ لِأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ التَّمْلِكِ فِي شَيْءٍ». فَقَامَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي رَافَةَ بْنِ يَزَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَنَا ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أُصَلِّيَ، وَهِيَ بِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مَسْنَأٍ. قَالَ: «(اجْعَلْنَاهَا مَكَانَهَا)»

एक साल की पठिया किसी के लिये काफ़ी नहीं होगी।

(राजेअ: 951)

أَوْ قَالَ: ((أَذْبَحَهَا - وَلَنْ تَجْزِيَ

جَذَعَةً عَنْ أَحَدٍ بِغَدَاكَ)). (راجع: ٩٥١)

तशरीह: इस हदीष की मुताबिक़ बाब के तर्जुमा से यँ है कि आपने फ़र्माया कि उस दिन पहले जो काम हम करते हैं वो नमाज़ है। इससे ये निकला कि ईद की नमाज़ सुबह सवेरे पढ़ना चाहिये क्योंकि जो कोई देर करके पढ़ेगा और वो नमाज़ से पहले दूसरे काम करेगा तो पहला काम उसका उस दिन नमाज़ न होगा। ये इस्तिम्बात हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की गहरी बसीरत की दलील है। (रहिमहुल्लाह)

इस सूरत में आपने ख़ास उन्हीं अबू बुर्दा बिन नयार नामी सहाबी के लिये जिज़आ की कुर्बानी की इजाज़त बख़शी। साथ ही ये भी फ़र्मा दिया कि तेरे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी। यहाँ जिज़आ से एक साल की बकरी मुराद है। लफ़्ज़े जिज़आ एक साल की भेड़-बकरी पर बोला जाता है। हज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, 'अल जिज़अतु मिनज़्जानि मा लहू सनतुन ताम्मतुन हाज़ा हुवल अशहरू अन अहलिल लुगति व जुम्हूर अहलिल इल्मि मिन ग़ैरहिम' या'नी जिज़आ वो है जिसकी उम्र पर पूरा एक साल गुज़र चुका हो। अहले सुन्नत और जुम्हूर अहले इल्म से यही मन्कूल है। कुछ छ: और आठ और दस माह की बकरी पर भी जिज़आ बोलते हैं।

देवबन्दी तराजिमे बुखारी में इस मुकाम पर जगह-जगह जिज़आ का तर्जुमा चार महीने की बकरी का किया गया है तफ़्हीमुल बुखारी में एक जगह नहीं बल्कि बहुत से मुकामात पर चार महीने की बकरी लिखा हुआ मौजूद है। अल्लामा शौकानी (रह.) की ऊपर लिखी तशरीह के मुताबिक़ ये ग़लत है। इसलिये अहले हदीष तराजिमे बुखारी में हर जगह एक साल की बकरी के साथ तर्जुमा किया गया है।

लफ़्ज़े जिज़आ का इत्लाफ़ मसलके हन्फ़ी में भी छ: माह की बकरी पर किया गया है। देखो तस्हीलुल क़ारी, पारा नं. 4, पेज नं. 400) मगर चार माह की बकरी पर लफ़्ज़े जिज़आ ये खुद मसलके हन्फ़ी के भी ख़िलाफ़ है। कस्तलानी (रह.) ने शहर बुखारी, पेज नं. 117 मत्बूआ नवल किस्वर में है, 'जिज़अतु मिन नल्म अज़िज़ात सनतिन' या'नी जिज़आ एक साल की बकरी को कहा जाता है।

बाब 11 : अय्यामे-तशरीक़ में अमल करने की फ़ज़ीलत का बयान

और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (इस आयत) और अल्लाह तआला का ज़िक्र मा'लूम दिनों में करो। मैं अय्यामे-मा'लूमात से मुराद ज़िल्हिज्जा के दस दिन हैं और अय्यामे-मअदूदात से मुराद अय्यामे-तशरीक़ हैं। इब्ने उमर और अबू हुरैरह (रज़ि.) इन दस दिनों में बाज़ार की तरफ़ निकल जाते और लोग इन बुजुर्गों की तकबीरात सुनकर तकबीर कहते और मुहम्मद बिन बाक़िर (रज़ि.) नफ़ल नमाज़ों के बाद भी तकबीर कहते थे।

١١ - بَابُ فَضْلِ الْعَمَلِ فِي أَيَّامِ

التَّشْرِيقِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَذَكَرُوا أَنَّ فِي أَيَّامِ مَعْلُومَاتٍ ﴿وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامِ مَعْلُومَاتٍ﴾. أَيَّامُ الْعَشْرِ وَالْأَيَّامِ الْمَعْلُودَاتِ : أَيَّامُ التَّشْرِيقِ. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُو هُرَيْرَةَ يَخْرُجَانِ إِلَى السُّوقِ فِي أَيَّامِ الْعَشْرِ يَكْبِرَانِ وَيُكَبِّرُ النَّاسُ بِكَبِيرِهِمَا وَكَبَّرَ مُحَمَّدٌ بْنُ عَلِيٍّ خَلْفَ النَّبَلَةِ.

969. हमसे मुहम्मद बिन अरअरा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने सुलैमान के वास्ते से बयान किया, उनसे

٩٦٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غَزْوَةَ. قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلِيمَانَ عَنْ مُسْلِمٍ

मुस्लिम अल बतीन ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अयास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उन दिनों के अमल से ज्यादा किसी दिन के अमल में फ़ज़ीलत नहीं। लोगों ने पूछा और जिहाद भी नहीं। आपने फ़र्माया कि हाँ जिहाद भी नहीं, सिवा उस शख्स के जो अपनी जान व माल ख़तरे में डालकर निकला और वापस आया तो साथ कुछ भी न लाया। (सब कुछ अल्लाह की राह में कुर्बान कर दिया)

الْبَطْنِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ
عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((مَا الْقَمَلُ فِي أَيَّامٍ
أَفْضَلَ مِنْهَا فِي هَذَا الشَّهْرِ)) . قَالُوا : وَلَا
الْجِهَادُ ؟ قَالَ : ((وَلَا الْجِهَادُ ، إِلَّا رَجُلٌ
خَرَجَ يُخَاطِرُ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فَلَمْ يَرْجِعْ
بِشَيْءٍ)) .

तशरीह : और एक हफ्ती फ़त्वा! ज़िलहिज्जा के पहले अशरा में इबादतें साल के तमाम दिनों की इबादतों से बेहतर है। कहा गया है कि ज़िलहिज्जा के दिन तमाम दिनों में सबसे ज्यादा अफ़ज़ल है और रमज़ान की रातों में से सबसे ज्यादा अफ़ज़ल है। ज़िलहिज्जा के इन दस दिनों की ख़ास इबादत जिस पर सलफ़ का अमल था तक्बीर कहना और रोज़े रखना है। इस इन्वान की तशरीहात में है कि अबू हुरैरह (रज़ि.) और इब्ने उमर (रज़ि.) जब तक्बीर कहते तो आम लोग भी उनके साथ तक्बीर कहते थे और तक्बीरों में मत्लूब भी यही है कि जब किसी कहते हुए को सुने तो आसपास जो भी आदमी हों सब बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहें। (तफ़हीमुल बुखारी) आम तौर पर बिरादराने अहनाफ़ नवी तारीख़ से तक्बीर शुरू करते हैं उनको मा'लूम होना चाहिये कि खुद उनके उलमा की तहकीक़ के मुताबिक़ उनका ये तर्ज़ अमल सलफ़ के अमल के खिलाफ़ है जैसा कि यहाँ साहिबे तफ़हीमुल बुखारी देवबन्दी, हुनफ़ी ने साफ़ लिखा है कि ज़िलहिज्जा के उन दस दिनों में तक्बीर कहना सलफ़ का अमल था (अल्लाह ने क़ौफ़ीक़ दे, आमीन) बल्कि तक्बीरों का सिलसिला अय्यामे तशरीक़ में भी ज़ारी ही रहना चाहिये। जो ग्यारह से तेरह तारीख़ तक के दिन हैं। तक्बीर के अल्फ़ाज़ ये हैं, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लाह; वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिह्लाहिल हम्द और यूँ भी मरवी हैं अल्लाहु अकबर कबीरा वल हम्दुलिह्लाहि कबीरा व सुहानल्लाहि बुकरतव्वअज़ीला

बाब 12 : तक्बीर-मिना के दिनों में और जब नवी तारीख़ को अफ़ात में जाए

और हज़रत उमर (रज़ि.) मिना में अपने डेरे में तक्बीर कहते तो मस्जिद में मौजूद लोग उसे सुनते और वो भी तक्बीर कहने लगते फिर बाज़ार में मौजूद लोग भी तक्बीर कहने लगते और सारा मिना तक्बीर से गूँज उठता। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) मिना में उन दिनों में नमाज़ों के बाद, बिस्तर पर, ख़ेमे में, मजलिस में, रास्ते में और दिन के तमाम ही हिस्सों में तक्बीर कहते थे और उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) दसवीं तारीख़ में तक्बीर कहती थी और औरतें आबान बिन इब्मान और अब्दुल अज़ीज़ के पीछे मस्जिद में मदों के साथ तक्बीर कहा करती थीं।

١٢ - بَابُ التَّكْبِيرِ فِي أَيَّامِ مِنَى،

وَإِذَا غَدَا إِلَى عَرَفَةَ

وَكَانَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُكَبِّرُ فِي قُبَيْبِ
بِئْنَى قَسَمَتُهُ أَهْلُ الْمَسْجِدِ فَيُكَبِّرُونَ
وَيُكَبِّرُ أَهْلُ الْأَسْوَاقِ حَتَّى تَوْتَجَّ مِنَى
تَكْبِيرًا . وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يُكَبِّرُ بِمِئْنَى يَلُكُ
الْأَيَّامِ وَخَلْفَ الصَّلَوَاتِ وَعَلَى فِرَاشِهِ
وَفِي لُسْطَاطِهِ وَمَجْلِسِهِ وَمَمَشَاتِهِ يَلُكُ
الْأَيَّامِ جَمِيعًا . وَكَانَتْ مَيْمُونَةُ تُكَبِّرُ يَوْمَ
النَّخْرِ، وَكُنَّ النِّسَاءُ يُكَبِّرْنَ خَلْفَ أَبَانِ بْنِ
غُثَمَانَ وَعُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْغَزِيرِ لِأَيَّامِ
التَّشْرِيقِ مَعَ الرِّجَالِ فِي الْمَسْجِدِ .

980. हमसे अबू नुरैम ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक बिन अनस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ब्रकफ़ी ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से तल्बिया के मुता'ल्लिक दर्याफ़्त किया कि आप लोग हज़रत नबी करीम (ﷺ) के अहद में उसे किस तरह कहते थे। उस वक़्त हम मीना से अरफ़ात की तरफ़ जा रहे थे। उन्होंने फ़र्माया कि तल्बिया कहने वाले तल्बिया कहते और तकबीर कहने वाले तकबीर। उस पर कोई ए'तिराज़ न करता।

(दीगर मक़ाम : 1609)

٩٧٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْبَكْرِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ - وَنَحْنُ عَادِيَانِ مِنْ مِثَى إِلَى عَرَفَاتٍ - عَنِ التَّلْبِيَةِ: كَيْفَ كُنْتُمْ تَصْنَعُونَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: كَانَ يُتْلَى الْمُتْلَى لَا يُنْكَرُ عَلَيْهِ، وَيُكَبَّرُ الْمَكْبَرُ فَلَا يُنْكَرُ عَلَيْهِ.

[طوله في : ١٦٥٩]

तशरीह : लफ़्ज़े मीना की तहक़ीक़ हज़रत अल्लामा क़स्तलानी (रह.) शारेह बुखारी के लफ़्ज़ों में ये है, 'मीना बिकस्त्रिलमीमि यज़क़रू व युअन्नषु फ़इन्न कस्दल्मौज़इ फ़मुज़क़रून व युक्तबु बिल्अलिफ़ व यन्सरिफ़ व इन कस्दल्बुक्रअति फ़मुअन्नषुन व ला यन्सरिफ़ व युक्तबु बिल्याइ वल्मुअतार तज़कीरुह' या 'नी लफ़्ज़ मीना मीम के ज़ेर के साथ अगर उससे मीना मौज़ाअ मुराद लिया जाए तो ये मज़कूर है और मुन्सरिफ़ है और ये अलिफ़ के साथ मीना लिखा जाएगा और अगर इससे मुराद बुक्रआ (खास मुक़ाम) लिया जाए तो फिर ये मुअन्नषु है और याअ के साथ मीना लिखा जाएगा मगर मुख़तार यही है कि ये मुज़क़र है और मीना के साथ उसकी किताबत बेहतर है। फिर फ़र्माते हैं, 'वसुम्मिय मीना लिमा युम्ना फ़ीहि अय धुराक़ु मिनहिमाइ' या 'नी ये मुक़ाम लफ़्ज़ मीना से इसलिये मौसूम हुआ कि यहाँ खून बहाने का क़द्द होता है।

971. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे इमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने आसिम बिन सुलैमान से बयान किया, उनसे हफ़सा बिन्त सीरीन ने, उनसे उम्मे अतिया ने, उन्होंने फ़र्माया कि (और हज़रत के ज़माने) हमें ईद के दिन ईदगाह में जाने का हुक्म था। कुँआरी लड़कियाँ और हाइज़ा भी पदों में बाहर आती थीं। ये सब मर्दों के पीछे पदों में रहतीं। जब मर्द तकबीर कहते तो ये भी कहतीं और जब वो दुआ करते तो ये भी करतीं। इस दिन की बरक़त और पाकीज़गी हासिल करने की उम्मीद रखतीं। (राजेअ : 324)

٩٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ عَاصِمٍ عَنْ حَفْصَةَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: كُنَّا نُؤَمِّرُ أَنْ نَخْرُجَ يَوْمَ الْعِيدِ، حَتَّى نَخْرُجَ الْبِكْرُ مِنْ عِيْرِهِنَّ، حَتَّى نَخْرُجَ الْحَيْضُ فَهَكُنَّ خَلْفَ النَّاسِ فَهَكُنَّ بِكَبَرِهِمْ وَيَذْهَبُونَ بِدُعَائِهِمْ، يَرْجُونَ بَرَكَةً ذَلِكَ الْيَوْمِ وَطَهْرَةً. [راجع : ٣٢٤]

तशरीह : बाब की मुताबक़त इससे हुई कि ईद के दिन औरतें भी तकबीरें कहती थीं और मुसलमानों के साथ दुआओं में भी शरीक होतीं। दरहक़ीक़त ईदैन की रूह ही बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहने में मुज़्मर है ताकि दुनियावालों को अल्लाह पाक की बड़ाई और बुजुर्गों सुनाई जाए और उसकी अज़मत का सिक्का दिल में बिठाया जाए। आज भी हर मुसलमान के लिये नारा-ए-तकबीर की रूह को हासिल करना ज़रूरी है। मुर्दा दिलों में ज़िन्दगी पैदा होगी। तकबीर के अल्फ़ाज़ ये हैं, अल्लाहु अक़बर कबीरा वल हम्दुलिल्लाहि कबीरा व सुब्हानल्लाहि बुकरतुव्वअसीला या यूँ कहिए अल्लाहु अक़बर, अल्लाहु अक़बर, ला इलाहा इल्लाह; वल्लाहु अक़बर अल्लाहु अक़बर व लिल्लाहिल हम्द

बाब 13 : ईद के दिन बरछी को सुतरा बनाकर नमाज़ पढ़ना

١٣ - بَابُ الصَّلَاةِ إِلَى الْحَرَبَةِ

972. हमसे मुहम्मद बिन बशार ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वट्हाब बक़फ़ी ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह इमरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने ईदुल फ़ितर और ईदुल अज़्हा की नमाज़ के लिये बरछी आगे-आगे उठाई जाती और वो ईदगाह में आपके सामने गाड़ दी जाती। आप उसी की आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ: 494)

तशरीह: क्योंकि ईद मैदान में पढ़ी जाती थी और मैदान में नमाज़ पढ़ने के लिये सुत्रा ज़रूरी है इसलिये छोटा सा नेज़ा ले लेते थे जो सुत्रा के लिये काफ़ी हो सके और उसे आँहुज़ूर (ﷺ) के सामने गाड़ देते थे। नेज़ा इसलिये लेते थे कि उसे गाड़ने में आसानी होती थी। इमाम बुखारी (रह.) इससे पहले लिख आए हैं कि ईदगाह में हथियार न ले जाना चाहिये। यहाँ ये बताना चाहते हैं कि ज़रूरत हो तो ले जाने में कोई मुज़ायक़ा नहीं कि खुद आँहुज़रत (ﷺ) के सुत्रे के लिये नेज़ा ले जाया जाता था। (तफ़्हीमुल बुखारी)

बाब 14 : इमाम के आगे-आगे ईद के दिन अन्जा या हुरबा लेकर चलना

973. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िद हज़ामी ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू इमर और ज़ाई ने बयान किया, कहा कि हमसे नाफ़ेअ ने इब्ने इमर (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने फ़र्माया नबी करीम (ﷺ) ईदगाह जाते तो बरछा (डण्डा जिसके नीचे लोहे का फल लगा हुआ हो) आप (ﷺ) के आगे-आगे ले जाया जाता था, फिर ये ईदगाह में आप (ﷺ) के सामने गाड़ दिया जाता और आप (ﷺ) उसकी आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ: 494)

तशरीह: ऊपर गुज़र चुकी है। इससे ये भी प्राबित हुआ कि आँहुज़रत (ﷺ) ईदन की नमाज़ जंगल (मैदान) में पढ़ा करते थे। पस मसनून यही है जो लोग बिला रुज़ बारिश वगैरह के मस्जिद में ईदन की नमाज़ पढ़ते हैं वो सुन्नत के प्रवाब से महरूम रहते हैं।

बाब 15 : औरतों और हैज़ वालियों का ईदगाह में जाना

974. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वट्हाब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे मुहम्मद ने, उनसे उम्मे अतिया (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि पर्दा वाली दो शैज़ाओं को ईदगाह के लिये निकालें और अय्यूब सुखितयानी ने हफ़सा (रज़ि.) से भी इसी तरह रिवायत की है। हफ़सा (रज़ि.) की

٩٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا غُثَيْبٌ أَنَّ اللَّهَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُرَكِّزُ لَهُ الْحَرَبَةَ قُدَّامَهُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ، ثُمَّ يُصَلِّي. [راجع: ٤٩٤]

١٤- بَابُ حَمْلِ الْعَنْزَةِ - أَوْ الْحَرَبَةِ بَيْنَ يَدَيِ الْإِمَامِ يَوْمَ الْعِيدِ
٩٧٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرِو قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَذْهَبُ إِلَى الْمُصَلَّى وَالْعَنْزَةِ بَيْنَ يَدَيْهِ لِحَمْلِهَا وَتُغْنِيهِ بِالنَّحْلِ بَيْنَ يَدَيْهِ، لِمُصَلَّى إِلَيْهَا. [راجع: ٤٩٤]

١٥- بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ وَالْحَيْضِ إِلَى الْمُصَلَّى
٩٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ غَطِيَّةٍ قَالَتْ: أَمَرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْعَوَائِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ. وَعَنْ أَيُّوبَ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ خُوَيْلٍ وَزَادَ فِي حَدِيثِ

हदीष में ये ज्यादाती है कि दोशीज़ाएँ (लड़कियाँ) और पर्देवालियाँ ज़रूर (ईदगाह जाएँ) और हाइज़ा नमाज़ की जगह से अलग रहें।

(राजेअ: 324)

خَفْصَةُ قَالَتْ: أَوْ قَالَتْ: الْمَوَائِقُ وَفَوَاتِ الْخُدُورِ، وَيَقْتَرِنُ الْحَيْضُ الْمُصَلَّى.

[راجع: ٣٢٤]

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने औरतों के ईदैन में शिर्कत करने के बारे में तफ़सील से सहीह अहदीष को नक़ल किया है जिनमें कुछ कोलो-क़ाल की गुंजाइश नहीं। अनेक रिवायतों में मौजूद है कि आँहज़रत (ﷺ) अपनी तमाम बीवियों और साहिबज़ादियों को ईदैन के लिये निकालते थे यहाँ तक कि फ़र्मा दिया कि हैज़ वाली भी निकलें और वो नमाज़ से दूर रहकर मुसलमानों की दुआओं में शिर्कत करें और वो भी निकलें जिनके पास चादर न हों। चाहिये कि उनकी हमजोलियाँ उनको अपनी चादर या दुपट्टा दे दें। बहरहाल औरतों का ईदगाह में शिर्कत करना एक अहमतरिनी सुन्नत और इस्लामी शिआर है जिससे शौकते इस्लाम का मुज़ाहिदा (प्रदर्शन) होता है और मर्द-औरत और बच्चे मैदाने ईदगाह में अल्लाह के सामने सज्दा-रेज़ होकर दुआएँ करते हैं जिनमें से किसी एक की भी दुआ अगर कुबूलियत का दर्ज़ा हासिल कर ले तो आम हाज़िरीन के लिये बाज़िअे स़द बरकत हो सकती है।

इस बारे में कुछ लोगों ने फ़र्ज़ी शुक्क व शुब्हात और मफ़रूज़ा ख़तरात की बिना पर औरतों का ईदगाह में जाना मकरूह करार दिया है मगर ये सारी मफ़रूज़ा (फ़र्ज़ी) बातें हैं जिनकी शरअन कोई असल नहीं है। ईदगाह के मुंतज़िमीन का फ़र्ज़ है कि वो पर्दे का इंतज़ाम करें और हर फ़साद व ख़तरात के इमेदाद (रोकने) के लिये पहले ही से बन्दोबस्त कर ले।

हज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) ने इस बारे में मुफ़स्सल व मुदल्लल बहष के बाद फ़र्माया है, 'अम्मा फ़ी मअनाहू मिनलअहदीष काजियतुन बिमशरूइयति खुरुजिन्नाइ फ़िल्इदैन इल्लमुसल्ला मिन ग़ैर फ़र्किन बैनल्बकिर वषषय्यिबि वशशाब्बति वलअज़्ज़ि वल्हाइज़ि व ग़ैरहा मालम तकुन मुअतहतुन औ कान फ़ी खुरुजिहा फ़ितनतुन औ कान लहा उज़ून' या 'नी अहदीष इसमें फ़ैसला दे रही हैं कि औरतों को ईदैन में मर्दों के साथ ईदगाह में शिर्कत करना मशरूअ है। और इस बारे में शादीशुदा और कुंवारी और बूढ़ी और जवान और हाइज़ा वग़ैरह का कोई इम्तियाज़ नहीं है जब तक उनमें से कोई इद्दत में न हो या उनके निकलने में कोई फ़िन्ने का डर न हो या कोई और उज़ून न हो तो बिला शक़ तमाम मुसलमान औरतों को ईदगाह में जाना मशरूअ हैं। फिर फ़र्माते हैं, 'वलक़ौलु बिकराहि्यतिलख़ुरुजि अललइत्तलाकि रहुन लिलअहदीषिन्महीहति बिलअराइल्फ़ासिदति' या 'नी मुत्लक़न औरतों के लिये ईदगाह में जाने को मकरूह करार देना या अपनी फ़ासिद रायों की बिना पर अहदीष सहीहा को रह करना है।

आजकल के जो इलमा ईदैन में औरतों की शिर्कत को नाजाइज़ करार देते हैं उनको इतना ग़ौर करने की तौफ़ीक़ नहीं होती कि यही मुसलमान औरतें बेतहाशा बाज़ारों में आती-जाती हैं; मेलों-उर्सों में शरीक होती हैं और बहुत सी ग़रीब औरतें जो मेहनत मज़दूरी करती हैं। जब उन सारे हालात में ये मफ़ासिदे मफ़रूज़ा से बालातर हैं तो ईदगाह की शिर्कत में जबकि वहाँ जाने के लिये बापर्दा और बाअदब होना ज़रूरी है कौनसे फ़र्ज़ी ख़तरात का तसव्वुर करके उनके लिये अदमे-जवाज़ का फ़त्वा लगाया जा सकता है।

शौख़ल हदीष हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब मुबारकपुरी दामत फ़ैजुहू फ़र्माते हैं, औरतों का ईदगाह में ईद की नमाज़ के लिये जाना सुन्नत है। शादीशुदा हों या कुंवारी, जवान हो या अधेड़ हो या बूढ़ी। 'अन उम्मि अतिव्यत अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) कान युख़िरजुल अब्कार वलअवातिक व ज़वातिलख़ुदूरि वल्हुय्यज़ु फ़िल्इदैन फ़ाम्मल्हुय्यज़ु लयअतज़िल्लल मुसल्ला व यशहदन दअवतल मुस्लिमीन क़ालत इहदाहुन्न या रसूलल्लाहि इल्लम यकुल्लहा जल्बाबुन क़ाल फ़लितुसिर्हा उख़तहा मिन जल्बाबिहा' (सहीहैन वग़ैरह) आँहज़रत (ﷺ) ईदैन में दोशीज़ा, जवान कुंवारी, हैज़वाली औरतों को ईदगाह जाने का हुक्म देते थे। हैज़वाली औरतें नमाज़ से अलग रहतीं और मुसलमानों की दुआओं में शरीक रहतीं। एक औरत ने कहा कि अगर किसी औरत के पास चादर न हो तो आपने फ़र्माया कि उसकी मुसलमान बहन

अपनी चादर में ले जाए। जो लोग कराहत के कायल हैं या जवान या बूढ़ी के बीच फर्क करते हैं दरअसल वो सहीह हदीष को अपनी फ़ासिद और बातिल रायों से रद्द करते हैं। हाफ़िज इब्ने हज़र (रह.) फ़तहुल बारी में और इब्ने हज़म ने अपनी मुहल्ला में बित्तफ़सील मुखालिफ़ीन के जवाबात ज़िक्र किये हैं। औरतों को ईदगाह में सख़्त पर्दा के साथ बग़ैर किसी किस्म की खुशबू लगाए और बग़ैर बजने वाले ज़ेवर और ज़ीनत के लिबास के जाना चाहिये ताकि फ़िल्ने का सबब न बनें। 'क़ाल शैख़ुना फ़ी शर्हि त्तिर्मिज़ी अला मन इल्ख़ुरूजि इललइदि लिशशवाब्बि मअलअमनि मिनल्मफ़ासिदि मिम्मा हदथ्न् फ़ी हाज़ज़मानि बल हुब मशरूउन लहुन्न व हुवलक़ौलुराज़िह इन्तिहा' या 'नी अमन की हालत में जवान औरतों को शिर्कते ईदैन से रोकना उसके बारे में मानेईन (मना करने वालों) के पास कोई दलील नहीं है बल्कि वो मशरूअ है और क़ौले राज़ेह यही है।

बाब 16 : बच्चों का ईदगाह जाना

١٦- بَابُ خُرُوجِ الصِّبْيَانِ إِلَى الْمَسْجِدِ

975. हमसे इमर बिन अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुरह्मान बिन महदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ब़ौरी ने अब्दुरह्मान बिन आबिस से बयान किया, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने ईदुल फ़ितर या ईदुल अज़हा के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ने के बाद खुत्बा दिया फिर औरतों की तरफ़ आए और उन्हें नज़ीहत फ़र्माई और स़दके के लिये हुक्म फ़र्माया। (राज़ेअ : 98)

٩٧٥ - حَدَّثَنَا عُثْمَرُ بْنُ عَبَّاسٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ : خَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ فِطْرٍ أَوْ أَضْحَى، فَصَلَّى الْعِيدَ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعظَهُنَّ وَذَكَرَهُنَّ، وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ. [راجع : ٩٨]

बाब 17 : इमाम ईद के खुत्बे में लोगों की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो

١٧- بَابُ اسْتِقْبَالِ الْإِمَامِ النَّاسَ فِي خُطْبَةِ الْعِيدِ

976. हमसे अबू नुऐम फुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन त़लहा ने बयान किया, उनसे ज़ैद ने, उनसे शुअबी ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ईदुल अज़हा के दिन बक़ीअ की तरफ़ तशरीफ़ ले गये और दो रकअत ईद की नमाज़ पढ़ाई। फिर हमारी तरफ़ चेहर-ए-मुबारक करके फ़र्माया कि सबसे मुक़द्दम इबादत हमारे इस दिन की ये है कि पहले हम नमाज़ पढ़ें, फिर (नमाज़ और खुत्बे से लौट) कर कुर्बानी करें। इसलिये जिसने इस तरह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया तो वो ऐसी चीज़ है जिसे उसने अपने घरवालों के खिलाने के लिये जल्दी से मुहैया कर दिया है और उसका कुर्बानी से कोई ता'ल्लुक नहीं। इस पर एक शख़्स ने खड़े होकर अर्ज किया कि

٩٧٦ - حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنْ زَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ : خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أَضْحَى إِلَى بَقْعٍ فَصَلَّى الْعِيدَ رَكَعَتَيْنِ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ وَقَالَ : ((إِنَّ أَوَّلَ نَسْكَائِنَا فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نَبْدَأَ بِالصَّلَاةِ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَسْجُرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ وَافَقَ مُسْتَأً، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ ذَلِكَ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْءٌ عَجَلَةٌ لِأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النَّسْكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي ذَبَحْتُ

या सूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने तो पहले ही ज़िबह कर दिया लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है और वो दो-दंती बकरी से ज़्यादा बेहतर है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ैर तुम उसी को ज़िबह कर लो लेकिन तुम्हारे बाद किसी की तरफ़ से ऐसी पठिया जाइज़ न होगी। (राजेअ: 951)

सवाल करने वाले अबू बुर्दा बिन नयार अंसारी थे। हदीष और बाब में मुताबकत ज़ाहिर है।

बाब 18 : ईदगाह में निशान लगाना

या'नी कोई ऊँची चीज़ जैसे लकड़ी वगैरह उससे ये ग़र्ज़ थी कि ईदगाह का मक़ाम मा'लूम रहे।

977. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने सुफ़यान प्रौरी से बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुरहमान बिन आबिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना। उनसे दरयाफ़्त किया गया था कि आप नबी करीम (ﷺ) के साथ ईदगाह गये थे? उन्होंने फ़र्माया कि हाँ! और अगर बावजूद कमउम्री के मेरी क़द्रो-मन्ज़िलत आपके यहाँ न होती तो मैं जा नहीं सकता था। आप उस निशान पर आए जो क़प्पीर बिन सुलत के घर के करीब है। आपने वहाँ नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत्बा सुनाया। उसके बाद औरतों की तरफ़ आए, आप के साथ बिलाल (रज़ि.) भी थे। आप (ﷺ) ने उन्हें वा'ज और नस्तीहत की और मदक़ा के लिये कहा। चुनाँचे मैंने देखा कि औरतें अपने हाथों से बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डाले जा रही थीं। फिर आँहज़रत (ﷺ) और बिलाल (रज़ि.) घर वापस हुए।

(राजेअ: 98)

क़प्पीर बिन सुलत का मकान आँहज़रत (ﷺ) के बरिद बनाया गया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने लोगों को ईदगाह का मकान बताने के लिये उसका पता दिया।

बाब 19 : इमाम का ईद के दिन औरतों

को नस्तीहत करना

978. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम बिन नसर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुरज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अता ने ख़बर दी कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) को मैंने ये कहते सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल फ़ितर की नमाज़ पढ़ी। पहले आपने नमाज़ पढ़ी उसके

وَعِنْدِي جِلْدَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسْبَةِ. قَالَ: ((الْبَهْجَةُ، وَلَا تَلْفِي عَنْ أَحَدٍ بِعَدْلِكَ)).

[راجع: 951]

۱۸- بَابُ الْعَلَمِ الَّذِي بِالْمُصَلِّي

۹۷۷ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَاصِمٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قِيلَ لَهُ : أَشْهَدْتَ الْعِيدَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ؟ قَالَ : نَعَمْ ، وَلَوْ لَا مَكَائِلِي مِنَ الصَّغَرِ مَا شَهِدْتُهُ ، حَتَّى أَتَى الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيرِ بْنِ الْبُصْتِ لَصَلَّى ثُمَّ خَطَبَ ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلَالٌ فَوَعَّظَهُنَّ وَذَكَرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ فَأَرَاتَهُنَّ يَهُودِينَ بِأَيْدِيَهُنَّ يَقْلِقُهُ فِي قُوبِ بِلَالٍ ، ثُمَّ انْطَلَقَ هُوَ وَبِلَالٌ إِلَى بَيْتِهِ .

[راجع: 98]

۱۹- بَابُ مَوْعِظَةِ الْإِمَامِ النَّسَاءِ

يَوْمَ الْعِيدِ

۹۷۸ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ نَصْرِ قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ : أَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ : سَمِعْتُهُ يَقُولُ : [قَامَ

बाद खुत्बा दिया। जब आप खुत्बे से फ़ारिग हो गये तो उतरे और औरतों की तरफ़ आए। फिर उन्हें नज़ीहत फ़र्माई। आप (ﷺ) उस वक़्त बिलाल (रज़ि.) के हाथ का सहारा लिये हुए थे। बिलाल (रज़ि.) ने अपना कपड़ा फैला रखा था जिसमें औरतें मद्क़ा डाल रही थीं, मैंने अता से पूछा क्या वे मद्क़-ए-फ़ितर दे रही थीं? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं बल्कि वो मद्क़े के तौर पर दे रही थीं। उस वक़्त औरतें अपने छल्ले (वग़ैरह) बराबर डाल रही थीं। फिर मैंने अता से पूछा कि क्या आप अब भी इमाम पर इसका हक़ जानते हैं कि वो औरतों को नज़ीहत करे? उन्होंने फ़र्माया, हाँ! उन पर ये हक़ है और क्या वजह है कि वो ऐसा नहीं करते।

(राजेअ: 958)

989. इब्ने जुरैज ने कहा कि हसन बिन मुस्लिम ने मुझे ख़बर दी, उन्हें त्राऊस ने, उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि मैं नबी करीम (ﷺ) और अबूबक्र, उमर और उस्मान (रज़ि.) के साथ ईदुल फ़ितर की नमाज़ पढ़ने गया हूँ। ये सब हज़रात खुत्बे से पहले नमाज़ पढ़ते और बाद में खुत्बा देते थे। नबी करीम (ﷺ) उठे, मेरी नज़रों के सामने वो मंज़र है, जब आप (ﷺ) लोगों को हाथ के इशारे से बिठा रहे थे। फिर आप सफ़ों से गुज़रते हुए औरतों की तरफ़ आए। आप के साथ बिलाल थे। आप (ﷺ) ने ये आयत तिलावत फ़र्माई। ऐ नबी (ﷺ)! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें बैअत के लिये आएँ अल्लाया। फिर जब खुत्बे से फ़ारिग हुए तो फ़र्माया कि क्या तुम इन बातों पर कायम हो? एक औरत ने जवाब दिया कि हाँ! उनके अलावा कोई औरत न बोली, हसन को मा'लूम नहीं कि बोलने वाली खातून कौन थी? आप (ﷺ) ने ख़ैरात के लिये हुक्म फ़र्माया और बिलाल (रज़ि.) ने अपना कपड़ा फैला दिया और कहा कि लाओ! तुम पर मेरे माँ-बाप फ़िदा हों। चुनाँचे औरतें छल्ले और अंगूठियाँ बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डालने लगीं। अब्दुर्रज़ाक़ ने कहा फ़त्ख़ बड़े छल्ले को कहते हैं, जिसका जहालत के ज़माने में इस्ते'माल होता

النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الْفِطْرِ لَمَلَى، فَبَدَأَ بِالصَّلَاةِ ثُمَّ خَطَبَ. فَلَمَّا فَرَغَ نَزَلَ فَاتَى النِّسَاءَ فَذَكَرَهُنَّ وَهُوَ يَتَوَكَّمُ عَلَى يَدِ بِلَالٍ، وَبِلَالٌ بِاسِطٌ قُوَّةً يُلْقِي فِيهِ النِّسَاءُ الصَّدَقَةَ. قُلْتُ لِعَطَاءٍ: رَكَاةُ يَوْمِ الْفِطْرِ؟ قَالَ: لَا، وَلَكِنْ صَدَقَةٌ يَتَصَدَّقُونَ حِينَئِذٍ: تُلْقِي لَتَحْجَهَا وَتُلْقِينَ. قُلْتُ لِعَطَاءٍ أَتَرَى حَقًّا عَلَى الْإِمَامِ ذَلِكَ وَيَذَكُرُهُنَّ؟ قَالَ: إِنَّهُ لِحَقٌّ عَلَيْهِمْ، وَمَا لَهُمْ لَا يَقَعُّونَهُ؟

[راجع: ٩٥٨]

٩٧٩- قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: وَأَخْبَرَنِي الْخَسَنُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((حَدَّثَنِي الْفِطْرُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ يُصَلُّونَهَا قَبْلَ الْخُطْبَةِ، ثُمَّ يُخْطَبُ بَعْدُ. خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ حِينَ يُجْلِسُ يَدَيْهِ. ثُمَّ أَقْبَلَ يَشْفُهُمْ حَتَّى آتَى النِّسَاءَ مَعَ بِلَالٍ فَقَالَ: ((هَبَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يَبَايَعُكَ)) الْآيَةُ. ثُمَّ قَالَ حِينَ فَرَغَ مِنْهَا: ((أَتَنْتَ عَلَى ذَلِكَ؟)) فَقَالَتِ امْرَأَةٌ وَاحِدَةً مِنْهُنَّ - لَمْ يُجِبْهُ غَيْرُهَا - : نَعَمْ. لَا يَنْدِرِي حَسَنٌ مِنْ هِيَ. قَالَ: ((تَصَدَّقْنَ)) فَسَطَّ بِلَالٌ قُوَّةً ثُمَّ قَالَ: هَلُمَّ، لَكُنَّ فِدَاءُ أَبِي وَأُمِّي. فَتَلَقَيْنَ الْفَتْخَ وَالْخَوَائِمَ فِي نَوْبِ بِلَالٍ. قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: الْفَتْخُ: الْخَوَائِمُ الْعِظَامُ

था। (राजेअ : 57)

كَانَتْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. [راجع: ٥٧]

तशरीह: अगरचे ज़मान-ए-नबवी में ईदगाह के लिये कोई इमारत नहीं थी और जहाँ ईदैन की नमाज़ पढ़ी जाती थी वहाँ कोई मिम्बर भी नहीं था लेकिन इस लफ्ज़ फ़लम्मा फ़रज़ नज़लह से मा'लूम होता है कि कोई बुलन्द जगह थी जिस पर आप (ﷺ) खुत्बा देते थे।

आँहुज़ूर (ﷺ) मदों के सामने खुत्बा दे चुके तो लोगों ने समझा कि अब खुत्बा ख़त्म हो गया है और उसे वापस जाना चाहिये। चुनाँचे लोग वापसी के लिये उठे लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें हाथ के इशारे से रोका कि अभी बैठे रहें क्योंकि आप (ﷺ) औरतों को खुत्बा देने जा रहे थे। दूसरी रिवायतों से मा'लूम होता है कि जवाब देने वाली ख़ातून अस्मा बिनते यज़ीद थीं जो अपनी फ़साहत व बलागत की वजह से ख़तीबतुन्निसा के नाम से मशहूर थीं। उन्हीं की एक रिवायत में है कि जब नबी करीम (ﷺ) औरतों की तरफ़ आए तो मैं भी उनमें मौजूद थी। आपने फ़र्माया कि औरतों तुम जहन्नम का ईधन ज़्यादा बनोगी। मैंने आप (ﷺ) को पुकारकर कहा, क्योंकि मैं आपके बहुत करीब थी, क्यों या रसूलल्लाह! ऐसा क्यों होगा? आपने फ़र्माया इसलिये कि तुम लोग लान-तान बहुत ज़्यादा करती हो और अपने शौहर की नाशुकी करती हो।

**बाब 20 : अगर किसी औरत के पास ईद के दिन
दुपट्टा (चादर) न हो**

٢٠- بَابُ إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ
فِي الْعِيدِ

980. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब सुखितयानी ने हफ़्सा बिनत सीरीन के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि हम अपनी लड़कियों को ईदगाह जाने से मना करते थे। फिर एक ख़ातून बाहर से आई और क़त्ने बनू ख़लफ़ में उन्होंने क़याम किया कि उनकी बहन के शौहर नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह लड़ाइयों में शरीक रहे और खुद उनकी बहन अपने शौहर के साथ छह लड़ाइयों में शरीक हुई थीं। उनका बयान था कि हम मरीज़ों की ख़िदमत किया करते थे और जख़्मियों की मरहम-पट्टी करते थे। उन्होंने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम में से अगर किसी के पास चादर न हो और उसकी वजह से ईद के दिन (ईदगाह) न जा सकें तो कोई हर्ज है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी सहेली अपनी चादर का एक हिस्सा उसे ओढ़ा दे और फिर वो ख़ैर और मुसलमानों की दुआ में शरीक हों। हफ़्सा ने बयान किया कि फिर जब उम्मे अत्रिया यहाँ तशरीफ़ लाई तो मैं उनकी ख़िदमत में भी हाज़िर हुई और दरयाफ़्त किया कि आपने फ़लाँ-

٩٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ قَالَتْ: ((كُنَّا نَمْنَعُ جَوَارِيَنَا أَنْ يَخْرُجْنَ يَوْمَ الْعِيدِ، فَجَاءَتْ امْرَأَةٌ فَتَوَلَّتْ قَصْرَ بَنِي خَلْفٍ، فَأَتَيْتُهَا، فَحَدَّثَتْ أَنْ زَوْجَ أَخِيهَا غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِنِي عَشْرَةَ غَزَوَاتٍ، فَكَانَتْ أُخْتُهَا مَعَهُ فِي سِتِّ غَزَوَاتٍ، قَالَتْ: فَكُنَّا نَقُومُ عَلَى الْمَرْضَى، وَنُدَاوِي الْكَلْمَى. فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، عَلَى إِخْدَانَا بَأْسٌ - إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ - أَنْ لَا تَخْرُجَ؟ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا، فَلْيَسْهَدْهُنَ الْخَيْرَ وَدَعُوهُنَّ الْمُؤْمِنِينَ)). قَالَتْ حَفْصَةُ: فَلَمَّا لَبِيتُ أُمَّ عَطِيَّةَ أَتَيْتُهَا فَسَأَلْتُهَا: أَسَمِعْتِ فِي كَذَا وَكَذَا؟

फलों बात सुनी है। उन्होंने फ़र्माया कि हौं! मेरे माँ-बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हो। उम्मे अतिया (रज़ि.) जब भी नबी करीम (ﷺ) का ज़िक्र करती तो ये ज़रूर कहती कि मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हो, हौं! तो उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जवान पदेवाली या जवान और पदे वाली बाहर निकलें। शुब्हा अय्यूब को था। अलबत्ता हाइज़ा औरतें ईदगाह से अलग होकर बैठें, उन्हें ख़ैर और मुसलमानों की दुआ में ज़रूर शरीक होना चाहिये। हप्सा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उम्मे अतिया (रज़ि.) से दरयाफ्त किया कि हाइज़ा औरतें भी? उन्होंने फ़र्माया क्या हाइज़ा औरतें अरफ़ात नहीं जातीं और क्या वो फलों-फलों जगहों में शरीक नहीं होतीं। (फिर इज्तेमाअे-ईद ही की शिकत में कौनसी क़बाहत है)

(राजेअ: 324)

قَالَتْ: نَعَمْ، بَابِي - وَقَلْنَا ذَكَرْتَ النَّبِيَّ ﷺ إِلَّا قَالَتْ: بَابِي - قَالَ: ((لِيُخْرِجَ الْفَوَاقِ ذَوَاتِ الْخُلُورِ - أَوْ قَالَ: الْفَوَاقِ وَذَوَاتِ الْخُلُورِ، هَكَذَا يُؤْبَى - وَالْحَيْضُ، تَغْتَرِلُ الْحَيْضُ الْمُصَلِّي، وَلَيَسْهَنُ الْخَيْرَ. وَذَعْوَةُ الْمُؤْمِنِينَ)). قَالَتْ: فَقُلْتُ لَهَا: الْحَيْضُ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَلَيْسَ الْحَايِضُ تَشْهَدُ عَرَفَاتٍ وَتَشْهَدُ كَذَا وَتَشْهَدُ كَذَا؟

[راجع: 324]

तशरीह: हप्सा (रज़ि.) के सवाल की वजह ये थी कि जब हाइज़ा पर नमाज़ ही फ़र्ज नहीं और न वो नमाज़ पढ़ सकती है तो ईदगाह में उसकी शिकत से क्या फ़ायदा होगा? इस पर हज़रत उम्मे अतिया (रज़ि.) ने कहा कि जब हैज़ वाली अरफ़ात और दीगर मुकामाते मुकद्दसा में जा सकती है और जाती हैं तो ईदगाह में क्यों न जाएँ? इस जवाब पर आजकल के उन हज़रात को ग़ौर करना चाहिये जो औरतों का ईदगाह में जाना नाजाइज़ करार देते हैं और उसके लिये सौ हीले और बहाने तलाशते हैं, हालाँकि मुसलमानों की औरतें मेलों में और फ़िस्को-फ़ुजूर में धड़ल्ले से शरीक होती हैं।

ख़ुलासा ये है कि हैज़वाली औरतों को भी ईदगाह जाना चाहिये और वो नमाज़ से अलग रहें मगर दुआओं में शरीक हों। इससे मुसलमानों की इज्तिमाई दुआओं की अहमियत भी प्राबित होती है। बिला शक़ दुआ मोमिन का हथियार है और जब मुसलमान मर्द-औरत मिलकर दुआ करें तो न मा' लूम किस की दुआ कुबूल होकर तमाम अहले इस्लाम के लिये बाअिषे बरकत हो सकती है। बहालाते मौजूदा जबकि मुसलमान हर तरफ़ से मसाइब (परेशानियों) का शिकार हैं, बिज़रूर दुआओं का सहारा ज़रूरी है। इमामे ईद का फ़र्ज है कि ख़ुशू अ व ख़ुजू अ के साथ इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये दुआएँ करे। ख़ास तौर पर कुआनी दुआएँ ज़्यादा मुअ्षिर (प्रभावशाली) हैं; फिर अह्दादीष में भी बड़ी पाकीज़ा दुआएँ वारिद हुई हैं। उनके बाद सामेईन की मादरी जुबान (मातृभाषा) में भी दुआएँ की जा सकती है। (वबिल्लाहि तौफ़ीक़)

बाब 21 : हाइज़ा औरतें ईदगाह से अलग रहें

981. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन इब्राहीम इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने कि उम्मे अतिया (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि हाइज़ा औरतों, दोशीज़ाओं और पदेवालीयों को ईदगाह ले जाएँ... इब्ने औन ने कहा कि या (हदीष) में पदेवाली दोशीज़ाएँ हैं। अलबत्ता

٢١- بَابُ اغْتِرَالِ الْحَيْضِ بِالْمُصَلِّي

٩٨١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ ابْنِ عَرُونَ عَنْ مُحَمَّدٍ قَالَ: قَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ: أَمَرْنَا أَنْ نَخْرُجَ لِنُخْرِجَ الْحَيْضَ وَالْفَوَاقِ وَذَوَاتِ الْخُلُورِ - قَالَ ابْنُ عَرُونَ: أَوْ الْفَوَاقِ

हाइज़ा और तें मुसलमानों की जमाअत और दुआओं में शरीक हो और (नमाज़ से) अलग रहें।

(राजेअ : 324)

बाब 22 : ईदुल अज़हा के दिन ईदगाह में

नहर और जिबह करना

982. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमसे लैज़ ने बयान किया, कहा कि मुझ से क़शीर बिन फ़रक़द ने नाफ़ेअ से बयान किया, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईदगाह ही में नहर और जिबह किया करते।

(दीगर मुक़ामात : 1710, 1711, 5551, 5552)

नहर कूँट का होता है बाक़ी जानवरों को लिटाकर जिबह करते हैं। कूँट को खड़े-खड़े उसके सीने में खंज़र मार देते हैं। उसका नाम नहर है। कुर्बानी शआइरे इस्लाम (इस्लाम की निशानियों) में से है। हस्बे मौक़ा व महल बिला शुबहा ईदगाह में भी नहर और कुर्बानी मसनून है। मगर बहालालते मौजूदा अपने घरों या मुक़रर मुक़ामात पर ये सुन्नत अदा करनी चाहिये। हालात की मुनासबत के लिये इस्लाम में गुंजाइश रखी गई है।

बाब 23 : ईद के ख़ुत्बे में इमाम का और लोगों का बातें करना

और इमाम का जवाब देना जब ख़ुत्बे में उससे कुछ पूछा जाए

983. हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबुल अहवज़ सलाम बिन सलीम ने बयान किया, कहा कि हमसे मन्सूर बिन मुअतमिर ने बयान किया कि उनसे आमिर शुअबी ने, उनसे बराअ बिन अज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक्र ईद के दिन नमाज़ के बाद ख़ुत्बा सुनाया और फ़र्माया कि जिसने हमारी तरह की नमाज़ पढ़ी और हमारी तरह की कुर्बानी की, उसकी कुर्बानी दुरुस्त हुई। लेकिन जिसने नमाज़ से पहले कुर्बानी की तो वो ज़बीहा सिर्फ़ गोश्त खाने के लिये होगा। इस पर अबू बुर्दा बिन नयार ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) क़सम अल्लाह की! मैंने तो नमाज़ के लिये आने से पहले कुर्बानी कर ली, मैंने ये समझा कि आज का दिन खाने-पीने का दिन है,

ذَوَاتِ الْخُدُورِ - فَأَمَّا الْحَيْضُ فَيُشْهَدْنَ جَمَاعَةُ الْمُسْلِمِينَ وَدُظُوتِهِمْ وَتَمْتَرُنَ مُصَلَّاهُمْ. [راجع : 324.]

۲۲- بَابُ النَّحْرِ وَالذَّبْحِ بِالمُصَلَّى

يَوْمَ النَّحْرِ

۹۸۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي كَثِيرُ بْنُ فَرْقَدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْحَرُ - أَوْ يَذْبَحُ - بِالمُصَلَّى)).

[أطرافه ي : ۱۷۱۰، ۱۷۱۱، ۵۵۵۱]

[۵۵۵۲]

۲۳- بَابُ كَلَامِ الْإِمَامِ وَالنَّاسِ فِي

عُطْبَةِ الْعِيدِ

وَإِذَا سُئِلَ الْإِمَامُ عَنْ شَيْءٍ وَهُوَ يَعْطُبُ ۹۸۳- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْأَخْوَصِ قَالَ: حَدَّثَنَا مَنصُورُ بْنُ الْمُخَوَّرِ عَنْ الشَّعْبِيِّ عَنْ الثَّوْرِيِّ عَنْ عَارِبٍ قَالَ: عَطَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ بَعْدَ الصَّلَاةِ وَ قَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا، وَتَسَكَتَ تَسَكُّتَنَا، فَقَدْ أَصَابَ التَّسَكُّ. وَمَنْ تَسَكَتَ قَبْلَ الصَّلَاةِ فَلَيْتَ شَاءَ لَعْنَمُ)).

فَقَامَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ يَنَابِرٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَاهُ لَقَدْ تَسَكَّتُ قَبْلَ أَنْ أُنْزَجَ

इसलिये मैंने जल्दी की और खुद भी खाया और घरवालों को और पड़ौसियों को भी खिलाया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि बहरहाल ये गोश्त (खाने का) हुआ (कुर्बानी नहीं) उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पास एक बकरी का सालभर का बच्चा है वो दो बकरियों के गोश्त से ज़्यादा बेहतर है। क्या मेरी (तरफ़ से उसकी) कुर्बानी दुरुस्त होगी? आपने फ़र्माया कि हाँ! मगर तुम्हारे बाद किसी की तरफ़ से ऐसे बच्चे की कुर्बानी काफ़ी न होगी।

(राजेअ: 951)

إِلَى الصَّلَاةِ، وَهَرَفْتُ أَنْ الْيَوْمَ يَوْمٌ أَكُلُ وَشَرِبُ، فَتَعَجَّلْتُ، وَأَكَلْتُ وَأَطْعَمْتُ أَهْلِي وَجِيرَانِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((بَلَّكَ شَاءَ لَحْمٍ)). قَالَ: فَإِنْ جِئْتَنِي عَنَاقَ جَذَعَةٍ لَيْمٍ خَيْرٌ مِنْ شَاتِي لَحْمٍ، لَهْلٌ تَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: ((لَعَمْ، وَلَنْ تَجْزِي عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)) [راجع: ٩٥١].

इससे ये प्राबित फ़र्माया कि इमाम और लोग ईद के खुत्बे में मसाइल की बात कर सकते हैं और आगे के फ़िक्रों से ये प्राबित होता है कि खुत्बे की हालत में अगर इमाम से कोई शख्स मसला पूछे तो वो जवाब दे।

984. हमसे हामिद बिन उमर ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब सुख्तियानी ने, उनसे मुहम्मद ने, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ पढ़कर खुत्बा दिया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख्स ने नमाज़ से पहले जानवर ज़िबह कर लिया उसे दोबारा कुर्बानी करनी होगी। इस पर अन्सार में से एक सहाबी उठे कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे कुछ ग़रीब-भूखे पड़ौसी हैं या यूँ कहा कि वो मुहताज हैं। इसलिये मैंने नमाज़ से पहले ज़िबह कर दिया अलबत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है जो दो बकरियों के गोश्त से भी ज़्यादा मुझे पसन्द है। आप (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दे दी। (राजेअ: 954)

٩٨٤ - حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: ((إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى يَوْمَ النُّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ فَأَمَرَ مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلَاةِ أَنْ يُعِيدَ ذَبْحَهُ. فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، جِيرَانِي لِي - إِمَّا قَالَ: بِهِمْ خَصَاصَةٌ، وَإِمَّا قَالَ: بِهِمْ فَفَرَّ - وَإِنِّي ذَبَحْتُ قَبْلَ الصَّلَاةِ، وَجِئْتُكَ عَنَاقَ لِي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتِي لَحْمٍ. فَرَّخَصَ لَهُ فِيهَا)). [راجع: ٩٥٤]

985. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन कैस ने, उनसे जुन्दब ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ पढ़ाने के बाद खुत्बा दिया फिर कुर्बानी की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने नमाज़ से पहले ज़िबह कर लिया हो तो उसे दूसरा जानवर बदले में कुर्बानी करना चाहिये और जिसने नमाज़ से पहले ज़िबह न किया हो वो अल्लाह के नाम पर ज़िबह करे।

٩٨٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ جُنْدَبٍ قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النُّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ ذَبَحَ وَقَالَ: مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَلْيَذْبَحْ أُخْرَى مَكَالَهَا، وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ فَلْيَذْبَحْ بِاسْمِ اللَّهِ)). [طريقه في: ٥٥٠٠، ٥٥٦٢، ٦٦٧٤، ٧٤٠٠].

(दीगर मक़ामात: 5500, 5562, 6674, 7400)

बाब 24 : जो शख्स ईदगाह को एक रास्ते में जाए वो घर को दूसरे रास्ते से आए

986. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने, उन्होंने कहा कि हमें अबू तुमैला यह्या बिन वाज़ेह ने ख़बर दी, उन्हें फुलैह बिन सुलैमान ने, उन्हें सईद बिन हारिष ने, उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईद के दिन एक रास्ते से जाते फिर दूसरा रास्ता बदल कर आते। इस रिवायत की मुताबअत यूनुस बिन मुहम्मद ने फुलैह से, उनसे सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया लेकिन जाबिर की रिवायत ज़्यादा सहीह है।

या'नी जो शख्स सईद का शैख़ जाबिर (रज़ि.) को क़रार देता है उसकी रिवायत उससे ज़्यादा सहीह है जो अबू हुरैरह (रज़ि.) को सईद का शैख़ कहता है। यूनुस की इस रिवायत को इस्माईल ने वर्रल (मिलान) किया है।

रास्ता बदलकर आना—जाना भी शरअी मस्लहतों से खाली नहीं है जिसका मक़सद अलमा ने ये समझा कि दोनों रास्तों पर इबादत इलाही के लिये नमाज़ी के क़दम पड़ेंगे और दोनों रास्तों की ज़मीनें इन्दल्लाह उसके लिये गवाह होंगी। वल्लाहु अज़लम!

बाब 25 : अगर किसी को जमाअत से ईद की नमाज़ न मिले तो फिर दो रकअत पढ़ ले

और औरतें भी ऐसा ही करें और वो लोग भी जो घरों और देहातों वगैरह में हों और जमाअत में न आ सकें (वो भी ऐसा ही करें) क्योंकि नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान है कि इस्लाम वालों! ये हमारी ईद है। अनस बिन मालिक (रज़ि.) के गुलाम इब्ने अबी उतैबा ज़ाविया नामी गाँव में रहते थे। उन्हें आपने हुक्म दिया था कि वो अपने घरवालों और बच्चों को जमा करे शहर वालों की तरह नमाज़े—ईद पढ़ें और तकबीर कहें। इकिरमा ने शहर के क़रीब व जवार में आबाद लोगों के लिये फ़र्माया कि जिस तरह इमाम करता है ये लोग भी ईद के दिन जमा होकर दो रकअत नमाज़ पढ़ें। अता ने कहा कि अगर किसी की ईद की नमाज़ (जमाअत) छूट जाए तो वो दो रकअत (तन्हा) पढ़ ले।

इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ ये ज़ाबित फ़र्माया है कि ईद की नमाज़ सबको पढ़ना चाहिये ख़वाह गांव में हो या शहर में। इसकी तफ़्सील पहले गुज़र चुकी है। ज़ाविया बसरा से छः मील पर एक गांव था। हज़रत अनस (रज़ि.) ने अपना मकान वहाँ पर ही बनवाया था।

۲۴- بَابُ مَنْ خَالَفَ الطَّرِيقَ إِذَا رَجَعَ يَوْمَ الْعِيدِ

رَجَعَ يَوْمَ الْعِيدِ

۹۸۶ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو ثَمَلَةَ يَحْيَى بْنُ وَاصِحٍ عَنْ فُلَيْحِ بْنِ سَلَيْمَانَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا كَانَ يَوْمَ عِيدِ خَالَفَ الطَّرِيقَ)). تَابَعَهُ يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ فُلَيْحٍ عَنْ سَعِيدِ أَبِي هُرَيْرَةَ. وَحَدَّثَنَا جَابِرٌ أَصَحُّ.

۲۵- بَابُ إِذَا فَاتَهُ الْعِيدُ يُصَلِّي رَكَعَتَيْنِ

رَكَعَتَيْنِ

وَكَذَلِكَ النِّسَاءُ وَمَنْ كَانَ فِي الثَّوْبِ وَالْفَرَى، لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((هَذَا عِيدُنَا يَا أَهْلَ الْإِسْلَامِ)). وَأَمَرَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ مَوْلَاهُمْ أَنَّ أَبِي عُثْبَةَ بِالزَّائِدَةِ لَجَمَعَ أَهْلَهُ وَبَنِيهِ وَصَلَّى كَصَلَاةِ أَهْلِ الْمَصْرِ وَتَكْبِيرِهِمْ. وَقَالَ عِكْرَمَةُ: أَهْلُ السَّوَادِ يَجْمَعُونَ فِي الْعِيدِ يُصَلُّونَ رَكَعَتَيْنِ كَمَا يَصْنَعُ الْإِمَامُ. وَقَالَ عَطَاءٌ: إِذَا فَاتَهُ الْعِيدُ صَلَّى رَكَعَتَيْنِ.

987. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि उनसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक्रील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इर्वा ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, अबूबक्र (रज़ि.) उनके यहाँ (मिना के दिनों में) तशरीफ़ लाए, उस वक़्त घर में दो लड़कियाँ दुफ़ बजा रही थी और बुआष की लड़ाई की नज़्में गा रही थी। नबी करीम (ﷺ) ने चेहर-ए-मुबारक पर कपड़ा डाले हुए तशरीफ़ फ़र्मा थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने उन दोनों को डाँटा। इस पर आप (ﷺ) ने चेहर-ए-मुबारक से कपड़ा हटाकर फ़र्माया, ऐ अबूबक्र! जाने भी दो ये ईद का दिन है (और वो भी मिना में)। (राजेअ: 949)

988. और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने (एक दफ़ा) नबी करीम (ﷺ) को देखा कि आप (ﷺ) ने मुझे छुपा रखा था और मैं हब्शा के लोगों को देख रही थी जो मस्जिद में तीरी से खेल रहे थे। हज़रत इमर (रज़ि.) ने उन्हें डाँटा लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाने दो और उनसे फ़र्माया, ऐ बनू अरफ़िदा! तुम बेफ़िक्र होकर खेल दिखाओ। (राजेअ: 454)

शायद इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से बाब का मतलब यून निकाला कि जब हर शख्स के लिये ये दिन खुशी के हुए तो हर एक को ईद की नमाज़ भी पढ़नी होगी। आँहज़रत (ﷺ) ने ईदुल अज़हा और बाद के अय्यामे तशरीक 11, 12, 13 सबको ईद के अय्याम फ़र्माया और इर्शाद हुआ कि एक तो ईद के दिन खुशी के दिन हैं और फिर मिना में होने की और खुशी है कि अल्लाह ने हज़ नसीब किया।

बाब 26 : ईदगाह में ईद की नमाज़ से पहले या

उसके बाद नफ़्ल नमाज़ पढ़ना कैसा है?

और अबू मुअल्ला यह्या बिन मैमून ने कहा कि मैंने सईद से सुना, वो इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते थे कि आप ईद से पहले नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मकरूह जानते थे।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने कहा कि ये अषर मुझको मौसूलन नहीं मिला और अबुल मुअल्ला से इस किताब में इसके सिवा और कोई रिवायत नहीं है।

989. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अदी बिन श़ाबित ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना, वो इब्ने अब्बास (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ईदुल फ़ित्र के दिन निकले और (ईदगाह) में दो रक़अत नमाज़े-ईद पढ़ी।

٩٨٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ جِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ: ((أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ دَخَلَ عَلَيْهَا وَعِنْدَهَا جَارِيَتَانِ فِي آيَامٍ مِنِّي تُدْفِقَانِ وَتَضْرِبَانِ - وَالنَّبِيُّ ﷺ مُتَفَشٍّ بِرَبِّهِ - فَأَتَتْهُمَا أَبُو بَكْرٍ فَكَشَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ: ((دَعُوهُمَا يَا أَبَا بَكْرٍ، فَإِنَّهَا آيَامٌ عِنْدِي. وَتِلْكَ الْآيَامُ آيَامُ مِنِّي)).

[راجع: ٩٤٩]

٩٨٨- وَقَالَتْ عَائِشَةُ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْتُرْنِي وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى الْحَبَشَةِ وَهُمْ يَلْعَبُونَ فِي الْمَسْجِدِ، فَوَجَرَهُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعُوهُمْ. أَنَا بَنِي أَرْفَدَةَ)) يَعْنِي مِنَ الْأَمَنِ. [راجع: ٤٥٤]

٢٦- بَابُ الصَّلَاةِ قَبْلَ الْعِيدِ

وَبَعْدَهَا

وَقَالَ أَبُو الْمُعَلَّى: سَمِعْتُ سَعِيدًا عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ كَرِهَ الصَّلَاةَ قَبْلَ الْعِيدِ.

٩٨٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ بْنُ قَابِطٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمَ الْفِطْرِ فَصَلَّى

आप (ﷺ) ने न इससे पहले नफ़ल नमाज़ पढ़ी और न उसके बाद,
आप (ﷺ) के साथ बिलाल (रज़ि.) भी थे।

رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُصَلِّ قَبْلَهَا وَلَا بَعْدَهَا، وَمَعَهُ
بِلَالٌ.

तशरीह : अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, क़ौलुहू लम युसल्लि क़बलहा व बअदहा फ़ीहि व फ़ी बक्रिय्यति अहादीषिलबाबि दलीलुन अला कराहितिससलाति क़बल सलातिल्ईदि व बअदहा इलैहि ज़हब अहमदुब्नु हंबल क़ालुब्नु कुदामा व हुव मज्हबु इब्नि अब्बास वब्नि ड़मर. (नैलुल औतार)

या'नी इस हदीष और इस बारे में दीगर अहादीष से प्राबित हुआ कि ईद कीनमाज़ के पहले और बाद में नफ़ली नमाज़ पढ़ना मकरूह है। इमाम अहमद बिन हंबल का भी यही मसलक है और बक़ौल इब्ने कुदामा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) और हज़रत अली व हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और बहुत से अकाबिर सहाब-ए-किराम व ताबेईन का भी यही मसलक है। इमाम जुहरी (रह.) फ़र्माते हैं, लम अस्मअ अहदमिन इलमाइन यज़्कुर अन्न अहदन मिन सलफ़ि हाज़िलुडम्मति कान युसल्लि क़बल तिल्क़िससलाति व ला बअदहा. (नैलुल औतार)

या'नी अपने ज़माने के इलमा में मैंने किसी आलिम को ये कहते नहीं सुना कि सलफ़े उम्मत में से कोई भी ईद से पहले या बाद में कोई नफ़ल नमाज़ पढ़ता हो। हाँ ईद की नमाज़ पढ़कर और वापस घर आकर घर में दो रक़अत नफ़ल पढ़ना प्राबित है जैसा कि इब्ने माजा में हज़रत अबू सईद (रज़ि.) से प्राबित है। वो कहते हैं, अनिन्नबिद्यि अन्नहू कान ला युसल्लि क़बलल्ईदि शौअन फ़इज़ा रज़अ इला मन्ज़िलिही सल्ला रक़अतैनि. (रवाहुब्नु माजा व अहमद बिमअनाहू) या'नी आँहज़रत (ﷺ) ने ईद से पहले कोई नफ़ल नमाज़ नहीं पढ़ी। जब आप (ﷺ) अपने घर वापस हुए तो आपने दो रक़अतें अदा कीं। इसको इब्ने माजा और अहमद ने भी उसके क़रीब-क़रीब रिवायत किया है। अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, व हदीषु अबी सईदिन अख़रजहू अयज़न अल्हाकिमु व सहहहू व हस्सनहुल्हाफ़िज़ु फ़िल्फ़तहि व फ़ी इस्नादिही अब्दुल्लिहिब्नु मुहम्मदिब्नि अकील व फ़ीहि मक़ालुन व फ़िल्बाबि अन अब्दिल्लाहिब्नि अम्मिब्नि आस इन्द इब्नि माजा बिनहबि हदीषिब्नि अब्बास. (नैलुल औतार)

या'नी अबू सईद वाली हदीष को हाकिम ने भी रिवायत किया है और उसको सहीह बतलाया है और हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने फ़तहुल बारी में उसकी तहसीन की है और उसकी सनद में अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अकील एक राबी है जिनके बारे में कुछ कहा गया है और इस मसले में अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस की भी एक रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) की रिवायत के मानिन्द (समान) है।

ख़ुलासा ये कि ईदगाह में सिर्फ़ नमाज़े ईद और ख़ुत्बा, नीज़ दुआ करना मसनून है। ईदगाह, मज़ीद नफ़ल नमाज़ पढ़ने की जगह नहीं है। ये तो वो मुक़ाम है जिसकी हाज़िरी ही अल्लाह को इस क़दर महबूब है कि वो अपने बन्दों और बन्दियों को मैदाने ईदगाह में देखकर इस क़दर खुश होता है कि सारे हालात जानने के बावजूद भी अपने फ़रिश्तों से पूछता है कि ये मेरे बन्दे और बन्दियाँ आज यहाँ क्यों जमा हुए हैं? फ़रिश्ते कहते हैं कि ये तेरे मज़दूर हैं जिन्होंने रमज़ान में तेरा फ़र्ज़ अदा किया है, तेरी रज़ामन्दी के लिये रोज़े रखे हैं और अब इस मैदान में तुझसे मज़दूरी मांगने आए हैं। अल्लाह फ़र्माता है कि ऐ फ़रिश्तों! गवाह रहो मैंने इनको बख़्श दिया और इनके रोज़ों को कुबूल किया और इनकी दुआओं को भी शफ़े़ कुबूलियत क़यामत तक के लिये अत्ता किया। फिर अल्लाह की तरफ़ से निदा होती है कि मेरे बन्दों! जाओ इस हाल में कि तुम बख़्श दिये गए हो।

ख़ुलासा ये कि ईदगाह में ईद की नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ न पढ़ी जाए यही उत्स्व-ए-हस्ना है और इसी में अज़्रो प्रवाब है। वल्लाहु आलमु व इल्मुहू अतम्मु

14. किताबुल वित्र

नमाज़-वित्र के मसाइल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

और वित्र के मा'नी ताक़ या'नी बेजोड़ के हैं। ये एक मुस्तक़िल नमाज़ है जो इशा के बाद से फ़ज़ तक रात के किसी हिस्से में पढ़ी जा सकती है। इस नमाज़ की कम से कम एक रक़अत, फिर तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह, तेरह रक़अत तक पढ़ी जा सकती हैं। अहले हदीष और इमाम अहमद और शाफ़िई और सब इलमा के नज़दीक वित्र सुन्नत है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) उसको वाजिब कहते हैं। हालाँकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और हज़रत अली (रज़ि.) के कलाम से ये साबित होता है कि वित्र सुन्नत है लेकिन इस मसले में इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने इन दोनों सहाबियों का भी ख़िलाफ़ किया है।

बाब 1 : वित्र का बयान

990. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने नाफ़ेअ और अब्दुल्लाह इब्ने दीनार से ख़बर दी और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि एक शख़्स ने नबी करीम (ﷺ) से रात में नमाज़ के मुता'ल्लिक मा'लूम किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि रात की नमाज़ दो-दो रक़अत है। फिर जब कोई सुबह हो जाने से डरे तो एक रक़अत पढ़ ले, वो उसकी सारी नमाज़ को ताक़ बना देगी।

(राजेअ : 472)

991. और उसी सनद के साथ नाफ़ेअ से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) वित्र की जब तीन रक़अतें पढ़ते तो दो रक़अत पढ़कर सलाम फेरते यहाँ तक कि ज़रूरत से बात भी करते।

तशरीह : इस हदीष से दो बातें निकली एक ये कि रात की नमाज़ दो रक़अत करके पढ़ना चाहिये। या'नी दो रक़अत के बाद सलाम फेरे, दूसरी बात ये कि वित्र की एक रक़अत भी पढ़ सकता है और इन्फ़िया ने उसमें ख़िलाफ़ किया है और उनकी दलील ज़ईफ़ है। सहीह हदीषों से वित्र की एक रक़अत पढ़ना साबित है और तफ़सील इमाम मुहम्मद बिन नस्र मरहूम की किताब अल वित्र वन्नवाफ़िल में है। (मौलाना वहीदुज्जमाँ)

1 - بَابُ مَا جَاءَ فِي الْوُتْرِ

990 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنْ صَلَاةِ اللَّيْلِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى، فَإِذَا غَشِيَ أَحَدُكُمْ الصُّبْحَ صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَةً يُؤْتِرُ لَهُ مَا قَدْ صَلَّى)). [راجع : 472]

991 - وَعَنْ نَافِعٍ : أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ يُسَلِّمُ بَيْنَ الرُّكْعَةِ وَالرُّكْعَتَيْنِ فِي الْوُتْرِ حَتَّى يَأْمُرَ بِتَقْيِي حَاجَتِهِ.

993. हमसे यहा बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें उमर बिन हारिष ने खबर दी, उनसे अब्दुरहमान बिन कासिम ने अपने बाप कासिम से बयान किया और उनसे हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, रात की नमाज़ में दो-दो रकअतें हैं और जब तू खत्म करना चाहे तो एक रकअत वित्र पढ़ ले जो सारी नमाज़ को ताक़ बना देगी। कासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया कि हमने बहुत से लोगों को तीन रकअत पढ़ते भी पाया है और तीन या एक सब जाइज़ है और मुझको उम्मीद है कि किसी में कबाहत न होगी। (राजेअ: 472)

٩٩٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو بْنُ حَارِثٍ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْقَاسِمِ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «(صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى، فَإِذَا أَرَدْتَ أَنْ تَنْصَرِفَ فَارْكَعْ رَكْعَةً تُؤَيِّرُ لَكَ مَا صَلَّيْتَ)». قَالَ الْقَاسِمُ: وَرَأَيْنَا أَنَا وَمَنْ أَذَرَكْنَا يُؤَيِّرُونَ بِلَاثٍ، وَإِنْ كُنَّا لَوَاسِعَ، أَرْجُو أَنْ لَا يَكُونَ بِشَيْءٍ مِنْهُ بَأْسٌ. [راجع: ٤٧٢]

तशरीह: ये कासिम हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के पोते थे। बड़े आलिम और फ़कीह थे। इनके कलाम से उस शख्स की ग़लती मा'लूम हो गई जो एक रकअत वित्र को दुरुस्त नहीं जानता है और मुझको हैरत है कि सहीह हदीषें देखकर फिर कोई मुसलमान ये कैसे कहेगा कि एक रकअत वित्र दुरुस्त नहीं है।

इस रिवायत से अगरचे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का तीन रकअतें वित्र पढ़ना प्राबित होता है, मगर इन्फ़िया के लिये कुछ भी मुफ़ीद नहीं क्योंकि इसमें ये नहीं है कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) हमेशा वित्र की तीन रकअतें पढ़ते थे। अलावा भी उसके दो सलाम से तीन रकअतें वित्र की प्राबित हैं और इन्फ़िया एक सलाम से कहते हैं (मौलाना वहीदी)। यही अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) हैं जिनसे सहीह मुस्लिम शरीफ़ पेज नं. 257 में मराहतन एक रकअत वित्र प्राबित है। अन अब्दिल्लाहि बिन उमर क़ाल, क़ाल रसूलुल्लाहि ﷺ अल्वित्क रकअतुम्पिन आखिरिल्लैलि. (रवाहु मुस्लिम) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि वित्र पिछली रात में एक रकअत है। दूसरी हदीष में मज़ीद वज़ाहत मौजूद है, अन अय्यूब रज़ि. क़ाल, क़ाल रसूलुल्लाहि ﷺ अल्वित्क हक्कन अला कुल्लि मुस्लिमिन व मन अहब्बु अय्यूतिर बिख़मिस्म फ़लियफ़अल व मन अहब्बु अय्यूतिर बिषलाग़िन् फ़लियफ़अल व मन अहब्बु अय्यूतिर बिवाहिदतिन फ़लियफ़अल. (रवाहु अबू दाऊद वत्रसाई वब्नु माजा) या'नी हजरत अबू अय्यूब (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि वित्र की नमाज़ हक़ है जो हर मुस्लिम के लिये ज़रूरी है और जो चाहे पाँच रकआत वित्र पढ़ ले जो चाहे तीन रकआत और जो चाहे एक रकअत वित्र पढ़ ले। और भी इस किस्म की कई रिवायतें मुख्तलिफ़ा कुतुबे अहदीष में हैं। इसीलिये हजरत मौलाना अब्दुल्लाह शैख़ुल हदीष, इस हदीषे हजरत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) के लफ़ज़ व यूतिर बिवाहिदतिन (आप ﷺ एक रकअत वित्र पढ़ते) के बारे में फ़र्माते हैं, फ़ीहि अन्न अकल्लल्वित्ति रकअतुन व अन्नरकअतल्फ़र्दत म़लातुन सहीहतुन व हुव मज़हबुलअइम्मतिम़लासति व हुवलहक्क व क़ाल अबू हनीफ़ा ला यस्लहुल्ईतारु बिवाहिदतिन फ़ला तकूरकअल्वाहिदतु म़लातन कतु क़ालन्नववी वलअहदीषुस्सहीहतु तरहु अलैहि (मिआत, जिल्द नं. 2/पेज नं. 158) या'नी इस हदीष में दलील है कि वित्र की कम अज़ कम एक रकअत है और ये कि एक रकअत पढ़ना भी नमाज़े सहीह है। अइम्म-ए-प्रलाषा का यही मज़हब है और यही हक़ है (अइम्म-ए-प्रलाषा से हजरत इमाम शाफ़िई, इमाम मालिक, इमाम अहमद बिन हंबल रह. मुराद हैं)। हजरत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) फ़र्माते हैं कि एक रकअत वित्र सहीह नहीं है क्योंकि एक रकअत नमाज़ ही नहीं होती। इमाम नववी फ़र्माते हैं कि अहदीषे सहीहा से हजरत इमाम के इस क़ौल की तर्दीद होती है।

वित्र के वाजिब फ़र्ज सुन्नत होने के बारे में भी इख़ितलाफ़ है, इस बारे में हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहदिष देहलवी (रह.) फ़र्माते हैं कि बल्हह्क अन्नल्वित सुन्नतुन हुव औकदुस्सुननि बय्यनह अलिय्युन वब्नु इमर व उबादतब्निस्सामित रज़ि. और हक़ ये है कि नमाज़े वित्र सुन्नत है और वो सब सुन्नतों से ज़्यादा मुअक़द हैं। हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) ने ऐसा ही बयान किया है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा, जिल्द नं. 2/ पेज नं. 64)

वित्र तीन रकअत पढ़ने की सूरत में पहली रकअत में सूरह सब्बिहिस्म रब्बिकल्आला और दूसरी रकअत में कुल या अय्युहल काफ़िरून और तीसरी में कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ना मसनून है। वित्र के बाद बआवाज़े बुलन्द तीन बार सुब्हानल मलिकुल कुदूस का लफ़्ज़ अदा करना भी मसनून है। एक रकअत वित्र के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात हज़रत नवाब हसन साहब (रह.) की मशहूर किताब हिदायतुस्साइल इला अदिल्लतिल्मसाइल मत्बूआ भोपाल, पेज नं. 255 पर मुलाहज़ा की जा सकती है।

994. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे से इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ग्यारह रकअतें (वित्र और तहज्जुद की) पढ़ते थे, आप (ﷺ) की यही नमाज़ थी। मुराद उनकी रात की नमाज़ थी। आपका सज्दा उन रकअतों में इतना लम्बा होता था कि सर उठाने से पहले तुम में से कोई शख्स भी पचास आयतें पढ़ सकता और फ़र्ज़ की नमाज़े-फ़र्ज से पहले आप सुन्नत दो रकअत पढ़ते थे उसके बाद (ज़रा देर) दाहिने पहलू पर लेटे रहते यहाँ तक कि मोअज़्ज़िन बुलाने के लिये आप के पास आता।

(राजेअ : 626)

٩٩٤ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي غُرُورَةُ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً كَانَتْ بِلَيْكٍ صَلَاتِهِ - تَغْنِي بِاللَّيْلِ - فَيَسْجُدُ السَّجْدَةَ مِنْ ذَلِكَ فَلَمَّا يَقْرَأُ أَحَدَكُمْ عَمِينَ آيَةً قَبْلَ أَنْ يَرْفَعَ رَأْسَهُ، وَيَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الْفَجْرِ، ثُمَّ يَضْطَجِعُ عَلَى شِقْوِ الْأَيْمَنِ حَتَّى يَأْتِيَهُ الْمُؤَذِّنُ لِلصَّلَاةِ)).

[راجع: ٦٢٦]

तशरीह: पस ग्यारह रकअतें इतिहा हैं। वित्र की दूसरी हदीष में है कि आँहज़रत (ﷺ) रमज़ान या ग़ैर रमज़ान में कभी ग्यारह रकअतों से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे। अब इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीष में जो तेरह रकअतें मज़कूर हैं तो उसकी रू से कुछ ने इतिहा वित्र की तेरह रकअतें करार दी हैं। कुछ ने कहा उनमें दो रकअतें इशा की सुन्नत थीं तो वित्र की वही ग्यारह रकअतें हुई। ग़र्ज़ वित्र की एक रकअत से लेकर तीन, पांच, नौ, ग्यारह रकअतों तक मन्कूल है। कुछ कहते हैं कि उन ग्यारह रकअतों में आठ तहज्जुद की थीं और तीन रकअतें वित्र की और सहीह ये है कि तरावीह तहज्जुद वित्र सलातुल लैल सब एक ही हैं। (वहीदुज्माँ रह.)

बाब 2 : वित्र पढ़ने के अवक़ात का बयान

और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये वसिय्यत फ़र्माई कि सोने से पहले वित्र पढ़ लिया करो।

995. हमसे अबू नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा कि हमसे अनस बिन सीरीन ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से पूछा कि नमाज़े

٢- بَابُ مَسَاعَاتِ الْوُتْرِ

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: أَوْصَانِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْوُتْرِ قَبْلَ النَّوْمِ.

٩٩٥ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ

सुबह से पहले की दो रकअतों के मुता'ल्लिक आपका क्या खयाल है? क्या मैं उनमें लम्बी क्रिरअत कर सकता हूँ? उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) तो रात की नमाज़ (तहज्जुद) दो-दो रकअत करके पढ़ते थे फिर दो रकअत (सुन्नते-फ़ज्र) तो इस तरह पढ़ते गोया, अज़ान (इक्रामत) की आवाज़ आपके कानों में पड़ रही है। हम्माद की इससे मुराद ये है कि आप (ﷺ) जल्दी पढ़ लेते।

(राजेअ : 472)

مِيزِينَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبْنِ عُمَرَ: أَرَأَيْتَ الرَّسْمَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الْفَجْرِ أَجِلٌ فِيهِمَا الْقِرَاءَةُ؟ فَقَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى، وَيُؤَيِّرُ بِرُكْعَةٍ، وَيُصَلِّي الرَّسْمَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَكَانَ الْإِذَانُ بِأَذْنِهِ)) قَالَ حَمَّادٌ: أَيْ بِسُرْعَةٍ.

[راجع : ٤٧٢]

तशरीह : इस सिलसिले की अह्दादीष का खुलासा ये है कि इशा के बाद सारी रात चित्र के लिये है। तुलूअे सुबह सादिक से पहले जिस वक़्त भी चाहे पढ़ सकता है। हज़ुरे अकरम (ﷺ) का मामूल आखिरी रात में सलातुल लैल के बाद उसे पढ़ने का था। अबूबक्र (रज़ि.) को आखिर रात में उठने का पूरी तरह यक़ीन नहीं होता था, इसलिये वो इशा के बाद ही पढ़ लिया करते थे और उमर (रज़ि.) का मामूल आखिर रात में पढ़ने का था।

इस हदीष के ज़ेल में अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, वहदीषु यदुल्लु अला मशरूइयतिलईतारि बिरकअतिन वाहिदतिन इन्द मश्राफ़ति हुजूमिस्सुब्हि व सयाती मा यदुल्लु अला मशरूइयतिल ज़ालिक मिन ग़ैरि तक्रईदिन व कद ज़हब इला ज़ालिक अल्जुम्हूर क़ालल्इराक़ी व मिम्न कान यूतिरु बिरकअतिन मिन म्महाबति अल्खुलफ़ाउल अर्बअतु या'नी इस हदीष से एक रकअत चित्र मशरूअन प्राबित हुआ, जब सुबह की पौ फटने का डर हो और अन्करीब दूसरे दलाइल आ रहे हैं जिनसे उस क़ैद के बग़ैर ही एक रकअत चित्र की मशरूइयत प्राबित है और एक रकअत चित्र पढ़ना खुल्फ़-ए-अरबअ (हज़रत अबूबक्र सिदीक, उमर, उस्मान ग़नी, व अली मुर्तज़ा रज़ि.) और सअद बिन अबी वक्रास बीस सहाबा किराम से प्राबित है। यहाँ अल्लामा शौकानी ने सबके नाम तहरीर फ़र्माए हैं और तक्रीबन बीस ही ताबेईन व तबअ ताबेईन व अश्म-ए-दीन के नाम भी तहरीर फ़र्माए हैं जो एक रकअत चित्र पढ़ते थे।

हन्फिया के दलाइल :—अल्लामा ने हन्फिया के उन दलाइल का जवाब दिया है जो एक रकअत चित्र के क़ाइल नहीं जिनकी पहली दलील हदीष ये है, अन मुहम्मदिब्नि कअबिन अन्नन बिद्य्य नहा अनिलबतीरा या'नी रसूले करीम (ﷺ) ने बतीरा नमाज़ से मना फ़र्माया लफ़ज़ बतीरा दुमकटी नमाज़ को कहते हैं। इराक़ी ने कहा ये हदीष मुसल और ज़ईफ़ है। अल्लामा इब्ने हज़म ने कहा कि आहज़रत (ﷺ) से नमाज़ बतीरा की नह्य प्राबित नहीं और कहा कि मुहम्मद बिन कअब की हदीष बावजूद ये कि इस्तिदलाल के क़ाबिल नहीं मगर उसमें भी बतीरा का बयान नहीं है बल्कि हमने अब्दुरज़ाक़ से, उन्होंने सुफ़यान बिन इययना से, उन्होंने आ'मश से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया कि बतीरा तीन रकअत चित्र भी बतीरा (या'नी दुमकटी) नमाज़ है फ़आदल्बतीरा अलल्मुहतजि बिल्खबिल्काज़िबि फ़ीहा।

हन्फिया की दूसरी दलील हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का ये क़ौल है अन्नहू क़ाल मा अज़अत रकअतुन क़तु या'नी एक रकअत नमाज़ कभी भी काफ़ी नहीं होती। इमाम नववी शरहे मुहज्जब में फ़र्माते हैं कि ये अपर अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से प्राबित नहीं है अगर उसको दुस्त भी माना जाए तो उसका ता'ल्लुक हज़रत इब्ने अब्बास के उस क़ौल की तदीद करना था। आपने फ़र्माया था कि हालते ख़ौफ़ में चार फ़र्ज़ नमाज़ों में एक ही रकअत काफ़ी है। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि एक रकअत काफ़ी नहीं है। अल ग़र्ज़ इस क़ौल से इस्तिदलाल दुस्त नहीं और उसका ता'ल्लुक सलाते ख़ौफ़ की एक रकअत से है। इब्ने अबी शैबा में है एक बार वलीद बिन उक्बा अमीरे मका के यहाँ हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) काफ़ी देर तक गुफ्तगू करते रहे। जब वहाँ से वो निकले तो उन्होंने वो नमाज़ (चित्र) एक एक रकअत अदा की (नैलुल औतार)

बड़ी मुश्किल! यहाँ बुखारी शरीफ में जिन-जिन रिवायात में एक रकअत वित्र का जिक्र आया है एक रकअत वित्र के साथ उनका तर्जुमा करने में उन हन्फी हज़रात को जो आजकल बुखारी शरीफ के तर्जुमे शाए कर रहे हैं, बड़ी मुश्किल पेश आई है और उन्होंने पूरी कोशिश की है कि तर्जुमा इस तरह किया जाए कि एक रकअत वित्र पढ़ने का लफ्ज़ ही न आने पाए इस तौर पर उससे एक रकअत वित्र का युबूत हो सके इस कोशिश के लिये उनकी मेहनत काबिले दाद है और अहले इल्म के मुतालेअ के काबिल, मगर उन बुजुर्गों को मा'लूम होना चाहिये कि बनावटी व तकल्लुफ व इबात आराई से हकीकत पर पर्दा डालना कोई दानिशमन्दी नहीं है।

996. हमसे इमर बिन हफ़्स बिन गयाब ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुस्लिम बिन कैसान ने बयान किया, उनसे मसरूक ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रात के हर हिस्से में वित्र पढ़ी है और आखिर में आपका वित्र सुबह के करीब पहुँचा।

तशरीह: दूसरी रिवायतों में है कि वित्र आपने अब्बल रात में भी पढ़ी और बीच रात में भी और आखिर रात में भी। गोया इशा की नमाज़ के बाद से सुबह सादिक के पहले तक वित्र पढ़ना आप (ﷺ) से प्राबित है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने लिखा है कि मुख्तलिफ़ हालात में आप (ﷺ) ने वित्र मुख्तलिफ़ औकात में पढ़ी है। ग़ालिबन तकलीफ़ और मर्ज' वग़ैरह में अब्बल रात में पढ़ते थे और मुसाफ़िरी की हालत में बीच रात में लेकिन आम मामूल आप (ﷺ) का उसे आखिर रात में पढ़ने का था (तफ़हीमुल बुखारी)। रसूले करीम (ﷺ) ने उम्मत की आसानी के लिये इशा के बाद रात में जब भी मुम्किन हो वित्र पढ़ना जाइज़ करार दिया है।

बाब 3 : वित्र के लिये नबी करीम (ﷺ) का घरवालों को जगाना

997. हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, कहा कि मुझ से मेरे बाप ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया कि आपने फ़र्माया नबी करीम (ﷺ) (तहज्जुद की) नमाज़ पढ़ते रहते और मैं आप (ﷺ) के बिस्तर पर अर्ज' में लेटी रहती। जब वित्र पढ़ने लगते तो मुझे भी जगा देते और मैं भी वित्र पढ़ लेती। (राजेअ: 372)

बाब 4 : नमाज़े-वित्र रात की तमाम नमाज़ों के बाद पढ़ी जाए
998. हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, कहा कि हमसे यहाा बिन सईद ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह इमरी ने उनसे नाफ़ेअ ने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि वित्र रात की तमाम नमाज़ों के बाद पढ़ा करो।

बाब 5 : नमाज़े-वित्र सवारी पर पढ़ने का बयान

999. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे

٩٩٦ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي مُسْلِمٌ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((كُلَّ اللَّيْلِ أَوْتَرْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَانْتَهَى وَتَرْتُهُ إِلَى السَّحَرِ)).

٣- بَابُ إِتْفَاطِ النَّبِيِّ ﷺ أَهْلَهُ

بِالْوِتْرِ

٩٩٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي وَأَنَا وَالْإِدَّةُ مُفَرَّجَةً عَلَى فِرَاجِهِ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يُوْتِرَ أَتَيْتُنِي فَأَوْتَرْتُ)). [راجع: ٣٨٢]

٤- بَابُ لِيَجْعَلَ آخِرَ صَلَاتِهِ وَتَرًا

٩٩٨ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اجْعَلُوا آخِرَ صَلَاتِكُمْ بِاللَّيْلِ وَتَرًا)).

٥- بَابُ الْوِتْرِ عَلَى الدَّائِمَةِ

٩٩٩ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي

इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने अबूबक्र बिन इमर बिन अब्दुर्रहमान बिन इमर बिन खत्ताब से बयान किया और उनको सईद बिन यसार ने बतलाया कि मैं अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के साथ मक्का के रास्ते में था। सईद ने कहा कि जब रात में मुझे तुलुए-फ़ज़्र का ख़तरा हुआ तो सवारी से उतर कर मैंने वित्र पढ़ लिया और फिर अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से जा मिला। आपने पूछा कि कहाँ रुक गये थे? मैंने कहा कि अब सुबह का वक़्त होने ही वाला था इसलिये मैं सवारी से उतर कर वित्र पढ़ने लगा। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर ने फ़र्माया कि क्या तुम्हारे लिये नबी करीम (ﷺ) का अमल अच्छा नमूना नहीं है। मैंने अर्ज़ किया बेशक! आपने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) तो ऊँट ही पर वित्र पढ़ लिया करते थे।

(दीगर मक़ामात : 1000, 1090, 1096, 1098, 1105)

مَالِكٌ عَنْ أَبِي بَكْرٍ بْنِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ
الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ
الْخَطَّابِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ أَنَّهُ قَالَ:
(كُنْتُ أَسِيرُ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بِطَرِيقِ
مَكَّةَ، فَقَالَ سَعِيدٌ: فَلَمَّا خَشِيتُ الصُّبْحَ
نَزَلْتُ فَأَوْتَرْتُ ثُمَّ لَحِقْتُهُ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ
بْنُ عُمَرَ: أَيْنَ كُنْتَ؟ فَقُلْتُ: خَشِيتُ
الصُّبْحَ فَزَلْتُ فَأَوْتَرْتُ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ:
أَلَيْسَ لَكَ فِي رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَسْوَأُ حَسَنَةً؟
فَقُلْتُ: بَلَى وَاللَّهِ قَالَ: فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ
ﷺ كَانَ يُؤْتِرُ عَلَى الْبَعِيرِ).

[أطرافه في : 1000, 1090, 1096, 1098, 1105]

[1100, 1098]

मा'लूम हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) का उस्व-ए-हस्ना ही बहरेहाल काबिले इक़्तिदा और बाअिज़्जे सद बरकात है।

बाब 6 : नमाज़े-वित्र सफ़र में भी पढ़ना

1000. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे जुवेरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) सफ़र में अपनी सवारी ही पर रात की नमाज़ इशारों से पढ़ लेते थे, ख़वाह सवारी का रुख़ किस तरफ़ हो जाता आप (ﷺ) इशारों से पढ़ते रहते मगर फ़राइज़ इस तरह नहीं पढ़ते थे और वित्र अपनी ऊँटनी पर पढ़ लेते थे। (राजेअ : 999)

٦- بَابُ الْوُتْرِ فِي السَّفَرِ

١٠٠٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ
قَالَ: حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ
عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ
يُصَلِّي فِي السَّفَرِ عَلَى رَاحِلِهِ حَتَّى
تَوَجَّهَتْ بِهِ يَوْمِيءُ إِيْمَاءَ صَلَاةِ اللَّيْلِ إِلَّا
الْفَرَاغَ، وَيُؤْتِرُ عَلَى رَاحِلِهِ)).

[راجع: 999]

बाब 7 : (वित्र और हर नमाज़ में) कुनूत

रुकूअ से पहले और रुकूअ के बाद पढ़ सकते हैं

٧- بَابُ الْقُنُوتِ قَبْلَ الرُّكُوعِ

وَبَعْدَهُ

1001. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख्तियानी ने उनसे मुहम्मद

١٠٠١ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا
حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ قَالَ:

बिन सीरीन ने, उन्होंने कहा कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा गया कि क्या नबी करीम (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ में कुनूत पढ़ा है? आपने फ़र्माया कि हाँ! फिर पूछा गया कि क्या रुकूअ से पहले? तो आपने फ़र्माया कि रुकूअ के बाद थोड़े दिनों तक।

(दीगर मक़ामात : 1002, 1003, 1300, 3801, 3814, 3064, 3170, 4088, 4090, 4091, 4092, 4093, 4094, 4095, 4096, 6394, 7341)

«سُئِلَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَقَرَّتِ النَّبِيُّ ﷺ فِي الصُّبْحِ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَقِيلَ لَهُ أَوَقَرَّتْ قَبْلَ الرُّكُوعِ؟ قَالَ: بَعْدَ الرُّكُوعِ بَسِيْرًا».

[أطرافه في: ١٠٠٢، ١٠٠٣، ١٣٠٠، ٣٨٠١، ٣٨١٤، ٣٠٦٤، ٣١٧٠، ٤٠٨٨، ٤٠٩٠، ٤٠٩١، ٤٠٩٢، ٤٠٩٣، ٤٠٩٤، ٤٠٩٥، ٤٠٩٦، ٦٣٩٤، ٧٣٤١].

सुबह की नमाज़ में कुनूत पढ़ना शाफ़िइया के यहाँ ज़रूरी है। इसलिये वो उसके तर्क होने पर सज्द-ए-सहव करते हैं। हन्फ़िया के यहाँ सुबह की नमाज़ में कुनूत पढ़ना मकरूह है। अहले हदीष के यहाँ गाहे बगाहे कुनूत पढ़ लेना भी जाइज़ और तर्क करना भी जाइज़ है। इसीलिये मसलके अहले हदीष इफ़रात व तफ़रीत से हटकर एक सिराते मुस्तक़ीम का नाम है। अल्लाह पाक हमको सच्चा अहले हदीष बनाए। (आमीन)

1002. हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि हमसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कुनूत के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया, दुआ-ए-कुनूत (हुजुरे-अकरम ﷺ के दौर में) पढ़ी जाती थी, मैंने पूछा कि रुकूअ से पहले या उसके बाद? आपने फ़र्माया कि रुकूअ से पहले। आसिम ने कहा कि आप ही के हवाले से फ़लाँ शख्स ने ख़बर दी है कि आपने रुकूअ के बाद फ़र्माया था। इसका जवाब हज़रत अनस (रज़ि.) ने ये दिया उन्होंने ग़लत समझा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ के बाद सिर्फ़ एक महीना दुआ-ए-कुनूत पढ़ी थी। हुआ ये था कि आप (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) में से सत्तर क़ारियों के करीब मुश्किों की एक क़ौम (बनू आमिर) की तरफ़ से उनकी ता'लीम देने के लिये भेजे थे, ये लोग उनके सिवा थे जिन पर आपने बद-दुआ की थी। उनमें और आँहज़रत (ﷺ) के दरम्यान अहद था, लेकिन उन्होंने अहदशिकनी की (और क़ारियों को मार डाला) तो आँहज़रत (ﷺ) एक महीना तक (रुकूअ के बाद) कुनूत पढ़ते रहे, उन पर बहुआ करते रहे।

(राजेअ : 1001)

١٠٠٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ عَنِ الْقُنُوتِ فَقَالَ: قَدْ كَانَ الْقُنُوتُ. قُلْتُ: قَبْلَ الرُّكُوعِ أَوْ بَعْدَهُ؟ قَالَ: قَبْلَهُ. قَالَ: فَإِنْ فَلَانَا أَخْبَرَنِي عَنْكَ أَنَّكَ قُلْتَ: بَعْدَ الرُّكُوعِ. فَقَالَ: كَذَبٌ، إِنَّمَا قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا، أَرَاهُ كَانَ يَقْرَأُ قَوْمًا يَقَالُ لَهُمُ الْقُرَاءَةُ هَاءُ سَبْعِينَ رَجُلًا إِلَى قَوْمٍ مُشْرِكِينَ ذُونَ أُولَئِكَ، وَكَانَ يَنْهَاهُمْ وَتَيْنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَهْدٌ، فَقَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَهْرًا يَدْعُو عَلَيْهِمْ».

[راجع: ١٠٠١]

1003. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे

जाएदा ने बयान किया, उनसे तैमी ने, उनसे अबू मिजलज ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक महीना तक दुआ—ए—कुनूत पढ़ी और उसमें क़बाइले रअल व ज़क्वान पर बद-दुआ की थी। (राजेअ : 1001)

حَدَّثَنَا زَيْدُ عَنْ التَّمِيمِ عَنْ أَبِي مِجَلَزٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ شَهْرًا يَذْكُرُ عَلَى رِجْلِي وَذَكَوَان)).

[راجع: ١٠٠١]

1004. हमसे मुसहद बिन मुस्हरद ने बयान किया, कहा कि हमें इस्माईल बिन अलिया ने ख़बर दी, कहा कि हमें ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने ख़बर दी, उन्हें अबू क़िलाबा ने, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि आँहज़रत (ﷺ) के अहद में कुनूत मरिब और फ़ज़्र में पढ़ी जाती थी।

١٠٠٤ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: أَخْبَرَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ فِي الْمَرْبِ وَالْقُصْبِ)).

मगर इन हदीषों में जो इमाम बुखारी इस बाब में लाए खास वित्र में कुनूत पढ़ने का ज़िक्र नहीं है मगर जब फ़र्ज़ नमाज़ों में कुनूत पढ़ना जाइज़ हुआ तो वित्र में बतरीक़े औला जाइज़ होगा। कुछ ने कहा मरिब दिन का वित्र है जब उसमें कुनूत पढ़ना प्राबित हुआ तो रात के वित्र में भी प्राबित हुआ। हासिल ये है कि इमामे बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर उन लोगों का रद्द किया जो कुनूत को बिदअत कहते हैं। गुज़िश्ता हदीष के ज़ेल में मौलाना वहीदुज़्ज़माँ साहब (रह.) फ़र्माते हैं,

या'नी एक महीना तक अहले हदीष का मज़हब ये है कि कुनूत रूकूअ से पहले और रूकूअ के बाद दोनों तरह दुस्त है और सुबह की नमाज़ और इसी तरह हर नमाज़ में जब मुसलमानों पर कोई आफ़त आए कुनूत पढ़ना चाहिये। अब्दुरज़ाक़ और हाकिम ने ब-इस्नादे सहीह रिवायत किया है कि आँहज़रत (ﷺ) सुबह की नमाज़ में कुनूत पढ़ते रहे यहाँ तक कि दुनिया से तशरीफ़ ले गए। शाफ़िई कहते हैं कि कुनूत हमेशा रूकूअ के बाद पढ़ें और हन्फ़ी कहते हैं कि हमेशा रूकूअ से पहले पढ़ें। और अहले हदीष सब सुन्नतों का मज़ा लूटते हैं। गुज़िश्ता हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि काफ़िरों और ज़ालिमों पर नमाज़ में बहुआ करने से नमाज़ में कोई ख़लल नहीं आता। आपने उन कारियों को नजद वालों की तरफ़ भेजा था। राह में बीरे मरुना पर ये लोग उतरे तो आमिर बिन तुफ़ैल ने रअल और ज़क्वान और अस्बा के लोगों को लेकर उन पर हमला किया। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) से और उनसे अहद था लेकिन उन्होंने दगा की। कुनूत की सहीह दुआ ये है जो हज़रत हसन (रज़ि.) वित्र में पढ़ा करते थे।

अल्लाहुम्महिदीनी फ़ीमन हदैत, व आफ़िनी फ़ीमन आफ़ैत व तवल्लनी फ़ीमन तवल्लैत व बारिक ली फ़ीमा आतैत व किनी शरमा कज़ैत फ़इन्नक तक्ज़ी व ला युक्ज़ा अलैक व इन्नहू ला यज़िल्लु मन वालैत व ला यइज़्जु मन अआदैत तबारक्त रब्बना व तआलैत. नस्तग़फ़िरुक व नतुबु इलैक व सल्लल्लाहु अलन्नबी मुहम्मद

ये दुआ भी मन्कूल है, अल्लाहुम्मग़फ़िलना व लिलमूमिनीन वल्मूमिनाति वल्मुस्लिमीन वल्मुस्लिमात. अल्लाहुम्म अल्लिफ़ बैन कुलूबिहिम व अस्लिह ज़ात बैनिहिम वन्सुरहुम अला अदुव्विक व अदुव्विहिम. अल्लाहुम्म अल्इनिल्लज़ीन यमुहुन अन सबीलिक व युक्रातिलून ओलियाअक. अल्लाहुम्म ख़ालिफ़ बैन कलिमतिहिम व ज़ल्लिजल अक्दामहुम व अन्ज़िल बिहिम बासकल्लज़ी ला तरुदुहू अनिलक्रौमिल मुज़िमीन. अल्लाहुम्म अन्ज़िल मुस्तज़अफ़ीन मिनल मूमिनीन. अल्लाहुम्मशुद वतातक अला फ़ुलानिन वज्अल्ना अलैहिम सिनीन कसिनी यूसुफ़.

फ़ला की जगह उस शख़्स का या उस क़ौम का नाम ले जिस पर बहुआ करना मंज़ूर हो। (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)

15. किताबुल इस्तिस्का

इस्तिस्का या 'नी पानी मांगने के अबवाब

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तशरीह :

इस्तिस्का की तशरीह में हज़रत मौलाना अबैदुल्लाह साहब शैखुल इदीष (रह.) फ़र्माते हैं, व हुव लुगतन तलैबु सकलमाइ मिनल्लौरि लिन्नफ़िसि औ लिगैरिन व श'अन तलबुहू मिनल्लाहि इन्द हुसूलिलजदबि अलल्वजिल्मुबय्यनि फिलअह्मादीयि काललजज़ी फिन्निहायति हुव इस्तिफ़ालुम्मिन तलबिस्सुक्या अय इन्ज़ालुल्लैबि अल्लिलादि वल्लइबादि युकालू सकल्लाहु इबादहूल्गैष व अस्काहुम वल्लइस्मुस्सुक्या बिज़्ज़म्मि वस्तकैतु फ़ुलानन इज़ा तलबत मिन्हु अय्यस्कीक इन्तिहा काललकस्तलानी अल्लइस्तिस्काउ षलाषत अन्वाईन अहदुहा व हुव (अदनाहा) अय्यकून बिहुआइ मुत्तकन अय मिन गैरसलातिन फ़रादा औ मुज्जमिईन व षानीहा व हुव अफ़ज़ लु मिनलअख़लि अय्यकून बिहुआइ खल्फ़स्सलवाति व लौ नाफिलतन कमा फिल्बयानि व गैरिही अनिलअस्हाबि खिलाफ़न लिमा वक़अ फी शहि मुस्लिम मिन तक्ईदिही बिल्फ़राइज़ि व फी ख़ुत्बतिल्जुम्अति व प्रालिषुहा (वहुव अक्मलुहा व अफ़ज़लुहा) अय्यकून बिम्ललाति रकअतैनि वलख़ुत्बतैनि कालन्नववी यताहबु क़बलहु लिसदक़तिन व मियामिन व तौबतिन व इक्बालिन अललख़ैरि व मुज़ान बतिशशरि व नहवि ज़ालिक मिन ताअतिल्लाहि कालशशाह वलीउल्लाह अदिहल्वी कदिस्तस्कन्नबिय्यु (ﷺ) लिउम्मतिही मरातिन अला अन्हाइन क़रीरतिन लाकिन्नल्वजहल्लज़ी सन्नहु लिउम्मतिही अन्न ख़रजन्नासु इलल्मुसल्ला मुब्तजिलन मुतवाज़िअन मुतज़रिअन फ़सल्ला बिहिम रकअतैनि ज़हर फीहिमा बिल्किराति युम्म ख़तब वस्तक़बल फीहल्किबलत यदक व यफ़्द यदैहि व हव्वल रिदाअहु व ज़ालिक लिअन्न लिइज्तिमाइल्मुस्लिमीन फी मक़ानिन वाहिदिन रागिबीन फी शैइन वाहिदिन बिअक्सा हिममिहिम व इस्तिफ़ारिहिम व फिअलिहिमिल्ख़ैरात अप्पन्न फी इस्तिजाबतिहुआइ वस्सलातु अवरबु अह्वाललअब्दि मिनल्लाहि व रफ़उल्यदैनि हिकायतन मिनत्तर्जुरूइत्ताम्मि वल्लइब्तिहालिलअज़ीमि तनब्बुहुन्नफ़िस अलत्तख़श्शुइ व तहविलि रिदाइही हिकायतन अन तक्ल्लु बि अहवालिहिम कमा यफ़अलुल्लमुस्तगीषु बिहज़रतिल्मुलूकि इन्तिहा. (मिर्आत जिल्द 2, सफ़ा : 290)

ख़ुलासा इस इबारत का ये है कि इस्तिस्का लुगत में किसी से अपने लिये या किसी ग़ैर के लिये पानी मांगना और शरीअत में कहत़साली (अकाल) के वक़्त अल्लाह से बारिश की दुआ करना। जिन-जिन तरीक़ों से अह्मादीष में वारिद है। इमाम जज़री (रह.) ने निहाया में कहा है कि शहरों और बन्दों के लिये अल्लाह से बारिश की दुआ करना। मुहावरा है अल्लाह अपने बन्दों को बारिश से सैराब फ़र्माए। क़स्तलानी ने कहा कि इस्तिस्का शरई के तीन तरीक़े हैं। अव्वल तरीक़ा जो अदनातरीन है ये कि मुत्तकन बारिश की दुआ की जाए इन लफ़ज़ों में, अल्लाहुम्म अस्कि इबादक व बहीमतक वन्शुर रहमतक वहयि बलदकल्मय्यत या अल्लाह! अपने बन्दों को और अपने जानवरों को बारिश से सैराब कर दे और अपनी बाराने रहमत को फैला और मुर्दा खेतियों को हरा-भरा सरसब्ज़ व शादाब कर दे। ये दुआ नमाज़ों के बाद हो या बग़ैर नमाज़ों के। तन्हा दुआ की जाए या इज्तिमाई हालत में। बहरहाल पहली सूत ये है दूसरी सूत जो अव्वल से अफ़ज़ल है ये कि नफ़ल और फ़र्ज़ नमाज़ों

के बाद और खुत्बा-ए-जुम्आ में दुआ की जाए और तीसरी कामिलतरीन सूरत ये है कि इमाम तमाम मुसलमानों को हमराह लेकर मैदान में जाए और वहाँ दो रकअत और खुत्बों से फ़ारिग होकर दुआ की जाए और मुनासिब है कि इससे पहले कुछ सद्का-ख़ैरात, तौबा और नेक काम किये जाएँ। हज़रत शाह वलीउल्लाह मरहूम फ़रमते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी उम्मत के लिये कई तरीकों से बारिश की दुआ की है। लेकिन जो तरीका अपनी उम्मत के लिये मसनून करार दिया वो ये कि इमाम लोगों को साथ लेकर निहायत ही फ़कीरी-मिस्कीनी हालत में, खुशूअ व खुजूअ की हालत में ईदगाह जाए। वहाँ दो रकअत जहरी पढ़ाए और खुत्बा पढ़े, फिर किब्ला रख होकर हाथों को बुलन्द उठाकर दुआ करे और चादर को उलटे। इस तरह मुसलमानों के जमा होने और इस्तिफ़ार वौरह करने में कुबूलियत की दुआ के लिये एक खास अषर है और नमाज़ वो चीज़ है जिससे बन्दे को अल्लाह से हद दर्जा कुर्ब हासिल होता है और हाथों का उठाना तज़रूए ताम खुशूअ व खुजूअ के लिये नफ़्स की होशियारी की दलील है और चादर का उलटाना हालात के तब्दील होने की दलील है जैसाकि फ़रियादी बादशाहों के सामने किया करते हैं। मज़ीद तफ़्सीलात आगे आ रही हैं।

बाब 1: पानी माँगना और नबी करीम (ﷺ) का पानी के लिये (जंगल में) निकलना

(1005) हमसे अबू नुरैम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान श़ौरी ने अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र से बयान किया। उनसे अब्बाद बिन तमीम ने और उनसे उनके चचा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने कि नबी करीम (ﷺ) पानी की दुआ करने के लिये तशरीफ़ ले गए और अपनी चादर उलटाई।

(दीगर मक़ाम : 1011, 1012, 1023, 1024, 1025, 1026, 1027, 1028, 6343)

١ - بَابُ الْإِسْتِسْقَاءِ، وَخُرُوجِ

النَّبِيِّ ﷺ فِي الْإِسْتِسْقَاءِ

١٠٠٥ - حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا سَفْيَانُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَجْرٍ عَنْ عَبْدِ بْنِ نَعِيمٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَسْقِي وَخَوَّلَ رِذَاءَةً)).

[أطرافه في: ١٠١١، ١٠١٢، ١٠٢٣، ١٠٢٤، ١٠٢٥، ١٠٢٦، ١٠٢٧]

[١٠٢٨، ٦٣٤٣]

चादर उलटने की कैफ़ियत आगे आएगी और अहले हदीष और अक़बर फ़ुकहा का ये क़ौल है कि इमाम इस्तिस्काअ के लिये निकले तो दो रकअत नमाज़ पढ़े फिर दुआ और इस्तिफ़ार करे।

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) का कुरैश के काफ़िरों पर बहुआ करना कि इलाही उनके साल ऐसे कर दें जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के साल (क़ह्रत) के गुज़रे हैं

(1006) हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुगीरह बिन अब्दुर्हमान ने बयान किया, उनसे अबुजिनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब सरे मुबारक आखिरी रकअत (के रुकूअ) से उठाते तो यूँ फ़र्माया करते किया अल्लाह! अय्याश बिन अबी रबीआ को छुड़वा दे। या अल्लाह! सलमा बिन हिशाम

٢ - بَابُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ ((اجْعَلْهَا

عَلَيْهِمْ مِثْلَ مِثْنِ كَسَيْيَ يُوسُفَ))

١٠٠٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا مُعِينَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنْ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكْعَةِ الْآخِرَةِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ أَنْجِ عِيَاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ، اللَّهُمَّ

को छुड़वा दे। या अल्लाह! वलीद बिन वलीद को छुड़वा दे। या अल्लाह! बेबस नातवाँ मुसलमानों को छुड़वा दे। या अल्लाह! मुजर के काफ़िरों को सख़्त पकड़। या अल्लाह! उनके साल यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के (ज़माने जैसे) साल कर दे। और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ग़िफ़ार की क़ौम को अल्लाह ने बख़्श दिया और असलम की क़ौम को अल्लाह ने सलामत रखा।

इब्ने अबिज़िनाद ने अपने बाप से सुबह की नमाज़ में यही दुआ नक़ल की।

(राजेअ : 797)

أَنْجِ سَلَمَةَ بْنِ مِثْثَامٍ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ. اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطَأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا سِنِينَ كَسَنِي يُوسُفَ). وَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((غِفَارٌ غَفَرَ اللَّهُ لَهُ، وَأَسْلَمٌ سَأَلَهَا اللَّهُ)).

قَالَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ أَبِيهِ هَذَا كُلُّهُ فِي الصَّحِيحِ. [راجع: ٧٩٧]

١٠٠٧- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي الشَّعْثِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا رَأَى مِنَ النَّاسِ إِذْهَارًا قَالَ: ((اللَّهُمَّ سَتِّعْ كَسْبِي يُوسُفَ)). فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ خَصَتْ كُلَّ شَيْءٍ، حَتَّى أَكَلُوا الْجُلُودَ وَالْمَيْتَةَ وَالْجَنَفَ، وَنَظَرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَرَأَى الدُّخَانَ مِنَ الْجُوعِ. فَأَتَاهُ أَبُو سَفْيَانَ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، إِنَّكَ تَأْمُرُ بِطَاعَةِ اللَّهِ وَبِعِبَادَةِ الرَّحِمِ، وَإِنْ قَوْمَكَ قَدْ هَلَكَوا، فَادْعِ اللَّهَ لَهُمْ. قَالَ اللَّهُ غَزَوَجَلَّ: «لَا تَقْبَلُ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ» - إِلَى قَوْلِهِ - «غَائِبُونَ». يَوْمَ تَبْطِشُ الْبَطْشَةُ الْكُبْرَى، فَالْبَطْشَةُ يَوْمَ بَنَرَ، وَقَدْ مَعَتِ الدُّخَانُ وَالْبَطْشَةُ وَاللَّزَامُ وَآيَةُ الرُّومِ.

[أطرافه في : ١٠٢٠، ٤٦٩٣، ٤٧٦٧]

٤٧٧٤، ٤٨٠٩، ٤٨٢٠، ٤٨٢١

(1007) हमसे इमाम हुमैदी (रह.) ने बयान किया, कहा हमसे सुफयान ख़ौरी ने बयान किया, उनसे सुलैमान आ'मश ने, उनसे अबुजुहा ने, उनसे मसरूक ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मसरूद ने (दूसरी सनद) हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर बिन अब्दुल हुमैद ने मंसूर बिन मसरूद बिन मुअतमिर से बयान किया और उनसे अबुजुहा ने, उनसे मसरूक ने, उन्होंने बयान किया कि हम अब्दुल्लाह बिन मसरूद (रज़ि.) की ख़िदमत में बैठे हुए थे। आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब कुफ़फ़ारे कुरैश की सरकशी देखी तो आप (ﷺ) ने बहुआ की कि ऐ अल्लाह! सात बरस का क़ह्र इन पर भेज जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के वक़्त में भेजा था चुनौचे ऐसा क़ह्र पड़ा कि हर चीज़ तबाह हो गई और लोगों ने चमड़े और मुरदार तक खा लिये। भूख की शिद्दत का ये आलम था कि आसमान की तरफ नज़र उठाई जाती तो धुँए की तरह मा'लूम होता था आखिर मजबूर होकर अबू सुफयान हाज़िरे ख़िदमत हुए और कहा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप लोगों को अल्लाह की इत्ताअत और सिलारहमी का हुक्म देते हैं। अब तो आप ही की क़ौम बर्बाद हो रही है, इसलिये आप (ﷺ) अल्लाह से उनके हक़ में दुआ कीजिए। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि उस दिन का इंतज़ार कर जब आसमान साफ़ धुँआ नज़र आएगा; आयत 'इन्नकुम आइदून' तक (नीज़) जब मैं सख़्ती से उनकी गिरफ्त करूंगा (कुफ़फ़ार की) सख़्त गिरफ्त बद्र की लड़ाई में हुई। धुँए का भी मामला गुजर चुका (जब सख़्त क़ह्र पड़ा था) जिसमें पकड़ और क़ैद का ज़िक्र है वो सब हो चुके उसी

तरह सूरह रूम की आयत में जो जिक्र है वो भी हो चुका। (दीगर
मक़ाम : 1020, 4693, 4767, 4774, 4809, 4820, 4821,
4822, 4823, 2824, 4825)

[६८२०, २८२६, ६८२२, ६८२२]

तशरीह : ये हिजरत से पहले का वाक़िआ है। हुज़ुरे अकरम (ﷺ) मक्का ही में थे। क़हत की शिद्दत का ये आलम था कि क़हत ज़दा (अकालग्रस्त) इलाक़े वीराने बन गए थे। अबू सुफ़यान ने इस्लाम की अख़लाक़ी ता'लीमात और सिलारहमी का वास्ता देकर रहम की दरख़्वास्त की। हुज़ुर अकरम (ﷺ) ने फिर दुआ फ़र्माई और क़हत ख़त्म हुआ। ये हदीष इमाम बुखारी (रह.) इस्तिस्काअ में इसलिये लाए कि जैसे मुसलमानों के लिये बारिश की दुआ करना मसनून है वैसे ही काफ़िरों पर क़हत की बहुआ करना जाइज़ है। रिवायत में जिन मुसलमान मज़लूमों का ज़िक्र है ये सब काफ़िरों की कैद में थे। आपकी दुआ की बरकत से अल्लाह ने उनको छुड़वा दिया और वो मदीना में आपके पास आ गए। और सात साल तक हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में क़हत पड़ा था जिसका ज़िक्र कुआन शरीफ़ में है। ग़िफ़ार और असलम ये दोनों क़ौमें मदीने के आसपास रहती थीं। ग़िफ़ार क़दीम से मुसलमान थे और असलम ने आप (ﷺ) से सुलह कर ली थी।

पूरी आयत का तर्जुमा ये है, 'उस दिन का इंतज़ार कर जिस दिन आसमान खुला हुआ धुआं लेकर आएगा, जो लोगों को घेर लेगा, यही तक्वीफ़ का अज़ाब है, उस वक़्त लोग कहेंगे, मालिक हमारे! ये अज़ाब हम पर से उठा दे, हम ईमान लाते हैं' अख़ीर तक। यहाँ सूरह दुखान में बतश और दुखान का ज़िक्र है।

और सूरह फ़ुर्क़ान में फ़सौफ़ा यकून् लिज़ामा (अल फ़ुर्क़ान : 77) लिज़ामा या'नी काफ़िरों के लिये कैद होने का ज़िक्र है। ये तीनों बातें आपके अहद में ही पूरी हो गई थी। दुखान से मुराद क़हत था जो अहले मक्का पर नाज़िल हुआ जिसमें भूख की वजह से आसमान धुआं नज़र आता था और बतशतुल कुबरा (बड़ी पकड़) से काफ़िरों का जंगे बद्र में मारा जाना मुराद है और लिज़ाम उनका कैद होना। सूरह रूम की आयत में ये बयान है कि रूमी काफ़िर ईरानियों से हार गए लेकिन चंद साल में रूमी फिर ग़ालिब हो जाएँगे ये भी हो चुका। आइन्दा हदीष में शेअर इस्तस्क़ल ग़माम अल्लख अबू तालिब के एक तवील क़सीदे का है जो क़सीदा एक सौ दस अशआर पर मुस्तमिल (आधारित) है जिसे अबू तालिब ने औहज़रत (ﷺ) की शान में कहा था।

बाब 3 : क़हत के वक़्त लोग इमाम से पानी की दुआ करने के लिये कह सकते हैं

(1008) हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुरहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे उनके वालिद ने, कहा कि मैंने इब्ने इमर (रज़ि.) को अबू तालिब का ये शे'र पढ़ते सुना था (तर्जुमा) गोरा उनका रंग उनके मुँह के वास्ते से बारिश की (अल्लाह से) दुआ की जाती है। यतीमों की पनाह और बेवाओं के सहारे।

(दीगर मक़ाम : 1009)

۳- بَابُ سُؤْلِ النَّاسِ الْإِمَامَ

الْإِمْنِسْقَاءَ إِذَا قَحَطُوا

۱۰۰۸- حَدَّثَنَا هَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قَتَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ بِشِعْرِ أَبِي طَالِبٍ: وَأَتَيْنَ يُسْتَسْقَى الْقَمَامَ بِوَجْهِهِ إِمَامُ الْيَتَامَى عِصْمَةُ لِلْأَرْوَاحِ.

[طرنه ن: ۱۰۰۹]

(1009) और अम्र बिन हम्ज़ा ने बयान किया कि हमसे सालिम ने अपने वालिद से बयान किया वो कहा करते थे कि अक़्बर मुझे शाइर (अबू तालिब) का शे'र याद आ जाता है। मैं नबी करीम (ﷺ) के मुँह को देख रहा था कि आप दुआ-ए-इस्तिस्काअ (मिम्बर पर) कर रहे थे और अभी (दुआ से फ़ारिग होकर) उतरे भी नहीं थे कि तमाम नाले लबरेज़ हो गए। (राजेअ : 1008)

١٠٠٩- وَقَالَ عُمَرُ بْنُ حَمْزَةَ: حَدَّثَنَا سَالِمٌ عَنْ أَبِيهِ: وَرَبَّمَا ذَكَرْتُ قَوْلَ الشَّاعِرِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَسْقَى، فَمَا يَنْزِلُ حَتَّى يَجِيشَ كُلُّ مِيزَابٍ: وَأَيُّضًا يُسْتَسْقَى الْقَمَامُ بِوَجْهِهِ بِمَالِ الْيَأْمَى عِصْمَةً لِلْأَرَامِلِ هُوَ قَوْلُ أَبِي طَالِبٍ. [راجع: ١٠٠٨]

ये अबू तालिब का शे'र है जिसका तर्जुमा है कि गोरा रंग उनका, वो हामी यतीमों, बेवाओं के; लोग पानी मांगते हैं उनके मुँह के सड़के से।

(1010) हमसे हसन बिन मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने बयान किया, उनसे सुमामा बिन अब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब कभी हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में कहत पड़ता तो उमर (रज़ि.) हज़रत अब्बास (रज़ि.) बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) के वसीले से दुआ करते और फ़र्माते कि ऐ अल्लाह! पहले हम तैरे पास अपने नबी (ﷺ) का वसीला लाया करते थे तो तू पानी बरसाता था। अब हम अपने नबी करीम (ﷺ) के चचा को वसीला बनाते हैं तो तू हम पर पानी बरसा। अनस (रज़ि.) ने कहा कि चुनौचे बारिश ख़ूब ही बरसती। (दीगर मक्काम : 371)

١٠١٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُثَنَّى عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَانَ إِذَا قَحَطُوا اسْتَسْقَى بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا تَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِبَيْنَانَا فَسَقَيْنَا، وَإِنَّا تَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِينَا فَاسْتَسْقَيْنَا. قَالَ: فَيَسْقُونَ)).

[طرفة في : ٣٧١].

तशरीह : ख़ैरुल कुरून में दुआ का यही तरीका था और सलफ़ का अमल भी इसी पर रहा कि मुदों को वसीला बनाकर वो दुआ नहीं करते थे कि उन्हें तो आम हालात में दुआ का शूकर भी नहीं होता बल्कि किसी ज़िन्दा मुक़र्रब बारगाहे एज़दी को आगे बढ़ा देते थे। आगे बढ़कर वो दुआ करते जाते थे और लोग उनकी दुआ पर आमीन कहते जाते।

हज़रत अब्बास (रज़ि.) के ज़रिये इस तरह तवस्सुल किया गया। इस हदीस से मा'लूम होता है कि ग़ैर मौजूद या मुदों को वसीला बनाने की कोई सूरत हज़रत उमर (रज़ि.) के सामने नहीं थी। सलफ़ का यही मा'मूल था और हज़रत उमर (रज़ि.) का तर्ज़े अमल इस मसले में बहुत ज़्यादा वाज़ेह है।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने हज़रत अब्बास (रज़ि.) की दुआ भी नक़ल की है। आपने इस्तिस्काअ की दुआ इस तरह की थी, या अल्लाह! आफ़त और मुसीबत बग़ैर गुनाह के नाज़िल नहीं होती और तौबा के बग़ैर नहीं छूटती। आपके नबी के यहाँ मेरी क़द्रो—मंज़िलत थी इसलिये क़ौम मुझे आगे बढ़ाकर तेरी बारगाह में हाज़िर हुई है; ये हमारे हाथ हैं जिनसे हमने गुनाह किये थे और तौबा के लिये हमारी पेशानियाँ सज्दा रेज़ हैं; बाराने रहमत से सैराब कर। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस मौक़े पर ख़ुल्बा देते हुए फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का हज़रत अब्बास (रज़ि.) के साथ ऐसा मामला था जैसे बेटे

का बाप के साथ होता है। पस लोगों रसूलुल्लाह (ﷺ) की इज्जतदा करो और अल्लाह की बारगाह में उनके चचा को वसीला बनाओ। चुनाँचे दुआ-ए-इस्तिस्काअ के बाद इतने ज़ोर की बारिश हुई कि जहाँ नज़र गई पानी ही पानी था। (मुलख़ब़स)

बाब 4 : इस्तिस्काअ में चादर उलटना

٤ - بَابُ تَحْوِيلِ الرِّدَاءِ فِي

الِاسْتِسْقَاءِ

(1011) हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अबीबक्र ने, उन्हें अब्बाद बिन तमीम ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने दुआ-ए-इस्तिस्काअ की तो अपनी चादर को भी उलटा। (राजेअ: 1005)

١٠١١ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عُبَادِ بْنِ تَوْعِيمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اسْتَسْقَى فَقَلَبَ رِدَاءَهُ)). [راجع: ١٠٠٥]

(1012) हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र से बयान किया, उन्होंने अब्बाद बिन तमीम से सुना, वो अपने बाप से बयान करते थे कि उनसे उनके चचा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ईदगाह गए। आपने वहाँ दुआ-ए-इस्तिस्काअ क़िबला रुख़ होकर की और आपने चादर भी पलटी और दो रकअत नमाज़ पढ़ी। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) कहते हैं कि इब्ने उययना कहते थे कि (हदीष के ये रावी अब्दुल्लाह बिन ज़ैद) वही हैं जिन्होंने अज़ान ख़वाब में देखी थी लेकिन ये उनकी ग़लती है क्योंकि ये अब्दुल्लाह इब्ने ज़ैद बिन आसिम माज़नी है जो अंसार के क़बी ला माज़िन से थे। (राजेअ: 1005)

١٠١٢ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ إِنَّهُ سَمِعَ عُبَادَ بْنَ تَوْعِيمٍ يُحَدِّثُ أَبَاهُ عَنْ عَمِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ إِلَى الْمُصَلَّى فَاسْتَسْقَى فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، وَقَلَبَ رِدَاءَهُ، وَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ كَانَ ابْنُ عُبَيْدَةَ يَقُولُ: هُوَ صَاحِبُ الْأَذَانِ، وَلَكِنَّهُ وَهْمٌ لِأَنَّ هَذَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ بْنُ عَاصِمٍ الْمَازِنِيُّ مَارِئُ الْأَنْصَارِ. [راجع: ١٠٠٥]

तशरीह: ये मज़मून अह्दादीष की और किताबों में मौजूद है कि दुआ-ए-इस्तिस्काअ में आँहज़रत (ﷺ) ने चादर का नीचे का कोना पकड़कर उसको उलटा और चादर को दाएँ जानिब से घुमाकर बाएँ जानिब डाल लिया। इसमें इशारा था कि अल्लाह अपने फ़ज़ल से ऐसे ही क़हत्त की हालत को बदल देगा। अब भी दुआ-ए-इस्तिस्काअ में अहले हदीष के यहाँ यही मसनून तरीक़ा मा' मूल है मगर अहनाफ़ इसके काइल नहीं। इसी हदीष में इस्तिस्काअ की नमाज़ दो रकअत का भी ज़िक्र है। इस्तिस्काअ की नमाज़ भी नमाज़े ईद की तरह है।

बाब 5 : जब लोग अल्लाह की ह़राम की हुई चीज़ों का ख़याल नहीं रखते तो अल्लाह तआला क़हत्त भेजकर उनसे बदला लेता है

٥ - بَابُ انتِقَامِ الرَّبِّ جَلَّ وَعَزَّ مِنْ خَلْقِهِ بِالْقَحْطِ إِذَا تَهَكَّتْ مَحَارِمُ اللَّهِ

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब के तर्जुमे में कोई हदीष बयान नहीं की। शायद कोई हदीष यहाँ लिखना चाहते होंगे मगर

मौका नहीं मिला। कुछ नुस्खों में ये इबारत बिल्कुल नहीं है। बाब का मज़मून उस हदीष से निकलता है जो ऊपर मज़कूर हुई कि कुरैश के कुफ़र पर आँहज़रत (ﷺ) की नाफ़रमानी की वजह से अज़ाब आया।

बाब 6-7 : जामेअ मस्जिद में इस्तिस्काअ या'नी पानी की दुआ करना

(1013) हमसे मुहम्मद बिन मरहूम बैकुन्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू ज़म्मह अनस बिन अय्याज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने बयान किया कि उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने एक शख्स (कअब बिन मुरह या अबू सुफ़यान) का ज़िक्र किया जो मिम्बर के सामने वाले दरवाज़े से जुम्अ के दिन मस्जिदे नबवी में आया। रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हुए ख़ुत्बा दे रहे थे, उसने भी खड़े-खड़े रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (बारिश न होने से) जानवर मर गए और रास्ते बन्द हो गए, आप अल्लाह तआला से बारिश की दुआ फ़र्माइये उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये कहते ही हाथ उठा दिये। आप (ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! हमें सैराब कर। ऐ अल्लाह! हमें सैराब कर। ऐ अल्लाह! हमें सैराब कर। अनस (रज़ि.) ने कहा अल्लाह की क़सम! कहीं दूर-दूर तक आसमान पर बादल का कोई टुकड़ा नज़र नहीं आता था और न कोई और चीज़ (हवा वगैरह जिससे मा'लूम हो कि बारिश आएगी) और हमारे और सिलअ पहाड़ के बीच कोई मकान भी न था (कि हम बादल होने के बावजूद न देख सकते हों) पहाड़ के पीछे से ढाल के बराबर बादल नमूदार हुआ और बीच आसमान तक पहुँचकर चारों तरफ फैल गया और बारिश शुरू हो गई। अल्लाह की क़सम! हमने सूरज को एक हफ़्ते तक नहीं देखा। फिर एक शख्स दूसरे जुम्अ को उसी दरवाज़े से आया। रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े खड़े ही मुखातब किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (बारिश की क़सूरत से) मालो-मनाल पर तबाही आ गई और रास्ते बन्द हो गए। अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि बारिश रोक दे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हाथ उठाए और दुआ की कि या अल्लाह अब हमारे आसपास बारिश बरसा

٢٧ - بَابُ الْإِسْتِسْقَاءِ فِي الْمَسْجِدِ الْجَامِعِ

١٠١٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو ضَمْرَةَ أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَذْكُرُ ((أَنَّ رَجُلًا دَخَلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ مِنْ بَابٍ كَانَ وَجَاهُ الْمِنْبَرِ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِمٌ يَخْطُبُ، فَاسْتَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِمًا فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلَكْتَ الْمَوَاشِي، وَانْقَطَعَتِ السُّلُ، فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يُنْزِلَ. قَالَ: فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اسْقِنَا، اللَّهُمَّ اسْقِنَا، اللَّهُمَّ اسْقِنَا)). قَالَ: أَنَسُ: فَلَا وَاللَّهِ مَا لَرَى فِي السَّمَاءِ مِنْ مَحَابٍ وَلَا قُوزَةٍ وَلَا شَيْئًا، وَمَا بَيْنَنَا وَتَيْنَا سَلَجٌ مِنْ بَحَرٍ وَلَا دَارٍ. قَالَ: لَطَلَعَتْ مِنْ وَدَائِهِ سَحَابَةٌ مِثْلُ الْقُرْسِ. فَلَمَّا تَوَسَّطَتِ السَّمَاءَ انْتَشَرَتْ، ثُمَّ أَفْطَرَتْ - قَالَ: وَاللَّهِ مَا رَأَيْنَا الشَّمْسَ مِثًّا. ثُمَّ دَخَلَ رَجُلٌ مِنْ ذَلِكَ الْبَابِ فِي الْجُمُعَةِ الْمُتَقْبِلَةِ - وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِمٌ يَخْطُبُ - فَاسْتَقْبَلَ قَائِمًا فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلَكْتَ الْأَمْوَالُ، وَانْقَطَعَتِ السُّلُ، فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يُنْزِلَ. قَالَ: فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوِّاتِنَا وَلَا عَلَيْنَا، اللَّهُمَّ

हमसे उसे रोक दे। टीलों पहाड़ों, पहाड़ियों, वादियों और बागों को सैराब कर। उन्होंने कहा कि उस दुआ से बारिश खत्म हो गई और हम निकले तो धूप निकल चुकी थी। शरीक ने कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा कि ये वही पहला शख्स था तो उन्होंने फ़र्माया कि मुझे मा'लूम नहीं। (राजेअ: 932)

عَلَى الْإِكَامِ وَالْجِبَالِ وَالْطَّرَابِ وَالْأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ)). قَالَ: فَانْقَطَعَتْ، وَخَرَجْنَا نَمْشِي فِي الشَّمْسِ. قَالَ شَرِيكَ: فَسَأَلْتُ أَنَسًا: أَفَوَ الرَّجُلِ الْأَوَّلِ؟ قَالَ: لَا أَذْرِي؟ [راجع: ٩٣٢]

सलूआ मदीने का पहाड़ मतलब ये है कि किसी बुलन्द मकान या घर की आड़ भी न थी कि अब (बादल) हो और हम उसे न देख सकें बल्कि आसमान शीशे की तरह साफ़ था। बरसात का कोई निशान न था। इस हदीष से हज़रत इमाम साहब ने ये प्राबित किया कि जुम्'अे में भी इस्तिस्काअ या'नी पानी की दुआ मांगना दुरुस्त है। नीज़ इस हदीष से अनेक मुअजज़ाते नबवी का पुबूत मिलता है कि आपने अल्लाह पाक से बारिश के लिये दुआ की तो वो फ़ौरन कुबूल हुई और बारिश शुरू हो गई। फिर जब क़रते बारों (अतिवृष्टि, ज़्यादा बरसात) से नुक़्सान शुरू हुआ तो आपने बारिश बन्द होने की दुआ की और वो भी फ़ौरन कुबूल हुई। इससे आपके इन्दल्लाह दर्ज़ा-ए-कुबूलियत व सदाक़त पर रोशनी पड़ती है। (❦)

बाब 6 : जुम्'अे का खुत्बा पढ़ते वक़्त जब मुँह क़िबले की तरफ़ न हो पानी के लिये दुआ करना

(1014) हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शरीक ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक शख्स जुम्'अे के दिन मस्जिद में दाख़िल हुआ। अब जहाँ दारुल क़ज़ा है उसी तरफ़ के दरवाज़े से वो आया था। रसूलुल्लाह (❦) खड़े हुए खुत्बा दे रहे थे, उसने भी खड़े-खड़े रसूलुल्लाह (❦) मुख़ातब किया। कहा कि या रसूलुल्लाह (❦)! जानवर मर गए और रास्ते बन्द हो गए। अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि हम पर पानी बरसाए। चुनाँचे रसूलुल्लाह (❦) ने दोनों हाथ उठाकर दुआ फ़र्माई ऐ अल्लाह! हम पर पानी बरसा। ऐ अल्लाह! हमें सैराब कर। अनस (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! आसमान की तरफ़ बादल का कहीं निशान भी न था और हमारे और सलअ पहाड़ के बीच में मकानात भी नहीं थे, इतने में पहाड़ के पीछे से बादल नमूदार हुआ, ढाल की तरह और आसमान के बीच में पहुँचकर चारों तरफ़ फैल गया और बरसने लगा। अल्लाह की क़सम! हमने एक हफ़्ते तक सूरज नहीं देखा। फिर दूसरे जुम्'अे को एक शख्स

٦ - بَابُ الْإِسْتِسْقَاءِ فِي خُطْبَةِ الْجُمُعَةِ غَيْرِ مُسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةِ
١٠١٤ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شَرِيكَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ((أَنَّ رَجُلًا دَخَلَ الْمَسْجِدَ يَوْمَ جُمُعَةٍ مِنْ بَابٍ كَانَ نَحْوَ دَارِ الْقَضَاءِ - وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِمٌ يَخُطُبُ - فَاسْتَقْبَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَائِمًا ثُمَّ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْكَتِ الْأَمْوَالُ، وَانْقَطَعَتِ السُّبُلُ، فَادْعُ اللَّهَ يُغِيثَنَا. فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ اغْثَا، اللَّهُمَّ اغْثَا، اللَّهُمَّ اغْثَا)). قَالَ: أَنَسٌ: وَلَا وَاللَّهِ مَا نَرَى فِي السَّمَاءِ مِنْ سَحَابٍ وَلَا قَرَعَةٍ، وَمَا بَيْنَنَا وَبَيْنَ سَلْعٍ مِنْ يَسَرٍّ وَلَا دَارٍ. وَقَالَ لَطَلَعَتْ مِنْ وَرَائِهِ مَحَابَةٌ مِثْلُ الثُّرَيِّسِ. فَلَمَّا تَوَسَّطَتِ السَّمَاءُ انْتَشَرَتْ، ثُمَّ امْطَرَتْ، فَلَا وَاللَّهِ مَا رَأَيْنَا

उसी दरवाजे से दाखिल हुआ। रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े खुत्बा दे रहे थे, इसलिये उसने खड़े-खड़े कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (क़स्रते बारिश से) जानवर तबाह हो गए और रास्ते बन्द हो गए। अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि बारिश बन्द हो जाए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दोनों हाथ उठाकर दुआ की ऐ अल्लाह! हमारे अत्राफ़ में बारिश बरसा (जहाँ ज़रूरत है) हम पर न बरसा। ऐ अल्लाह! टीलों, पहाड़ियों, बादियों और बाग़ों को सैराब कर। चुनौचे बारिश का सिलसिला बन्द हो गया और हम बाहर आए तो धूप निकल चुकी थी। शरीक ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा कि क्या ये पहला ही शख्स था? उन्होंने जवाब दिया मुझे मा'लूम नहीं।

(राजेज़: 932)

الشمس سبًا. ثُمَّ دَخَلَ رَجُلٌ مِنْ ذَلِكَ
الْبَابِ فِي الْجُمُعَةِ - وَرَسُولُ اللَّهِ
ﷺ قَائِمٌ يَخْطُبُ - فَاسْتَقْبَلَهُ قَائِمًا فَقَالَ:
يَا رَسُولَ اللَّهِ مَلَكَتِ الْأَمْوَالُ، وَانْقَطَعَتِ
السُّبُلُ، فَادْعُ اللَّهَ يُمَسِّكَهَا عَنَّا. قَالَ
فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ
خَوَاتِنَا وَلَا عَلَيْنَا، اللَّهُمَّ عَلَى الْإِكَامِ
وَالْطَّرَابِ وَتُطَوِّنِ الْأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ
الشَّجَرِ)). قَالَ: فَأَقْلَعَتْ وَخَرَجْنَا نَمشي
فِي الشَّمْسِ. قَالَ شَرِيكَ: فَسَأَلْتُ أَنَسَ
بْنَ مَالِكٍ: أَهَوَ الرَّجُلُ الْأَوَّلُ؟ قَالَ: مَا

أَدْرِي. [راجع: 932]

तशरीह: सलआ मदीने का मशहूर पहाड़ है, उधर ही समुन्दर था। रावी ये कहना चाहते हैं कि बादल का कहीं नामो-निशान भी नहीं था। सलआ की तरफ़ बादल का इम्कान हो सकता था लेकिन उस तरफ़ भी बादल नहीं था क्योंकि पहाड़ी स्लाफ़ नज़र आ रही थी। बीच में मकानात वगैरह भी नहीं थे अगर बादल होते तो ज़रूर नज़र आते और हुजुरे अकरम (ﷺ) की दुआ के बाद बादल उधर ही से आए। दारुल क़ज़ा एक मकान था जो हज़रत उमर (रज़ि.) ने बनवाया था। जब हज़रत उमर (रज़ि.) का इतिक्काल होने लगा तो आपने वसियत की कि ये मकान बेचकर मेरा क़र्ज़ अदा कर दिया जाए जो बैतुलमाल से मैंने लिया है। आपके साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उसे मुआविया (रज़ि.) के हाथ बेचकर आपका क़र्ज़ अदा कर दिया। इस वजह से उस घर को दारुल क़ज़ा कहने लगे। या'नी वो मकान जिससे क़र्ज़ अदा किया गया। ये हाल था मुसलमानों के ख़लीफ़ा का कि दुनिया से जाते वक़्त उनके पास कोई सरमाया (सम्पत्ति, माल वगैरह) न था।

बाब 8 : मिम्बर पर पानी के लिये दुआ करना

(1015) हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) जुम्मे के दिन खुत्बा दे रहे थे कि एक शख्स आया और कहने लगा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! पानी का क़हत्त पड़ गया है, अल्लाह से दुआ कीजिए कि हमें सैराब कर दे। आपने दुआ माँगी और बारिश इस तरह शुरू हुई कि घरों तक पहुँचना मुश्किल हो गया, दूसरे जुम्मे तक बराबर बारिश होती रही। अनस ने कहा कि फिर (दूसरे

٨- بَابُ الْإِسْتِقَاءِ عَلَى الْمِنْبَرِ
١٠١٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو
خُوَازِمَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ:
((بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ
الْجُمُعَةِ إِذْ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ
اللَّهِ قَطَعَتِ الْمَطَرُ، فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يَسْقِيَنَا.
فَدَعَا، فَمَطَرْنَا، فَمَا كُنَّا أَنْ نَعْلَمَ إِلَى
مَنَارِلِنَا، فَمَا رَلْنَا نَمَطَرُ إِلَى الْجُمُعَةِ

जुम्आ में) वही शख्स या कोई और खड़ा हुआ और कहने लगा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला बारिश का रुख किसी और तरफ कर दे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फर्माई कि ऐ अल्लाह! हमारे आसपास बारिश बरसा हम पर न बरसा। अनस ने कहा कि मैंने देखा कि बादल टुकड़े-टुकड़े होकर दाएँ-बाएँ तरफ चले गए फिर वहाँ बारिश शुरू हो गई और मदीना में इसका सिलसिला बन्द हुआ। (राजेअ: 932)

الْمُفَلَّةِ. قَالَ فَقَامَ ذَلِكَ الرَّجُلُ - أَوْ غَيْرُهُ - فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَدْعُ اللَّهَ أَنْ يَصْرِفَهُ عَنَّا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ خَوَاتِنَا وَلَا عَلَيْنَا)). قَالَ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ السَّحَابَ يَنْقَطِعُ يَمِينًا وَشِمَالًا، يُمَطَّرُونَ وَلَا يُمَطَّرُ أَهْلُ الْمَدِينَةِ)).

[راجع: ٩٣٢]

तशरीह:

इस हदीष में बज़ाहिर मिम्बर का जिक्र नहीं है। आपके ख़ुल्ब-ए-जुम्आ का जिक्र है जो आप मिम्बर ही पर दिया करते थे कि उससे मिम्बर प्राबित हो गया।

बाब 9 : पानी की दुआ करने में जुम्आ की नमाज़ को काफ़ी समझना (या) नी अलग इस्तिस्काअ की नमाज़ न पढ़ना और उसकी निर्यत करना ये भी इस्तिस्काअ की एक शकल है)

(1016) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा कअम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने, उनको अनस (रज़ि.) ने बतलाया कि एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि जानवर हलाक हो गए और रास्ते बन्द हो गए। आपने दुआ की और एक हप्ते तक बारिश होती रही फिर एक शख्स आया और कहा कि (बारिश की क़ब्रत से) घर गिर गए रास्ते बन्द हो गए। चुनौचे आप (ﷺ) ने फिर खड़े होकर दुआ की कि ऐ अल्लाह! बारिश टीलों, पहाड़ियों, वादियों और बाग़ों में बरसा (दुआ के नतीजे में) बादल मदीना से इस तरह फट गए जैसे कपड़ा फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। (राजेअ: 932)

बाब 10 : अगर बारिश की क़ब्रत से रास्ते बन्द हो जाएँ तो पानी थमने की दुआ कर सकते हैं

(1017) हमसे इस्माईल बिन अबी अय्यूब ने बयान किया,

٩- بَابُ مَنْ اكْتَفَى بِصَلَاةِ الْجُمُعَةِ فِي الْإِسْتِسْقَاءِ

١٠١٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُسْلِمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ شُرَيْكٍ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: هَلَكَتِ الْمَوَاشِي، وَتَقَطَّعَتِ السُّبُلُ، فَدَعَا، فَمَطَرْنَا مِنَ الْجُمُعَةِ إِلَى الْجُمُعَةِ. ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: تَهَلَّعَتِ الثُّبُوتُ، وَتَقَطَّعَتِ السُّبُلُ، وَهَلَكَتِ الْمَوَاشِي، فَقَامَ ﷺ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ عَلَى الْإِكَامِ وَالطَّرَابِ وَالْأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ)). فَانْحَابَتِ عَنِ الْمَدِينَةِ الْحَبَابُ الْقَوْبِ.

[راجع: ٩٣٢]

١٠- بَابُ الدُّعَاءِ إِذَا تَقَطَّعَتِ

السُّبُلُ مِنْ كَثْرَةِ الْمَطَرِ

١٠١٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي

उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक रह. ने बयान किया, उन्होंने शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र के वास्ते से बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि एक शख्स रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मवेशी हलाक हो गए और रास्ते बन्द हो गए, आप अल्लाह तआला से दुआ कीजिए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई तो एक जुम्आ से दूसरे जुम्आ तक बारिश होती रही फिर दूसरे जुम्आ को एक शख्स हाज़िरे ख़िदमत हुआ और कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (क़प्रते बारों से बहुत से) मकानात गिर गए, रास्ते बन्द हो गए और मवेशी हलाक हो गए। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! पहाड़ों, टीलों, वादियों और बागात की तरफ़ बारिश का रुख़ कर दे। (जहाँ बारिश की कमी है) चुनाँचे आप (ﷺ) की दुआ से बादल कपड़े की तरह फट गया। (राजेअ: 932)

مَالِكٌ عَنْ شَرِيكَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلَكَتِ الْمَوَاشِي، وَانْقَطَعَتِ السُّبُلُ فَادْعُ اللَّهَ. فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَمَطَرُوا مِنْ جُمُعَةٍ إِلَى جُمُعَةٍ. فَجَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، تَهْتَمُّ الثِّيُوبُ، وَتَقْطَعُ السُّبُلُ، وَهَلَكَتِ الْمَوَاشِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ عَلَى رُؤُوسِ الْجِبَالِ وَالْأَكَامِ وَبُطُونِ الْأَوْدِيَةِ، وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ)). فَانْجَابَتْ عَنِ الْمَدِينَةِ أَنْجِيَابُ التَّوْبِ.

[راجع: ٩٣٢]

और पानी परवरदिगार की रहमत है उसके बिलकुल बन्द हो जाने की दुआ नहीं फ़र्माई बल्कि यूँ फ़र्माया कि जहाँ मुफ़ीद है वहाँ बरसे।

बाब 11 : जब नबी करीम (ﷺ) ने जुम्आ के दिन मस्जिद ही में पानी की दुआ की तो चादर नहीं उलटाई

١١- بَابُ مَا قِيلَ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يُحَوِّلْ رِدَاءَهُ فِي الْإِسْتِسْقَاءِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

(1018) हमसे हसन बिन बिशर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुआफ़ी बिन इमरान ने बयान किया कि उनसे इमाम औज़ाई ने, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख्स ने नबी करीम (ﷺ) से (क़हत से) माल की बर्बादी और अहलो-अयाल की भूख की शिकायत की। चुनाँचे आप (ﷺ) ने दुआए इस्तिस्काअ की। रावी ने इस मौक़े पर न चादर पलटने का ज़िक्र किया और न क़िब्ला की तरफ़ मुँह करने का। (राजेअ: 932)

١٠١٨- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ بِشْرٍ قَالَ : حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عِمْرَانَ عَنْ الْأَوْزَاعِيِّ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ((أَنَّ رَجُلًا شَكَأَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ هَلَاكَ الْمَالِ وَجَهْدَ الْيَمَالِ، فَدَعَا اللَّهَ يَسْتَقِي. وَلَمْ يَذْكُرْ أَنَّهُ حَوَّلَ رِدَاءَهُ، وَلَا اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ)). [راجع: ٩٣٢]

मा'लूम हुआ कि चादर उलटाना उस इस्तिस्काअ में सुन्नत है जो मैदान में निकलकर किया जाए और नमाज़ पढ़ी जाए।

बाब 12 : जब लोग इमाम से दुआ-ए-

١٢- بَابُ إِذَا اسْتَشْفَعُوا إِلَى الْإِمَامِ

इस्तिस्काअ की दरखवास्त करें तो रह न करे

(1019) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी नम्र के वास्ते से खबर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक शख्स रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ। कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (क़हत से) जानवर हलाक हो गए और रास्ते बन्द हो गए, अल्लाह से दुआ कीजिए। चुनौचे आप (ﷺ) ने दुआ की और एक जुम्मे से अगले जुम्मे तक एक हफ़्ता तक बारिश होती रही। फिर एक शख्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर होकर कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ) (बारिश की क़हरत से) रास्ते बन्द हो गए और मवेशी हलाक हो गए। अब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! बारिश का रुख़ पहाड़ों, टीलों वादियों और बागात की तरफ़ मोड़ दे, चुनौचे बादल मदीना से इस तरह छंट गये जैसे कपड़ा फट जाया करता है।

बाब 13 : इस बारे में कि अगर क़हत में मुश्रीकीन मुसलमानों से दुआ की दरखवास्त करें?

अगर क़हत पड़े और ग़ैर मुस्लिम, मुसलमानों से दुआ के तलबगार हों तो बिला देर दुआ करनी चाहिये क्योंकि किसी भी ग़ैर-मुस्लिम से इंसानी सलूक करना और उसके साथ नेक बर्ताव करना इस्लाम का ऐन मन्शा है और इस्लाम की इज़त भी इसी में है।

(1020) हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, उनसे सुफ़यान घौरी ने, उन्होंने बयान किया कि हमसे मंज़ूर और आ'मश ने बयान किया, उनसे अबुज्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक ने, आपने कहा कि मैं इब्ने मसरूद (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर था। आपने फ़र्माया कि कु़रैश का इस्लाम से ऐराज बढ़ता गया तो नबी करीम (ﷺ) ने उनके हक़ में बहुआ की। उस बहुआ के नतीजे में ऐसा क़हत पड़ा कि कुम्फ़ार मरने लगे और मुरदार और हड्डियाँ खाने लगे। आख़िर अबू सुफ़यान आप (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप सिलारहमी का हुक्म देते हैं लेकिन आपकी क़ौम मर रही है। अल्लाह अज़ व जल्ल से दुआ कीजिए। आपने इस आयत की

لَيَسْتَسْقِيَ لَهُمْ لَمْ يَرْثَهُم

١٠١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ شَرِيكَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي نَعْرِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلَكَتِ الْمَوَاشِي، وَتَقَطَّعَتِ السُّبُلُ، فَادْعُ اللَّهَ. فَدَعَا اللَّهُ لَمْطَرِنَا مِنَ الْجُمُعَةِ إِلَى الْجُمُعَةِ فَبَجَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، تَهَلَّتِ الثِّيُوبُ، وَتَقَطَّعَتِ السُّبُلُ، وَهَلَكَتِ الْمَوَاشِي. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ عَلَى ظُهُورِ الْجِبَالِ وَالْإَكَامِ وَبُطُونِ الْأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ)). فَانْجَابَتْ عَنِ الْمَدِينَةِ انْجِيَابَ الثَّوْبِ.

١٣- بَابُ إِذَا اسْتَشْفَعَ الْمُشْرِكُونَ بِالْمُسْلِمِينَ عِنْدَ الْقَحْطِ

١٠٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ وَالْأَعْمَشُ عَنْ أَبِي الصُّخَى عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: أَتَيْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ فَقَالَ: إِنَّ قُرَيْشًا أَبْطَرُوا عَنْ الْإِسْلَامِ، فَدَعَا عَلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ، فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ حَتَّى هَلَكَوا فِيهَا، وَآكَلُوا الْمَيْتَةَ وَالنِّطَامَ. فَبَجَاءَ أَبُو سَفْيَانَ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، جِئْتُ تَأْمُرُ بِصَلَةِ الرَّحِمِ، وَإِنْ

तिलावत की (तर्जुमा) उस दिन का इतिज़ार कर जब आसमान पर साफ़ खुला हुआ धुआं नमूदा रहोगा इल्ला ये (खैर आपने दुआ की, जिससे बारिश हुई कहत जाता रहा) लेकिन वो फिर कुफ़र करने लगे इस पर अल्लाह पाक का ये फ़र्मान नाज़िल हुआ (तर्जुमा) जिस दिन मैं उन्हें सख़्ती के साथ पकड़ूंगा और ये पकड़ बद्र की लड़ाई में हुई। और अस्बात बिन मुहम्मद ने मंसूर से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआए इस्तिस्काअ की (मदीना में) जिसके नतीजे में ख़ूब बारिश हुई कि सात दिन तक वो बराबर जारी रही। आख़िर लोगों ने बारिश की ज़्यादाती की शिकायत की तो हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! हमारे अतराफ़ व जवानिब में बारिश बरसा, मदीना में बारिश का सिलसिला ख़त्म कर। चुनाँचे बादल आसमान से छट गया और मदीना के आसपास ख़ूब बारिश हुई। (राजेअ : 1007)

तशरीह : शुरू में जो वाकिआ बयान हुआ उसका ता'ल्लुक मक्का से है। कुफ़र की सरकशी और नाफ़रमानी से आजिज़ आकर हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने जब बहुआ की और उसके नतीजे में सख़्त कहत पड़ा तो अबू सुफ़यान जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे हाज़िरे ख़िदमत हुए और कहा कि आप सिलारहमी का हुक्म देते हैं लेकिन खुद अपनी क़ौम के हक़ में इतनी सख़्त बहुआ कर दी कि अब कम अज़क़म आपको दुआ करनी चाहिये कि क़ौम की ये परेशानी दूर हो। हदीष में इसकी तशरीह नहीं है कि आपने उनके हक़ में दोबारा दुआ फ़र्माई। लेकिन हदीष के अल्फ़ाज़ से मा'लूम होता है कि आपने दुआ की थी, तभी तो कहत का सिलसिला ख़त्म हुआ। लेकिन क़ौम की सरकशी बराबर जारी रही और फिर ये आयत नाज़िल हुई, **يَوْمَ نَبْتِلُكُمْ بَدْرًا** (अददुखान, 16) ये बतशे कुबरा बद्र की लड़ाई में वक़्त पज़ीर (घटित) हुई। जब क़ुरैश के बेहतरीन अफ़राद लड़ाई में काम आए और उन्हें बुरी तरह पस्प्या होना पड़ा। दमयाती ने लिखा है कि सबसे पहले बहुआ हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने उस वक़्त की थी जब कुफ़राने हरम में सज़्दे की हालत में आप पर ओझड़ी डाल दी थी और फिर ख़ूब इस कारनामे पर खुश हुए और कहकहे लगाए थे। क़ौम की सरकशी हुई और फ़साद इस दर्जा बढ़ गया तो हुज़ूर अकरम (ﷺ) जैसे हलीमुत्तबाअ और बुर्दवार और साबिर नबी की जुबान से भी बहुआ निकल गई। जब ईमान लाने की किसी दर्जा में भी उम्मीद नहीं होती बल्कि क़ौम का वजूद दुनिया में सिर्फ़ शरो-फ़साद का सबब बनकर रह जाता है तो इस शर को ख़त्म करने की आख़िरी तदबीर बहुआ है।

हुज़ूर अकरम (ﷺ) की जुबाने मुबारक से फिर भी कभी भी ऐसी बहुआ नहीं निकली जो सारी क़ौम की तबाही का सबब होती क्योंकि अरब के अक़्बर अफ़राद का ये ईमाने मुक़द्दर था। इस रिवायत में अस्बात के वास्ते से जो हिस्सा बयान हुआ है उसका रिश्ता मक्का से नहीं बल्कि मदीना से है।

अस्बात ने मंसूर के वास्ते से जो हदीष नक़ल की है उसकी तफ़सील इससे पहले अनेक अब्बाब (अनेक अध्यायों) में गुजर चुकी है। मुसनिफ़ इमाम बुखारी (रह.) ने दो हदीषों को मिलाकर एक जगह बयान कर दिया। ये ख़लत किसी रावी का नहीं बल्कि जैसा कि दमयाती ने कहा है खुद मुसनिफ़ (रह.) का है। (तफ़हीमुल बुखारी)

पैग़म्बरों की शख़्सियत बहुत ही अफ़ा व आला होती है। वो हर मुश्किल को हर दुख को हँसकर बर्दाश्त कर लेते हैं मगर जब क़ौम की सरकशी हद से गुजरने लगे अगर वो उनकी हिदायत से मायूस हो जाएँ तो वो अपना आख़िरी हथियार बहुआ भी इस्तेमाल कर लेते हैं। कुआन मजीद में ऐसे मौक़ों पर बहुत से नबियों की दुआएँ मन्कूल हैं। हमारे सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी मायूसकुन मौक़ों पर बहुआ की जिनके नतीजे भी फ़ौरन ही ज़ाहिर हुए उन्हीं में से एक ये बयान किया गया वाकिआ भी है। (वल्लाहु अज़लम)

قَوْمَكَ حَلَكُوا، فَادْعُ اللَّهَ تَعَالَى. فَقَرَأَ :
﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ﴾
﴿ثُمَّ عَادُوا إِلَى كُفْرِهِمْ، فَلَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى :
﴿يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى﴾ يَوْمَ نَذِرُ -
وَرَأَى أَهْلَ بَيْتِهِ عَنْ مَنْصُورٍ - : فَدَعَا رَسُولُ
اللَّهِ ﷺ فَسَقُوا الْغَيْثَ، فَأُطْبِقَتْ عَلَيْهِمْ
سَيْفًا. وَشَكَكَ النَّاسُ كَثْرَةَ الْمَطَرِ قَالَ :
((اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا)). فَانْحَدَرَتِ
السَّحَابَةُ عَنْ رَأْسِهِ، فَسَقُوا النَّاسَ
حَوَالَهُمْ. [راجع : ١٠٠٧]

बाब 14 : जब बारिश हद से ज्यादा हो तो इस बात की दुआ कि हमारे यहाँ बारिश बन्द हो जाए और इर्दगिर्द बरसे

(1021) मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा कि हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने अबैदुल्लाह उमरी से बयान किया, उनसे साबित ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जुम्मे के दिन खुत्बा पढ़ रहे थे कि इतने में लोगों ने खड़े होकर गुल मचाया, कहने लगे कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! बारिश के नाम बूँद भी नहीं दरख्त सूख चुके (या) नी तमाम पत्ते सूखे हो गए) और जानघर तबाह हो रहे हैं, आप (ﷺ) अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि हमें सैराब करे। आपने दुआ की ऐ अल्लाह! हमें सैराब कर। दो बार आपने इस तरह कहा। अल्लाह की क्रसम! उस वक़्त आसमान पर बादल कहीं दूर-दूर तक नज़र नहीं आता था लेकिन दुआ के बाद अचानक एक बादल आया और बारिश शुरू हो गई। आप मियबर से उतरे और नमाज़ पढ़ाई जब आप नमाज़ से फ़ारिग हुए तो बारिश हो रही थी और दूसरे जुम्मे तक बारिश बराबर होती रही फिर जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) दूसरे जुम्मे में खुत्बा के लिये खड़े हुए तो लोगों ने बताया कि मकानात गिर गए और रास्ते बन्द हो गए, अल्लाह से दुआ कीजिए कि बारिश बन्द कर दे। इस पर नबी करीम (ﷺ) मुस्कराए और दुआ की ऐ अल्लाह! हमारे अत्तराफ़ में अब बारिश बरसा, मदीना में इस सिलसिले को बन्द कर। आप (ﷺ) की दुआ से मदीना से बादल छट गए और बारिश हमारे इर्द-गिर्द होने लगी। इस शान से कि अब मदीना में एक बूँद भी न पड़ती थी मैंने मदीना को देखा अब (बादल) ताज़ की तरह गिर्दगिर्द था और मदीना उसके बीच में। (राजेज़: 932)

बाब 15 : इस्तिस्काअ में खड़े होकर खुत्बे में दुआ मांगना

(1022) हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, उनसे जुहैर ने, उनसे अबू इम्हाक़ ने कि अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंसारी (रज़ि.) इस्तिस्काअ के लिये बाहर निकले। उनके साथ बराअ बिन अज़िब और ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) भी थे। उन्होंने पानी

١٤- بَابُ الدُّعَاءِ إِذَا كَثُرَ الْمَطَرُ
(حَوَالِنَا وَلَا عَلَيْنَا))

١٠٢١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ قَابِثِ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ جُمُعَةٍ، فَلَقَامَ النَّاسُ فَمَاصَحُوا فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَحَطَّ الْمَطَرُ، وَاحْمَرَّتِ الشَّجَرُ، وَهَلَكَتِ النَّهَائِمُ، فَادْعُ اللَّهَ أَنْ يَسْقِيَنَا، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اسْقِنَا)) (مَرْكُوبٍ). وَأَمَّهُمُ اللَّهُ مَا تَرَى فِي السَّمَاءِ قُرْعَةً مِنْ سَحَابٍ، فَتَشَاتُ سَحَابَةٌ وَأَمْطَرَتْ، وَتَزُولُ عَنِ الْوَيْسْرِ لَمَضَى. فَلَمَّا انْصَرَفَ لَمْ تَزَلْ تُمَطِّرُ إِلَى الْجُمُعَةِ الَّتِي تَلِيهَا. فَلَمَّا قَامَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ مَاصَحُوا إِلَيْهِ: فَهَلَكَتِ الْبُيُوتُ وَانْقَطَعَتِ السُّبُلُ، فَادْعُ اللَّهَ يُخَبِّسْهَا عَنَّا، فَتَبَسَّمَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوَالِنَا وَلَا عَلَيْنَا)). وَتَكَثَّرَتْ الْمَدِينَةُ، فَجَعَلَتْ تُمَطِّرُ حَوْلَهَا، وَمَا تُمَطِّرُ بِالْمَدِينَةِ قَطْرَةً، فَتَنْظُرُ إِلَى الْمَدِينَةِ وَإِنَّهَا لَفِي مِثْلِ الْإِكْلِيلِ)). [راجع: ٩٣٢]

١٥- بَابُ الدُّعَاءِ فِي الْإِسْتِسْقَاءِ
قَالِمًا

١٠٢٢- وَقَالَ لَنَا أَبُو نَعِيمٍ عَنْ زُهَيْرٍ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ ((خَرَجَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ الْأَنْصَارِيُّ وَخَرَجَ مَعَهُ الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ

के लिये दुआ की तो पांव पर खड़े रहे, मिम्बर न था। उसी तरह आपने दुआ की फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ी जिसमें क़िरअत बुलन्द आवाज़ से की, न अज़ान कही और न इक़ामत। अबू इस्हाक़ ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने नबी करीम (ﷺ) को देखा था।

وَرَزَيْدُ بْنُ أَرْقَمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ فَاسْتَسْقَى، فَقَامَ بِهِمْ عَلَى رِجْلَيْهِ عَلَى غَيْرِ مِئْبَرٍ، فَاسْتَفْقَرْتُ صُلَى رَكَعَتَيْنِ يَجْهَرُ بِالْقِرَاءَةِ، وَلَمْ يُؤْذَنْ وَلَمْ يَقُمْ. قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ: وَرَأَى عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ النَّبِيَّ (ﷺ).

वो सहाबी थे और उनका ये बाक़िआ 45 हिजरी से ता'त्लुक रखता है, जबकि वो अब्दुल्लाह बिन जुबैर की तरफ़ से कूफ़ा के हाकिम थे।

(1023) हमसे अबुल यमान हकीम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शूऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्बाद बिन तमीम ने बयान किया कि उनके चचा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने जो सहाबी थे, उन्हें ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) लोगों को साथ लेकर इस्तिस्काअ के लिये निकले और आप खड़े हुए और खड़े ही खड़े अल्लाह तआला से दुआ की, फिर क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके अपनी चादर पलटी चुनौचे बारिश खूब हुई। (राजेअ: 1005)

١٠٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ بْنُ تَمِيمٍ أَنَّ عَمَّهُ - وَكَانَ مِنْ اصْطَحَابِ النَّبِيِّ (ﷺ) - أَخْبَرَهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ (ﷺ) خَرَجَ بِالنَّاسِ يَسْتَسْقِي لَهُمْ، فَقَامَ قَدْعًا اللَّهُ قَائِمًا، ثُمَّ تَوَجَّهَ إِلَى الْقِبْلَةِ وَخَوَّلَ رِذَاءَةً فَاسْتَقُوا)). [راجع: ١٠٠٥]

बाब 16 : इस्तिस्काअ की नमाज़ में बुलन्द आवाज़ से क़िरअत करना

١٦- بَابُ الْجَهْرِ بِالْقِرَاءَةِ فِي الْإِسْتِسْقَاءِ

(1024) हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे अबी ज़िब ने जुहरी से बयान किया, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने और उनसे उनके चचा (अब्दुल्लाह बिन ज़ैद) ने कि नबी करीम (ﷺ) इस्तिस्काअ के लिये बाहर निकले तो क़िब्ला रुख़ होकर दुआ की। फिर अपनी चादर पलटी और दो रकअत नमाज़ पढ़ी। नमाज़ में आपने क़िरअत कुआन बुलन्द आवाज़ से की। (राजेअ: 1005)

١٠٢٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي ذُنَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ بْنِ تَمِيمٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ (ﷺ) يَسْتَسْقِي، فَتَوَجَّهَ إِلَى الْقِبْلَةِ يَدْعُو، وَخَوَّلَ رِذَاءَةً، ثُمَّ صُلَى رَكَعَتَيْنِ يَجْهَرُ فِيهِمَا بِالْقِرَاءَةِ)). [راجع: ١٠٠٥]

बाब 17 : इस्तिस्काअ में नबी करीम (ﷺ) ने लोगों की तरफ़ पुशत मुबारक किस तरह मोड़ी थी?

١٧- بَابُ كَيْفُ خَوَّلَ النَّبِيُّ (ﷺ) ظَهْرَهُ إِلَى النَّاسِ

(1025) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने ज़िब ने जुहरी से बयान किया, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने, उनसे उनके चचा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को जब आप (ﷺ) इस्तिस्काअ के लिये बाहर

١٠٢٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي ذُنَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ بْنِ تَمِيمٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ (ﷺ) لَمَّا خَرَجَ

निकले, देखा था। उन्होंने बयान किया कि आपने अपनी पीठ सहाबा की तरफ कर दी और क़िब्ला रुख होकर दुआ की। फिर चादर पलटी और दो रकअत नमाज़ पढ़ाई जिसकी क़िरअते कुआन में आपने जहर किया था। (राजेअ: 1005)

يَسْتَقِي ، قَالَ : فَحَوَّلَ إِلَى النَّاسِ ظَهْرَهُ
وَأَسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ يَذْغُو ، ثُمَّ حَوَّلَ رِجْلَهُ ،
ثُمَّ صَلَّى لَنَا رَكْعَتَيْنِ جَهَرَ فِيهِمَا
بِالْقِرَاءَةِ. (راجع: ١٠٠٥)

बाब 18 : इस्तिस्काअ की नमाज़

दो रकअतें पढ़ना

(1026) मुज़से कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र से बयान किया, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने, उनसे उनके चचा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने दुआ-ए-इस्तिस्काअ की तो दो रकअत नमाज़ पढ़ी और चादर पलटी।

(राजेअ: 1005)

١٨ - بَابُ صَلَاةِ الْإِسْتِسْقَاءِ

رَكْعَتَيْنِ

١٠٢٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ:
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ
عَنْ عُبَادِ بْنِ تَعِيمٍ عَنْ عَمِّهِ: ((أَنَّ النَّبِيَّ
ﷺ اسْتَسْقَى لِمَنْ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ، وَقَلْبُ

رِجْلُهُ. (راجع: ١٠٠٥)

तशरीह: इस्तिस्काअ की दो रकअत नमाज़ सुन्नत है। इमाम मालिक (रह.) इमामे शाफ़िई (रह.) इमाम अहमद (रह.) और जुम्हूर का यही क़ौल है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) इस्तिस्काअ के लिये नमाज़ ही तस्लीम नहीं करते मगर साहिबैन ने इस बारे में हज़रत इमाम की मुखालफ़त की है। सलाते इस्तिस्काअ के सुन्नत होने का इक़रार किया है। साहिबे अर्फ़ुशज़ी ने इस बारे में तफ़्सील से लिखा है। हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब शैख़ुल हदीष (रह.) सारे इख़्तिलाफ़ की तशरीह के बाद फ़र्माते हैं, व क़द अरफ़्त बिमा ज़कर्ना मिन वज्हि तख़ब्बुतिल्हनफिद्यति फी बयानि मज़हबि इमामिहिम बहुव क़द नफ़्स्सलात फिलइस्तिस्काइ मुल्लक़न कमा मुसरहन फी कलामि अबी यूसुफ़ व मुहम्मद फी बयानि मज़हबि अबी हनीफ़त व ला शक़ अन्न क़ौलहू हाज़ा मुखालिफ़न व मुनाबिज़ुन लिस्सुन्नतिस् सहीहतिष् प्राबिततिम्सरीहति फज़तरबतिल्हनफिद्यतु लिज़ालिक व तख़ब्बत् फी तशरीहि मज़हबिही व तअलीलिही हत्ता इज़्तर व अजुहुम इललइतराफि बिअन्नस्सलात फिलइस्तिस्काइ बिजमाअतिन सुन्नतुन व क़ाल लम युन्किर अबू हनीफ़त सुन्नतहा व इस्तिहबाबहा व इन्नमा अन्कर कौनहा सुन्नतुन मुअन्नक़दतुन व हाज़ा कमा तरा मिन बाबि तौजीहिल्कलामि बिमा ला यज़ा बिही क़ाइलुहू लिअन्नहू लौ कानल्अमरू कज़ालिक लम यकुन बैनहू व बैन साहिबैहि ख़िलाफ़न मअ अन्नहू क़द सरह जमीउशशुराहि वगैरहुम मिम्मन कतब फी इख़्तिलाफिल्अइम्मति बिल्ख़िलाफि बैनहू व बैनलजुम्हूरि फी हाज़िहिल्मस्अलति क़ाल शैबुना फी शर्हिंतिर्मिज़ी कौलजुम्हूरि व हुवस्सवाब वल्हक्कु लिअन्नहू क़द षबत सलातुहू (ﷺ) रकअतैनि फिलइस्तिस्काइ मिन अहादीषि क़रीरतुन सहीहतिन. (मिआत जिल्द 2, सफ़ा: 390)

ख़ुलासा ये है कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने मुतलक़न सलाते इस्तिस्काअ का इंकार किया है। तुम पर वाज़ेह हो गया होगा कि इस बारे में हन्फ़िया को किस क़दर परेशान होना पड़ा है। हालाँकि हज़रत इमाम यूसुफ़, इमाम मुहम्मद के कलाम से सराहतन प्राबित है कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा का यही मज़हब है और कोई शक़ नहीं कि आपका ये क़ौल सुन्नते सहीहा के सराहतन ख़िलाफ़ है इसलिये इसकी तावील और तशरीह और तअलील बयान करने में उलम-ए-अहनाफ़ को बड़ी मुश्किल पेश आई है। यहाँ तक कि कुछ ने ए' तिराफ़ किया है कि नमाज़े इस्तिस्काअ जमाअत के साथ सुन्नत है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने सिर्फ़ सुन्नते मुअक्किदा होने का इंकार किया है। ये क़ाइल के क़ौल की ऐसी तौजीह है जो खुद क़ाइल को भी पसंद नहीं है मगर हकीकत यही होती तो साहिबैन अपने इमाम से इख़्तिलाफ़न करते। इख़्तिलाफ़ाते अइम्मा बयान करनेवालों ने अपनी किताबों में साफ़ लिखा

है कि मिलाते इस्तिस्काअ के बारे में हजरत अबू हनीफा (रह.) का कौल जुम्हूर उम्मत के खिलाफ है। हमारे शैख हजरत मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी फ़मति हैं कि जुम्हूर का कौल सही है और यही हक़ है कि नमाज़े इस्तिस्काअ की दो रकअतें रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत है जैसा कि बहुत सी अह्दादीषे सहीहा से प्राबित है। फिर हजरत मौलाना मरहूम ने इस सिलसिले के बेशतर अह्दादीष को तफ़सील से ज़िक्र किया है। शौक रखने वाले हजरत मज़ीद तहफ़तुल अहवज़ी का मुतालआ करें। हजरत इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक इस्तिस्काअ की दो रकअतें ईदन की नमाज़ों की तरह ज़ाइद तक्बीरात के साथ अदा की जाएँ। मगर जुम्हूर के नज़दीक इस नमाज़ में ज़ाइद तक्बीर नहीं है बल्कि उनको इसी तरह अदा किया जाए जिस तरह दूसरी नमाज़ें अदा की जाती हैं। कौले जुम्हूर को यही तर्ज़ीह हासिल है। नमाज़े इस्तिस्काअ के खुत्ब के लिये मिम्बर का इस्तेमाल भी जाइज़ है जैसा कि हदीषे आइशा (रज़ि.) में सराहत के साथ मौजूद है जैसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। उसमें साफ़ फ़क़अद अल्लिम्बर के लफ़्ज़ मौजूद हैं।

बाब 19 : ईदगाह में बारिश की दुआ करना

(1027) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने अब्दुल्लाह इब्ने अबीबक्र से बयान किया, उन्होंने अब्बाद बिन तमीम से सुना और अब्बाद अपने चचा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) दुआए इस्तिस्काअ के लिये ईदगाह को निकले और क़िब्ला रुख़ होकर दो रकअत नमाज़ पढ़ी फिर चादर पलटी। सुफ़यान घौरी ने कहा मुझे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने अबूबक्र के हवाले से ख़बर दी कि आपने चादर का दाहिना कोना बाएँ कंधे पर डाला। (राजेअ: 1005)

अफ़ज़ल तो ये है कि जंगल मैदान में इस्तिस्काअ की नमाज़ पढ़े क्योंकि वहाँ सब आ सकते हैं और ईदगाह और मस्जिद में भी दुरुस्त है।

बाब 20 : इस्तिस्काअ में क़िबले की

तरफ़ मुँह करना

(1028) हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल वहहाब प्रक्रफ़ी ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें यह्या बिन सईद अंसारी ने हदीस बयान की, कहा कि मुझे अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अमर बिन हज़म ने ख़बर दी कि अब्बाद बिन तमीम ने उन्हें ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंसारी ने बताया कि नबी करीम (ﷺ) (इस्तिस्काअ के लिये) ईदगाह की तरफ़ निकले वहाँ नमाज़ पढ़ने को जब दुआ करने लगे घारावी ने ये कहा दुआ का इरादा किया तो क़िब्ला रुख़ होकर चादर मुबारक पलटी। अबू अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़नी हैं और उससे पहले

١٩- بَابُ الْإِسْتِسْقَاءِ فِي الْمُمْصَلَى

١٠٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ:

حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ

سَمِعَ عَبَّادَ بْنَ تَمِيمٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ:

((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى الْمُمْصَلَى يَسْتَسْقِي،

وَأَسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ، وَقَلَّبَ

رِدَاءَهُ- قَالَ سُفْيَانُ: وَأَخْبَرَنِي

الْمَسْعُودِيُّ عَنْ أَبِي بَكْرٍ قَالَ - جَعَلَ

الْيَمِينَ عَلَى الشِّمَالِ)). [راجع: ١٠٠٥]

٢٠- بَابُ اسْتِقْبَالِ الْقِبْلَةِ فِي

الْمُمْصَلَى

١٠٢٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ

الرَّوَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ:

أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرٍ بْنُ مُحَمَّدٍ أَنَّ عَبَّادَ بْنَ

تَمِيمٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ زَيْدٍ

الْأَنْصَارِيَّ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ

إِلَى الْمُمْصَلَى يُصَلِّي، وَأَنَّهُ لَمَّا دَعَا - أَوْ

أَرَادَ أَنْ يَدْعُو - اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ وَحَوَّلَ

رِدَاءَهُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: ابْنُ زَيْدٍ هَذَا

बाबुहुआ फिल इस्तिस्काअ मे जिनका जिक्र गुजरा वो अब्दुल्लाह बिन जैद हैं कूफा के रहनेवाले। (राजेअ: 1005)

مَالِكِيٍّ، وَالْأَوَّلُ كُوفِيٌّ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ.

[راجع: 1005]

बाब 21 : इस्तिस्काअ में इमाम के साथ लोगों का भी हाथ उठाना।

(1029) अय्यूब बिन सुलैमान ने कहा कि मुझसे अबूबक्र बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने सुलैमान बिन बिलाल से बयान किया कि यह्या बिन सईद ने कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा कि एक बदवी (गांव का रहने वाला) जुम्अ के दिन रसूलुल्लाह के पास आया और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! भूख से मवेशी तबाह हो गए, अहलो-अयाल और तमाम लोग मर रहे हैं। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने हाथ उठाए, दुआ करने लगे। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अभी हम मस्जिद से बाहर निकले ही न थे कि बारिश शुरू हो गई और एक हफ्ता बराबर बारिश होती रही। दूसरे जुम्अ में फिर वही शख्स आया और अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (बारिश बहुत होने से) मुसाफिर घबरा गए और रास्ते बन्द हो गए (बशक़ल मुसाफिर बमअना मल्ल)

(राजेअ: 932)

21- بَابُ رَفْعِ النَّاسِ أَيْدِيَهُمْ مَعَ

الإمام في الاستسقاء

١٠٢٩- قَالَ أَبُو بَكْرٍ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرٍ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ قَالَ قَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: ((أَتَى رَجُلٌ أَغْرَابِيٌّ مِنْ أَهْلِ الْبَدْوِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلَكَتِ الْمَاشِيَةُ، هَلَكَ الْغِيَالُ، هَلَكَ النَّاسُ: فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَيْهِ يَدْعُو، وَرَفَعَ النَّاسُ أَيْدِيَهُمْ مَعَهُ يَدْعُونَ. قَالَ: لَمَّا خَرَجْنَا مِنَ الْمَسْجِدِ حَتَّى مَطَرْنَا، لَمَّا زِلْنَا نُنْظَرُ حَتَّى كَانَتِ الْجُمُعَةُ الْآخَرَى، فَأَتَى الرَّجُلُ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ بَشَقَ الْمَسَالِرُ، وَمَنَعَ الطَّرِيقَ)).

[راجع: 932]

(1030) अब्दुल अज़ीज़ उवैसी ने कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद और शरीक ने, उन्होंने कहा कि हमने अनस (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) (ने इस्तिस्काअ में दुआ करने के लिये) इस तरह हाथ उठाए कि मैंने आपकी बग़लों की सफ़ेदी देख ली।

١٠٣٠- وَقَالَ الْأَوْسِيُّ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ وَشَرِيكَ سَمِعَا أَنَسًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((أَنَّهُ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْتُ بَيَاضَ بَطْنَيْهِ)).

बाब 22 : इमाम का इस्तिस्काअ में दुआ के लिये हाथ उठाना

(1031) हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान और मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन अदी बिन अरूबा ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़त्तादा

22- بَابُ رَفْعِ الإِمام يَدَهُ فِي

الاستسقاء

١٠٣١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى وَابْنُ عَدِيٍّ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ

और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) दुआ-ए-इस्तिस्काअ के सिवा और किसी दुआ के लिये हाथ (ज्यादा) नहीं उठाते थे और इस्तिस्काअ में हाथ इतना उठाते कि बगलों की सफ़ेदी नज़र आ जाती। (दीगर मक़ाम: 4565, 6341)

قَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ لِمَا شَاءَ مِنْ دُعَائِهِ إِلَّا فِي الْإِسْتِسْقَاءِ، وَإِنَّهُ يَرْفَعُ حَتَّى يَرَى بَيَاضَ إِبْطَيْهِ)).

[طرمه في: ٤٥٦٥، ٦٣٤١.]

तशरीह :

अबू दाऊद की मुसल रिवायतों में यही हदीष इसी तरह है कि इस्तिस्काअ के सिवा पूरी तरह आप किसी दुआ में भी हाथ नहीं उठाते थे। इससे मा'लूम होता है कि बुखारी की इस रिवायत में हाथ उठाने के इंकार से मुराद ये है कि ब-मुबालगा हाथ नहीं उठाते। इस रिवायत से ये किसी भी तरह प्राबित नहीं हो सका कि आप दुआओं में हाथ नहीं उठाते थे। खुद इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुद्दुआवात में इसके लिये एक बाब कायम किया है। मुस्लिम की रिवायत में है कि इस्तिस्काअ की दुआ में आपने हथेली की पुश्त आसमान की तरफ की और शफ़िई ने कहा कि कहत वगैरह बलयात को दूर करने के लिये इस तरह दुआ करना सुन्नत है। (कस्तलानी रह.) अल्लामा नववी रह. फ़र्माते हैं कि हाज़लहदीष यूहिमुज़ाहिरहूअन्नहू लमयर्फ़अ (ﷺ) इल्ला फिलइस्तिस्काइ व लैसलअम्क कज़ालिक बल षबत रफ़अ यदैहि (ﷺ) फ़ी मवाज़िन गैरिलइस्तिस्काइ व हिय अक्शरु मिन अन्तुहज़रत व क़द जमअतु मिन्हा नहवमिन मल्लाज़िन हदीषमिस्महीहैन औ अहदिहिमा व ज़कर्तुहा फी अवाखिरी अब्बाबि सफ़तिस्मलाति मन शरहलमुहज्ज़ब यतअव्वलु हाज़लहदीष अला अन्नहू लम यर्फ़अ रफ़अ बलीग बेहैषु तरा इब्तैहि इल्ला फिलइस्तिस्काइ व अम्मलमुरादु लम अराहू रफ़अ व क़द राअ गैरहू रफ़अ फयुकदिमुल्मुब्बि फी मवाज़िअ क़बीरतिन व जमाअतिन अला वाहिदिन यहज़ुरु ज़ालिक वला बुद् मिन तावीलिही कमा ज़कर्नाहु वल्लाहु आलमु (नववी जिल्द 1, सफ़ा: 293)

खुलासा ये है कि इस हदीष में उठाने से मुबालगा के साथ हाथ उठाना मुराद है। इस्तिस्काअ के अलावा दीगर मुक़ामात पर भी हाथ उठाकर दुआ करना प्राबित है। मैं इस बारे में तीस अहदादीष जमा की हैं। दूसरी बात यह कि हज़रत अनस (रज़ि.) ने सिर्फ़ अपनी रिवायत का ज़िक्र किया है जबकि उनके अलावा बहुत से सहाबा से ये प्राबित है।

बाब 23 : बारिश बरसते समय क्या कहे

और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने (सूरह बक्रः में) 'कसय्थिबिम्' (केलफ़ज़ सय्थिब) से मेंह के मा'नी लिये हैं और दूसरे ने कहा है कि सय्थिब साब यस्बू से मुश्तक़ है उसी से है असाब।

٢٣- بَابُ مَا يُقَالُ إِذَا امْطَرَتْ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: «كَسَيْبٍ»: الْمَطَرُ.

وَقَالَ غَيْرُهُ: صَابٌ وَأَصَابَ يَصُوبُ.

तशरीह :

बाब की हदीष में सय्थिब का लफ़ज़ आया है और कुर्आन शरीफ़ में भी ये लफ़ज़ आया है इसलिये हज़रत इमाम ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ उसको तफ़्सीर कर दी। इसको तबरानी ने अली बिन अबी तलहा के तरीक़ से वस्ल (मिलान) किया, उन्होंने ने इब्ने अब्बास से जिनके कौल से आपने सय्थिब का मा'नी बयान कर दिये और दूसरों के अक्वाल से सय्थिब का इश्तिक्काक़ बयान किया कि ये कलिमा अजवफ़ वावी है इसका मुज़रद साबा यस्बू और मज़ीद असाबा है।

(1032) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें अब्दुल्लाह उमरी ने नाफ़ेअ से ख़बर दी, उन्हें कासिम बिन मुहम्मद ने, उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बारिश होती देखते तो ये दुआ करते ऐ अल्लाह! नफ़ा बख़्शने वाली बारिश

١٠٣٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ قَالَ:

أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا غَيْثُ اللَّهِ عَنْ

ثَالِعٍ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ:

((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا رَأَى الْمَطَرَ

बरसा।

इस रिवायत की मुताबअत कासिम बिन यह्या ने अब्दुल्लाह इमरी से की और इसकी रिवायत औज़ाई और अक़ील ने नाफ़ेअ से की है।

बाब 24 : उस शख्स के बारे में जो बारिश में क़स्दन इतनी देर ठहरा कि बारिश से उसकी दाढ़ी (भीग गई और उस) से पानी बहने लगा

(1033) हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि हमसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा अंसारी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में लोगों पर एक बार क़हत पड़ा। उन्हीं दिनों आप (ﷺ) जुम्मे के दिन मिम्बर पर ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक देहाती ने खड़े होकर कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! जानवर मर गए और बाल-बच्चे फ़ाक़े पर फ़ाक़े कर रहे हैं, अल्लाह से दुआ कीजिए कि पानी बरसाए। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये सुनकर दुआ के लिये दोनों हाथ उठाए। आसमान पर दूर दूर तक बादल का पता तक न था। लेकिन (आपकी दुआ से) पहाड़ों के बराबर बादल गरजते हुए आ गए अभी हुज़ुरे अकरम (ﷺ) मिम्बर पर से उतरे भी नहीं थे कि मैंने देखा कि बारिश का पानी आपकी दाढ़ी से बह रहा है। अनस ने कहा कि उस रोज़ बारिश दिन भर होती रही। इस तरह दूसरा जुम्मा आ गया। फिर यही देहाती या कोई दूसरा शख्स खड़ा हुआ और कहने लगा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! (क़स्रते बारिश की वजह से) इमारतें गिर गईं और जानवर डूब गए, हमारे लिये अल्लाह तआला से दुआ कीजिए। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फिर दोनों हाथ उठाए और दुआ की कि ऐ अल्लाह! हमारे अत्राफ़ में बरसा और हम पर न बरसा। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि हुज़ुरे अकरम (ﷺ) अपने हाथों स

قَالَ: ((اللَّهُمَّ صَيِّئًا نَافِعًا)).

ثَابِتُهُ الْقَاسِمُ بْنُ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ وَرَوَاهُ الْأَوْزَاعِيُّ وَعُقَيْلٌ عَنْ نَافِعٍ.

۲۴- بَابُ مَنْ تَمَطَّرَ فِي الْمَطَرِ

حَتَّى يَتَخَادَرَ عَلَى لِحْيَتِهِ

۱۰۳۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ: ((أَصَابَتِ النَّاسَ مَنَّةٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَبَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَخْطُبُ عَلَى الْمِنْبَرِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ قَامَ أَغْرَابِيٌّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلَكَ الْمَالُ، وَجَاعَ الْعِيَالُ، فَادْعُ اللَّهَ لَنَا أَنْ يَسْقِيَنَا. قَالَ: فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَيْهِ وَمَا فِي السَّمَاءِ قُرْعَةٌ. قَالَ: فَقَارَ السَّحَابُ أَفْئَالَ الْجِبَالِ، ثُمَّ لَمْ يَزَلْ عَنْ مَنْبَرِهِ حَتَّى رَأَتْهُ الْمَطَرُ يَتَخَادَرُ عَلَى لِحْيَتِهِ. قَالَ: فَمَطَرْنَا يَوْمَنَا ذَلِكَ وَلَيْسَ الْعَدُوُّ مِنِّي بَعْدَ الْعَدُوِّ وَالَّذِي يَلِينِي إِلَى الْجُمُعَةِ الْآخِرَى. فَقَامَ ذَلِكَ الْأَغْرَابِيُّ أَوْ رَجُلٌ غَيْرُهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، تَهْتَمُّ الْبَنَاءُ وَغَرِقَ الْمَالُ، فَادْعُ اللَّهَ لَنَا، فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَيْهِ وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوِّاتِنَا وَلَا غَلَّاتِنَا)). قَالَ: لَمَّا جَعَلَ يُشِيرُ بِيَدِهِ إِلَى

आसमान की जिस तरफ भी इशारा करते बादल उधर से फट जाता, अब मदीना हौज की तरह बन चुका था और उसी के बाद वादी क़नात का नाला एक महीने तक बहता रहा। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उसके बाद मदीना के आसपास से जो भी आया उसने ख़ूब सैराबी की ख़बर सुनाई। (राजेअ : 932)

نَاحِيَةٍ مِنَ السَّمَاءِ إِلَّا تَفَرَّجَتْ، حَتَّى صَارَتِ الْمَدِينَةُ فِي مِثْلِ الْجَوْدَى، حَتَّى سَالَ الْوَادِي - وَادِي قَنَاة - شَهْرًا، قَالَ: فَلَمْ يَجِءْ أَحَدٌ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلَّا حَدَّثَ بِالْجَوْدَى. (راجع: ٩٣٢)

तशरीह : हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बताना चाहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने बाराने रहमत का पानी अपनी रीशे मुबारक पर बहाया। मुस्लिम की एक हदीस में है कि एक बार आपने बारिश में अपना कपड़ा खोल दिया और ये पानी अपने जसदे अत्हर (जिस्म) पर लगाया और फ़र्माया कि अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक खैरहा व खैर मा फीहा व अज़्रुबिक मिन शरिहा व शरि मा फीहा व खैर मा अर्सलत बिही व शरि मा अर्सलत बिही ये पानी अभी-अभी ताज़ा व ताज़ा अपने परवरदिगार के यहाँ से आया है। मालुम हुआ कि बारिश का पानी इस ख़याल से जिस्म पर लगाना सुन्नते नबवी है। इस हदीस से ख़ुबतुल जुम्आ में बारिश के लिये दुआ करना भी प्राबित हुआ।

बाब 25 : जब हवा चलती

(1034) हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे हुमैद तवील ने ख़बर दी और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि जब तेज़ हवा चलती तो हुज़ूर अकरम (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर डर महसूस होता था।

٢٥- بَابُ إِذَا هَبَّتِ الرِّيحُ

١٠٣٤- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ سَمْعَانَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: «كَانَتْ الرِّيحُ الشَّدِيدَةُ إِذَا هَبَّتْ حُرُوفَ ذَلِكَ فِي وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ».

तशरीह : आँधी के बाद चूँकि अक़बर बारिश होती है इस मुनासबत से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस को यहाँ बयान किया, आद पर आँधी का अज़ाब आया था। इसलिये आँधी आने पर आप अज़ाबे इलाही का तंसव्वुर फ़र्माकर बबरा जाते थे। मुस्लिम की रिवायत में है कि जब आँधी चली जाती तो आप (ﷺ) इन लफ़्ज़ों में दुआ करते थे, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक खैरहा व खैर मा फीहा व अज़्रुबिक मिन शरिहा व शरि मा फीहा व खैर मा अर्सलत बिही व शरि मा अर्सलत बिही या'नी या अल्लाह! मैं इस आँधी में तुझसे खैर का सवाल करता हूँ और उसके न तीजे में भी खैर ही चाहता हूँ और या अल्लाह! मैं तुझसे उसकी और उसके अंदर की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ और जो शर' ये लेकर आई है उससे भी तेरी पनाह चाहता हूँ। इस रिवायत में है कि जब आप आँधी देखते तो दो ज़ानू होकर बैठ जाते और ये दुआ करते, अल्लहम्मजअलहा रियाहन व ला तजअलहा रीहन या'नी या अल्लाह! इस हवा को फ़ायदे की हवा बना न कि अज़ाब की हवा। लफ़ज़ रियाह रहमत की हवा है और रीह अज़ाब की हवा पर बोला गया है जैसाकि कुआन मजीद की अनेक आयतों में वारिद हुआ है।

बाब 26 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि पुर्वा हवा के ज़रिये मुझे मदद पहुँचाई गई

(1035) हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने हक़म से बयान किया, उनसे मुजाहिद ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ)

٢٦- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ «نُصِرْتُ بِالْمَتَا»

١٠٣٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «نُصِرْتُ بِالْمَتَا، وَأَهْلِكَتْ

ने फ़र्माया कि मुझे पूर्वा हवा के जरिये मदद की गई और क़ौमे आद पछुवा के जरिये हलाक कर दी गई थी। (दीगर मक़ाम : 3205, 3343, 4105)

عَادَ بِالْهَوْرِ).

[أطرافه في: ٣٢٠٥، ٣٣٤٣، ٤١٠٥].

तशरीह : जंगे ख़ंदक्र में बारह हज़ार काफ़िरों ने मदीने को हर तरफ़ से घेर लिया था। आख़िर अल्लाह ने पुरवा हवा भेजी इस ज़ोर के साथ कि उनके छे उखड़ गए और आग बुझ गई, आँखों में ख़ाक धुस गई जिस पर काफ़िर परेशान होकर भाग खड़े हुए। आपका ये इशारा उसी हवा की तरफ़ है।

बाब 27 : भूचाल और क़यामत

की निशानियों में

(1036) हमसे अबुल यमान हक़म बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अबुज़िनाद (अब्दुल्लाह बिन ज़क़वान) ने बयान किया। उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुमुज़ अज़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक इल्मे दीन न उठ जाएगा और ज़लज़लों की क़सरत न हो जाएगी और ज़माना ज़ल्दी-ज़ल्दी न गुज़रेगा और फ़ित्ने फ़साद फूट पड़ेंगे और 'हर्ज' की क़सरत हो जाएगी और हर्ज से मुराद क़त्ल है। क़त्ल और तुम्हारे बीच दौलत व माल की इतनी क़सरत होगी कि वो उबल पड़ेगा। (राजेअ : 85)

तशरीह : सख़्त आँधी का ज़िक्र आया तो उसके साथ भूचाल का भी ज़िक्र कर दिया। दोनों आफ़तें हैं। भूचाल या गरज़ या आँधी या ज़मीन धंसने में हर शख्स को दुआ और इस्तिफ़ार करना चाहिये और ज़लज़ले में नमाज़ भी पढ़ना बेहतर है लेकिन अकेले-अकेले। जमाअत इसमें मसनून नहीं और हज़रत अली (रज़ि.) से मरबी है कि ज़लज़ले में उन्होंने जमाअत से नमाज़ पढ़ी तो ये सहीह नहीं है। (मौलाना वहीदुज्जमी)

(1037) मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हुसैन बिन हसन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! हमारे शाम और यमन पर बरकत नाज़िल फ़र्मा। इस पर लोगों ने कहा और हमारे नजद के लिये भी बरकत की दुआ कीजिये लेकिन आपने फिर वही कहा, 'ऐ अल्लाह! हमारे शाम और यमन पर बरकत नाज़िल कर' फिर लोगों ने कहा और हमारे नजद में? तो आपने फ़र्माया कि वहाँ तो ज़लज़ले और फ़ित्ने होंगे और

٢٧- بَابُ مَا قِيلَ فِي الزَّلَازِلِ

وَالْآيَاتِ

١٠٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُفْضَ الْعِلْمُ، وَتَكْثُرَ الزَّلَازِلُ، وَيَقَارِبَ الزَّمَانُ، وَتُظْهَرَ الْفِتَنُ، وَتَكْثُرَ الْهَرْجُ - وَهُوَ الْقَتْلُ الْقَتْلُ - حَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمْ الْمَالُ الْفَيْضُ)). [راجع: ٨٥]

١٠٣٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ الْحَسَنِ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُثْمَانَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا وَفِي يَمِينِنَا)). قَالَ: قَالُوا: وَفِي نَجْدِنَا. قَالَ: قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا وَفِي يَمِينِنَا)). قَالَ: قَالُوا: وَفِي نَجْدِنَا. قَالَ: قَالَ: ((هَذَا الزَّلَازِلُ وَالْفِتَنُ، وَبِهَا يَطْلُعُ قُرُونُ

शैतान का सींग वहीं से तुलूअ होगा। (दीगर मक़ाम : 7094)

الشَّيْطَانُ. (طَرَفُهُ : ٧٠٩٤).

तशरीह : नजद अरब हिजाज से मश्रिक (पूर्व) की तरफ़ वाक़ेअ है ख़ास़ वो इलाक़ा मुराद नहीं है जो कि आजकल नजद कहलाता है बल्कि नजद से तमाम पूर्वी मुल्क मुराद है। अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, व हुव तिहामा व कुल्लुन कमा इर्तफ़अ मिन बिलादि तिहामा इला अर्जिल इराक़िया' नी नजद से तेहामा का इलाक़ा मुराद है जो बिलादे तेहामा से इराक़ की ज़मीन तक सतह मुरतफ़अ में फैला हुआ है। दरहकीक़त ये नबवी इशारा इराक़ की धरती के लिये था जहाँ बड़े बड़े फ़ितने पैदा हुए। अगर बनज़रे इंसाफ़ देखा जाए तो उस इलाके से मुसलमानों का इफ़्तिराक़ व इतिशार शुरू हुआ जो आज तक मौजूद है और शायद अभी अज़ें तक ये इतिशार बाक़ी रहेगा, ये सब इराक़ की ज़मीन की पैदावार है। ये रिवायत यहाँ मौक़ुफ़न बयान हुई है और दरहकीक़त मफ़ूअ है। अज़हर समौने इसको मफ़ूअन रिवायत किया है। इसी किताब के अल फ़ितन में ये हदीष आएगी और वहाँ उस पर मुफ़स़ल तब़रा किया जाएगा इश्आअल्लाह। साहिबे फ़ज़लुल बारी तर्जुम-ए-बुखारी हन्की लिखते हैं कि शाम का मुल्क मदीना के उत्तर की तरफ़ है और यमन दक्षिण की तरफ़ और नजद का मुल्क पूरब की तरफ़ है। आपने शाम को अपनी तरफ़ उस वास्ते मन्सूब किया कि वो मक्का तेहामा की ज़मीन है और तेहामा यमन से मुता'ल्लिक़ है। आँहज़रत (ﷺ) ने ये हदीष उस वक़्त फ़र्माई थी कि अभी तक नजद के लोग मुसलमान नहीं हुए थे और आँहज़रत (ﷺ) के साथ फ़ितने और फ़साद में मशगूल थे जब वो लोग इस्लाम लाए और आपकी तरफ़ स़दका भेजा तो आपने स़दका को देखकर फ़र्माया हाज़्रा स़दक़तु क़ौमी ये मेरी क़ौम का स़दका है अगर ग़ौर से देखा जाए तो मा'लूम होता है कि क़ौमी निस्बत शामुना व यमनुना की निस्बत से क़वीतर है।

सींग शैतान से मुराद उसका गिरोह है, ये अल्फ़ाज़ आपने उसी वास्ते फ़र्माया कि वो हमेशा आपके साथ फ़साद किया करते थे और कहा कि क़अब ने इराक़ से या'नी उस तरफ़ से दज़ाल निकलेगा (फ़ज़लुल बारी, पेज नं. 353/पारा नं. 3)

इस दौरे आख़िर बदरुका नजद से वो तहरीक उठी जिसने ज़मान-ए-रिसालत मआब (ﷺ) और अहदे ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की याद को ताज़ा कर दिया जिससे मुजहिदे इस्लाम हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजद (रह.) की तहरीक मुराद है जिन्होंने नये सिरे से मुसलमानों को असल इस्लाम की दा'वत दी और शिक़ व बिदआत के खिलाफ़ इल्मे जिहाद बुलन्द किया। नजदियों से पहले हिजाज की हालत जो कुछ थी वो इतिहास के पन्नों पर है। जिस दिन से वहाँ नजद की हुकूमत क़ायम हुई हर तरह का अमन व अमान क़ायम हुआ और आज तो हुकूमते सज़्ज़दिया नजदिया ने हरमैन शरीफ़ेन की ख़िदमात के सिलसिले में वो कारहाएनुमाया अंजाम दिये हैं जो सारी दुनिय-ए-इस्लाम में हमेशा याद रहेंगे। अय्यदहुमुल्लाहु बिन इमिल अज़ीज़. (आमीन)

बाब 28 : अल्लाह तआला के इस फ़र्मान की तशरीह

(وَتَجَلُّونَ رِزْقَكُمْ أَمْ تَكْفُرُونَ)

٢٨- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ:

﴿وَتَجَلُّونَ رِزْقَكُمْ أَمْ تَكْفُرُونَ﴾

या'नी तुम्हारा शुक्र यही है कि तुम अल्लाह को झुटलाते हो (या'नी तुम्हारे हिस्से में झुठलाने के सिवा और कुछ आया ही नहीं)

[الواقعة : ٨٢]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि हमारे रिज़क़ से मुराद शुक्र है।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: شُكْرُكُمْ.

तशरीह : इसको अब्द बिन मंसूर और इब्ने मर्दवैह ने निकाला मतलब ये है कि जब अल्लाह के फ़ज़लो-करम से पानी बरसे तो तुमको उसका शुक्र अदा करना चाहिये लेकिन तुम तो शुक्र के बदले ये करते हो कि अल्लाह को तो झुटलाते हो जिसने पानी बरसाया और सितारों को मानते हो, कहते हो उनकी गर्दिश से पानी पड़ा। इस आयत की मुनासबत बाबे इस्तिस्काअ से ज़ाहिर हो गई। अब ज़ैद बिन ख़ालिद की हदीष जो इस बाब में लाए वो भी बारिश के बारे में है। मुस्लिम की रिवायत में है कि आँहज़रत (ﷺ) के अहद में बारिश हुई। फिर आपने यही फ़र्माया जो हदीष में है। फिर सूरह वाक़िआ से ये

आयत पढ़ी, फ़ला उक्सिमु बिमवाकिइन्नुजूम से लेकर वतज्जअलूना रिज़्ककुम अन्नकुम तुकज्जिबून. (वहीदी)

(1038) हमसे इस्माईल बिन अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने सलाह बिन कैसान से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इब्बा बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हुदैबिया में हमको नमाज़ पढ़ाई। रात को बारिश हो रही थी नमाज़ के बाद आप (ﷺ) लोगों की तरफ़ मुड़े और फ़र्माया, मा'लूम है तुम्हारे रब ने क्या फ़ैसला किया है? लोग बोले कि अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) ख़ूब जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि परवरदिगार फ़र्माता है आज मेरे दो तरह के बन्दों ने सुबह की। एक मोमिन है एक काफ़िर। जिसने कहा कि अल्लाह के फ़ज़लो-रहम से पानी बरसा वो तो मुझ पर इमान लाया और सितारों का मुक़िर हुआ और जिसने कहा कि फ़लाँ तारे के फ़लाँ जगह आने से पानी बरसा उसने मेरा कुफ़्र किया, तारों पर इमान लाया।

(राजेअ: 846)

बाब 29 : अल्लाह तआला के सिवा और किसी को मा'लूम नहीं कि बारिश कब होगी

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया पाँच चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता।

(1039) हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान घ़ौरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ग़ैब की पाँच कुंजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा और कोई नहीं जानता। किसी को नहीं मा'लूम कि कल क्या होगा? कोई नहीं जानता कि माँ के पेट में क्या है (लड़का या लड़की)? कल क्या करना होगा? उसका किसी को इल्म नहीं। न कोई ये

۱۰۳۸- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثَيْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ أَنَّهُ قَالَ: ((صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ صَلَاةَ الصُّبْحِ بِالْحُدَيْبِيَّةِ عَلَى ابْنِ سَمَاءٍ كَانَتْ مِنَ اللَّيْلِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: ((مَلْ تَذَرُونَ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟)) قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ، قَالَ: ((أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ، فَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطَرِّئًا بِفَضْلِ اللَّهِ وَرَحْمَتِهِ فَلَذَلِكَ مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ بِالْكَوَاكِبِ، وَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطَرِّئًا بِتَوَكُّدِ كَذَا وَكَذَا فَلَذَلِكَ كَافِرٌ بِي مُؤْمِنٌ بِالْكَوَاكِبِ)). [راجع: ۸۴۶]

۲۹- بَابُ لَا يَذَرِي مَتَى يَجِيءُ الْمَطَرُ إِلَّا اللَّهُ

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((خَمْسٌ لَا يَعْلَمُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ)).

۱۰۳۹- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمرَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مِفْتَاحُ الْقَلْبِ خَمْسٌ لَا يَعْمَلُهَا إِلَّا اللَّهُ: لَا يَعْلَمُ أَحَدٌ مَا يَكُونُ فِي غَدٍ، وَلَا يَعْلَمُ أَحَدٌ مَا يَكُونُ فِي الْأَرْحَامِ، وَلَا يَعْلَمُ نَفْسٌ مَاذَا تَكْسِبُ غَدًا، وَمَا تَذَرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ

जानता है कि उसे मौत किस जगह आएगी? और न किसी को ये मा'लूम है कि बारिश कब होगी? (दीगर मक़ाम : 4628, 4697, 4778, 7379) تَمُوتُ، وَمَا يَذَرِي أَحَدٌ مِّنْ يَّحْيِيهِ الْمَطَرُ. [أَطْرَافُ بَنِي: ٤٦٩٧، ٤٦٩٧، ٤٦٩٧]

[٧٣٧٩، ٤٧٧٨]

तशरीह: जब अल्लाह तआलाने साफ़ कुआन में और नबी करीम (ﷺ) ने हदीष में फ़र्मा दिया है कि अल्लाह के सिवा किसी को ये इल्म नहीं है कि बरसात कब पड़ेगी तो जिस शख्स में ज़रा भी ईमान होगा वो उन धोतीबन्द पण्डितों की बात क्यूँ मानेगा और जो माने और उन पर ए'तिकाद (यक़ीन) रखे; मा'लूम हुआ वो दायरा-ए-ईमान से खारिज हो गया और वो काफ़िर है। लुफ़्त ये है कि रात दिन पण्डितों का झूठ और बेतुकापन देखते जाते हैं और फिर उनका पीछा नहीं छोड़ते हैं अगर काफ़िर लोग ऐसा करें तो तज़जुब नहीं। हैरत तो होती है कि इस्लाम का दा'वा करने के बावजूद मुसलमान बादशाह और अमीर नज़ूमियों की बातें सुनते हैं और आइन्दा होने वाले वाकिआत पूछते हैं। मा'लूम नहीं है कि उन नाम के मुसलमानों की अक्ल कहाँ तशरीफ़ ले गई है। सैकड़ों मुसलमान बादशाहों इन्हीं नज़ूमियों पर भरोसा रखने से तबाह व बर्बाद हो चुकी हैं और अब भी मुसलमान बादशाह इस हरकत से बाज़ नहीं आते जो कुफ़्रे सरीह है, ला हौला व ला कुव्वत इल्ला बिल्लहि अज़ीम. (मौलाना वहीदुज्जमाँ)

आयते करीमा में ग़ैब की पाँच कुँजियों का बयान किया गया है जो ख़ास अल्लाह ही को मा'लूम है और इल्मे ग़ैब ख़ास अल्लाह ही को हासिल है। जो लोग अबिया, औलिया के लिए ग़ैबदाँ होने का अक़ीदा रखते हैं, वो कुआन व हदीष की रू से सरीह कुफ़ का इर्तिकाब करते हैं।

पूरी आयते शरीफ़ ये है, **إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَئِكَ يَوْمَئِذٍ الْخَلْقَ كُلِّهِمْ أَعَدَّتْ آيَاتٍ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا يَوْمَ الْمُنَادَةِ** (लुक्मान : 34) या'नी 'बेशक क़यामत कब कायम होगी ये इल्म ख़ास अल्लाह पाक ही को है और वही बारिश उतारता है (किसी को सहीह इल्म नहीं कि बिज़्ज़रूर फ़लाँ वक़्त बारिश हो जाएगी) और सिर्फ़ वही जानता है कि मादा के पेट में नर है या मादा, और कोई नफ़्स नहीं जानता कि कल वो क्या काम करेगा और ये भी नहीं जानता कि वो कौनसी ज़मीन पर इंतिकाल करेगा, बेशक अल्लाह ही जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है, ये ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं जिनका इल्म अल्लाह के सिवा किसी और को हासिल नहीं है।'

क़यामत की अलामत तो अह्मदीष और कुआन में बहुत कुछ बतलाई गई हैं और उनमें से अक़सर निशानियाँ ज़ाहिर भी हो रही हैं मगर ख़ास दिन तारीख़ वक़्त ये इल्म ख़ास अल्लाह पाक ही को है। इसी तरह बारिश के लिये बहुत सी अलामतें हैं जिनके जुहूर के बाद अक़सर बारिश हो जाती है फिर भी ख़ास वक़्त नहीं बतलाया जा सकता। इसलिये कि कुछ दफ़ा बहुत सी अलामतों के बावजूद बारिश टल जाती है और मौँ के पेट में नर है या मादा उसका सहीह इल्म भी किसी हकीम-डॉक्टर को नहीं हासिल है न किसी काहिन, नुजुमी, पण्डित या मुल्ला को; ये ख़ास अल्लाह पाक ही जानता है। इसी तरह हम कल क्या काम करेंगे ये भी ख़ास अल्लाह ही को मा'लूम है जबकि हम रोज़ाना अपने कामों का नक्शा बनाते हैं मगर बेशतर औकात वो तमाम नुक़ते फ़ेल हो जाते हैं और ये भी किसी को मा'लूम नहीं कि उसकी क़ब्र कहाँ बननेवाली है? अल ग़र्ज़ इल्मे ग़ैब जुज़्वी और कुल्ली तौर पर सिर्फ़ अल्लाह पाक ही को हासिल है; हाँ वो जिस क़दर चाहता है कभी-कभार अपने महबूब बन्दों को कुछ चीज़ों का इल्म अता कर देता है मगर उसको ग़ैब नहीं कहा जा सकता ये तो अल्लाह का अतिया है वो जिस क़दर चाहे और जब चाहे और जिसे चाहे उसको बख़्श दे। उसको ग़ैबदानी कहना बिलकुल झूठ है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ बाब की मुनासबत से इस हदीष को नक़ल कर षाबित फ़र्माया कि बारिश का होने का सहीह इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को हासिल है और कोई नहीं बतला सकता कि यक़ीनी तौर पर फ़लाँ दिन फ़लाँ वक़्त बारिश हो जाएगी।

16. किताबुल कुसूफ़

सूरज ग्रहण के मुता'ल्लिक़ अबवाब

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तशरीह : कुसूफ़ लुग़त (डिक्शनरी) में स्याह (काले) हो जाने को कहते हैं। जिस शख्स की हालत मुतगय्यर (परिवर्तित) हो जाए और मुँह पर स्याही आ जाए उसके लिये अरबी मुहावरा ये है फ़ुलानुन कसफ़ वज्हुहू व हालुहू फ़लौ का चेहरा और उसकी हालत स्याह हो गई। और सूरज ग्रहण के वक़्त बोलते हैं, कसफ़तिशशम्सु (सूरज स्याह हो गया) चाँद और सूरज के ज़ाहिरी अस्बाब कुछ भी हों मगर हकीक़त में ये ग़ाफ़िलों के लिये कुदरत की तरफ़ से तम्बीह है कि वो अल्लाह के अज़ाब से निडर न हों। अल्लाह पाक जिस तरह चाँद और सूरज जैसे इज़ामे फ़लकी (आकाश के ग्रहों) को मुतगय्यर कर देता है ऐसे ही गुनाहगारों के दिलों को भी काला कर देता है और उस पर भी तम्बीह है कि चाँद और सूरज अपनी ज़ात में ख़ुद मुख़्तार नहीं हैं बल्कि ये भी मख़्लूक़ हैं और अपने ख़ालि़क़ (सृष्टा) के ताबेअ (अधीन) हैं फिर भला ये इबादत के लायक़ कैसे हो सकते हैं? ग्रहण के वक़्त नमाज़ के मशरूअ होने पर तमाम उलाम-ए-इस्लाम का इतिफ़ाक़ है। जुम्हूर उसके सुन्नत होने के क़ाइल हैं और हन्फ़िया के फ़ाज़िलों ने उसे सुन्नत में शुमार किया है।

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी (रह.) :— अहनाफ़ का मसलक़ इस नमाज़ के बारे में ये है कि आ़ाम नमाज़ों की तरह पढ़ी जाएगी; मगर ये मसलक़ सहीह नहीं है जिसकी तपस़ील अल्लामा अनवर शाह साहब कश्मीरी (रह.) के लफ़्ज़ों में ये है जिसे साहिबे तपहीमुल बुख़ारी ने नक़ल किया है कि सूरज ग्रहण के बारे में रिवायतें बहुत सारी और मुख़्तलिफ़ हैं। कुछ रिवायतों में है कि आपने नमाज़ में भी आ़ाम नमाज़ों की तरह एक स्कूअ किया।

बहुत सी रिवायतों में हर स्कूअत में दो स्कूअ का ज़िक़्र है और कुछ में तीन और पांच स्कूअ तक का बयान है। अल्लामा अनवर शाह साहब कश्मीरी (रह.) ने लिखा है कि इस बाब की तमाम हदीषों का जाइज़ा लेने के बाद सहीह रिवायत वही मा'लूम होती है जो बुख़ारी में मौजूद है या'नी आप (ﷺ) ने हर स्कूअत में दो स्कूअ किये थे। आगे चलकर साहिबे तपहीमुल बुख़ारी ने अल्लामा मरहूम की ये तपस़ील नक़ल की है।

इतिहाई नामुनासिब बात :— जिन रिवायतों में बहुत से स्कूअ का ज़िक़्र है उसके बारे में कुछ अहनाफ़ ने ये कहा है कि चूँकि आप ने तवील स्कूअ किया था और उसी वजह से सहाबा किराम (रज़ि.) स्कूअ से सर उठा—उठाकर ये देखते थे कि आँहज़ूर (ﷺ) खड़े हो गए हैं या नहीं और इसी तरह कुछ सहाबा ने जो पीछे थे ये समझ लिया कि कई स्कूअ किये गये हैं। शाह साहब ने लिखा है कि ये बात इतिहाई नामुनासिब और मुताख़िख़रीन (बाद वालों) की ईजाद है। (तपहीमुल बुख़ारी, पारा नं. 4, पेज नं. 125)

साहब-ए-किराम (रज़ि.) की शान में ऐसा कहना उनकी इतिहाई तख़फ़ीफ़ है। भला वो मुसलमान, सहाबा किराम (रज़ि.) जो सरापा खुशूअ व खुजूअ से नमाज़ पढ़ा करते थे, उनके बारे में हाशा व कल्ला ऐसा गुमान किया जा सकता है

हर्गिज़ नहीं।

लफ़्ज़े कुसूफ़ और खुसूफ़ के बारे में अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, अल्कुसूफ़ हुव तगय्युरू इलस्सवादि व मिन्हू कसफ़ वज्हुहू इजा तगय्यर वल्खुसूफ़ बिल्खाइल्मुअजमत अन्नक्सान क़ालहुल्अस्मई वल्खस्फु अयज़न अज़्ज़िल्लु वल्जुम्हुरू अला अन्नहुमा यकूनानि लिज़हाबि ज़ौइश्शामि वल्क़मरि बिल्कुल्लियति व क़ील बिल्काफि फिलइब्तिदाइ व बिल्खाइ फिलइन्तिहाइ व ज़अम बअजु उलमाइल्हयअति अन्न कुसूफ़श्शामि ला हक़ीक़त लहू फइन्नहा ला ततगय्यरू फी नफ़्सिहा व इन्नमल्क़मर यहूलु बैनना व बैनहा व नुरूहा बाक़िन व अम्मा कुसूफ़ल्क़मरि फ़हक़ीक़तुन फइन्न ज़ौअहू मिन ज़ौइश्शामि व कुसूफ़हू तक्रातुइ फला यक्का फीहि ज़ौल्बत्तति फखुसूफ़हू ज़िहाबु ज़ौइही हक़ीक़तन इन्तिहा.

क़ालल्हाफ़िज़ अब्दुलअज़ीज़ अल्मुन्ज़िरी व मन क़ब्लहू अल्काज़ी अबूबक्र बिन अल्अरबी हदीथल्कुसूफ़ि रवाहु अनिन्नबिय्यि (ﷺ) सबअत अशर नफ़्सन रवाहु जमाअतुम्मिन्हुम बिल्काफ़ि व जमाअतुन बिल्खाइ व जमाअतुन बिल्लफ़ज़ैनि जमीआ इन्तिहा वला रैब अन्न मदलूल्कुसूफ़ि लुगतन गैर मदलूलिल्खुसूफ़ि लिअन्नल्कुसूफ़ बिल्काफ़ि अत्तगय्यरू इला सवादिन वल्खुसूफ़ बिल्खाइ अन्नक्सु वज़्जवालु. या'नी कुसूफ़ के मा'नी स्याही की तरफ़ मुतगय्यर हो जाना है जब किसी का चेहरा मुतगय्यर हो जाए तो लफ़्ज़ कसफ़ वज्हुहू बोला करते हैं और खुसूफ़ ख़ाए मुअज्जमा के साथ नुक्सान को कहते हैं और लफ़्ज़े खसफ़ जिल्लत के मा'नी में बोला गया है ये भी कहा गया कि ग्रहण की इब्तिदाई हालत पर कुसूफ़ और इन्तिहाई हालत पर खुसूफ़ बोला गया है। कुछ इलम-ए-हियत का ऐसा ख़याल है कि कुसूफ़े शम्स की कोई हक़ीक़त नहीं क्योंकि वो अपनी ज़ात में मुतगय्यर नहीं होता चाँद उसके और हमारे बीच हाइल हो जाता है और उसका नूर बाक़ी रहता है (ये इलम-ए-हियत का ख़याल है कि कोई शरई बात नहीं है हक़ीक़ते हाल से अल्लाह ही वाक़िफ़ है)।

कुसूफ़े क़मर की हक़ीक़त है उसकी रोशनी सूरज की रोशनी है जब ज़मीन उसके और चाँद के बीच हाइल हो जाती है तो उसमें रोशनी नहीं रहती।

हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीम मुंजरी और काज़ी अबूबक्र ने कहा कि हदीथे कुसूफ़ को आँहज़रत (ﷺ) से सत्रह सज़ाबियों ने रिवायत किया है। एक जमाअत ने उनमें से काफ़ के साथ या'नी लफ़्ज़े कुसूफ़ के साथ और एक जमाअत ने ख़ाअ के साथ और एक जमाअत ने दोनों लफ़्ज़ों के साथ। लम्बी ए'तिबार से दोनों लफ़्ज़ों का मदलूल अलग-अलग है, कुसूफ़ स्याही की तरफ़ मुतगय्यर होना और ख़सूफ़ नक़्स और ज़वाल की तरफ़ मुतगय्यर होना। बहरहाल इस बारे में शारेअ (अलैहिस्सलाम) का जामेअ इश्आद काफ़ी है कि दोनों अल्लाह की निशानियों में से हैं जिनके ज़रिये अल्लाह पाक अपने बन्दों को दिखाता है कि ये चाँद और सूरज भी उसके क़ब्ज़े में हैं और इबादत के लायक़ सिर्फ़ वही अल्लाह तबारक व तआला है जो लोग चाँद और सूरज की परस्तिश करते हैं वो भी इन्तिहाई बेवकूफी में मुब्तला हैं कि ख़ालिफ़ को छोड़कर मख़लूक को मअबूद बनाते हैं, सच है, ला तस्जुदु लिश्शामि व ला लिल्क़मरि वस्जुदु लिल्लाहिल्लज़ी खलक़हुन्न इन कुन्तुम इय्याहु तअबुदून (फुससिलत : 37) या'नी, 'चाँद और सूरज को सज्दान करो बल्कि उस अल्लाह को सज्दा करो जिसने उनको पैदा किया है अगर तुम ख़ास उस अल्लाह की इबादत करते हो।' मा'लूम हुआ कि हर किस्म के सज्दे ख़ास अल्लाह ही के लिये करने ज़रूरी हैं।

बाब 1 : सूरज ग्रहण की

नमाज़ का बयान

(1040) हमसे अम्र बिन औन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने यूनुस से बयान किया, उनसे इमाम हसन बसरी ने बयान किया, उनसे अबूबक्र नफ़ीअ बिन

۱ - بَابُ الصَّلَاةِ فِي كُسُوفِ

الشمس

۱۰۴۰- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَوْنٍ قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ يُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ

हारिष (रज़ि.) ने कि हम नबी करीम (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि सूरज को ग्रहण लगना शुरू हुआ। नबी करीम (ﷺ) (उठकर जल्दी में) चादर घसीटते हुए मस्जिद में गए। साथ ही हम भी गए, आप (ﷺ) ने हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई ताओंकि सूरज झाफ़ हो गया। फिर आपने फ़र्माया कि सूरज और चाँद में ग्रहण किसी की मौत व हलाकत से नहीं लगता लेकिन जब तुम ग्रहण देखो तो उस वक़्त नमाज़ और दुआ करते रहो जब तक कि ग्रहण खुल न जाए।

(दीगर मक़ाम : 1048, 1062, 1063, 5785)

(1041) हमसे शिहाब बिन अब्बाद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इब्राहीम बिन हुमैद ने ख़बर दी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उन्हें कैस बिन अबी हाज़िम ने और उन्होंने कहा कि मैंने अबू मसऊद अंसारी (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सूरज और चाँद में ग्रहण किसी शख्स की मौत से नहीं लगता। ये दोनों तो अल्लाह तआला की कुदरत की निशानियाँ हैं इसलिये इसे देखते ही खड़े हो जाओ और नमाज़ पढ़ो।

(दीगर मक़ाम : 1057, 2307)

तशरीह : इस हदीस से मा'लूम हुआ कि ग्रहण की नमाज़ का वक़्त वही है जब ग्रहण लगे ख़वाह वो किसी वक़्त हो और हन्फ़ियों ने औकाते मकरूहा को मुस्तज़ा कर दिया है और इमाम अहमद से भी मशहूर रिवायत यही है और मालिकिया के नज़दीक उस वक़्त सूरज के निकलने से आफ़ताब के ढलने तक है और अहले हदीस ने अब्वल मज़हब को इख़्तियार किया है और वही राजेह है। (वहीदी)

(1042) हमसे अज़बग़ बिन फ़रह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे अमर बिन हारिष ने अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम से ख़बर दी, उन्हें उनके बाप क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से ख़बर दी कि आपने फ़र्माया सूरज और चाँद में ग्रहण किसी की मौत व ज़िंदगी से नहीं लगता बल्कि ये अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं, इसलिये जब तुम ये देखो तो नमाज़ पढ़ो।

لَا تَنْكَسِفُ الشَّمْسُ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَجُرُّ رِدَاءَهُ حَتَّى دَخَلَ الْمَسْجِدَ ، فَدَخَلْنَا، فَمَلَأَ بِنَا رَكْعَتَيْنِ حَتَّى انْجَلَتْ الشَّمْسُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَا يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَصَلُّوا وَاذْغُوا حَتَّى يَنْكَشِفَ مَا بَيْنَكُمْ)). [أطرافه في: ١٠٤٨، ١٠٦٢، ١٠٦٣، ٥٧٨٥]

١٠٤١- حَدَّثَنَا شِهَابُ بْنُ عُبَادٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا مَسْعُودٍ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَا يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ مِنَ النَّاسِ، وَلَكِنَّهُمَا آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَقُومُوا فَصَلُّوا)).

[طرافه في: ١٠٥٧، ٣٢٠٤]

١٠٤٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يُخْبِرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، وَلَكِنَّهُمَا آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ، فَإِذَا

(दीगर मक़ाम : 3201)

رَأَيْتُمُوهَا فَصَلُّوا)).

[أطرفه في: ٣٢٠١].

(1043) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हाशिम बिन क़ासिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शैबान अबू मुआविया ने बयान किया, उनसे ज़ियाद बिन इलाक़ा ने बयान किया, उनसे हज़रत मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में सूरज ग्रहण उस दिन लगा जिस दिन (आप ﷺ के साहबज़ादे) हज़रत इब्राहीम (रज़ि.) का इंतिक़ाल हुआ कुछ लोग कहने लगे कि ग्रहण हज़रत इब्राहीम (रज़ि.) की वफ़ात की वजह से लगा है। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ग्रहण किसी की मौत व हयात से नहीं लगता। बल्कि तुम जब उसे देखो तो नमाज़ पढ़ा करो और दुआ किया करो।

(दीगर मक़ाम : 1060, 6199)

١٠٤٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلَاقَةَ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: كَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ مَاتَ إِبْرَاهِيمُ فَقَالَ النَّاسُ: كَسَفَتِ الشَّمْسُ لِمَوْتِ إِبْرَاهِيمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَا يَكْمِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهَا فَصَلُّوا وَادْعُوا اللَّهَ)).

[طرفاه في: ١٠٦٠، ٦١٩٩].

तशरीह : इतिफ़ाक़ से जब हज़रत इब्राहीम आँहज़रत (ﷺ) के बेटे गुज़र गए तो सूरज को ग्रहण लगा। कुछ लोगों ने कहा कि उनकी मौत से ये ग्रहण लगा है, आप (ﷺ) ने इस ए' तिक़ाद (यक़ीन) का रद्द फ़र्माया। जाहिलियत के लोग सितारों की तापीर ज़मीन पर पड़ने का ए' तिक़ाद (यक़ीन) रखते थे, हमारी शरीअत ने इसे बातिल करार दिया है। हदीषे मज़कूर से मा'लूम हुआ कि ग्रहण की नमाज़ का वक़्त वही है जब भी ग्रहण लगे ख़्वाह वो किसी भी वक़्त हो, यही मज़हब राजेह है। यहाँ ग्रहण को अल्लाह की निशानी करार दिया गया है। मुस्नद अहमद और निसाई और इब्ने माजा वग़ैरह में इतना ज़्यादा मन्कूल है कि अल्लाह अज़ब व जल्ल जब किसी चीज़ पर तजल्ली करता है तो वो आज़िज़ी से इत्ताअत करती है। तजल्ली का असल मफ़हूम व मतलूब अल्लाह ही को मा'लूम है। ये ख़याल कि ग्रहण हमेशा चाँद या ज़मीन के हाइल होने से होता है, ये उलम-ए-हियत का ख़याल है और ये इल्म यक़ीनी नहीं है। हकीम देवजानिस कल्बी का ये हाल था कि जब उसके सामने कोई इल्मे हियत का मसला बयान करता तो वो कहता कि क्या आप आसमान से उतरे हैं। बहरहाल बक़ौल हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम उलम-ए-हियत जो कहते हैं कि ज़मीन या चाँद हाइल हो जाने से ग्रहण होता है, ये हदीष के खिलाफ़ नहीं है फिर भी ये आयते करीमा भिन आयातिल्लाह का इत्लाक़ इस पर सहीह है। रिवायत में जिस वाकिअे का ज़िक़र है वो 10 हिजरी में बमाहे रबीउल अव्वल या माहे रमज़ान में हुआ था। वल्लाहु अज़लम बिस्सवाब।

साहिबे तस्हीलुल क़ारी लिखते हैं कि अगर ऐसा होता जैसे कुफ़्फ़ार का ए' तिक़ाद (यक़ीन) था तो सूरज और चाँद का ग्रहण अपने मुक़रर वक़्त पर न होता बल्कि जब भी दुनिया में किसी बड़े आदमी की मौत हो जाती या कोई बड़ा आदमी पैदा हो जाता तो ग्रहण लगा करता। हालाँकि अब कामिलीन इल्मे हियत ने सूरज और चाँद के ग्रहण के औकात ऐसे बताते हैं कि एक मिनट उनके आगे-पीछे ग्रहण नहीं होता और सालभर की बेशतर जंतूरियों में लिख देते हैं कि इस साल सूरज ग्रहण फ़लाँ तारीख़ और फ़लाँ वक़्त होगा और चाँद ग्रहण फ़लाँ तारीख़ और फ़लाँ वक़्त में और ये भी लिख देते हैं कि सूरज व चाँद की टिक्की ग्रहण से कल छुप जाएगी या उनका इतना हिस्सा। और ये भी लिख देते हैं कि किस मुल्क में किस क़दर ग्रहण लगेगा।

बहरहाल ये दोनों अल्लाह की कुदरत की अहम निशानियाँ हैं और कुआन पाक में अल्लाह ने फ़र्माया है, वमा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तखवीफ़ा. (बनी इस्राईल : 59) 'कि मैं अपनी कुदरत की कितनी ही निशानियाँ लोगों को डराने के लिये भेजता हूँ, जो अहले ईमान हैं वो उनसे अल्लाह के वजूदे बरहक़ पर दलील लेकर अपना ईमान मज़बूत करते हैं और जो इलहाद व दहरियत (भौतिकतावाद) के शिकार हैं वो उनको माही ऐनक (भौतिकतावादी चश्मे) से देखकर अपने इलहाद व दोहरियत में तरक़ी करते हैं। मगर हकीक़त यही है कि व फ़ी कुल्लि शैइन लहू आयतुन तदुल्लु अला अन्नहु वाहिदुन . या'नी कायनात की हर चीज़ में इस अम्प की निशानी मौजूद है कि अल्लाह पाक अकेला है। अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं कि व फ़ी हाज़लहदीषि इब्नालुम्मा कान अहलुल्जाहिलियति यअत्किदूनहू मिन ताषीरिल्कवाकिबि क़ालल्खत्ताबी कानू फिल्जाहिलियति यअत्किदून अन्नल्कुसूफ़ यूजिबु हुदूष तगय्युरिल्अर्जि मम्मौतिन व ज़ररिन फ़अ़ालमन्नबिय्यु (ﷺ) अन्नहू इतिक़ादुन बातिलुन व इन्नश्शम्स वल्क़मर खल्क़ानि मुसख़्ख़रानि लिल्लाहि तअ़ाला लैस लहुमा सुल्तानुन फ़ी ग़ैरिहिमा व ला कुदरत अलहदफ़्द अन अन्फ़ुसिहिमा. (नैलुल औतार) या'नी अहदे जाहिलियत वाले सितारों की ताषीर का जो ए'तिक़ाद (यक़ीन) रखते थे इस हदीष में उसका इब्ताल है। ख़त्ताबी ने कहा कि जाहिलियत के लोग ए'तिक़ाद रखते थे कि ग्रहण से ज़मीन पर मौत या किसी नुक्सान का हादसा होता है। हुज़ूर (ﷺ) ने बतलाया कि ये ए'तिक़ाद (यक़ीन) बातिल है और सूरज और चाँद अल्लाह की दो मख़लूक जो अल्लाह पाक के ही ताबेअ हैं उनको अपने ग़ैर में कोई इख़्तियार नहीं और न वो अपने ही नफ़्सों से किसी को दफ़ा कर सकते हैं।

आजकल भी अवामुत्रास जाहिलियत जैसा ही अक़ीदा रखती हैं, अहले इस्लाम को ऐसे ग़लत ख़याल से बिल्कुल दूर रहना चाहिये और जानना चाहिये कि सितारों में कोई त़ाक़त नहीं है। हर किस्म की कुदरत सिर्फ़ अल्लाह पाक ही को हासिल है। (वज़ाहु अअलम)

बाब 2 : सूरज ग्रहण में सदक़ा-ख़ैरात करना

(1044) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा कअम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे उनके बाप इर्वा बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में सूरज ग्रहण हुआ तो आपने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। पहले आप खड़े हुए तो बड़ी देर तक खड़े रहे, क़याम के बाद रुकूअ किया और रुकूअ में बहुत देर तक रहे। फिर रुकूअ से उठने के बाद देर तक दोबारा खड़े रहे लेकिन आपके पहले क़याम से कुछ कम। फिर रुकूअ किया तो बड़ी देर तक रुकूअ में रहे लेकिन पहले से कम, फिर सज्दे में गए और देर तक सज्दे की हालत में रहे। दूसरी रक़अत में भी आप (ﷺ) ने इसी तरह किया। जब आप (ﷺ) फ़ारिग हुए तो ग्रहण खुल चुका था। उसके बाद आप (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया अल्लाह तअ़ाला की हम्दो-शना के बाद फ़र्माया कि सूरज और चाँद दोनों अल्लाह की निशानियाँ हैं और किसी की मौत व हयात से उनमें ग्रहण नहीं लगता। जब तुम ग्रहण देखो तो अल्लाह से दुआ करो तक्बीर कहो और नमाज़ पढ़ो और सदक़ा करो। फिर आपने फ़र्माया ऐ मुहम्मद (ﷺ) की उम्मत

٢- بَابُ الصَّدَقَةِ فِي الْكُسُوفِ

١٠٤٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ حِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ: ((عَسَفَتِ الشَّمْسُ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالنَّاسِ فَقَامَ الْقِيَامَ، ثُمَّ رَكَعَ قَاطَانَ الرُّكُوعِ، ثُمَّ قَامَ قَاطَانَ الْقِيَامِ - وَهُوَ ذُو الْقِيَامِ الْأَوَّلِ - ثُمَّ رَكَعَ قَاطَانَ الرُّكُوعِ وَهُوَ ذُو الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ سَجَدَ قَاطَانَ السُّجُودِ، ثُمَّ قَعَلَ فِي الرُّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ مَا قَعَلَ فِي رُكْعَةِ الْأَوَّلَى، ثُمَّ انْصَرَفَ وَقَدْ نُجِلَتِ الشَّمْسُ، فَخَطَبَ النَّاسَ، فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَا يَنْخَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَادْعُوا اللَّهَ وَكَبِّرُوا وَصَلُّوا

के लोगों! देखो इस बात पर अल्लाह तआला से ज़्यादा ग़ैरत और किसी को नहीं आती कि उसका कोई बन्दा या बन्दी ज़िना करे। ऐ उम्मत मुहम्मद (ﷺ)! अल्लाह की कसम! जो कुछ मैं जानता हूँ अगर तुम्हें मा'लूम हो जाए तो तुम हँसते कम और रोते ज़्यादा। (दीगर मक़ाम : 1046, 1047, 1050, 1056, 1058, 1064, 1065, 1066, 1212, 3203, 4624, 5221, 6631)

وَتَصَدَّقُوا) ثُمَّ قَالَ: ((يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ، وَاللَّهِ مَا مِنْ أَحَدٍ أَغْيَرُ مِنَ اللَّهِ أَنْ يَزْنِيَ عَبْدُهُ أَوْ تَزْنِي أَمَتُهُ. يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ، وَاللَّهُ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَغْلَمَ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا)).

[أطرافه ٣: ١٠٤٦، ١٠٤٧، ١٠٥٠]

١٠٥٦، ١٠٥٨، ١٠٦٤، ١٠٦٥

١٠٦٦، ١٢١٢، ٣٢٠٣، ٤٦٢٤

[٥٢٢١، ٦٦٣١]

तशरीह : या'नी हर रकअत में दो-दो रकूअ किये और दो-दो क़याम। अगरचे कुछ रिवायतों में तीन-तीन रकूअ और कुछ में चार-चार, कुछ में पांच-पांच। हर रकअत में वारिद हुए हैं। मगर दो-दो रकूअ की रिवायतें सेहत में बढ़कर हैं। और अहले हदीष और शाफ़िई का इस पर अमल है और हन्फ़िया के नज़दीक हर रकअत में एक ही रकूअ करे। इमाम इब्ने क़य्यिम (रह.) ने कहा कि एक रकूअ की रिवायतें सेहत में दो-दो रकूअ की रिवायतों के बराबर नहीं है। अब जिन रिवायतों में दो रकूअ से ज़्यादा मन्कूल हैं। या तो वो रावियों की ग़लती है या कुसूफ़ का वाकिआ कई बार हुआ होगा। कुछ उलमा ने यही इख़्तियार किया है कि जिन-जिन तरीकों से कुसूफ़ की नमाज़ मन्कूल हैं उन सब तरीकों से पढ़ना दुस्त है। क़स्तलानी (रह.) ने पिछले मुतकल्लिमीन की तरह ग़ैरत की ता'वील की है और कहा है कि ग़ैरत गुस्से के जोश को कहते हैं और अल्लाह तआला अपने तग़य्युरात से पाक है, अहले हदीष का ये तरीक़ नहीं। अहले हदीष अल्लाह की उन सब सिफ़ात को जो कुआन व हदीष में वारिद है अपने ज़ाहिरी मा'नी पर मद्दमूल रखते हैं और उनमें ता'वील और तहरीफ़ नहीं करते। जब ग़ज़बे इलाही सिफ़ात में से है तो ग़ैरत भी उसकी सिफ़ात में से होगी। ग़ज़ब ज़्यादा और कम हो सकता है और तग़य्युर अल्लाह की ज़ातो-सिफ़ाते हक़ीक़िया में नहीं होता। लेकिन सिफ़ाते अफ़आल में तो तग़य्युर ज़रूरी है। मघ़लन गुनाह करने से अल्लाह तआला नाराज़ होता है फिर तौबा करने से राज़ी हो जाता है। अल्लाह तआला कलाम करता और कभी कलाम नहीं करता। कभी उतरता है कभी चढ़ता है। ग़र्ज़ सिफ़ाते अफ़आलिया का हद्द और तग़य्युर अहले हदीष के नज़दीक जाइज़ है। (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम)

बाब 3 : ग्रहण के वक़्त यूँ पुकारना कि नमाज़ के लिये इकट्ठे हो जाओ जमाअत से नमाज़ पढ़ो

٣- بَابُ النَّدَاءِ بِالصَّلَاةِ جَامِعَةً فِي الْكُسُوفِ

(1045) हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमें यह्या बिन सलाम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमसे मुआविया बिन सलाम बिन अबी सलाम (रह.) हब्शी दमिशकी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन अबी क़बीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जुहरी ने ख़बर दी, उनसे अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में सूरज ग्रहण

١٠٤٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ سَلَامٍ بْنُ أَبِي سَلَامٍ الْحَبَشِيُّ الدَّمَشْقِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ الزُّهْرِيُّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

लगा तो ये ऐलान किया गया कि नमाज़ होने वाली है।

(दीगर मक़ाम : 1051)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَمَا كَسَفَتِ
الْشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نُودِيَ
(بِالصَّلَاةِ جَامِعَةً)). [طَرَفُهُ ن: ١٠٥١].

मक्सूदे बाब ये है कि ग्रहण की नमाज़ के लिये अज़ान नहीं दी जाती मगर लोगों में इस तौर पर ऐलान कराना कि नमाज़े ग्रहण जमाअत से अदा की जाने वाली है। लिहाज़ा लोगों शिर्कत के लिये तैयार हो जाओ। इस तरह ऐलान कराने में कोई हर्ज़ नहीं है क्योंकि ऐसा ऐलान कराना बयान की गई हदीस से प्राबित है इससे ये भी मा'लूम हुआ कि ग्रहण की नमाज़ ख़ास एहतिमा मे जमाअत के साथ पढ़नी चाहिये।

बाब 4 : ग्रहण की नमाज़ में इमाम का ख़ुत्बा पढ़ना

और हज़रत आइशा और अस्मा (रज़ि.) ने रिवायत किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरज ग्रहण में ख़ुत्बा सुनाया।

(1046) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) और मुझसे अहमद बिन झालेह ने बयान किया कि हमसे अम्बज़ा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ना ने नबी करीम (ﷺ) की बीवी मुत्तहहरा हज़रत आइशा सिहीका (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ज़िंदगी में सूरज ग्रहण लगा, उसी वक़्त आप (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। उन्होंने बयान किया कि लोगों ने हज़ूर अकरम (ﷺ) के पीछे सफ़ा बाँधी आपने तक्बीर कही और बहुत देर कुआन मजीद पढ़ते रहे फिर तक्बीर कही और बहुत लम्बा रुकूअ किया फिर समिअल्लाहुलिमन हमिदा कहकर खड़े हो गये और सज्दा नहीं किया (रुकूअ से उठने के बाद) फिर बहुत देर तक कुआन पढ़ते रहे। लेकिन पहली क्रिअत से कम, फिर तक्बीर के साथ रुकूअ में चले गए और देर तक रुकूअ में रहे, ये रुकूअ भी पहले से कम था। अब समिअल्लाहु लिमन हमिदह और रब्बना लकल हम्द कहा फिर सज्दे में गए। आपने दूसरी रकअत में भी इसी तरह किया (उन दोनों रकअतों में) पूरे चार रुकूअ और चार सज्दे किये। नमाज़ से फ़ारिग होने से पहले ही सूरज सफ़ा हो गया था। नमाज़ के बाद आप (ﷺ) ने खड़े होकर

٤- بَابُ خُطْبَةِ الْإِمَامِ فِي الْكُسُوفِ
وَقَالَتْ عَائِشَةُ وَأَسْمَاءُ: خَطَبَ النَّبِيُّ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

١٠٤٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ:
حَدَّثَنِي اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ
ح. وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنَا
عَبَسَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ
قَالَ حَدَّثَنِي غُرُوزٌ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ
ﷺ قَالَ: ((كَسَفَتِ الشَّمْسُ فِي عَهْدِ
النَّبِيِّ ﷺ، فَخَرَجَ إِلَى الْمَسْجِدِ، فَصَفَّ
النَّاسَ وَرَأَى، فَكَبَّرَ، فَاقْرَأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
قُرْآنًا طَوِيلًا، ثُمَّ كَبَّرَ فَرَفَعَ رُكُوعًا
طَوِيلًا، ثُمَّ قَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ
فَقَامَ وَلَمْ يَسْجُدْ وَقَرَأَ الْقُرْآنَ طَوِيلًا هِيَ
أَذْنَى مِنَ الْقِرَاءَةِ الْأُولَى، ثُمَّ كَبَّرَ وَرَفَعَ
رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ أَذْنَى مِنَ الرُّكُوعِ
الْأَوَّلِ، ثُمَّ قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا
وَلَكَ الْحَمْدُ، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ قَالَ لِي
الرُّكُوعَةُ الْآخِرَةُ مِثْلَ ذَلِكَ فَاسْتَكْمَلَ أَرْبَعَ
رَكَعَاتٍ لِي أَرْبَعِ سَجَدَاتٍ، وَانْجَلَتْ
الشَّمْسُ قَبْلَ أَنْ يَنْصَرِفَ. ثُمَّ قَامَ فَأَتَى

खुत्बा दिया और पहले अल्लाह तआला की उसकी शान के मुताबिक ता'रीफ की फिर फर्माया कि सूरज और चाँद अल्लाह की दो निशानियाँ हैं उनमें ग्रहण किसी की मौत व हयात से नहीं लगता लेकिन जब तुम ग्रहण देखा करो तो फौरन नमाज़ की तरफ लपको। जुहरी ने कहा कि कप्पीर बिन अब्बास अपने भाई अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते थे वो सूरज ग्रहण का किस्सा इस तरह बयान करते थे जैसे उर्वा ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से नक़ल किया। जुहरी ने कहा मैंने उर्वा से कहा तुम्हारे भाई अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने जिस दिन मदीना में सूरज ग्रहण हुआ सुबह की नमाज़ की तरह दो रकअत पढ़ी और कुछ ज़्यादा नहीं किया। उन्होंने कहा हौं मगर वो सुन्नत के तरीक़ से चूक गए।

(राज़ेअ: 1044)

عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ) ثُمَّ قَالَ: ((هُمَا آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَا يَنْخَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَانْزِعُوا إِلَى الصَّلَاةِ)). وَكَانَ يُحَدِّثُ كَثِيرٌ بْنُ عَبَّاسٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يُحَدِّثُ يَوْمَ خَسَفَتِ الشَّمْسُ بِمِثْلِ حَدِيثِ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ، فَقُلْتُ لِعُرْوَةَ: إِنَّ أَخَاكَ يَوْمَ خَسَفَتِ الشَّمْسُ بِالْمَدِينَةِ لَمْ يَزِدْ عَلَى رَكْعَتَيْنِ وَمِثْلِ الصُّبْحِ، قَالَ: أَجَلٌ، لِأَنَّهُ أَخْطَأَ السَّنَةَ.

[راجع: 1044]

तशरीह: उनको हज़रत आइशा (रज़ि.) की ये हदीस न पहुँची होगी। हालाँकि अब्दुल्लाह बिन जुबैर सहाबी (रज़ि.) थे और उर्वा ताबेई हैं। मगर उर्वा ने आँहज़रत (ﷺ) की ये हदीस नक़ल की और हदीस की पैरवी सब पर मुक़दम है। इस रिवायत से ये भी निकला कि बड़े-बड़े जलीलुल क़द्र सहाबी जैसे अब्दुल्लाह बिन जुबैर और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) हैं, इनसे भी ग़लती हो जाती थी तो और मुज्ताहिदों से जैसे इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम शाफ़िई हैं, उनसे ग़लती का होना कुछ बर्द नहीं और अगर मुसन्नफ़ आदमी इमाम इब्ने क़य्यिम की ईलामुल मुकिईन इस्माफ़ से देखे तो उसको इन मुज्ताहिदों की ग़लतियाँ बख़्बा मा'लूम हो सकती हैं। (वहीदी)

बाब 5 : सूरज ग्रहण का कुसूफ़ व खुसूफ़ दोनों कह सकते हैं

और अल्लाह तआला ने (सूरह क़याम: में) फर्माया, 'वख़सफ़ल कमर'

तशरीह: इस बाब से इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि लफ़्ज़े कुसूफ़ और खुसूफ़ चाँद और सूरज दोनों के ग्रहण में मुस्तअमल (प्रयुक्त) होते हैं और जिन लोगों ने सूरज ग्रहण को कुसूफ़ या खुसूफ़ कहने से मना किया है उनका क़ौल सही नहीं है। इसी तरह जिन लोगों ने चाँद ग्रहण को कुसूफ़ कहने से क्योंकि अल्लाह ने खुद सूरह क़याम: में चाँद ग्रहण को खुसूफ़ फर्माया (वहीदी)

(1047) हमसे सईद बिन इफ़ैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैय़ बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे उर्वा बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की बीवी मुतहहरा हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने ख़बर दी कि

٥- بَابُ هَلْ يَقُولُ: كَسَفَتِ

الشَّمْسُ أَوْ خَسَفَتِ؟

وَقَالَ اللَّهُ غُرُوجًا: «وَخَسَفَ الْقَمَرُ»

[القيامة: ٨]

١٠٤٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ:

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ حَدَّثَنِي عَقِيلٌ عَنْ ابْنِ

شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ

عَنْشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ ((أَنَّ رَسُولَ

जिस दिन सूरज में खुसूफ़ (ग्रहण) लगा तो नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ाई आप (ﷺ) खड़े हुए तक्बीर कही फिर देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। लेकिन उसके बाद एक लम्बा रुकूअ किया। रुकूअ से सर उठाया तो कहा समिअल्लाहु लिमन हमिदह फिर आप पहले ही की तरह खड़े हो गये और देर तक कुआन मजीद पढ़ते रहे लेकिन इस बार की क़िरअत पहले से कुछ कम थी। फिर आप सज्दा में गए और बहुत देर तक सज्दे में रहे फिर दूसरी रकअत में भी आपने इसी तरह किया फिर जब आपने सलाम फेरा तो सूरज साफ़ हो चुका था। नमाज़ से फ़ारिग होकर आप (ﷺ) ने खुत्बा दिया और फ़र्माया कि सूरज और चाँद का 'कुसूफ़' (ग्रहण) अल्लाह तआला की एक निशानी है और उनमें 'खुसूफ़' (ग्रहण) किसी की मौत व हयात पर नहीं लगता। लेकिन जब तुम उसे देखो तो फ़ौरन नमाज़ के लिये लपको।

(राजेअ : 1044)

اللَّهُ ﷻ صَلَّى يَوْمَ خَسَفَتِ الشَّمْسُ فَقَامَ لَكَزْرَ فَقَرَأَ قِرَاءَةً طَوِيلَةً، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ : سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، وَقَامَ كَمَا هُوَ، ثُمَّ قَرَأَ قِرَاءَةً طَوِيلَةً وَهِيَ أَذْنَى مِنَ الْقِرَاءَةِ الْأُولَى، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهِيَ أَذْنَى مِنَ الرُّكُوعَةِ الْأُولَى، ثُمَّ سَجَدَ سُجُودًا طَوِيلًا، ثُمَّ فَعَلَ فِي الرُّكُوعَةِ الْآخِرَةِ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ سَلَّمَ - وَقَدْ تَجَلَّتِ الشَّمْسُ - فَعَطَبَ النَّاسَ فَقَالَ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ: ((إِنَّهُمَا آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَالْتَفِعُوا إِلَى الصَّلَاةِ)). [راجع: ١٠٤٤]

दोनों के ग्रहण पर आपने कुसूफ़ और खुसूफ़ दोनों लफ़्ज़ इस्ते'माल किये हैं। बाब का मतलब साबित हुआ।

बाब 6 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि अल्लाह तआला अपने बन्दों को सूरज ग्रहण के ज़रिये डराता है
ये अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

(1048) हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन इब्बैद ने, उनसे इमाम हसन बसरी ने, उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सूरज और चाँद दोनों अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं और किसी की मौत व हयात से उनमें ग्रहण नहीं लगता बल्कि अल्लाह तआला इसके ज़रिये अपने बन्दों को डराता है। अब्दुल वारिष, शुअबा, ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह और हम्माद बिन सलमा इन सब हाफ़िज़ों ने यूनुस से ये जुम्ला, 'अल्लाह उनको ग्रहण करके अपने बन्दों को डराता है' बयान नहीं किया और यूनुस के साथ इस हदीष को मूसा ने मुबारक बिन फ़ज़ाला से, उन्होंने इमाम हसन बसरी से रिवायत किया। उसमें यूँ है कि अबूबक्र ने

٦- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷻ: ((يُخَوِّفُ اللَّهُ عِبَادَهُ بِالْكَسُوفِ))
قَالَ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷻ.

١٠٤٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ الْخَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷻ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَا يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ، وَلَكِنْ اللَّهُ تَعَالَى يُخَوِّفُ بِهَا عِبَادَهُ)).
لَمْ يَذْكُرْ عَبْدُ الْوَارِثِ وَشُعْبَةُ وَخَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ وَحَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ يُونُسَ: ((يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهَا عِبَادَهُ)). وَتَابِعَهُ مُوسَى

आहज़रत (ﷺ) से सुनकर मुझको ख़बर दी कि अल्लाह तआला आपको ग्रहण करके अपने बन्दों को डराता है और यूनस के साथ इस हदीष को अशअब बिन अब्दुल्लाह ने भी इमाम हसन बसरी से रिवायत किया। (राजेअ: 1040)

عَنْ مَبَارَكٍ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو نَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَخْوَفُ اللَّهُ بِهِمَا عِبَادَهُ)). وَتَابَعَهُ الْأَشْعَثُ عَنْ الْحَسَنِ. [راجع: ١٠٤٠]

तशरीह: इसको खुद इमाम बुखारी (रह.) ने आगे चलकर वस्ल (मिलान) किया। भले ही कुसूफ़ या ख़ुसूफ़ ज़मीन या चाँद के हाइल होने से हो, जिसमें अब कुछ शक नहीं रहा। यहाँ तक कि मुंजिमीन और अहले हियते ख़ुसूफ़ और कुसूफ़ का ठीक वक़्त और ये कि वो किस मुल्क में कितना होगा पहले ही बता देते हैं। और तजुबे से वो बिलकुल ठीक निकलता है। इसमें बिलकुल फ़र्क नहीं होता मगर इससे हदीष के मतलब में कोई ख़लल नहीं आया क्योंकि अल्लाह करीम अपनी कुदरत और ताक़त दिखलाता है कि चाँद और सूरज कैसे बड़े और रोशन इज़राम को वो दम भर में स्याह कर देता है। उसकी अज़मत और ताक़त और हैयत से बन्दों को हर दम थरांना चाहिये और जिसने चाँद और सूरज ग्रहण के आदी और हि़साबी होने का इंकार किया है वो उक़लाअ (अक्लमंदों) के नज़दीक हंसी के काबिल है। (वहीदुज्जमाँ मरहूम)

बाब 7 : सूरज ग्रहण में अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह मांगना

(1049) हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा कअम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अम्मा बन्ते अब्दुर्रहमान ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की जोज़: मुतहहरा आइशा (रज़ि.) ने कि एक यहूदी औरत उनके पास मांगने के लिये आई और उसने दुआ की कि अल्लाह तआला आपको क़ब्र के अज़ाब से बचाए। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि क्या लोगों को क़ब्र में अज़ाब होगा? इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह तआला की उससे पनाह मांगता हूँ।

(दीगर मक्काम: 1055, 1272, 6366)

(1050) फिर एक बार सुबह को (कहीं जाने के लिये) रसूलुल्लाह (ﷺ) सवार हुए, उसके बाद सूरज ग्रहण लगा। आप (ﷺ) दिन चढ़े वापस हुए और अपनी बीवियों के हुज़ों से गुज़रते हुए (मस्जिद में) नमाज़ के लिये खड़े हो गए सहबा (रज़ि.) ने भी आपकी इत्तिदा में निय्यत बाँध ली। आप (ﷺ) ने बहुत लम्बा क़याम किया फिर रुकूअ भी बहुत लम्बा किया, उसके बाद खड़े

٧- بَابُ التَّعَوُّذِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ فِي الْكُسُوفِ

١٠٤٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنَّ يَهُودِيَّةً جَاءَتْ تَسْأَلُهَا فَقَالَتْ لَهَا: أَعَاذُكَ اللَّهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. فَسَأَلَتْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ: أَيْعَذِبُ النَّاسُ فِي قُبُورِهِمْ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: غَايِذَا بِاللَّهِ مِنْ ذَلِكَ)).

[طريقه ي: ١٠٥٥, ١٢٧٢, ٦٣٦٦]

١٠٥٠- ثُمَّ رَكِبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ذَاتَ عِدَّةٍ مَرَكَبًا فَخَسَفَتِ الشَّمْسُ، فَوَجَعَ سَخًى. فَمَرَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، بَيْنَ ظَهْرَانِي حَجْرٍ. ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي، وَقَامَ النَّاسُ وَرَاءَهُ نَدَاءً قِيَامًا طَوِيلًا، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا، ثُمَّ رَفَعَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُوْنُ الْقِيَامِ

हुए और अब की दफ़ा क़याम फिर लम्बा किया लेकिन पहले से कुछ कम फिर रुकूअ किया और इस बार भी देर तक रुकूअ में रहे लेकिन पहले रुकूअ से कुछ कम, फिर रुकूअ से सर उठाया और सज्दा में गए। अब आप फिर दोबारा खड़े हुए और बहुत देर तक क़याम किया लेकिन पहले क़याम से थोड़ा कम। फिर एक लम्बा रुकूअ किया लेकिन पहले रुकूअ से कुछ कम, फिर रुकूअ से सर उठाया और क़याम में अब की बार भी बहुत देर तक रहे लेकिन पहले से कम देर तक (चौथी बार) फिर रुकूअ किया और बहुत देर तक रुकूअ में रहे लेकिन पहले से कम। रुकूअ से सर उठाया तो सज्दे में चले गए आखिर आप (ﷺ) ने इस तरह नमाज़ पूरी कर ली, उसके बाद अल्लाह तआला ने जो चाहा आपने फ़र्माया इसी ख़ुत्बा में आपने लोगों को हिदायत फ़र्माई कि अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह माँगें। (राजेअ : 1044)

الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُوْنَ
الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ فَسَجَدَ، ثُمَّ قَامَ
فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُوْنَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ،
ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُوْنَ الرُّكُوعِ
الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ
ذُوْنَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا
وَهُوَ ذُوْنَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ فَسَجَدَ
ثُمَّ قَامَ وَهُوَ ذُوْنَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ
رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُوْنَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ،
ثُمَّ رَفَعَ فَسَجَدَ وَانْصَرَفَ فَقَالَ : مَا شَاءَ
اللَّهُ أَنْ يَقُولَ، ثُمَّ أَمَرَهُمْ أَنْ يَتَوَدَّعُوا مِنْ
عَذَابِ الْقَبْرِ. (راجع : ١٠٤٤)

तशरीह : कुछ रिवायतों में है कि जब यहूदी औरत ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से क़ब्र के अज़ाब के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा चलो क़ब्र का अज़ाब यहूदियों को होगा। मुसलमानों का इससे क्या रिश्ता? लेकिन उस यहूदिया के ज़िक्र पर उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा और आपने उसका हक़ होना बताया। इसी रिवायत में है कि आँहुज़ूर (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) को अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगने की हिदायत फ़र्माई और ये नमाज़े कुसूफ़ के ख़ुत्बात का वाकिआ नौ हिज़री में हुआ।

हदीष के आख़िरी जुम्ले से बाब का तर्जुमा निकलता है, उस यहूदन को शायद अपनी किताबों से क़ब्र का अज़ाब मा'लूम हो गया होगा। इब्ने हिब्बान में से कि आयते करीमा में लफ़्ज़ मईशतन ज़न्का (ताहा : 124) इससे अज़ाबे क़ब्र मुराद है और हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा कि हमको अज़ाबे क़ब्र की तहक़ीक़ उस समय हुई जब आयते करीमा हुत्ता जुतुमुल मकाबिर (अत्तकापुर : 2) नाज़िल हुई। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। और क़तादा और रबीअ ने आयत सनुअजिबुहुम मरतैन (तौबा : 101) की तफ़्सीर में कहा कि एक अज़ाब दुनिया का और दूसरा अज़ाब क़ब्र का मुराद है। अब इस हदीष में जो दूसरी रकअत में दूनल क्रियामिल अव्वल है, उसके मतलब में इख़्तिलाफ़ है कि दूसरी रकअत का क़यामे अव्वल मुराद है या अगले कुल क़याम मुराद है। कुछ ने कहा चार क़याम और चार रकअत हैं और हर एक क़याम और रुकूअ अपने मा-सबक़ से कम होता तो षानी अव्वल से कम और षालिष षानी से कम और राबेअ षालिष से कम। (वल्लाहु अअलम)

ये जो कुसूफ़ के वक़्त अज़ाबे क़ब्र से डराया, उसकी मुनासबत ये है कि जैसे कुसूफ़ के वक़्त दुनिया में अँधेरा हो जाता है वैसे ही गुनाहगार की क़ब्र में जिस पर अज़ाब होगा, अँधेरा छा जाएगा। अल्लाह तआला पनाह में रखे। क़ब्र का अज़ाब हक़ है, हदीष और कुआन से षाबित है जो लोग अज़ाबे क़ब्र से इंकार करते हैं वो कुआन और हदीष का इंकार करते हैं। लिहाज़ा उनको अपने ईमान के बारे में फ़िक्र करनी चाहिये।

बाब 8 : ग्रहण की नमाज़ में
लम्बा सज्दा करना

٨- بَابُ طَوْلِ السُّجُودِ فِي
الْكُوفِ

(1051) हमसे अबू नुऐम फज़ल बिन दुकैन कूफी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शैबान बिन अब्दुर्रहमान ने यह ह्या इब्ने अबी कप्पीर से बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में सूरज को ग्रहण लगा तो ऐलान हुआ कि नमाज़ होने वाली है (उस नमाज़ में) नबी करीम (ﷺ) ने एक रकअत में दो रुकूअ किये और फिर दूसरी रकअत में भी दो रुकूअ किये, उसके बाद आप (ﷺ) बैठे रहे (क़अदे में) यहाँ तक कि सूरज साफ़ हो गया। अब्दुल्लाह ने कहा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने उससे ज़्यादा लम्बा सज्दा और कभी नहीं किया। (राजेअ: 1045)

١٠٥١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ غُمَرٍ أَنَّهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ كَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ نُودِيَ: إِنَّ الصَّلَاةَ جَائِعَةٌ. فَرَكِعَ النَّبِيُّ ﷺ رُكْعَتَيْنِ فِي سَجْدَةٍ، ثُمَّ قَامَ فَرَكِعَ رُكْعَتَيْنِ فِي سَجْدَةٍ، ثُمَّ جَلَسَ، حَتَّى جَلَى عَنْ الشَّمْسِ. قَالَ: وَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: مَا سَجَدْتُ سُجُودًا قَطُّ كَانَ أطولَ مِنْهَا)). [راجع: ١٠٤٥]

सज्दे में बन्दा अल्लाह पाक के बहुत ही ज़्यादा करीब हो जाता है इसलिये उसमें जिस क़दर खुशूअ व ख़ुजूअ के साथ अल्लाह को याद कर लिया जाए और जो कुछ भी उससे मांगा जाए कम है। सज्दे में इस क़ैफ़ियत का हासिल होना खुशबख़्ती की दलील है।

बाब 9 : सूरज ग्रहण की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ज़मज़म के चबूतरे में लोगों को ये नमाज़ पढ़ाई थी और अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने उसके लिये लोगों को जमा किया और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने नमाज़ पढ़ाई।

ये अली बिन अब्दुल्लाह ताबेई हैं। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के बेटे हैं और खुल्फ़ा-ए-अब्बासिया उन्हीं की औलाद हैं उनको सज्दा कहते थे क्योंकि ये हर रोज़ हज़रत सज्दे किया करते थे जिस रात हज़रत अली मुर्तज़ा शहीद हुए उसी रात को ये पैदा हुए इसलिये उनका नाम बतौर यादगार अली ही रखा गया। इस रिवायत को इब्ने शैबा ने मौसूलन ज़िक्र किया। (क़स्तलानी रह.)

(1052) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन यसार ने बयान किया, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में सूरज को ग्रहण लगा तो आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी थी आप (ﷺ) ने इतना लम्बा क़याम किया कि इतनी देर में सूरह बक्र: पढ़ी जा सकती थी। फिर आप (ﷺ) ने रुकूअ लम्बा किया और उसके बाद खड़े हुए तो अब की बार भी क़याम बहुत लम्बा था लेकिन पहले से थोड़ा कम फिर एक दूसरा लम्बा रुकूअ

٩- بَابُ صَلَاةِ الْكُسُوفِ جَمَاعَةً
وَصَلَّى ابْنُ عَبَّاسٍ بِهِمْ فِي صُفَّةٍ زَمَرَةٍ.
وَجَمَعَ عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ
وَصَلَّى ابْنُ غُمَرٍ.

١٠٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ هِشَامِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((انْخَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قِيَامًا طَوِيلًا نَحْوًا مِنْ قِرَاءَةِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا، ثُمَّ رَفَعَ، لَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُو الْقِيَامِ الْأَوَّلِ،

किया जो पहले रुकूअ से कुछ कम था फिर आप (ﷺ) सज्दे में गए, सज्दे से उठकर फिर लम्बा क़याम किया लेकिन पहले क़याम के मुकाबले में कम था। रुकूअ से सर उठाने के बाद फिर आप (ﷺ) बहुत देर तक खड़े रहे और ये क़याम भी पहले से कम था। फिर (चौथा) रुकूअ किया ये भी बहुत लम्बा था लेकिन पहले से कुछ कम। फिर आप (ﷺ) ने सज्दा किया और नमाज़ से फ़ारिग हुए तो सूरज पूरी तरह साफ़ हो चुका था। उसके बाद आप (ﷺ) ने ख़ुत्बे में फ़र्माया कि सूरज और चाँद दोनों अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं और किसी की मौत व हयात की वजह से उनमें ग्रहण नहीं लगता इसलिये जब तुमको मा'लूम हो कि ग्रहण लग गया है तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करो। सहाबा (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने देखा कि (नमाज़ में) अपनी जगह से आप कुछ आगे बढ़े और फिर उसके बाद पीछे हट गए। आपने फ़र्माया कि मैंने जन्नत देखी और उसका एक खोशा तोड़ना चाहा था अगर मैं उसे तोड़ सकता तो तुम उसे रहती दुनिया तक खाते और मुझे जहन्नम दिखाई गई मैंने उससे ज़्यादा भयानक और ख़ौफ़नाक मंज़र कभी नहीं देखा। मैंने देखा उसमें औरतें ज़्यादा हैं। किसी ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! उसकी क्या वजह है? आपने फ़र्माया कि अपने कुफ़्र (इंकार) की वजह से। पूछा गया, क्या अल्लाह तआला का कुफ़्र (इंकार) करती हैं? आपने फ़र्माया शौहर का और एहसान का कुफ़्र करती हैं। ज़िंदगी भर तुम किसी औरत के साथ हुसने सुलूक करो लेकिन कभी अगर कोई मर्ज़ी के खिलाफ़ बात हो गई तो फ़ौरन यही कहेगी कि मैंने तुमसे कभी कोई भलाई नहीं देखी।

ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُو الرُّكُوعِ
الْأَوَّلِ، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ قَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ
ذُو الْقِيَامِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا
وَهُوَ ذُو الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ لِقَامِ
قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُو الْقِيَامِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ
رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ ذُو الرُّكُوعِ
الْأَوَّلِ، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ انْصَرَفَ وَقَدْ تَجَلَّتِ
الشَّمْسُ، فَقَالَ ﷺ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَا يَغْشِيَانِ لِمَوْتٍ
أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، لَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَادْكُرُوا
اللَّهَ)). قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ، رَأَيْنَاكَ
تَنَاولْتَ شَيْئًا فِي مَقَامِكَ، ثُمَّ رَأَيْنَاكَ
كَفَكَمْتَ. قَالَ ﷺ: ((إِنِّي رَأَيْتُ الْجَنَّةَ،
فَتَنَاولْتُ عُقْرًا وَلَوْ أَصْبَتْهُ لَأَكَلْتُمُ مِنْهُ مَا
بَقِيَ الدُّنْيَا. وَرَأَيْتُ النَّارَ فَلَمْ أَرِ مَنْظَرًا
كَأَنِّي قَطُ أَفْطَحَ. وَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا
النِّسَاءَ)). قَالُوا: يَوْمَ يَلْزَمُونَ اللَّهَ؟ قَالَ:
((يَكْفُرُونَ)). قِيلَ: يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ؟ قَالَ:
((يَكْفُرُونَ الْعَشِيرَ، وَيَكْفُرُونَ الْإِحْسَانَ، لَوْ
أَحْسَنْتُ إِلَى إِحْدَاهُنَّ الدَّهْرَ كُلَّهُ ثُمَّ رَأَتْ
مِنْكَ شَيْئًا قَالَتْ: مَا وَابَتْ مِنْكَ غَيْرًا
قَطُ)).

तशरीह: ये हदीस इससे पहले भी गुजर चुकी है, दोज़ख और जन्नत की तस्वीरें आपको दिखला दीं, इस हदीस में औरतों का भी ज़िक्र है जिसमें उनके कुफ़्र से नाशुकी मुराद है। कुछ ने कहा कि आपने असल जन्नत और दोज़ख को देखा कि पर्दा बीच से उठ गया था ये मुराद है कि जहन्नम और जन्नत का एक एक टुकड़ा बतौर नमूना आपको दिखलाया गया। बहरहाल ये आलमे बरज़ख की चीज़ें हैं जिस तरह हदीस में आ गया हमारा ईमान है, तपस्सील में जाने की ज़रूरत नहीं। जन्नत के खोशे के लिये आपने जो फ़र्माया वो इसलिये कि जन्नत और जन्नत की नेअमते कभी फ़ना होने वाली नहीं है। इसलिये वो खोशा अगर आ जाता तो वो यहाँ दुनिया के क़ायम रहने तक रहता मगर ये आलमे दुनिया उसका महल नहीं इसलिये उसका आपको मुआयना

कराया गया। इस रिवायत में भी आहज़रत (ﷺ) का हर रकअत में दो रकूअ करने का ज़िक्र है जिसके पेशेनज़र बिरादराने अहनाफ़ ने भी बहरहाल अपने मसलक के खिलाफ़ उस हकीकत को तस्लीम किया है जो काबिले तहसीन है। चुनाँचे साहिबे तफ़हीमुल बुखारी के अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा हों; आप फ़र्माते हैं कि इस बाब की तमाम अहदादीष में काबिले ग़ौर बात ये है कि रावियों ने इस पर ख़ास तौर पर जोर दिया है कि आप (ﷺ) ने हर रकअत में दो रकूअ किये थे। चुनाँचे क़याम फिर रकूअ फिर क़याम और फिर रकूअ की कैफ़ियत पूरी तफ़सील के साथ बयान करते हैं लेकिन सज्दे का ज़िक्र जब आया तो सिर्फ़ उसी पर इत्तिफ़ा किया कि आप (ﷺ) ने सज्दा किया था उसकी कोई तफ़सील नहीं कि सज्दे कितने थे क्योंकि रावियों के पेशेनज़र उस नमाज़ के इम्तियाज़ को बयान करना है उससे भी यही समझ में आता है कि रकूअ हर रकअत में आपने दो किये थे और जिनमें एक रकूअ का ज़िक्र है उनमें इख़ित्तसार से काम लिया गया है।

बाब 10 : सूरज ग्रहण में औरतों का मर्दों के साथ नमाज़ पढ़ना

(1053) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इब्बा ने, उन्हें उनकी बीवी फ़ातिमा बिनते मुज़िर ने, उन्हें अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि जब सूरज को ग्रहण लगा तो मैं नबी करीम (ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर आई। अचानक लोग खड़े हुए और नमाज़ पढ़ने लगे और आइशा (रज़ि.) भी नमाज़ पढ़ रही थी मैंने पूछा कि लोगों को बात क्या पेश आई? इस पर आपने आसमान की तरफ़ इशारा करके सुब्हानल्लाह कहा। फिर मैंने पूछा क्या कोई निशानी है? उसका आपने इशारे से हाँ में जवाब दिया। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं भी खड़ी हो गई लेकिन मुझे चक्कर आ गया इसलिये मैं अपने सर पर पानी डालने लगी। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग हुए तो अल्लाह तआला की हम्दो-शना के बाद फ़र्माया कि वो चीज़ें जो कि मैंने पहले कभी नहीं देखी थी अब उन्हें मैंने अपनी इसी जगह से देख लिया। जन्नत और जहन्नम तक मैंने देखी और मुझे वहाँ के ज़रिये बताया गया है कि तुम क़ब्र में दज्जाल के फ़ितने की तरह या (ये कहा कि) दज्जाल के फ़ितने के करीब एक फ़िल्ता में मुब्तला होओगे। मुझे याद नहीं कि अस्मा (रज़ि.) ने क्या कहा था आपने फ़र्माया कि तुम्हें लाया जाएगा और पूछा जाएगा कि उस शख्स (यानी नबी ﷺ) के बारे में तुम क्या जानते हो? मोमिन

۱۰- بَابُ صَلَاةِ النِّسَاءِ مَعَ الرِّجَالِ فِي الْكُسُوفِ

۱۰۵۳- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ هُرَؤَةَ عَنْ أُمِّهِ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُثَنَّبِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهَا قَالَتْ : ((كُنْتُ عَالِمَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا رَوْجَانِيَّةٍ)) - حِينَ غَسَقَتِ الشَّمْسُ - فَإِذَا النَّاسُ قِيَامٌ يُصَلُّونَ، وَإِذَا هِيَ قَائِمَةٌ تُصَلِّي. فَقُلْتُ: مَا لِلنَّاسِ؟ فَأَشَارَتْ بِيَدِهَا إِلَى السَّمَاءِ وَقَالَتْ: سُبْحَانَ اللَّهِ. فَقُلْتُ: آيَةٌ؟ فَأَشَارَتْ أَيْ نَعَمْ. قَالَتْ: فَقُلْتُ: حَتَّى تَجْلِيَ الْغُشَى، فَجَعَلْتُ أَصْبُ فَوْقَ رَأْسِي الْمَاءَ. فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حَمِدَ اللَّهُ وَآتَى عَلَيْهِ نَمًا قَالَ: ((مَا مِنْ شَيْءٍ كُنْتُ لَمْ أَرَهُ إِلَّا وَ قَدْ رَأَيْتُهُ فِي مَقَامِي هَذَا، حَتَّى الْجَنَّةِ وَالنَّارِ. وَلَقَدْ أَوْحَى إِلَيَّ أَنْكُمْ تَقْتَوْنَ فِي الْقُبُورِ بِمِثْلِ - أَوْ قَرِيبًا مِنْ - قِسْمَةِ الدُّجَالِ (لَا أَفْرِي أَبَهُمَا قَالَتْ أَسْمَاءُ)، يُؤْتَى أَخَذَكُمْ فَيَقَالُ

या ये कहा कि यक्रीन रखनेवाला (मुझे याद नहीं कि इन दोनों बातों में से हज़रत अस्मा रज़ि. ने कौनसी बात कही थी) तो कहेगा ये मुहम्मद (ﷺ) हैं, आपने हमारे सामने सही रास्ता और उसके दलाइल पेश किये और हम आप पर ईमान लाए थे और आपकी बात कुबूल की और आपकी इत्तिबा की थी। इस पर उससे कहा जाएगा कि तू नेक इन्सान है। पस आराम से सो जाओ हमें तो पहले ही पता था कि तू ईमान व यक्रीन वाला है। मुनाफ़िक़ या शक करने वाला (मुझे मा'लूम नहीं कि हज़रत अस्मा ने क्या कहा था) वो ये कहेगा कि मुझे कुछ मालूम नहीं मैंने लोगों से एक बात सुनी थी वही मैंने भी कही (आगे मुझको कुछ हक़ीक़त मा'लूम नहीं) (राजेअ: 86)

तशरीह: इस हदीष से बहुत से उमूर पर रोशनी पड़ती है जिनमें से ज़लाते कुसूफ़ में औरतों की शिर्कत का मसला भी है और उसमें अज़ाबे क़ज़्र और इन्तिहाने क़ज़्र की तफ़्सीलात भी शामिल हैं ये भी कि ईमान वाले क़ज़्र में औहज़रत (ﷺ) की रिसालत की तस्दीक़ और आपकी इत्तिबा का इज़हार करेंगे और बेईमान लोग वहाँ चकर में पड़कर सहीह जवाब न दे सकेंगे और दोज़ख़ के मुस्तहक़ होंगे। अल्लाह हर मुसलमान को क़ज़्र में प्राबितक़दमी अता फ़र्माए। (आमीन)

बाब 11 : जिसने सूरज ग्रहण में गुलाम आज़ाद करना पसंद किया (उसने अच्छा किया)

(1054) हमसे रबीआ बिन यह्या ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ाइदा ने हिशाम से बयान किया, उनसे फ़ातिमा ने, उनसे अस्मा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरज ग्रहण में गुलाम आज़ाद करने का हुक्म फ़र्माया। (राजेअ: 86)

बाब 12 : कुसूफ़ की नमाज़ मस्जिद में पढ़नी चाहिये

(1055) हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने यह्या बिन सईद अंज़ारी से बयान किया, उनसे अमर बिन अब्दुरहमान ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि एक यहूदी औरत उनके पास कुछ मांगने आई। उसने कहा कि आपको अल्लाह तआला क़ज़्र के अज़ाब से बचाए, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि क्या क़ज़्र

له : مَا جِئْتُكَ بِهَذَا الرَّجُلِ؟ قَالَا الْمُؤْمِنُ - أَوْ قَالَ الْمُؤْمِنُ - (لَا أَذْرِي أَمِّي ذَلِكَ قَالَتْ أَسْمَاءُ) قَالُوا: مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَاءَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى فَاجْتَبَيْنَا وَأَمَّا وَاتَّبَعْنَا، فَقَالَ لَهُ: تَمَّ صَالِحًا، فَقَدْ عَلِمْنَا إِنْ كُنْتَ لَمُوقِنًا. وَأَمَّا الْمُنَافِقُ - أَوْ الْمُرْتَابُ - (لَا أَذْرِي أَتَيْتُمَا قَالَتْ أَسْمَاءُ) قَالُوا: لَا أَذْرِي، سَمِعْتُ النَّسْرَ يَقُولُونَ شَيْئًا فَقُلْنَا)). (راجع: ٨٦)

١١- بَابُ مَنْ أَحَبَّ الْعَقَاةَ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ

١٠٥٤- حَدَّثَنَا زَيْعُبُ بْنُ يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ قَالَتْ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْعَقَاةِ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ)). (راجع: ٨٦)

١٢- بَابُ صَلَاةِ الْكُسُوفِ فِي الْمَسْجِدِ

١٠٥٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ غَابِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّ يَهُودِيَّةً جَاءَتْ تَسْأَلُهَا فَقَالَتْ: أَغَاذِكِ اللَّهُ مِنْ غَذَابِ الْقَبْرِ. فَسَأَلَتْ

में भी अज़ाब होगा? आँहुज़ूर (ﷺ) ने (ये सुनकर) फ़र्माया कि मैं अल्लाह की उससे पनाह माँगता हूँ। (राजेअ: 1049)

(1056) फिर आँहुज़ूर (ﷺ) एक दिन सुबह के वक़्त सवार हुए (कहीं जाने के लिये) इधर सूरज ग्रहण लग गया इसलिये आप (ﷺ) वापस आ गए, अभी चाश्त का वक़्त था। आँहुज़ूर (ﷺ) अपनी बीवियों के हुज़ूरों से गुज़रे और (मस्जिद में) खड़े होकर नमाज़ शुरू कर दी सहाबा भी आप (ﷺ) की इक़्तिदा में सफ़ बाँधकर खड़े हो गए आपने क़याम बहुत लम्बा किया रुकूअ भी बहुत लम्बा किया। फिर रुकूअ से सर उठाने के बाद दोबारा लम्बा क़याम किया लेकिन पहले से कम उसके बाद रुकूअ बहुत लम्बा लेकिन पहले रुकूअ से कम। फिर रुकूअ से सर उठाकर आप सज्दे में गए और लम्बा सज्दा किया। फिर लम्बा क़याम किया और ये क़याम भी पहले से कम था। फिर लम्बा रुकूअ किया अगरचे ये रुकूअ भी पहले के मुक़ाबले में कम था। फिर आप (ﷺ) रुकूअ से खड़े हो गए और लम्बा क़याम किया लेकिन ये क़याम फिर पहले से कम था अब (घोँथा) रुकूअ किया अगरचे ये रुकूअ पहले रुकूअ के मुक़ाबले में कम था। फिर सज्दा किया बहुत लम्बा लेकिन पहले सज्दे के मुक़ाबले में कम। नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद जो कुछ अल्लाह तआला ने चाहा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इश्राद फ़र्माया। फिर लोगों को समझाया कि क़न्न के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगें।

عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَعْلَبُ النَّاسُ فِي قُبُورِهِمْ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَابِدًا بِاللَّهِ مِنْ ذَلِكَ)). [راجع: ١٠٤٩]

١٠٥٦- ((كُنَّ رَكِبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ذَاتَ غَدَاةٍ مَرَكَبًا فَكَسَفَتِ الشَّمْسُ، فَرَجَعَ ضَحَى لَمَزَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ ظَهْرَيْنِي الْحَجَرِ، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى، أَقَامَ النَّاسُ وَرَاءَهُ، فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا، ثُمَّ رَفَعَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدًا طَوِيلًا، ثُمَّ قَامَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ قَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ سَجَدَ وَهُوَ دُونَ السُّجُودِ الْأَوَّلِ. ثُمَّ انْصَرَفَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُولَ، ثُمَّ اقْرَأْهُمْ أَنْ يَتَوَدَّوْا مِنْ غَدَابِ الْقَبْرِ)).

तशरीह: इस हदीष और दीगर अहदादीष से प्राबित होता है कि क़न्न का अज़ाब व प़वाब बरहक़ है। इस मौक़े पर आँहुज़ूरत (ﷺ) ने अज़ाबे क़न्न से पनाह माँगने का हुक्म फ़र्माया। इस बारे में शारेहीने बुखारी लिखते हैं, लिअज़्मि हौलिही व अयज़न फइन्न जुल्मतल्कुसूफ़ि इजा गमतिशशम्सु तुनासिबु जुल्मतुल्क़ब्बि वशशयउ यज़्कुरु फयखाफु मिन हाज़ा कमा यखाफु मिन हाज़ा मिम्मा यस्तम्बितु मिन्हु अन्नहू यदुल्लु अला अन्न अज़ाबल्क़ब्बि बिही व ला युन्किरूहू इल्ला मुब्तदिउन (हाशिया बुखारी)

या'नी उसकी हौलनाक कैफ़ियत की वज़ह से आपने ऐसा फ़र्माया और इसलिये भी कि सूरज ग्रहण की कैफ़ियत जब उसकी रोशनी ग़ायब हो जाए, क़न्न के अँधेरे से मुनासबत (समरूपता) रखती है। इसी तरह एक चीज़ का ज़िक़्र दूसरी चीज़ के ज़िक़्र की मुनासबत से किया जा सकता है और उससे डराया जाता है और इससे प्राबित हुआ कि क़न्न का अज़ाब हक़ है और जुम्ला अहले सुन्नत का ये मुतफ़क़ा अक़ीदा है जो अज़ाबे क़न्न का इंकार करे वो बिदअती है। (इन्तिहा)

बाब 13 : सूरज ग्रहण किसी के मरने या पैदा होने से नहीं लगता

उसको अबूबक्र, मुगीरह, अबू मूसा अशअरी, इब्ने अब्बास और इब्ने इमर (रज़ि.) ने रिवायत किया है।

(1057) हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या क़त्तान ने इस्माईल बिन अबी ख़ालिद से बयान किया, कहा कि मुझसे क़ैस ने बयान किया, उनसे अबू मसऊद इब्न बाबिन आमिर अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सूरज और चाँद में ग्रहण किसी की मौत की वजह से नहीं लगता अलबत्ता ये दोनों अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं, इसलिये जब तुम ग्रहण देखो तो नमाज़ पढ़ो।

(राजेअ : 1041)

(1058) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी और हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें इर्वा बिन जुबैर ने, उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़मान-ए-मुबारक में सूरज को ग्रहण लगा तो आप (ﷺ) खड़े हुए और लोगों के साथ नमाज़ में मशगूल हो गए। आप (ﷺ) ने लम्बी क़िरात की, फिर रुकूअ किया और ये भी बहुत लम्बा था। फिर सर उठाया और इस बार भी देर तक क़िरात की मगर पहली क़िरात से कम। उसके बाद आप (ﷺ) ने (दूसरी बार) रुकूअ किया बहुत लम्बा लेकिन पहले के मुकाबले में कम फिर रुकूअ से सर उठाकर आप सज्दे में चले गए और दो सज्दे किये फिर खड़े हुए और दूसरी रकअत में भी उसी तरह किया जैसे पहली रकअत में कर चुके थे। उसके बाद फ़र्माया कि सूरज और चाँद में ग्रहण किसी की मौत व हयात से नहीं लगता। अलबत्ता ये दोनों अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला अपने बन्दों को दिखाता है, इसलिये जब तुम उन्हें देखो तो फ़ौरन नमाज़ के लिये

۱۳- بَابُ لَا تَكْسِفُ الشَّمْسُ

لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ

رَوَاهُ أَبُو بَكْرَةَ وَالْمَغِيرَةُ وَأَبُو مُوسَى وَابْنُ عَبَّاسٍ وَابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ.

۱۰۵۷- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، وَلَكِنَّهُمَا آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَصَلُّوا».

[راجع: ۱۰۴۱]

۱۰۵۸- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَهِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ غَزْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: «كَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَصَلَّى بِالنَّاسِ فَأَطَالَ الْقِرَاءَةَ، ثُمَّ رَكَعَ فَأَطَالَ الرُّكُوعَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَأَطَالَ الْقِرَاءَةَ، وَهِيَ دُونَ قِرَاءَتِهِ فِي الْأَوَّلَى، ثُمَّ رَكَعَ فَأَطَالَ الرُّكُوعَ دُونَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ قَامَ فَصَنَعَ فِي الرُّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ قَامَ فَقَالَ: «إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، وَلَكِنَّهُمَا آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ يُرِيهِمَا عِبَادَهُ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَالْمَوْعُ

दौड़ो। (राजेअ: 1044)

हदीष और बाब में मुताबकत ज़ाहिर है।

बाब 14 : सूरज ग्रहण में अल्लाह को याद करना

उसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने रिवायत किया (1059) हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने, उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि एक दफ़ा सूरज ग्रहण हुआ तो नबी अकरम (ﷺ) बहुत घबराकर उठे इस डर से कि कहीं क़यामत न क़ायम हो जाए। आप (ﷺ) ने मस्जिद में आकर बहुत ही लम्बा क़याम रुकूअ और लम्बे सज्दों के साथ नमाज़ पढ़ी। मैंने कभी आप (ﷺ) को इस तरह करते नहीं देखा था। आप (ﷺ) ने नमाज़ के बाद फ़र्माया कि ये निशानियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला भेजता है ये किसी की मौत व हयात की वजह से नहीं आती बल्कि अल्लाह तआला उनके ज़रिये अपने बन्दों को डराता है इसलिये जब तुम इस तरह की कोई चीज़ देखो तो फ़ौरन अल्लाह तआला का ज़िक्र और उससे इस्तिफ़ार की तरफ़ लपको।

[إلى الصلاة]. [راجع: 1044]

حدیث اور باب میں مطابقت ظاہر ہے۔

۱۴ - بَابُ الذِّكْرِ فِي الْكُسُوفِ،

رَوَاهُ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

۱۰۵۹ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ بْنُ بَرْدٍ عَنْ أَبِي بَرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: خَسَفَتِ الشَّمْسُ، فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ قِرْعًا يَغْتَشِي أَنْ تَكُونَ السَّاعَةُ، فَاتَى الْمَسْجِدَ فَصَلَّى بِأَطْوَلِ قِيَامٍ وَرُكُوعٍ وَسُجُودٍ مَا رَأَيْتُهُ قَطُّ يَفْعَلُهُ وَقَالَ: ((هَذِهِ الْآيَاتُ الَّتِي يُرْسِلُ اللَّهُ لَا تَكُونُ لِمَوْتٍ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، وَلَكِنْ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ، فَبِذَا وَانْتَمَ شَيْئًا مِنْ ذَلِكَ فَافْرَعُوا إِلَيَّ ذِكْرِهِ وَذُعَابِهِ وَاسْتَغْفَرُوا)).

तशरीह : क़यामत की कुछ अलामात (निशानियाँ) हैं जो पहले ज़ाहिर होंगी और फिर उसके बाद क़यामत बरपा होगी। इस हदीष में है कि आँहुज़ूर (ﷺ) अपनी हयात में ही क़यामत हो जाने से डरे हल्लाँ कि उस वक़्त क़यामत की कोई अलामत नहीं पाई जा सकती थी। इसलिये इस हदीष के टुकड़े के बारे में ये कहा गया है कि आप उस तरह खड़े हुए जैसे अभी क़यामत आ जाएगी गोया उससे आप (ﷺ) की ख़िशियत इलाही व ख़ौफ़ की हालत को बताना मक़सूद है। अल्लाह तआला की निशानियों को देखकर एक खुशूअ व खुजूअ करने वाले की ये कैफ़ियत हो जाती है। हुज़ूर अकरम (ﷺ) अगर कभी घटा देखते या आँधी चल पड़ती तो आप (ﷺ) की उस वक़्त भी यही कैफ़ियत हो जाती थी। ये सहीह है कि क़यामत की अभी अलामतें ज़हूर-पज़ीर (नमूदार) नहीं हुई थीं लेकिन जो अल्लाह तआला की शाने जलाली व क़दहारी में गुम होता है वो ऐसे मौकों पर ग़ौरो-फ़िक्र से काम नहीं ले सकता। हज़रत उमर (रज़ि.) को खुद आँहुज़ूर (ﷺ) के ज़रिये जन्नत की बशारत दी गई थी लेकिन आप फ़र्माया करते थे अगर हज़रत में मेरा मामला बराबर-सराबर ख़त्म हो जाए तो मैं उसी पर राज़ी हूँ। उसकी वजह भी यही थी अलगज़ ग़ौरो-तदब्बुर व इंसफ़ की नज़र से अगर देखा जाए तो आपको मा'लूम हो जाएगा कि चौंद और सूरज ग्रहण की हकीकत आप (ﷺ) ने ऐसे जामेअ लफ़्ज़ों में बयान कर दी कि साइन्स की मौजूदा मा'लूमात और आइन्दा की सारी मा'लूमात इसी एक जुम्ले के अंदर मुदगम होकर रह गई हैं। बिला शक व शुब्हा सारे इख़्तिराआते जदीद और इजादाते मौजूदा (आधुनिक आविष्कार), मा'लूमाते साइन्सी सब अल्लाह पाक की कुदरत की निशानियाँ हैं। सबका अव्वलीन मौजिद (आविष्कारक) वही है जिसने इंसान को इन इजादात के लिये एक बेशक़ीमत दिमाग़ दिया फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक्नीन वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

कालल्किर्मांनी हाज़ा तम्बीलुम्पिनर्वावी कअन्नहु फ़ज़अ कल्खाशी अय्यकूनल्क़यामतु व इल्ला फ़कानन्नबिद्यु (ﷺ) आलमिन बिअन्नस्माअत ला तकूमु व हुव बैन अज़हुरिहिम व क़द वअदल्लाहु अअलअ

दीनिही अलल्अदयानि कुल्लिहा व लम यबलुगिल्किताबु अजलहू या'नी किरमानी ने कहा कि ये तम्सील रावी की तरफ से है गोया आप (ﷺ) ऐसे घबराए जैसे कोई क़यामत के आने से डर रहा हो। वरना आँहज़रत (ﷺ) तो जानते थे कि आपकी मौजूदगी में क़यामत कायम नहीं होगी। अल्लाह ने आपसे वादा किया है कि क़यामत से पहले आपका दीन जुम्ला अदयान (अन्य सारे धर्मों) पर ग़ालिब आकर रहेगा और आपको ये भी मा'लूम था कि अभी क़यामत के बारे में अल्लाह का नविशता अपने वक़््त को नहीं पहुँचा है। वल्लाहु आलमु बिस्सवाबि व मा अलैना इल्लल्बलाग़।

बाब 15 : सूरज ग्रहण में दुआ करना

उसको अबू मूसा और आइशा (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

(1060) हमसे अबुल बलीद तियालिसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ाइद बिन कुदामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ियाद बिन इलाक़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) से सुना कि उन्होंने कहा कि जिस दिन इब्राहीम (रज़ि.) की मौत हुई सूरज ग्रहण भी उसी दिन लगा। इस पर कुछ लोगों ने कहा कि ग्रहण इब्राहीम (रज़ि.) (आँहज़ूर ﷺ के स़ाहबज़ादे) की वफ़ात की वजह से लगा है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि सूरज और चाँद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं। उनमें ग्रहण किसी की मौत व हयात की वजह से नहीं लगता। जब उसे देखो तो अल्लाह पाक से दुआ करो और नमाज़ पढ़ो यहाँ तक कि सूरज स़ाफ़ हो जाए। (राजेज़ : 1043)

बाब 16 : ग्रहण के ख़ुत्बे में इमाम

का अम्मा बअद कहना

(1061) और अबू उसामा ने बयान किया कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे फ़ातिमा बिनते मुंज़िर ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अस्मा बिनते अबीबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब सूरज स़ाफ़ हो गया तो रसूलुल्लाह नमाज़ से फ़ारिग हुए और आपने ख़ुत्बा दिया। पहले अल्लाह तआला की शान के मुताबिक़ उसकी ता'रीफ़ की उसके बाद फ़र्माया, 'अम्मा बअद।' (राजेज़ : 86)

बाब 17 : चाँद ग्रहण की नमाज़ पढ़ना

١٥- بَابُ الدُّعَاءِ فِي الْخُسُوفِ

قَالَ أَبُو مُوسَى وَعَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ :

١٥٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ : حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ جَدَةَ قَالَ : سَمِعْتُ السُّعَيْبَةَ بْنَ شُعْبَةَ يَقُولُ : انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ يَوْمَ مَاتَ إِبْرَاهِيمُ، فَقَالَ النَّاسُ انْكَسَفَتِ لِمَوْتِ إِبْرَاهِيمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ، لَا يَنْكَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمَا فَادْعُوا اللَّهَ وَصَلُّوا حَتَّى يَنْجَلِيَ)).

[راجع: ١٠٤٣]

١٦- بَابُ قَوْلِ الْإِمَامِ فِي خُطْبَةِ

الْكَسُوفِ: أَمَّا بَعْدُ.

١٥٦١- وَقَالَ أَبُو أَسْمَاءَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ قَالَ: أَخْبَرْتَنِي فَاطِمَةُ بِنْتُ الْمُثَنِّبِ عَنْ أَسْمَاءَ قَالَتْ: ((فَانصَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَلَمَّا تَجَلَّتِ الشَّمْسُ، فَخُطِبَ فَحَمِدَ اللَّهُ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا

بَعْدُ)). [راجع: ٨٦]

١٧- بَابُ الصَّلَاةِ فِي كُسُوفِ الْقَمَرِ

(1062) हमसे महमूद बिन गैलान ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन आमिर ने बयान किया और उनसे शुअबाने, उनसे यूनुस ने, उनसे इमाम हसन बसरी ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के अहदे मुबारक में सूरज को ग्रहण लगा तो आप (ﷺ) ने दो रकअत नमाज़ पढ़ी थी। (राजेअ: 1040)

١٠٦٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ قَائِمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ يُونُسَ عَنْ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ)).

[راجع: ١٠٤٠]

तशरीह: यहाँ से ए' तिराज़ हुआ है कि ये हदीस बाब के तर्जुमा से मुताबकत नहीं रखती; इसमें तो चाँद का ज़िक्र तक नहीं है और जवाब ये है कि ये रिवायत मुख्तसर है। उस रिवायत की, जो आगे आती है उसमें साफ़ चाँद का ज़िक्र है और मक़सूद वही दूसरी रिवायत है और उसको इसलिये ज़िक्र कर दिया कि मा' लूम हो जाए कि रिवायत मुख्तसर भी मरवी हुई है। कुछ ने कहा सहीह बुखारी के एक नुस्खे में इस हदीस में यूँ हैं, इन्कसफल्कमरू दूसरे मुस्किन है कि इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस के उस तरीक़ की तरफ़ इशारा किया हो जिसको इब्ने अबी शैबा ने निकाला; उसमें यूँ है, इन्कसफतिशशम्सु वल्कमरू इमाम बुखारी (रह.) की आदत है कि एक हदीस बयान करके उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा करते हैं और बाब का मतलब उससे ये निकालते हैं। (वहीदी)

झीरते इब्ने हिब्बान में है कि पाँच हिजरी में भी चाँद ग्रहण भी हुआ था और औहज़रत (ﷺ) ने उसमें भी नमाज़ बा-जमाअत अदा की थी। मा' लूम हुआ कि चाँद ग्रहण और सूरज ग्रहण दोनों का एक ही हुक्म है मगर हमारे मुहतरम बिरादराने अहनाफ़ चाँद ग्रहण की नमाज़ के लिये नमाज़ बा-जमाअत के काइल नहीं है। उसको अलग पढ़ने का फ़त्वा देते हैं। इस बाब में उनके पास बजुज़ राये क्रियास कोई दलील पुख़्ता नहीं है मगर उनको इस पर इसरार है। लेकिन सुन्नते रसूल के शैदायों के लिये औहज़रत (ﷺ) का तौर-तरीक़ा ही सबसे बेहतर इम्दा चीज़ है। अल्हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक.

(1063) हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिज़ ने बयान किया, कहा कि हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इमाम हसन बसरी ने, उनसे अबूबक्र ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में सूरज को ग्रहण लगा तो आप अपनी चादर घसीटते हुए (बड़ी तेज़ी से) मस्जिद में पहुँचे। सहाबा भी जमा हो गये। फिर आपने उन्हें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई, ग्रहण भी ख़त्म हो गया। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सूरज और चाँद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं और उनमें ग्रहण किसी की मौत पर नहीं लगता इसलिये जब ग्रहण लगे तो उस वक़्त तक नमाज़ और दुआ में मशगूल रहो जब तक कि ये साफ़ न हो जाए। ये आपने इसलिये फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) के एक साहबजादे इब्राहीम (रज़ि.) की वफ़ात (उसी दिन) हुई

١٠٦٣- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنْ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: ((خَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَعَرَجَ يَحْمِلُ رِدَاءَهُ حَتَّى أَتَى إِلَى الْمَسْجِدِ، وَكَانَ النَّاسُ إِلَيْهِ فَصَلَّى بِهِمْ رَكَعَتَيْنِ، فَانْجَلَتِ الشَّمْسُ فَقَالَ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَاتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ، وَإِنْهُمَا لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ، فَإِذَا كَانَ ذَلِكَ فَصَلُّوا وَادْعُوا حَتَّى يَنْكُشَ مَا بَيْنَهُمَا)). وَذَلِكَ أَنَّ ابْنَ النَّبِيِّ ﷺ مَاتَ يَوْمَ ذَلِكَ

थी और कुछ लोग उनके बारे में कहने लगे थे (कि ग्रहण उनकी मौत पर लगा है)। (राजेअ : 1040)

لَهُ يَرَاهُمْ، فَقَالَ النَّاسُ فِي ذَلِكَ)).

[راجع : ١٠٤٠]

इस हदीस में साफ़ चाँद ग्रहण का जिक्र मौजूद है और यही बाब का मक़सद है।

बाब 17 : जब इमाम ग्रहण की नमाज़ में पहली रकअत लम्बी कर दे और कोई औरत अपने सर पर पानी डाले

بَابُ صَبِّ الْمَرْأَةِ عَلَى رَأْسِهَا الْمَاءَ إِذَا طَالَ الْإِمَامُ الْقِيَامَ فِي الرُّكْعَةِ الْأُولَى

इस बाब में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने कोई हदीस बयान नहीं की। कुछ नुस्खों में ये बाब का तर्जुमा नहीं है तो शायद ऐसा हुआ कि ये बाब कायम करके इमाम बुखारी (रह.) इसमें कोई हदीस लिखनेवाले थे मगर उनको मौक़ा नहीं मिला या उनको ख़याल न रहा और ऊपर जो हदीस हज़रत अस्मा (रज़ि.) की कई बार गुज़री इससे इस बाब का मतलब निकल आता है। (वहीदी)

बाब 18 : ग्रहण की नमाज़ में पहली रकअत का लम्बा करना

١٨- بَابُ الرُّكْعَةِ الْأُولَى فِي الْكُسُوفِ الطَّوْلِ

(1064) हमसे मुहम्मद बिन ग़ैलान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अहमद मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह जुबैरी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ज़ौरी ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे अमर ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरज ग्रहण की दो रकअतों में चार रुकूअ किए और पहली रकअत दूसरी रकअत से लम्बी थी। (राजेअ : 1044)

١٠٦٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غَيْلَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ هَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِهِمْ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ أَرْبَعَ رُكْعَاتٍ فِي مَجْدَتَيْنِ، الْأُولَى وَالْأُولَى طَوْلًا)). [راجع : ١٠٤٤]

तशरीह : सूरज और चाँद ग्रहण में नमाज़ बा-जमाअत मसनून है। मगर इन्फ़िया चाँद ग्रहण में नमाज़ बा-जमाअत के क़ाइल नहीं। अल्लाह जाने उनको ये फ़र्क़ करने की ज़रूरत कैसे महसूस हुई कि सूरज ग्रहण में तो नमाज़ बा-जमाअत जाइज़ हो और चाँद ग्रहण में नाजाइज़। इस फ़र्क़ के लिये कोई वाज़ेह दलील होनी चाहिये थी। बहरहाल ख़याल अपना-अपना नज़र अपनी-अपनी।

बाब 19 : ग्रहण की नमाज़ में बुलन्द आवाज़ से क़िरअत करना

١٩- بَابُ الْجَهْرِ بِالْقِرَاءَةِ فِي الْكُسُوفِ

(1065) हमसे मुहम्मद बिन मिहरान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वलीद बिन सलम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुर्रहमान बिन नम्र ने बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब से सुना, उन्होंने इर्वा से और इर्वा ने (अपनी ख़ाला) हज़रत आइशा (रज़ि.) से, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ग्रहण की नमाज़ में क़िरअत बुलन्द आवाज़ से की, क़िरअत से फ़ारिग़ होकर आप

١٠٦٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ نَعْمَانَ سَمِعَ ابْنَ جِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((جَهَرَ النَّبِيُّ ﷺ فِي صَلَاةِ الْكُسُوفِ بِقِرَائَتِهِ، فَإِذَا قَرَأَ مِنْ

(ﷺ) तबबीर कहकर रुकूअ में चले गए जब रुकूअ से सर उठाया तो समिअल्लाहुलिमन हमिदह रब्बना लकल हम्द कहा फिर दोबारा किरअत शुरू की। कहा ग्रहण की दो रकअतों में आपने चार रुकूअ और चार सज्दे किये।

(राजेअ : 1044)

(1066) और इमाम औज़ाई (रह.) ने कहा कि मैंने जुहरी से सुना, उन्होंने उर्वा से और उर्वा ने आइशा (रजि.) से कि नबी करीम (ﷺ) के अहद में सूरज ग्रहण लगा तो आपने एक आदमी से ऐलान करा दिया कि नमाज़ होने वाली है फिर आपने दो रकअतें चार रुकूअ और चार सज्दों के साथ पढ़ीं। वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया कि मुझे अब्दुरहमान बिन नम्र ने खबर दी और उन्होंने इब्ने शिहाब से सुना, उसी हदीष की तरह जुहरी (इब्ने शिहाब) ने बयान किया कि इस पर मैंने (उर्वा से) पूछा कि फिर तुम्हारे भाई अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने जब मदीना में कुसूफ की नमाज़ पढ़ाई तो क्यों न ऐसा किया कि जिस तरह सुबह की नमाज़ पढ़ी जाती है, उसी तरह से नमाज़े कुसूफ भी उन्होंने पढ़ाई। उन्होंने जवाब दिया कि हाँ उन्होंने सुन्नत के खिलाफ किया। अब्दुरहमान बिन नम्र के साथ उस हदीष को सुलैमान बिन क़शीर और सुफयान बिन हुसैन ने भी जुहरी से रिवायत किया, उसमें भी पुकारकर किरअत करने का बयान है। (राजेअ : 1044)

لَوَائِهِ كَبُرَ لَرَكْعَةٍ، وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكْعَةِ قَالَ: «سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ». ثُمَّ يُعَادُ الْقِرَاءَةَ فِي صَلَاةِ الْكُسُوفِ أَرْبَعَ رُكْعَاتٍ فِي رُكْعَتَيْنِ وَأَرْبَعَ سَجَدَاتٍ. [راجع: 1044]

١٠٦٦- وَقَالَ الْأَوْزَاعِيُّ وَغَيْرُهُ سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((أَنَّ الشَّمْسَ عَسَفَتْ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَبَعَثَ مُنَادِيًا: الصَّلَاةُ جَامِعَةٌ، فَقَدِمَ لِمَنْ أَرْبَعَ رُكْعَاتٍ فِي رُكْعَتَيْنِ وَأَرْبَعَ سَجَدَاتٍ)). قَالَ الْوَلِيدُ: وَأَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ ثَوْبَرٍ سَمِعَ ابْنَ شِهَابٍ مِثْلَهُ. قَالَ الزُّهْرِيُّ: فَقُلْتُ مَا صَنَعَ أَحَدُكَ ذَلِكَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ مَا صَلَّى إِلَّا رُكْعَتَيْنِ مِنْ الصُّبْحِ إِذَا صَلَّى بِالْمَدِينَةِ. قَالَ: أَجَلٌ، إِنَّهُ أَخْطَأَ السَّنَةَ. تَابَعَهُ سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ وَسُلَيْمَانُ بْنُ حُسَيْنٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ فِي الْجَهْرِ [راجع: 1044]

तशरीह:

या'नी सुन्नत ये थी कि ग्रहण की नमाज़ में हर रकअत में दो रुकूअ करते, दो क़याम मगर अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने जो सुबह की नमाज़ की तरह इसमें हर रकअत में एक रुकूअ किया और एक ही क़याम; तो ये उनकी ग़लती है। वो चूक गए। तरीक़-ए-सुन्नत के खिलाफ़ किया। अब्दुरहमान बिन नम्र के बारे में लोगों ने कलाम किया है गो जुहरी वगैरह ने उसको सिका कहा है मगर यद्दा बिन मुईन ने उनको ज़ईफ़ कहा है; तो इमाम बुखारी (रह.) ने इस रिवायत का ज़ौफ़ रफ़अ (दूर) करने के लिये ये बयान फ़र्माकर कि अब्दुरहमान की मुताबअत सुलैमान बिन क़शीर और सुफयान बिन हुसैन ने भी की है। मगर मुताबअत से हदीष क़वी हो जाती है। हाफ़िज़ ने कहा कि उनके सिवा अक़ील और इस्हाक़ बिन राशिद ने भी अब्दुरहमान बिन नम्र की मुताबअत की है। सुलैमान बिन क़शीर की रिवायत को इमाम अहमद ने और सुफयान बिन हुसैन की रिवायत को तिर्मिज़ी और तहावी ने अक़ील की रिवायत को भी तहावी ने और इस्हाक़ बिन राशिद की रिवायत को दारे कुत्ली ने वस्ल किया है। (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम)

वक्रद वरदलजहरु फीहा अनअलिथ्यिन मर्फूअन अअरजहुबु खुजैमत वगैरुहु व बिही क़ाल साहिबा अबी हनीफ़त व अहमद व इस्हाक़ वब्न ख़ुजैमत वब्नलमुन्ज़िर व गैरहुमा भिनश्शाफिइयति वब्निल्अरबी. (फ़त्हुल बारी)

या'नी कुसूफ़ में ज़हरी किरअत के बारे में हज़रत अली (रजि.) से भी मर्फूअन और मौकूफ़न इब्ने ख़ुजैमा ने रिवायत

की है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के दोनों शगिर्द इमाम मुहम्मद और इमाम यूसुफ़ भी इसी के काइल हैं और अहमद और इस्हाक़ और इब्ने खुज़ैमा और इब्ने मुज़िर और इब्ने अरबी वग़ैरह भी ज़हर के काइल हैं। (वज़ाहू अज़लम)

हदीषे आइशा (रज़ि.) ज़हरन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ी सलातिल्कुसूफ़ि बिकिरातिही के ज़ेल में हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैखुल हदीष (रह.) फ़र्माते हैं, हाज़ा नस्सुन फ़ी अन्न किरातहू (ﷺ) फ़ी सलाति कुसूफ़िशाम्सि कानत ज़हरन ला सिरन व हुव यदुल्लु अला अन्नस्सुन्नत फ़ी सलातिल्कुसूफ़ि हियलज्जहरु बिल्किराति ललइस्सारी व यदुल्लु लिज़ालिक अयज़न हदीषु अस्मा इन्दलबुख़ारी कालज्जैलइ फ़ी नसबिराया सफ़ा 232, जिल्द 2, अल्हाफ़िज़ फिदिराया, सफ़ा 137 वब्नुल्हुमाम फ़ी फतहिलक्रदीर वलअयनी फिन्निहायति व लिल्बुख़ारी मिन हदीषे अस्मा बन्ति अबीबक्र क़ालत ज़हरन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ी सलातिल्कुसूफ़ि इन्तिहा व यदुल्लु लहू अयज़न लहू मा रखा इब्नु खुज़ैमा वत्तहावी अन अलिथियन मर्फूअन व मौकूफ़न मिनल्जहरि बिल्किराति फ़ी सलातिल्कुसूफ़ि कालत्तहावी बअद रिवायतिल्हदीषि अन अलिथियन मौकूफ़न व लौ लम यज़हरन्नबिय्यु (r) लिअन्नहू अलिम अन्नहुस्सुन्नतु फलम यतरूकिल्जहर वल्लाहु आलमु (मिआत, जिल्द 2, सफ़ा: 375) या'नी ये हदीषे इस अम्पर नस्स है कि कुसूफ़े शम्स की नमाज़ में आँहज़रत (ﷺ) की क़िरअत ज़हरी थी, सिरि न थी। और ये दलील है कि सलाते कुसूफ़ में ज़हरी क़िरअत सुन्नत है न कि सिरि। और इस पर हज़रत अस्मा (रज़ि.) की ये हदीष भी दलील है। ज़ेली ने अपनी किताब नस्बुराया, जिल्द नं. 2, पेज नं. 232 पर और हाफ़िज़ ने दिराया, पेज नं. 137 पर और इब्ने हुमाम ने फ़तहुल क्रदीर में और ऐनी ने निहाया में लिखा है कि इमाम बुख़ारी (रह.) के लिये हदीषे अस्मा बन्ते अबीबक्र भी दलील है। जिसमें उनका बयान है कि आँहज़रत (ﷺ) ने कुसूफ़ की नमाज़ में ज़हरी क़िरअत की थी और इब्ने खुज़ैमा और तहावी में भी हज़रत अली (रज़ि.) की सनद से मर्फूअन और मौकूफ़न दोनों तरह से नमाज़े कुसूफ़ की नमाज़ में क़िरअत दलील है। हज़रत अली (रज़ि.) की इस रिवायत को ज़िक्र करके इमाम तहावी ने फ़र्माया कि जिस वक़्त हज़रत अली (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के साथ कुसूफ़ की नमाज़ पढ़ी थी उस वक़्त अगर आँहज़रत (ﷺ) ज़हरी क़िरअत न फ़र्माते तो हज़रत अली (रज़ि.) भी अपनी नमाज़ में ज़हरी क़िरअत न करते और बिला शक़ वे जानते थे कि ज़हरी सुन्नत है इसलिये उन्होंने उसे तर्क नहीं किया और सुन्नते नबवी के मुताबिक़ ज़हरी क़िरअत के साथ में उसे अदा फ़र्माया।

इस बारे में कुछ इलमा-ए-मुतक़द्दिमीन ने इख़ितालाफ़ भी किये हैं मगर दलाइले क़विय्या की रू से तर्जीह ज़हरी क़िरअत ही को हासिल है। व क़ाल फिस्सैलिल्ज़रारि रिवायतुल्जहरि असहू व अक्बर व राबिल्जहरि मुब्बितुन व हुव मुक़द्दमुन अलभ्राफी व तअव्वल बअज़ल्हनफ़िय्यति हदीषु आइशत बिअन्नहू (ﷺ) ज़हर बिआयतिन औ आयतैनि क़ाल फिलबदाइअ नहमिलु ज़ालिक अला अन्नहू ज़हर बिबअज़िहा इत्तिफ़ाक़न कमा रूविय अन्नन्नबिय्य (ﷺ) कान युस्मिउल्आयत वल्आयतैनि फ़ी सलातिज़्ज़ुहरि अहयानन इन्तिहा व हाज़ा तावीलुन बातिलुन लिअन्न आइशत कानत तुसल्ली फ़ी हुजतिहा करीबमिमिन्नल्किबलति व कज़ा उख़तुहा अस्मा व मन कान कज़ालिक ला यख़फी अलैहि किरातुन्नबीय्य (ﷺ) फ़लौ कान किरातुहू सिरव व कान यज़हरु बिआयतिन औ आयतैनि अहयानन कमा फ़अल कज़ालिक फ़ी सलातिज़्ज़ुहरिलमा अब्बरत अन ज़ालिक बिअन्नहू कान यज़हरु बिल्किराति फ़ी सलातिल्कुसूफ़ि कमा लम यकुल अहदुमिमिन रवा किरातहू फ़ि सलातिज़्ज़ुहरि अन्नहू ज़हर फ़ीहा बिल्किराति. (हवाला मज़क़ूर) या'नी सीले ज़रार में कहा कि ज़हर की रिवायत सहीह और अक़ब़र है और ज़हर की रिवायत करने वाला रावी मुषबत है जो नफ़ी करनेवाले पर इस्लून मुक़द्दम है। कुछ हन्फ़िया ने ये तावील की है कि आप (ﷺ) ने कुछ आयात को ज़हर (बा-आवाज़) से पढ़ लिया था जैसा कि आप (ﷺ) कुछ दफ़ा ज़ुहर की नमाज़ में भी कुछ आयात ज़हर से पढ़ लिया करते थे। पस हदीषे आइशा (रज़ि.) में ज़हरी से यही मुराद है और ये तावील बिल्कुल बातिल है क्योंकि हज़रत आइशा (रज़ि.) और उनकी बहन अस्मा (रज़ि.) क़िब्ला के पास अपने हुज़्रों में नमाज़ पढ़ती थीं और जो ऐसा हो उस पर आँहज़रत (ﷺ) की क़िरअत मख़फ़ी रह सकती है। पस अगर आप (ﷺ) की क़िरअत कुसूफ़ की नमाज़ सिरि होती और कभी-कभार कोई आयत ज़हर की तरह पढ़ दिया करते थे तो आइशा हज़रत अस्मा (रज़ि.) से ज़हरी क़िरअत से न ता'बीर करतीं। जैसा कि आपके नमाज़े ज़ुहर में कुछ आयात को ज़हरी पढ़ देने से किसी ने भी उसको ज़हरी क़िरअत पर महमूल नहीं किया।

17. किताब सुजूदुल कुर्आन

सुजूदे-कुर्आन के मसाइल

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : सज्द-ए-तिलावत और
उसके सुन्नत होने का बयान

۱ - بَابُ مَا جَاءَ فِي سُجُودِ الْقُرْآنِ
وَسُنَّتِهَا

तशरीह :

सज्द-ए-तिलावत अक़्बर अइम्मा के नज़दीक सुन्नत है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के यहाँ वाजिब है। अहले हदीथ के नज़दीक कुर्आन शरीफ़ में 15 जगह सज्द-ए-तिलावत है। सूरह हज्ज में दो सज्दे हैं, इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक सूरह जिन्न में सज्दा नहीं है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक सूरह हज्ज में एक ही सज्दा है। हालाँकि साफ़ रिवायत मौजूद है कि सूरह हज्ज में दो सज्दे हैं जो ये दो सज्दे न करे वो इस सूरह को न पढ़े। बहरहाल अपना-अपना ख़याल और अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी है। सज्द-ए-तिलावत में ये दुआ माफ़ूर है। सज्द वज्हियलिल्लज़ी ख़लक़हू व शक़क़ समअहू व बसरहू बिहौलिही व कुव्वतिही।

(1067) हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुंदर मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया और उनसे अबू इस्हाक़ ने उन्होंने कहा कि मैंने अस्वद से सुना उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से कि मक्का में नबी करीम (ﷺ) ने सूरह अन् नज्म की तिलावत की और सज्द-ए-तिलावत किया आपके पास जितने आदमी थे (मुस्लिम और काफ़िर) उन सबने भी आपके साथ सज्दा किया। अलबत्ता एक बूढ़ा शख्स (उमय्या बिन ख़लफ़) अपने हाथ में कंकरी या मिट्टी उठाकर अपनी पेशानी तक ले गया और कहा मेरे लिये यही काफ़ी है मैंने देखा कि बाद में वो बूढ़ा काफ़िर ही रहकर मारा गया। (दीगर मक़ाम : 1070, 3853, 3972, 4863)

۱۰۶۷ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ : حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ الْأَسْوَدَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ النِّجْمَ بِمَكَّةَ فَسَجَدَ فِيهَا وَسَجَدَ مَنْ مَعَهُ، غَيْرَ شَيْخٍ أَخَذَ كَفًّا مِنْ حَصَى أَوْ تُرَابٍ فَرَفَعَهُ إِلَى جَبْهَتِهِ وَقَالَ : يَكْفِيْنِي هَذَا. لَرَأَيْتُهُ بَعْدَ ذَلِكَ قِيلَ كَافِرًا)).

[إسناده : ۱۰۷۰، ۳۸۵۳، ۳۹۷۲، ۴۸۶۳]

तशरीह :

शाह वलीउल्लाह साहब (रह.) ने लिखा है कि जब हज़रे अक़रम (ﷺ) ने सूरह नज्म की तिलावत की तो मुश्किनी इस दर्जा मक्कहूर व मलूब हो गए कि जब आप (ﷺ) ने आयते-सज्दा पर सज्दा किया तो मुसलमानों के साथ वो भी सज्दे में चले गए। इस बाब में ये तावील सबसे ज़्यादा मुनासिब और वाज़िह है कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथ भी इसी तरह का वाक़िआ पेश आया था। कुर्आन मजीद में है कि जब फ़िरओन के बुलाए हुए जादूगरों के मुकाबले में आपका अज़ा (लाठी) सांप बन गया और उनके शोअबदों (जादू) की हकीक़त खुल गई तो सारे जादूगर सज्दे में पड़ गए। ये भी हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के मुअज्जे से मदहोश व मलूब हो गए थे। उस वक़्त उन्हें अपने ऊपर काबू न रहा था और

सब एक जुबान होकर बोल उठे थे कि आमत्रा बिरब्बि मूसा व हारून यही कैफियत मुश्किने मक्का की हो गई थी।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की एक रिवायत में है कि आँहज़ूर (ﷺ) जब आयते सज्दा पर पहुँचे तो आपने सज्दा किया और हमने सज्दा किया। दारे कुत्नी की रिवायत में है कि जिन्न व इंस तक ने सज्दा किया। जिस बूढ़े ने सज्दा नहीं किया था वो उमय्या बिन खलफ़ था।

अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) फ़मति हैं कि, व अम्मल्मुसन्नफ़ि फ़ी रिवायते इसाईल अन्नन्जमु अव्वलु सूरतिन उन्ज़िलत फीहा सज्दतुन व हाज़ा हुवस्सिरू फ़ी बाद अतिल्मुसन्नफ़ि फ़ी हाज़िहिल्अबवाबि बिहाज़ल्हदीषि. या'नी मुसन्नफ़ि ने रिवायते इसाईल में बताया कि सूरह नज्म पहली सूरत है जिसमें सज्दा नाज़िल हुआ यहाँ भी उन अब्बाब को इस हदीष से शुरू करने में यही भेद है यँ तो सज्दा सूरह इकरा मे उससे पहले भी नाज़िल हो चुका था आँहज़रत (ﷺ) ने जिसका खुलकर ऐलान फ़र्माया वो यही सूरह नज्म है और उसमें ये सज्दा है, अन्नल्मुराद अव्वलु सूरतिन फीहा सज्दतुन तलाहा जहरन अलल्मुश्किनी (फ़त्हुल बारी)

बाब 2 : सूरह अलिफ़ लाम मीम तंज़ील

में सज्दा करना

(1068) हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान शौरी ने बयान किया, उन्होंने सज्द बिन इब्राहीम बिन अब्दुरहमान बिन ओफ़ से बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन हुर्मुज़ अन्नरज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जुम्आ के दिन फ़ज़्र की नमाज़ में अलिफ़ लाम मीम तंज़ीलुल (अस्सज्दा) और हल अता अलल इंसान (सूरह दहर) पढ़ा करते थे। (राजेअ : 891)

٢- بَابُ مَجْدَةِ تَنْزِيلِ السُّجْدَةِ

١٠٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ

خَلَقْنَا سَفْيَانَ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: (كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْجُمُعَةِ فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ «الْم تَنْزِيلُ» السُّجْدَةِ وَ«قُلْ آتَى عَلَى الْإِنْسَانِ»).

[راجع: ٨٩١]

तशरीह : ये हदीष बाब के तर्जुमा के मुताबिक नहीं है मगर हज़रत इमाम (रह.) ने अपनी वृत्तते नज़री की बिना पर इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा कर दिया जिसे तबरानी ने मुअज्जम सग़ीर में निकाला है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़ज़्र की नमाज़ में सूरह अलिफ़ लाम मीम की तिलावत फ़र्माई और सज्द-ए-तिलावत किया ये रिवायत हज़रत इमाम के शराहत पर न थी। इसलिये यहाँ सिर्फ़ ये रिवायत लाए जिसमें ख़ाली पहली रक़अत में अलिफ़ लाम मीम तंज़ील पढ़ने का ज़िक्र है इसमें भी ये इशारा है कि अगरचे अह्दादीष में सज्द-ए-तिलावत का ज़िक्र नहीं मगर इसमें सज्द-ए-तिलावत है लिहाज़ा ऐलानन आपने सज्दा भी किया होगा।

अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) फ़मति हैं लम अर फ़ी शैइन मिनत्तरीकित्तस्रीहि बिअन्नहू (ﷺ) सज्द लम्मा क़रअ सूरतत्तन्ज़ील अस्सज्दत फ़ी हाज़ल्महल्लिल इल्ला फ़ी किताबिशशरीअति लिइब्नि अबी दाऊद मिन तरीकिन उख़रा अन सईदिब्नि जुबैरिन अनिब्नि अब्बासिन क़ाल गदौतु अलन्नबिथ्यि (ﷺ) यौमुल्जुम्आति फ़ी स़लातिल्फ़ज़्रि फ़क़रअ फ़ीहा सूरतन फ़ीहा सज्दतन फ़सज्द अल्हदीषि व फ़ी इस्नादिही मय्यन्ज़ुरू फ़ी हालिही व लिन्नब्रानी फ़िस्सग़ीर मिन हदीषि अलिथ्यिन अन्नन्नबिथ्यि (ﷺ) सज्द फ़ी स़लातिल्सुब्हि फ़ी तन्ज़ील अस्सज्द: लाकिन्न फ़ी इस्नादिही जुअफ़ुन. या'नी मैंने स़ाहतन किसी रिवायत में ये नहीं पाया कि आँहज़रत (ﷺ) ने जब उस मुकाम पर (या'नी नमाज़े फ़ज़्र में) सूरह अलिफ़ लाम मीम तंज़ील सज्दा को पढ़ा आपने यहाँ सज्दा किया हो। हौं किताबुशशरीआ इब्ने अबी दाऊद में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि मैंने एक-जुम्आ के दिन फ़ज़्र की नमाज़ आँहज़रत (ﷺ) के पीछे अदा की और आपने सज्दा वाली सूरह पढ़ी और सज्दा किया। तबरानी में हदीषे अली (रज़ि.) में ये वज़ाहत मौजूद है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़ज़्र की नमाज़ में ये सूरह पढ़ी और सज्दा किया। इन सूरतों के फ़ज़्र की नमाज़ में जुम्आ के दिन बिला नागा पढ़ने में भेद ये है कि उनमें पैदाइश-आदम (अलैहिस्सलाम) फिर क़यामत के वाक़ेअ होने का ज़िक्र है। आदम

(अलैहिस्सलाम) की पैदाइश जुम्'अे के दिन हुई और क़यामत भी जुम्'आ ही के दिन कायम होगी। जुम्'अे के दिन नमाजे फ़ज्र में उन दोनों सूरतों को हमेशागी के साथ पढ़ना आँहज़रत (ﷺ) से श्राबित है और ये भी श्राबितशुदा अमर है कि अलिफ़ लाम मीम में सज्द-ए-तिलावत है। पस ये युम्किन नहीं कि आँहज़रत (ﷺ) इस सूरह-ए-शरीफ़ा को पढ़ें और सज्द-ए-तिलावत न करें। फिर तबरांनी वग़ैरह में सराहृत के साथ उस अमर का ज़िक्र भी मौजूद है। इस तफ़्सील के बाद अल्लामा इब्ने हज़र ने जो नफ़ी फ़र्माई है वो इसी हक्कीक़त बयानकर्दा की रोशनी में मुतालआ करनी चाहिये।

बाब 3 : सूरह स़ाद में सज्दा करना

۳- بَابُ مَسْجُودَةٍ فِي

(1069) हमसे सुलैमान बिन हर्ब और अबुन नोअमान बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन दोनों ने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि सूरह स़ाद का सज्दा कुछ ताकीदी सज्दों में से नहीं है और मैंने नबी करीम (ﷺ) को सज्दा करते हुए देखा। (दीगर मक़ाम : 3422)

۱۰۶۹- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ وَأَبُو الْيَعْمَانِ قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((مِنْ لَيْسَ مِنَ عَزَائِمِ السُّجُودِ، وَلَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْجُدُ فِيهَا)). [طوله في : ۳۴۲۲]

निसाई में है कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरह स़ाद में सज्दा किया और फ़र्माया कि ये सज्दा दाऊद (अलैहिस्सलाम) ने तौबा के लिये किया था, हम शुक्र के तौर पर ये सज्दा करते हैं। इस हदीष में लैस मिन अज़ाअमिस्सुजुद का भी यही मतलब है कि सज्दा तो दाऊद (अलैहिस्सलाम) का था और उन्हीं की सुन्नत पर हम भी शुक्र के लिये ये सज्दा करते हैं। अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) की तौबा कुबूल की थी।

बल्पुरादू बिल्अज़ाअमि मा वरदतिल्अज़ीमतु अला फिअलिही कसीगतिल्अमि (फ़तहुल बारी) या'नी अज़ाअमि से मुराद वो जिनके लिये सैग-ए-अमर के साथ ताकीद वारिद हुई हो। सूरह स़ाद का सज्दा ऐसा नहीं है; हाँ बतौर शुक्र सुन्नत ज़रूर है।

बाब 4 : सूरह नज्म में सज्दा का बयान

۴- بَابُ مَسْجُودَةِ النَّجْمِ

इसको अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

(1070) हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने, अबू इस्हाक़ से बयान किया, उनसे अस्वद ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरह अन् नज्म की तिलावत की और उसमें सज्दा किया उस वक़्त क़ौम का कोई फ़र्द (मुसलमान और काफ़िर) भी ऐसा न था जिसने सज्दा न किया हो। अलबत्ता एक शख्स ने हाथ में कंकरी या मिट्टी लेकर अपने चेहरे तक उठाई और कहा कि मेरे लिये यही काफ़ी है। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि बाद में मैंने देखा कि वो कुफ़र की हालत ही में क़त्ल हुआ (ये उमय्या बिन ख़लफ़ था)। (राजेअ : 1067)

۱۰۷۰- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَرَأَ سُورَةَ النَّجْمِ فَسَجَدَ بِهَا، فَمَا بَقِيَ أَحَدٌ مِنَ الْقَوْمِ إِلَّا سَجَدَ، فَأَخَذَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ كَفًّا مِنْ حَصَى أَوْ تُرَابٍ فَرَفَعَهُ إِلَى وَجْهِهِ وَقَالَ: يَكْفِينِي هَذَا. فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ بَعْدَ قَلِيلٍ كَافِرًا)). [راجع : ۱۰۶۷]

इस हदीष से सूरह अन् नज्म में सज्द-ए-तिलावत श्राबित हुआ।

हाफिज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं फलअल्ल जमीअ मन वुफ़िफ़क लिस्सुजूदि यौमइजिन खुतिम लहू बिल्हुस्ना अस्लम लिबर्कतिस्सुजूदि या'नी जिन लोगों ने उस दिन आँहज़रत (ﷺ) के साथ सज्दा कर लिया (ख़्वाह उनमें से काफ़िरों की निय्यत कुछ भी हो बहरहाल) उनको सज्दे की बरकत से इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ हुई और उनका ख़ात्मा इस्लाम पर हुआ। बाद के वाकिआत से प्राबित है कि कुफ़ारे मक्का बड़ी ता'दाद में मुसलमान हो गए थे जिनमें यकीनन उस मौक़े पर ये सज्दे करनेवाले भी शामिल हैं। मगर उमय्या बिन ख़लफ़ ने सज्दा नहीं किया बल्कि रस्मन मिट्टी को हाथ में लेकर सर से लगा लिया, उस तकब्बुर की वजह से उसको इस्लाम नज़ीब नहीं हुआ। आख़िर कुफ़ की ही हालत में वो मारा गया।

ख़ुलासा ये कि सूरह नज़्म में भी सज्दा है और ये अज़ाइमे सुजूद में शुमार कर लिया गया है, या'नी जिन सज्दों का अदा करना ज़रूरी है। व अन्न अलिथ्यिन मा वसदल्अम्न फ़ीहि बिस्सुजूदि अज़ीमतुन या'नी हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जिन आयात में सज्दा करने का हुक्म सादिर हुआ है वो सज्दे ज़रूरी हैं (फ़तहूल बारी)। मगर ज़रूरी का मतलब ये भी नहीं कि वो फ़र्ज़-वाजिब हों; जबकि सज्द-ए-तिलावत सुन्नत के दर्जे में हैं ये अम् अलग है कि हर सुन्नते नबवी पर अमल करना हर एक मुसलमान के लिये सज़ादते दारेन का बाहिद वसीला है। वल्लाहु अअलम

बाब 5 : मुसलमानों का मुशिकों के साथ सज्दा करना हालाँकि मुशिक नापाक है

• - بَابُ مَجُورِ الْمُسْلِمِينَ مَعَ الْمُشْرِكِينَ، وَالْمُشْرِكُ لَا يَجُوزُ لَيْسَ لَهُ وَضُوءٌ

उसको वुजू कहाँ से आया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बेवुजू सज्दा किया करते थे।

وَكَانَ ابْنُ عُتْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَسْجُدُ عَلَى غَيْرِ وَضُوءٍ.

इसको इब्ने अबी शैबा ने निकाला है कि इब्ने उमर (रज़ि.) सवारी से उतरकर इस्तिज़ा करते फिर सवार होते और तिलावत का सज्दा बेवुजू करते। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि शुअबी के सिवा और कोई इब्ने उमर के साथ इस मसले में मुवाफ़िक़ नहीं हुआ। बहरहाल हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मसलक प्राबित हुआ कि बग़ैर वुजू ये सज्दा कर सकते हैं। इस्तदल्ल बिज़ालिक अला अजाज़िस्सुजूदि बिला वुजूइन इन्द वुजूदिल्मुशक़क़ति बिल्माइ बिल्वुजूइ (फ़तहूल बारी) या'नी जब वुजू करना मुशक़ल हो तो ये सज्दा बग़ैर वुजू जाइज़ है।

(1071) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिज़ ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने बयान किया, उनसे इकरिमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरह अन्नज़्म में सज्दा किया तो मुसलमानों, मुशिकों और जिन्न व इन्स सबने आपके साथ सज्दा किया। इस हदीष की रिवायत इब्राहीम बिन तह्मान ने भी अय्यूब सुख़ितयानी से की है। (दीगर मक़ाम : 4862)

١٠٧١ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا عَنْ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ جُكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : ((رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يَسْجُدُ بِالنَّجْمِ، وَتَسْجُدُ مَعَهُ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ، وَالْجِنُّ وَالْإِنْسُ)). وَرَوَاهُ ابْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَيُّوبَ.

[طرفه ٥ : ٤٨٦٢]

जाहिर है कि मुसलमान भी उस वक़्त सब बावुजू न होंगे और मुशिकों के वुजू का तो कोई सवाल ही नहीं, लिहाज़ा बेवुजू सज्दा करने का जवाज़ निकला और इमाम बुखारी (रह.) का भी यही क़ौल है।

बाब 6 : सज्दा की आयत पढ़कर

• - بَابُ مَنْ قَرَأَ السَّجْدَةَ وَلَمْ

सज्दा न करना

يَسْجُدُ

(1072) हमसे सुलैमान बिन दाऊद अबुरबीआ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फर ने बयान किया, कहा कि हमें यजीद बिन खुसैफा ने खबर दी, उन्हें (यजीद बिन अब्दुल्लाह) इब्ने कुसैत ने, और उन्हें अता बिन यसार ने कि उन्होंने ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) से सवाल किया। आपने यकीन के साथ उस अम्र का इजहार किया कि नबी करीम (ﷺ) के सामने सूरह अन् नज्म की तिलावत आपने की थी और आँहुज़ूर (ﷺ) ने उसमें सज्दा नहीं किया। (दीगर मक़ाम : 1073)

١٠٧٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيعِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ عَصَفَةَ عَنْ ابْنِ قُسَيْطٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ: «أَنَّ سَالَانَ زَيْدَ بْنَ قَابِطٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَرَأَ آتَةَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَالنَّجْمَ فَلَمْ يَسْجُدْ فِيهَا».

आपके साथ उस वक़्त सज्दा न करने की कई वजहें हैं। अल्लामा इब्ने हज़र फ़रमते हैं, औ तरक हीन इज़िन लिबयानिल जवाज़ि व हाज़ा अर्जलहुल इहतिमालाति व बिही जर्ज़मशशाफ़िइ (फ़तुलुलबारी) या'नी आपने सज्दा इसलिये नहीं किया कि उसका तर्क (छोड़ना) भी जाइज़ है इसी तावील को तर्जीह हासिल है इमाम शाफ़िई का यही ख़याल है।

(1073) हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, कहा कि हमसे यजीद बिन अब्दुल्लाह बिन कुसैत ने बयान किया, उनसे अता बिन यसार ने, उनसे ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने सूरह अन् नज्म की तिलावत की और आप (ﷺ) ने उसमें सज्दा नहीं किया।

١٠٧٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُسَيْطٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ قَابِطٍ قَالَ: «قَرَأْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَالنَّجْمَ، فَلَمْ يَسْجُدْ فِيهَا».

तशरीह : इस बाब से इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज ये है कि कुछ सज्द-ए-तिलावत वाजिब नहीं है। कुछ ने कहा कि उसका रद्द मंज़ूर है जो कहता है कि मुफ़स्सल सूरतों में सज्दा नहीं है क्योंकि सज्दा करना फ़ौरन वाजिब नहीं तो सज्दा तर्क करने से ये नहीं निकलता कि सूरह वन् नज्म में सज्दा नहीं है। जो लोग सज्द-ए-तिलावत को वाजिब कहते हैं वो भी फ़ौरन सज्दा करना ज़रूरी नहीं जानते। मुम्किन है आपने बाद में सज्दा कर लिया हो। बज़ार और दारे कुत्नी ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला है कि आँहुज़रत (ﷺ) ने सज्द-ए-वन् नज्म में सज्दा किया और हमने भी आपके साथ सज्दा किया।

बाब 7 : सूरह इज़स्समाउन्नशक्रत में सज्दा करना

٧- بَابُ سَجْدَةِ إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ

(1074) हमसे मुस्लिम इब्ने इब्राहीम और मुआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन अबी अब्दुल्लाह दस्तवाई ने बयान किया, उनसे यहाा बिन अबी कषीर ने, उनसे अबू सलमा ने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को सूरह इज़स्समाउन्नशक्रत पढ़ते देखा। आपने उसमें सज्दा किया मैंने

١٠٧٤- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ وَمُعَاذُ بْنُ فَصَّالَةَ قَالَا: حَدَّثَنَا هِشَامُ عَنْ ابْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: «رَأَيْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَرَأَ: إِذَا السَّمَاءُ

कहा कि या अब्बा हुरैरह! क्या मैंने आपको सज्दा करते हुए नहीं देखा है। आपने कहा कि अगर मैं नबी करीम (ﷺ) को सज्दा करते न देखता तो मैं भी न करता।

बाब 8 : सुनने वाला उसी वक़्त सज्दा करे जब पढ़ने वाला करे

और अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने तमीम बिन हज़लम से कहा— कि वो लड़का था उसने सज्दे की आयत पढ़ी— सज्दा कर। क्योंकि तू इस सज्दे में हमारा इमाम है।

मतलब ये है कि सुननेवाले को जब सज्दा करना चाहिये कि पढ़ने वाला भी करे अगर पढ़ने वाला सज्दा न करे तो सुननेवाले पर भी लाज़िम नहीं है। इमाम बुखारी (रह.) का शायद यही मज़हब है और जुम्हूर इलमा का ये क़ौल है कि सुननेवाले पर हर तरह सज्दा है अगरचे पढ़नेवाला बेवुज़ू या नाबालिग़ काफ़िर या औरत या तारिकुस्सलात हो या नमाज़ पढ़ा रहा हो। (वहीदी)

(1075) हमसे मुसहद बिन मुसहिद ने बयान किया कहा कि हमसे यब्दा बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह इमरी ने बयान किया कहा कि हमसे नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) हमारी मौजूदगी में आयते सज्दा पढ़ते और सज्दा करते तो हम भी आपके साथ (हुजूम की वजह से) इस तरह सज्दा करते कि पेशानी रखने की जगह भी न मिलती जिस पर सज्दा करते। (दीगर मक़ाम : 1072, 1079)

बाब 9 : इमाम जब सज्दा की आयत पढ़े और लोग हुजूम करें तो बहरहाल सज्दा करना चाहिये

(1076) हमसे बिश्र बिन आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे अली बिन मुस्हर ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह इमरी ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और नाफ़ेअ को इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) आयते सज्दा की तिलावत अगर हमारी मौजूदगी में करते तो आपके साथ हम भी सज्दा करते थे। उस वक़्त इतनी भीड़ होती कि सज्दे के लिये पेशानी रखने की जगह भी न मिलती जिस पर सज्दा करने वाला सज्दा कर सके। (राजेअ : 1975)

انْشَفْتُ لَمْ تَسْجُدْ بِهَا، فَقُلْتُ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، أَلَمْ أَرَكَ تَسْجُدُ؟ قَالَ: لَوْ لَمْ أَرِ النَّبِيَّ (ﷺ) سَجَدَ، لَمْ أَسْجُدْ)).

۸- بَابُ مَنْ سَجَدَ بِسُجُودِ الْقَارِئِ وَقَالَ ابْنُ مُسْعُودٍ لِمَيْمِ بْنِ خَدَلَمٍ - وَهُوَ غُلَامٌ - فَقَرَأَ عَلَيْهِ سَجْدَةً فَقَالَ : اسْجُدْ، لِإِنَّكَ إِمَامُنَا فِيهَا.

۱۰۷۵- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا عَنْ عُثَيْدٍ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ عَلَيْنَا السُّورَةَ الَّتِي فِيهَا السَّجْدَةُ فَيَسْجُدُ وَنَسْجُدُ حَتَّى مَا يَجِدُ أَحَدُنَا مَوْضِعَ جَنْبَيْهِ)).

[طرفاء ن: ۱۰۷۶، ۱۰۷۹].

۹- بَابُ إِذْوَ حَامِ النَّاسِ إِذَا قَرَأَ الإمام السجدة

۱۰۷۶- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ أَدَمَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عُثَيْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ السَّجْدَةَ وَنَحْنُ عِنْدَهُ، فَيَسْجُدُ وَنَسْجُدُ مَعَهُ، فَنَزْدَجِمُ حَتَّى مَا يَجِدُ أَحَدُنَا لِحْجَتَيْهِ مَوْضِعًا يَسْجُدُ عَلَيْهِ)).

[راجع: ۱۹۷۵]

इसी हदीस से कुछ ने ये निकाला कि जब पढ़नेवाला सज्दा करे तो सुनने वाला भी करे गोया उस सज्दे में सुननेवाला मुक्तदी है

और पढ़नेवाला इमाम है। बेहकी ने हज़रत इमर (रज़ि.) से रिवायत किया जब लोगों का बहुत हुजूम हो तो तुममें कोई अपने भाई की पुश्त पर भी सज्दा कर सकता है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा जब हुजूम की हालत में फ़र्ज़ नमाज़ में पीठ पर सज्दा करना जाइज़ हुआ तो सज्द-ए-कुर्आन पाक ऐसी हालत में बत्तरी के औला जाइज़ है।

बाब 10 : उस शख्स की दलील जिसके नज़दीक अल्लाह तआला ने सज्द-ए-तिलावत को वाजिब नहीं किया

और इमरान बिन हुसैन मज़हबी से एक शख्स के बारे में पूछा गया जो आयते सज्दा सुनता है मगर वो सुनने की निध्यत से नहीं बैठता था तो क्या उस पर सज्दा वाजिब है। आपने उसके जवाब में फ़र्माया कि अगर वो इस निध्यत से बैठ भी हो तो क्या (शोया उन्होंने सज्द-ए-तिलावत को वाजिब नहीं समझा) सलमान फ़ारसी ने फ़र्माया कि हम सज्द-ए-तिलावत के लिये नहीं आए।

हुआ ये कि हज़रत सलमान फ़ारसी कुछ लोगों के पास से गुज़रे जो बैठे हुए थे उन्होंने सज्दा की आयत पढ़ी और सज्दा किया सलमान ने नहीं किया तो लोगों ने उसका सबब पूछा तो उन्होंने ये कहा। (रवाह अब्दुरज़ाक़)

इमरान (रज़ि.) ने फ़र्माया कि सज्दा उनके लिये ज़रूरी है जिन्होंने आयते सज्दा, क़स्द (इरादे) से सुनी हो। जुहरी ने फ़र्माया कि सज्दा के लिये तहज़ारत ज़रूरी है अगर कोई सफ़र की हालत में न हो बल्कि घर पर हो तो सज्दा क़िबला रू होकर किया जाएगा और सवारी पर क़िबला रू होना ज़रूरी नहीं जिधर भी रुख हो (उसी तरफ़ सज्दा कर लेना चाहिये)

साइब बिन यज़ीद वाइज़ों व क़िस्साख़वानों के सज्दा करने पर सज्दा न करते।

(1077) हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने ज़ुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे अबूबक्र बिन अबी मुलैका ने ख़बर दी, उन्हें इमरान बिन अब्दुरहमान तैमी ने और उन्हें रबीआ बिन अब्दुल्लाह बिन हुदैर तैमी ने कहा कि — अबूबक्र बिन अबी मुलैका ने बयान किया कि रबीआ बहुत अच्छे लोगों में से थे — रबीआ ने वो हाल बयान किया जो हज़रत इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की मज़लिस में उन्होंने देखा। हज़रत इमर (रज़ि.) ने जुम्आ के दिन मिम्बर पर सूरह नहल पढ़ी जब सज्दा की आयत (वलिल्लाहि यस्जुदु माफ़िस्समावाति) आख़िर तक पहुँचे तो

۱۰ - بَابُ مَنْ رَأَى أَنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَّ لَمْ يُوجِبِ السُّجُودَ

وَقِيلَ لِمَرْثَانِ بْنِ خَمْتٍ: الرَّجُلُ يَسْمَعُ السُّجْدَةَ وَلَمْ يَخْلِسْ لَهَا. قَالَ: أَرَأَيْتَ لَوْ لَقَدْ لَهَا. كَأَنَّهُ لَا يُوجِبُهُ عَلَيْهِ. وَقَالَ سَلْمَانَ: مَا لِهَذَا غَنَوْنَا. وَقَالَ خَمَّانُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِنَّمَا السُّجْدَةُ عَلَى مَنْ

اسْتَمَعَهَا. وَقَالَ الرَّهْزِيُّ: لَا يَسْجُدُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ طَاهِرًا، فَإِذَا سَجَدْتَ وَلَا مَقَرٍّ وَأَنْتَ فِي حَضَرٍ فَاسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ، فَإِنْ كُنْتَ رَاكِبًا فَلَا عَلَيْكَ حَتَّى كَانَ وَجْهَكَ. وَكَانَ السَّائِبُ بْنُ يَزِيدَ لَا يَسْجُدُ لِسُجُودِ الْقَاهِرِ.

۱۰۷۷ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ النَّخَعِيِّ عَنْ زَيْدَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْهَدَيْمِ النَّخَعِيِّ - قَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَكَانَ زَيْدَةُ مِنْ خِيَارِ النَّاسِ - عَمَّا حَضَرَ زَيْدَةُ مِنْ عَمْرِو بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَرَأَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

मिम्बर पर से उतरे और सज्दा किया तो लोगों ने भी उनके साथ सज्दा किया। दूसरे जुम्हरे को फिर यही सूत पड़ी जब सज्दा की आयत पर पहुँचे तो कहने लगे लोगों! हम सज्दे की आयत पढ़ते चले जाते हैं फिर जो कोई सज्दा करे उसने अच्छा किया और जो कोई न करे तो उस पर कुछ गुनाह नहीं और हज़रत इमर (रज़ि.) ने सज्दा नहीं किया और नाफ़ेअ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से नक़ल किया कि अल्लाह तआला ने सज्द-ए-तिलावत फ़र्ज़ नहीं किया हमारी खुशी पर रखा।

عَلَى الْهَبْرِ بِسُورَةِ النَّحْلِ، حَتَّى إِذَا جَاءَ السُّجْدَةَ نَزَلَ فَسَجَدَ وَسَجَدَ النَّاسُ، حَتَّى إِذَا كَانَتِ الْخُمْعَةُ الْقَابِلَةَ قَرَأَ بِهَا حَتَّى إِذَا جَاءَ السُّجْدَةَ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّا نَمُرُّ بِالسُّجُودِ، فَمَنْ سَجَدَ فَقَدْ أَصَابَ، وَمَنْ لَمْ يَسْجُدْ فَلَا إِنَّمِ عَلَيْهِ. وَلَمْ يَسْجُدْ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. وَزَادَ نَالِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَفْرِضِ السُّجُودَ إِلَّا أَنْ تَشَاءَ)).

अल्लामा इब्ने हजर फ़र्माते हैं व अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) की हदीस उमरल्मज़कूर फी हाज़ल्बाबि या'नी इस बात की क़बी दलील कि सज्द-ए-तिलावत वाज़िब नहीं ये हज़रत इमर (रज़ि.) की हदीस है जो यहाँ इस बाब में मज़कूर हुई। अक़्बर अइम्मा व फ़ुक्रहा इसी के काइल हैं कि सज्द-ए-तिलावत ज़रूरी नहीं बल्कि सिर्फ़ सुन्नत है। इमाम बुखारी (रह.) का भी यही मसलक है।

बाब 11 : जिसने नमाज़ में आयते सज्द-ए-तिलावत की और नमाज़ ही में सज्दा किया

١١- بَابُ مَنْ قَرَأَ السُّجْدَةَ فِي الصَّلَاةِ فَسَجَدَ بِهَا

इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज़ इस बाब से मालिकिया पर रह करना है जो सज्दा की आयत नमाज़ में पढ़ना मकरूह जानते हैं।

(1078) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने बाप से सुना कहा कि हमसे बक्र बिन अब्दुल्लाह मज़नी ने बयान किया, उनसे अबू राफ़ेअ ने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ नमाज़े इशा पढ़ी। आपने 'इज़स्समाउन्नशक़्त' की तिलावत की और सज्दा किया। मैंने कहा कि आपने ये क्या किया? उन्होंने उसका जवाब दिया कि मैंने अबुल कासिम (ؓ) की इक्तिदा में सज्दा किया था और हमेशा सज्दा करता रहूँगा यहाँ तक कि आपसे जा मिलूँ।

١٠٧٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْتَمِرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرٌ عَنْ أَبِي رَافِعٍ قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ الْغَنَمِيِّ، فَقَرَأَ: «وَإِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ» فَسَجَدَ، فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالَ: سَجَدْتُ بِهَا خَلْفَ أَبِي الْقَاسِمِ ؓ، فَلَا أَزَالُ أَسْجُدُ فِيهَا حَتَّى أَلْقَاهُ)).

बाब 12 : जों शंख़्स हुजूम की वजह से सज्द-ए-तिलावत की जगह न पाए

(1079) हमसे सद्का बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ)

١٢- بَابُ مَنْ لَمْ يَجِدْ مَوْضِعًا لِلْسُّجُودِ مِنَ الزَّحَامِ

١٠٧٩- حَدَّثَنَا حَذْفَةُ بْنُ الْقَاضِي قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَالِعٍ عَنْ

किसी ऐसी सूरह की तिलावत करते जिसमें सज्दा होता फिर आप सज्दा करते और हम भी आपके साथ सज्दा करते यहाँ तक कि हममें से किसी को पेशानी रखने की जगह न मिलती। (राजेअ: 1079)

(मा'लूम हुआ कि ऐसी हालत में सज्दा न किया जाए तो कोई हर्ज नहीं है। वल्लाहु अअलम)

ابن عمر رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَا ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ السُّورَةَ الَّتِي فِيهَا السُّجْدَةُ، فَيَسْجُدُ وَنَسْجُدُ، حَتَّى مَا يَجِدُ أَحَدَنَا مَكَانًا لِمَوْضِعِ جَبْهَتِهِ)). [راجع: ١٠٧٩]

18. किताब तक्सीरुस्सलात

नमाज़ में क़स्स करने का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : नमाज़ में क़स्स करने का बयान और इक़ामत की हालत में कितनी मुद्दत तक क़स्स कर सकता है

١ - بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّقْصِيرِ، وَكَمْ يَقِيمُ حَتَّى يَقْصُرَ

तशरीह : क़स्स के मा'नी कम करना; यहाँ हालते सफ़र में चार रकअत वाली फ़र्ज़ नमाज़ को कम करके दो रकअत पढ़ना मुराद है। हिज़रत के चौथे साल क़स्स की इजाज़त नाज़िल हुई। मग़रिब और फ़ज़्र की फ़र्ज़ नमाज़ों में क़स्स नहीं है और ऐसे सफ़र में क़स्स जाइज़ नहीं है जो सफ़र गुनाह की निश्चयत से किया जाए कोई मुसलमान होकर चोरी करने के इरादे या ज़िना करने के लिये सफ़र करे तो उसके लिये क़स्स की इजाज़त नहीं है। इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद और इमाम मालिक (रह.) और इलमा-ए-दीन का यही फ़त्वा है; देखें तस्हीलुल क़ारी पेज नं. 678

कुआन मजीद में क़स्स नमाज़ का ज़िक्र इन लफ़्ज़ों में है फलैस अलैकुम जुनाहुन अन्तक्सुरू मिनस्सलाति इन खिप्तुम अय्यप्तिनकुमुल्लज़ीन कफ़रु या'नी अगर हालते सफ़र में तुमको काफ़िरो की तरफ़ से डर हो तो उस वक़्त नमाज़ क़स्स करने में तुम पर कोई गुनाह नहीं। इसके बारे में ये रिवायत वज़ाहत के लिये काफी है, अन यअलब्नि उमय्यत क़ाल कुल्लु लिज़मिब्नि ख़त्ताब (रज़ि.) लैस अलैकुम जुनाहुन अन तक्सुरू मिनस्सलाति इन खिप्तुम अय्यप्तिनकुमुल्लज़ीन कफ़रु फ़क़द अमनन्नासु अन ज़ालिक फ़क़ाल अज़िब्तु मिम्मा अज़िब्त मिन्हु फ़सअल्लु रसूलल्लाहि (ﷺ) फ़क़ाल सदक़तन तसद्कल्लाहु अलैकुम फ़बिबलू सदक़तहू (रवाहु मुस्लिम) या'नी यअला इब्ने उमय्या कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से इस आयते मज़क़ूर के बारे में कहा अब तो लोग अम्न में हैं फिर क़स्स का क्या मा'नी है? इस पर आपने बतलाया

कि मुझे भी तुम जैसा तरह हुआ था तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा था आपने फ़र्माया कि अब सफ़र में नमाज़ क़स्र करना ये अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे लिये सदका है। लिहाज़ा मुनासिब है कि उसका सदका कुबूल करो। इस हदीष से वाज़ेह हो गया कि अब सफ़र में नमाज़ क़स्र करने के लिये दुश्मन से डर की कैद नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने कई बार हालते सफ़र में जबकि आपको अमन हासिल था नमाज़े फ़र्ज़ क़स्र करके पढ़ाई। पस इशदि बारी तआला है, लकुम फी रसूलिल्लाहि उस्वतुन हसना या'नी तुम्हारे लिये रसूले करीम (ﷺ) का अमल बेहतरीन नमूना है। नीज़ अल्लाह ने फ़र्माया, युरीदुल्लाहु बिकुमुल्युस् वला युरीदु बिकुमुलउस् या'नी अल्लाह पाक तुम्हारे साथ आसानी का इरादा रखता है दुश्मानी नहीं चाहता।

इमाम नववी (रह.) शरहे मुस्लिम में फ़र्माते हैं कि सफ़र में नमाज़े क़स्र के वाजिब या सुन्नत होने में इलमा का इख़्तिलाफ़ है। इमाम शाफ़िई (रह.) और मालिक बिन अनस और अक़्फ़र इलमा ने क़स्र करने और पूरी पढ़ने दोनों को जाइज़ करार दिया है; साथ ही ये भी कहते हैं कि क़स्र अफ़ज़ल है। उन हज़रत की दलील, बहुत सी मशहूर रिवायतें हैं जो सहीह मुस्लिम वग़ैरह में हैं जिनमें मज़कूर है कि सहाबा किराम रसूले करीम (ﷺ) के साथ सफ़र करते उनमें कुछ लोग क़स्र करते कुछ नहीं करते कुछ उनमें रोज़ा रखते कुछ रोज़ा छोड़ देते और उनमें आपस में कोई एक दूसरे पर ए'तिराज़ नहीं करते। हज़रत इम्रान (रज़ि.) और हज़रत आइशा (रज़ि.) से भी सफ़र में पूरी नमाज़ अदा करना मन्कूल है।

कुछ इलमा क़स्र को वाजिब जानते हैं उनमें हज़रत उमर, हज़रत अली और जाबिर और इब्ने अब्बास दाख़िल हैं और हज़रत इमाम मालिक और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा का भी यही क़ौल है। अल मुहदिषुल कबीर हज़रत मौलाना अब्दुलमान मुबारकपुरी फ़र्माते हैं कुल्लु मिन शानि मुत्तबिडिस्सुन्ननिन्नबविय्यति व मुकतज़इलआप्पारिल मुस्तफ़िविय्यति अंथ्युलाजिमुल्कस्र फिस्सफ़ि कमा लाज़िमहू (ﷺ) व लौ कानल्कस्रु ग़ैर वाजिबिन फ़त्तिबाउस्सुन्नति फिलक़स्रि फिस्सफ़रि हुवलमुतअय्यनु व ला हाज़त लहुम अय्युतिम्पू फिस्सफ़रि व यतअव्वलू कमा तअव्वलत आइशतु व तअव्वल इम्रानु (रज़ि.) हाज़ा मा इन्दी वल्लाहु आलम (तुफ़तुल अहवज़ी, सफ़ा : 383)

या'नी सुनने नववी के फ़िदाइयों के लिये ज़रूरी है कि सफ़र में क़स्र ही को लाज़िम पकड़ें। अगरचे ये ग़ैर-वाजिब है फिर भी इतिबाअे सुन्नत का तकाज़ा यही है कि सफ़र में क़स्र किया जाए और इत्माय न किया जाए और कोई तावील इस बारे में मुनासिब नहीं है। जैसे हज़रत आइशा (रज़ि.) व हज़रत इम्रान (रज़ि.) ने तावीलात की हैं। मेरा ख़याल यही है।

ये भी एक लम्बी बहस है कि कितने मील का सफ़र हो जहाँ से क़स्र जाइज़ है इस सिलसिले में कुछ रिवायात में तीन मील का भी ज़िक्र आया है। क़ालन्नववी इला अन्न अक़ल्ल मसाफ़तिल्कस्रि षलायत अम्यालिन व कअन्नहुम इहतज्जू फी ज़ालिक बिमा रवाहु मुस्लिम व अबू दाऊद मिन हदीषि अनसिन क़ाल कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इजा खरज मसीरत षलायति अम्यालिन औ फ़रासुखिन कस्सरस्सलात क़ालल्हाफ़िज़ व हुव असदु हदीषिन वरद फी बयानि ज़ालिक व अन्नहुहू व क़द हम्मलहु मन खालफ़हु अन्नल्मुराद बिहिल्मसाफ़तुल्लती यब्तदिउ मिन्हल्कस्रु ला ग़ायतस्सफ़ि यअनी अराद बिही इज़ा साफ़र सफ़रन तवीलन कस्सर इज़ा बलग षलायत अम्यालिन कमा क़ाल फी लफ़्ज़ि हिल्आख़र अन्नन्बिय्य (ﷺ) सल्ला बिल्मदीनति अर्बअन व बिजिल्हलीफ़ा रकअतैन (मिअत, जिल्द 2, सफ़ा : 256)

या'नी इमाम नववी (रह.) ने कहा कि क़स्र की कम से कम मुद्दत तीन मील है उन्होंने हदीषे अनस (रज़ि.) से दलील ली है। जिसमें है कि जब रसूले करीम (ﷺ) तीन मील या तीन फ़र्सख़ निकलते तो नमाज़ क़स्र करते।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) कहते हैं कि क़स्र के बारे में सहीहतरिन हदीष ये है कि जिन लोगों ने तीन मील को नहीं माना उन्होंने इस हदीष को ग़ायते सफ़र नहीं बल्कि इब्तिदा-ए-सफ़र पर महमूल किया है। या'नी ये मुराद है कि जब मुसाफ़िर का सफ़र लम्बी दूरी के लिये इरादा हो और वो तीन मील पहुँच जाए और नमाज़ का वक़्त आ जाए तो वो क़स्र कर ले जैसा कि हदीष में दूसरी जगह ये भी है कि रसूले करीम (ﷺ) जब सफ़रे हज़ के लिये निकले तो आपने मदीना में चार रकअतें पढ़ीं और जुलहुलेफ़ा में पहुँचकर आपने दो रकअत अदा की। इस बारे में लम्बी बहस के बाद आखिरी फ़ैसला हज़रत शैख़ुल हदीष मौलाना अब्दुल्लाह साहब (रह.) के लफ़्ज़ों में ये है वर्राजिह इन्दी माज़हब इलैहि अइम्मतुष़लायतु अन्नहू ला युक्स्सरुस्सलातु

फी अक़ल्लि मिन प्रमानियतिव्वं अर्बईन मीलन बिल्हाशमी व ज़ालिक अर्बअतु बुर्दिन अथ सिन्नत अशर फर्सखन व हिय मसीरतु यौमिन व लैलतिन बिस्सैरिल्हदीषि व ज़हब अक्वरु उलमाइ अहलिल्हदीषि फी अस्तिना मसाफतुल्कस्त्रि धलाषत फरासिखिन मुस्तदल्लीन लिज़ालिक हदीषु अनस अल्मुकद्दमु फी कलामिल्हाफ़िज़ (मिज़ात, जिल्द 2, सफ़ा : 256)

मेरे नज़दीक तर्ज़ीह उसी को हासिल है जो तीनों इमाम की है। वो ये कि अड़तालीस मील हाशमी से कम में क़स्र नहीं और ये चार बुर्द होते हैं या'नी सोलह फ़र्सख और रात और दिन के तेज़ सफ़र की यही हद होती है और हमारे ज़माने में अक़षर इलमा अहले हदीष उसी तरफ़ गए हैं कि क़स्र की मसाफ़त तीन फ़र्सख हैं (जिसके अड़तालीस मील होते हैं)। उनकी दलील हज़रत अनस (रज़ि.) की वही हदीष है जिसका पहले बयान हुआ और इब्ने कुदामा का रुहाने ज़ाहिर ये है कि कौल की तरफ़ है जो कहते हैं कि हर सफ़र ख़वाह वो क़स्र या तवील हो। उसमें क़स्र जाइज़ है, मगर इम्माअ के ये ख़िलाफ़ है (बल्लाहु अज़लम)

(1080) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अवाना वज़ाह्र युशकरी ने बयान किया, उनसे आसिम अहवाल और हुसैन सलमी ने, उनसे इकरिमा ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) (मक्का में फ़तहे मक्का के मौक़े पर) उन्तीस दिन ठहरे और बराबर क़स्र करते रहे। इसलिये उन्तीस दिन के सफ़र में हम भी क़स्र करते रहते हैं और उससे अगर ज़्यादा हो जाए तो पूरी नमाज़ पढ़ते हैं। (दीगर मक़ाम : 4298, 4299)

١٠٨٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَّالَةَ عَنْ عَاصِمٍ وَخُصَيْنٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ بِسَفَةِ عَشْرِ بَقْعَرٍ، فَتَحْنُ إِذَا سَافَرْنَا بِسَفَةِ عَشْرِ لَمَعَرْنَا، وَإِنْ رَدْنَا أَمَمْنَا)).

[طرفاء في ٤٢٩٨، ٤٢٩٩].

तशरीह : इस तर्जुमा में दो बातें बयान की गई हैं एक ये कि सफ़र में चार रक़अत नमाज़ को क़स्र करे या'नी दो रक़अतें पढ़ें दूसरे मुसाफ़िर अगर कहीं ठहरने की निय्यत कर ले तो जितने दिन तक ठहरने की निय्यत करे वो क़स्र कर सकता है।

इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम मालिक (रह.) का मज़हब ये है कि जब कहीं चार दिन ठहरने की निय्यत हो तो पूरी नमाज़ पढ़े। हन्फ़िया के नज़दीक 15 से कम में क़स्र करे। ज़्यादा की निय्यत हो तो नमाज़ पूरी पढ़े। इमाम अहमद और अबू दाऊद का मज़हब है कि चार दिन से ज़्यादा दिन ठहरने का इरादा हो तो पूरी नमाज़ पढ़े। इस्हाक़ बिन राहवै उन्तीस दिन से कम क़स्र बतलाते हैं और ज़्यादा की सूरत में नमाज़ पूरी पढ़ने का फ़त्वा देते हैं।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का भी मज़हब यही मा'लूम होता है हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब मुबारकपुरी (रह.) ने इमाम अहमद के मसलक को तर्ज़ीह दी है। (मिज़ात, जिल्द नं. 2 पेज नं. 256)

(1081) हमसे अबू मज़अमर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुइसेयह्या बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने अनस (रज़ि.) को ये कहते सुना कि हम मक्का के इरादे से मदीना से निकले तो बराबर नबी करीम (ﷺ) दो-दो रक़अत पढ़ते रहे यहाँ तक कि हम मदीना वापस आए। मैंने पूछा कि आपका मक्का में कुछ दिन क़याम भी रहा था? तो उसका जवाब अनस (रज़ि.) ने ये दिया कि दस दिन तक हम वहाँ ठहरे थे।

١٠٨١ - حَدَّثَنَا أَبُو مُعْزَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا يَحْيَى يَقُولُ: ((عَزَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مِنَ الْمَدِينَةِ إِلَى مَكَّةَ، فَكَانَ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ، حَتَّى رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ، قُلْتُ: أَقُمْتُمْ بِمَكَّةَ شَيْئًا؟ قَالَ: أَقُمْنَا بِهَا عَشْرًا)).

(दीगर मक़ाम : 4297)

[طرفه في : ٤٢٩٧]

बाब 2 : मिना में नमाज़ क़स्र करने का बयान

(1082) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यहा ने अब्दुल्लाह उमरी से बयान किया, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने, कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) अबूबक्र और उमर (रज़ि.) के साथ मिना में दो रकअत (घा'नी चार रकअत वाली नमाज़ों में) क़स्र पढ़ी। इब्मान (रज़ि.) के साथ भी उनके दौरे-ख़िलाफ़त के शुरू में ही दो रकअत पढ़ी थीं लेकिन बाद में आप (रज़ि.) ने पूरी पढ़ी थीं। (दीगर मक़ाम : 1655)

(1083) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमें अबू इस्हाक़ ने ख़बर दी, उन्होंने हारिज़ा से सुना और उन्होंने वहब (रज़ि.) से कि आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने मिना में हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई थी। (दीगर मक़ाम : 1606)

(1084) हमसे कुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उन्होंने कहा कि हमसे इब्नाहीम नउई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से सुना, वो कहते थे कि हमें इब्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि.) ने मिना में चार रकअत नमाज़ पढ़ाई थी, लेकिन जब उसका ज़िक्र अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से किया गया तो उन्होंने कहा कि इब्ना लिल्लाहि वइब्ना इलैहि राजिज़न। फिर कहने लगे मैंने तो नबी करीम (ﷺ) के साथ मिना में दो रकअत नमाज़ पढ़ी है और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के साथ भी मैंने दो रकअत ही पढ़ी हैं और उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के साथ भी दो ही रकअत पढ़ी थी काश मेरे हिस्से में उन चार रकअतों के बजाय दो मक्बूल रकअतें होतीं।

٢- بَابُ الصَّلَاةِ بِمِنَى

١٠٨٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِمِنَى رَكَعَتَيْنِ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَمَعَ عُثْمَانَ صَدْرًا مِنْ إِمَارَتِهِ، ثُمَّ أَتَمَّهَا)). [طرفه في : ١٦٥٥]

١٠٨٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَنَا أَبُو إِسْحَاقَ سَمِعْتُ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ قَالَ: ((صَلَّى بِنَا النَّبِيُّ ﷺ آمَنَ مَا كَانَ بِمِنَى رَكَعَتَيْنِ)).

[طرفه في : ١٦٥٦]

١٠٨٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَاحِدُ بْنُ زِيَادٍ عَنِ الْأَعْمَشِ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ يَقُولُ: ((صَلَّى بِنَا عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِمِنَى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ، فَقِيلَ ذَلِكَ لِأَبِي عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَاسْتَرْجَعَ ثُمَّ قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِمِنَى رَكَعَتَيْنِ، وَصَلَّيْتُ مَعَ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِمِنَى رَكَعَتَيْنِ، وَصَلَّيْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِمِنَى رَكَعَتَيْنِ، فَلَيْتَ خَطِي مِنْ أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ رَكَعَتَانِ

(दीगर मक़ाम : 1657)

[مُقَبَّلَاتَان]) . [طرفه في : 1657]

तशरीह :

हुजूर अकरम (ﷺ) और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) की मिना में नमाज़ का ज़िक्र इस वजह से किया कि आप हज़रात हज्ज के इरादे से जाते और हज्ज के अरकान अदा करते हुए मिना में भी क़याम किया होता। यहाँ सफ़र की हालत में होते थे इसलिये क़स्र करते थे। हुजूर अकरम (ﷺ), अबूबक्र और उमर (रज़ि.) का हमेशा यही मा'मूल रहा कि मिना में क़स्र करते थे। उम्मान (रज़ि.) ने भी इब्तिदाई दौर ख़िलाफ़त में क़स्र किया लेकिन बाद में जब पूरी चार रक़अतें आपने पढ़ी तो इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने इस पर सख़्त नागवारी का इज़हार किया। दूसरी रिवायतों में है कि हज़रत उम्मान (रज़ि.) ने भी पूरी चार रक़अत पढ़ने का उज़्र बयान किया था जिसका ज़िक्र आगे आ रहा है।

बाब 3 : हज्ज के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ)**ने कितने दिन क़याम किया था?**

(1085) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबुल आलिया बराअ ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मक्का को साथ लेकर तल्बिया कहते हुए ज़िलहिज्ज की चौथी तारीख़ को (मक्का में) तशरीफ़ लाए फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिनके पास हदी नहीं है वो बजाय हज्ज के उम्रा की निव्यत कर लें और उमरह से फ़ारिग होकर हलाल हो जाएँ फिर हज्ज का एहराम बाँधें। इस हदीस की मुताबअत अज़ा ने जाबिर से की है। (दीगर मक़ाम : 1564, 2505, 3832)

۳- بَابُ كَمْ أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فِي حَجَّتِهِ؟

۱۰۸۵- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَرٍّ عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ الثَّوْرِيِّ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَلِمَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ لَصِبحٍ رَابِعَةٍ يَلْبُثُونَ بِالْحَجِّ، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَحْفَلُوا غُرَفًا، إِلَّا مَنْ كَانَ مَعَهُ الْهَدْيُ)). ثَابِتَةُ غَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ.

[أطرفه في : 1657, 2505, 3832]

तशरीह :

क्योंकि आप चौथी ज़िलहिज्ज को मक्का मुअज्जमा पहुँचे थे और 14वीं को मदीना को वापस हुए तो मुहरे इक़ामत (ठहराव की अवधि) कुल दस दिन हुई और मक्का में सिर्फ़ चार दिन रहना हुआ बाकी दिन मिना व ग़ैरह में सफ़्र हुए। इसीलिये इमाम शाफ़िई (रह.) ने कहा कि जब मुसाफ़िर किसी मुक़ाम में चार दिन से ज़्यादा रहने की निव्यत करे तो पूरी नमाज़ पढ़े, चार दिन तक क़स्र करता रहे और इमाम अहमद ने कहा 21 नमाज़ों तक (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम)। पिछली रिवायत जिसमें आपका क़याम 21 दिन मजकूर है उसमें ये क़याम फ़तह मक्का से मुता'ल्लिक है।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं कि इमाम बुखारी (रह.) ने मशाज़ी में दूसरे तरीक़ से इक़ामत का मुक़ाम मक्का बयान फ़र्माया है जहाँ आपने 19 दिन क़याम फ़र्माया और आप नमाज़ें क़स्र करते रहे। मा'लूम हुआ कि क़स्र के लिये ये आखिरी हद है अगर उससे ज़्यादा ठहरने का फ़ैसला हो तो नमाज़ पूरी पढ़नी होगी और अगर कोई फ़ैसला न कर सके और तरहुद में आजकल आजकल करता रह जाए तो वो जब तक इस हालत में है क़स्र कर सकता है जैसा कि जादुल मआद में अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने बयान किया है, व मिन्हा अन्नहू (ﷺ) अक्राम बितबूक इश्रीन यौमन युक्सिरुसुल्लात व लय यकुल लिलउम्मत ला युक्सिरिरिजुलुसुल्लात इज़ा अक्राम अक्सर मिन ज़ालिक व लाकिन अन्फ़क़ इक्रामतहू हाज़िलमुदत व हाज़िलइक्रामतु फी हालातिससफ़र ला तख़रूजून अन हुक्मिससफ़रि सवाअन तालत औ कसुरत इज़ा कान गैर मुत्तवत्तिनिन व ला आज़िमिन अललइक्रामति बिज़ालिलमौज़इ. या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) तबूक में बीस दिन तक मुकीम रहे और नमाज़ें क़स्र फ़र्माते रहे और आपने उम्मत के लिये नहीं फ़र्माया कि उम्मत में से अगर किसी का उससे भी ज़्यादा कहीं (हालते सफ़र में) इक्रामत का मौक़ा आ जाए तो वो क़स्र न करे। ऐसा आपने कहीं नहीं फ़र्माया पर जब कोई शख्स सफ़र में किसी जगह बहैषियत वतन के न इक्रामत करे और न वहाँ इक्रामत का अज़म हो मगर आजकल में तरहुद रहे तो उसकी मुहते

इक़ामत कम हो या ज़्यादा वो बहरहाल सफ़र के हुक़म में है और नमाज़ क़स्र कर सकता है।

हाफ़िज़ ने कहा कि कुछ लोगों ने अहमद से इमाम अहमद बिन हंबल को समझा ये बिलकुल ग़लत है क्योंकि इमाम अहमद ने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से नहीं सुना। (वहीदी)

बाब 4 : नमाज़ कितनी मसाफ़त में क़स्र करनी चाहिये

नबी करीम (ﷺ) ने एक दिन और एक रात की मसाफ़त को भी सफ़र कहा है और अब्दुल्लाह इब्ने उमर और अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ि.) चार बुर्द (तक्सीबन अइतालीसी मील की मुसाफ़त) पर क़स्र करते और रोज़ा भी इफ़तार करते थे। चार बुर्द में सोलह फ़र्सख़ होते हैं (और एक फ़र्सख़ में तीन मील)

٤- بَابُ فِي كَمْ تَقْصُرُ الصَّلَاةَ
وَسَمَى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا وَلَيْلَةً، مَفْرًا
وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا يَقْصُرَانِ وَيَنْطَرَانِ فِي أَرْبَعَةِ بُرُودٍ،
وَهُوَ مِثْلَةُ عَشْرِ فَرَسَخَاتٍ.

तशरीह: इस तर्जुमे में दो बातें बयान की गई हैं। एक ये है कि सफ़र में चार रकअत नमाज़ को क़स्र करके यानी दो रकअत पढ़ें। दूसरे मुसाफ़िर अगर कहीं ज़्यादा ठहरने की निय्यत करे वो क़स्र कर सकता है। इमाम शाफ़िई, इमाम मालिक और इमाम अहमद का ये मज़हब है कि जब कहीं चार दिन ठहरने की निय्यत करे तो नमाज़ पूरी पढ़े और चार दिन से कम ठहरने की निय्यत हो तो क़स्र करे और हुन्फिया के नज़दोक 15 दिन से कम में क़स्र करे। 15 दिन या ज़्यादा ठहरने की निय्यत हो तो पूरी नमाज़ पढ़े और इस्हाक़ बिन राहवै का मज़हब ये है कि उन्नीस दिन से कम में क़स्र करता रहे। उन्नीस दिन या ज़्यादा ठहरने की निय्यत हो तो पूरी नमाज़ पढ़े। इमाम बुखारी (रह.) का भी यही मज़हब मा'लूम होता है।

इब्ने मुज़िर (रह.) ने कहा कि मसिब और फ़ज़ की नमाज़ में क़स्र नहीं है। (मौलाना वहीदुज़्जमाँ मरहूम)

बाब के तर्जुमे में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) जो हदीषे सहीह लाए हैं उसमें हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ही के मसलक की ताईद होती है। गोया इमाम (रह.) का फ़त्वा इस हदीष पर है। यहाँ का उन्नीस रोज़ का क़याम फ़तहे मक्का के मौक़े पर हुआ था। बाज़ रावियों ने इस क़याम को सिर्फ़ सत्रह दिन बतलाया है। गोया उन्होंने आने और जाने के दो दिन छोड़कर सत्रह दिन का शुमार किया और जिन्होंने दोनों का शुमार किया उन्होंने उन्नीस दिन बतलाए। इससे इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि सफ़र के लिये कम से कम एक दिन और रात की ज़रूरत है। हुन्फिया ने तीन दिन की दूरी को सफ़र कहा है। इस मसले में कोई बीस क़ौल है। इब्ने मुज़िर ने इनको नक़ल किया है। सहीह और मुख्तार मज़हब अहले हदीष का है हर सफ़र में क़स्र करना चाहिये जिसको उर्फ़ में सफ़र कहें उसकी कोई हद मुकर्रर नहीं। इमामे शाफ़िई, इमामे मालिक और इमाम औज़ाई का यही क़ौल है कि दो मंज़िल से कम में क़स्र जाइज़ नहीं। दो मंज़िल 48 मील होते हैं। एक मील छः हज़ार हाथ का। एक हाथ बीस उँगल छः जौ का (वहीदी) फ़त्हुल बारी में जुम्हूर का मज़हब ये नक़ल हुआ कि जब अपने शहर से बाहर हो जाए उसका क़स्र शुरू हो जाता है।

इमामे नववी (रह.) ने शरहे मुस्लिम में फ़ुक़हा-ए-अहले हदीष का भी यही मसलक नक़ल किया है कि सफ़र में दो मंज़िलों से कम में क़स्र जाइज़ नहीं और दो मंज़िलों के 48 मीले हाशमी होते हैं।

दाऊद ज़ाहिरी और दीगर अहले ज़ाहिर का मसलक ये है कि क़स्र करना बहरहाल जाइज़ है, सफ़र लम्बा हो कम। यहाँ तक कि अगर तीन मील का सफ़र हो तब भी ये हज़रात क़स्र को जाइज़ कहते हैं।

(1086) हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, उन्होंने अबू उसामा से, मैंने पूछा कि क्या आपसे अब्दुल्लाह उमरी ने नाफ़ेअ से ये हदीष बयान की थी कि उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने

١٠٨٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: قُلْتُ لَأَبِي
إِسْمَاعِيلَ: حَدَّثَكُمْ عَبْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ

नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान नक़ल किया था कि औरतें तीन दिन का सफ़र ज़ी-रहम महरम के बग़ैर न करें (अबू उसामा ने कहा हौं) (दीगर मक़ाम : 1087)

ज़ी-रहम महरम से मुराद वो शख़्स है, जिनसे औरत के लिये निकाह हुराम है अगर उनमें से कोई न हो तो औरत के लिये सफ़र करना जाइज़ नहीं। यहाँ तीन दिन की कैद का मतलब है कि इस मुद्त पर लफ़्ज़े सफ़र का इत्लाक़ किया गया और एक दिन और रात को भी सफ़र कहा गया है। तक्रीबन 48 मील पर अक़षर इतिफ़ाक़ है।

(1087) हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उन्होंने इब्नेदुल्लाह इमरी से बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें नाफ़ेअ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से ख़बर दी कि आपने फ़र्माया औरत तीन दिन का सफ़र उस वक़्त तक न करे। जब तक कि उसके साथ कोई महरम रिश्तेदार न हो। इस रिवायत की मुताबअत अहमद ने इब्ने मुबारक से की उनसे इब्नेदुल्लाह इमरी ने उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से। (राजेअ : 1087)

(1088) हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद मक्बरी ने अपने बाप से बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी ख़ातून के लिये जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखती हो, जाइज़ नहीं कि एक दिन-रात का सफ़र बग़ैर किसी ज़ी-रहम महरम के करे। इस रिवायत की मुताबअत यह्या बिन अबी क़षीर, सुहेल और मालिक ने मक्बरी से की। वो इस रिवायत को अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान करते थे।

तशरीह :

औरत के लिये पहली अह्दादीष में तीन दिन के सफ़र की मुमानअत वारिद हुई है। जबकि उसके साथ कोई ज़ी महरम न हो और इस हदीष में एक दिन और एक रात की मुद्त का ज़िक्र आया। दिन से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक्सद लफ़्ज़े सफ़र कम से कम और ज़्यादा से ज़्यादा हद बतलाना मक्सूद है। या'नी एक दिन-रात की मुद्त सफ़र को शरई सफ़र का इब्तिदाई हिस्सा और तीन दिन के सफ़र को आखिरी हिस्सा क़रार दिया है। फिर इससे जिस क़दर भी ज़्यादा हो तो पहले बतलाया जा चुका है कि अहले हदीष के यहाँ क़स्र करना सुन्नत है, फ़र्ज़ वाजिब नहीं है। हाँ ये ज़रूर है कि क़स्र अल्लाह की तरफ़ से एक स़दक़ा है जिसे कुबूल करना ही मुनासिब है।

ابن عمر رضي الله عنهما أن النبي ﷺ قال: ((لَا تُسَافِرُ الْمَرْأَةُ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا مَعَ ذِي مَحْرَمٍ)). (طهره في : ١٠٨٧).

١٠٨٧- حَدَّثَنَا مُسْنَدُ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ غَيْبِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَا تُسَافِرُ الْمَرْأَةُ ثَلَاثًا إِلَّا مَعَ ذُو مَحْرَمٍ)). ثَابِتُ أَحْمَدُ عَنْ ابْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ غَيْبِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع : ١٠٨٧]

١٠٨٨- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذَنْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا يَحِلُّ لِمَرْأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ تُسَافِرَ مَسِيرَةَ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ لَيْسَ مَعَهَا حُرْمَةٌ)). ثَابِتُ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ وَسُهَيْلٌ وَمَالِكٌ عَنْ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ.

बस्ती से निकल जाए तो कसर करे

और हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) (कूफ़ा से सफ़र के इरादे से) निकले तो नमाज़ कसर करनी उसी वक़्त से शुरू कर दी जब अभी कूफ़ा के मकानात दिखाई दे रहे थे और फिर वापसी के वक़्त भी जब आपको बताया गया कि ये कूफ़ा सामने है तो आप ने फ़र्माया कि जब तक हम शहर में दाख़िल न हो जाएँ नमाज़ पूरी नहीं पढ़ेंगे।

(1089) हमसे अबू नुएम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने, मुहम्मद बिन मुकदिर और इब्राहीम बिन मैसरा से बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के साथ मदीना मुनव्वरा में जुहर की चार रक़अत पढ़ी और जुल हुलैफ़ा में अज़र की दो रक़अत पढ़ी। (दीगर मक़ाम : 1546, 1547, 1548)

مَوْضِعِهِ
وَعَرَجَ عَلَيْنَا بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
لِقَصْرِ وَهُوَ يَرَى الثُّبُوتَ، فَلَمَّا رَجَعَ قِيلَ
لَهُ: هَلِ الْكُوفَةُ قَالًا، لَا، حَتَّى نَدْخُلَهَا.

١٠٨٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا
سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ وَإِبْرَاهِيمَ
بْنِ مَسْرَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:
(«صَلَّيْتُ الظُّهْرَ سِتْرَ رَسُولِ
اللَّهِ ﷺ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا وَالْعَصْرَ وَبِلَيْ
الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ»).

أَطْرَافِهِ فِي : ١٠٤٦، ١٠٤٧، ١٠٤٨

तशरीह : दीगर रिवायतों में है कि हज़रत अली (रज़ि.) शाम (सीरिया) जाने के इरादे से निकले थे। कूफ़ा छोड़ते ही आपने कसर शुरू कर दिया था। इसी तरह वापसी में कूफ़ा के मकानात दिखाई दे रहे थे लेकिन आपने उस वक़्त भी कसर किया। जब आपसे कहा गया कि अब तो कूफ़ा के पास आ गए तो फ़र्माया कि हम पूरी नमाज़ उस वक़्त न पढ़ेंगे जब तक कि हम कूफ़ा में दाख़िल न हो जाएँ। रसूल करीम (ﷺ) हज्ज के इरादे से मक्का जा रहे थे, जुहर के वक़्त तक आप (ﷺ) मदीना में थे उसके बाद सफ़र शुरू हो गया। फिर आप जब जुल हुलैफ़ा में पहुँचे तो अज़र का वक़्त हो गया था और वहाँ आपने अज़र चार रक़अत की बजाय दो रक़अत अदा की। जुल हुलैफ़ा मदीना से छः मील पर है।

इस हदीस से मा'लूम हुआ कि मुसाफ़िर जब अपने मुक़ाम से निकल जाए तो कसर शुरू कर दे। बाब का यही मतलब है।

(1090) हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने जुहरी से बयान किया, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि पहले नमाज़ दो रक़अत फ़र्ज हुई थी बाद में सफ़र की नमाज़ तो अपनी उसी हालत पर रह गई अलबत्ता हज़र की नमाज़ पूरी (चार रक़अत) कर दी गई। जुहरी ने बयान किया कि मैंने उर्वा से पूछा कि फिर ख़ुद हज़रत आइशा (रज़ि.) ने क्यूँ नमाज़ पूरी पढ़ी थी उन्होंने उसका जवाब ये दिया कि इब्मान (रज़ि.) ने उसकी जो तावील की थी वही उन्होंने भी की। (राज़ेअ : 350)

١٠٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ:
حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ
عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ:
(«الصَّلَاةُ أَوَّلُ مَا فُرِضَتْ رَكْعَتَانِ، فَأَقْرَبَتْ
صَلَاةَ السَّفَرِ، وَأَيَّمْتُ صَلَاةَ الْحَضَرِ»)
قَالَ الزُّهْرِيُّ : فَقُلْتُ لِعُرْوَةَ: مَا بَالُ
عَائِشَةَ تَبِمُ؟ قَالَ: تَأَوَّلْتُ مَا تَأَوَّلَ عُثْمَانُ.

हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने जब मीना में पूरी नमाज़ पढ़ी तो फ़र्माया कि मैंने ये इसलिये किया कि बहुत से आम मुसलमान जमा हैं। ऐसा न हो कि वो नमाज़ की दो ही रक़अत समझ लें। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी हज्ज के मौक़े पर नमाज़ पूरी पढ़ी और क़स्र नहीं किया। हालाँकि आप मुसाफ़िर थीं इसलिये आपको नमाज़ क़स्र करनी चाहिये थी। मगर आप सफ़र में पूरी नमाज़ पढ़ना बेहतर जानती थी और क़स्र को सज़्ज़त समझती थीं।

बाब 6 : मरिब की नमाज़ सफ़र में भी तीन ही रक़अत हैं

(1091) हमसे अबुल यमाल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, जुहरी से उन्होंने कहा कि मुझे सालिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से ख़बर दी आपने फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा जब सफ़र में चलने की जल्दी होती तो आप (ﷺ) मरिब की नमाज़ देर से पढ़ते यहाँ तक कि मरिब और इशा एक साथ मिलाकर पढ़ते। सालिम ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को भी जब सफ़र में जल्दी होती तो इस तरह करते। (दीगर मक़ाम : 1092, 1106, 1109, 1668, 1673, 1805, 3000)

(1092) लैज़ बिन सअद ने इस रिवायत में इतना ज़्यादा किया कि मुझसे यूनुस ने इब्ने शिहाब से बयान किया, कि सालिम ने बयान किया कि इब्ने उमर (रज़ि.) मुज़दलिफ़ा में मरिब और इशा एक साथ जमा करके पढ़ते थे। सालिम ने कहा कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने मरिब की नमाज़ उस दिन देर में पढ़ी थी जब उन्हें उनकी बीवी सफ़िया बिनते अबी इब्बैद की सख़्त बीमारी की इत्तिला मिली थी। (चलते हुए) मैंने कहा कि नमाज़! (या'नी वक़्त ख़त्म हुआ चाहता है) लेकिन आपने फ़र्माया कि चले चलो इस तरह जब हम दो या तीन मील निकल गए तो आप उतरे और नमाज़ पढ़ी फिर फ़र्माया कि मैंने खुद देखा है कि जब नबी करीम (ﷺ) सफ़र में तेज़ी के साथ चलना चाहते तो उसी तरह करते थे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने ये भी फ़र्माया कि मैंने खुद देखा कि जब नबी करीम (ﷺ) (मंज़िले मक़सूद तक) जल्दी पहुँचना चाहते तो पहले मरिब की तकबीर कहलवाते और आप उसकी तीन रक़अत पढ़ाकर सलाम फेरते। फिर थोड़ी देर ठहरकर इशा पढ़ाते और

٦- بَابُ السَّفَرِ الْمَقْرِبِ ثَلَاثًا فِي السَّفَرِ

١٠٩١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِذَا أُعْجِلَهُ السَّيْرُ فِي السَّفَرِ يُؤَخِّرُ الْمَقْرِبَ حَتَّى يَجْمَعَ بَيْنَهَا وَتَيْنِ الْعِشَاءِ)). قَالَ سَالِمٌ: وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ ﷺ يُعْجِلُهُ إِذَا أُعْجِلَهُ السَّيْرُ. (أَطْرَافُهُ فِي: ١١٠٩, ١١٠٦, ١٠٩٢)

[١٦٦٨, ١٦٧٣, ١٨٠٥, ٣٠٠٠]

١٠٩٢- وَزَادَ الثَّلَثُ قَالَ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ سَالِمٌ: (كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَجْمَعُ بَيْنَ الْمَقْرِبِ وَالْعِشَاءِ بِالْمُزْدَلِفَةِ) قَالَ سَالِمٌ: (وَأَخَّرَ ابْنُ عُمَرَ الْمَقْرِبَ، وَكَانَ اسْتُمْرَخَ عَلَى امْرَأَتِهِ صَفِيَّةَ بِنْتِ أَبِي عُبَيْدٍ، فَقُلْتُ لَهُ: الصَّلَاةُ. فَقَالَ: مِرْ. فَقُلْتُ لَهُ: الصَّلَاةُ، فَقَالَ: مِرْ. حَتَّى سَارَ مِائِينَ أَوْ ثَلَاثَةَ، ثُمَّ نَزَلَ فَصَلَّى ثُمَّ قَالَ: هَكَذَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي إِذَا أُعْجِلَهُ السَّيْرُ. وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ ﷺ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ إِذَا أُعْجِلَهُ السَّيْرُ يُعِيمُ الْمَقْرِبَ قِصَاصًا))

उसकी दो ही रकअत पर सलाम फेरते। इशा के फ़र्ज के बाद आप सुन्नतें वगैरह नहीं पढ़ते थे आधी रात के बाद खड़े होकर नमाज़ पढ़ते। (राजेअ: 1091)

لَا أَلَا ثُمَّ يُسَلِّمُ، ثُمَّ قَلَمًا يَنْتُ حَتَّى يُقِيمَ
الْعِشَاءَ فَيُصَلِّيَهَا رَكَعَتَيْنِ ثُمَّ يُسَلِّمُ، وَلَا
يُسَبِّحُ بَعْدَ الْعِشَاءِ حَتَّى يَقُومَ مِنْ جَوْفِ
اللَّيْلِ. [راجع: ١٠٩١]

बाब और हदीष में मुताबकत जाहिर है। आप (ﷺ) ने सफ़र में मरिब की तीन रकअत फ़र्ज नमाज़ अदा की।

बाब 7 : नफ़ल नमाज़ सवारी पर, अगरचे सवारी का रुख किसी तरफ़ हो

٧- بَابُ صَلَاةِ التَّطَوُّعِ عَلَى الدَّوَابِّ، وَحَيْثُمَا تَوَجَّهَتْ

(1093) हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे मअमर ने जुहरी से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन आमिर ने और उनसे उनके बाप ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि ऊँटनी पर नमाज़ पढ़ते रहते ख़वाह उसका मुँह किसी तरफ़ हो। (दीगर मक़ाम: 1097, 1104)

١٠٩٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا مَقْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَامِرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي عَلَى رَاحِلِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ)).
[طرفاه: ١٠٩٧، ١١٠٤]

प्राबित हुआ कि नफ़ल सवारी पर दुरुस्त हैं, इसी तरह वित्र भी। इमाम शाफ़िई, इमाम मालिक और इमाम अहमद और अहले हदीष का यही क़ौल है। इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक वित्र सवारी पर पढ़ना दुरुस्त नहीं।

(1094) हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शैबान ने कहा, उनसे यह्या ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुरहमान ने बयान किया कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) नफ़ल नमाज़ अपनी ऊँटनी पर ग़ैर क़िबला की तरफ़ मुँह करके भी पढ़ते थे। (राजेअ: 400)

١٠٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدٍ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّي التَّطَوُّعَ وَهُوَ رَاكِبٌ لِي غَيْرِ الْقِبْلَةِ)). [راجع: ٤٠٠]

ये वाकिआ ग़ज्व-ए-अन्मार का है, क़िबला वहाँ जाने वालों के लिये बाएँ तरफ़ रहता है। सवारी ऊँट और हर जानवर को शामिल है।

(1095) हमसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मूसा बिन इक्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हज़रत इब्ने इमर (रज़ि.) नफ़ल नमाज़ सवारी पर पढ़ते थे, उसी तरह वित्र भी। और फ़र्माते कि नबी (ﷺ) भी ऐसा करते थे। (राजेअ: 999)

١٠٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ خَمَادٍ قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُصَلِّي عَلَى رَاحِلِهِ وَيُؤَيِّرُ عَلَيْهَا. وَيَخْبِرُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَفْعَلُ)). [راجع: ٩٩٩]

बाब 8 : सवारी पर इशारे से नमाज़ पढ़ना

(1096) हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) सफ़र में अपनी कैंटनी पर नमाज़ पढ़ते ख़्वाह उसका मुँह किसी तरफ़ होता। आप इशारों से नमाज़ पढ़ते। आपका बयान था कि नबी करीम (ﷺ) भी उसी तरह करते थे। (राजेअ : 999)

बाब 9 : नमाज़ी फ़र्ज के लिये सवारी से उतर जाए

(1097) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैज़ ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ ने कि आमिर बिन रबीआ ने उन्हें ख़बर दी उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को कैंटनी पर नमाज़े नफ़ल पढ़ते देखा। आप (ﷺ) सर के इशारों से पढ़ रहे थे इसका ख़याल किये बग़ैर कि सवारी का मुँह किधर होता है लेकिन फ़र्ज नमाज़ों में आप इस तरह नहीं करते थे। (राजेअ : 1093)

(1098) और लैज़ बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि सालिम ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) सफ़र में रात के वक़्त अपने जानवर पर नमाज़ पढ़ते कुछ परवाह न करते कि उसका मुँह किस तरफ़ है। इब्ने इमर (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) भी कैंटनी पर नफ़ल नमाज़ पढ़ा करते चाहे उसका मुँह किधर ही हो और वित्र भी सवारी पर पढ़ लेते थे अलबत्ता फ़र्ज उस पर नहीं पढ़ते थे। (राजेअ : 999)

8- بَابُ الْإِيمَاءِ عَلَى الدَّائِيَةِ

١٠٩٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: ((كَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُصَلِّي فِي السَّفَرِ عَلَى رَاحِلَتِهِ أَيْنَمَا تَوَجَّهَتْ بِهُ يَوْمِيٌّ، وَذَكَرَ عَبْدُ اللَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَفْعَلُهُ)).

[راجع: ٩٩٩]

9- بَابُ يَنْزِلُ لِلْمَكْتُوبَةِ

١٠٩٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَامِرٍ بْنِ رَبِيعَةَ أَنَّ عَامِرَ بْنَ رَبِيعَةَ أَخْبَرَهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ عَلَى الرَّاحِلَةِ يُسَبِّحُ، يَوْمِيٌّ بِرَأْسِهِ قِيلَ أَيُّ وَجْهِ تَوَجَّهَ، وَلَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَصْنَعُ ذَلِكَ فِي الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ)). [راجع: ١٠٩٣]

١٠٩٨- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ سَالِمٌ: كَانَ عَبْدُ اللَّهِ يُصَلِّي عَلَى ذَائِبِهِ مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُسَافِرٌ، مَا يَبَالِي حَيْثُ كَانَ وَجْهَهُ. قَالَ ابْنُ عُمَرَ: وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُسَبِّحُ عَلَى الرَّاحِلَةِ قِيلَ أَيُّ وَجْهِ تَوَجَّهَ، وَيُؤَيِّرُ عَلَيْهَا، غَيْرَ أَنَّهُ لَا يُصَلِّي عَلَيْهَا الْمَكْتُوبَةَ.

[راجع: ٩٩٩]

बाब का तर्जुमा इस फ़िक्वे से निकलता है। मा'लूम हुआ फ़र्ज नमाज़ के लिये जानवर से उतरते क्योंकि वो सवारी पर दुरुस्त नहीं। इस पर इलमा का इन्माअ है। सवारी से ऊँट, घोड़े और ख़च्चर वग़ैरह मुराद है। रेल में नमाज़ दुरुस्त है।

(1099) हमसे मुआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने यह्या से बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन शौबान ने बयान किया, उन्होंने ने बयान किया कि मुझसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अपनी ऊँटनी पर मश्रिक की तरफ मुँह किये हुए नमाज़ पढ़ते थे और जब फ़र्ज़ पढ़ते तो सवारी से उतर जाते और फिर क़िबला की तरफ रुख करके पढ़ते। (राजेअ: 400)

١٠٩٩ - حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَصَّالَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ قُوتَبَانَ قَالَ: ((حَدَّثَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يُصَلِّيَ الْمَكْتُوبَةَ نَزَلَ لَأَسْتَظِلَّ الْقِبْلَةَ)).

[راجع: ٤٠٠]

इस हदीस से मा' लूम हुआ कि जो सवारी अपने इख्तियार में हो बहरहाल उसे रोककर फ़र्ज़ नमाज़ नीचे ज़मीन पर ही पढ़नी चाहिये (वल्लाहु अज़लम)

खातमा

लिल्लाहिल हम्दो वल मिन्नत कि शब व रोज़ मुसलसल सफ़र व हजर की मेहनते शाक्का के नतीजे में आज बुखारी शरीफ़ के पारा चार की तस्वीद से फ़रागत हासिल कर रहा हूँ। ये सिर्फ़ अल्लाह का फ़ज़ल है कि मुझ जैसा नाचीज़ इंसान इस अज़ीम इस्लामी मुकद्दस किताब की ये ख़िदमत अंजाम देते हुए इसका बामुहावरा तर्जुमा और जामेअतरीन तशरीहात अपने क़द्रदानों की ख़िदमत में पेश कर रहा है। अपनी बे बज़ाअती व हर कमज़ोरी की बिना पर अल्लाह ही बेहतर जानता है कि इस सिलसिले में कहाँ-कहाँ क्या-क्या लज़िशें हुई होंगी। अल्लाह पाक मेरी इन तमाम लज़िशों को मुआज़ फ़र्माए और इस ख़िदमत को कुबूल फ़र्माए और इसे न सिर्फ़ मेरे लिये बल्कि मेरे वालिदैन मरहूमौन व तमाम मुता'ल्लिकीन व मेरे तमाम असातिज़ा-ए-किराम, फिर जुम्ला क़द्रदानों के लिये जिनका मुझे दामे-दरमे-सुखने तआवुन हासिल रहा। इन सबके लिये इसको वज़ीलाते नजाते-आख़िरत बनाए और तौफ़ीक़ दे कि हम सब मिलकर इस किताबे मुकद्दस के तीस पारों की इशाअत इस नहज पर करके उर्दू-दाँ दीन पसंद तब्के के लिये एक बेहतरीन ज़ख़ीर-ए-मा' लूमाते दीन मुहय्या कर दें। इस सिलसिले में अपने असातिज़ा-ए-किराम और तमाम इलमा-ए-इज़ाम से भी पुरजोर और पुरखुलूस अपील करूँगा कि तर्जुमा व तशरीहात में अपनी ज़िम्मेदारियाँ पेशे-नज़र पूरे तौर पर मैंने हर मुम्किन तहक़ीक़ की कोशिश की है। मसाइले ख़िलाफ़िया में हर मुम्किन तफ़्सीलात को काम में लाते हुए मुख़ालिफ़ीन व मुवाफ़िक्कीन सबको अच्छे लफ़्ज़ों में याद किया है और मसलके मुहद्दिषीन (रह.) के बयान के लिये उम्दा से उम्दा अल्फ़ाज़ लाए गए हैं। फिर भी मुझको अपनी भूल-चूक पर नदामत है। अगर आप हज़रात को कहीं भी इल्मी, अख़लाक़ी कोई ख़ामी नज़र आए तो अल्लाह के वास्ते उस पर ख़ादिम को अज़ राहे इख़लास आगाह फ़र्माएँ। शुक्रिया के साथ आपके मश्वरे पर तवज्जह दी जाएगी और तबए घानी में हर मुम्किन इस्लाह की कोशिश की जाएगी। अपना मक्सद ख़ालिसतन फ़रामीने रिसालत को उनके असल मंशा के तहत उर्दू जुबान में मुंतक़िल करना है। इसके लिये ये किताब या'नी सहीह बुखारी मुस्तनद व मुअतमद किताब है जिसकी सिहत पर बेशतर अकाबिरे उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है।

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिनिअमतिहिस्सालिहात वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल्मुसलीन व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन बिरहमतिक या अर्हमररहिमीन.

ये अल्फ़ाज़ असल उर्दू किताब के मुसन्निफ़ अल्लामा दाऊद राज़ (रह.) ने चौथे पारे की तशरीह मुकम्मल हो जाने के बाद 24 रमज़ान 1388 हिजरी में उस वक़्त लिखे थे जब वे बंगलौर में मुक्कीम थे। अल्लाह तआला ने उनकी कोशिशों को शफ़े-कुबूलियत बख़शा और अल्लाह रब्बुल इज़त की तौफ़ीक़ से अल्लामा दाऊद (राज़.) ने मुकम्मल तीस पारों की तशरीह मुकम्मल करके उर्दू-दाँ हज़रात को नायाब तोहफ़ा दिया। आज वे हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, अल्लाह तआला उन्हें अज़े-अज़ीम से नवाज़े और जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम नसीब फ़र्माए, आमीन!

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पाँचवां पारा

बाब 10 : नफ़ल नमाज़ गधे पर बैठे हुए अदा करना

١٠- بَابُ صَلَاةِ التَّطَوُّعِ عَلَى الْحِمَارِ

1100. हमसे अहमद बिन सअद ने बयान किया, कहा कि हमसे हब्बान बिन हिलाल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माय बिन यह्या ने बयान किया, कहा कि हमसे अनस बिन सीरीन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अनस (रज़ि.) शाम से जब (हिजाज के ख़लीफ़ा से शिकायत करके) वापस हुए तो हम उन से अ़ननुत्तमर में मिले। मैंने देखा कि आप गधे पर सवार होकर नमाज़ पढ़ रहे थे और आपका मुँह क़िब्ला से बाएँ तरफ़ था। इस पर मैंने कहा कि मैंने आपको क़िब्ला के सिवा दूसरी तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हुए देखा है। उन्होंने जवाब दिया कि अगर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को ऐसा करते न देखता तो मैं भी न करता। इस रिवायत को इब्राहीम बिन तहमान ने भी हज़्जाज से, उन्होंने अनस बिन सीरीन से, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया है।

١١٠٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا حَبَّانُ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمْلَمٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ سِيرِينَ قَالَ: اسْتَقْبَلَنَا أَنَسٌ حِينَ قَدِمَ مِنَ الشَّامِ، فَلَقَيْنَاهُ بِعَيْنِ التَّمْرِ، فَرَأَيْنَاهُ يُصَلِّي عَلَى حِمَارٍ وَوَجْهَهُ مِنْ ذَا الْجَنَابِ - يَفْنَى عَنْ يَسَارِ الْقِبْلَةِ - فَقُلْتُ: ((رَأَيْتُكَ تُصَلِّي لِغَيْرِ الْقِبْلَةِ، فَقَالَ: لَوْ لَا أَنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَفْعَلُهُ لَمْ أَفْعَلْهُ)). وَرَوَاهُ ابْنُ طَهْمَانَ عَنْ خُجَّاجٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तशरीह: हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बस्रा से शाम (वर्तमान देश सीरिया) में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान के यहाँ हज़्जाज बिन यूसुफ़ ज़ालिम श्वफ़ी की शिकायत लेकर गए थे। जब लौटकर बस्रा आए तो अनस बिन सीरीन आपके इस्तिफ़ाल को गए और आपको देखा कि गधे पर अपनी नमाज़ इशारों से अदा कर रहे हैं और मुँह भी ग़ैर क़िब्ला की तरफ़ है। आपसे इस बाबत पूछा गया। फ़र्माया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को भी सवारी पर नफ़ल नमाज़ ऐसे ही पढ़ते देखा है। ये रिवायत मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से य़ूँ है, राइतु रसूलुल्लाहि (ﷺ) युसल्ली अला हिमारिन व हुव मुतव्वजिहुन इला ख़ैबर कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को देखा, आप (ﷺ) (नफ़ल नमाज़) गधे पर पढ़ रहे थे और आपका चेहरा-ए-मुबारक ख़ैबर की तरफ़ था।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस रिवायत को इब्राहीम बिन तहमान की सनद से नक़ल किया। हाफ़िज़ इब्ने (रह.)

हजर कहते हैं कि मुझको ये हदीष इब्राहीम बिन तह्पान के तरीक से मौसूलन नहीं मिली। अलबत्ता सिराज ने अम्र बिन आमिर से, उन्होंने हज्जाज से इस लफ्ज़ से रिवायत किया है कि आँहज़रत (ﷺ) अपनी ऊँटनी पर नमाज़ पढ़ते चाहे जिधर वो मुँह करती जो हज़रत अनस (रज़ि.) ने गधे पर नमाज़ पढ़ने को ऊँट के ऊपर पढ़ने पर क़यास किया। और सिराज ने यह्या बिन सईद से रिवायत किया, उन्होंने हज़रत अनस (रज़ि.) से कि उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को गधे पर नमाज़ पढ़ते देखा और आप (ﷺ) खैबर की तरफ़ मुँह किये हुए थे। अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं कि नमाज़ में क़िबले की तरफ़ मुँह करना बिल इज्माअ फ़र्ज़ है मगर जब आदमी आजिज़ हो या डर हो या नफ़ल नमाज़ हो तो इन हालात में ये फ़र्ज़ उठ जाता है। नफ़ल नमाज़ के लिये भी ज़रूरी है कि शुरू करते वक़्त नियत बाँधने पर मुँह क़िबला रख हो बाद में वो सवारी जिधर भी रख करे नमाज़े नफ़ल अदा करना जाइज़ है। ऐनुत्तमर एक गांव मुल्के शाम में इराक़ की तरफ़ वाकेअ है।

इस रिवायत से श्राबित हुआ कि किसी ज़ालिम हाकिम की शिकायत बड़े हाकिम को पहुँचाना मअयूब (बुरा) नहीं है और ये कि किसी बुजुर्ग के इस्तिफ़ाल के लिये चलकर जाना ऐन प्रवाब है और ये भी कि बड़े लोगों से छोटे आदमी मसाइल की तहक़ीक़ कर सकते हैं और ये भी श्राबित हुआ कि दलील पेश करने में रसूले करीम (ﷺ) की हदीष बड़ी अहमियत रखती है कि मोमिन के लिये उससे आगे गुंजाइश नहीं। इसलिये बिलकुल सच कहा गया है,

‘असल दीन आमद कलामुल्लाह मुअज़्जम दाशतन

पस हदीषे मुस्तफ़ा बरज़ौ मुसल्लम दाशतन’

या’नी दीन की बुनियाद ही ये है कि कुआन मजीद को हद दर्ज़ा क़ाबिले ता’ज़ीम कहा जाए और अह्दादीषे नबवी को दिलो-जान से तस्लीम किया जाए।

बाब 11 : सफ़र में जिसने फ़र्ज़ नमाज़ से पहले और पीछे सुन्नतों को नहीं पढ़ा

1101. हमसे यह्या बिन सुलैमान क़फ़ी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन युहैब ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमर बिन मुहम्मद बिन यज़ीद ने बयान किया कि हफ़स बिन आसिम बिन इमर ने उनसे बयान किया कि मैंने सफ़र में सुन्नतों के मुता‘ल्लिक अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से पूछा, आपने फ़र्माया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की सुहबत में रहा हूँ। मैंने आप (ﷺ) को सफ़र में कभी सुन्नतें पढ़ते नहीं देखा और अल्लाह जल्ल ज़िक्क़रू का इशार्द है कि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है।

(दीगर मक़ाम : 1102)

मा’लूम हुआ कि सफ़र में ख़ाली फ़र्ज़ नमाज़ की दो रक़अतें जुहर और असर में काफ़ी है। सुन्नत न पढ़ना भी खुद आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत है।

1102. हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे ईसा बिन हफ़स बिन

١١ - بَابُ مَنْ لَمْ يَتَطَوَّعْ فِي

السَّفَرِ دُبْرَ الصَّلَاةِ وَقَبْلَهَا

١١٠١ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَنَّ حَفْصَ بْنَ عَاصِمٍ حَدَّثَهُ قَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ: صَحِبْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَلَمْ أَرَهُ يُسَبِّحُ فِي السَّفَرِ، وَقَالَ اللَّهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُمُوءَةٌ حَسَنَةٌ﴾.

[طرفه ١: ١١٠٢]

١١٠٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى

بْنُ عِيْسَى بْنُ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ قَالَ:

आसिम ने, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) को ये फ़र्माते सुना कि मैं रसूलुल्लाह की मुहबत में रहा हूँ, आप (ﷺ) सफ़र में दो रक़अत (फ़र्ज़) से ज़्यादा नहीं पढ़ा करते थे। अबूबक्र, इमर और इम्मान (रज़ि.) भी ऐसा ही करते थे।

(राजेअ : 1101)

خَدَّثَنِي أَبِي أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: صَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، فَكَانَ لَا يَزِيدُ فِي السَّفَرِ عَلَى رَكْعَتَيْنِ، وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرُ وَغُفْمَانُ كَذَلِكَ، رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ)).

[راجع: 1101]

तरीह: दूसरी रिवायत मुस्लिम शरीफ में यूँ है, सहिबुब्न इमर की तरीकी मक्कत फ़सल्ल बिना अज्जुहरा रक़अतैनि शुम्म अक्बल व अक्बलना मअहू हत्ता जाअ रिहलुहू व जलस्ना मअहू फाहनत मिन्हुत्तफाततु फराअ नासन क्रियामन फ़क़ाल मा यस्नइ हाउलाइ कुल्लतु युसबिहून क़ाल लौ कुन्तु मुसबिहन लअत्मन्तु (कस्तलानी रह.) हफ़्स बिन आसिम कहते हैं कि मैं मक्का शरीफ़ के सफ़र में हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के साथ था। आपने जुहर की दो रक़अत फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ाई फिर कुछ लोगों को देखा कि वो सुन्नत पढ़ रहे हैं। आपने कहा कि अगर मैं सुन्नत पढ़ूँ तो फिर फ़र्ज़ ही क्यों न पूरी पढ़ लूँ। अगली रिवायत में मज़ीद वज़ाहत मौजूद है कि रसूले करीम (ﷺ) और अबूबक्र और इमर और इम्मान (रज़ि.) सबका यही अमल था कि वो सफ़र में नमाज़ क़सर करते थे और उन दो रक़अते फ़र्ज़ के अलावा कोई सुन्नत नहीं पढ़ते थे। बहुत से नावाकिफ़ भाईयों को देखा जाता है कि वो अहले हदीष के इस अमल पर तअज्जुब किया करते हैं बल्कि कुछ तो इन्हारे नफ़रत से भी नहीं चूकते और उन लोगों को खुद अपनी नावाकिफ़ी पर अफ़सोस करना चाहिये और मा'लूम होना चाहिये कि हालांते सफ़र में जब फ़र्ज़ नमाज़ को क़सर किया जा रहा है फिर सुन्नत नमाज़ों का ज़िक्र ही क्या है?

बाब 12 : फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद और अठ्ठल की सुन्नतों के अलावा और दूसरे नफ़ल सफ़र में पढ़ना और नबी करीम (ﷺ) ने सफ़र में फ़र्ज़ की सुन्नतों को पढ़ा है

1103. हमसे हफ़्स बिन इमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे इमर बिन मुरा ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने, उन्होंने कहा कि हमें किसी ने ये ख़बर नहीं दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को उन्होंने चाशत की नमाज़ पढ़ते देखा, हाँ उम्मे हानी (रज़ि.) का बयान है कि फ़तहे मक्का के दिन नबी करीम (ﷺ) ने उनके घर गुस्ल किया था और उसके बाद आप (ﷺ) ने आठ रक़अत पढ़ी थीं। मैंने आप (ﷺ) को कभी इतनी हल्की-फुल्की नमाज़ पढ़ते नहीं देखा, अलबत्ता आप (ﷺ) रुकूअ और सज्दा पूरी तरह करते थे।

(दीगर मक़ामात : 1176, 4292)

١٢- بَابُ مَنْ تَطَوَّعَ فِي السَّفَرِ فِي غَيْرِ دُبْرِ الصَّلَاةِ وَقَبْلَهَا وَرَكَعَ النَّبِيُّ ﷺ رَكَعَتَيِ الْفَجْرِ فِي السَّفَرِ

١١٠٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عُمَرَ عَنْ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: مَا أَبَانَا أَحَدٌ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى الطَّحَى، غَيْرَ أَمِّ هَانِيَةٍ ذَكَرْتُ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ قُبْحِ مَكَّةَ اغْتَسَلَ فِي بَيْتِهَا فَصَلَّى ثَمَانِ رَكَعَاتٍ، فَمَا رَأَيْتُهُ صَلَّى صَلَاةً أَخَفَّ مِنْهَا، غَيْرَ أَنَّهُ يُتِمُّ الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ)).

[طرفاء: 1176, 4292]

1104. और लैल बिन सअद (रह.) ने कहा कि मुझसे यूनुस ने

١١٠٤- وَقَالَ الثَّيْتُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ

बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ ने बयान किया कि उन्हें उनके बाप ने खबर दी कि उन्होंने खुद देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (रात में) सफ़र में नफ़ल नमाज़ें सवारी पर पढ़ते थे, वो जिधर आप (ﷺ) को ले जाती उधर ही सही।

(राजेअ: 1093)

इससे आँहज़रत (ﷺ) का सफ़र में नफ़ल पढ़ना प्राबित हुआ। चाश्त की नमाज़ भी प्राबित हुई। अगर हुज़ूर (ﷺ) से उग्रप्रार कोई काम सिर्फ़ एक ही दफ़ा करना प्राबित हो तो वो भी उम्मत के लिये सुन्नत है और चाश्त के लिये तो और भी धुबूत मौजूद हैं। हज़रत उम्मे हानी ने सिर्फ़ अपने देखने का हाल बयान किया है। जाहिर है कि हज़रत उम्मे हानी को हर वक़्त आप (ﷺ) के मा' मूलात देखने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ।

1105. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुरेब ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने और उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन इमर ने अपने बाप अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी कैटनी पर ख़वाह उसका मुँह किस तरफ़ होता, नफ़ल नमाज़ सर के इशारों से पढ़ते थे। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) भी इसी तरह किया करते थे।

(राजेअ: 999)

عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَامِرٍ أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى السُّبْحَةَ بِاللَّيْلِ فِي السَّفَرِ عَلَى ظَهْرِ رَاحِلَتِهِ حَتَّى تَوَجَّهَتْ بِهِ. (راجع: ١٠٩٣)

[راجع: 1093]

١١٠٥ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُسَبِّحُ عَلَى ظَهْرِ رَاحِلَتِهِ حَتَّى كَانَ وَجْهَهُ، يُوسِيءُ بِرَأْسِهِ. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقَعْلُهُ.)) (راجع: ٩٩٩)

[راجع: 999]

मतलब इमाम बुखारी (रह.) का ये है कि सफ़र में आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्ज़ नमाज़ों के अब्बल और बाद की सुनने रातिबा नहीं पढ़ी है और हर किस्म के नवाफ़िल जैसे इशराक़ वग़ैरह सफ़र में पढ़ना मन्कूल है और फ़र्ज़ की सुन्नतों का सफ़र में अदा करना भी प्राबित है।

क्रालब्नुल्क्रयिम फिलहुदा व कान मिन्हदयिही (ﷺ) फी सफ़रिही अल्इक्ति सारू अलल्फजि वलम यहफज अन्हु अन्नहू (ﷺ) मल्ला सुन्नतमसलाति कबलहा व बअद्हा इल्ला मा कान मिन सुन्नतिल्वितरि वल्फजि फइन्नहू लम थकुन यदअहा हज़रन वला सफरन इन्तिहा (नेलुल औतार) या'नी अल्लामा इब्ने क्रयिम (रह.) ने अपनी मशहूर किताब ज़ादुल मज़ाद में लिखा है कि आँहज़रत (ﷺ) की सीरते मुबारक से ये भी है कि हालते सफ़र में आप (ﷺ) सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ की क़स्र रकअतों पर इक्तिफ़ा करते थे और आप (ﷺ) से प्राबित नहीं है कि आप (ﷺ) ने सफ़र में वित्र और फ़र्ज़ की सुन्नतों के सिवा और कोई नमाज़ अदा की हो। आप (ﷺ) उन दोनों को सफ़र और हज़र में बराबर पढ़ा करते थे। फिर अल्लामा इब्ने क्रयिम (रह.) ने इन रिवायात पर रोशनी डाली है जिनसे आँहज़रत (ﷺ) का हालते सफ़र में नमाज़े नवाफ़िल पढ़ना प्राबित होता है।

व क़द सुइलल्इमामु अहमद अनित्ततव्वुइ फिस्सफ़रि फक़ाल अर्जू अल्ला थकूनु बिन्नतव्वुइ फिस्सफ़रि बास. या'नी इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) से सफ़र में नवाफ़िल के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि सफ़र में नवाफ़िल अदा करने में कोई बुराई नहीं है। मगर सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अमल करना बेहतर और मुक़द्दम है। पस दोनों उमूर प्राबित हुए कि तर्क में भी कोई बुराई नहीं और अदायगी में भी कोई हर्ज़ नहीं। व क्रालल्ल्लाहु तअल्ला मा जअल अलैकुम फिद्दीनि मिन हरजिन वल्हम्दु लिल्ल्लाहि अला नअमाइहिल्कामिला.

मिलाकर पढ़ना

1106. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया उन्होंने कहा कि मैंने जुहरी से सुना, उन्होंने सालिम से और उन्होंने अपने बाप अब्दुल्लाह बिन इमर से कि नबी अकरम (ﷺ) को अगर सफ़र में जल्द चलना मंज़ूर होता तो मरिब और इशा एक साथ मिलाकर पढ़ते। (राजेअ 1091)

1107. और इब्राहीम बिन तह्मान ने कहा कि उनसे हुसैन मुअल्लिम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कप्रीर ने बयान किया, उनसे इकिमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सफ़र में जुहर व अस्त्र की नमाज़ एक साथ मिलाकर पढ़ते। इसी तरह मरिब और इशा की भी एक साथ मिलाकर पढ़ते थे।

1108. और इब्ने तह्मान ही ने बयान किया कि उनसे हुसैन ने, उनसे यह्या बिन अबी कप्रीर ने, उनसे हफ़स बिन इब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) सफ़र में मरिब और इशा एक साथ मिलाकर पढ़ते थे। इस रिवायत की मुताबअत अली बिन मुबारक और हर्ब ने यह्या से की है। यह्या, हफ़स से और हफ़स, अनस (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने (मरिब और इशा) एक साथ मिलाकर पढ़ी थीं।

(दीगर मक़ाम : 1110)

الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ

۱۱۰۶- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَجْمَعُ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ إِذَا جَدَّ بِهِ السَّيْرُ)). [راجع: ۱۰۹۱]

۱۱۰۷- وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ الْحُسَيْنِ الْمُعَلِّمِ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَجْمَعُ بَيْنَ صَلَاةِ الظُّهْرِ وَالْمَغْرِبِ إِذَا كَانَ عَلَى ظَهْرِ سَيْرٍ، وَيَجْمَعُ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ)).

۱۱۰۸- حَدَّثَنَا وَعَنْ حُسَيْنٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ أَنَّ اللَّهَ بْنَ أَنَسٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَجْمَعُ بَيْنَ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ فِي السَّفَرِ)).

وَتَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ وَخُزَيْمٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ حَفْصِ بْنِ أَنَسٍ ((جَمَعَ النَّبِيُّ ﷺ)).

[طهره ۱: ۱۱۱۰]

तशरीह : इमाम बुखारी (रह.) जमा का मसला क़स्र के अब्बाब में इसलिये लाए कि जमा भी गोया एक तरह का क़स्र ही है। सफ़र में जुहर, अस्त्र और मरिब-इशा का जमा करना अहले हदीष और इमाम अहमद, शाफ़िई, प्रोरी, इमाम इस्हाक (रह.) सबके नज़दीक जाइज़ है। ख्वाह जमा तक्दीम करें या'नी जुहर के वक़्त, अस्त्र और मरिब के वक़्त इशा पढ़ लें। ख्वाह जमा ताखीर करे या'नी अस्त्र के वक़्त जुहर और इशा के वक़्त मरिब भी पढ़ लें। इस बारे में मज़ीद तपसीर मन्दर्जा ज़ेल अह्दादीष से मा'लूम होती है,

अन मज़ाजिबि जबलिन (रज़ि.) कानन्नबिय्यु (ﷺ) फी ग़ज़वति तबूक इज़ा ज़ागतिशशम्सु क़ब्ल अय्यतंहिल जमअ बैनज्जुहरि वलअस्त्रि व इनिर्तहल क़ब्ल अन तज़ीगशशम्सु अख़खरज्जुहर हत्ता यन्ज़िल लिलअस्त्रि व फिल्मरिबि मिस्ला ज़ालिक इज़ा गाबजिशशम्सु क़ब्ल अय्यतंहिल जमअ बैनल्मगरिबि वल्इशाइ

व इन इर्तहल क़बल अन तगीब शम्सु अख़रल्मगरिब हत्ता यन्ज़िल लिल्इशाइ शुम्प यज्मउ बैनहुमा र्वाहु अबू दाऊद वत्तिर्मिजी व क़ाल हाज़ा हदीधुन हसनन ग़रीब या'नी मुआज़ बिन जबल कहते हैं कि ग़ज़्व-ए-तबूक में आँहज़रत (ﷺ) अगर किसी दिन कूच करने से पहले सूरज ढल जाता तो आप जुहर और अस्र मिलाकर पढ़ लेते। (जिसे जमा तक्दीम कहा जाता है) और अगर कभी आप (ﷺ) का सफ़र सूरज ढलने से पहले ही शुरू हो जाता तो जुहर और अस्र मिलाकर पढ़ते (जिसे जमा ताख़ीर कहा जाता है)। मरिब में भी आप (ﷺ) का यही अमल था। अगर कूच करते वक़्त सूरज ग़ुरूब हो चुका होता तो आप (ﷺ) मरिब और इशा मिलाकर पढ़ लेते थे और अगर सूरज ग़ुरूब होने से पहले ही सफ़र शुरू हो जाता तो फिर मरिब को देर करके इशा के साथ मिलाकर अदा करते थे। मुस्लिम शरीफ़ में भी यही रिवायत मुख़्तसर मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक में जुहर और अस्र और मरिब और इशा मिलाकर पढ़ लिया करते थे।

एक और हदीष हज़रत अनस (रज़ि.) से मरवी है जिसमें मुत्लक सफ़र का ज़िक्र है और साथ ही हज़रत अनस (रज़ि.) ये भी बयान करते हैं कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़र्तहल क़बल अन तज़ीग़ शम्सु अख़रल्मज़ुहर इला वत्तिलअसि अल्हदीष या'नी सफ़र में आँहज़रत (ﷺ) का यही मा'मूल था कि अगर सफ़र सूरज ढलने से पहले शुरू होता तो आप (ﷺ) जुहर में अस्र को मिला लिया करते थे और अगर सूरज ढलने के बाद सफ़र शुरू होता तो आप (ﷺ) जुहर को अस्र के साथ मिलाकर सफ़र शुरू करते थे।

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी ऐसा ही मरवी है उसमें मज़ीद ये है कि क़ाल सईदुन फ़कुल्लु लिइब्नि अब्बास मा हम्मलहु अला ज़ालिक क़ाल अराद अल्ला युहरिज उम्मतहु (र्वाहु मुस्लिम, सफ़ा : 246) या'नी सईद ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से उसकी वजह पूछी तो उन्होंने कहा आप (ﷺ) ने ये इसलिये किया ताकि उम्मत तंगी में न पड़ जाए।

इमाम तिर्मिजी (रह.) फ़रमते हैं कि इस बारे में हज़रत अली और इब्ने उमर और अनस और अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत आइशा और इब्ने अब्बास और उसामा बिन ज़ैद और जाबिर (रज़ि.) से भी मरवियात हैं। इमाम शाफ़िई, इमाम अहमद और इमाम इस्हाक़ राहवै यही कहते हैं कि सफ़र में दो नमाज़ों का जमा करना ख़्वाह जमा तक्दीम हो या ताख़ीर बिला खौफ़ो-ख़तर जाइज़ है।

अल्लाम नववी (रह.) ने शरहे मुस्लिम में, इमाम शाफ़िई (रह.) और अक़षर लोगों का क़ौल नक़ल किया है कि सफ़रे तवील में जो 48 मील हाशमी पर बोला जाता है, जमा तक्दीम और जमा ताख़ीर दोनों तौर पर जमा करना जाइज़ है। और छोटे सफ़र के बारे में इमाम शाफ़िई (रह.) के दो क़ौल हैं और उनमें ज़्यादा सही क़ौल ये है कि जिस सफ़र में नमाज़ का क़स्र करना जाइज़ नहीं उसमें जमा भी जाइज़ नहीं है। अल्लामा शौकानी (रह.) दुर्इल बहिय्या में फ़रमते हैं कि मुसाफ़िर के लिये जमा तक्दीम व जमा ताख़ीर दोनों तौर पर जमा करना जाइज़ है। ख़्वाह अज़ान और इक़ामत से जुहर में अस्र को मिलाए या अस्र के साथ जुहर को मिलाए। इस तरह मरिब के साथ इशा पढ़े या इशा के साथ मरिब मिलाए। हन्फ़िया के यहाँ सफ़र में जमा करके पढ़ना जाइज़ नहीं है। उनकी दलील अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) वाली रिवायत है जिसे बुखारी और मुस्लिम और अबू दाऊद और निसाई ने रिवायत किया है कि मैंने मुजदलिफ़ा के सिवा कहीं नहीं देखा कि आँहज़रत (ﷺ) ने दो नमाज़ें मिलाकर अदा की हों। इसका जवाब साहिबे मस्तक़िल ख़िताम ने यूँ दिया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का ये बयान हमारे मक्सूद के लिये हर्गिज़ मुज़िर नहीं है कि यही अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) अपने इस बयान के खिलाफ़ बयान दे रहे हैं जैसा कि मुहदिष सलामुल्लाह ने मुहल्ला शरहे मुअत्ता इमाम मालिक ने मुस्नद अबी से नक़ल किया है कि अबू कैस अज़दी कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि आँहज़रत (ﷺ) सफ़र में दो नमाज़ों को जमा करके पढ़ा करते थे। अब इनके पहले बयान में नफ़ी है और इसमें इस्बात है और काइदा-ए-मुकऱरा की रू से नफ़्ती पर इस्बात मुक़द्म होता है। लिहाज़ा प्राबित हुआ कि इनका पहला बयान सिर्फ़ निस्थान की वजह से है। दूसरी दलील ये दी जाती है कि अल्लाह पाक ने कुआन मज़ीद में फ़र्माया, **इनस्सलात कानत अलल्मुअमिनीन किताबम्माक़ूता** (अन् निसा : 103) या'नी मोमिनों पर वक़्ते मुकऱरा में फ़र्ज़ है। इसका जवाब ये है कि आँहज़रत (ﷺ) कुआन मज़ीद के मुफ़स्सिरे अव्वल हैं और आप (ﷺ) के अमल से नमाज़ में जमा प्राबित है। मा'लूम हुआ कि ये जमा भी वक़्ते मुवक़्त ही में दाख़िल है वरना आयत

को अगर मुत्तलक माना जाए तो फिर मुजदलिफा में भी जमा करना जाइज़ नहीं होगा। हालाँकि वहाँ के जमा पर हनफी, शाफिई और अहले हदीष सबका इतेफाक है। बहरहाल अमे प्राबित यही है कि सफ़र में जमा तक्दीम व ताखीर दोनों सूरतों में जाइज़ है।

वक्तदखा मुस्लिमुन अनजाबिरिन अन्नहू (रज़ि.) जमअ बैनज़ुहुरि वलअस्सि बिअरफत फी वक्त्रिज़ुहुरि फ लौ लम यरिद मिन फिअलिही इल्ला हाज़ा लकान अदुल्लु दलीलिन अला जवाज़ि जम्इततक्दीमि फिस्सफरि (क़स्तलानी जिल्द 2, सफ़ा : 249) या'नी इमाम मुस्लिम ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि रसूले करीम (ﷺ) ने जुहर और अस्त्र को नमाज़ों को अफ़ा में जुहर के वक़्त में जमा करके अदा किया, पस अगर आँहज़रत (ﷺ) से सिर्फ़ इसी मौके पर सहीह रिवायत से जमा प्राबित हुआ। यही बहुत बड़ी दलील है कि जमा तक्दीम सफ़र में जाइज़ है।

अल्लामा क़स्तलानी (रह.) ने इमामे जुहरी का ये क़ौल नक़ल किया है कि उन्होंने सालिम से पूछा कि सफ़र में जुहर और अस्त्र का जमा करना कैसा है? उन्होंने कहा कि बिला शक जाइज़ है, तुम देखते नहीं कि अरफ़ात में लोग जुहर और अस्त्र मिलाकर पढ़ते हैं।

फिर अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़रमाते हैं कि जमा तक्दीम के लिये ज़रूरी है कि पहले अव्वल वाली नमाज़ पढ़ी जाए। मसलन जुहर और अस्त्र को मिलाना है तो पहले जुहर अदा की जाए और ये भी ज़रूरी है कि निय्यत भी पहले जुहर अदा करने की जाए और ये भी ज़रूरी है कि इन दोनों नमाज़ों को पे दर पे पढ़ा जाए। बीच में किसी सुन्नते रातिबा से फ़स्ल न हो। आँहज़रत (ﷺ) ने जब नमरा में जुहर और अस्त्र को जमा किया तो व इला बैनिहिमा व तरकरवातिब व अक्रामस्सलात बैनहुमा व रवाहुशशैखान आप (ﷺ) ने उनको मिलाकर पढ़ा बीच में कोई सुन्नत नमाज़ नहीं पढ़ी और दरम्यान में तक्बीर कही। इसे बुखारी, मुस्लिम ने भी रिवायत किया है। (हवाला मज़कूर)

इस बारे में अल्लामा शौकानी (रह.) ने यूँ बाब मुनअकिद किया है, बाबुन : अलजम्अ बिअज़ानिन व इक्रामतैन मिन गैर ततव्वुइन बैनहुमा या'नी नमाज़ को एक अज़ान दो इक्रामतों के साथ जमा करना और उनके बीच कोई नफ़िल नमाज़ न पढ़ना फिर आप इस बारे में बतौर दलील हदीषे ज़ेल को लाए हैं,

अनिब्नि उमर अन्नन्नबिय्य (रज़ि.) सल्लल्लमग़रिब वल्इशाअ बिल्मुज्दलिफति जमीअन कुल्ल वाहिदतिम्मिन्हुमा बिइक्रामतिन व लम युसब्बिह बैनहुमा व ला अला अघ्रि वाहिदतिम्मिन्हुमा रवाहुलबुखारी वन्नसई अनिब्नि उमर अन्नन्नबिय्य (रज़ि.) सल्लल्लमग़रिब वल्इशाअ बिल्मुज्दलिफति जमीअन कुल्ल वाहिदतिम्मिन्हुमा बिइक्रामतिन व लम युसब्बिह बैनहुमा व ला अला अघ्रि वाहिदतिम्मिन्हुमा रवाहुलबुखारी वन्नसई या'नी हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि मुजदलिफा में आँहज़रत (ﷺ) ने मसिब और इशा को अलग-अलग इक्रामत के साथ जमा किया और न आप (ﷺ) ने इनके बीच कोई नफ़िल नमाज़ अदा की और न उनके आगे-पीछे। जाबिर की रिवायत से मुस्लिम और अहमद और निसाई में इतना और ज़्यादा है, सुम्म इज़तज़अ हत्ता तलअल्फज़ु फिर आप (ﷺ) लेट गए यहाँ तक कि फ़ज़ हो गई।

बाब 14 : मसिब और इशा मिलाकर पढ़े तो क्या उनके लिये अज़ान व तक्बीर कही जाएगी

1109. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को जब जल्दी सफ़र तय करना होता तो मसिब की नमाज़ मुआख़्खर कर देते। फिर इशा के साथ मिलाकर पढ़ते थे। सालिम ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) भी अगर सफ़र सुरअत (तेज़ी) के साथ तय करना चाहते तो इसी तरह करते थे। मसिब की तक्बीर पहले कही जाती और आप तीन रकअत मसिब की नमाज़ पढ़कर सलाम फेर देते। फिर मा' मूली से तवक्कुफ़ के

١٤ - بَابُ هَلْ يُؤَدُّنْ أَوْ يَقِيمُنْ، إِذَا جَمَعَ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ؟

١١٠٩ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِذَا أَعَجَلَهُ السَّيْرُ فِي السَّفَرِ يُؤَخِّرُ صَلَاةَ الْمَغْرِبِ حَتَّى يَجْمَعَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ الْعِشَاءِ. قَالَ سَالِمٌ: وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ يَقَعْلُهُ إِذَا أَعَجَلَهُ

बाद इशा की तक्बीर कही जाती और आप उसकी दो रकअत पढ़कर सलाम फेर देते। दोनों नमाज़ों के दरम्यान एकरकअत भी सुन्नत वगैरह न पढ़ते और इसी तरह इशा के बाद भी नमाज़ नहीं पढ़ते थे। यहाँ तक कि दरम्याने-शब में आप उठते (और तहज्जुद अदा करते)।

(राजेअ: 1091)

1110. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुस्समद बिन अब्दुल वारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हर्ब बिन सहाद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यझा बिन अबी कज़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे हफ़्स बिन अब्दुल्लाह बिन अनस ने बयान किया कि अनस (रज़ि.) ने उनसे ये बयान किया कि रसूलुल्लाह इन दो नमाज़ों या'नी मरिब और इशा को सफ़र में एक साथ मिलाकर पढ़ा करते थे। (राजेअ: 1108)

बाब 15 : मुसाफ़िर जब सूरज ढलने से पहले कूच करे तो जुहर की नमाज़ में अस्र का वक़्त आने तक देर करे. इसको इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है

1111. हमसे हस्सान बिन वास्ती ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुफ़ज़ज़ल बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उनसे अक्लील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अगर सूरज ढलने से पहले सफ़र शुरू करते तो जुहर की नमाज़ अस्र तक न पढ़ते फिर जुहर और अस्र एक साथ पढ़ते और अगर सूरज ढल चुका होता तो पहले जुहर पढ़ लेते फिर सवार होते।

बाब 16 : सफ़र अगर सूरज ढलने के बाद शुरू हो तो पहले जुहर पढ़ ले फिर सवार हो

1112. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि

السَّيْرُ، وَيَقِيمُ الْمَغْرِبَ فَيَسْتَلِمُهَا ثَلَاثًا ثُمَّ يُسَلِّمُ، ثُمَّ قَلَمًا ثَلَاثَ حَتَّى يَقِيمُ الْعِشَاءَ فَيَسْتَلِمُهَا رَكَعَتَيْنِ ثُمَّ يُسَلِّمُ، وَلَا يُسَبِّحُ بَيْنَهُمَا بِرُكْعَةٍ وَلَا بَعْدَ الْعِشَاءِ بِسُجْدَةٍ حَتَّى يَقُومَ مِنْ خَوْفِ اللَّيْلِ)).

[راجع: 1091]

1110. حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدِ الصَّمَدِ قَالَ حَدَّثَنَا حَرْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَسْبٍ اللَّهُ بْنُ أَنَسٍ أَنَّ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ: ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَجْمَعُ بَيْنَ هَاتَيْنِ الصَّلَاتَيْنِ فِي السَّفَرِ، يَغِي الْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ)). [راجع: 1108]

15- بَابُ يُؤَخَّرُ الظُّهْرَ إِلَى الْغَضْرِ إِذَا ارْتَحَلَ قَبْلَ أَنْ تَرْتَفِعَ الشَّمْسُ، لَهُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

1111. حَدَّثَنَا حَسَّانُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا الْمَفْعَلُ بْنُ قُصَّالَةَ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا ارْتَحَلَ قَبْلَ أَنْ تَرْتَفِعَ الشَّمْسُ أَخَّرَ الظُّهْرَ إِلَى وَقْتِ الْغَضْرِ، ثُمَّ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا، وَإِذَا رَاعَتْ صَلَاةُ الظُّهْرِ ثُمَّ رَكِبَ)).

16- بَابُ إِذَا ارْتَحَلَ بَعْدَ مَا رَاعَتْ الشَّمْسُ صَلَاةُ الظُّهْرِ ثُمَّ رَكِبَ

1112. حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا

हमसे मुफ़ज़ल बिन फ़ज़ाला, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सूरज ढलने से पहले सफ़र शुरू करते तो जुहर अमर के वक़्त आने तक न पढ़ते। फिर कहीं (रास्ते में) ठहरते और जुहर और अमर मिलाकर पढ़ते लेकिन अगर सफ़र शुरू करने से पहले सूरज ढल चुका होता तो पहले जुहर पढ़ते फिर सवार होते।

बाब 18 : नमाज़ बैठकर पढ़ने का बयान

1113. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके बाप इर्वा ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) बीमार थे इसलिये आप (ﷺ) ने अपने घर में बैठकर नमाज़ पढ़ाई, बाज़ लोग आप (ﷺ) के पीछे खड़े होकर पढ़ने लगे। लेकिन आप (ﷺ) ने उन्हें इशारा किया कि बैठ जाओ। नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इमाम इसलिये है कि इसकी पैरवी की जाए, इसलिये जब वो रुकूअ करे तो तुम भी रुकूअ करो और जब वो सर उठाए तो तुम भी सर उठाओ।

(राजेअ : 688)

1114. हमसे अबू नुअैम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने जुहरी से बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) घोड़े से गिर पड़े और इसकी वजह से आपके दाएँ पहलू पर ज़ख़म आ गए। हम मिज़ाज पुर्सी के लिये गये तो नमाज़ का वक़्त आ गया। आप (ﷺ) ने बैठकर नमाज़ पढ़ाई। हमने भी बैठकर आपके पीछे नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने इसी मौक़े पर फ़र्माया था कि इमाम इसलिये है ताकि उसकी पैरवी की जाए। इसलिये जब वो तक्बीर कहे तो तुम भी तक्बीर कहो, जब वो रुकूअ करे तो तुम भी रुकूअ करो, जब वो सर उठाए तो तुम भी सर उठाओ और जब वो समिअ अल्लाहु लिमन हमिद कहें तो तुम अल्लाहुम्म रब्बना लकल हम्द कहो।

(राजेअ : 387)

दोनों अह्दादीष में मुक्तदियों के लिये बैठने का हुक्म पहले दिया गया था। बाद में आखिरी नमाज़ मर्जुल मौत में जो आप (ﷺ)

الْمُفَضَّلُ بْنُ فَصَّالَةَ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا ارْتَحَلَ قَبْلَ أَنْ تَرْتَعَ الشَّمْسُ آخَرَ الظُّهْرِ إِلَى وَقْتِ الْعَصْرِ، ثُمَّ نَزَلَ لِيَجْمَعَ بَيْنَهُمَا، فَإِنْ زَاغَتِ الشَّمْسُ قَبْلَ أَنْ يَرْتَجِلَ صَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ رَكِبَ)).

۱۷- بَابُ صَلَاةِ الْقَاعِدِ

۱۱۱۳- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي بَيْتِهِ وَهُوَ شَاكٍ، فَصَلَّى جَالِسًا وَصَلَّى وَرَاءَهُ قَوْمٌ قِيَامًا، فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَنْ اجْلِسُوا. فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((إِنَّمَا جُعِلَ الْإِمَامُ لِيُؤْتَمَ بِهِ، فَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوا)).

[راجع: ۶۸۸]

۱۱۱۴- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَقَطَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ فَرَسٍ فَخَدِشَ - أَوْ فَجَحِشَ - شِقَ الْإِيمَنِ، فَدَخَلْنَا عَلَيْهِ نَعُوذُ، فَخَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَصَلَّى قَاعِدًا فَصَلَّيْنَا قُعُودًا وَقَالَ: ((إِنَّمَا جُعِلَ الْإِمَامُ لِيُؤْتَمَ بِهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوا، وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَبَدَهُ فَقُولُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ)). [راجع: ۳۷۸]

ने पढ़ाई उसमें आप (ﷺ) बैठे हुए थे और सहाबा आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए थे। इससे पहला हुक्म मन्सूख हो गया।

1115. हमसे इस्हाक बिन मन्सूर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें खवह बिन उबादा ने खबर दी, उन्होंने कहा कि हमें हुसैन ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उन्हें इमरान बिन हुसैन (रजि.) ने कि आपने नबी करीम (ﷺ) से पूछा (दूसरी सनद) और हमें इस्हाक बिन मन्सूर ने खबर दी, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मन्सूर ने खबर दी, कहा कि मैंने अपने बाप अब्दुल वारिष से सुना, कहा कि हमसे हुसैन ने बयान किया और उनसे इब्ने बुरैदा ने कहा कि मुझसे इमरान बिन हुसैन (रजि.) ने बयान किया, वो बवासीर के मरीज़ थे, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से किसी आदमी के बैठकर नमाज़ पढ़ने के बारे में पूछा। आपने फर्माया कि अफ़ज़ल यही है कि खड़े होकर पढ़ें क्योंकि बैठकर पढ़ने वाले को खड़े होकर पढ़ने वाले से आधा प्रवाब मिलता है और लेटे-लेटे पढ़ने वाले को बैठकर पढ़ने वाले से आधा प्रवाब मिलता है।

(दीगर मक़ामात : 1116, 1117)

۱۱۱۵- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا حُسَيْنٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَأَلَ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ. وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ عَنْ ابْنِ بُرَيْدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ - وَكَانَ مَشُورًا - قَالَ: ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنْ صَلَاةِ الرَّجُلِ قَاعِدًا فَقَالَ: ((إِنْ صَلَّى قَائِمًا فَهُوَ أَفْضَلُ، وَمَنْ صَلَّى قَاعِدًا فَلَهُ بِصَفِّ أَجْرِ الْقَائِمِ، وَمَنْ صَلَّى نَائِمًا فَلَهُ بِصَفِّ أَجْرِ الْقَاعِدِ)). [طرفاه في ۱۱۱۶، ۱۱۱۷].

तशरीह: इस हदीष में एक उम्सूल बताया गया है कि खड़े होकर बैठकर या लेटकर नमाज़ों के प्रवाब में क्या तफ़ावुत है। रही बात मसले की कि लेटकर नमाज़ पढ़ना जाइज़ भी है या नहीं उससे कोई बहस नहीं की गई है। इसलिये इस हदीष पर ये सवाल नहीं हो सकता कि जब लेटकर नमाज़ जाइज़ ही नहीं तो हदीष में उस पर प्रवाब का कैसे जिक्र हो रहा है? मुसनिफ़ (रह.) ने भी इन अह्दादीष पर जो उन्वान लगाया है उसका मक़सद उसी उम्सूल की वज़ाहत है। उसकी तफ़सीलात दूसरे मौक़ों पर शारेअ से खुद प्राबित है। इसलिये अमली हुदूद में जवाज़ और अदमे जवाज़ का फ़ैसला उन्हीं तफ़सीलात के पेशे-नज़र होगा। इस बाब की पहली दो अह्दादीष पर बहस पहले गुज़र चुकी है कि औहज़रत (ﷺ) उज़्र की वजह से मस्जिद में नहीं जा सकते थे इसलिये आपने फ़र्ज़ नमाज़ अपनी क़यामगाह पर अदा की। सहाबा (रजि.) नमाज़ से फ़ारिग होकर इयादत के लिये हाज़िर हुए और जब आप (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा तो आप (ﷺ) के पीछे उन्होंने भी इक़तिदा की निय्यत बाँध ली। सहाबा (रजि.) खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे थे, इसलिये आप (ﷺ) ने उन्हें मना कर दिया कि नफ़िल नमाज़ में इमाम की हालत के इस तरह ख़िलाफ़ मुक्तादियों के लिये खड़ा होना मुनासिब नहीं है। (तफ़हीमुल बुखारी, पारा नं. 5, पेज नं. 13) जो मरीज़ बैठकर भी नमाज़ न पढ़ सके तो वो लेटकर पढ़ सकता है। जिसके जवाज़ में कोई शक़ नहीं। इमाम के साथ मुक्तादियों का बैठकर नमाज़ पढ़ना बाद में मन्सूख हो गया।

बाब 18 : बैठकर इशारे से नमाज़ पढ़ना

1116. हमसे अबू मज़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा कि हमसे हुसैन मुअल्लिम ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने कि इमरान बिन हुसैन ने, जिन्हें बवासीर का मर्ज़ था। और कभी अबू मज़मर ने यह कहा कि

۱۸- بَابُ صَلَاةِ الْقَاعِدِ بِالْإِيمَاءِ
۱۱۱۶- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ الْمُعَلِّمُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ أَنَّ عِمْرَانَ بْنَ

इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से बैठकर नमाज़ पढ़ने के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि खड़े होकर नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है, लेकिन अगर कोई बैठकर नमाज़ पढ़े तो खड़े होकर पढ़ने वाले से आधा षवाब मिलेगा और लेटकर पढ़ने वाले को बैठकर पढ़ने वाले से आधा षवाब मिलेगा। अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुखारी रह.) फ़र्माते हैं कि हदीस के अल्फ़ाज़ में नाइमुन मुज्तज़िउन के मा'नी में है। या'नी लेटकर नमाज़ पढ़ने वाला।

(राजेअ: 1115)

बाब 19 : जब बैठकर भी नमाज़ पढ़ने की ताक़त न हो तो करवट के बल लेट कर पढ़े

और अता (रह.) ने कहा कि अगर क़िबला रुख़ होने की भी ताक़त न हो तो जिस तरह का रुख़ हो उधर की नमाज़ पढ़ सकता है।

1117. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उनसे इब्राहीम बिन तह्मन ने, उन्होंने कहा कि मुझसे हुसैन मुक्तिब ने (जो बच्चों को लिखना सिखाता था) बयान किया, उनसे इब्ने बुरैदा ने और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने कहा कि मुझे बवासीर का मर्ज़ था। इसलिये मैंने नबी करीम (ﷺ) से नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि खड़े होकर नमाज़ पढ़ा करो अगर इसकी भी ताक़त न हो तो बैठकर और अगर इसकी भी न हो तो पहलू के बल लेटकर पढ़ लो। (राजेअ: 1115)

बाब 20 : अगर किसी शख्स ने नमाज़ बैठकर शुरू की लेकिन दौराने नमाज़ में वो तन्दुरुस्त हो गया या मर्ज़ में कुछ कमी महसूस की तो बाक़ी नमाज़ खड़े होकर पूरी करे और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा कि मरीज़ दो रकअत बैठकर और दो रकअत खड़े होकर पढ़ सकता है।

1118. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीशी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम

خَصَيْنَ وَكَانَ رَجُلًا مَشُورًا. وَقَالَ أَبُو مَعْمَرٍ مَرَّةً: عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ صَلَاةِ الرَّجُلِ وَهُوَ قَاعِدٌ لَقَالَ: ((مَنْ صَلَّى قَائِمًا فَهُوَ أَفْضَلُ، وَمَنْ صَلَّى قَاعِدًا فَلَهُ يَصِفُ أَجْرُ الْقَائِمِ، وَمَنْ صَلَّى قَائِمًا فَلَهُ يَصِفُ أَجْرُ الْقَاعِدِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: قَائِمًا عِنْدِي مُضْطَجِعًا مَا هُنَا. [راجع: 1115]

19- بَابُ إِذَا لَمْ يُطِيقْ قَاعِدًا صَلَّى عَلَى جَنْبٍ

وَقَالَ عَطَاءٌ: إِنْ لَمْ يَقْدِرْ عَلَى أَنْ يَحْوِلَ إِلَى الْقِبْلَةِ صَلَّى حَيْثُ كَانَ وَجْهَهُ. 1117- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ طَهْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْحُسَيْنُ الْمُكْتَبِيُّ عَنْ ابْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ بِي بَوَاسِيرٌ، فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ الصَّلَاةِ لَقَالَ: ((صَلِّ قَائِمًا، فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ لَقَاعِدًا، فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ لَعَلَى جَنْبٍ)).

[راجع: 1115]

20- بَابُ إِذَا صَلَّى قَاعِدًا ثُمَّ صَحَّ، أَوْ وَجَدَ خِفَةً، تَمَّمَ مَا بَقِيَ وَقَالَ الْحَسَنُ: إِنْ شَاءَ الْمَرِيضُ صَلَّى رَكَعَتَيْنِ قَاعِدًا، وَرَكَعَتَيْنِ قَائِمًا.

1118- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ

बिन इर्वा ने, उन्हें उनके बाप इर्वा बिन जुबैर ने और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हजरत आइशा सिद्दीका ने कि आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) को कभी बैठकर नमाज़ पढ़ते नहीं देखा, अलबत्ता जब आप (ﷺ) जईफ हो गये तो किरअते कुआन नमाज़ में बैठकर करते थे, फिर जब रुकूअ का वक़्त आता तो खड़े हो जाते और फिर तकरीबन तीस या चालीस आयतें पढ़कर रुकूअ करते।

(दीगर मक्कामात : 1119, 1148, 1161, 1168, 4837)

1119. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने, अब्दुल्लाह बिन यज़ीद और अब्दुरहमान बिन औफ़ के गुलाम अबू नज़र ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुरहमान बिन औफ़ ने, उन्हें उम्मुल मोमिनीन हजरत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तहज्जुद की नमाज़ बैठकर पढ़ना चाहते तो किरअत बैठकर करते। जब तकरीबन तीस-चालीस आयतें पढ़नी बाक़ी रह जाती तो आप उन्हें खड़े होकर पढ़ते। फिर रुकूअ और सज्दा करते फिर दूसरी रकअत में भी इसी तरह करते। नमाज़ से फ़ारिग़ होने पर देखते कि मैं जाग रही हूँ तो मुझसे बातें करते लेकिन अगर मैं सोती होती आप (ﷺ) भी लेट जाते।

(राजेअ : 1118)

أَبُو عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ «رَأَيْتُهَا لَمْ تَرَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي صَلَاةَ اللَّيْلِ قَاعِدًا قَطُّ حَتَّى أَسَنَ، فَكَانَ يَقْرَأُ قَاعِدًا حَتَّى إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ فَقَرَأَ نَحْوًا مِنْ ثَلَاثِينَ آيَةً أَوْ أَرْبَعِينَ آيَةً ثُمَّ رَكَعَ».

[أطرافه ١ : ١١١٩، ١١٤٨، ١١٦١]

[١١٦٨، ٤٨٣٧]

١١١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ وَأَبِي النُّضَرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا «رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِذَا كَانَ يُصَلِّي جَالِسًا يَقْرَأُ وَهُوَ جَالِسٌ، فَإِذَا بَلَغَ مِنْ قِرَاءَتِهِ نَحْوَ مِنْ ثَلَاثِينَ أَوْ أَرْبَعِينَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَهَا وَهُوَ قَائِمٌ، ثُمَّ يَرْكَعُ، ثُمَّ سَجَدَ، يَفْعَلُ فِي الرُّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ، فَإِذَا قَضَى صَلَاتَهُ نَظَرَ فَإِنْ كُنْتُ يَقْظَى تَحَدَّثْتُ مَعِي، وَإِنْ كُنْتُ نَائِمَةً اضْطَجَعْتُ».

[راجع : ١١١٨]

19. किताबुत् तहज्जुद

तहज्जुद का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : रात में तहज्जुद पढ़ना और अल्लाह अज्ज व जल्ल ने (सूरह बनी इस्राईल में) फ़र्माया, और रात के एक हिस्से में तहज्जुद पढ़, ये आप (ﷺ) के लिये ज़्यादा हुक्म है

۱ - بَابُ التَّهَجُّدِ بِاللَّيْلِ، وَقَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ

﴿وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ﴾

११२० - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُليْمَانُ بْنُ أَبِي مُسْلِمٍ عَنْ طَاوُسٍ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَتَهَجَّدُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيُّمُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نَوَّازُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ، وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ. اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا

1120. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफयान बिन डययना ने बयान किया, कहा कि हमसे सुलैमान बिन अबी मुस्लिम ने बयान किया, उनसे ताऊस ने और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब रात में तहज्जुद के लिये खड़े होते तो ये दुआ पढ़ते। (जिसका तर्जुमा ये है) ऐ मेरे अल्लाह! हर तरह की ता'रीफ़ तेरे लिये ही ज़ेबा है, तू आसमान और ज़मीन और उनमें रहने वाली तमाम मखलूक का सम्भालने वाला है और हम्द तमाम की तमाम बस तेरे ही लिये मुनासिब है। आसमानों-ज़मीन और उनकी तमाम मखलूकात पर हुक्मत सिर्फ़ तेरे ही लिये है और ता'रीफ़ तेरे ही लिये है, तू आसमान और ज़मीन का नूर है और ता'रीफ़ तेरे ही लिये ज़ेबा है। तू सच्चा, तेरा वा'दा सच्चा, तेरी मुलाक़ात सच्ची, तेरा फ़र्मान सच्चा, जन्नत सच है, दोज़ख सच है अंबिया सच्चे हैं, मुहम्मद सच्चे हैं और क़यामत का होना सच है। ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरा ही फ़र्माबरदार हूँ और तुझी पर ईमान रखता हूँ, तुझी पर भरोसा है, तेरी ही तरफ़ रुजुअ करता हूँ, तेरी ही अता किए हुए दलाइल के ज़रिये बहस करता हूँ और तुझी को हक़म बनाता हूँ। पस, जो खताएँ मुझसे पहले हुई हैं और जो बाद में होंगी उन सबकी मग़्फ़िरत फ़र्मा, ख़वाह वो

जाहिर हो या पोशीदा। आगे करने वाला और पीछे रखने वाला तू ही है। मा'बूद सिर्फ़ तू ही है। या (ये कहा कि) तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। अबू सुफ़यान ने कहा कि अब्दुल करीम अबू उमय्या ने इस दुआ में ये ज्यादाती की है, ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह। सुफ़यान ने बयान किया कि सुलैमान बिन मुस्लिम ने त्राऊस से ये हदीष सुनी थी, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

(दीगर मक़ाम: 6317, 6318, 7380, 7442, 7499)

أَعْلَنْتُ، أَنْتَ الْمَقْدُمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخَّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَوْ لَا إِلَهَ غَيْرُكَ)). قَالَ سَفْيَانُ: وَزَادَ عَبْدُ الْكَرِيمِ أَبُو أُمَيَّةَ ((وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ)). قَالَ سَفْيَانُ قَالَ سَلِيمَانُ بْنُ أَبِي مُسْلِمٍ سَمِعَهُ مِنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[أطرافه: ١ : ٦٣١٧ ، ٧٣٨٥ ، ٧٤٤٢]

[٧٤٩٩]

तशरीह: मसनून है कि तहज्जुद की नमाज़ के लिये उठनेवाले खुशानसीब मुसलमान उठते ही पहले ये दुआ पढ़ लें। लफ़्ज़े तहज्जुद बाबे तफ़्ज़िल का मसदर है इसका माह्व हज़द है। अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़रमाते हैं, अस्तुहू तर्कुलहुजूद व हुवन्नौमु क़ाल इब्नु फ़ारिस अलमुज्ताहिदु अलमुसल्लि लैलन फतहज्जद बिही अथ उतरूकिल्हुजूद लिस्सलाति या'नी अज़ल इसका ये है कि रात को सोना नमाज़ के लिये तर्क कर दिया जाए। पस इस्तिलाही मा'नी मुतहजिद के मुसल्ला (नमाज़ी) के हैं जो रात में अपनी नौद को ख़ैर-आबाद कहकर नमाज़ में मशगूल हो जाएँ। इस्तिलाह में रात की नमाज़ को नमाज़े तहज्जुद से मौसूम किया गया। आयते शरीफ़ा के जुम्ले नाफिलतल्लक की तफ़्सीर में अल्लामा क़स्तलानी (रह.) लिखते हैं, फरीजतुन ज़ाइदतुन लक अलस्सलवातिलमफरूजति खस्सस्तु बिहा मिन बैनि उम्मतिक रवत्तब्रानी बिस्नादिन ज़ईफ़िन अनिबिन अब्बासिन अन्नन्नाफिलत लिन्नबिद्यि (ﷺ) लिअन्नहू अमर बिकियामिल्लैलति व कतब अलैहि दून उम्मतिही या'नी तहज्जुद की नमाज़ औहज़रत (ﷺ) के लिये नमाज़े पंजगाना के अलावा फ़र्ज़ की गई और आपको इस बारे में उम्मत से मुत्ताज़ करार दिया गया के उम्मत के लिये ये फ़र्ज़ नहीं मगर आप पर फ़र्ज़ है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने भी लफ़्ज़ नाफिलतल्लक की तफ़्सीर में फ़र्माया कि ये ख़ास तौर से आपके लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ के है। आप (ﷺ) रात की नमाज़ के लिये मामूर किया गये और उम्मत के अलावा आप (ﷺ) पर उसे फ़र्ज़ करार दिया गया। लेकिन इमाम नववी (रह.) ने बयान किया कि बाद में आपके ऊपर से भी उसकी फ़र्ज़ियत को मन्सूख़ कर दिया गया था।

बहरहाल नमाज़े तहज्जुद फ़राइजे पंजगाना के बाद बड़ी अहम नमाज़ है जो पिछली रात में अदा की जाती है और उसकी ग्यारह रक़अतें होती हैं; जिनमें आठ रक़अतें दो-दो करके सलाम से अदा की जाती हैं और आख़िर में तीन रक़अतें वित्र पढ़ी जाती है। यही नमाज़ रमज़ान में तरावीह से मौसूम की गई।

बाब 2 : रात की नमाज़ की फ़ज़ीलत का बयान

1121. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ सन्आनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मअमर ने हदीष बयान की (दूसरी सनद) और मुझ से महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें उनके बाप अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बताया कि नबी करीम (ﷺ) की

٢- بَابُ فَضْلِ لَيْلِ النَّبِيِّ

١١٢١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ:

حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ. ح.

وَحَدَّثَنِي مَعْمَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ

قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ

سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ

الرَّجُلُ فِي حَيَاةِ النَّبِيِّ ﷺ إِذَا رَأَى رُؤْيَا

जिन्दगी में जब कोई ख्वाब देखता तो आप (ﷺ) से बयान करता (आप ﷺ ताबीर देते) मेरे भी दिल में ये ख्वाहिश पैदा हुई कि मैं भी कोई ख्वाब देखता और आप (ﷺ) से बयान करता। मैं अभी नौजवान था और आप (ﷺ) के ज़माने में मस्जिद में सोता था। चुनौचे मैंने ख्वाब में देखा कि दो फ़रिश्ते मुझे पकड़कर दोज़ख की तरफ ले गये। मैंने देखा कि दोज़ख पर कुओं की तरह बन्दिश है। (या'नी उस पर कुओं की सी मुण्डेर बनी हुई है) उसके दो जानिब थे। दोज़ख में बहुत से ऐसे लोगों को देखा जिन्हें मैं पहचानता था। मैं कहने लगा, दोज़ख से अल्लाह की पनाह! उन्होंने बयान कि फिर हमको एक फ़रिश्ता मिला और उसने मुझे कहा डरो नहीं। (राजेअ : 440)

1122. ये ख्वाब मैंने (अपनी बहन) हज़रत हफ़सा (रज़ि.) को सुनाया और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को। ताबीर में आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब्दुल्लाह बहुत ख़ूब लड़का है। काश रात में नमाज़ पढ़ा करता। (राबी ने कहा कि आप ﷺ के इस फ़र्मान के बाद) अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) रात में बहुत कम सोते थे (ज्यादा इबादत ही करते रहते)।

(दीगर मक़ाम : 1158, 3839, 3808, 3841, 8016, 8029, 8031)

तशरीह: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के उस ख्वाब को आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी रात में ग़फ़लत की नींद पर महमूल किया और इश़ाद फ़र्माया कि वो बहुत ही अच्छे आदमी हैं मगर इतनी कसर है कि रात को नमाज़े तहज्जुद नहीं पढ़ते। उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने नमाज़े तहज्जुद को अपनी जिंदगी का मा'मूल बना लिया, इससे मा'लूम हुआ कि नमाज़े तहज्जुद की बेहद फ़ज़ीलत है। इस बारे में कई अह्मदीय मरवी हैं। एक बार आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि, अलैकुम बिक़्रियामिल्लैलैल फइज़्रहू दाबुस्सालिहीन क़ब्लुकुम या'नी अपने लिये नमाज़े तहज्जुद को लाज़िम कर लो ये तमाम स़ालेहीन नेकोकार बन्दों का तरीका है। हदीष से ये भी निकलता है कि रात में तहज्जुद पढ़ना दोज़ख से नजात पाने का सबब है। हज़रत सुलेमान (अलैहिस्सलाम) को उनकी वालिदा ने नसीहत की थी कि रात बहुत सोना अच्छा नहीं जिससे आदमी क़यामत के दिन मुहताज होकर रह जाएगा।

बाब 3 : रात की नमाज़ में

लम्बे सज्दे करना

1123. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे इब्ना ने ख़बर

قَمَّهَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَمَثَّتْ أَنْ
أَزَى رَوْيَا فَاقَمَّهَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ،
وَكُنْتُ غَلَامًا شَابًا، وَكُنْتُ أَنَا فِي
الْمَسْجِدِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ،
فَرَأَيْتُ فِي النَّوْمِ كَأَنَّ مَلَكَتَيْنِ أَحَدَانِي
فَلَمَّحَا بِي إِلَى النَّارِ، فَإِذَا هِيَ مَطْرُوبَةٌ كَطَلِي
الْبَيْتِ، وَإِذَا لَهَا قُرْنَانِ، وَإِذَا فِيهَا أَنَاسٌ لَقَدْ
عُرِّقَتْهُمْ، فَجَعَلْتُ أَقُولُ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ
النَّارِ. قَالَ فَلَقِيَنَا مَلَكَ آخَرَ فَقَالَ لِي: لَمْ
تُرْغَ)). (راجع: ٤٤٠)

١١٢٢- فَقَصَصْتُهَا عَلَى حَفْصَةَ،
فَقَصَصْتُهَا حَفْصَةَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ
فَقَالَ: ((بِعَمِّ الرَّجُلِ عَبْدُ اللَّهِ لَوْ كَانَ
يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ. لَكَانَ بَعْدَ لَا يَنَامُ مِنَ
اللَّيْلِ إِلَّا قَلِيلًا.

[أطرافه في : ١١٥٧، ٣٧٣٩، ٣٧٥٧،
٣٧٤١، ٧٠٢٩، ٧٠٣١، ٧٠١٦]

٣- بَابُ طَوْلِ السُّجُودِ فِي قِيَامِ

اللَّيْلِ

١١٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا
شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ

दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (रात में) ग्यारह रकअत पढ़ते थे आप (ﷺ) की यही नमाज़ थी। लेकिन इसके सज्दे इतने लम्बे हुआ करते कि तुम से कोई नबी (ﷺ) के सर उठाने से पहले पचास आयतें पढ़ सकता था। (और तुलूअ-फ़ज्र होने पर) फ़ज्र की नमाज़ से पहले आप (ﷺ) दो रकअत सुन्नत पढ़ते। इसके बाद दाईं पहलू पर लेट जाते। आख़िर मुअज़्ज़िन आपको नमाज़ के लिये बुलाने आता।

(राजेअ: 626)

أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، كَانَتْ بِلَا صَلَاةٍ، يَسْجُدُ السَّجْدَةَ مِنْ ذَلِكَ قَوْلًا مَا يَقْرَأُ أَحَدُكُمْ عَمْسِينَ آيَةً قَبْلَ أَنْ يَرْفَعَ رَأْسَهُ، وَيَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الْفَجْرِ، ثُمَّ يَنْصَلِفُ عَلَى شِقِّ الْأَيْمَنِ حَتَّى يَأْتِيَهُ الْمَنَادِي

[المعلوق: (راجع: ٦٢٦)]

तशरीह: फ़ज्र की सुन्नतों के बाद थोड़ी देर के लिये दाहिनी करवट पर सो जाना आँहज़रत (ﷺ) का मा'मूल था। जिस क़द्र रिवायात फ़ज्र की सुन्नतों के बारे में मरवी हैं उनसे बेशतर मैं इस इज्तिजाअ का ज़िक्र मिलता है, इसलिये अहले हदीष का ये मा'मूल है कि वो आँहज़रत (ﷺ) की हर सुन्नत और आपकी हर मुबारक आदत को अपने लिये सरमाया-ए-नजात जानते हैं। पिछले कुछ मुतअक्किब व तशरुद किस्म के कुछ इनफ़ी इलमा ने इस लेटने को बिदअत करार दे दिया था; मगर आजकल संजीदगी का दौर है, इसमें कोई ऊट-पटांग बात हाँक देना किसी अहले इल्म के लिये ज़ेबा नहीं, इसीलिये आजकल के संजीदा इलमा-ए-अहनाफ़ ने पहले तशरुद व ख़याल वालों की तदीद की है और साफ़ लफ़्ज़ों में आँहज़रत (ﷺ) के इस फ़ैअल का इकरार किया है। चुनाँचे साहबे तफ़हीमुल बुखारी के यहाँ ये अल्फ़ाज़ हैं, 'इस हदीष से सुन्नते फ़ज्र के बाद लेटने का ज़िक्र है, अहनाफ़ की तरफ़ इस मसले की निज़बत ग़लत है कि उनके नज़दीक सुन्नते फ़ज्र के बाद लेटना बिदअत है। इसमें बिदअत का कोई सवाल ही नहीं। ये तो हुज़ूर (ﷺ) की आदत थी, इबादात से उसका कोई ता'ल्लुक ही नहीं अलबत्ता ज़रूरी समझकर फ़ज्र की सुन्नतों के बाद लेटना पसंदीदा नहीं ख़याल किया जा सकता, इस हैषियत से कि ये हुज़ूर (ﷺ) की एक आदत थी उसमें अगर आप (ﷺ) की इत्तिबाअ की जाए तो ज़रूर अज़ो-प्रवाब मिलेगा।'

फ़ाजिल मौसूफ़ ने बहरहाल इस आदते नबवी पर अमल करनेवालों के लिये अज़ो-प्रवाब का फ़त्वा दिया है। बाक़ी ये कहना कि इबादात से उसका कोई ता'ल्लुक नहीं है ग़लत है, मौसूफ़ को मा'लूम होगा कि इबादात हर वो काम है जो आँहज़रत (ﷺ) ने दीनी उमूर में तक़्र्रबे इललल्लाह के लिये अंजाम दिया। आप (ﷺ) का ये लेटना भी तक़्र्रबे इललल्लाह ही के लिये होता था क्योंकि दूसरी रिवायत में मौजूद है कि आप (ﷺ) उस वक़्त लेटकर ये दुआ पढ़ते थे, अल्लाहुम्म उअल फ़ी क़ल्बी नूरन व फ़ी बसरी नूरन व फ़ी सम्ई नूरन व अय्यमीनी नूरन व अय्यसारी नूरन व फ़ौकी नूरन व तहती नूरन व अमामी नूरन व ख़ल्फी नूरन व ज़अल ली नूरन व फ़ी लिसानी नूरन व फ़ी अमबी नूरन व लहमी नूरन व दमी नूरन व शअरी नूरन व बिशरी नूरन व ज़अल फ़ी नफ़सी नूरन व अज़म ली नूरन अल्लाहुम्म अअतिनी नूरन (सहीह मुस्लिम) इस दुआ के बाद कौन ज़ी-अक्ल ये कह सकता है कि आपका ये काम सिर्फ़ आदत ही से मुता'ल्लिक था और बिल फ़र्ज़ आप (ﷺ) की आदत ही सही बहरहाल आपके सच्चे फ़िदाइयों के लिये आप (ﷺ) की हर अदा, आप (ﷺ) की हर आदत, आपका हर तौर तरीक़-ए-ज़िंदगी, बाज़िअे इद फ़र्र व मुबाहात है। अल्लाह अमल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन!

बा मुस्तफ़ा बरसाँ खुवैश रा कि दीन हमा ऊस्त

व गर बा व न रसीदी तमाम बूलहबी अस्त

आप (ﷺ) सज्दे में ये बार-बार कहा करते सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्म ग़फ़िलीं एक रिवायत में यूँ है, सुब्हानक ला इलाहा इल्ला अन्त सलफ़ सालेहीन थी आँहज़रत (ﷺ) की पैरवी में लम्बा सज्दा करते। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) इतनी देर तक सज्दे में रहते कि चिड़िया उतरकर उनकी पीठ पर बैठ जाती और समझती

कि ये कोई दीवार है। (वहीदी)

बाब 4 : मरीज़ बीमारी में तहज्जुद तर्क कर सकता है

1124. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान शौरी ने अस्वद बिन कैस से बयान किया, कहा कि मैंने जुन्दुब (रज़ि.) से सुना, आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) बीमार हुए तो एक या दो रात तक (नमाज़ के लिये) न उठ सके। (दीगर मक़ाम: 1125, 4950, 4951, 4973)

1125. हमसे मुहम्मद बिन क़ध़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें सुफ़यान शौरी ने अस्वद बिन कैस से ख़बर दी, उनसे जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम (एक मर्तबा चन्द दिनों तक) नबी करीम (ﷺ) के पास (वह्य लेकर) नहीं आए तो क़ुरैश की एक औरत (उम्मे जमील, अबू लहब की बीवी) ने कहा कि अब इसके शैतान इसके पास आने से देर लगाई। इस पर ये सूरा उतरी (वज्रुहा वल लैयलि इज़ा सजा, मा वह़अक रब्बुका वमा क़ला)

(राजेज़: 1124)

तशरीह : तर्जुमा ये है क़सम है चाश्त के वक़्त की और क़सम है रात की जब वो ढांप ले तेरे मालिक ने न तुझको छोड़ा न तुझसे गुस्सा हुआ। इस हदीष की मुनासबत बाब के तर्जुमे से मुश्किल है और असल ये है कि ये हदीष अगली हदीष का ततिम्मा है। जब आप (ﷺ) बीमार हुए थे तो रात का क़याम छोड़ दिया था। उसी ज़माने में हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने भी आना मौक़ूफ़ (स्थगित) कर दिया और शैतान अबू लहब की बीवी (उम्मे जमील बिनते हब) उड़ते अबी सुफ़यान इम्राते अबी लहब इम्मालतुल हतब) ने ये फ़िक़रा कहा। चुनौचे इब्ने अबी हातिम ने जुन्दब (रज़ि.) से रिवायत किया कि आप (ﷺ) की उँगली को पत्थर की मार लगी और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हल अन्ति इस्बडन दमैति व फी सबिलिल्लाहि मा लकीति तू है क्या एक उँगली है अल्लाह की राह में तुझको मार लगी ख़ून-आलूदा हुई। उसी तकलीफ़ से आप (ﷺ) दो-तीन दिन तहज्जुद के लिये भी न उठ सके तो एक औरत (मज़क़ूरा उम्मे जमील) कहने लगीं मैं समझती हूँ कि अब तेरे शैतान ने तुझको छोड़ दिया है। उस वक़्त ये सूरा उतरी वज्रुहा वल्लैलि इज़ा सजा मा वह़अक रब्बुका वमा क़ला (वज्रुहा, 1-3)। (वहीदी)

अहदीषे गुज़िशता को बुखारी शरीफ़ के कुछ नुस्खों में लफ़ज़ ह से नक़ल करके दोनों को एक ही हदीष शुमार किया गया है।

बाब 5 : नबी करीम (ﷺ) का रात की नमाज़ और नवाफ़िल पढ़ने के लिये रग़बत दिलाना लेकिन वाजिब न करना. एक रात नबी करीम (ﷺ) हज़रत फ़ातिमा और हज़रत अली (रज़ि) के पास रात की

4- بَابُ تَرْكِ الْقِيَامِ لِلْمَرِيضِ

1124- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ الْأَسْوَدِ قَالَ سَمِعْتُ جُنْدُبًا يَقُولُ: «اشْتَكَى النَّبِيُّ ﷺ، فَلَمْ يَقُمْ لَيْلَةً أَوْ لَيْلَتَيْنِ». [إسراة في : 1125, 4950, 4951, 4973].

1125- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سَفْيَانُ عَنْ الْأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «وَاشْتَكَى جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَتْ امْرَأَةٌ مِنْ قُرَيْشٍ إِنِّي أَنَا شَيْطَانُهُ»، قُرِئَتْ: «وَالْمُشْعَى، وَاللَّيْلُ إِذَا سَجَى، مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى».

[راجع: 1124]

5- بَابُ تَخْرِيطِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى قِيَامِ اللَّيْلِ وَالنَّوَافِلِ مِنْ غَيْرِ إِنْجَابٍ وَطَرَقَ النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ وَعَلِيًّا

नमाज़ के लिये जगाने आए थे

1126. हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें मज़मर ने खबर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें हिन्द बिनत हारिष ने और उन्हें उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक रात जागे तो फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! आज रात क्या-क्या बलाएँ उतरी है और साथ ही (रहमत और इनायत के) कैसे खज़ाने नाज़िल हुए हैं। इन हुज्जे वालों (अज़वाजे - मुतद्हरात रज़ि.) को कोई जगाने वाला है, अफ़सोस! दुनिया में बहुत सी कपड़े पहनने वाली औरतें आखिरत में नंगी होंगी। (राजेअ : 115)

1128. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से खबर दी, कहा कि मुझे हज़रत ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन ने खबर दी, उन्हें हज़रत हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने खबर दी कि अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने उन्हें खबर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक रात उनके और फ़ातिमा (रज़ि.) के पास आए, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुम लोग (तहज्जुद की) नमाज़ नहीं पढ़ोगे? मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारी रूहें अल्लाह के क़ब्जे में हैं, वो जब चाहेगा हमें उठा देगा। हमारी इस अर्ज़ पर आप वापस तशरीफ़ ले गए। आपने कोई जवाब नहीं दिया लेकिन वापस जाते हुए मैंने सुना कि आप (ﷺ) रान पर हाथ मार कर (सूरह कहफ़ की ये आयत पढ़ रहे थे) आदमी सबसे ज़्यादा झगड़ालू है।

(दीगर मक़ाम : 4724, 7348, 7465)

عَلَيْهِمَا السَّلَامُ لَيْلَةً لِلصَّلَاةِ

١١٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدِ بِنْتِ الْخَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اسْتَيْقَظَ لَيْلَةً فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللَّهِ، مَاذَا أَنْزَلَ اللَّيْلَةَ مِنَ الْفِتْنَةِ، مَاذَا أَنْزَلَ مِنَ الْخَزَائِنِ، مَنْ يَوْقِظُ صَوَاحِبَ الْحُجُرَاتِ؟ يَا رَبِّ كَاسِيَةً فِي الدُّنْيَا غَارِيَةً فِي الْآخِرَةِ.

[راجع: ١١٥]

١١٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ طَرَفَهُ وَلَطَمَهُ بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةً فَقَالَ: ((أَلَا تَصَلِّيَانِ؟)) فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْفُسَنَا بِيَدِ اللَّهِ، فَإِذَا شَاءَ أَنْ يَتَّعِثَا بَعْثًا. فَانصَرَفَ حِينَ قُلْنَا ذَلِكَ وَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيْنَا، ثُمَّ سَمِعْتُهُ وَهُوَ مُوَلِّ يَضْرِبُ لَحْدَهُ وَهُوَ يَقُولُ: هُوَ كَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا.

[أطرافه ن: ٤٧٢٤، ٧٣٤٧، ٧٤٦٥]

तशरीह: या'नी आप (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को रात की नमाज़ की तरफ़ एग़बत दिलाई लेकिन हज़रत अली (रज़ि.) का बहाना सुनकर आप चुप हो गये। अगर नमाज़ फ़र्ज़ होती तो हज़रत अली (रज़ि.) का बहाना क़ाबिले कुबूल न होता। अलबत्ता जाते वक़्त अफ़सोस का इज़हार ज़रूर कर दिया।

मौलाना वहीदुज्जमाँ (रह.) लिखते हैं कि हज़रत अली (रज़ि.) का जवाब हकीकत में दुरुस्त था मगर उसका इस्ते'माल उस मौक़े पर दुरुस्त न था क्योंकि दुनियादार को तकलीफ़ है उसमें नफ़स पर ज़ोर डालकर तमाम अवामिरे इलाही को बजा लाना चाहिये। तक्रदीर पर तकिया कर लेना और इबादत से कासिर होकर बैठना (छोड़ देना) और जब कोई अच्छी

बात का हुक्म दे तो तक्रदीर के हवाले करना कज-बहषी और झगड़ा है। तक्रदीर का ए' तिकाद इसलिये नहीं है कि आदमी अपाहिज होकर बैठ जाए और तदब्बुर से गाफिल हो जाए। बल्कि तक्रदीर का मतलब ये है कि सब कुछ मेहनत और मशक़त और अस्वाब हासिल करने में कोशिश करे मगर ये समझता रहे कि होगा वही जो अल्लाह ने किस्मत में लिखा है। चूँकि रात का वक़्त था और हज़रत अली (रज़ि.) आप (ﷺ) से छोटे थे और दामाद थे; लिहाज़ा आप (ﷺ) ने उस मौक़े पर लम्बी बहष और सवाल-जवाब को नामुनासिब समझकर कुछ जवाब न दिया मगर आप (ﷺ) को उस जवाब से अफ़सोस हुआ।

1128. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब जुहरी से बयान किया, उनसे उर्वा ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक काम को छोड़ देते और और आप (ﷺ) को उसका करना नापसन्द होता। इस ख़याल से तर्क कर देते कि दूसरे सहाबा (रज़ि.) भी इस पर (आप (ﷺ) को देखकर) अमल शुरू कर दें और इस तरह वो काम उन पर फ़र्ज़ हो जाए। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चाश्त की नमाज़ कभी नहीं पढ़ी लेकिन मैं पढ़ती हूँ। (दीगर मक़ाम : 1188)

١١٢٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرُوةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيَدْعُ الْعَمَلَ وَهُوَ يُحِبُّ أَنْ يَفْعَلَ بِهِ خَشْيَةً أَنْ يَفْعَلَ بِهِ النَّاسُ فَيَفْرَضَ عَلَيْهِمْ، وَمَا سَخَّرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَبْحَةَ الضُّحَى قَطُّ، وَإِنِّي لَأَسْبَحُهَا)).

[طرفه ي: ١١٧٧].

हज़रत आइशा (रज़ि.) को शायद वो किस्सा मा'लूम न होगा जिसको उम्मे हानी ने नक़ल किया कि आप (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन चाश्त की नमाज़ पढ़ी। बाब का मतलब हदीष से यूँ निकलता है कि चाश्त की नफ़ल नमाज़ का पढ़ना आप (ﷺ) को पसंद था। जब पसंद हुआ तो गोया आप (ﷺ) ने उस पर तर्गीब दिलाई और फिर उसको वाजिब न किया क्योंकि आप (ﷺ) ने खुद उसको नहीं पढ़ा। कुछ ने कहा कि आपने कभी चाश्त की नमाज़ पढ़ी ही नहीं, उसका मतलब ये है कि आप (ﷺ) ने हमेशगी के साथ कभी नहीं पढ़ी क्योंकि दूसरी रिवायत से आपका ये नमाज़ पढ़ना साबित है।

1129. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब जुहरी ने, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने, उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक रात मस्जिद में नमाज़ पढ़ी, सहाबा ने भी आपके साथ ये नमाज़ पढ़ी, दूसरी रात भी आपने ये नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ियों की ता'दाद बहुत बढ़ गई। तीसरी या चौथी रात तो पूरा इज्तिमा ही हो गया था। लेकिन नबी करीम (ﷺ) उस रात नमाज़ पढ़ाने तशरीफ़ नहीं लाए। सुबह के वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग जितनी बड़ी ता'दाद में जमा हो गये थे मैंने उसे देखा लेकिन मुझे बाहर आने से इस ख़याल ने रोका कि कहीं तुम पर ये नमाज़

١١٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرُوةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى ذَاتَ لَيْلَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَصَلَّى بِصَلَاتِهِ نَاسٌ، ثُمَّ صَلَّى مِنَ الْقَابِلَةِ فَكَثُرَ النَّاسُ، ثُمَّ اجْتَمَعُوا مِنَ اللَّيْلَةِ الثَّانِيَةِ أَوْ الرَّابِعَةِ فَلَمْ يَخْرُجْ إِلَيْهِمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَلَمَّا أَصْبَحَ قَالَ : ((قَدْ رَأَيْتُ الَّذِي صَنَعْتُمْ، وَأَنَّمَا يَنْفَعُنِي مِنَ الْخُرُوجِ إِلَيْكُمْ إِلَّا أَنِّي خَشِيتُ أَنْ تُفْرَضَ عَلَيْكُمْ، وَذَلِكَ فِي

फर्ज न हो जाए। ये रमज़ान का वाक़िआ था। (राजेअ : 729)

[رَمَضَانَ] . [راجع : ٧٢٩]

तशरीह : इस हदीष से ये प्राबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने चंद रातों में रमज़ान की नफ़ल नमाज़ सहाबा किराम (रज़ि.) को जमाअत से पढ़ाई, बाद में इस ख़्याल से कि कहीं ये नमाज़ फर्ज न हो जाए आप (ﷺ) ने जमाअत के एहतिमाम को तर्क कर दिया। इससे रमज़ान शरीफ में नमाज़ तरावीह बाजमाअत की मशरूइयत प्राबित हुई। आप (ﷺ) ने नफ़ल नमाज़ ग्यारह रकआत पढ़ाई थी। जैसा कि हज़रते आइशा (रज़ि.) का बयान है। चुनाँचे अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं,

व अम्मल अददुष्पाबितु अन्हु (ﷺ) फ़ी मल्लातिही फ़ी रमज़ान फ अखर जल्बुखारी व गैरहू अन आइशत अन्नहा क़ालत मा कानन्नबिय्यु (ﷺ) यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी गैरिही अला इहदा अशरत रकअतन व अखर ज़बनु हिब्बान फ़ी सहीहिन मिन हदीषि जाबिरिन अन्हु (ﷺ) सल्ला बिहिम प्रमान रकआतिन घुम्म औतर (नैलुल औतार) और रमज़ान की उस नमाज़ में जो आँहज़रत (ﷺ) से अदद सहीह सनद के साथ प्राबित हैं वो ये कि हज़रत आइशा (रज़ि.) रिवायत करती हैं कि आप (ﷺ) ने रमज़ान और गैर रमज़ान में उस नमाज़ को ग्यारह रकआत से ज़्यादा अदा नहीं करते और मुस्नद इब्ने हिब्बान में सहीह सनद के साथ मज़ीद वज़ाहत से मौजूद है कि आपने आठ रकआतें पढ़ाई फिर तीन वित्र पढ़ाए।

पस प्राबित हुआ कि आप (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) को रमज़ान में तरावीह बाजमाअत ग्यारह पढ़ाई थीं और तरावीह व तहज्जुद में यही अदद मसनून है, बाक़ी तफ़सीलात अपने मुक़ाम पर आएँगी। इंशाअल्लाह तआला।

बाब 6 : आँहज़रत (ﷺ) रात की नमाज़ में इतनी देर तक खड़े रहते कि पाँव सूज जाते

٦- بَابُ قِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ حَتَّى تَرْمَ قَدَمَاهُ

और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि आप (ﷺ) के पाँव फट जाते थे। फ़ज़ूर के मा'नी अरबी ज़बान में फटना और कुआन करीम में लफ़ज़ इन्फ़तरत इसी से है या'नी आसमान फट जाए।

1130. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे मिरुअर ने बयान किया, उनसे ज़ियाद बिन अलाक़ा ने, उन्होंने बयान किया कि मैंने मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) को ये कहते सुना कि नबी करीम (ﷺ) इतनी देर तक खड़े होकर नमाज़ पढ़ते रहते कि आप (ﷺ) का क़दम या (ये कहा कि) पिण्डलियों पर धरम आ जाता, जब आप (ﷺ) से इसके मुता'ल्लिक़ कुछ अर्ज़ किया जाता तो फ़र्माते, क्या मैं अल्लाह का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूँ। (दीगर मक़ाम : 4836, 6481)

وَقَالَتْ غَابِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: كَانَ يَقُومُ حَتَّى تَفْطَرُ قَدَمَاهُ: وَالْفُطُورُ: الشَّقُوقُ. انْفَطَرَتْ: انشَقَّتْ.

١١٣٠- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَسْتَعْرُ عَنْ زِيَادٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْمُغِيرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: إِنْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَيَقْرُمُ أَوْ لَيُصَلِّي حَتَّى تَرْمَ قَدَمَاهُ - أَوْ سَلَاةً - لَيَقَالَ لَهُ: قُفُورٌ: (أَفَلَا أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا) .

[طرفاء : ٤٨٣٦، ٦٤٧١]

सूरह मुज्जिमिल के शुरू नुज़ूल के ज़माने में आप (ﷺ) का यही मा'मूल था किरात के अक़सर हिस्सों में आप इबादत में मशगूल रहते थे।

बाब 8 : जो शरहस सहर के वक़्त सो गया

1131. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा कि हमसे अग्र बिन दीनार ने बयान किया कि अग्र बिन औस ने उन्हें ख़बर दी

٧- بَابُ مَنْ نَامَ عِنْدَ السَّحْرِ

١١٣١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ

और उन्हें अब्दुल्लाह बिन ब्रमर बिन आस (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि सब नमाज़ों में अल्लाह तआला के नज़दीक पसन्दीदा नमाज़ दाऊद अलैहिस्सलाम की नमाज़ है और रोज़ों में भी दाऊद अलैहिस्सलाम ही का रोज़ा। आप आधी रात तक सोते, उसके बाद तिहाई रात नमाज़ पढ़ने में गुज़ारते फिर रात के छठे हिस्से में सो जाते। इसी तरह आप एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार करते थे।

(दीगर मक़ाम : 1152, 1153, 1974, 1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 3418, 3419, 3420, 5052, 5053, 5054, 519 6134, 6277)

أَنَّ عَمْرُو بْنَ أَوْسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ لَهُ: ((أَحَبُّ الصَّلَاةِ إِلَى اللَّهِ صَلَاةُ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ، وَأَحَبُّ الصَّيَامِ إِلَى اللَّهِ صِيَامُ دَاوُدَ، وَكَانَ يَنَامُ بَعْثَ اللَّيْلِ وَيَقُومُ ثُلُثَهُ وَيَنَامُ سُدُسَهُ، وَيَصُومُ يَوْمًا وَيَقْطِرُ يَوْمًا)).

[أطرافه في : 1152, 1153, 1154, 1155]

1975, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980, 3418, 3419, 3420, 5052, 5053, 5054, 519 6134, 6277

1978, 1979, 1980, 3418, 3419, 3420, 5052, 5053, 5054, 519 6134, 6277

1978, 1979, 1980, 3418, 3419, 3420, 5052, 5053, 5054, 519 6134, 6277

[1978, 1979, 1980, 3418, 3419, 3420, 5052, 5053, 5054, 519 6134, 6277]

रात के बारह घण्टे होते हैं तो पहले छः घण्टे में सो जाते, फिर चार घण्टे इबादत करते, फिर दो घण्टे सोए रहते। गोया सहर के वक़्त सोते रहते यही बाब का तर्जुमा है।

1132. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे बाप इब्मान बिन जबला ने शुअबा से ख़बर दी, उन्हें अशअस ने कहा कि मैंने अपने बाप (सुलेम बिन अस्वद) से सुना और मेरे बाप ने मसरूक से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने आइशा (रज़ि.) से पूछा कि नबी करीम (ﷺ) को कौनसा अमल ज़्यादा पसन्द था? आपने जवाब दिया कि जिस पर हमेशगी की जाए (ख़वाह वो कोई भी नेक काम हो) मैंने दरयाफ़्त किया कि आप (रात में नमाज़ के लिये) कब खड़े होते थे? आपने फ़र्माया कि जब मुर्ग की आवाज़ सुनते। हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमें अबुल अहवस बिन सलाम बिन सुलैम ने ख़बर दी, उनसे अशअस ने बयान किया कि मुर्ग की आवाज़ सुनते ही आप (ﷺ) खड़े हो जाते और नमाज़ पढ़ते। (दीगर मक़ाम : 6361, 6462, 6463)

1132 - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَشْثَثَ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ سَمِعْتُ مَسْرُوكًا قَالَ ((سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَيُّ الْعَمَلِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَتْ: الذَّائِمُ قُلْتُ: مَتَى كَانَ يَقُومُ؟ قَالَتْ: يَقُومُ إِذَا سَمِعَ الصَّارِخَ)). حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو الْأَخْوَصِ عَنِ الْأَشْثَثِ قَالَ: ((إِذَا سَمِعَ الصَّارِخَ قَامَ فَصَلَّى)).

[أطرافه في : 6361, 6462, 6463]

तशरीह : कहते हैं कि पहले पहल मुर्ग आधी रात के वक़्त बांग देता है। अहमद और अबू दाऊद में है कि मुर्ग को बुरा मत कहो वो नमाज़ के लिये जगाता है। मुर्ग की आदत है कि फ़ज़ तुलुअ होते ही और सूरज के ढलने पर बांग देता है। ये अल्लाह की कुदरत है। पहले हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) की शब बेदारी का हाल बयान किया। फिर हमारे पैग़म्बर (ﷺ) का भी अमल उसके मुताबिक़ षाबित किया तो इन दोनों हदीषों से ये निकला कि आप

अव्वल शब में आधी रात तक सोते रहते और फिर मुर्ग की बांग के वक़्त या 'नी आधी रात पर उठते। फिर आगे की हदीष से ये प्राबित किया सहर को आप सोते होते। पस आप (ﷺ) और हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) का अमल यक्साँ हो गया। इराक़ी ने अपनी किताब सीरत में लिखा है कि आँहज़रत (ﷺ) के यहाँ एक सफ़ेद मुर्ग था। वल्लाहु अज़लम।

1133. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मेरे बाप सअद बिन इब्राहीम ने अपने चचा अबू सलमा से बयान किया कि हज़रत आइशा सिदीका (रज़ि.) ने बतलाया कि उन्होंने अपने यहाँ सहर के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) को हमेशा लेटे हुए पाया।

۱۱۳۳- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: ذَكَرَ أَبِي عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَا أَلْفَاهُ السَّحَرُ عِنْدِي إِلَّا نَائِمًا)) تَغْنِي النَّبِيُّ ﷺ.

आदते मुबारका थी कि तहज्जुद से फ़ारिग होकर आप (ﷺ) फ़ज़ के प हले सहर के वक़्त थोड़ी देर आराम करते थे हज़रत आइशा (रज़ि.) यही बयान करती रही हैं।

बाब 8 : इस बारे में जो सहरी खाने के बाद सुबह की नमाज़ पढ़ने तक नहीं सोया

۸- بَابُ مَنْ تَسَحَّرَ فَلَمْ يَنَمْ حَتَّى صَلَّى الصُّبْحَ

1134. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे रौह बिन इबादा ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अरुबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) और ज़ैद बिन मालिक (रज़ि.) दोनों ने मिलकर सेहरी खाई, सेहरी से फ़ारिग होकर आप नमाज़ के लिये खड़े हो गये और दोनों ने नमाज़ पढ़ी। हमने अनस (रज़ि.) से पूछा कि सेहरी से फ़ाराग़ और नमाज़ शुरू करने के दरम्यान कितना फ़ासला रहा होगा? आपने जवाब दिया कि इतनी देर में एक आदमी पचास आयतें पढ़ सकता है।

(राजेअ: 576)

۱۱۳۴- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ وَزَيْدُ بْنُ قَابَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَسَحَّرَا. فَلَمَّا فَرَغَا مِنْ سَحُورِهِمَا قَامَ نَبِيُّ اللَّهِ ﷺ إِلَى الصَّلَاةِ فَصَلَّاهُ. قُلْنَا لِأَنَسٍ: كَمْ كَانَ بَيْنَ فَرَغِهِمَا مِنْ سَحُورِهِمَا وَدُخُولِهِمَا فِي الصَّلَاةِ؟ قَالَ: كَقَشْرِ مَا يَفْرَأُ الرَّجُلُ خَمْسِينَ آيَةً)).

[راجع: ۵۷۶]

तफ़्सीह: इमाम बुखारी (रह.) यहाँ ये बताना चाहते हैं कि इससे पहले जो अह्लादीष बयान हुई हैं, उनसे प्राबित होता है कि आप (ﷺ) तहज्जुद पढ़कर लेट जाया करते थे और फिर मुअज़्जिन सुबह की नमाज़ की ख़बर देने आता था लेकिन ये भी आप (ﷺ) से प्राबित है कि उस वक़्त लेटते नहीं थे बल्कि सुबह की नमाज़ पढ़ते थे। आप (ﷺ) का ये मा'मूल रमज़ान के महीने में था कि सहर के बाद थोड़ा सा तवक्कुफ़ फ़र्माते फिर फ़ज़ की नमाज़ अंधेरे में ही शुरू कर देते थे (तफ़्हीमुल बुखारी)। पस मा'लूम हुआ कि फ़ज़ की नमाज़ ग़लस (अंधेरे-अंधेरे) में पढ़ना सुन्नत है जो लोग इस सुन्नत का इंकार करते हैं और फ़ज़ की नमाज़ हमेशा सूरज निकलने के करीब पढ़ते हैं वो यक्नीनन सुन्नत के ख़िलाफ़ करते हैं।

बाब 9 : रात के क़याम में नमाज़ को लम्बा करना (या'नी क़िरअत बहुत करना)

1135. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने आ'मश से बयान किया, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक मर्तबा रात की नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने इतना लम्बा क़याम किया कि मेरे दिल में एक ग़लत ख़याल पैदा हो गया। हमने पूछा वो ग़लत ख़याल क्या था तो अपने बतलाया कि मैंने सोचा कि बैठ जाऊँ और नबी करीम (ﷺ) का साथ छोड़ दूँ।

ये एक वस्वसा था जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) के दिल में आया था मगर वो फ़ौरन सम्भलकर उस वस्वसे से बाज़ आ गए। हदीष से ये निकला कि रात की नमाज़ में आप बहुत लम्बी क़िरअत करते थे।

1136. हमसे हफ़स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने उनसे अबू वाइल ने और उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब रात में तहज्जुद के लिये खड़े होते तो पहले अपना मुँह मिस्वाक से ख़ूब स़ाफ़ करते।

(राजेअ: 245)

٩- بَابُ طُولِ الصَّلَاةِ فِي قِيَامِ اللَّيْلِ
١١٣٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ
حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ أَبِي وَائِلٍ
عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:
«صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةً، فَلَمْ يَزَلْ
قَائِمًا حَتَّى هَمَمْتُ بِأَمْرِ سَوْءٍ. فَلَنَّا: وَمَا
هَمَمْتُ؟ قَالَ: هَمَمْتُ أَنْ أَقْعُدَ وَأَذَرَ
النَّبِيَّ ﷺ».

١١٣٦- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ قَالَ
حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ خُصَيْنٍ عَنْ
أَبِي وَائِلٍ عَنْ حَذِيفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ «أَنَّ
النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَامَ لِلتَّهَجُّدِ مِنَ اللَّيْلِ
يُشْرِئُ فَاةً بِالسَّوَالِ».

[راجع: ٢٤٥]

तहज्जुद के लिये मिस्वाक का ख़ास एहतिमाम इसलिये था कि मिस्वाक कर लेने से नींद का ख़ुमार बख़ूबी उतर जाता है। आप (ﷺ) इस तरह नींद का ख़ुमार उतारकर लम्बा क़याम करने के लिये अपने को तैयार फ़र्माते। यहाँ इस हदीष और बाब में यही वजह मुताबक़त है।

बाब 10 : नबी करीम (ﷺ) की रात की नमाज़ की क्या कैफ़ियत थी? और रात की नमाज़ क्योंकर पढ़नी चाहिये?

1138. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुरैब ने जुहरी से ख़बर दी, कहा कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया एक शख्स ने दरयाफ़्त किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! रात की नमाज़ किस तरह पढ़ी जाए? आप (ﷺ) ने फ़र्माया दो-दो रकअत और जब तुलूअे-सुबह होने का अन्देशा हो तो एक रकअत वित्र पढ़ कर अपनी सारी नमाज़ को त़ाक़़ बना ले। (राजेअ: 482)

١٠- بَابُ كَيْفِ صَلَاةِ اللَّيْلِ وَ
كَيْفِ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ؟
١١٣٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا
شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ
بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «إِنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَتَبَاتُ صَلَاةُ اللَّيْلِ؟ قَالَ:
«نَقَى، نَقَى، فَإِذَا غَفَتِ الصُّبْحُ قَلَوْنَ
بِرَاحِدَةٍ».

[راجع: ٤٧٢]

तशरीह : रात की नमाज़ की कैफ़ियत बतलाई कि वो दो-दो रकअत पढ़ी जाएँ। इस तरह आखिर में एक रकअत वित्र पढ़कर उसे त़ाक़ बना लिया जाए। इसी आधार पर रात की नमाज़ जिसका नाम रमज़ान के अलावा दिनों में तहज्जुद है, और रमज़ान में तरावीह, ग्यारह रकअत पढ़ना मसनून है जिसमें आठ रकअतें दो-दो रकअत के सलाम से पढ़ी जाएगी फिर आखिर में तीन रकअत वित्र होंगे या दस रकअत अदा करके आखिर में एक रकअत वित्र पढ़ लिया जाए और अगर फ़ज़्र करीब हो तो फिर जिस क़दर भी रकअतें पढ़ी जा चुकी हैं उन पर इक्तिफ़ा करते हुए एक रकअत वित्र पढ़कर उनको त़ाक़ बना लिया जाए। इस हदीष से साफ़ एक रकअत वित्र प्राबित है। मगर हनफ़ी हज़रात एक रकअत वित्र का इंकार करते हैं।

इस हदीष के तहत अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, व हुव हुज्जतुन लिशशाफ़ि इय्यति अला जवाज़िलईतारि बिरकअतिन बाहिदतिन क़ालन्नववी व हुव मज़हबुलजुम्हूरि व क़ाल अबू हनीफ़त ला यसिहह बिबाहिदतिन व ला तकनूरकअतुल्बाहिदतु सलातन क़तु वल्अहादीषुस्सहीहतु तरुहु अलैहि या'नी इस हदीष से एक रकअत वित्र का सहोह होना प्राबित हो रहा है और जुम्हूर का यही मज़हब है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) इसका इंकार करते रहे हैं और कहते रहे हैं कि एक रकअत कोई नमाज़ नहीं होती हालाँकि अह्मदीयों सहोह उनके इस ख़याल की तर्दीद कर रही है।

1138. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने कहा कि मुझसे अबू हमज़ा ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की रात की नमाज़ तेरह रकअत होती थी।

۱۱۳۸- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو جَمْرَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ صَلَاةُ النَّبِيِّ ﷺ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً يَغْنِي بِاللَّيْلِ)).

1139. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमें इस्राईल ने ख़बर दी, उन्हें अबू हुसैन उप्मान बिन आसिम ने, उन्हें यह्या बिन वफ़ाब ने, उन्हें मसरूक़ बिन अजदअ ने, आपने कहा कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की रात की नमाज़ के मुता'ल्लिक़ पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि आप सात, नौ और ग्यारह तक रकअतें पढ़ते थे। फ़ज़्र की सुन्नत इसके सिवा होती।

۱۱۳۹- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا غَبِيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنِي إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي خُصَيْنٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ وَثَّابٍ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنْ صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِاللَّيْلِ فَقَالَتْ: سَبْعٌ وَبَسْغٌ وَإِخْدَى عَشْرَةٌ، سَبْوَ رَكْعَتَيِ الْفَجْرِ)).

रात की नमाज़ से मुराद ग़ैर रमज़ान में नमाज़े तहज्जुद और रमज़ान में नमाज़े तरावीह है।

1140. हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमें हज़ला बिन अबू सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उन्हें हज़रत आइशा सिदीक़ा (रज़ि.) ने, आपने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) रात में तेरह रकअत पढ़ते थे। वित्र और फ़ज़्र की दो रकअत सुन्नत इसी में होतीं।

۱۱۴۰- حَدَّثَنَا غَبِيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنَا حَنْظَلَةُ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً، مِنْهَا الْوُتْرُ وَرَكْعَتَا الْفَجْرِ)).

तशरीह: वित्र समेत या'नी दस रकअतें दो-दो करके तहज्जुद पढ़ते। फिर एक रकअत पढ़कर सबको ताक कर लेते। ये ग्यारह रकअतें तहज्जुद और वित्र की थीं और दो फ़ज़्र की सुन्नतें मिलाकर तेरह रकअतें हुई क्योंकि हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष में है कि आप (ﷺ) रमज़ान या ग़ैर रमज़ान में कभी ग्यारह रकअतों से ज्यादा नहीं पढ़ते थे। जिन रिवायात में आप (ﷺ) का बीस रकअतें तरावीह पढ़ना मज़कूर है वो सब ज़ईफ़ और नाक़ाबिले एहतिजाज हैं।

बाब 11 : आँहज़रत (ﷺ) की नमाज़ रात में और सो जाना और रात की नमाज़ में से जो मन्सूख हुआ (उसका बयान)

और अल्लाह तआला ने इसी बाब में (सूरह मुज़ज़म्मिल में) फ़र्माया ऐ कपड़ा लपेटने वाले! रात को (नमाज़ में) खड़ा रह आधी रात या उससे कुछ कम सबहन तबीला तक। और फ़र्माया अल्लाह पाक जानता है कि तुम रात की इतनी इबादत निबाह न सकोगे तो तुम को माफ़ कर दिया। वस्तःफ़िरुल्लाह इन्नल्लाह ग़फ़ूर रूहीम तक। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि कुआन में जो लफ़ज़ नाशितल्लैल है तो नशा के मा'नी हब्शी ज़बान में खड़ा हुआ और वता के मा'नी मुवाफ़िक़ होना या'नी रात का कुआन कान और आँख और दिल को मिलाकर पढ़ा जाता है।

इसको भी अब्द बिन हुमैद ने वस्ल किया या'नी रात को सुकूत (खामोशी) की वजह से और खामोशी से कुआन पढ़ने में दिल और जुबान और कान और आँख सब उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहते हैं। वरना दिन को आँख किसी तरफ़ पड़ती है, कान किसी तरफ़ लगता है, दिल कहीं और होता है।

1141. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद तबील ने, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी महीने में रोज़ा न रखते तो ऐसा मा'लूम होता कि अब आप इस महीने में रोज़ा नहीं रखेंगे और अगर किसी महीने में रोज़ा रखना शुरू करते तो ये ख़याल होता कि अब आपका इस महीने का एक दिन भी बग़ैर रोज़े के नहीं रह जाएगा और रात को नमाज़ तो ऐसी पढ़ते थे कि तुम जब चाहते आपको नमाज़ पढ़ते देख लेते और जब चाहते सोता देख लेते। मुहम्मद बिन जा'फ़र के साथ इस हदीष को सुलैमान और अबू ख़ालिद ने भी हुमैद से रिवायत किया है।

(दीगर मक़ाम: 1972, 1973, 3061)

तशरीह: इसका मतलब ये है कि आप (ﷺ) सारी रात सोते भी नहीं थे और सारी रात जागते और इबादत भी नहीं करते थे। हर रात में सोते और इबादत भी करते तो जो शख्स आप (ﷺ) को जिस हाल में देखना चाहता देख लेता

١١- بَابُ قِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ وَتَوْبِهِ، وَمَا نُسَخَ مِنْ قِيَامِ اللَّيْلِ وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الْمَرْءُ! قُمْ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا، يَنْفَعُ إِلَى قَوْلِهِ مَتَحَا طَوِيلًا﴾. وَقَوْلُهُ: ﴿عَلِمَ أَنْ لَنْ تَحْصُوهُ قَطَبَ عَلَيْكُمْ، إِلَى قَوْلِهِ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: نَشَأَ قَامَ بِالْحَبَشَةِ. وَطَاءَ مَوَاطِئَ الْفَرَّانِ، أَشَدَّ مَوَاقِفَ لِسْمَعِهِ وَبَصَرِهِ وَقَلْبِهِ. يُوَاطِئُوا: يُؤَاقِفُوا.

١١٤١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَفْطِرُ مِنَ الشَّهْرِ حَتَّى نَظُنَّ أَنْ لَا يَصُومَ مِنْهُ، وَيَصُومُ حَتَّى نَظُنَّ أَنْ لَا يَفْطِرُ مِنْهُ شَيْئًا. وَكَانَ لَا تَشَاءَ أَنْ تَرَاهُ مِنَ اللَّيْلِ مُصَلِّيًا إِلَّا رَأَيْتَهُ، وَلَا نَائِمًا إِلَّا رَأَيْتَهُ)). تَابِعَهُ سُلَيْمَانُ وَأَبُو خَالِدٍ الْأَحْمَرُ عَنْ حُمَيْدٍ.

[أضامه في: ١٩٧٢، ١٩٧٣، ٣٥٦١].

था। कुछ लोग ये समझते हैं कि सारी रात जागना और इबादत करना या हमेशा रोज़े रखना आँहज़रत (ﷺ) की इबादत से बढ़कर है। उनको इतना शुक्र नहीं कि सारी रात जागते रहने से, हमेशा रोज़ा रखने से नफ़्स को आदत हो जाती है फिर उसको इबादत में कोई तकलीफ़ नहीं रहती है। मुश्किल यही है कि रात को सोने की आदत भी रहे उसी तरह दिन में खाने-पीने की आदत और फिर नफ़्स पर जोर डालकर जब जी चाहे उसकी आदत तोड़े। मोठी नींद से मुँह मोड़े। पस जो आँहज़रत (ﷺ) ने किया वही अफ़ज़ल और वही आला और वही मुश्किल है। आप (ﷺ) की नौ बीवियाँ थीं आप (ﷺ) उनका हक़ भी अदा करते थे, कहिये उसके लिये कितना बड़ा दिल और जिगर चाहिये। एक सोंटा लेकर लंगोट बाँधकर अकेले दम बैठ रहना और बेफ़िक़्री से एक तरफ़ के हो जाना ये नफ़्स पर बहुत आसान है।

बाब 12 : जब आदमी रात को नमाज़ न पढ़े तो शैतान का गुद्दी पर गिरह लगाना

1142. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअरज ने और उन्हें अबू हुसैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि शैतान आदमी के सर के पीछे रात में सोते वक़्त तीन गिरहें लगा देता है और हर गिरह पर ये अफ़सूँ फूँक देता है कि सो जा अभी रात बहुत बाक़ी है। फिर अगर कोई बेदार होकर अल्लाह की याद करने लगता है तो एक गिरह खुल जाती है। फिर जब वुजू करता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है फिर अगर नमाज़ (फ़र्ज़ या नफ़ल) पढ़े तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है। इस तरह सुबह के वक़्त वुजू के वक़्त आदमी चाक़-चौबन्द खुश मिज़ाज रहता है, वरना सुस्त और बदबान्न रहता है।

(दीगर मक़ाम : 3249)

١٢ - بَابُ عَقْدِ الشَّيْطَانِ عَلَى قَائِمَةِ الرَّأْسِ إِذَا لَمْ يُصَلِّ بِاللَّيْلِ

١١٤٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((يَعْقُدُ الشَّيْطَانُ عَلَى قَائِمَةِ رَأْسِ أَحَدِكُمْ إِذَا هُوَ نَامَ ثَلَاثَ عَقَدٍ، يَضْرِبُ عَلَى مَكَانِ كُلِّ عَقْدَةٍ عَلَيْكَ كِلْ طَوِيلٌ لَارْقُدْ. فَإِنْ اسْتَبَقَطَ فَلَا تَزُكُّ. اللَّهُ أَنْخَلَتْ عَقْدَةً. فَإِنْ تَوَمَّأَ أَنْخَلَتْ عَقْدَةً، فَإِنْ صَلَّى أَنْخَلَتْ عَقْدَةً، فَأَصْبَحَ نَشِيطًا طَيِّبَ النَّفْسِ، وَإِلَّا أَصْبَحَ غَبِيثَ النَّفْسِ كَسَلَانٍ)). [طرفه ٣: ٣٢٦٩].

तशरीह: हदीष में जो आया है वो बिलकुल ठीक है। हक़ीक़त में शैतान गिरहें लगाता है और ये गिरहें एक शैतानी धागे में होती है वो धागा गुद्दी पर रहता है। इमाम अहमद की रिवायत में साफ़ ये है कि एक रस्सी से गिरह लगाता है कुछ ने कहा गिरह लगाने से ये मक़सूद है कि शैतान जादूगर की तरह उस पर अपना अफ़सूँ चलाता है और उसे नमाज़ से गाफ़िल करने के लिये थपक-थपककर सुला देता है।

1143. हमसे मुअम्मल बिन हिशाम ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन अलिया ने बयान किया कहा कि हमसे औफ़ अअराबी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू रजाअ ने बयान किया, कहा कि हमसे समुरह बिन जुन्दब जुन्दब (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने ख़्वाब बयान करते

١١٤٣ - حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنَا عَوْفٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَمُورَةُ بْنُ جُنْدَبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي

हुए फ़र्माया कि जिसका सर पत्थर से कुचला जा रहा था वो कुआँन का हाफ़िज़ था मगर वो कुआँन से ग़ाफ़िल हो गया था और फ़र्ज़ नमाज़ पढ़े बग़ैर सो जाता था। (राजेज़ : 845)

या'नी इशा की नमाज़ न पढ़ता न फ़ज़ के लिये उठता हालाँकि उसने कुआँन पढ़ा था मगर उस पर अमल नहीं किया बल्कि उसको झुठला दिया, आज दोज़ख में उसको ये सज़ा मिल रही है। ये हदीष तफ़्सील के साथ आगे आणी।

बाब 13 : जो शख्स सोता रहे और (सुबह की) नमाज़ न पढ़े, मा'लूम हुआ कि शैतान ने उसके कानों में पेशाब कर दिया

1144. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबुल अहवस सलाम बिन सुलैम ने बयान किया, कहा कि हमसे मन्सूर बिन मुअतमिर ने अबू वाइल से बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने एक शख्स का ज़िक्र आया कि वो सुबह तक पड़ा सोता रहा और फ़र्ज़ नमाज़ के लिये भी नहीं उठा। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि शैतान ने उसके कान में पेशाब कर दिया। (दीगर मक़ाम : 328)

जब शैतान खाता-पीता है तो पेशाब भी करता होगा। इसमें कोई अमर क़यास के खिलाफ़ नहीं है। कुछ ने कहा पेशाब करने से ये मतलब है कि शैतान ने उसको अपना महकूम बना लिया और कान की तख़सीस इस वजह से की है कि आदमी कान ही से आवाज़ सुनकर बेदार होता है। शैतान ने उसमें पेशाब करके उसके कान भर दिये। क़ालक़ुर्तुबी व गैरूहू ला मानिअ मिन ज़ालिक इज़ ला इहालत फीहि लिअन्नहू षबत अन्नशैतान याकुलु व यशरु व यन्कहु फला मानिअ मिन अंध्यबूल (फ़ल्हूल बारी) या'नी कुर्तबी वगैरह ने कहा कि उसमें कोई इश्काल नहीं है। जब ये बात प्राबित है कि शैतान खाता-पीता है और शादी भी करता है तो उसका ऐसे ग़ाफ़िल बेनमाज़ी आदमी के कान में पेशाब कर देना क्या बर्हद है।

बाब 14 : आख़िर रात में दुआ और नमाज़ का बयान और अल्लाह तआला ने (सूरह वज़ज़ारियात में) फ़र्माया कि रात में वो बहुत कम सोते और सेहरी के वक़्त इस्तिग़फ़ार करते थे हुजूअ के मा'नी सोना

1145. हमसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा क़अम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा अब्दुरहमान और अबू अब्दुल्लाह अगर ने और उन दोनों हज़रात से अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमारा परवरदिगार बलन्द बरकत वाला हर रात को

الرُّؤْيَا قَالَ : «أَنَا الَّذِي يَنْقُغُ رَأْسَهُ بِالْحَجَرِ فَإِنَّهُ يَأْخُذُ الْقُرْآنَ فَيَرْتَضِيهِ وَيَتَمَّ عَنْ الصَّلَاةِ الْمَكْتُوبَةِ».. (راجع : ٨٤٥)

١٣- بَابُ إِذَا نَامَ وَلَمْ يُصَلِّ بَالَ الشَّيْطَانُ فِي أُذُنِهِ

١١٤٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ قَالَ: حَدَّثَنَا مَنصُورٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ذَكَرَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ رَجُلٌ لَقِينُ: مَا زَالَ نَائِمًا حَتَّى أَصْبَحَ، مَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ فَقَالَ: «بَالَ الشَّيْطَانُ لِي أُذُنِي».

[طرقه ب: ٣٢٧٠].

١٤- بَابُ الدُّعَاءِ وَالصَّلَاةِ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ وَقَالَ اللَّهُ غَزَوْجَلُ: «كَانُوا قَلِيلًا مِنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ» أَيُّ مَا يَنَامُونَ «وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ»

١١٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَأَبِي عَبْدِ اللَّهِ الْأَعْرَبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يَتَرَلَّى رُبَّنَا

उस वक़्त आसमाने दुनिया पर आता है जब रात का आख़री तिहाई हिस्सा रह जाता है। वो कहता है कोई मुझसे दुआ करने वाला है कि मैं उसकी दुआ कुबूल करूँ, कोई मुझसे माँगने वाला है कि मैं उसे दूँ, कोई मुझसे बख़्शिश तलब करने वाला है कि मैं उसको बख़्श दूँ। (दीगर मक़ामात : 6321, 7394)

تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلُّ لَيْلَةٍ إِلَى سَمَاءِ الدُّنْيَا حَتَّى يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرِ يَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ، مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ، مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ.

[طرفاء في: ١٦٣٢١، ٧٤٩٤]

तशरीह: बिला तावील व बिला तकईफ़ अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन का अर्शें मुअला से आसमाने दुनिया पर उतरना बरहक़ है। जिस तरह उसका अर्शें अज़ीम पर मुस्तवी होना बरहक़ है। अहले हदीष का शुरू से आख़िर तक यही अक़ीदा है। कुआन मजीद को सात आयात में अल्लाह का अर्शें पर मुस्तवी होना बयान किया गया है। चूँकि आसमान भी सात ही हैं लिहाज़ा इन सातों के ऊपर अर्शें अज़ीम और उस पर अल्लाह का इस्तवा; इसीलिये सात आयात में मज़कूर हुआ पहली आयत सूरह अअराफ़ में है, इन्न रब्बकुमुहुल्लाहुल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्लअर्ज़ फ़ी सित्ति अय्यामिन घुम्मस्तवा अलल्लअर्शि (अल आराफ़ : 54) 'तुम्हारा रब वो है जिसने छः दिनों में आसमान और ज़मीन को पैदा किया फिर अर्शें पर मुस्तवी हुआ।' दूसरी आयत सूरह यूनुस में है, इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्लअर्ज़ फ़ी सित्ति अय्यामिन घुम्मस्तवा अलल्लअर्शि युदख़िरुल्लअमर (यूनुस : 3) बेशक तुम्हारा रब वो है जिसने छः दिनों में ज़मीन और आसमान को पैदा किया फिर अर्शें पर क़ायम हुआ। तीसरी आयत सूरह रअद में ये है, अल्लाहु रफ़अस्समावाति बिग़ैरि अमदिन तरौनहा घुम्मास्तवा अलल्लअर्शि (अरअद : 2) अल्लाह वो है जिसने बग़ैर सुतूनों के ऊँचे आसमान बनाए जिनको तुम देख रहे हो फिर वो अर्शें पर क़ायम हुआ। चौथी आयत सूरह त़ाहा की है, तन्ज़ीलम्मिम्मन ख़लक़ल अर्ज़ वस्समावातिल इला अरहमानु अलल्लअर्शिस्तवा (त़ाहा : 19-20) या'नी इस कुआन का नाज़िल करना उसका काम है जिसने ज़मीन और आसमान को पैदा किया फिर रहमान अर्शें के ऊपर मुस्तवी हुआ। पाँचवी आयत सूरह फुर्क़ान में है अल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्लअर्ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्ति अय्यामिन घुम्मस्तवा अलल्लअर्शि (अल फुर्क़ान : 59) वो अल्लाह जिसने ज़मीन व आसमान और जो कुछ उनके बीच में है सबको छः दिनों में पैदा किया फिर वो अर्शें पर क़ायम हुआ। छठी आयत सूरह सज्दा की है, अल्लाहुल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्लअर्ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्ति अय्यामिन घुम्मस्तवा अलल्लअर्शि (अस्सज्दा : 4) अल्लाह वो है जिसने ज़मीन व आसमान को और जो कुछ इनके बीच है छः दिनों में पैदा किया वो फिर अर्शें पर क़ायम हुआ। सातवी आयत सूरह हदीद की है, हुवल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्लअर्ज़ फ़ी सित्ति अय्यामिन घुम्मस्तवा अलल्लअर्शि यअलमु मा यलिजु फ़िल्लअर्ज़ि व मा यख़रुजु मिन्हा व मा युन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअरुजु फ़ीहा व हुव मअकुम अयन मा कुन्तुम वल्लाहु बिमा तअमलून बसीर (अल हदीद : 4) या'नी अल्लाह वो ज़ात पाक है जिसने छः दिनों में ज़मीन व आसमानों को बनाया वो फिर अर्शें पर क़ायम हुआ उन सब चीज़ों को जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होती हैं और जो कुछ उससे बाहर निकलती हैं और जो चीज़ें आसमान से उतरती हैं और जो कुछ आसमान की तरफ़ चढ़ती हैं वो सबसे वाकिफ़ है और वो तुम्हारे साथ है तुम जहाँ भी रहो और अल्लाह पाक तुम्हारे सारे कामों को देखने वाला है।

इन सात आयतों में सराहृत के साथ अल्लाह पाक का अर्शें अज़ीम पर मुस्तवी होना मज़कूर है। आयाते कुआनी के अलावा 15 अह्दादीषें ऐसी हैं जिनमें अल्लाह पाक का आसमानों के ऊपर अर्शें अज़ीम पर होना मज़कूर है और जिनसे इसके लिये जहते फ़ौक़ प्राबित है। इस हक़ीक़त के बाद इस बारी तआला व तक्रहुस का अर्शें अज़ीम से आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़र्माया ये भी बरहक़ है।

हज़रत अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) ने इस बारे में एक मुस्तक़िल किताब नुज़ूलुरब्बि इलस्समाइहुनियानामी तहरीर फ़र्माई है जिसमें वाज़ेह दलीलों से उसका आसमाने दुनिया पर नाज़िल होना प्राबित फ़र्माया है।

हज़रत अल्लामा वहीदुज्जमाँ स़ाहब के लफ़ज़ों में खुलासा ये है या'नी वो खुद अपनी ज़ात से उतरता है जैसे दूसरी

रिवायत में है नज़ल बिज़ातिही अब ये तावील करना की उसकी रहमत उतरती है, सिर्फ़ फ़ासिद है। अलावा उसके उसकी रहमत उतरकर आसमान तक रह जाने से हमको फ़ायदा ही क्या है, इस तरह ये तावील कि एक फ़रिश्ता उसका उतरता है ये भी फ़ासिद है क्योंकि फ़रिश्ता ये कैसे कह सकता है जो कोई मुझसे दुआ करे मैं कुबूल करूँगा, गुनाह बख़्श दूँगा। दुआ कुबूल करना या गुनाहों को बख़्श देना ख़ास परवरदिगार का काम है। अहले हदीष ने इस किस्म की हदीषों को जिनमें सिफ़ात इलाही का बयान है, दिल व जान से कुबूल किया है और उनके अपने ज़ाहिरी मा'नी पर महमूल रखा है। मगर ये ए'तिक्काद रखते हैं कि उसकी सिफ़ात मख़लूक की सिफ़ात के मुशाबेह नहीं हैं और हमारे अइहाब में से शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया (रह.) ने इस हदीष की शरह में एक किताब लिखी है जो पढ़ने के काबिल है और मुख़ालिफ़ों के तमाम ए'तिराज़ों और शुब्हों का जवाब दिया है।

इस हदीष पर रोशनी डालते हुए अल मुहदिषुल कबीर हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, व मिन्हम मन अज्राहू अला मा वरद मूमिनन बिही अला त़रीकिल् इज्मालि मुनज़ज़हल्लाहि तआला मिनल् कैफ़ियति वतशबीहि व हुम जुम्हुरूस्सलफ़ि व नकलहुल्बैहकी व गैरहू अनिल् अइम्मतिल् अरबअति अस्सुफ़यानैनि वल्हम्मादैनि वल्औजाई वल्लैप्र वगैरहुम व हाज़ल्क़ौलु हुवलहवकुफ़्रअलैक इत्तिबाउ जुम्हूरिस्सलफ़ि व इय्याक अन तकून मिन अस्हाबित्तावीलि वल्लाहु तआला आलमु (तुहफ़तुल अहवज़ी) या'नी सलफ़ ज़ालेहीन व अइम्मा-ए-अरबअ और बेशतर इलमा-ए-दीन, अस्ताफ़े किराम का यही अक़ीदा है कि वो बग़ैर तावील और कैफ़ियत और तशबीह के कि अल्लाह उससे पाक है जिस तरह से ये सिफ़ाते बारी तआला वारिद हुई हैं, उन पर इमान रखते हैं और यही हक़ व प्रवाब है। पस सलफ़ की इत्तिबाअ लाज़िम पकड़ ले और तावील वालों में से मत हो कि यही हक़ है। वल्लाहु अअलम।

बाब 15 : जो शरूख़ रात के शुरू में सो जाए और अख़ीर में जागे

١٥ - بَابُ مَنْ نَامَ أَوَّلَ اللَّيْلِ وَأَحْيَى آخِرَهُ

और हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने अबू दर्दा (रज़ि.) से फ़र्माया कि शुरू रात में सो जा और आख़िर रात में इबादत कर, नबी करीम (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया था कि सलमान ने बिल्कुल सच कहा।

وَلَمَّا سَلَّمَ لَأَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ثُمَّ لَمَّا كَانَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ قَالَ: لَمْ يَلَمْ يَلَمْ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ سَلْمَانُ)).

1146. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुझसे सुलैमान बिन हरब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ अम्र बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने, उन्हें बतलाया कि मैंने हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) से पूछा कि नबी करीम (ﷺ) रात में नमाज़ क्योंकि पढ़ते थे? आप ने बतलाया कि शुरू रात में सो रहते और आख़िर रात में बेदार होकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते। इस के बाद बिस्तर पर आ जाते और जब मुअज्जिन अज़ान देता तो जल्दी से उठ बैठते। अगर गुस्ल की ज़रूरत होती तो गुस्ल करते वरना वुजू करके बाहर तशरीफ़ ले जाते।

١١٤٦ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ - ح وَحَدَّثَنِي سَلْمَانُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ - عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْأَسْوَدِ قَالَ ((سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: كَيْفَ صَلَاةُ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ؟ قَالَتْ كَانَ يَنَامُ أَوَّلَهُ، وَيَقُومُ آخِرَهُ فَيُصَلِّي، ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى فِرَاجِهِ، فَإِذَا أَدَانَ الْمُؤَذِّنُ وَتَبَّ، فَإِنْ كَانَتْ بِهِ حَاجَةٌ اغْتَسَلَ، وَإِلَّا تَوَضَّأَ وَخَرَجَ)).

मतलब ये कि न सारी रात सोते ही रहते और न सारी रात नमाज़ ही पढ़ते रहते बल्कि दरम्यानी रास्ता आप (ﷺ) को पसंद

था और यही मसनून है।

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) का रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में रात को नमाज़ पढ़ना

1147. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबू सईद मक्बरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) से उन्होंने पूछा कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान में (रात को) कितनी रकअतें पढ़ते थे। आपने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (रात में) ग्यारह रकअतों से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे, ख़वाह रमज़ान का महीना होता या कि कोई और, पहले आप (ﷺ) चार रकअत पढ़ते, उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना फिर आप (ﷺ) चार रकअत और पढ़ते उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना। फिर तीन रकअतें पढ़ते। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप वित्र पढ़ने से पहले ही सो जाते हैं? इस पर आप (ﷺ) फ़र्माया कि आइशा, मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल नहीं सोता।

(दीगर मक़ाम : 2013, 3549)

١٦- بَابُ قِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ فِي رَمَضَانَ وَغَيْرِهِ

١١٤٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: «كَيْفَ كَانَتْ صَلَاةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي رَمَضَانَ؟ فَقَالَتْ: مَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَزِيدُ فِي رَمَضَانَ وَلَا فِي غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةِ رَكْعَةً: يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلَا تَسْأَلُ عَنْ حُسَيْنٍ وَطَوْلِيٍّ. ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلَا تَسْأَلُ عَنْ حُسَيْنٍ وَطَوْلِيٍّ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلَاثًا. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَتَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُؤَيَّرَ؟ فَقَالَتْ: «يَا عَائِشَةُ إِنَّ عَيْنِي تَنَامَانِ وَلَا يَنَامُ قَلْبِي».

[طرفه: ٢٠١٣، ٣٥٦٩].

तसरीह: इन्हीं ग्यारह रकअतों को तरावीह करार दिया है और आँहज़रत (ﷺ) से रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में बरिवायत सहीह यही ग्यारह रकअतें प्राबित हैं। रमज़ान शरीफ़ में ये नमाज़े तरावीह के नाम से मौसूम हुई और ग़ैर रमज़ान में तहज्जुद के नाम से पुकारी गई। पस सुन्नते नबवी (ﷺ) सिर्फ़ आठ रकअतें तरावीह इस तरह कुल ग्यारह रकअतें अदा करनी प्राबित है। जैसा कि नीचे लिखी अह्दादीष से मज़ीद बज़ाहत होती है,

अन जाबिरिन (रज़ि.) क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान प्रमान रकआतिन वल्वित्त अल्लामा मुहम्मद बिन नज़्ज़ मरवज़ी हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमको रमज़ान में आठ रकअत तरावीह और वित्र पढ़ा दिया (या) नी कुल ग्यारह रकआत)

नेज़ हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मा कान यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी ग़ैरिही अला इहदा अशरत रकआतिन रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे।

कुछ लोगों को इससे ग़लतफ़हमी हो गई कि ये तहज्जुद के बारे में है तरावीह के बारे में नहीं। लिहाज़ा मा'लूमे हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ान में तरावीह और तहज्जुद अलग दो नमाज़ें क़ायम नहीं कीं। वही क़यामे रमज़ान (तरावीह) या दीगर लफ़्ज़ों में तहज्जुद; ग्यारह रकअत पढ़ते और क़यामे रमज़ान (तरावीह) को हदीष शरीफ़ में क़यामुललैल (तहज्जुद) भी फ़र्माया।

रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) को तरावीह पढ़ा कर फ़र्माया, 'मुझको डर हुआ कि तुम पर सलातुल्लैल (तहज्जुद) फ़र्ज़ न हो जाए।' देखिए आप (ﷺ) ने तरावीह को तहज्जुद फ़र्माया। इससे मा'लूम हुआ कि रमज़ान में क़यामे रमज़ान (तरावीह) और सलातुल्लैल (तहज्जुद) एक ही नमाज़ है।

तरावीह व तहज्जुद के एक होने की दूसरी दलील :

अन अबी ज़रिन क़ाल मुम्ना मअ रसूलिल्लाहि (ﷺ) रमज़ान फलम यकुम बिना शैअम्मिन्हु हत्ता बक्रिय सबअ लयालिन फ़क़ाम बिना लैलतस्साबिअति हत्ता मज़ा नहवु मिन घुलुषिल्लैलि घुम्म कानतिल्लैलतुस् सादिसतुल्लती तलीहा फलम यकुम बिना हत्ता कानत खामिसतल्लती तलीहा क़ाम बिना हत्ता मज़ा नहवुम्मिन शतरिल्लैलि फकुल्लतु या रसूलिल्लाहि लौ नफ़ल्लतुना बक्रियत लैलतिना हाज़िहि फ़क़ाल अन्नहू मन क़ाम मअल्दमामि हत्ता यन्सरिफ़ फ़इन्नहू यअदिलु क्रियामुल्लैलति घुम्म कानतिराबिअतुल्लती तलीहा फ़लम यकुम्हा हत्ता कानतिप्रालिषतुल्लती तलीहा क़ाल फ़जमअ निसाअहू व अहलह वज्तमअन्नासु क़ाल फ़क़ाम बिना हत्ता खशीना अय्यफ़ूतनल्फ़लाहु क़ीला व मल्फ़लाह क़ाल अस्सुदूख़ घुम्म लम यकुम बिना शैअन मिम्बक्रियतिश शहरि (रवाहु इब्ने माजा) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हमने रमज़ान के रोज़े रखे, आप (ﷺ) ने हमको आख़िर के हफ़्ते में तीन ताक़ रातों में तरावीह इस तर्तीब से पढ़ाई कि पहली रात को अव्वल वक़्त में, दूसरी रात को निस्फ़ शब में, और फिर निस्फ़े बक्रिया से। सवाल हुआ कि और नमाज़ पढ़ाइये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो इमाम के साथ नमाज़ अदा करे उसका पूरी रात का क़याम होगा। फिर तीसरी रात को आख़िर शब में अपने अहले बैत को जमा करके सब लोगों की जमईयत में तरावीह पढ़ाई, यहाँ तक कि हम डरे कि जमाअत ही में सेहरी का वक़्त न चला जाए। इस हदीष को इब्ने माजा ने रिवायत किया है और बुखारी शरीफ़ में ये हदीष मुख्तसर लफ़्ज़ों में कई जगह नक़ल हुई है।

इससे मा'लूम हुआ कि आप (ﷺ) ने उसी एक नमाज़े तरावीह को रात के तीन हिस्सों में पढ़ाया है और इस तरावीह का वक़्त इशा के बाद अख़ीर रात तक अपने फ़ैअल (उस्वा-ए-हसना) से बता दिया जिसमें तहज्जुद का वक़्त आ गया। पस फ़ैअले रसूलुल्लाह (ﷺ) से प्रामित हो गया है कि इशा के बाद आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है।

नीज़ इसकी ताईद हज़रत उमर (रज़ि.) के उस क़ौल से होती है जो आपने फ़र्माया वल्लती तनामून अन्हा अफ़ज़लु मिनल्लती तक्मून ये तरावीह पिछली रात में कि जिसमें तुम सोते हो पढ़ना बेहतर है अव्वल वक़्त पढ़ने से।' मा'लूम हुआ कि नमाज़े तरावीह व तहज्जुद एक ही है और यही मतलब हज़रते आइशा (रज़ि.) वाली हदीष का है।

नीज़ हदीष पर इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब बाँधा है कि बाबुन: फ़ज़लुम्मन क़ाम रमज़ान और इमाम बैहकी (रह.) ने हदीष मज़कूर पर यूँ बाब मुनअक्रिद किया है। बाबुन मा रूबिय फ़ी अददि रकआतिल्क्रियामि फ़ी शहरि रमज़ान और इसी तरह इमाम मुहम्मद (रह.) शागिर्द इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने बाबु क़यामि शहरि रमज़ान के तहत हदीषे मज़कूर को नक़ल किया है। इन सब बुजुर्गों की मुराद भी हदीषे आइशा (रज़ि.) से तरावीह ही है और ऊपर मुफ़स्सल गुज़र चुका है कि अव्वल रात से आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है। अब रहा कि इन तीनों रातों में कितनी रकअतें पढ़ाई थीं? सो अर्ज़ है कि अलावा वित्र आठ ही रकअतें पढ़ाई थीं। इसके घुबूत में कई रिवायते सहीहा आई हैं जो दर्ज़ ज़ैल हैं,

उलमा व फ़ुक़हा-ए-हनफ़िया ने फ़र्मा दिया कि आठ रकअत तरावीह सुन्नते नबवी है:

(1) अल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) उम्दतुलक़ारी (जिल्द : 3, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, फ़इन कुल्लतु लम युबय्यिन फिरिवायातिल्मज़कूरति अददुस्सलालिल्लती सल्लहा रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़ी तिल्क्ल्लयालि कुल्लतु रवाहु इब्नु खुज़ैम: व इब्नु हिब्बान मिन हदीषि जाबिरिन क़ाल सल्ला बिना रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान प्रमान रकआतिन घुम्म औतर 'अगर तू सवाल करे कि जो नमाज़ आप (ﷺ) ने तीन रातों में पढ़ाई थी उसमें ता'दाद का ज़िक्र नहीं तो मैं उसके जवाब में कहूँगा कि इब्ने खुज़ैमा और इब्ने हिब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अलावा वित्र के आठ रकअतें पढ़ाई थीं।'

(2) हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़तहुल बारी (जिल्द: 1, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, लम अरा फ़ी शैइन मिन तुरुकिही बयानु अददि सलातिही फ़ी तिल्कल्लयाली लाकिन खादुब्नु खुज़ैमा वब्नु हिब्बान मिन हदीषि जाबिरिन क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान प्रमान रकअतिन घुम्म औतर 'मैंने हदीषे मज़क़ूरा बाला की किसी सनद में नहीं देखा कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन तीन रातों में कितनी रकअत पढ़ाई थीं। लेकिन इब्ने खुज़ैमा और इब्ने हिब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अलावा वित्र के आठ रकअत पढ़ाई थीं।

(3) अल्लामा ज़ेलई हनफ़ी (रह.) ने नस्रबुरीया फ़ी तख़रीजे अह्मदीय अल हिदाया (जिल्द: 1, पेज नं. 293) में इस हदीष को नक़ल किया है कि इन्दब्नि हिब्बान फ़ी सहीहिही अन जाबिरिन्नि अब्दिल्लाहि अन्नहू अलैहिस्सलाम सल्ला बिहिम प्रमान रकअतिन वल्वित् इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को आठ रकअत और वित्र पढ़ाए या'नी कुल ग्यारह रकअत।

(4) इमाम मुहम्मद, शागिर्द इमामे आजम (रह.) अपनी किताब मौता इमाम मुहम्मद (पेज नं. 93) में बाबे तरावीह के तहत फ़र्माते हैं अन अबी सल्लमत्बि अब्दिरहमानि अन्नहू सअल आइशत कैफ़ कानत सलातु रसूलिल्लाहि (ﷺ) क़ालत मा कान रसूलुल्लाहि यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी गैरिही अला इहदा अशरत रकअतन अबू सलमा बिन अब्दुरहमान से मरवी है कि उन्होंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की रात की नमाज़ कैसी थी तो बतलाया कि रमज़ान व गैर रमज़ान में आप ग्यारह रकअत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे। रमज़ान व गैर रमज़ान की तहकीक़ पहले गुज़र चुकी है। फिर इमाम मुहम्मद (रह.) इस हदीष शरीफ़ को नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं मुहम्मद व बिहाज़ा नाखुज़ूहु कुल्लहू हमारा भी इन सब हदीषों पर अमल है, हम इन सब को लेते हैं।

(5) हिदाया जिल्द अब्वल के हाशिये पर है, अस्सुन्नतु मा वाज़ब अलैहिर्रसूलु (ﷺ) फहसबु फ़अला हाज़िहित्तअरीफ़ि यकूनस्सुन्नतु हुब ज़ालिकल्कदरुल्मजक़ूर व मा जाद अलैहि यकून मुस्तहब्बन सुन्नत सिर्फ़ वही है जिसको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमेशा किया हो। पस इस ता'रीफ़ के मुताबिक़ सिर्फ़ मिन्नदार मज़क़ूर (आठ रकअत ही) सुन्नत होगी और जो उससे ज़्यादा हो वो नमाज़ मुस्तहब्ब होगी।

(6) इमाम इब्नुल हुमाम हनफ़ी (रह.) फ़तहुल क़दीर शरह हिदाया में फ़र्माते हैं फ़तहस्सल मिन हाज़ा कुल्लिही अन्न क्रियाम रमज़ान सुन्नतुन इहदा अशरत रकअतन बिल्वित् फ़ी जमाअतिन फ़अलहुन्नबिय्यु (ﷺ) इन तमाम का खुलासा ये है कि रमज़ान का क्रियाम (तरावीह) सुन्नत मअ वित्र ग्यारह रकअत बाजमाअत रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअल (उस्व-ए-हसना) से प्राबित है।

(7) अल्लामा मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी (रह.) अपनी किताब मिरकात शरहे मिश्कात में फ़र्माते हैं, अन्नतराहीव फ़िल्अज़िल इहदा अशरत रकअतन फ़अलहु रसूलुल्लाहि (ﷺ) घुम्म तरकहू लिउज़्रिन दरअसल तरावीह रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअल से ग्यारह ही रकअत प्राबित है। जिनको आप (ﷺ) ने पढ़ा बाद में इज़्र की वजह से छोड़ दिया।

(8) मौलाना अब्दुल हय्यि हनफ़ी लखनवी (रह.) तअलीकुल मुम्जिद शरह मौता इमाम मुहम्मद (रह.) में फ़र्माते हैं व अख़रजब्नु हिब्बान फ़ी सहीहिही मिन हदीषि जाबिरिन अन्नहू सल्ला बिहिम प्रमान रकअतिन घुम्म औतर व हाज़ा असहहू और इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में जाबिर (रज़ि.) की हदीष से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) को अलावा वित्र आठ रकअतें पढ़ाईं। ये हदीष बहुत सहीह है।

इन हदीषों से साफ़ प्राबित हुआ कि रसूले अकरम (ﷺ) आठ रकअत तरावीह पढ़ते और पढ़ाते थे। जिन रिवायात में आप (ﷺ) का बीस रकअत पढ़ना मज़क़ूर है वो सब ज़ईफ़ और नाकाबिले इस्तिदाल हैं।

सहाबा (रज़ि.) और सहाबियात (रज़ि.) का हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में आठ रकअत तरावीह पढ़ना :

(9) इमाम मुहम्मद बिन नस्र मरवज़ी (रह.) ने क्रियामुललैल में हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है जाअ उबय इब्नि कअबिन फ़ी रमज़ान फ़क़ाल या रसूलुल्लाहि (ﷺ) कानल्लैलत शैउन क़ाल व मा ज़ाक़ या उबय क़ाल

निस्वतुदारी कुल्ल इन्ना ला नक्क़रुल्लु कुर्आन फनुसल्ली खल्फ़क बिसलातिक फ़सल्लैतु बिहिन्न प्रमान रक़आतिन वल्वित फ़सकत अन्हू शिबहुर्रिज़ा उबय बिन कअब (रज़ि.) रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हाज़िर हुए और कहा कि आज रात को एक ख़ास बात हो गई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उबय! वो क्या बात है? उन्होंने कहा कि मेरे घराने की औरतों ने कहा कि हम कुर्आन नहीं पढ़ती हैं इसलिये तुम्हारे पीछे नमाज़े (तरावीह) तुम्हारी इक्तिदा में पढ़ेंगी तो मैंने उनको आठ रक़अत और वित्र पढ़ा दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने ये सुनकर सुकूत फ़र्माया। गोया इस बात को पसंद फ़र्माया, इस हदीष से प्राबित हुआ कि सहाबा (रज़ि.) आप (ﷺ) के ज़माने में आठ रक़अत (तरावीह) पढ़ते थे।

हज़रत उमर खलीफ़-ए-प्रानी (रज़ि.) की नमाज़े तरावीह मय वित्र ग्यारह रक़अत :

(10) अन साइबिबि यज़ीदिन क़ाल अमर उमर उबय इब्न कअबिन व तमीमदारी अय्यकूमा लिन्नासि फ़ी रमज़ान इहदा अशरत रक़अतन साइब बिन यज़ीद ने कहा कि उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने उबय बिन कअब और तमीम दारी (रज़ि.) को हुक्म दिया कि रमज़ान शरीफ़ में लोगों को ग्यारह रक़अत पढ़ाएँ। (मौता इमाम मालिक)

वाज़ेह हुआ कि आठ और ग्यारह में वित्र का फ़र्क़ है और अलावा आठ रक़अत तरावीह के वित्र एक तीन पाँच पढ़ना हदीष शरीफ़ में आए हैं और बीस तरावीह की रिवायत हज़रत उमर (रज़ि.) से प्राबित नहीं और जो रिवायत उनसे नक़ल की जाती है वो मुन्क़तअस्सनद (सनद कटी हुई) है। इसलिये कि बीस का रावी यज़ीद बिन रुम्मान है। उसने हज़रत उमर (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया। चुनाँचे अल्लामा ऐनी हनफ़ी व अल्लामा ज़ेलज़ी हनफ़ी (रह.) इम्दतुल क़ारी और नज़बुर्राया में फ़र्माते हैं कि यज़ीदुब्नु रुम्मान लम युदरिक उमर 'यज़ीद बिन रुम्मान ने हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया।' और जिन लोगों ने सय्यिदना उमर (रज़ि.) को पाया है उनकी रिवायात बिल इतिफ़ाक़ ग्यारह रक़अत की हैं, उनमें हज़रत साइब (रज़ि.) की रिवायत ऊपर गुजर चुकी है।

और हज़रत अउरज हैं जो कहते हैं कानलक़ारी यक्क़रउ सूरतल्बक्क़रति फ़ी प्रमानी रक़आतिन क़ारी सूरह बक़रा आठ रक़अत में ख़त्म करता था (मौता इमाम मालिक)। फ़ारूके आजम (रज़ि.) ने उबय बिन कअब व तमीम दारी और सुलैमान बिन अबी हश्मा (रज़ि.) को साथ वित्र ग्यारह रक़अत पढ़ाने का हुक्म दिया था (मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा)। गर्ज़ हज़रत उमर (रज़ि.) का ये हुक्म हदीषे रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुवाफ़िक़ है। लिहाज़ा अलैकुम बिसुन्नती व सुन्नतिल्बुलफ़ाईराशिदीन से भी ग्यारह पर अमल करना प्राबित हुआ।

फ़ुक़हा से आठ का षुबूत और बीस का ज़ुअफ़ :-

(11) अल्लामा इब्नुल हमाम हनफ़ी (रह.) फ़तहुल क़दीर शरह हिदाया (जिल्द : 1, पेज नं. 205) में फ़र्माते हैं बीस रक़अत तरावीह की हदीष ज़ईफ़ है। अन्हू मुखालिफ़ुल्लिल हदीषिम्महीहि अन अबी सलमतबि अब्दिरहमानि अन्हू सअल आइशत अल्हदीष अलावा बरी ये (बीस की रिवायत) सहीह हदीष के भी ख़िलाफ़ है जो अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रक़अत से ज़ाइद न पढ़ते थे।

(12) शैख़ अब्दुल हक़ साहब हनफ़ी मुहदिष देहलवी (रह.) फ़तहु सिरुल मन्ज़ान में फ़र्माते हैं वलम यषुबुत रिवायतु इश्रीन मिन्हु (ﷺ) कमा हुवलमुताअरफ़ु अल्आन इल्ला फ़ी रिवायतिबि अबी शैबत व हुव ज़ईफ़ुन व क़द आरज़हू हदीषु आइशत व हुव हदीषुन सहीहुन जो बीस तरावीह मशहूर व मअरूफ़ हैं और आँहज़रत (ﷺ) से प्राबित नहीं और जो इब्ने अबी शैबा में बीस की रिवायत है वो ज़ईफ़ है और हज़रत आइशा (रज़ि.) की सहीह हदीष के भी मुखालिफ़ है (जिसमें मय वित्र ग्यारह रक़अत प्राबित हैं)।

(13) शैख़ अब्दुल हक़ हनफ़ी मुहदिष देहलवी (रह.) अपनी किताब मा शबत बिस्सुन्नह (पेज नं. 217) में फ़र्माते हैं वस्महीहु मा रवतु आइशतु अन्हू (ﷺ) सल्ला इहदा अशरत रक़अतन कमा हुव आदतुहू फ़ी क्रियामिल्लैलि व रूविय अन्हू कान बअजुस्सलफ़ि फ़ी अहदि उमरबि अब्दिलअजीज़ि युसल्लून इहदा अशरत रक़अतन कसदन तश्बीहन बिरसूलिहहि (ﷺ) सहीह हदीष वो है जिसको हज़रत आइशा (रज़ि.) ने रिवायत किया है कि आप

(ﷺ) ग्यारह रकअत पढ़ते थे। जैसा कि आप (ﷺ) की क़यामुल्लैल की आदत थी और रिवायत है कि कुछ सलफ़ अमीरुल मोमिनीन इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में ग्यारह रकअत तरावीह पढ़ा करते थे ताकि आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत से मुशाबिहत पैदा करें।

इससे मा'लूम हुआ कि शैख़ साहब (रह.) खुद आठ रकअत तरावीह के काइल थे और सलफ़ सालेहीन में भी ये मशहूर था कि आठ रकअत तरावीह सुन्नते नबवी है और कयूँ न हो जबकि खुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ रकअत तरावीह पढ़ीं और सहाबा किराम (रज़ि.) को पढ़ाई। नीज़ उबय बिन कअब (रज़ि.) ने औरतों को आठ रकअत तरावीह पढ़ाई तो हुज़ूर (ﷺ) ने पसंद फ़र्माया। इसी तरह हज़रत इमर (रज़ि.) के ज़माने में वित्र के साथ ग्यारह रकअत तरावीह पढ़ने का हुक्म था और लोग उस पर अमल करते थे। नीज़ हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के वक़्त में लोग आठ रकअत तरावीह पर सुन्नते रसूल (ﷺ) समझकर अमल करते थे और इमाम मालिक (रह.) ने भी मय वित्र ग्यारह रकअत ही को सुन्नत के मुताबिक़ इख़्तियार किया है।

(14) अल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) फ़र्माते हैं कि इहदा अशरत रकअतन व हुब इख़बार मालिक लिनप्रिस्ही 'ग्यारह रकअत को इमाम मालिक (रह.) ने अपने लिये इख़्तियार किया है।'

इसी तरह फ़ुक़हा व इलमा जैसे अल्लामा ऐनी हनफ़ी, अल्लामा ज़ेल्ज़ि हनफ़ी, हाफ़िज़ इब्ने हज़र, अल्लामा मुहम्मद बिन नस्र मरख़जी, शैख़ अब्दुल हई साहब हनफ़ी मुहदिष देस्लवी, मौलाना अब्दुल हक़ हनफ़ी लखनवी (रह.) वग़ैरह ने अलावा वित्र के आठ रकअत तरावीह को सहीह और सुन्नते नबवी (ﷺ) फ़र्माया है जिनके हवाले पहले गुज़र चुके हैं। और इमाम मुहम्मद शागिंदे रशीद इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने तो फ़र्माया कि व बिहाज़ा नाख़ुज कुल्लहू 'हम इन सब हदीषों को लेते हैं।' या'नी इन ग्यारह रकअत की हदीषों पर हमारा अमल है। फ़ल्हम्दुलिल्लाह कि वित्र के साथ ग्यारह रकअत तरावीह का मस्नून होना प्राबित हो गया।

इसके बाद सलफ़े उम्मत में कुछ ऐसे हज़रात भी मिलते हैं जो बीस रकअत और तीस रकआत और चालीस रकआत बग़ैरे नफ़ल नमाज़े तरावीह पढ़ा करते थे। लिहाज़ा ये दा'वा कि बीस रकअत पर इम्माअ हो गया, बातिल है। अज़ल सुन्नते नबवी आठ रकअत तरावीह तीन रकअत वित्र कुल ग्यारह रकअत हैं। नफ़ल के लिये हर वक़्त इख़्तियार है कोई जिस क़दर चाहे पढ़ सकता है। जिन हज़रात ने रमज़ान में आठ रकअत तरावीह को ख़िलाफ़े सुन्नत कहने का मशाला बना लिया है और ऐसा लिखना या कहना उनके ख़याल में ज़रूरी है वो सख़्त ग़लती में मुब्तला हैं बल्कि उसे भी एक तरह से तल्बीसे इब्लीस कहा जा सकता है। अल्लाह तआला सबको नेक समझ अता करे, आमीन।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने जो रात के नवाफ़िल चार-चार रकआत मिलाकर पढ़ना अफ़ज़ल कहा है, वो उसी हदीष से दलील लेते हैं। हालाँकि उससे इस्तिदलाल सहीह नहीं क्योंकि उसमें ये तस्रीह नहीं है कि आप (ﷺ) चार-चार रकअत के बाद सलाम फेरते। मुम्किन है कि पहले आप (ﷺ) चार रकअत (दो सलाम के साथ) बहुत लम्बी पढ़ते होंफिर दूसरी चार रकअतें (दो सलाम के साथ) उनसे हल्की पढ़ते हों। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इस तरह इन चार-चार रकअतों को अलग-अलग जिक्र किया है और ये भी मुम्किन है कि चार रकअतों का एक सलाम के साथ पढ़ना मुराद हो। इसलिये अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं कि व अम्मा या सबक मिन अन्नहू कान युसल्ली मज़्ना मज़्ना शुम्म वाहिदतन फ़महमूलुन अला वक्तिन आख़र फ़ल्अम्मानि जाइज़ानि या'नी पिछली रिवायत में जो आप (ﷺ) की दो रकअत पढ़ना मज़कूर हुआ है। फिर एक रकअत वित्र पढ़ना तो वो दूसरे वक़्त पर महमूल है और ये चार चार करके पढ़ना फिर तीन वित्र पढ़ना दूसरे वक़्त पर महमूल है इसलिये दोनों अमर जाइज़ हैं।

1148. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, और उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया कि मुझे मेरे बाप उर्वा ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा सिद्दीका ने

١١٤٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ:

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ هِشَامٍ قَالَ:

أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

बतलाया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को रात की किसी नमाज़ में बैठकर कुआन पढ़ते नहीं देखा। यहाँ तक कि आप (ﷺ) बूढ़े हो गए तो बैठ कर कुआन पढ़ते थे। लेकिन जब तीस-चालीस आयतें रह जाती तो खड़े हो जाते फिर उनको पढ़कर रुकूअ करते थे। (राजेअ: 1118)

बाब 18 : दिन और रात में बावुजू रहने की फ़ज़ीलत और वुजू के बाद रात और दिन में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत का बयान

1149. हमसे इस्हाक़ बिन नज़र ने बयान किया, उनसे अबू हय्यान यहाा बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत बिलाल (रज़ि.) से फ़ज़ के वक़्त पूछा कि ऐ बिलाल! मुझे अपना सबसे ज़्यादा उम्मीद वाला नेक काम बताओ, जिसे तुमने इस्लाम लाने के बाद किया है, क्योंकि मैंने जन्नत में अपने आगे तुम्हारे ज़तों की चाप सुनी है। हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अर्ज़ किया मैंने तो अपने नज़दीक इससे ज़्यादा उम्मीद का कोई काम नहीं किया कि जब मैंने रात या दिन में किसी वक़्त भी वुजू किया तो मैं उस वुजू से नफ़ल नमाज़ पढ़ता रहता, जितनी मेरी तक्रदीर में लिखी गई थी।

तशरीह: या'नी जैसे तू जन्नत में चल रहा है और तेरी ज़तियों की आवाज़ निकल रही है। ये अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को दिखला दिया जो नज़र आया वो होने वाला था। इलमा का इस पर इतिफ़ाक़ है कि जन्नत में बेदारी के आलम में इस दुनिया में रहकर आँहज़रत (ﷺ) के सिवा और कोई नहीं गया, आप (ﷺ) मेअराज की शब में वहाँ तशरीफ़ ले गए। इसी तरह दोज़ख़ में और ये जो कुछ फुक़रा से मन्कूल है कि उनका खादिम हुक्का की आग लेने जहन्नम में गया ये महज़ ग़लत है। बिलाल (रज़ि.) दुनिया में भी बतौर खादिम के आँहज़रत (ﷺ) के आगे सामान वगैरह लेकर चला करते, वैसे ही अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को दिखला दिया कि बहिस्त में भी होगा। इस हदीष से बिलाल (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकली और उनका जन्नती होना साबित हुआ। (वहीदी)

बाब 18 : इबादत में बहुत सख्ती उठाना मकरूह है

1150. हमसे अबू मअमर अब्दुल्लाह बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष बिन सअद ने बयान किया, कहा कि

قَالَتْ: ((مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ لِي شَيْءَ مِنْ صَلَاةِ اللَّيْلِ جَالِسًا، حَتَّى إِذَا كَبُرَ قَرَأَ جَالِسًا، فَإِذَا بَقِيَ عَلَيْهِ مِنَ السُّورَةِ ثَلَاثُونَ أَوْ أَرْبَعُونَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَهُنَّ، ثُمَّ رَكَعَ)). [راجع: 1118]

١٧- بَابُ فَضْلِ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْوُضُوءِ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

١١٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرِ حَدَّثَنَا أَبُو اسْمَاءَ عَنْ أَبِي حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِبِلَالٍ عِنْدَ صَلَاةِ الْفَجْرِ: ((يَا بِلَالُ حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ فِي الْإِسْلَامِ، فَإِنِّي سَمِعْتُ ذَلِكَ نَعْنِيكَ مِنْ يَدَيَّ فِي الْجَنَّةِ)). قَالَ: مَا عَمِلْتُ عَمَلًا أَرْجَى عِنْدِي أَنِّي لَمْ أَتَطَهَّرْ طَهُورًا فِي سَاعَةِ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ إِلَّا صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطَّهُورِ مَا كُتِبَ لِي أَنْ أَصَلِّيَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: ذَلِكَ نَعْنِيكَ، يَعْنِي تَحْرِيتَكَ.

١٨- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّشْدِيدِ فِي الْعِبَادَةِ

١١٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

हमसे अब्दुल अजीज़ बिन सुहेब ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रह.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ ले गये, आपकी नज़र एक रस्सी पर पड़ी जो दो सुतूनों के दरम्यान तनी हुई थी, दरयाफ्त फ़र्माया कि ये रस्सी कैसी है? लोगों ने अर्ज किया कि ये हज़रत ज़ैनब ने बाँधी है, जब वो (नमाज़ में खड़ी-खड़ी) थक जाती है तो इससे लटकी रहती है। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, नहीं! ये रस्सी नहीं होनी चाहिये, इसे खोल डालो। तुममें हर शख्स को चाहिये जब तक दिल लगे नमाज़ पढ़े, थक जाए तो बैठ जाए।

1151. और इमाम बुखारी (रह.) ने फ़र्माया कि हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क.अम्बी ने बयान किया, उनसे मालिक (रह.) उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उन के वालिद ने उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मेरे पास बन्नु असद की एक औरत बैठी हुई थी। नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो उनके मुता'ल्लिक पूछा कि ये कौन हैं? मैंने कहा कि फलौ'खातून हैं जो रातभर नहीं सोतीं। उनकी नमाज़ का आप (ﷺ) के सामने ज़िक्र किया गया लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया बस तुम्हें सिर्फ़ उतना ही अमल करना चाहिये, जितनी कि तुममें ताक़त हो। क्योंकि अल्लाह तआला तो (बराब देने से) थकता नहीं तुम ही अमल करते-करते थक जाओगे। (राजेअ : 43)

तशरीह : इसलिये हदीसे अनस (रज़ि.) और हदीसे आइशा (रज़ि.) में मरवी है कि इज़ा नअस अहदुकुम फ़िज़्ज़लाति फ़ल्यनुम हत्ता यअलम मा यक्वद या'नी जब नमाज़ में कोई सोने लगे तो उसे चाहिये कि पहले वो सो ले फिर नमाज़ पढ़े ताकि वो समझ ले कि क्या पढ़ रहा है। ये लफ़्ज़ भी हैं फ़ल्यरक़द हत्ता यज़हब अन्हुनौमु (फ़तहुल्बारी) या'नी सो जाए ताकि उससे नींद चली जाए।

बाब 19 : जो शख्स रात को इबादत किया करता था वो अगर उसे छोड़ दे तो उसकी ये आदत मकरूह है

1152. हमसे अब्बास बिन हुसैन ने बयान किया, कहा कि हमसे मुबशिशर बिन इस्माईल जेलई ने, औज़ाई से बयान किया (दूसरी सनद) और मुझ से मुहम्मद बिन मुक्रातिल अबुल हसन

الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ فَيَاذَا حَبْلٌ مَمْدُودٌ بَيْنَ السَّائِرَتَيْنِ، فَقَالَ : ((مَا هَذَا الْحَبْلُ؟)) قَالُوا : هَذَا حَبْلٌ لِرَيْسٍ، فَيَاذَا قَرَرَتْ تَعَلَّقَتْ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لَا، حُلُوهُ، يَصِلُ أَحَدُكُمْ نَشَاطَةً، فَيَاذَا قَرَرَتْ لَلْبَقْعَةِ)).

1151- قَالَ : وَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ حِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كَانَتْ عِنْدِي امْرَأَةٌ مِنْ نَبِيِّ أَسَدٍ، لَمَّا دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ : ((مَنْ هَذِهِ؟)) فَقُلْتُ : فَلَانَةٌ، لَا تَقَامُ مِنَ اللَّيْلِ - فَذَكَرَ مِنْ صَلَاتِهَا - فَقَالَ : ((مَهْ، عَلَيْكُمْ مَا تُطِيقُونَ مِنَ الْأَعْمَالِ، فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَمَلُ خَشْيَ تَمَلُّوا)).

[راجع : 43]

19- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنْ تَرْكِ قِيَامِ اللَّيْلِ لِمَنْ كَانَ يَقُومُهُ

1152- حَدَّثَنَا عَبْدُ عِيسَى بْنُ الْحُسَيْنِ قَالَ حَدَّثَنَا مُبَشِّرٌ عَنْ الْأَوْزَاعِيِّ ح. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ

ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्हें औज़ाई ने खबर दी, कहा कि हमसे यह्या इब्ने अबी क़प्पीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अब्दुल्लाह! फलों की तरह न हो जाना वो रात में इबादत किया करता था, फिर छोड़ दी। और हिशाम बिन अम्मार ने कहा कि हमसे अब्दुल हमीद बिन अबुल इशरीन ने बयान किया, उनसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या ने बयान किया, उनसे उमर बिन हकम बिन शौबान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने, इसी तरह फिर यही हदीस बयान की। इब्ने अबुल इशरीन की तरह उमर बिन अबू सलमा ने भी इसको इमाम औज़ाई से रिवायत किया।

(राजेअ : 1131)

तशरीह :

अब्बास बिन हुसैन से इमाम बुखारी (रह.) ने इस किताब में एक ये हदीस और एक जिहाद के बाब में रिवायत की, पस दो ही हदीसों। ये बग़दाद के रहने वाले थे। इब्ने अबी इशरीन से इमाम औज़ाई का मंशा था उसमें मुहदिप्पीन ने कलाम किया है मगर इमाम बुखारी (रह.) उसकी रिवायत मुताबअतन लाए। अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान की सनद को इमाम बुखारी (रह.) इसलिये लाए है कि उसमें यह्या बिन अबी क़प्पीर और अबू सलमा में एक शख्स का वास्ता है या'नी अम्र बिन हकम का और अगली सनद में यह्या कहते हैं कि मुझसे खुद अबू सलमा ने बयान किया तो शायद यह्या ने ये हदीस अम्र के वास्ते से और बिलावास्ता दोनों तरह अबू सलमा से सुनी (वहीदी)

1:153. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे अग्र बिन दीनार ने, उनसे अबुल अब्बास साइब बिन फ़रूख़ ने कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कि क्या ये ख़बर सहीह है कि तुम रातभर इबादत करते हो और फिर दिन में रोज़े रखते हो? मैंने कहा कि हाँ ज़ुहर में ऐसा ही करता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि लेकिन अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारी आँखें (बेदारी की वजह से) बैठ जाएंगी और तेरी जान नातवाँ हो जाएगी। ये जान लो कि तुम पर तुम्हारा नफ़्स का भी हक़ है और बीबी-बच्चों का भी। इसलिये कभी रोज़े भी रखो और कभी बिला रोज़े के भी रहो, इबादत भी

قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو بْنُ الْقَاصِرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((يَا عَبْدُ اللَّهِ، لَا تَكُنْ مِثْلَ فَلَانٍ كَانَ يَقُومُ اللَّيْلَ فَفَرَكَ قِيَامَ اللَّيْلِ)). وَقَالَ هِشَامُ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الْعِشْرِينَ قَالَ: حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ عَمْرٍو بْنِ الْحَكَمِ بْنِ تَوْبَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ مِثْلَهُ. وَكَاتَبَهُ عَمْرٍو بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ

الأوزاعي. [راجع: 1131]

١١٥٣ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي الْقَاسِمِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ ((أَلَمْ أَخْبَرْ أَنْتَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ)) قُلْتُ: إِنِّي أَفْعَلُ ذَلِكَ. قَالَ: ((وَلَا تَكُنْ إِذَا فَعَلْتَ ذَلِكَ حَمَمْتَ عَيْنَكَ، وَتَفَهَتْ نَفْسُكَ، وَإِنْ لِنَفْسِكَ حَقٌّ وَلِلْهَلِكِ حَقٌّ فَصُمْ وَالْفِطْرَ، وَقُمْ وَتَمَّ)).

करो और सोओ भी। (राजेअ : 1131)

गोया आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसे सख्त मुजाहदे से मना किया। अब जो लोग ऐसा करें वो आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत के खिलाफ़ चलते हैं, उससे नतीजा क्या? इबादत तो इसीलिये है कि अल्लाह और रसूल राजी हों।

बाब 21 : जिस शख्स की रात को आँख खुले फिर वो नमाज़ पढ़े, उसकी फ़ज़ीलत

٢١- بَابُ فَضْلِ مَنْ تَعَارَى مِنَ اللَّيْلِ فَصَلَّى

1154. हमसे स़दका बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा कि हमको खलीद बिन मुस्लिम ने इमाम औज़ाई से ख़बर दी, कहा कि मुझको अमीर बिन हानी ने बयान किया, कहा कि मुझसे जुनादा बिन अबी उमर्या ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्बादा बिन सामित ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख्स रात को बेदार होकर ये दुआ पढ़े (तर्जुमा) अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी के लिये है और तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं, अल्लाह की ज़ात पाक है, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह की मदद के बग़ैर न किसी को गुनाहों से बचने की ताक़त है न नेकी करने की हिम्मत। फिर ये पढ़े (तर्जुमा) ऐ अल्लाह! मेरी मफ़िरत फ़र्मा। या (ये कहा कि) कोई दुआ करे तो उसकी दुआ ज़रूर कुबूल होती है। फिर अगर उसने जुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ भी मक़बूल होती है।

١١٥٤- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ هُوَ ابْنُ مُسْلِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي غُمَيْرُ بْنُ هَالِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنِي جُنَادَةُ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَعَارَى مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ. ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي- أَوْ دَعَا- اسْتَجِيبَ. فَإِنَّ تَوَضُّعًا قَبِلْتَ صَلَاتَهُ)).

तर्ज़ीह : इब्ने बत्ताल (रह.) ने इस हदीष पर फ़र्माया कि अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) की जुबान पर ये वा'दा फ़र्माता है कि जो मुसलमान रात में इस तरह बेदार हो कि उसकी जुबान अल्लाह तआला की तौहीद, उस पर ईमान व यकीन, उसकी किन्नियाई और सलतनत के सामने तस्लीम और बन्दगी, उसकी नेअमतों का ए'तिराफ़ और इस पर उसका शुक्र व हम्द और ज़ाते पाक की तंज़ीह व तक्दीस से भरपूर कलिमात जुबान पर ज़ारी हो जाएँ तो अल्लाह तआला उसकी दुआ को भी कुबूल करता है और उसकी नमाज़ भी बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में मक़बूल होती है। इसलिये जिस शख्स तक भी ये हदीष पहुँचे, उसे इस पर अमल को ग़नीमत समझना चाहिये और अपने रब के लिये तमाम अअमाल में निय्यते ख़ालिस पैदा करनी चाहिये कि सबसे पहली शर्त कुबूलियत की यही खुलूस है। (तफ़्हीमुल बुखारी)

1155. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझको हैषम बिन अबी सिनान ने ख़बर दी कि उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना। आप अपने वा'ज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) का ज़िक्र कर रहे थे। फिर आप ने

١١٥٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْهَيْثَمُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ رَوِيَهُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ- وَهُوَ

फर्माया कि तुम्हारे भाई ने (अपने नअतिथा अशआर में) ये कोई गलत बात नहीं कही। आपकी मुराद अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) के अशआर से थी, जिनका तर्जुमा ये है, हममें अल्लाह के रसूल मौजूद है, जो उसकी किताब हमें उस वक़्त सुनाते हैं, जब फ़ज्र तुलूअ होती है। हम तो अन्ये थे आप (ﷺ) ने हमें गुमराही से निकाल कर सहीह रास्ता दिखाया। उनकी बातें इस क़दर यक़ीनी हैं जो हमारे दिलों के अन्दर जाकर बैठ जाती है और जो कुछ आप (ﷺ) ने फ़र्माया, वो ज़रूर वाक़ेअ होगा। आप (ﷺ) रात बिस्तर से अपने को अलग करके गुज़ारते हैं, जबकि मुश्रिकों से उनके बिस्तर बोझिल हो रहे होते हैं।

यूनुस की तरह इस हदीष को अक़ील ने भी जुहरी से रिवायत किया और जुबैदी ने यूँ कहा सईद बिन मुसय्यिब और अअरज से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से।

(दीगर मक़ाम : 6151)

[طرفه في : ٦١٥١]

तशरीह : जुबैदी की रिवायत को इमाम बुखारी (रह.) ने तारीख में और तबरांनी ने मुअज्जम कबीर में निकाला। इमाम बुखारी (रह.) की ग़ज़ इस बयान से ये है कि जुहरी के शैख़ में रावियों का इख़्तिलाफ़ है। यूनुस और अक़ील ने हैशम बिन अबी सिनान कहा है और जुबैदी ने सईद बिन मुसय्यिब और अअरज और मुक्किन है कि जुहरी ने इन तीनों से इस हदीष को सुना हो। हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने कहा कि इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक पहला तरीक़ राजेह है क्योंकि यूनुस और अक़ील दोनों ने बिल इतेफ़ाक़ जुहरी का शैख़ हैशम को क़रार दिया है। (वहीदी)

इस हदीष से ये साबित हुआ कि मजालिसे वा'ज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) की सीरते मुबारका का नज़्म व नज़्म में ज़िक्र करना दुरुस्त है। सीरत के सिलसिले में आप (ﷺ) की विलादत ब-सआदत और हयाते तय्यिबा के वाक़िआत का ज़िक्र करना बाज़िअे अज्दयादे ईमान है। लेकिन मुर्वज्जा महाफ़िले मीलाद का इन्ज़िक्काद किसी शरई दलील से साबित नहीं। अहदे स़हाबा व तबअ ताबेईन व अइम्म-ए-मुत्तहिदीन व जुम्ला मुहदिषीने किराम में ऐसी महाफ़िल का नामोनिशान भी नहीं मिलता। पूरे छः सौ साल गुजर गए दुनिय-ए-इस्लाम महाफ़िले मीलाद के नाम से भी आशाना (परिचित) न थी। तारीख़ इब्ने ख़ल्कान मे ह कि इस महाफ़िल का मौजिदे अव्वल एक बादशाह अबू सईद मुज़फ़्फ़रुद्दीन नामी था, जो नज़्म मौसिल अरबल नामी शहर का हाकिम था। इलमा-ए-रासिखीन ने उसी वक़्त से इस नौ-ईजाद महाफ़िल की मुखालफ़त फ़र्माई। मगर स़द अफ़सोस कि नामोनिहाद फिदाइयाने रसूले करीम (ﷺ) आज भी बड़े तुन्तुना से ऐसी महाफ़िल करते हैं जिनमें निहायत ग़लत-सलत रिवायात बयान की जाती हैं, चिरागा और शीरीनी का ख़ास एहतियाम होता है और इस अक़ीदे से क़याम करके सलाम पढ़ा जाता है कि आहज़रत (ﷺ) की रूहे मुबारक खुद इस महाफ़िल में तशरीफ़ लाई है। ये जुम्ला उमूर ग़लत और बे-पुबूत हैं जिनके करने से बिदअत का इर्तीकाब होता है। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने साफ़ फ़र्मा दिया था कि मन अहदय़ फ़ी अम्मिना हाज़ा मा लैस मिन्हु फहुव रहुन जो हमारे दीन में कोई नई बात ईजाद करे जिसका पुबूत शरअत से न हो वो मदद है।

1156. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में ये ख़्वाब देखा कि गोया एक गाढ़े

يَقْصُرُ فِي قَصْبِهِ - وَهُوَ يَذْكُرُ رَسُولَ
الله (ﷺ) : ((إِنْ أَخَا لَكُمْ لَا يَقُولُ الرَّقْتُ)).
يَعْنِي بِذَلِكَ عِنْدَ اللهِ بَيْنَ رَوَاحَةٍ: وَفِيْنَا
رَسُولُ اللهِ يَتْلُو كِتَابَهُ إِذَا انْشَقَّ مَعْرُوفٌ
مِنَ الْفَجْرِ سَاطِعٌ أَرَانَا الْهَيْدَى بَعْدَ الْعَمَى
فَقُلُوبُنَا بِمَوْقِفَاتٍ أَنْ مَا قَالَ وَاقِعٌ يَبِينُ
يَجَاهِي جَنَّةَ عَنْ لِرَاسِهِ إِذَا اسْتَقَلَّتْ
بِالْمُشْرِكِينَ الْمَضَاجِعُ تَابَهُ غَفِيلٌ.
وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ
سَعِيدٍ، وَالْأَعْرَجُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ
الله عَنْهُ.

١١٥٦ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا
حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَوْبٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ
ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ ((رَأَيْتُ

रेशमी कपड़े का एक टुकड़ा मेरे हाथ है। जिससे मैं जन्नत में जिस जगह का भी इरादा करता हूँ तो ये उधर उड़ाकर मुझको ले जाता है और मैंने देखा कि जैसे दूसरे फ़रिश्ते मेरे पास आए और उन्होंने मुझे दोज़ख की तरफ़ ले जाने का इरादा किया ही था कि एक फ़रिश्ता उनसे आकर मिला और (मुझसे) कहा कि डरो नहीं (और उनसे कहा कि) इसे छोड़ दो।

(राजेज़: 440)

1157. मेरी बहन (उम्मुल मोमिनीन) हफ़सा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मेरा एक ख़्वाब बयान किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब्दुल्लाह बड़ा ही अच्छा आदमी है, काश! रात में भी नमाज़ पढ़ा करता। अब्दुल्लाह (रज़ि.) इसके बाद हमेशा रात में नमाज़ पढ़ा करते थे।

(राजेज़: 1122)

1158. बहुत से सहाबा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अपने ख़्वाब बयान किये कि शबे-क़द्र (रमज़ान की) सत्ताईसवीं रात है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं देख रहा हूँ कि तुम सब के ख़्वाब रमज़ान के आख़िरी अशरे में (शबे-क़द्र के होने पर) मुत्तफ़िक़ हो गये हैं, इसलिये जिसे शबे-क़द्र की तलाश हो वो रमज़ान के आख़िरी अशरे में ढूँढे।

(दीगर मक़ाम: 2015, 6991)

عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ كَانَ بِيَدِي قِطْعَةٌ اسْتَبْرَقَ لَكَائِي لَا أُرِيدُ مَكَانًا مِنَ الْجَنَّةِ إِلَّا طَارَتْ إِلَيْهِ. وَرَأَيْتُ كَانَ اثْنَيْنِ أَيْتَانِي أَرَادَ أَنْ يَنْتَحِبَا بِي إِلَى النَّارِ، فَلَقَامُمَا مَلَكَ فَقَالَ: لَمْ تَوْعَا، خَلَا عَنْهُ).

[راجع: 440]

1157- فَلَقَمْتُ حَقَمَةً عَلَى النَّبِيِّ ﷺ إِخْذِي رُتَابِي، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَعَنَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللَّهِ لَوْ كَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ)). فَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ. [راجع: 1122]

1158- ((وَكُنُوا لَا تَزَالُونَ يَقُصُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ الرُّؤْيَا أَنَهَا فِي اللَّيْلِ السَّابِعَةِ مِنَ الْعَشْرِ الْآخِرِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرَأَيْتُمْ رُتَابَكُمْ لَدَى تَوَاطُاتٍ فِي الْعَشْرِ الْآخِرِ، فَمَنْ كَانَ مُعْرِضًا فَلْيَعْرِضْهُ مِنَ الْعَشْرِ الْآخِرِ)).

[طرفه ٢: ٢٠١٥، ٦٩٩١]

तशरीह: हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) किताबुस्सियाम में बाब तहर्रा लैलतुल क़द्र के तहत में फ़र्माते हैं फ़ी हाज़िहि तजुमति इशारतुन इला रुज़्हानि कौनि लैलतिल्क़द्रि मुन्हसिरतुन फ़ी रमज़ान शुम्म फिल् अशरील् अख़री यिन्हु शुम्म फ़ी औतारिही ला फ़ी लैलतिम्मिन्हा बिऐनिहा व हाज़ा हुवल्लज़ी यदुल्लु अलैहि मज्मूउल् अख़बारिल् वारिदति (फ़तहुल्क़दीर) या'नी लैलतुल क़द्र रमज़ान में मुन्हसिर है और वो आख़िरी अशरे की किसी एक ताक़ रात में होती है तमाम अह्दादीष जो इस बाब में वारिद हुई हैं उन सबसे यही प्राबित होता है। बाक़ी तप़सील किताबुस्सियाम में आएगी। ताक़ रातों से 21, 23, 25, 27, 29 की रातें मुराद हैं। उनमें से वो किसी रात के साथ ख़ास नहीं है। अह्दादीष से यही प्राबित हुआ है।

बाब 22 : फ़ज़्र की सुन्नतों को हमेशा पढ़ना

1159. हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, कहा कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे इराक़ बिन मालिक

٢٢- بَابُ الْمُدَاوَمَةِ عَلَى رَكَعَتَيِ الْفَجْرِ

1159- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ ابْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي

ने, उनसे अबू सलमा ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) इशा की नमाज़ पढ़ी, फिर रात को उठकर आपने तहज्जुद की आठ रकअत पढ़ी और दो रकअत सुबह की अज़ान व इक़ामत के दरम्यान पढ़ी, जिनको आप कभी नहीं छोड़ते थे। (फ़ज़्र की सुन्नतों पर मदावमत बाबित हुई)

(राजेअ : 619)

बाब 23 : फ़ज़्र की सुन्नतें पढ़कर दाहिनी करवट पर लेटना

1160. हमसे अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे अबुल अस्वद मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे इर्वा बिन यज़ीद (रज़ि.) ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) फ़ज़्र की दो सुन्नत रकअतें पढ़ने के बाद दाहिनी करवट पर लेट जाते।

(राजेअ : 626)

جَعَلْتُ بِن رَّبِيعَةَ عَنْ عِرَالِكِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الْغُشَاءَ، ثُمَّ صَلَّى ثَمَانٍ رَكَعَاتٍ، وَرَكَعَتَيْنِ بَيْنَ النَّدَائَيْنِ، وَلَمْ يَكُنْ يَدْعُهُمَا أَبَدًا)). [راجع: ٦١٩]

۲۳- بَابُ الصُّجُودِ عَلَى الشَّقِّ الْأَيْمَنِ بَعْدَ رَكَعَتَيِ الْفَجْرِ

۱۱۶۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا صَلَّى رَكَعَتَيِ الْفَجْرِ اضْطَجَعَ عَلَى شِقِّهِ الْأَيْمَنِ)).

[راجع: ۶۲۶]

तशरीह: फ़ज़्र की सुन्नत पढ़कर थोड़ी देर के लिये दाईं करवट पर लेटना मसनून है, इस बारे में कई जगह लिखा जा चुका है। यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उसके बारे में ये बाब बाँधा है और हदीसे आइशा (रज़ि.) से साफ़ जाहिर होता है कि आँहज़रत (ﷺ) फ़ज़्र की सुन्नतों के बाद थोड़ी देर के लिये दाईं करवट पर लेटा करते थे। अल्लामा शौकानी (रह.) ने इस बारे में इलमा के छः क़ौल नक़ल किये हैं। अल मुहम्मिद कबीर अल्लामा अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, अल्लुअव्वलु अन्नहू मशरूअन अला सबीलिलइस्तिहबाबि कमा हकाहुत्तिर्मिज़ी अन बअजि अहलिलइल्मि व हुव कौलु अबी मूसा अलअशअरी व राफ़िइब्नि खदीज व अनसिब्नि मालिक व अबी हुरैरत क़ाललल्हाफ़िज़् इब्नुल्कय्थिम फ़ी ज़ादिलम्आद क़द ज़कर अब्दुर्रज़ाक़ फ़िल्मुसन्नफ़ि अन मअमरिन अन अय्यूब अनिब्नि सीरीन अन्न अबा मूसा व राफ़िअब्न खदीज व अनसब्न मालिक कानू यज्जज़िज़्ज़न बअद रकअतल्फ़ज़ि व यामुरून बिजालिक व क़ाललइराकी मिम्मन कान यफ़अलु औ युफ़्ती बिही मिनस्सहाबति अबू मूसा अलअशअरी व राफ़िउब्नु खदीज व अनसुब्नु मालिक व अबू हुरैरत इन्तिहा व मिम्मन क़ाल बिही मिनत्ताबिईन मुहम्मदुब्नु सीरीन व उर्वतुब्नुज्जुबैर कमा फ़ी शर्हिल्मुन्ताकाव क़ाल अबू मुहम्मद अलिय्युब्नु हज़म फ़िल्मुहल्ला व ज़कर अब्दुर्रहमानुब्नु ज़ैदिन फ़ी किताबिस्सब्अति अन्नहुम यअनी सईदुब्नुल्युसय्यिब वल्कासिमुब्नु मुहम्मदुब्नु अबी बक्र व उर्वतुब्नुज्जुबैरि व अबा बक्रिन हव इब्नु अब्दिर्रहमान व खारिजतुब्नु ज़ैदिब्नि प्राबितिन व उबैदिल्लाहिब्नु अब्दिल्लाहिब्नि उतबतब्नि सुलैमानब्नि यसारिन कानू यज्जज़िज़्ज़न अला अयमानिहिम बैन रकअतल्फ़ज़ि व सलातिस्सुब्हि इन्तिहा व मिम्मन क़ाल बिही मिनल्अइम्मति मिनशशाफ़िइ व अम्हाबिहि क़ालल्येनी फ़ी उम्दतिल्क़ारी ज़हबशशाफ़िइ व अम्हाबुइला अन्नहू सुन्नतुन इन्तिहा (तोहफ़तुल अहवज़ी)

या'नी इस लेटने के बारे में इख़िलाफ़ ये है कि ये मुस्तहब है जैसा कि इमाम तिर्मिज़ी ने कुछ अहले इल्म का मसलक यही नक़ल किया है। और अबू मूसा अशअरी और राफ़ेअ बिन खदीज और अनस बिन मालिक (रज़ि.) और अबू

हुरैरह (रज़ि.) का यही अमल था, ये सब सुन्नते फ़ज़्र के बाद लेटा करते थे और लोगों को भी इसका हुक्म देते थे जैसा कि अल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह.) ने ज़ादुल मज़ाद में नक़ल किया है और अल्लामा इराक़ी ने उन तमाम मज़कूर सज़ाबा किराम (रज़ि.) के नाम लिखे हैं कि ये उसके लिये फ़तवा दिया करते थे, ताबेईन में से मुहम्मद बिन सीरीन और इव्वी बिन जुबैर का भी यही अमल था। जैसा कि शरह मुन्ताक़ा में है और अल्लामा इब्ने हज़म ने मुहल्ला में नक़ल किया है कि सईद बिन मुसय्यिब, कासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बक्र, इव्वी बिन जुबैर, अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान, ख़ारजा बिन ज़ैद बिन घ़ाबित और उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन सुलैमान बिन यसार, इन सारे ताबेईन का यही मसलक था कि ये फ़ज़्र की सुन्नतें पढ़कर दाईं करवट पर लेटा करते थे। इमाम शाफ़िई और उनके शागिर्दों का भी यही मसलक है कि ये लेटना सुन्नत है।

इस बारे में दूसरा क़ौल अल्लामा इब्ने हज़म का है जो इस लेटने को वाजिब कहते हैं। इस बारे में अल्लामा अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, कुलतु क्रद अरफ़्तु अन्नलअमलवारिदत फ़ी हदीषि अबी हुरैरत महमूलुन अललइस्तिहबाबि लिअन्नहू (ﷺ) लय यकून युदाविम अललइज्तिजाइ फ़ला यकून वाजिबन फ़ज़लन अन्ध्यकून शर्तन लिसिह्दति मलातिमुब्दि या'नी हदीष अबू हुरैरह (रज़ि.) में इस बारे में जो बसैगा अम्म वारिद हुआ है जो कोई शख्स फ़ज़्र की सुन्नतों को पढ़े उसको चाहिये कि अपनी दाईं करवट पर लेटे (रवाहुत्तिमिजी)। ये अम्म इस्तिहबाब के लिये है। इसलिये कि आहज़रत (ﷺ) से इस पर मुदावमत मन्कूल नहीं है बल्कि तर्क भी मन्कूल है। पस ये पूरे तौर पर वाजिब न होगा कि नमाज़े फ़ज़्र की सेहत के लिये ये शर्त हो।

कुछ बुजुर्गों से इसका इन्कार भी घ़ाबित है मगर सहीह हदीषों के मुताबले पर ऐसे बुजुर्गों का क़ौल क़ाबिले हुजत नहीं है। इतिबाअे रसूले करीम (ﷺ) बहरहाल मुक़द्दम और मोजिबे अज़ो-फ़वाब है। पिछले सफ़हात में अल्लामा अनवर शाह साहब देवबन्दी मरहूम (रह.) का क़ौल भी इस बारे में नक़ल किया जा चुका है। बहस के ख़ातिमे पर अल्लामा अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं। वल्कौलुराजिहु अल्मअमूल अलैहि हुव अन्नलइज्तिजाअ बअद सुन्नतिल्फ़ज़्रि मशरूउन अला तरीकिल् इस्तिहबाबि वल्लाहु तआला आलमु या'नी क़ौले राजेह यही है कि ये लेटना बतौर इस्तिहबाब मशरूअ है।

बाब 24 : फ़ज़्र की सुन्नतें पढ़कर बातें करना और न लेटना

1161. हमसे बिश्र बिन हक़म ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सालिम बिन अबुन नज़र ने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब फ़ज़्र की सुन्नतें पढ़ लेते तो अगर में जाग रही होती तो आप मुझसे बातें करते धरना लेट जाते जब तक नमाज़ की अज़ान होती। (राजेअ : 1118)

٢٤- بَابُ مَنْ تَخَذَّلَ بَعْدَ الرُّكْعَتَيْنِ وَلَمْ يَضْطَجِعْ

١١٦١- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْحَكَمِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ أَبُو النَّظَرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ غَابِئَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا صَلَّى فَإِنْ كُنْتُ مُسْتَقِظَةً حَدَّثَنِي وَإِلَّا اضْطَجَعْتُ حَتَّى يُؤْذَنَ بِالصَّلَاةِ)).

[راجع: ١١١٨]

मा'लूम हुआ कि अगर लेटने का मौक़ा न मिले तो भी कोई हर्ज़ नहीं है। मगर इस लेटने को बुरा जानना फ़अले नबवी की तन्कीस करना है।

बाब 25 : नफ़ल नमाज़ें दो-दो रकअत करके पढ़ना

इमाम बुखारी (रह.) ने फ़र्माया और अम्मार और अनस

٢٥- بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّطَوُّعِ مَتْنِي

قَالَ مُحَمَّدٌ وَيَذْكُرُ ذَلِكَ عَنْ عَمْرِو أَبِي

(रज़ि.) सहाबियों से बयान किया, और जाबिर बिन यज़ीद, इकिस्मा और जुहरी (रह.) ताबेईन से ऐसा ही मन्कूल है और यह्या बिन सईद अन्सारी (ताबेई) ने कहा कि मैंने अपने मुल्क (मदीना तैयबा) के आलिमों को यही देखा कि वो नवाफ़िल में (दिन को) हर दो रकअत के बाद सलाम फेरा करते थे।

ذَرَّ وَأَنَسَ وَجَابِرُ بْنُ زَيْدٍ وَعِكْرِمَةُ
وَالزُّهْرِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ. وَقَالَ يَحْيَى
بْنُ سَعِيدٍ الْأَنْصَارِيُّ: مَا أَدْرَكْتُ لِقَاءَ
أَرْضِنَا إِلَّا يُسَلِّمُونَ فِي كُلِّ اثْنَيْنِ مِنَ
النَّهَارِ.

तश्वीह:

हाफ़िज़ ने कहा अम्मार और अबू ज़र (रज़ि.) की हदीसों को इब्ने अबी शैबा ने निकाला और अनस (रज़ि.) की हदीस तो इसी किताब में गुज़री कि औहज़रत (ﷺ) ने उनके घर जाकर दो-दो रकअतें नपल पढ़ीं और जाबिर बिन ज़ैद का अषर मुझको नहीं मिला और इकिस्मा का अषर इब्ने अबी शैबा ने निकाला और यह्या बिन सईद का अषर मुझको नहीं मिला। (वहीदी)

1162. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुरह्मान बिन अबुल मवाल ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुन्कदिर ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें तमाम मामलात में इस्तिख़ारा करने की इस तरह ता'लीम देते थे, जिस तरह कुआन की कोई सूरत सिखाते, आप (ﷺ) फ़र्माते कि जब कोई अहम मामला तुम्हारे सामने हो तो फ़र्ज़ के अलावा दो रकअत नपल पढ़ने के बाद ये दुआ पढ़े (तर्जुमा) ऐ मेरे अल्लाह! मैं तुझसे तेरे इल्म की बदौलत ख़ैर त़लब करता हूँ और तेरी कुदरत की बदौलत तुझसे त़ाक़त माँगता हूँ और तेरे फ़ज़ले-अज़ीम का त़लबगार हूँ कि कुदरत तू ही रखता है और मुझे कोई कुदरत नहीं। इल्म तुझ ही को है और मैं कुछ नहीं जानता और तू तमाम पोशीदा बातों को जानने वाला है। ऐ मेरे अल्लाह! अगर तू जानता है कि ये काम जिसके लिये इस्तिख़ारा किया जा रहा है मेरे दीन, दुनिया और काम के अंजाम के ए'तिबार से मेरे लिये बेहतर है या (आप ﷺ ने ये फ़र्माया कि) मेरे लिये वज़्ज़ती त़ौर पर और अंजाम के ए'तिबार से ये (ख़ैर है) तो इसे मेरे लिये नज़ीब कर और इसका हुसूल मेरे लिये आसान कर और फिर इसमें मुझे बरकत अता कर और अगर तू जानता है कि ये काम मेरे दीन, दुनिया और मेरे काम के अंजाम के ए'तिबार से

١١٦٢ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ
الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الْمَوَالِي عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ
الْمُنْكَدِيرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
يُعَلِّمُنَا الاسْتِخَارَةَ فِي الْأُمُورِ كَمَا يُعَلِّمُنَا
السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ يَقُولُ: ((إِذَا هُمْ
أَخَذُوكُم بِالْأَمْرِ فَلْيَرْكَبْ رَكْعَتَيْنِ مِنْ غَيْرِ
الْفَرِيضَةِ. ثُمَّ لِيَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ
بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ
مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ،
وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ.
اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ
لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمُورِي - أَوْ
قَالَ: عَاجِلِ أُمُورِي وَآجِلِهِ - فَافْعَلْهُ لِي،
وَيَسِّرْهُ لِي، ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ: وَإِنْ كُنْتَ
تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي
وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمُورِي - أَوْ قَالَ: لِي

बुरा है या (आप ﷺ ने ये कहा कि) मेरे मामले में वक्ती तौर पर और अंजाम के ए'तिबार से (बुरा है) तो इसे मुझसे हटा दे और मुझे भी इससे हटा दे। फिर मेरे लिये ख़ैर मुक़द्दर फ़र्मा दे, जहाँ भी वो हो और उससे मेरे दिल को मुतमईन भी कर दे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस काम की जगह उस काम का नाम लें।

(दीगर मक़ाम : 6372, 7390)

तशरीह : इस्तिख़ारे से कामों में बरकत पैदा होती है, ये ज़रूरी नहीं कि इस्तिख़ारा करने के बाद कोई ख़्वाब भी देखा जाए या किसी दूसरे ज़रिये से ये मा'लूम हो जाए कि पेश आने वाला मुआमले में कौनसी रविश मुनासिब है। इस तरह ये भी ज़रूरी नहीं है कि तबई रुज़्हान ही की हद तक कोई बात इस्तिख़ारा से दिल में पैदा हो जाए। हदीष में इस्तिख़ारा के ये फ़वाइद कहीं बयान नहीं हुए हैं और वाकिआत से भी पता चलता है कि इस्तिख़ारा के बाद कुछ औकात उनमें से कोई चीज़ हासिल नहीं होती बल्कि इस्तिख़ारा का मक़सद सिर्फ़ तलबे ख़ैर है। जिस काम का इरादा है या जिस मुआमले में आप उलझे हुए हैं गोया इस्तिख़ारा के ज़रिये आपने उसे अल्लाह के इल्म और कुदरत के हवाले कर दिया है और उसकी बारगाह में हाज़िर होकर पूरी तरह उस पर तवक्कल का वा'दा कर लिया। 'मैं तेरे इल्म के वास्ते से तुझसे ख़ैर तलब करता हूँ और तेरी कुदरत के वास्ते से तुझसे ताक़त माँगता हूँ और तेरे फ़ज़ल का ख़्वास्तगार हूँ।' ये तवक्कल और तपवीज़ नहीं तो और क्या है रज़ा बिल क़ज़ा की दुआ के आखिरी अल्फ़ाज़ 'मेरे लिये ख़ैर मुक़द्दर फ़र्मा दीजिए जहाँ भी वो हो और इस पर मेरे दिल को मुतमईन कर दे।' ये इल्मीनान की भी दुआ करता है कि दिल में अल्लाह के फ़ैसले के ख़िलाफ़ किसी किस्म का ख़तरा भी न पैदा हो। दरअसल इस्तिख़ारा की इस दुआ के ज़रिये बन्दा अव्वल तो तवक्कल का वा'दा करता है और फिर प्राबितक़दमी और रज़ा बिल क़ज़ा की दुआ करता है कि ख़्वाह मुआमले का फ़ैसला मेरी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो, हो वो ख़ैर ही और मेरा दिल मुतमईन और राज़ी हो जाए। अगर वाकई कोई ख़ालिफ़ दिल से अल्लाह के हुज़ूर में ये दोनों बातें पेश कर दे तो उसके काम में अल्लाह तआला का फ़ज़्लो-करम से बरकत यकीनन होगी। इस्तिख़ारा का सिर्फ़ यही फ़ायदा है और उससे ज़्यादा और क्या चाहिये? (तफ़हीमुल बुख़ारी) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) यहाँ इस हदीष को इसलिये लाए कि उसमें नफ़्ल नमाज़ दो रकअत पढ़ने का ज़िक्र है और यही बाब का तर्जुमा है।

1163. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन सईद ने, उनसे आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने बयान किया, उन्होंने उमर बिन सुलैम ज़रकी से, उन्होंने अबू क़तादा बिन रबई अन्सारी सहाबी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब कोई तुम में से मस्जिद में आए तो न बैठे जब तक दो रकअत (तहिय्यतुल मस्जिद) न पढ़ ले।

(राजेअ : 444)

1164. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा ने और उन्हें अनस बिन मालिक

عَاجِلٍ أَمْرِي وَأَجَلِي - لَأَصْرِفَهُ عَنْيَ وَأَصْرِفَنِي عَنْهُ، وَأَقْلُبُوا لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ، ثُمَّ أَرْضَيْنِي بِهِ قَالَ : وَتَسْمَى حَاجَتُهُ)).

[طرفاء في : ٦٣٨٢، ٧٣٩٠.]

١١٦٣ - حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَلَمَةَ الزُّرْقِيِّ أَنَّ سَمْعَ أَبَا قَتَادَةَ بْنِ رَبِيعٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمْ الْمَسْجِدَ فَلَا يَجْلِسْ حَتَّى يُصَلِّيَ رَكَعَتَيْنِ)). [راجع : ٤٤٤]

١١٦٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

(रज़ि.) ने कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (हमारे घर जब दा'वत में आए थे) दो रकअत नमाज़ पढ़ाई और फिर वापस तशरीफ़ ले गये। (राजेअ: 380)

1165. हमसे यहाा बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने अक़ील से बयान किया, अक़ील से इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने, आप ने बतलाया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जुहर से पहले दो रकअत सुन्नत पढ़ी और जुहर के बाद दो रकअत और जुम्आ के बाद दो रकअत और मरिब के बाद दो रकअत और इशा के बाद भी दो रकअत (नमाज़े-सुन्नत) पढ़ी है। (राजेअ: 938)

1166. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी, कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुम्आ का ख़ुत्बा देते हुए फ़र्माया कि जो शख़्स भी (मस्जिद में) आए और इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो या ख़ुत्बा के लिये निकल चुका हो तो वो दो रकअत नमाज़ (तहिय्यतुल मस्जिद) पढ़ ले। (राजेअ: 930)

1167. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सैफ़ बिन सुलैमान ने बयान किया कि मैंने मुजाहिद से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) (यकका शरीफ़ में) अपने घर आए, किसी ने कहा बैठे क्या हो, ओहज़रत (ﷺ) ये आ गये बल्कि का'बा के अन्दर भी तशरीफ़ ले जा चुके हैं। अब्दुल्लाह ने कहा ये सुनकर मैं आया। देखा तो ओहज़रत (ﷺ) का'बा से बाहर निकल चुके हैं और बिलाल (रज़ि.) दरवाज़े पर खड़े हैं। मैंने उनसे पूछा कि ऐ बिलाल! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने का'बा में नमाज़ पढ़ी? उन्होंने कहा कि हाँ पढ़ी थी। मैंने पूछा कि कहाँ पढ़ी थी? उन्होंने बताया कि यहाँ दो सुतूनों के दरम्यान, फिर आप बाहर तशरीफ़ लाए और दो रकअत का'बा

أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ انْصَرَفَ)). (راجع: 380)

1165 - حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا

اللَّيْثُ عَنْ عَقِيلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ:

أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ

رَسُولِ اللَّهِ ﷺ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الظُّهْرِ

وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ

الْجُمُعَةِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَرَكْعَتَيْنِ

بَعْدَ الْعِشَاءِ)). (راجع: 938)

1166 - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ

قَالَ: أَخْبَرَنَا عُمَرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ

جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ:

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ يَخْطُبُ: ((إِذَا

جَاءَ أَحَدُكُمْ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ - أَوْ قَدْ

خَرَجَ - فَلْيُتَمَلَّ رَكْعَتَيْنِ)).

(راجع: 930)

1167 - حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا

سَيْفُ بْنُ سُلَيْمَانَ الْمَكِّيُّ قَالَ: سَمِعْتُ

مُجَاهِدًا يَقُولُ: ((أَبَى ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ

عَنْهُمَا فِي مَنَزِلِهِ فَقِيلَ لَهُ: هَذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

فَقَدْ دَخَلَ الْكَعْبَةَ. قَالَ فَأَبْلَثُ فَأَجِدُ

رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ خَرَجَ وَاجِدٌ بِلَالًا عِنْدَ

الْبَابِ فَايْتَمًا، فَقُلْتُ: يَا بَلَالُ، أَمْ صَلَّى

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي الْكَعْبَةِ؟ قَالَ: نَعَمْ.

قُلْتُ فَأَيْنَ؟ قَالَ: بَيْنَ هَاتَيْنِ الْأُسْطُوذَتَيْنِ،

के दरवाजे के सामने पढ़ीं और अबू हुसैरह (रज़ि.) ने कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने चाश्त की दो रकअतों की वसियत की थी और इतबान ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र और इमर (रज़ि.) सुबह दिन चढ़े मेरे घर तशरीफ़ लाए। हमने आप (ﷺ) के पीछे सफ़्र बना ली और आँहज़रत (ﷺ) ने दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ : 397)

ثُمَّ عَرَجَ فَمَلَى رَكَعَيْنِ. وَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَوْصَانِي النَّبِيُّ ﷺ بِرَكَعِي الصُّحَى وَقَالَ عِثَانُ بْنُ مَالِكٍ هَذَا عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بَعْدَ مَا امْتَدَّ النَّهَارُ وَصَفَقَا وَرَأَاهُ، فَرَكَعَ رَكَعَيْنِ. [راجع: 397]

इन तमाम रिवायतों से इमाम बुखारी (रह.) ये बताना चाहते हैं कि नफ़ल नमाज़ ख़्वाह दिन ही में क्यूँ न पढ़ी जाएँ, दो-दो रकअत करके पढ़ना अफ़ज़ल है। इमाम शाफ़िई (रह.) का भी यही मसलक है।

बाब 26 : फ़ज़्र की सुन्नतों के बाद बातें करना

٢٦- بَابُ الْحَدِيثِ بَعْدَ رَكَعِي الْفَجْرِ

1168. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अबुन नज़र सालिम ने बयान किया कि मुझसे मेरे बाप अबू उमर्या ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब दो रकअत (फ़ज़्र की सुन्नत) पढ़ लेते तो उस वक़्त अगर मैं जाग रही होती तो आप मुझसे बातें करते वरना लेट जाते। मैंने सुफ़यान से कहा कि बाज़ रावी फ़ज़्र की दो रकअतें इसे बताते हैं तो उन्होंने फ़र्माया कि हाँ ये वही हैं। (राजेअ : 1118)

١١٦٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ أَبُو النُّعْمَنِ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّي رَكَعَيْنِ، فَإِنْ كُنْتُ مُسْتَيْقِظَةً حَدَّثَنِي، وَإِلَّا اضْطَجَعْتُ)) قُلْتُ لِسُفْيَانَ: فَإِنْ بَعْضُهُمْ يَرْوِيهِ رَكَعِي الْفَجْرِ، قَالَ سُفْيَانُ: هُوَ ذَلِكَ.

[راجع: 1118]

उसैली के नुस्खे में यूँ है। क़ाल अबुन्नज़र हद़्दप्पनी अन अबी सलमत सुफ़यान ने कहा कि मुझको ये हदीष अबुनज़र ने अबू सलमा से बयान की। इस नुस्खे में गोया अबुनज़र के बाप का ज़िक्र नहीं है।

बाब 27 : फ़ज़्र की सुन्नत की दो रकअतें हमेशा लाज़िम कर लेना और उनके सुन्नत होने की दलील

٢٧- بَابُ تَعَاهُدِ رَكَعِي الْفَجْرِ، وَمَنْ سَمَاهُمَا طَوَلُوعًا

1169. हमसे बयान बिन अग्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अता ने बयान किया, उनसे उबैद बिन उमैर ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) किसी नफ़ल

١١٦٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عَبْدِ بْنِ عُتَيْبٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمْ يَكُنْ

नमाज़ की फ़ज़ की दो रक़अतों से ज़्यादा पाबन्दी नहीं करते थे।

النَّبِيُّ ﷺ عَلَى شَيْءٍ مِنَ التَّوَالِيلِ أَخَذَ مِنْهُ
تَمَاهُذَا عَلَى رَكَعَتِي الْفَجْرِ.

तशरीह : इस हदीष में हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़ज़ की सुन्नतों को भी लफ़्ज़े नफ़्स ज़िक्र किया है। पस बाब और हदीष में मुताबक़त हो गई, ये भी मा'लूम हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन सुन्नतों पर मुदावमत फ़र्माई है। लिहाज़ा सफ़र व हज़रत कहीं भी इनका तर्क करना अच्छा नहीं है।

बाब 28 : बाब फ़ज़ की सुन्नतों में क़िरअत कैसी करें?

٢٨- بَابُ مَا يُقْرَأُ فِي رَكَعَتِي
الْفَجْرِ

1170. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इब्बा ने, उन्हें उनके बाप (इब्बा बिन जुबैर) ने और उन्हें हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात में तेरह रक़अतें पढ़ते थे। फिर जब सुबह की अज़ान सुनते तो दो हल्की रक़अतें (सुन्नते-फ़ज़) पढ़ लेते।

(राजेअ : 626)

١١٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ
قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ
عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا
قَالَتْ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي
بِاللَّيْلِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكَعَةً، ثُمَّ يُصَلِّي إِذَا
سَمِعَ النِّدَاءَ بِالصُّبْحِ رَكَعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ)).

[راجع: ٦٢٦]

इस हदीष में इस तरफ़ इशारा है कि फ़ज़ की सुन्नतों में छोटी-छोटी सूरतों को पढ़ना चाहिये, आप (ﷺ) के हल्का करने का यही मतलब है।

1171. मुझसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुरह्मान ने, उनसे उनकी फ़ूफ़ी अम्मा बिनते अब्दुरह्मान ने और उनसे हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (दूसरी सनद) और हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे जुहैर ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़्ज़ा बिन सईद अन्ज़ारी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुरह्मान ने, उनसे अम्मा बिनते अब्दुरह्मान ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) सुबह की (फ़ज़) नमाज़ से पहले की दो (सुन्नत) रक़अतों को बहुत मुख़्तसर रखते थे। आप (ﷺ) ने उनमें सूरह फ़ातिहा भी पढ़ी या नहीं मैं ये भी नहीं कह सकती।

١١٧١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ:
حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ
مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَمِيهِ عُمَرَةَ
عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ
النَّبِيُّ ﷺ ح. وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ
قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ
إِبْرَاهِيمَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ
عَنْ عُمَرَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا
قَالَتْ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّفُ الرُّكَعَتَيْنِ
الَّتَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الصُّبْحِ حَتَّى إِنِّي لَأَقُولُ:
هَلْ قُرَأَ بِأَمِّ الْكِتَابِ)).

ये मुबालगा है या'नी बहुत हल्की—फुल्की पढ़ते थे। इब्ने माजा में है कि आप (ﷺ) उनमें सूरह काफ़िरून और सूरह इख़लास पढ़ा करते थे।

बाब 29 : फ़र्जों के बाद सुन्नत का बयान

1172. हमसे मुसहद बिन मुस्हरद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यहाय बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझे नाफ़ेअ ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ जुहर से पहले दो रकअत, जुहर के बाद दो रकअत सुन्नत, मरिब के बाद दो रकअत सुन्नत, इशा के बाद दो रकअत सुन्नत और जुम्आ के बाद दो रकअत सुन्नत पढ़ी है और मरिब और इशा की सुन्नतें आप घर में पढ़ते थे। अबुज्जिनाद ने मूसा बिन इब्रबा के वास्ते से बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने कि इशा के बाद अपने घर में (सुन्नत पढ़ते थे) उनकी रिवायत की मुताबक़त क़बीर बिन फ़रक़द और अय्यूब ने नाफ़ेअ के वास्ते से की है।

(राजेअ : 937)

1173. उनसे (इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि) मेरी बहन हफ़सा ने मुझसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) फ़ज़्र होने के बाद दो हल्की रकअतें (सुन्नत-फ़ज़्र) पढ़ते थे और ये ऐसा वक़्त होता कि मैं नबी करीम (ﷺ) के पास नहीं जाती थी। अब्दुल्लाह के साथ इस हदीष को क़बीर बिन फ़रक़द और अय्यूब ने भी नाफ़ेअ से रिवायत किया और इब्ने अबुज्जिनाद ने इस हदीष को मूसा बिन इब्रबा से, उन्होंने नाफ़ेअ से रिवायत किया। इस में फ़ी बैतिही के बदले फ़ी अहलिही है।

(राजेअ : 618)

ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने इसलिये कहा कि फ़ज़्र से पहले और इशा की नमाज़ के बाद और ठीक दोपहर को घर के कामकाजी लोगों को भी इजाज़त लेकर जाना चाहिये, उस वक़्त ग़ैर लोग आप (ﷺ) से कैसे मिल सकते। इसलिये इब्ने उमर (रज़ि.) ने उन सुन्नतों का हाल अपनी बहन उम्मुल मोमिनीन हफ़सा (रज़ि.) से सुनकर मा'लूम किया।

बाब 30 : इस बारे में जिसने फ़र्ज के बाद

सुन्नत नमाज़ नहीं पढ़ी

1173. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया,

۲۹- بَابُ التَّطَوُّعِ بَعْدَ الْمَكْتُوبَةِ

۱۱۷۲- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَجْدَتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ وَسَجْدَتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ وَسَجْدَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَسَجْدَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ وَسَجْدَتَيْنِ بَعْدَ الْجُمُعَةِ. فَأَمَّا الْمَغْرِبُ وَالْعِشَاءُ فَفِي بَيْتِهِ)). وَقَالَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ ((بَعْدَ الْعِشَاءِ فِي أَهْلِهِ)). تَابَعَهُ كَثِيرٌ بْنُ قُرْقَدٍ وَأَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ. [راجع: ۹۳۷]

۱۱۷۳- وَحَدَّثَنِي أَخِي حَفْصَةُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّي سَجْدَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ بَعْدَ مَا يَطْلُعُ الْفَجْرُ وَكَانَتْ سَاعَةً لَا أُدْخِلُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فِيهَا)). تَابَعَهُ كَثِيرٌ بْنُ قُرْقَدٍ وَأَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ. وَقَالَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ ((بَعْدَ الْعِشَاءِ فِي أَهْلِهِ)). [راجع: ۶۱۸]

۳۰- بَابُ مَنْ لَمْ يَتَطَوَّعْ بَعْدَ

الْمَكْتُوبَةِ

۱۱۷۴- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ:

कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने अम्र बिन दीनार से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबुशशअशाअ बिन जाबिर बिन अब्दुल्लाह से सुना। उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ आठ रकअत एक साथ (जुहर और अम्र) और सात रकअत एक साथ (मरिब और इशा मिलाकर) पढ़ी। (बीच में सुन्नत वगैरह कुछ नहीं) अबुशशअशाअ से मैंने कहा मेरा खयाल है कि आप (ﷺ) ने जुहर आखिर वक़्त में और अम्र अव्वल वक़्त में पढ़ी होगी, इस तरह मरिब आखिर वक़्त में पढ़ी होगी और इशा अव्वल वक़्त में। अबुशशअशाअ ने कहा कि मेरा भी यही खयाल है। (राजेअ: 573)

حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ غَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الشَّخَاءِ جَابِرًا قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لَمَّائِيَا جَمِيعًا وَمَتَمًّا جَمِيعًا)) قُلْتُ: يَا أَبَا الشَّخَاءِ أَطْنَةُ آخِرَ الظُّهْرِ وَعَجَلُ الْغَصْرِ، وَعَجَلُ الْعِشَاءِ وَآخِرُ الْمَغْرِبِ قَالَ وَأَنَا أَطْنَةُ.

[راجع: ٥٤٣]

ये अम्र बिन दीनार का खयाल है वरना ये हदीष साफ़ है कि दो नमाज़ों का जमा करना जाइज़ है। दूसरी रिवायत में है कि ये वाकिआ मदीना मुनव्वरा का है न वहाँ कोई खौफ था न कोई बन्दिश थी। ऊपर गुजर चुका है कि अहले हदीष के नज़दीक ये जाइज़ है। इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से ये निकाला कि सुन्नतों का तर्क करना जाइज़ है और सुन्नत भी यही है कि जमा करे तो सुन्नतें न पढ़े। (मौलाना वहीदुज्जमाँ)

बाब 31 : सफ़र में चाशत की नमाज़ पढ़ना

1175. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा बिन हज्जाज ने, उनसे तौबा बिन कैसान ने, उनसे मुबरक़ बिन मश्मरख़ ने, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से पूछा कि क्या आप चाशत की नमाज़ पढ़ते हैं? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं! मैंने पूछा और उमर पढ़ते थे? आपने फ़र्माया नहीं! मैंने पूछा और अबूबक्र (रज़ि.)? फ़र्माया नहीं! मैंने पूछा और नबी करीम (ﷺ)? फ़र्माया नहीं! मेरा खयाल यही है।

(राजेअ: 77)

٣١- بَابُ صَلَاةِ الضُّحَى فِي السَّفَرِ

١١٧٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

عَنْ شُعْبَةَ عَنْ ثَوْبَةَ عَنْ مُوَرَّقٍ قَالَ:

((قُلْتُ لِابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا:

أَتَصَلِّي الضُّحَى؟ قَالَ: لَا. قُلْتُ: لَعُمْرَةٍ؟

قَالَ: لَا. قُلْتُ: فَأَبُو بَكْرٍ؟ قَالَ: لَا. قُلْتُ:

فَالنَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ: لَا إِعْجَالَهُ.))

[راجع: ٧٧]

तशरीह: कुछ शारेह किराम का कहना है कि बज़ाहिर इस हदीष और बाब में मुताबक़त नहीं है। अल्लामा कस्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं फ़हमलल्ख़ताबी अला ग़लतिन्नाकिलि वब्नुल्मुनीर अन्नहू लम्मा तआरज़त इन्दहू अहादीषुहा नफ़यन कहदीषिब्नि उमर हाज़ा व इब्बातन कअबी हु़रैरत फिल्वसिद्यति बिहा नज़ल हदीषन्नफ़िय अलस्सफ़रि व हदीषल्इब्बाति अलल्हज़ि व युअय्यिदु ज़ालिक अन्नहू तरज्जम लिहदीषि अबी हु़रैरत बिसलातिज़्जुहा फिलहज़ि मअ मा यअजुदुहू मिन कौलिब्नि उमर लौ कुन्तु मुसब्बिहन लअत्मम्तु फिस्सफ़रि कालहू इब्नु हज़र या'नी ख़ताबी ने इस बाब को नाक़िल की ग़लती पर महमूल किया है और इब्ने मुनीर का कहना ये है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक नफ़ी और इब्बात की अहादीष में तआरज़ था, उसको उन्होंने इस तरह दूर किया कि हदीषे इब्ने उमर (रज़ि.) को जिसमें नफ़ी है सफ़र पर महमूल किया और हदीषे अबू हु़रैरह (रज़ि.) को जिसमें वसिyyत का ज़िक्र है और जिससे इब्बात प्राबित हो रहा है, उसको हज़र पर महमूल किया। इस अम्र की उससे भी ताईद हो रही है कि हदीषे अबू हु़रैरह (रज़ि.) पर हज़रत इमाम (रह.) ने म़लातुज्जुहा फिलहज़र का बाब मुनअक्किद किया है और नफ़ी के बारे में हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) के इस क़ौल से भी ताईद होती है जो उन्होंने फ़र्माया कि अगर मैं सफ़र में नफ़ल पढ़ता तो

नमाज़ों को ही पूरा क्यों न पढ़ लेता, पस मा'लूम हुआ कि नफ़ी से उनकी सफ़र में नफ़ी मुराद है और हज़राते शैख़न का फ़ेअल भी सफ़र से मुता'ल्लिक है कि वो हज़रात सफ़र में नफ़ल नमाज़ नहीं पढ़ा करते थे।

1176. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अग्र बिन मुरा' ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, वो कहते थे कि मुझ से उम्मे हानी (रज़ि.) के सिवा किसी (सहाबी) ने ये नहीं बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को चाशत की नमाज़ पढ़ते देखा है। सिर्फ़ उम्मे हानी (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फ़तहे-मक्का के दिन आप (ﷺ) उनके घर तशरीफ़ लाए, आप (ﷺ) ने गुस्ल किया और आठ रकअत (चाशत की) नमाज़ पढ़ी। तो मैंने ऐसी हल्की-फुल्की नमाज़ कभी नहीं देखी अलबत्ता आप (ﷺ) रुकूअ और सज्दे पूरी तरह अदा करते थे। (राजेअ : 1103)

١١٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مَرْثَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى يَقُولُ: مَا حَدَّثَنَا أَحَدٌ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي الضُّحَى غَيْرَ أَمْ هَآئِهِ لِأَنَّهُ قَالَتْ: ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ بَيْتَهَا يَوْمَ فَتَحَ مَكَّةَ فَأَغْتَسَلَ وَصَلَّى ثَلَاثِي رَكَعَاتٍ، فَلَمْ أَرَ صَلَاةً قَطُّ أَحَفَّ مِنْهَا، غَيْرَ أَنَّهُ يُعْمِ الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ)). [راجع: ١١٠٣]

तशरीह: हदीषे उम्मे हानी में है कि आँहज़रत (ﷺ) की जिस नमाज़ का ज़िक्र है। शारेहीन ने उसके बारे में इख़्तिलाफ़ किया है, कुछ ने उसे शुक्राना की नमाज़ करार दिया है। मगर हकीकत यही है कि ये जुहा की नमाज़ थी। अबू दाऊद में वज़ाहत है कि सल्ला सुबहतज्जुहा या'नी आप (ﷺ) ने जुहा के नफ़ल अदा किये और मुस्लिम ने किताबुतहारत में नक़ल किया सल्ला इमान रकअतिन सुबहतज्जुहा या'नी फिर आँहज़रत (ﷺ) ने जुहा की आठ रकअत नफ़ल अदा फ़र्माई और तम्हीदे इब्ने अब्दुल बर' में है कि क़ालत क़दिम अलैहिस्सलाम मक्कत फ़सल्ला इमान रकअतिन फ़कुल्लतु मा हाजिहिस्सलातु क़ाल हाजिही सलातुज्जुहा वशशमसि व जुहाहा हज़रत उम्मे हानी कहती हैं कि हुज़ूर मक्का शरीफ़ तशरीफ़ लाए और आप (ﷺ) ने आठ रकअत पढ़ीं। मैंने पूछा कि ये कैसी नमाज़ है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये जुहा की नमाज़ है। इमाम नववी (रह.) ने इस हदीष से दलील पकड़ी है कि सलातुज्जुहा का मसनून तरीका आठ रकअत अदा करना है। यूँ रिवायात में कम व ज़्यादा भी आई हैं। कुछ रिवायात में कम से कम ता'दाद दो रकअत भी मज़कूर है। बहरहाल बेहतर ये है कि सलातुज्जुहा पर मुदावमत की जाए क्योंकि तबरांनी औसत में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की एक हदीष में मज़कूर है कि जन्नत में एक दरवाज़े का नाम ही बाबुज्जुहा है जो लोग नमाज़े जुहा पर मुदावमत करते हैं, उनको उस दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल किया जाएगा। इब्ना बिन अमिर (रज़ि.) से मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया था कि जुहा की नमाज़ में सूरह वशशमसु वज्जुहाहा और वज्जुहा पढ़ा करो। इस नमाज़ का वक़्त सूरज के बुलन्द होने से ज़वाल तक है। (कस्तलानी रह.)

बाब 32 : चाशत की नमाज़ पढ़ना और
उसको ज़रूरी न समझना

1177. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अबी जुहैब ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे उर्वा बिन जुबैर ने, उनसे हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि मैंने तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को चाशत की

٣٢- بَابُ مَنْ لَمْ يُصَلِّ الضُّحَى
وَرَأَاهُ وَاسِعًا

١١٧٧- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَسَحَ سَبْحَةَ الضُّحَى، وَإِنِّي

नमाज़ पढ़ते नहीं देखा, मगर खुद पढ़ती हूँ। (राजेअ: 1128)

[راجع: 1128]

तशरीह: हज़रत आइशा (रज़ि.) ने सिर्फ अपनी रुइयत की नफ़ी की है वरना बहुत सी रिवायात में आप (ﷺ) का ये नमाज़ पढ़ना मज़कूर है। हज़रत आइशा (रज़ि.) के खुद पढ़ने का मतलब ये है कि उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से उस नमाज़ के फ़ज़ाइल सुने होंगे। पस मा'लूम हुआ कि इस नमाज़ की अदायगी बाअिअे अज़ो-बबाब है।

इस लफ़्ज़ से कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को पढ़ते नहीं देखा, बाब का मतलब निकलता है क्योंकि उसका पढ़ना ज़रूरी होता तो वो आँहज़रत (ﷺ) को हर रोज़ पढ़ते देखतीं। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) के न देखने से चाश्त की नमाज़ की नफ़ी नहीं होती। एक जमाअते सहाबा ने उसको रिवायत किया है। जैसे अनस, अबू हुरैरह, अबू ज़र, अबू उसामा, उक्बा बिन अब्द, इब्ने अबी औफ़ा, अबू सईद, ज़ैद बिन अरक़म, इब्ने अब्बास, जुबैर बिन मुतइम, हुज़ैफ़ा, इब्ने उमर, अबू मूसा, इत्बान, उक्बा बिन आमिर, अली, मुआज़ बिन अनस, अबूबक्र और अबू मुरह (रज़ि.) वगैरह ने इत्बान बिन मालिक की हदीष ऊपर कई बार इस किताब में गुजर चुकी है और इमाम अहमद ने इसको इस लफ़्ज़ में निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने उनके घर में चाश्त के नफ़ल पढ़े। सब लोग आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और आप (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। (वहीदी)

**बाब 33 : चाश्त की नमाज़ अपने शहर में पढ़े,
ये इत्बान बिन मालिक ने नबी करीम (ﷺ)
से नक़ल किया है**

۳۳- بَابُ صَلَاةِ الضُّحَى فِي
الْحَضَرِ، قَالَهُ عُبَّانُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ
النَّبِيِّ ﷺ

1178. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें शुअबा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमसे अयास जरीरी ने जो फ़रख़ख़ के बेटे थे, बयान किया, उनसे इम्मान नहदी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुझे मेरी जानी दोस्त (नबी करीम ﷺ) ने तीन चीज़ों की वसियत की है कि मौत से पहले उनको न छोड़ो। हर महीने में तीन दिन रोज़े, चाश्त की नमाज़ और विन्न पढ़कर सोना।

(दीगर मक़ाम: 1981)

۱۱۷۸- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ بْنُ أَبِرَاهِيمَ قَالَ
أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا حَبَّاسٌ هُوَ
الْجَرَبَرِيُّ هُوَ ابْنُ فَرْوَخٍ عَنْ أَبِي غُثَّانٍ
النَّهْدِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
قَالَ: ((أَوْصَانِي خَلِيلِي ﷺ بِثَلَاثٍ لَا
أَذْغُهُنَّ حَتَّى أَمُوتَ: صَوْمَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ
كُلِّ شَهْرٍ، وَصَلَاةِ الضُّحَى، وَتَوَمُّ عَلَى
وَتَرٍ)). [طرنه في: 1981]

तशरीह: इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद ये है कि जिन रिवायात में सलाते जुहा की नफ़ी वारिद हुई है वो नफ़ी सफ़र की हालत में है फिर भी उसमें भी वुस्अत है और जिन रिवायात में इस नमाज़ के लिये इष्बात आया है वहाँ हालते हज़र मुराद है। हर माह में तीन दिन के रोज़े से अय्यामे बीज़ या'नी 13, 14, 15 तारीखों के रोज़े मुराद है।

1179. हमसे अली बिन जअद ने बयान किया कि हमको शुअबा ने ख़बर दी, उनसे अनस बिन सीरीन ने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक अन्सारी (रज़ि.) से सुना कि अन्सार में से एक शख़्स (इत्बान बिन मालिक रज़ि.) ने जो बहुत मोटे आदमी थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया कि मैं

۱۱۷۹- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ:
أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ قَالَ:
سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ الْإِنصَارِيَّ قَالَ:

आपके साथ नमाज़ पढ़ने की ताक़त नहीं रखता (मुझको घर पर नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दीजिए तो) उन्होंने अपने घर नबी करीम (ﷺ) के लिये खाना पकवाया और आप (ﷺ) को अपने घर बुलाया और एक चटाई के किनारे को आप (ﷺ) के लिये पानी से स्नाफ़ किया। आप (ﷺ) ने उस पर दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फलों बिन फलों बिन जारूद ने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा कि नबी करीम (ﷺ) चाशत की नमाज़ पढ़ा करते थे, तो उन्होंने फ़र्माया कि मैंने इस दिन के सिवा आपको कभी ये नमाज़ पढ़ते नहीं देखा।

(राजेअ: 680)

((قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ - وَكَانَ ضَعْفًا - لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنِّي لَا اسْتَطِيعُ الصَّلَاةَ مَعَكَ. فَصَنَعَ لِلنَّبِيِّ ﷺ طَعَامًا فَدَعَاهُ إِلَى بَيْتِهِ، وَنَضَحَ لَهُ طَرَفَ حَصِيرٍ بِمَاءٍ فَصَلَّى عَلَيْهِ رَكَعَتَيْنِ. وَقَالَ فَلَانٌ بْنُ فَلَانٍ بْنُ الْجَارُودِ لَأَنْسَ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي الصُّبْحَ؟ فَقَالَ: مَا رَأَيْتُهُ صَلَّى غَيْرَ ذَلِكَ الْيَوْمَ)).

[راجع: ٦٧٠]

तशरीह: हज़रत इमाम (रह.) ने मुख्तलिफ़ मकासिद के तहत इस हदीस को कई जगह रिवायत फ़र्माया है। यहाँ आपको मक्क़सद उससे जुहा की नमाज़ की हालते हज़रत में पढ़ना और कुछ मौक़ों पर जमाअत से भी पढ़ने का जवाज़ प्राबित करना है। बिल फ़र्ज़ बकौल हज़रत अनस (रज़ि.) के सिर्फ़ उसी मौक़े पर आप (ﷺ) ने ये नमाज़ पढ़ी तो धुबूत मुहआ के लिये आप (ﷺ) का एक बार काम को कर लेना भी काफी काफी है। यँ कई मौक़ों पर आप से उस नमाज़ के पढ़ने का धुबूत मौजूद है। मुम्किन है हज़रत अनस (रज़ि.) को उस दौरान आप (ﷺ) के साथ होने का मौक़ा न मिला हो।

बाब 39 : जुहर से पहले दो रकअत सुन्नत पढ़ना

1180. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) से दस रकअत सुन्नतें याद है। दो रकअत सुन्नत जुहर से पहले, दो रकअत सुन्नत जुहर के बाद, दो रकअत सुन्नत मरिब के बाद, दो रकअत सुन्नत इशा के बाद अपने घर में और दो रकअत सुन्नत सुबह की नमाज़ से पहले और ये वो वक़्त होता था, जब आप (ﷺ) के पास कोई नहीं जाता था।

(राजेअ: 937)

٣٩ - بَابُ الرُّكَعَتَيْنِ قَبْلَ الظُّهْرِ

١١٨٠ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ خَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ ((خَفِضْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ عَشْرَ رَكَعَاتٍ: رَكَعَتَيْنِ قَبْلَ الظُّهْرِ، وَرَكَعَتَيْنِ بَعْدَهَا، وَرَكَعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرَبِ فِي بَيْتِهِ، وَرَكَعَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ فِي بَيْتِهِ، وَرَكَعَتَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الصُّبْحِ وَكَانَتْ سَاعَةً لَا يَدْخُلُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فِيهَا)).

[راجع: ٩٣٧]

1181. मुझको उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा (रज़ि.) ने बतलाया कि मुअज़्ज़िन जब अज़ान देता और फ़ज़ हो जाती तो आप (ﷺ) दो रकअत पढ़ते। (राजेअ: 617)

١١٨١ - حَدَّثَنِي حَفْصَةُ ((أَنَّهُ كَانَ إِذَا أَدَّنَ الْمُؤَذِّنُ وَطَلَعَ الْفَجْرُ صَلَّى رَكَعَتَيْنِ)).

[راجع: ٦١٨]

1182. हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, कहा कि

١١٨٢ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

बाद में उनके पढ़ने से रोक दिया गया। ये बात बिलकुल गलत है पिछले सप्ताह में उन दो रकअतों के इस्तिहाब पर रोशनी डाली जा चुकी है। अब्दुल्लाह बिन मालिक जफ़ानी ये ताबेई मुखज्जम था या'नी आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में मौजूद था, पर आपसे नहीं मिला। ये मिस्त्र में हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में आया था फिर वहीं रह गया। एक जमाअत ने उनको सहाबा में गिना। इस हदीष से ये भी निकला कि मरिब का वक्त लम्बा है और जिसने इसको थोड़ा करार दिया उसका क़ौल बेदलील है। मगर ये रकअतें जमाअत खड़ी होने से पहले पढ़ लेना मुस्तहब है। (वहीदी)

बाब 36 : नफ़्ल नमाज़ें जमाअत से पढ़ना, इसका ज़िक्र अनस (रज़ि.) और आइशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से किया है

۳۶- بَابُ صَلَاةِ النَّوَافِلِ جَمَاعَةً، ذِكْرُهُ أَنَسٌ وَعَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

तशरीह : इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब के मतलब पर अनस (रज़ि.) की हदीष से दलील ली जो ऊपर गुज़र चुकी है और हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष भी बाब क़यामुल्लैल में गुज़र चुकी है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष से मुराद कुसूफ़ की हदीष है। जिसमें आप (ﷺ) ने जमाअत से नमाज़ पढ़ी। इन अह्दादीष से नफ़्ल नमाज़ों में जमाअत का जवाज़ प्राबित होता है और कुछ ने तदाई या'नी बुलाने के साथ उनमें इमामत मकरूह रखी है। अगर खुद बख़ुद कुछ आदमी जमा हो जाएँ तो इमामत मकरूह नहीं है। (वहीदी)

1185. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़क़ब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे हमारे बाप इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे महमूद बिन रबीअ अन्सारी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्हें नबी करीम (ﷺ) याद हैं और आप (ﷺ) की वो कुल्ली भी याद है जो आप (ﷺ) ने उनके घर के कुएँ से पानी लेकर उनके मुँह में की थी।

۱۱۸۵- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا يَغْفُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الرَّبِيعِ الْأَنْصَارِيُّ ((أَنَّهُ عَقَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَعَقَلَ مَجْئَئَهَا فِي وَجْهِهِ مِنْ بَنِي كَانَتْ لِي دَارِهِمْ)).

1186. महमूद ने कहा कि मैंने इत्बान बिन मालिक अन्सारी (रज़ि.) से सुना जो बद्र की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ शरीक थे, वो कहते थे कि मैंने अपनी क़ौम बनी सालिम को नमाज़ पढ़ाया करता था, मेरे (घर) और क़ौम की मस्जिद के बीच में एक नाला था, और जब बारिश होती तो उसे पार करके मस्जिद तक पहुँचाना मेरे लिये मुश्किल हो जाता था। चुनौचे मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे मैंने कहा कि मेरी आँखें ख़राब हो गई है और एक नाला है जो मेरे और मेरी क़ौम के दरम्यान पड़ता है, वो बारिश के दिनों में बहने लग जाता है और मेरे लिये उसका पार करना मुश्किल हो जाता है। मेरी ये ख़्वाहिश है कि आप तशरीफ़ लाकर मेरे घर किसी जगह नमाज़ पढ़ दें ताकि मैं उसे अपने लिये नमाज़ पढ़ने की जगह

۱۱۸۶- لَزَعُمُ مُحَمَّدٌ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَّانَ بْنَ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ- وَكَانَ مِنْ شُهَدَاءِ بَدْرٍ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ- يَقُولُ ((كُنْتُ أَصْلِي لِقَوْمِي بَنِي سَالِمٍ، وَكَانَ يَحُولُ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ وَادٍ إِذَا جَاءَتِ الْأَمْطَارُ، فَيَشُقُّ عَلَيَّ اجْتِيَازُهُ قَبْلَ مَسْجِدِهِمْ فَجِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقُلْتُ لَهُ: إِنِّي أَنْكَرْتُ بَصْرِي وَإِنَّ الْوَادِيَ الَّذِي بَيْنِي وَبَيْنَ قَوْمِي يَسْبِلُ إِذَا جَاءَتِ الْأَمْطَارُ، فَيَشُقُّ عَلَيَّ اجْتِيَازُهُ، فَوَدِدْتُ أَنَّكَ

मुकरर कर लूँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारी ये इवाहिश जल्दी ही पूरी करूँगा। फिर दूसरे ही दिन आप (ﷺ) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को साथ लेकर सुबह तशरीफ़ ले आए और आपने इजाज़त चाही, मैंने इजाज़त दे दी। आप (ﷺ) तशरीफ़ लाकर बैठे भी नहीं बल्कि पूछा कि तुम अपने घर में किस जगह मेरे लिये नमाज़ पढ़ना पसन्द करोगे। मैं जिस जगह को नमाज़ के लिये पसन्द कर चुका था, उसकी तरफ़ मैंने इशारा कर दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वहाँ खड़े होकर तकबीरे-तहरीमा कही और हम सबने आपके पीछे सफ़ बाँध ली। आप (ﷺ) ने हमें दो रकअत पढ़ाई फिर सलाम फेरा। हमने भी आप (ﷺ) के साथ सलाम फेरा। मैंने हलीम खाने के लिये आप (ﷺ) को रोक लिया, जो तैयार हो रहा था। मुहल्ले वालों ने जो सुना कि आप (ﷺ) मेरे घर तशरीफ़ फ़र्मा हैं तो लोग जल्दी-जल्दी जमा होने शुरू हो गए और घर में एक ख़ासा मज़मा हो गया। उनमें से एक शख्स बोला, मालिक को क्या हो गया है? यहाँ दिखाई नहीं देता। इस पर दूसरा बोला वो तो मुनाफ़िक़ है, उसे अल्लाह और रसूल से मुहब्बत नहीं है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया, ऐसा मत कहो! देखते नहीं कि वो लाइलाह इलल्लाह पढ़ता है और इससे उसका मक़सद अल्लाह तआला की खुशनूदी है। तब वो कहने लगा कि (असल हाल) तो अल्लाह और रसूल ही को मा'लूम है। लेकिन वल्लाह! हम तो उनकी बातचीत और मेलजोल ज़ाहिर में मुनाफ़िक़ों ही से देखते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, लेकिन अल्लाह तआला ने हर उस आदमी पर दोज़ख़ हुराम कर दी है, जिसने ला इलाह इलल्लाह, अल्लाह की रज़ा और खुशनूदी के लिये कह लिया। महमूद बिन रबीअ ने बयान किया कि मैंने ये हदीस एक ऐसी जगह में बयान की जिसमें आँ हज़रत (ﷺ) के मशहूर सहाबी हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि.) भी मौजूद थे। ये रूम के उस जिहाद का ज़िक्र है, जिसमें आपकी मौत वाक़ेअ हुई थी। फौज का सरदार यज़ीद बिन मुआविया था। अबू अय्यूब ने इस हदीस से इन्कार किया और फ़र्माया कि अल्लाह

تَأْتِي فَصَلِّيَ مِنْ بَيْتِي مَكَانًا اتَّخَذَهُ مُصَلًّى. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((سَأَعْلَمُ)). فَقَدَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بَعْدَ مَا اشْتَدَّ الْهَارُ، فَاسْتَاذَنَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَاذَنْتُ لَهُ، فَلَمْ يَجْلِسْ حَتَّى قَالَ: ((أَيْنَ تُحِبُّ أَنْ أَصَلِّيَ مِنْ بَيْتِكَ؟)) فَأَشْرَفْتُ لَهُ إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي أَحَبُّ أَنْ أَصَلِّيَ فِيهِ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَكَبَّرَ وَصَلَّفَا وَرَاءَهُ، فَصَلَّى رَكَعَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ، وَسَلَّمْنَا جَمِيعًا سَلَّمَ. فَخَسَنَتْهُ عَلَى غَزِيرٍ تَصْنَعُ لَهُ، فَسَمِعَ أَهْلَ الدَّارِ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي بَيْتِي فَطَابَ رِجَالٌ مِنْهُمْ حَتَّى تَكَثَّرَ الرِّجَالُ فِي الْبَيْتِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: مَا فَعَلَ مَا لَكَ؟ لَا أَرَاهُ. فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: ذَلِكَ مُنَافِقٌ لَا يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا تَقُلْ ذَلِكَ، أَلَا تَرَاهُ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يُعْنِي بِذَلِكَ وَجْهَهُ اللَّهُ؟)) فَقَالَ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَغْلَمُ، أَنَا نَحْنُ فَوَ اللَّهِ لَا نَرَى وَدَّةً وَلَا خِدْبَةً إِلَّا إِلَى الْمُنَافِقِينَ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَا أَيُّهَا اللَّهُ قَدْ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يُعْنِي بِذَلِكَ وَجْهَهُ اللَّهُ)). قَالَ مَخْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ: فَخَذَّئْتُهَا قَوْمًا فِيهِمْ أَبُو أَيُّوبَ صَاحِبُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ—فِي غَزْوَتِهِ الَّتِي تَوَلَّى فِيهَا وَيَزِيدُ بْنُ مُعَاوِيَةَ عَلَيْهِمُ بَارِئُ الرُّومِ—فَانْكَرَهَا عَلَيَّ أَبُو أَيُّوبَ قَالَ: وَاللَّهِ مَا أَظُنُّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالًا مَا قُلْتُ قَطُّ. فَكَبَّرَ ذَلِكَ عَلَيَّ، فَجَعَلْتُ اللَّهُ عَلَيَّ إِنْ سَلَّمَنِي حَتَّى أَقْلُ مِنْ غَزْوَتِي أَنْ أَسْأَلَ عَنْهَا عَجَبَانِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِنْ

की कसम! मैं नहीं समझता कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसी बात कभी भी कही हो। आपकी गुफ्तगु मुझको बहुत नागवार गुजरी और मैंने अल्लाह तआला की मन्नत मानी कि अगर मैं इस जिहाद से सलामती के साथ लौट तो वापसी पर इस हदीष के बारे में इब्बान बिन मालिक (रज़ि.) से ज़रूर पूछूँगा, अगर मैंने उन्हें उनकी क़ौम की मस्जिद में ज़िन्दा पाया। आखिर मैं जिहाद से वापस हुआ। पहले तो मैंने हज्ज व उम्ह का एहराम बाँधा फिर जब मदीना वापसी हुई तो मैं क़बीला बनू सालिम में आया। हज़रत इब्बान (रज़ि.) जो बूढ़े और नाबीना हो गये थे, अपनी क़ौम को नमाज़ पढ़ाते हुए मिले। सलाम फेरने के बाद मैंने हाज़िर होकर आपको सलाम किया और बतलाया कि मैं फलों हूँ। फिर मैंने इस हदीष के मुता'ल्लिक दरयाफ्त किया तो आपने मुझ से इस मर्तबा भी उसी तरह ये हदीष बयान की, जिस तरह पहले बयान की थी। (राजेअ: 424)

तशरीह: यह 50 हिजरी का बाक़िआ है। जब हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) ने कुस्तुनुनिया पर फ़ौज भेजी थी और उसका मुहासरा (घेराव) कर लिया था। इस लश्कर के अमीर मुआविया (रज़ि.) का बेटा यज़ीद था। जो बाद में ह्दाष-ए-करबला की वजह से तारीख़े इस्लाम में मलज़ून हुआ। इस फ़ौज में अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) भी शामिल थे जो आँहज़रत (ﷺ) की मदीना में तशरीफ़ आवरी पर अव्वलान मेज़बान हैं। उनकी मौत उसी मौके पर हुई और कुस्तुनुनिया के क़िले की दीवार के नीचे दफ़न हुए। बाब का तर्जुमा इस हदीष से यूँ निकला कि आँहज़रत (ﷺ) खड़े हुए और हाज़िरीने ख़ाना ने आप (ﷺ) के पीछे सफ़्र बाँधी और ये नफ़ल नमाज़ जमाअत से अदा की गई क्योंकि दूसरी हदीष में मौजूद है कि आदमी को नफ़ल नमाज़ घर ही में बेहतर है और फ़र्ज़ नमाज़ का मस्जिद में बाजमाअत अदा करना ज़रूरी है। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रह.) को इस हदीष पर शुबहा इसलिये हुआ कि उसमें अअमाल के बग़ैर सिर्फ़ कलिमा पढ़ लेने पर जन्नत की बशारत दी गई है। मगर ये हदीष इस बारे में मुजमल है दीगर अह्दादीष में तफ़सील मौजूद है कि कलिमा तय्यिबा बेशक जन्नत की कुँजी है, मगर हर कुँजी के लिये दंदाने ज़रूरी है। इसी तरह कलिमा तय्यिबा के दंदाने फ़राइज़ व वाजिबात को अदा करना है। सिर्फ़ कलिमा पढ़ लेना और उसके मुताबिक़ अमल न करना बेनतीजा है।

हज़रत अमीर मुहदिप्पीन इमाम बुखारी (रह.) अगरचे इस तवील हदीष को यहाँ अपने मक्सदे बाब के तहत लाए हैं कि नफ़ल नमाज़ ऐसी हालत में बाजमाअत पढ़ी जा सकती है। मगर उसके अलावा भी और बहुत से मसाइल इससे प्राबित होते हैं मसलन मा'ज़ूर लोग अगर जमाअत में आने की सकत न रखते हों तो वो अपने घर ही में एक जगह मुक़र्रर करके वहाँ नमाज़ पढ़ सकते हैं और ये भी प्राबित हुआ कि मेहमाने खुसूसी को उम्दा से उम्दा खाना खिलाना मुनासिब है और ये भी मा'लूम हुआ कि बग़ैर सोचे समझे किसी पर निफ़ाक़ या कुफ़्र का फ़त्वा लगा देना जाइज़ नहीं। लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) के सामने उस शख्स मालिक नाभी का ज़िक़्र बुरे लफ़्ज़ों में किया जो आपको नागवार गुजरा और आपने फ़र्माया कि वो कलिमा पढ़नेवाला है उसे तुम लोग मुनाफ़िक़ कैसे कह सकते हो। आप (ﷺ) को ये भी मा'लूम था कि वो सिर्फ़ रस्मी रिवाजी कलिमा-गो नहीं है बल्कि कलिमा पढ़ने से अल्लाह की खुशनूदी उसके मदेनज़र है। फिर उसे कैसे मुनाफ़िक़ कहा जा सकता है। उससे ये भी निकला कि जो लोग अहले हदीष हज़रात पर तज़ान करते हैं और उनको बुरा भला कहते हैं वो सख़्त ख़ताकार हैं। जबकि अहले हदीष हज़रात न सिर्फ़ कलिम-ए-तौहीद पढ़ते हैं बल्कि इस्लाम के सच्चे आमिल व कुआन व हदीष के सहीह ताबेदार हैं।

وَجَدْتُهُ حَيًّا فِي مَسْجِدِ قَوْمِهِ، فَقُلْتُ فَأَمَلْتُ بِحَجَّةٍ - أَوْ بِعُمْرَةٍ - ثُمَّ سِرْتُ حَتَّى قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ، فَأَتَيْتُ بَنِي سَالِمٍ، لِإِذَا عَبَّانُ شَيْخٌ أَعْمَى يُصَلِّي لِقَوْمِهِ، فَلَمَّا سَلَّمَ مِنَ الصَّلَاةِ سَلَّمْتُ عَلَيْهِ وَأَخْبَرْتُهُ مَنْ أَنَا، ثُمَّ سَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ الْحَدِيثِ، فَحَدَّثَنِيهِ كَمَا حَدَّثَنِيهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ. [راجع: ٤٢٤]

तशरीह:

इस पर हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम फ़र्माते हैं कि मुझे उस वक़्त वो हिकायत याद आई कि शैख़ मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी पर आँहज़रत (☞) की ख़्वाब में ख़प्पी हुई थी। हुआ ये था कि उनके पीर शैख़ अबू मुदय्यन मरिबो को एक शख़्स बुरा भला कहा करता था। शैख़ इब्ने अरबी उससे दुश्मनी रखते थे। आँहज़रत (☞) ने आलमे ख़्वाब में उन पर अपनी ख़प्पी जाहिर की। उन्होंने वजह पूछी, इश्राद हुआ कि तू फ़लों शख़्स से क्यों दुश्मनी रखता है? शैख़ ने कहा या रसूलल्लाह (☞) वो मेरे पीर को बुरा कहता है। आपने फ़र्माया कि तूने अपने पीर को बुरा कहने की वजह से उससे दुश्मनी रखी और अल्लाह और उसके रसूल से जो वो मुहब्बत रखता है उसका ख़्याल करके तूने उससे मुहब्बत क्यों न रखी। शैख़ ने तौबा की और सुबह को मअज़रत के लिये उसके पास गए। मोमिनीन को लाज़िम है कि अहले हदीष से मुहब्बत रखें क्योंकि वो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखते हैं और गो मुज्तिहिदों की राय और क़यास को नहीं मानते मगर वो भी अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत की वजह से पैग़म्बर साहब के ख़िलाफ़ वो किसी की राय और क़यास को क्यों मानें सच है

मा आशीक़ेम बे दिल दिलदार मा मुहम्मद (☞)

मा खुलबुलैम नालीं गुलज़ार मा मुहम्मद (☞)

हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) के इंकार की वजह ये भी थी कि सिर्फ़ कलिमा पढ़ लेना और अमल उसके मुताबिक़ न होना नज़ात के लिये काफ़ी नहीं है। उसी ख़याल की बिना पर उन्होंने अपना ख़याल जाहिर किया कि रसूले करीम (☞) ऐसा क्योंकर फ़र्मा सकते हैं। मगर धाकिअतन महमूद बिन अरबीअ सच्चे थे और उन्होंने अपनी मज़ीद तक्वियत के लिये दोबारा इत्बान बिन मालिक (रज़ि.) के यहाँ हाज़िरी दी और दोबारा इस हदीष की तस्दीक़ की। हदीषे मज़कूर में आँहज़रत (☞) ने मुजमल एक ऐसा लफ़्ज़ भी फ़र्मा दिया था जो उस चीज़ का मज़हर है कि सिर्फ़ कलिमा पढ़ लेना काफ़ी नहीं है। बल्कि उसके साथ इब्तिगा लिवज़िहल्लाह (अल्लाह की रज़ामन्दी व तलाश) भी ज़रूरी है और जाहिर है कि ये चीज़ कलिमा पढ़ने और उसके तकाज़ों को पूरा करने ही से हासिल हो सकती है। इस लिहाज़ से यहाँ आप (☞) ने एक इन्माली ज़िक्र फ़र्माया। आपका मक़सद न था कि सिर्फ़ कलिमा पढ़ने से वो शख़्स ज़तती हो सकता है। बल्कि आप (☞) का इश्राद जामेअ था कि कलिमा पढ़ना और उसके मुताबिक़ अमल दरआमद करना और ये चीज़ें आपको शख़्स मुतनाज़े के बारे में मा'लूम थीं। इसलिये आप (☞) ने उसके इमान की तौषीक़ फ़र्माई और लोगों को उसके बारे में बदग़ुमानी से मना फ़र्माया। बल्लाहु आलमा

बाब 37 : घर में नफ़ल नमाज़ पढ़ना

1187. हमसे अब्दुल्लाह बिन हम्माद ने बयान किया, कहा कि हमसे युहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी और अब्दुल्लाह बिन इमर ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (☞) ने फ़र्माया कि अपने घरों में भी कुछ नमाज़ें पढ़ा करो और उन्हें क़ब्रें न बना लो (कि जहाँ नमाज़ ही न पढ़ी जाती हो) युहैब के साथ इस हदीष को अब्दुल वट्हाब बक्रफ़ी ने भी अय्यूब से रिवायत किया है।

(राजेअ: 432)

तशरीह:

नमाज़ से मुराद यहाँ नफ़ली नमाज़ है क्योंकि दूसरी हदीष में है कि आदमी की अफ़ज़ल नमाज़ वो है जो घर में हो। मगर फ़र्ज़ नमाज़ का मस्जिद में पढ़ना अफ़ज़ल है। क़ब्र में मुर्दा नमाज़ नहीं पढ़ता लिहाज़ा जिस घर में नमाज़ न पढ़ी जाए वो भी क़ब्र हुआ। क़ब्रिस्तान में नमाज़ पढ़ना मन्हूअ है। इसलिये भी फ़र्माया कि घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ। अब्दुल वट्हाब की रिवायत को इमाम मालिक (रह.) ने अपनी जामेउस्सहीह में निकाला है।

۳۷- بَابُ الظُّرْعِ فِي الْبَيْتِ

۱۱۸۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ خَمْدٍ

قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ أَيُّوبَ وَغُنَيْدٍ أَنَّ

عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اجْعَلُوا فِي

بُيُوتِكُمْ مِنْ صَلَاتِكُمْ، وَلَا تَجْعَلُوهَا

قُبُورًا)). نَابِعَةُ عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ أَيُّوبَ.

[راجع: ۴۳۲].

20. किताब फ़ज़लुस्सलात

फ़ी मक्का वल मदीना

मक्का और मदीना में नमाज़ की फ़ज़ीलत

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : मक्का और मदीना (जादहुमल्लाह शरफ़न व ता'ज़ीमन) की मसाजिद में नमाज़ की फ़ज़ीलत का बयान

1188. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अब्दुल मलिक ने क़ज़आ से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद (रज़ि.) से चार बातें सुनीं और उन्होंने बतलाया कि मैंने उन्हें नबी करीम (ﷺ) से सुना था, आपने नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह जिहाद किये थे। (राजेअ : 582)

1189. (दूसरी सनद) हमसे अली बिन मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीन मस्जिदों के सिवा किसी के लिये क़ज़ावे न बाँधें (या'नी सफ़र न किया जाए) एक मस्जिदे हुराम, दूसरी रसूलुल्लाह (ﷺ) की मस्जिद (मस्जिदे नबवी) और तीसरी मस्जिदे अक्सा या'नी बैतुल मक़्दिस। (उन चार बातों का बयान आगे आ रहा है)

١ - بَابُ فَضْلِ الصَّلَاةِ فِي مَسْجِدِ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ

١١٨٨ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمْرٍا حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ قُرْظَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَرَبْعًا قَالَ سَمِعْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ غَزَاً مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْتِي عَشْرَةَ غَزْوَةً. [راجع: ٥٨٦]

١١٨٩ - ح وَحَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ قَتَانٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلَّا إِلَى ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ: الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَمَسْجِدِ الرَّسُولِ ﷺ وَمَسْجِدِ الْأَقْصَى)).

तशरीह : मस्जिदे अक्सा की वजह तस्मिया कस्तलानी के लफ़्ज़ों में ये है। व सुम्मिय बिही लिबुअ दिही अन मस्जिदि मक़्कत फ़िल मसाफ़ति या'नी इसलिये उसका नाम मस्जिदे अक्सा रखा गया कि मस्जिद मक्का से मुसाफ़त में ये दूर वाकेअ है। लफ़्ज़े रिह्वाल ये रहल की जमा है ये लफ़्ज़ ऊँट के क़ज़ावा पर बोला जाता है। उस ज़माने में सफ़र के लिये ऊँट का इस्ते'माल ही आम था। इसलिये यही लफ़्ज़ इस्ते'माल किया गया।

मत्लब ये हुआ कि ये तीन मसाजिद ही ऐसा मन्सब रखती हैं कि उनमें नमाज़ पढ़ने के लिये, उनकी ज़ियारत करने

के लिये सफ़र किया जाए इन तीन के अलावा कोई भी जगह मुसलमानों के लिये ये दर्जा नहीं रखती कि उनकी ज़ियारत के लिये सफ़र किया जा सके। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की रिवायत से यही हदीष बुखारी शरीफ़ में दूसरी जगह मौजूद है। मुस्लिम शरीफ़ में ये इन अल्फ़ाज़ में है **अन क़ज़अत अन अबी सईदिन क़ाल समिअतु मिन्हु हदीषन फ़अअजबनी फ़कुल्लु लहू अन्त समिअत हाज़ा मिन रसूलिल्लाहि क़ाल फ़अकूल अला रसूलिल्लाहि मा लम अस्मअ क़ाल समिअतुहू यकूलु क़ाल क़ाल रसूलिल्लाहि (ﷺ) ला तशुहुरिहाल इल्ला इला प्रलाप्रति मसाजिद मस्जिदी हाज़ा वल्मस्जिदिल्हराम वल्मस्जिदिल्अक्सा अल्हदीष**

या'नी क़ज़आ नामी एक बुजुर्ग का बयान है कि मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से हदीष सुनी जो मुझको बेहद पसंद आई। मैंने उनसे कहा कि क्या फ़िल वाक़ेअ आपने इस हदीष को रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है? वो बोले क्या ये मुम्किन है कि मैं रसूले करीम (ﷺ) की ऐसी हदीष बयान करूँ जो मैंने आप (ﷺ) से सुनी ही न हो। हर्गिज़ नहीं! बेशक मैंने आहज़रत (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया कि कज़ावे न बाँधो मगर सिर्फ़ उन ही तीन मसाजिद के लिये। या'नी ये मेरी मस्जिद और मस्जिदे हराम और मस्जिदे अक्सा। तिमिज़ी में भी ये हदीष मौजूद है और इमाम तिमिज़ी कहते हैं कि हाज़ा हदीषुन हसनुन सहीह या'नी ये हदीष हसन-सहीह है। मुअजम तबरानी सग़ीर में ये हदीष हज़रत अली (रज़ि.) की रिवायत से भी इन्हीं लफ़्ज़ों में मौजूद है और इब्ने माज़ा में अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आज़ की रिवायत से ये हदीष इन्हीं लफ़्ज़ों में ज़िक्र हुई है और हज़रत इमाम मालिक (रह.) ने मौत्ता में उसे बसरा बिन अबी बसरा ग़िफ़ारी से रिवायत किया है। वहाँ व इला मस्जिदि ईलिया औ बैतिल्मब्दिदस के लफ़्ज़ है।

ख़ुलासा ये है कि हदीष सनद के लिहाज़ से बिल्कुल सहीह और क़ाबिले ए'तिमाद है और इसी दलील की बिना पर बग़ैरें हुसूल तक्लूब इललल्लाह सामाने सफ़र तैयार करना और ज़ियारत के लिये घर से निकलना ये सिर्फ़ इन्हीं तीन मस्जिदों के साथ मख़सूस है। दीगर मसाजिद में नमाज़ अदा करने जाना या क़ब्रिस्तान में अम्वाते मुस्लिमीन की दुआ-ए-मफ़िरत के लिये जाना ये उमूर मन्सूअ नहीं। इसलिये कि उनके बारे में दीगर अह्लादीष सहीहा मौजूद हैं। नमाज़ बा-जमाअत के लिये किसी भी मस्जिद में जाना इस दर्जे का प्रबाब है कि हर क़दम के बदले दस-दस नेकियों का वा'दा दिया गया है। इसी तरह क़ब्रिस्तान में दुआ-ए-मफ़िरत के लिये जाना खुद हदीषे नबवी के तहत है; जिसमें ज़िक्र है, **फ़इन्नहा तज़विकरुल आख़िर**: या'नी वहाँ जाने से आख़िरत की याद ताज़ा होती है। बाक़ी बुजुर्गों के मज़ारात पर इस निय्यत से जाना कि वहाँ जाने से वो बुजुर्ग ख़ुश होकर हमारी हाज़त-रवाई के लिये वसीला बन जाएंगे बल्कि वो खुद ऐसी ताक़त के मालिक हैं कि हमारी मुसीबत को दूर कर देंगे ये सारे बातिल वहम हैं और इस हदीष के तहत क़तअन नाज़ाइज़ उमूर है। इस सिलसिले में अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं,

व अव्वलु मन वज़अल्अहादीष फ़िस्सफ़रि लिज़ियारतिल्मशाहिदिल्लती अलल्कु बूरि अहलुल्बिदइराफ़िजति व नहविहिमिल्लज़ीन युअत्तिलूनल्मसाजिद व युअज़िज़मूनल्मशाहिद यदऊन बुयूतल्लाहिल्लती उमिर अय्युज्कर फ़ीहस्मुहू व युअबद वहदुहू ला शरीक लहू व युअज़िज़मूनल्मशाहिदल्लती युशरक फ़ीहा व युक्ज़ब फ़ीहा व युब्तदअ फ़ीहा दीनुन लम युनज्जिल्लल्लाहु बिही सुल्ताना फ़इन्नल्किताब वस्सुन्नत इन्नमा फ़ीहा जुकिरल्मसाजिद दूनल्मशाहिदि व हाज़ा कल्लुहू फ़ी शहिरिहालि व अम्पज़िज़यारतु फ़मशरूअतुन बिदूनिही (नैलुल औतार)

या'नी अहले बिदअत और रवाफ़िज़ ही अव्वलीन वो हैं जिन्होंने मशाहिद व मकाबिर की ज़ियारत के लिये अह्लादीष वज़अ कीं, ये वो लोग हैं जो मसाजिद को मुअत्तल करते और मकाबिर व मशाहिद व मज़ारात की हद दर्जा ता'ज़ीम बजा लाते हैं। मसाजिद जिनमें अल्लाह का ज़िक्र करने का हुक्म है और ख़ालिस अल्लाह की इबादत जहाँ मक्सूद है उनको छोड़कर ये फ़र्ज़ी मज़ारात पर जाते हैं और उनकी इस दर्जा ता'ज़ीम करते हैं कि वो दर्जा शिक़ तक पहुँच जाती है और वहाँ झूठ बोलते और ऐसा नया दीन इजाद करते हैं जिस पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। किताब व सुन्नत में कहीं भी ऐसा मशाहिदा व मज़ारात व मकाबिर का ज़िक्र नहीं है जिनके लिये इस तौर पर शदे रिहाल किया जा सके। हाँ, मसाजिद की हाज़िरी में किताब व सुन्नत में बहुत सी ताकीदात मौजूद हैं। उन मुन्किरात के अलावा शरई तरीक़ पर क़ब्रिस्तान जाना और ज़ियारत करना मशरूअ है।

रहा आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर होना और वहाँ जाकर आप पर सलात व सलाम पढ़ना ये हर मुसलमान के लिये ऐन सआदत है। मगर गर फ़र्क-मरातिब न कुनी ज़िन्दीक़ी के तहत वहाँ भी फ़र्क मरातिब की ज़रूरत है। जिसका मतलब ये है कि ज़ियारत से पहले मस्जिदे नबवी का हज़क है वो मस्जिदे नबवी जिसमें एक रकअत एक हज़ार रकअतों के बराबर दर्जा रखती है और खास तौर पर रौज़तुम्मिरियाजुल जन्ना का दर्जा और भी बढ़कर है। उस मस्जिदे नबवी की ज़ियारत और वहाँ अदाए नमाज़ की नियत से मदीना मुन्व्वरा का सफ़र करना उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र शरीफ़ पर भी हाज़िर होना और आप पर सलात व सलाम पढ़ना। आप (ﷺ) के बाद हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) व उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) के ऊपर सलाम पढ़ना फिर बक़ीड़ल गरक़द क़ब्रिस्तान में जाकर वहाँ जुम्ला अम्वात के लिये दुआ-ए-मफ़िरत करना उसी तरह मस्जिद कुबा में जाना और वहाँ दो रकअत अदा करना, ये सारे काम मस्नून हैं जो सुन्नत सहीहा से बाबित हैं।

इस तफ़सील के बाद कुछ अहले बिदअत क्रिस्म के लोग ऐसे भी हैं जो अहले हदीष पर और उनके अस्लाफ़ पर खास तौर से हज़रत अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) पर ये इल्ज़ाम लगाते हैं कि ये लोग आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र शरीफ़ पर सलात व सलाम से मना करते हैं। ये सहीह किज़ब (झूठ) और बोह्तान है। अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) ने इस सिलसिले में जो फ़र्माया है वो यही है जो ऊपर बयान हुआ है। बाक़ी रसूलुल्लाह (ﷺ) की क़ब्र पर हाज़िर होकर दुरुदो सलाम भेजना, ये अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) के मसलक में मदीना शरीफ़ जाने वालों और मस्जिद नबवी में हाज़िरी देनेवालों के लिये ज़रूरी है।

चुनाँचे साहब सियानतुलइन्सानि अन वस्वसतिशैख़िहहलान मुहम्मद बशीर साहब सहसवानी मरहूम तहरीर फ़र्माते हैं,

ला नज़ाअ लना फ़ी नफ़िस मशरूइय्यति ज़ियारति क़ब्रि नबिद्यिना (ﷺ) व अम्मा मा नुसिब इला शैख़िल्इस्लाम इब्नि तैमिया मिनलक़ौलि बिअदमि मशरूइय्यति ज़ियारति क़ब्रि नबिद्यिना (ﷺ) फइफ़्तिराउन बुहतुन क़ालल्हमाम अल्लुल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन अब्दुल्लाही अल्मुक़द्दिसी अल्हंबली फ़िस्सारिमिल्मुन्की अन्न शैख़िल्इस्लाम लम युहरिम ज़ियारतल्कुबूर अललवजहिल्मशरूइ फ़ी शैइम्मिन किताबिही व लम यन्हा अन्हा व लम यकरिहहा बल इस्तहब्बहा व हज़ज़ अलैहा व मुसन्नफ़ातुहू व मनासिकुहू ताफ़िहतुन बिज़िबि इस्तिहबाबि ज़ियारति क़ब्रिन्नबिद्यि (ﷺ) साइरल्कुबूर क़ाल फ़ी बअज़ि मनासिकिही बाबु ज़ियारति क़ब्रिन्नबिद्यि (ﷺ) इज़ा अशरफ़ अला मदीनतिन्नबिद्यि (ﷺ) क़ब्लल्हज्जि औ बअदहू फ़ल्फ़कुल मा तक्रहम फइज़ा दख़ल इस्तहब्ब लहू अय्यगतसिल नस्सुन अलैहिल्इमामु अमद फइज़ा दख़लल्मस्जिद बदअ बिहलिल्ही अल्युम्ना व क़ाल बिस्मिल्लाहि वस्सलातु अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्माफ़िर्ली जुनूबी वप्नह ली अब्बाब रहमतिक धुम्म शतिराजत बैनल्क़ब्रि वलिम्म्बि फयुसल्ली बिहा व यदक़ बिमा शाअ धुम्म याती क़ब्रन्नबिद्यि (ﷺ) फयस्तबिलु जिदारल्क़ब्रि ला यमस्सह व ला युक्क़बिलुहू व यज्जअलुल्किन्दीलज़ी फिलिक्क़ब्रि इन्दल्क़ब्रि अला रासिही लियकून क़ाइमन वज्जन्नबिद्यि (ﷺ) यकिफ़ु मुतबाइदुन कमा यकिफ़ु औ जहर फ़ी हयातिही बिखुशूइन व सुकूनिन व मुन्कसिर्रासि खाज़त्तफ़ि मुस्तहज़िरन बिक्लब्बिही जलालत मौकिफ़िही धुम्म यकूलु अस्सलामु अलैक या रसूलिल्लाहि व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामुअलैक या नबियिल्लाहि वखीरतुहू मिन खल्किही अस्सलामुअलैक या सय्यदल मुसलीन व या खातमन्नबिद्यिन व क़ाइदल्ग़ल्मुहज्जलीन अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु इन्नक क़द बल्लगत रिसालति रब्बिक व नसहत लिउम्मतिक व दओवत इला सबीलि रब्बिक बिहिल्क़मति वल्मौइजतिल्हसनति व अबत्तल्लाह हत्ता अताकल्फ़कीन फजज़ाक़ल्लाहु अफ़ज़लु मा आतिहिल्वसीलत वल्फ़ज़ीलत वब्अहू मक़ामम्मुहमदल्लज़ी वअत्तहू लियग़बितहू बिहिल्अव्वलून वल्आख़रून अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मद कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुन मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मद कमा बारक्त अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीद मजीद अल्लाहुम्माहशुर्ना फ़ी जुम्तिही व तवफ़फ़ना अला सुन्नतिन व औरिदना हौजहू वस्किना बिकासिही शर्बन्नरूया ला नज्मन बअदहू अब्दन धुम्म याती अबा बक्र व उमर फ़यकूलु अस्सलामुअलैक या अबा बक्रनिस्सिद्दिक़ अस्सलामुअलैक या उमरू अल्फ़ारूक़ अस्सलामुअलैक या साहबियरसूलिल्लाहि व जज़ीऐहि व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू जज़ाकुमुल्लाहु अन सुहबति नबिद्यिकुमा व अनिल्इस्लामि ख़ैरस्सलामि अलैकुम बिमा सबर्तुम फ़निअम इक्बाहार क़ाल यज़ूरु कुबूर अहलिल्बकीअ व कुबूरशुहदाइ इन अम्कन हाज़ा कलामुशैख़ रहिमुल्लाहु बिहुरफ़िही इन्तिहा मा फिस्सारिम (सियानतुल इन्सान अन वस्वसतिहलान, पेज : 03)

या'नी शरई तरीके पर आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र की ज़ियारत करने में कतून कोई नज़ाअ नहीं है और इस बारे में अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) पर ये सिर्फ़ झूठा बोहतान है कि वे क़ब्रे नबवी (ﷺ) की ज़ियारत को नाजाइज़ कहते थे, ये सिर्फ़ इल्ज़ाम है। अल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद ने अपनी मशहूर किताब अम्स्यारिमुल मनकी में लिखा है कि शरई तरीके पर ज़ियारते कुबूर से अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) ने हर्गिज़ मना नहीं किया और न इसे मकरूह समझा। बल्कि वो इसे मुस्तहब करार देते हैं और उसके लिये रायबत दिलाते हैं। उन्होंने इस बारे में अपनी किताब बाबत ज़िक्र मनासिके हज्ज आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत के सिलसिले में बाब मुनअकिद फ़र्माया है और उसमें लिखा है कि जब कोई मुसलमान हज्ज से पहले या बाद में मदीना शरीफ़ जाए तो पहले वो दुआ-ए-मसनून पढ़े जो शहरों में दाखिले के वक़्त पढ़ी जाती है। फिर गुस्ल करे और बाद में मस्जिद नबवी में पहले दायों पाँव रखकर दाखिल हों और ये दुआ पढ़े। बिस्मिल्लाहि वर्रुल्लातु अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मग़फ़िलीं जुनूबी वफ़्तह ली अब्बाब रहमतिक फिर उस जगह आए जो जन्नत की क्यारी है और वहाँ नमाज़ पढ़े और जो चाहे दुआ मांगे। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्रे मुबारक पर आए और दीवार की तरफ़ मुँह करे न उसे बोसा दे और न हाथ लगाए। आँहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो और फिर वहाँ सलाम और दरूद पढ़े (जिनके अल्फ़ाज़ पीछे नक़ल किये गये हैं) फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत उमर (रज़ि.) की क़ब्र के सामने आए और वहाँ भी सलाम पढ़े जैसा कि मज़कूर हुआ और फिर अगर मुम्किन हो तो बक्रीउल गरक़द नामी क़ब्रिस्तान में वहाँ भी कुबूरे मुस्लिमीन व शुहदा की ज़ियारते-मसनूना करे।

साबिक़ उम्मतों में कुछ लोग कोहे तूर और तुबत बाबरकत हज़रत यह्या (अलैहिस्सलाम) की ज़ियारत के लिये दूर-दराज़ से सफ़र करके आया करते थे। अल्लाह के सच्चे रसूल (ﷺ) ने ऐसे तमाम सफ़रों से मना फ़र्मा कर अपनी उम्मत के लिये सिर्फ़ ये तीन ज़ियारतगाहें मुकर्रर फ़र्माईं। अब जो अ़वाम अजमेर और पाक पट्टन वगैरह मज़ारात के लिये सफ़र करते हैं, वे इशदि रसूल (ﷺ) की मुख़ालफ़त करने की वजह से आज़ी (नाफ़र्मान) और आप (ﷺ) के बागी ठहरते हैं। हाँ कुबूरिल मुस्लिमीन अपने शहर या क़र्या में हों; वो अपनों की हों या बेगानों की वहाँ मसनून तरीके पर ज़ियारत करना मशरूअ है कि क़ब्रिस्तान वालों के लिये दुआ-ए-मफ़िरत करें और अपनी मौत को याद करके दुनिया से बेरबती इख़्तियार करें। सुन्नत तरीका सिर्फ़ यही है।

अल्लामा इब्ने हज़र इस हदीष की बहष के आख़िर में फ़र्माते हैं, फ़मअनलहदीषि ला तुशहुरिहालु इला मस्जिदिमिन्लमसाजिदि औ इला मकानिमिन्ल अम्किनति लिअजल्लि ज़ालिकल्मकान इल्ला इलज़ल्लालातिल्मज़कूरति व शहुरिहालि इला ज़ियारतिन और तलबि इल्मिन लैस इलल्मकानि वल इला मन फ़ी ज़ालिकल्मकानि वल्लाहु आलमु (फ़तहुल्क़दीर) या'नी हदीष का मतलब इसी क़दर है कि किसी भी मस्जिद या मकान के लिये सफ़र न किया जाए इस ग़र्ज़ से कि उन मसाजिद या मकानात की सिर्फ़ ज़ियारत ही मोजिबे रज़ा-ए-इलाही है। हाँ ये मसाजिद ये दर्जा रखती हैं कि जिनकी तरफ़ शदे रिहाल किया जाना चाहिये और किसी की मुलाक़ात या तहसीले इल्म के लिये शदे रिहाल करना उस मुमानअत में दाखिल नहीं इसलिये कि ये सफ़र किसी मकान या मदरसे की इमारत के लिये नहीं किया जाता बल्कि मकान के मकीन की मुलाक़ात और मदरसा में तहसीले इल्म के लिये किया जाता है।

1190. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने जैद बिन रबाह और अब्दुल्लाह बिन अबी अब्दुल्लाह अग़र से ख़बर दी, उन्हें अबू अब्दुल्लाह अग़र ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी इस मस्जिद में नमाज़, मस्जिद हराम के अलावा तमाम मस्जिदों में नमाज़ से एक हज़ार दर्जे ज़्यादा अफ़ज़ल है।

١١٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ رِيَّاحٍ وَغَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الْأَعْوَرِّ عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الْأَعْوَرِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((صَلَاةٌ لِيْ مِنْحَدِيْ هَذَا خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ صَلَاةٍ فِيمَا سِوَاهُ إِلَّا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ)).

मेरी मस्जिद से मस्जिदे नबवी मुराद है। हज़रत इमाम का इशारा यही है मस्जिदे नबवी की ज़ियारत के लिये शदे रिहाल किया जाए और जो वहाँ जाएगा लाज़िमन रसूले करीम (ﷺ) व हज़रत शैख़ेन पर भी दुरूदो सलाम की सज़ादतें उसको हासिल होंगी।

बाब 2 : मस्जिदे-कुबा की फ़ज़ीलत

٢- بَابُ مَسْجِدِ قُبَاءَ

1191. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अलिथ्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें अय्यूब सुखितयानी ने ख़बर दी और उन्हें नाफ़ेअ ने कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) चाशत की नमाज़ सिर्फ़ दो दिन पढ़ते थे। जब मक्का आते क्योंकि आप मक्का में चाशत ही के वक़्त आते थे। उस वक़्त आप पहले तवाफ़ करते और फिर मक्कामे-इब्राहीम के पीछे दो रकअत पढ़ते। दूसरे जिस दिन आप मस्जिदे-कुबा में तशरीफ़ लाते, आपका यहाँ हर हफ़्ते आने का मा'मूल था। जब आप मस्जिद के अन्दर आते तो नमाज़ पढ़े बग़ैर बाहर निकलना बुरा जानते। आप बयान करते थे रसूलुल्लाह (ﷺ) यहाँ सवार और पैदल दोनों तरह आया करते थे।

(दीगर मक्काम : 1193, 1194, 7326)

١١٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ ((أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ لَا يُصَلِّي مِنَ الصُّحَى إِلَّا فِي يَوْمَيْنِ: يَوْمٍ يَقْدُمُ مَكَّةَ لِإِنَّهُ كَانَ يَقْدُمُهَا صُحَى فَيَطُوفُ بِالْبَيْتِ ثُمَّ يُصَلِّي رَكَعَتَيْنِ خَلْفَ الْمَقَامِ، وَيَوْمَ يَأْتِي مَسْجِدَ قُبَاءَ لِإِنَّهُ كَانَ يَأْتِيهِ كُلَّ سَبْتٍ، فَإِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ كَرِهَ أَنْ يَخْرُجَ مِنْهُ حَتَّى يُصَلِّيَ فِيهِ. قَالَ: وَكَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَزُورُهُ رَاكِبًا وَمَاشِيًا)).

[أطرافه في: ١١٩٣، ١١٩٤، ٧٣٢٦.]

1192. नाफ़ेअ ने बयान किया कि इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माया करते थे कि मैं उसी तरह करता हूँ, जिसे मैंने अपने साथियों (सहाबा रज़ि.) को करते देखा है। लेकिन तुम्हें रात या दिन के किसी भी हिस्से में नमाज़ पढ़ने से नहीं रोकता। सिर्फ़ इतनी बात है कि क़स्द (इरादा) करके तुम सूरज निकलते या डूबते वक़्त न पढ़ो।

١١٩٢- قَالَ: وَكَانَ يَقُولُ لَذَ: ((إِنَّمَا أَصْنَعُ كَمَا رَأَيْتُ أَصْحَابِي يَصْنَعُونَ، وَلَا أَفْنَعُ أَحَدًا أَنْ صَلَّى فِي أَيِّ سَاعَةٍ شَاءَ مِنْ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ، غَيْرَ أَنْ لَا تَخْرُجُوا طُلُوعَ الشَّمْسِ وَلَا غُرُوبَهَا)).

तशरीह: कुबा शहर मदीना से 3 मील के फ़ासले पर एक मशहूर गांव है। जहाँ हिज़रत के वक़्त आप (ﷺ) ने चंद रोज़ क़याम किया था और यहाँ आपने अव्वलीन मस्जिद की बुनियाद रखी जिसका ज़िक्र कुआन मजीद में मौजूद है। आप (ﷺ) को अपनी उस अव्वलीन मस्जिद से इस क़दर मुहब्बत थी कि आप हफ़्ते में एक बार यहाँ ज़रूर तशरीफ़ लाते और इस मस्जिद में दो रकअत नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ा करते थे। इन दो रकअतों का बहुत बड़ा फ़वाब है।

आजकल हमरे नबवी के मुत्तसिल बस अड़े से कुबा को बसें दौड़ती रहती हैं। अलहम्दुलिल्लाह कि पहले 1951 फिर 1962 के दोनों सफ़रों में मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी की सज़ादत पर अनेक बार मस्जिदे कुबा भी जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ था। 62 का सफ़रे हज्ज मेरे ख़ासुल ख़ास मेहरबान, क़द्रदान हज़रत अल्हाज़ मुहम्मद पारा ऑफ़ रंगून वारिदे हाल कराची अदामल्लाहु इन्नबालहुम व बारिक लहुम व बारिक अलैहिम के मुहतरम वालिदे माजिद हज़रत अल्हाज़ इस्माईल पारा (रह.) के हज्जे बदल के लिये गया था। अल्लाह पाक कुबूल फ़र्माकर मरहूम इस्माईल पारा के लिये वसील-ए-आख़िरत

बनाए और गिरामी क़द्र हाजी मुहम्मद पारा और उनके बच्चों और जुम्ला मुअल्लिकीन को दारैन की नेअमतों से नवाज़े और तरक़ियात नसीब करे और मेरी आजिज़ाना दुआएँ इन सबके हक़ में कुबूल फ़र्माए। आमीन शुम्प आमीन।

बाब 3 : जो शअ्रम मस्जिदे कुबा में हर हफ़्ते हाज़िर हो

1193. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हर हफ़्ते को मस्जिदे-कुबा आते, पैदल भी (बाज़ दफ़ा) और सवारी पर भी और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) भी ऐसा ही करते। (राजेअ: 1191)

۳- بَابُ مَنْ آتَى مَسْجِدَ قُبَاءٍ كُلَّ مَسْبِتٍ

۱۱۹۳- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَأْتِي مَسْجِدَ قُبَاءٍ كُلَّ مَسْبِتٍ مَاشِيًا وَرَاكِبًا، وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَفْعَلُهُ)).

[راجع: ۱۱۹۱]

मा'लूम हुआ कि मस्जिदे कुबा की इन दो रकअतों का अज़ीम प्रवाब है। अल्लाह हर मुसलमान को नसीब फ़र्माए, आमीन! यही वो तारीख़ी मस्जिद है जिसका ज़िक्र कुआन में इन अल्फ़ाज़ में किया गया है, लमस्जिदुन उस्सिस अलत्तक्वा मिन अव्वलि यौमिन अहक्कु अन तकूम फीहि फीहि रिजालनय्युहिब्बुन अय्यत तह्हरू वल्लाहु युहिब्बुल मुत्हिरीन (अत् तौबा : 108) 'या'नी यकीनन इस मस्जिद की बुनियाद अब्दुल दिन से तक्वा पर रखी गई है। इसमें तेरा नमाज़ के लिये खड़ा होना असब है क्योंकि इसमें ऐसे नेक दिल लोग हैं जो पाकीज़गी चाहते हैं और अल्लाह पाकी चाहने वालों से मुहब्बत करता है।

बाब 4 : मस्जिदे-कुबा आना कभी सवारी पर और कभी पैदल (ये सुन्नते-नबवी है)

1194. हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया कि मुझसे नाफ़ेअ ने इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) कुबा आते, कभी पैदल और कभी सवारी पर। इब्ने नुमैर ने इसमें ये ज़्यादाती की है कि हमसे अब्दुल्लाह बिन उमैर ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने कि फिर आप उसमें दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे। (राजेअ: 1191)

۴- بَابُ إِيْتَانِ مَسْجِدِ قُبَاءٍ رَاكِبًا وَمَاشِيًا

۱۱۹۴- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَأْتِي قُبَاءَ رَاكِبًا وَمَاشِيًا)) رَأَى ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عُثَيْدٌ أَنَّ نَافِعَ بْنَ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا رَأَى ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَفْعَلُهُ)).

[راجع: ۱۱۹۱]

आजकल तो सवारियों की इस क़दर बहुतायत हो गई है कि हर घड़ी सवारी मौजूद है। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों अमल करके दिखलाए। फिर भी पैदल जाने में ज़्यादा प्रवाब यकीनी है। मस्जिदे कुबा में हाज़िरी मस्जिदे नबवी ही की ज़ियारत का एक हिस्सा समझना चाहिये। लिहाज़ा उसे हदीष ला तशदुरिहाल के तहत नहीं लाया जा सकता। वल्लाहु आलम।

बाब 5 : आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र शरीफ़ और मिम्बरे-मुबारक के दरम्यानी हिस्से की फ़ज़ीलत का बयान

۵- بَابُ فَضْلِ مَا بَيْنَ الْقَبْرِ وَالْمِئْبَرِ

1195. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी बुकैर ने, उन्हें उबादा बिन तमीम ने और उन्हें (उनके चचा) अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़नी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे घर और मेरे इस मिम्बर के दरम्यान का हिस्सा जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी है।

۱۱۹۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ تَمِيمٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ الْمَازِنِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِثْرَي رَوْحَةَ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ)).

नीज़ यही मस्जिद नबवी है जिसमें एक रकअत हज़ार रकअतों के बराबर दर्जा रखती है। एक रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मेरी मस्जिद में 40 नमाज़ों को इस तरह बाज़माअत अदा किया कि तक्बीरे तहरीमा फ़ौत न हो सकी तो उसके लिये मेरी शिफ़ाअत वाज़िब हो गई।

1196. हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, उनसे यहा ने बयान, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया कि मुझसे खुबैब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे हफ़स बिन आसिम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे घर और मेरे मिम्बर के दरम्यान की ज़मीन जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर क़यामत के दिन मेरे हौज़ पर होगा।

۱۱۹۶- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي حُصَيْنٌ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ بْنِ غَاوِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِثْرَي رَوْحَةَ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، وَمِثْرَي عَلَى خَوْصِي)).

(दीगरमक़ाम: 1888, 6588, 7335)

[أطرافه في: ۱۸۸۸, ۶۵۸۸, ۷۳۳۵].

तशरीह: चूँकि आप (ﷺ) अपने घर या 'नी हज़रते आइशा (रज़ि.) के हुज़रे में मदफून हैं, इसलिये हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष पर 'क़ब्र और मिम्बर के बीच' बाब मुनअकिद फ़र्माया हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) की एक रिवायत में (बैत) घर की बजाए क़ब्र ही कालफ़ज़ है। गोया आलमे तक्दीर में जो कुछ होना था, उसकी आप (ﷺ) ने पहले ही ख़बर दे दी थी। बिला शक व शुब्हा के ये हिस्सा जन्नत ही का है और आलमे आख़िरत में ये जन्नत ही का एक हिस्सा बन जाएगा। 'मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर है।' इसका मतलब यही है कि हौज़ यहीं पर होगा। या ये कि जहाँ भी मेरा हौज़ कौषर होगा वहाँ ये मिम्बर रखा जाएगा। आप उस पर तशरीफ़ फ़र्मा होंगे और अपने हाथ से मुसलमानों को जामे कौषर पिलाएँगे। मगर अहले बिदअत को वहाँ हाज़िरी से रोक दिया जाएगा। जिन्होंने अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) के दीन का हुलिया बिगाड़ दिया। हुज़ूर (ﷺ) उनका हाल जानकर कहेंगे। सुहक़न लिमन बदल सुहक़न लिमन गय्यर दूरी हो उनको जिन्होंने मेरे बाद मेरे दीन को बदल दिया।

बाब 6 : बैतुल-मक्दिस की मस्जिद का बयान

1197. हमसे अबू वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने बयान किया, उन्होंने ज़ियाद के गुलाम क़ज़आ से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) के हवाले से चार हदीषें बयान करते हुए सुना जो मुझे बहुत पसन्द आईं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि औरत अपने शौहर या किसी

۶- بَابُ مَسْجِدِ بَيْتِ الْمَقْدِسِ
۱۱۹۷- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ قَالَ سَمِعْتُ قُرْعَةَ مَوْلَى زَيْدٍ قَالَ: ((سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ بِأَرْبَعٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَأَعَجَبَنِي وَاتَّقَنِي قَالَ: لَا تَسْأَلُ

जी-रहम मह्रम के बग़ैर दो दिन का भी सफ़र न करे और दूसरे ये कि ईदुल फ़ितर और ईदुल अज़हा दोनों दिन रोज़े न रखे जाएँ। तीसरी हदीष ये कि सुबह की नमाज़ के बाद सूरज के निकलने तक और अस्म के बाद सूरज छुपने तक कोई नफ़ल नमाज़ न पढ़नी चाहिये, चौथी ये कि तीन मस्जिदों के सिवा किसी के लिये कजावे न बाँधे जाएँ, मस्जिद-हराम, मस्जिद-अक्सा और मेरी मस्जिद (या'नी मस्जिद-नबवी)

(राजेअ : 586)

النِّسَاءُ يَوْمَيْنِ إِلَّا مَعَهَا زَوْجُهَا أَوْ ذُو مَحْرَمٍ. وَلَا صَوْمٌ فِي يَوْمَيْنِ: الْفِطْرِ وَالْأَضْحَى. وَلَا صَلَاةٌ بَعْدَ صَلَاتَيْنِ: بَعْدَ الصُّبْحِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ، وَبَعْدَ الْعَصْرِ حَتَّى تَغْرُبَ. وَلَا تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلَّا إِلَى ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ: مَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَمَسْجِدِ الْأَقْصَى، وَمَسْجِدِي. (راجع: ٥٨٦)

21. किताबुल अमल फ़िस्सलात

नमाज़ में काम के बारे में

बाब 1 : नमाज़ में हाथ से नमाज़ का कोई काम करना

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नमाज़ में आदमी अपने जिस्म के जिस हिस्से से भी चाहे, मदद ले सकता है। अबू इस्हाक़ ने अपनी टोपी नमाज़ पढ़ते हुए रखी और उठाई और हज़रत अली (रज़ि.) अपनी हथेली बाएँ पुन्चे पर रखते, अलबत्ता अगर खुजलाना या कपड़ा दुरुस्त करना होता (तो कर लेते थे)

मग़लन नमाज़ी के सामने से कोई गुज़र रहा हो उसको हटा देना या सज्दे के मुक़ाम पर कोई ऐसी चीज़ आन पड़े जिस पर सज्दा न हो सके, तो उसको सरका देना। आगे जाकर हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हज़रत अली (रज़ि.) का जो अप्र नक़ल किया है, उससे ये निकाला कि बदन खुजलाना या कपड़ा संवारना नमाज़ का काम नहीं मगर ये मुस्तज़ा (अलग) है या'नी नमाज़ में जाइज़ है। मगर ऐसे कामों की नमाज़ में आदत बना लेना खुशुअ व खुजूअ के मनाफ़ी है।

1198. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें मख़रमा बिन

١ - بَابُ اسْتِعَانَةِ الْيَدِ فِي الصَّلَاةِ إِذَا كَانَ مِنْ أَمْرِ الصَّلَاةِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: يَسْتَعِينُ الرَّجُلُ فِي صَلَاتِهِ مِنْ جَسَدِهِ بِمَا شَاءَ. وَوَضَعَ أَبُو إِسْحَاقَ قَلَنْسُوْتَهُ فِي الصَّلَاةِ وَرَفَعَهَا. وَوَضَعَ عَلِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَفَّهُ عَلَى رُصْنِهِ الْأَيْسَرِ. إِلَّا أَنْ يَخْلُكَ جِلْدًا أَوْ يُصْلِحَ ثَوْبًا.

١١٩٨ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ خَرَّبَنَا مَالِكٌ عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ سُلَيْمَانَ عَنْ

बाब 2 : नमाज़ में बात करना मना है

1199. हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, हमसे मुहम्मद बिन फुजैल ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अलक्रमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्क़द (रज़ि.) ने बयान किया कि (पहले) नबी करीम (ﷺ) नमाज़ पढ़ते होते और हम सलाम करते तो आप (ﷺ) उस का जवाब देते थे। जब हम नज्जाशी के यहाँ से वापस हुए तो हमने (पहले की तरह नमाज़ ही में) सलाम किया। लेकिन उस वक़्त आप (ﷺ) ने जवाब नहीं दिया बल्कि नमाज़ से फ़ारिग हो कर फ़र्माया कि नमाज़ में आदमी को फुर्सत कहाँ। (दीगर मक़ाम : 1216, 3870)

हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह नुमैर ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्हाक़ बिन मन्सूर ने बयान किया, उनसे हुरैम बिन सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नखई ने, उनसे अलक्रमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्क़द (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से फिर ऐसी ही रिवायत बयान की।

तशरीह : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्क़द (रज़ि.) भी उन बुजुर्गों में से हैं जिन्होंने इस्लाम के शुरुआती दौर में हब्शा में जाकर पनाह ली थी और नज्जाशी शाहे हब्शा ने जिनको बड़ी अक़ीदत से अपने यहाँ जगह दी थी। इस्लाम का बिल्कुल इब्तिदाई दौर था, उस वक़्त नमाज़ में बाहमी कलाम जाइज़ था बाद में जब वो हब्शा से लौटे तो नमाज़ में आपस में बातचीत करने की मुमानअत हो चुकी थी। औहज़रत (ﷺ) के आखिरी जुम्ले का मफ़हूम ये कि नमाज़ में तो आदमी हक़ तआला की याद में मशगूल होता है उधर दिल लगा रहता है इसलिये ये लोगों से बातचीत का मौक़ा नहीं है।

1200. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको ईसा बिन यूनस ने ख़बर दी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उन्हें हारिष बिन शुबैल ने, उन्हें अबू अग्र बिन सअद बिन अबी अयास शैबानी ने बताया कि मुझसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बतलाया कि हम नबी करीम (ﷺ) के अहद में नमाज़ पढ़ने में बातें कर लिया करते थे। कोई भी अपने क़रीब के नमाज़ी से अपनी ज़रूरत बयान कर देता। फिर आयत हाफ़िज़ू अलस्सलवात अल-अख़ उतरी और हमें (नमाज़ में) ख़ामोश रहने का हुक्म हुआ।

٢- بَابُ مَا يُنْهَى مِنَ الْكَلَامِ فِي الصَّلَاةِ

١١٩٩- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لُصَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: «رَكْعَتَا نَسْلَمُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ قَرُودٌ عَلَيْنَا. فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ النَّجَاشِيِّ سَلَّمْنَا فَلَمْ يَرُدْ عَلَيْنَا وَقَالَ: ((إِنَّ فِي الصَّلَاةِ شُغْلًا)).

[طرفاء في: ١٢١٦, ٣٨٧٥]

حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هُرَيْرٌ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَعْوَةً.

١٢٠٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيسَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هُشَيْلٍ عَنْ أَبِي عَمْرِو الشَّيْبَانِيِّ قَالَ: قَالَ لِي زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ: «((إِنْ كُنَّا لَنَتَكَلَّمُ فِي الصَّلَاةِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، يَكَلِّمُ أَحَدُنَا صَاحِبَهُ بِحَاجَتِهِ، حَتَّى نَزَلَتْ فَأَمَرْنَا بِحَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ الْإِبَتَةِ، فَأَمَرْنَا

आयत का तर्जुमा ये है 'नमाज़ों का ख्याल रखो और बीच वाली नमाज़ का और अल्लाह के सामने अदब से चुपचाप खड़े रहो (सूरह बकरः) दरम्यानी नमाज़ से अस् की नमाज़ मुराद है। आयत और हदीष से ज़ाहिर हुआ कि नमाज़ में कोई भी दुनियावी बात करना क़त्अन मना है।

बाब 3 : नमाज़ में मर्दों का सुब्हानल्लाह और अल्हम्दुलिल्लाह कहना

1201. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अनबी ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके बाप अबी हाज़िम सलमा बिन दीनार ने और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) बनू अग्र बिन औफ़ (कुबा) के लोगों में मिलाप करने तशरीफ़ ले गये और जब नमाज़ का वक़्त हो गया तो बिलाल (रज़ि.) ने अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से कहा कि नबी करीम (ﷺ) तो अब तक नहीं तशरीफ़ लाए इसलिये आप नमाज़ पढ़ा दीजिए। उन्होंने फ़र्माया, अच्छा तुम्हारी ख़्वाहिश है तो मैं नमाज़ पढ़ा देता हूँ। ख़ैर बिलाल (रज़ि.) ने तक्बीर कही। अबूबक्र (रज़ि.) आगे बढ़े और नमाज़ शुरू की। इतने में नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ ले लाए और आप (ﷺ) सज़्ज़ों से गुज़रते हुए पहली सज़्ज़ तक पहुँच गए। लोगों ने हाथ पर हाथ बजाना शुरू किया। (सहल ने) कहा कि जानते हो तस्बीह क्या है और अबूबक्र (रज़ि.) नमाज़ में किसी तरफ़ भी ध्यान नहीं किया करते थे, लेकिन जब लोगों ने ज़्यादा तालियाँ बजाई तो आप मुतवज्जह हुए। क्या देखते हैं कि नबी करीम (ﷺ) सज़्ज़ में मौजूद हैं। ओहज़रत (ﷺ) ने इशारे से उन्हें अपनी जगह रहने के लिये कहा। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने हाथ उठाकर अल्लाह का शुक्र किया और उल्टे पाँव पीछे आ गए और नबी करीम (ﷺ) आगे बढ़ गए। (राजेअ : 673)

۲-بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ التَّسْبِيحِ وَالْحَمْدِ فِي الصَّلَاةِ لِلرِّجَالِ

۱۲۰۱- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَارِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْلِحُ بَيْنَ بَنِي غِفْرٍ بَنِي غَوْلٍ، وَخَانَتِ الصَّلَاةُ، فَجَاءَ بِلَالٌ أَنَا نَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ: حُسْنُ النَّبِيِّ ﷺ، قَوْمُ النَّاسِ؟ قَالَ: نَعَمْ. إِنْ شِئْتُمْ. فَأَقَامَ بِلَالٌ الصَّلَاةَ، فَقَدِمَ أَبُو نَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَعَنَى، فَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ يَمْشِي فِي الصُّفُوفِ يَشْفُقُهَا شَفَقًا حَتَّى قَامَ فِي الصَّفِّ الْأَوَّلِ، فَأَخَذَ النَّاسُ بِالتَّصْفِيحِ - وَ قَالَ سَهْلٌ: هَلْ تَذَرُونَ مَا التَّصْفِيحُ؟ هُوَ التَّصْفِيحُ - وَكَانَ أَبُو نَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ لَا يَلْتَمِصُ فِي صَلَاتِهِ، فَلَمَّا أَكْتَرُوا التَّلْتَ، فَإِذَا النَّبِيُّ ﷺ فِي الصَّفِّ، فَأَشَارَ إِلَيْهِ: مَكَانَكَ. فَوَلَّعَ أَبُو نَكْرٍ يَدَيْهِ فَحَمِدَ اللَّهَ، ثُمَّ رَجَعَ الْقَهْقَرَى وَرَاءَهُ، فَقَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ.)) [راجع: ٦٨٤]

तशरीह: इस रिवायत की मुताबक़त बाब के तर्जुमे से मुश्किल हैं क्योंकि उसमें सुब्हानल्लाह कहने का ज़िक्र नहीं और शायद हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष को दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जो ऊपर गुज़र चुका है और उसमें साफ़ यूँ है कि तुमने तालियाँ बहुत बजाई नमाज़ में कोई वाकिआ हो तो सुब्हानल्लाह कहा करो ताली बजाना औरतों के लिये है। अब रहा अल हम्दुलिल्लाह कहना तो वो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इस फ़ेअल से निकलता है कि उन्होंने नमाज़ में दोनों हाथ उठाकर अल्लाह का शुक्र किया। कुछ ने कहा कि इमाम बुखारी (रह.) ने तस्बीह को तहमीद पर क़यास किया तो ये रिवायत भी बाब का तर्जुमा के मुताबिक़ हो गई। (वहीदी)

बाब 4 : नमाज़ में नाम लेकर दुआया बंदुआ करना या किसी को सलाम करना बगैर उसको मुखातब किये और नमाज़ी को मा'लूम न हो कि इससे नमाज़ में खलल आता है

٤- بَابُ مَنْ سَمِيَ قَوْمًا أَوْ سَمًا فِي الصَّلَاةِ عَلَى غَيْرِهِ مَوَاجِهَةً وَهُوَ لَا يَعْلَمُ

ग़र्ज इमाम बुखारी (रह.) की ये है कि इस तरह सलाम करने से नमाज़ फ़ासिद न होगी। अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु में आँहज़रत (ﷺ) को सलाम करता है लेकिन नमाज़ी आपको मुखातब नहीं करता और न आँहज़रत (ﷺ) को ख़बर होती है। जब तक फ़रिश्ते आपको ख़बर नहीं देते तो उससे नमाज़ फ़ासिद नहीं होती।

1202. हमसे अम्र बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अब्दुल्लासमद अल्अमी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हुसैन बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने बयान किया, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम पहले नमाज़ में यूँ कहा करते थे फलों पर सलाम और नाम लेते थे और आपस में एक शख्स दूसरे को सलाम कर लेता। नबी करीम (ﷺ) ने सुनकर फ़र्माया, इस तरह कहा करो! (तर्जुमा) या'नी सारी तहिय्यात, बन्दगियाँ और अच्छी बातें ख़ास अल्लाह ही के लिये हैं और ऐ नबी! आप पर सलाम हो, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकत नाज़िल हो। हम पर सलाम हो और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (ﷺ) उसके बन्दे और रसूल हैं। अगर तुमने ये पढ़ लिया तो गोचा तुमने अल्लाह के उन तमाम ग़लेहीन बन्दों पर सलाम पहुँचा दिया जो आसमान व ज़मीन में हैं।

(राजेअ: 831)

١٢٠٢- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ حَيْسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ الصَّمَدِ عَبْدُ الْقَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ قَالَ حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا نَقُولُ: التَّحِيَّةُ فِي الصَّلَاةِ وَنُسَمِّي وَنَسَلِّمُ بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ. فَسَمِعَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((قُولُوا التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيَّاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، فَإِنَّكُمْ إِذَا لَقِيتُمْ ذَلِكَ فَقَدْ سَلَّمْتُمْ عَلَى كُلِّ عَبْدٍ لِلَّهِ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ)). [راجع: ٨٣١]

तशरीह : बाब और हदीष में मुताबकत है लफ़्ज़ अतहिय्यात से मुराद जुबान से की जाने वाली इबादत और लफ़्ज़े सलवात से मुराद बदन से की जाने वाली इबादत और तय्यिबात से मुराद हलाल माल से की जाने वाली इबादत, ये सब ख़ास अल्लाह ही के लिये हैं। उनमें से जो ज़र्रा बराबर भी किसी ग़ैर के लिये करेगा वो इन्दल्लाह शिर्क ठहरेगा। लफ़्ज़ नबवी क़ूलू अल्ख से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि उस वक़्त तक अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) को ये मसला मा'लूम नहीं था कि नमाज़ में इस तरह सलाम करने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है, इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनको नमाज़ लौटाने का हुक्म नहीं फ़र्माया।

बाब 5 : ताली बजाना या'नी हाथ पर हाथ मारना सिर्फ़ औरतों के लिये है

٥- بَابُ التَّصْفِيقِ لِلنِّسَاءِ

1203. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, कहा कि हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (नमाज़ में अगर कोई बात पेश आ जाए तो) मर्दों को सुब्हानल्लाह कहना और औरतों को हाथ पर हाथ मार कर या 'नी ताली बजाकर इमाम को इत्तिला देनी चाहिये।

तशरीह: कस्तलानी (रह.) ने कहा कि औरत इस तरह ताली बजाए कि दाएँ हाथ की हथेली को बाएँ हाथ की पुश्त पर मारे अगर खेल के तौर पर बाएँ हाथ पर मारे तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और अगर किसी मर्द को मसला मा'लूम न हो और वो भी ताली बजा दे तो उसकी नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उन सहाबा को जिन्होंने अनजाने में तालियाँ बजाई थीं नमाज़ के इआदे का हुक्म नहीं दिया। (बहीदी)

1204. हमसे यह्या बलखी ने बयान किया, कहा कि हमको वकीअ ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़सान घौरी ने, उन्हें अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने और उन्हें सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि सुब्हानल्लाह कहना मर्दों के लिये है और औरतों के लिये ताली बजाना। (राजेअ : 673)

۱۲۰۳- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «التَّسْبِيحُ لِلرِّجَالِ وَالتَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ».

۱۲۰۴- حَدَّثَنَا يَحْيَىٰ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «التَّسْبِيحُ لِلرِّجَالِ وَالتَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ».

[راجع: ۶۸۴]

तशरीह: मा'लूम हुआ कि इमाम भूल जाए और उसको होशियार करना हो तो लफ़्ज़े सुब्हानल्लाह बुलन्द आवाज़ से कहें और अगर किसी औरत को लुक्मा देना हो तो ताली बजाए, इससे औरतों का बाजमाअत नमाज़ पढ़ना भी प्राबित हुआ।

बाब 6 : जो शख़्स नमाज़ में उल्टे पाँव पीछे सरक जाए या आगे बढ़ जाए किसी ह्रादसे की वजह से तो नमाज़ फ़ासिद न होगी सहल बिन सअद (रज़ि.) ने ये नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है

1205. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हें इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि पीर के रोज़ मुसलमान अबूबक्र (रज़ि.) की इक्तिदा में नमाज़ पढ़ रहे थे कि अचानक नबी करीम (ﷺ) हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज़े का पर्दा हटाए हुए दिखाई दिये। आप (ﷺ) ने देखा कि सहाबा सफ़ बाँधे खड़े हुए हैं। ये देखकर आप (ﷺ) खुलकर मुस्कुरा दिये। अबूबक्र (रज़ि.) उल्टे पाँव पीछे हटे। उन्होंने समझा कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाएंगे और मुसलमान नबी करीम (ﷺ) को देखकर

۶- بَابُ مَنْ رَجَعَ الْقَهْقَرَىٰ فِي صَلَاتِهِ أَوْ تَقَدَّمَ بِأَمْرٍ يَنْزِلُ بِهِ رَوَاهُ سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

۱۲۰۵- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ: «أَنَّ الْمُسْلِمِينَ يَتِمُّنَا هُمْ فِي الْفَجْرِ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ وَأَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُصَلِّي بِهِمْ، فَجَاءَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ كَشَفَ سِتْرَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، فَظَرُّوا إِلَيْهِمْ وَهُمْ صُفُوفٌ، فَتَبَسَّمَ بِصُحُفِكَ. فَتَكَمَّنَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَى عَقِبِهِ

इस दर्जा खुश हुए कि नमाज़ ही तोड़ डालने का इरादा कर लिया। लेकिन अहज़रत (ﷺ) ने हाथ के इशारे से हिदायत की कि नमाज़ पूरी करो। फिर आप (ﷺ) ने पर्दा डाल दिया और हुज्रे में तशरीफ़ ले गये। फिर उसी दिन आप (ﷺ) ने इन्तिक़ाल फ़र्माया।

(राजेअ: 680)

وَلَمَّا كَانَ يَوْمُ الْفَتْحِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُرِيدُ أَنْ يَخْرُجَ إِلَى الصَّلَاةِ، وَهَمَّ الْمُسْلِمُونَ أَنْ يَقْبَعُوا فِي صَلَاتِهِمْ فَرَحًا بِالنَّبِيِّ ﷺ حِينَ رَأَوْهُ. فَأَشَارَ بِيَدِهِ أَنْ أَيْمُوا. ثُمَّ دَخَلَ الْحَضْرَةَ وَأَرْخَى السُّرَّ، وَتَوَلَّى ذَلِكَ الْيَوْمَ ۖ

[راجع: ٦٨٠]

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद ये है कि अब भी कोई खास मौक़ा अगर इस किस्म का आ जाए कि इमाम को पीछे की तरफ़ हटना पड़े या कोई ह्रादशा ही ऐसा दाई हो तो इस तरह से नमाज़ में नुक्स न आएगा।

बाब 7 : अगर कोई नमाज़ पढ़ रहा हो और उसकी माँ उसको बुलाए तो क्या करे?

٧- بَابُ إِذَا دَعَتْ الْأُمُّ وَلَدَهَا فِي الصَّلَاةِ

1206. और लैज़ बिन सअद ने कहा कि मुझे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन हुमुज़ अअरज ने कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि (बनी इस्राईल की) एक औरत ने अपने बेटे को पुकारा, उस वक़्त वो इबादतख़ाने में था। माँ ने पुकारा, ऐ जुरैज! जुरैज (पशोपेश में पड़ गया और दिल में) कहने लगा, ऐ अल्लाह! मैं अब माँ को देखूँ या नमाज़ को। फिर माँ ने पुकारा, ऐ जुरैज! (वो अब भी पशोपेश में था) कि ऐ अल्लाह! मेरी माँ और मेरी नमाज़! माँ ने फिर पुकारा ऐ जुरैज! वो (अब भी यही) सोचे जा रहा था। ऐ अल्लाह! मेरी माँ और मेरी नमाज़! (आख़िर) माँ ने तंग होकर बददुआ की कि ऐ अल्लाह! जुरैज को मौत न आए जब तक वो फ़ाहिशा औरत का चेहरा न देख ले। जुरैज की इबादतगाह के करीब ही एक घराने वाली आया करती थी, जो बकरियाँ चराती थी। इत्तेफ़ाक़ से उसे बच्चा पैदा हुआ। लोगों ने पूछा कि ये किसका बच्चा है? उसने कहा जुरैज का है। वो एक मर्तबा अपनी इबादतगाह से निकल कर मेरे पास रहा था। जुरैज ने पूछा कि वो औरत कौन है? जिसने मुझ पर तोहमत लगाई है कि उसका बच्चा मुझसे है। (औरत बच्चे को ले आई तो) उन्होंने बच्चे से पूछा कि बच्चे! तुम्हारा बाप कौन? बच्चा बोल पड़ा कि एक बकरी चराने वाला गडरिया मेरा बाप है। (दीगर मक़ाम: 2472, 3436, 3466)

١٢٠٦- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمَزٍ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((نَادَتْ امْرَأَةٌ ابْنَهَا وَهُوَ فِي صَوْمَعَةٍ قَالَتْ: يَا جُرَيْجُ، قَالَ: اللَّهُمَّ أُمِّي وَصَلَّيْ. قَالَتْ: يَا جُرَيْجُ، قَالَ: اللَّهُمَّ أُمِّي وَصَلَّيْ. فَقَالَتْ: يَا جُرَيْجُ، قَالَ: اللَّهُمَّ أُمِّي وَصَلَّيْ. فَقَالَتْ: يَا جُرَيْجُ، قَالَ: اللَّهُمَّ لَا يَمُوتُ جُرَيْجٌ حَتَّى يَنْظُرَ لِي وَجْهَ السَّمَايَسِ، وَكَانَتْ تَأْوِي إِلَى صَوْمَعِيَّةٍ رَاعِيَةً تَرْعَى الْقَتَمَ، فَوَلَدَتْ، فَعَمِلَ لَهَا مِنْ هَذَا الْوَلَدُ؟ قَالَتْ: مِنْ جُرَيْجٍ نَزَلَ مِنْ صَوْمَعِيَّةٍ. قَالَ جُرَيْجُ: أَتَيْنَ هَذِهِ النَّبِيَّ تَرْعُمُ أَنْ وَلَدَهَا لِي؟ قَالَ: يَا بَابُوسُ. مَنْ أَبُوكَ؟ قَالَ: رَاعِي الْقَتَمِ ۖ

[أطرافه في: ٢٤٨٢، ٣٤٣٦، ٣٤٦٦]

बाब 10 : नमाज़ में कौन-कौन से काम दुरुस्त है?

1209. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अनबी ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुअज़र सालिम बिन अबू उमय्या ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं अपना पाँव नबी करीम (ﷺ) के सामने फैला लेती थी और आप नमाज़ पढ़ते होते। जब आप (ﷺ) सज्दा करने लगते तो आप मुझे हाथ लगाते मैं पाँव समेट लेती। फिर जब आप (ﷺ) खड़े हो जाते तो मैं फिर फैला लेती। (राजेअ : 382)

١٠- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْعَمَلِ فِي الصَّلَاةِ

١٢٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كُنْتُ أُمِدُّ رِجْلِي فِي قَدَمِ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يُصَلِّي، فَإِذَا سَجَدَ غَمَزَنِي، فَرَفَعْنَاهَا، فَإِذَا قَامَ مَدَدْنَاهَا)).

[راجع : ٣٨٢]

1210. हमसे महमूद बिन गीलान ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने एक मर्तबा एक नमाज़ पढ़ी फिर फ़र्माया कि मेरे सामने एक शैतान आ गया और कोशिश करने लगा कि मेरी नमाज़ तोड़ दे। लेकिन अल्लाह तआला ने उसको मेरे क़ाबू में कर दिया, मैंने उसका गला घोट्टा और उसको धकेल दिया। आखिर में मेरा इरादा हुआ कि उसे मस्जिद के एक सुतून से बाँध दूँ और जब सुबह हो तो तुम भी देखो। लेकिन मुझे सुलैमान अलैहिस्सलाम की हुआ याद आ गई, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी सलतनत अत्ता कीजियो, जो मेरे बाद किसी और को न मिले। (इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया) और अल्लाह तआला ने उसे ज़िल्लत के साथ भगा दिया। इसके बाद नज़र बिन शुमैल ने कहा कि जअतुहू ज़ाल से है जिसके मा'नी है कि मैंने उसका गला घोट्ट दिया और दअत अल्लाह तआला के इस क़ौल से लिया गया है यौम युदऔन जिस के मा'नी हैं क़यामत के दिन वो दोज़ख़ की तरफ़ धकेले जाएंगे। दुरुस्त पहला ही लफ़ज़ है। अलबत्ता शुअबा ने इसी तरह ऐन और ताअ की तश्दीद के साथ बयान किया है।

(राजेअ : 461)

١٢١٠- حَدَّثَنَا مَحْمُودُ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ صَلَّى صَلَاةً قَالَ : ((إِنَّ الشَّيْطَانَ غَرَضَ لِي فَشَدُّ عَلَيَّ يَفْطَحُ الصَّلَاةَ عَلَيَّ، فَأَمْكَنَنِي اللَّهُ مِنْهُ فَذَعْنَهُ، وَلَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أُوَلِّقَهُ إِلَى سَارِيَةٍ حَتَّى تُصْبِحُوا فَتَنْظُرُوا إِلَيْهِ، فَذَكَرْتُ قَوْلَ سُلَيْمَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ : «حُزِبَ لِي مَلَكًا لَا يُنْفِي لِأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي» فَزَدَهُ اللَّهُ خَاسِبًا)) ثُمَّ قَالَ النَّصْرُ بْنُ شَمِيلٍ : فَذَعْنَهُ بِالذَّالِ، أَيْ حَقَّقَهُ. وَفَدَعْنَهُ مِنْ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى : «يَوْمَ يُدْعَوْنَ» أَيْ يُدْفَعُونَ. وَالصَّوَابُ الْأَوَّلُ، إِلَّا أَنَّهُ كُنَّا قَالِ بِشَيْئِدِ الْغَيْنِ وَالنَّاءِ.

[راجع : ٤٦١]

तशय्यह

यहाँ ये ए' तिराज़ न होगा कि दूसरी हदीष में है कि शैतान उमर के साये से भी भागता है। जब हज़रत उमर (रज़ि.) से शैतान डरता है तो आँहज़रत (ﷺ) के पास क्योंकर आया? आँहज़रत (ﷺ) उमर (रज़ि.) से कहीं ज़्यादा

अफ़ज़ल हैं। इसका जवाब ये है कि चोर-डाकू-बदमाश, कोतवाल से ज्यादा डरते हैं बादशाह से उतना नहीं डरते, वो ये समझते हैं कि बादशाह को हम पर रहम आ जाएगा। तो उससे ये नहीं निकलता कि कोतवाल बादशाह से अफ़ज़ल है, इस रिवायत से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि दुश्मन को धकेलना या उसको धक्का देने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती। इमाम इब्ने क़थ़ीम (रह.) ने किताबुस्सलात में अहले हदीष का मज़हब करार दिया कि नमाज़ में खंखारना या कोई घर में न हो तो दरवाज़ा खोल देना, सांप-बिच्छू निकले तो उसका मारना, सलाम का जवाब हाथ के इशारे से देना, किसी ज़रूरत से आगे-पीछे सरक जाना ये सब काम दुरुस्त है। इनसे नमाज़ फ़ासिद नहीं होती। (वहीदी) कुछ नुस्खों में घुम्म क़ालन्नज़्ज़ुब्नु शुमैल वाली इबारत नहीं है।

बाब 11 : अगर आदमी नमाज़ में हो और उसका जानवर भाग पड़े और क़तादा ने कहा कि अगर किसी का कपड़ा चोर ले भागे तो उसके पीछे दौड़े और नमाज़ छोड़ दे

1211. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अरज़क बिन कैस ने बयान किया, कहा कि हम अहवाज़ में (जो कई बस्तियाँ है बसरा और ईरान के बीच में) ख़ारजियों से जंग कर रहे थे। एक बार मैं नहर के किनारे बैठा था। इतने में एक शख्स (अबू बरज़ा सहाबी रज़ि.) आया और नमाज़ पढ़ने लगा। क्या देखता हूँ कि उनके घोड़े की लगाम उनके हाथ में है। अचानक घोड़ा उनसे छूटकर भाग गया, तो वो भी उसका पीछा करने लगे। शुअबा ने कहा कि अबू बरज़ा असलमी (रज़ि.) थे। ये देख कर ख़वारिज में से एक शख्स कहने लगा कि ऐ अल्लाह! इस शैख़ का नास कर। जब वो शैख़ वापस लौटे तो फ़र्माया कि मैंने तुम्हारी बातें सुन ली हैं और (तुम क्या चीज़ हो?) मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ छह या सात जिहाद में शिरकत की है और मैंने आप (ﷺ) की आसानियों को देखा है। इसलिये मुझे ये अच्छा मा'लूम हुआ कि अपना घोड़ा साथ लेकर लौटूँ कि उसको छोड़ दूँ कि जहाँ चाहे चल दे और मैं तकलीफ़ उठाऊँ। (दीगर मक़ाम : 6127)

1212. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उनसे उर्वा ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बतलाया कि जब सूरज ग्रहण लगा तो

١١- بَابُ إِذَا انْفَلَتِ الدَّائِبَةُ فِي الصَّلَاةِ وَقَالَ قَادَةُ : إِنَّ أَحَدَ تَوْبَةِ تَبَعِ السَّارِقِ وَيَدْعُ الصَّلَاةَ

١٢١١- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَزْزَقِيُّ بْنُ قَيْسٍ قَالَ ((كُنَّا بِالْأَهْوَازِ لِقَابِلِ الْحَرُورِيَّةِ، فَبَيْنَا أَنَا عَلَى جُرْفٍ نَهْرٍ إِذَا رَجُلٌ يُصَلِّي، وَإِذَا لِحَامٌ دَائِبَةٌ بِيَدِهِ، فَتَقَلَّتِ الدَّائِبَةُ تَنَارُخَهُ، وَجَمَلُ يَتَعَمَّقُهَا - قَالَ شُعْبَةُ : هُوَ أَبُو بَرْزَةَ الْأَسْلَمِيُّ - فَجَمَلُ رَجُلٍ مِنَ الْخَوَارِجِ يَقُولُ: اللَّهُمَّ الْعَلَّ بِهَذَا الشَّيْخِ. فَلَمَّا انصَرَفَ الشَّيْخُ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ قَوْلَكُمْ، وَإِنِّي غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ غَزَوَاتٍ أَوْ مَتَعَ غَزَوَاتٍ أَوْ وَهَيْتُ تَسْبِيرَهُ، وَإِنِّي كُنْتُ أَنْ أَرَاكَ مَعَ دَائِبِي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَدْعِيهَا تَرْجِعَ إِلَيَّ مَالِهَا فَيَشُوْ عَلَى)).

[طرفه ن: ٦١٢٧].

١٢١٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ قَبَائِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ غُرُورَةَ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ

नबी करीम (ﷺ) (नमाज़ के लिये) खड़े हुए और एक लम्बी सूरत पढ़ी फिर रुकूअ किया और बहुत लम्बा रुकूअ किया। फिर सर उठाया उसके बाद दूसरी सूरत शुरू कर दी, फिर रुकूअ किया और रुकूअ पूरा करके इस रकअत को खत्म किया और सज्दे में गये। फिर दूसरी रकअत में भी आप (ﷺ) ने इसी तरह किया। नमाज़ से फ़ारिग होकर आपने फ़र्माया कि सूरज और चाँद अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं। इसलिये जब तुम इनमें ग्रहण देखो तो नमाज़ शुरू कर दो जब तक कि ये साफ़ हो जाए और देखो मैंने अपनी इसी जगह से उन तमाम चीज़ों को देख लिया है जिनका मुझसे वा'दा है। यहाँ तक कि मैंने ये भी देखा कि मैं जन्नत का एक खोशा लेना चाहता हूँ। अभी तुम लोगों ने देखा होगा कि मैं आगे बढ़ने लगा था और मैंने दोज़ख भी देखी (इस हालत में कि) बाज़ आग, आग को खाए जा रही थी। तुम लोगों ने देखा होगा कि जहन्नम के इस हौलनाक मन्ज़र को देख कर मैं पीछे हट गया था। मैंने जहन्नम के अन्दर अम्र बिन लुहय को देखा। ये वो शख्स है जिसने साँड की रस्म अरब में जारी की थी।

(राजेअ: 1044)

तशरीह: सायबा उस ऊँटनी को कहते हैं जो जाहिलियत में बुतों की नज़्र मानकर छोड़ दी जाती थी। न उस पर सवार होते और न उसका दूध पीते। यही अम्र बिन लुहय अरब में बुतपरस्ती और दूसरी बहुत सी मुन्किरात का बानी (संस्थापक) हुआ है। हदीष की मुताबक़त तर्जुमा से ज़ाहिर है इसलिये कि खोशा लेने के लिये आप (ﷺ) का आगे बढ़ना और जहन्नम की हैबत खाकर पीछे हटना हदीष से साबित हो गया और जिसका चौपाया छूट जाता है वो उसके थामने के वास्ते भी कभी आगे बढ़ता है कभी पीछे हटता है। (फ़रहूलबारी) ख़वारिज एक गिरोह है जिसने हज़रत अली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त का इंकार किया था। साथ ही हदीष का इंकार करके हसबुनल्लाहु किताबिल्लाहि का नारा लगाया था। ये गिरोह भी इफ़रात व तफ़रीत में मुब्तला होकर गुमराह हुआ।

बाब 12 : इस बारे में कि नमाज़ में थूकना और फूंक मारना कहाँ तक जाइज़ है? और अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से ग्रहण की हदीष में मन्कूल है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ग्रहण की नमाज़ में सज्दे में फूंक मारी

رَحِمَیَ اللّٰهُ عَنْهَا: «خَسَفَتِ الشَّمْسُ، فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَرَأَ سُورَةَ طَوْنَةَ ثُمَّ رَكَعَ فَأَطَالَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ، ثُمَّ اسْتَفْعَ بِسُورَةِ أُخْرَى، ثُمَّ رَكَعَ حَتَّى قَضَاهَا وَسَجَدَ، ثُمَّ قَعَلَ ذَلِكَ فِي الْبَاقِيَةِ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّهُمَا آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللّٰهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمُ ذَلِكَ فَصَلُّوا حَتَّى يَفْرَجَ عَنْكُمُ. لَقَدْ رَأَيْتُ فِي مَقَامِي هَذَا كُلَّ شَيْءٍ وَعِدَّتُهُ، حَتَّى لَقَدْ رَأَيْتُ أُرِيدُ أَنْ أَخَذَ قِطْعًا مِنَ الْجَنَّةِ حِينَ رَأَيْتُمُونِي جَعَلْتُ أَمْلَأُكُمْ، وَلَقَدْ رَأَيْتُ جَهَنَّمَ يَخْطِمُ بَعْضُهَا بَعْضًا حِينَ رَأَيْتُمُونِي تَأَخَّرْتُ، وَرَأَيْتُ فِيهَا عَمْرُو بْنُ لَحْيٍ وَهُوَ الْبَلْدِيُّ سَبَّ السَّوَابِ».

(راجع: 1044)

۱۲- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الثَّصَاقِ وَالنَّفْعِ فِي الصَّلَاةِ وَتَذَكُّرُ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو: نَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ فِي سُجُودِهِ فِي كُصُوفٍ

तशरीह: या'नी ऐसे साफ़ तौर पर उफ़ निकाली कि जिससे फ़े पूरी और लम्बी आवाज़ से ज़ाहिर हुई। इब्ने बज़ाल ने कहा कि नमाज़ में थूक डालने के जवाज़ पर इलमा ने इत्तिफ़ाक़ किया है। इससे मा'लूम हुआ कि फूंक मारना भी

जाइज है क्योंकि उन दोनों में फ़र्क नहीं है। इब्ने दक्क़ीक़ ने कहा कि नमाज़ में फूँक मारने को इसलिये मुब्तल नमाज़ कहते हैं कि वो कलाम के मुशाबेह है और ये बात मर्दूद है क्योंकि सहीह तौर पर साबित है कि आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ में फूँक मारी (फ़तहलबारी)

1213. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुद्धितयानी ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दफ़ा मस्जिद में क्रिब्ला की तरफ़ रैट देखी। आप (ﷺ) मस्जिद में मौजूद लोगों पर बहुत नाराज़ हुए और फ़र्माया कि अल्लाह तआला तुम्हारे सामने है इसलिये नमाज़ में थूकना न करो, या ये फ़र्माया कि रैट न निकाला करो। फिर आप उतरे और खुद ही अपने हाथ से उसे खुरच डाला, इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि जब किसी को थूकना ही ज़रूरी हो तो अपनी बाईं तरफ़ थूक ले।

(राजेअ: 406)

١٢١٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى نُخَامَةً فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ، فَتَغَطَّى عَلَى أَهْلِ الْمَسْجِدِ وَقَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ قَبْلَ أَحَدِكُمْ، فَإِذَا كَانَ فِي صَلَاةٍ فَلَا يَتْرُقَنَّ - أَوْ قَالَ: لَا يَتَخَمَّنَنَّ)) - ثُمَّ نَزَلَ فَخَرَّهَا بِيَدِهِ)). وَقَالَ ابْنُ عُمرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: إِذَا تَرَقَّى أَحَدُكُمْ فَلْيَتَرَقَّ عَلَى يَسَارِهِ.

[راجع: ٤٠٦]

तशरीह: इससे ये मा'लूम हुआ कि बुरे काम को देखकर तमाम जमाअत पर नाराज़ होना जाइज है ताकि सबको तम्बीह हो और आइन्दा के लिये उसका लिहाज़ रखें। नमाज़ में क्रिबले की तरफ़ थूकने से मना किया न कि मुत्लक़ थूक डालने से बल्कि अपने पांव के नीचे थूकने की इजाज़त फ़र्माई जैसा कि अगली हदीष में मज़कूर है। जब थूक मस्जिद में पुख़्ता फ़र्श होने की वजह से दफ़न हो सके तो रूमाल में थूकना चाहिये। फूँक मारना भी किसी शदीद ज़रूरत के तहत जाइज है बिला ज़रूरत फूँक मारना नमाज़ में खुशूअ के खिलाफ़ है।

1214. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबाने, उन्होंने कहा कि मैंने क़तादा से सुना, वो अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम में से कोई नमाज़ में हो तो वो अपने रबी से सरगोशी (बातें) करता है। इसलिये उसके सामने न थूकना चाहिये और न दायें तरफ़ अलबत्ता बायें तरफ़ अपने क़दम के नीचे थूक ले। (राजेअ: 241)

١٢١٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَرُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا كَانَ فِي الصَّلَاةِ فَإِنَّهُ يَتَأَجَّى رَبَّهُ، فَلَا يَتْرُقَنَّ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَا عَنْ يَمِينِهِ، وَلَكِنْ عَنْ جَانِبِهِ نَحْتًا فَلْيَدْعِ الْهَسْرَى)).

[راجع: ٢٤١]

बाब 13 : अगर कोई मर्द मसलान जानने की वजह से नमाज़ में दस्तक दे तो उसकी नमाज़ फ़ासिद न होगी

इस बाब में सहल बिन सअद (रज़ि.) की एक रिवायत नबी करीम (ﷺ) से सुना

١٣- بَابُ مَنْ صَفَّقَ جَاهِلًا مِنَ الرِّجَالِ فِي صَلَاتِهِ لَمْ تَفْسُدْ صَلَاتُهُ فِيهِ مَهْلٌ مِنْ مَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

जो ऊपर गुजर चुकी है और आगे भी आणी।

बाब 14 : इस बारे में कि अगर नमाज़ी से कोई कहे कि आगे बढ़ जा या ठहर जा और वो आगे बढ़ जाए या ठहर जाए तो कोई कबाहत नहीं है

۱۴- بَابُ إِذَا قِيلَ لِلْمُصَلِّي: تَقَدَّمْ أَوْ اتَّخِذْ فَاتَّخِذْ - فَلَا بَأْسَ

1215. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफ़यान घ़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम ने, उनको सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बतलाया कि लोग नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ तरह पढ़ते कि तहबन्द छोटे होने की वजह से उन्हें अपनी गर्दनो से बाँधे रखते और औरतों को (जो मर्दों के पीछे जमाअत में शरीक रहती थीं) कह दिया जाता कि जब तक मर्द पूरी तरह सिमट पर न बैठ जाए, तुम अपने सर (सज्दे से) न उठाना। (राजेअ : 362)

۱۲۱۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّاسُ يُصَلُّونَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُمْ عَالِقُو أَرْوَاحِهِمْ مِنَ الصَّنَمِ عَلَى رِقَابِهِمْ، فَقِيلَ لِلنِّسَاءِ: لَا تَرَفَعْنَ رُؤُوسَكُمْ حَتَّى يَسْتَوِيَ الرِّجَالُ جُلُوسًا)). [راجع: ۳۶۲]

तारीह: इमाम नमाज़ में झूल जाए या किसी दीगर ज़रूरी अमर पर उसे आगाह करना हो जो मर्द सुबहानल्लाह कहें और औरते ताली बजाएँ अगर किसी मर्द ने नादानी की वजह से तालियाँ बजाई तो उसकी नमाज़ नहीं टूटेगी। चुनाँचे सहल (रज़ि.) की हदीष में जो दो बाबों के बाद आ रही है कि सहाबा किराम (रज़ि.) ने नादानी की वजह से ऐसा किया और आप (ﷺ) ने उनको नमाज़ लौटाने का हुक्म नहीं दिया। हदीष और बाब में यूँ मुताबकत हुई कि ये बात औरतों को हालते नमाज़ में कही गई या नमाज़ से पहले। शक़ अव्वल में मा'लूम हुआ कि नमाज़ी को मुखातिब करना और नमाज़ के लिये किसी का इतिज़ार करना जाइज़ है और शक़े प़ानी में मा'लूम हुआ कि नमाज़ में इतिज़ार करना जाइज़ है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के कलाम का हासिल ये है कि किसी का इतिज़ार अगर शर्ई है तो जाइज़ है वरना नहीं। (फ़तहलबारी)

बाब 15 : नमाज़ में सलाम का जवाब (ज़बान से) न दे

۱۵- بَابُ لَا يَرُدُّ السَّلَامُ فِي الصَّلَاةِ

1216. हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने फुज़ैल ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अलक़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि (इब्तिदाए-इस्लाम में) नबी करीम (ﷺ) जब नमाज़ में होते तो मैं आपको सलाम करता तो आप (ﷺ) जवाब देते थे। मगर जब हम (हब्शा से, जहाँ हिजरात की थी) वापस आये तो मैंने (पहले की तरह नमाज़ में) सलाम किया। मगर आप (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया (क्योंकि अब नमाज़ में बातचीत ख़ग़ैरह की मुमानअत नाज़िल हो गई थी) और फ़र्माया कि नमाज़ में इससे मशगूलियत होती है। (राजेअ : 1199)

۱۲۱۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي حَبِيبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لُصَيْبٍ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: ((كَانَتْ أَسْلَمُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَمَقَرُّ لِي الصَّلَاةِ فَيَرُدُّ عَلَيَّ، فَلَمَّا رَجَعْنَا صَلَّيْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدُّ عَلَيَّ وَلَئِنْ لِي الصَّلَاةُ لَأَسْلَمُ)). [راجع: ۱۱۹۹]

तशरीह :

उलमा का इसमें इख़तिलाफ़ है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की ये वापसी मक्का शरीफ़ को थी या मदीना मुनव्वरा को। हाफ़िज़ ने फ़त्हूल बारी में उसे तर्जीह दी है कि मदीना मुनव्वरा को थी जिस तरह पहले गुज़र चुकी है और जब ये वापस हुए तो आप (ﷺ) बद्र की लड़ाई के लिये तैयारी कर रहे थे। अगली हदीस से भी इसी की ताईद होती है कि नमाज़ के अंदर कलाम करना मदीना में हुराम हुआ क्योंकि हज़रत जाबिर अंसारी मदीना शरीफ़ के बाशिन्दे थे।

1217. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा कि हमसे कबीर बिन शिन्ज़ैर ने बयान किया, उनसे अताअ बिन अबी रबाह ने उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे अपनी एक ज़रूरत के लिये (ग़ज़्वा-ए-बनी मुस्तलिक् में) भेजा मैं जाकर वापस आया, मैंने काम पूरा कर दिया था। फिर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको सलाम किया, लेकिन आपने कोई जवाब नहीं दिया। मेरे दिल में अल्लाह जाने क्या बात आई और मैंने अपने दिल में कहा कि शायद रसूलुल्लाह (ﷺ) मुझ पर इसलिये ख़फ़ा हैं कि मैं देर से आया हूँ। मैंने फिर दोबारा सलाम किया और जब इस मर्तबा भी आपने कोई जवाब नहीं दिया तो अब मेरे दिल में पहले से भी ज़्यादा ख़याल आया। फिर मैंने (तीसरी मर्तबा) सलाम किया और अब आप (ﷺ) ने जवाब दिया और फ़र्माया कि पहले जो दो बार मैंने जवाब नहीं दिया तो वो इस वजह से था कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था और आप (ﷺ) उस वक़्त अपनी कैंटनी पर थे और उसका रुख़ क़िबला की तरफ़ न था, बल्कि दूसरी तरफ़ था।

۱۲۱۷- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا كَبِيرُ بْنُ جَنْظِرٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَاحِمٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي حَاجَةٍ لَهُ، فَانْطَلَقْتُ، ثُمَّ رَجَعْتُ وَلَقَدْ لَعْنَتْهَا، فَاتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدْ عَلَيَّ، فَوَقَعَ فِي قَلْبِي مَا اللَّهُ أَكْثَمُ بِهِ، فَقُلْتُ فِي نَفْسِي: لَعَلَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَجَدَ عَلَيَّ أَنِّي أَهْطَأْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ سَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدْ عَلَيَّ، فَوَقَعَ فِي قَلْبِي أَشَدُّ مِنَ الْمَرَّةِ الْأُولَى. ثُمَّ سَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَرَدَّ عَلَيَّ وَ قَالَ: ((إِنَّمَا مَنَعَنِي أَنْ أَرُدَّ عَلَيْكَ أَنِّي كُنْتُ أَصَلُّهُ)). وَكَانَ عَلَى رَاحِلَتِهِ مَقْرَجُهَا إِلَى غَيْرِ الْقِبْلَةِ)).

तशरीह :

मुस्लिम की रिवायत में हैं ये ग़ज़्वा-ए-बनी मुस्तलिक् में था और मुस्लिम ही की रिवायत में ये भी वज़ाहत है कि आपने हाथ के इशारे से जवाब दिया। और जाबिर (रज़ि.) का मायूम व मुतफ़किर (गमज़दा और फ़िक्रमन्द) होना इसलिये था कि उन्होंने ये न समझा कि ये इशारा सलाम का जवाब है क्योंकि पहले आप (ﷺ) जुबान से सलाम का जवाब देते थे न कि हाथ के इशारे से।

बाब 16 : नमाज़ में कोई हादसा पेश आए तो हाथ उठाकर दुआ करना

۱۶- بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الصَّلَاةِ لِأَمْرِ يَنْزِلُ بِهِ

1317. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने और उनसे सहल बिन सअद

۱۲۱۸- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ مَعْقِلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَلَغَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

(रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह को ये ख़बर पहुँची कि कुबा के कबीला बनू अम्र बिन अफ़्र में कोई झगड़ा हो गया है। इसलिये आप (ﷺ) कई अस्त्राब को साथ लेकर उनमें मिलाप कराने के लिये तशरीफ़ ले गये। वहाँ आप (ﷺ) सुलह-सफ़ाई के लिये ठहर गए। इधर नमाज़ का वक़्त हो गया तो बिलाल (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नहीं आए और नमाज़ का वक़्त हो गया, तो क्या आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे। आपने जवाब दिया कि हाँ, अगर तुम चाहते हो तो पढ़ा दूँगा। चुनाँचे बिलाल (रज़ि.) ने तक्बीर कही और अबूबक्र ने आगे बढ़कर निव्यत बाँध ली। इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी तशरीफ़ ले आए और सफ़ों से गुज़रते हुए आप पहली सफ़ में आ खड़े हुए। लोगों ने हाथ पर हाथ मारने शुरू कर दिये। (सहल रज़ि. ने कहा तस्फ़ीह के मा'नी तस्फ़ीक़ के हैं) आपने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) नमाज़ में किसी तरफ़ मुतवज्जह नहीं होते थे। लेकिन जब लोगों ने बहुत दस्तकें दी तो उन्होंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हैं। हज़ूरे-अकरम (ﷺ) ने इशारे से अबूबक्र को नमाज़ पढ़ाने के लिये कहा। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने हाथ उठाकर अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और फिर उल्टे पाँव पीछे की तरफ़ चले आये और सफ़ में खड़े हो गये और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप (ﷺ) लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया कि लोगों! ये क्या बात है कि जब नमाज़ में कोई बात पेश आती है तो तुम तालियाँ बजाने लगते हो, ये मसला तो औरतों के लिये है। तुम्हें अगर नमाज़ में कोई हादसा पेश आए तो सुह्रानल्लाह कहा करो। इसके बाद आप (ﷺ) अबूबक्र (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया कि अबूबक्र! मेरे कहने के बावजूद तुमने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ाई? अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि अबूक़हाफ़ा के बेटे को ज़ेबा नहीं देता कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की मौजूदगी में नमाज़

أَنْ يَنْبَغِي عَمْرُو بْنُ عَوْفٍ بِقَبَاءِ كَانَ بَيْنَهُمْ شَيْءٌ، فَخَرَجَ يُصَلِّحُ بَيْنَهُمْ فِي أَنْاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَحَسِبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَحَافَتِ الصَّلَاةُ، فَجَاءَ بِلَالٌ إِلَى أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ، إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ خَسِبَ وَقَدْ حَافَتِ الصَّلَاةُ، فَهَلْ لَكَ أَنْ تَزُومَ النَّاسَ؟ قَالَ: نَعَمْ إِنْ شِئْتَ. فَأَقَامَ بِلَالٌ الصَّلَاةَ وَتَقَدَّمَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَكَبَّرَ لِلنَّاسِ، وَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَمْشِي فِي الصُّفُوفِ يَشْقُهَا شَقًّا حَتَّى قَامَ مِنَ الصَّفِّ، فَأَخَذَ النَّاسُ فِي التَّصْفِيحِ - قَالَ مَهْلٌ: التَّصْفِيحُ هُوَ التَّصْفِيحُ - قَالَ وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَا يَلْتَفِتُ فِي صَلَاتِهِ، فَلَمَّا أَكْثَرَ النَّاسُ التَّفَتُّ، فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَأَشَارَ إِلَيْهِ بِأَمْرِهِ أَنْ يُصَلِّيَ، فَرَفَعَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَدَيْهِ لِحَمْدِ اللَّهِ، ثُمَّ رَجَعَ الْقَهْقَرَى وَرَأَاهُ حَتَّى قَامَ فِي الصَّفِّ، وَتَقَدَّمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَصَلَّى لِلنَّاسِ. فَلَمَّا قَرَعَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: (يَا أَيُّهَا النَّاسُ، مَا لَكُمْ حِينَ نَابَكُمْ شَيْءٌ فِي الصَّلَاةِ اخْتَلْتُمْ بِالتَّصْفِيحِ، إِنَّمَا التَّصْفِيحُ لِلنِّسَاءِ. مَنْ نَابَهُ شَيْءٌ فِي صَلَاتِهِ فَلْيَقُلْ سُبْحَانَ اللَّهِ)). ثُمَّ انْتَبَهْتُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: (يَا أَبَا بَكْرٍ، مَا مَنَعَكَ أَنْ تُصَلِّيَ لِلنَّاسِ حِينَ اخْتَلَتْ إِبْلَکُ؟) قَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا كَانَ يَنْبَغِي لِأَبْنِ أَبِي قُحَافَةَ أَنْ يُصَلِّيَ بَيْنَ

पढ़ाए। (राजेअ: 673)

يَذِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. [راجع: ٦٨٤]

तशरीह: हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने रब के सामने हाथों को उठाकर अलहुम्दुलिल्लाह कहा। सो अगर उसमें कुछ हर्ज होता तो आप (ﷺ) ज़रूर मना कर देते और उससे हदीष की मुनासबत बाब से ज़ाहिर हुई।

बाब 17 : नमाज़ में कमर पर हाथ रखना कैसा है?

1219. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नमाज़ में कमर पर हाथ रखने से मना किया गया था। हिशाम और अबू हिलाल मुहम्मद बिन सुलैम ने, इब्ने सीरीन से इस हदीष को रिवायत किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (दीगर मक़ाम: 1220)

1220. हमसे अग्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान फिरदौसी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने अहज़रत (ﷺ) ने कमर पर हाथ रख कर नमाज़ पढ़ने से मना फ़र्माया। (राजेअ: 1219)

तशरीह: या'नी कोख पर हाथ रखने से मना किया। हिक्मत उसमें ये है कि इब्लीस उसी हालत में आसमान से उतारा गया और यहूद अक़्फ़र ऐसा किया करते थे या जहन्नमी इसी तरह राहत लेंगे। इसलिये भी मना किया गया कि ये मुतकब्बिरों (घमण्डियों) की भी अलामत है।

बाब 18 : आदमी नमाज़ में किसी बात का

फ़िक्र करे तो कैसा है?

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि मैं नमाज़ पढ़ता रहता हूँ और नमाज़ ही में जिहाद के लिये अपनी फौज का सामान किया करता हूँ

तशरीह: बाब का मक़सद ये है कि नमाज़ में कुछ सोचने से नमाज़ बातिल न होगी क्योंकि इससे बचना दुश्वार है फिर अगर सोचना दीन और आख़िरत के बारे में हो तो ख़फ़ीफ़ बात है और अगर दुनियावी काम हो तो बहुत भारी है। इलमा (रह.) ने उस नमाज़ी को जिसका नमाज़ में दुनियावी उमूर पर ध्यान हो और अल्लाह से गाफ़िल हो ऐसे शख्स के साथ तस्बीह दी है जो किसी बादशाह के सामने बर्तौर तोहफ़ा एक मरी हुई लौण्डी पेश करे। ज़ाहिर है कि बादशाह उस तोहफ़े से इतिहाई नाख़ुश होगा। इसीलिये कहा गया है कि,

बरज़बाँ तस्बीहो-दिल दर गाव ख़र

ई चुनी तस्बीह के दारद अघ़र

١٧- بَابُ الْخَصْرِ فِي الصَّلَاةِ

١٢١٩- حَدَّثَنَا أَبُو الثَّعْمَانُ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَيْسَ فِي الْخَصْرِ فِي الصَّلَاةِ)). وَقَالَ هِشَامٌ وَأَبُو جَلَالٍ عَنْ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ. [طَرَفُهُ: ١٢٢٠].

١٢٢٠- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَيْسَ فِي الصَّلَاةِ أَنْ يُصَلِّيَ الرَّجُلُ مُتَخَصِّرًا)).

[راجع: ١٢١٩]

١٨- بَابُ يُفَكِّرُ الرَّجُلُ الشَّيْءَ فِي

الصَّلَاةِ

وَقَالَ عَمْرُو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِنِّي لَأَجُزُّ جَنَاحِي وَأَنَا فِي الصَّلَاةِ

या'नी जब जुबान पर तस्बीह जारी हो और दिल घर के जानवरों में लगा हुआ हो तो ऐसी तस्बीह क्या अश्वर पैदा कर सकती है। हज़रत उमर (रज़ि.) के अश्वरे मज़कूर को इब्ने अबी शैबा ने बइस्नादे सहीह रिवायत किया है। हज़रत उमर (रज़ि.) को अल्लाह ने अपने दीन की ख़िदमत व नुसरत के लिये पैदा फ़र्माया था। उनको नमाज़ में भी वही ख़यालात दामनगीर रहते थे, नमाज़ में जिहाद के लिये फ़ौजकशी और जंगी तदबीरें सोचते थे चूँकि नमाज़ नफ़्स और शैतान के साथ जिहाद है और उन हबी तदाबीर को सोचना भी अज़ किस्मे जिहाद है लिहाज़ा मुफ़्तिदे नमाज़ नहीं। (हवाशी सल्फ़िया, पारा नं. 5 पेज नं. 443)

1221. हमसे इस्हाक़ बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा कि हमसे रौह बिन इब्बादा ने, कहा कि हमसे उमर ने जो सईद के बेटे हैं, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ अज़र की नमाज़ पढ़ी, आप (ﷺ) सलाम फेरते ही बड़ी तेज़ी से उठे और अपनी एक बीवी के हुज़रे में तशरीफ़ ले गये, फिर बाहर तशरीफ़ लाए। आपने अपनी जल्दी पर इस ता'जुब व हैरत को महसूस किया जो इब्बादा के चेहरे से ज़ाहिर हो रहा था, इसलिये आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ में मुझे सोने का एक डला याद आ गया जो हमारे पास तक्सीम से बाक़ी रह गया था। मुझे बुरा मा'लूम हुआ कि हमारे पास वो शाम तक या रात तक रह जाए। इसलिये मैंने उसे तक्सीम करने का हुक्म दे दिया।

(राजेअ : 851)

١٢٢١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَوْجٌ قَالَ حَدَّثَنَا حُمُرٌ هُوَ ابْنُ سَعْدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ الْحَارِثِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَصْرَ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ سَرِيعًا وَدَخَلَ عَلَى بَعْضِ بَنَاتِهِ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأَى مَا لِي وَجُوهُ الْقَوْمِ مِنْ تَعَجُّبِهِمْ لِسُرْعَتِهِ فَقَالَ: ((ذَكَرْتُ - وَأَنَا فِي الصَّلَاةِ - يَوْمًا جِئْنَا لَكَرْهَتٍ أَنْ يُنْسِيَ - أَوْ يَنْتِ - جِئْنَا، فَكَلَمْتُ بِقِسْمَيْهِ)). [راجع: ٨٥١]

नमाज़ में आँहज़रत (ﷺ) को सोने का बक़ाया छला तक्सीम के लिये याद आ गया यहीं से बाब का मतलब प्राबित होता है।

1222. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैब्र ने उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने और उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुदैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती तो शैतान पीठ मोड़ कर हवा ख़ारिज करता हुआ भाग जाता है ताकि अज़ान न सुन सके। जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है तो मर्दूद फिर आ जाता है और जब जमाअत खड़ी होने लगती है (और तक्बीर कही जाती है) तो फिर भाग जाता है। लेकिन जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है, फिर आ जाता है और आदमी के दिल में बराबर वस्वसा पैदा करता रहता है। कहता है कि (फलों-फलों बात) याद कर। कमबख़्त वो बातें याद दिलाता है जो उस नमाज़ी के ज़हन में भी न थी। इस तरह नमाज़ी को ये भी याद नहीं रहता कि उसने कितनी रकअतें पढ़ी है। अब सलमा अब्दुर्रहमान न

١٢٢٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ:
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرٍ عَنْ الْأَوْحَجِ قَالَ:
قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ
اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا أَدْنَى بِالصَّلَاةِ أَذْهَرَ
الشَّيْطَانَ لَهُ حُرَاطٌ حَتَّى لَا يَسْمَعَ
التَّائِبِينَ، فَإِذَا سَكَتَ الْمُرْذَنُّ أَقْبَلَ، فَإِذَا
تَوَبَّ أَذْهَرَ، فَإِذَا سَكَتَ أَقْبَلَ، فَلَا يَزَالُ
بِالْمَرْءِ يَقُولُ لَهُ الْذِّكْرُ مَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ
حَتَّى لَا يَتَذَكَّرَ كَيْفَ صَلَّى)). قَالَ أَبُو
سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: إِذَا قَعَلَ أَحَدُكُمْ
ذَلِكَ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ قَاعِدٌ،

कहा कि जब कोई ये भूल जाए (कि कितनी रकअतें पढ़ी हैं) तो बैठे-बैठे (सहव के) दो सज्दे कर ले। अबू सलमा ने ये अबू हुरैरह (रजि.) से सुना था। (राजेअ : 607)

وَسَمِعَهُ أَبُو سَلَمَةَ مِنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. [راجع: ٦٠٨]

तशरीह: मा'लूम हुआ कि नमाज़ में शैतान वस्वसों के लिये पूरी कोशिश करता है, इसलिये इस बारे में इंसान मजबूर है। पस जब नमाज़ के अंदर शैतानी वस्वसों की वजह से ये न मा'लूम रहे कि कितनी रकअतें पढ़ चुका है तो अपने यकीन पर भरोसा रखे, अगर उसके फ़हम में नमाज़ पूरी न हो तो पूरी करके सहव के दो सज्दे कर ले। (कस्तलानी रह.)

1223. हमसे मुहम्मद बिन मुसज़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्मन बिन उमर ने कहा कि मुझे इब्ने अबी ज़िब ने ख़बर दी, उन्हें सईद मख़बरी ने कि अबू हुरैरह (रजि.) ने कहा लोग कहते हैं कि अबू हुरैरह बहुत ज़्यादा हदीषें बयान करता है (और हाल ये है कि) मैं एक शख्स से एक मर्तबा मिला और उससे मैंने (बतारे इम्तिहान) दरयाफ़्त किया कि गुज़िश्ता रात नबी करीम (ﷺ) ने इशा में कौन-कौन सी सूरतें पढ़ी थीं? उसने कहा कि मुझे नहीं मा'लूम। मैंने पूछा कि तुम नमाज़ में शरीक थे? कहा कि हाँ शरीक था। मैंने कहा लेकिन मुझे तो याद है कि आप (ﷺ) ने फ़लाँ-फ़लाँ सूरतें पढ़ी थीं।

١٢٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا هُثَيْبُ بْنُ غَيْرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو ذُنَيْبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبُرِيِّ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: ((يَقُولُ النَّاسُ: أَكْثَرَ أَبُو هُرَيْرَةَ. فَلَقِيتُ رَجُلًا فَقُلْتُ: بِمَ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْبَارِحَةَ لِي الْخَمَةِ؟ فَقَالَ: لَا أَذْرِي. فَقُلْتُ: لِمَ تَشْهَدُنَا؟ قَالَ: بَلَى. قُلْتُ: لَكِنْ أَنَا أَذْرِي، قَرَأَ سُورَةَ كَذًا وَكَذَا)).

तशरीह: इस रिवायत में अबू हुरैरह (रजि.) ने उसकी वजह बताई है कि मैं अह्लादीष दूसरे बहुत से सहाबा के मुकाबले में ज़्यादा क्यूँ बयान करता हूँ। उनके कहने का मतलब ये है कि आप (ﷺ) की बातों को और दूसरे अज़माल को याद रखने की कोशिश दूसरों के मुकाबले में ज़्यादा करता था। एक रिवायत में आपने ये भी फ़र्माया था कि मैं हर वक़्त आँहुज़ूर (ﷺ) के साथ रहता था, मेरे अहलो-अयाल नहीं थे, खाने कमाने की फ़िक्र नहीं थी। 'सुफ़फ़ा' में रहने वाले ग़रीब सहाबा के साथ मस्जिदे नबवी में दिन गुज़रता था और आँहुज़ूर (ﷺ) का साथ नहीं छोड़ता था। इसलिये मैंने अह्लादीष आपसे ज़्यादा सुनीं और चूँकि महफूज़ भी रखीं इसलिये उन्हें बयान करता हूँ। ये हदीष किताबुल इल्म में पहले भी आ चुकी है। वहीं इसकी बहष का मौक़ा भी था। इन अह्लादीष को इमाम बुखारी (रह.) ने एक ख़ास इनवान के तहत इसलिये जमा किया है कि वो बताना चाहते हैं कि नमाज़ पढ़ते हुए किसी चीज़ का ख़याल आने या कुछ सोचने से नमाज़ नहीं टूटती। ख़यालात और तफ़र्रकात ऐसी चीज़ें हैं जिनसे बचना मुम्किन नहीं होता। लेकिन हालात और ख़यालात की नोइयत के फ़र्क का यहाँ भी लिहाज़ ज़रूर होगा। अगर उमूरे आख़िरत के बारे में ख़यालात नमाज़ में आएँ तो वो दुनियावी उमूर का बनिस्बत नमाज़ की ख़ूबियों पर कम अफ़र अंदाज़ होंगे। (तफ़हीमुल बुखारी) बाब और हदीष में मुताबक़त ये है कि वो सहाबी नमाज़ में और ख़तरात में मुस्तग़ाक़ रहता था। फिर भी वो इज़ाद-ए-सलात के साथ मामूर नहीं हुआ।

22. किताबुस्सह्व

सह्व का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : अगर चार रकअत नमाज़ में पहला

क़अदा

۱ - بَابُ مَا جَاءَ فِي السَّهْوِ إِذَا قَامَ

مِنْ رَكَعَتِي الْفَرِيطَةِ

न करे और भूले से उठ खड़ा हो तो सुज्द-ए-कर

सह्व भूल-चूक से होने वाली ग़फलतों को कहते हैं। उसके बारे में इलमा-ए-मज़ाहिब का इख़ितलाफ़ है। शाफ़िइया के नज़दीक सह्व के सारे सज्दे मसनून हैं और मालिकिया ख़ास नुक्सान के सुजूदे सह्व को वाजिब कहते हैं और हुनाबिला अरकान के सिवा और वाजिबात के तर्क पर वाजिब कहते हैं और सुनन क़ौलिया के तर्क पर ग़ैर वाजिब। नीज़ ऐसे क़ौल या फ़ेअल के ज़्यादा पर वाजिब जानते हैं जिसके अम्दन करने से नमाज़ बातिल हो जाती है और हन्फ़िया के यहाँ सह्व के सब सज्दे वाजिब हैं (फ़तहुल बारी)। भूल-चूक इंसानी फ़ितरत में दाख़िल है इसलिये नमाज़ में सह्व के मसाइल का बयान करना ज़रूरी हुआ।

हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब (रह.) फ़र्माते हैं। व सन्न रसूलुल्लाहि (ﷺ) फीमा इज़ा कसरल्इन्सानु फ़ी सलातिही अंध्यस्जुद सज्दतैनि तदारकन लिमा फ़रत फ़फीहि शिब्हुल्कज़ा व शिब्हुल्कफ़रति वल्मवाजिउल्लती ज़हर फीहन्नस्सु अर्बअतुन अल्अव्वलु क़ौलुहु (ﷺ) इज़ा शक़ अहदुकुम फ़ी सलातिही व लम यदरि कम सल्ला ब़लाघ्न औ अर्बअन फ़ल्थतरिहिश्शक़ल्वल्थब्न अला मस्तैक़न धुम्प यस्जुद सज्दतैनि क़ब्ल अंध्युसल्लिम या'नी नबी (ﷺ) ने इस सूरत में कि इंसान अपनी नमाज़ में कोई क़सूर करे दो सज्दे करने का हुक्म दिया करते थे ताकि उस कोताही की तलाफी हो जाए। पस उसको क़ज़ा के साथ भी मुनासबत है और कफ़ारा के साथ भी और वो मवाज़ेअ जिनमें नस्से हदीष से सज्दा करना प्राबित है, चार हैं। अव्वल ये कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें कोई नमाज़ में शक़ करे और न जाने तीन या चार कितनी रकअतें पढ़ी हैं तो वो शक़ दूर करके, जिस मिक्दार पर यक्तीन हो सके उस पर नमाज़ की बिना कर ले। फिर सलाम फेरने से पेशतर दो सज्दे कर ले। पस अगर उसने पाँच रकअत पढ़ी हैं तो वो उन दो सज्दों से उसको शिफ़ा कर लेगा और उसने पढ़कर चार को पूरा किया है तो ये दोनों सज्दे शैतान के लिये सरज़निस होंगे और नेकी में ज़्यादाती होगी और स्कूअ व सुजूद में शक़ करना भी उसी किस्म से है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा)

1224. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, हमको इमाम मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब

۱۲۲۴ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ

قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ ابْنِ

ने, उन्हें अब्दुर्रहमान अअरज ने और उनसे अब्दुर्रहमान बिन बुहैना (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी (चार रकअत) नमाज़ की दो रकअत पढ़ाने के बाद (क्रअद-ए-तशह्हुद के बगैर) खड़े हो गये। जब आप नमाज़ पूरी कर चुके तो हम सलाम फेरने का इन्तिज़ार करने लगे। लेकिन आप ने सलाम से पहले बैठे-बैठे अल्लाहु-अक्बर कहा और सलाम ही से पहले दो सज्दे बैठे-बैठे किये फिर सलाम फेरा। (राजेअ : 829)

1225. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद अन्सारी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुर्रहमान अअरज ने ख़बर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन बुहैना (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जुहर की दो रकअत पढ़ने के बाद बैठे बगैर खड़े हो गये और क्रअदा ऊला नहीं किया। जब नमाज़ पूरी कर चुके तो दो सज्दे किये। फिर उनके बाद सलाम फेरा। (राजेअ : 829)

شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُحَيْنَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: ((صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رَكَعَتَيْنِ مِنْ بَعْضِ الصَّلَوَاتِ، ثُمَّ قَامَ فَلَمْ يَجْلِسْ، فَلَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ. فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ وَنَظَرْنَا تَسْلِيمَهُ كَبَّرَ قَبْلَ التَّسْلِيمِ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ، ثُمَّ سَلَّمَ)). [راجع: ٨٢٩]

١٢٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُحَيْنَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: ((إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَامَ مِنَ التَّيْنِ مِنَ الظُّهْرِ لَمْ يَجْلِسْ بَيْنَهُمَا. فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ بَعْدَ ذَلِكَ)).

[راجع: ٨٢٩]

इसमें उन पर रद्द है जो कहते हैं कि सह्य के सब सज्दे सलाम के बाद हैं। (फ़तहूल बारी)

बाब 2 : अगर किसी ने पाँच रकअत नमाज़ पढ़ ली तो क्या करे?

٢- بَابُ إِذَا صَلَّى خَمْسًا

तशरीह : शायद मक़सूद इमाम बुखारी (रह.) का ये है कि अगर नमाज़ में कोई बात रह जाए तो सलाम से पहले सज्द-ए-सह्य करे जिस तरह कि पूरा ऊपर गुज़रा और अगर नमाज़ में कुछ ज़्यादाती हो जाए जिस तरह कि उस बाब की हदीष में है तो सलाम के बाद सज्द-ए-सह्य करे। मज्नी, मालिक, अबू प्रार इसी के क़ाइल हैं। इब्ने अब्दुल बर ने भी इस क़ौल को औला बतलाया है और हन्फ़िया अगरचे सलाम से पहले सज्द-ए-सह्य करना औला नहीं कहते लेकिन जवाज़ के वो भी क़ाइल हैं। साहिबे हिदाया ने इसकी तस्रीह की है। ख़ताबी ने कहा कि ज़्यादाती और नुक़सान का फ़र्क करना ये चंदों सहीह नहीं क्योंकि जुलयदन की हदीष में बावजूद नुक़सान के सज्दे सलाम के बाद किये। कुछ इलामा ने कहा कि इमाम अहमद का तरीक़ा सबसे अक्वा है क्योंकि वो कहते हैं कि हर एक हदीष को उसके मद्दल में इस्तेमाल करना चाहिये और जिस सूत में कोई हदीष वारिद नहीं हुई उसमें सलाम से पहले सज्द-ए-सह्य करे और अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये हदीष मरवी न होती तो तेरे नज़दीक सब सज्दे सलाम से पहले होते क्योंकि ये भी शान नमाज़ से है। पस इनका बजा लाना सलाम से पहले ठीक है। (फ़तह)

1226. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हक़म ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अलक़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्क़द ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुहर में पाँच रकअत पढ़ लिये। इसलिये

١٢٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ

आपसे पूछा गया कि क्या नमाज़ की रकअतें ज्यादा हो गई हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या बात है? कहने वाले ने कहा आप (ﷺ) ने पाँच रकअतें पढ़ी हैं। इस पर आप (ﷺ) ने सलाम के बाद दो सज्दे किये। (राजेअ: 401)

बाब 3 : दो रकअतें या तीन रकअतें पढ़कर सलाम फेर दे तो नमाज़ के सज्दों की तरह या उनसे लम्बे सह्व के दो सज्दे करना

1227. हमसे आदम बिन अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जुहर या अस्र की नमाज़ पढ़ाई जब आप (ﷺ) ने सलाम फेरा तो जुल्यदैन कहने लगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या नमाज़ की रकअतें घट गई हैं? (क्योंकि आप (ﷺ) ने भूलकर सिर्फ़ दो रकअतों पर सलाम फेर दिया था) नबी करीम (ﷺ) ने अपने अज़हाब से दरयाफ़्त किया कि क्या ये सच कहते हैं? सहाबा ने कहा जी हाँ! इसने सहीह कहा है। तब नबी करीम (ﷺ) ने दो रकअत और पढ़ाई फिर दो सज्दे किये। सअद ने बयान किया कि उर्वा बिन जुबैर को मैंने देखा कि आपने मरिब की दो रकअतें पढ़ कर सलाम फेर दिया और बातें भी कही। फिर बाक़ी एक रकअत पढ़ी और दो सज्दे किये और फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने इसी तरह किया था।

बाब 4 : सह्व के सज्दों के बाद फिर तशह्हुद न पढ़े

और अनस (रज़ि.) और हसन बसरी ने सलाम फेरा (या'नी सज्द-ए-सह्व के बाद) और तशह्हुद नहीं पढ़ा और क़तादा ने कहा कि तशह्हुद न पढ़े

1228. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब बिन अबी तमीमा सुख़ितयानी ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद

ﷺ صَلَّي الطُّهْرَ خَمْسًا، فَقِيلَ لَهُ: أَزِيدُ فِي الصَّلَاةِ؟ فَقَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالَ: ((صَلَّيْتُ خَمْسًا، فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ بَعْدَ مَا سَلَّمَ)). [راجع: 401]

3- بَابُ إِذَا سَلَّمَ فِي رَكَعَتَيْنِ أَوْ فِي ثَلَاثٍ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ مِثْلَ سُجُودِ الصَّلَاةِ أَوْ أَطْوَلَ

1227- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّى بِنَا النَّبِيُّ ﷺ الطُّهْرَ - أَوْ الْقَصْرَ - فَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ: الصَّلَاةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ انْقَصَتْ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لَا مَصْحَابَهُ: ((أَحَقُّ مَا يَقُولُ؟)) قَالُوا: نَعَمْ. فَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ أُخْرَتَيْنِ، ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ)) قَالَ سَعْدٌ: وَرَأَيْتُ غُرُورَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ صَلَّى مِنَ الْمَغْرِبِ رَكَعَتَيْنِ، فَسَلَّمَ وَتَكَلَّمَ، ثُمَّ صَلَّى مَا بَقِيَ وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ وَقَالَ: هَكَذَا فَعَلَّ النَّبِيُّ ﷺ.

4- بَابُ مَنْ لَمْ يَتَشَهَّدْ فِي سَجْدَتَيْ السُّهُوِ

وَسَلَّمَ أَنَسُ وَالْحَسَنُ وَلَمْ يَتَشَهَّدَا. وَقَالَ قَتَادَةُ: لَا يَتَشَهَّدُ

1228- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ أَيُّوبَ بْنِ أَبِي تَيْمَةَ السَّخِّيَّانِي عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ

बिन सीरीन ने और उन्हें हजरत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दो रकअत पढ़कर उठ खड़े हुए तो जुल्यदैन ने पूछा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या नमाज़ कम कर दी गई है? या आप भूल गये हैं? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों से पूछा कि क्या जुल्यदैन सच कहते हैं। लोगों ने कहा जी हाँ! ये सुनकर रसूलुल्लाह खड़े हुए और दो रकअत जो रह गई थीं उनको पढ़ा फिर सलाम फेरा, फिर अल्लाहु-अक्बर कहा और अपने सज्दे की तरह (या'नी नमाज़ के मा'मूली सज्दे की तरह) सज्दा किया या उससे लम्बा फिर सर उठाया।

(राजेअ: 482)

سَيَرَيْنَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: (أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ انْصَرَفَ مِنَ اثْنَيْنِ، فَقَالَ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ أَقْصَرَتِ الصَّلَاةُ أَمْ نَسِيتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: (أَصَدَقَ ذُو الْيَدَيْنِ؟ فَقَالَ النَّاسُ: نَعَمْ. فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَصَلَّى اثْنَتَيْنِ أُخْرَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ، ثُمَّ كَثُرَ فَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ. ثُمَّ رَفَعَ)).

[راجع: ٤٨٢]

तशरीह: दूसरे मुकाम पर हजरत इमाम बुखारी ने दूसरा तरीका जिक्र किया है जिसमें दूसरा सज्दा भी मज़कूर है लेकिन तशहूद मज़कूर नहीं तो मा'लूम हुआ कि सज्द-ए-सहव के बाद तशहूद नहीं है। चूनाचे मुहम्मद बिन सीरीन से महफूज़ है और जिस हदीष में तशहूद मज़कूर है उसको बैहकी और इब्ने अब्दुल बर वगैरह ने जर्इफ़ कहा है। (खुलासा फ़तहूल बारी)

हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अलक्रमा ने, उन्होंने कहा कि मैंने मुहम्मद बिन सीरीन से पूछा कि सज्द-ए-सहव में तशहूद है? आपने जवाब दिया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीष में तो इसका जिक्र नहीं है।

حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ عُلْقَمَةَ قَالَ: ((قُلْتُ لِمُحَمَّدٍ: فِي سَجْدَتَيْ السُّهُوِ تَشَهُدٌ؟ قَالَ: لَيْسَ فِي حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ)).

बाब 5 : सहव के सज्दों में तक्बीर कहना

इसमें इख़ितलाफ़ है कि नमाज़ से सलाम फेरकर जब सहव के सज्दे को जाएं तो तक्बीर-तहरीमा कहें या सज्दे की तक्बीर काफ़ी है। जुम्हूर के नज़दीक यही काफ़ी है और अहादीष का ज़ाहिर भी यही है। (फ़तहूल बारी)

1229. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन इब्नाहीम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने तीसरे पहर की दो नमाज़ों (जुहर और अज़्र) में से कोई नमाज़ पढ़ी। मेरा ग़ालिब गुमान है कि वो अज़्र ही की नमाज़ थी। इसमें आप (ﷺ) ने दो रकअतों पर सलाम फेर दिया। फिर आप एक पेड़ के तने से जो मस्जिद की अगली स़फ़ में था, टेक लगाकर खड़े हो गए। आप अपना हाथ उस पर रखे हुए थे। हाज़िरीन में अबूबक्र (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) भी थे, लेकिन उन्हें भी कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई।

١٢٢٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ إِحْدَى صَلَاتِي الْغَسَقِ - قَالَ مُحَمَّدٌ: وَأَكْثَرُ طَيِّئًا أَنَّهَا الْغَضَرُ - رَكَعَتَيْنِ، ثُمَّ سَلَّمَ، ثُمَّ قَامَ إِلَى خَشَبَةٍ فِي مَقْدَمِ الْمَسْجِدِ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهَا، وَفِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَهَابَا أَنْ

जो लोग (जल्दबाज़ क्रिस्म के) लोग नमाज़ पढ़ते ही मस्जिद से निकल जाने के आदी थे, वो बाहर जा चुके थे। लोगों ने कहा, क्या नमाज़ की रकअतें कम हो गई? एक शख्स जिन्हें नबी करीम (ﷺ) जुल्यदैन् कहते थे। वो बोले या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप भूल गये या नमाज़ में कमी हो गई? और हज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, न मैं भूला हूँ और न नमाज़ की रकअतें कम हुई हैं। जुल्यदैन् बोले नहीं आप भूल गये हैं। इसके बाद आप (ﷺ) ने दो रकअतें और पढ़ीं और सलाम केरा, फिर तक्बीर कही और मा'मूल के मुताबिक़ या उससे भी तवील सज्दा किया। जब सज्दे से सर उठाया तो फिर तक्बीर कही और फिर तक्बीर कहकर सज्दे में गये। ये सज्दा भी मा'मूल की तरह या उससे तवील था। इसके बाद आप (ﷺ) ने सर उठाया और तक्बीर कही। (राजेअ: 482)

1230. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैप्र बिन सअद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अअरज ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुहैना असदी ने जो बनू अब्दुल मुत्तलिब के हलीफ़ थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जुहर की नमाज़ में क़अदा ऊला किये बग़ैर खड़े हो गये। हालाँकि उस वक़्त आपको बैठना चाहिये था। जब आपने नमाज़ पूरी की तो आपने बैठे-बैठे ही सलाम से पहले दो सज्दे सह्य किये और हर सज्दे में अल्लाहु-अक्बर कहा। मुक्तादियों ने भी आपके साथ ये दो सज्दे किये। आप बैठना भूल गये थे। इसलिये ये सज्दे उसी के बदले में किये थे। इस रिवायत की मुताबअत इब्ने जुरैज ने इब्ने शिहाब से तक्बीर के ज़िक्र में की है।

बाब 6 : अगर किसी नमाज़ी को ये याद न रहे कि तीन रकअतें पढ़ी है या चार तो वो सलाम से पहल बैठे-बैठे ही दो सज्दे कर ले

1231. हमसे मआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन अबी अब्दुल्लाह दस्तवाई ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़थीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

يُكَلِّمُهُ، وَخَرَجَ سَرْعَانَ النَّاسِ، فَقَالُوا: أَقْصَرَتِ الصَّلَاةُ؟ وَرَجُلٌ يَذْغُوهُ النَّبِيُّ ﷺ دُوَ الْبَيْنَيْنِ فَقَالَ: آتَيْتُ أَمْ قَصُرَتْ؟ فَقَالَ: لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تَقْصُرْ. قَالَ: بَلَى لَدُنِّي نَسِيتُ. فَصَلَّى رَكَعَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، ثُمَّ كَبَّرَ فَسَجَدَ بِفُلِّ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَكَبَّرَ، ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ فَكَبَّرَ فَسَجَدَ بِفُلِّ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ).

[راجع: 482]

١٢٣٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُعَيْنَةَ الْأَسَدِيِّ خَلِيفَةِ أَبِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَامَ فِي صَلَاةِ الظُّهْرِ وَعَلَيْهِ جُلُوسٌ. فَلَمَّا أَتَمَّ صَلَاتَهُ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ فَكَبَّرَ فِي كُلِّ سَجْدَةٍ وَهُوَ جَالِسٌ قَبْلَ أَنْ يُسَلَّمَ، وَسَجَدَهُمَا النَّاسُ مَعَهُ، فَكَانَ مَا نَسِيَ مِنَ الْجُلُوسِ)). فَأَتَتْهُ ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ فِي التَّكْبِيرِ.

٦- بَابُ إِذَا لَمْ يَذْكُرْكُمْ صَلَّى: فَلَا تُأْوِزُ بَعْدَهُ؟ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ

١٢٣١- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ لَعْلَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الدُّسْتَوَالِيُّ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ

फर्माया कि जब नमाज़ के लिये अज़ान होती है तो शैतान हवा खारिज करता हुआ भागता है, ताकि अज़ान न सुने। जब अज़ान पूरी हो जाती है तो फिर आ जाता है। फिर जब इक्रामत होती है तो फिर भाग पड़ता है। लेकिन इक्रामत खत्म होते ही फिर आ जाता है और नमाज़ी के दिल में तरह-तरह के वस्वसे डालता है और कहता है कि फलों-फलों बात याद कर। इस तरह वो बातें याद दिलाता है जो उसके ज़हन में नहीं थी। लेकिन दूसरी तरफ़ नमाज़ी को ये भी याद नहीं रहता कि कितनी रकअतें उसने पढ़ी हैं। इसलिये अगर किसी को ये याद न रहे कि तीन रकअत पढ़ी या चार तो बैठे ही बैठे सह्य के दो सज्दे कर ले। (राजेअ: 608)

أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «إِذَا تَوَدَّى بِالصَّلَاةِ أَذْبَرَ الشَّيْطَانُ وَلَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لَا يَسْمَعَ الْأَذَانَ، فَإِذَا قُضِيَ الْأَذَانُ أَقْبَلَ، فَإِذَا تَوَدَّى بِهَا أَذْبَرَ، فَإِذَا قُضِيَ التَّوْبِيعُ أَقْبَلَ حَتَّى يَخْطِرَ بَيْنَ الْمَرْءِ وَنَفْسِهِ يَقُولُ: أَذْكَرُ كَذَا وَكَذَا - مَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ حَتَّى يَظُلَّ الرَّجُلُ إِنْ يَذْرِي كَمْ صَلَّى. فَإِذَا لَمْ يَذْرِ أَحَدُكُمْ كَمْ صَلَّى - ثَلَاثًا أَوْ أَرْبَعًا - فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ».

[راجع: ٦٠٨]

तशरीह: या'नी जिसको इस क़दर बेअंदाज़ वस्वसे पड़ते हों उसके लिये सिर्फ़ सह्य के दो सज्दे काफ़ी हैं। हसन बज़री और सलफ़ का एक ग़िरोह उसी तरफ़ गये हैं कि इस हदीष से क़रीब वसाविस आदमी मुराद है और इमाम बुखारी (रह.) के बाब से भी यही मा'लूम होता है (लिल अल्लामतुल ग़ज़नवी) और इमाम मालिक (रह.), शाफ़िई (रह.) और अहमद (रह.) इस हदीष को मुस्लिम वग़ैरह की हदीष पर महमूल करते हैं तो अबू सईद (रज़ि.) से मरवी है कि अगर शक दो या तीन में हैं तो दो समझे और अगर तीन या चार में हैं तो तीन समझे। बक्रिया को पढ़कर सह्य के दो सज्दे सलाम से पहले दे दे। (नसरुल बारी, जिल्द नं. 1, पेज नं. 447)

बाब 7 : सज्द-ए-सह्य फ़र्ज और नफ़्ल दोनों नमाज़ों में करना चाहिये और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने वित्र के बाद ये दो सज्दे किये

1232. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम में से जब कोई नमाज़ पढ़ने के लिये खड़ा होता है तो शैतान आकर उसकी नमाज़ में शुब्हा पैदा कर देता है फिर उसे ये भी याद नहीं रहता कि कितनी रकअतें पढ़ीं। तुम में से जब किसी को ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो बैठे-बैठे दो सज्दे कर ले।

(राजेअ: 608)

٧- بَابُ السَّهْوِ فِي الْفَرْضِ وَالنَّفْلِ وَمَسْجِدُ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا سَجْدَتَيْنِ بَعْدَ وَتَرِهِ

١٢٣٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِنْ أَحَدُكُمْ إِذَا قَامَ يُصَلِّي جَاءَ الشَّيْطَانُ فَلَيْسَ عَلَيْهِ حَتَّى لَا يَذْرِي كَمْ صَلَّى، فَإِذَا وَجَدَ ذَلِكَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ جَالِسٌ».

[راجع: ٦٠٨]

तशरीह :

या'नी नफ़ल नमाज़ में भी फ़र्ज़ की तरह सज्द-ए-सहव करना चाहिये या नहीं। फिर इब्ने अब्बास (रज़ि.) के फ़ेअल और हदीषे मज़कूर से पाबित किया कि सज्द-ए-सहव करना चाहिये। इसमें उन पर रद्द है जो इस बारे में फ़र्ज़ और नफ़ल नमाज़ों का इम्तियाज़ करते हैं।

बाब 8 : अगर नमाज़ी से कोई बात करे और वो सुनकर हाथ के इशारे से जवाब दे तो नमाज़ फ़ासिद न होगी

۸- بَابُ إِذَا كَلَّمَ وَهُوَ يُصَلِّي فَأَشَارَ بِيَدِهِ وَاسْتَمَعَ

۱۲۳۳- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ كُرَيْبٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ وَالْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرُفَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنُ أَزْهَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَرْسَلُوهُ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَقَالُوا: اقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلَامَ مِنَّا جَمِيعًا وَسَلِّمْهَا عَنْ الرَّكَعَتَيْنِ بَعْدَ صَلَاةِ الْفَصْرِ وَلَقِلَّ لَهَا: إِنَّا أَخْبَرْنَا أَنَّكَ تُصَلِّيهِمَا، وَقَدْ بَلَّغْنَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْهَا، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَكُنْتُ أَضْرِبُ النَّاسَ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ عَنْهَا. فَقَالَ كُرَيْبٌ: فَدَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَبَلَّغْتُهَا مَا أَرْسَلُونِي، فَقَالَتْ: سَلْ أُمَّ سَلَمَةَ. فَخَرَجْتُ إِلَيْهِنَّ فَأَخْبَرْتُهُمْ بِقَوْلِهَا، فَوَدُّونِي إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ بِوَفَلٍ مَا أَرْسَلُونِي بِهِ إِلَى عَائِشَةَ. فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَنْهَى عَنْهَا، ثُمَّ رَأَيْتُهُ يُصَلِّيهِمَا حِينَ صَلَّى الْفَصْرَ، ثُمَّ دَخَلَ عَلَيَّ وَعِنْدِي نِسْوَةٌ مِنْ بَنِي حَرَامٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ الْجَارِيَةَ فَقُلْتُ: قَوْمِي بِخَبَرِ قَوْلِي لَكَ: تَقُولُ لَكَ أُمُّ سَلَمَةَ يَا رَسُولَ اللَّهِ سَمِعْتُكَ تَنْهَى عَنْ هَاتَيْنِ وَأَرَاكَ تُصَلِّيهِمَا، فَإِنْ أَشَارَ بِيَدِهِ

1233. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, कहा कि मुझे अम्र बिन हारिष ने खबर दी, उन्हें बुकैर ने, उन्हें कुरैब ने कि इब्ने अब्बास, मिस्वर बिन मखरमा और अब्दुर्रहमान बिन अज़हर (रज़ि.) ने उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) की खिदमत में भेजा और कहा हज़रत आइशा (रज़ि.) से हम सबका सलाम कहना और उसके बाद अम्र के बाद की दो रकअतों के बारे में दरयाफ़्त करना। उन्हें ये भी बता देना कि हमें खबर हुई है कि आप ये दो रकअतें पढ़ती हैं। हालाँकि हमें आँहज़रत (ﷺ) से ये हदीष पहुँची है कि नबी करीम (ﷺ) ने इन दो रकअतों से मना किया है और इब्ने अब्बास ने कहा कि मैंने उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) के साथ इन रकअतों के पढ़ने पर लोगों को मारा भी था। कुरैब ने बयान किया कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और पैग़ाम पहुँचाया। इसका जवाब आपने ये दिया कि उम्मे सलमा (रज़ि.) से इसके मुता'ल्लिक दरयाफ़्त करूँ। चुनौचे मैं उन हज़रत की खिदमत में वापस हुआ और आइशा (रज़ि.) की गुप्तगू नक़ल कर दी। उन्होंने मुझे उम्मे सलमा (रज़ि.) की खिदमत में भेजा, उन्होंने पैग़ामात के साथ जिनके साथ हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास भेजा था। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ये जवाब दिया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है कि आप अम्र के बाद नमाज़ पढ़ने से रोकते थे, लेकिन एक दिन मैंने देखा कि अम्र के बाद आप (ﷺ) खुद ये दो रकअतें पढ़ रहे हैं। इसके बाद आप मेरे घर तशरीफ़ लाए। मेरे पास अन्सार के क़बीला बनू हुराम की चन्द औरतें बैठी हुई थीं इसलिये मैंने एक बाँदी को आप (ﷺ) की खिदमत में भेजा। मैंने उससे कह दिया था कि वो आपके बाज़ू में होकर ये पूछे कि उम्मे सलमा कहती है, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप तो इन दो रकअतों से मना किया करते थे, हालाँकि मैं देख रही हूँ कि आप खुद उन्हें

पढ़ते हैं। अगर आँहजरत हाथ से इशारा करें तो तुम पीछे हट जाना। बाँदी ने फिर इसी तरह किया और आप (ﷺ) ने हाथ से इशारा किया तो वो पीछे हट गई। फिर जब आप फ़ारसि हुए तो (आप ﷺ ने उम्मे सलमा से) फ़र्माया कि ऐ अबू उमर्या की बेटी! तुमने अम्र के बाद की दो रकअतों के मुताल्लिक पूछा, बात ये है कि मेरे पास अब्दे कैस के कुछ लोग आ गये थे और उनके साथ बात करने में जुहर के बाद की दो रकअतें नहीं पढ़ सका था, सो ये वही दो रकअतें हैं।

(दीगर मक़ाम : 7380)

नमाज़ी से कोई बात करे और वो सुनकर इशारा से कुछ जवाब दे दे तो नमाज़ फ़ासिद न होगी। जैसा कि खुद नबी करीम (ﷺ) का जवाबी इशारा इस हदीष से षाबित है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के फ़ेअल से हस्बे मौक़ा किसी ख़िलाफ़े शरीअत काम पर मुनासिब तौर पर मारना और सख़्ती से मना करना भी षाबित हुआ।

बाब 9 : नमाज़ में इशारा करना, ये कुरैब ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से नक़ल किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से

1234. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनहों ने कहा कि हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने, उनसे सहद बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर पहुँची कि अम्र बिन अौफ़ के लोगों में बाहम कोई झगड़ा पैदा हो गया है तो आप चन्द सहाबा (रज़ि.) के साथ मिलाप कराने के लिये वहाँ तशरीफ़ ले गये। रसूलुल्लाह (ﷺ) अभी मशगूल ही थे कि नमाज़ का वक़्त हो गया। इसलिये बिलाल (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अभी तक तशरीफ़ नहीं लाए, इधर नमाज़ का वक़्त हो गया है। क्या आप लोगों की इमामत करेंगे? उन्होंने कहा कि हाँ अगर तुम चाहो। चुनौचे हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने तक्बीर कही और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आगे बढ़कर तक्बीरे (तहरीमा) कही। इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी सफ़ों से गुज़रते हुए पहली

لَا تَأْخِرِي عَنْهُ. فَفَعَلَتِ الْجَارِيَةُ، فَاحْزَرَ يَدِيهِ، لَأَسْأَلَنَّ عَنْهُ. فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((يَا بِنْتُ أَبِي أُمَيَّةَ، سَأَلْتِ عَنِ الرُّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْفَصْرِ، وَإِنَّهُ أَتَانِي نَاسٌ مِنْ عَبْدِ الْقَيْسِ لَيَسْأَلُونِي عَنِ الرُّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ، فَهَذَا هَاتَانِ)).

[طرفه ي: ٤٣٧٠.]

٩- بَابُ الْإِشَارَةِ فِي الصَّلَاةِ قَالَه كُرَيْبٌ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

١٢٣٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَلَغَهُ أَنَّ بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ كَانَ يَتَنَهَمُونَ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّحُ بَيْنَهُمْ فِي أُنْثَى مَتْنَةٍ، فَحَسِبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَحَاطَتْ الصَّلَاةَ، فَجَاءَ بِلَالٌ إِلَى أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ، إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَدْ خَبَسَ، وَقَدْ حَاطَتْ الصَّلَاةَ، فَهَلْ لَكَ أَنْ تَوَدَّ النَّاسَ؟ قَالَ: نَعَمْ إِنْ جِئْتُ. فَأَتَاهُ بِلَالٌ، وَتَقَدَّمَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَكَبَّرَ

मफ़ में आकर खड़े हो गये। लोगों ने (हज़रत अबूबक्र रज़ि. को आगाह करने के लिये) हाथ पर हाथ बजाने शुरू कर दिये। लेकिन हज़रत अबूबक्र नमाज़ में किसी तरफ़ ध्यान नहीं दिया करते थे। जब लोगों ने बहुत तालियाँ बजाई तो आप मुतवज्जह हुए और क्या देखते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने इशारे से उन्हें नमाज़ पढ़ाते रहने के लिये कहा। इस पर अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) ने हाथ उठाकर अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और उल्टे पाँव पीछे की तरफ़ आकर मफ़ में खड़े हो गये। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया, लोगों! नमाज़ में एक अम्र पेश आया तो तुम लोग हाथ पर हाथ क्यों मारने लगे थे, ये दस्तक देना तो सिर्फ़ औरतों के लिये है। जिसको नमाज़ में कोई हादसा पेश आए तो सुब्हानल्लाह कहे, क्योंकि जब भी कोई सुब्हानल्लाह सुनेगा वो इधर-उधर करेगा और ऐ अबूबक्र! मेरे इशारे के बावजूद तुम लोगों को नमाज़ क्यों नहीं पढ़ाते रहे? अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि भला अबू क़हाफ़ा के बेटे की क्या मजाल थी कि रसूलुल्लाह के आगे नमाज़ पढ़ाए।

(राजेअ: 673)

لِلنَّاسِ، وَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَمْشِي فِي الصُّلُوفِ حَتَّى قَامَ فِي الصَّفِّ، فَأَعَدَّ النَّاسُ فِي الصَّفِّ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَا يَلْتَمِشُ فِي صَلَاتِهِ، فَلَمَّا أَكْثَرَ النَّاسُ الصَّفَّ، فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَأَشَارَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِأَمْرَةٍ أَنْ يُصَلِّيَ، فَرَفَعَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَدَيْهِ فَحَمِدَ اللَّهَ، وَرَجَعَ الْقَهْقَرَى/ وَزَادَهُ حَتَّى قَامَ فِي الصَّفِّ، فَظَنَّمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِنَّاسٍ، فَلَمَّا لَوَّحَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ، مَا لَكُمْ حِينَ تَأْتِكُمْ حَيَّةٌ فِي الصَّلَاةِ أَغْدَلْتُمْ فِي الصَّفِّ؟ إِنَّمَا الصَّفِّ لِلنِّسَاءِ، مَنْ نَابَهُ حَيَّةٌ فِي صَلَاتِهِ فَلْيَقُلْ سُبْحَانَ اللَّهِ، فَإِنَّهُ لَا يَسْمَعُهُ أَحَدٌ حِينَ يَقُولُ سُبْحَانَ اللَّهِ إِلَّا أَلْقَيْتُ. يَا أَيُّهَا بَكْرٍ، مَا مَنَعَكَ أَنْ تُصَلِّيَ لِلنَّاسِ حِينَ أَشْرُتَ إِلَيْنَا؟)) فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: يَا كَانَ يَنْهَى لِأَنْ أَبِي مُخَالَفَةٌ أَنْ يُصَلِّيَ بَيْنَ يَدَيِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.))

[راجع: ٦٨٤]

तशरीह: बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने खुद इशारा से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाते रहने का हुक्म फ़र्माया। इससे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी साबित हुई और ये भी जब आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी हयाते मुकद्दसा में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को अपना नाइब मुकर्रर फ़र्माया तो नबी (ﷺ) की वफ़ात के बाद आपकी ख़िलाफ़त बिलकुल हक़ बजानिब थी। बहुत अफ़सोस है उन लोगों पर जो आँखें बन्द करके सिर्फ़ तअस्सुब की बुनियाद पर ख़िलाफ़ते सिद्दीकी से बग़ावत करते हैं और जुम्हूर उम्मत का ख़िलाफ़ करके मअसियते रसूल (ﷺ) के मुर्तकिब होते हैं।

1235. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझ से अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उनसे सुफ़यान प्रोरी ने, उनसे हिशाम बिन ठव्वा ने, उनसे फ़ातिमा बिनते मुन्ज़िर ने और उसने अस्मा बिनते अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि

١٢٣٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الثَّوْرِيُّ عَنْ هِشَامٍ عَنْ لَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ قَالَتْ:

मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास गई। उस वक़्त वो खड़ी नमाज़ पढ़ रही थी। लोग भी खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने पूछा कि क्या बात हुई? तो उन्होंने सर से आसमान की तरफ़ इशारा किया। मैंने पूछा कि क्या कोई निशानी है? उन्होंने अपने सर से इशारा किया कि हाँ। (राजेअ: 76)

इस रिवायत से भी बहालते-नमाज़ हाथ से इशारा करना प्रबित हुआ।

1236. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके बाप इब्ना बिन जुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ौज: मुतहहरा हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बीमार थे। इसलिये आपने घर ही में नमाज़ पढ़ी, लोगों ने आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ी। लेकिन आप (ﷺ) ने उन्हें बैठने का इशारा किया और नमाज़ के बाद फ़र्माया कि इमाम इसलिये है कि उसकी पैरवी की जाए। इसलिये जब वो रुकूअ करे तो तुम भी रुकूअ और जब वो सर उठाए तो तुम भी सर उठाओ। (राजेअ: 688)

((وَدَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَهِيَ تُصَلِّيُ فَبَيَّنَتْ وَالنَّاسَ قِيَامًا، فَقُلْتُ: مَا شَأْنُ النَّاسِ؟ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا إِلَى السَّمَاءِ. فَقُلْتُ: آيَةٌ؟ فَقَالَتْ بِرَأْسِهَا أَيْ نَعَمْ)). [راجع: ٨٦]

١٢٣٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: ((صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِي نَبِيٍّ - وَهُوَ شَاكٍ - جَالِسًا، وَصَلَّى وَرَاءَهُ قَوْمٌ قِيَامًا، فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَنْ اجْلِسُوا. فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((لَمَّا جُعِلَ الْإِمَامُ يُرْتَمَى بِهِ، فَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوا)).

[راجع: ٦٨٨]

तशरीह: या'नी आँहज़रत (ﷺ) ने बहालते बीमारी बैठकर नमाज़ पढ़ी और मुक्तदियों की तरफ़ नमाज़ में इशारा फ़र्माया कि बैठ जाओ। उससे मा'लूम होता है कि जब इमाम बैठकर नमाज़ पढ़े तो मुक्तदी भी बैठकर नमाज़ पढ़ें लेकिन वफ़ात की बीमारी में आपने बैठकर नमाज़ पढ़ाई और सहाबा ने आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ी, इससे मा'लूम हुआ कि पहला अमर मन्सूख है। (किरमानी)

23. किताबुल जनाइज़

जनाजे के अहकामो-मसाइल

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तशरीह: जनाइज़ जनाजे की जमा है। जिसके मा'नी मय्यत के हैं। लफ़्ज़ जनाइज़ की वज़ाहत हज़रत मौलाना शेखुल हदीष अब्दुल्लाह मुबारकपुरी किताबुलजनाइज़ि बिफ़तहिलजीम जम्उ जनाज़तिन बिल्फ़तहि वल्कस्ति

वलकस् अफ्सहु इस्मुल्लिमय्यति फिन्नअशि औ बिल्फतहि इस्मुन लिजालिक व बिल्कस् इस्मुन्नअशि व अलैहिलमय्यतु व क्रील अक्सुहु व कील हुमा लुगतानि फीहिमा फइल्लम यकुन अलैहि मय्यतुन फहुव सरीरुन व नअशुन व हिय मिन जनजहू यजिजहू बाबु जरब इजा सतरहू जकरहू इब्नु फारिस व गेरूहू औरद किताबल्जनाइज बअदइस्सलाति कअक्प्ररिल्मुसन्नफ्रीन मिनल्मुहद्दीनीन वल्फुक्रहाइ लिअन्नल्लजी युफअलु बिल्मय्यति मिन गुस्तिन व तक्फ्रीनिन व गैर जालिक लहिमुस्सलातु अलैहि लिमा फीहा मिन फाइदतिहआइ लहु बिन्नजाति मिनल्अजाबि ला सीमा अजाबल्कब्रि अल्लजी सयुदफनु फीहि व क्रील लिअन्न लिइन्सानि हालतैनि हालतुल्हयाति व हालतुल्ममाति व यतअल्लकु बिकुल्लिमिन्हुमा अहकामल्इबादाति व अहकामल्मुआमलाति व अहम्मुल्इबादाति अस्सलातु फलम्मा फरगू मिन अहकामिल्मुतअल्लिकति अहयाइजकरूमा यतअल्लक बिल्मौता मिनस्सलाति व गैरहा क्रील शरअत सलातुल्जनाजति बिल्मदीनति फिस्सनतिलरूला मिनल्हिज्रति बिमक्कत कब्लल्हिज्रति लम युसल्ल अलैहि (मिआत, जिल्द 02, पेज 402)

खुलासा ये कि लफ़्ज़ जनाइज़ जीम के ज़बर के साथ जनाजे की जमा है और लफ़्ज़े जनाज़ा जीम के ज़बर और ज़ेर दोनों के साथ जाइज़ है मगर ज़ेर के साथ लफ़्ज़ जनाज़ा ज़्यादा फ़सीह है। मय्यत जब चारपाई या तख़्ता में छुपा दी जाए तो उस वक़्त लफ़्ज़ जनाज़ा मय्यत पर बोला जाता है। या ख़ाली उस तख़्ते पर जिस पर मय्यत को रखा जाए। जब इस पर मय्यत न हो तो वो तख़्ता या चारपाई है। ये बाब ज़रब यज़िबु से है जब मय्यत को छुपाले (अल्लामा शौकानी ने भी नैलुल औतार में तक्रीबन ऐसा ही लिखा है) मुहद्दीनीन और फ़ुक्रहा की अक़प्रियत नमाज़ के बाद ही किताबुल जनाइज़ लाते हैं, इसलिये कि मय्यत की तफ़्हीज़ व तक्फ़ीन व गुस्ल वग़ैरह नमाज़े जनाज़ा ही के पेशेनज़र की जाती है। इसलिये कि इस नमाज़ में उसके लिये नजाते उख़रवी और अज़ाबे क़न्न से बचने की दुआ की जाती है और ये भी कहा गया है कि इंसान के सामने दो ही हालतें होती हैं एक हालत ज़िन्दगी के बारे में, दूसरी हालत मौत के बारे में और हर हालत के बारे में इबादात और मुआमलात के अहकामात बाबस्ता हैं और इबादात में अहम चीज़ नमाज़ है। पस जब ज़िन्दगी के मुता'ल्लिकात से फ़रागत हुई तो अब मौत के बारे में नमाज़ वग़ैरह का बयान ज़रूरी हुआ। कहा गया है कि नमाज़े जनाज़ा हिज्रत के पहले ही साल मदीना शरीफ़ में मशरूअ हुई। जो लोग हिज्रत से पहले मक्का ही में फ़ौत हुए उनकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी गई। इन्तिहा, वल्लाहु अअलमु बिस्सवाब।

हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) वाली हदीष बाब के ज़ेल में मुहतरम शैख़ुल हदीष फ़र्माते हैं, क़ालल्हाफ़िज़ु लैस फ़ी कौलिही इल्ला दख़लल्जन्नत मिनल्इश्कालि मा तक्रहूम फिस्सियाकिल्माज़ी अय फ़ी हदीबि अनसिन अल्मुतकहमु लिअन्नहु अअम्मु मिन अय्यकून कबलत्तअज़ीबि औ बअदहू इन्तिहा फ़कीहि इशारतुन इला अन्नहू मक्नुतुन लहु बिदुख़लिलजन्नति लाकिन इल्लम यकुन साहिब कबीरतिन मात मुसिरिन अलैहा फ़हुव तहतल्मशीअति फ़ इन उफ़िय अन्हु दख़ल अव्वलन व इल्ला उज्जिब बिक्किरिहा शुम्म उख़िज मिन्नारि व ख़ल्लद फिल्लजन्नति कजा कररू फ़ी शर्हिल्हदीबि (मिआत, जिल्द 1, पेज 57)

या'नी हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं कि इस हदीष में कोई इश्काल नहीं है। उसमें इशारा है कि कलिमा तय्यिबा तौहीद व रिसालत का इक्कार सहीह करने वाला और शिर्क-जली और ख़फ़ी से पूरे तौर पर परहेज़ करने वाला ज़रूर जन्नत में जाएगा ख़्वाह उसने ज़िना और चोरी भी किया हो। उसका ये जन्नत में जाना या तो गुनाहों का अज़ाब भुगतने के बाद होगा या पहले भी हो सकता है। ये अल्लाह की मशिय्यत पर मौकूफ़ है। उसका जन्नत में एक न एक दिन दाख़िल होना क़टई है और अगर वो गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब नहीं हुआ और कलिमा तय्यिबा ही पर रहा तो वो अव्वल ही में जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।

इस बारे में जो मुख्तलिफ़ अहदाइष वारिद हुई हैं। सब में तब्बीक़ यही है कि किसी हदीष में इज्माल है और किसी में तप्सील है सबको पेशे-नज़र रखना ज़रूरी है। एक शिर्क ही ऐसा गुनाह है जिसके लिये जहन्नम में हमेशगी की सज़ा मुकर्र की गई है। खुद कुआन मजीद में है इन्ल्लाह ला यग़फ़िरु अय्युशरक बिही व यग़फ़िरू मा दून ज़ालिक लिमय्यशा (अन् निसा : 116) या'नी 'बेशक अल्लाह पाक हर्गिज़ नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ किसी को शरीक बनाया जाए और उस गुनाह के अलावा वो जिस भी गुनाह को चाहे बख़्श सकता है। अज़ाज़नल्लाहु मिनश्शिकिल्जली वल्ख़फ़ी आमीन

बाब 1 : जनाइज़ के बाब में जो हदीषें आई हैं

उनका बयान और जिस शख्स का आखिरी कलाम ला इलाह इलल्लाह हो, उसका बयान और वुहैब बिन मुनब्बा (रह.) से कहा गया कि क्या ला इलाह इलल्लाह जन्नत की कुन्जी नहीं है? तो उन्होंने फ़र्माया कि ज़रूर है लेकिन कोई कुन्जी ऐसी नहीं होती जिसमें दाने न हो। इसलिये अगर तुम दाने वाली कुन्जी लाओगे तो ताला (कुफ़ल) खुलेगा करना नहीं।

١ - بَابُ فِي الْجَنَائِزِ، وَمَنْ كَانَ

آخِرُ كَلَامِهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

وَقِيلَ لَوْهَبُ بْنُ مُنَبِّهٍ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

مِفْتَاحُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: بَلَى، وَلَكِنْ لَيْسَ

مِفْتَاحٌ إِلَّا لَهُ امْتِنَانٌ فَإِنْ جِئْتَ بِمِفْتَاحٍ لَهُ

امْتِنَانٌ فَحَبْلُكَ، وَإِلَّا تَمَّ يَفْتَحُ لَكَ.

तारीख: बाब मा जाअ हदीषे बाब की शरह और तफ़सीर है। या'नी हदीषे बाब में जो आया है कि मेरी उम्मत में से जो शख्स तौहीद पर मरेगा वो बहिश्त में दाखिल होगा अगरचे उसने ज़िना चोरी वगैरह भी की हो। उससे ये मुराद है कि उसका आखिरी कलाम जिस पर उसका खातिमा हो ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुरसूलल्लाह नाम है सारे कलिमे का जिस तरह कुल हुवल्लाहु अहद नाम है सारी सूरह का। कहते हैं कि मैंने कुल हुवल्लाह पढ़ी और मतलब ये होता है कि वो सूरत पढ़ी जिसके अख्तल में कुल हुवल्लाह के अल्फ़ाज़ हैं। (लिल अल्लामतुल ग़ज़नवी)

इसकी वज़ाहत हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शेखुल हदीष (रह.) यूँ फ़र्माते हैं वत्तल्कीनु अय्यज़्कुरुहु इन्दहु व यकूलुहु बिहज़रतिही व यतलफ़फ़ज़ु बिही इन्दहु हत्ता यस्मअ लियतफत्तन फयकूलुहु ला अय्यामुरहु बिही व यकूलु ला इलाह इलल्लाहु इल्ला अय्यकून काफ़िरन फयकूलु लहु कुल कमा क़ाल रसूल (ﷺ) लिअम्मिही अबी तालिब व लिलगुलामिल्यहदी (मिज़ात, जिल्द 2, पेज 447) या'नी तल्कीन का मतलब ये कि उसके सामने उस कलिमा का ज़िक्र करे और उसके सामने उसके लफ़्ज़ अदा करे ताकि वो खुद ही समझकर अपनी जुबान से ये कहने लग जाए। उसे हुक्म न करे बल्कि उसके सामने ला इलाहा इलल्लाह कहता रहे और अगर ये तल्कीन किसी काफ़िर को करनी है तो इस तरह तल्कीन करे जिस तरह आहज़रत (ﷺ) ने अपने चचा अबू तालिब और एक यहूदी लड़के को तल्कीन की थी या'नी तौहीद व रिसालत दोनों के इकरार के लिये ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुरसूलल्लाह के साथ तल्कीन करे। मुसलमान के लिये तल्कीन में सिर्फ़ कलिमा तय्यिबा ला इलाहा इलल्लाह ही काफ़ी है। इसलिये कि वो मुसलमान है और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की रिसालत पर उसका ईमान है। लिहाज़ा तल्कीन में सिर्फ़ कलिमा तौहीद ही उसके लिये मन्कूल है। व नक़ल जमाअतुम्लिनल्अस्हाबि अन्नुहयुज़ीफ़ इलैहा मुहम्मदुरसूलल्लाहि (ﷺ) (मिज़ात, हवाला मज़कूर)। या'नी कुछ अस्हाब से ये भी मन्कूल है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) का भी इज़ाफ़ा किया जाए मगर जुम्हूर से सिर्फ़ ला इलाहा इलल्लाह के ऊपर इत्तिज़ार करना मन्कूल है। मगर ये हकीकत पेशे-नज़र रखनी ज़रूरी है कि कलिमा तय्यिबा तौहीद व रिसालत के दोनों अज़ाअ या'नी ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुरसूलल्लाह ही का नाम है। अगर कोई शख्स सिर्फ़ पहला जुज़ तस्लीम करे और दूसरे जुज़ से इंकार करे तो वो भी इन्दल्लाह काफ़िरे मुत्तक़ ही है।

1237. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे महदी बिन मैमून ने, कहा कि हमसे वासिल बिन अहदब (कुबड़े) ने, उनसे मज़रूर बिन सुवैद ने बयान किया और उन से हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (कि ख़्वाब में) मेरे पास मेरे रब का एक आने वाला (फ़रिश्ता) आया। उसने मुझे ख़बर दी, या आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि उसने मुझे ख़ुश ख़बरी दी कि मेरी उम्मत में से जा

١٢٣٧ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ

حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا وَاصِلُ

الْأَخْذَبُ عَنْ الْمَعْرُورِ بْنِ مَوْدٍ عَنْ أَبِي

زَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ

اللَّهِ ﷺ: ((أَتَانِي آتٍ مِنْ رَبِّي فَأَخْبَرَنِي -

أَوْ قَالَ: بِشَرِّهِ أَنَّهُ مِنْ مَوَاتٍ مِنْ أُمَّتِي لَا

कोई इस हाल में भरे कि अल्लाह तआला के साथ उसने कोई शरीक न ठहराया हो तो वो जन्नत में जाएगा। इस पर मैंने पूछा कि अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ अगरचे ज़िना किया हो, अगरचे चोरी की हो।

(दीगर मक़ाम : 1408, 2388, 3222, 7528, 6268, 6443, 6444, 7478)

يُشْرِكُ بِاللّهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ. قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: ((وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ)).

[أطرافه ١: ١٤٠٨, ٢٣٨٨, ٣٢٢٢]

٥٨٢٧, ٦٤٤٣, ٦٤٤٤, ٦٢٦٨

[٧٤٨٧]

तशरीह: इब्ने रशीद ने कहा अन्देशा है कि इमाम बुखारी (रह.) की ये मुराद हो कि जो शख्स इखलास के साथ ये कलिम-ए-तौहीद मौत के वक़्त पढ़ ले तो उसके गुज़िश्ता गुनाह साक़ित होकर मुआफ़ हो जाएँगे और इखलास मुल्तज़िमे तौबा और नदामत है और इस कलिमे का पढ़ना इस के लिये निशानी हो और अबू ज़र की हदीष इस वास्ते लाए ताकि ज़ाहिर हो कि सिर्फ़ कलिमा पढ़ना काफ़ी नहीं बल्कि ए'तिक़ाद और अमल ज़रूरी है। इस वास्ते किताबुल्लिबास में अबू ज़र (रज़ि.) की हदीष के आख़िर में है कि अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) कहते हैं कि ये हदीष मौत के वक़्त के लिये है या उससे पहले जब तौबा करे और नादिम हो। वुहैब के अषर को मुअल्लिफ़ ने अपनी तारीख़ में मौसूलन रिवायत किया है और अबू नुऐम ने हलिया में। (फ़तहलबारी)

1238. हमसे इमर बिन हफ़स ने बयान किया, कहा कि हमसे मेरे बाप हफ़स बिन गयास ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि हमसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्क़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स इस हालत में भरे कि किसी को अल्लाह का शरीक ठहराता था तो जहन्नम में जाएगा और मैं ये कहता हूँ कि जो इस हाल में मरा कि अल्लाह का कोई शरीक न ठहराता हो वो जन्नत में जाएगा। (दीगर मक़ाम : 4497, 6673)

١٢٣٨- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ وَحُصَيْنٍ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ لَنَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ مَاتَ يُشْرِكُ بِاللّهِ دَخَلَ النَّارَ)). وَقُلْتُ أَنَا: مَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللّهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ.

[أطرافه ١: ٤٤٩٧, ٦٦٨٣]

तशरीह: उसकी मज़ीद वज़ाहत हदीषे अनस (रज़ि.) में मौजूद है कि अल्लाह पाक ने फ़र्माया ऐ इब्ने आदम! तू दुनिया भर के गुनाह लेकर मुझसे मुलाक़ात करे मगर तूने शिर्क न किया हो तो मैं तेरे पास दुनिया भर की मग़्फ़िरत लेकर आऊँगा (स्वाहुतिर्मिज़ी) खुलासा ये कि शिर्क बदतरीन गुनाह है और तौहीद अज़िज़ तरीन नेकी है। मुअहिहद गुनाहगार मुशिक इबादत गुज़ार से बहरहाल हज़ार दर्जे बेहतर है।

बाब 2 : जनाजे में शरीक होने का हुक्म

1239. हमसे अबू वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अशअष बिन अबी अशअशा ने, उन्होंने कहा कि मैंने मुआविया बिन सुवैद बिन मुकर्रिन से सुना, वो बराअ बिन अज़िब (रज़ि.) से नक़ल करते थे कि हमें नबी करीम (ﷺ) ने सात कामों का हुक्म दिया और सात कामों से रोका। हमें आप (ﷺ) ने हुक्म दिया था जनाजे के साथ

٢- بَابُ الْأَمْرِ بِاتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ
١٢٣٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ مَعْلُوَةَ بْنَ سُوَيْدٍ بْنَ مَقْرَنٍ عَنِ الْوَرَاءِ بْنِ عَلَابٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِسِتِّمْ، وَلَهَاتَا عَنْ سِتِّمْ: أَمَرَنَا

चलने, मरीज की मिज़ाजपुर्सी, दा'वत कुबूल करने, मज़लूम की मदद करने का, क्रसम पूरी करने का, सलाम का जवाब देने का, छींक पर यरहमुकल्लाह कहने का और ३.१५ (ﷺ) ने हमें मना किया था चाँदी का बर्तन (इस्ते'माल में लाने) से, सोने की अंगूठी पहनने से, रेशम और रिबाज (के कपड़ों के पहनने) से, क़सी से, इस्तबरक़ से।

(दीगर मक्राम : 2445, 5175, 5635, 5650, 5838, 5849, 5863, 6222, 6235, 6654)

بَاتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ، وَعِيَادَةِ الْمَرِيضِ، وَإِجَابَةِ الدَّاعِي، وَنَصْرِ الْمَظْلُومِ، وَإِثْرَارِ الْقَسَمِ، وَرَدُّ السَّلَامِ، وَتَشْمِيتِ الْغَاطِسِ، وَنَهَانَا عَنْ آيَةِ الْفِطْنَةِ، وَخَاتَمِ الذَّهَبِ وَالْحَرِيرِ وَالْدِّيَّاجِ، وَالْقَسِيِّ، وَالْإِسْتَبْرَقِ))

[أطرافه في: ٥٦٣٥، ٥١٧٥، ٢٤٤٥]

٥٨٦٣، ٥٨٤٩، ٥٨٣٨، ٥٦٥٠

[٦٦٥٤، ٦٢٣٥، ٦٢٢٢]

तशरीह : दीबाज और क़सी और इस्तबरक़ ये भी रेशमी कपड़ों की किस्में हैं। क़सी कपड़े शाम से या मिस्र से बनकर आते और इस्तबरक़ मोटा रेशमी कपड़ा। ये सब छः चीज़ें हुईं। सातवीं चीज़ का बयान इस रिवायत में छूट गया है। वो रेशमी चारजामों पर सवार होना या रेशमी गदियों पर जो ज़ीन के ऊपर रखी जाती हैं।

1240. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अग्र बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे इमाम औज़ाई ने, उन्होंने कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि मुसलमान के मुसलमान पर पाँच हक़ है, सलाम का जवाब देना, मरीज़ का मिज़ाज मा'लूम करना, जनाजे के साथ चलना, दा'वत कुबूल करना और छींक पर (अलहम्दुलिल्लाह के जवाब में) यरहमुकल्लाह कहना। इस रिवायत की मुताबअत अब्दुर्रज़ाक़ ने की है। उन्होंने कहा कि मुझे मअमर ने ख़बर दी थी। और इसकी रिवायत सलमा ने भी अक़ील से की है।

١٢٤٠ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ ((حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ: رَدُّ السَّلَامِ، وَعِيَادَةُ الْمَرِيضِ، وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ، وَإِجَابَةُ الدَّغْوَةِ، وَتَشْمِيتُ الْغَاطِسِ)). تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ. وَزَوَّاهُ سَلَامَةُ عَنْ عَقِيلٍ.

तशरीह : इस हदीष से मा'लूम हुआ कि मुसलमान के जनाजे में शिर्कत करना भी हुक्के मुस्लिमीन में दाख़िल है। हाफ़िज़ ने कहा कि अब्दुर्रज़ाक़ की रिवायत को इमाम मुस्लिम (रह.) ने निकाला है और सलाम की रिवायत को ज़ेहली ने ज़हरियात में।

बाब 3 : मय्यित को जब कफ़न में लिपटाया जा चुका हो तो उसके पास जाना (जाइज़ है)

1241. 1242. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुबारक़ ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मअमर बिन राशिद और यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, कहा कि मुझे अबू

٣ - بَابُ الدُّخُولِ عَلَى الْمَيِّتِ بَعْدَ الْمَوْتِ إِذَا أُدْرِجَ فِي أَكْفَانِهِ

١٢٤١، ١٢٤٢ - حَدَّثَنَا بَشَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ ﷺ قَالَ: أَخْبَرَنِي

सलमा ने खबर दी कि नबी करीम (ﷺ) की जौजा मुतहहरा हजरत आइशा (रजि.) ने खबर दी कि (जब आँहजरत ﷺ की वफात हो गई) अबूबक्र (रजि.) अपने घर से जो सुन्ह में था, घोड़े पर सवार होकर आए और उतरते ही मस्जिद में तशरीफ ले गये। फिर आप किसी से गुप्तगू किये बगैर आइशा (रजि.) के हुजे में आए (जहाँ नबी करीम ﷺ की नअश मुबारक रखी हुई थी) और नबी करीम (ﷺ) की तरफ गये। हजुरे अकरम को बुर्दे हिलारा (यमन की बनी हुई धारीदार चादर) से ढाँप दिया गया था। फिर आपने हजूर (ﷺ) का चेहरा मुबारक खोला और झुककर उसका बोसा लिया और रोने लगे। आपने कहा, मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हो ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह तआला दो मौतें आप पर जमा नहीं करेगा। सो एक मौत के जो आपके मुकद्दर में थी सो आप वफात पा चुके। अबू सलमा ने कहा कि मुझे इन्हे अब्बास (रजि.) ने खबर दी कि हजरत अबूबक्र (रजि.) बाहर तशरीफ लाए तो हजरत इमर (रजि.) उस वक़्त लोगों से कुछ बातें कर रहे थे। हजरत सिदीके-अकबर (रजि.) ने फ़र्माया कि बैठ जाओ। लेकिन हजरत इमर (रजि.) नहीं माने। आखिर हजरत अबूबक्र (रजि.) ने कलिम-ए-शहादत पढ़ा तो तमाम मजमा आपकी तरफ़ मुतवज्जह हो गया और हजरत इमर को छोड़ दिया। आपने फ़र्माया, अम्मा बाद! अगर कोई शख्स तुम में से मुहम्मद (ﷺ) की इबादत करता था तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि मुहम्मद (ﷺ) की वफात हो चुकी और अगर कोई अल्लाह तआला की इबादत करता है, तो अल्लाह बाक़ी रहने वाला है और वो कभी मरने वाला नहीं। अल्लाह पाक फ़र्माता है, और मुहम्मद सिर्फ़ अल्लाह के रसूल हैं और बहुत से रसूल इस दुनिया से पहले भी गुजर चुके हैं। (सूरह आले इमरान : 144) (आपने आयत तिलावत की) क़सम अल्लाह की! ऐसा मा'लूम हुआ कि हजरत अबूबक्र (रजि.) के आयत की तिलावत से पहले जैसे लोगों को मा'लूम ही न था कि ये आयत भी अल्लाह पाक ने कुआन मजीद में उतारी है। अब तमाम सहाबा ने ये आयत आपसे सीख ली, फिर तो हर शख्स की ज़बान पर यही आयत थी।

مَعْمَرُ وَثَوْنُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوَّجَ النَّبِيَّ ﷺ أَخْبَرْتَهُ قَالَتْ: ((أَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَى قَوْمِهِ مِنْ مَسْكِيَةٍ بِالسُّبْحِ حَتَّى نَزَلَ فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلَمْ يَكَلِّمْ النَّاسَ حَتَّى دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، فَتَبَسَّمَ النَّبِيُّ ﷺ - وَهُوَ خَسْبِي بِرُؤُوسِ جَبَرٍ - فَكَشَفَ عَنْ وَجْهِهِ، ثُمَّ أَكْبَأَ عَلَيْهِ فَقَبَّلَهُ، ثُمَّ بَكَى فَقَالَ: يَا أَيُّ أَنْتَ وَأُمِّي يَا نَبِيَّ اللَّهِ، لَا يَجْمَعُ اللَّهُ عَلَيْكَ مَوْتَيْنِ: أَمَّا الْمَوْتَةُ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكَ فَقَدْ مَاتَهَا)). قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: فَأَخْبَرَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ خَرَجَ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَكَلِّمُ النَّاسَ، فَقَالَ: اجْلِسْ، قَائِمٌ. فَقَالَ: اجْلِسْ، قَائِمٌ. فَشَهِدَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَقَالَ: لِمَا إِلَيْهِ النَّاسُ وَتَرَكُوا عُمَرَ، فَقَالَ: أَمَا بَعْدَ لِمَنْ كَانَ مِنْكُمْ بَعْدَ مُحَمَّدًا ﷺ فَإِنْ مُحَمَّدًا ﷺ فَذَمَاتِ، وَمَنْ كَانَ بَعْدَ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ لَا يَمُوتُ، قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ، إِلَى الشَّاكِرِينَ﴾ [آل عمران: 144]. وَاللَّهُ لَكَانَ النَّاسَ لَمْ يَكُونُوا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ حَتَّى تَلَامَا أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَتَلَقَّاهَا مِنْهُ النَّاسُ، فَمَا يَسْمَعُ بَشَرٌ إِلَّا بَلَّوْهُ)).

[أطرافه في: ٣٦٦٧, ٣٦٦٩, ٤٤٥٢, 3667, 3669, 4452, 4455, 5710, 3668, 3680, 4453, 4454, 4457, 5711] [٤٤٥٥, ٥٧١٠].

[أطرافه في: ٣٦٦٨, ٣٦٧٠, ٤٤٥٣]

[٤٤٥٤, ٤٤٥٧, ٥٧١١].

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का चेहर-ए-मुबारक खोला और आप को बोसा दिया। यहीं से बाब का तर्जुमा प्रभावित हुआ। वफ़ाते नबवी पर सहाबा किराम में एक तहलका मच गया था। मगर बरवक़त हज़रत अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) ने उम्मत को सम्भाला और हक़ीक़ते हाल का इज़हार फ़र्माया जिससे मुसलमानों में एकबारगी सुकून हो गया और सबको इस बात पर पूरा इत्मीनान हासिल हो गया कि इस्लाम अल्लाह का सच्चा दीन है वो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है। आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात से इस्लाम की बक्रा पर कोई अज़र नहीं पड़ सकता, आप (ﷺ) रसूलों की जमाअत के एक फ़रदे-फ़रीद हैं और दुनिया में जो भी रसूल आएँ हैं अपने अपने वक़्त पर सब दुनिया से रुख़सत हो गये। ऐसे ही आप भी अपना मिशन पूरा करके मलअे आला से जा मिले। सल्लल लाहु अलैहि व सल्लम, अला हबीबिही व बारिक व सल्लिम। कुछ सहाबा किराम (रज़ि.) का ये ख़याल भी हो गया था कि आँहज़रत (ﷺ) दोबारा ज़िन्दा होंगे। इसीलिये हज़रत सिदीक (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह पाक आप (ﷺ) पर दो मौत तारी नहीं करेगा। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम।

1243. हमसे यहाा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने कहा, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने फ़र्माया कि मुझे ख़ारजा बिन ज़ैद बिन प्रभावित ने ख़बर दी कि उम्मे अलअलाअ अन्सार की एक औरत ने, जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बैअत की थी, ने उन्हें ख़बर दी कि मुहाजिरीन कुर्आ डालकर अन्सार में बाँट दिये गये तो हज़रत इब्मान बिन मज़ज़न (रज़ि.) हमारे हिस्से में आए। चुनौचे हमने उन्हें अपने घर में रखा। आख़िर वो बीमार हुए और उसी में वफ़ात पा गये। वफ़ात के बाद गुस्ल दिया गया और कफ़न में लपेट दिया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, अबू साइब! आप पर अल्लाह की रहमतें हों मेरी आपके मुता'ल्लिक़ शहादत ये है कि अल्लाह तआला ने आपकी इज़ज़त फ़र्माई है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआला ने इनकी इज़ज़त फ़र्माई है? मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हो, फिर किसकी अल्लाह तआला इज़ज़त-अफ़ज़ाई करेगा? आपने फ़र्माया, इसमें शुब्हा नहीं कि उनकी मौत आ चुकी, क़सम अल्लाह की कि मैं भी इनके लिये ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ, लेकिन वल्लाह! मुझे खुद अपने मुता'ल्लिक़ भी मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला होगा। हालाँकि मैं

١٢٤٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدٍ بْنِ أَبِي نَضْرَةَ أَنَّ أُمَّ الْقَلَاءِ - امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ بَايَعَتْ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أَقْسَمَ الْمُهَاجِرُونَ فُرُوعًا، فَطَارَ لَنَا عُفْمَانُ بْنُ مَطْطُونٍ فَأَتَوْنَاهُ فِي أَهْلِيْنَا، فَوَجَعَ وَجَعَهُ الَّذِي تَوَلَّى فِيهِ، فَلَمَّا تَوَلَّى وَغُسِّلَ وَكُفِّنَ فِي أَثْوَابِهِ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَقُلْتُ: رَحِمَهُ اللَّهُ عَلَيْكَ أَيُّهَا السَّائِبُ، فَشَهِدَتُنِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللَّهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُنْزِلُكَ أَنْ اللَّهُ قَدْ أَكْرَمَهُ؟)) فَقُلْتُ: يَا أَبَيِ آتَى يَا رَسُولَ اللَّهِ، لِمَنْ يُكْرِمُهُ اللَّهُ؟ فَقَالَ عَلَيْهِ السَّلَامُ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ. وَإِلَى إِيَّيْ لَأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَاللَّهُ مَا أَقْرَبِي - وَأَنَا رَسُولُ اللَّهِ - مَا يُفْعَلُ بِي)). فَقُلْتُ:

अल्लाह का रसूल हूँ। उम्मे अल-अलाअ ने कहा कि खुदा की कसम! अब मैं कभी किसी के मुता'ल्लिक (इस तरह की) गवाही नहीं दूंगी।

لَوْ أَنَّ اللَّهَ لَا أَرْكَى أَحَدًا بَعْدَهُ أَبَدًا.

तशरीह : इस रिवायत में कई उमूर का बयान है। एक तो उसका कि जब मुहाजिरीन मदीना में आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी परेशानी दूर करने के लिये अंसार से उनका भाईचारा क़ायम करा दिया। इस बारे में कुर्आ-अंदाज़ी की गई और जो मुहाजिर जिस अंसारी के हिस्से में आया वो उसके हवाले कर दिया गया। उन्होंने सगे भाई से ज़्यादा उनकी खातिर तवाजोअ की। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँहज़रत (ﷺ) ने गुस्ल व कफ़न के बाद इब्मान बिन मज़ऊन को देखा। हदीष से ये भी निकला कि किसी भी बन्दे के बारे में हकीकत का इल्म अल्लाह ही को हासिल है। हमें अपने ज़न्न के मुताबिक उनके हक़ में नेक गुमान करना चाहिये। हकीकते हाल को अल्लाह के हवाले करना चाहिये।

कई मुआनिदीने इस्लाम ने यहाँ ए'तिराज़ किया है कि जब आँहज़रत (ﷺ) को खुद अपनी भी नजात का यक़ीन न था तो आप अपनी उम्मत की क्या सिफ़ारिश करेंगे।

इस ए'तिराज़ के जवाब में पहली बात जो ये है कि आँहज़रत (ﷺ) का ये इश्राद गिरामी इब्तिदा-ए-इस्लाम का है, बाद में अल्लाह ने आपको सूरह फ़तह में ये बशारत दी कि आपके अगले और पिछले गुनाह बख़्श दिये गये तो ये ए'तिराज़ खुद दूर हो गया और प्रामाणिक हुआ कि उसके बाद आपको अपनी नजात के बारे में यक़ीने कामिल हासिल हो गया था। फिर भी शाने बन्दगी उसको मुस्तलज़िम है कि परवारदिगार की शाने समदियत हमेशा मल्हूज़े खातिर रहे। आप (ﷺ) का शफ़ाअत करना बरहक़ है बल्कि शफ़ाअते कुबरा का मुक़ामे महमूद आप (ﷺ) को हासिल है।

हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया और उनसे लैष ने साबिक़ा रिवायत की तरह बयान किया, नाफ़ेअ बिन यज़ीद ने अक़ील से (मा युफ़अलु बी के बजाय) मा युफ़अलु बिही के अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं और इस रिवायत की मुताबअत शुऐब, अम्र बिन दीनार और मअमर ने की है।

(दीगर मक़ाम : 2678, 3929, 7003, 7004, 7018)

حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ...مِثْلَهُ. وَقَالَ نَافِعُ بْنُ يَزِيدَ عَنْ عَفِيرٍ: مَا يُقَالُ بِهِ. وَكَانَتْهُ شُعْبَةُ وَعَمْرُو بْنُ دِينَارٍ وَمَعْمَرٌ.

[أطرافه في : ٢٦٨٧, ٣٩٢٩, ٧٠٠٣]

[٧٠١٨, ٧٠٠٤]

इस सूरत में तर्जुमा ये होगा कि कसम अल्लाह की मैं नहीं जानता कि उसके साथ क्या मुआमला किया जाएगा। हालाँकि उसके हक़ में मेरा गुमान नेक है।

1244. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुहम्मद बिन मुन्कदिर से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जब मेरे वालिद शहीद कर दिये गये तो उनके चेहरे पर पड़ा हुआ कपड़ा खोलता और रोता था। दूसरे लोग तो मुझे इससे रोकते थे लेकिन नबी करीम (ﷺ) कुछ नहीं कह रहे थे। आख़िर मेरी चची फ़ातिमा (रज़ि.) भी रोने

١٢٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ : حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُثَنَّبِيِّ قَالَ : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((لَمَّا قُتِلَ أَبِي جَعَلْتُ أَكْثِفَ التَّوْبِ عَنْ وَجْهِهِ أَنْبِيَّ، وَتَهَوَّنِي عَنْهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ لَا يَنْهَانِي، فَجَعَلْتُ عَمِّي

अस्सलातु अलल्मय्यति दुआउन लहू फकैफ़ ला युदआ लहू व हुव गाइबुन औ फिलक़त्रि (नैलुल औतार) या'नी जो हज़रत नमाज़े गायबाना के क़ाइल हैं उन्होंने इसी वाक़िअे से दलील पकड़ी है और फ़त्हलबारी में है कि इमाम शाफ़िई और अहमद और जुम्हूरे सलफ़ का यही मसलक है। बल्कि अल्लामा इब्ने हज़म का क़ौल तो ये है कि किसी भी सहाबी से उसकी मुमानअत नक़ल नहीं हुई। इमाम शाफ़िई कहते हैं कि जनाज़े की नमाज़, मय्यत के लिये दुआ है। पस वो गायब हो या क़ब्र में उतार दिया गया हो, उसके लिये दुआ क्यूँ न की जाएगी।

नज्जाशी के अलावा आँहज़रत (ﷺ) ने मुआविया बिन मुआविया लैषी का जनाज़ा गायबाना अदा किया जिनका इतिक़ाल मदीना में हुआ था और आँहज़रत (ﷺ) तबूक में थे और मुआविया बिन मुकर्रिन और मुआविया बिन मुआविया मुज़नी के बारे में ऐसे वाक़िआत नक़ल हुए हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसके जनाज़े गायबाना अदा फ़र्माए। अगरचे ये रिवायात सनद के लिहाज़ से ज़ईफ़ है। फिर भी वाक़िआ-ए-नज्जाशी से उनकी तक्वियत होती है।

जो लोग नमाज़े जनाज़ा गायबाना के क़ाइल नहीं हैं वो उस बारे में मुख़्तलिफ़ ए'तिराज़ करते हैं। अल्लामा शौकानी (रह.) बहष के आख़िर में फ़र्माते हैं बल्हासिल अन्नहू लम यातिल्मानिऊन मिनस्सलाति अलल्गाइबि बिशयइन युअतहु बिही या'नी मानेईन कोई ऐसी दलील न ला सके हैं जिसे गिनती में शुमार किया जाए। पस प्राबित हुआ कि नमाज़े जनाज़ा गायबाना बिला कराहत जाइज़ और दुरुस्त है तफ़्सील मज़ीद के लिये नैलुल औतार (जिल्द नं. 3, पेज नं. 55, 56) का मुतालआ किया जाए।

1246. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन बिलाल ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ैद (रज़ि.) ने झण्डा सम्भाला लेकिन वो शहीद हो गये, फिर जा'फ़र (रज़ि.) ने सम्भाला और वो भी शहीद हो गये। फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने सम्भाला और वो भी शहीद हो गये। उस वक़्त आप (ﷺ) की आँखों से आँसू बह रहे थे। (आप (ﷺ) ने फ़र्माया) और फिर ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने खुद अपने तौर पर झण्डा उठा लिया और उनको फ़तह हम्मिल हुई।

(दीगर मक़ाम: 2798, 3063, 3630, 3707, 6242)

١٢٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَنْهُ الْوَارِثُ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ بِلَالٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ: (رَأَى الزَّوَادَةَ زَيْدًا فَأَحْيَبَ، ثُمَّ أَخْلَعَ جَنْفَهُ فَأَحْيَبَ، ثُمَّ أَخْلَعَ عَنْهُ اللَّهُ بْنُ زَوَاحَةَ فَأَحْيَبَ - وَإِنْ عَنِّي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَتَلْرَفَانِ - ثُمَّ أَخْلَعَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ مِنْ غَيْرِ امْرَأَةٍ فَنُفِيعَ لَهُ).

[أطرافه ٣: ٢٧٩٨، ٣٠٦٣، ٣٦٣٠]

[٢٧٥٧، ٢٧٤٢]

तशरीह: ये ग़ज़व-ए-मौता का वाक़िआ है जो 8 हिज्री में मुल्के शाम के पास बल्क़ान की सरज़मीन पर हुआ था। मुसलमान तीन हज़ार थे और काफ़िर बेशुमार, आपने ज़ैद बिन हारिषा को अमीरे लश्कर बनाया था कि अगर ज़ैद शहीद हो जाएँ तो उनकी जगह हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) क़यादत करें; अगर वो शहीद हो जाएँ तो फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा, ये तीनों सरदार शहीद हो गए। फिर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने (अज़ख़ुद) कमान सम्भाली और (अल्लाह ने उनके हाथ पर) काफ़िरों को शिकस्त दी। नबी करीम (ﷺ) ने लश्कर के लौटने से पहले ही सब ख़बरें लोगों को सुना दीं। इस हदीष में हज़ूर (ﷺ) के कई मोअज़ज़ात भी मज़कूर हुए हैं।

बाब 5 : जनाज़ा तैयार हो तो लोगों को ख़बर देना

और अबू राफ़ेअ ने अबू हुदैरह (रज़ि.) से रिवायत किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोगों ने मुझे ख़बर

٥- بَابُ الْإِذْنِ بِالْجَنَازَةِ

وَقَالَ أَبُو رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ

क्यों न दी।

1247. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, उन्हें अबू मुआविया ने खबर दी, उन्हें अबू इस्हाक़ शैबानी ने, उन्हें शुअबी ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि एक शख्स की वफ़ात हो गई। रसूलुल्लाह (ﷺ) उसकी इयादत को जाया करते थे। चूँकि उनका इन्तिक़ाल रात में हुआ था, इसलिये रात ही में लोगों ने उन्हें दफ़न कर दिया और जब सुबह हुई तो अँहज़रत (ﷺ) को खबर दी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, (जनाज़ा तैयार होते वक़्त) मुझे बताने में (क्या) रुकावट थी? लोगों ने कहा रात थी और अंधेरा भी था, इसलिये हमने मुनासिब नहीं समझा कि कहीं आपको तकलीफ़ हो। फिर अँहज़रत (ﷺ) उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ी। (राजेअ: 857)

इस हदीस से प्राबित हुआ कि मरने वालों के जनाज़े के लिये सबको इतिला होनी चाहिये और अब भी ऐसे मौक़े में जनाज़ा क़ब्र पर भी पढ़ा जा सकता है।

बाब 6 : उस शख्स की फ़ज़ीलत जिसकी कोई औलाद मर जाए और वो अज्र की नित्यत से सन्न करे

और अल्लाह तआला ने (सूरह बकर में) फ़र्माया है कि सन्न करने वालों को खुशख़बरी सुना।

1248. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष्ठ ने, उनसे अब्दुल अज़ीज़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी मुसलमान के अगर तीन बच्चे मर जाएँ जो बुलूग़त को न पहुँचे हों तो अल्लाह तआला उस रहमत के नतीजे में जो उन बच्चों से वह रखता है, मुसलमान (बच्चे के बाप और माँ) को भी जन्नत में दाख़िल करेगा। (दीगर मक़ाम: 1381)

1249. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने, उनसे अब्दुरहमान बिन अब्दुल्लाह अम्बहानी ने, उनसे ज़क्वान ने और उनसे हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.)

عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((أَلَا تَكْتُمُونَ أَذْثَمُولِي؟))

١٢٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ الشَّعْبِيِّ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((مَاتَ إِنْسَانٌ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقُودُهُ، فَمَاتَ بِاللَّيْلِ، فَدَفَنُوهُ لَيْلًا. فَلَمَّا أَصْبَحَ أَخْبَرُوهُ فَقَالَ: ((مَا مَنَعَكُمْ أَنْ تُعَلِّمُونِي؟)) قَالُوا: كَانَ اللَّيْلُ فَكَرِهْنَا - وَكَانَ ظُلُمَةً - أَنَّهُ نَشَأَ عَلَيْكَ. فَأَتَى ثَمَرَةً فَصَلَّى عَلَيْهِ.

[راجع: ٨٥٧]

٦- بَابُ فَضْلِ مَنْ مَاتَ لَهُ وَلَدٌ فَأَخْتَسَبَ

وَقَالَ اللَّهُ غُورَجَلْ: «وَتَشْرِى الصَّابِرِينَ» [البقرة: ٥٥١]

١٢٤٨- حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقَزِيفِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا مِنْ نَاسٍ مِنْ مُسْلِمٍ يُتَوَلَّى لَهُ ثَلَاثٌ لَمْ يَلْفُوا الْجَنَّةَ إِلَّا أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ إِيَّاهُمْ)).

[طرفة ي: ١٣٨١]

١٢٤٩- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْأَصْطَهَانِيِّ عَنْ ذُكْوَانَ عَنْ أَبِي مَعِينٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ:

ने कि औरतों ने नबी करीम (ﷺ) से दरख्वास्त की कि हमें भी नसीहत करने के लिये आप (ﷺ) एक दिन ख़ास फ़र्मा दीजिए। औहज़रत (ﷺ) ने (उनकी दरख्वास्त मंज़ूर फ़र्माते हुए एक ख़ास दिन में) उनको वा'ज फ़र्माया और बतलाया कि जिस औरत के तीन बच्चे मर जाएँ तो वो उसके लिये जहन्नम से पनाह बन जाते हैं। इस पर एक औरत ने पूछा, हुज़ूर! अगर किसी के दो ही बच्चे मर जाएँ? आपने फ़र्माया कि दो बच्चों पर भी।

(राजेअ: 101)

1250. शरीक ने इब्ने अस्बहानी से बयान किया कि उनसे अबू सलालेह ने बयान किया और उनसे अबू सईद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ये भी कहा कि वो बच्चे मुराद है जो अभी बुलूग़त को न पहुँचे हों। (राजेअ: 102)

1251. हमसे अली ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उन्होंने कहा कि मैंने जुहरी से सुना, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी के अगर तीन बच्चे मर जाएँ तो वो दोज़ख़ में नहीं जाएगा और अगर जाएगा भी तो सिर्फ़ क़सम पूरी करने के लिये। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) फ़र्माते हैं। (कुआन की आयत ये है) तुम में से हर एक को दोज़ख़ के ऊपर से गुज़रना होगा। (दीगर मक़ाम: 6606)

तशरीह: नाबालिग बच्चों की वफ़ात पर अगर माँ-बाप सज़ा करें तो उस पर ष़बाब मिलता है। कुदरती तौर पर औलाद की मौत तआला ही ने ये बच्चा दिया था और अब उसी ने उठा लिया तो इस ह्दाप्से की संगीनी के मुताबिक़ इस पर ष़बाब भी उतना ही मिलेगा। उसके गुनाह मुआफ़ हो जाएँगे और आख़िरत में उसकी जगह जन्नत में होगी। आख़िर में ये बताया गया है कि जहन्नम से यूँ तो हर मुसलमान को गुज़रना होगा लेकिन जो मोमिन बन्दे उसके मुस्तहिक़ नहीं होंगे, उनका गुज़रना बस ऐसा ही होगा जैसे क़सम पूरी की जा रही है। इमाम बुखारी (रह.) ने इस पर कुआन की आयत भी लिखी है। कुछ इलमा ने उसकी ये तौजीह बयान की है कि पुल-सिरात चूँकि है ही जहन्नम पर और उससे हर इंसान को गुज़रना होगा। अब जो नेक है वो उससे बा-आसानी गुज़र जाएगा लेकिन बदअमल या काफ़िर उससे गुज़र न सकेगा और जहन्नम में चला जाएगा तो जहन्नम से यही मुराद है।

यहाँ इस बात का भी लिहाज़ रहे कि हदीष में नाबालिग औलाद के मरने पर उस अज़े अज़ीम का वा'दा किया गया है। बालिग का ज़िक्र नहीं है हालाँकि बालिग और खुसूसन जवान औलाद की मौत का रंज सबसे बड़ा होता है। उसकी वजह ये है कि बच्चे माँ-बाप की अल्लाह तआला से सिफ़ारिश करते हैं। कुछ रिवायतों में है कि एक बच्चे की मौत पर भी यही वा'दा मौजूद है। जहाँ तक सज़ा का ता'ल्लुक है वो बहरहाल बालिग की मौत पर भी मिलेगा।

((أَنَّ النِّسَاءَ لَنَلْنَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: اجْعَلْ لَنَا يَوْمًا. فَوَعَّظَهُنَّ وَقَالَ: ((أَيُّمَا امْرَأَةٍ مَاتَ لَهَا ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ كَانُوا لَهَا حِجَابًا مِنَ النَّارِ)). قَالَتِ امْرَأَةٌ: وَالثَّانِ؟ قَالَ: ((وَالثَّانِ)).

[راجع: 101]

1250- وَقَالَ شَرِيكَ عَنْ ابْنِ الْأَصْبَهَانِيِّ حَدَّثَنِي أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: ((لَمْ يَلْغُوا الْجَنَّةَ)). [راجع: 102]

1251- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَدَّاجٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: ((لَا يَمُوتُ لِمُسْلِمٍ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ قَبْلَ أَنْ يَلْجُ النَّارَ إِلَّا تَحِلَّةً لِقَسَمٍ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: ((وَرِثَانٌ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا)). [طرفه: 6606]

अल ग़र्ज़ जहन्नम के ऊपर से गुजरने का मतलब पुल सिरात के ऊपर से गुजरना मुराद है जो जहन्नम के पुश्त पर नज़ब है पस मोमिन का जहन्नम में जाना यही पुल सिरात के ऊपर से गुजरना है। आयते शरीफ़ा में है, व इम्मिन्कुम इला नारिदुहा का यही मफ़हूम है।

बाब 7 : किसी मर्द का किसी औरत से क़ब्र के पास ये कहना कि सन्न कर

٧- باب قول الرجل للمرأة عند القبر : اصبري

1252. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे श्राबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक औरत के पास से गुजरे जो एक क़ब्र पर बैठी हुई रो रही थी। आप (ﷺ) ने उससे फ़र्माया कि अल्लाह से डर और सन्न कर।

(दीगर मक़ाम : 1273, 1302, 7154)

(तपस्वील आगे आ रही है)

बाब 8 : मय्यित को पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल देना और वुजू कराना

١٢٥٢- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا قَابَت عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِامْرَأَةٍ عِنْدَ قَبْرِ وَهِيَ تَبْكِي فَقَالَ: ((الْقِيَامَةُ وَالْاصْبِرِي)).

[أطرافه في: ١٢٨٣, ١٣٠٢, ٧١٥٤].

٨- بَابُ غُسْلِ الْمَيِّتِ وَوَضْوِئِهِ بِالْمَاءِ وَالسَّنَدِ

और इब्ने इमर (रज़ि.) ने सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) के बच्चे (अब्दुर्हमान) के खुशबू लगाई फिर उसकी नज़श उठाकर ले गये और नमाज़ पढ़ी, फिर वुजू नहीं किया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुसलमान नजिस नहीं होता, ज़िन्दा हो या मुर्दा। सअद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अगर (सईद बिन ज़ैद रज़ि.) की नज़श नजिस होती तो मैं उसे छूता ही नहीं। नबी करीम (ﷺ) का इशारा है कि मोमिन नापाक नहीं होता।

1253. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने और उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, उनसे उम्मे अत्रिया अन्सारीया (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह की बेटी (ज़ैनब या उम्मे कुलसुम (रज़ि.)) की वफ़ात हुई, आप वहाँ तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि तीन या पाँच मर्तबा गुस्ल दे दो और अगर मुनासिब समझो तो इससे भी ज़्यादा दे सकती हो। गुस्ल के पानी में बेरी के पत्ते मिला लो और आखिर में काफ़ूर या (ये कहा कि) कुछ काफ़ूर का इस्तेमाल कर लेना और गुस्ल से फ़ारिग होने पर मुझे ख़बर कर देना।

وَحَظُّ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ابْنًا لِسَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ، وَحَمَلَةً، وَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ وَقَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: الْمُسْلِمُ لَا يَنْجُسُ حَيًّا وَلَا مَيِّتًا. وَقَالَ سَعْدُ: لَوْ كَانَ نَجَسًا مَا مَسَسْتُهُ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْمُؤْمِنُ لَا يَنْجُسُ)).

١٢٥٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَيُّوبَ السَّخَيَّانِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةِ الْأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ حِينَ تَوَلَّيْتُ ابْنَتَهُ فَقَالَ: ((اغْسِلِيهَا ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ إِنْ رَأَيْتِ ذَلِكَ بِمَاءٍ وَمِسْكِ، وَاجْعَلِي لِي الْآخِرَةَ كَأَفْوَرًا أَوْ حَبًّا مِنْ

चुनाँचे हमने जब गुस्ल दे लिया तो आप (ﷺ) को खबर दे दी। आप (ﷺ) ने हमें अपना इज़ार दिया और फ़र्माया कि इसे उनकी क़मीज़ बना दो। आपकी मुराद अपने इज़ार (तहबंद) से थी। (राजेअ : 168)

كَافُورٍ. فَإِذَا فَرَّغْتُمْ لَأَذْنِيَّ)). فَلَمَّا فَرَّغْنَا أَذْنَاهُ، فَأَعْطَانَا حِفْوَهُ فَقَالَ: ((أَشْبِرْنَهَا لِأَيَّاهُ)). يَغْنِي إِزَارَهُ. [راجع: ١٦٧]

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि मोमिन मरने से नापाक नहीं हो जाता और गुस्ल सिर्फ़ बदन को पाक-साफ़ करने के लिये दिया जाता है। इसलिये गुस्ल के पानी में बेरी के पत्तों का डालना मसनून हुआ। इब्ने उमर (रज़ि.) के अषर को इमाम मालिक ने मौता में वस्ल किया। अगर मुर्दा नजिस होता तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) उसको न छूते न उठाते अगर छूते तो अपने अज़ा को धोते। इमाम बुखारी (रह.) ने उससे इस हदीष के जुअफ़ की तरफ़ इशारा किया कि जो मय्यत को नहलाए वो गुस्ल करे और जो उठाए वो वुजू करे। अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के कौल को सईद बिन मंसूर ने सनदे सहीह के साथ वस्ल किया और ये कि 'मोमिन नजिस नहीं होता।' इस रिवायत को मफूअन खुद इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल गुस्ल में रिवायत किया है और सअद बिन अबी वक्रास के कौल को इब्ने अबी शैबा ने निकाला कि सअद (रज़ि.) को सईद बिन ज़ैद के मरने की खबर मिली। वो गये और उनको गुस्ल और कफ़न दिया, खुशबू लगाई और घर में आकर गुस्ल किया और कहने लगे कि मैंने गर्मी की वजह से गुस्ल किया है न कि मुर्दे को गुस्ल देने की वजह से। अगर वो नजिस होता तो मैं उसे हाथ ही क्यों लगाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बेटी को अपना इज़ार तबर्क के तौर पर इनायत फ़र्माया। इसलिये इर्शाद हुआ कि उसे क़मीज़ बना दो कि ये उनके बदन मुबारक से मिला रहे। जुम्हूर के नज़दीक मय्यत को गुस्ल दिलाना फ़र्ज़ है।

बाब 9 : मय्यत को त्राक़ मर्तबा गुस्ल देना मुस्तहब है

1254. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वहहाब प्रक़फ़ी ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने, उनसे उम्मे अत्रिया (रज़ि.) ने कि हम रसूले करीम (ﷺ) की बेटी को गुस्ल दे रही थी कि आप तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि तीन या पाँच मर्तबा गुस्ल दो या उससे भी ज़्यादा। पानी और बेरी के पत्तों से और आख़िर में काफ़ूर भी इस्ते'माल करना। फिर फ़ारिग़ होकर मुझे ख़बर दे देना। जब हम फ़ारिग़ हुए तो आपको ख़बर कर दी। आपने अपना इज़ार इनायत फ़र्माया और फ़र्माया कि ये अन्दर उसके बदन पर लपेट दो। (राजेअ : 168)

अय्यूब ने कहा कि मुझसे हफ़्स ने भी मुहम्मद बिन सीरीन की हदीष की तरह बयान किया था। हफ़्स की हदीष में था कि त्राक़ मर्तबा गुस्ल देना और उसमें ये तफ़्सील थी कि तीन या पाँच या सात मर्तबा (गुस्ल देना) और उसमें ये भी बयान था कि मय्यत के दाई तरफ़ से और अज़ाए-वुजू से गुस्ल शुरू किया जाए। ये भी इसी हदीष में था कि हम अत्रिया (रज़ि.) ने

٩- بَابُ مَا يُسْتَحَبُّ أَنْ يُغْسَلَ وَتَرَا
١٢٥٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ
الرَّوَّاهِبِ النَّقْعِيُّ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ
أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((وَدَخَلَ
عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَنَحْنُ نَفْسِلُ ابْنَتَهُ
فَقَالَ: ((أَغْسِلْنَهَا ثَلَاثًا أَوْ عَشْرًا أَوْ أَكْثَرَ
مِنْ ذَلِكَ بَمَاءٍ وَسَبْرٍ وَاجْعَلْنَ فِي الْأَخِرَةِ
كَافُورًا. فَإِذَا فَرَّغْتُمْ لَأَذْنِيَّ)). فَلَمَّا فَرَّغْنَا
أَذْنَاهُ قَالَ لَأَتَى ابْنَتَا حِفْوَهُ فَقَالَ: ((أَشْبِرْنَهَا
لِأَيَّاهُ)). [راجع: ١٦٧]

فَقَالَ أَيُّوبُ: وَحَدَّثَنِي حَفْصَةُ بِخَلِّ حَلِيبٍ
مُحَمَّدٍ، وَكَانَ فِي حَلِيبٍ حَفْصَةُ:
((أَغْسِلْنَهَا وَتَرَا)) وَكَانَ فِيهِ ((ثَلَاثًا أَوْ
عَشْرًا أَوْ سَبْعًا)) وَكَانَ فِيهِ أَنَّهُ قَالَ:
((ابْدَأِي بِيَمَانِهَا وَمَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنْهَا))

कहा कि हमने कंधी करके उनके बालों को तीन लटों में तक्सीम कर दिया था।

وَكَانَ لِيَدِ أَنْ أُمَّ غُطِيَّةَ قَالَتْ: وَمَشَطْنَاهَا ثَلَاثَةَ ثُرُونٍ.

मा'लूम हुआ कि औरत के सर में कंधी करके उसके बालों को तीन लटें गोंध कर पीछे डाल दें। इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) का यही कौल है।

बाब 10 : इस बयान में कि (गुस्ल) मय्यित की दाईं तरफ़ से शुरू किया जाए

١٠- بَابُ يُبْدَأُ بِمَيَّامِنِ الْمَيِّتِ

1255. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे खालिद ने बयान किया, उनसे हफ़स बिनत सीरीन ने और उनसे उम्मे अत्तिथ्या (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बेटी के गुस्ल के वक़्त फ़र्माया था कि दाईं तरफ़ से और अज़ाए-वुजू से गुस्ल शुरू करना। (राजेअ : 168)

١٢٥٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ عَنْ أُمِّ غُطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ((لِي غَسَلَ ابْنَتِي)) (إِهْدَأَنَّ بِمَيَّامِنِهَا وَمَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنْهَا)). [راجع: ١٦٧]

हर अच्छा काम दाईं तरफ़ से शुरू करना मशरूअ है और इस बारे में कई अहदीस वारिद हुई हैं।

बाब 11 : इस बारे में कि पहले मय्यित के अज़ाए-ए-वुजू को धोया जाए

١١- بَابُ مَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنَ الْمَيِّتِ

1256. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे रबीअ ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे खालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे हफ़स बिनत सीरीन ने और उनसे उम्मे अत्तिथ्या ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबज़ादी को हम गुस्ल दे रही थी। जब हमने गुस्ल शुरू कर दिया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि गुस्ल दाईं तरफ़ से और अज़ाए-ए-वुजू से शुरू करे।

(राजेअ : 168)

١٢٥٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ خَالِدِ بْنِ الْحَلَاءِ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ عَنْ أُمِّ غُطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمَّا غَسَلْنَا ابْنَتَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَنَا - وَلَحْنُ نَفْسِلُهَا -: ((إِهْدُوا بِمَيَّامِنِهَا وَمَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنْهَا)). [راجع: ١٦٧]

इससे मा'लूम हुआ कि पहले इस्तिंजा वगैरह करके वुजू कराया जाए और कुल्ली करना और नाक में पानी डालना भी शायबित हुआ फिर गुस्ल दिलाया जाए और गुस्ल दाईं तरफ़ से शुरू किया जाता है।

बाब 12 : इसका बयान कि क्या औरत को मर्द के इज़ार का कफ़न दिया जा सकता है?

١٢- بَابُ هَلْ تُكْفَنُ الْمَرْأَةُ فِي إِزَارِ الرَّجُلِ

1257. हमसे अब्दुरहमान बिन हम्माद ने बयान किया, कहा कि हमको इब्ने औन ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद ने, उनसे उम्मे अतिया ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की एक साहबजादी का इन्तिक़ाल हो गया। इस मौके पर आपने हमें फ़र्माया कि तुम उसे तीन या पाँच मर्तबा गुस्ल दो और अगर मुनासिब समझो तो इससे ज़्यादा मर्तबा भी गुस्ल दे सकती हो। फिर फ़ारिग होकर मुझे खबर कर देना। चुनाँचे जब हम गुस्ल दे चुके तो आपको खबर दी और आप ने अपना इज़ार इनायत फ़र्माया और फ़र्माया कि इसे उसके बदन से लपेट दो। (राजेअ : 168)

۱۲۵۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ حَمَادٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةٍ قَالَتْ ((وُفِّيتُ بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لَنَا: اغْسِلْنَهَا ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ إِنْ رَأَيْتُمْ، فَإِذَا فَرَعْتُمْ قَادِئِي. فَلَمَّا فَرَعْنَا قَادِئَاهُ، فَنَزَعَ مِنْ حِفْوِهِ إِزَارَهُ وَقَالَ: ((أَشْبِرْنَهَا يَأَاهُ)). (راجع: ۱۶۷)

इब्ने बत्ताल ने कहा कि उसके जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ है और जिसने ये कहा कि आँहज़रत (ﷺ) की बात और थी दूसरों को ऐसा न करना चाहिये। उसका क़ौल बे-दलील है।

बाब 13 : मय्यित के गुस्ल में काफ़ूर का इस्ते'माल आख़िर में एक बार किया जाए

۱۳- بَابُ يُجْعَلُ الْكَافُورُ فِي آخِرِهِ

1258. हमसे हामिद बिन इमर ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे उम्मे अतिया (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की एक बेटी का इन्तिक़ाल हो गया था। इसलिये आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि उसे तीन या पाँच मर्तबा गुस्ल दे दो और अगर तुम मुनासिब समझो तो उससे भी ज़्यादा पानी और बेरी के पत्तों से नहलाओ और आख़िर में काफ़ूर या (ये कहा कि) कुछ काफ़ूर का भी इस्ते'माल करना फिर फ़ारिग होकर मुझे खबर देना। उम्मे अतिया (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम फ़ारिग हुए तो हमने कहला भिजवाया। आपने अपना तहबन्द हमें दिया और फ़र्माया कि इसके अन्दर जिस्म पर लपेट दो। अय्यूब ने हफ़्सा बिनते सीरीन से रिवायत की, उनसे उम्मे अतिया (रज़ि.) ने इसी तरह हदीस बयान की। (राजेअ : 168)

۱۲۵۸- حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةٍ قَالَتْ: ((وُفِّيتُ بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ فَتَنَزَّجَ فَقَالَ: ((اغْسِلْنَهَا ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ إِنْ رَأَيْتُمْ بِمَاءٍ وَصِنْبٍ وَاجْعَلْنَ فِي الْآخِرَةِ كَافُورًا أَوْ شَيْئًا مِنْ كَافُورٍ، فَإِذَا فَرَعْتُمْ قَادِئِي)). قَالَتْ: فَلَمَّا فَرَعْنَا آذَنَاهُ، فَأَلْفَى إِلَيْنَا حِفْوَهُ فَقَالَ: ((أَشْبِرْنَهَا يَأَاهُ)). وَعَنْ أَيُّوبَ عَنْ خَفْصَةَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا بِخَوَرِهِ.

(راجع: ۱۶۷)

1259. और उम्मे अतिया ने इस रिवायत में यूँ कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीन या पाँच या सात मर्तबा या अगर तुम मुनासिब समझो तो इससे भी ज़्यादा गुस्ल दे सकती हो। हफ़्सा ने बयान किया कि उम्मे अतिया (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हमने उनके सर के बाल तीन लटों में तक्सीम कर दिये थे।

۱۲۵۹- وَقَالَتْ: إِنَّهُ قَالَ: ((اغْسِلْنَهَا ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ سَبْعًا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ إِنْ رَأَيْتُمْ)) قَالَتْ خَفْصَةُ قَالَتْ أُمِّ عَطِيَّةٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ((وَجَعَلْنَا رَأْسَهَا ثَلَاثَةً

(राजेअ: 168)

बाब 14. मय्यित औरत हो तो गुस्ल के वक्त उसके बाल खोलना

और इब्ने सीरीन (रह.) ने कहा कि मय्यित (औरत) के सर के बाल खोलने में कोई हर्ज नहीं

1260. हमसे अहमद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने खबर दी, उनसे अय्यूब ने बयान किया कि मैंने हप्सरा बन्ते सीरीन से सुना, उन्होंने कहा कि हजरत उम्मे अत्रिया (रजि.) ने हमसे बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबजादी के बालों को तीन लटों में तक्सीम कर दिया था। पहले बाल खोले गये फिर उन्हें धोकर तीन चोटियाँ कर दी गई। (राजेअ: 168)

बाब 15 : मय्यित पर कपड़ा क्योंकर लपेटा जाए

और हसन बसरी (रह.) ने फर्माया कि औरत के लिये एक पाँचवा कपड़ा चाहिये जिससे कमीज़ के तले राने और सुरीन बाँधे जाएँ

तशरीह: इसको इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया। इमाम हसन बसरी (रह.) कहते हैं कि औरत के कफ़न में पाँच कपड़े सुन्नत है। अहमद और अबू दाऊद की रिवायत में लैला बन्ते कानिफ़ से ये है कि मैं भी उन औरतों में थी जिन्होंने हजरत उम्मे कुल्थुम (रजि.) बन्ते रसूल करीम (ﷺ) को गुस्ल दिया था। पहले आपने कफ़न के लिये तहबन्द दिया फिर कुर्ता और ओढ़नी या 'नी सरबन्द फिर चादर फिर लिफ़ाफ़ा में लपेट दी गई। मा'लूम हुआ कि औरत के कफ़न में ये पाँच कपड़े सुन्नत हैं अगर मयस्सर हो तो वरना मजबूरी में एक भी जाइज़ है।

1261. हमसे अहमद ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने खबर दी, उन्हें अय्यूब ने खबर दी, कहा कि मैंने इब्ने सीरीन से सुना, उन्होंने कहा कि उम्मे अत्रिया के यहाँ अन्सार की उन ख्वातीन में से, जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बैअत की थी, एक औरत आई। बसरा में उन्हें अपने एक बेटे की तलाश थी। लेकिन वो न मिला। फिर उसने हमसे ये हदीस बयान की कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबजादी को गुस्ल दे रहे थे कि आप तशरीफ़ लाए और फर्माया कि तीन या पाँच मर्तबा गुस्ल दे दो और अगर मुनासिब समझो तो इससे भी ज़्यादा दे सकती हो। गुस्ल पानी और बेरी के पत्तों से होना चाहिये और आखिर में

[قرون] (راجع: 167)

١٤- بَابُ نَقْضِ شَعْرِ الْمَرْأَةِ

وَقَالَ ابْنُ سِيرِينَ: لَا بَأْسَ أَنْ يَنْقُضَ شَعْرَ الْمَيِّتِ.

١٢٦٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

اللّهِ بْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ أَبُو سَمِيعٍ خَفِصَةُ بِنْتُ سِيرِينَ قَالَتْ: حَدَّثَنَا أُمُّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّهَا جَعَلَتْ وَأَمْرًا بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ثَلَاثَةَ قُرُونٍ، نَقَعْنَهُ ثُمَّ حَسَلْنَهُ ثُمَّ جَعَلْنَهُ ثَلَاثَةَ قُرُونٍ)). (راجع: 167)

١٥- بَابُ كَيْفِ الْإِشْعَارِ لِلْمَيِّتِ؟

وَقَالَ الْحَسَنُ: الْجَوَابُ الْغَامِصَةُ تَشُدُّ بِهَا الْفَجْدَيْنِ وَالْوَرَكَيْنِ تَحْتَ الدَّرْعِ

١٢٦١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

اللّهِ بْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَنَّ أَبَا سَمِيعٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ سِيرِينَ يَقُولُ: ((جَاءَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ مِنَ اللَّاحِي بَايَعَنَ - لَدِمَتْ الْبَصْرَةَ تَبَادُرَ ابْنَاهَا لَهَا فَلَمْ تَذَرِكْهُ، فَحَدَّثَنَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ وَنَحْنُ نَفْسِلُ ابْنَتَهُ فَقَالَ: ((أَغْسِلْنَهَا ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ إِنَّ

काफूर का भी इस्ते'माल कर लेना। गुस्ल से फ़ारिग होकर मुझे ख़बर कर देना। उन्होंने बयान किया कि जब हम गुस्ल दे चुकीं (तो इत्तिला दी) और आपने इज़ार इनायत किया, आपने फ़र्माया कि इसे अन्दर बदन से लपेट दो। इससे ज़्यादा आपने कुछ नहीं फ़र्माया। मुझे ये नहीं मा'लूम कि ये आपकी कौनसी बेटी थी। (ये अय्यूब ने कहा) और उन्होंने बताया कि इश्आर का मतलब ये है कि इसमें नअश लपेट दी जाए। इब्ने सीरीन (रह.) भी यही फ़र्माया करते थे कि औरत के बदन में इसे लपेटा जाए, इज़ार के तौर पर बाँधा जाए। (राजेअ : 168)

बाब 16 : इस बयान में कि क्या औरत मध्यित के बाल तीन लटों में तक्सीम कर दिये जाएँ?

1262. हमसे कुबैसा ने हदीष बयान की, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उम्मे हुज़ैल ने और उनसे उम्मे अत्तिয়া (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि हमने आँहज़रत (ﷺ) की बेटी के सर के बाल गूँध कर तीन चोटियाँ कर दी और वकीअ ने सुफ़यान से यूँ रिवायत किया, एक पेशानी के तरफ़ के बालों की चोटी और दो इधर-उधर के बालों की।

(राजेअ : 168)

बाब 17 : औरत के बालों की तीन लटें बनाकर उसके पीछे डाल दी जाए

1263. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे यहाा बिन सईद ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, कहा कि हमसे हफ़सा ने बयान किया, उनसे उम्मे अत्तिয়া (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की एक साहबज़ादी का इन्तिक़ाल हो गया, तो नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि उनको पानी और बेरी के पत्तों से तीन या पाँच मर्तबा गुस्ल दे लो। अगर तुम मुनासिब समझो तो इससे ज़्यादा भी दे सकती हो और आख़िर में काफ़ूर या (आप ﷺ ने फ़र्माया कि) थोड़ी सी काफ़ूर इस्ते'माल करो, फिर जब गुस्ल दे चुको तो मुझे ख़बर दो। चुनाँचे फ़ारिग होकर हमने आपको ख़बर दी

رَأَيْتُنَّ ذَلِكَ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ ، وَاجْعَلْنِ فِي الْآخِرَةِ كَافُورًا ، فَإِذَا فَرَعْتُنَّ فَلَاذْنِي)) . قَالَ : فَلَمَّا فَرَعْنَا أَلْقَى إِلَيْنَا حِفْوَهُ فَقَالَ : ((أَشْعِرْنَاهَا إِيَّاهُ)) ، وَلَمْ يَزِدْ عَلَى ذَلِكَ . وَلَا أَذِرِي أَيُّ بَنَاتِهِ . وَزَعَمَ أَنَّ الْإِشْعَارَ الْفَقْهَاءُ فِيهِ . وَكَذَلِكَ كَانَ ابْنُ سِيرِينَ يَأْمُرُ بِالْمَرْأَةِ أَنْ تُشَعَّرَ وَلَا تُؤَرَّرَ .

[راجع : ١٦٧]

١٦- بَابُ هَلْ يُجْعَلُ شَعْرُ الْمَرْأَةِ ثَلَاثَةَ قُرُونٍ

١٢٦٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أُمِّ الْهَدَيْلِ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((صَفَرْنَا شَعْرَ بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ)) - تَعْنِي ثَلَاثَةَ قُرُونٍ - وَقَالَ وَكَيْفَ قَالَ سَعِيدٌ : ((نَاصِيَتَهَا وَقَرْنَيْهَا)) .

[راجع : ١٦٧]

١٧- بَابُ يُلْقَى شَعْرُ الْمَرْأَةِ خَلْفَهَا ثَلَاثَةَ قُرُونٍ

١٢٦٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانٍ قَالَ : حَدَّثَنَا حَفْصَةُ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ ((تَوَلَّيْتُ إِحْدَى بَنَاتِ النَّبِيِّ ﷺ ، فَأَتَانَا النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ : ((اغْسِلْنَاهَا بِالسِّدْرِ وَتَرَا ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ إِنْ رَأَيْتُنَّ ذَلِكَ ، وَاجْعَلْنِ فِي الْآخِرَةِ كَافُورًا أَوْ شَيْئًا مِنْ كَافُورٍ ، فَإِذَا فَرَعْتُنَّ

तो आप (ﷺ) ने (उनके कफ़न के लिये) अपना इज़ार इनायत किया। हमने उसके सर के बालों की तीन चोटियाँ करके उन्हें पीछे की तरफ डाल दिया था। (राजेअ: 168)

لَا ذَنْبَ عَلَيْنَا، فَلَمَّا فُرِّعَتْ أَدْنَاهُ، فَأَلْفَى إِلَيْنَا حِفْوَهُ، فَضَفَرْنَا شَعْرَهَا ثَلَاثَةَ قُرُونٍ وَأَلْفَيْنَاهَا خَلْفَهَا)). [راجع: ١٦٧]

सहीह इब्ने हिब्बान में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसा हुक्म दिया था कि बालों की तीन चोटियाँ कर दो। इस हदीस से मय्यत के बालों का गूँथना भी प्राबित है।

बाब 18 : इस बारे में कि कफ़न के लिये सफ़ेद कपड़े होने मुनासिब है

١٨- بَابُ الْيَأْسِ الْبَيْضِ لِلْكَفْنِ

1264. हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें हिशाम बिन इर्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके बाप इर्वा बिन जुबैर ने और उन्हें (उनकी ख़ाला) उम्मुल मोयिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को यमन के तीन सफ़ेद सूती धुले हुए कपड़ों में कफ़न दिया गया, उनमें न क़मीज़ थी न अमामा।

(दीगर मक़ाम: 1271, 1272, 1273, 1374)

١٢٦٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كُنَّ فِي ثَلَاثَةِ أَثْوَابٍ بَيْضَةٍ بَيْضٍ سَخَوِيَّةٍ مِنْ كُرْسُفٍ لَيْسَ فِيهِمْ قَمِيصٌ وَلَا عِمَامَةٌ)).

[أطرافه: ١: ١٢٧١, ١٢٧٢, ١٢٧٣]

[١٢٨٧]

तशरीह: बल्कि एक इज़ार थी, एक चादर, एक लिफ़ाफ़ा पस सुन्नत यही तीन कपड़े हैं अमामा बाँधना बिदअत है। हनाबिला और हमारे इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) ने उसको मकरूह रखा है और शाफ़िइया ने क़मीज़ और अमामा का बढ़ाना भी जाइज़ रखा है। एक हदीस में है कि सफ़ेद कपड़ों में कफ़न दिया करो। तिमिज़ी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) के कफ़न के बारे में जितनी हदीसें वारिद हुई हैं उन सब में हज़रत आइशा (रज़ि.) की ये हदीस ज़्यादा सहीह है। अफ़सोस है कि हमारे ज़माने के लोग ज़िंदगी भर शादी-ग़मी की रस्मों और बिदअत में गिरफ़्तार रहते हैं और मरते वक़्त भी बेचारी मय्यत का पीछा नहीं छोड़ते। कहीं कफ़न ख़िलाफ़े सुन्नत करते हैं लिफ़ाफ़े के ऊपर एक चादर डाल देते हैं। कहीं सन्दल शीरीनी चादर चढ़ाते हैं। कहीं क़ब्र पर मेला और मजमा करते हैं और उसका नाम इस रखते हैं। कहीं क़ब्र पर चिराग़ जलाते हैं, उस पर इमारत और गुम्बद ठाते हैं। ये सब उमूर बिदअत और मन्मूअ है। अल्लाह तआला मुसलमानों की आँखें खोले और उनको नेक तौफ़ीक़ दे। आमीन या रब्बल आलमीन (वहीदी)

रिवायत में कफ़न नबवी के बारे में लफ़ज़ सहूलिय: आया है। जिसकी तशरीह अल्लामा शौकानी (रह.) के लफ़ज़ों में ये है। सहूलियतुन बिजम्मिलमुहमलतैन व युर्वा बिफत्हिन अव्वलुहू निस्बतुन इला सहूल कर्यतुम्बिलियमन क़ालन्नववी वल्फत्हु अशहरू व हुव रिवायतुलअक्फरीन काल इब्नुलआराबी बीजुन नक्रियतुन ला तकूनु इल्ला मिनल्कुत्नि व फ़ी रिवायतिन लिलबुख़ारी सुहूल बिदूनि निस्बतिन व हुव जम्उ सहलिन वस्सहलु अफ़्फ़ीबुलअब्दुल्लु न्नक्रियु वला यकूनु इल्ला मिन कुत्नि कमा तक़द्म व काललअज़हरी बिल्फत्हिल्मदीनति व बिज्जम्मि अफ़्फ़ियाबु व कील अन्निस्बतु इलल्क़र्यति बिज्जम्मि व अम्मा बिल्फत्हि फनिस्बतुन इलल्क़िसारि लिअन्नहू युस्हलुष्शियाबु अय युनक्किहा क़ज़ा फिलफ़त्हि (नैलुल औतार, जिल्द 3, पेज 40)

खुलास-ए-कलाम ये है कि लफ़्ज़ सहूलियः सीन और हाअ के ज़म्मा के साथ है और सीन का फ़तह भी रिवायत किया गया है। जो एक गांव की तरफ़ निस्बत है जो यमन में वाक़ेअ था। इब्ने अअराबी वग़ैरह ने कहा कि वो सफ़ेद साफ़-सुथरा कपड़ा है जो सूती होता है। बुखारी शरीफ़ की एक रिवायत में लफ़्ज़ सुहूल आया है जो सहूल की जमा है और वो सफ़ेद धुला हुआ कपड़ा होता है, अज़हरी कहते हैं कि सहूल सीन के फ़तह के साथ शहर मुराद होगा और सीन के ज़म्मा के साथ धोबी मुराद होगा जो कपड़े को धोकर साफ़ शफ़्फ़ाफ़ कर देता है।

बाब 19 : दो कपड़ों में कफ़न देना

1265. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद ने, उन्होंने बयान किया कि एक शख़्स मैदाने-अरफ़ात में (एहराम बाँधे हुए) खड़ा हुआ था कि अपनी सवारी से गिर पड़ा और उसकी सवारी ने उन्हें कुचल दिया। या (वक्फ़स्तहू के बजाय ये लफ़्ज़) औक्रस्तहू कहा। नबी करीम (ﷺ) ने उनके लिये फ़र्माया कि पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल दे कर दो कपड़ों में इन्हें कफ़न दो और ये भी हिदायत फ़र्माई कि इन्हें खुशबू न लगाओ और न इनका सर छुपाओ, क्योंकि ये क़यामत के दिन लब्बैक कहता हुआ उठेगा।

(दीगर मक्राम : 1266, 1267, 1268, 1839, 1849, 1850, 1851)

١٩- بَابُ الْكَفْنِ فِي ثَوْبَيْنِ

١٢٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو الثَّغَمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ وَالِيفَ بِعَرَفَةَ إِذْ وَقَعَ عَنْ رَاحِلِهِ ثَوْبَانِ - قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ، وَلَا تَحْطَرُوهُ، وَلَا تَعْمُرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّهُ يَبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَلْبًى)).

[أطرافه ن:] ١٢٦٦، ١٢٦٧، ١٢٦٨

[١٨٣٩، ١٨٤٩، ١٨٥٠، ١٨٥١]

तशरीह : प्राबित हुआ कि मुहरिम को दो कपड़ों में दफनाया जाए। क्योंकि वो हालते एहराम में है और मुहरिम के लिये एहराम की सिर्फ़ दो ही चादरें हैं, बरखिलाफ़ उसके दीगर मुसलमानों के लिये मर्द के लिये तीन चादरें और औरत के लिये पाँच कपड़े मसनून हैं।

बाब 20 : मय्यित को खुशबू लगाना

1266. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) के साथ मैदाने-अरफ़ात में वुकूफ़ किये हुए था कि वो अपने ऊँट से गिर पड़ा और ऊँट ने उन्हें कुचल दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन्हें पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल देकर दो कपड़ों का कफ़न दो, खुशबू न लगाना और न सर ढाँपना, क्योंकि अल्लाह तअला क़यामत के दिन इन्हें लब्बैक कहते

٢٠- بَابُ الْحَوْطِ لِلْمَيِّتِ

١٢٦٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ وَالِيفَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِعَرَفَةَ إِذْ وَقَعَ مِنْ رَاحِلِهِ ثَوْبَانِ - قَالَ: فَانْقَضَتْ - فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ، وَلَا تَحْطَرُوهُ، وَلَا تَعْمُرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّ اللَّهَ

हुए उठाएगा।

يَبْعَثُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مُلَبًّا)).

तशरीह: मुहरिम को खुशबू न लगाई जाए, इससे प्राबित हुआ कि गैर मुहरिम मय्यत को खुशबू लगानी चाहिये। बाब का मकसद यही है। मुहरिम को खुशबू के लिये इस वास्ते मना फ़र्माया कि वो हालते एहराम ही में है और क़यामत के दिन इसी हाल में लम्बैक कहता हुआ उठेगा और ज़ाहिर है कि मुहरिम को हालते एहराम में खुशबू लगाना मना है।

बाब 21 : मुहरिम को क्योंकर कफ़न दिया जाए

1267. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको अबू अवाना ने ख़बर दी, उन्हें अबू बशीर जा'फ़र ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने, उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा हम लोग नबी करीम (ﷺ) के साथ एहराम बाँधे हुए थे कि एक शख्स की गर्दन उसके कैंट ने तोड़ डाली तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन्हें पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल दे दो और दो कपड़ों का कफ़न दो और खुशबू न लगाओ और न सर को ढँको। इसलिये कि अल्लाह तआला इन्हें उठाएगा इस हालत में कि वो लम्बैक पुकार रहा होगा।

1268. हमसे मुसहद ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन जैद ने, उनसे अम्र और अय्यूब ने, उसने सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि एक शख्स नबी करीम (ﷺ) के साथ मैदाने-अरफ़ात में खड़ा हुआ था। अचानक वो अपनी सवारी से गिर पड़ा। अय्यूब ने कहा कि कैंटनी ने उसकी गर्दन तोड़ डाली और अम्र ने ये कहा कि कैंटनी ने उसको गिरते ही मार डाला और उसका इन्तिक़ाल हो गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल दो और दो कपड़ों का कफ़न दो और खुशबू न लगाओ, न सर ढको क्योंकि क़यामत में ये उठाया जाएगा। अय्यूब ने कहा कि (या'नी) तल्बिया कहते हुए (उठाया जाएगा) और अम्र ने (अपनी रिवायत में युलब्बी के बजाय) मुलब्बियान का लफ़ज़ नक़ल किया है। (या'नी लम्बैक कहता हुआ उठेगा)

मा'लूम हुआ कि मुहरिम मर जाए तो उसका एहराम बाकी रहेगा। शाफ़िइया और अहले हदीष का यही क़ौल है।

बाब 22 : क़मीस में कफ़न देना, उसका हाशिया सिला हुआ हो या बग़ैर सिला हुआ हो

٢١- بَابُ كَيْفَ يُكْفَنُ الْمُحْرِمُ؟

١٢٦٧- حَدَّثَنَا أَبُو الثُّعْمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَّالَةَ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَجُلًا وَقَصَهُ بَعْرُهُ وَنَحْنُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ، وَلَا تُمَسِّرُوا رَأْسَهُ، وَلَا تُخَمِّرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّ اللَّهَ يَبْعَثُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مُلَبًّا)). وَلَمْ يَنْسَخْهُ مُلَبًّا.

١٢٦٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عُمَرُو وَالْيُوبِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ وَافَقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِرَفَّةٍ لَوَقَعَ عَنْ رَاحِلَتِهِ، قَالَ الْيُوبُ: لَوَقَصْتَهُ- وَقَالَ عُمَرُو: فَأَقَصَعْتَهُ- فَمَاتَ، فَقَالَ: ((اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ، وَلَا تُحَطِّطُوهُ، وَلَا تُخَمِّرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّهُ يَبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ الْيُوبُ: بَلَى، وَقَالَ عُمَرُو: مُلَبًّا)).

٢٢- بَابُ الْكَفْنِ فِي الْقَمِيصِ الَّذِي يُكْفَى أَوْ لَا يُكْفَى، وَمَنْ كَفَّنَ

और बगैर कमीस के कफ़न देना

1249. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे यहा बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से बयान किया कि जब अब्दुल्लाह बिन उबैय (मुनाफ़िक़) की मौत हुई तो उसका बेटा (अब्दुल्लाह सहाबी) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वालिद के कफ़न के लिये आप अपनी क़मीस इनायत फ़र्माइये और उन पर नमाज़ पढ़ें और मफ़िरत की दुआ कीजिए। चुनौचे नबी करीम (ﷺ) ने अपनी क़मीस (गायत मुख़्त की वजह से) इनायत की और फ़र्माया कि मुझे बताना मैं नमाज़े जनाज़ा पढ़ूंगा। अब्दुल्लाह ने इत्तिला भिजवाई। जब आप (ﷺ) पढ़ाने के लिये आगे बढ़े तो उमर (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को पीछे से पकड़ लिया और अर्ज़ किया कि क्या अल्लाह तआला ने आपको मुनाफ़िक़ीन की नमाज़े-जनाज़ा पढ़ने से मना नहीं किया है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे इख़्तियार दिया गया है। जैसा कि इशादि-बारी है, तू उनके लिये इस्तग़फ़ार कर या न कर और अगर तू सत्तर मर्तबा भी इस्तग़फ़ार करे तो भी अल्लाह उन्हें हरिज़ माफ़ नहीं करेगा। चुनौचे नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद ये आयत उतरी, किसी भी मुनाफ़िक़ की मौत पर उसकी नमाज़े जनाज़ा कभी न पढ़ाना। (दीगर मक़ाम: 4670, 4672, 5796)

1270. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे अम्र ने, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो अब्दुल्लाह बिन उबय को दफ़न किया जा रहा था। आप (ﷺ) ने उसे क़ब्र से निकलवाया और अपना लुआबे-दहन उसके मुँह में डाला और उसे अपनी क़मीस पहनवाई।

(दीगर मक़ाम: 1350, 3007, 5795)

तशरीह: अब्दुल्लाह बिन उबय मशहूर मुनाफ़िक़ है जो जंगे उहुद के मौक़े पर रास्ते में से कितने ही सीधे-सादे मुसलमानों को बहकाकर वापस ले आया था और उसी ने एक मौक़े पर ये भी कहा था कि हम मदनी और शरीफ़ लोग हैं और ये मुहाजिर मुसलमान ज़लील परदेसी हैं। हमारा दाँव लगेगा तो हम उनको मदीना से निकाल बाहर करेंगे। उसका बेटा अब्दुल्लाह सच्चा मुसलमान सहाबी-ए-रसूल था। आप (ﷺ) ने उनकी दिल-शिकनी गवारा नहीं की और करम का मुआमला करते हुए अपना कुर्ता उसके कफ़न के लिये इनायत फ़र्माया। कुछ ने कहा कि जंगे बद्र में जब हज़रत अब्बास

بَغِيرَ قَمِيصٍ

۱۲۶۹- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ غَيْبِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي لَسًا تَوَلَّى جَاءَ ابْنَهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: أَغْطِنِي قَمِيصَكَ أَكْفَنَهُ فِيهِ، وَصَلَّ عَلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُ لَهُ، فَأَعْطَاهُ النَّبِيُّ ﷺ قَمِيصَهُ فَقَالَ: ((أَوَلَيْ أَعْطَاهُ النَّبِيُّ ﷺ قَمِيصَهُ لَمَّا أَرَادَ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَيْهِ جَدُّهُ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: أَلَيْسَ اللَّهُ نَهَاكَ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى الْمُنَافِقِينَ؟ فَقَالَ: ((أَنَا بَيْنَ خَيْرَتَيْنِ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: «اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ، إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ» فَصَلَّى عَلَيْهِ، فَتَرَلْتُ: «وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا»)).

[أطرافه في: ۴۶۷۰، ۴۶۷۲، ۵۷۹۶.]

۱۲۷۰- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ سَعْدٍ جَابِرًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَى النَّبِيَّ ﷺ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَعْدَ مَا ذُكِرَ، فَأَخْرَجَهُ فَتَقَتَ فِيهِ مِنْ رِيْقِهِ، وَأَلْبَسَهُ قَمِيصَهُ)).

[أطرافه في: ۱۳۵۰، ۳۰۰۸، ۵۷۹۵.]

(रज़ि.) कैद होकर आए तो वो नंगे थे। उनका ये हाले ज़ार देखकर अब्दुल्लाह बिन उबय ने अपना कुर्ता उनको पहुँचा दिया था, आँहज़रत (ﷺ) ने उसका बदला अदा कर दिया कि ये एहसान बाक़ी न रहे।

उन मुनाफ़िकों के बारे में पहली आयत इस्तग़फ़िरलहुम औ ला तस्तग़फ़िर लहुम इन तस्तग़फ़िर लहुम (तौबा, 80) नाज़िल हुई थी। इस आयत से हज़रत उमर (रज़ि.) समझे कि उन पर नमाज़ पढ़ना मना है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको समझाया कि इस आयत में मुझको इस्तिथार दिया गया है। तब हज़रत उमर (रज़ि.) ख़ामोश रहे। बाद में आयत व ला तुसल्लि अहदिम्मिन्हुम (तौबा, 84) नाज़िल हुई। जिसमें आप (ﷺ) को अल्लाह ने मुनाफ़िकों पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से क़तून रोक दिया। पहली और दूसरी रिवायतों में तल्बीक़ ये है कि पहले आप (ﷺ) ने कुर्ता देने का वा'दा फ़र्मा दिया था फिर अब्दुल्लाह के अज़ीजों ने आप (ﷺ) को तकलीफ़ देना मुनासिब न जाना और अब्दुल्लाह का जनाज़ा तैयार करके क़ब्र में उतार दिया कि आँहज़रत (ﷺ) तशीरुफ़ ले आये और आप (ﷺ) ने वो किया जो रिवायत में मज़कूर है।

बाब 23: बग़ैर क़मीस के क़फ़न देना

۲۳- بَابُ الْكَفْنِ بِغَيْرِ قَمِيصٍ

मुस्तम्ली के नुस्खे में ये तर्जुम-ए-बाब नहीं है और वही ठीक है क्योंकि ये मज़मून अगले बाब में बयान हो चुका है।

1271. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़सान प्रौरी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) को तीन सूती धुले हुए कपड़ों में क़फ़न दिया गया था। आप (ﷺ) के क़फ़न में न क़मीस थी न अमामा।

(राजेअ: 1264)

1272. हमसे मुसद्द ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके बाप इर्वा बिन जुबैर ने, उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को तीन कपड़ों का क़फ़न दिया गया था, जिनमें न क़मीस थी और न अमामा था। हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह बुखारी (रह.) फ़र्माते हैं अबू नुऐम ने लफ़ज़ झलाज़ा नहीं कहा और अब्दुल्लाह बिन वलीद ने सुफ़यान से लफ़ज़ झलाज़ा नक़ल किया है। (राजेअ: 1264)

बाब 24 : अमामा के बग़ैर क़फ़न देने का बयान

1273. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझ से मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके बाप इर्वा बिन जुबैर ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को सहूल के तीन सफ़ेद कपड़ों का क़फ़न दिया गया था न उनमें क़मीस थी और न अमामा था।

۱۲۷۱- حَدَّثَنَا أَبُو نَعِيمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ غُرُورَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: «كَفَّنَ النَّبِيُّ ﷺ لِي ثَلَاثَةَ أَثَوَابٍ مَحْوُولٍ كَرَسُفَرٍ لَيْسَ فِيهَا قَمِيصٌ وَلَا عِمَامَةٌ»۔ (راجع: ۱۲۶۴)

۱۲۷۲- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا «أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَفَّنَ لِي ثَلَاثَةَ أَثَوَابٍ لَيْسَ فِيهَا قَمِيصٌ وَلَا عِمَامَةٌ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ أَبُو نَعِيمٍ لَا يَقُولُ ثَلَاثَةً وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْوَلِيدِ عَنْ سَفْيَانَ يَقُولُ ثَلَاثَةً»۔ (راجع: ۱۲۶۴)

۲۴- بَابُ الْكَفْنِ وَلَا عِمَامَةٍ

۱۲۷۳- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ غُرُورَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: «أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَفَّنَ لِي ثَلَاثَةَ أَثَوَابٍ بَيْضٍ مَحْوُولَةٍ لَيْسَ فِيهَا قَمِيصٌ وَلَا عِمَامَةٌ»۔

मतलब ये है कि चौथा कपड़ा न था। क़स्तलानी ने कहा इमाम शाफ़िई ने क़मीस पहनाना जाइज़ रखा है मगर उसको सुन्नत नहीं समझा और उनकी दलील हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का फ़ेअल है जिसे बैहकी ने निकाला कि उन्होंने अपने बेटे को पाँच कपड़ों में कफ़न दिया। तीन लिफ़ाफ़े और एक क़मीस और एक अमामा लेकिन शरह मुहज़ज़ब में हैं कि क़मीस और अमामा न हो। अगरचे क़मीस और अमामा मकरूह नहीं मगर औला के खिलाफ़ है (वहीदी)। बेहतर यही है कि सिर्फ़ तीन चादरों में कफ़न दिया जाए।

बाब 25 : कफ़न की तैयारी मय्यित के सारे माल में से करना चाहिये

٢٥- بَابُ الْكَفْنِ مِنْ جَمِيعِ الْمَالِ

और अता और जुहरी और अग्र बिन दीनार और क़तादा (रज़ि.) का यही क़ौल है और अग्र बिन दीनार ने कहा खुशबूदार का ख़र्च भी सारे माल से किया जाए। और इब्राहीम नख़्ई ने कहा पहले माल में से कफ़न की तैयारी करें, फिर क़र्ज़ अदा करें, फिर वसियत पूरी करें और सुफ़यान शौरी ने कहा क़ब्र और गुस्ल देने वाले की उजरत भी कफ़न में दाख़िल है।

وَبِهِ قَالَ عَطَاءُ وَالزُّهْرِيُّ وَعَمْرُو بْنُ دِينَارٍ وَقَتَادَةُ وَقَالَ عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ: الْحَوْتُ مِنْ جَمِيعِ الْمَالِ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ: يَبْدَأُ بِالْكَفْنِ، ثُمَّ بِالذِّئْبِ، ثُمَّ بِالْوَصِيَّةِ. وَقَالَ سُفْيَانُ: أَجْرُ الْقَبْرِ وَالْفَسْلِ هُوَ مِنَ الْكَفْنِ.

1273. हमसे अहमद बिन मुहम्मद मक्की ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने, उनसे उनके बाप सअद ने और उनसे उनके वालिद इब्राहीम बिन अब्दुरहमान ने बयान किया कि अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के सामने एक दिन खाना रखा गया तो उन्होंने फ़र्माया कि मुअ़अब बिन उमैर (रज़ि.) (ग़ज्व-ए-उहद में) शहीद हुए, वो मुझ से अफ़ज़ल थे लेकिन उनके कफ़न के लिये एक चादर के सिवा और कोई चीज़ मुहैया न हो सकी। इसी तरह हमज़ा (रज़ि.) शहीद हुए या किसी दूसरे सहाबी का नाम लिया, वो भी मुझसे अफ़ज़ल थे लेकिन उनके कफ़न के लिये भी सिर्फ़ एक ही चादर मिल सकी। मुझे तो डर लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे चैन और आराम के सामान हमको जल्दी से दुनिया ही में दे दिये गये हों फिर वो रोने लगे। (दीगर मक़ाम : 1275, 4045)

١٢٧٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَكِّيُّ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : ((أَتَى عِنْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَوْمًا بِطَعَامٍ، فَقَالَ: قِيلَ مُصْغَبُ بْنُ عَمِيرٍ - وَكَانَ خَيْرًا مِنِّي - فَلَمْ يَوْجَدْ لَهُ مَا يُكْفَنُ فِيهِ إِلَّا بُرْدَةٌ. وَقِيلَ حَمْرَةٌ - أَوْ رَجُلٌ آخَرُ - خَيْرٌ مِنِّي فَلَمْ يَوْجَدْ لَهُ مَا يُكْفَنُ فِيهِ إِلَّا بُرْدَةٌ. فَقَدْ عَشِيتُ أَنْ يَكُونَ قَدْ عَجَلَتْ لَنَا مَطْبَاتُنَا فِي حَيَاتِنَا الدُّنْيَا. ثُمَّ جَعَلَ يَبْكِي)). [طرفاء ن: ١٢٧٥، ٤٠٤٥].

तशरीह : इमामे मुहदिषीन (रह.) ने इस हदीष से ये प्राबित किया है कि हज़रत मुसअब और हज़रत अमीर हमज़ा (रज़ि.) का कुल माल इतना ही था। बस एक चादर कफ़न के लिये तो ऐसे मौक़े पर सारा माल ख़र्च करना चाहिये। उसमें इख़िलाफ़ है कि मय्यत क़र्ज़दार हो तो सिर्फ़ इतना कफ़न दिया जाए कि सतरपोशी हो जाए या सारा बदन ढाँका जाए। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने उसको तर्जीह दी है कि सारा बदन ढाँका जाए, ऐसा कफ़न देना चाहिये। हज़रत मुसअब बिन उमैर

(रज़ि.) कुरैशी जलीलुल-क़द्र सहाबी (रज़ि.) हैं। रसूले करीम (ﷺ) ने हिज्रत से पहले ही उनको मदीना शरीफ़ बतौर मुअल्लिमुल कुआन व मुबल्लिगो इस्लाम भेज दिया था। हिज्रत से पहले ही उन्होंने मदीना में जुम्आ कायम फ़र्माया जबकि मदीना खुद एक गांव था। इस्लाम से पहले ये कुरैश के हसीन नौजवानों में ऐश व आराम में ज़ेबो-ज़ीनत में शोहरत रखते थे मगर इस्लाम लाने के बाद ये कामिल दुवेंश बन गये। कुआन पाक की आयत रिजालुन सदकू मा आहदुल्लाह अलैहि (अल अहज़ाब : 23) उन्हीं के हक़ में नाज़िल हुई। जंगे उहुद में ये शहीद हो गए थे। (रज़ियल्लाहु अन्हु व रज़ू अन्हु)

बाब 26 : अगर मय्यित के पास एक ही कपड़ा निकले

۲۶- بَابُ إِذَا لَمْ يُوجَدْ إِلَّا ثَوْبٌ وَاحِدٌ

1275. हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें सअद बिन अब्राहीम ने, उन्हें उनके बाप अब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान ने कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के सामने खाना हाज़िर किया गया। वो रोज़े से थे, उस वक़्त उन्होंने फ़र्माया कि हाय! मुअब बिन इमैर (रज़ि.) शहीद किये गये। वो मुझसे बेहतर थे, लेकिन उनके कफ़न के लिये एक ही चादर मयस्सर आ सकी कि अगर उससे उनका सर ढाँका जाता तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँके जाते तो सर खुल जाता और मैं समझता हूँ कि उन्होंने ये भी फ़र्माया हज़ज़ा (रज़ि.) भी (इसी तरह) शहीद हुए, वो भी मुझसे अच्छे थे। फिर उनके बाद दुनिया की कुशादगी ख़ूब हुई या ये फ़र्माया कि दुनिया हमें बहुत दी गई और हमें तो इसका डर लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि हमारी नेकियों का बदला इसी दुनिया में हमको मिल गया हो। फिर आप इस तरह रोने लगे कि खाना भी छोड़ दिया। (राजेज़ : 1264)

۱۲۷۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ إِبْرَاهِيمَ ((رَأَى عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنِّي بَطْعَامُ - وَكَانَ صَائِمًا - فَقَالَ : قِيلَ مُصْنَبُ بْنُ عُمَيْرٍ - وَهُوَ خَيْرٌ مِنِّي - كَفَّنَ فِي بُرْدَةٍ إِنْ غَطَّى رَأْسَهُ بَدَتْ رِجْلَاهُ، وَإِنْ غَطَّى رِجْلَاهُ بَدَتْ رَأْسُهُ. وَأَرَاهُ قَالَ : وَقِيلَ حَمْزَةُ - وَهُوَ خَيْرٌ مِنِّي - ثُمَّ بَسِطَ لَنَا مِنَ الدُّنْيَا مَا بَسِطَ - أَوْ قَالَ : أَعْطَيْنَا مِنَ الدُّنْيَا مَا أَعْطَيْنَا - وَقَدْ عَشِينَا أَنْ نَكُونَ حَسَنَاتًا عَجَلْتُمْ لَنَا. ثُمَّ جَعَلَ يَتَكَبَّرُ حَتَّى تَوَلَّى الطَّعَامَ.

[راجع: ۱۲۶۴]

तशरीह : हज़रत मुअब (रज़ि.) के यहाँ सिर्फ़ एक चादर ही उनका कुल मताअ (सम्पत्ति) थी, वो भी तंग, वही उनके कफ़न में दे दी गई। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

हालाँकि हज़रत अब्दुर्रहमान रोज़ेदार थे, दिनभर के भूखे थे फिर भी उन तसव्वुरात (यादों) में खाना छोड़ दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ अशर-ए-मुबशशरा में से थे और इस क़दर मालदार थे कि रईस तुज्जार का लक़ब उनको हासिल था। इतिकाल के वक़्त दौलत के अम्बार वारिषों को मिले। उन हालात में भी मुसलमानों की हर मुष्किन ख़िदमात के लिये हर वक़्त हाज़िर रहा करते थे। एक बार उनके कई सौ ऊँट अनाज के साथ मुल्के शाम से आए थे। वो सारा अनाज मदीना वालों के लिये मुफ़्त तक्सीम कर दिया। (रज़ियल्लाहु अन्हु व रज़ू अन्हु)

बाब 27 : जब कफ़न का कपड़ा छोटा हो कि सर

۲۷- بَابُ إِذَا لَمْ يَجَدْ كَفَنًا إِلَّا مَا

और पाँव दोनों न ढँक सकें तो सर छुपा दें
(और पाँव पर घास वगैरह डाल दें)

1276. हमसे इमर बिन हफ़स बिन गयाज़ ने बयान किया, कहा कि हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि हमसे शक्रीक ने बयान किया, कहा कि हमसे खब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया, कि हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ अल्लाह के लिये हिजरत की। अब हमें अल्लाह तआला से अज़ मिलना ही था। हमारे बाज़ साथी तो इन्तिक़ाल कर गये और (इस दुनिया में) उन्होंने अपने किये का कोई फल नहीं देखा। मुस्अब बिन इमैर (रज़ि.) भी उन्हीं लोगों में से थे और हमारे बाज़ साथियों का मेवा पक गया और वो चुन-चुन कर खाता है। (मुस्अब बिन इमैर रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद हुए, हमको उनके कफ़न में एक चादर के सिवा और कोई चीज़ न मिली और वो भी ऐसी कि अगर उससे सर छुपाते हैं तो पाँव खुल जाता है और अगर पाँव छुपाते हैं तो सर खुल जाता। आखिर ये देख कर नबी करीम (ﷺ) ने इशाद फ़र्माया कि सर को छुपा दें और पाँव पर सज़ घास इज़्रार नामी डाल दें। (दीगर मक़ाम : 3797, 3913, 3914, 4047, 4082, 6432, 6447)

बाब और हदीष में मुताबक़त जाहिर है क्योंकि हज़रत मुस्अब बिन इमैर (रज़ि.) का कफ़न जब नाकाफ़ी रहा तो उनके पैरों को इज़्रार नामी घास से ढँक दिया गया।

बाब 28 : उनके बयान में जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में अपना कफ़न खुद ही तैयार रखा और आप (ﷺ) ने इस पर किसी तरह का ए'तिराज़ नहीं फ़र्माया

1288. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे सहल (रज़ि.) ने कि एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक बुनी हुई हाशियेदार चादर आपके लिये तो हफ़ा लाई। सहल बिन सअद (रज़ि.) ने (हाज़िरीन से) पूछा कि तुम जानते हो चादर क्या? लोगों ने कहा कि जी हाँ! शमला। सहल (रज़ि.) ने कहा, हाँ शमला (तुमने

يُؤَارِي رَأْسَهُ أَوْ قَدَمَيْهِ غُطِّي بِهِ رَأْسُهُ

۱۲۷۶- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ هِثَابٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنَا حَقِيقٌ حَدَّثَنَا خَبَابٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ نَلْعَسُ رِجْلَةَ اللَّهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللَّهِ: لَمِنَا مِنْ مَاتَ لَمْ يَأْكُلْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا، مِنْهُمْ مُصَنَّبُ بْنُ عُمَيْرٍ، وَمِنَا مَنْ أَيْقَنَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ لَهْوٍ يَهْدِيهَا. قِيلَ يَوْمَ أُحُدٍ فَلَمْ نَجِدْ مَا نُكْفِيهِ إِلَّا بُرْدَةً إِذَا غَطَيْنَا بِهَا رَأْسَهُ غَرَجَتْ رِجْلَاهُ، وَإِذَا غَطَيْنَا رِجْلَيْهِ غَرَجَ رَأْسُهُ، فَأَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَغْطِيَ رَأْسَهُ وَأَنْ نَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ مِنَ الْإِذْرَارِ).

(أطرافه ٣: ٣٨٩٧، ٣٩١٣، ٣٩١٤)

[٤٠٤٧، ٤٠٨٢، ٦٤٣٢، ٦٤٤٨]

۲۸- باب مَنِ اسْتَعَدَّ الْكَفْنَ

لِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ

فَلَمْ يُنْكَرْ عَلَيْهِ

۱۲۷۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَارِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ النَّبِيَّ ﷺ بِبُرْدَةٍ مَسْجُوجَةٍ فِيهَا خَاصِيَتَا. أَتَدْرُونَ مَا الْبُرْدَةُ؟ قَالُوا: الشَّمْلَةُ. قَالَ:

ठीक बताया) खैर उस औरत ने कहा कि मैंने अपने हाथ से इसे बुना है और आप (ﷺ) को पहनाने के लिये लाई हूँ। नबी करीम (ﷺ) ने वो कपड़ा कुबूल किया। आप (ﷺ) को उस वक़्त उसकी ज़रूरत भी थी। फिर उसे इज़ार के तौर पर बाँध कर बाहर तशरीफ़ लाए तो एक साहब (अब्दुरहमान बिन औफ़ रज़ि.) ने कहा ये तो बड़ी अच्छी चादर है, ये आप मुझे पहना दीजिए। लोगों ने कहा कि आपने (मांग कर) कुछ अच्छा नहीं किया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे अपनी ज़रूरत की वजह से पहना था और तुमने ये माँग लिया, हालाँकि तुमको मा'लूम है कि अहज़रत (ﷺ) किसी का सवाल रह नहीं करते। अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम! मैंने अपने पहनने के लिये आपसे ये चादर नहीं मांगी थी, बल्कि मैं इसे अपना कफ़न बनाऊँगा। सल्ल (रज़ि.) ने बयान किया कि वही चादर उनका कफ़न बनी। (दीगर मक़ाम : 2093, 5710, 6036)

نَعَمْ. قَالَتْ: نَسَجْتُهَا بِيَدَيَّ، فَجِئْتُ لَأَكْسُوَكَهَا، فَلَاخَلْنَا النَّبِيَّ ﷺ مُخَاجَا إِلَيْهَا، فَعَرَجَ إِلَيْنَا وَإِلَيْهَا لِإِزَارَةٍ، فَحَسَنَتْهَا فَلَاثَنَ فَقَالَ: اكْسُبِيهَا مَا أَحْسَنَتْهَا. قَالَ الْقَوْمُ: مَا أَحْسَنَتْ، لَبِسَهَا النَّبِيُّ ﷺ مُخَاجَا إِلَيْهَا ثُمَّ سَأَلَتْهُ وَعَلِمَتْ أَنَّهُ لَا يَزِدُّ قَالَ: إِنِّي وَاللَّهِ مَا سَأَلْتُ لَأَلْبِسَهَا، إِنَّمَا سَأَلْتُ لِيَكُونَ كَفْنِي. قَالَ سَهْلٌ: فَكَانَتْ كَفْنَهُ. ۞

[اطراف 3: 2093, 5710, 6036]

तशरीह: गोया अहज़रत अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने अपनी ज़िन्दगी ही में अपना कफ़न मुहय्या कर लिया। यही बाब का मक़सद है। ये भी श्राबित हुआ कि किसी मुखय्यिर मुअदमद बुजुर्ग से किसी वाकिई ज़रूरत के मौक़ों पर जाइज़ सवाल भी किया जा सकता है। ऐसी अहादीष से नबी अकरम (ﷺ) पर क़यास करके जो आज के पीरों का तबर्क़क़ हासिल किया जाता है ये दुरुस्त नहीं क्योंकि ये आप (ﷺ) की खुसूसियात और मुअजिज़ात में से हैं और आप ज़रिये ख़ैरो-बरकत हैं कोई और नहीं।

बाब 29 : औरतों का जनाजे के साथ जाना कैसा है?

1278. हमसे क़बीज़ा बिन इक्बाल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ब्रारी ने बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे उम्मे हुज़ैल हफ़्सा बिनत सीरीन ने, उनसे उम्मे अत्तिआ (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें (औरतों को) जनाजे के साथ चलने से मना किया गया मगर ताकीद से मना नहीं हुआ। (राजेअ : 313)

٢٩- بَابُ اتِّبَاعِ النِّسَاءِ الْجَنَائِزِ
١٢٧٨- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ بْنُ عُقْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ خَالِدٍ عَنْ أُمِّ الْهَنْدَلِ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((نَهَيْتُنَا عَنْ اتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ، وَلَمْ يُعْزَمْ عَلَيْنَا)). [راجع: ٣١٣]

बहरहाल औरतों के लिये जनाजे के साथ जाना मना है क्योंकि औरतें ज़ईफ़ुल क़ल्ब होती हैं। वो ख़िलाफ़े शरअ हरकतें कर सकती हैं। शारेअ की ओर भी बहुत सी मसलहतें हैं।

बाब 30 : औरत का अपने ख़ाविन्द के सिवा और किसी पर सोग करना कैसा है?

٣٠- بَابُ حَدِّ الْمَرْأَةِ عَلَى غَيْرِ زَوْجِهَا

1279. हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा

١٢٧٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بَشَرٌ

कि हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्जल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सलमा बिन अलक्रमा ने और उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने कि उम्मे अतिया (रज़ि.) के एक बेटे का इन्तिकाल हो गया। इन्तिकाल के तीसरे दिन उन्होंने सुप्रह खलूक (एक किस्म की ज़र्द खुशबू) मंगवाई और उसे अपने बदन पर लगाया और फ़र्माया कि खाविन्द के सिवा किसी दूसरे पर तीन दिन से ज़्यादा सोग करने से हमें मना किया गया है। (राजेअ : 313)

1280. हमसे अब्दुल्लाह बिन जुबैर हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान झौरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे हुमैद बिन नाफ़ेअ ने, ज़ैनब बिनते अबी सलमा से ख़बर दी कि अबू सुफ़यान (रज़ि.) की वफ़ात की ख़बर जब शाम से आई तो उम्मे हबीबा (रज़ि.) (अबू सुफ़यान रज़ि. की साहबजादी और उम्मुल मोमिनीन) ने तीसरे दिन सुफ़रा (खुशबू) मंगवाकर अपने दोनों रुख़सार और बाज़ुओं पर मला और फ़र्माया कि अगर मैंने नबी करीम (ﷺ) से ये न सुना होता कि कोई भी औरत जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर इमाम रखती हो उसके लिये जाइज़ नहीं है कि वो शौहर के सिवा किसी का सोग तीन दिन से ज़्यादा मनाए और शौहर का सोग चार महीने दस दिन करे। तो मुझे इस वक़्त इस खुशबू के इस्तेमाल की ज़रूरत नहीं थी। (दीगर मक़ाम : 1281, 5334, 5339, 5345)

तशरीह : जबकि मैं विधवा और बुढ़िया हूँ, मैंने इस हदीष पर अमल करने के ख़याल से खुशबू का इस्तेमाल कर लिया, क़ाल इब्नु हज़र हुव वहमुन लिअन्नहु मात बिल्मदीनति बिला ख़िलाफ़िन व इन्नमल्लज़ी मात बिश्शामि अख़ूहा यज़ीद बिन अबी सुफ़यान वल्हदीषु फ़ी मुस्नद इब्नि अबी शैबा वदहारमी बिलाफ़िज़ जाअ नई लिअखी उम्मि हबीबत औ हमीमुन लहा व लिअहमद नहवुहू फकविद्युन कौनुहू अखाहा या'नी अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) ने कहा कि ये वहम है। इसलिये कि अबू सुफ़यान (रज़ि.) का इन्तिकाल बिला इख़ितलाफ़ मदीना में हुआ था। शाम में इन्तिकाल करने वाले उनके भाई यज़ीद बिन अबी सुफ़यान थे। मुस्नद इब्ने अबी शैबा और दारमी और मुस्नद अहमद वग़ैरह में ये वज़ाहत मौजूद है। इस हदीष से ज़ाहिर हुआ कि सिर्फ़ बीवी अपने शौहर पर चार माह दस दिन सोग कर सकती है और किसी भी मय्यत पर तीन दिन से ज़्यादा सोग करना जाइज़ नहीं है। बीवी के शौहर पर इतना सोग करने की सूरत में भी बहुत से इस्लामी मसले पेशे-नज़र हैं।

1281. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी बुक़ैर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन

بْنِ الْمُفَضَّلِ قَالَ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ عَلْقَمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ قَالَ: تَوَفَّى ابْنُ لَامٍ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، فَلَمَّا كَانَ الْيَوْمُ الثَّلَاثُ دَعَتْ بِصَفْرَةٍ لَتَمَسَّحَتْ بِهِ وَقَالَتْ: ((نَهَيْتُنَا أَنْ نُجِدَّ أَكْثَرَ مِنْ ثَلَاثٍ إِلَّا بِزَوْجٍ)). [راجع: 313]

1280. - حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ مُوسَى قَالَ: أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ زَيْنَبِ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ قَالَتْ: ((لَمَّا جَاءَ نَعْيُ أَبِي سُفْيَانَ مِنَ الشَّامِ دَعَتْ أُمَّ حَبِيبَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا بِصَفْرَةٍ لِي الْيَوْمَ الثَّلَاثُ فَمَسَّحَتْ بِهَا رِجْلَيْهَا وَذِرَاعَيْهَا وَقَالَتْ: إِنِّي كُنْتُ عَنْ هَذَا لَعْنَةً لَوْ لَا أَنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((لَا يَجِلُّ لِمَرْأَةٍ تَزِمُنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ تُجِدَّ عَلَى مَتِّ لَوْ ثَلَاثٍ، إِلَّا عَلَى زَوْجٍ فَإِنَّهَا تُجِدُّ عَلَيْهِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)). [أطرافه في: 1281, 5334, 5339, 5345]

[5345, 5339]

1281. - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ بْنِ مُحَمَّدٍ

हज़म ने, उनसे हुमैद बिन नाफ़ेअ ने, उनसे ज़ैनब बिनत अबी सलमा ने ख़बर दी वो नबी करीम (ﷺ) की ज़ौजा मुत्तहहरा हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) के पास गई तो उन्होंने फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि कोई भी औरत जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखती हो उसके लिये शौहर के सिवा किसी मर्द पर भी तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाना जाइज़ नहीं है। शौहर पर चार महीने दस दिन तक सोग मनाए।

(राज़ेअ: 1280)

1282. फिर मैं हज़रत ज़ैनब बिनत जहश के यहाँ गई, जबकि उनके भाई का इन्तिक्लाल हुआ। उन्होंने खुशबू मंगवाई और उसे लगाया, फिर फ़र्माया कि मुझे खुशबू की कोई ज़रूरत नहीं थी लेकिन मैंने नबी करीम (ﷺ) को मिय़र पर ये कहते हुए सुना है कि किसी भी औरत को जो अल्लाह और यौमे-आख़िरत पर ईमान रखती हो, जाइज़ नहीं है कि किसी मय़ित पर तीन दिन से ज़्यादा सोग करे। लेकिन शौहर का सोग (इहत) चार महीने दस दिन तक करे।

(दीगर मक़ाम: 5335)

बाब 31 : क़ब्रों की ज़ियारत करना

1273. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे प्राबित ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रह.) ने कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक औरत पर हुआ जो क़ब्र पर बैठी हुई रो रही थी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह से डर और मन्न कर। वो बोली जाओ जी! दूर हटो! ये मुसीबत तुम पर पड़ी होती तो पता चलता। वो आप (ﷺ) को पहचान न सकी थी। फिर जब लोगों ने उसे बताया कि ये नबी करीम (ﷺ) थे, तो अब वो (घबराकर) आँहज़रत (ﷺ) के दरवाज़े पर पहुँची। वहाँ उसे कोई दरबान न मिला। फिर उसने कहा कि मैं आपको पहचान न सकी थी। (मुआफ़ फ़र्माएँ) तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि

نَنْعَمُ عَنْ خَزْمٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ نَافِعٍ عَنْ زَيْنَبِ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْ قَالَتْ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ حَبِيبَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ ((لَا يَجِلُّ لِمَرْأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ تَعْبُدُ عَلَى مِثْلِ فَوْقِ ثَلَاثٍ، إِلَّا عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)).

[راجع: ١٢٨٠]

١٢٨٢- ثُمَّ دَخَلْتُ عَلَى زَيْنَبِ بِنْتِ جَحْشٍ حِينَ تُوَلِّيَ أَخُوهَا، فَدَعَتْ بِطَبِيبٍ فَمَسَّتْ، ثُمَّ قَالَتْ: مَا لِي بِالطَّبِيبِ مِنْ حَاجَةٍ، غَيْرَ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَلَى الْمَنِيرِ يَقُولُ: ((لَا يَجِلُّ لِمَرْأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ تَعْبُدُ عَلَى مِثْلِ فَوْقِ ثَلَاثٍ، إِلَّا عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)). [طرفه ٣: ٥٣٣٥].

٣١- بَابُ زِيَارَةِ الْقُبُورِ

١٢٨٣- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِمَرْأَةٍ تَبْكِي عِنْدَ قَبْرِ فَقَالَ: ((الْقِيَّ اللَّهُ وَأَحْصِي)). قَالَتْ: إِنَّكَ عَنِّي، فَإِنَّكَ لَمْ تُصَبِّ بِمُعْتَبِي وَلَمْ تَعْرِفْ. فَقِيلَ لَهَا: إِنَّهُ النَّبِيُّ ﷺ، قَالَتْ بَابَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ تَعْبُدْ عِنْدَهُ ثَوَابِينَ، فَقَالَتْ: لَمْ أَعْرِفْكَ، فَقَالَ: ((إِنَّمَا الصَّبْرُ عِنْدَ الصُّنْمَةِ

सब्र तो जब सदमा शुरू हो उस वक़्त करना चाहिये। (अब

الأولى)). [راجع: १२०२]

क्या होता है) (राजेअ: 1252)

तशीह: मुस्लिम की एक हदीष में है कि 'मैंने तुम्हें क़ब्र की ज़ियारत करने से मना किया था लेकिन अब कर सकते हो, इससे मा' लूम हुआ कि इब्तिदा-ए-इस्लाम में मुमानअत थी और फिर बाद में उसकी इजाज़त मिल गई।' दीगर अहदीष में ये भी है कि क़ब्रों पर जाया करो कि उससे मौत याद आती है या'नी उससे आदमी के दिल में रिक्कत पैदा होती है। एक हदीष में है कि 'अल्लाह ने उन औरतों पर लअनत की है जो क़ब्रों की बहुत ज़ियारत करती हैं।' उसकी शरह में कुतुबी ने कहा कि ये लअनत उन औरतों पर है जो रात-दिन क़ब्रों ही में फिरती रहें और शौहरों के कामों का ख़्याल न रखें, न ये कि मुल्लक ज़ियारत औरतों को मना है क्योंकि मौत को याद करने में मर्द-औरत दोनों बराबर हैं। लेकिन औरतें अगर क़ब्रिस्तान में जाकर जज़अ-फ़ज़अ करें और ख़िलाफ़े शरअ उमूर की मुतकिब हों तो फिर उनके लिये क़ब्रों की ज़ियारत जाइज़ नहीं होगी।

अल्लामा ऐनी हनफी फ़र्माते हैं, इन्न ज़ियारतल्कुबूर मक्रूहुन लिन्निसाइ बल हरामुन फ़ी हाज़ज़मानि व ला सीमा निसाउ मिस्त्र या'नी हालाते मौजूदा में औरतों के लिये ज़ियारते कुबूर मक्रूह बल्कि ह़राम है ख़ास तौर पर मिस्री औरतों के लिये। ये अल्लामा ने अपने हालात के मुताबिक़ कहा है वरना आजकल हर जगह औरतों का यही हाल है।

मौलाना वहीदुज्जमाँ साहब मरहूम फ़र्माते हैं। इमाम बुखारी (रह.) ने साफ़ बयान नहीं किया कि क़ब्रों की ज़ियारत जाइज़ है या नाजाइज़ क्योंकि उसमें इख़िलाफ़ है और जिन हदीषों में ज़ियारत की इजाज़त आई है वो उनकी शराइत पर न थीं, मुस्लिम ने मर्फ़अन निकाला, 'मैंने तुमको क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया था अब ज़ियारत करो क्योंकि उससे आख़िरत की याद पैदा होती है।' (वहीदी)

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने जो हदीष यहाँ नक़ल फ़र्माई है उससे क़ब्रों की ज़ियारत यूँ प्राबित हुई कि आप (ﷺ) ने उस औरत को वहाँ रोने से मना किया। मुल्लक ज़ियारत से आप (ﷺ) ने कोई तआरुज़ नहीं फ़र्माया। उसी से क़ब्रों की ज़ियारत प्राबित हुई। मगर आजकल अक़्सर लोग क़ब्रिस्तान में जाकर मुदों का वसीला तलाश करते और बुजुर्गों से हाज़त तलब करते हैं। उनकी क़ब्रों पर चादर चढ़ाते, फूल डालते, वहाँ झाड़ व बत्ती का इतिज़ाम करते और फ़र्श व फ़रोश बिछाते हैं। शरीअत में ये सारे काम नाजाइज़ हैं बल्कि ऐसी ज़ियारत क़तअन ह़राम हैं जिनसे अल्लाह की हुदूद को तोड़ा जाए और वहाँ ख़िलाफ़े शरइयत काम किये जाएँ।

बाब 32 : औहज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना कि

मय्यित पर उसके घरवालों के रोने से

अज़ाब होता है। या'नी जब रोना, मातम करना मय्यित के खानदान की रस्म हो क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह तहरीम में फ़र्माया कि अपने नफ़्स को और अपने घरवालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ। या'नी उनको बुरे कामों से मना करो और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम में से हर कोई निगहबान है और अपने मातहतों से पूछा जाएगा और अगर ये रोना-पीटना उसके खानदान की रस्म न हो और फिर अचानक कोई उस पर रोने लगे तो हज़रत आइशा (रज़ि.) का दलील लेना इस आयत से सहीह है कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे को अपना बोझ उठाने को

३२- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ

((يُغْلَبُ الْمَيِّتُ بِغَضْرِ بَنَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ)) إِذَا كَانَ النُّوحُ مِنْ سَبِيهِ)) يَقُولُ تَعَالَى ﴿قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا﴾ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)) لِذَا لَمْ يَكُنْ مِنْ سَبِيهِ فَهُوَ كَمَا قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: ﴿وَلَا تَرِبُ وَابِرَةٌ وَزُرْ أُخْرَى﴾.

وَهُوَ كَقَوْلِهِ: ﴿وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ - ذُنُوبًا - إِلَى حِمْلِيهَا لَا يَحْمِلُ مِنْهُ شَيْءٌ﴾ وَمَا

बुलाए तो वो उसका बोझ नहीं उठाएगा। और बगैर नोहा, चिल्लाए-पीटे रोना दुरुस्त है। और आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि दुनिया में जब कोई नाहक खून होता है तो आदम के पहले बेटे क़ाबील पर उस खून का कुछ बबाल पड़ता है, क्योंकि नाहक खून की बिना सबसे पहले उसी ने डाली।

1284. हमसे अब्दान और मुहम्मद बिन मुकातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमको आसिम बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें अबू उम्मान अब्दुर्रहमान नहदी ने, कहा कि मुझसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की एक साहबज़ादी (हज़रत ज़ैनब रज़ि.) ने आपको इज़िला करवाई कि मेरा एक लड़का मरने के करीब है, इसलिये आप तशरीफ़ लाएँ। आप (ﷺ) ने उन्हें सलाम कहलवाया और (यह भी) कहलवाया कि अल्लाह तआला ही का सारा माल है, जो ले लिया वो उसी का था और जो दिया वो भी उसी का था और हर चीज़ उसकी बारगाह से वक़्ते-मुकर्रर पर ही वाक़ेअ होती है। इसलिये सब्र करो और अल्लाह तआला से प्रवाब की उम्मीद रखो। फिर हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ने क़सम देकर अपने यहाँ बुलवा भेजा। अब रसूलुल्लाह (ﷺ) जाने के लिये उठे, आपके साथ सअद बिन इबादा, मआज़ बिन जबल, उबय बिन कअब, ज़ैद बिन प्राबित और बहुत से दूसरे सहाबा (रज़ि.) भी थे। बच्चे को रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने किया गया, जिसकी जाँकनी का आलम था। अबू उम्मान ने कहा कि मेरा ख़याल है कि उसामा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जैसे पुराना मशकीज़ा होता है और पानी के टकराने की अन्दर से आवाज़ होती है, उसी तरह जाँकनी के वक़्त बच्चे के हलक़ से आवाज़ आ रही थी, ये देखकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की आँखों से आँसू बह निकले। सअद (रज़ि.) बोल उठे कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये रोना कैसा है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो अल्लाह की रहमत है कि जिसे अल्लाह तआला ने अपने (नेक) बन्दों के दिलों में रखा है और अल्लाह तआला भी अपने रहमदिल बन्दों पर रहम फ़र्माता है, जो दूसरों पर रहम करते हैं। (दीगर मक़ाम : 5655,

يُرْغَضُ مِنَ الْبُكَاءِ فِي خَيْرِ نَوْحٍ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «لَا تَقُلْ نَفْسٌ ظُلْمًا إِلَّا كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ الْأَوَّلِ كَقُلٍّ مِنْ ذِمَّتِهَا» وَذَلِكَ لِأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ مَنُّ الْقَتْلِ.

١٢٨٤ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ وَمُعَمَّمَدٌ قَالَا: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ هَاشِمُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «أُرْسِلْتُ ابْنَةَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَيْهِ: إِنَّ ابْنًا لِي قَبِيضٌ، فَأَتَانَا فَأَرْسَلَ يُقْرِئُ السَّلَامَ وَيَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ مَا أَخَذَ وَلَهُ مَا أُعْطِيَ، وَكُلُّ حِينَةٍ بِأَجَلٍ مُسَمًّى، فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْسِبِي». فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ تَقْسِمُ عَلَيْهِ لِيَأْتِيَنِي. فَقَامَ وَمَعَهُ مَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَمَعَادُ بْنُ جَبَلٍ وَأَبِي بْنُ كَعْبٍ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ وَرِجَالٌ. فَوَلَّعَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ الصَّبِيَّ وَنَفْسُهُ تَتَغَفَّقُ - قَالَ: حَسْبُنَا أَنَّهُ قَالَ: كَانَهَا شَرٌّ - فَفَاحَتْ عَيْنَاهُ، فَقَالَ مَعْدُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذَا؟ فَقَالَ: «هَذِهِ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللَّهُ فِي قُلُوبِ عِبَادِهِ، وَإِنَّمَا يُرَحِّمُ اللَّهُ مِنْ عِبَادِهِ الرَّحِمَاءَ».

[أطرافه في : ٥٦٥٥، ٦٦٠٢، ٦٦٥٥]

[٧٢٧٧، ٧٤٤٨]

तशरीह:

इस मसले में इब्ने उमर और आइशा (रज़ि.) का एक मशहूर इख़िलाफ़ था कि मय्यत पर उसके घरवालों के नोहा की वजह से अज़ाब होगा या नहीं? इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब में उसी इख़िलाफ़ पर ये लम्बी

मुहाकमा किया है। उसके बारे में मुसन्निफ़ (रह.) बहुत सी अहदीष जिक्र करेंगे और एक लम्बी हदीष में जो इस बाब में आयी। दोनों की इस सिलसिले में इख्तिलाफ़ की तपसलील भी मौजूद है। आइशा (रज़ि.) का ख्याल ये था कि मय्यत पर उसके घर वालों के नोहा से अज़ाब नहीं होता क्योंकि हर शख्स सिर्फ़ अपने अमल का ज़िम्मेदार है। कुआन में खुद है कि किसी पर दूसरे की कोई ज़िम्मेदारी नहीं ला तज़ि़रु वाज़िरतुं व विज़रा उख़रा (अल अन्आम : 164) इसलिये नोहा की वजह से जिस गुनाह के मुर्तकिब मुर्दे के घरवाले होते हैं उसकी ज़िम्मेदारी मुर्दे पर कैसे डाली जा सकती है?

लेकिन इब्ने उमर (रज़ि.) के पेशे-नज़र ये हदीष थी, 'मय्यत पर उसके घरवालों के नोहा से अज़ाब होता है।' हदीष साफ़ थी और ख़ास मय्यत के लिये लेकिन इसमें एक आम हुक्म बयान हुआ है। आइशा (रज़ि.) का जवाब ये था कि इब्ने उमर (रज़ि.) से ग़लती हुई, आँहुज़ूर (رضي الله عنه) का इशारेद एक ख़ास वाकिए के बारे में था। किसी यहूदी औरत का इतिकाल हो गया था। इस पर असल अज़ाब कुफ़ की वजह से हो रहा था लेकिन मज़ीद इज़ाफ़ा घरवालों के नोहा ने भी कर दिया था कि वो उसके इस्तिहाक़ के ख़िलाफ़ उसका मातम कर रहे थे और ख़िलाफ़े वाकिआ नेकियों को उसकी तरफ़ मन्सूब कर रहे थे। इसलिये हुज़ूर (رضي الله عنه) ने उस मौक़े पर जो कुछ फ़र्माया वो मुसलमानों के बारे में नहीं था। लेकिन इलमा ने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) के ख़िलाफ़ हज़रत आइशा (रज़ि.) के इस इस्तिदलाल को तस्लीम नहीं किया है। दूसरी तरफ़ इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष को भी हर हाल में नाफ़िज़ नहीं किया बल्कि उसकी नोक पलक दूसरे शरई उस्सूल व शवाहिद की रोशनी में दुरुस्त किये गये हैं और फिर उसे एक उस्सूल की हैषियत से तस्लीम किया गया है।

इलमा ने इस हदीष को जो मुख्तलिफ़ वजहों व तपसलीलात बयान की हैं उन्हें हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने तपसलील के साथ लिखा है। इस पर इमाम बुखारी (रह.) के मुहाकमे का हासिल ये है कि शरीअत का एक उस्सूल है। हदीष में है कुल्लुकुम राइन व कुल्लुकुम मस्उलुन अन रइय्यतिही हर शख्स निगारों है और उसके मातहतों के बारे में उससे सवाल किया जाएगा। ये हदीष मुतअदिद और मुख्तलिफ़ रिवायतों से कुतुबे अहदीष और खुद बुखारी में मौजूद है। ये एक मुफ़सल हदीष है और उसमें तपसलील के साथ ये बयान हुआ है कि बादशाह से लेकर एक मा' मूली से मा' मूली ख़ादिम तक राई और निगारों की हैषियत रखता है और उस सबसे उनकी मातहतों के बारे में सवाल किया जाएगा। यहाँ साहिबे तपहीमुल बुखारी ने एक फ़ाज़िलाना बयान लिखा है जिसे हम शुक्रिया के साथ (तशरीह) में नक़ल करते हैं।

कुआन मज़ीद में है कि कू अन्फुसकुम व अहलीकुम नारा (अत् तहरीम : 6) खुद को और अपने घरवालों को जहन्नम की आग से बचाओ। इमाम बुखारी (रह.) ने इस मौक़े पर वाज़ेह किया है कि जिस तरह अपनी इस्लाह का हुक्म शरीअत ने दिया है उसी तरह अपनी मातहत की इस्लाह का भी हुक्म है, इसलिये उनमें से किसी एक की इस्लाह से ग़फलत तबाहकुन है। अब अगर मुर्दे के घर ग़ैर-शरई नोहा व मातम का रिवाज था लेकिन अपनी ज़िन्दगी में उसने उन्हें उससे नहीं रोका और अपने घर में होने वाले उस मुन्कर पर वाकिफ़ियत के बावजूद उसने तसाहुल से काम लिया, तो शरीअत की नज़र में वो भी मुजरिम है। शरीअत ने अम्र बिल मअरूफ़ और नही अनिल मुन्कर का एक उस्सूल बना दिया था। ज़रूरी था कि इस उस्सूल के तहत अपनी ज़िन्दगी में अपने घरवालों को उससे दूर रखने की कोशिश करता। लेकिन अगर उसने ऐसा नहीं किया, तो गोया वो खुद उस अमल का सबब बना है। शरीअत की नज़र इस सिलसिले में बहुत दूर तक है। इसी मुहाकमे में इमाम बुखारी (रह.) ने ये हदीष नक़ल की है कि 'कोई शख्स अगर जुल्मन (ज़ालिमाना तौर पर) क़त्ल कर दिया गया है तो उस क़त्ल की एक हद तक ज़िम्मेदारी आदम अलैहिस्सलाम के सबसे पहले बेटे (क्राबिल) पर आइद होती है।' क़ाबील ने अपने भाई हाबील को क़त्ल कर दिया था। ये रूए ज़मीन पर सबसे पहला ज़ालिमाना क़त्ल था। उससे पहले दुनिया उससे नावाकिफ़ थी। अब चूँकि इस तरीक़ा-ए-जुल्म की ईजाद सबसे पहले आदम (अलैहिस्सलाम) के बेटे क़ाबील ने की थी, इसलिये क़यामत तक होने वाले ज़ालिमाना क़त्ल के गुनाह का एक हिस्सा उसके नाम भी लिखा जाएगा। शरीअत के इस उस्सूल को अगर सामने रखा जाए तो अज़ाब व प्रवाब की बहुत सी बुनियादी गिरहें खुल जाएँ।

हज़रत आइशा (रज़ि.) के बयानकर्दा उस्सूल पर भी एक नज़र डाल लीजिए। उन्होंने फ़र्माया था कि कुआन ने खुद फ़ैसला कर दिया है कि 'किसी इंसान पर दूसरे की कोई ज़िम्मेदारी नहीं।' हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि मरनेवाले

को क्या इख्तियार है? उसका रिश्ता अब इस आलमे फानी से खत्म हो चुका है। न वो किसी को रोक सकता है और न उस पर कुदरत है। फिर उस नाकर्दा गुनाह की जिम्मेदारी उस पर आइद करना किस तरह सहीह हो सकता है?

इस मौके पर गौर किया जाए तो मा'लूम हो जाएगा कि शरीअत ने हर चीज के लिये अगरचे ज़ाबते और क़ायदे मुतअय्यन (निर्धारित) किये हैं लेकिन बाज़ औकात किसी एक में बहुत से उम्सूल बयक वक़्त जमा हो जाते हैं और यहीं से इज्तिहाद की हद शुरू हो जाती है। सवाल पैदा होता है कि ये जुर्ई किस ज़ाबते के तहत आ सकती है? और उन मुख्तलिफ़ उम्सूल में अपने मुज्मरात के ए'तिबार से जुर्ई किस उम्सूल से ज़्यादा करीब है? इस मसले में हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अपने इज्तिहाद से ये फैसला किया था कि मय्यत पर नोहा व मातम का मय्यत के बारे कुआन के बयानकर्दा उस उम्सूल के बारे में है कि 'किसी इंसान पर दूसरे की जिम्मेदारी नहीं।' जैसा कि हमने तपसील से बताया कि आइशा (रज़ि.) के इज्तिहाद को उम्मत ने इस मसले में कुबूल नहीं किया है। इस बाब पर हमने ये तवील नोट इसलिये लिखा कि उसमें रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के बारे में कुछ बुनियादी उम्सूल सामने आए थे। जहाँ तक नोहा व मातम का सवाल है उसे इस्लाम उन ग़ैर ज़रूरी और लाब ह़रकतों की वजह से रद्द करता है जो इस सिलसिले में की जाती थीं वना अज़ीज़ व करीब या किसी भी मुता'ल्लिक (सम्बन्धी) की मौत या ग़म कुदरती चीज़ है और इस्लाम न सिर्फ़ उसके इज़हार की इजाज़त देता है बल्कि हदीष से मा'लूम होता है कि कुछ अफ़राद को जिनके दिल में अपने अज़ीज़ों-करीब की मौत से कोई ठेस नहीं लगी, आँहज़ूर (ﷺ) ने उन्हें सख़्त दिल कहा। खुद हज़ूर अकरम (ﷺ) की ज़िन्दगी में कई ऐसे वाकिआत पेश आए जब आप (ﷺ) के किसी अज़ीज़ो-करीब की वफ़ात पर आप (ﷺ) का सन्न का पैमाना लबरेज़ हो गया और आँखों से आंसू छलक पड़े। (तपसीमुल बुखारी)

नसूसे शरइया की मौजदूगी में उनके इज्तिहाद क़ाबिले कुबूल नहीं है। ख़्वाह इज्तिहाद करने वाला कोई हो। राय और क़यास ही वो बीमारियाँ हैं जिन्होंने उम्मत का बेड़ा ग़र्क़ कर दिया और उम्मत तक्सीम दर तक्सीम होकर रह गई। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) के क़ौल की मुनासिब तौजीह फ़र्मा दी है, वही ठीक है।

1285. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आमिर अन्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने और उनसे अनस बिन मालिक (रह.) ने कि हम नबी करीम (ﷺ) की एक बेटी (हज़रत उम्मे कुलथुम रज़ि.) के जनाजे में हाज़िर थे। (वो हज़रत इब्मान ग़नी रज़ि. की बीवी थीं, जिनका 5 हिजरी में इन्तिक़ाल हुआ) हज़ुरे-अकरम (ﷺ) क़ब्र पर बैठे हुए थे। उन्होंने कहा कि मैंने देखा कि आपकी आँखें आँसुओं से भर आई थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या तुममें से कोई ऐसा शख्स भी है कि जो आज की रात औरत के पास न गया हो। इस पर अबू तलह्हा (रज़ि.) ने कहा कि मैं हूँ। रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर क़ब्र में तुम उतरो। चुनाँचे वो उनकी क़ब्र में उतरे। (दीगर मक़ाम : 1342)

١٢٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ هِلَالِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((شَهِدْنَا بِنْتَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، قَالَ: وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَالِسٌ عَلَى الْقَبْرِ، قَالَ فَرَأَيْتُ عَيْنَيْهِ تَذَمَعَانِ، قَالَ فَقَالَ: ((مَنْ مِنْكُمْ رَجُلٌ لَمْ يَغَارِبِ اللَّيْلَةَ؟)) فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَنَا. قَالَ: ((فَانْزِلْ)). قَالَ: فَتَزَلَّ لِي قَبْرُهَا.

[طهره ١: ١٣٤٢]

तशरीह: हज़रत इब्मान (रज़ि.) को आप (ﷺ) ने नहीं उतारा। ऐसा करने से उनको तम्बीह करना मंज़ूर थी। कहते हैं कि हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने उस शब में जिसमें हज़रत उम्मे कुलथुम (रज़ि.) ने इन्तिक़ाल फ़र्माया, अपनी एक लौण्डी से सुहबत की थी। आँहज़रत (ﷺ) को उनका ये काम पसंद न आया। (वहीदी)

हज़रत उम्मे कुलथुम (रज़ि.) से पहले रसूले करीम (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत रुक़य्या (रज़ि.) हज़रत उम्मान (रज़ि.) के अक़द में थीं। उनके इत्तिका़ल पर आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत उम्मे कुलथुम (रज़ि.) से आपका अक़द फ़र्मा दिया जिनके इत्तिका़ल पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अगर मेरे पास तीसरी बेटी होती तो उसे भी उम्मान (रज़ि.) ही अक़द में देता। उससे हज़रत उम्मान (रज़ि.) की जो वक़अत आँहज़रत (ﷺ) के दिल में थी वो ज़ाहिर है।

1286. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने ख़बर दी कि उम्मान (रज़ि.) की एक साहबज़ादी (उम्मे उबान) का मक्का में इत्तिका़ल हो गया था। हम भी जनाजे में हाज़िर हुए। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) भी तशरीफ़ लाए। मैंने उन दोनों हज़रात के दरम्यान बैठा हुआ था या ये कहा कि मैं एक बुजुर्ग के करीब बैठ गया और दूसरे बुजुर्ग बाद में आए और मेरे बाजू में बैठ गए। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने उमर बिन उम्मान से कहा (जो उम्मे उबान के भाई थे) रोने से क्यों नहीं रुकते। नबी करीम (ﷺ) ने तो फ़र्माया है कि मय्यित पर घरवालों के रोने से अज़ाब होता है।

1287. इस पर अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने भी ताईद की कि उमर (रज़ि.) ने भी ऐसा ही फ़र्माया था। फिर आप बयान करने लगे कि मैं उमर (रज़ि.) के साथ मक्का से चला, जब हम बैदा तक पहुँचे तो सामने एक बबूल के पेड़ के नीचे चन्द सवार नज़र पड़े। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि जाकर देखो तो सही ये कौन लोग हैं? उनका बयान है कि मैंने देखा तो सुहैब (रज़ि.) थे। फिर जब इसकी इज़िला दी तो आपने फ़र्माया कि उन्हें बुला लाओ। मैं सुहैब (रज़ि.) के पास दोबारा आया और कहा कि चलिये अमीरुल मोमिनीन बुलाते हैं। चुनाँचे वो ख़िदमत में हाज़िर हुए। (ख़ैर ये क़िस्सा तो हो चुका) फिर जब हज़रत उमर (रज़ि.) ज़ख़मी किये गये तो सुहैब (रज़ि.) रोते हुए अन्दर दाख़िल हुए। वो कह रहे थे हाय मेरे भाई! मेरे साहब! इस पर उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया सुहैब! तुम मुझ पर रोते हो, तुम नहीं

۱۲۸۶- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُثَيْبٍ أَنَّ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((نَوَيْتُ ابْنَةَ لُثَمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِمَكَّةَ وَجِئْنَا لِنُشْهَدَهَا، وَحَضَرَهَا ابْنُ عُمَرَ وَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، وَإِنِّي لَجَالِسٌ بَيْنَهُمَا - أَوْ قَالَ: جَلَسْتُ إِلَى أَحَدِهِمَا، ثُمَّ جَاءَ الْآخَرُ فَجَلَسَ إِلَى جَنِبِي - فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا لِعُمَرَوِ بْنِ عُثْمَانَ: أَلَا تَتَنَهَى عَنِ الْبُكَاءِ! فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنْ أَلَمَيْتَ لَيُعَذَّبَ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ)).

۱۲۸۷- فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: لَقَدْ كَانَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ بَعْضُ ذَلِكَ، ثُمَّ حَدَّثَ قَالَ: صَدَرْتُ مَعَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مِنْ مَكَّةَ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ إِذَا هُوَ بِرُكْبٍ تَحْتَ ظِلِّ سَمُرَةٍ، فَقَالَ: اذْهَبْ فَانْظُرْ مَنْ هَؤُلَاءِ الرُّكْبِ. قَالَ فَانْظَرْتُ فَإِذَا صُهَبٌ، فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: اذْغَعِ لِي. فَرَجَعْتُ إِلَى صُهَبٍ فَقُلْتُ: ارْتَجِلْ فَالْتَقِ بِالْأَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ. فَلَبِثْنَا أَمِينًا عُمَرُ دَخَلَ صُهَبٌ يَتَكِي يَقُولُ: وَآ أَخَاهُ وَآ صَاحِبَاهُ.

जानते कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मय्यित पर उसके घरवालों के रोने से अज़ाब होता है। (दीगर मक़ाम: 1290, 1292)

1288. इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब उमर (रज़ि.) का इन्तिक़ाल हो गया तो मैंने इस हदीष का ज़िक्र आइशा (रज़ि.) से किया। उन्होंने फ़र्माया रहमत उमर पर हो। अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये नहीं फ़र्माया है कि अल्लाह मोमिनों पर उसके घरवालों के रोने की वजह से अज़ाब करेगा बल्कि आँहज़रत (ﷺ) ने यूँ फ़र्माया कि अल्लाह तज़ाला काफ़िर का अज़ाब उसके घरवालों के रोने की वजह से और ज़्यादा कर देता है। इसके बाद कहने लगीं कि कुआन की ये आयत तुमको बस करती है है कि कोई किसी के गुनाह का ज़िम्मेदार और उसका बोझ उठाने वाला नहीं। इसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उस वक़्त (या'नी उम्मे उबान के जनाज़े में) सूरह नज्म की ये आयत पढ़ी और अल्लाह ही हँसाता है और वही रुलाता है। इब्ने अबी मुलैका ने कहा कि अल्लाह की क़सम! इब्ने अब्बास की ये तक्ररीर सुनकर इब्ने उमर (रज़ि.) ने कुछ जवाब नहीं दिया।

(दीगर मक़ाम: 1289, 3978)

فَقَالَ هُمَزٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : يَا هُتَبَا
أَتَيْتَنِي عَلَىٰ وَلَدٍ قَالِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :
«إِنَّ الْمَيِّتَ يُعَذَّبُ بِبُعْثِي بِكُمْ أَهْلِي
عَلَيْهِ» . [طرقه ٣ : ١٢٩٠ ، ١٢٩٢] .
١٢٨٨ - قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا : «لَمَّا مَاتَ هُمَزٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
ذَكَرْتُ ذَلِكَ لِإِمْلَيْشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا
قَالَتْ : رَحِمَ اللَّهُ هُمَزًا ، وَاللَّهُ مَا حَدَّثَ
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِنَّهُ لَيُعَذَّبُ الْمُؤْمِنِينَ
بِكُفْرِهِ أَهْلِي عَلَيْهِ ، لَكِنْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
قَالَ : «إِنَّ اللَّهَ يُرِيدُ الْكَافِرَ عَذَابًا بِكُمْ
أَهْلِي عَلَيْهِ» ، وَقَالَتْ : حَسْبُكُمْ الْقُرْآنُ :
«وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ» قَالَ ابْنُ
عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عِنْدَ ذَلِكَ : وَاللَّهُ
هُوَ أَشَدُّكُمْ وَأَتَمُّكُمْ . قَالَ ابْنُ أَبِي
مُلَيْكَةَ : وَاللَّهُ مَا قَالَ ابْنُ هُمَزٍ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا شَيْئًا .

[طرقه ٣ : ١٢٨٩ ، ٣٩٧٨] .

तशरीह : ये आयत सूरह फ़ातिर में है। मतलब इमाम बुखारी (रह.) का ये है। कि किसी शख्स पर ग़ौर के फ़ेअल से सज़ा न होगी मगर हाँ जब उसको भी इस फ़ेअल में एक तरह की शिकत हो। जैसे किसी के ख़ानदान की रस्म रोना पीटना, नोहा करना हो और वो उससे मना न कर जाए तो बेशक उसके घरवालों के नोहा करने से उस पर अज़ाब होगा। कुछ ने कहा हज़रत उमर (रज़ि.) की हदीष इस पर महमूल है कि जब मय्यित नोहा करने की वसियत कर जाए। कुछ ने कहा कि अज़ाब से ये मतलब है कि मय्यित को तकलीफ़ होती है उसके घरवालों के नोहा करने से। इमाम इब्ने तैमिया (रह.) ने इसकी ताईद की है हदीष ला' तुक्तल नप्सुन को खुद इमाम बुखारी (रह.) ने दियात वग़ैरह में वस्ल किया है। उससे इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि नाहक खून कोई और भी करता है तो क़ाबील पर उसके गुनाह का एक हिस्सा डाला जाता है और उसकी वजह आँहज़रत (ﷺ) ने ये बयान फ़र्माई कि उसने नाहक खून की बिना सबसे पहले कायम की तो उसी तरह जिसके ख़ानदान में नोहा करने और रोने पीटने की रस्म है और उसने मना न किया तो क्या अज़ाब है कि नोहा करनेवालों के गुनाह का एक हिस्सा इस पर भी डाला जाए और उसको अज़ाब हो। (वहीदी)

1289. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया,

١٢٨٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ

उन्हें इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी बुकैर ने, उन्हें उनके बाप ने और उन्हें अम्रा बिनत अब्दुर्रहमान ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना। आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक यहूदी औरत पर हुआ जिस के मरने पर उसके घरवाले रो रहे थे। उस वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये लोग रो रहे हैं, हालाँकि इस को क़ब्र में अज़ाब दिया जा रहा है।

(राजेअ: 1288)

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بُكَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُمَرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا قَالَتْ سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ تَقُولُ: ((إِنَّمَا مَرُّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلَى يَهُودِيَةٍ يَتَكَبَّرُ عَلَيْهَا أَهْلُهَا، فَقَالَ: ((إِنَّهُمْ يَتَكَبَّرُونَ عَلَيْهَا وَإِنَّهَا لَتُعَذَّبُ فِي قَبْرِهَا)).

[راجع: ١٢٨٨]

तशरीह: उसके दोनों मा'नी हो सकते हैं या'नी उसके घरवालों के रोने से या उसके कुफ़्र की वजह से दूसरी सूरत में मतलब ये होगा कि ये तो इस रंज में हैं कि हमसे जुदाई हो गई और उसकी जान अज़ाब में गिरफ़्तार है। इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने हज़रत इमर (रज़ि.) की अगली हदीष की तफ़सीर की कि आँहज़रत (ﷺ) की मुराद वो मय्यत है जो काफ़िर हैं लेकिन हज़रत इमर (रज़ि.) ने उसको आम समझा और इसी लिये सुहैब (रज़ि.) पर इंकार किया। (वहीदी)

1290. हमसे इस्माइल बिन ख़लील ने बयान किया, उनसे अली बिन मुस्तिर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ शैबानी ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे उनके वालिद अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि जब हज़रत इमर (रज़ि.) को ज़ख़मी किया गया तो सुहैब (रज़ि.) ये कहते हुए आए, हाय मेरे भाई! इस पर हज़रत इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि क्या तुझ को मा'लूम नहीं कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया है कि मुर्दे को उसके घरवालों के रोने से अज़ाब दिया जाता है। (राजेअ: 1278)

١٢٩٠ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ، قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، قَالَ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، وَهُوَ الشَّيْبَانِيُّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((لَمَّا أَصِيبَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ جَعَلَ صَهْبٌ يَقُولُ: وَآخَاهُ. فَقَالَ عُمَرُ: أَمَا عَلِمْتُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْمَيِّتَ لَيُعَذَّبُ بِكَاءِ الْحَيِّ؟)).

[راجع: ١٢٨٧]

तशरीह: शौकानी (रह.) ने कहा रोना और कपड़े फाड़ना और नोहा करना ये सब काम हुराम है। एक जमाअत सलफ़, जिनमें हज़रत इमर और अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) हैं, का ये कौल है कि मय्यत के लोगों के रोने से मय्यत को अज़ाब होता है और जुम्हूर इलमा उसकी ये तावील करते हैं कि अज़ाब उसे होता है जो रोने की वसियत कर जाए और हम कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) से मुतलक़न ये प्राबित हुआ कि मय्यत पर रोना—पीटन से उसको अज़ाब होता है। हमने आप (ﷺ) के इश्आद को माना और सुन लिया। उस पर हम कुछ ज़्यादा नहीं करते। इमाम नववी (रह.) ने इस पर इच्माअ नक़ल किया कि जिस रोने से मय्यत को अज़ाब होता है वो रोना पुकार कर रोना और नोहा करना है न कि सिर्फ़ आंसू बहाना। (वहीदी)

बाब 33 : मय्यत पर नोहा करना

मकरूह है

٣٣ - بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ النَّيَاحَةِ عَلَى الْمَيِّتِ

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, औरतों को अबू सुलेमान (खालिद बिन वलीद) पर रोने दे जब तक वो खाक न उड़ाए और चिल्लाए नहीं। नक़अ सर पर मिट्टी डालने को और लक़लका चिल्लाने को कहते हैं।

नोहा कहते हैं मय्यत पर चिल्लाकर रोना और उसकी खूबियाँ बयान करना।

1291. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अब्द ने, उनसे अली बिन रबीआ ने और उनसे मुगीरा बिन शुअबा (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे कि मेरे मुता'ल्लिक कोई झूठी बात कहना आम लोगों से मुता'ल्लिक झूठ बोलने की तरह नहीं है, जो शख्स जानबूझ कर मेरे ऊपर झूठ बोले वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले और मैंने नबी करीम (ﷺ) से ये भी सुना कि किसी मय्यित पर अगर नोहा व मातम किया जाए तो उस नोहा की वजह से भी उस पर अज़ाब होता है।

1292. हमसे अब्दान अब्दुल्लाह बिन उम्मान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे बाप ने ख़बर दी, उन्हें शोअबा ने, उन्हें क़तादा ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपने बाप हज़रत उमर (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मय्यित को उस पर नोहा किये जाने की वजह से भी क़ब्र में अज़ाब होता है। अब्दान के साथ इस हदीस को अब्दुल अअला ने भी यज़ीद बिन ज़रीअ से रिवायत किया। उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अबू अरुबा ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने और आदम बिन अयास ने शोअबा से ये रिवायत किया कि मय्यित पर ज़िन्दा के रोने से अज़ाब होता है। (राजेअ: 1278)

बाब : 34

1293. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह बिन मदीनी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन मुन्कदिर ने बयान किया, कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि मेरे वालिद की लाश उहुद के मैदान से लाई गई। (मुश्किफ़ों

وَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : دَعْنَهُنَّ يَكْنِينَ عَلَى أَبِي سُلَيْمَانَ، مَا لَمْ يَكُنْ تَقَعُ أَوْ تَلْقَى وَالْقَلْقُ: التُّرَابُ عَلَى الرَّأْسِ، وَالْقَلْقُ: الصَّوْتُ.

١٢٩١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُثَيْبٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ رَبِيعَةَ عَنْ الْمُسَيَّبِ بْنِ أَبِي عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((إِنَّ كَذِبًا عَلَى لِسَنِ كَذِيبٍ عَلَى أَحَدٍ، مَنْ كَذَبَ عَلَى مُعْتَمِدٍ فَلْيَتَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ))، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((مَنْ بَحَّ عَلَيْهِ يُعَذَّبُ بِمَا يَبْحُ عَلَيْهِ)).

١٢٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((الْمَيِّتُ يُعَذَّبُ بِمَا يَبْحُ عَلَيْهِ)). تَابَعَهُ حَبْدُ الْأَعْلَى حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ : حَدَّثَنَا سَعِيدُ قَالَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ. وَقَالَ آدَمُ عَنْ شُعْبَةَ : ((الْمَيِّتُ يُعَذَّبُ بِكَيْفَاءِ الْخَبَرِ عَلَيْهِ)).

[راجع: ١٢٨٧]

باب - ٣٤

١٢٩٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّبِ قَالَ : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((جِيءَ بِأَبِي يَوْمَ أُحُدٍ

ने) आपकी मूरत तक बिगाड़ दी थी। नअश रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने रखी गई। ऊपर से एक कपड़ा ढँका हुआ था, मैंने चाहा कि कपड़े को हटाऊँ, लेकिन मेरी क़ौम ने मुझे रोका। फिर दोबारा कपड़ा हटाने की कोशिश की। इस मर्तबा भी मेरी क़ौम ने मुझको रोक दिया। इसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से जनाज़ा उठाया गया। उस वक़्त किसी ज़ोर-ज़ोर से रोने वाले की आवाज़ सुनाई दी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कि ये कौन है? लोगों ने कहा कि ये अग्र की बेटी या (ये कहा कि) अग्र की बहन है। (नाम में सुफ़यान को शक हुआ था) आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि रोती क्यों है? या ये फ़र्माया कि रोओ नहीं कि मलाइका बराबर अपने परों का साया किये रहे हैं जब तक इसका जनाज़ा उठाया गया। (राजेअ : 1244)

बाब 35 : आँहज़रत का ये फ़र्माना कि गिरेबान चाक करने वाले हम में से नहीं हैं

1294. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान प्रौरी ने, उनसे जुबैन यामी ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे मस्रूक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्रूद (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह ने फ़र्माया कि जो औरतें (किसी की मौत पर) अपने चेहरे को पीटती और गिरेबान को चाक करती है और जाहिलियत की बातें बकती हैं वो हम में से नहीं है। (दीगर मक़ाम : 1297, 1298, 3519)

या'नी हमारी उम्मत से ख़ारिज हैं। मा'लूम हुआ कि ये हरकत सख़्त नापसंदीदा है।

बाब 36 : नबी करीम (ﷺ) का सअद बिन ख़ौला (रज़ि.) की वफ़ात पर अफ़सोस करना

1295. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें आभिर बिन सअद बिन अबी वक्रकास ने और उन्हें उनके वालिद सअद बिन अबी वक्रकास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हज्जुल-विदाअ के साल (10 हिजरी) मेरी इयादत के लिये तशरीफ़

لَقَدْ قُلْتُ بِهِ حَتَّى وَجِعَ بَيْنَ يَدَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَلَقَدْ سَجَّيْتُ لَوْثًا فَلَقَبْتُ أَرْبَدًا أَنْ أَكْشِفَ عَنْهُ لَتَهَائِي قَوْمِي، ثُمَّ قَبَعْتُ أَكْشِفَ عَنْهُ لَتَهَائِي قَوْمِي، فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَرُفِعَ، فَسَمِعَ صَوْتَ صَالِحَةٍ فَقَالَ: ((مَنْ هَذِهِ؟)) فَقَالُوا: ابْنَةُ عَمْرٍو - أَوْ أُخْتُ عَمْرٍو - قَالَ: ((فَلِمَ تَبْكِي؟ - أَوْ لَا تَبْكِي -، لَمَّا زَالَتِ الْمَلَائِكَةُ تَطْلُةً بِأُخْيَحِيهَا حَتَّى رُفِعَ)). [راجع: ١٢٤٤]

३५- بابُ لَيْسَ مِنَّا مَنْ شَقَّ الْجُبُونَ

١٢٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُهَيْلٌ قَالَ حَدَّثَنَا زَيْدُ النَّأَمِيِّ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ وَحُصَيْنٍ أَنَّ اللَّهَ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَطَمَ الْخُدُودَ، وَشَقَّ الْجُبُونَ، وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ)).

[المطالع: ١٢٩٧، ١٢٩٨، ٣٥١٩]

३६- بابُ رَأَى النَّبِيُّ ﷺ سَعْدَ بْنَ خَوْلَةَ

١٢٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَنْ أَبِيهِ وَحُصَيْنٍ أَنَّ اللَّهَ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَخْلُفُنِي

लाए। मैं सख्त बीमार था। मैंने कहा मेरा मर्ज शिहत इखितयार कर चुका है, मेरे पास मालो-अस्बाब बहुत है और मेरी सिर्फ एक लड़की है जो वारिष होगी तो क्या मैं अपने दो तिहाई माल को ख़ैरात कर दूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने कहा आधा। आपने फ़र्माया नहीं। फिर आपने फ़र्माया कि एक तिहाई कर दो और ये भी बहुत बड़ी ख़ैरात है या बहुत ख़ैरात है अगर तू अपने वारिषों को अपने पीछे मालदार छोड़ जाए तो ये इससे बेहतर होगा कि मुहताजी में उन्हें इस तरह छोड़ जाए कि वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरे, ये याद रखो कि जो खर्च भी तुम अल्लाह की रज़ा की निम्न्यत से करोगे तो उस पर भी तुम्हें षबाब मिलेगा। यहाँ तक कि उस लुकमे पर भी जो तुम अपनी बीवी के मुँह में रखो। फिर मैंने पूछा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे साथी तो मुझे छोड़कर (हज्जतुल-विदाअ करके) मक्का से जा रहे हैं और मैं उनसे पीछे रह रहा हूँ। इस पर आँहजरत ने फ़र्माया कि यहाँ रह कर भी अगर तुम कोई नेक अमल करोगे तो उससे तुम्हारे दर्जे बुलन्द होंगे और शायद अभी तुम ज़िन्दा रहोगे और बहुत से लोगों को (मुसलमानों को) तुमसे फ़ायदा पहुँचेगा और बहुत से लोगों को (कुफ़र व मूर्तदीन को) नुक़सान। (फिर आप ﷺ ने दुआ फ़र्माई) ऐ अल्लाह! मेरे साथियों को हिजरत पर इस्तिक्लाल अत्ता फ़र्मा और उनके क़दम पीछे की तरफ़ न लौटा। लेकिन मुस्लीबतज़दा सअद बिन ख़ौला थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके मक्का में वफ़ात पा जाने की वजह से इज़हारे-ग़म किया था।

عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ مِنْ وَجَعِ اسْتَدَّ بِي فَقُلْتُ : إِنِّي قَدْ بَلَغَ بِي مِنَ الْوَجَعِ ، وَأَنَا ذُو مَالٍ ، وَلَا يَرِثُنِي إِلَّا ابْنَةٌ ، أَفَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثِي مَالِي ؟ قَالَ : ((لَا)). فَقُلْتُ : بِالشُّطْرُ ؟ فَقَالَ : ((لَا)). ثُمَّ قَالَ : ((الثُّلُثُ وَالْثُّلُثُ كَثِيرٌ - أَوْ كَثِيرٌ - إِنَّكَ أَنْ تَلْزَمَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَلْزَمَهُمْ غَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ ، وَإِنَّكَ لَنْ تَتَفَقَّ نَفَقَةً تَبْغِي بِهَا وَحَةَ اللَّهِ إِلَّا أَجَرْتَ بِهَا ، حَتَّى مَا تَخْفَلَ فِي لِي امْرَأَتُكَ)). فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، اخْلُفْ بَعْدَ اصْحَابِي ؟ قَالَ : ((إِنَّكَ لَنْ تَخْلَفَ لِتُفْعَلَ عَمَلًا صَالِحًا إِلَّا أَزْدَدَتْ بِهِ فَرْجَةً وَرِفْعَةً ، ثُمَّ لَعَلَّكَ أَنْ تُخْلَفَ حَتَّى يَتَفَقَّ بِكَ أَقْوَامٌ وَيَضْرِبُكَ آخَرُونَ ، اللَّهُمَّ اْمْنِصْ لِاصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ ، وَلَا تَزِدْهُمْ عَلَى أَغْقَابِهِمْ ، لَكِنَّ الْبَائِسُ سَعْدُ بْنُ خُوَلَةَ . يَرِي لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ مَاتَ بِمَكَّةَ)).

तशरीह: इस मौके पर हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने इस्लाम का वो ज़री (सुनहरा) उसूल बयान किया है जो इज्तिमाई ज़िन्दगी की जान है। अह्दादीष के ज़ख़ीरे में इस तरह की अह्दादीष की कमी नहीं है और उससे हमारी शरीअत के मिज़ाज का पता चलता है कि वो अपनी इत्तिबाअ करने वालों से किस तरह की ज़िन्दगी का मुतालबा करती है। अल्लाह तआला खुद शारेअ हैं और उसने अपनी तमाम दूसरी मख़लूक़ात के साथ इंसानों को भी पैदा किया है। इसलिये इंसान की तबीयत में फ़िरी तौर पर जो रुज़्हानात और सलाहियते मौजूद हैं अल्लाह तआला अपने अह्का़म व अवामिर में उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं करता। शरीअत में मुआद व मुआश के बारे में जिन अह्का़म अमल करने का हमसे मुतालबा किया गया है, उनका मक्सद ये है कि अल्लाह की इबादत उसकी रज़ा के मुताबिक़ हो सके और ज़मीन में शरो-फ़साद न फैले। अहलो-अयाल पर खर्च करने की अहमियत और उस पर अज़ो-षबाब का इस्तिहका़क़ सिलारहमी और ख़ानदानी निज़ाम की अहमियत के पेशे-नज़र है कि जिन पर मुआशरे की सलाह व बका का मदद है। हदीष का ये हिस्सा कि अगर कोई शख्स अपनी बीवी के मुँह में लुक़मा दे तो उस पर भी अज़ो-षबाब मिलेगा इसी बुनियाद पर है। कौन नहीं जानता कि उसमें ख़ित्त-ए-नफ़्स भी है। लेकिन अगर अज़दवाजी ज़िन्दगी के ज़रिये मुसलमान इस ख़ानदानी निज़ाम को परवान चढ़ाता है जिसकी तर्तीब इस्लाम ने दी और उसके मुक्तज़ियात पर अमल की कोशिश करता है तो क़ज़ा-ए-शहवत (इच्छाओं का दमन) भी अज़ो-षबाब का बाज़िष है।

शैख नववी (रह.) ने लिखा है कि खित्त-ए-नफ़स अगर हक़ के मुताबिक़ हो तो अज़्रो-षवाब में उसकी वजह से कोई कमी नहीं होती। मुस्लिम में इस सिलसिले की एक हदीष बहुत ज़्यादा वाजेह है, आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारी शर्मगाह में स़दका है। स़हाबा (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या हम अपनी शह्वत भी पूरी करें और अज़ भी पाएँगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! क्या तुम इस पर ग़ौर नहीं करते कि अगर ह़राम में मुब्तला हो गए तो फिर क्या होगा? उससे समझा जा सकता है कि शरीअत हमें किन हूद में रखना चाहती है और उसके लिये उसने क्या-क्या ज़तन किये हैं और हमारे कुछ फ़िज़ी रुज़्हानात (प्राकृतिक आकर्षणों और भावनाओं) की वजह से जो बड़ी ख़राबियाँ पैदा हो सकती थीं, उनके स़दे-बाब (निराकरण) की किस तरह कोशिश की है।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) ने लिखा है कि इसके बावजूद कि बीवी के मुँह में लुक्मा देने और दूसरे तरीकों से ख़र्च करने का दाइया नफ़आनी और शह्वानी भी है। खुद ये लुक्मा जिस जिस्म का हिस्सा बनेगा शौहर उसी से मुन्तफ़अ (फ़ायदा) उठाता है लेकिन शरीअत की तरफ़ से फिर भी अज़्रो-षवाब का वा'दा है। इसलिये अगर दूसरों पर ख़र्च किया जाए जिनसे कोई निस्बत व क़राबत नहीं और जहाँ ख़र्च करने के लिये कुछ ज़्यादा मुजाहदे की भी ज़रूरत होगी तो उस पर अज़्रो षवाब किस क़दर मिल सकता है। ताहम ये याद रहे कि हर तरह के ख़र्च अख़राजात में मुक़द्दम अइज़्जा व अक़्रबा (क़रीब लोग) हैं और फिर दूसरे लोग कि अइज़्जा पर ख़र्च करके आदमी शरीअत के कई मुतालबों को एक साथ पूरा करता है।

सअद बिन ख़ौला (रज़ि.) मुहाज़िरिन में से थे लेकिन आपकी वफ़ात मक्का में हो गई थी। ये बात पसंद नहीं की जाती थी कि जिन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल से ता'ल्लुक की वजह से और अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये हिज़रत की थी वो बिला किसी सख़्त ज़रूरत के मक्का में क़याम करें। चुनाँचे सअद बिन वक़्ास (रज़ि.) मक्का में बीमार हुए तो वहाँ से जल्द निकल जाना चाहा कि कहीं वफ़ात न हो जाए और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी सअद बिन ख़ौला (रज़ि.) पर इसलिये इज़हारे ग़म किया था कि मुहाज़िर होने के बावजूद उनकी वफ़ात मक्का में हो गई। इसी के साथ आप (ﷺ) इसकी भी दुआ की कि अल्लाह तआला स़हाबा को हिज़रत पर इस्तिक्लाल अत्ता फ़र्माए। ताहम ये नहीं कहा जा सकता कि ये नुक़सान किस तरह का होगा क्योंकि ये तक्वीनियात के बारे में है। (तफ़हीमुल बुखारी)

बाब का तर्जुमा रफ़ाअ से वही इज़हारे अफ़सोस, रंजो-ग़म मुराद है न कि मर्षिया पढ़ना। मर्षिया उसको कहते हैं कि मय्यत के फ़ज़ाइल और मनाकिब बयान किये जाएँ और लोगों को बयान करके रूलाया जाए। ख़वाह वो नज़्म हो या नफ़ ये तो हमारी शरीअत में मना है। खुसूसन लोगों को जमा करके सुनाना और रूलाना। इसकी मुमानअत में किसी का इख़ितलाफ़ नहीं है। सहीह हदीष में वारिद है जिसको अहमद और इब्ने माज़ा ने निकाला कि आँहुज़रत (ﷺ) ने मर्षिया से मना फ़र्माया।

सअद (रज़ि.) का मतलब ये था कि और स़हाबा तो आप (ﷺ) के साथ मदीना तथ्यिबा ख़ाना हो जाएँगे और मैं मक्का ही में पड़े-पड़े मर जाऊँगा। आप (ﷺ) ने पहले गोल-मोल फ़र्माया जिससे सअद (रज़ि.) ने मा'लूम कर लिया कि मैं इस बीमारी से मरूँगा नहीं। फिर आगे साफ़ फ़र्माया कि शायद तू ज़िन्दा रहेगा और तेरे हाथ से मुसलमानों को फ़ायदा और काफ़िरों का नुक़सान होगा। इस हदीष में आप (ﷺ) का एक बड़ा मोअज़ज़ा है। जैसी आपकी पेशनगोई थी वैसा ही हुआ, सअद (रज़ि.) आँहुज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद मुद्त तक ज़िन्दा रहे। इराक और ईरान उन्होंने ही फ़तह किया। (वहीदी)

बाब 37 : ग़म के वक़्त सर मुण्डाने की मुमानअत

1296. और हक़म बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उनसे अब्दुरह्मान बिन जाबिर ने कि क़ासिम बिन मुख़ैमिश ने उनसे बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू बुर्दा बिन अबू मूसा ने बयान किया कि अबू

۳۷- بَابُ مَا يُنْهَى عَنِ الْحَلْقِ عِنْدَ الْمُصِيبَةِ

۱۲۹۶- وَقَالَ الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جَابِرٍ أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُخَيَّمَةَ حَدَّثَهُ قَالَ:

मूसा अशअरी (रज़ि.) बीमार पड़े, ऐसे कि उन पर ग़श तारी थी और उनका सर उनकी एक बीवी उम्मे अब्दुल्लाह बिनत रुमैया की गोद में था (वो एक ज़ोर की हिचकी मार कर रोने लगी) अबू मूसा (रज़ि.) उस वक़्त कुछ बोल न सके। लेकिन जब उनको होश हुआ तो उन्होंने फ़र्माया कि मैं भी उस काम से बेज़ार हूँ, जिससे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बेज़ारी का इज़हार फ़र्माया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (किसी ग़म के वक़्त) चिल्लाकर रोने वाली, सर मुण्डाने वाली, गिरेबान चाक करने वाली औरतों से अपनी बेज़ारी का इज़हार फ़र्माया था।

मा'लूम हुआ कि ग़मी में सर मुँडाना गिरेबान चाक करना और चिल्लाकर नोहा करना ये जुम्ला हरकतें हुराम हैं।

बाब 38 : रुख़सार पीटने वाली हम में से नहीं है

(या'नी हमारी उम्मत से ख़ारिज है)

1297. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुररहमान बिन महदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान श़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मुरह ने, उनसे मस्रूक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्ज़द (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो श़ख़्स (किसी मरियत पर) अपने रुख़सार पीटे, गिरेबान फाड़े और अहदे-जाहिलियत की सी बातें करे वो हम में से नहीं है। (राजेअ: 1294)

जो लोग एक लम्बे अर्से पहले शहीद हो चुके बुजुर्गों पर सीना-कूबी करते हैं वो ग़ौर करें कि वो किस तरह आँहज़रत (ﷺ) की शरीअत से बग़ावत कर रहे हैं।

बाब 39 : इस बारे में कि मुस्लीबत के वक़्त जाहिलियत की बातें और वावेला करने की मुमानअत है

1298. हमसे अम्र बिन हफ़स ने बयान किया, उनसे उनके बाप हफ़स ने और उनसे आ'मश ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मुरह ने, उनसे मस्रूक़ ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो (किसी की मौत पर) अपने रुख़सार पीटे, गिरेबान चाक करे और जाहिलियत की

حَدَّثَنِي أَبُو بَرْدَةَ بْنُ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((وَجِيعَ أَبُو مُوسَى وَجَعًا فَنُشِيَ عَلَيْهِ، وَرَأَسُهُ لِي حَجَرٍ امْرَأَةٍ مِنْ أَهْلِهِ فَلَمْ يَسْتَطِعْ أَنْ يَرُدَّ عَلَيْهَا شَيْئًا، فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ: أَنَا بِرِيعَةٍ مِمَّنْ بِرِيعَةٍ مِنْهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَرِيعٌ مِنَ الصَّافِقَةِ وَالْخَالِقَةِ وَالشَّالِقَةِ)).

۳۸- بَابُ لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْعُذُودَ

۱۲۹۷- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا هُبَيْرُ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا سُهَيْبَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْعُذُودَ، وَشَقَّ الْجُجُوبَ، وَدَعَا بِذَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ)). [راجع: ۱۲۹۴]

۳۹- بَابُ مَا يُنْهَى مِنَ الْوَلَلِ وَدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ عِنْدَ الْمُصِيبَةِ

۱۲۹۸- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْعُذُودَ، وَشَقَّ الْجُجُوبَ،

बातें करे वो हम में से नहीं है। (राजेअ : 1294)

وَدَعَا بِذَعْرَى الْجَاهِلِيَّةِ).

[راجع: ١٢٩٤]

या'नी उसका ये अमल उन लोगों जैसा है जो गैर मुस्लिम हैं या ये कि वो हमारी उम्मत से खारिज हैं। बहरहाल इससे भी नोहा की हर्मत प्राबित होती है।

बाब 40 : जो शख्स मुस्लीबत के वक़्त ऐसा बैठे कि वो ग़मगीन दिखाई दे

1299. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वहहाब ने बयान किया, कहा कि मैंने यह्या से सुना, उन्होंने कहा कि मुझे अम्र ने ख़बर दी, कहा कि मैंने आइशा (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि जब नबी करीम (ﷺ) को ज़ैद बिन हारिज़ा, जा'फ़र और अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर (शज्व-ए-मूता में) मिली, तो आप (ﷺ) उस वक़्त इस तरह तशरीफ़ फ़र्मा थे कि ग़म के आग़ार आपके चेहरे पर ज़ाहिर थे। मैं दरवाज़े के सुराख़ से देख रही थी। इतने में एक ज़ाहब आए और जा'फ़र (रज़ि.) के घर की औरतों के रोने का ज़िक्र किया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उन्हें रोने से मना कर दे। वो गये लेकिन वापस आकर कहा कि वो तो नहीं मानती। आपने फिर फ़र्माया कि उन्हें मना कर दे। अब वो तीसरी मर्तबा वापस हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम अल्लाह की, वो हम पर ग़ालिब आ गई हैं। (अम्र ने कहा कि) हज़रत आइशा (रज़ि.) को यक़ीन हुआ कि (उनके इस कहने पर) रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उनके मुँह में मिट्टी झोंक दे। इस पर मैंने कहा तेरा बुरा हो, नबी करीम (ﷺ) अब जिस काम का हुक्म दे रहे हैं वो तो करोगे नहीं, लेकिन आप (ﷺ) को तकलीफ़ में डाल दिया।

(दीगर मक़ाम : 1305, 4262)

40 - بَابُ مَنْ جَلَسَ عِنْدَ الْمُصِيبَةِ

يُعْرِفُ فِيهِ الْحُزْنَ

١٢٩٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرَةُ قَالَتْ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمَّا جَاءَ النَّبِيَّ ﷺ قَتْلُ ابْنِ خَارِجَةَ وَجَعْفَرٍ وَابْنِ رَوَاحَةَ جَلَسَ يُعْرِفُ فِيهِ الْحُزْنَ وَأَنَا أَنْظُرُ مِنْ صَالِحِ الْبَابِ شِقَ الْبَابِ، فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ بِنَاءَ جَعْفَرٍ - وَذَكَرَ بَنَاءَهُنَّ - قَامَرَةٌ أَنْ يَنْهَاهُنَّ، فَلَنَسَبَ، ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةُ لَمْ يَطْعَنَهُ، فَقَالَ: أَنْهَهُنَّ، فَأَتَاهُ الثَّالِثَةُ قَالَتْ: وَاللَّهِ غَلَبْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَرَضَعْتُ أَنَّهُ قَالَ: لَأَجُثَّ فِي الْفَوَاحِشِ الْعَرَابِ. فَقُلْتُ: أَرْغَمَ اللَّهُ أَنْفَكَ، لَمْ تَفْعَلْ مَا أَمَرَكُمُ اللَّهُ ﷻ، وَلَمْ تَقْرَأْ رَسُولَ اللَّهِ ﷻ مِنَ الْعَصَاءِ.

[طرفه ل: ١٣٠٥, ٤٢٦٢]

तशरीह : आप (ﷺ) ने औरतों का बाज़ न आने पर सख़्त नाराज़गी का इन्हार फ़र्माया और गुस्से में कहा कि उनके मुँह में मिट्टी झोंक दो। आप (ﷺ) खुद भी बेहद ग़मगीन थे। बाब का यही मक़सद है।

1300. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन फुज़ैल ने बयान किया, उनसे आसिम अहवल ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि जब क़ारियों की एक जमाअत शहीद कर दी गई तो रसूले-करीम (ﷺ) एक महीना तक कुनूत पढ़त

١٣٠٠ - حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ لُعَيْلٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ الْأَخْوَلُ عَنْ أَنَسِ بْنِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:

रहे। मैंने आँहजरत को कभी नहीं देखा कि आप (ﷺ) उन दिनों से ज्यादा कभी गमगीन रहे हों। (राजेअ : 1001)

«كَانَتْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ شَهْرًا حِينَ قِيلَ الْقُرَاءُ : فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ خَرَنَ خُرْنًا قَطُّ أَشَدَّ مِنْهُ» . [راسع : 1001]

तशरीह : ये शुहदा-ए-किराम कारियों की एक मुअज्जजतरीन जमाअत थी जिसमें 70 लोग थे। हजरत मौलाना शैखुल हदीस अब्दुल्लाह साहब मुबारकपुरी (रह.) के लफ्जों में इस जमाअत का तआरुफ़ ये है, व कानू मिन औजाइन्नासि यज़िलून स्सुफ़त यतफ़क़हून इल्म व यतअल्लमून लकुआन व कानू रिदाअल्लिमुस्लिमीन इज़ा नजलत बिहिम नाजिलतुन व कानू हक्कन अम्मारुल्मस्जिदि व लुयूषल्मलाहिमि बअषहुम रसूलुल्लाहि (ﷺ) इला अहलि नज्द मिम्बनी आमिर लियदरुहुम इलल्इस्लाम व यक्कअलैहिमुल कुआन फ़लम्मा नजलू बिअर मऊनत क़सदहुम आमिरुब्नु तुफैल फ़ी अहयाइम्मिम बनी सुलैम व हुम रअल व जक्वान व इसिय्या फ़क़ातिलुहुम (फ़असीबू) अय फ़क़तलूहुम जमीअन व कील व लम मिन्हुम इल्ला कअब बिन जैद अल्अन्सारी फइन्नहू तखल्लस व बिही रमकुन व ज़न्नू अन्नहू मात फआश हत्ता उस्तुशहिद यौमल्खन्दकि व असर्र अमर बिन उमिय्या अज़्जमी व कान ज़ालिक फिस्सनतिर्राबिअति मिनलिहजरति अय फ़ी सफ़र अला रासि अबअत अशहुर मिन उहुद फहज़िन रसूलुल्लाहि (ﷺ) हुजत्र शदीदा क़ाल अनस मा राइतु रसूलुल्लाहि (ﷺ) वजद अला अहदिम्मा वजद अलैहिम (मिआत, जिल्द 2, पेज 222)

या'नी कुछ अइहाबे सुफ़्फ़ा में से ये बेहतरीन अल्लाह वाले बुजुर्ग थे जो कुआनि पाक और दीनी इल्म में महारत हासिल रखते थे और ये वो लोग थे कि मसीबतों के वक़्त उनकी दुआएँ अहले इस्लाम के लिये पुश्तपनाही का काम देती थी। ये लोग मस्जिदे नबवी के हक़ीक़ी तौर पर आबाद करने वाले अहले हक़ लोग थे जो जंगो-जिहाद के मौक़ों पर बहादुर शेरों की तरह मैदान में काम किया करते थे। उन्हें हुजूर (ﷺ) ने अहले नज्द के कबीला बन् आमिर में तब्तीगे इस्लाम और ता'लीमे कुआन मजीद के लिये रवाना किया था। जब ये बीरे मऊना के पास पहुँचे तो आमिर बिन तुफैल नामी एक गद्दार ने रअल और जक्वान नामी कबीलों के बहुत से लोगों को साथ लेकर उन पर हमला कर दिया और ये सब वहाँ शहीद हो गए, जिनका रसूले करीम (ﷺ) को इस क़दर स़दमा हुआ कि आप (ﷺ) ने पूरे एक माह तक कबीले रअल और जक्वान के लिये कुनूते नाज़िला पढ़ी। ये सन चार हिजरी का वाकिआ है। कहा गया है कि उनमें से सिर्फ़ एक बुजुर्ग कअब बिन जैद अन्सारी (रज़ि.) किसी तरह बच निकले जिन्हें ज़ालिमों ने मुर्दा समझकर छोड़ दिया था। ये बाद तक ज़िन्दा रहे यहाँ तक कि जंगे ख़ंदक में शहीद हो गए। अल्लाह इनसे राज़ी हो, आमीन।

बाब 41 : जो शख़्स मुसीबत के वक़्त (अपने नफ़्स पर ज़ोर डालकर) अपना रंज़ ज़ाहिर करे

٤١- بَابُ مَنْ لَمْ يُظْهِرْ خُرْنَهُ عِنْدَ الْمُصِيبَةِ

और मुहम्मद बिन कअब करज़ी ने कहा कि जज़अ उसको कहते हैं कि बुरी बात मुँह से निकालना और परवरदिगार से बदगुमानी करना, और हजरत यअकूब अलैहिस्सलाम ने कहा था कि मैं तो इस बेकरारी और रंज़ का शिकवा अल्लाह ही से करता हूँ। (सूरह यूसुफ़)

1301. हमसे बिशर बिन हक़म ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने बयान किया, कि उन्होंने अनस

وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ كَعْبٍ الْقُرْظِيُّ : الْحَزْغُ الْقَوْلُ السَّيِّئُ وَالظَّنُّ السَّيِّئُ وَقَالَ يَحْقُوبُ عَلَيْهِ السَّلَامُ : ﴿ إِنَّمَا أَتَكُونُ بَنِي وَخْرَيْنِ إِلَى اللَّهِ ﴾

١٣٠١- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْحَكَمِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ

बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप ने बतलाया कि अबू तलहा (रज़ि.) का एक बच्चा बीमार हो गया, उन्होंने कहा कि उसका इत्किाल भी हो गया। उस वक़्त अबू तलहा घर में मौजूद न थे। उनकी बीवी (उम्मे सुलैम) ने जब देखा कि बच्चे का इत्किाल हो गया तो उन्होंने कुछ खाना तैयार किया और बच्चे को घर के एक कोने में लिटा दिया। जब अबू तलहा (रज़ि.) तशरीफ़ लाए तो उन्होंने पूछा कि बच्चे की तबियत कैसी है? उम्मे सुलैम ने कहा कि उसे आराम मिल गया है और मेरा खयाल है कि अब वो आराम ही कर रहा होगा। अबू तलहा (रज़ि.) ने समझा कि वो सहीह कह रही है। (अब बच्चा अच्छा है) फिर अबू तलहा ने उम्मे सुलैम के पास रात गुजारी और जब सुबह हुई तो गुस्ल किया, लेकिन जब बाहर जाने का इरादा किया तो बीवी (उम्मे सुलैम) ने इत्तिला दी कि बच्चे का इत्किाल हो चुका है। फिर उन्होंने नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी और आपसे उम्मे सुलैम का हाल बयान किया। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि शायद अल्लाह तआला तुम दोनों को इस रात में बरकत अता फ़र्माएगा। सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया कि अन्सार के एक शख्स ने बताया कि मैंने अबू तलहा (रज़ि.) की उन्हीं बीवी से नौ बेटे देखे जो सब के सब कुआन के आलिम थे। (दीगर मक़ाम : 5470)

بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((اِشْتَكَيْتُ ابْنًا لِأُمِّ طَلْحَةَ، قَالَ فَمَاتَ وَأَبُو طَلْحَةَ خَارِجٌ. فَلَمَّا رَأَتْ امْرَأَتُهُ أَنَّهُ قَدْ مَاتَ هَيَّأَتْ هَيْئًا وَنَحَتْهُ فِي جَانِبِ الْبَيْتِ. فَلَمَّا جَاءَ أَبُو طَلْحَةَ قَالَ: كَيْفَ الْغُلَامُ؟ قَالَتْ: قَدْ هَذَاتِ نَفْسُهُ، وَأَرْجُو أَنْ يَكُونَ قَدْ اسْتَوَاحَ. وَظَنُّ أَبُو طَلْحَةَ أَنَّهَا صَادِقَةٌ. قَالَ فَمَاتَ. فَلَمَّا أَصْبَحَ اغْتَسَلَ، فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ أَغْلَمَتْهُ أَنَّهُ قَدْ مَاتَ، فَصَلَّى مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ أَخْبَرَ النَّبِيَّ ﷺ بِمَا كَانَ مِنْهُمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَقَدْ أَلَّهُ أَنْ يَبَارِكَ لَكُمَا فِي لَيْلَيْكُمَا)). قَالَ سَفِيَّانٌ: فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ: فَرَأَيْتُ لَهَا سَعَةً أَوْلَادٍ كُلُّهُمْ قَدْ قَرَأَ الْقُرْآنَ.

[طهره بی: ۵۴۷۰]

तशरीह: हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) की नेकतरीन, सालिहा, साबिरा बीवी के कहने का मतलब ये था कि बच्चे का इत्किाल हो गया है और अब वो पूरे सुकून के साथ लेटा हुआ है। लेकिन हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने ये समझा कि बच्चे को इफ़ाका हो गया है और अब वो आराम से सो रहा है। इसलिये वो खुद भी आराम से सो गए, ज़रूरत से फ़ारिग हुए और बीवी के साथ हमबिस्तर भी हुए और इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने बरकत की बशारत दी। ये कि उनके ग़ैर-मा'मूली सब्र व ज़ब्त और अल्लाह तआला की हिक़मत पर कामिल यक़ीन का प्रमर था। बीवी की इस अदा-शनासी पर कुर्बान जाईए कि किस तरह उन्होंने अपने शौहर को एक ज़ेहनी कोफ़्त से बचा लिया।

मुहद्विष अली बिन मदीनी ने हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) के उन नौ लड़कों के नाम नक़ल किये हैं जो सब आलिमे कुआन हुए और अल्लाह ने उनको बड़ी तरक्की अता की। इस्हाक़, इस्माईल, यअक़ूब, उमैर, उमर, मुहम्मद, अब्दुल्लाह, अज़ीज़ और क़ासिम। इत्किाल करने वाले बच्चे को अबू उमैर कहते थे। आँहज़रत (ﷺ) उसको प्यार से फ़र्माया करते थे अबू उमैर तुम्हारी नगीर या'नी चिड़िया कैसी है? ये बच्चा बड़ा ख़ूबसूरत और वजीह था। अबू तलहा (रज़ि.) उससे बड़ी मुहब्बत किया करते थे। बच्चे की माँ उम्मे सुलैम के इस्तिक्लाल को देखिए कि मुँह पर त्योंरी न आने दी और रंज को ऐसा छुपाया कि अबू तलहा (रज़ि.) समझे कि वाकिई बच्चा अच्छा हो गया है। फिर ये देखिए कि उम्मे सुलैम ने बात भी ऐसी कही कि झूठ न हो क्योंकि मौत दरहक़ीक़त राहत है। वो मा'सूम जान थी उसके लिये तो मरना आराम ही आराम था। इधर बीमारी की तकलीफ़ गई, उधर दुनिया के फ़िक्रों से जो मुस्तज़िबल में होते, नजात पाई। बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है कि उम्मे सुलैम ने रंज और स़दमे को पी लिया बिलकुल ज़ाहिर न होने दिया।

दूसरी रिवायत में यँ है कि उम्मे सुलैम ने अपने शौहर से कहा कि अगर कुछ लोग आरियत (उधार) की चीज़ लें फिर

वापस देने से इंकार करें तो कैसा है? इस पर अबू तलहा (रज़ि.) बोले कि हर्गिज़ इंकार न करना चाहिये। बल्कि आरियत की चीज़ वापस कर देना चाहिये, तब उम्मे सुलैम ने कहा कि ये बच्चा भी अल्लाह की अमानत था। आपको आरियतन मिला हुआ था, अल्लाह ने उसे ले लिया तो आपको रंज नहीं होना चाहिये। अल्लाह ने उनको सब्र व इस्तिक्लाल के बदले नौ लड़के अत्ता किये जो सब आलिमे कुर्आन हुए। सच है कि सब्र का फल हमेशा मीठा होता है।

बाब 42 : सब्र वही है जो मुसीबत आते ही किया जाए

٤٢- بَابُ الصَّبْرِ عِنْدَ الصَّنَمَةِ الْأُولَى

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि दोनों तरफ़ के बोझ और बीच का बोझ क्या ही अच्छे हैं। या'नी सूरह बक्र की एक आयत में खुशखबरी सुनो, सब्र करने वालों को जिन को मुसीबत आती है तो कहते हैं हम सब अल्लाह ही की मिल्क हैं और अल्लाह के पास लौट कर जाने वाले हैं। ऐसे लोगों पर उनके मालिक की तरफ़ से शाबाशियाँ हैं और मेहरबानियाँ और यही लोग रास्ता पाने वाले हैं। और अल्लाह ने सूरह बक्र में फ़र्माया सब्र और नमाज़ से मदद माँगो और वो नमाज़ बहुत मुश्किल है मगर अल्लाह से डरने वालों पर मुश्किल नहीं।

1302. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे प्राबित ने, उन्होंने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, आप नबी करीम (ﷺ) के हवाले से नक़ल करते थे कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सब्र तो वही है जो सदमे के शुरू में किया जाए। (राजेअ: 1252)

وَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: يَغْمُ الْعِبْدَانِ وَلَيْعَمُ الْعِلَاوَةُ: ﴿الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا: إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ. أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ، وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ﴾ وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَلْيَسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ، وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْغَاسِقِينَ﴾.

١٣٠٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَابِطٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الصَّبْرُ عِنْدَ الصَّنَمَةِ الْأُولَى)). [راجع: ١٢٥٢]

तशरीह: बाब के तर्जुमा में हज़रत उमर (रज़ि.) के इश्राद का मतलब ये है कि आपने मुसीबत के वक़्त सब्र की फ़ज़ीलत बयान की कि उससे साबिर बन्दे पर अल्लाह की रहमतें होती हैं और सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ मिलती है। हज़रत उमर (रज़ि.) वाले कौल को हाकिम ने मुस्तदरक में वसूल किया है हज़रत उमर (रज़ि.) ने सल्लात और रहमत को जानवर के दोनों तरफ़ के बोझें करार दिया और बीच का बोझ जो पीठ पे रहता है उसे ऊलाइक़ हुमुल मुहतदून से ता'बीर किया है। पीछे बयान हुआ कि एक औरत क़ब्र पर बैठी हुई रो रही थी आपने उसे मना किया तो वो ख़फ़ा हो गई। फिर जब उसको आपके बारे में पता चला तो वो दौड़ी हुई मअज़रत-ख्वाही के लिये चली आई। उस वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब क्या रखा है सब्र तो मुसीबत के शुरू ही में हुआ करता है।

बाब 43 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्माना कि ऐ इब्राहीम! हम तुम्हारी जुदाई पर ग़मगीन हैं

٤٣- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّا بِكَ لَمَحْزُونُونَ))

और इब्ने उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि (आप ﷺ ने फ़र्माया) आँख आँसू बहाती है और दिल ग़म से निढाल है।

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَتَمْنَعُ الْعَيْنُ وَتَحْزَنَ الْقَلْبُ)).

1303. हमसे हसन बिन अब्दुल अजीज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन हस्सान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे कुरैश ने जो हथियान के बेटे हैं, ने बयान किया और उनसे षाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ अबू यूसुफ़ लोहार के यहाँ गये। ये इब्राहीम (रसूलुल्लाह ﷺ के साहबजादे) को दूध पिलाने वाली आया के खाविन्द थे। आँहज़रत ने इब्राहीम (रज़ि.) को गोद में लिया और प्यार किया और सूँघा। फिर इसके बाद हम उनके यहाँ घर गये। देखा कि उस वक़्त इब्राहीम (रज़ि.) दम तोड़ रहे हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) की आँखें आँसुओं से भर आई तो अब्दुरहमान बिन औफ़ (रज़ि.) बोल पड़े कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप भी लोगों कि तरह बेसज़ी करने लगे? हुज़ुर-अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने औफ़! ये बेसज़ी नहीं, ये तो रहमत है। फिर आप (ﷺ) दोबारा रोए और फ़र्माया, आँखों से आँसू जारी है और दिल ग़म से निढाल है, पर जबान से हम कहेंगे वही जो हमारे परवरदिगार को पसन्द है और ऐ इब्राहीम! हम तुम्हारी जुदाई से ग़मगीन हैं। इस हदीस को मूसा बिन इस्माईल ने सुलैमान बिन मुगीरा से, उनसे षाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

۱۳۰۳ - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانٍ قَالَ حَدَّثَنَا لُرَيْشٌ هُوَ ابْنُ حَيَّانٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَخَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَلَى أَبِي سَيْفٍ الْقَيْنِ - وَكَانَ ظَنَرًا لِإِبْرَاهِيمَ - فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِبْرَاهِيمَ لِقَبْلَتِهِ وَشَمَّهُ ثُمَّ دَخَلْنَا عَلَيْهِ بَعْدَ ذَلِكَ - وَإِبْرَاهِيمُ يَجُودُ بِنَفْسِهِ - فَجَعَلْتُ عَيْنَا رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ذَرْفَانِ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: وَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَقَالَ: ((يَا ابْنَ عَوْفٍ إِنَّهَا رَحْمَةٌ)). ثُمَّ أَتَيْتُهَا بِأُخْرَى فَقَالَ ﷺ: ((إِنَّ الْعَيْنَ تَذْمُغُ، وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ، وَلَا نَقُولُ إِلَّا مَا يَرْضَى رَبُّنَا، وَإِنَّا بِبُيُوتِكُمْ يَا إِبْرَاهِيمَ لَمَحْزُونُونَ)). رَوَاهُ مُوسَى عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ السَّمِيعَةِ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि इस तरह आँखों से आंसू निकल आएँ और दिल ग़मगीन हो और जुबान से कोई अल्फ़ाज़ अल्लाह की नाराज़गी का न निकले तो ऐसा रोना बेसज़ी नहीं ये आंसू रहमत हैं और ये भी षाबित हुआ कि मरने वाले को मुहब्बत आमेज़ लफ़्ज़ों से मुखातब करके उसके हक़ में कलाम-ए-ख़ैर कहना चाहिये। आँहज़रत (ﷺ) के ये साहबजादे मारिया कित्तिया (रज़ि.) के बतन से पैदा हुए थे जो मशिय्यते ऐज़दी के तहत हालते शीर-ख़वारगी (दूध पीने की उम्र में) ही में इत्किाल कर गए। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अज़ाहा)

बाब 44 : मरीज़ के पास रोना कैसा है?

1304. हमसे अस्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने कहा कि मुझे ख़बर दी अम्र बिन हारिष ने, उन्हें सईद बिन हारिष अन्सारी ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि सअद बिन उबादा (रज़ि.) किसी मर्ज़ में मुब्तला हुए। नबी करीम (ﷺ) इयादत के लिये अब्दुरहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक्कास और

۴۴ - بَابُ الْبَكَاءِ عِنْدَ الْمَرِيضِ ۱۳۰۴ - حَدَّثَنَا أَصْبَغُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ الْأَنْصَارِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اشْكَى مَعَهُ بَنُو عُبَادَةَ شَكْوَى لَهُ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) के साथ उनके यहाँ तशरीफ़ ले गये। जब आप (ﷺ) अन्दर रह गये तो तीमारदारों के हुजूम में उन्हें पाया। आप (ﷺ) ने दरयाफ्त फ़र्माया कि क्या वफ़ात हो गई? लोगों ने कहा नहीं या रसूलुल्लाह (ﷺ)! नबी करीम (ﷺ) (उनकी मर्ज़ की शिद्दत को देखकर) रो पड़े। लोगों ने जो रसूले-अकरम (ﷺ) को रोते देखा तो वो सब भी रोने लगे। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सुनो! अल्लाह तआला आँखों से आँसू निकलने पर अज़ाब नहीं करेगा और न दिल के ग़म पर। हाँ इसका अज़ाब, इस वजह से होता है, आप (ﷺ) ने ज़बान की तरफ़ इशारा किया (और अगर इस ज़बान से अच्छी बात निकले तो) ये इसकी रहमत का भी बाइस बनती है और मय्यित को उसके घरवालों के नोहा व मातम की वजह से भी अज़ाब होता है। हज़रत उमर (रज़ि.) मय्यित पर मातम करने पर डण्डे से मारते, फिर चीखने और रोने वालों के मुँह में मिट्टी झोंक देते।

مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَاصٍ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ، فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ فَوَجَدَهُ فِي غَاشِيَةِ أَهْلِهِ لَقَانٍ : (لَقَدْ قَضَى؟) قَالُوا: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَبَكَى النَّبِيُّ ﷺ. فَلَمَّا رَأَى الْقَوْمَ بُكَاءَ النَّبِيِّ ﷺ بَكَوْا. فَقَالَ: «وَلَا تَسْتَمْتُونَ؟ إِنَّ اللَّهَ لَا يُعَذِّبُ بِمَنَعِ الْقَيْنِ وَلَا بِحُزْنِ الْقَلْبِ، وَلَكِنْ يُعَذِّبُ بِهَذَا» - وَأَشَارَ إِلَى لِسَانِهِ - أَوْ يَرْحَمُ. وَإِنَّ السَّمْتَ يُعَذِّبُ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ». وَكَانَ غَمَرٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَضْرِبُ فِيهِ بِالْقَصَا، وَيُوسِي بِالْحِجَارَةِ، وَيَخْطِي بِالْعُرَابِ.

तशरीह: फ़वजदहू फ़्री गाशियते अहलिही का तर्जुमा कुछ ने यूँ किया है देखा तो वो बेहोश हैं और उनके चारों ओर लोग जमा हैं। आपने लोगों को इकट्ठा देखकर ये गुमान किया कि शायद सअद (रज़ि.) इंतिकाल कर गए। आपने जुबान की तरफ़ इशारा करके ज़ाहिर फ़र्माया कि यही जुबान बाअिषे रहमत है अगर उससे कलिमाते ख़ैर निकलें और यही बाअिषे अज़ाब है अगर उससे बुरे अल्फ़ाज़ निकाले जाएँ। इस हदीष से हज़रत उमर (रज़ि.) के जलाल का भी इज़हार हुआ कि आप ख़िलाफ़े शरीअत रोने-पीटने वालों पर इतिहाई सख़्ती फ़र्माते। फ़िल व़ाक़ेअ अल्लाह ताक़त दे तो शरई अवामिर व नवाही के लिये पूरी ताक़त से काम लेना चाहिये।

हज़रत सअद (रज़ि.) बिन उबादा अंसारी ख़ज़रजी (रज़ि.) बड़े जलीलुल क़द्र सहाबी हैं। उक़ब-ए-पानिया में शर्फ़ुल इस्लाम से मुशरफ़ हुए। उनका शुमार बारह नक़््बा मे है। अंसार के सरदारों में से थे और शान व शौकत में सबसे बड़-चढ़कर थे। बद्र की मुहिम के लिये आँहज़रत (ﷺ) ने जो मुशारवती इज़लास तलब फ़र्माया था उसमें हज़रत सअद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आपका इशारा हमारी तरफ़ है। अल्लाह की क़सम! अगर आप (ﷺ) हम अंसार को समुन्दर में कूदने का हुक्म फ़र्माएँगे तो हम उसमें भी कूद पड़ेंगे और अगर खुश्की में हुक्म फ़र्माएँगे तो हम वहाँ भी ऊँटों के कलेजे पिघला देंगे। आपकी इस पुरजोश तक्वीर से नबी करीम (ﷺ) बेहद खुश हुए। अक़षर ग़ज़ात में अंसार का झण्डा आप ही के हाथों में रहता था। सख़ावत में उनका कोई प़ानी नहीं था। ख़ास तौर पर अम्हाबे सुफ़फ़ा पर आपके ज़ूदो करम की बारिश बक़रत बरसा करती थी। नबी करीम (ﷺ) को आपसे बेइतिहा मुहब्बत थी। उसी वजह से आपकी बीमारी में हुज़ूर (ﷺ) आपकी इयादत के लिये तशरीफ़ लाए तो आपकी बीमारी की तकलीफ़देह हालत देखकर हुज़ूर (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी हो गए। 15 हिज़री में बज़माना ख़िलाफ़ते फ़ारूकी सरज़मीने शाम में बमुक़ाम हौरान आपकी शहादत इस तरह हुई कि किसी दुश्मन ने नज़श मुबारक को गुस्लख़ाने में डाल दिया। इंतिकाल के वक़्त एक बीवी और तीन बेटे आपने छोड़े और हौरान ही में सुपुर्दे ख़ाक किये गये। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अज़ाहिा)

करना और उस पर झिड़कना चाहिये

1305. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वट्टहाब बक्रफी ने, उनसे यह्या बिन सईद अन्सारी ने, कहा कि मुझे अम्मा बिनते अब्दुरहमान अन्सारी ने खबर दी, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, आप ने फ़र्माया कि जब ज़ैद बिन हारिषा, जा'फ़र बिन अबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) की शहादत की खबर आई तो हज़ुरे-अकरम (ﷺ) इस तरह बैठे की ग़म के आधार आपके चेहरे पर नुमाँया थे। मैं दरवाज़े के एक सुराख से आप (ﷺ) को देख रही थी। इतने में एक साहब आए और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! जा'फ़र (रज़ि.) के घर की औरतें नोहा और मातम कर रही हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें न रोने के लिये कहा। वो साहब गये, लेकिन फिर वापस आ गये और कहा कि वो नहीं मानती। आपने दोबारा रोकने के लिये भेजा। वो गये और फिर वापस चले आए। कहा कि अल्लाह की क़सम! वो तो मुझ पर ग़ालिब आ गई हैं या ये कहा कि हम पर ग़ालिब आ गई हैं। शक मुहम्मद बिन हौशब को था। (आइशा रज़ि. ने बयान किया कि) मेरा यकीन ये है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उनके मुँह में मिट्टी झाँक दे। इस पर मेरी ज़बान से निकला कि अल्लाह तेरी नाक खाक आलूद करे तू न तो वो काम कर सका जिसका आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया था और न आपको तकलीफ़ देना छोड़ता है। (राजेअ: 1299)

وَالْبُكَاءُ، وَالزُّجُرُ عَنْ ذَلِكَ

۱۳۰۵ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَوْشِبٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قُولَ: ((لَمَّا جَاءَ قَتْلَ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ وَجَفَرٍ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ جَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْرِفُ فِيهِ الْحَزْنَ - وَأَنَا أَطْلُعُ مِنْ شَقِّ الْبَابِ - فَاتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ نِسَاءَ جَفَرٍ - وَذَكَرَ بَكَاعَهُنَّ - فَأَمَرَهُ أَنْ يَنْهَاهُنَّ، فَلَذَبَ الرَّجُلُ، ثُمَّ أَتَى فَقَالَ: لَقَدْ نَهَيْتُهُنَّ، وَذَكَرَ أَنَّهُنَّ لَمْ يُطِيعُوهُ. فَأَمَرَهُ النَّبِيُّ أَنْ يَنْهَاهُنَّ، فَلَذَبَ، ثُمَّ أَتَى فَقَالَ: وَاللَّهِ لَقَدْ غَلَبَنِي - أَوْ غَلَبَتَا، الشُّكُّ مِنْ مُحَمَّدِ بْنِ حَوْشِبٍ - فَرَوَعْتُ أَنْ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((فَاحْثُ فِي أَفْوَاهِهِنَّ التُّرَابَ)). فَقُلْتُ: أَرْغَمَ اللَّهُ أَنْفَكَ، قَوْلَ اللَّهِ مَا آتَتْ بِفَاعِلٍ، وَمَا تَرَكْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنَ الْعَنَاءِ. [راجع: ۱۲۹۹]

तस्रीह:

ज़ैद बिन हारिषा की वालिदा का नाम सअदिया और बाप का नाम हारिषा और अबू उसामा कुत्रियत थी। बनी कुज़ाआ के चश्मो-चिराग़ थे जो यमन का एक मुअज्ज़ज़ कबीला था। बचपन में क़ज़ाक़ आपको उठाकर ले गए। उकाज़ के बाज़ार में गुलाम बनकर चार सौ दिरहम में हकीम बिन हिज़ाम के हाथ बिककर उनकी फूफी उम्मुल मोमिनीन हज़रत खदीजा (रज़ि.) की ख़िदमत में पहुँच गए और वहाँ से नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आ गए। उनके वालिद को यमन में ख़बर हुई तो वो दौड़े हुए आए और दरबारे नुबुव्वत में उनकी वापसी के लिये दरख़्वास्त की। आँहज़रत (ﷺ) ने ज़ैद बिन हारिषा को पूरा इख़्तियार दे दिया कि अगर वो घर जाना चाहें तो खुशी से अपने वालिद के साथ चले जाएँ और अगर चाहें तो मेरे पास रहें। ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) ने अपने घरवालों पर आँहज़रत (ﷺ) को तर्जीह दी और वालिद और चचा के साथ नहीं गए। इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) के अहसानात और अख़लाके फ़ाज़िला उनके दिल में घर कर चुके थे। इस वाकिये के बाद आँहज़ुर (ﷺ) उनको मुकामे हज़र में ले गए और हाज़िरीन को ख़िताब करते हुए कहा कि लोगों! ग़वाह रहो मैंने ज़ैद को अपना बेटा बना लिया। वो मेरे वारिष हैं और मैं उसका वारिष हूँ। उसके बाद वो ज़ैद बिन मुहम्मद पुकारे जाने लगे। यहाँ तक कि कुर्आन मजीद की ये आयत नाज़िल हुई कि मुँहबोले लड़कों को उनके वालिदैन की तरफ़ मन्सूब करके

पुकारो, यह अल्लाह के यहाँ इंसान की बात है। फिर वो जैद बिन हारिषा के नाम से पुकारे जाने लगे।

आँहजरत (ﷺ) ने उनका निकाह अपनी आज्ञादकर्दा लौण्डी उम्मे ऐमन से करा दिया था। जिनके बतन से उनका लड़का उसामा पैदा हुआ। उनकी फज़ीलत के लिये यही काफ़ी है कि अल्लाह ने कुआन मजीद में एक आयत में उनका नाम लेकर उनका वाक़िया बयान किया है जबकि कुआन मजीद में किसी भी सहाबी का नाम लेकर कोई तज़िकरा नहीं है। ग़ज़्व-ए-मौता 8 हिजरी में ये बहादुराना शहीद हुए। उस वक़्त उनकी उम्र 55 साल की थी।

उनके बाद फ़ौज की कमान हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) ने सम्भाली। ये नबी करीम (ﷺ) के मुहतरम चचा अबू तालिब के लड़के थे। वालिदा का नाम फ़ातिमा था ये शुरू ही में 31 आदिमियों के साथ इस्लाम ले आए थे। हज़रत अली (रज़ि.) से दस साल बड़े थे। सूरत और सीरत में रसूलुल्लाह (ﷺ) से बहुत मुशाबेह थे। कुरैश के मज़ालिम से तंग आकर हिज्रते हब्शा में ये भी शरीक हो गए और नज्बाशी के दरबार में उन्होंने इस्लाम और पैग़म्बर इस्लाम के बारे में ऐसी पुरजोश तक्रीर की कि शाहे हब्शा मुसलमान हो गया। 7 हिजरी में ये उस वक़्त मदीना तशरीफ़ लाए जब फ़रज़न्दाने तौहीद ने ख़ैबर को फ़तह किया। आपने उनको अपने गले से लगा लिया और फ़र्माया कि मैं नहीं कह सकता कि मुझे तुम्हारे आने से ज़्यादा खुशी हासिल हुई है या फ़तहे ख़ैबर से हुई है। ग़ज़्व-ए-मौता में ये भी बहादुराना शहीद हुए और इस ख़बर से आँहजरत (ﷺ) को सख़्ततरीन सदमा हुआ। हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) का घर मातमकदा बन गया। उसी मौक़े पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया जो यहाँ हदीष में मज़कूर है।

उनके बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने फ़ौज की कमान सम्भाली। बैअते उक्बा में ये मौजूद थे। बद्र, उहुद, ख़न्दक और उसके बाद के तमाम ग़ज़वात में सिवाए फ़तहे मक्का और बाद के ग़ज़वात में ये शरीक रहे। बड़े ही फ़र्माबरदार इताअतशिशार सहाबी थे। कबील-ए-ख़ज़रज से उनका रिश्ता था। लैलतुल उक्बा में इस्लाम लाकर बनू हारिषा के नक़ीब मुक़र्रर हुए और हज़रत मिक्दाद बिन अस्वद कुन्दी (रज़ि.) से सिलसिले भाईचारा कायम हुआ। फतहे बद्र की खुशख़बरी मदीना में सबसे पहले लाने वाले आप ही थे। जंगे मौता में बहादुराना शहीद हुए। उनके बाद आँहजरत (ﷺ) की पेशीनगोई के मुताबिक़ अल्लाह की तलवार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने क़यादत सम्भाली और उनके हाथ पर मुसलमानों को फ़तहे अज़ीम हासिल हुई।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष से श्रावित फ़र्माया कि पुकारकर, बयान कर करके मरनेवालों पर नोहा व मातम करना यहाँ तक नाजाइज़ है कि आँहजरत (ﷺ) ने हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के घरवालों के लिये इस हरकते नाज़ेबा नोहा व मातम की वजह से उनके मुँह में मिट्टी डालने का हुक्म दिया जो आपकी नाराज़गी की दलील है और ये एक मुहावरा है जो इतिहाई नाराज़गी पर दलालत करता है।

1306. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वहहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे उम्मे अतिया (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बैअत लेते वक़्त हम से ये अहद भी लिया था कि हम (मय्यित पर) नोहा नहीं करेंगी। लेकिन इस इक्रार को पाँच औरतों के सिवा किसी ने पूरा नहीं किया। ये औरतें उम्मे सुलैम, उम्मे अत्ताअ, अबू सबरा की साहबज़ादी जो मुआज़ के घर में थीं और इनके अलावा दो औरतें था (ये कहा कि) अबू सबरा की साहबज़ादी, मुआज़ की बीवी और एक दूसरी ख़ातून (रज़ि.)।

(दीगर मक़ाम : 4892, 7210)

۱۳۰۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ
الرَّوَّاحِ قَالَ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ
حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أُمِّ عَطِيَّةٍ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((أَخَذَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ
ﷺ عِنْدَ الْيَمْعَةِ أَنْ لَا نَسُوحَ، لَمَّا وَقَفَتْ مِنَّا
امْرَأَةٌ غَيْرَ عَمْسِ بِنْتِ بَنِي سُلَيْمٍ، وَأُمِّ
الْعَلَاءِ، وَابْنَةُ أَبِي سُبْرَةَ امْرَأَةٌ مُضَاهٍ
وَامْرَأَتَيْنِ، أَوْ ابْنَةُ أَبِي سُبْرَةَ، وَامْرَأَةٌ مُضَاهٍ
وَامْرَأَةٌ أُخْرَى)).

तथरीह :

हदीष के रावी को ये शक है कि ये अबू सबरा की वही साहबजादी हैं जो मुआज़ (रज़ि.) के घर में थीं या किसी दूसरी साहबजादी का यहाँ जिक्र है और मुआज़ की जो बीवी उस अहद का हक़ अदा करने वालों में थीं वो अबू सबरा की साहबजादी नहीं थीं। मुआज़ की बीवी उम्मे अमर बन्ते खल्लाद थी।

आहज़रत (ﷺ) वक्तन फ़वक्तन मुसलमान मदों, औरतों से इस्लाम पर प्राबितक़दमी की बैअत किया करते थे ऐसे ही एक मौक़े पर आप (ﷺ) ने औरतों से ख़सूसियत से नोहा करने पर भी बैअत ली। बैअत के इस्तिलाही मा'नी इकरार करने के हैं। ये एक तरह का हलफ़नामा होता है। बैअत की बहुत सी किस्में होती हैं। जिनका तफ़्सीली बयान अपने मौक़े पर आएगा।

इस हदीष से ये भी पता चलता है कि इंसान कितना ही बड़ा क्यूँ न हो फिर भी कमज़ोरियों का मुजस्समा है। सहाबियात की शान मुसल्लम है फिर भी उनमें बहुत से ख़वातीन से इस अहद पर कायम न रहा गया जैसा कि मज़कूर हुआ है।

बाब 46 : जनाज़ा देखकर खड़े होना

1307. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन इययना ने बयान किया, उनसे जुहरी ने, उनसे सालिम ने, उनसे उनके बाप अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने, उनसे आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाओ और खड़े रहो यहाँ तक कि जनाज़ा तुम से आगे निकल जाए। सुफ़यान ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया कि मुझसे सालिम ने अपने बाप अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से ख़बर दी। आपने फ़र्माया कि हमें आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से ख़बर दी थी। हमैदी ने ये ज़्यादाती की है, यहाँ तक कि जनाज़ा आगे निकल जाये या रख दिया जाये (दीगर मज़ाम : 1308)

बाब 47 : अगर कोई जनाज़ा देखकर खड़ा हो जाए तो कब बैठना चाहिये?

1308. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) के हवाले से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम में से कोई जनाज़ा देखे तो अगर उसके साथ नहीं चल रहा है तो खड़ा ही हो जाए यहाँ तक कि जनाज़ा आगे निकल जाए या आगे जाने की बजाय खुद जनाज़ा रख

٤٦- بَابُ الْقِيَامِ لِلْجَنَازَةِ

١٣٠٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((إِذَا رَأَيْتُمُ الْجَنَازَةَ فَقُومُوا حَتَّى تُجَلِّفَكُمُ)) قَالَ سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : أَخْبَرَنَا عَامِرُ بْنُ رَبِيعَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ زَادَ الْحَمِيدِيُّ : ((حَتَّى تُجَلِّفَكُمُ أَوْ تَوْضِعَ)). [طرفه ١ : ١٣٠٨]

٤٧- بَابُ مَتَى يَقْعُدُ إِذَا قَامَ لِلْجَنَازَةِ

١٣٠٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ مَعْبُودٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((إِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ جَنَازَةً فَإِنْ لَمْ يَكُنْ مَاشِياً مَعَهَا فَلْيَقُمْ حَتَّى يُجَلِّفَهَا أَوْ تُجَلِّفَهَا أَوْ تَوْضِعَ مِنْ قَبْلِ

दिया जाये। (राजेअ: 1307)

أَن تَخْلَفَهُ. [راجع: 1307]

बाब 48 : जो शख्स जनाजे के साथ हो वो उस वक़्त तक न बैठे जब तक जनाजा लोगों के काँधों से उतारकर ज़मीन पर न रख दिया जाए और अगर पहले बैठ जाए तो उससे खड़ा होने के लिये कहा जाए

٤٨ - بَابُ مَنْ تَبِعَ جَنَازَةً فَلَا يَقْعُدُ حَتَّى تُوضَعَ عَنْ مَنَاكِبِ الرِّجَالِ فَإِنْ قَعَدَ أَمَرَ بِالْقِيَامِ

1309. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी ज़िब ने, उनसे सईद मख़बरी ने और उनसे उनके वालिद ने कि हम एक जनाजे में शरीक थे कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने मरवान का हाथ पकड़ा और ये दोनों सहाब जनाजे के रखे जाने से पहले बैठ गये। इतने में अबू सईद (रज़ि.) तशरीफ़ लाए और मरवान का हाथ पकड़कर फ़र्माया, उठो! अल्लाह की क़सम! ये (ये अबू हुरैरह रज़ि.) जानते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें इससे मना फ़र्माया है। अबू हुरैरह (रज़ि.) बोले कि अबू सईद (रज़ि.) ने सच कहा है। (दीगर मक़ाम: 1310)

١٣٠٩ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَيْبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمَخْبَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((كُنَّا فِي جَنَازَةٍ فَأَخَذَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَدَ مَرْوَانَ فَجَلَسَا قَبْلَ أَنْ تُوضَعَ، فَجَاءَ أَبُو سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَأَخَذَ يَدَ مَرْوَانَ فَقَالَ: لَمْ، قَوْلَ اللَّهِ لَقَدْ عَلِمَ هَذَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا عَنْ ذَلِكَ. فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ صَدَقَ.))

[طرحه ب: 1310]

तशरीह: हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये हदीस याद नहीं रही थी। जब हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने याद दिलाई तो आपको याद आ गई और आपने उसकी तस्दीक की। अक़्बर सहाबा और ताबेईन उसको मुस्तहब जानते हैं और शज़बी और नख़्ई ने कहा कि जनाजा ज़मीन पर रखे जाने से पहले बैठ जाना मकरूह है और कुछ ने खड़े रहने को फ़र्ज कहा है। निसाई ने अबू हुरैरह (रज़ि.) और अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से निकाला कि हमने आँ हज़रत (ﷺ) को किसी जनाजे में बैठते हुए नहीं देखा है जब तक जनाजा ज़मीन पर न रख दिया जाता।

1310. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम दस्त्वाई ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़प्पीर ने, उनसे अबू सलमा और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम लोग जनाजा देखो तो खड़े हो जाओ और जो शख्स जनाजे के साथ चल रहा हो वो उस वक़्त तक न बैठे जब तक जनाजा रख न दिया जाए। (राजेअ: 1309)

١٣١٠ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ - بَخِي ابْنُ إِسْرَاهِيمَ - قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا رَأَيْتُمُ الْجَنَازَةَ فَاقْبُضُوا، لَمْ تَبِعْهَا فَلَا يَقْعُدُ حَتَّى تُوضَعَ.))

[راجع: 1309]

तशरीह: इस बारे में बहुत कुछ बहस व मुबाहसा के बाद शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना उबेदुल्लाह साहब (रह.) फ़मति हैं, वल्क़ौलुराजिह इन्दी हुय मा ज़हब इलैहिलजुम्हुरू मिनअन्नहू यस्तहिब्बु अल्ला यज़िलसत्ताबिउ वल्माशी लिलजनाजति हत्ता तूज़अ बिल्अर्ज़ि व इन्नहय फ़ी क़ौलिही फ़ला यक़उद महमूलुन अलत्तन्जीहि

वल्लाहु तआला आलमु

व यदुल्लु अला इस्तिहबाबिल्क्रियामि इला अन तूजअ मा रवाहुल्बैहकी (जिल्द 04, पेज 27) मिन तरीकि अबी हाज़िम क़ालः मशैतु मअ अबी हुरैरत वब्निज़्ज़ुबैर वल्हसन बिन अली अमामल्जनाजति हत्ता इन्तहैना इलल्मक्बिरति फ़क़ामू हा वुज़िअत बुम्प जलसू फ़कुल्लु लिबअज़िहिम फ़क़ाल इन्ल्काइम मिस्लुल हामिल यअनी फिलअज़ि (मिआत, जिल्द 2, पेज 471)

या'नी मेरे नजदीक क़ौले राजेह वही है जिधर जुम्हूर गए हैं और वो ये कि जनाजे के साथ चलने वालों और उसके रखसत करने वालों के लिये मुस्तहब है कि जब तक जनाज़ा ज़मीन पर न रख दिया जाए न बैठें और हदीष में न बैठने की नही तंज़ीही है और उस क़याम के इस्तिहबाब पर बैहकी की वो हदीष भी दलालत करती है जिसे उन्होंने अबू हाज़िम की सनद से रिवायत किया है कि हम हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और अब्दुल्लाह बिन उमर और अब्दुल्लाह बिन जुबैर और हसन बिन अली (रज़ि.) के साथ एक जनाजे के साथ गए। पस ये तमाम हज़रात खड़े ही रहे जब तक वो जनाज़ा ज़मीन पर न रख दिया गया उसके बाद वो सब भी बैठ गए। मैंने उनमें से कुछ से मसला पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि खड़ा रहने वाला भी उसी के मिस्ल (समान) है जो खुद जनाजे को उठा रहा है या'नी प्रवाब में ये दोनों बराबर हैं।

बाब 49 : उस शख्स के बारे में जो यहूदी का

۴۹- بَابُ مَنْ قَامَ لِحَنَازَةِ يَهُودِيٍّ

जनाज़ा देखकर खड़ा हो गया

1311. हमसे मुआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कफ़ीर ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन मिक्सम ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि हमारे सामने से एक जनाज़ा गुज़रा तो नबी करीम (ﷺ) खड़े हो गये और हम भी खड़े हो गये। फिर हमने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ये तो यहूदी का जनाज़ा था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम लोग जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाया करो।

۱۳۱۱- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ هُبَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مِثْمَرٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((مَرُّ بِنَا حَنَازَةَ فَقَامَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ وَلَمْنَا، فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهَا حَنَازَةُ يَهُودِيٍّ، قَالَ: ((إِذَا رَأَيْتُمُ الْحَنَازَةَ فَقُومُوا))..

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) का यहूदी के जनाजे के लिये भी खड़ा होना ज़ाहिर कर रहा है कि आपके दिल में सिर्फ़ इंसानियत के रिश्ते की बिना पर हर इंसान से किस क़दर मुहब्बत थी। यहूदी के जनाजे को देखकर खड़े होने की कई वजहें बयान की गई हैं। आइन्दा हदीष में भी कुछ ऐसा ही ज़िक्र है। वहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने खुद इस सवाल का जवाब फ़र्माया है, अलैस्त नफ़्सन या'नी जान के मुआमले में मुसलमान या ग़ैर-मुसलमान बराबर हैं। ज़िन्दगी और मौत दोनों पर वारिद होती हैं। हज़रत जाबिर (रज़ि.) की रिवायत में मज़ीद तफ़्सीली मौजूद है। मरत जनाज़तुन फ़क़ाम लहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) व कुम्ना मअहू फ़कुल्ला या रसूलुल्लाहि (ﷺ) इन्हा यहूदिय्या फ़क़ाल इन्ल्मयिता फ़ज़उन फइज़ा राइनुमुल जनाज़त फ़कुमू (मुत्तफ़क़ अलैहि) या'नी एक जनाज़ा गुज़रा जिस पर आँहज़रत (ﷺ) और आपकी इत्तिदा में हम सब सहाबा किराम (रज़ि.) खड़े हो गए। बाद में हमने कहा कि हज़ूर ये एक यहूदिया का जनाज़ा था। आपने फ़र्माया कि कुछ भी हो बेशक मौत बहुत ही घबराहट में डाल देने वाली चीज़ है। मौत किसी की भी हो उसे देखकर घबराहट होनी चाहिये पस तुम जब भी कोई जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाया करो।

निसाई और हाकिम में हज़रत अनस (रज़ि.) की हदीष में है कि इन्मा कुम्ना लिल्मलाइकति हम फ़रिश्तों की ता'ज़ीम के लिये खड़े होते हैं और अहमद में भी हदीषे अबू मूसा से ऐसी ही रिवायत मौजूद है।

पस खुलास-ए-कलाम ये कि जनाजे को देखकर धर्म-मजहब का भेद किये बगैर इब्रत हासिल करने के लिये मौत को याद करने के लिये, फ़रिश्तों की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो जाना चाहिये। हदीष और बाब में मुताबकत ज़ाहिर है।

13 12. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अम्र बिन मुरह ने बयान किया कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना। उन्होंने कहा कि सहल बिन हनीफ़ और कैस बिन सअद (रज़ि.) क़ादिसिया में किसी जगह बैठे हुए थे। इतने में कुछ लोग उधर से जनाज़ा लेकर गुज़रे तो ये दोनों बुजुर्ग खड़े हो गये। अर्ज़ किया गया कि जनाज़ा तो जिम्मियों का है (जो काफ़िर है) इस पर उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) के पास से इसी तरह से एक जनाज़ा गुज़रा था, आप (ﷺ) उसके लिये खड़े हुए थे। फिर आप (ﷺ) से कहा गया कि ये तो यहूदी का जनाज़ा था। आपने फ़र्माया कि क्या यहूदी की जान नहीं है?

13 13. और अबू हम्ज़ा ने अअमश से बयान किया, उनसे अम्र ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने कि मैं कैस और सहल (रज़ि.) के साथ था। इन दोनों ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे और ज़करिया ने कहा उनसे शुअबी ने और उनसे इब्ने अबी लैला ने कि अबू मस्ज़द और कैस (रज़ि.) जनाजे के लिये खड़े हो जाते थे।

बाब 50 : इस बारे में कि औरतें नहीं बल्कि मर्द ही जनाजे को उठाएँ

13 16. हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हम से सईद मक्बरी ने बयान किया, उनसे उनके बाप कैसान ने कि उन्होंने अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब मय्यित चारपाई पर रखी जाती है और मर्द उसे काँधों पर उठाते हैं तो अगर वो नेक हो तो कहता है कि मुझे आगे ले चलो। लेकिन अगर नेक नहीं होता तो कहता है, हाय बर्बादी! मुझे कहाँ लिये जा रहे हो। इस आवाज़ को इन्सान के सिवा अल्लाह की तमाम मख़लूक सुनती है। अगर इन्सान कहीं सुन पाए तो बेहोश

۱۳۱۲- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مَرْثَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: ((كَانَ سَهْلُ بْنُ خَنْبَرٍ وَقَيْسُ بْنُ سَعْدٍ قَاعِدَيْنِ بِالْقَادِسِيَّةِ، فَمَرُّوا عَلَيْهِمَا بِجَنَازَةٍ فَقَامَا، فَقِيلَ لَهُمَا: إِنَّهَا مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ - أَيْ مِنْ أَهْلِ اللَّيْمَةِ - فَقَالَا: إِنْ النَّبِيِّ ﷺ مَرَّتْ بِهِ جَنَازَةٌ فَقَامَ، فَقِيلَ لَهُ: إِنَّهَا جَنَازَةٌ يَهُودِيٍّ، فَقَالَ: ((الْيَسْتُ نَفْسًا)).

۱۳۱۳- وَقَالَ أَبُو حَمْزَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ عَمْرٍو عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: ((كُنْتُ مَعَ قَيْسٍ وَسَهْلٍ وَرَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَا: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ)). وَقَالَ زَكَرِيَّا عَنْ الشَّعْبِيِّ عَنْ ابْنِ أَبِي لَيْلَى: كَانَ أَبُو سَعْدٍ وَقَيْسٌ يَقُومَانِ لِلْجَنَازَةِ.

۵۰- بَابُ حَمْلِ الرِّجَالِ الْجَنَازَةَ دُونَ النِّسَاءِ

۱۳۱۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا وَضِعَتِ الْجَنَازَةُ وَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلَى أَعْيُنِهِمْ فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ: لَذْمُونِي. وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ: يَا وَيْلَهَا، أَيْنَ يَذْهَبُونَ بِهَا؟ يَسْمَعُ صَوْتَهَا

हो जाए। (दीगर मक़ाम : 1316, 1380)

बाब 51 : जनाजे को जल्दी ले चलना

और अनस (रज़ि.) ने कहा कि तुम जनाजे को पहुँचा देने वाले हो, तुम उसके सामने भी चल सकते हो, पीछे भी, दाएँ भी और बाएँ भी सब तरफ़ चल सकते हो और अनस (रज़ि.) के सिवा और लोगों ने कहा जनाजे के करीब चलना चाहिये।

1315. हमस अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमने जुहरी से सुनकर ये हदीस याद की, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब से और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जनाज़ा लेकर जल्दी चला करो क्योंकि अगर वो नेक है तो तुम उसको भलाई की तरफ़ नज़दीक कर रहे हो और अगर इसके सिवा है तो एक शर है जिसे तुम अपनी गर्दनो से उतार रहे हो।

बाब 52 : नेक मय्यित चारपाई पर कहता है कि मुझे आगे बढ़ाए चलो (जल्दी दफ़नाओ)

1316. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैश ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद मक्बरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद (कैसान) ने और उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, आप ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि जब मय्यित चारपाई पर रखी जाती है और लोग उसे कौंधों पर उठाते हैं उस वक़्त अगर वो मरने वाला नेक होता है तो कहता है कि मुझे जल्दी आगे बढ़ाए चलो लेकिन अगर नेक नहीं होता है तो कहता है, हाय बर्बादी! मुझे कहीं लिये जा रहो हो। उसकी ये आवाज़ इन्सान के सिवा अल्लाह की हर मख़लूक सुनती है। कहीं अगर इन्सान सुन पाए तो बेहोश हो जाए। (राजेज़ : 1314)

كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا الْإِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَهُ لَصَبَحَ)). [طرفه في: 1316, 1380].

51- بَابُ السَّرْعَةِ بِالْجَنَازَةِ

وَقَالَ أَنَسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنْتُمْ مُشْعَمُونَ. فَأَمَشُوا بَيْنَ يَدَيْهَا وَخَلْفَهَا وَعَنْ يَمِينِهَا وَعَنْ شِمَالِهَا. وَقَالَ غَيْرُهُ: قَرِيبًا مِنْهَا.

1315- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَفَظْنَاهُ مِنَ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَسْرِعُوا بِالْجَنَازَةِ، فَإِنْ تَكَ صَلَاحَةً فَخَيْرٌ تَقْدُمُونَهَا، وَإِنْ تَكَ سَوَى ذَلِكَ لَسَرُّ تَضَعُونَهُ عَنْ رِقَابِكُمْ)).

52- بَابُ قَوْلِ الْمَيِّتِ وَهُوَ عَلَى الْجَنَازَةِ: قَدِّمُونِي

1316- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَنَسٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا وَضِعَتِ الْجَنَازَةُ فَاحْتَمِلْهَا الرِّجَالُ عَلَى أَغْصَانِهِمْ، فَإِنْ كَانَتْ صَلَاحَةً قَالَتْ: قَدِّمُونِي، وَإِنْ كَانَتْ خَيْرٌ صَلَاحَةً قَالَتْ: لَا تَلْهَيْهَا، يَا رَبِّهَا، أَيْنَ يَلْمُؤُونَ بِهَا؟) يَسْمَعُ صَوْنَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا الْإِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَ الْإِنْسَانُ لَصَبَحَ)). [راجع: 1314]

बाब 53 : इमाम के पीछे जनाजे की नमाज के लिये दो या तीन सफ़े करना

1317. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अवाना वजायशकरी ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अताअ ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) नज्जाशी की नमाजे जनाजा पढ़ाई तो मैं दूसरी या तीसरी सफ़ में था।

(दीगर मक़ाम : 1320, 1334, 3788, 3787, 3789)

बहरहाल दो सफ़ हो या तीन सफ़ हर तरह जाइज़ है। मगर तीन सफ़े बनाना बेहतर है।

बाब 54 : जनाजे की नमाज में सफ़े बनाना

1317. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़रीअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मअमर ने, उनसे सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने अस्हाब को नज्जाशी की वफ़ात की ख़बर सुनाई, फिर आप आगे बढ़ गये और लोगों ने आपके पीछे सफ़े बना ली, फिर आप (ﷺ) ने चार मर्तबा तक्बीर कही। (राजेअ : 1240)

1319. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे शैबानी ने, उनसे शुअबी ने बयान किया कि मुझे नबी करीम (ﷺ) के एक सहाबी ने ख़बर दी कि आँहज़रत (ﷺ) एक क़ब्र पर आए जो और क़ब्रों से अलग थी। सहाबा ने सफ़बन्दी की और आप (ﷺ) ने चार तक्बीरें कहीं। मैंने पूछा कि ये हदीष आपसे किसने बयान की है? उन्होंने बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने। (राजेअ : 875)

1320. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी कि उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मुझे अता बिन अबी रबाह ने ख़बर दी, उन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि

۵۳- بَابُ مَنْ صَفَّ صَفَيْنِ أَوْ ثَلَاثَةً عَلَى الْجَنَازَةِ خَلْفَ الْإِمَامِ

۱۳۱۷- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ أَبِي عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ غَطَاءٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى عَلَى النَّجَاشِيِّ، فَكَثُرَتْ لِي الصَّفَّ الثَّانِي أَوْ الثَّلَاثُ)).

[أطرافه ن: ۱۳۲۰، ۱۳۳۴، ۳۸۷۷، ۳۸۷۹، ۳۸۷۸.]

۵۴- بَابُ الصُّفُوفِ عَلَى الْجَنَازَةِ

۱۳۱۸- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَبَى النَّبِيُّ ﷺ إِلَى أَصْحَابِهِ النَّجَاشِيِّ، ثُمَّ تَقَدَّمَ فَصَفُّوا خَلْفَهُ، فَكَثُرَ أَرْبَعًا)). [راجع: ۱۲۴۰]

۱۳۱۹- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ عَنْ الشَّعْبِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ شَهِدَ النَّبِيَّ ﷺ آتَى عَلَى قَبْرِ مَنُودٍ فَصَفَّوهُمْ وَكَثُرَ أَرْبَعًا. قُلْتُ مَنْ حَدَّثَكَ؟ قَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا)). [راجع: ۸۵۷]

۱۳۲۰- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ أَخْبَرَنِي غَطَاءٌ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ

नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आज हब्शा के एक सालेह मर्द (हब्शा का बादशाह नज्जाशी) का इन्तिक़ाल हो गया है। आओ उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ो। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने सफ़बन्दी कर दी और नबी करीम (ﷺ) ने उनकी नमाज़े-जनाज़ा पढ़ाई। हम सफ़ बान्धे खड़े थे, अबू जुबैर ने जाबिर (रज़ि.) के हवाले से नक़ल किया कि मैं दूसरी सफ़ में था। (राजेअ : 1317)

بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ تُوَفِّيَ الْيَوْمَ رَجُلٌ مَّالِحٌ مِنَ الْحَبَشِ، فَهَلُمُّ فَصَلُّوا عَلَيْهِ)). قَالَ: فَصَلُّوْا، فَصَلَّى النَّبِيُّ ﷺ عَلَيْهِ وَنَحْنُ صُفُوفٌ. قَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ: كُنْتُ فِي الصَّفِّ الثَّانِي. [راجع: 1317]

तशरीह: इन सब हदीषों से मय्यते ग़ायब पर नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ना प्राबित हुआ। इमाम शाफ़िअ और इमाम अहमद (रह.) और अक़बर सलफ़ का यही क़ौल है। अल्लामा इब्ने हज़म कहते हैं कि किसी सहाबी से इसकी मुमानअत प्राबित नहीं और क़यास भी उसी को मुक्तज़ा है कि जनाज़े की नमाज़ में दुआ करना है और दुआ करने में ये ज़रूरी नहीं कि जिसके लिये दुआ की जा रही है वो मौजूद भी हो।

नबी करीम (ﷺ) ने शाहे हब्शा नज्जाशी का जनाज़ा ग़ायबाना अदा किया। इससे वाजेह होता है कि नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ना सही है मगर इस बारे में उलम-ए-अहनाफ़ ने बहुत कुछ तावीलात से काम किया है। कुछ लोगों ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के लिये ज़मीन का पर्दा हटाकर अल्लाह ने नज्जाशी का जनाज़ा ज़ाहिर कर दिया था। कुछ कहते हैं कि ये खुसूसियाते नबवी से है। कुछ ने कहा कि ये ख़ास नज्जाशी के लिये था। बहरहाल ये तावीलात ग़ैर मुनासिब हैं। नबी करीम (ﷺ) से नज्जाशी के लिये, फिर मुआविया बिन मुआविया मज़नी के लिये नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना प्राबित है। हज़रत मौलाना ओबैदुल्लाह साहब शौखुल हदीस मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं, व उजीब अन ज़ालिक बिअन्नल्अस्ल अदमुल्खुसूसियति व लौ फुतिह बाबु हाज़लखुसूसि लन्सइ क़रीरुम्मिन अहकामिश शरइ क़ालल्ख़ताबी जुइम अन्नन्बिय्य (ﷺ) कान मख़सूसन बिहाज़लफ़िअलि फ़ासिदुन लिअन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) इज़ा फ़अल शयअन मिन अफ़आलिशशरीअति कान अलैना इत्तिबाउहु वल्ईतिसाबुहु वत्तख़सीसु ला युअलमु इल्ला बिदलीलिन व मिम्मा युबय्यिनु ज़ालिक अन्नहु (ﷺ) ख़रज बिन्नासि इलम्सलाति फसफ़्र बिहिम व सल्लू मअहुम फउलिम अन्न हाज़त्तावील फ़ासिदुन व क़ाल इब्नु कुदामा नक़तदी बिन्नबिय्य (ﷺ) मा लम यख़ुत मा यक़तज़ी इख़ितसाहुहु. (मिअत)

या'नी नज्जाशी के लिये आँहज़रत (ﷺ) की नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना को मख़सूस करने का ज़वाब ये दिया गया है कि अस्ल में अदमे खुसूसियत है और अगर ख़वाह-मख़वाह ऐसे खुसूस का दरवाज़ा खोला जाए, तो बहुत से काम शरीअत यही कहकर मस्टूद कर दिये जाएँगे कि ये खुसूसियाते नबवी में से है। इमाम ख़ताबी ने कहा कि ये गुमान कि नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना आँहज़रत (ﷺ) के साथ मख़सूस थी बिल्कुल फ़ासिद है। इसलिये कि जब रसूले करीम (ﷺ) कोई काम करें तो उसका इत्तिबाअ हम पर वाजिब है। तख़सीस के लिये कोई खुली दलील होनी ज़रूरी है। यहाँ साफ़ बयान किया गया है कि रसूले करीम (ﷺ) लोगों को साथ लेकर नज्जाशी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिये निकले। सफ़ बन्दी हुई और आपने नमाज़ पढ़ाई। ज़ाहिर हुआ कि ये तावील फ़ासिद है। इब्ने कुदामा ने कहा कि जब तक किसी अम् में आँहज़रत (ﷺ) की खुसूसियात सहीह दलील से प्राबित न हो हम उसमें आँहज़रत (ﷺ) की इक्तिदा करेंगे।

कुछ रिवायात जिनसे कुछ इख़ितसास पर रोशनी प्रद शकती है मरवी हैं मगर वो सब ज़ईफ़ और नाक़बिले इस्तिनाद है। अल्लामा इब्ने हज़र ने फ़र्माया कि उन पर तवज्जह न दी जा सकती। और वाक़दी की ये रिवायत कि आँहज़रत (ﷺ) के लिये नज्जाशी के जनाज़े और ज़मीन का दरम्यानी पर्दा हटा दिया गया था बग़ैर सनद के है जो हर्गिज़ इस्दिलाल के क़ाबिल नहीं है। शौख़ अब्दुल हक़ मुहदिष देहलवी ने शरह सफ़रुससआदत में ऐसा ही लिखा है।

बाब 55 : जनाज़े की नमाज़ में बच्चे भी मर्दों के

٥٥- بَابُ صُفُوفِ الصِّبْيَانِ مَعَ

बराबर खड़े हों

1321. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा कि हमसे शैबानी ने बयान किया, उनसे आमिर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले-करीम (ﷺ) का गुज़र एक क़ब्र पर हुआ मय्यित को अभी रात ही दफ़नाया गया था। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि दफ़न कब किया गया है? लोगों ने कहा, गुज़िश्ता रात। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे क्यों नहीं इत्तिला करवाई? लोगों ने अर्ज़ किया कि अन्धेरी रात में दफ़न किया गया, इसलिये हमने आपको जगाना मुनासिब नहीं समझा। फिर आप (ﷺ) खड़े हो गये और हमने आपके पीछे सफ़्र बना लीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं भी उन्हीं में था (नाबालिग़ था लेकिन) नमाज़े-जनाज़ा में शिर्कत की।

बाब 56 : जनाजे पर नमाज़ का मशरूअ होना

और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख्स जनाजे पर नमाज़ पढ़े और आप (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया, तुम अपने साथी पर नमाज़े-जनाज़ा पढ़ लो। और आपने फ़र्माया कि नज्जाशी पर नमाज़ पढ़ो। इसको नमाज़ कहा, इसमें न रुकूअ है न सज्दा और न इसमें बात की जा सकती है और इसमें तक्बीर भी है और सलाम भी। और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) जनाजे की नमाज़ न पढ़ते जब तक बावुजू न होते और सूरज निकलने और डूबने के वक़्त न पढ़ते और जनाजे की नमाज़ में रफ़यदेन करते और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा कि मैंने बहुत से सहाबा और ताबेईन को पाया वो जनाजे की नमाज़ में इमामत का ज़्यादा हक़दार उसी को जानते जिस को फ़र्ज नमाज़ में इमामत का ज़्यादा हक़दार समझते और जब ईद के दिन या जनाजे पर वुजू न हो तो पानी तलाशे, तयम्मूम न करे और जब जनाजे पर उस वक़्त पहुँचे कि लोग नमाज़ पढ़ रहे हों तो अल्लाहु-अक्बर कह कर शरीक हो जाए। और सईद बिन मुसय्यिब (रह.) ने कहा रात हो या दिन, सफ़र हो या हज़र जनाजे में चार तक्बीर

الرّجَالُ عَلَى الْجَنَائِزِ

١٣٢١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّاحِمِ قَالَ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ عَنْ غَابِرِ بْنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَرَّ بِقَبْرِ قَدْ دُفِنَ لَيْلًا فَقَالَ: ((مَتَى دُفِنَ هَذَا؟)) قَالُوا: الْبَارِحَةَ. قَالَ: ((أَفَلَا أَذْنُوبِي؟)) قَالُوا: ذُنُوبُهُ فِي ظِلْمَةِ اللَّيْلِ فَكَرِهْنَا أَنْ نُوقِظَكَ. فَقَامَ لَمَصَفَقْنَا خَلْفَهُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَأَنَا فِيهِمْ، لَمَصَلْتُ عَلَيْهِ)).

٥٦- بَابُ مَبْنِ الصَّلَاةِ عَلَى

الْجَنَائِزِ

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ صَلَّى عَلَى الْجَنَائِزِ)) وَقَالَ: ((صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ)) وَقَالَ: ((صَلُّوا عَلَى الْجَنَاحِيِّ)) مِمَّا فِي صَلَاةٍ لَيْسَ فِيهَا رُكُوعٌ وَلَا سُجُودٌ، وَلَا يُكَلِّمُ فِيهَا، وَفِيهَا تَكْبِيرٌ وَتَسْلِيمٌ. وَكَانَ ابْنُ هُرَيْرٍ لَا يُصَلِّي إِلَّا طَاهِرًا، وَلَا يُصَلِّي عِنْدَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَلَا غُرُوبِهَا، وَيَقْرَأُ بِدُئِيهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: أَذْرَكْتُ النَّاسَ وَأَحَقَّهُمْ عَلَى جَنَائِزِهِمْ مَنْ رَضَوْهُمْ لِقَرَابَتِهِمْ. وَإِذَا أَخَذْتُ يَوْمَ الْعِيدِ أَوْ عِنْدَ الْجَنَائِزِ يُطْلَبُ الْمَاءُ وَلَا يَتِمُّ، وَإِذَا انْتَهَى إِلَى الْجَنَائِزِ وَهُمْ يُصَلُّونَ يَدْخُلُ مَعَهُمْ بِتَكْبِيرَةٍ. وَقَالَ ابْنُ

कहें। और अनस (रज़ि.) ने कहा पहली तक्बीर जनाजे की नमाज़ शुरू करने की है और अल्लाह तआला ने (सूरह तौबा में) फ़र्माया इन मुनाफ़िकों में जब कोई मर जाए तो उन पर कभी जनाज़ा न पढ़ो। और इसमें सफ़ेक हैं और इमाम होता है।

(राजेअ : 875)

الْمُسْتَب: يُكْبَرُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالسَّفَرِ وَالْحَضَرِ أَرْبَعًا. وَقَالَ أَنَسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: تَكْبِيرَةُ الْوَاحِدَةِ اسْتِفْتَاحُ الصَّلَاةِ. وَقَالَ: هُوَ لَا تُصَلِّي عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا. وَلَيْسَ صُفُوفٌ وَإِمَامٌ. [راجع:]

[१०५]

तशरीह :

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो नमाज़े जनाज़ा को सिर्फ़ दुआ की हद तक मानते हैं और उसे बे वुजू पढ़ना भी जाइज़ कहते हैं। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी खुदादाद बसोरात की बिना पर ऐसे ही लोगों का यहाँ रह फ़र्माया है और बतलाया है कि जनाजे की नमाज़, नमाज़ है इसे सिर्फ़ दुआ कहना ग़लत है। कुआन मजीद में, फ़रामीने दरबारे रिसालत में, अक्वाले सहाबा, ताबेईन और तबअ ताबेईन में उसे लफ़्ज़े नमाज़ ही से ता'बीर किया गया है। उसके लिये बावजू होना शर्त है।

क़स्तालानी (रह.) कहते हैं कि इमाम मालिक और औज़ाई और अहमद और इस्हाक़ के नज़दीक औकाते मकरूहा में नमाज़े जनाज़ा जाइज़ नहीं। लेकिन इमाम शाफ़िई (रह.) के नज़दीक जनाज़ा की नमाज़ औकाते मकरूहा में भी जाइज़ है।

इस नमाज़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) हर तक्बीर के साथ रफ़ड़लयदैन करते थे। इस रिवायत को हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने किताब रफ़ड़लयदैन में निकाला है। उसमें और नमाज़ों की तरह तक्बीरे तहरीमा भी होती है और उसके अलावा चार तक्बीरों से नमाज़ मसनून है। इसकी इमामत के लिये भी वही शख्स ज़्यादा हक़दार है जो पंजवक्ता नमाज़ पढ़ाने के लायक हो। अल ग़र्ज़ नमाज़े जनाज़ा, नमाज़ है। ये महज़ दुआ नहीं है जो लोग ऐसा कहते हैं उनका क़ौल सही नहीं है।

तक्बीराते जनाज़ा मे हर तक्बीर पर रफ़ड़लयदैन करना; इस बारे में इमाम शाफ़िई (रह.) ने हज़रत अनस (रज़ि.) से भी यही रिवायत किया है कि वो तक्बीराते जनाज़ा में अपने हाथ उठाया करते थे। इमाम नववी (रह.) फ़र्माते हैं, वख़्तलफू फ़ी रफ़ड़लयदई फ़ी हाज़िहत तक्बीराति मज़हबुश़ाफ़िइ व उमरबिन अब्दिलअज़ीज़ व अता व सालिम बिन अब्दुल्लाह व कैस इब्नि अबी हाज़िम व ज़ुहरी वलऔज़ाई व अहमद व इस्हाक़ वख़्तारहुब्नुलमुन्ज़िर व कालज़ौरी व अबू हनीफ़ा व अस्हाबुराय ला युफ़द इल्ला फ़िक्तक्बीरिलकुला (मुस्लिम मअ नववी मत्बूआ कराची, जिल्द नं. 1) या'नी तक्बीराते जनाज़ा में हर तक्बीर पर रफ़ड़लयदैन करते में इलमा ने इख़ितलाफ़ किया है। इमाम शाफ़िई (रह.) का मज़हब ये है कि हर तक्बीर पर रफ़ड़लयदैन किया जाए। उसको अब्दुल्लाह बिन उमर और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) और अता और सालिम बिन अब्दुल्लाह और कैस इब्ने अबी हाज़िम और जुहरी और औज़ाई और अहमद और इस्हाक़ से नक़ल किया है और इब्ने मुन्ज़िर के नज़दीक मुख़्तार मज़हब यही है और इमाम शौरी और इमाम अबू हनीफ़ा और अस्हाबुराय का क़ौल ये है कि सिर्फ़ तक्बीरे कुला में हाथ उठाए जाएँ हर तक्बीर पर रफ़ड़लयदैन के बारे में कोई सहीह हदीसे मफूअ मौजूद नहीं है। वल्लाहु अअलम।

1322. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने, उनसे शैबानी ने और उनसे शुअबी ने बयान किया कि मुझे उस सहाबी ने ख़बर दी थी जो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक अलग-थलग क़ब्र पर से गुज़रे। वो कहते थे कि

۱۳۲۲- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الشَّيْبَانِيِّ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ مَرَّ مَعَ نَبِيِّكُمْ ﷺ عَلَى

आप (ﷺ) ने हमारी इमामत की और हमने आपके पीछे सफ़ बना लीं। हमने पूछा कि अबू अम्र (ये शुअबी की कुत्रियत है) ये आपसे बयान करने वाले कौन सहाबी हैं? फ़र्माया कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.)

قَبْرِ مَبْرُودٍ فَأَنَا فَمَنْفَتًا خَلَفَهُ. فَقُلْنَا: يَا أَبَا عَمْرٍو مَنْ حَدَّثَكَ؟ قَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا).

तशरीह: इस बाब का मक़सद ये है कि नमाज़े जनाज़ा भी नमाज़ है और तमाम नमाज़ों की तरह उसमें वही चीज़ें ज़रूरी हैं जो नमाज़ों के लिये होनी चाहिये। इस मक़सद के लिये हदीष और अक्वाले सहाबा और ताबईन के बहुत से टुकड़े ऐसे बयान किये गये हैं जिनमें नमाज़े जनाज़ा के लिये 'नमाज़' का लफ़ज़ प्राबित हुआ और हदीषे वारिदा में भी उस पर नमाज़ ही का लफ़ज़ बोला गया जबकि आँहज़रत (ﷺ) इमाम हुए और आप (ﷺ) के पीछे सहाबा (रज़ि.) ने सफ़ बाँधी। इस हदीष से ये भी प्राबित हुआ कि अगर कोई मुसलमान जिस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़नी ज़रूरी थी और उसको बगैर नमाज़ पढ़ाए दफ़न कर दिया गया तो उसकी क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जा सकती है।

बाब 57 : जनाजे के साथ जाने की फ़ज़ीलत

और ज़ैद बिन प्राबित (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नमाज़ पढ़कर तुमने अपना हक़ अदा कर दिया। हुमैद बिन हिलाल (ताबेई) ने फ़र्माया कि हम नमाज़ पढ़ कर इजाज़त लेना ज़रूरी नहीं समझते। जो शख्स भी नमाज़े-जनाज़ा पढ़े और फिर वापस आए तो उसे एक क़ीरात का प्रवाब मिलता है।

(राजेअ : 875)

٥٧- بَابُ فَضْلِ اتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ وَقَالَ زَيْدُ بْنُ قَابْتٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِذَا صَلَّيْتَ فَصَلِّتَ الَّذِي عَلَيْكَ وَقَالَ حُمَيْدُ بْنُ هِلَالٍ: مَا عَلِمْنَا عَلَى الْجَنَازَةِ إِذْنَا، وَلَكِنْ مَنْ صَلَّى ثُمَّ رَجَعَ فَلَهُ قِيرَاطٌ.

[راجع : ٨٥٧]

तशरीह: हाफ़िज़ ने कहा कि ये अमर मुझको मौसूलन नहीं मिला। और इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज उन लोगों का रह करना है जो कहते हैं कि अगर कोई सिर्फ़ नमाज़े जनाज़ा पढ़कर घर को लौट जाना चाहे तो जनाजे के वारिषों से इजाज़त लेकर जाना चाहिये और इस बारे में एक मफूअन हदीष वारिद है जो ज़ईफ़ है (वहीदी)

1323. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उनसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, कहा कि मैंने नाफ़ेअ से सुना, आप ने बयान किया कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जो दफ़न तक जनाजे के साथ रहे उसे एक क़ीरात का प्रवाब मिलेगा। इब्ने उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अबू हुरैरह अहादीस बहुत ज़्यादा बयान करते हैं।

(राजेअ : 48)

١٣٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ نَافِعًا يَقُولُ: حَدَّثَ ابْنُ عُمَرَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ يَقُولُ: (مَنْ تَبَعَ جَنَازَةَ فَلَهُ قِيرَاطٌ، فَقَالَ: أَكْثَرَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَلَيْنَا).

[راجع : ٤٧]

1324. फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) की हज़रत आइशा (रज़ि.) ने भी तस्दीक की और फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये इशार्द खुद सुना है। इस पर इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि फिर तो हमने बहुत से क़ीरातों का नुक्सान उठाया। (सूरह जुमर में जो लफ़ज़) फ़रतत आया है उसके यही मा'नी है, मैंने ज़ाए किया।

١٣٢٤- فَصَدَّقْتُ - يَعْنِي عَائِشَةُ - أَبَا هُرَيْرَةَ وَقَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: لَقَدْ قَرَأْنَا فِي قُرْآنِكَ كَثِيرًا

فَرُطْتُ: ضَبَعْتُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ.

तरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की आदत है कि कुर्आन की आयतों में जो लफ़्ज़ वारिद हुए हैं अगर हदीष में कोई वही लफ़्ज़ आ जाता है तो आप उसके साथ-साथ कुर्आन के लफ़्ज़ की भी तफ़्सीर कर देते हैं। यहाँ अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के कलाम में फ़रचु का लफ़्ज़ आया और कुर्आन में भी फ़रचु फ़ी जम्बिल्त्नाह (अज़्ज़ुमर, 56) आया है तो उसकी भी तफ़्सीर कर दी या 'नी मैंने अल्लाह का हुक्म, कुछ ज़ाया (नष्ट) किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की निम्बत कहा, उन्होंने बहुत हदीषें बयान कीं। उससे ये मतलब नहीं था कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) झूठे हैं बल्कि उनको ये शुब्हा रहा कि शायद अबू हुरैरह (रज़ि.) भूल गए हों या हदीष का मतलब और कुछ हो वो न समझे हों। जब हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने भी उनकी शहादत दी तो उनको पूरा यक़ीन आया और उन्होंने अफ़सोस से कहा कि हमारे बहुत से क़ीरात का ष्वाब मिलेगा। क़ीरात एक बड़ा वज़न उहुद पहाड़ के समान मुराद है और जो शख़्स दफ़न होने तक साथ रहे उसे दो क़ीरात बराबर ष्वाब मिलेगा।

बाब 58 : जो शख़्स दफ़न होने तक ठहरा रहे

1325. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने जिब के सामने ये हदीष पढ़ी, उनसे अबू सईद मल्लबरी ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से पूछा तो आप ने फ़र्माया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना था। (दूसरी सनद) हमसे अहमद बिन शबीब ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया कि इब्ने शिहाब ने कहा कि (मुझे फलों ने ये भी हदीष बयान की) (राजेअ : 48)

और मुझसे अब्दुर्रहमान अअरज ने भी कहा कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने जनाजे में शिर्कत की फिर नमाजे-जनाज़ा पढ़ी तो उसे एक क़ीरात का ष्वाब मिलता है, जो दफ़न तक साथ रहा तो उसे दो क़ीरात का ष्वाब मिलता है। पूछा गया कि दो क़ीरात कितने होंगे? फ़र्माया कि दो अज़ीम पहाड़ों के बराबर।

या 'नी दुनिया का क़ीरात मत समझो जो दिरहम का बारहवाँ हिस्सा होता है। दूसरी रिवायत में है कि आख़िरत के क़ीरात उहुद पहाड़ के बराबर हैं।

बाब 59 : बड़ों के साथ बच्चों का भी नमाजे जनाज़ा में शरीक होना

۵۸- بَابُ مَنْ انتَظَرَ حَتَّى تُدْفَنَ

۱۳۲۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ

قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى ابْنِ أَبِي ذُنَيْبٍ عَنْ سَعِيدِ

بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمُقْبَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَأَلَ

أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: سَمِعْتُ

النَّبِيَّ ﷺ. وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ شَيْبَةَ

سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ

قَالَ ابْنُ شِهَابٍ ح. [راجع: ۴۷]

وَحَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجُ أَنَّ أَبَا

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ

اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ شَهِدَ الْجَنَازَةَ حَتَّى يُصَلِّيَ

لَهُ قِيرَاطٌ، وَمَنْ شَهِدَهَا حَتَّى تُدْفَنَ كَانَ

لَهُ قِيرَاطَانِ)). قِيلَ: وَمَا الْقِيرَاطَانِ؟ قَالَ:

مِثْلُ الْجَبَلَيْنِ الْعَظِيمَيْنِ.

۵۹- بَابُ صَلَاةِ الصِّبْيَانِ مَعَ النَّاسِ عَلَى الْجَنَائِزِ

1326. हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन अबी बुकैर ने, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ाएद ने बयान किया, उन्होंने उनसे अबू इस्हाक़ शैबानी ने, उनसे आमिर ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक क़ब्र पर तशरीफ़ लाए, सहाबा ने अज़्र किया कि इस मय्यित को गुज़िश्ता रात में दफ़न किया गया है। (साहिबे क़ब्र मर्द था या औरत थी) इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि फिर हमने आपके पीछे सफ़बन्दी की और आप (ﷺ) ने नमाज़े-जनाज़ा पढ़ाई। (राजेअ: 875)

बाब और हदीष की मुताबकत ज़ाहिर है। क्यूँकर इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस वाकिआ के वक़्त बच्चे ही थे। मगर आप (ﷺ) के साथ बराबर सफ़ में शरीक हुए।

बाब 60 : नमाज़े-जनाज़ा ईदगाह में और मस्जिद में (दोनों जगह जाइज़ है)

1327. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा ने बयान किया और उनसे दोनों हज़रात से अबू हुरैरह (रज़ि.) ने रिवायत किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हब्शा के नज्जाशी की वफ़ात की ख़बर दी, उसी दिन जिस दिन उनका इन्तिक़ाल हुआ था। आपने फ़र्माया कि अपने भाई के लिये अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहो।

(राजेअ: 1240)

1328. और इब्ने शिहाब से यूँ भी रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदगाह में सफ़बन्दी करवाई फिर (नमाज़े-जनाज़ा की) चार तक्बीरें कहीं।

(राजेअ: 1240)

तशरीह: इमाम नववी फ़र्माते हैं, क़ाल इब्नु अब्दिलबर व इन्अकदलइज्माज़ बअद ज़ालिक अला अर्बइन व अज्म अल्फु क़हा व अहलुल्फ़त्वा बिल्अम्सारि अला अर्बइन अला मा जाअ फ़ी अहादीषिस्सिहाहि व मा सिवा ज़ालिक इन्धुम शुज़ूजुन ला युल्तफतु इलैहि (नववी) या'नी इब्ने अब्दुल बर ने

۱۳۲۶- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الشَّيْبَانِيُّ عَنْ عَامِرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَتَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَبْرًا فَقَالُوا: هَذَا ذَيْنَ - أَوْ ذُنْتِ الْبَارِحَةِ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: فَصَفَقْنَا خَلْفَهُ، ثُمَّ صَلَّيْنَا عَلَيْهِ)). [راجع: ۸۵۷]

۶۰- بَابُ الصَّلَاةِ عَلَى الْجَنَائِزِ بِالْمُصَلِّيِّ وَالْمَسْجِدِ

۱۳۲۷- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((نَعَى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ النَّجَاشِيَّ صَاحِبَ الْحَبَشَةِ يَوْمَ الَّذِي مَاتَ فِيهِ فَقَالَ: ((اسْتَغْفِرُوا لِأَخِيكُم)).

[راجع: ۱۲۴۰]

۱۳۲۸- وَعَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَفَقَ بِهِمْ بِالْمُصَلِّيِّ، فَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعًا)).

[راجع: ۱۲۴۰]

कहा कि तमाम फुकूहा और अहले फत्वा का चार तक्बीरों पर इज्माअ हो चुका है जैसा कि अहादीसे सहीहा में आया है और जो उसके खिलाफ है वो नवादिर में दाखिल है जिसकी तरफ तवज्जह नहीं किया जा सकता।

शेखुल हदीष मौलाना अब्दुल्लाह मुबारकपुरी (रह.) फ़मते हैं, वर्राजिह इन्दी अन्नहू ला यम्बगी अय्युज़ाद अला अबईन लिअन्न फ़ीहि खुरूज्मिनलिखलाफ़ि व लि अन्न ज़ालिक हुबल्गालिब मिन फ़िअलिही लाकिन्नल्इमाम इज़ा कब्बर खम्सन ताबअहूलमामूम लिअन्न शुबूतल्खम्सि ला मरह लहू मिन हैषिरिवायतिल्अमल (मिअत, जिल्द 2, पेज 477)

या'नी मेरे नज़दीक राजेह यही है कि चार तक्बीरों से ज्यादा न हों। इख़्तिलाफ़ से बचने के लिये यही रास्ता है नबी करीम (ﷺ) के फ़ैअल से अक़्बर यही प्राबित है। लेकिन अगर इमाम पाँच तक्बीरें कहें तो मुक्तदियों को उसकी पैरवी करनी चाहिये। इसलिये कि ये रिवायत और अमल के लिहाज़ से पाँच का भी शुबूत मौजूद है जिससे इन्कार की गुंजाइश नहीं है।

1329. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िद ने बयान किया, उनसे अबू ज़म्रह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मूसा बिन इज़्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि यहूद नबी करीम (ﷺ) के हुज़ूर में अपने हम मज़हब एक मर्द और औरत का जिन्होंने जिना किया था, मुक़द्दमा लेकर आए। आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से मस्जिद के नज़दीक नमाज़े-जनाज़ा पढ़ने की जगह के पास उन्हें संगसार कर दिया गया।

۱۳۲۹ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ الْيَهُودَ جَاءُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِرَجُلٍ مِنْهُمْ وَامْرَأَةٍ زَنِيَا، فَأَمَرَ بِهِمَا فَرُجِمَا قُرْبًا مِنْ مَوْضِعِ الْجَنَائِزِ عِنْدَ الْمَسْجِدِ)).

(दीगर मक़ाम: 3635, 4556, 6819, 6841, 7332, 7543)

أطرافه ن: ۳۱۳۵، ۴۵۵۶، ۶۸۱۹

[۷۵۴۳، ۷۳۳۲، ۶۸۴۱]

तशरीह: जनाजे की नमाज़ मस्जिद में बिला कराहत जाइज व दुरुस्त है। जैसा कि नीचे लिखी हदीष से ज़ाहिर है अन आइशत अन्नहा क़ालत लम्मा तुवफ़िफ़य सअदुब्नुअबी वक्कास अदख़िलू बिहिल्मस्जिद हत्ता उसल्लिय अलैहि फ़अन्करू ज़ालिक अलैहा फ़क़ालत वल्लाहि लक़द सल्ला रसूलुल्लाहि (ﷺ) अला इब्ना बैज़ा फिल्मस्जिदि सुहैल व अखीहि रवाहु मुस्लिम व फ़ी रिवायतिन मा सल्ला रसूलुल्लाहि (ﷺ) अला सुहैलिब्नि बैज़ा इल्ला फ़ी जौफिल्मस्जिदि रवाहुल्जमाअतु इल्लल्बुख़ारी.

या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि सअद बिन अबी वक्कास के जनाज़ा पर उन्होंने फ़र्माया कि उसे मस्जिद में दाख़िल करो यहाँ तक कि मैं भी उस पर नमाज़े जनाज़ा अदा करूँ। लोगों ने उस पर कुछ इन्कार किया तो आपने फ़र्माया कि क़सम अल्लाह की! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बैज़ा के दोनों बेटों सुहैल और उसके भाई पर नमाज़े जनाज़ा मस्जिद ही में अदा की थी।

और एक रिवायत में है कि सुहैल बिन बैज़ा की नमाज़े जनाज़ा आँहज़रत (ﷺ) ने मस्जिद के बीचों-बीच पढ़ाई थी। इससे मा'लूम हुआ कि नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में पढ़ी जा सकती है।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और हज़रत उमर (रज़ि.) दोनों का जनाज़ा मस्जिद ही में अदा किया गया था।

अल्लामा शौकानी (रह.) फ़मते हैं, वल्हदीषु थदुल्लु अला जवाज़ि इदख़ालिल्मय्यति फिल्मस्जिदि वस्सलातु अलैहि फ़ीहि व बिही क़ालशशाफ़िइ व अहमद व इस्हाक़ वल्जुम्हूर या'नी ये हदीष दलालत करती है

कि मय्यत को मस्जिद में दाखिल करना और वहाँ उसका जनाजा पढ़ना सही है। इमाम शाफ़िई और अहमद और इस्हाक और जुम्हूर का भी यही क़ौल है। जो लोग मय्यत के नापाक होने का ख़याल रखते हैं उनके नज़दीक मस्जिद में न मय्यत का लाना दुरुस्त है और न वहाँ नमाजे जनाजा जाइज। मगर ये ख़याल बिल्कुल ग़लत है। मुसलमान मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं हुआ करता। जैसा कि हदीष में साफ़ मौजूद है, इन्नल मूमिन ला युन्जिसु हय्यन व ला मय्यितन बेशक मोमिन मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं होता या'नी नजासते हकीकी से वो दूर होता है।

बनू बैज़ा तीन भाई थे। सहल व सुहेल और सफ़वान उनकी वालिदा को बतौर वस्फ़ बैज़ा कहा गया। उसका नाम दअद था और उनके वालिद का नाम वहब बिन रबीआ कुरेशी फ़हरी था।

इस बह्वक्ष के आखिर में हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब (रह.) फ़र्माते हैं, वहब व कु अन्नहू यजुजुस्सलातु अललजनाइज़ि फिल्मस्जिदि मिन गैर कराहतिन वलअफ़ज़लु अम्सलातु अलैहा ख़ारिजल्मस्जिदि लिअन्न अक्षर सलवातिही (ﷺ) अललजनाइज़ि कान फिल्मुसल्ला (मिआत) या'नी हक़ यही है कि मस्जिद में नमाजे जनाजा बिला कराहत दुरुस्त है और अफ़ज़ल ये है कि मस्जिद से बाहर पढ़ी जाए क्योंकि अक़षर नबी करीम (ﷺ) ने इसको इन्काह में पढ़ा है।

इस हदीष से ये भी प्राबित होता है कि इस्लामी अदालत में अगर कोई ग़ैर—मुस्लिम का कोई मुकद्दमा दायर हो तो फ़ैसला बहरहाल इस्लामी क़ानून के तहत किया जाएगा। आप (ﷺ) ने उन यहूदी ज़ानियों के लिये संगसारी का हुक्म इसलिये भी सादिर फ़र्माया कि खुद तौरात में भी यही हुक्म था जिसे इलम-ए-यहूद ने बदल दिया था। आप (ﷺ) ने गोया उन ही की शरीअत के मुताबिक़ फ़ैसला फ़र्माया। (ﷺ)

बाब 61 : क़ब्रों पर मस्जिद बनाना

मकरूह है

और जब हसन बिन हसन बिन अली (रज़ि.) गुज़र गये तो उनकी बीवी (फ़ातिमा बन्ते हुसैन) ने एक साल तक क़ब्र पर ख़ैमा लगाए रखा। आख़िर ख़ैमा उठाया गया तो लोगों ने एक आवाज़ सुनी, क्या लोगों ने जिनको खोया था, उनको पा लिया? दूसरे ने जवाब दिया नहीं बल्कि नाउम्मीद होकर लौट गये।

तशरीह: ये हसन, हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) के बेटे और बड़े शिक़ात ताबेईन में से थे। उनकी बीवी फ़ातिमा हज़रत हुसैन (रज़ि.) की बेटी थीं और उनके एक लड़का था उनका नाम-नामी भी हसन था। गोया तीन पुश्त तक यही मुबारक नाम रखा गया। उनकी बीवी ने अपने दिल को तसल्ली देने और गुम ग़लत करने के लिये साल भर तक अपने महबूब शौहर की क़ब्र के पास डेरा रखा। इस पर उनको हातिफ़े ग़ैब से मलामत हुई और वो वापस हो गई।

1330. हमसे अब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे शैबान ने, उनसे हिलाल वज़ज़ान ने, उनसे उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़े-वफ़ात में फ़र्माया कि यहूद और नज़ारा पर अल्लाह की लअनत हो कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ऐसा डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहती (और हुजे में न होती) क्योंकि मुझ

٦١- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّحَادِثِ

الْمَسَاجِدِ عَلَى الْقُبُورِ

وَكَمَا مَاتَ الْحَسَنُ بْنُ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ ضَرَبَتْ امْرَأَتُهُ الْقَبْرَةَ عَلَى قَبْرِهِ مَنَةً، ثُمَّ رَفَعَتْ، فَسَمِعُوا صَاحًا يَقُولُ: أَلَا هَلْ وَجَدُوا مَا لَقَدُوا؟ فَاجَابَهُ آخَرٌ: بَلْ يُسَوُّوْا فَاثْقَلُوا.

١٣٣٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ شَيْبَانَ عَنْ هِلَالٍ هُوَ الْوَزَائِنْ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لِي مَرَضُهُ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: ((لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ

डर इसका है कि कहीं आपकी कब्र भी मस्जिद न बनाली जाए।

(राजेअ: 430)

مَسْجِدًا)). قَالَتْ : وَلَوْ لَا ذَلِكَ لَأَنْزَرُوا

قَبْرَهُ، غَيْرَ أَنِّي أَخَشَى أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا.

[راجع: 430]

तशरीह: या'नी खुद कब्रों को पूजने लगे या कब्रों पर मस्जिद और गिर्जाघर बनाकर वहाँ अल्लाह की इबादत करने लगे तो बाब की मुताबकत हासिल हो गई। इमाम इब्ने कय्यिम ने कहा कि जो लोग कब्रों पर वक्त मुअय्यन (निर्धारित) करके जमा होते हैं वो भी गोया कब्र को मस्जिद बनाते हैं। दूसरी हदीष में है मेरी कब्र को ईद न कर लेना या'नी ईद की तरह वहाँ मेले और मजमा न करना। जो लोग ऐसा करते हैं वो भी उन यहूदियों और नसरानियों की तरह हैं जिन पर आँहजरत (ﷺ) ने लअनत की।

अफ़सोस! हमारे जमाने में कब्रपरस्ती ऐसी शाए हो रही है कि ये नाम के मुसलमान अल्लाह और रसूल से ज़रा भी नहीं शर्माते, कब्रों को इस क़दर पुख़्ता शानदार बनाते हैं कि उनकी इमारत को देखकर मसाजिद का शुब्हा होता है। हालाँकि आँहजरत (ﷺ) ने सख़्ती के साथ कब्रों पर ऐसी ता'मीरात के लिये मना किया है। हज़रत अली (रज़ि.) ने अबू हियाज अस्दी को कहा था अब्बअषुक अला मा बअप्नी अलैहि रसूलुल्लाहि (ﷺ) ला तदउतिम्बालन इल्ला तमस्तहू बला कबरन मुशरफन इल्ला सबैतहू रवाहुल्जमाअतु इल्लबुखारी वब्नु माजा या'नी क्या मैं तुमको उस ख़िदमत के लिये न भेजूँ जिसके लिये मुझे आँहजरत (ﷺ) ने भेजा था। वो ये कि कोई मूरत ऐसी न छोड़ जिसे तू मिटा न दे और कोई ऊँची कब्र न रहे जिसे तू बराबर न कर दे।

इस हदीष से मा'लूम होता है कब्रों का हद से ज़्यादा ऊँचा करना भी शारेअ (ﷺ) को नापसंद है। अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, फ़ौहि अन्नस्मुन्नत इन्नल्कबर ला युफ़उ रफ़अन क़बीरा मिन गैरि फ़किन बैन कान फ़ाज़िलन व मन कान गैर फ़ाज़िलन वज़ज़ाहिरु अन्न रफ़अल्कुबूर ज़ियादतुन अलल्कद्रिल्माज़ूबि हुरामुन या'नी सुन्नत यही है कि कब्र को हद से ज़्यादा बुलन्द न बनाया जाए ख़्वाह वो किसी फ़ाज़िल, आलिम या सूफ़ी की हो या किसी गैर फ़ाज़िल की और ज़ाहिर है कि शरई इजाज़त से ज़्यादा कब्रों को ऊँचा करना हुराम है। आगे अल्लामा फ़र्माते हैं, व मिन रफ़अल्कुबूर अद्वाख़िलु तहतलहदीषि दुखूलन औलियाउ अल्कुब्बु बल्मशाहिदुल्मअमूरतु अलल्कुबूर व अयज़न हुब मिन इत्तिज़ाज़िल्कुबूर मसाजिदु व कद लअनन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ाइल ज़ालिक कमा सयाती व कम क़द सराअन तशईदि अब्नियतिल्कुबूर व तहसीनिहा मिम्मफ़ासिदिन यब्की लहल्इस्लामु मिन्हा इतिकादुल्जहलति लहा कइतिकादिल्कुफ़फ़ारि लिल्अस्नामि व अजुम ज़ालिक फ़जन्नू अन्नहा क़ादिरतुन अला जलबिल्मनाफ़िइ व दफ़इज़ज़ररि फ़जअलूहा मक्सदतलबि कज़ाअल्हवाइजि व मल्जअलिनजाहिल्मतालिबि व सालू मिन्हा मा यस्अलुहूल्इबादु मिन रब्बिहिम व शहू इलयहरिहाल व तम्महू बिहा वस्तगाषू व बिल्जुम्नति अन्नहुम लम यदक़ शयअम्मिम्मा कानतिल्ज़ाहिलिय्यतु तफ़अलुहू बिल्अस्नामि इल्ला फ़अलुहू फ़इन्नालिह व इन्ना इलैहि राजिऊन व मअ हाज़ल्मुन्करिश़ानीइ वल्कुफ़िल्फ़जीइ ला नजिदु मय्यगज़बु लिह व युग़ारु हमिय्यल लिदीनिल्हनीफ़ि ला आलिमन व ला मुतअल्लिमन व ला अमीरन व ला वज़ीरन व ला मलिकन तुवारिदु इलैना मिनल्अख़बारि मा ला यशुकु मअहू अन्न क़बीरमिन हाउलाइल्मकबूरीन औ अक्बुरुहुम इज़ा तवज्जहत अलैहि यमीनुन मिन जिहति खम्मिही हलफ़ बिल््लाहि फ़ाज़िरन व इज़ा कील लहू बअद ज़ालिक इलहफ़ बिशैख़िफ़ व मुतकदिकल्वलियल्फुल्लानी तल्अषिमु व तल्कउ व अ बा वअतरफ़ बिल्हक्कि व हाज़ा मिन अब्निल्अदिल्लतिद्वाल्लति अला अन्न शिर्कहुम क़द बलग़ा फ़ौक शिर्किम्मन क़ाल अन्नहू तआला घानियज़नैनि औ घालिषु षलाषतिन फ़ या उलमाअदीनि व या मुल्कुल्मुस्लिमीन अय्यु रजदूनलिइस्लामि अशहू मिनल्कुफ़ि व अय्यु बलाइन लिहाज़दीनि अज़रू अलैहि मिन इबादिही गैरल्लाहि व अय्यु मुमीबतिन युम्माबु बिहल्मुस्लिमून तअदिलु हाज़िहिल्मुमीबत व अय्यु मुन्करिन इन्कारहू इन लम यकुन इन्कार हाज़िशिर्किल्बय्यिन वाजिबन

लक़द अस्मअत लौ नादैत हय्यन

व लौ नारन नफ़ख़त बिहा अजाअत

व ला किन ला हयात लिमन तुनादी

व ला किन अन्त तन्फ़ख़ु फ़िरिमादि

(नैलुल औतार, जिल्द नं. 4, पेज नं. 90)

या 'नी बुजुर्गों की क़ब्र पर बनाई हुई इमारत, कुम्बे और ज़ियारतगाहें ये सब इस हदीष के तहत दाखिल होने की वजह से क़त्अन नाजाइज़ है। यही क़ब्रों को मसाजिद बनाना है जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने लअनत की और उन कुबूर के पुख्ता बनाने और उन पर इमारत को मुजय्यन (सुसज्जित) करने से इस क़दर मफ़ासिद पैदा हो रहे हैं कि आज उन पर इस्लाम रो रहा है। उनमें से मज़लन ये कि ऐसे मज़ारों के बारे में जाहिल लोग वही ए' तिकादात रखते हैं जो कुफ़्फ़ार बुतों के बारे में रखते हैं बल्कि उनसे भी बढ़कर। ऐसे जाहिल उन कुबूर वालों को नफ़ा देने वाले और नुक़सान पहुँचाने वाले तस्व्वुर करते हैं। इसलिये उनसे हाज़तें त़लब करते हैं। अपनी मुरादें उनके सामने रखते हैं और उनसे ऐसे ही दुआएँ करते हैं जैसे अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से दुआएँ करनी चाहिये। उन मज़ारों की तरफ़ कजावे बाँध-बाँधकर सफ़र करते हैं और वहाँ जाकर उन क़ब्रों को मसह करते हैं और उनसे फ़रियादरसी चाहते हैं। मुख़्तसर ये कि ज़ाहिलियत में जो कुछ बुतों के साथ किया जाता था वो सब कुछ इन क़ब्रों के साथ हो रहा है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़ेऊन

और उस खुले हुए बदतरीन कुफ़्र होने के बावजूद हम किसी भी अल्लाह के बन्दे को नहीं पाते जो अल्लाह के लिये इस पर गुस्सा करे और दीने हनीफ़ की कुछ ग़ैरत उसको आए। आलिम हो या मुतअल्लिम, अमीर हो या ग़रीब या बादशाह, इस बारे में सब ख़ामोशी इख़्तियार किये हुए हैं। यहाँ तक कि सुना गया है कि ये क़ब्र-परस्त दुश्मन के सामने अल्लाह की झूठी क़सम खा जाता है। मगर अपने पैरोकार की झूठी क़समों के वक़्त उनकी जुबान लड़खड़ाते लग जाती हैं। इससे ज़ाहिर है कि उनका शिर्क उन लोगों से भी ज़्यादा बढ़ा हुआ है जो दो ख़ुदा या तीन ख़ुदा को मानते हैं। पस ऐ दीन के आलिमों! और मुसलमानों के बादशाहों! इस्लाम के लिये ऐसे कुफ़्र से बढ़कर और मुसीबत क्या होगी और ग़ैरुल्लाह की परस्तिश से बढ़कर दीने इस्लाम के लिये और नुक़सान की चीज़ क्या होगी और मुसलमान उससे भी बढ़कर और किस मुसीबत का शिकार होंगे और अगर इस खुले हुए शिर्क के खिलाफ़ ही आवाज़े इंकार बुलन्द न की जा सकी तो और कौनसा गुनाह होगा जिसके लिये जुबानें खुल सकेंगी? किसी शाइर ने सच कहा है,

'अगर तू ज़िन्दों को पुकारता तो सुना सकता था। मगर जिन (मुर्दों) को तू पुकार रहा है वो तो ज़िन्दगी से क़त्अन महरूम हैं। अगर तुम आग में फूँक मारते तो वो रोशन होती लेकिन तुम राख में फूँक मार रहे हो जो कभी भी रोशन नहीं हो सकती।'

ख़ुलासा ये कि ऐसी कुबूर और ऐसे मज़ारों और उन पर ये इर्स, क़व्वालियाँ, मेले-ठेले, गाने बजाने क़त्अन हुराम और शिर्क और कुफ़्र हैं। अल्लाह हर मुसलमान को शिर्क ज़ली और ख़फ़ी से बचाए। आमीन

हदीषे अली (रज़ि.) के ज़ेल में हज़तुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मरहूम फ़र्माते हैं, व नहा अंध्युखस्मिसलक़र व अंध्यब्निय अलैहि व अंध्यक़ुद अलैहि व क़ाल ला तुसल्लू इलैहा लिअत्र ज़ालिक ज़रीअतुन अंध्यत्तख़िज़हन्नासु मअबूदन व अंध्यफ़रतू फी तअज़ीमिहा बिमा लैस बिहक्किन फयुहरिफ़ु दीनहुम कमा फअल अहलुल्लिकताबि व हुब क़ौलुहू (ﷺ) लअनल्यहूद वन्नसारा इत्तख़जू कुबूर अम्बियाइहिम मसाजिद (हज़तुल्लाहिलबालिगा, जिल्द 02, पेज 126 करातिशी)

और क़ब्र को पुख्ता करने और इस पर इमारत बनाने और उस पर बैठने से मना किया और ये भी फ़र्माया कि क़ब्रों की तरफ़ नमाज़ न पढ़ो क्योंकि ये इस बात का ज़रिया है कि लोग क़ब्रों की परस्तिश करने लगे और लोग उन क़ब्रों की इतनी ज़्यादा ता'ज़ीम करने लगे कि जिसकी मुस्तहिक़ नहीं हैं। पस लोग अपने दीन में तहरीफ़ कर डालें जैसा कि अहले किताब ने किया। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया यहूद और नसारा पर अल्लाह की लअनत हो। उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज़दागाह बना लिया। पस हक़ ये है कि तवस्सुत इख़्तियार करे। न तो मुर्दा की इस क़दर ता'ज़ीम करे कि वो शिर्क हो जाए और न उसकी अहानत और उसके साथ अ़दावत करे कि मरने के बाद अब ये सारे मुआमलात ख़त्म करके; मरने वाला अल्लाह के हवाले हो चुका है।

बाब 62 : अगर किसी औरत का निफ़ास की हालत में इन्तिक़ाल हो जाए तो उस पर नमाज़े-

जनाज़ा पढ़ना

1331. हमसे मुसद्दन ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़रीअ ने, उनसे हुसैन मुअल्लम ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उनसे समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की इन्तिक़ाल में एक औरत (उम्मे कअब) की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी जिसका निफ़ास में इन्तिक़ाल हो गया था। रसूलुल्लाह (ﷺ) उसकी कमर के मुकाबले खड़े हुए।

(राजेअ: 332)

बाब 63. : इस बारे में कि औरत और मर्द की नमाज़े जनाज़ा में कहाँ खड़ा हुआ जाए?

1332. हमसे इमरान बिन मसैरा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे हुसैन ने बयान किया और उनसे इब्ने बुरैदा ने कि हमसे समुरह बिन जुन्दुब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के पीछे एक औरत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी, जिसका जचगी की हालत में इन्तिक़ाल हो गया था। आप उसके बीच में खड़े हुए। (राजेअ: 332)

٦٢- بَابُ الصَّلَاةِ عَلَى النِّفْسَاءِ إِذَا مَاتَتْ فِي نِفْسِيهَا

١٣٣١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا قَالَ بُرَيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ سَمُرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّيْتُ وَرَاءَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى امْرَأَةٍ مَاتَتْ فِي نِفْسِيهَا، فَقَامَ عَلَيْهَا وَسَطَهَا)). [راجع: ٣٣٢]

٦٣- بَابُ أَيْنَ يَقُومُ مِنَ الْمَرَأَةِ وَالرَّجُلِ؟

١٣٣٢- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَسْرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ عَنْ ابْنِ بُرَيْدَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا سَمُرَةُ بْنُ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّيْتُ وَرَاءَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى امْرَأَةٍ مَاتَتْ فِي نِفْسِيهَا، فَقَامَ عَلَيْهَا وَسَطَهَا)). [راجع: ٣٣٢]

तशरीह: मसनून ये है कि इमाम औरत की कमर के मुकाबिल खड़ा हो और मर्द के सर के मुकाबिल। सुनन अबू दाऊद में हज़रत अनस (रज़ि.) से मरवी है कि उन्होंने ऐसा ही किया और बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) भी ऐसा ही करते थे। मगर इमाम बुखारी (रह.) ने ग़ालिबन अबू दाऊद वाली रिवायत को ज़ईफ़ करार दिया और तर्ज़ीह उसको दी कि इमाम मर्द और औरत दोनों की कमर के मुकाबिल खड़ा हो। अगरचे उस हदीस में सिर्फ़ औरत के वस्त्र में खड़ा होने का ज़िक्र है और यही मसनून भी है। मगर हज़रत इमाम (रह.) ने बाब में औरत और मर्द दोनों को एक जैसा करार दिया है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़र्माते हैं, व क़द ज़हब बअज़ु अहलिलइल्म इला हाज़िा अय अन्नलइमाम यकूमु हज़ाअ रासिरजुलि व हज़ाअ अज़ीज़तिल्मअति व हुव क़ौलु अहमद व इस्हाक़ व हुव क़ौलुशशाफ़िई व हुवलहक़क़ व हुव रिवायतु अन हनीफ़त क़ाल फिलहिदाया व अन अबी हनीफ़त अन्नहू यकूमु मिनरजुलि बिहज़ाइ रासिही व मिनल्मअति बिहज़ाइ वस्तिहा लिअन्न अनसन फअल कज़ालिक व क़ाल हुवस्सुन्नतु (तुहफ़तुल अहवज़ी)

या'नी कुछ अहले इल्म इसी तरफ़ गए हैं कि नमाज़ में इमाम मर्द मय्यत के सर के पास खड़ा हो और औरत के बदन के वस्त्र में कमर के पास। अहमद (रह.) और इस्हाक़ (रह.) और इमाम शाफ़िई का यही क़ौल है और यही हक़ है और हिदाया में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) से एक रिवायत ये भी है कि इमाम मर्द मय्यत के सर के पास और औरत के वस्त्र में खड़ा हो इसलिये कि हज़रत अनस (रज़ि.) ने ऐसा ही किया था और फ़र्माया था कि सुन्नत यही है।

बाब 64 : नमाजे जनाजा में चार तक्बीरों कहना

और हुमैद तबील ने बयान किया कि हमें हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नमाज़ पढ़ाई तो तीन तक्बीरों कहीं फिर सलाम फेर दिया। इस पर उन्हें लोगों ने याददिहानी करवाई तो दोबारा क़िबला रुख होकर चौथी तक्बीर भी कही फिर सलाम फेरा।

तशरीह: अक़्बर उलमा जैसे इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) और इस्हाक़ (रह.) और सुफ़यान थौरी (रह.) और अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम मालिक (रह.) का यही क़ौल है और सलफ़ का इसमें इख़्तिलाफ़ है। किसी ने पाँच तक्बीरों कहीं, किसी ने तीन, किसी ने सात। इमाम अहमद (रह.) ने कहा कि चार से कम न हो और सात से ज्यादा न हो। बैहकी ने रिवायत किया कि ओहज़रत (ﷺ) के ज़माने में जनाज़ा पर लोग सात और छः और पाँच और चार तक्बीरों कहा करते थे। हज़रत उमर ने चार पर लोगों का इत्तिफ़ाक़ करा दिया।

1333. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नज्जाशी का जिस दिन इन्तिक़ाल हुआ उसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनकी वफ़ात की ख़बर दी और आप (ﷺ) सहाबा के साथ ईदगाह गये। फिर आप (ﷺ) ने सफ़बन्दी करवाई और चार तक्बीरों कहीं। (राजेअ: 1240)

1334. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुलैम बिन हय्यान ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मैनाअ ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अरुहमा नज्जाशी की नमाजे जनाज़ा पढ़ाई तो चार तक्बीरों कहीं। यज़ीद बिन हारून वास्ती और अब्दुस्समद ने सुलैम से अरुहमा नाम नक़ल किया है और अब्दुल वारिष ने इसकी मुताबअत की है।

(राजेअ: 1317)

नज्जाशी हब्श के हर बादशाह का लक़ब हुआ करता था। जैसा कि मुल्क में बादशाहों के खास लक़ब हुआ करते हैं शाहे हब्श का असल नाम अरुहमा था।

बाब 65 : नमाजे जनाजा में सूरह फ़ातिहा पढ़ना (ज़रूरी है)

और इमाम हसन बज़री (रह.) ने फ़र्माया कि बच्चे की नमाजे जनाज़ा में पहले सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए, फिर ये दुआ पढ़ी जाए

٦٤- بَابُ التَّكْبِيرِ عَلَى الْجَنَازَةِ

أَرْبَعًا وَقَالَ خَمْدَةُ: صَلَّى بِنَا أَسْرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَكَبَّرَ ثَلَاثًا ثُمَّ سَلَّمَ، فَقِيلَ لَهُ: فَاسْتَغْبِلِ الْقِبْلَةَ، ثُمَّ كَبَّرَ الرَّابِعَةَ، ثُمَّ سَلَّمَ.

١٣٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَمَى النَّجَاشِيِّ فِي الْيَوْمِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ، وَخَرَجَ بِهِمْ إِلَى الْمُصَلَّى لَصَفَّ بِهِمْ وَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعَ تَكْبِيرَاتٍ)). [راجع: ١٢٤٥]

١٣٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا سَلِيمُ بْنُ حَبَّانٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنَاءَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى عَلَى أَمْعَمَةَ النَّجَاشِيِّ فَكَبَّرَ أَرْبَعًا)). وَقَالَ يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ وَعَدَّ الصَّمَدِيُّ عَنْ سَلِيمٍ ((أَصَحَّةً)).

[راجع: ١٣١٧]

٦٥- بَابُ قِرَاءَةِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ

عَلَى الْجَنَازَةِ وَقَالَ الْحَسَنُ: يَقْرَأُ عَلَى

अल्लाहुम्मज्जल् लना फ़रतन व सलफ़न व अज़रन; ऐ अल्लाह! इस बच्चे को हमारा अमीरे सामान कर दे और आगे चलने वाला, प्रवाब देने वाला।

الطِّفْلِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَتَقُولُ: اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سَلَفًا وَفَرَطًا وَآخِرًا.

1335. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर (मुहम्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने और उनसे तलहा ने कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) की इक़तिदा में नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ी (दूसरी सनद) हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, कहा कि हमें सुफ़यान श़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें सअद बिन इब्राहीम ने, उन्हें तलहा बिन अब्दुल्लाह बिन औफ़ ने, उन्होंने बतलाया कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो आपने सूरह फ़ातिहा (जरा पुकार कर) पढ़ी। फिर फ़र्माया कि तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि यही तरीक़-ए-नबवी है।

۱۳۳۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ: ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا)) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَوْفٍ: قَالَ ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَلَى جَنَازَةٍ فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ. قَالَ: لَيَعْلَمُوا أَنَهَا سُنَّةٌ)).

तशरीह: जनाजे की नमाज़ में सूरह फ़ातिहा ऐसे ही वाजिब है जैसा कि दूसरी नमाज़ों में क्योंकि हदीष ला मुल्लात लमल्लम यक़्रा बिफ़ातिहतिल किताब हर नमाज़ को शामिल है। इसकी तफ़सील हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब (रह.) के लफ़्ज़ों में ये है,

वलहक्कु वस्सवाबु अन्नकिरातल्फ़ातिहति फ़ी मुल्लातिल्जनाज़ति वाजिबतुन कमा जहब इलैहिश्शाफ़िई व अहमद व इस्हाक़ व ग़ैरुहुम लिअन्नहुम अज्मरु अला अन्नहा मुल्लातुन व क़द प्रबत हदीषु ला मुल्लात इल्ला बिफ़ातिहतिल्किताबि फ़हिय दाख़िलतुन तहतल्डूमि व इख़राजुहा मिन्हु यहाजु इला दलीलिन व लिअन्नहा मुल्लातुन यजिबु फ़ीहल्किर्यामु फ़वजबत फ़ीहल्किरातु कसाइरिस्मलवाति व लिअन्नहु वरदल्अम्रु बिकिरातिहा फ़क़द रवा इब्नु माज़ा बिइस्नादिन फ़ीहि जुअफ़ुन यसीरून अन्न उम्मि शरीकिन कालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताबि व रवत्तबानी फिल्कबीर मिन हदीषि उम्मि अफ़ीफ़िन कालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताब कालल्हैषमी व फ़ीहि अब्दुल्मुन्डम अबू सईद व हुव जईफ़ुन इन्तिहा

वलअम्रु मिन अदिल्लित्लुजुबि व रवत्तबानी फिल्कबीर ईज़ाउन मिन हदीषि अस्मा बिन्ति यज़ीद क़ालत क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा सल्लैतुम अलल्जनाज़ति फ़क़्रऊ बिफ़ातिहतिल्किताब क़ालल्हैषमी व फ़ीहि मुअला बिन हम्मान व लम अजिद मन जकरहू व बकिर्यत रिजालिही मूषकून व फ़ी बअज़िहिम कलामु हाज़ा क़द सन्नफ़ हसन अश्शर्नब्लानी मिम्मुतअख़िरिल्हनफ़ियति फ़ी हाज़िल्हिल्यस्अलति रिसालतन इस्मुहा अन्नज्मुल्मुस्तताब लिहुबिल्किराति फ़ी मुल्लातिल्जनाज़ति उम्मुल्किताब व हक्कक्र फ़ीहा अन्नल्किरात औला मिन तर्किल्किरात व ला दलील अलल्कराहति व हुवल्लज़ी इख़तारहुशैख़ु अब्दुल्हय अल्लक्नवी फ़ी तसानीफ़िही लि उम्दतिरिआयति यत्तअलीक़िल्मुम्जिदि व इमामुल्कलामि शुम्म अन्नहू इस्तदल्ल बिहदीषि इब्नि अब्बास अलल्जहरि बिल्किराति फ़िस्सल्लाति अलल्जनाज़ति लिअन्नहु यदुल्लु अला अन्नहू जहर बिहा हत्ता समिअ ज़ालिक मन सल्ला मअहू व अम्रु मिन ज़ालिक मा जकर्नाहु मिन रिवायतिन्नसई बिल्फ़िज़ सल्लैतु ख़ल्फ़ इब्नि अब्बास अला जनाज़तिन फ़क़्रअ बिफ़ातिहतिल्किताब व सूरतन व जहर हत्ता अस्मअन फ़लम्मा फ़रग अख़ज़्तु बियदिही फ़सअल्तुहु फ़क़ाल सुन्नतुन व हक्कुन व फ़ी रिवायतिन उख़रा लहू अयज़न सल्लैतु ख़ल्फ़ इब्नि अब्बास अला जनाज़ति फ़समिअतु यक़्रउ बिफ़ातिहतिल्किताब व यदुल्लु अलल्जहरि बिहुआइ हदीषु औफ़िब्नि मालिक अल्आती फ़इनज़ाहिर अन्नहू हफ़िज़हुआथल्मज्कूर लम्मा जहर बिहिन्नबिय्य (ﷺ) फ़िस्सल्लाति अलल्जनाज़ति अस्हु मिन्हु हदीषु वाषिला फिल्फ़स्लिहानी

वखतलफलउलमाउ फ्री जालिक फजहब बअजुहुम इला अन्नहु यस्तहिब्बुलजहरु बिल्किराति वहुआई फीहा वस्तदल्लु बिर्वायातिल्लजी जकनाहा अन्फन व जहबल्लुहरु इला अन्नहु ला यन्दुबुल्लजहरु बल यन्दुबुल्लइसारु काल इब्नु कुदामः व युसरुल्लिकरातु वहुआउ फ्री मलातिल्लजनाजति ला नअलमु बैन अहलिलइल्मि फीहि खिलाफन इन्तिहा

वस्तदल्लु लिजालिक बिमा जकना मिन हदीषि अबी उमामत काल अस्सुन्नतु फिस्सलाति अलल्लजनाजति अय्युक्अ फित्तबबीरतिल्लउला बिउम्मिल्लकुआनि मखाफततन लिहदीषिन अखरजहुन्नसई व मिन तरीक्रिहि इब्नि हजम फिल्मुहल्ला (जिल्द 05, पेज 129) कालन्नववी फ्री शहिंल्लमुहज्जब रवाहुन्नसई बिइस्नादिन अला शर्तिस्सहीहेन व काल अबू उमामा हाजा म्हाबी इन्तिहा व बिमा रवशशाफिइ फिलउम्म (जिल्द 01, पेज 239, वल्बैहकीः जिल्द 04, पेज 39) मिन तरीक्रिही अन मुतरफ बिन माजिन अन मअमर अनिज्जुहरी काल अखबरनी अबू उमामा बिन सुहैल अन्नहु अखबरहूरजुलुन मिन अस्हाबिन्नबिद्यि (ﷺ) इन्नस्सुन्नत फिस्सलाति अलल्लजनाजति अय्युक बिबरल्लइमामु हुम्म यक्करइ बिफातिहतिल्लकिताब बअदसकबीरतिल्लउला सिर्न फ्री नस्मिही अल्हदीष व जउफत हाजिहिरिवायतु बिमुतरफ लाकिन कवाहा अल्बैहकी बिमा रवाहु फिल्अरफति वस्सुननि मिन तरीक्रि अब्दिल्लाहि बि अबी जियाद अस्माफ्री अनिज्जुहरी बिमअना रिवायति मुतरफ व बिमा रवल्हाकिम (जिल्द 01, पेज 359, वल्बैहकीः जिल्द 04, पेज 421) अन शुरहबील बिन सअद काल हजरतु अब्दिल्लाहि बि मस्ऊद सल्ला अला जनाजति बिलअब्बा फकब्बर हुम्म करअ बिउम्मिल्लकुआनि राफिअन सौतहू बिहा हुम्म सल्ला अलन्नबिद्यि (ﷺ) हुम्म काल अल्लाहुम्म अब्दुक वब्नु अब्दिक अल्हदीष व फ्रीआखिरिही हुम्मन्सरफ फकाल या अय्युहन्नासु लम अकर आलुनन अय जहरन इल्ला लितअलमून अन्नहा सुन्नतुन कालल्हाफिज फिल्फरहि व शुरहबील मुखतलिफुन फ्री तौषीक्रिही इन्तिहा

व अखरजहुल्लजारूद फिल्मन्तका मिन तरीक्रि जैदिब्नि तलहत अतैमी काल समिअतुब्न अब्बास अला जनाजतिन फातिहतिल्लकिताब व सूरतन व जहर बिल्किराति व काल इन्मा जहरतु लिउअल्लिमकुम अन्नहा सुन्नतुन

व जहब बअजुहुम इला अन्नहु युखय्यिरु बैनल्लजहरि वल्इसारि व काल बअजु अस्हाबिशशाफिइ अन्नहु यजहरु बिल्लैलि कल्लैलति व युसिरु बिन्नहारि काल शैखुना फ्री शहिंतिमिंजी कौलु इब्नि अब्बास इन्मा जहरतु लितअलमू अन्नहा सुन्नतुन यदुल्लु अला अन्न जहरहू कान लिक्तअलीमि अय ला लिबयानिन अन्नल्लजहर बिल्किरात सुन्नतुन काल व अम्मा कौलु बअजिशशाफिइ यजहरु बिल्लैलि व हाजा यदुल्लु अला अन्नशैख माल इला कौलिल्लजुम्मीर अन्नल्लइसार बिल्किराति मन्दूबुन हाजा व रिवायतु इब्नि अब्बासिन इन्दन्नसइ बिलफिज फकरअ बिफातिहतिल्लकिताब व सूरतन तदुल्लु अला मशरूइय्यति किराति सूरतिम्मअल्फातिहति फिस्सलातिल्लजनाजति कालशशौकानी ला महीस अनिल्लमसीर इला जालिक लिअन्नाहा जियादतुन खारिजतुन मिम्मअरजिन महीहिन कुल्लु व यदुल्लु अलैहि अयजन मा जकरहू इब्नु हजम फिल्मुहल्ला. (जिल्द 05, पेज 129)

हजरत मौलाना उबैदुल्लाह साहब (रह.) के इस तवील बयान का खुलासा ये है कि सूरह फातिहा जनाजा में पढ़नी वाजिब है जैसा कि इमाम शाफिई और अहमद और इस्हाक वगैरह का मजहब है। इन सबका इत्माअ है कि सूरह फातिहा ही नमाज है और हदीष में मौजूद है कि सूरह फातिहा पढ़े बगैर नमाज नहीं होती। पस नमाजे जनाजा भी उमूम के तहत दाखिल है और इस उमूम से खारिज करने की कोई दलीले सहीहा नहीं है और ये भी कि जनाजा एक नमाज है जिसमें कयाम वाजिब है। पस दीगर नमाजों की तरह उसमें भी किरअत वाजिब है और इसलिये भी कि उसकी किरअत का सरीह हुक्म मौजूद है। जैसा कि इब्ने माजा में उम्मे शुरैक से मरवी है कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जनाजा में सूरह फातिहा पढ़ने का हुक्म दिया है। अगरचे इस हदीष की सनद में कुछ जुअफ है मगर दीगर दलाईल व शवाहिद की बिना पर उससे इस्तिदलाल दुरुस्त है और तबानी में भी उम्मे अफ्रीफ से ऐसा ही मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें जनाजे की नमाज में सूरह फातिहा पढ़ने का हुक्म दिया और अम्र वजूब के लिये होता है। तबरानी में अस्मा बिन्ते यजीद से भी ऐसा ही मरवी है कि आहज़रत (ﷺ) ने फर्माया कि तुम जनाजे पर नमाज पढ़ो तो सूरह फातिहा पढ़ा करो।

मुताख़िखरीने हनफ़िया में एक मौलाना हसन शुरम्बलानी मरहूम ने इस मसले पर एक रिसाला बनाम अन्नजमुल मुस्तताबु लिहुक्मिल किराति फ्री मलातिल जनाजति बिउम्मिल किताब कहा है। जिसमें प्राबित किया है कि जनाजे की नमाज में

सूरह फातिहा पढ़ना न पढ़ने से बेहतर है और उसकी क़ाहियत पर कोई दलील नहीं है। ऐसा ही मौलाना अब्दुल हई लखनवी (रह) ने अपनी तस्नीफ़ इम्दतुर रखाया और तअलीकुल मुम्जिद और इमामुल कलाम वगैरह में लिखा है।

फिर हदीसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) से नमाज़े जनाज़ा में सूरह फातिहा के ज़हर पर दलील पकड़ी गई है कि वो हदीस साफ़ दलील है कि उन्होंने उसे बिलजहर पढ़ा। यहाँ तक कि मुक्तदियों ने उसे सुना और उससे भी ज़्यादा सरीह दलील वो है जिसे निसाई ने रिवायत किया है। रावी का बयान है कि मैंने एक जनाज़ा की नमाज़ हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पीछे पढ़ा। आपने सूरह फातिहा और एक सूरह को जहर के साथ हमको सुनाकर पढ़ा। जब आप फ़ारिग हुए तो मैंने आपका हाथ पकड़कर ये मसला आपसे पूछा। आपने फ़र्माया कि बेशक यही सुन्नत है और हक़ है और जनाज़ा की दुआओं को जहर से पढ़ने पर औफ़ बिन मालिक की हदीस दलील है। जिन्होंने आहज़रत (ﷺ) के पीछे आपके बुलन्द आवाज़ से पढ़ने पर सुन-सुनकर उन दुआओं को याद कर लिया था और उससे भी ज़्यादा सरीह वाषिला की हदीस है।

और इलमा का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने रिवायते मज़कूर की बिना पर जहर को मुस्तहब माना है जैसा कि हमने अभी उसका ज़िक्र किया है। जुम्हूर ने आहिस्ता पढ़ने को मुस्तहब समझा है। जुम्हूर की दलील हदीसे उमामा है जिसमें आहिस्ता से पढ़ने को सुन्नत बताया गया है अख़्जहज़रसई। अल्लामा इब्ने हज़र ने मुहल्ला में और इमाम शाफ़िई ने किताबुल उम्म में और बेहक्की वगैरह ने भी रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के एक सहाबी (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नमाज़े जनाज़ा में सूरह फातिहा आहिस्ता पढ़ी जाए।

शुरहबील बिन सअद कहते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के पीछे एक नमाज़े जनाज़ा में ब-मक़ाम अबवा में शरीक हुआ। आपने सूरह फातिहा और दरूद और दुआओं को बुलन्द आवाज़ से पढ़ा फिर फ़र्माया कि मैं जहर से न पढ़ता मगर इसलिये पढ़ा ताकि तुम जान लो कि ये सुन्नत है।

और मुन्तक़ा इब्ने जारूद में है कि ज़ैद बिन तलहा तैमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के पीछे एक जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी जिसमें उन्होंने सूरह फातिहा और एक सूरह बुलन्द आवाज़ से पढ़ा और बाद में फ़र्माया कि मैंने इसलिये जहर पढ़ा ताकि तुम जान लो कि ये सुन्नत है।

कुछ इलमा कहते हैं कि जहर और सिर दोनों के लिये इख़्तियार है। कुछ शाफ़िई हज़रत ने कहा कि रात को जनाज़ा में जहर (बुलन्द किर्अत के साथ) औरें दिन में सिर (ख़ामोश किर्अत) के साथ पढ़ा जाए। हमारे शैख़ मौलाना अब्दुर्रहमान साहब (रह) क़ौले जुम्हूर की तरफ़ गए हैं और फ़र्माते हैं कि क़िरअत आहिस्ता ही मुस्तहब है और निसाई वाली रिवायत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) में दलील है कि जनाज़ा में सूरह फातिहा एक सूरह के साथ पढ़ना मशरूअ है। मिस्वर बिन मख़रमा ने एक जनाज़ा में पहली तक्बीर में सूरह फातिहा और एक मुख़तमर सी सूरत पढ़ी। फिर फ़र्माया कि मैंने क़िरअते जहर से इसलिये की है कि तुम जान लो कि उस नमाज़ में भी क़िरअत है और ये नमाज़ गुंगी नहीं है।

ख़ुलास-ए-कलाम ये है कि जनाज़ा में सूरह फातिहा साथ एक सूरह के साथ पढ़ना ज़रूरी है। हज़रत क़ाज़ी फ़नाउल्लाह पानीपती हनफ़ी (रह) ने अपनी मशहूर किताब मा ला बुह मिन्हु में अपना वसिय्यत नामा भी दर्ज किया है। जिसमें आप फ़र्माते हैं कि मेरा जनाज़ा वो शख्स पढ़ाएगा जो उसमें सूरह फातिहा पढ़े। पस प्राबित हुआ कि तमाम अहले हक़ का यही मुख़तार मस्लक है।

उलम-ए-अहनाफ़ का फ़तवा : फ़ाज़िल मुहतरम साहिबे तफ़हीमुल बुखारी ने इस मौक़े पर फ़र्माया कि हन्फ़िया के नज़दीक भी नमाज़े जनाज़ा में सूरह फातिहा पढ़नी जाइज़ है। जब दूसरी दुआओं से उसमें ज़ामिइयत भी ज़्यादा है तो इसके पढ़ने में हर्ज़ क्या हो सकता है। अलबत्ता दुआ और फ़ना की निय्यत से इसे पढ़ना चाहिये क़िरअत की निय्यत से नहीं। (तफ़हीमुल बुखारी, पारा नं. 5, पेज नं. 122)

फ़ाज़िल मौसूफ़ ने आखिर में जो कुछ इशार्द फ़र्माया है वो सहीह नहीं जबकि साबिक़ा रिवायत मज़कूर में उसे क़िरअत के तौर पर पढ़ना प्राबित है। पस इस फ़र्क़ की क्या ज़रूरत बाक़ी रह जाती है। बहरहाल अल्लाह करे हमारे मुहतरम हनफ़ी भाई जनाज़े में सूरह फातिहा पढ़नी शुरू फ़र्मा दें ये भी एक नेक इन्दाब होगा।

रिवायते बाला में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने जो ये फ़र्माया कि ये सुन्नत और हक़ है उसकी वज़ाहत हज़रत मौलाना शैख़ुल हदीष (रह.) ने यूँ फ़र्माई है,

वल्मुरादु बिस्सुन्नतित्तरीक़तिल्मालूफ़ति अन्हु (ﷺ) ला मा युकाबिलुल्फ़रीज़त फ़इन्नहू इस्तिलाहुन उर्फ़ियुन हादिषुन फ़क़ाल अल्अशरफ़ुज़्ज़मीरुल्मुअन्नषु लिकिरातिल्फ़ातिहति वलैसल्मुरादु बिस्सुन्नति इन्नहा लैसत बिवाजिबतिन बल मा युकाबिलुल्बिदअत अय इन्नहा तरीक़तुन मर्बिध्यतुन व कालल्कस्तलानी अन्नहा अय किरातल्फ़ातिहति फ़िल्जनाज़ति सुन्नतुन अय तरीक़तुशशारिउ फ़ला युनाफ़ी कौनुह वाजिबतन व क़द उलिम अन्न कौलस्सहाबी मिनस्सुन्नति कज़ा हदीषुन मफ़ूउन इन्दल्अक्व़रि क़ालशशाफ़िउ फ़िल्उम्मि व अस्हाबुन्बिध्यि (ﷺ) ला यकूलून अस्सुन्नतु रसूलिल्लाहि (ﷺ) इन्शाअल्लाहु इन्तिहा (मिआतुल मफ़ातीह, पेज 477)

या'नी यहाँ लफ़्ज़े सुन्नत से तरीक़-ए-मालूफ़ानबी करीम (ﷺ) मुराद है न वो सुन्नत जो फ़र्ज़ के मुकाबले पर होती है। ये एक उफ़ी इस्तिलाह इस्ते'माल की गई है ये मुराद नहीं कि ये वाजिब नहीं है बल्कि सुन्नत मुराद है जो बिदअत के मुकाबले पर बोली जाती है। या'नी ये तरीक़ा मरवि्या है और क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़नी सुन्नत है या'नी शारेअ का तरीक़ा है और ये वाजिब होने की मनाफ़ी नहीं है। इमाम शाफ़िउ (रह.) ने किताबुल उम्म में फ़र्माया है कि सहाबा किराम (रज़ि.) लफ़्ज़े सुन्नत का इस्ते'माल सुन्नत तरीक़ा रसूलुल्लाह (ﷺ) पर करते थे। अक्व़ाले सहाबा में हदीषे मफ़ूअ पर भी सुन्नत का लफ़्ज़ बोला गया। बहरहाल यहाँ सुन्नत से मुराद ये है कि सूरह फ़ातिहा नमाज़ में पढ़ना तरीक़-ए-नबवी है और ये वाजिब है कि उसके पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती जैसा कि ऊपर वाली तफ़्सील में बयान किया गया है।

बाब 66 : मुर्दे को दफ़न करने के बाद क़ब्र

पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना

٦٦- بَابُ الصَّلَاةِ عَلَى الْقَبْرِ بَعْدَ مَا يُدْفَنُ

1336. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे सुलैमान शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअबी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे उस सहाबी ने ख़बर दी जो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक अलग-थलग क़ब्र से गुज़र रहे थे। क़ब्र पर आप (ﷺ) इमाम बने और सहाबा ने आपके पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। शैबानी ने कहा कि मैंने शुअबी से पूछा कि अबू अग्र! आप से किस सहाबी ने बयान किया था, तो उन्होंने बतलाया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने। (राजेअ: 875)

١٣٣٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي مَنْ مَرَّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى قَبْرِ مَبُودٍ فَأَمَّهُمْ وَصَلُّوا خَلْفَهُ. قُلْتُ: مَنْ حَدَّثَكَ هَذَا يَا أَبَا عَمْرٍو؟ قَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا)). [راجع: ٨٥٧]

1337. हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे श़ाबित ने बयान किया, उनसे अबू राफ़ेअ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि काले रंग का एक मर्द या काले रंग की एक औरत मस्जिद में ख़िदमत किया करती थी, उनकी वफ़ात हो गई। लेकिन नबी करीम (ﷺ) को किसी ने ख़बर नहीं दी। एक दिन आपने खुद याद फ़र्माया कि वो शख़्स दिखाई नहीं देता। सहाबा ने

١٣٣٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَاسِمِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي مُرَيْثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((رَأَى أَسْوَدَ - رَجُلًا أَوْ امْرَأَةً - كَانَ يَقُمُ الْمَسْجِدَ، لَمَاتَ، وَلَمْ يَعْلَمْ النَّبِيُّ ﷺ بِمَوْتِهِ، فَذَكَرَهُ ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ عَلَيْهِ

कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उनका इन्तिकाल हो गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तुमने मुझे ख़बर क्यों नहीं दी? सहाबा ने अर्ज किया कि ये वजह थी (इसलिये आपको तकलीफ़ नहीं दी गई) गोया लोगों ने उनको हक़ीर जानकर क़ाबिले तवज्जह नहीं समझा। लेकिन आपने फ़र्माया कि चलो मुझे उनकी क़ब्र बता दो। चुनौचे आप उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (राजेअ : 458)

तशरीह : ये काला मर्द या काली औरत मस्जिदे नबवी की जारूबकश बड़े-बड़े बादशाहाने हफ़्ते अक़लीम से अल्लाह के नज़दीक मर्तबे और दर्जे में ज़ाइद थी। हबीबुल्लाह (ﷺ) ने दूँढ़कर उसकी क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी। वाह रे किस्मत! आपकी क़फ़श-बरदारी अगर हमको बहिश्त में नज़ीब हो जाए तो ऐसी दुनिया की लाखों सल्तनतें इस पर तस्दीक़ कर दें। (वहीदी)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने उससे प़ाबित फ़र्माया कि अगर किसी मुसलमान मर्द या औरत का जनाज़ा न पढ़ा गया हो तो क़ब्र पर दफ़न करने के बाद भी पढ़ा जा सकता है। कुछ ने उसे नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ास कर दिया है मगर दावा बेदलील है।

बाब 68 : इस बयान में कि मुर्दा लौटकर जाने वालों के जूतों की आवाज़ सुनता है

٦٧- بَابُ الْمَيِّتِ يَسْمَعُ خَفَقَ

النَّعَالِ

यहाँ से ये निकला कि क़ब्रिस्तान में जूते पहनकर जाना जाइज़ है। इब्ने मुनीर ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह) ने ये बाब इसलिये फ़ायम किया कि दफ़न के आदाब का लिहाज़ रखें और शोरो-गुल और ज़मीन पर जोर-जोर से चलने से परहेज़ करें जैसे ज़िन्दा सोते आदमी के साथ करता है।

1338. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ज़रिअ ने, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी जब क़ब्र में रखा जाता है और दफ़न करके उसके लोग-बाग़ पीठ मोड़कर रुख़्सत होते हैं तो उनके जूतों की आवाज़ सुनता है। फिर दो फ़रिश्ते आते हैं, उसे उठाते हैं और पूछते हैं कि उस शख़्स (मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ) के मुताल्लिक़ तुम्हारा क्या एतिकाद है? वो जब जवाब देता है कि मैं गवाही देता हूँ कि वो अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इस जवाब पर उससे कहा जाता है कि ये देख जहन्नम का अपना एक ठिकाना लेकिन अल्लाह तआला ने जन्नत में तेरे लिये एक मकान इसके बदले में बना दिया है। नबी करीम

١٣٣٨- حَدَّثَنَا عِيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ ح.. وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ: قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ زُرَيْجٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((الْعَبْدُ إِذَا وَضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى وَدُفِنَ أَصْحَابُهُ - حَتَّى إِنَّهُ لَيَسْمَعُ فَرَجَ بِضَائِهِمْ - أَنَّهُ مَلَكَانٍ فَأَقْبَدَاهُ، فَيَقُولَانِ لَهُ : لَهَ مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ مُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَيَقُولُ : أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ. فَيَقَالُ : أَنْظِرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، أُنْذِلَكَ اللَّهُ بِوَقْفَتِكَ مِنَ الْجَنَّةِ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((قَبْرَاهُمَا

(ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उस बन्दा-ए-मोमिन को जन्नत और जहन्नम दोनों दिखाई जाती है और रहा काफ़िर या मुनाफ़िक़ तो उसका जवाब ये होता है कि मुझे मा'लूम नहीं। मैंने लोगों को एक बात कहते सुना था, वही मैं भी कहता रहा। फिर उससे कहा जाता है कि न तूने समझा और न (अच्छे लोगों की) पैरवी की। इसके बाद उसे एक लोहे के हथौड़े से बड़े जोर से मारा जाता है और वो इतने भयानक तरीके से चीखता है कि इन्सान और जिन्न के सिवा इर्द-गिर्द की तमाम मख़लूक सुनती है। (राजेअ: 1374)

جَنِينًا. وَأَمَّا الْكَافِرُ - أَوْ الْمُنَافِقُ -
فَيَقُولُ: لَا أَذْرِي، كُنْتُ أَقُولُ مَا يَقُولُ
النَّاسُ. يُقَالُ: لَا ذَرِيَّةَ، وَلَا تَلَيْتَ، ثُمَّ
يُضْرَبُ بِعِطْرَلَةٍ مِنْ حَدِيدٍ ضَرْبَةً بَيْنَ
أَذْنَيْهِ، فَيَصِيحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيهِ إِلَّا
الطَّيَّانِينَ. (اللقائين)

[طهره في: 1374]

तशरीह: इस हदीष से ये निकला कि हर शख्स के लिये दो-दो ठिकाने बने हैं, एक जन्नत में और जहन्नम में, और ये कुआन शरीफ़ से भी प्राबित है कि काफ़िरो के ठिकाने जो जन्नत में हैं उनके दो ज़ख़ में जाने की वजह से उन ठिकानों को ईमानदार ले लेंगे।

क़ब्र में तीन बातों का सवाल होता है, 'मन रब्बुका?' तेरा रब कौन है? मोमिन जवाब देता है मेरा रब अल्लाह है फिर सवाल होता है, तेरा दीन क्या है? मोमिन जवाब देता है मेरा दीन इस्लाम था। फिर पूछा जाता है कि तेरा नबी कौन है? वो बोलता है मेरे नबी रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हैं। इन जवाबात पर उसके लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे और काफ़िर हर सवाल के जवाब में कहेगा कि मैं कुछ नहीं जानता जैसा लोग कहते थे मैं भी कह दिया करता था। मेरा दीन मज़हब कुछ न था। इस पर उसके लिये जहन्नम के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे।

लिमा ला दैरत व लिमा ला तलैत के ज़ेल मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम (रह) फ़र्माते हैं। या'नी न मुज्ताहिद हुआ न मुकल्लिद अगर कोई ए'तिराज़ करता है कि मुकल्लिद तो हुआ क्योंकि उसने पहले कहा कि लोग जैसा कहते थे मैंने भी वैसा ही कहा। तो उसका जवाब ये है कि ये तक्लीद कुछ काम की नहीं कि सुने सुनाए पर हर शख्स अमल करने लगा। बल्कि तक्लीद के लिये भी ग़ौर लाज़िम है कि जिस शख्स की हम तक्लीद कर रहे हैं आया वो लायक़ और फ़ाज़िल और समझदार था या नहीं और दीन का इल्म उसको था या नहीं। सब बातें बख़ूबी तहक़ीक़ करनी ज़रूरी हैं।

बाब 68: जो शख्स अर्ज़े-मुकद्दस या ऐसी ही किसी बरकत वाली जगह दफ़न होने का आरज़ूमन्द हो

٦٨- بَابُ مَنْ أَحَبَّ الدَّفْنَ فِي
الْأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ أَوْ نَحْوِهَا

1339. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन तारुस ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मलकुल-मौत (आदमी की शक्ल में) मूसा अलैहिस्सलाम के पास भेजे गये। वो जब आए तो मूसा अलैहिस्सलाम ने (न पहचान कर) उन्हें एक ज़ोर का तमाचा मार दिया और उनकी आँख फोड़ डाली। वो वापस अपने रब के हज़ूर में पहुँचे और अर्ज़ किया कि या अल्लाह तूने मुझे ऐसे बन्दे की तरफ़ भेजा जो मरना नहीं चाहता।

١٣٣٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَدَلَاءَ عَنْ
الرَّزَّازِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرُ بْنُ أَبِي طَاوُسٍ
عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
قَالَ: ((أَرْسِلْ مَلَكَ الْمَوْتِ إِلَى مُوسَى
عَلَيْهِمَا السَّلَامُ، فَلَمَّا جَاءَهُ صَكَّهُ فَفَقَأَ
عَيْنَهُ فَرَجَعَ إِلَى رَبِّهِ فَزَوَّجَهُ فَقَالَ:
أَرْسَلْتَنِي إِلَى عَبْدٍ لَا يُرِيدُ الْمَوْتَ. فَرَدَّ

अल्लाह तआला ने उनकी आँख पहले की तरह कर दी और फ़र्माया कि दोबारा जा और उनसे कह कि अपना हाथ एक बैल की पीठ पर रखिये और पीठ पर जितने बाल आपके हाथ के तले आ जाएँ उनके हर बाल के बदले एक साल की जिन्दगी दी जाती है। (मूसा अलैहिस्सलाम तक अल्लाह तआला का ये पैग़ाम पहुँचा तो) आपने कहा कि ऐ अल्लाह! फिर क्या होगा? अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि फिर भी मौत आनी है। मूसा अलैहिस्सलाम बोले तो अभी क्यों न आ जाए। फिर उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि उन्हें एक पत्थर की मार पर अर्ज़ें मुक़द्दस से करीब कर दिया जाए। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मैं वहाँ होता तो तुम्हें उनकी क़ब्र दिखाता कि लाल टीले के पास रास्ते के करीब है।

बैतुल मक़्दिस हो या मक्का-मदीना ऐसे मुबारक मुक़ामात में दफ़न होने की आरजू करना जाइज़ है। इमाम बुखारी (रह) का मक़सदे बाब यही है।

बाब 69 : रात में दफ़न करना कैसा है? और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) रात में दफ़न किये गये

1340. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे शैबानी ने, उसने शुअबी ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक ऐसे शख्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जिनका इन्तिक़ाल रात में हो गया था (और उसे रात ही में दफ़न कर दिया गया था) आप (ﷺ) और आपके सहाबा खड़े हुए और आपने उनके मुता'ल्लिक पूछा था कि ये किन की क़ब्र है? लोगों ने बताया कि फ़लाँ की है जिसे कल रात ही दफ़न किया गया है। फिर सब ने (दूसरे रोज़) नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (राजेज़ : 875)

मा'लूम हुआ कि रात को दफ़न करने में कोई क़बाहत नहीं है बल्कि बेहतर यही है कि रात हो या दिन मरने वाले का कफ़न-दफ़न में देर न करना चाहिये।

बाब 70 : क़ब्र पर मस्जिद ता'मीर करना कैसा है?

1341. हमसे इस्माइल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.)

اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ عَلَيْهِ عَيْنُهُ وَقَالَ: اَرْجِعْ فَقُلْ لَّهُ يَضَعُ يَدَهُ عَلَى مَنْ فُوتَ، فَلَهُ بِكُلِّ مَا غَطَّتْ بِهِ يَدَهُ بِكُلِّ شَعْرَةٍ سَنَةً. قَالَ: أَيُّ رَبِّ، ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: ثُمَّ الْمَوْتُ. قَالَ: فَلَاَن. فَسَأَلَ اللّٰهُ أَنْ يُدِينَهُ مِنَ الْأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ رَمِيَةً بِحَجَرٍ. قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ: ((فَلَوْ كُنْتُ ثُمَّ، لَأَرَيْتُكُمْ قَبْرَهُ إِلَى جَانِبِ الطَّرِيقِ عِنْدَ الْكَنْسَبِ الْأَخْمَرِ)).

٦٩- بَابُ الدَّفْنِ بِاللَّيْلِ وَدُفِنَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَيْلًا

١٣٤٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ عَلَى رَجُلٍ بَعْدَ مَا دُفِنَ بَلِيلَةً، فَأَمَّ هُوَ وَأَصْحَابُهُ، وَكَانَ مَنَازِلُهُ عَنْهُ فَقَالَ: ((مَنْ هَذَا؟)) فَقَالُوا: فَلَانٌ، دُفِنَ الْبَارِحَةَ. فَصَلُّوا عَلَيْهِ)).

[راجع: ٨٥٧]

٧٠- بَابُ بِنَاءِ الْمَسْجِدِ عَلَى الْقَبْرِ

١٣٤١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ

ने कि जब नबी करीम (ﷺ) बीमार पड़े तो आपकी बाज़ बीवियों (उम्मे सलमा रज़ि और उम्मे हबीबा रज़ि.) ने एक गिरजे का ज़िक्र किया जिसे उन्होंने हब्शा में देखा था, जिसका नाम मारिया था। उम्मे सुलैम और उम्मे हबीबा (रज़ि.) दोनों हब्शा के मुल्क में गई थीं। उन्होंने उसकी खूबसूरती और उसमें रखी गई तस्वीरों का ज़िक्र किया। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने सरे मुबारक उठाकर फ़र्माया कि ये वो लोग है कि जब उनमें कोई मालेह शख्स मर जाता तो उसकी क़ब्र पर मस्जिद ता'मीर कर देते। फिर उसकी मूरत उसमें रखते। अल्लाह के नज़दीक ये लोग सारी मख़लूक में बुरे हैं।

(राज़ेअ: 428)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((لَمَّا اشْكَى النَّبِيُّ ﷺ ذَكَرْتُ بَعْضَ نِسَائِهِ كَنِيْسَةً وَابْنَهَا بِأَرْضِ الْحَبْشَةِ يُقَالُ لَهَا مَارِيَةُ، وَكَانَتْ أُمُّ سَلَمَةَ وَأُمُّ حَبِيْبَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَا أَرْضُ الْحَبْشَةِ فَذَكَرْنَا مِنْ حُسْنِهَا وَتَصَاوُرَ فِيْهَا. فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: ((أَوَّلِيْكَ إِذَا مَاتَ مِنْهُمْ الرَّجُلُ الصَّالِحُ يَتَوَأَى عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا ثُمَّ صَوَّرُوا فِيْهِ يَلِكُ الصُّوْرَةُ، أَوَّلِيْكَ شِرَارُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ)). [راجع: 427]

तशरीह: इमाम क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, क़ाललकुतुबी इन्मा सब्खरू अवाइलहुम अस्सुवर लियतानसौ बिहा व यतजक्करु अफ़्फ़ालहुमुस्सालिहत फयज्जहिदुन कइज्जिहादिहिम व यअबुदूनल्लाह इन्द कुबूरिहिम शुम्म खल्फुहुम क़ौमुन जहलू मुरादुहुम व वस्वस लहुमुशशेतानु अन्न अस्लाफ़ुकुम कानू यअबुदून हाजिहिस्सुवर व युअज्जिमुनहा फहज़रन्नबिध्पु (ﷺ) अन मख़िल ज़ालिक सहन लिज्जरीअतिलम्बुदियति इला ज़ालिक बिक्ौलिही उलाइक शिरारुलखल्कि इन्दल्लाहि व मौज़इत्तजुमति बनौ अला कबिही मस्जिदन व हुव मुल अला मज्जमतम्मत्तखज़ल्कब्र मस्जिदन व मुक्तजाहु अत्तहरीमु ला शीमा व कद प्रबतल्लअनु अलैहि या'नी कुतुबी ने कहा कि बनी इस्राईल ने शुरू में अपने बुजुर्गों के बुत बनाए ताकि उनसे उन्स हासिल करें और उनके नेक कामों को याद करके खुद भी ऐसे ही नेक काम करें और उनकी क़ब्रों के पास बैठकर इबादते इलाही करें। पीछे और भी ज़्यादा जाहिल लोग पैदा हुए। जिन्होंने इस मक़सद को फ़रामोश कर दिया और उनको शैतान ने वस्वसे में डाल दिया कि तुम्हारे अस्लाफ़ उन ही मूरतों को पूजते थे और उन्हीं की ता'ज़ीम करते थे। पस नबी करीम (ﷺ) ने इसी शिर्क का सदेबाब (काट) करने के लिये सख़्ती के साथ डराया और फ़र्माया कि अल्लाह के नज़दीक यही लोग बदतरिन मख़लूक हैं और बाब का तर्जुमा लफ़ज़ हदीष बनौ अला कबिही मस्जिदन से प्राबित होता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख्स की मुज़म्मत की जो क़ब्र को मस्जिद बना ले। उससे इस फ़ेअल की हुर्मत भी प्राबित होती है और ऐसा करने पर लअनत भी वारिद हुई है।

हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम ने भी शुरू में इसी तरह किया उन्होंने अपने बुजुर्गों के बुत बनाए, बाद में फिर उन बुतों की पूजा होने लगी और उन्हें खुदा का दर्जा दे दिया गया। इमूमन सारी बुतपरस्त क़ौमों का यही हाल है। जबकि वो खुद कहते भी हैं कि मा नअबुदुहुम इल्ला लियकरिबुना इलल्लाहि जुल्फ़ा (अज़मर: 3) या'नी हम उन बुतों को महज़ इसलिये पूजते हैं कि ये हमको अल्लाह से करीब कर देंगे। बाकी मअबूद नहीं हैं ये तो हमारे लिये वसीला हैं। अल्लाह पाक ने मुशिकीन के इस ख़्याले बातिल की तदीद में कुअनि करीम का बेशतर हिस्सा नाज़िल फ़र्माया।

सद अफ़सोस! कि किसी न किसी शक़ल में बहुत से इस्लाम के दा'वेदारों में भी इस किस्म का शिर्क दाख़िल हो गया है। हालाँकि शिर्क अकबर हो या अस्मर; उसके मुर्तकिब पर जन्नत हमेशा के लिये हराम है। मगर इस सूत्र में कि वो मरने से पहले उससे तौबा करके ख़ालिस् अल्लाह वाला बन जाए। अल्लाह पाक हर किस्म के शिर्क से बचाए, आमीन!

बाब 71 : औरत की क़ब्र में कौन उतरे?

۷۱- بَابُ مَنْ يَدْخُلُ قَبْرَ الْمَرْأَةِ

1342. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, उनसे फ़ुलैह

۱۳۴۲- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ

बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अली ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी के जनाजे में हाज़िर थे। आँहज़रत (ﷺ) क़ब्र पर बैठे हुए थे। मैंने देखा कि आप (ﷺ) की आँखों से आँसू जारी थे। आपने पूछा कि क्या ऐसा आदमी भी कोई यहाँ है जो आज रात को औरत के पास न गया हो। इस पर अबू तलहा (रज़ि.) बोले कि मैं हाज़िर हूँ। हुज़ुरे-अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम क़ब्र में उतर जाओ। अनस (रज़ि.) ने कहा कि वो उतर गये और मय्यित को दफ़न किया। अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान कि फ़ुलैह ने कहा कि मेरा ख़याल है कि युक्रारिफ़ का मा'नी ये है कि जिसने गुनाह न किया हो। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि सूरह अन्-आम में जो लियक्तरिफ़ आया है उसका मा'नी यही है ताकि गुनाह करें। (राजेअ: 1285)

حَدَّثَنَا فَلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا هِلَالُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْنَا بِنْتَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ - وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَالِسٌ عَلَى الْقَبْرِ - فَرَأَيْتُ عَيْنَيْهِ تَذُمَّانِ، فَقَالَ: ((هَلْ فِيكُمْ مِنْ أَحَدٍ لَمْ يُقَارِبِ اللَّيْلَةَ)) فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَنَا. قَالَ: ((فَأَنْزِلْ فِي قَبْرِهَا)) فَزَلَّ فِي قَبْرِهَا فَفَقَرَهَا قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ فَلَيْحُ: أَرَأَيْتَ يَغْنِي الذَّنْبَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: ﴿لِيَقْتَرِفُوا﴾ أَيْ لِيَكْتَسِبُوا.

[راجع: ١٢٨٥]

एक बात अजीब मशहूर हो गई है कि मौत के बाद शौहर अपनी बीवी के लिये अजनबी और आम आदमी से ज़्यादा अहमियत नहीं रखता, ये इतिहाई लगव और गुलज़ तमज़ूर है। इस्लाम में शौहर का रिश्ता बीवी का रिश्ता इतना मा'मूली नहीं कि वो मरने के बाद ख़त्म हो जाए और मर्द औरत के लिये अजनबी बन जाए। पस औरत के जनाजे को खुद उसका शौहर भी उतार सकता है और हस्बे ज़रूरत दूसरे लोग भी जैसा कि इस हदीस से प्राबित है।

बाब 42 : शहीद की नमाज़े जनाज़ा पढ़ें या नहीं?

1343. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैस बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन कअब बिन मालिक ने, उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उहुद के दो-दो शहीदों को मिला कर एक ही कपड़े का कफ़न दिया। आप दरयाफ़्त फ़र्माते कि इनमें कुआन किसे ज़्यादा याद है? किसी एक की तरफ़ इशारे से बताया जाता तो आप बग़ली क़ब्र में उसी को आगे करते और फ़र्माते कि मैं क़यामत में इनके हक़ में शहादत दूँगा। फिर आप (ﷺ) ने सबको उनके ख़ून समेत दफ़न करने का हुक्म दिया। न उन्हें गुस्ल दिया गया और न उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई।

٧٢- بَابُ الصَّلَاةِ عَلَى الشَّهِيدِ

١٣٤٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أَحَدٍ لِي تَوْبُو وَاحِدٌ ثُمَّ يَقُولُ: ((أَيُّهُمَا أَكْثَرُ أَحَدًا يُلْقَرَانِ)) لِأَنَّهُ أَحَبُّ لَهُ إِلَى أَحَدِهِمَا لَقَدْ مَكَ فِي النَّحْدِ وَقَالَ: ((أَنَا شَهِيدٌ عَلَى هَؤُلَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)) وَأَمَرَ بِدَفْنِهِمْ فِي دِمَائِهِمْ، وَتَمَّ يَسْأَلُوا

(दीगर मक़ाम : 1345, 1346, 1347, 1348, 1353, 4089)

1344. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने बयान किया, उनसे अबुल खैर यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे इब्रबा बिन आमिर ने कि नबी करीम (ﷺ) एक दिन बाहर तशरीफ़ लाए और उहुद के शहीदों पर इस तरह नमाज़ पढ़ी जिस तरह मय्यित पर नमाज़ पढ़ी जाती है। फिर मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, देखो मैं तुमसे पहले जाकर तुम्हारे लिये मीरे सामान बनूँगा और मैं तुम पर गवाह रहूँगा और क़सम अल्लाह की मैं इस वक़्त अपने हौज़ को देख रहा हूँ और मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ दी गई है या (ये फ़र्माया कि) मुझे ज़मीन की कुन्जियाँ दी गई है और क़सम अल्लाह की मुझे इसका डर नहीं कि मेरे बाद तुम शिर्क करोगे बल्कि इसका डर है कि तुम लोग दुनिया ह्रासिल करने में राबत करोगे। (नतीजा ये कि आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाओगे)

(दीगर मक़ाम : 3596, 4042, 6085, 6426, 6590)

وَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِمْ.

أُطْرَافُهُ نَ : ١٣٤٧ ، ١٣٤٦ ، ١٣٤٥
١٣٤٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ يَزِيدُ بْنُ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي
الْخَيْرِ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ
خَرَجَ يَوْمًا فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أَحَدٍ صَلَاةً
عَلَى الْمَيِّتِ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمَنْبَرِ
فَقَالَ : ((إِنِّي فَرَطْتُ لَكُمْ، وَمَا أَنَا شَهِيدٌ
عَلَيْكُمْ، وَإِنِّي وَأَهْلِي لَأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِ
الْآنِ، وَإِنِّي أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ
الْأَرْضِ، أَوْ مَفَاتِيحِ الْأَرْضِ. وَإِنِّي وَأَهْلِي مَا
أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي، وَلَكِنْ
أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنَافَسُوا فِيهَا)).

أُطْرَافُهُ نَ : ٣٥٩٦ ، ٤٠٤٢ ، ٤٠٨٥

[٦٥٩٠ ، ٦٤٢٦]

तशरीह : अल्लाह की राह में शहीद होने वाला जो मैदाने जंग में मारा जाए इस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने न पढ़ने के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इसी बाब के ज़ेल में दोनों अहदीष में ये इख़्तिलाफ़ मौजूद है। उनमें तत्बीक़ ये है कि दूसरी हदीष जिसमें शुहदा-ए-उहुद पर नमाज़ का ज़िक्र है उससे मुराद सिर्फ़ दुआ और इस्तिफ़ार है। इमाम शाफ़िई (रह) कहते हैं कअन्नहू (ﷺ) दुआ लहुम वस्तग़फ़र लहुम हीनक़रुब अजलुहू बअदषमानि सिनीन कल्मुवद्इ लिलअहयाइ वल्अम्वात (तुहफतुलअहवज़ी) या'नी इस हदीष में जो ज़िक्र है ये ग़ज़व-ए-उहुद के आठ साल बाद का है या'नी आँहज़रत (ﷺ) अपने आख़िरी वक़्त में शुहदा-ए-उहुद से भी रुब़सत होने के लिये वहाँ गए और उनके लिये दुआए मफ़िरत फ़र्माई

लम्बी बह्रष के बाद मौलाना अब्दुर्रहमान साहब (रह) फ़र्माते हैं, कुल्तु अज़ज़ाहिर इन्दी अन्नस्मलात अलशशहीदि लैसत बिवाजिबतिन फयजूज़ु अय्युसल्लिय अलैहा व यजूज़ु तुकुहा वल्लाहु आलमु या'नी मेरे नज़दीक शहीद पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और न पढ़ना दोनों उमूर जाइज़ हैं, वल्लाहु आलम

बाब 73 : दो या तीन आदमियों को एक क़ब्र में दफ़न करना

٧٣- بَابُ دَفْنِ الرَّجُلَيْنِ وَالثَلَاثَةِ فِي قَبْرِ وَاحِدٍ

1345. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने

١٣٤٥ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ
حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ

शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन कअब ने कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उन्हें खबर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने उहुद के दो-दो शहीदों को दफन करने में एक साथ जमा फ़र्माया। (राजेअ : 1343)

हदीस और बाब में मुताबकत जाहिर है।

बाब 74 : उस शख्स की दलील जो शुहदा का गुस्ल मुनासिब नहीं समझता

1346. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैस बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुरहमान बिन कअब ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें खून समेत दफन कर दो या'नी उहुद की लड़ाई के मौके पर और उन्हें गुस्ल नहीं दिया था। (राजेअ : 1343)

बाब 75 : बग़ली क़ब्र में कौन आगे रखा जाए

इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि बग़ली क़ब्र को लहद इसलिये कहा गया कि ये एक कोने में होती है और हर जाइर (अपनी जगह से हटी हुई चीज़ को लहद कहेंगे) इसी से है (सूरह कहफ़ में) लफ़ज़ मुल्तहदा या'नी पनाह का कोना और अगर क़ब्र सीधी (सन्दूकी) है तो उसे ज़रीह कहते हैं।

1347. हमसे मुहम्मद बिन मुक्रातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने खबर दी, उन्होंने कहा हमें लैस बिन सअद ने खबर दी, उन्होंने कहा मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन कअब बिन मालिक ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उहुद के दो-दो शहीदों को एक ही कपड़े में कफ़न देते और पूछते कि इन में कुआन किसने ज़्यादा याद किया है। फिर जब किसी एक तरफ़ इशारा कर दिया जाता तो लहद में उसी को आगे बढ़ाते और फ़र्माते जाते कि मैं इन पर गवाह हूँ। आपने खून समेत उन्हें दफन करने का हुक्म दिया। न उनकी नमाज़े जनाज़ा

عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أَحَدٍ)). [راجع: 1343]

٧٤- بَابُ مَنْ لَمْ يَرِ غَسَلَ الشَّهَدَاءِ

١٣٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((الَّذِينَ هُمْ فِي دِمَائِهِمْ))، يَغِيثُ يَوْمَ أَحَدٍ، وَلَمْ يُغَسَّلُوا. [راجع: 1343]

٧٥- بَابُ مَنْ يُقَدَّمُ فِي اللَّحْدِ.

وَسُمِّيَ اللَّحْدُ لِأَنَّهُ فِي تَاحِيَةٍ وَكُلُّ جَابِرٍ مُلْحِدٌ. «مُلْتَحِدًا»: مُغْدِلًا. وَلَوْ كَانَ مُسْتَقِيمًا كَانَ حَرِيحًا.

١٣٤٧- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أَحَدٍ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ. ثُمَّ يَقُولُ : ((أَيُّهُمَا أَكْثَرُ أَخَذًا لِلْقُرْآنِ))، فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى أَحَدِهِمَا قَدَّمَهُ فِي اللَّحْدِ وَقَالَ : ((أَنَا

पढ़ी और न उन्हें गुस्ल दिया।

(राजेअ: 1343)

1348. फिर हमें इमाम ओज़ाई ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पूछते जाते कि इनमें कुआन ज़्यादा किसने हासिल किया है? जिसकी तरफ़ इशारा कर दिया जाता आप लहद में उसी को दूसरे से आगे बढ़ाते। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे वालिद और चंचा को एक ही कम्बल में कफ़न दिया गया था।

(राजेअ: 1343)

और सुलैमान बिन क़शीर ने बयान किया कि मुझे जुहरी ने बयान किया, उनसे उस शज़इस ने बयान किया जिन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना था।

मसलके राजेह यही है जो हज़रत इमाम ने बयान फ़र्माया कि शहीद फ़ी सबीलिल्लाह पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी जाए। तफ़सील पीछे गुज़र चुकी है।

बाब 76 : इज़्ज़र और सूखी घास क़ब्र में बिछाना

1349. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वहाब ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद हुज़ाअ ने, उनसे इकरमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मक्का को हरम किया है। न मुझसे पहले किसी के लिये (यहाँ क़त्ल व ख़ून) हलाल था और न मेरे बाद होगा और मेरे लिये भी थोड़ी देर के लिये (फ़त्हे मक्का के दिन) हलाल हुआ था। पस न इसकी घास उखाड़ी जाए, न इसके पेड़ क़लम किये जाएँ। न यहाँ के जानवरों को (शिकार के लिये) भगाया जाए और सिवा उस शज़इस के जो ऐलान करना चाहता हो (कि ये गिरी हुई चीज़ किसकी है) किसी के लिये वहाँ से कोई गिरी

ثُمَّ عَلَى هَؤُلَاءِ)).

وَأَمَرَ بِذَفْنِهِمْ بِدِمَائِهِمْ، وَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِمْ،

وَلَمْ يُسَلِّهُمْ)). (راجع: ١٣٤٣)

١٣٤٨- وَأَخْبَرَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لِقَتْلَى

أَحَدٍ: ((أَيُّ هَؤُلَاءِ أَكْثَرُ أَخَذًا لِلْقُرْآنِ؟))

فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى رَجُلٍ قَدِمَهُ فِي اللَّحْدِ

قَبْلَ صَاحِبِهِ - وَقَالَ جَابِرٌ - فَكُنَّ أَيْ

وَعُمِّي فِي نَجْوَةٍ وَاحِدَةٍ)).

(راجع: ١٣٤٣)

وَقَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ: حَدَّثَنِي قَالَ

الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنِي مَنْ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ

اللَّهُ عَنْهُ.

٧٦- بَابُ الْإِذْخَرِ وَالْعَشِيثِ فِي الْقَبْرِ

١٣٤٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ

خُوَاشِبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ:

حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:

((حَرَّمَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ مَكَّةَ، فَلَمْ تَحِلَّ

لِأَحَدٍ قَبْلِي وَلِأَحَدٍ بَعْدِي، أَجَلْتُ لِي

سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ: لَا يَخْتَلِي خِلَاهَا، وَلَا

يَغْضَدُ شَجَرَهَا، وَلَا يُفَرِّقُ صِنْعَهَا، وَلَا

تُلْقَطُ لِقَطْعَتُهَا إِلَّا لِمَعْرُوفٍ)). فَقَالَ الْعَبَّاسُ

हुई चीज़ उठाना जाइज़ नहीं। इस पर हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने कहा, लेकिन इससे इज़्रार का इस्तफ़ना कर दीजिए कि ये हमारे सुनारों के और हमारी क़ब्रों में काम आती है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया मगर इज़्रार की इजाज़त है। अबू हुरैरह (रज़ि.) की नबी करीम (ﷺ) से रिवायत में है, हमारी क़ब्रों और घरों के लिये। और अब्बान बिन स़ालेह ने बयान किया, उनसे हसन बिन मुस्लिम ने, उनसे स़फ़िया बिनत शैबा ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह सुना था। और मुजाहिद ने ताऊस के वास्ते से बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ये अल्फ़ाज़ बयान किये, हमारे क़ैन (लोहारों) और घरों के लिये (हरम से इज़्रार उखाड़ना) जाइज़ कर दीजिए।

(49, 1578, 1833, 1734, 2090, 2433, 2783, 2825, 3088, 3189, 4313)

पस आपने इज़्रार नामी घास उखाड़ने की इजाज़त दे दी।

तशरीह: इस हदीष से जहाँ क़ब्र में इज़्रार या किसी सूखी घास का डालना प्राबित हुआ। वहाँ हरम मक़तुल मुक़र्रमा का भी इज़्बात हुआ। अल्लाह ने शहर मक्का को अमन का शहर बताया है। कुआन मजीद में उसे बलद अमीन कहा गया है। या'नी वो शहर जहाँ अमन है, वहाँ न किसी का क़त्ल जाइज़ है न किसी जानवर का मारना जाइज़ है यहाँ तक कि घास तक भी उखाड़ने की इजाज़त नहीं। ये वो अमन वाला शहर है जिसे अल्लाह ने रोज़े अज़ल ही से बलदे अमीन क़रार दिया है।

बाब 77 : कि मय्यित को किस ख़ास वजह से क़ब्र या लहद से बाहर निकाला जा सकता है?

इमाम बुखारी (रह) ने इस बाब में उसका जवाज़ प्राबित किया अगर किसी पर ज़हर खिलाने या ज़र्ब लगाने से मौत का गुमान हो तो उसकी लाश भी क़ब्र से निकालकर देख सकते हैं। अलबत्ता मुसलमान की लाश को चीरना किसी हदीष से प्राबित नहीं है।

1350. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, अग्र ने कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो अब्दुल्लाह बिन उबय (मुनाफ़िक़) को उसकी क़ब्र में डाला जा चुका था। लेकिन आप (ﷺ) के इशारे पर उसे क़ब्र से निकाल लिया गया। फिर आप (ﷺ) ने उसे अपने घुटनों पर रखकर लुआबे-दहन उसके मुँह में डाला और अपना कुर्ता उसे पहनाया। अब अल्लाह ही बेहतर जानता है। (ग़ालिबन मरने के बाद एक मुनाफ़िक़ के साथ इस एहसान की वजह ये थी कि)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِلَّا الْإِذْعَرُ لِمَافِيَا وَتُؤَرِنَا. فَقَالَ: ((لَا الْإِذْعَرُ)).

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَتُؤَرِنَا وَتُؤَرِنَا)). وَقَالَ أَبَانُ بْنُ صَالِحٍ عَنِ

الْحَسَنِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ حَسَّةَ ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ)) وَمَلَّةُ. وَقَالَ

مُجَاهِدٌ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: ((لَتَقْبُرَهُمْ وَتُؤَرِنَهُمْ)).

٤٩١, ١٨٣٣, ١٥٨٧, ٤٩١

٢٨٢٥, ٢٧٨٣, ٢٤٣٣, ٢٠٩٠

٤٣١٣, ٣١٨٩, ٣٠٧٧

٧٧- بَابُ هَلْ يُخْرَجُ الْمَيِّتُ مِنَ الْقَبْرِ وَاللَّحْدِ لِعِلَّةٍ

١٣٥٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ

حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَدْمَرٍ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَتَى

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي نَعْدٍ مَا أَدْخَلَ خُفْرَتَهُ، فَأَمَرَ بِهِ فَأُخْرِجَ، فَوُضِعَ عَلَى رُكْبَتَيْهِ، وَنُفِثَ عَلَيْهِ مِنْ رِيقِهِ،

وَالْبَسَ قَمِيصَهُ، لِأَنَّ اللَّهَ أَغْلَمُ وَكَانَ كَسَا

उसने हज़रत अब्बास को एक क़मीस पहनाई थी। (ग़ज़व-ए-बद्र में जब हज़रत अब्बास (रज़ि.) मुसलमानों के कैदी बन कर आए थे) सुफ़यान ने बयान किया कि अबू हासून मुसा बिन अबी ईसा कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के इस्ते'माल में दो कुर्ते थे। अब्दुल्लाह के बेटे (जो मोमिने-मुख़िलस थे) ने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मेरे वालिद को आप वो क़मीस पहना दीजिए जो आपके जिस्मे-अत्तर के करीब रहती है। सुफ़यान ने कहा कि लोग समझते हैं कि आँ हज़रत (ﷺ) ने अपना कुर्ता उसके कुर्ते के बदले पहना दिया जो उसने हज़रत अब्बास (रज़ि.) को पहनाया था।

1351. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमको बिशर बिन मुफ़ज़ज़ल ने ख़बर दी, कहा कि हमसे हुसैन मुअल्लम ने बयान किया, उनसे अताअ बिन अबी रबाह ने, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब जंगे उहुद का वक़्त करीब आ गया तो मुझे मेरे बाप अब्दुल्लाह ने रात को बुलाकर कहा कि मुझे ऐसा दिखाई देता है कि नबी करीम (ﷺ) के अस्हाब में सबसे पहला मक्तूल मैं ही होऊँगा। और देखो नबी करीम (ﷺ) के सिवा दूसरा कोई भी (अपने अज़ीज़ों और वारिषों में) तुमसे ज़्यादा अज़ीज़ नहीं है, मैं मक्क़रूज़ हूँ इसलिये तुम मेरा क़र्ज़ अदा कर देना और अपनी (नौ) बहनों से अच्छा सुलूक करना। चुनाँचे जब सुबह हुई तो सबसे पहले मेरे वालिद शहीद हुए। क़ब्र में आपके साथ मैंने एक दूसरे शख़्स को भी दफ़न किया था। पर मेरा दिल नहीं माना कि उन्हें दूसरे साहब के साथ यूँ ही क़ब्र में रहने दूँ। चुनाँचे महीने के बाद मैंने उनकी लाश को क़ब्र से निकाला देखा तो सिर्फ़ कान थोड़ा-सा गलने के सिवा बाक़ी सारा जिस्म उसी तरह था, जैसे दफ़न किया गया था।

(दीगर मक़ाम : 1352)

عَبَّاسًا قَمِيصًا وَ قَالَ سَفْيَانُ وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : وَكَانَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَمِيصَانِ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَيْسَ أَبِي قَمِيصَكَ الَّذِي بَلِي جِلْدَكَ. قَالَ سَفْيَانُ: قِيرُونَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَلَيْسَ عَبْدُ اللَّهِ. قَمِيصُهُ مَكَالَاةً لِمَا صَنَعَ.))

۱۳۵۱- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا بِشَرُّ بْنُ الْمَفْضَلِ قَالَ حَدَّثَنَا حُسَيْنُ الْمَعْلَمِ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((لَمَّا حَضَرَ أَحَدُ ذَعَالِي أَبِي مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: مَا أَرَانِي إِلَّا مَقْتُولًا فِي أَوَّلِ مَنْ يُقْتَلُ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ. وَإِنِّي لَا أَتَوَكَّلُ بَعْدِي أَغْرَ عَلَى مِنْكَ، غَرَّ نَفْسِي رَسُولَ اللَّهِ ﷺ. فَإِنِ عَلَى ذَنَابٍ، فَأَلْقِي، وَاسْتَوْصِي بِأَخَوَاتِكَ خَيْرًا. فَاصْبَحْنَا، فَكَانَ أَوَّلَ قَبِيلٍ، وَذَلَيْنَ مَعَهُ آخَرُ فِي قَبْرِ، ثُمَّ لَمْ تَطْلُبْ نَفْسِي أَنْ أَتْرُكَهُ مَعَ الْآخَرِ فَاسْتَخْرَجْتُهُ بَعْدَ سِتَّةِ أَشْهُرٍ، فَإِذَا هُوَ كَيَوْمٍ وَضَعْتُهُ هَبْنَةً، غَيْرَ أَذْنَةٍ.))

[طهره في: ۱۳۵۲.]

तस्रीह: जाबिर (रज़ि.) के वालिद अब्दुल्लाह (रज़ि.) आँ हज़रत (ﷺ) के सच्चे जॉनिषार थे और उनके दिल में जंग का जोश भरा हुआ था। उन्होंने ये ठान ली थी कि मैं काफ़िरों को मारूँगा और मरूँगा। कहते हैं कि उन्होंने एक ख़्वाब में भी देखा था कि मुबशिर बिन अब्दुल्लाह जो जंगे बद्र में शहीद हो गए थे वो उनको कह रहे थे कि तुम हमारे पास इन्हीं दिनों में आना चाहते हो। उन्होंने ये ख़्वाब आँ हज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में बयान किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारी किस्मत में शहादत लिखी हुई है। चुनाँचे ये ख़्वाब सच्चा साबित हुआ। इस हदीस से एक मोमिन की शान भी मा'लूम हो गई कि उसको आँ हज़रत (ﷺ) सबसे ज़्यादा अज़ीज़ हों।

1352. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन आभिर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे इब्ने अबी नजीह ने, उनसे अताअ बिन अबी रबाह ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे बाप के साथ एक ही क़ब्र में एक और म्हाबी (हज़रत जाबिर रज़ि. के चचा) दफ़न थे। लेकिन मेरा दिल इस पर राज़ी नहीं हो रहा था। इसलिये मैंने उनकी लाश निकालकर दूसरी क़ब्र में दफ़न कर दी। (राजेअ: 1351)

बाब 78 : बग़ली या सन्दूकी क़ब्र बनाना

1353. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें लैज़ बिन सअद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन क़अब बिन मालिक ने, और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद के शहीदों को आहज़रत (ﷺ) एक क़फ़न में दो-दो को एक साथ करके पूछते थे कि कुआन किस को ज़्यादा याद था। फिर जब किसी एक की तरफ़ इशारा कर दिया जाता तो बग़ली क़ब्र में उसे आगे कर दिया जाता। फिर आप फ़र्माते कि मैं क़यामत को इन (के ईमान) पर गवाह बनूंगा। आप (ﷺ) ने उन्हें बग़ैर गुस्ल दिए खून समेत दफ़न करने का हुक्म दिया था।

(राजेअ: 1343)

बाब 79 : एक बच्चा इस्लाम लाया फिर उसका इन्तिक़ाल हो गया, तो क्या उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएंगी? और क्या बच्चे के सामने इस्लाम की दा'वत पेश की जा सकती है?

हसन, शुरैह, इब्राहीम और क़तादा (रह.) ने कहा कि वालिदैन् में से जब कोई इस्लाम लाए तो उनका बच्चा भी मुसलमान समझा जाएगा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) भी अपने वालिद के साथ (मुसलमान समझे गये थे और मक्का के) कमज़ोर मुसलमानों में से थे। आप अपने वालिद के साथ नहीं थे जो अभी तक अपनी

۱۳۵۲- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((ذُفِنَ مَعَ أَبِي رَجُلٍ، فَلَمْ تَطْبَأْ نَفْسِي حَتَّى أَخْرَجْتُهُ، فَجَعَلْتُهُ فِي قَبْرِ أَبِي حِدْفَةَ)). (راجع: ۱۳۵۱)

۷۸- بَابُ اللَّحْدِ وَالشَّقْ فِي الْقَبْرِ ۱۳۵۳- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أَحَدٍ ثُمَّ يَقُولُ: ((أَلَهُمْ أَكْثَرُ أَخَذًا لِلْقُرْآنِ؟)) فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى أَحَدِهِمَا قُدِّمَ فِي اللَّحْدِ فَقَالَ: ((أَنَا شَهِيدٌ عَلَى هَؤُلَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))، فَأَمَرَ بِدَفْنِهِمْ بِمَوَاقِفِهِمْ، وَلَمْ يُفْسَلْهُمْ)). (راجع: ۱۳۴۳)

۷۹- بَابُ إِذَا اسْلَمَ الصَّبِيُّ فَمَاتَ هَلْ يُصَلَّى عَلَيْهِ، وَهَلْ يُقْرَأُ عَلَى الصَّبِيِّ الْإِسْلَامُ؟

وقال الحسن وشريح وإبراهيم وقادة إذا اسلم أحدكما فالولّد مع الممسيد وكذا ابن عباس رضي الله عنهما مع أمّ من المستغفرين. ولم يكن مع أي

क़ौम के दीन पर कायम थे। हुजुरे-अकरम (ﷺ) का इशारा है कि इस्लाम ग़ालिब रहता है मज़्लूब नहीं हो सकता।

1354. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनस ने, उन्हें जुहरी ने, कहा कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उमर (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ कुछ दूसरे अम्हाब के साथ इब्ने सय्याद के पास गये। आपको वो बनू मुग़ाला मकानों के पास बच्चों के साथ खेलता हुआ मिला उन दिनों इब्ने सय्याद जवानी के करीब था। उसे औहज़रत (ﷺ) के आने की कोई ख़बर ही नहीं हुई थी। लेकिन आप (ﷺ) ने उस पर अपना हाथ रखा तो उसे मा'लूम हुआ। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने सय्याद! क्या तुम गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ! इब्ने सय्याद रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ देखकर बोला, हाँ मैं गवाही देता हूँ कि आप अनपढ़ों के रसूल हैं। फिर उसने नबी करीम (ﷺ) से दरयाफ़्त किया, क्या आप भी इसकी गवाही देते हैं कि मैं भी अल्लाह का रसूल हूँ? ये बात सुनकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे छोड़ दिया और फ़र्माया, मैं अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाया। फिर आप (ﷺ) ने उससे पूछा कि तुझे क्या दिखाई देता हूँ? इब्ने सय्याद बोला कि मेरे पास सच्ची और झूठी दोनों ख़बरें आती हैं। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तो तेरा सब काम गड़बड़-मड़बड़ हो गया। फिर आप (ﷺ) ने (अल्लाह तआला के लिये) उससे फ़र्माया अच्छा मैंने एक बात दिल में रखी है, वो बतला। (आप (ﷺ) ने सूरह दुख़ान की आयत का तसव्वुर किया फ़र्तिकब यौम तातिसमाउ बिदुख़ानिम्मुबीन; इब्ने सय्याद ने कहा वो दुख़ है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया चल दूर हो तू अपनी बिसात से आगे भी न बढ़ सकेगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मुझको छोड़ दीजिए, मैं इसकी गर्दन मार देता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर ये दज्जाल है तो तू इस पर ग़ालिब न होगा और अगर दज्जाल नहीं है तो इसका मार डालना तेरे लिये बेहतर न होगा। (दीगर मक़ाम: 3055, 6173, 6618)

1355. और सालिम ने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना वो कहते थे फिर एक दिन औहज़रत (ﷺ) और

عَلَى دِينِ قَوْمِهِ، وَقَالَ: الْإِسْلَامُ يَغْلِبُ وَلَا يَغْلَى.

۱۳۵۴ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ انْطَلَقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لِي رَهْطٍ قَبْلَ ابْنِ صَيَّادٍ حَتَّى وَجَدُوهُ يَلْعَبُ مَعَ الصَّبْيَانِ عِنْدَ أَطْمِ بْنِ مَغَالَةَ - وَقَدْ قَارَبَ ابْنُ صَيَّادٍ الْحَلَمَ - فَلَمْ يَشْعُرْ حَتَّى ضَرَبَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ لِابْنِ صَيَّادٍ: ((تَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ؟)) فَظَرَّ إِلَيْهِ ابْنُ صَيَّادٍ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ الْأُمِّيِّينَ. فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ؟ فَرَفَضَهُ وَقَالَ: ((أَمَنْتُ بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ)). فَقَالَ لَهُ: مَاذَا تَرَى؟ قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: يَا نَبِيَّ صَادِقٌ وَكَاذِبٌ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَلَطَ عَلَيْكَ الْأَمْرُ)). ثُمَّ قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي قَدْ خَبَأْتُ لَكَ خَيْئًا)). فَقَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: هُوَ الدُّخُّ. فَقَالَ: ((أَخْسَأُ، فَلَمْ تَعْدُوا قُدْرَتَكَ)). فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: دَغَى يَا رَسُولَ اللَّهِ أَضْرِبُ عُنُقَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ يَكُنْهُ فَلَنْ تَسْلُطَ عَلَيْهِ، وَإِنْ لَمْ يَكُنْهُ فَلَا خَيْرَ لَكَ فِي قَتْلِهِ)).

[أطرافه في: ۳۰۵۵، ۶۱۷۳، ۶۶۱۸].

۱۳۵۵ - وَقَالَ سَالِمٌ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((انْطَلَقَ بَعْدَ

उबय बिन कअब (रज़ि.) दोनों मिलकर उन खजूर के पेड़ों में गये। जहाँ इब्ने सय्याद था (आप ﷺ चाहते थे कि इब्ने सय्याद आपको न देखे और) इससे पहले कि वो आपको देखे आप (ﷺ) गफ़लत में उससे कुछ बातें सुन लें। आखिर आँहज़रत (ﷺ) ने उसको देखा। वो एक चादर ओढ़े पड़ा था। कुछ गुन-गुन या फन-फन कर रहा था। लेकिन मुश्किल ये हुई कि इब्ने सय्याद की माँ ने दूर ही से आँहज़रत (ﷺ) को देख पाया। आप (ﷺ) खजूर के तनों में छुप-छुपकर जा रहे थे। उसने पुकार कर इब्ने सय्याद से कह दिया साफ़! ये इब्ने सय्याद का नाम था। देखो मुहम्मद आन पहुँचे। ये सुनते ही वो उठ खड़ा हुआ। आँहज़रत ने फ़र्माया काश! इब्ने सय्याद की माँ उसको बातें करने देती तो वो अपना हाल खोलता। शुऐब ने अपनी रिवायत में जम्ज़मतुन फ़रफ़सह अक्कील ने रम्रमा नक़ल किया है और मअमर ने रम्रज़ा कहा है।

(दीगर मक़ाम : 2638, 3033, 3056, 6174)

ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَبِي بَنْ كَثِيرٍ إِلَى النَّعْلِ أَلِي فِيهَا ابْنُ صَيَادٍ، وَهُوَ يَخِيلُ أَنْ يَسْمَعَ مِنْ ابْنِ صَيَادٍ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ ابْنُ صَيَادٍ، فَرَأَاهُ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ مُنْطَبِعٌ - يَغْنِي لِي قُطَيْفَةٌ لَهُ فِيهَا رَمْزَةٌ، أَوْ رَمْزَةٌ - فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَادٍ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ يَتْبَعُ بِحُلُوعِ النَّعْلِ، فَقَالَتْ لِابْنِ صَيَادٍ : يَا صَافٍ - وَهُوَ اسْمُ ابْنِ صَيَادٍ - هَلَا مُعَمَّدٌ ﷺ، فَقَارَ ابْنُ صَيَادٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ تَرَكْتُهُ بَيْنَ)).. وَقَالَ شُعَيْبٌ لِي حَدِيثُهُ: رَمْزَةٌ لِرَمْزَةٍ. وَرَمْزَةٌ. وَقَالَ إِسْحَاقُ وَ عُقَيْلٌ رَمْزَةٌ. وَقَالَ مَقْمَرٌ: رَمْزَةٌ. [أطرافه] ي: ٢٦٣٨, ٣٠٣٣

[٦١٧٤, ٣٠٥٦]

तशरीह: इब्ने सय्याद एक यहूदी लड़का था जो मदीना में दज़्लो-फ़रेब की बातें कर करके अ़वाम को बहकाया करता था। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर इस्लाम पेश फ़र्माया। उस समय वो नाबालिग था। उससे इमाम बुखारी (रह.) का मक्सदे बाब हुआ। आप (ﷺ) उसकी तरफ से मायूस हो गए कि वो ईमान लाने वाला नहीं या आप (ﷺ) ने जवाब में उसको छोड़ दिया या'नी उसकी निस्बत ला व नअम कुछ नहीं कहा सिर्फ़ इतना फ़र्मा दिया कि मैं अल्लाह के सब पैग़म्बरों पर ईमान लाया।

कुछ रिवायतों में फ़रफ़सह स़ाद मुहमला से है कि या'नी एक लात उसको जमाई। कुछ ने कहा कि आप (ﷺ) ने उसे दबाकर भींचा आप (ﷺ) ने जो कुछ उससे पूछा उससे आपकी ग़र्ज़ महज़ ये थी कि उसका झूठ खुल जाए और उसका पैग़म्बरी का दा'वा ग़लत हो। इब्ने सय्याद ने जवाब में कहा कि मैं कभी सच्चा कभी झूठा ख़्वाब देखता हूँ, ये शख्स काहिन था उसकी झूठी सच्ची ख़बरें शैतान दिया करते थे। दुखान की जगह सिर्फ़ लफ़ज़ दुख कहा। शैतानों की इतनी ही ताक़त होती है कि एक आध कलिमा उचक लेते हैं, उसी में झूठ मिलाकर मशहूर करते हैं (खुलासा वहीदी) मज़ीद तफ़्सील दूसरी जगह आएगी।

1356. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक यहूद लड़का (अब्दुल कुहूस) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत किया करता था, एक दिन वो बीमार हो गया। आप (ﷺ) उसका मिजाज़ मा'लूम करने के लिये तशरीफ़ लाए और उसके सिरहाने बैठ गये और फ़र्माया मुसलमान हो जा। उसने अपने

١٣٥٦ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ وَهُوَ ابْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ غُلَامٌ يَهُودِيٌّ يَخْدُمُ النَّبِيَّ ﷺ لَعَرَجًا، فَأَنَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَغُودُهُ، فَقَعَدَ عِنْدَ رَأْسِهِ فَقَالَ

बाप की तरफ देखा, बाप वहीं मौजूद था। उसने कहा कि (क्या मुजायका है) अबुल कासिम (ﷺ) जो कुछ कहते हैं मान ले। चुनाँचे वो बच्चा इस्लाम ले आया। जब ओहजरत (ﷺ) बाहर निकले तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि शुक्र है अल्लाह पाक का जिसने इस बच्चे को जहन्नम से बचा लिया।

(दीगर मक़ाम : 5656)

1357. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन ज़ययना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) को ये कहते सुना था कि मैं और मेरी वालिदा (ओहजरत ﷺ की हिजरत के बाद में) कमज़ोर मुसलमानों में से थे। मैं बच्चों में और मेरी वालिदा औरतों में।

(दीगर मक़ाम : 4578, 4588, 4597)

जिसका ज़िक्र सूरह निसा की आयतों में है, बल्मुस्तज़अफ़ीन मिनरिजालि बन्निसाइ बल्बिलदानि और इल्लल मुस्तज़अफ़ीन मिनरिजालि बन्निसाइ बल्बिलदानि

1358. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि इब्ने शिहाब, हर उस बच्चे की जो वफ़ात पा गया हो, नमाज़े जनाज़ा पढ़ते थे। अगरचे वो हुराम ही का बच्चा क्यों न हो क्योंकि उसकी पैदाइश इस्लाम की फ़ितरत पर हुई। या'नी उस सूरत में जबकि उसके वालिदैन् मुसलमान होने के दावेदार हों। अगर सिर्फ़ बाप मुसलमान हो और माँ का मज़हब इस्लाम के सिवा कोई और हो जब भी। बच्चे के रोने की पैदाइश के वक़्त अगर आवाज़ सुनाई देती तो उस पर नमाज़ पढ़ी जाती। लेकिन अगर पैदाइश के वक़्त कोई आवाज़ न आती तो उसकी नमाज़ नहीं पढ़ी जाती थी। बल्कि ऐसे बच्चे को कच्चा हल गिर जाने के दर्जे में समझा जाता था क्योंकि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने रिवायत किया है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर बच्चा फ़ितरत (इस्लाम) पर पैदा होता है। फिर उसके माँ-बाप उसे यहूदी या नस्रानी या मजूसी बना देते हैं, जिस तरह तुम देखते हो कि जानवर सहीह सालिम बच्चा जनता है। क्या तुमने कोई कान

لَهُ: (أَسْلَمَ)). فَظَرَّ إِلَى أَبِيهِ وَهُوَ حَيَّةٌ، فَقَالَ لَهُ: اطْعِ أَبَا الْقَاسِمِ ۖ فَاسْلَمَ. فَنَجَّ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ يَقُولُ: ((الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْقَذَهُ مِنَ النَّارِ)).

[طرفه ي: ٥٦٥٦]

١٣٥٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: قَالَ عُمَيْدُ اللَّهِ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِنَ الْمُسْتَعْنِفِينَ: أَنَا مِنَ الْوِلْدَانِ، وَأُمِّي مِنَ النِّسَاءِ)).

[أطرافه ي: ٤٥٨٧، ٤٥٨٨، ٤٥٩٧]

١٣٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: يُصَلِّي عَلَى كُلِّ مَوْلُودٍ مَوْتًا وَإِنْ كَانَ يَغِيثًا مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ وَلَدَ عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، يَدْعِي أَبَوَاهُ الْإِسْلَامَ أَوْ أَبَاهُ خَاصَّةً وَإِنْ كَانَتْ أُمُّهُ عَلَى غَيْرِ الْإِسْلَامِ، إِذَا اسْتَهْلَ صَارِخًا صَلَّى عَلَيْهِ، وَلَا يُصَلِّي عَلَى مَنْ لَا يَسْتَهْلُ مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ مَقْطُوعٌ، فَإِنْ أَبَا مُرْتَرَةً رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَانَ يُحَدَّثُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَاهُ أَوْ يُنَصْرَانِهِ أَوْ يُمَجْسِسَانِهِ، كَمَا تَتَّبِعُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةَ جَمْعًا، هَلْ تَجِسُّونَ فِيهَا مِنْ بَعْدِهَا؟))

कटा हुआ बच्चा भी देखा है? फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने इस आयत को तिलावत किया, ये अल्लाह की फ़ितरत है, जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है। (दीगर मक़ाम : 1309, 1380, 4775)

तशरीह :

कस्तलानी ने कहा कि अगर वो चार महीने का बच्चा हो तो उसको गुस्ल और कफ़न देना वाजिब है, इसी तरह दफ़न करना लेकिन नमाज़ वाजिब नहीं क्योंकि उसने आवाज़ नहीं की और अगर चार महीने से कम का हो तो एक कपड़े में लपेटकर दफ़न कर दिया जाए।

1359. हमसे अब्ददान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमको यूनस ने ख़बर दी, उन्हें जुहदी ने, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है लेकिन उसके माँ-बाप उसे यहूदी या नज़रानी या मजूसी बना देते हैं बिल्कुल उसी तरह जैसे एक जानवर एक सहीह सालिम जानवर जनता है। क्या तुम उसका कोई अज़ब (पैदाइशी तौर) पर कटा हुआ देखते हो? फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ये अल्लाह तआला की फ़ितरत है जिस पर लोगों को उसने पैदा किया है। अल्लाह तआला की रज़लक़त में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं, यही दीने-क़य्यिम है। (राजेअ : 1307)

ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ﴿فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ.

[أطرافه في: ١٣٥٩، ١٣٨٥، ٤٧٧٥]

[٥٦٩٩]

١٣٥٩ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ الزُّوَيْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو بَلْتَعَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَاهُ أَوْ نَصْرَانِيَّةً أَوْ يُمَجْسَانِيَّةً، كَمَا تَتَّبِعُ الْبَهِيمَةُ الْبَهِيمَةَ جُمُعَاءَ، هَلْ تَجْسُونَ فِيهَا مِنْ جَذَعَاءَ؟)) ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ﴿فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا، لَا تَبْدِيلَ لِغَلْقِ اللَّهِ، ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ﴾.

[راجع: ١٣٥٨]

बाब का मतलब इस हदीष से यूँ निकलता है कि जब हर एक आदमी की फ़ितरत इस्लाम पर हुई तो बच्चे पर भी इस्लाम पेश करना और उसका इस्लाम लाना सही होगा। इब्ने शिहाब ने इस हदीष से ये निकाला कि हर बच्चे पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए क्योंकि वो इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा हुआ है। उस यहूदी बच्चे ने अपने बाप की तरफ़ देखा गोया उससे इजाज़त चाही जब उसने इज़्ज़त दे दी तो वो शौक से मुसलमान हो गया। बाब और हदीष में मुताबक़त ये है कि आप (ﷺ) ने उस बच्चे से मुसलमान होने के लिये फ़र्माया। इस हदीष से अख़लाक़े मुहम्मदी पर भी रोशनी पड़ती है कि आप अज़ राहे हमददी मुसलमान और ग़ैर-मुसलमान सबके साथ मुहब्बत का बर्ताव करते और जब भी कोई बीमार होता तो उसकी मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जाते थे।

बाब 80 : जब एक मुशरिक मौत के वक़्त

ला इलाह इल्लल्लाह कह ले

٨٠ - بَابُ إِذَا قَالَ الْمُشْرِكُ عِنْدَ

الْمَوْتِ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

या'नी जब तक मौत का यक़ीन न हुआ हो और मौत की निशानियाँ जाहिर न हुई हों क्योंकि उनके जाहिर होने के बाद फिर ईमान लाना फ़ायदा नहीं करता। अबू तालिब को भी आप (ﷺ) ने नज़अ से पहले ईमान लाने को फ़र्माया होगा या अगर नज़अ की

हालत शुरू हो गई थी तो ये अबू तालिब की खुसूसियत होगी जैसे आपकी दुआ से उसके अज़ाब में तख़फ़ीफ़ हो जाएगी।

1360. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा कि हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मेरे बाप (इब्राहीम बिन सअद) ने स़ालेह बिन कैसान से ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्होंने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने अपने बाप (मुसय्यिब बिन हज़्ज़ रज़ि.) से ख़बर दी, उनके बाप ने उन्हें ख़बर दी कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त करीब आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ लाए। देखा तो उनके पास उस वक़्त अबू जहल बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन उमय्या बिन मुगीरह मौजूद थे। आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि चचा! आप एक कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कह दीजिए ताकि मैं अल्लाह तआला के यहाँ इस कलिमे की वजह से आपके हक़ में गवाही दे सकूँ। इस पर अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या वग़ैरह ने कहा अबू तालिब! क्या तुम अपने बाप अब्दुल मुत्तलिब के दीन से फिर जाओगे? रसूलुल्लाह (ﷺ) बार-बार कलिम-ए-इस्लाम उन पर पेश करते रहे। अबू जहल और इब्ने अबी उमय्या भी अपनी बात दोहराते रहे। आख़िर अबू तालिब की आख़िरी बात ये थी कि वो अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर ही रहे। उन्होंने ला इलाह इल्लल्लाह कहने से इन्कार कर दिया फिर भी रसूलुल्लाह ने फ़र्माया कि मैं आपके लिये इस्तिफ़ार करता रहूँगा। यहाँ तक कि मुझे मना न कर दिया जाए। इस पर अल्लाह तआला ने आयत व मा कान लिन्नबियि नाज़िल फ़र्माई। (सूरह तौबा : 113)

(दीगर मक़ाम : 3884, 4670, 4882, 6681)

तशरीह : जिसमें कुफ़्र व मुश्रिकीन के लिये इस्तिफ़ार की मुमानअत कर दी गई थी। अबू तालिब के आँहज़रत (ﷺ) पर बड़े एहसानात थे। उन्होंने अपने बच्चों से ज़्यादा आँहज़रत (ﷺ) को पाला और परवरिश की और काफ़िरों की ईज़ादेही से आपको बचाते रहे। इसलिये मुहब्बत की वजह से आपने ये फ़र्माया कि ख़ैर में तुम्हारे लिये दुआ करता रहूँगा और आपने उनके लिये दुआ शुरू की। जब सूरह तौबा की आयत व मा लिन्नबियि नाज़िल हुई कि पैग़म्बर और ईमानवालों को चाहिये कि मुश्रिकों के लिये दुआ न करें, उस वक़्त आप रुक गए। हदी़ से ये निकला कि मरते वक़्त भी अगर मुश्रिक शिर्क से तौबा कर ले तो उसका ईमान सही होगा। बाब का यही मतलब है। मगर ये तौबा सकरात से पहले होनी चाहिये। सकरात की तौबा कुबूल नहीं जैसा कि कुआनी आयत फ़लम यकु यन्फ़इहुम ईमानुहुम लम्मा रऔ बासना (गाफ़िर : 85) में मज़कूर है।

۱۳۶۰- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ أَخْبَرَنِي ((أَنَّهُ لَمَّا حَضَرَتْ أَبَا طَالِبٍ الْوَفَاةُ جَاءَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَوَجَدَ عِنْدَ أَبَا جَهْلٍ بْنُ هِشَامٍ وَعِنْدَ اللَّهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِأَبِي طَالِبٍ: ((يَا عَمُّ، قُلْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ كَلِمَةً أَشْهَدُ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللَّهِ)). فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَعِنْدَ اللَّهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ: يَا أَبَا طَالِبٍ: أَرِغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُعْرِضُهَا عَلَيْهِ وَيَتَوَدَّدَانِ بِبَلِّكَ الْمَقَالَةَ حَتَّى قَالَ أَبُو طَالِبٍ آخِرَ مَا كَلَّمَهُمْ: هُوَ عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَأَبَى أَنْ يَقُولَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((أَمَّا وَاللَّهِ لَا اسْتَفِيرُونَ لَكَ مَا لَمْ أَنَّهُ عَنْكَ)) فَانْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى فِيهِ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ﴾ الآية. [أطرافه ن: ۳۸۸۴، ۴۶۷۰، ۴۷۷۲]

[۶۶۸۱]

बाब 18 : कब्र पर खजूर की डाल लगाना

और बुरैदा अस्लमी सहाबी (रज़ि.) ने वसियत की थी कि उनकी कब्र पर दो शाखें लगा दी जाएँ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) की कब्र पर खैमा तना हुआ देखा तो कहने लगे कि ऐ गुलाम! इसे उखाड़ डाल, अब इन पर इनका अमल साया करेगा। और खारिजा बिन ज़ैद ने कहा कि इम्रान (रज़ि.) के ज़माने में मैं जवान था और फलोंग लगाने में सबसे ज़्यादा समझा जाता था जो इम्रान बिन मज़ज़न (रज़ि.) की कब्र पर फलोंग लगा कर उस पार को जाता और इम्रान बिन हकीम ने बयान किया कि खारिजा बिन ज़ैद ने मेरा हाथ पकड़कर एक कब्र पर मुझको बिठाया और अपने चचा यज़ीद बिन श़ाबित से रिवायत किया कि कब्र पर बैठना उसको मना है जो पेशाब या पाखाना के लिये उस पर बैठे। और नाफ़ेअ ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कब्रों पर बैठा करते थे।

1361. हमसे यद्दा बिन जा'फ़र बैकुन्दी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू मुआविया ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताऊस ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) का गुजर ऐसी दो कब्रों पर हुआ जिन पर अज़ाब हो रहा था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन पर अज़ाब किसी बहुत बड़ी बात पर नहीं हो रहा है, सिर्फ़ ये कि इनमें एक शख्स पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा शख्स चुगलखोरी किया करता था। फिर आप (ﷺ) ने खजूर की एक हरी डाली ली और उसके दो टुकड़े करके दोनों कब्रों पर एक-एक टुकड़ा गाड़ दिया। लोगों ने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप ने ऐसा क्यों किया? आपने फ़र्माया कि शायद उस वक़्त तक के लिये उन पर अज़ाब कुछ हल्का हो जाए, जब तक ये खुश्क न हो। (राजेअ: 216)

٨١- بَابُ الْجَرِيدِ عَلَى الْقَبْرِ
وَأَوْصَى بُرَيْدَةُ الْأَسْلَمِيُّ أَنْ يُجْعَلَ فِي قَبْرِهِ جَرِيدَتَانِ وَرَأَى ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فُسْطَاطًا عَلَى قَبْرِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ فَقَالَ: انْزِعْهُ يَا غُلَامُ، فَإِنَّمَا يُظِلُّهُ عَمَلُهُ.
وَقَالَ خَارِجَةُ بْنُ زَيْدٍ: رَأَيْتُنِي وَنَحْنُ شَبَابٌ فِي زَمَنِ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَإِنْ أَحَدُنَا وَتَبَةُ الَّذِي يُسَبُّ قَبْرَ عُثْمَانَ بْنِ مَطْعُونٍ حَتَّى يُجَاوِزَهُ. وَقَالَ عُثْمَانُ بْنُ حَكِيمٍ: أَخَذَ بِيَدِي خَارِجَةُ فَأَجْلَسَنِي عَلَى قَبْرِ وَأَخْبَرَنِي عَنْ عُمَرَ بْنِ زَيْدٍ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: إِنَّمَا كُرِهَ ذَلِكَ لِمَنْ أَخَذَتْ عَلَيْهِ. وَقَالَ نَافِعٌ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَجْلِسُ عَلَى الْقُبُورِ.

١٣٦١- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ مَرَّ بِقَبْرَيْنِ يُعَذَّبَانِ فَقَالَ: ((أَنْهُمَا لَيُعَذَّبَانِ، وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَثِيرٍ: أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكَانَ لَا يَسْتَبْرِئُ مِنَ الْبَوْلِ، وَأَمَّا الْآخَرُ فَكَانَ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ)).
ثُمَّ أَخَذَ جَرِيدَتَهُ رَطْبَةً فَشَقَّهَا بِيَتْنَيْنِ، ثُمَّ غَرَزَ فِي كُلِّ قَبْرٍ وَاحِدَةً. فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لِمَ صَنَعْتَ هَذَا؟ فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ أَنْ يُخَفَّفَ عَنْهُمَا، مَا لَمْ يَتَسَاءَلَا)).

तशीह :

आँहजरत (ﷺ) ने एक कब्र पर खजूर की डालियाँ लगा दी थीं। कुछ ने कहा कि ये मसनून है, कुछ कहते हैं कि ये आँहजरत (ﷺ) का खास था और किसी को डालियाँ लगाने में कोई फायदा नहीं। चुनौचे इमाम बुखारी (रह) इब्ने उमर (रज़ि.) का अपर उसी बात को प्राबित करने के लिये लाए। इब्ने उमर और बुरैदा (रज़ि.) के अपर को इब्ने सअद ने वस्ल किया। खारजा बिन जैद के अपर को इमाम बुखारी (रह) ने तारीखे सगीर में वस्ल किया। इस अपर और उसके बाद के अपर को बयान करने से इमाम बुखारी (रह) की गर्ज ये है कि कब्रवालों को उसके अमल ही फायदा देते हैं। ऊँची चीज़ लगाना जैसे शाखें वगैरह या कब्र की इमारत ऊँची बनाना या कब्र पर बैठना ये चीज़ें जाहिर में कोई फायदा या नुकसान देने वाली नहीं हैं। ये खारजा बिन जैद अहले मदीना के सात फुक्रहा में से हैं। उन्होंने अपने चचा यजीद बिन प्राबित से नक़ल किया कि कब्र पर बैठना उसको मकरूह है जो उस पर पाखाना या पैशाब करे। (वहीदी)

अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, क़ाल इब्नु रशीद व यज़हक़ मिन तसरफ़िलबुखारी अन्न ज़ालिक खासुन बिहिमा फ़लिज़ालिक अकबहू बि कौलिबि इमर इन्नमा यज़िल्लुहू अमलहू (फ़तुल बारी) या'नी इब्ने रशीद ने कहा कि इमाम बुखारी (रह.) के तसरफ़ से यही जाहिर होता है कि शाखों के गाड़ने का अमल उन ही दोनों क़ब्रों के साथ खास था। इसलिये इमाम बुखारी (रह) इस ज़िक्र के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का क़ौल लाए हैं कि उस मरने वाले का अमल ही उसको साया कर सकेगा। जिनकी क़ब्रों पर ख़ैमा देखा गया था वो अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने ये ख़ैमा दूर करा दिया था। क़ब्रों पर बैठने के बारे में जुम्हूर का क़ौल यही है कि नाजाइज़ है। इस बारे में कई एक अह्दादीष भी वारिद हैं चंद हदीष मुलाहिज़ा फ़र्माएँ।

अन अबी हुरैरत रज़ियल्लाहु अन्हु क़ाल क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) लिअन्यज़िलस अहदुकुम अला जमरतिन फतुहरिंकु शियाबहू फतखल्लस इला जिल्दिही खैरुन लहू मिन अय्यज़िलस अला क़ब्रिन रवाहुल्जमाअतु इल्लबुखारी व तिमिज़ी या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें से कोई अगर किसी अंगारे पर बैठे कि वो उसके कपड़े और जिस्म को जला दे तो उससे बेहतर है कि कब्र पर बैठे।

दूसरी हदीष अमर बिन हज़म से मरवी है, 'रअनी रसूलुल्लाहि (ﷺ) मुत्तकिअन क़ब्रिन फ़क़ाल ला तुज़ि स़ाहिब हाज़ल क़ब्रि औ ला तुज़ु रवाहु अहमद' या'नी मुझे आँहजरत (ﷺ) ने एक कब्र पर तकिया लगाए हुए देखा तो आपने फ़र्माया इस कब्र वाले को तकलीफ़ न दे। इन्हीं अह्दादीष की बिना पर क़ब्रों पर बैठना मना है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का फ़ेअल जो मज़कूर हुआ कि आप क़ब्रों पर बैठा करते थे, तो शायद उनका खयाल ये हो कि बैठना उसके लिये मना है जो उस पर पाखाना पेशाब करे। मगर दीगर अह्दादीष की बिना पर मुतलक़ बैठना भी मना है जैसा कि मज़कूर हुआ या उनका कब्र पर बैठने से मुराद सिर्फ़ टेक गलाना है न कि ऊपर बैठना।

हदीषे मज़कूर से कब्र का अज़ाब भी प्राबित हुआ जो बरहक़ है जो कई आयाते कुआनी व अह्दादीषे नबवी से प्राबित है। जो लोग अज़ाबे कब्र का इंकार करते और अपने आपको मुसलमान कहलाते हैं। वो कुआन व हदीष से बेबहरा (नावाकिफ़) और गुमराह है। हदाहुमुल्लाहु आमीन!

बाब 82 : कब्र के पास आलिम का बैठना और लोगों को नसीहत करना और लोगों का उसके इर्दगिर्द बैठना

सूरह क्रमर में आयत यखतरून मिनलअज्दाषि में अज्दाष से क़ब्रें मुराद हैं और सूरह इन्फ़ितार में बुअषिरत के मा'नी उठाए जाने के है। अरबों के क़ौल में बअषरतु हौज़ी का मतलब ये कि हौज़ का

٨٢- بَابُ مَوْعِظَةِ الْمُحَدِّثِ عِنْدَ الْقَبْرِ، وَقُعُودِ أَصْحَابِهِ حَوْلَهُ

﴿يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ﴾ : الْأَجْدَاثُ الْقُبُورُ. ﴿بَغِيرَتٍ﴾ : الْيَوْمَ

निचला हिस्सा ऊपर कर दिया। ईफ़ाज़ के मा'नी जल्दी करना। और आ'मश की किरात में इला नसब बिफ़तिनून है या'नी एक शय मन्सूब की तरफ तेज़ी से दौड़ी जा रही है ताकि उससे आगे बढ़ जाए। नुस्ब बिज़मिनून वाहिद है और नज़ीब बिफ़तिनून मस्दर रहे और सूरह क़ाफ़ में यौमल ख़ुरूज से मुराद मुदों का क़ब्रों से निकलना है और सूरह अंबिया में यन्सिलून यख़रूजुन के मा'नी में है।

بَعَثْتُ خَوْصِي: أَيْ جَعَلْتُ اسْتَفْلَةَ أَغْلَاةٍ.
الإِبْطَافُ: الإِسْرَافُ. وَلَوْ أَلْأَعْمَشُ:
﴿إِلَى نَصْبٍ﴾: إِلَى شَيْءٍ مَّنْصُوبٍ
يَسْتَبْقُونَ إِلَيْهِ. وَالنَّصْبُ وَاحِدٌ، وَالنَّصْبُ
مَصْنَعٌ. يَوْمَ الْخُرُوجِ مِنْ قُبُورِهِمْ:
﴿يَنْسِلُونَ﴾ يَخْرُجُونَ.

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने अपनी आदत के मुताबिक यहाँ भी कई एक कुआनी अल्फ़ाज़ की तशरीह फ़र्मा दी। क़ब्रों की मुनासबत से अज्दाफ़ के मा'नी और बुअशिरत के मा'नी बयान कर दिये। आयत में है कि क़ब्रों से इस तरह निकलकर भागेंगे जैसे थानों की तरफ़ दौड़ पड़ते हैं। इस मुनासबत से ईफ़ाज़ और नसब के मा'नी बयान किये। ज़ालिक यौमल ख़ुरूज में ख़ुरूज से क़ब्रों से निकलना मुराद है। इसलिये यन्सिलून का मा'नी बयान कर दिया क्योंकि वो भी यख़रूजून के मा'नी में है।

हज़रत मुज्तिहिदे मुत्तलक इमाम बुखारी (रह) ने ये प्राबित किया कि क़ब्रिस्तान में अगर फ़ुर्सत नज़र आए तो इमाम, आलिम, मुहद्दिष वहाँ लोगों को आखिरत याद दिलाने और प्रवाब और अज़ाबे क़ब्र पर मुत्तलअ करने के लिये कुआन व हदीष की रोशनी में वा'ज़ सुना सकता है जैसा कि खुद आहज़रत (ﷺ) ने वा'ज़ सुनाया।

मगर किस क़दर अफ़सोस की बात है कि बेशतर लोग जो क़ब्रिस्तान में जाते हैं वो महज़ तफ़रीह वहाँ वक़्त गुज़ार देते हैं और बहुत से हुक्का-सिगरेटोशी में मस्रूफ़ रहते हैं और बहुत से मिट्टी लगने तक इधर-उधर मटराशत करते रहते हैं। इसलिये ऐसे लोगों को सोचना चाहिये कि आखिर उनको भी आना है और क़ब्र में दाख़िल होना है। किसी न किसी दिन तो क़ब्रों को याद कर लिया करें या क़ब्रिस्तान में जाकर तो मौत और आखिरत की याद से अपने दिलों को पिघलाया करें। अल्लाह तआला सबको नेक समझ अता करे। आमीन।

अहले बिदअत ने बजाय मसनून तरीका के क़ब्रिस्तानों में और नित नए तरीके ईजाद कर लिये हैं और अब तो नई बिदअत ये निकाली गई है कि दफ़न करने के बाद क़ब्र पर अज़ान देते हैं। अल्लाह जाने अहले बिदअत को ऐसी नई बिदआत कहाँ से सूझती हैं। अल्लाह तआला बिदअत से बचाकर सुन्नत पर अमलपैरा होने की तौफ़ीक़ बख़शे। आमीन!

1362. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझ से जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर बिन मुअतमिर ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्बाद ने, उनसे अबू अब्दुर्रहमान अब्दुल्लाह बिन हबीब ने और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि हम बक्कीअ शरक़द में एक जनाज़े के साथ थे। इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए और बैठ गये हम भी आप के इर्दगिर्द बैठ गये। आपके पास एक छड़ी थी जिससे आप ज़मीन कुरेदने लगे। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम में से कोई ऐसा नहीं या कोई जान ऐसी नहीं जिसका ठिकाना जन्नत और दोज़ख़ दोनों जगह न लिखा गया हो और ये

۱۳۶۲- حَدَّثَنَا عُمَانُ قَالَ حَدَّثَنِي جَرِيرٌ
عَنْ مَنصُورٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي
عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
قَالَ: ((كُنَّا فِي جَنَازَةٍ لِي بَقِيْعِ الْغَرْقَدِ،
فَأَتَانَا النَّبِيُّ ﷺ فَقَعَدَ، وَقَعَدْنَا حَوْلَهُ، وَمَعَهُ
مِخْصَرَةٌ. فَكَسَّ فَجَمَلَ يَنْكُثُ
بِمِخْصَرَتِهِ، ثُمَّ قَالَ: ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ
أَوْ مَا مِنْ نَفْسٍ مَّنْقُوسَةٍ إِلَّا كُتِبَ مَكَانُهَا

भी कि वो नेक बख्त होगी या बदबख्त। इस पर एक सहाबी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! फिर क्यों न हम अपनी तकदीर पर भरोसा कर लें कि अमल छोड़ दें क्योंकि जिसका नाम नेक दफ्तर में लिखा गया है वो जरूर नेक काम की तरफ रुजू होगा और जिसका नाम बदबख्तों में लिखा है वो जरूर बदी की तरफ जाएगा। हजूर (ﷺ) ने फर्माया कि बात ये है कि जिनका नाम नेकबख्तों में है उनको अच्छे काम करने में ही आसानी मा'लूम होती है और बदबख्तों को बुरे कामों में आसानी नजर आती है। फिर आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत फर्माई, फ़अम्मा मन आता वतका।

(दीगर मक़ाम : 4945, 4946, 4947, 4948, 6217, 6605, 7752)

مِنَ الْحَيَةِ وَالنَّارِ، وَإِلَّا لَقَدْ كُيِّمَتْ حَقِيقَةٌ أَوْ سَعِيدَةٌ)). فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَفَلَا تَتَكَلَّمُ عَلَيَّ كَيْبَانًا وَتَدْعُ الْعَمَلَ، لِمَنْ كَانَ مِنَّا مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ فَتَسْمِيَهُ إِلَى عَمَلِ أَهْلِ السَّعَادَةِ، وَأَمَّا مَنْ كَانَ مِنَّا مِنْ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ فَتَسْمِيَهُ إِلَى عَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ؟ قَالَ: ((أَمَّا أَهْلُ السَّعَادَةِ فَيُسَمُّونَ لِعَمَلِ السَّعَادَةِ، وَأَمَّا أَهْلُ الشَّقَاوَةِ فَيُسَمُّونَ لِعَمَلِ الشَّقَاوَةِ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿فَأَمَّا مَنْ أَطْعَىٰ وَأَقْنَىٰ﴾ (الْأَنفُسِ)).

[أطرافه ن: ٤٩٤٥، ٤٩٤٦، ٤٩٤٧]

[٤٩٤٨، ٦٢١٧، ٦٦٠٥، ٧٧٥٢]

या'नी जिसने अल्लाह तआला की राह में दिया और परहेजगारी इख्तियार की और अच्छे दीन को सच्चा माना उसको हम आसानी के घर या'नी जन्नत में पहुँचाने की तौफ़ीक़ देंगे। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं कि इस हदीष की शरह वल्लैल की तफ़सीर में आएगी और ये हदीष तकदीर के इल्बात में एक असले अज़ीम है। आपके फ़र्माने का मतलब ये है कि अमल करना और मेहनत करना जरूरी है। जैसे हकीम कहता है कि दवा खाए जाओ हालाँकि शिफ़ा देना अल्लाह का काम है।

बाब 83 : बाब जो शख्स खुदकुशी कर ले उसकी सज़ा का बयान

٨٣- بَابُ مَا جَاءَ لِي قَاتِلِ النَّفْسِ

तरीह: इस बाब के लाने से हज़रत इमाम बुखारी (रह) की गर्ज ये है कि जो शख्स खुदकुशी करे जब वो जहन्नमी हुआ तो उस पर जनाजे की नमाज़ न पढ़ना चाहिये और शायद इमाम बुखारी (रह) ने उस हदीष की तरफ़ इशारा किया जिसे अह्मदबे सुनन ने जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से निकाला कि आहज़रत (ﷺ) के सामने एक जनाज़ा लाया गया। उसने अपने तई तीरों से मार डाला था तो आहज़रत (ﷺ) ने उस पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़ाई। मगर निसाई की रिवायत से मा'लूम हुआ कि सहाबा किराम (रज़ि.) ने पढ़ ली तो मा'लूम हुआ कि और लोगों की इबरत के लिये जो इमाम और मुक्तदा (अगुवाई करने वाला) हो वो इस पर नमाज़ न पढ़ें लेकिन अवाम पढ़ सकती है। और इमाम शाफ़िई (रह) और अबू हनीफ़ा (रह) और जुम्हूर उलमा ये कहते हैं कि फ़ासिक़ पर नमाज़ पढ़ी जाएगी। ये भी फ़ासिक़ है और उत्तरत और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और ओज़ाई के नज़दीक़ फ़ासिक़ पर नमाज़ न पढ़ें, इसी तरह बाग़ी और डाकू पर भी। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) इब्ने मुनीर का क़ौल यूँ नक़ल करते हैं, आदतुलबुखारी इज़ा तवक्क़फ़ फ़ी शैइन तरज्जम अलैहि तर्जमतुन मुब्हमतुन कअन्नहू युनब्बिहु अला तरीक़िल्इज्तिहादि व क़द नुक़िल अन मालिक अन्न कातिलन्नफ़्स ला तुक्बलु तौबतुहू व मुक्तजाहू अल्ला युसल्लिय अलैहि व हुब नफ़्सु क़ौलिलबुखारी

या'नी इमाम बुखारी (रह) की आदत ये है कि जब उनको किसी अम्म में तवक्क़फ़ होता है तो उस पर मुबहम बाब मुनक़िद फ़र्माते हैं। गोया वो तरीक़े इज्तिहाद पर आगाह करना चाहते हैं और इमाम मालिक (रह) से मन्कूल है कि क़ातिले नफ़्स की तौबा कुबूल नहीं होती और उसी का मुक्तजाह है कि उस पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी जाए। इमाम बुखारी (रह.) का यही मंशा है।

1363. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे जैद बिन जुरीअ ने बयान किया, कहा कि हमसे खालिद हज्जाअ ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे श़ाबित बिन ज़ह्हाक़ (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन पर होने की झूठी क़सम क़स्दन खाएँ तो वो ऐसा ही हो जाएगा कि जैसा कि उसने अपने लिये कहा है और जो शख्स अपने को धारदार चीज़ से ज़िन्ह कर ले उसे जहन्नम में ऐसे ही हथियार से अज़ाब होता रहेगा।

(दीगर मक़ाम : 4171, 4743, 6047, 6105, 6652)

۱۳۶۳- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي لَيْلَى عَنْ ثَابِتِ بْنِ الصَّخَالِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((مَنْ خَلَفَ بِمَلَةٍ غَيْرِ الْإِسْلَامِ كَادَتْهَا مُتَعَمِّدًا فَهُوَ كَمَا قَالَ، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ غُلِبَ بِهِ لِي نَارٍ جَهَنَّمَ)). [أطرافه في: ٤١٧١، ٤٨٤٣،

[٦٦٥٢، ٦١٠٥، ٦٠٤٧]

۱۳۶۴- وَقَالَ حَبَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَارِثٍ عَنْ الْحَسَنِ ((قَالَ حَدَّثَنَا جُنْدَبٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ لَمَّا نَسِينَا وَمَا نَخَافُ أَنْ يَكْذِبَ جُنْدَبٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((كَانَ بِرَجُلٍ جَوَاحُ قَتَلَ نَفْسَهُ، فَقَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: يَذَرْنِي عَبْدِي بِنَفْسِهِ، حَرُمْتُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ)).

[طرفه في: ٣٤٦٣]

۱۳۶۵- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((الَّذِي يَخْتَقُ نَفْسَهُ يَخْتَفِئُ فِي النَّارِ، وَالَّذِي يَطْعُنُهَا يَطْعُنُهَا فِي النَّارِ)).

[طرفه في: ٥٧٧٨]

۸۴- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ الصَّلَاةِ عَلَى الْمُنَافِقِينَ وَالْإِسْتِغْفَارِ لِلْمُشْرِكِينَ .

رَوَاهُ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

1364. और हज्जाज बिन मिन्हाल ने कहा कि हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे इमाम हसन बसरी ने कहा कि हमसे जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह बज़ली (रज़ि.) ने इसी (बसरा की) मस्जिद में हदीष बयान की थी न हम उस हदीष को भूले हैं और न ये डर है कि जुन्दुब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर झूठ बाँधा होगा। आपने फ़र्माया कि एक शख्स को ज़ख़म लगा, उसने (ज़ख़म की तकलीफ़ की वजह से) खुद को मार डाला। इस पर अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि मेरे बन्दे ने जान निकालने में मुझ पर जल्दी की। इसकी सज़ा में जन्नत हराम करता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 3463)

1365. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, कहा कि हमको अबुज़्ज़िनाद ने ख़बर दी, उनसे अअरज ने कहा, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख्स खुद अपना गला घोट कर जान दे डालता है वो जहन्नम में भी अपना गला घोटता रहेगा और जो बरछे या तीर से अपने आपको मारे वो दोज़ख़ में भी इसी तरह अपने आपको मारता रहेगा। (दीगर मक़ाम : 5778)

बाब 74 : मुनाफ़िकों पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और मुश्रिकों के लिये तलबे-मग़्फ़िरत करना नापसन्दीदा है

इसको अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

1366. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक्रील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे इब्ने अब्बास ने और उनसे इमर बिन खत्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल मरा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस पर नमाज़े जनाज़ा के लिये कहा गया। नबी करीम (ﷺ) जब इस इरादे से खड़े हुए तो मैंने आपकी तरफ़ बढ़कर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप इब्ने उबई की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते हैं? हालाँकि इसने फलों दिन फलों बात कही थी और फलों दिन फलों बात। मैं उसके कुफ़्र की बातें गिनने लगा लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ये सुनकर मुस्कुरा दिये और फ़र्माया या इमर! इस वक़्त पीछे हट जाओ। लेकिन जब मैं बार-बार अपनी बात दोहराता रहा तो आपने मुझे फ़र्माया कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से इख़्तियार दिया गया है, मैंने नमाज़ पढ़ानी पसन्द की अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि सत्तर मर्तबा से ज्यादा मर्तबा इसके लिये मफ़िरत माँगने पर इसे मफ़िरत मिल जाए तो इसके लिये इतनी ही ज्यादा मफ़िरत माँगूंगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और वापस होने के थोड़ी देर बाद आप पर सूरह बराअत की दो आयतें नाज़िल हुई। किसी भी मुनाफ़िक़ की मौत पर उसकी नमाज़े जनाज़ा आप हर्गिज़ न पढ़ाएँ। आयत व हुम फ़ासिकून तक और इसकी क़ब्र पर भी मत खड़ा हो, इन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल की बातों को नहीं माना और मरे भी तो नाफ़र्मान रह कर। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुज़ूर अपनी उस दिन की दिलेरी पर ता'जुब होता है। हालाँकि अल्लाह और उसके रसूल (हर मस्लहत को) ज्यादा जानते हैं। (दीगर मक़ाम : 4671)

तशरीह: अब्दुल्लाह बिन उबई मदीना का मशहूरतरीन मुनाफ़िक़ था जो उग्रभर इस्लाम के खिलाफ़ साज़िशें करता रहा और उसने हर नाजुक मौक़े पर मुसलमानों को और इस्लाम को धोखा दिया। मगर आँहज़रत (ﷺ) रहमतुल लिल आलमीन थे। इंतिक़ाल के वक़्त उसके लड़के की दरख्वास्त पर जो सच्चा मुसलमान था, आप उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने के लिये तैयार हो गए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने मुख़ालफ़त की और याद दिलाया कि फ़लाँ-फ़लाँ मौक़ों पर उसने ऐसे-ऐसे गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ इस्ते'माल किये थे। मगर आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी फ़ित्ती मुहब्बत व शफ़क़त की बिना पर उस पर नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद वज़ाहत के साथ इशारे बारी नाज़िल हुआ कि व ला तुसल्लि अला अहदिमिन्हुम मात अबदा (अत्तोबा: 84) या'नी किसी मुनाफ़िक़ की आप कभी भी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) रुक गए। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माया करते थे कि काश! मैं उस दिन आँहज़रत (ﷺ) के सामने ऐसी बात न करता। बहरहाल

۱۳۶۶- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: -
- ثَمِيّ اللِّثُّ عَنْ غَقْبَلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ
عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ
عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّهُ
قَالَ: ((لَمَّا مَاتَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أُنَيْسٍ
سَأَلُونُ دُعِيَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِصَلَاةٍ
عَلَيْهِ. فَلَمَّا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. وَكَثَبَ إِلَيْهِ
فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُصَلِّي عَلَى ابْنِ أَبِي
وَلَدَ فَإِنَّ يَوْمَ كَذًا وَكَذًا وَكَذًا وَكَذًا -
أَعْدُو عَلَيْهِ قَوْلُهُ: قَبَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
وَقَالَ: ((أَخْرَجَنِي يَا عُمَرُ)). فَلَمَّا
أَكْتَرْتُ عَلَيْهِ قَالَ: ((إِنِّي عَمَرْتُ
لَا خَيْرَ. لَوْ أَعْلَمْتُ أَنِّي إِنْ زِدْتُ عَلَى
السَّبْعِينَ لَفُفِّرَ لَهْ لَزِدْتُ عَلَيْهَا)). قَالَ
فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ انْصَرَفَ،
فَلَمْ يَمُكِّثْ إِلَّا يَمِينًا حَتَّى تَرَكْتَ الْآخِثَانَ
مِنْ بَرَاءَةٍ: «وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ
مَاتَ أَبَدًا» - إِلَى - «وَهُمْ لَاسِقُونَ»
قَالَ: فَعَجِبْتُ بَعْدَ مِنْ جَوَاهِرِي عَلَى
رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَئِذٍ، وَاللَّهِ وَرَسُولُهُ
أَعْلَمُ. [أَطْرَافُهُ ۳ : ۴۶۷۱].

अल्लाह पाक ने हज़रत उमर (रज़ि.) की राय की मुवाफ़क़त फ़र्माई और मुनाफ़िक़ीन और मुशरिकीन के बारे में खुले लफ़्ज़ों में नमाज़े-जनाज़ा पढ़ाने से रोक दिया गया।

आजकल निफ़ाक़े ए' तिकादी का इल्म नामुम्किन है क्योंकि वह्ब व इल्हाम का सिलसिला बन्द है। लिहाज़ा किसी कलिमा-गो मुसलमान को जो बज़ाहिर अरकाने इस्लाम का पाबन्द हो, ए' तिकादी मुनाफ़िक़ नहीं कहा जा सकता और अमली मुनाफ़िक़ फ़ासिक़ के दर्जे में है जिस पर नमाज़े जनाज़ा अदा की जा सकती है। वल्लाहु आलम!

बाब 85 : लोगों की ज़बान पर मय्यित की ता'रीफ़ हो तो बेहतर है

1367. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने फ़र्माया कि सहाबा का गुज़र एक जनाज़े पर हुआ, लोग उसकी ता'रीफ़ करने लगे। (कि क्या अच्छा आदमी था) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया कि वाजिब हो गई। फिर दूसरे जनाज़े का ज़िक्र हुआ तो लोग उसकी बुराई करने लगे। औहज़रत ने फिर फ़र्माया कि वाजिब हो गई। इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने पूछा कि क्या चीज़ वाजिब हो गई? औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस मय्यित की तुम लोगों ने ता'रीफ़ की है उसके लिये तो जन्नत वाजिब हो गई और जिसकी तुमने बुराई की है उसके लिये दोज़ख़ वाजिब हो गई। तुम लोग ज़मीन में अल्लाह तआला के गवाह हो। (दीगर मक़ाम : 2642)

1368. हमसे अफ़फ़ान बिन मुस्लिम सफ़ार ने बयान किया, कहा कि हमसे दाऊद बिन अबुल फ़रात ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उनसे अबुल अस्वद देइली ने कि मैं मदीना हाज़िर हुआ। उन दिनों वहाँ एक बीमारी फैल रही थी। मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की ख़िदमत में था कि एक जनाज़ा सामने से गुज़रा। लोग उस मय्यित की तअरीफ़ करने लगे तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि वाजिब हो गई। फिर एक और जनाज़ा गुज़रा तो लोग उसकी भी ता'रीफ़ करने लगे। इस मर्तबा भी आपने ऐसा ही फ़र्माया कि वाजिब हो गई। फिर तीसरा जनाज़ा निकला, लोग उसकी बुराई करने लगे, और इस मर्तबा भी आपने यही फ़र्माया कि वाजिब हो गई। अबुल

٨٥- بَابُ ثَنَاءِ النَّاسِ عَلَى الْمَيِّتِ

١٣٦٧- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ قَالَ:

سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

يَقُولُ: ((مَرُّوا بِجَنَازَةٍ فَأَتَوْا عَلَيْهَا خَوْرًا،

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَجَبَتْ)). ثُمَّ مَرُّوا

بِأُخْرَى فَأَتَوْا عَلَيْهَا خَوْرًا، فَقَالَ:

((وَجَبَتْ)). فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: مَا وَجَبَتْ؟ قَالَ: ((هَذَا

الْتِمَعُ عَلَيْهِ خَوْرًا فَوَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، وَهَذَا

الْتِمَعُ عَلَيْهِ خَوْرًا فَوَجَبَتْ لَهُ النَّارُ. أَلَمْ

شَهِدْهُمَا اللَّهُ فِي الْأَرْضِ)).

[طرفه ب: ٢٦٤٢.]

١٣٦٨- حَدَّثَنَا عَلَانُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ

حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفَرَاتِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ

بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي الْأَسْوَدِ قَالَ: قُلِمَتْ

الْمَدِينَةُ - وَقَدْ وَقَعَ بِهَا مَرَضٌ -

فَجَلَسْتُ إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ

عَنْهُ، فَمَرَّتْ بِهِمْ جَنَازَةٌ فَأَتَيْتُ عَلَى

صَاحِبِهَا خَوْرًا، فَقَالَ عُمَرُ ﷺ: وَجَبَتْ. ثُمَّ

مَرُّ بِأُخْرَى فَأَتَيْتُ عَلَى صَاحِبِهَا خَوْرًا،

فَقَالَ عُمَرُ ﷺ: وَجَبَتْ. ثُمَّ مَرُّ بِالْقَائِلَةِ

अस्वद दइली ने बयान किया कि मैंने पूछा कि अमीरुल मोमिनीन क्या चीज वाजिब हो गई? आप ने फ़र्माया कि मैंने इस वक़्त वही कहा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जब मुसलमानों की अच्छाई पर चार शख्स गवाही दे दें अल्लाह उसे जन्नत में दाखिल करेगा। हमने कहा और अगर तीन गवाही दें? आपने फ़र्माया कि तीन पर भी, फिर हमने पूछा और अगर दो मुसलमान गवाही दें? आपने फ़र्माया कि दो पर भी। फिर हमने ये नहीं पूछा कि अगर एक मुसलमान गवाही दे तो क्या?

(दीगर मक़ाम : 2643)

فَأْتَيْنَا عَلَى صَاحِبِهَا حُرًّا، فَقَالَ: وَجَّهْتَ.
فَقَالَ أَبُو الْأَسْوَدِ: فَقُلْتُ وَمَا وَجَّهْتَ بِنَا
أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: قُلْتُ كَمَا قَالَ
النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّمَا مُسْلِمٍ شَهِدَ لَهٗ أَرْبَعَةٌ
بِغَيْرِ أَدْعَلَةٍ أَوْ الْحَقَّةِ)). فَقُلْنَا: وَثَلَاثَةٌ؟
قَالَ: ((وِثَلَاثَةٌ)). فَقُلْنَا: وَاثْنَانِ؟ قَالَ:
((وَاثْنَانِ)). ثُمَّ لَمْ نَسْأَلْهُ عَنْ الْوَاحِدِ.

[طريقه ن: ٢٦٤٣]

तशरीह: बाब का मक़सद ये है कि मरने वालों की नेकियों का ज़िक्र खैर करना और उसे नेक लफ़्ज़ों से याद करना बेहतर है। अल्लामा इब्ने हज़र (रह) फ़र्माते हैं, फ़ी रिवायतिन्नज्जि बिन अनसिन अन अबीहि इन्दल्हाकिम कुन्तु क़ाइदन इन्दन्नबिय्यि (ﷺ) फमर बिजनाज़तिन फक़ाल मा हाज़िहिल्जनाज़त क़ालू जनाज़तु फ़ुलानिन अल्फ़ुलानी कान युहिब्बुल्लाह व रसूलहु व यअलमु बिताअतिल्लाहि व यस्आ फ़ीहा तफ़सीरुन मा अब्हाम मिनल्खैरि वशशरि फ़ी रिवायति अब्दिअल्ज़ीजि वल्हाकिमि अयज़न हदीप्पि जाबिरिन फक़ाल बअज़ुहुम लिनिअमल्मर्रा लक़द कान अफ़ीफ़न मुस्लिमन व फ़ीहि अयज़न फक़ाल बअज़ुहुम बिअसल्मर्रा कान इन्ना कान लफ़ज़ज़न गलीज़ा. (फतहुल्बारी)

या'नी मुस्नद हाकिम में नज़्ज बिन अनस अन अबीह की रिवायत में यूँ है कि मैं हज़ूर (ﷺ) के पास बैठा हुआ था कि एक जनाज़ा वहाँ से गुज़रा। आप (ﷺ) ने पूछा कि ये किसका जनाज़ा है? लोगों ने कहा कि फ़लान बिन फ़लान का है जो अल्लाह और रसूल से मुहब्बत रखता और इताअते इलाही में अमल करता और कोशिश रहता था और जिस पर बुराई की गई उसका ज़िक्र उसके बरअक्स किया गया। पस इस रिवायत में इब्नामे ख़ैरो-शर की तफ़सील मज़कूर है और हाकिम में हदीप्पे जाबिर भी यूँ है कि कुछ लोगों ने कहा कि ये शख्स बहुत अच्छा पाकदामन मुसलमान था और दूसरे के लिये कहा गया कि वो बुरा आदमी और बदअख़लाक़ सख़्तकलामी करने वाला था।

ख़ुलासा ये कि मरने वाले के बारे में अहले इमान नेक लोगों की शहादत जिस तौर पर भी हो वो बड़ा वज़न रखती है। लफ़ज़ अन्तुम शुहदाउल्लाहि फिलअर्ज़ि में इसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा है। खुद कुआन मजौद में भी ये मज़मून इन लफ़्ज़ों में मज़कूर है, व जअल्नाकु उम्मतंव्वसता लितकूनू शुहदाअ अलननासि (अल बक़र: 143) मैंने तुमको दरम्यानी उम्मत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह बन जाओ। शहादत की एक सूत य भी है कि जो यहाँ हदीप्प में मज़कूर है।

बाब 86 : अज़ाबे-क़ब्र का बयान

और अल्लाह तआला ने (सूरह अनआम में) फ़र्माया

और ऐ पैग़म्बर! काश तो उस वक़्त को देखे, जब ज़ालिम काफ़िर मौत की सख़ितियों में गिरफ़्तार होते हैं और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाए हुए कहते जाते हैं कि अपनी जानें निकालो आज तुम्हारी सज़ा में तुम को रुस्वाई का अज़ाब (या'नी क़ब्र का अज़ाब) होना है।

٨٦- باب ما جاء في عذاب القبر،

وقوله تعالى

يَوْمَ نَبْشِطُ فِي هِمَزَاتٍ
الْمَوْتِ وَالْخَلَايِكَةَ نَبْشِطُو أَيْنِهِمْ
أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ الْيَوْمَ تُعْزَوْنَ عَذَابِ
الْهُنُوتِ ﴿الأنعام: ٩٣﴾

इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि लफ़्ज़ हून कुआन में हवान के मा'नी में है। या'नी ज़िल्लत और रुस्वाई और हून का मा'नी नमी और मलामत है।

और अल्लाह ने सूरह तौबा में फ़र्माया कि मैं इनको दो बार अज़ाब दूंगा (या'नी दुनिया में और क़ब्र में) फिर बड़े अज़ाब में लौटाए जाएंगे। और सूरह मोमिन में फ़र्माया फ़िअॉन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया, सुबह-शाम आग के सामने लाए जाते हैं और क़यामत के दिन तो फ़िअॉन वालों के लिये कहा जाएगा कि इनको सख़्त अज़ाब में ले जाओ। (ग़ाफ़िर : 45)

इमाम बुखारी (रह.) ने इन आयतों से क़ब्र का अज़ाब प्राबित किया है। उसके सिवा और आयतें भी हैं। आयत युषबिबितुल्लाहुल्लज़ीन आमनू बिल क़ौलिष़ाबित (इब्राहीम : 27) आख़िर तक। ये बिल इतिफ़ाक़ सवाले क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई है। जैसा कि आगे मज़कूर है।

1369. हमसे हफ़स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने, उनसे अलक़मा बिन मर्रद ने, उनसे सअद बिन उबैदा ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मोमिन जब अपनी क़ब्र में बैठाया जाता है तो उसके पास फ़रिश्ते आते हैं। वो शहादत देता है कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। तो ये अल्लाह के फ़र्मान की ताबीर है जो सूरह इब्राहीम में है कि अल्लाह ईमान वालों को दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत में ठीक बात या'नी तौहीद पर मज़बूत रखता है।

हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे सुन्दर ने कहा कि हमसे शुअबा ने यही हदीस बयान की। उनसे रिवायत में ये ज़्यादाती भी है कि आयत व युषबिबितुल्लाहुल्लज़ीन आमनू अल्लाह मोमिनों को प्राबितक़दमी बख़्शता है। अज़ाबे-क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई है।

1370. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे स़ालेह ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) कुएँ (जिसमें बद्र के मुशिक मक्त्तलीन को डाल दिया गया था) वालों के क़रीब आए और फ़र्माया तुम्हारे मालिक ने जो तुमसे सच्चा वा'दा किया था उसे तुम लोगों ने पा लिया। लोगों ने अर्ज़ किया कि आप मुद्ों को

قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ الْهُونُ: هُوَ الْهَوَانُ وَالْهُونُ الرُّقُوفُ.

وقوله جَلْ ذِكْرُهُ: ﴿سَتُعَذِّبُهُمْ مُّوْتَيْنِ ثُمَّ يُرْجَوْنَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ﴾ [التوبة: ١٠٩].
وقوله تعالى: ﴿وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ، النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا، وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾ [غافر: ٤٥].

١٣٦٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عُلَيْمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أُلْقِيَ الْمُؤْمِنُ فِي قَبْرِهِ أُنِيبَ ثُمَّ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، فَلَذَلِكَ قَوْلُهُ: ﴿يَبْتَئُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ﴾)).

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُثَيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ بِهِذَا، وَزَادَ: ﴿يَبْتَئُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا﴾ نَزَلَتْ فِي عَذَابِ الْقَبْرِ.
[طرفه في: ٤٦٩٩].

١٣٧٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ قَالَ: ((أُطْلِعَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أَهْلِ الْقَبْرِ فَقَالَ: (وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا)). فَقِيلَ لَهُ:

खिताब करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम कुछ उनसे ज्यादा सुनने वाले नहीं हो, बल्कि वो जवाब नहीं दे सकते।

(दीगर मक़ाम: 3980, 4026)

1371. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन डययना ने, उनसे हिशाम बिन उर्वाने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र के काफ़िरों को ये फ़र्माया था कि मैं जो उनसे कहा करता था अब उनको मा'लूम हुआ होगा कि वो सच्चे हैं। और अल्लाह ने सूरह रूम में फ़र्माया, ऐ पैग़म्बर! तू मुदों को नहीं सुना सकता।

(दीगर मक़ाम: 3979, 3981)

1372. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा मुझको मेरे बाप (इब्मान) ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्होंने अशअश से सुना, उन्होंने अपने वालिद अबू अशअशा से, उन्होंने मस्रूक से और उन्होंने आइशा (रज़ि.) से कि एक यहूदी औरत उनके पास आई। उसने अज़ाबे-क्रब्र का ज़िक्र छेड़ दिया और कहा कि अल्लाह तुझको अज़ाबे-क्रब्र से महफूज़ रखे। इस पर आइशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अज़ाबे-क्रब्र के बारे में दरयाफ़्त किया। आप (ﷺ) ने इसका जवाब ये दिया कि हाँ! अज़ाबे-क्रब्र बरहक़ है। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने कभी ऐसा नहीं देखा कि आपने कोई नमाज़ पढ़ी हो और उसमें अज़ाबे-क्रब्र से अल्लाह की पनाह न माँगी हो। गुन्दर ने अज़ाबे क्रब्र बरहक़ के अल्फ़ाज़ ज़्यादा किये।

1373. हमसे यहाा बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे यूनुस ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे उर्वाने बिन जुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने अस्मा बन्ते अबीबक्र (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) खुत्बे के लिये खड़े हुए तो आप (ﷺ) ने क्रब्र के इम्तिहान का ज़िक्र किया जहाँ इन्सान जाँचा जाता है। जब हुज़ुरे-अकरम (ﷺ) उसका ज़िक्र कर रहे थे तो मुसलमाना

أَتَدْعُو أَمْوَاتًا؟ فَقَالَ: ((مَا أَتَمَّ بِأَسْمَعَ مِنْهُمْ، وَلَكِنْ لَا يُجِيبُونَ)).

[طرفه نى : 3980, 4026].

1371- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَثَّامٍ بْنُ غُرُورٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((إِنَّمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّهُمْ لَيَعْلَمُونَ الْآنَ أَنَّ مَا كُنْتُ أَلُوْنُ حَقًّا، وَلَقَدْ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿لِيَأْتِكَ لَا تَسْمِعُ الْغَوِيَّ﴾)).

[طرفاه نى : 3979, 3981].

1372- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ قَالَ سَمِعْتُ الْأَشْعَثَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ يَهُودِيَّةً دَخَلَتْ عَلَيْهَا فَلَذَكَّرَتْ عَذَابَ الْقَبْرِ فَقَالَتْ لَهَا: أَغَاذِلُكَ اللَّهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. فَسَأَلَتْ عَائِشَةَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنْ عَذَابِ الْقَبْرِ فَقَالَتْ: نَعَمْ، عَذَابُ الْقَبْرِ. قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعْدَ صَلَوةٍ إِلَّا تَعَوَّذَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)). رَأَيْتُ هُنَا: ((عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ)).

1373- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي غُرُورُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَمِعَ أَسْمَاءَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَقُولُ: ((قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خُطْبَتَا لَذَكَّرَ فِيهَا الْقَبْرَ الَّتِي يَفْتَنُ فِيهَا الْمَرْءُ.

की हिचकियाँ बँध गई।

(राजेअ: 86)

1374. हमसे अयाश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क्रतादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी जब अपनी क़ब्र में रखा जाता है और जनाजे में शरीक होने वाले लोग उससे रुझत होते हैं तो अभी वो उनके जूतों की आवाज़ सुनता होता है कि दो फ़रिश्ते (मुन्कर नकीर) उसके पास आते हैं, वो उसे बैठाकर पूछते हैं कि उस शख्स या 'नी मुहम्मदुरसूलुल्लाह (ﷺ) के बारे में तू क्या ए'तिक्लाद रखता था? मोमिन तो ये कहेगा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। उससे कहा जाएगा कि तू ये देख अपना जहन्नम का ठिकाना लेकिन अल्लाह तआला ने इसके बदले में तुम्हारे लिये जन्नत में ठिकाना दे दिया। उस वक़्त उसे जहन्नम और जन्नत दोनों ठिकाने दिखाए जाएँगे। क्रतादा ने बयान किया कि उसकी क़ब्र ख़ूब कुशादा कर दी जाएगी (जिससे आराम व राहत मिले)। फिर क्रतादा ने अनस (रज़ि.) की हदीस बयान करनी शुरू की, फ़र्माया और मुनाफ़िक व काफ़िर से जब कहा जाएगा कि उस शख्स के बारे में तू क्या कहता था तो वो जवाब देगा कि मुझे कुछ मा'लूम नहीं, मैं भी वही कहता था जो दूसरे लोग कहते थे। फिर उससे कहा जाएगा कि न तूने जानने की कोशिश की और न समझने वालों की राय पर चला। फिर उसे लोहे की गरजों से बड़ी जोर से मारा जाएगा कि वो चीख पड़ेगा और उसकी चीख को जिन्न और इन्सानों के सिवा इसके आसपास की तमाम मख़लूक सुनेगी।

(राजेअ: 1338)

बाब 87 : क़ब्र के अज़ाब से पनाह माँगना

1375. हमसे मुहम्मद बिन मुसब्र ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा हमसे शुअबा ने, कहा कि मुझसे औन बिन अबी जुहैफ़ा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अबू जुहैफ़ा ने, उनसे बराअ बिन अज़िब ने और उनसे

لَمَّا ذَكَرَ ذَلِكَ حَجَّ الْمُسْلِمُونَ

صَحَّةُ)). [راجع: ٨٦]

١٣٧٤- حَدَّثَنَا عَمَّارُ بْنُ الزَّوَلِجِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ قَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ- وَإِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ يَدَائِهِمْ- أَنَا مَلَكَانِ يَفْعِدَايِهِ يَقُولَانِ: مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ لِمَعْتَبِدٍ. فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ يَقُولُ أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ. يَقُولُ لَهُ: أَنْظِرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، قَدْ أَبْدَلَكَ اللَّهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ، فَرَأَاهُمَا جَمِيعًا)) قَالَ قَادَةُ: ((وَذَكَرَ لَنَا أَنَّهُ يُفْسَحُ فِي قَبْرِهِ)). ثُمَّ رَجَعَ إِلَى خَلِيْفَتِهِ أَنَسٍ قَالَ: ((وَأَمَّا السَّائِلُ وَالْمَكَاوِرُ يَقُولَانِ: مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ يَقُولانِ: لَا أَدرِي، كُنْتَ الْوَلَدُ مَا يَقُولُهُ النَّاسُ. يَقُولَانِ: لَا فَرَّتْ وَلَا تَلَّتْ. وَتَضْرِبُ بِمِطْرَاقٍ مِنْ حَدِيدٍ حُزْمَتَهُ، فَصِيحٌ صَبِيحَةٌ يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيهِ عَمْرٍ الْقَلْبَيْنِ)). [راجع: ١٣٣٨]

٨٧- بَابُ التَّوَدُّعِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

١٣٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي هُرُونُ بْنُ أَبِي جَحْفَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ الْوَرَاءِ

अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना से बाहर तशरीफ ले गये। सूरज गुरुब हो चुका था, उस वक़्त आपको एक आवाज़ सुनाई दी (यहूदियों पर अज़ाबे-क़ब्र की) फिर आपने फ़र्माया कि यहूदी पर अज़ाबे-क़ब्र हो रहा है। और नज़र बिन शमईल ने बयान किया कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उनसे ओन ने बयान किया, उन्होंने अपने बाप अबू जुहैफ़ा से सुना, उन्होंने बराअ से सुना, उन्होंने अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

1376. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे लुहैब ने बयान किया, उनसे मूसा बिन इज़बा ने बयान किया, कहा कि मुझसे ख़ालिद बिन सईद बिन आस की माहबज़ादी (उम्मे ख़ालिद) ने बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को क़ब्र के अज़ाब से पनाह माँगते हुए सुना। (राजेअ: 6364)

1377. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी क़प्रीर ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इस तरह दुआ करते थे, ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ और दो ज़ख़ के अज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत की आजमाइश से और काने दज्जाल की बला से तेरी पनाह चाहता हूँ।

بِئَابٍ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
قَالَ: «خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَلَدَ وَجَعَتْ
الشَّمْسُ، فَسَمِعَ صَوْتًا فَقَالَ: ((يَهُودُ
تُعَذَّبُ فِي قَبْرِهَا)). وَقَالَ النَّبِيُّ: أَخْبَرَنِي
حُفَةُ قَالَ حَدَّثَنَا حُونَ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ:
سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

۱۳۷۶- حَدَّثَنَا مُعَلَّى قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ
عَنْ مُوسَى بْنِ حُفَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنَةُ
خَالِدِ بْنِ سَعْدِ بْنِ الْعَاصِي ((أَنَّهَا سَمِعَتْ
النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ يَتَعَوَّذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)).
[طوله ۱: ۱۳۶۶].

۱۳۷۷- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِیْزَائِمَةَ قَالَ
حَدَّثَنَا هِشَامُ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي
سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:
«كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَتَخَوَّرُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي
أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ
النَّارِ، وَمِنْ فَتَنِ الْمُنْعَمِ وَالْمُنْعَمَاتِ، وَمِنْ
فِتَنِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ)).

तशरीह: अज़ाबे क़ब्र के बारे में अल्लामा शैख़ सिफ़ारीनी अल अफ़री अपनी मशहूर किताब लवामिअ अनवारुल बहिय्या में फ़र्माते हैं, व मिन्हा अय अल्उमूक़ल्लती यजिबुल ईमानु बिहा व इज़हा हक्कुन ला तुरुहु अज़ाबुल क़ब्रि क़ालल्हाफ़िज़ जलालुद्दीन सियूती फ़ी किताबिही शरहुसुदूर फ़ी अहवालिल मौता क़द ज़करल्लाहु अज़ाबिल क़ब्रि फ़िल कुआनि फ़ी इहति अमाकिन कमा बय्यन्तुहु फ़िल अवलील फ़ी अस्सरित्तन्ज़ील इन्तिहा. क़ालल्हाफ़िज़ इब्नु रजब फ़ी किताबिही अहवालुल कुबूर फ़ी क़ौलिही तज़ाला, फ़लौल इज़ा बलग़तिल हुल्कुम इला क़ौलिही तज़ाला इज़ा हाज़ा लहुवल हक्कुल मुबीन अन अब्दिर्ह्मानिब्नि अबी लैला क़ाल, तला रसूलुल्लाहि (ﷺ) हाज़िहिल आयातु क़ाल इज़ा कान इन्दल मौति क़ील लहु हाज़ा फ़इन कान मिन अज़्हाबिल यमीनि अहब्बु लिक्काअल्लाहि व अहब्बुल्लाहि लिक्काअहु व इन कान मिन अस्हाबिशिशामलि करिह लिक्काअल्लाहि व करिहल्लाहु लिक्काअहु.

व क़ालल इमामुल मुहक्किकु इब्नुल क़य्यिम फ़ी किताबिर्रूह क़ौलुस्साइल मल्हिकमतु फ़ी अन्न अज़ाबल्क़ब्रिल म युज़्कर फ़िल कुआनि सरीहन मअ शिह्तिह हाज़ति इला मअरिफ़तिही वल्ईमानु बिही लियहज़रहुन्नासु व यत्तक्की फ़अज़ाब अन ज़ालिक बिवज्हेनि मुज्मलुन व मुफ़स्सलुन अम्पल मुज्मलु फ़इन्नल्लाह तज़ाला नज़ल अला रसूलिही वहायैनि फ़औज़ब अला इबादिहील ईमान बिहिमा वल अमलु बिमा फ़ीहिमा व हुमुल किताबु वल्हिकमतु क़ाल तज़ाल हुवल्लज़ी

बअष फिलउम्मियिन रसूलम मिन्हुम इला कौलिही तआला व युअल्लिमुहुमुल किताब वल्हिवमत व काल तआला वज्जुर्ना मा युत्ला फी बुयूतिकुन्न अल्आया वल्हिवमत हिस्सुन्नतु बिइतिफाकिस्सलफि व मा अख्बर बिहिर्सूल अनिल्लाहि फ़हुव फी युजुबि तस्दीकिही वल ईमानु बिही कमा अख्बर बिहिर्बु अला लिसानि रसूलिही फ़हाजा अस्तुन मुत्तफ़कुन अलैहि बैन अहलिल इस्लामि ला युन्किरू इल्ला मन लैस मिन्हुम व कालत्रबिय्यु (ﷺ) इन्नी ऊतीतुल किताब व मिफ़्लुह मअह कालल मुहक्किक् व अम्मल जवाबुल मुफ़्फ़सल फ़हुव इन्न नईमिल बर्ज़िखि व अज़ाबहू मज्कूरुन फिल कुर्आनि मवाज़िअ मिन्हा कौलिही तआला व लौ तरा इज़िज्जालिपून फ़ी ग़मरातिल मौति अल्आया व हाजा ख़िताबुन लहुम इन्दल मौति क़तअन व क़द अख्बरतिल मलाइकुन व हुमुम्मादिकून अन्नहुम हीन इज़िन युज्ज़ौन अज़ाबुल हूनि बिमा कुन्तुम तक्कूलुन अलल्लाहि ग़ैरल हक्कि व कुन्तुम अन आयातिही तस्तक्बिरून व लौ तअख्बर अन्हुम ज़ालिक इलल क़ज़ाइदनिया लम्मा स्रह अय्युकाल लहुमुल यौम तुज्ज़ौन अज़ाबुल हूनि व कौलिही तआला फ़वकाहुल्लाहु सय्यिआतिन मा मकरू इला कौलिही युअरज़ून अलैहा गुदुवून व अशिय्यन अल्आया फ़ ज़कर अज़ाबद्वारैनि सरीहन ला यहतमिलु ग़ैरहू व मिन्हा कौलिही तआला फ़ज़रहुम हत्ता युलाकू यौमहुमुल्लज़ी फ़ीहि युस्अकून यौम ला युग़नी अन्हुम कैदुहुम शौअन व ला हुम युन्सरून इन्तिहा कलामुहू.

व अख़जल बुखारी मिन हदीषि अबी हुरैररज़ि. क़ाल, कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) यदक़ अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन अज़ाबिल क़ब्रि व अख़जतिर्मिज़ी अन अलिथियिन रज़ि. अन्नहू काल मा ज़िल्ना फ़ी शक्किमिन अज़ाबिल क़ब्रि हत्ता नज़लत अल्हाकुमुत्तकाषुर हत्ता जुस्तुमुल मक्काबिर व क़ाल इब्नु मस्कूद इज़ा मातल काफ़िक् उज़्लिस फ़ी कब्रिही फ़युकालु लहू मन रब्बुक व मा दीनुक फ़यक़ूलु ला अदरी फ़यज़ीकु अलैहि क़र्रहु शुम्प करअ इब्नु मस्कूद फ़इन्न लहू मईशतन ज़न्का क़ाल अल्मइशतुज्जन्क हिय अज़ाबुल क़ब्रि व क़ाल बराअ बिन आज़िब फ़ी कौलिही तआला व लनुज़ीकन्नहुम मिनल अज़ाबिल अदना दूनल अज़ाबिल अक्बरि क़ाल अज़ाबुल क़ब्रि व क़ज़ा क़ाल क़तादा वरबीअ बिन अनस फ़ी कौलिही तआला सनुअज़िबुहुम मरतैनि अहदुहुमा फ़िदनिया वल्उख़्ता अज़ाबुल क़ब्र.

इस तवील इबारत का खुलासा ये है कि अज़ाबे क़ब्र इक़ है जिस पर ईमान लाना वाज़िब है। अल्लाह पाक ने कुर्आन की अनेक आयतों में इसका ज़िक़्र किया है। तफ़्सीली ज़िक़्र हाफ़िज़ जलालुद्दीन सियूति (रह.) की किताब, 'शरहुस्सुदूर' और अक्लील फ़ी अस्रातित्तन्ज़ील में मौजूद है। हाफ़िज़ इब्ने रजब ने अपनी किताब अहवालुल कुबूर में आयते शरीफ़ा फ़लौला इज़ा बलग़तिल हुलकूम (अल वाकिआ: 83) की तफ़्सीर में अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से रिवायत किया है कि रसूले करीम (ﷺ) ने इन आयात को तिलावत फ़र्माया और फ़र्माया कि जब मौत का वक़्त आता है तो मरने वाले से कहा जाता है। पस अगर वो मरने वाला दाएँ तरफ़ वालों में से है तो वो अल्लाह से मिलने को महबूब रखता है और अल्लाह तआला उससे मिलने को पसंद करता है और अगर वो मरने वाला बाएँ तरफ़ वालों में से है तो वो अल्लाह की मुलाक़ात को मकरूह जानता है और अल्लाह पाक उसकी मुलाक़ात को मकरूह रखता है।

और अल्लामा मुहक्किक् इमाम इब्ने क़थ़ीम (रह.) ने किताबुरूह में लिखा है कि किसी ने उनसे पूछा कि इस अम्र में क्या हिवमत है कि स़राहत के साथ कुर्आन मजीद में अज़ाबे क़ब्र का ज़िक़्र नहीं है, हालाँकि ये ज़रूरी था कि उस पर ईमान लाना ज़रूरी है ताकि लोगों को उससे डर पैदा हो। हज़रत अल्लामा ने उसका जवाब मुजमल और मुफ़्फ़सल दोनों तौर पर दिया। मुजमल तो ये दिया कि अल्लाह ने अपने रसूल (ﷺ) पर दो किस्म की वह्द नाज़िल की है और उन दोनों पर ईमान लाना और उन दोनों पर अमल करना वाज़िब क़रार दिया गया है और वो किताब और हिवमत हैं जैसा कि कुर्आन मजीद की कई आयात में मौजूद है और सलफ़ स़ालेहीन से मुत्तफ़का तौर पर हिवमत से सुन्नत (हदीषे नबवी) मुराद है। अब अज़ाबे क़ब्र की ख़बर अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने सहीह अहदाइष में दी है। पस वो ख़बर यक्कीनन अल्लाह की तरफ़ से है जिसकी तस्दीक़ वाज़िब है और जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है। (जैसा कि रब्बे तआला ने अपने रसूले की जुबानी हक्कीक़ते तर्जुमान से सहीह हदीष में अज़ाबे क़ब्र के बारे में बयान कराया है) पस ये उम्ूल अहले इस्लाम में मुत्तफ़का है उसका वही शख्स इंकार करेगा जो अहले इस्लाम से बाहर है। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़बरदार रहो कि मैं कुर्आन मजीद दिया गया हूँ और उसके जैसी एक और किताब (हदीष) भी दिया गया हूँ।

फिर मुहक्किक् अल्लामा इब्ने क़थ़ीम ने तफ़्सील में जवाब फ़र्माया कि बरज़ख़ का अज़ाब कुर्आन मजीद की

बहुत सी आयात से प्राबित है और बरज़ख की बहुत सी नेअमतों का भी कुआन मजीद में ज़िक्र मौजूद है। (यही अज़ाब व प्रवाबे क़ब्र है); उन आयात में से एक आयत व लौ तरा इज़िज़ालिमून फ़ी गमरातिल मौत (अल अन्आम : 93) भी है (जिसमें ज़िक्र है कि अगर तू ज़ालिमो को मौत की बेहोशी के आलम में देखे) उनके लिये मौत के वक़्त ये ख़िताबे क़त्ई है और इस मौके पर फ़रिश्तों ने ख़बर दी जो बिल्कुल सच्चे हैं उन काफ़िरों को उस दिन रस्वाई का अज़ाब दिया जाता है और कहा जाता है ये अज़ाब तुम्हारे लिये इस वज़ह से है कि तुम अल्लाह पर नाहक झूठी बातें बाँधा करते थे और तुम उसकी आयात से तकब्बुर किया करते थे। यहाँ अगर अज़ाब को दुनिया के ख़ातिमे पर मुअख़्ख़र माना जाए तो ये सही नहीं होगा यहाँ तो 'आज का दिन' इस्ते'माल किया गया है और कहा गया है कि तुमको आज के दिन रस्वाई का अज़ाब होगा। उस आज के दिन से यक़ीनन क़ब्र का अज़ाब का दिन मुराद है।

और दूसरी आयत में यूँ मज़कूर है कि व हाक़ बि आलि फ़िऑन सूउल अज़ाब अन्नारु युअरज़ून अलैहा गुदुव्व अशिय्या (अल मोमिन : 45-46) या'नी फ़िऑनियों को सख़्ततरीन अज़ाब ने घेर लिया जिस पर वो हर सुबह व शाम पेश किये जाते हैं। इस आयत में अज़ाबे दारैन का सरीह ज़िक्र है उसके सिवा और किसी का अन्देशा ही नहीं (दारैन से क़ब्र का अज़ाब और फिर क़यामत के दिन का अज़ाब मुराद है)।

तीसरी आयते शरीफ़ा में है, फ़जहुम हत्ता युलाकू यौमहुमुल्लज़ी फ़ीहि युस्अकून (अत्तूर : 45) है। या'नी ऐ रसूल! इन काफ़िरों को छोड़ दीजिए। यहाँ तक कि वो उस दिन से मुलाक़ात करें जिसमें वो बेहोश कर दिये जाएँगे, जिस दिन उनका कोई मक़्र उनके काम नहीं आ सकेगा और न वो मदद किये जाएँगे। (इस आयत में भी उस दिन से मौत और क़ब्र का दिन मुराद है)।

बुखारी शरीफ़ में हदीषे अबी हुरैरह (रज़ि.) में ज़िक्र है कि रसूले करीम (ﷺ) ये दुआ फ़र्माया करते थे। अल्लाहुम्मा इन्नी अज़्ज़ुबिक मिन अज़ाबिल क़ब्र ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह मांगता हूँ और तिमिज़ी में हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि अज़ाबे क़ब्र के बारे में हम मशकूक रहा करते थे। यहाँ तक कि आयात अल्हाकुमुत्तकाषुर हत्ता जुर्तुमुल मक़ाबिर (अत्तकाषुर : 1,2) नाज़िल हुई (गोया इन आयात में भी मुराद क़ब्र का अज़ाब ही है) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब काफ़िर मरता है तो उसे क़ब्र में बिठाया जाता है और उससे पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है? और तेरा दीन क्या है? वो जवाब देता है कि मैं कुछ नहीं जानता। पस उसकी क़ब्र उस पर तंग कर दी जाती है। पस हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने आयत व मन अअरज़ अन ज़िकरी फ़इन्न लहू मइशतन ज़न्का (ताहा : 124) को पढ़ा (कि जो कोई मेरी याद से मुँह मोड़ेगा उसका निहायत तंग ज़िन्दगी मिलेगी) यहाँ तंग ज़िन्दगी से क़ब्र का अज़ाब मुराद है। हज़रत बराअ बिन आज़िब ने आयते शरीफ़ा वल नुज़ीक़न्नहुम मिनल अज़ाबिल अदना दूनल अज़ाबिल अकबर (अस्सज्दा : 21) की तफ़्सीर में फ़र्माया कि यहाँ भी अज़ाबे क़ब्र ही का ज़िक्र है। या'नी काफ़िरों को बड़े सख़्ततरीन अज़ाब से पहले एक अदना अज़ाब में दाख़िल किया जाएगा (और वो अज़ाबे क़ब्र है)। ऐसा ही क़तादा और रबीआ बिन अनस ने आयते शरीफ़ा सनुअज़िबुहुम मरतैनि (अत्तौबा : 101) (मैं उनको दो बार अज़ाब में मुब्तला करूँगा) की तफ़्सीर में फ़र्माया कि एक अज़ाब से मुराद दुनिया का अज़ाब और दूसरे से मुराद क़ब्र का अज़ाब है।

क़ालल हाफ़िज़ु इब्नु रजब व क़द तवारतिल अहादीषु अनिन्नबिय्यि (ﷺ) फ़ी अज़ाबिल क़ब्रि या'नी हाफ़िज़ इब्ने रजब फ़र्माते हैं कि अज़ाबे क़ब्र के बारे में नबी करीम (ﷺ) से मुतवातिर अहादीष मरवी हैं जिनसे अज़ाबे क़ब्र बरहक़ होना प्राबित है। फिर अल्लामा ने उन अहादीष का ज़िक्र फ़र्माया है। जैसा कि यहाँ भी चंद अहादीष मज़कूर हुई हैं।

बाबु इब्बाति अज़ाबिल क़ब्रि पर हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह) फ़र्माते हैं, लम यत्तअरज़िल मुसन्नफ़ु फ़ित्तजुमति लिक्कौन अज़ाबिल क़ब्रि यक़ूद अलरूहि फ़क़त औ अलैहा व अलल्जसदि व फ़ीहि ख़िलाफ़न शहीरून इन्दल मुतकल्लिमीन व कअन्नहू तरकहू लिअन्नल अदिल्लतल्लज़ी यज़ाहलैसत कातिअतुन फ़ी अहदिल अमैनि फ़लम यत्कल्लदिल्हुक़मु फ़ी ज़ालिक वक़्तफ़ा बिइब्बाति वुजूदिही ख़िलाफ़न लिमन नफ़ाहू फ़ुल्लक़न मिनल ख़वारिजि व बअज़ुल मुअतज़िला कज़रार बिन अमर व बिशर अल्मुसैसी व मन वाफ़क़हुमा व ख़ालफ़हुम फ़ी ज़ालिक अक्बरुल मुअतज़िला व जमीउ अहलिस्सुन्नति व ग़ैरहुम व अक्बरु मिनल इहतिजाजि लहू व जहब बअज़ुल मुअतज़िला कलजयानी इला अन्नहू

यक़उल कुफ़्फ़ारु दूनल मूमिनीन व बअज़ुल अहादीसिल आतिया तरुहु अलैहिम अयज़न. (फ़तुहल बारी)

ख़ुलासा ये कि मुसत्रिफ़ (इमाम बुखारी रह.) ने इस बारे में कुछ तआरुज़ नहीं फ़र्माया कि अज़ाबे क़ब्र फ़क़त रूह को होता है या रूह और जिस्म दोनों पर होता है। इस बारे में मुतकल्लिमून का बहुत इख़्तिलाफ़ है। हज़रत इमाम ने क़स्दन इस बहस को छोड़ दिया है। इसलिये कि उनके हस्बे मंशा कुछ क़तई दलीलें इस बारे में नहीं हैं। पस आपने उन मबाहिष को छोड़ दिया और सिर्फ़ अज़ाबे क़ब्र के वजूद को साबित कर दिया। जबकि ख़वारिज और कुछ मुअतज़िला उसका इंकार करते हैं जैसे ज़रार बिन अम्र, बिशर मुरैसी वगैरह और उन लोगों की जुम्ला अहले सुन्नत बल्कि कुछ मुअतज़िला ने भी मुख़ालफ़त की है और कुछ मुअतज़िला ज़ियानी वगैरह इधर गए हैं कि अज़ाबे क़ब्र सिर्फ़ काफ़िरों को होता है इमानवालों को नहीं होता। मज़कूर कुछ हदीषों उनके इस ग़लत अक़ीदा की तर्दीद कर रही है।

बहरहाल अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है जो लोग इस बारे में शुक्क व शुब्हात पैदा करें उनकी सुहबत से हर मुसलमान को बचना चाहिये और दूर रहना चाज़िब है और इन खुले हुए दलाइल के बाद भी जिनकी तशफ़्फ़ी न हो उनकी हिदायत के लिये कोशिशें होना बेकार है। वबिल्लाहि तौफ़ीक़

तफ़्सीले मज़ीद के लिये हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब (रह) फ़र्माते हैं कि हज़रत मौसूफ़ लिखते हैं,

बाबु इब्नाति अज़ाबिल क़ब्रि क़ाल फ़िल्लम्मात अल्मुरादु बिल्क़ाबि हाहुना आलमुल बरज़ख़ क़ाल तआला व मिंख़राइहिम बरज़ख़ून इला यौमि युब्अयून व हुव आलमुन बेनुहुनिया वल आख़िरा ललु तअल्लक़ बिकुल्लिम मिनुमा व लैसल मुरादु बिहिल हुप्सतुल्लती युदफ़नु फ़ीहिल मय्यितु फ़लूबब मय्यितिन ला युदफ़नु कल ग़रीक़ वल हरीक़ वलमाकूल फ़ी बतनिल हैवानाति युअज़बु व युअम्मु व युअलु व इममा ख़स्सल अज़ाबु बिज्जिबि लिलइहितामामि व लिअन्नल अज़ाब अवज़रु लिक़्मतिल कुफ़्फ़ारि वलउसाति इन्तिहा क़ल्लु हासिलुन मा क़ील फ़ी बयानिल मुरादि मिनल बरज़ख़ि अन्नह इस्मुन लिइन्किताइल हयाति फ़ी हाज़ल आलमिल मशहूदि अय दारुहुनिया व इम्तिदाउ हयातिन उज़रा फ़यब्दशशैद मिनल अज़ाबि अविन्नइमि बअद इन्किताइल हयातिहुन्यविथ्यति फ़हुव अव्वलु दारिल ज़ाा शुम्म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिन मा क़सबत यौमल क्रियामति इन्द दुख़ूलिहा फ़ी जहन्नम अविल जन्नति व इममा उज़ीफ़ अज़ाबुल बरज़ख़ि व नईमिही इलल्क़बि लिक्ौनि मुअजमिही यक़उ फ़ीह व लिक्ौनिल ग़ालिब अलल्मौता अय्यक्बिरु व इल्ला फ़ल्काफ़िरु व मन शाअल्लाहु अज़ाबुहु मिनल उसाति युअज़बु बअद मौतिही व लौ लम युदफ़न व लाकिन ज़ालिक़ महजूबुन अनिल ख़ल्कि इल्ला मन शाअल्लाहु व क़ील ला हाज़त इलत्तावीलि फ़इन्नल क़म्र इस्मुन लिम्कान अल्लज़ीयकूनु फ़ीहिल मय्यितु मिनल अर्ज़ि व ला शक़ अन्न महिल्ल इन्सानि व मस्कनहू बअद इन्किताइल हयातिहुन्यविथ्यति हियल्अर्जु कमा इन्नहा कानत मस्कनन लहु फ़ी हयातिही क़ब्रल मौतिही क़ाल तआला अलम नज्अलिल अर्ज किफ़ाता अहयाअन व अम्वातन अय ज़ाम्मतुन लिल अहयाइ वल अम्वाति तज्मउहुम वतज़म्मुनुहुम व तहव्वुजुहुम फ़ला महिल्लल मय्यिति इल्लल अर्ज सवाउन कान ग़रीक़न औ हरीक़न औ माकूलन फ़ी बत्निल हैवानाति मिन्सुबाइ अलल अर्ज़ि वतुयूरि फ़िल हवाइ वलहीतानि फ़िल बहरि फ़इन्नल ग़रीक़ यर्सबु फ़िलमाइ फ़यस्कुनु इला अस्फ़लिही मिनल अर्ज़ि अविल जबलि इन कान तहतहू जबलुन व कज़ल हरीक़ बअद मा यत्सीर रमादन ला यस्तकिरू इल्ला अलल्लअर्ज़ि सवाउन अज़ा फ़िल बरि अविल बहरि कज़लमाकूल फ़इन्नल हैवानातिल्लती ताकुलुहू ला तज़हबु बअद मौतिहा इल्ला इलल्लअर्ज़ि फ़तसीरु तुराबन वल्हासिलु अन्नल अर्ज महिल्लु ज़मीइल अज्सामिस्सलैफ़ियति व मुकिरूहा ला मल्जअ लहा इल्ला इलैहा फ़हिय किफ़ातुन लहा व आलमु अन्नह क़द तज़ाहरतिहलाइलु मिनल किताबि वस्सुन्नति अला शुबूति अज़ाबिल क़ब्रि व अज्मअ अलैहि अहलुस्सुन्नति व क़द कथुरतिल अहादीषु फ़ी अज़ाबिल क़ब्रि हत्ता क़ाल ग़ैर वाहिदिन अन्नहा मुतवातिरतुन ला यस्हिदु अलैहा अतवातिक़ व इल्लम यसिह मिन्नूहा लम यसिह शैउन मिन अम्हिदीनि इला आख़िरीही (मिअ्रात, जिल्द नं. 1, पेज नं. 130)

मुख़तसर मज़लब ये है कि लम्मात मे हैं कि यहाँ क़ब्रों से मुराद आलमे बरज़ख़ है जैसा कि कुअन मज़ीद में है कि मरनेवालों के लिये क्रियामत से पहले एक आलम और है जिसका नाम आलमे बरज़ख़ है और ये दुनिया और आख़िरत के बीच एक आलम है जिसका रिश्ता दोनों से है और क़ब्र से वो ग़द्दा मुराद नहीं जिसमें मय्यत को दफ़न किया जाता है क्योंकि बहुत सी मय्यत दफ़न नहीं की जाती हैं जैसे डूबनेवाला और जलनेवाला और जानवरों के पेटों में जाने वाला। हालाँकि उन सबको अज़ाब व प़वाब होता है और उन सबसे सवाल ज़वाब होते हैं और यहाँ अज़ाब का ख़ास तौर पर ज़िक़्र किया गया

है, इसलिये कि उसका ख़ास एहतिमाम है और इसलिये कि अक़बर तौर पर गुनाहगारों और जुम्ला काफ़िरों के लिये अज़ाब ही मुक़द्दर है।

मैं कहता हूँ कि हासिल ये है कि बरज़ख़ उस आलम का नाम है जिसमें दुनिया से इंसान ज़िन्दगी मुन्क़तअ करके इब्तिदाए दोरे आख़िरत में पहुँच जाता है। पस दुनियावी ज़िन्दगी के इन्किताअ के बाद वो पहला जज़ा और सज़ा का घर है फिर क़यामत के दिन हर नफ़्स को उसका पूरा-पूरा बदला जन्नत या जहन्नम की शक्ल में दिया जाएगा और बरज़ख़ के अज़ाब व प्रवाब को क़ब्र की तरफ़ इसलिये मन्सूब किया गया है कि इंसान उसी के अंदर दाख़िल होता है और इसलिये भी कि ज़्यादातर मरने वाले क़ब्र ही में दाख़िल किये जाते हैं वरना काफ़िर और गुनाहगार जिनको अल्लाह अज़ाब करना चाहे इस सूरत में भी वो अज़ाब कर सकता है कि वो दफ़न न किये जाएँ। ये अज़ाब मख़लूक से पर्दा में होता है। (इल्ला मनशाअल्लाह)

और ये भी कहा गया है कि ज़रूरत नहीं है क्योंकि क़ब्र उसी जगह का नाम है जहाँ मय्यत का ज़मीन में मकान बने और इसमें कोई शक नहीं कि मरने के बाद इंसान का आख़िरी मकान ज़मीन ही है। जैसा कि कुआन मजीद में है कि हमने तुम्हारे लिये ज़मीन को ज़िन्दगी और मौत हर हाल में ठिकाना बनाया है। वो ज़िन्दा और मुर्दा सबको जमा करती है और सबको शामिल है पस मय्यत डूबने वाले की हो या जलने वाले की या हैवानों के पेट में जाने वाले की इवाह ज़मीन के भेड़ियों के पेट में जाए या हवा में परिन्दों के पेट में या दरिया में मछलियों के पेट में, सबका नतीजा मिट्टी में मिलना है और जान लो कि किताब व सुन्नत के ज़ाहिर दलाइल की बिना पर अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है जिस पर तमाम अहले इस्लाम का इम्माअ है और इस बारे में इस क़दर तवातुर के साथ अह्दादीष मरवी हैं कि अगर उनको भी सहीह न तस्लीम करें तो दीन का फिर कोई भी अम्न सहीह नहीं करार दिया जा सकता मज़ीद तफ़्सील के लिये किताबुर्सूह अल्लामा इब्ने क़य्यिम का मुतालज़ा कीजिए।

बाब 88 : ग़ीबत और पेशाब की आलूदगी से क़ब्र का अज़ाब होना

1378. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताऊस ने कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का गुज़र दो क़ब्रों पर हुआ। आपने फ़र्माया कि उन दोनों के मुर्दों पर अज़ाब हो रहा है और ये भी नहीं कि किसी बड़ी अहम बात पर हो रहा है। फिर आप ने फ़र्माया कि हौ! उनमें एक शख़्स तो चुगलखोरी किया करता था और दूसरा पेशाब से बचने के लिये एहतियात नहीं करता था। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) ने एक हरी टहनी ली और उसके दो टुकड़े करके दोनों क़ब्रों पर गाड़ दिया और फ़र्माया कि शायद जब तक ये खुश्क न हों इन पर अज़ाब कम हो जाए। (राजेअ : 216)

٨٨- بَابُ عَذَابِ الْقَبْرِ مِنَ الْبَيَّةِ وَالْبَوْلِ

١٣٧٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ طَارُسٍ قَالَ أَنَّ هَبَّاسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا مَرَّ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: «إِنَّهُمَا لَعَذَابَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَيْفٍ. ثُمَّ قَالَ: بَلَى، أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكَانَ يَسْتَنِي بِالنَّوْمَةِ، وَأَمَّا الْآخَرُ فَكَانَ لَا يَسْتَعِزُّ مِنْ بَوْلِهِ». قَالَ: «ثُمَّ أَخَذَ عُودًا رَطْبًا فَكَسَرَهُ بِأُتَيْتَيْنِ، ثُمَّ غَرَزَ كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى قَبْرِ ثُمَّ قَالَ: لَعَلَّهُ يُخَفَّفُ عَنْهُمَا، مَا لَمْ يَتَيْسَّرَ».

[راجع: ٢١٦]

तशरीह:

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) फ़र्माते हैं, क़ालज़ज़ीनुब्नुल्मुनीर अल्मुरादु बितखसीसि हाज़ैनिलअम्रैनि बिज़्जिक्वि तअज़ीमु अम्रिहिमा ला नफ़युल्हुक्मि अम्मा अदाहुमा फ़अला हाज़ा ला यल्जिमु मिन जिक्विहिमा हस्रू अज़ाबिक्वि फ़ीहिमा लाकिन्नज़ाहिर मिनल्इकितसारि अला ज़िक्विहिमा अन्नहुमा अम्कन फ़ी ज़ालिक मिन ग़ैरिहिमा व कद रवा अस्हाबुस्सुननि मिन हदीषि अबी हुदैरत इस्तन्जहू मिनल्बौलि

फ़इन्न आम्मत अज़ाबिल्कब्री मिन्हु घुम्म औरदल्मुसन्निफ़ हदीष इब्न अब्बासिन फी किस्सतिल्कब्रैनि व लैस फ़ीहि लिलग़ैबति ज़करू इन्नमा वरद बिलफ़िज़न्नमीमति व क़द तक्रहमल्कलामु अलैहि मुस्तौफ़ा फ़ित्तहारति (फ़तहल बारी)

या'नी ज़ैन बिन मुनीरी ने कहा कि बाब में सिर्फ़ दो चीज़ों का ज़िक्र उनकी अहमियत के पेशे—नज़र किया गया है उसके अलावा दूसरे गुनाहों की नफ़ी मुराद नहीं। पस उनके ज़िक्र से ये लाज़िम नहीं आता कि अज़ाबे क़ब्र उन ही दो गुनाहों पर मुन्हसिर है। यहाँ उनके ज़िक्र पर क़िफ़ायत करना इशारा है कि उनके इर्तीकाब करने पर अज़ाब का होना ज़्यादा मुम्किन है। हदीषे अबू हुरैरह (रज़ि.) के लफ़ज़ ये हैं कि पैशाब से पाकी हासिल करो क्योंकि आम तौर पर अज़ाबे क़ब्र उस से होता है। बाब के बाद मुसन्निफ़ (रह.) ने यहाँ हदीषे इब्ने अब्बास (रज़ि.) से दो क़ब्रों का किस्सा नक़ल किया। उसमें ग़ीबत का लफ़ज़ नहीं है बल्कि चुग़लख़ोर का लफ़ज़ वारिद हुआ है। मज़ीद वज़ाहत किताबुत्तहारत में गुज़र चुकी है।

ग़ीबत और चुग़ली क़रीब क़रीब एक ही किस्म की गुनाह हैं इसलिये दोनों अज़ाबे क़ब्र के अस्बाब हैं।

बाब 89 : मुद्दे को दोनों वक़्त सुबह और शाम उसका ठिकाना बतलाया जाता है

۸۹- بَابُ الْمَيِّتِ يُغْرَضُ عَلَيْهِ
مَقْعَدُهُ بِالْفَدَاةِ وَالْعَشِيِّ

1379. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने ये हदीष बयान की, उन्होंने कहा कि हमसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम में से कोई शख़्स मर जाता है तो उसका ठिकाना सुबह व शाम दिखाया जाता है। अगर वो जन्नती है तो जन्नत वालों में और दोज़ख़ी है तो दोज़ख़ वालों में। फिर कहा जाता है ये तेरा ठिकाना है, यहाँ तक कि क़यामत के दिन अल्लाह तुझको उठाएगा। (दीर्ग मक़ाम : 3240, 6515)

۱۳۷۹- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ : خَدَّثَنِي
مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ :
(إِنْ أَحَدُكُمْ إِذَا مَاتَ غُرِضَ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ
بِالْفَدَاةِ وَالْعَشِيِّ، إِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ
فَمِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ
فَمِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَيَقَالُ : هَذَا مَقْعَدُكَ حَتَّى
يَبْعَثَكَ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ) .

[طرفاء بی : ۳۲۴۰، ۶۵۱۵]

तशरीह : मतलब ये है कि अगर जन्नती है तो सुबह शाम उस पर जन्नत पेश करके उसको तसल्ली दी जाती है कि जब तू इस क़ब्र से उठेगा तो तेरा आखिरी ठिकाना ये जन्नत होगी और इसी तरह दोज़ख़ी को जहन्नम दिखलाई जाती है कि वो अपने आखिरी अंजाम को देख ले। मुम्किन है कि ये अज़ाज करना सिर्फ़ रूह पर हुआ और ये भी मुम्किन है कि रूह और जिस्म दोनों पर हो। सुबह व शाम से उनके औकात मुराद हैं जबकि आलमे बरज़ख़ में उनके लिये न सुबह का वजूद है और न शाम का वयहतमिलु अंत्युक़ाल अन्न फ़ाइदतल्अर्ज़ि फ़ी हज़िक़हिम तबशीरन अर्वावाहहुम बिइस्तिक्वारिहा फिल्जन्नति मुक्तरिनतन बिअज्सादिहा (फ़तह) या'नी इस पेश करने का फ़ायदा मोमिन के लिये उनके हक़ में उनकी रूहों को ये बशारत देना कि उनका आखिरी ठिकाना—ए—क़रार उनके जिस्मों समेत जन्नत है। इसी तरह दोज़ख़ियों को डराना कि उनका आखिरी ठिकाना उनके जिस्मों समेत दोज़ख़ है। क़ब्र में अज़ाब व ष्वाब की सूत ये भी है कि जन्नती के लिये जन्नत की तरफ़ एक खिड़की खोल दी जाती है जिससे उसको जन्नत की तरोताज़गी हासिल होती रहती है और जहन्नमी के लिये जहन्नम की तरफ़ एक खिड़की खोल दी जाती है जिससे उसको जहन्नम की गर्म—गर्म हवाएँ पहुँचती रहती है। सुबह व शाम उन ही खिड़कियों से उनको जन्नत और जहन्नम के कामिल नज़ारे कराए जाते हैं। या अल्लाह! अपने फ़ज़लो—करम से नाशिर बुखारी शरीफ़ मुतर्जिम उर्दू व हिन्दी को उसके वालिदेन व असातिज़ा व तमाम मुआविनीन किराम व शाएकीन इज़ाम को क़ब्र में जन्नत की तरफ़ से

तरोताज़गी नज़ीब फ़र्मा और क़यामत के दिन जन्नत में दाख़िल फ़र्माइया और दोज़ख़ से हम सबको महफूज़ रखियो। आमीन!

बाब 90 : मय्यित का चारपाई पर

बात करना

1380. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब जनाज़ा तैयार हो जाता है, फिर मर्द उसको अपनी गर्दनो पर उठा लेते हैं तो अगर वो मुर्दा नेक हो तो कहता है कि हौं आगे ले चलो, मुझे बढ़ाए चलो और अगर नेक नहीं होता तो कहता है, हाय रे ख़राबी! मेरा जनाज़ा कहाँ ले जा रहे हो। इस आवाज़ को इन्सान के सिवा तमाम मख़लूक सुनती है। अगर कहीं इन्सान सुन पाए तो बेहोश हो जाएँ।

(राजेअ: 1314)

٩٠- بَابُ كَلَامِ الْمَيِّتِ عَلَى

الْجَنَازَةِ

١٣٨٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا وَضِعَتِ الْجَنَازَةُ فَاحْتَمَلَهَا الرَّجُلُ عَلَى أَغْصَانِهِمْ، فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ قَدْ تَوَنَّى، وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ: يَا وَيْلَهَا، أَيْنَ تَذْفُونُ بِهَا؟ يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا الْإِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَهَا الْإِنْسَانُ لَصَيَّقَ)). [راجع: ١٣١٤]

तशरीह: जनाज़ा उठाए जाते वक़्त अल्लाह पाक बरज़ख़ी जुबान मय्यित को अत्ता कर देता है। जिसमें वो अगर जन्नती है तो जन्नत के शौक़ में कहता है कि मुझको जल्दी-जल्दी ले चलो ताकि जल्द अपनी मुराद को हासिल करूँ और अगर वो जहन्नमी है तो वो घबराकर कहता है कि हाय मुझे कहाँ लिये जा रहे हो। उस वक़्त अल्लाह पाक उनको इस तौर पर मख़फ़ी (पोशीदा, गुप्त) तरीक़े से बोलने की ताक़त देता है और उस आवाज़ को इंसान और जिन्न के अलावा तमाम मख़लूक सुनती है।

इस हदीष से सिमाअे-मौता पर कुछ लोगों ने दलील पकड़ी है जो बिल्कुल ग़लत है। कुआन मजीद में साफ़ सिमाअे मौता की नफ़ी मौजूद है। इन्नक ला तुस्मिउल मौता (अन्मल: 80) अगर मरनेवाले हमारी आवाज़ें सुन पाते तो उनको मय्यित ही न कहा जाता। इसीलिये तमाम अइम्म-ए-हुदा ने सिमाअे मौता का इन्कार किया है। जो लोग सिमाअे मौता के क़ायल हैं उनके दलाइल बिल्कुल बेवज़न हैं। दूसरे मक़ाम पर उसका तफ़्सीली बयान होगा।

बाब 91 : मुसलमानों की नाबालिग

औलाद कहाँ रहेगी?

और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि जिस के तीन नाबालिग बच्चे मर जाएँ तो ये बच्चे उसके लिये दोज़ख़ से रोक बन जाएँगे या ये कहा कि वो जन्नत में दाख़िल होगा।

٩١- بَابُ مَا قِيلَ فِي أَوْلَادِ

الْمُسْلِمِينَ

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ مَاتَ لَهُ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ لَمْ يَتَلَفُوا الْحَيْثُ كَانَ لَهُ حِجَابًا مِنَ النَّارِ أَوْ دَخَلَ الْجَنَّةَ)).

1381. हमसे यअकूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन उलय्या ने बयान किया, उनसे अब्दुल अजीज बिन मुहैब ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस मुसलमान के भी तीन नाबालिग बच्चे मर जाएँ तो अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल व रहमत से जो उन बच्चों पर करेगा, उनको बहिश्त में ले जाएगा। (राजेअ : 1238)

۱۳۸۱- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَزِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ بْنُ مَهْبُوبٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَا مِنْ النَّاسِ مُسْلِمٍ يَمُوتُ لَهُ ثَلَاثَةٌ أَوْلَادٍ لَمْ يَتْلَوْا الْجَنَّةَ إِلَّا أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ إِلَيْهِمْ)). [راجع: ۱۲۴۸]

तशरीह : बाब मुनअक़िद करने और इस पर हदीषे अबू हुरैरह (रज़ि.) लाने से इमाम बुखारी (रह.) का मक़सद साफ़ ज़ाहिर है कि मुसलमानों की औलाद जो नाबालिगी में मर जाए वो जन्नती है, तब ही तो वो अपने वालिदैन के लिये दोज़ख़ से रोक बन सकेंगे। अक़सर इलम-ए-किराम का यही क़ौल है और इमाम अहमद (रह.) ने हज़रत अली (रज़ि.) से रिवायत किया है कि मुसलमानों की औलाद जन्नत में होगी।

फिर आपने ये आयत पढ़ी, وَلَلْجَنَّةُ لَأَكْبَرُ مِنْ ذَلِكَ وَالْجَنَّةُ لَأَكْبَرُ مِنْ ذَلِكَ (अतूर: 21) जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी उनकी इतिबाअ की मैं उनकी औलाद को उनके साथ जन्नत में जमा कर दूंगा। क़ालन्नववी अजमअ मय्युअतह बिही मिन उलमाइलमुस्लिमीन अला इन्न मम्मात मिन अत्फ़ालिल्मुस्लिमीन फ़हुव अहलिज्जन्नति व तवक्कफ़ बअज़ुहुम अल्हदीषुलिआइशत यअनी अल्लज़ी अख़रजहु मुस्लिम बिलफ़िज़ तुवफ़िफ़य सबिय्युन मिनलअन्सारि फ़कुल्लु तुबा लहु लम यअलम सूअन व लम युदरिकहु फ़क़ालन्नबिय्यु और गैर ज़ालिक या आइशतु इन्नल्लाह ख़लक़ लिज्जन्नति अहलन अल्हदीष क़ाल वलज़वाब अन्हु अन्नहु लअल्लहु नहाहा अनिल्मुसारअति इललक़त्इ मिन गैर दलीलिन औ क़ाल ज़ालिक क़बल अय्युअलम अन्न अल्फ़ालल्मुस्लिमीन फिल्जन्नति (फ़तहूल बारी)

या'नी इमाम नववी (रह.) ने कहा कि इलम-ए-किराम की एक बड़ी ता'दाद का इस पर इज्माअ है कि जो मुसलमान बच्चा इतिक़ाल कर जाए वो जन्नती है और कुछ इलमा ने इस पर तवक्कफ़ भी किया है। जिनकी दलील हज़रत आइशा (रज़ि.) वाली हदीष है जिसे मुस्लिम ने रिवायत किया है कि अंसार के एक बच्चे का इतिक़ाल हो गया था, मैंने कहा कि उसके लिये मुबारक हो उस बच्चे ने कभी कोई बुरा काम नहीं किया या ये कि किसी बुरे काम ने उसको नहीं पाया। आहज़रत (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया कि ऐ आइशा (रज़ि.)! क्या इस ख़याल के खिलाफ़ नहीं हो सकता। बेशक अल्लाह ने जन्नत के लिये भी एक मख़लूक को पैदा फ़र्माया है और जहन्नम के लिये भी। इस शुब्हा का जवाब ये दिया गया है कि शायद बरौर दलील के आहज़रत (ﷺ) ने हज़रते आइशा (रज़ि.) को उसके बारे में कोई क़त्अी इल्म नहीं दिया गया था। बाद में आपको अल्लाह पाक ने बतला दिया कि मुसलमानों की औलाद यकीनन जन्नती होगी।

1382. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी बिन श़ाबित ने बयान किया, उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि जब इब्राहीम (आहज़रत (ﷺ) के साहबज़ादे) का इन्तिक़ाल हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि बहिश्त में उनके लिये एक दूध पिलाने वाली है।

۱۳۸۲- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّهُ سَمِعَ الرَّاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا تَوَفَّى إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِنَّ لَهُ مُرَضِعًا فِي الْجَنَّةِ)).

इस हदीष से भी साबित हुआ कि मुसलमानों की औलाद जन्नत में दाखिल होगी। आँहजरत (ﷺ) के साहबजादे के लिये अल्लाह ने मजीद फ़ज़ल फ़र्माया कि चूँकि आपने हालते रज़ाअत में इंतिकाल किया था लिहाज़ा अल्लाह पाक ने उनको दूध पिलाने के लिये जन्नत में एक आया को मुकर्रर फ़र्मा दिया। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिव्वं अला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम

खातिमा

अल्हम्दुलिल्लाहि वल मन्नह कि रात और दिन की सफ़र व हज़र की मुतवातिर मेहनत के नतीजे में आज इस पाक व मुकद्दस किताब के पाँचवें पारे के तर्जुमे व तशरीहात से फ़रागत हासिल हुई। इस ख़िदमत के लिये जिस क़दर मेहनत की गई उसे अल्लाह पाक ही जानता है। ये महज़ उसका करम है कि उसने इस मेहनते शाक्का (कड़ी मेहनत) की तौफ़ीक़ अज़ा फ़र्माई और इस अज़ीम ख़िदमत को यहाँ तक पहुँचाया। मेरी जुबान में त़ाक़त नहीं कि मैं उस पाक परवरदिगार का शुक्र अदा कर सकूँ। अल्लाह पाक इसे कुबूल करे और कुबूले आम अज़ा करे और जहाँ कहीं भी मुझसे कोई लज़िश हुई हो या कलामे रसूल (ﷺ) की असल मंशा के ख़िलाफ़ कहीं कोई लफ़ज़ दर्ज हो गया हो, तो अल्लाह पाक उसे मुआफ़ कर दे। मैंने अपनी दानिस्त में इस अम्र की पूरी-पूरी सई (कोशिश) की है कि किसी जगह भी अल्लाह और उसके हबीब (ﷺ) की मंशा के ख़िलाफ़ तर्जुमा व तशरीह में कोई लफ़ज़ न आने पाए फिर भी हकीर नाचीज़ जुलूम व जुहूले मुअतरिफ़ हूँ कि अल्लाह जाने कहाँ कहाँ मेरे क़लम को लज़िश हुई होगी। लिहाज़ा यही कह सकता हूँ कि अल्लाह पाक मेरी क़लमी लज़िशों को मुआफ़ कर दे और मेरी निय्यत में ज़्यादा से ज़्यादा खुलूस अज़ा फ़र्माए।

मैंने ये भी खास कोशिश की है कि इख़ितलाफी उमूर में मसालिके मुख्तलिफ़ा की तफ़सील में किसी भी आला और अदना बुजुर्ग, इमाम, मुहदिष, आलिम, फ़ाज़िल की शान में कोई गुस्ताख़ाना जुम्ला क़लम पर न आने पाए। अगर किसी जगह कोई ऐसा फ़िक़रा नज़र आए तो उम्मीद है कि इलमात इत्तिलाअ देकर शुक्रिया का मौक़ा देंगे और हर ग़लती को बनज़रे इस्लाह मुतालाअ फ़र्माकर नज़रे धरानी की तरफ़ रहनुमाई कराएँगे। मेरा मक़सद सिर्फ़ कलामे रसूल (ﷺ) की ख़िदमत है जिससे कोई ग़ज़े फ़ासिद मक़सूद नहीं है, फिर भी इंसान हूँ, ज़ईफ़ुल बुनियान हूँ, अपनी जुम्ला ग़लतियों का मुझको ए तिराफ़ है। उन इलम-ए-किराम का बेहद मशकूर हूँगा जो मेरी इस्लाह फ़र्माकर मेरी दुआएँ हासिल करेंगे।

आख़िर में मैं अपने इन जुम्ला शाइकीने किराम का भी अज़बुद मशकूर हूँ जिनकी मसाई जमीला के नतीजे में ये ख़िदमत यहाँ तक पहुँची है। दुआ है कि अल्लाह पाक जुम्ला भाईयों को दारैन की नेअमतों से नवाज़े और इस ख़िदमत की तकमील कराये। व बिल्लाहितौफ़ीकि व हुव ख़ैरुर्रफ़ीकि वस्सलामु अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, आमीन!

मुहम्मद दाऊद राज वल्द अब्दुल्लाह
रबी उल अब्बल 1389 हिजरी

नोट : अल्लामा दाऊद राज (रह.) ने 43 साल पहले पाँचवें पारे की तकमील पर ये अल्फ़ाज़ लिखे थे। वे आज हमारे बीच मौजूद नहीं हैं। तमाम क़ारेईने किराम से गुज़ारिश है कि अपनी दुआओं में अल्लामा दाऊद राज (रह.) को याद रखें और उनके लिये दुआ-ए-मफ़िरत फ़र्माएँ।

सहीह बुखारी के इस नुस्खे को उर्दू से हिन्दी में अनुवादित करते समय हमने पूरा एहतियाम रखा है कि कलामे-रसूल (ﷺ) की ऐन मंशा को ज़र्ब (चोट) न पहुँचे। तमाम क़ारेईने किराम से गुज़ारिश है कि सहीह बुखारी के इस हिन्दी नुस्खे में अगर कोई ख़ामी नज़र आए तो इस्लाह की निय्यत से हमें ज़रूर इत्तिला दें, हम आपके मशकूर रहेंगे। आपसे यह भी इल्तिमास है कि अपनी दुआओं में उन तमाम हज़रात को शामिल करें जिनके तआवुन से सहीह बुखारी मुकम्मल हिन्दी आप तक पहुँची है। वस्सलाम,

सलीम ख़िलजी
(हिन्दी अनुवादक) शाबान 1432 हिजरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

छठा पारा

बाब 92 : मुशिकीन की नाबालिग

औलाद का बयान

۹۲- بَابُ مَا قِيلَ فِي أَوْلَادِ

الْمُشْرِكِينَ

हाफिज इब्ने हजर (रह.) फ़मति हैं, हाज़िहि तर्जुमतु तुशइरु अयज़न बिअन्नहू कान मुतवक्किफ़न फ़ी ज़ालिक व कद जज़मा बअद हाज़ा फ़ी तफ़सीरि सूरतिरूम बिमा यदुल्लु अला इखितयारिल्कौलिस्साइरि इला अन्नहुम फ़िल्जन्नति कमा सयाती तहरीरूहू व कद रत्तब अयज़न अहादीषु हाज़ल बाबि तर्तीबन युशीरु इलल्मज़हबिल्मुख्तारि फ़इन्नहू सदरहू बिल्हदीषिह्वाल्लि अलत्तवक्कुफ़ि शुम्म घना बिल्हदीषिल्मुर्ज्जहि लिक्ौनिहिम फ़िल्जन्नति बिल्हदीषिल्मुसिरि बिज़ालिक फ़इन्नहू कौलहू फ़ी सियाकिहि अम्मस्सिबयानु हौलहू फ़औलादुन्नासि कद अख़जहू फ़ित्तअबीरि बिल्फ़िज़ अम्मल्बिल्दानुल्लज़ीन हौलहू फ़कुल्लु मौलूदिन यूलद अलल्फ़ित्ति फ़क़ाल बअज़ुल्मुस्लिमीन व औलादुल्मुशिकीन फ़क़ाल औलादुल्मुशिकीन व युअय्यिदुहू मा रवाहु अबू यअला मिन हदीषि अनसिन मफ़ूअन सअलतु रब्बी अल्लाहीन फ़ी ज़ुरियतिल्बशरि अल्ला युअज़्ज़िबहुम फ़आतानीहिम इस्नादुहू हसनन (फ़तुल बारी जुज़उः सादिस, पेज 01)

क़ाल इब्नुल्क़थ्थिम लैसल्मुरादु बिक्ौलिही यूलदु अलल्फ़ित्ति अन्नहू ख़रज मिन बत्नि उम्मिही यअलमुद्दीन लिअन्नल्लाह यकूलु अल्लाहु अख़जकुम मिम्बुतूनि उम्महातिकुम ला तअलमून शैअन बला किन्नल्मुराद अल्फ़ित्तु मुक्त्तज़ीहि लिमअरिफ़ति दीनिल्इस्लामि व महब्बतुहू फ़नफ़सुल्फ़ित्ति लिज़ालिक लिअन्नहू ला यतगय्यरु बितहवीदिल्अबवैनि मज़लन युख़रिजानिल्फ़ित्त अनिल्कुबूलि व इन्नल्मुरादु इन्न कुल्ल मौलूदिन यूलदु अला इक़्ारिही बिर्खूबिब्यति फ़लौ ख़ला व अदमुल्मुआरिज़ि लम यअदिल अन ज़ालिक इला गैरिही कमा अन्नहू यूलदु अला महब्बतिन मा युलाइमु बदनुहू मिन इर्तिज़ाल्लबनि हत्ता युसरिफ़ अन्हुस्सारिफ़ु मिन शुम्भिहत्तिल्फ़ित्तु बिल्लबनि बल कानत इय्याहु फ़ी तावीलिर्ख़्या वल्लाहु आलम (फ़तुल बारी, जिल्द 6, पेज 3)

मुख्तसर मज़लब ये है कि ये बाब ही ज़ाहिर कर रहा है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) इस बारे में मुतवक्किफ़ थे। उसके बाद सूरह रूम में आपने इसी ख़याल पर जज़म किया है कि वो ज़न्नती हैं। यहाँ भी आपने अहादीष को उसी तर्ज़ पर मुत्तब किया है जो मज़हबे मुख्तार की तरफ़ रहुनुमाई कर रही है। पहली हदीष तो तवक्कुफ़ पर दाल है। दूसरी हदीष से ज़ाहिर है कि उनके ज़न्नती होने की तर्ज़ीह हासिल है। तीसरी हदीष में उसी ख़याल की मज़ीद सराहत मौजूद है जैसा लफ़्ज़ 'अम्मस्सिबयान फ़औलादुन्नासि' से ज़ाहिर है। उसी को किताबुत्तअबीर में लफ़्ज़ों में निकाला है लेकिन बच्चे जो उस बुजुर्ग के आसपास नज़र आए पस हर बच्चा भी फ़ित्तरत पर पैदा होता है। कुछ ने कहा कि वो मुसलमानों की औलादें थीं, उसकी ताईद अबू यअला की रिवायत से भी होती है कि मैंने औलादे आदम में बेख़बरों की बख़िश का सवाल किया तो अल्लाह ने मुझे उन सबको अज़ा फ़र्मा दिया।

अल्लामा इब्ने क़थ्थिम ने फ़र्माया कि हदीष कुल्लु मौलूदिन यूलदु अलल्फ़ित्ति से मुराद ये नहीं कि हर बच्चा

दीन का इल्म हासिल करके पैदा होता है। अल्लाह ने खुद कुआन पाक में फर्माया है कि तुमको अल्लाह ने माँओं के पेट से इस हाल में पैदा किया कि तुम कुछ न जानते थे। लेकिन मुराद ये है कि बच्चे की फ़ितरत इस बात की मुक्तज़ा है कि वो दीने इस्लाम की मअरिफ़त और मुहब्बत हासिल कर सके। पस नफ़से फ़ितरत इकरार और मुहब्बत को लाज़िम है ख़ाली कुबूले फ़ितरत मुराद नहीं। बई तौर पर कि वो माँ-बाप के डराने-धमकाने से मुतगय्यर नहीं हो सकती। पस मुराद यही है कि हर बच्चा इकरारे रुबूबियत पर पैदा होता है पस अगर वो ख़ाली ज़हन ही रहे और कोई मुआरिज़ा उसके सामने न आए तो वो इस ख़याल से नहीं हट सकेगा। जैसा कि वो अपनी माँ की छातियों से दूध पीने की मुहब्बत पर पैदा हुआ है यहाँ तक कि कोई हटानेवाला भी उसे उस मुहब्बत से हटा नहीं सकता। इसलिये फ़ितरत को दूध से तश्बीह दी गई है बल्कि ख़वाब में भी उसकी ता'बीर यही है।

1383. हमसे हिब्बान बिन मूसा मरवज़ी ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अबू बिशर जा'फ़र ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने, उनको इब्ने अब्बास (रज़ि) ने कि नबी करीम (ﷺ) से मुशिकों की नाबालिग़ बच्चों के बारे में पूछा गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने जब उन्हें पैदा किया था उसी वक़्त वो ख़ूब जानता था कि ये क्या अमल करेंगे।

(दीगर मक़ाम : 6097)

۱۳۸۳- حَدَّثَنَا حِبَّانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بَشِيرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَ: ((سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنْ أَوْلَادِ الْمُشْرِكِينَ، فَقَالَ: ((اللَّهُ إِذْ خَلَقَهُمْ أَغْلَمَ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ)).

[طرفه بی : ۶۰۹۷].

तशरीह : मतलब ये है कि अल्लाह तआला उनसे अपने इल्म के मुवाफ़िक़ (अनुरूप) सुलूक करेगा। बज़ाहिर ये हदीष इस मज़हब की ताईद करती है कि मुशिकों की औलाद के बारे में तवक्कुफ़ करना चाहिये। इमाम अहमद और इस्हाक़ और अक़्मर अहले इल्म का यही क़ौल है और बैहकी ने इमाम शाफ़िई से भी ऐसा ही नक़ल किया है। उसूलन भी ये कि नाबालिग़ बच्चे शरअन ग़ैर मुकल्लफ़ हैं, फिर भी इस बहष का उम्दा अमल ये है कि वो अल्लाह के हवाले है जो ख़ूब जानता है कि वो ज़न्नती हैं या जहन्नमी। मोमिनीन की औलाद तो बहिश्ती है लेकिन काफ़िरों की औलाद में जो नाबालिग़ी की हालत में मर जाएँ बहुत इख़्तिलाफ़ है। इमाम बुखारी (रह.) का मज़हब ये है कि वो बहिश्ती हैं क्योंकि बग़ैर गुनाह के अज़ाब नहीं हो सकता और वो मा'सूम मरे हैं। कुछ ने कहा अल्लाह को इख़्तियार है और उसकी मशिय्यत पर मौकूफ़ (इच्छा पर आधारित) है चाहे बहिश्त में ले जाए, चाहे दोज़ख़ में। कुछ ने कहा अपने माँ-बाप के साथ वो भी दोज़ख़ में रहेंगे। कुछ ने कहा खाक हो जाएँगे। कुछ ने कहा अअराफ़ में रहेंगे। कुछ ने कहा उनका इम्तिहान किया जाएगा। वल्लाहु आलम (वही दी)

1384. हमसे अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे अता बिन यज़ीद लैज़ी ने ख़बर दी, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने फ़र्माया कि रभूल्लाह (ﷺ) से मुशिकों के नाबालिग़ बच्चों के बारे में पूछा गया। आपने फ़र्माया कि अल्लाह ख़ूब जानता है जो भी वो अमल करने वाले होंगे।

(दीगर मक़ाम : 6597, 6600)

۱۳۸۴- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّحْظِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ زَيْدَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَأَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ذُرَارِيِّ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ: ((اللَّهُ أَغْلَمَ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ)). [طرفه بی : ۶۰۹۸, ۶۱۰۰].

तशरीह : अगर उसके इल्म में ये है कि वो बड़े होकर अच्छे काम करने वाले थे तो बहिश्त में जाएँ वरना दोज़ख़ में। बज़ाहिर ये हदीष मुशिकल है क्योंकि उसके इल्म में जो होता है वो ज़रूर ज़ाहिर होता है। तो उसके इल्म में तो यही था कि वो बचपन में ही मर जाएँगे। उस इश्काल (अनुमान) का जवाब ये है कि क़तई बात तो यही थी कि वो बचपन में ही मर जाएँगे

और परवरदिगार को उसका इल्म बेशक था मगर उसके साथ परवरदिगार ये भी जानता था कि अगर ये जिन्दा रहते तो नेकबख्त होते या बदबख्त। वल इल्मु इन्दल्लाह!

1385. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी जिब ने, उनसे जुहरी ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुरहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हर बच्चे की पैदाइश फ़ितरत पर होती है फिर उसके माँ-बाप उसे यहूदी या नज़रानी या मजूसी बना देते हैं। बिल्कुल उसी तरह जैसे जानवर के बच्चे सहीह सालिम होते हैं। क्या तुमने (पैदाइशी तौर पर) कोई उनके जिस्म का हिस्सा कटा हुआ देखा है? (राजेज़: 1358)

۱۳۸۵- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنَبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كُلُّ مَوْلُودٍ يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ أَوْ يَنْصَرَانِهِ أَوْ يُمَجِّسَانِهِ، كَمَا تَلْقَى الْبُهَمَةَ تَتَجَّ، فَلَنْ تَرَى فِيهَا جَذَعًا؟)). [راجع: ۱۳۵۸]

तशीह: मगर बाद में लोग उनके कान ख़ैरह काटकर उनको ऐबदार कर देते हैं। इस हदीस से इमाम बुखारी (रह.) ने अपना मज़हब प्रबत किया कि जब हर बच्चा इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा होता है तो अगर वो बचपन ही में मर जाए तो इस्लाम पर मरेगा और जब इस्लाम पर मरा तो जन्नती होगा। इस्लाम में सबसे बड़ा जुज़ तौहीद है तो हर बच्चे के दिल में अल्लाह की मअरिफ़त और उसकी तौहीद की क़ाबिलियत होती है। अगर बुरी सोहबत में न रहे तो ज़रूर वो मुवहिहद हो लेकिन मुश्रिक माँ-बाप अज़ीज़ व अज़रबा इस फ़ितरत से उसका दिल फिराकर शिर्क में फ़ंसा देते हैं। (वहीदी)

बाब : 93

۹۳- بَابُ

तशीह: इस बाब के ज़ेल हज़रत इब्ने हज़र फ़र्माते हैं :

कज़ा प्रबत लिजमीइहिम इल्ला लिअब्बीजरिन व हुव कल्फस्ति मिनल्बाबिल्लज़ी कबलहु व तअल्लुकल्हदीषि बिहीज़ाहिरुन मिन क़ौलिही फ़ी हदीषि समुरतिल्मज्कूर वशशैखु फ़ी अस्तिशजरति इब्राहीम वस्सिब्यानु हौलहु औलादुन्नासि व क़द तक़हमत्तम्बीहु अला अन्नहु वरदहु फित्तअबीरि बिज़ियादतिन क़ालू व औलादुल्मुश्रिकीन फ़क़ाल औलादुल्मुश्रिकीन सयाती अल्कलामु अला बक्रियतिल्हदीषि मुस्तौफ़न फ़ी किताबित्तअबीरि इन्शाअल्लाहु तआला. (फ़तहूल बारी, जिल्द नं. : 1, पेज नं. 3)

या'नी तमाम नुस्खों में (बजुज़ अबू ज़र के) ये बाब इसी तरह दर्ज है और गोया पिछले बाब से फ़सल के लिये है और हदीस का ता'ल्लुक समुरा मज़कूर की रिवायत में लफ़ज़ वशशैखु फ़ी अस्तिशजरति इब्राहीम वस्सिब्यानु हौलहु औलादुन्नासि से ज़ाहिर है और पीछे कहा जा चुका है कि हज़रत इमाम ने उसे किताबुत्तअबीर में इन लफ़ज़ों की ज़्यादाती के साथ रिवायत किया है कि क्या मुश्रिकों की औलाद के लिये भी यही हुक्म है। फ़र्माया, हाँ! औलादे मुश्रिकीन के लिये भी और पूरी तफ़सीलात का बयान किताबुत्तअबीर में आया। (वहीदी)

ये हक़ीकत मुसल्लम है कि अंबिया के ख़्वाब भी वद्दा और इल्हाम के दर्जे में होते हैं, इस लिहाज़ से आहज़रत (ﷺ) का अगरचे ये एक ख़्वाब है मगर उसमें जो कुछ आपने देखा वो बिल्कुल बरहक़ है जिसका इख़ित़सार (सारांश) ये है कि पहला आपने वो शख्स देखा जिसके जबड़े दोज़ख़ी आँकड़ों से चरि जा रहे थे। ये वो शख्स है जो दुनिया में झूठ बोलता और झूठी बातों को फैलाता रहता है। दूसरा शख्स आपने वो देखा जिसका सर पत्थर से कुचला जा रहा था। ये वो है जो दुनिया में कुआन का आलिम था मगर अमल से बिल्कुल ख़ाली रहा और कुआन पर न रात को अमल किया न दिन को, क़यामत तक उसको यही अज़ाब होता रहेगा। तीसरा आपने तन्नूर की शक़ल में दोज़ख़ का एक गढ़ा देखा जिसमें बदकार मर्द व औरत जल रहे थे। चौथा आपने एक नहर में ग़र्क़ आदमी को देखा जो निकलना चाहता था मगर फ़रिश्ता उसको मार-मारकर वापस उसी नहर में डुबो रहा था। ये वो शख्स था जो दुनिया में सूद खाता था और पेड़ की जड़ में बैठने वाले बुजुर्ग हज़रत सय्यदना ख़लीलुल्लाह

इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे और आपके आसपास वो मा'सूम बच्चे जो बचपन ही में इतिकाल कर गए। वो बच्चे मुसलमानों के हों या दीगर क़ौमों के।

ये तमाम चीज़ें अहज़रत (ﷺ) को आलमें रूया में दिखलाई गईं और आपने अपनी उम्मत की हिदायत व इब्रत के लिये उनको बयान कर दिया। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इससे श्राबित फ़र्माया कि मुश्रिकीन की औलाद जो बचपन में इतिकाल कर जाए जन्नती है। लेकिन दूसरी रिवायात की बुनियाद पर ऐसा नहीं कहा जा सकता। आखिरी बात यही है कि अगर वो रहते तो जो कुछ वो करते अल्लाह को ख़ूब मा'लूम है। पस अल्लाह पाक मुख्तार है वो जो मुआमला चाहे उनके साथ करे। हाँ! मुसलमानों की नाबालिग औलाद यकीनन सब जन्नती हैं जैसाकि अनेक दलीलों से श्राबित है।

1386. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू रजाअ इमरान बिन तमीम ने बयान बयान किया और उनसे समुरह बिन जुन्दुब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़े (फ़ज़्र) पढ़ने के बाद (उमूमन) हमारी तरफ़ मुँह करके बैठ जाते और पूछते कि आज रात किसी ने कोई ख़वाब देखा हो तो बयान करो। रावी ने कहा कि अगर किसी ने कोई ख़वाब देखा होता तो उसे वो बयान कर देता और आप उसकी ता'बीर अल्लाह को जो मंज़ूर होती बयान फ़र्माते। एक दिन आपने मा'मूल के मुताबिक़ हमसे दरयाफ़्त फ़र्माया क्या आज रात किसी ने तुममें कोई ख़वाब देखा है? हमने अर्ज़ किया कि किसी ने नहीं देखा। आपने फ़र्माया लेकिन मैंने आज रात एक ख़वाब देखा है कि दो आदमी मेरे पास आए। उन्होंने मेरे हाथ थाम लिये और वो मुझे अर्ज़-मुक़द्दस की तरफ़ ले गये। (और वहाँ से आलमे-बाला की मुझको सैर करवाई) वहाँ क्या देखता हूँ कि एक शख़्स तो बैठा हुआ है और एक शख़्स खड़ा है और उसके हाथ में (इमाम बुखारी ने कहा कि) हमारे बाज़ अम्हाब ने (ग़ालिबन अब्बास बिन फ़ुज़ैल अस्क्राती ने मूसा बिन इस्माईल से ये रिवायत किया है) लोहे का आँकस था जिसे वो बैठने वाले के जबड़े में डालकर उसके सर के पीछे तक चीर देता फिर दूसरे जबड़े के साथ भी इसी तरह करता था। इस दौरान में उसका पहला जबड़ा सहीह और अपनी अज़ल हालत पर आ जाता और फिर पहले की तरह वो उसे दोबारा चीरता। मैंने पूछा कि ये क्यों हो रहा है? मेरे साथ के दोनों आदमियों ने कहा कि आगे चलो। चुनौचे हम आगे बढ़े तो एक ऐसे शख़्स के पास आए जो सर के बल लेटा हुआ

۱۳۸۶- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَارِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى صَلَاةَ الْفَلَاحِ عَلَيْنَا يُوْجِهُ فَقَالَ: ((مَنْ رَأَى مِنْكُمْ اللَّيْلَةَ رُؤْيَا)) قَالَ: لَيْنَ رَأَى أَحَدٌ قَعْمًا، فَيَقُولُ: ((مَا شَاءَ اللَّهُ)). فَتَأْتَا يَوْمًا فَقَالَ: ((هَلْ رَأَى مِنْكُمْ أَحَدٌ رُؤْيَا)) فَلْتَا: لَا. قَالَ: ((لَكِنِّي رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ آتَيْنِي، فَأَخَذَا بِيَدِي فَأَخْرَجَانِي إِلَى الْأَرْضِ الْمُقَدَّسَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ جَالِسٌ وَرَجُلٌ قَائِمٌ بَيْنَهُ - قَالَ بَعْضُ أَصْحَابِنَا عَنْ مُوسَى كَلُوبٌ مِنْ خَدِيدٍ يُدْخِلُهُ فِي شِدْقِهِ - حَتَّى يَتَلَعَّ قَفَاءً، ثُمَّ يَفْعَلُ بِشِدْقِهِ الْآخَرَ مِثْلَ ذَلِكَ، وَيَتَلَعَّ شِدْقَهُ هَذَا، فَيَعُوذُ فَيَصْنَعُ مِثْلَهُ. قُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالَ: انْطَلِقْ. فَانْطَلَقْنَا حَتَّى آتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ مُصْطَبِعٍ عَلَى قَفَاءٍ، وَرَجُلٌ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِهِ بِبُهِرٍ أَوْ صُغْرَةٍ، فَيُشَدِّخُ بِهَا رَأْسَهُ، فَإِذَا صُرْتُهُ تَنْفَخَةُ

था और दूसरा शख्स एक बड़ा सा पत्थर लिये उसके सर पर खड़ा था। उस पत्थर से वो लेटेहुए शख्स के सर को कुचल देता था। जब वो उसके सर पर पत्थर मारता तो सर पर लग कर वो पत्थर दूर चला जाता और वो उसे जाकर उठा लाता। अभी पत्थर लेकर वापस भी नहीं आता था कि सर दोबारा दुरुस्त हो जाता। बिल्कुल वैसा ही जैसा पहले था। वापस आकर वो फिर उसे मारता। मैंने पूछा कि ये कौन लोग हैं? उन दोनों ने जवाब दिया कि अभी और आगे चलो। चुनौचे हम आगे बढ़े तो एक तन्नूर जैसे गढ़े की तरफ चले। जिसके ऊपर का हिस्सा तो तंग था लेकिन नीचे से खूब फराख। नीचे आग भड़क रही थी। जब आग के शोले भड़क कर ऊपर उठते तो उसमें जलने वाले लोग भी ऊपर उठ आते और ऐसा मा'लूम होता कि अब वो बाहर निकल जाएंगे, लेकिन जब शोले दब जाते तो वो लोग भी नीचे चले जाते। इस तन्नूर में नंगे मर्द और औरतें थीं। मैंने इस मौक़े पर भी पूछा कि ये क्या है? लेकिन इस मर्तबा भी जवाब यही मिला कि अभी और आगे चलो, हम आगे चले। अब हम खून की एक नहर के ऊपर थे। नहर के अन्दर एक शख्स खड़ा था और उसके बीच में (यज़ीद बिन हारून और युहेब बिन जरीर ने हाज़िम के वास्ते से वस्तुन्नहर के बजाय शतउन्नहर, नहर के किनारे के अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं) एक शख्स था। जिसके सामने पत्थर रखा हुआ था। नहर का आदमी जब बाहर निकलना चाहता तो पत्थर वाला शख्स उसके मुँह पर इतनी ज़ोर से पत्थर मारता कि वो अपनी पहली जगह पर चला जाता और इसी तरह जब भी वो निकलने की कोशिश करता वो शख्स उसके मुँह पर पत्थर उतनी ही ज़ोर से फिर मारता कि वो अपनी अम्ल जगह पर नहर में चला जाता। मैंने पूछा कि ये क्या हो रहा है? उन्होंने जवाब दिया कि अभी और आगे चलो। चुनौचे हम और आगे बढ़े और एक हरे-भरे बाग़ में आए। जिसमें एक बहुत बड़ा पेड़ था, उस पेड़ की जड़ में एक बड़ी उमर वाले बुजुर्ग बैठे हुए थे और उनके साथ कुछ बच्चे भी बैठे हुए थे। पेड़ से क़रीब ही एक शख्स अपनी आगे आग सुलगा रहा था। वो मेरे दोनों साथी मुझे लेकर उस पेड़ पर चढ़े। इस

الخَجَرُ، فَانْطَلَقَ إِلَيْهِ لِيَأْخُذَهُ فَلَا يَرْجِعُ إِلَى هَذَا حَتَّى يَلْتَمَ رَأْسُهُ وَغَادَ رَأْسُهُ كَمَا هُوَ، فَعَادَ إِلَيْهِ لَعُزْبَتُهُ، قُلْتُ : مَنْ هَذَا؟ قَالَا: انْطَلِقْ فَانْطَلَقْنَا إِلَى نَقَبٍ بِمِثْلِ التَّوْبِ ابْنِ غِلَافٍ ضَيِّقٍ وَاسْتَفْلَةٍ وَاسِعَةٍ يُوقَفُ تَحْتَهُ نَارٌ، فَإِذَا اقْتَرَبَ ارْتَفَعُوا حَتَّى كَادَ وَ أَنْ يَخْرُجُوا، فَإِذَا خَفَّتْ رَجَعُوا فِيهَا، وَلَيْهَا رِجَالٌ وَنِسَاءٌ حُرَاقَةٌ. قُلْتُ : مَنْ هَذَا؟ قَالَا: انْطَلِقْ. فَانْطَلَقْنَا حَتَّى أَتَيْنَا عَلَى نَهْرٍ مِنْ دَمٍ، فِيهِ وَجُلٌ قَائِمٌ، عَلَى وَسْطِ النَّهْرِ وَجُلٌ نَيْنَ يَدَيْهِ حِجَارَةٌ - قَالَ يَزِيدُ وَوَهَبُ بْنُ جَبْرِ عَنْ جَبْرِ بْنِ حَارِمٍ: وَعَلَى شَطِ النَّهْرِ وَجُلٌ نَيْنَ يَدَيْهِ حِجَارَةٌ - فَأَقْبَلَ الرَّجُلُ الَّذِي فِي النَّهْرِ، فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ رَمَى الرَّجُلُ بِخَجَرٍ فِي يَدِهِ لِقَوَّةٍ حَتَّى كَانَ، فَجَعَلَ كُلُّمَا جَاءَ يَخْرُجَ رَمَى فِي يَدِهِ بِخَجَرٍ فَيَرْجِعُ كَمَا كَانَ. قُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالَا: انْطَلِقْ. فَانْطَلَقْنَا حَتَّى اتَّهَنَّا إِلَى رَوْحَةِ عَضْرَاءٍ فِيهَا شَجَرَةٌ عَظِيمَةٌ، وَفِي أَصْلِهَا شَيْخٌ وَصِيَّانٌ، وَإِذَا وَجُلٌ قَرِيبٌ مِنَ الشَّجَرَةِ نَيْنَ يَدَيْهِ نَارٌ يُوقِنُهَا، فَصَعِدَا بِهَا إِلَى الشَّجَرَةِ وَأَذْخَلَانِي دَارًا لَمْ أَرْ قَطُّ أَحْسَنَ وَ أَفْضَلَ مِنْهَا، فِيهَا رِجَالٌ شُبُوحٌ وَهَبَاءٌ وَنِسَاءٌ وَصِيَّانٌ، ثُمَّ أَخْرَجَانِي مِنْهَا فَصَعِدَا بِهَا إِلَى الشَّجَرَةِ فَأَذْخَلَانِي دَارًا

तरह वो मुझे एक ऐसे घर के अन्दर ले गये कि उससे ज्यादा हमीन व खूबसूरत और बाबरकत घर मैंने कभी नहीं देखा था। इस घर में बूढ़े, जवान, औरतें और बच्चे (सब ही किसिम के लोग) थे। मेरे साथी मुझे इस घर से निकाल कर फिर एक और पेड़ पर चढ़ाकर मुझे एक और दूसरे घर में ले गये जो निहायत खूबसूरत और बेहतर था। उसमें भी बहुत से बूढ़े और जवान थे। मैंने अपने साथियों से कहा तुम लोग मुझे रातभर खूब सैर करवाई। क्या जो कुछ मैंने देखा उसकी तफ्सील भी कुछ बतानाओगे? उन्होंने कहा हाँ! वो जो तुमने देखा था उस आदमी का जबड़ा लोहे के ओकस से फाड़ा जा रहा था वो झूठा आदमी था, जो झूठी बातें बयान करता था। उससे वो झूठी बातें दूसरे लोग सुनते। इस तरह एक झूठी बात दूर-दूर तक फैल जाया करती थी। उसे क़यामत तक यही अज़ाब होता रहेगा जिस शख्स को तुमने देखा कि उसका सर कुचला जा रहा था तो वो एक ऐसा इन्सान था जिसे अल्लाह तआला ने कुआन का इल्म दिया था लेकिन वो रात को पड़ा सोता रहता और दिन में उस पर अमल नहीं करता था। उसे भी ये अज़ाब क़यामत तक होता रहेगा और जिन्हें तुमने तन्नूर में देखा वो ज़िनाकार थे। और जिसको तुमने नहर में देखा वो सूद खाया करता था और वो बुजुर्ग जो पेड़ की जड़ में बैठे हुए थे, वो इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे और उनके इर्दगिर्द वाले बच्चे, लोगों की नाबालिग औलादें थी और जो शख्स आग जला रहा था वो दोज़ख का दारोगा था और वो घर जिसमें तुम पहले दाखिल हुए जन्नत में आम मोमिनो का घर था और ये घर जिसमें तुम अब खड़े हो, ये शहीदों का घर है और मैं जिब्रईल हूँ और ये मेरे साथी मीकाईल हैं। अच्छा अब अपना सर उठाओ। मैंने अपना सर उठाया तो क्या देखता हूँ कि मेरे ऊपर बादल की तरह कोई चीज़ है। मेरे साथियों ने कहा कि ये तुम्हारा मकान है। इस पर मैंने कहा कि फिर मुझे अपने मकान में जाने दो। उन्होंने कहा कि अभी तुम्हारी उम्र बाक़ी है जो तुमने पूरी नहीं की, अगर आप वो पूरी कर लेते तो अपने मकान में आ जाते।

مِمَّا أَحْسَنَ وَالضَّلَّ لَهَا شَرُّ وَحَبَابُ. فَقُلْتُ: طَوَّعْتَنِي اللَّيْلَةَ فَأَخْبَرَنِي عَمَّا رَأَيْتُ. قَالَا: نَعَمْ. إِنَّا الْبَرِّ رَأَيْنَهُ يَشْقَى حَيْثُكَ فَكَذَّابٌ يُحَدِّثُ بِالْكَذِبِ فَتَحْمَلُ عَنْهُ حَتَّى تَبْلُغَ الْإِفَاقَ، فَيَصْنَعُ بِهِ مَا رَأَيْتُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَالْبَرِّ رَأَيْنَهُ يُشْدَخُ رَأْسُهُ لِرَجُلٍ عَظَمَةُ اللَّهِ الْقُرُونُ، فَنَامَ عَنْهُ بِاللَّيْلِ وَلَمْ يَعْمَلْ فِيهِ بِالنَّهَارِ، فَيَفْعَلُ بِهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ. وَالْبَرِّ رَأَيْنَهُ فِي النَّفْسِ لَهُمُ الرُّكَاةُ. وَالْبَرِّ رَأَيْنَهُ فِي النَّهْرِ أَكَلُوا الرُّبَا. وَالشَّيْخُ فِي أَصْلِ الشَّجَرَةِ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ، وَالصَّبِيَّانَ حَوْلَهُ قَالُوا لَا النَّاسِ. وَالْبَرِّ يُوقِدُ النَّارَ مَالِكُ عَذَابِ النَّارِ. وَالذَّارُ الْأُولَى الَّتِي دَخَلْتُ ذَاكَ حَامِيَةِ الْمُؤْمِنِينَ. وَأَنَا هَلِيبُ الدَّارِ فَتَنَارُ الشُّهَدَاءِ. وَأَنَا جَبْرِئِيلُ، وَهَذَا مِيكَائِيلُ. فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا فَوْقِي مِفْلُ السَّحَابِ، قَالَا: ذَلِكَ مَنَزَلُكَ. فَقُلْتُ: دَعَايَ أَذْخُلُ مَنَزِلِي. قَالَا: إِنَّهُ بَقِيَ لَكَ عَمْرٌ لَمْ تَسْتَكْمِلْهُ، فَلَوْ اسْتَكْمَلْتَ أَتَيْتَ مَنَزْلَكَ)).

बाब 94 : पीर के दिन मरने की फज़ीलत

٩٤- بَابُ مَوْتِ يَوْمِ الْإِثْنَيْنِ

तशरीह : जुम्मे के दिन की मौत की फज़ीलत इसी तरह जुम्मे की रात में मरनेवाले की फज़ीलत दूसरी अहदीष में आई है। पीर के दिन भी मौत के लिये बहुत अफ़ज़ल है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उसी दिन वफ़ात पाई और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उसी दिन की आरजू की मगर आपका इतिक़ाल मंगल की शब में हुआ। (वहीदी)

1387. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे उनके बाप ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि मैंने (वालिदे माजिद हज़रत) अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िदमत में (उनकी मर्ज़ुलमौत में) हाज़िर हुई तो आपने पूछा कि नबी करीम (ﷺ) को तुम लोगों ने कितने कपड़ों में कफ़न दिया था? हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जवाब दिया कि तीन सफ़ेद धुले हुए कपड़ों का, आपको कफ़न में क़मीज़ और अमामा नहीं दिया गया था। और अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे ये भी पूछा कि आपकी वफ़ात किस दिन हुई थी। उन्होंने जवाब दिया कि पीर के दिन। फिर पूछा कि आज कौनसा दिन है? उन्होंने कहा आज पीर का दिन है। आपने फ़र्माया कि मुझे भी उम्मीद है कि अब से रात तक में मैं भी रुख़्सत हो जाऊँ। उसके बाद आपने अपना कपड़ा दिखाया जिसे मर्ज़ के दौरान में पहन रहे थे। इस कपड़े पर ज़ा'फ़रान का धब्बा लगा हुआ था। आपने फ़र्माया मेरे इस कपड़े को धो लेना और इसके साथ दो और मिला लेना, फिर मुझे कफ़न उन्हीं का देना। मैंने कहा कि ये तो पुराना है। फ़र्माया कि ज़िन्दा आदमी नये का मुर्दे से ज़्यादा मुस्तह़ि़क़ है, ये तो पीप और ख़ून की नज़र हो जाएगा फिर मंगल की रात का कुछ हिस्सा गुज़रने पर आपका इन्तक़ाल हुआ और सुबह होने से पहले आपको दफ़न किया गया।

١٣٨٧- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ ((دَخَلْتُ عَلَى أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ: لِي كَمْ كَفْتُمُ النَّبِيَّ ﷺ؟ قَالَتْ: فِي ثَلَاثَةِ أَتَوَابٍ يَنْصِي سَحْرَتِهِ لَيْسَ فِيهَا قَمِيصٌ وَلَا عِمَامَةٌ. وَقَالَ لَهَا: لِي أَيْ يَوْمٍ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَتْ: يَوْمَ الْإِثْنَيْنِ. قَالَ: قَائِي يَوْمَ هَذَا؟ قَالَتْ: يَوْمَ الْإِثْنَيْنِ. قَالَ: أَرْجُو لِيْمَا بَيْنِي وَبَيْنَ اللَّيْلِ. فَظَنَرُ إِلَى تَوْبٍ عَلَيْهِ كَانَ يَمْرُضُ فِيهِ، بِهِ وَدَعُ مِنْ رَغْفَرَانٍ فَقَالَ: اغْسِلُوا تَوْبِي هَذَا وَزَيِّنُوا عَلَيْهِ ثَوْبَيْنِ لِكَفْنِي فِيهِمَا. قُلْتُ إِنَّ هَذَا خَلْقٌ. قَالَ: إِنَّ الْحَيَّ أَحَقُّ بِالْجَنَّةِ مِنَ الْمَيِّتِ، إِنَّمَا هُوَ لِنَهْلَةٍ. فَلَمْ يَتَوَفَّ حَتَّى أَمْسَى مِنْ لَيْلَةِ الثَّلَاثَاءِ، وَذَلَّ قَبْلَ أَنْ يُصْبَحَ)).

तशरीह : सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने पीर (सोमवार) के दिन मौत की आरजू की, उससे बाब का मतलब प्राबित हुआ। हज़रत सिद्दीक (रज़ि.) ने अपने कफ़न के लिये अपने रोज़मर्रा के कपड़ों को ही ज़्यादा पसंद फ़र्माया जिनमें आप रोज़ाना इबादते इलाही किया करते थे। आपकी साहबज़ादी हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जब आपका ये हाल देखा तो वो हाय-हाय करने लगीं मगर आपने फ़र्माया कि ऐसा न करो बल्कि इस आयत को पढ़ो व ज़ा'अत सक्स्तुल मौत बिलहक्कि या'नी आज सकरात मौत का वक़्त आ गया। हज़रत सिद्दीक (रज़ि.) के फ़ज़ाइल व मनाकिब के लिये दफ़्तर भी नाकाफ़ी है।

अल्लामा इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, व रवा अबू दाऊद मिन हदीषि अलिख्बिन मफू'अन ला तग़ालू फिल्कफ़िन् फइन्नहू युस्लबू सरीअन व ला युआरिज़ूह हदीषु जाबिरिन फिल्अम्नि बितहसीनिल्कफ़िन अख़रजहू मुस्लिम फइन्नहू यज़मउ बैनहुमा बिहमलिचहसीनि अलस्सिफ़ति व हमलिल्ग़ालाति अलफ़़मनि व क़ील अत्तहसीनु फ़ी हक्किल्मर्यति फइज़ा औसा बितकिंही उत्तुबिअ कमा फ़अलस्सिद्दीकु व यहतमिलु अंयकून इख़तार

जालिक़शौब बिअयनिही लिमअना फ़ीहि मिनत्तबरूकि बिही लिक्ौनिही सार इलैहि मिनन्नबिय्यि (ﷺ) औ लिक्ौनिही जाहद फ़ीहि औ तअब्बद फ़ीहि व युअय्यिदुहू मा खाहु इब्नु सअदिन मिन तरीक्लिक्कासिम इब्नु मुहम्मद इब्नु अबी बक्किन क़ाल क़ाल अबू बकर कफ़िनूनी फ़ी शौबयिल्लज़ैनि कुन्तु उमल्ली फ़ीहा. (फ़तहुल बारी जिल्द 6, पेज 5) और अबू दाऊद ने हदीष अली (रज़ि.) से मरफूअन रिवायत किया है कि क़ीमती कपड़ा कफ़न में न दो, वो तो जल्दी ही ख़त्म हो जाता है। हदीषे जाबिर (रज़ि.) में उम्दा कफ़न देने का भी हुक्म आया है। उम्दा से मुराद साफ़-सुथरा कपड़ा और क़ीमती से ज़्यादा क़ीमत का कपड़ा मुराद है। दोनों हदीष में यही तत्बीक़ है और ये भी कहा गया है कि तहसीन मय्यत के हक़ में है अगर वो छोड़ने की वसिय्यत कर जाए तो उसकी इतिबा की जाएगी। जैसा कि हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने किया। ये भी अंदाज़ा है कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने अपने उन कपड़ों को बतौर तबरूक पसंद किया हो क्योंकि वो आपको नबी करीम (ﷺ) से हासिल हुए थे या ये कि उनमें आपने बड़े-बड़े मुजाहदे किये थे या उनमें इबादते इलाही की थी। उसकी ताईद में एक रिवायत में आपके ये लफ़ज़ भी मन्कूल हैं कि मुझे मेरे उन ही दो कपड़ों में कफ़न देना जिनमें मैंने नमाज़ें पढ़ी हैं।

व फ़ी हाज़ल्हदीषि इस्तिहबाबुत्तक्फ़ीनि फ़िज़ियाबिल्लीज़ि व तपल्लीषिल्कफ़िन व तलबिल्मुवाफ़क़ति फ़ीमा वक़अ लिलअकाबिरि तबरूकन बिज़ालिक व फ़ीहि जवाजुत्तक्फ़ीनि फ़िज़ियाबिल्लमगसुलति व इंपारिलहय्यि बिल्दजदीदि वहफ़िन बिल्लैलि व फ़ज़िल अबी बकर व सिंहति फ़रासतिही व शिबातिही इन्द वफ़ातिही व फ़ीहि उख़जुल्मरइ अल्इल्म अम्मन दूनहू व क़ाल अबू उमर फ़ीहि अन्नत्तक्फ़ीनि फ़िज़ियाबिल्लजदीदि वल्खल्कि सवाउन.

या'नी इस हदीष से प्राबित हुआ कि सफ़ेद कपड़ों का कफ़न देना और तीन कपड़ों का इस्ते'माल करना मुस्तहब है और अकाबिर से नबी अकरम (ﷺ) की बतौर तबरूक मुवाफ़क़त (समानता की) तलब करना भी मुस्तहब है। जैसे सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के यौमे वफ़ात पीर के दिन की मुवाफ़क़त की ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी और इस हदीष से धुले हुए कपड़े का कफ़न देना भी जाइज़ प्राबित हुआ और ये भी कि उम्दा नये कपड़ों के लिये ज़िन्दों पर इंपार (त्याग) करना मुस्तहब है जैसा कि सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने फ़र्माया और रात में दफ़न करने का जवाज़ भी प्राबित हुआ और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की फ़ज़ीलत व फ़िरासत भी प्राबित हुई और ये भी प्राबित हुआ कि इल्म हासिल करने में बड़ों के लिये छोटों से भी फ़ायदा उठाना जाइज़ है। जैसा कि सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने अपनी साहबज़ादी से इस्तिफ़ादा फ़र्माया। अबू उमर ने कहा कि इससे ये भी प्राबित होता है नए और पुराने कपड़ों का कफ़न देना बराबर है।

बाब 95 : नागहानी मौत का बयान

1388. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा मुझे हिशाम बिन उर्वी ने ख़बर दी, उन्हें उनके बाप ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि एक शख़्स ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि मेरी माँ का अचानक इन्तक़ाल हो गया और मेरा खयाल है कि अगर उन्हें बात करने का मौक़ा मिलता तो वो कुछ न कुछ ख़ैरात करती। अगर मैं उनकी तरफ़ से कुछ ख़ैरात करूँ तो क्या उन्हें इसका प्रवाब मिलेगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! मिलेगा।

(दीगर मक़ाम : 2860)

٩٥- بَابُ مَوْتِ الْفُجَاءَةِ الْبَغَةِ

١٣٨٨- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ أَخْبَرَنِي هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا «رَأَى رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنِ امْرَأَتِي أَقْبَلَتْ نَفْسَهَا، وَأَطْلَعَهَا لَوْ تَصَدَّقْتَ بِمَدَنَةٍ، لَهَلْ لَهَا أَجْرٌ إِنْ تَصَدَّقْتَ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)).»

[طرحه ن : ٢٧٦٠]

तशरीह : बाब की हदीष लाकर इमाम बुखारी (रह.) ने ये प्राबित किया है कि मोमिन के लिये मौत से कोई जरूर नहीं। गो आँहजरत (ﷺ) ने उससे पनाह मांगी है क्योंकि उसमें वसियत करने की मुहलत नहीं मिलती। इन्ने अबी शैबा ने रिवायत की है कि नागहानी मौत मोमिन के लिये राहत है और बदकार के लिये गुस्से की पकड़ है। (वहीदी)

बाब 96 : नबी करीम (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) की क़ब्र का बयान

और सूरह अबस में जो आया है, फ़अक्बरहु तो अरब लोग कहते हैं अक्बर्तुरूजुल या 'नी मैंने उसके लिये कुर्बानी और फ़अक्बरहु के मा' नी मैंने उसे दफ़न किया और सूरह मुसिल्लात में जो किफ़ाता का लफ़्ज़ है ज़िन्दगी भी ज़मीन ही पर गुज़ारेंगे और मरने के बाद भी इसी में दफ़न होंगे।

1389. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया और उनसे हिशाम बिन इर्वा ने (दूसरी सनद-इमाम बुखारी ने कहा) और मुझसे मुहम्मद बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे अबू मरवान यह्या बिन अबी ज़करिया ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इर्वा ने, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने मर्जुल वफ़ात में गोया इजाज़त लेना चाहते थे (दरयाफ़्त फ़र्माते) आज मेरी बारी किनके यहाँ है। कल किन के यहाँ होगी? आइशा (रज़ि.) की बारी के दिन के मुता'ल्लिक़ ख़याल फ़र्माते थे कि बहुत दिन बाद आएगी। चुनाँचे जब मेरी बारी आई तो अल्लाह तआला ने आपकी रूह इस हाल में क़ब्ज़ की कि आप मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे और मेरे ही घर में आप दफ़न किये गये। (राजेज़ : 890)

٩٦- بَابُ مَا جَاءَ فِي قَبْرِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا وَقَوْلُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ: ﴿فَأَقْبِرَ﴾. أَلْبَرْتُ الرَّجُلَ: إِذَا جَعَلْتَ لَهُ قَبْرًا. وَقَبْرُهُ: ذَنْبُهُ ﴿كَفَاتًا﴾ يَكُونُونَ فِيهَا أَخْتَاءَ وَيَذْفَنُونَ فِيهَا أَمْوَالًا

١٣٨٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَزْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مَرْوَانَ يَحْيَى بْنُ أَبِي زَكَرِيَّا عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَتْ: ((إِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِيَتَخَلَّرَ فِي مَوْطِهِ: ((أَيْنَ أَنَا الْيَوْمَ، أَيْنَ أَنَا غَدًا)) اسْتَبْطَأَ لِيَوْمِ عَائِشَةَ. فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ قَبْضَةِ اللَّهِ تَبَنَّى سَخْرِي وَنَخْرِي وَذَلَّيْنِ فِي بَيْتِي)).

(راجع : ٨٩٠)

तशरीह : 29 सफ़र 11 हिजरी का दिन था रसूले पाक (ﷺ) को तकलीफ़ शुरू हुई और अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) कहते हैं कि जो रूमाल हुज़ूर (ﷺ) के सरे मुबारक पर था वो बुखार की वजह से ऐसा गर्म था कि मेरे हाथ को बर्दाश्त न हो सका। आप 13 दिन या 14 दिन बीमार रहे। आखिरी हफ़्ता आपने हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर पर ही पूरा किया। उन अय्याम में ज़्यादातर आप मस्जिद में जाकर नमाज़ भी पढ़ाते रहे मगर चार रोज़ पहले हालत बहुत ज़्यादा ख़राब हो गई। आखिर 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी यौमे इन्नैन (सोमवार के दिन) चाश्त के वक़्त आप दुनिया-ए-फ़ानी से मुँह मोड़कर मल-ए-आला से जा मिले। उम्रे मुबारक 63 साल क़मरी पर चार दिन ऊपर थी। अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अल्ले आले मुहम्मद। पर सहाब-ए-किराम (रज़ि.) ने आपके दफ़न के बारे में तो आखिरी राय यही क़रार पाई कि हुज़र-ए-मुबारक में आपको दफ़न किया जाए क्योंकि अंबिया जहाँ इतिफ़ाल करते हैं उसी जगह दफ़न किये जाते हैं। यही हुज़र-ए-मुबारक है जो आज गुम्बदे ख़ज़ाअ के नाम से दुनिया के करोड़ों इंसानों का अक़ीदत का केन्द्र है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हुज़ूर (ﷺ) की क़ब्र शरीफ़ की निशानदेही करते ये प्राबित फ़र्माया कि मरने वाले को अगर उसके घर में ही दफ़न कर दिया जाए तो शरअन

उसमें कोई कबाहत नहीं है।

आपके अखलाके हस्ना में से है कि आप बीमारी के दिनों में दूसरी बीवियों से हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में जाने के लिये मज़रत फ़र्माते रहे। यहाँ तक कि तमाम अज्वाजे मुतहहरात ने आपको हुज़र-ए-आइशा (रज़ि.) के लिये इजाज़त दे दी और आखिरी वक़्त में आपने वहीं बसर किये। इससे हज़रत आइशा (रज़ि.) की भी कमाले फ़ज़ीलत प्रामाणित होती है। तुफ़ (अफ़सोस) है उन नामो-निहाद मुसलमानों पर जो हज़रत आइशा (रज़ि.) जैसी माय-ए-नाज़ इस्लामी ख़ातून की फ़ज़ीलत का इन्कार करते हैं। अल्लाह तआला उनको हिदायत अता करे।

1390. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन हुमैद ने, उनसे इब्ना और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने उस मर्ज़ के मौक़े पर फ़र्माया था, जिससे आप जाँबर (तंदुरुस्त) न हो सके थे कि अल्लाह तआला की यहूदो-नसारा पर ला'नत हो, उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। अगर ये डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहने दी जाती। लेकिन डर इसका है कि कहीं उसे भी लोग सज्दागाहन बना लें। और हिलाल से रिवायत है कि इब्ना बिन जुबैर ने मेरी कुन्नियत (अबू अवाना या अवाना के वालिद) रख दी थी, वरना मेरी कोई औलाद न थी। (राजेअ: 435)

हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि हमें अबू बक्र बिन अयास ने ख़बर दी, उनसे सुफ़यान तम्मार ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की क़ब्रे-मुबारक देखी जो कोहान-नुमा थी

हमसे फ़र्वा बिन अबी मुगीरा ने बयान किया, कहा कि हमसे अली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन इब्ना ने, उनसे उनके वालिद ने कि वलीद बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहदे हुकूमत में (जब नबी करीम (ﷺ) के हुजे मुबारक की) दीवार गिरी और लोग उसे (ज्यादा ऊँची) उठाने लगे तो वहाँ एक क़दम ज़ाहिर हुआ। लोग ये समझकर घबरा गये कि ये नबी करीम (ﷺ) का क़दम मुबारक है। कोई शख्स ऐसा नहीं था जो क़दम को पहचान सकता। आखिर इब्ना बिन जुबैर ने बताया कि नहीं अल्लाह गवाह है ये रसूलुल्लाह का क़दम नहीं बल्कि ये तो उमर (रज़ि.) का क़दम है।

۱۳۹۰ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ جَلَالٍ عَنْ غُرُورَةَ عَنْ عَابِثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي مَرْحَبِهِ الَّذِي لَمْ يَمُتْ مِنْهُ: ((لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)). لَوْ لَا ذَلِكَ أَتَرَوْ قُبُورَهُ، غَيْرَ أَنَّهُ خَشِيَ - أَوْ خَشِيَ - أَنْ يَتَّخَذَ مَسْجِدًا)). وَعَنْ جَلَالٍ قَالَ: كُنَّ بِي غُرُورَةُ بْنُ الزَّيْتَرِ وَلَمْ يُولَدْ لِي. [راجع: 435]

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَابِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَاطِيٍّ عَنْ سُفْيَانَ الثَّمَارِ أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ رَأَى قَبْرَ النَّبِيِّ ﷺ مُسْتَمًا.

حَدَّثَنَا قُرُورَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ هِشَامٍ عَنْ غُرُورَةَ عَنْ أَبِيهِ لَمَّا مَقَطَ عَلَيْهِمُ الْحَائِطُ فِي زَمَانِ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ اتَّخَذُوا فِي بَنَائِهِ، قَبَدَتْ لَهُمْ قَدَمٌ، فَفَرَّغُوا وَظَنُّوا أَنَّهَا قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ، فَمَا وَجَدُوا أَحَدًا يَعْلَمُ ذَلِكَ حَتَّى قَالَ لَهُمْ غُرُورَةُ: لَا وَاللَّهِ، مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ، مَا هِيَ إِلَّا قَدَمُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ.

1391. हिशाम अपने वालिद से और वो आइशा (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि आपने अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को वसियत की थी कि मुझे हुजुरे-अकरम (ﷺ) और आपके साथियों के साथ दफन न करना। बल्कि मेरी दूसरी सौकन के साथ बक्रीअ गरकत में मुझे दफन करना। मैं ये नहीं चाहती कि उनके साथ मेरी भी ता'रीफ़ हुआ करे। (दीगर मकाम : 7428)

तशरीह : हुआ ये कि वलीद की खिलाफ़त के ज़माने में उसने इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को जो उसकी तरफ़ से मदीना शरीफ़ के आमिल थे, ये लिखा कि अज्वाजे मुतहहरात के हुजुरे गिराकर मस्जिदे नबवी को वसीअ कर दो और आँहज़रत (ﷺ) की कब्र मुबारक की जानिब दीवार बुलन्द कर दो कि नमाज़ में इधर मुँह न हो इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ये हुजुरे गिराने शुरू किये तो एक पांव ज़मीन से नमूदार हुआ जिसे हज़रत इब्ना ने शिनाख़्त किया और बतलाया कि ये हज़रत इमर (रज़ि.) का पांव है जिसे यूँ ही एहतिराम से दफन किया गया।

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अपनी कसरे नफ़्सी के तौर पर फ़र्माया था कि मैं आँहज़रत (ﷺ) के साथ हुजुर-ए-मुबारक में दफन होऊंगी तो लोग आपके साथ मेरा भी ज़िक्र करेंगे और दूसरी बीवियों में मुझको तज़ीह देंगे जिसे मैं पसंद नहीं करती। लिहाज़ा मुझे बक्रीअ में दफन होना पसंद है जहाँ मेरी बहनें अज्वाजे मुतहहरात मदफून हैं और मैं अपनी ये जगह जो ख़ाली है हज़रत इमर (रज़ि.) के लिये दे देती हूँ। सुबहानल्लाह कितना बड़ा इंसार (त्याग) है। सलामुल्लाह तआला अलैहिम अज्मईन।

हुजुर-ए-मुबारक की दीवारें बुलन्द करने के बारे में हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, अथ हाइतु हुजुरतिन्नबिय्यि (ﷺ) व फ़ी रिवायतिल्हम्मी अन्हुम वस्सबबु फ़ी जालिक मा रवाहु अबू बकर अलअज़ी मिन तब्री शुऐब इस्हाक़ अनहिशाम अन उर्वत क़ाल अख़बरी अबी क़ाल कानन्नासु युसल्लून इलल्क़ब्बि फ़अमर बिही उमरुब्नु अब्दिल अज़ीज़ फ़रूफ़िअ हत्ता ला युसल्ली इलैहि अहदुन फ़लम्मा हुदिय बदत कदम बिसाक्रिन व रुक्बतिन फ़फ़ज़िअ उमरुब्नु अब्दिल फ़अताहु उर्वतु फ़क़ाल हाज़ा साकु इमर व रुक्बतुहु फ़सुरिय अन उमरुब्नि अब्दिलअज़ीज़ व रक्बल्अज़ी मिन तरीकि मालिक बिन मग़लूल अन रजाअ बिन हयात क़ाल कतबल्वलीदुब्नु अब्दिल मालिक इला उमरुब्नि अब्दिलअज़ीज़ व कान कद इश्तरा हुज्र अज्वाजिन्नबिय्यि (ﷺ) इन अहदमहा व वस्सअ बिहल्मस्जिद फ़क़अद उमरु फ़ी नाहियतिन बुम्म अमर बिहदमिहा फ़मा राइतुहु बाक़ियन अक्बर मिन यौमइज़िन बुम्म बनाहु कमा अराद फ़लम्मा इन बुनियल्बैतु अलल्क़ब्बि व हुदिमल्बैतुल्अव्वलु जहरतिल्कुबूरुष़लाइतु व कानरम्सुल्लज़ी अलयहा क़द अन्हारून फ़फ़ज़िअ उमरुब्नु अब्दिलअज़ीज़ व अराद अय्यकूम फ़यस्वीहा बिनफ़िसिही फ़कुल्लु लहु अस्लहक़ल्लाहु इन्नक़ इन कुम्त क़ामन्नासु मअअ फ़लौ अमरतु रज़ुनल अय्युस्लिहहा व रज़ौतु अन्नहु यामुरुनी बिज़ालिक फ़क़ाल मा मज़ाहिम यअनी मौलाहु कुम फ़अस्लिहहा क़ाल फ़अस्लहहा क़ाल रज़ाअ व कान कब्क़ अबी बकर इन्द वसतिन्नबिय्यि (ﷺ) व उमरु खल्फ़ अबी बकर रासुहु इन्द वस्तिही. (फ़तहुल बारी, जिल्द नं. 6, पेज नं. 6)

1392. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, कहा कि हमसे हुसैन बिन अब्दुरहमान ने बयान किया, उनसे अग्र बिन मैमून ऊदी ने बयान किया कि मेरी मौजूदगी में हज़रत इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से फ़र्माया कि ऐ अब्दुल्लाह! उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में जा और कहना कि इमर बिन ख़त्ताब ने आपको सलाम कहा है और फिर उनसे मा'लूम

۱۳۹۲- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ
بْنُ عَبْدِ الْمَوْتِدِ قَالَ حَدَّثَنَا خُصَيْنٌ بْنُ
عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَتْمُونٍ
الْأَوْدِيِّ قَالَ: رَأَيْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ،
انْزِبْ إِلَى أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ

करना कि क्या मुझे मेरे दोनों साथियों के साथ दफन होने की आप की तरफ से इजाजत मिल सकती है? हज़रत आइशा ने कहा कि मैंने उस जगह को अपने लिये पसन्द कर रखा था लेकिन आज मैं अपने ऊपर इमर (रज़ि.) को तरजीह देती हूँ। जब इब्ने इमर (रज़ि.) वापस आये तो इमर (रज़ि.) ने दरयाफ्त किया कि क्या पैग़ाम लाए हो? कहा कि अमीरुल मोमिनीन, उन्होंने आपको इजाजत दे दी है। इमर (रज़ि.) ये सुनकर बोले कि इस जगह दफन होने से ज्यादा मुझे और कोई चीज़ अज़ीज़ नहीं थी। लेकिन जब मेरी रूह क़ब्ज़ हो जाए तो मुझे उठाकर ले जाना और फिर दोबारा आइशा (रज़ि.) को मेरा सलाम पहुँचाकर उनसे कहना कि इमर ने आपसे इजाजत चाही है। अगर उस वक़्त भी वो इजाजत दे दे तो मुझे वहीं दफन कर देना वरना मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफन कर देना। मैं इस अग्ने-ख़िलाफ़त का उन चन्द सहाबा से ज्यादा और किसीको मुस्तहिक्क नहीं समझता, जिनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी वफ़ात के वक़्त तक खुश और राज़ी रहे। वो हज़रत मेरे बाद जिसे भी ख़लीफ़ा बनाए, ख़लीफ़ा वही होगा और तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि तुम अपने ख़लीफ़ा की बातें तवज्जह से सुनो और उसकी इताअत करो। आप ने इस मौक़े पर हज़रत इम्रान, अली, तलहा, जुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सअद बिन अबी वक्रकास (रज़ि.) के नाम लिखे। इतने में एक अन्सारी नौजवान दाख़िल हुआ और कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपको बशारत हो, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ से, आपका इस्लाम में पहले दाख़िला होने की वजह से जो मर्तबा था वो आपको मा'लूम है। फिर जब आप ख़लीफ़ा हुए तो आपने इन्साफ़ किया, फिर आपने शहादत पाई। हज़रत इमर (रज़ि.) बोले, ऐ मेरे भाई के बेटे! काश मैं इनकी वजह से मैं बराबर में छूट जाऊँ। मुझे न कोई अज़ाब हो और न कोई प्रवाब। हाँ! मैं अपने बाद आने वाले ख़लीफ़ा को वसियत करता हूँ कि वो मुहाजिरीने अब्वलीन के साथ अच्छा बर्ताव रखे, उनके हुक्क पहचाने और उनकी इज़्जत की हिफ़ाज़त करे और मैं उसे अन्सार के बारे में भी अच्छा बर्ताव रखने की वसियत करता हूँ। ये वो लोग हैं जिन्होंने ईमान वालों को अपने घरों में जगह दी (मेरी वसियत है कि) उनके अच्छे

عَنْهَا قُلْتُ: يَقْرَأُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَلَيْكَ السَّلَامَ، ثُمَّ سَأَلَهَا أَنْ أَذْلِقَ مَعَ صَاحِبَيْهِ. قَالَتْ: كُنْتُ أُرِيدُهُ لِنَفْسِي، فَلَأَوْرَثَهُ الْيَوْمَ عَلَى نَفْسِي. فَلَمَّا أَقْبَلَ قَالَ لَهَا: مَا لَكَ بِكَ؟ قَالَتْ: أَذِنْتُ لَكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ. قَالَ: مَا كَانَ شَيْءٌ أَهَمَّ إِلَيَّ مِنْ ذَلِكَ الْمَضْجِعِ، فَإِذَا قُبِضْتُ فَأَحْمِلُونِي، ثُمَّ سَلُّوْا ثُمَّ قُلْتُ: يَسْتَأْذِنُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، فَإِنْ أَذِنْتُ لِي فَأَذْهَبُونِي، وَإِلَّا فَرُدُّونِي إِلَى مَقَابِرِ الْمُسْلِمِينَ، إِنِّي لَا أَهْلُمُ أَحَدًا أَحَقَّ بِهَذَا الْأَمْرِ مِنْ هَؤُلَاءِ النَّفَرِ الَّذِينَ تَوَكَّلْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ عَنْهُمْ رَاضٍ، فَمَنْ اسْتَخْلَفُوا بَعْدِي فَهُوَ الْخَلِيفَةُ فَاسْمَعُوا لَهُ وَأَطِيعُوا. فَسَمَى عُثْمَانُ وَعَلِيٌّ وَطَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ وَسَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ. وَوَلَّجَ عَلَيْهِ خَاطَبٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: أَنْبِئْ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ بِشَرَى اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ: كَانَ لَكَ مِنَ الْقَدَمِ فِي الْإِسْلَامِ مَا لَمْ يَكُنْ لِي، ثُمَّ اسْتَخْلَفْتَ فَعَدَلْتَ، ثُمَّ الشَّهَادَةُ بَعْدَ هَذَا كُلِّهِ. فَقَالَ: تَجِبِي يَا ابْنَتُ أَخِي وَذَلِكَ كَقَوْلِي لَا عَلَيَّ وَلَا لِي. أَوْصَى الْخَلِيفَةُ خُرُمَتَهُمْ مِنْ بَعْدِي بِالنُّهَاجِينِ الْأَوَّلِينَ خَيْرًا، أَنْ يَتَرَفَّعَ لَهُمْ حَقُّهُمْ، وَأَنْ يَحْفَظَ لَهُمْ خُرُمَتَهُمْ. وَأَوْصَى بِالْأَنْصَارِ خَيْرًا، الَّذِينَ تَوَكَّلُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ أَنْ يَقْبَلَ مِنْ مُخَضِّبِهِمْ

लोगों के साथ भलाई की जाए और उनमें जो बुरे हो उनसे दराजूर किया जाए और मैं होने वाले खलीफा को वसियत करता हूँ उस ज़िम्मेदारी को पूरा करने की जो अल्लाह और रसूल (ﷺ) की ज़िम्मेदारियाँ हैं। (या' नी गैर मुस्लिमों की जो इस्लामी हुकूमत के तहत ज़िन्दगी गुज़ारते हैं) कि उनके साथ किये हुए वादों को पूरा किया जाए। उन्हें बचाकर लड़ा जाए और ताक़त से ज़्यादा उन पर कोई भार न डाला जाए। (दीगर मकाम : 3052, 3162, 3700, 4888, 7207)

وَتَعْنَى عَنْ مُسَيِّئِهِمْ. وَأَوْصِيَهُ بِإِعْمَالِهِ
وَذِمَّةِ رَسُولِهِ ﷺ أَنْ يُؤْتَى لَهُمْ بِعَهْدِهِمْ
وَأَنْ يُقَاتَلَ مِنْ وَرَائِهِمْ، وَأَنْ لَا يُكَلَّفُوا
فَوْقَ طَائِفِهِمْ.

[أطرافه في : 3052, 3162, 3700,

4888, 7207]

तशरीह : सय्यिदना हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) की कुत्रियत अबू हफ़सा है। अदबी कुरैशी हैं। नबुव्वत के छठे साल इस्लाम में दाखिल हुए कुछ ने कहा कि पाँचवें साल में उनसे पहले चालीस मर्द और ग्यारह औरतें इस्लाम ला चुकी थीं और कहा जाता है कि चालीसवें मर्द हज़रत उमर (रज़ि.) ही थे। उनके इस्लाम कुबूल करने के दिन ही से इस्लाम नुमायी होना शुरू हो गया। उसी वजह से उनका लक़ब फ़ारुक़ (हक़ और बातिल में फ़र्क़ करने वाला) हुआ। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से पूछा था कि आपका लक़ब फ़ारुक़ कैसे हुआ? फ़र्माया कि हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) मेरे इस्लाम लाने से तीन दिन पहले मुसलमान हुए थे। उसके बाद अल्लाह तआला ने इस्लाम के लिये मेरा सीना भी खोल दिया तो मैंने कहा अल्लाहु ला इलाहा लहुल अस्माउल हुस्ना अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसी के लिये सब अच्छे नाम हैं। उसके बाद कोई जान मुझको रसूलुल्लाह (ﷺ) की जान से प्यारी न थी। उसके बाद मैंने पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कहाँ तशरीफ़ फ़र्मा हैं? तो मेरी बहन ने कहा कि वो अरक़म बिन अबी अरक़म में जो कोहे सफ़ा के पास है, वहाँ तशरीफ़ रखते हैं। मैं अबू अरक़म के मकान पर हाज़िर हुआ जबकि हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) भी आपके सहाबा के साथ मकान में मौजूद थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) भी घर में तशरीफ़ फ़र्मा थे। मैंने दरवाज़े को पीटा तो लोगों ने बाहर निकलना चाहा। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम लोगों को क्या हो गया? सबने कहा कि उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) आए हैं फिर आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और मुझे कपड़ों से पकड़ लिया। फिर ख़ूब ज़ोर से मुझको अपनी तरफ़ खींचा कि मैं रुक न सका और घुटने के बल गिर गया। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने इशारा फ़र्माया कि उमर इस कुफ़्र से कब तक बाज़ नहीं आओगे? तो बेसाइता मेरी जुबान से निकला, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीकलहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदनु अब्दुहु व रसूलुहु इस पर दारे अरक़म ने नअराए तक्बीर बुलन्द किया कि जिसकी आवाज़ हरम शरीफ़ में सुनी गई उसके बाद मैंने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या हम मौत और हयात में दीने हक़ पर नहीं हैं? आपने फ़र्माया क्यूँ नहीं क़सम है उस ज़ात पाक की जिसके हाथ में मेरी जान है तुम सब हक़ पर हो, अपनी मौत में भी और हयात में भी। इस पर मैंने कहा कि फिर उस हक़ को छुपाने का क्या मतलब। क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है हम ज़रूर हक़ को लेकर बाहर निकलेंगे।

चुनाँचे हमने हज़ूर (ﷺ) को दो सफ़ों के बीच निकाला। एक सफ़ में हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) और दूसरी सफ़ में मैं था और मेरे अंदर जोशे ईमान की वजह से एक चक्की जैसी गड़गड़ाहट थी। यहाँ तक कि हम मस्जिदे हुराम में पहुँच गए तो मुझको और हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को कुरैश ने देखा और उनको इस क़दर स़दमा हुआ कि ऐसा स़दमा उन्हें उससे पहले नहीं पहुँचा था। उसी दिन आँहज़रत (ﷺ) ने मेरा नाम फ़ारुक़ रख दिया कि अल्लाह ने मेरी वजह से हक़ और बातिल में फ़र्क़ कर दिया। रिवायतों में है कि आपके इस्लाम लाने पर हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि ऐ अल्लाह के रसूल! आज उमर (रज़ि.) के इस्लाम लाने से तमाम आसमान वाले बेहद खुश हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि क़सम अल्लाह की मैं यक़ीन रखता हूँ कि हज़रत उमर (रज़ि.) के इल्म को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए और दूसरी में तमाम ज़िन्दा इंसानों का इल्म तो यक़ीनन हज़रत उमर (रज़ि.) के इल्म वाला पलड़ा झुक जाएगा।

आप हजरत नबी करीम (ﷺ) के साथ तमाम गज्जवात में शरीक हुए और ये पहले खलीफा है जो अमीरुल मोमिनीन लक़ब से पुकारे गए। हजरत उमर (रज़ि.) रंग में गोरे लम्बे क़द वाले थे। सर के बाल अक़षर गिर गए थे। आँखों में सुर्ख झलक रहा करती थी। अपनी ख़िलाफ़त में हुकूमत के तमाम कामों को अहसन (भले) तरीक़ पर अंजाम दिया।

आख़िर मदीना में बुध के दिन 26 ज़िल्हिज्ज 23 हिजरी में मुगीरह बिन शुअबा के गुलाम अबू लूलूअ ने आपको खंजर से ज़ख़मी किया और पहली मुहर्रमुल हुराम को आपने जामे-शहादत नोश फ़र्माया। 63 साल की उमर पाई। मुहते ख़िलाफ़त दस साल छः माह है। आपके जनाजे की नमाज़ हजरत सुहैब रूमी ने पढ़ाई। वफ़ात से पहले हुज्र-ए-नबवी में दफ़न होने के लिये हजरत आइशा (रज़ि.) से बाज़ाबता इजाज़त हासिल कर ली।

हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं, व फ़ीहि अल्हिस्सु अला मुजावरतिस्सालिहीन फिल्कुबूरि तम्अन फ़ी इसाबतिरहमति इज़ा नज़लत अलैहिम व फ़ी दुआइहिम मय्यज़ूरुहूम मिन अहलिस्खैरि. या'नी आपके इस वाक़िआ में ये पहलू भी है कि सालेहीन बन्दों के पड़ोस में दफ़न होने की हिंस करना दुरुस्त है। इस तमअ में कि उन सालेहीन बन्दों पर रहमते इलाही होगा तो उसमें उनको भी शिरक़त का मौक़ा मिलेगा और जो अहले ख़ैर उनके लिये दुआ-ए-ख़ैर करने आएँगे वो उनकी क़ब्र पर भी दुआ करके जाएँगे। इस तरह दुआओं में भी क़ररत रहेगी।

सुबहानल्लाह क्या मुक़ाम है! हर साल लाखों मुसलमान मदीना शरीफ़ पहुँचकर आँहज़रत (ﷺ) पर दरूदो-सलाम पढ़ते हैं। साथ ही आपके ज़ौनिषारों हजरत सिद्दीक़े अक़बर (रज़ि.) और फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) पर भी सलाम भेजने का मौक़ा मिल जाता है। सच है

निगाहे नाज़ जिसे आशना-ए-राज़ करे

वो अपनी ख़ूबी-ए-क्रिस्मत पे क्यूँ न नाज़ करे

अशरा-ए-मुबश्शरा में से यही लोग मौजूद थे जिनका हजरत उमर (रज़ि.) ने ख़लीफ़ा बनाने वाली कमेटी के लिये नाम लिया। अबू उबैदा बिन ज़र्राह का इतिफ़ाक़ हो चुका था और सईद बिन ज़ैद गो ज़िन्दा थे मगर वो हजरत उमर (रज़ि.) के रिश्तेदार या'नी चचाज़ाद भाई होते थे, इसलिये उनका नाम भी नहीं लिया। दूसरी रिवायत में है कि आपने ताकीद के साथ फ़र्माया कि देखो मेरे बेटे अब्दुल्लाह का ख़िलाफ़त में कोई हक़ नहीं है। ये आपका व्ये कारनामा है जिस पर आज की नामो-निहाद जुम्हूरियतें हज़ारों बार कुर्बान की जा सकती हैं। हजरत उमर (रज़ि.) की कसरे नफ़्सी का ये आलम है कि सारी उम्र ख़िलाफ़त कमाले अदल के साथ चलाई फिर भी अब आख़िर वक़्त में उसी को ग़नीमत तज़व्वुर फ़र्मा रहे हैं कि ख़िलाफ़त का भले ही प्रवाब न मिले पर अज़ाब न हो बल्कि मामला बराबर-बराबर में उतर जाए तो यही ग़नीमत है। अख़ीर में आपने मुहाजिरीन व अंज़ार के लिये बेहतरीन वसिय्यतें फ़र्माई और सबसे बड़ा कारनामा ये कि उन ग़ैर मुस्लिमों के लिये जो ख़िलाफ़ते इस्लामी के ज़ेरे नगी अम्न व अमान की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, ख़ुमूसी वसिय्यत फ़र्माई कि हर्गिज़-हर्गिज़ उनसे बदअहदी न की जाए और ताक़त से ज़्यादा उन पर कोई भार न डाला जाए।

बाब 97 : इस बारे में कि मुदों को बुरा कहने की मुमानअत है

٩٧- بَابُ مَا يُنْهَى مِنْ مَسَبِّ الْأَمْوَاتِ

1393. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुदों को बुरा न कहो क्योंकि उन्होंने जैसा अमल किया उसका बदला पा लिया। इस रिवायत की मुताबअत अली बिन ज़अद, मुहम्मद बिन अरअरा और इब्ने अबी अदी ने शुअबा से की है। और इसकी

١٣٩٣- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((لَا تَسُبُّوا الْأَمْوَاتَ ، فَإِنَّهُمْ لَدُنَّ الْأَنْصَارِ إِلَى مَا قَدَّمُوا)) . تَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ الْحَجَّافِ وَ مُحَمَّدُ بْنُ عَزْرَةَ وَ ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ

रिवायत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल कुद्दूस ने आ'मश और मुहम्मद बिन अनस ने भी आ'मश से की है।

(दीगर मक़ाम : 5616)

شُعْبَةُ وَ رَوَاهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْقُدُّوسِ
عَنِ الْأَعْمَشِ وَ مُحَمَّدُ بْنُ أَنَسٍ عَنِ
الْأَعْمَشِ. [طرفه بی: ۵۶۱۶].

या'नी मुसलमान जो मर जाएँ उनका मरने के बाद ऐब न बयान करना चाहिये। अब उनको बुरा कहना उनके अज़ीज़ों को ईज़ा (तकलीफ़) देना है।

बाब 98 : बुरे मुर्दों की बुराई बयान करना दुरुस्त है

1394. हमसे इमर बिन हफ़स ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया आ'मश से, उन्होंने कहा कि मुझसे अम्र बिन मुरह ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूलहब ने नबी करीम (ﷺ) से कहा कि सारे दिन तुझ पर बर्बादी हो। इस पर ये आयत उतरी (तब्बत यदा अबी लहबिब व तब्ब) या'नी टूट गये हाथ अबूलहब के और वो खुद ही बर्बाद हो गया।

(दीगर मक़ाम : 3525, 3526, 4770, 4801, 4971, 4972, 4973)

۹۸- بَابُ ذِكْرِ شِرَارِ الْمَوْتَى
۱۳۹۴- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ حَفْصٍ قَالَ
حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ
حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مَرْثُةٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ
عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ
أَبُو لَهَبٍ عَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ لِلنَّبِيِّ ﷺ: تَبَّ لَكَ
سَائِرُ الْيَوْمِ، فَنَزَلَتْ: ﴿تَبَّ يَدَا أَبِي لَهَبٍ
وَتَبَّ﴾.

[أطرافه بی: ۳۵۲۵, ۳۵۲۶, ۴۷۷۰,

۴۸۰۱, ۴۹۷۱, ۴۹۷۲, ۴۹۷۳].

तशरीह: जब ये आयत उतरी वन्ज़िर अशीरतकबल अकरबीन (अश्शुअरा : 214) या'नी अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ तो आप कोहे सफ़ा पर चढ़े और कुरैश के लोगों को पुकारा, वो सब इकट्ठे हुए। फिर आपने उनको अल्लाह के अज़ाब से डराया तब अबूलहब मर्दूद कहने लगा तेरी ख़राबी हो सारे दिन क्या तूने हमको उसी बात के लिये इकट्ठा किया था? उस वक़्त ये सूरा उतरी तब्बत यदा अबी लहबिब व तब्ब या'नी अबूलहब ही के दोनों हाथ टूटे और वो हलाक हुआ। मा'लूम हुआ कि बुरे लोगों काफ़िरो, मुल्हिदों को उनके बुरे कामों के साथ याद करना दुरुस्त है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं :

अय वसलू इला मा अमिलु मिन ख़ैरिन व शरिन वशतह बिही अला मनइ सबबिलअम्वाति मुतलकन व क़द तक हम अन्न उमूमहू मख़सूसुन व असहह मा क़ील फ़ी ज़ालिक अन्न अम्वातल्कु फ़फ़ारि वल्फुस्साक्रियजूज़ जिक्ल मसावीहिम लिन्नहज़ीरि मिन्हुम वत्तन्फ़ीरि अन्हुम व क़द अज्मअल उलमाउ अला जवाज़ि जहिंल्मज्ज़हीन मिनरूवाति अहयाअन व अम्वातन. या'नी उन्होंने जो कुछ बुराई भलाई की वो सब कुछ उनके सामने आ गया। अब उनकी बुराई करना बेकार है और उससे दलील पकड़ी गई है कि मर चुके लोगों को बुराइयों से याद करना मुल्कन मना है और पीछे गुज़र चुका है कि उसका उमूमन मख़सूस है और इस बारे में सहीह तरीन ख़याल ये है कि मरे हुए काफ़िरो और फ़ासिकों की बुराइयों का ज़िक्र करना जाइज़ है। ताकि उनके जैसे बुरे कामों से नफ़रत पैदा हो और इलमा ने इज्माअ किया है कि रावियाने हदीष ज़िन्दों मुर्दों पर जरह करना जाइज़ है।

24. किताबुज्जकात

जकात के मसाइल का बयान

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : जकात देना फर्ज है

और अल्लाह अज़्ज व जल्ल ने फ़र्माया कि नमाज़ क़ायम करो और जकात दो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने मुझसे बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से मुता'ल्लिक (कैसरे-रूम से अपनी) गुफ्तगूनक़ल की कि उन्होंने कहा था कि हमें वो नमाज़, जकात, सिलारहमी, नात्ता जोड़ने और हरामकारी से बचने का हुक्म देते हैं।

١ - بَابُ وَجُوبِ الزَّكَاةِ

وَقَوْلِ اللَّهِ غَزَوَ جُلٌّ : ﴿وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ﴾ [البقرة: ٤٣] ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : حَدَّثَنِي أَبُو سَفْيَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَدَاكَ حَدِيثُ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : ((يَأْمُرُنَا بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَالصَّلَاةِ وَالْعَقَابِ)).

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) अपनी रविश के मुताबिक पहले कुआन मजीद की आयत लाए और फ़र्जियते जकात को कुआन मजीद से प्राबित किया। कुआन मजीद में जकात की बाबत बयासी आयत में अल्लाह पाक ने हुक्म दिया है और ये इस्लाम का एक अज़ीम रुकन है। जो इसका इंकार करता है वो बिल इतिफ़ाक़ काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज है। जकात न देने वालों पर हज़रत सय्यिदना अबूबक्र सिदीक (रज़ि.) ने जिहाद का ऐलान किया था।

जकात दो हिजरी में मुसलमानों पर फ़र्ज हुई। ये दरहक़ीक़त उस सिफ़ते हमददी व रहम के बकाइदा इस्ते'माल का नाम है जो इंसान के दिल में अपने हम-जिन्स लोगों के साथ कुदरतन फ़ित्री तौर पर मौजूद है। ये अम्वाले नामिया या'नी तरक्की करने वालों में मुकरर की गई है, जिनमें से अदा करना नागवार भी नहीं गुजर सकता। अम्वाले नामिया में तिजारत से हासिल होने वाली दौलत, ज़राअत (खेती) और मवेशी (भेड़-बकरी, गाय वगैरह) और नक़द रुपया और मअदन्यात और दफ़ाइन (ज़मीन में दफ़न ख़ज़ाने) शुमार होते हैं। जिनके मुख्तलिफ़ निज़ाब हैं। उनके तहत एक हिस्सा अदा करना फ़र्ज है। कुआन मजीद में अल्लाह पाक ने जकात की तक्सीम इन लफ़्ज़ों में फ़र्माई, **إِذْ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ** लिल फ़ुकराइ वल मसाकीनि वल आमिलीन अलैहा वल मुअल्लफ़ति कुलूबुहुम व **فِرْرِكَابِ** वल ग़ारिमीन व **فِي** सबीलिल्लाहि व **بِ**निससबीलि (अत् तौबा : 60) या'नी जकात का माल फ़क्कीरों और मिस्कीनों के लिये है और तहसीलदाराने जकात के लिये (जो इस्लामी स्टेट की तरफ़ से जकात की वसूली के लिये मुकरर होंगे उनकी तन्ख़्वाह उसमें से अदा की जाएगी) और उन लोगों के लिये जिनकी दिल अफ़ज़ाई इस्लाम में मंज़ूर हो या'नी नौ मुस्लिम और गुलामों को आज़ादी दिलाने के लिये और ऐसे क़र्जदारों का क़र्ज चुकाने के लिये जो क़र्ज न उतार सकें और अल्लाह के रास्ते में (इस्लाम की इशाअत व तरक्की व

सरबुलन्दी के लिये) और मुसाफ़िरों के लिये।

लफ़्जे ज़कात की लुग्वी और शरई तशरीह के लिये अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) अपनी मायानाज़ किताब फ़तहूलबारी शरहे सहीह बुखारी शरीफ़ में लिखते हैं,

वज़ज़कातु फिल्लुगति अन्निमाउ युकालु जकज्जर्ड इजानमा व यरिदु अयज़न फिल्मालि व तरिदु अयज़न बिमअनत्तहीरि व शर्अन बिइअतिबारेनि मअन अम्मा बिल्अव्वलि फ़ुलानन अख़जहा सबबुल्लिनुमाइ फिल्माति औ बिमअना अन्नलअज बिसबबिहा यक्बुरु अन्न बिमअन अन्न मुतअल्लिकहा अलअम्वालु ज़ातनुमाइ कत्तिज़ारति वज़ज़राअति व दलीलुअव्वलि मा नक़्स मालुन मिन सदक़तिन व लिअन्नहा युज़ाइफ़ु प्रवाबुहा कमा जाअ अन्नल्लाह युर्बिस्सदक़त व अम्मा बिष्शानी फ़लिअन्नहा तुहस्तुन लिन्नप्सि मिन रज़ीलतिल्बुख़िल व तत्हीरुन मिनज़ुनुबि व हियरूक्नुष्शालिषु मिनलअक़ानिल्लती बुनियल्इस्लामु अलैहा कमा तक़दम फ़ी किताबिल्इमानि व क़ाल इब्नुलअरबी तुल्लकुज़ज़कातु अलम्सदक़तिल्वाजिबति वल्मन्दूबति वन्फ़क़ति वल्हक्कि वल्अप्पि व तअरीफ़ुहा फ़िशशरइ इअताउ जुज़इम्मिन्निसाबिल्हौलि इलल्फ़कीरि व नहवुहूयैर हाशिमि वला मुत्तलिबी शुम्म लहा रुक्नुन व हुवलइख़लासु व शर्तुन हुवस्सबबु व हुव मिल्कुन्निसाबिल्हौलि व शर्तुन मन तजिबु अलैहि व हुवल अक्तुल्बुलूग व ल्हुरियतु फिल्अज़ा व हिवमतुन व हिय तत्हीरूमिल्अदनासि वरफ़इर्जति व इस्तिरक़ाक़िल्अहरारि इन्तिहा व हुव जय्यिदुन लाकिन्फ़ी शर्तिम्मन तजिबु अलैहि इख़ितलाफ़ुन वज़ज़कातु अम्फ़न मक्त्तुउन बिही फ़िशशरइ यस्तग़नी अन तक़ल्लुफ़िन लिइहतिजाज़िन लहु व इन्मा वक़अल्इख़ितलाफ़ु फ़ी बअजि फ़रुइही व अम्मा अस्तु फ़र्जियतिज़ज़काति फ़मन जहदहा कफ़र व इन्नमा तरज्जुमुल्मुसन्निफ़ि बिज़ालिक अला आदतिही फ़ी ईरादिल्अदिल्लतिशशरइयति वल्मुत्तफ़कि अलैहा वल्मुख़्तलाफ़ि फ़ीहा. (फ़तहूलबारी, जिल्द 3, पेज 308)

इख़्तलफ़लउलमाउ फ़ी अव्वलि वक़्ति फ़र्जिज़ज़काति फ़जहबल अक्फ़रु इला अन्नहु वक़अ बअदल्हिजति फ़कील कान फ़िस्सनतिष्शानियति क़ब्ल फ़र्जि रमज़ान अशार इलैहिन्नवबी.

ख़ुलासा ये कि लफ़्ज़ ज़कात नशोनुमा पर बोला जाता है। कहते हैं कि जक़ज़अु या'नी ज़राअत खेती ने नशोनुमा पाई जब वो बढ़ने लगे तो ऐसा बोला जाता है। इसी तरह माल की बढ़ोतरी पर भी ये लफ़्ज़ बोला जाता है। और पाक करने के लिये भी आया है और शरअन दोनों ए'तिबार से उसका इस्ते'माल हुआ है। अव्वल तो ये कि उसकी अदायगी से माल में बढ़ोतरी होती है और ये भी कि सबब अज़ो-प्रवाब की नशोनुमा हासिल होती है या ये भी कि ये ज़कात उन अम्वाल से अदा की जाती है जो बढ़नेवाले हैं जैसे तिज़ारत, ज़राअत वगैरह। अव्वल की दलील हदीष है जिसमें वारिद है कि सदक़ा निकालने से माल कम नहीं होता बल्कि वो बढ़ता ही जाता है और यह भी कि इसका प्रवाब दोगुना तक बढ़ता है। जैसा कि आया है कि अल्लाह पाक सदक़ा (देने वाले) के माल को बढ़ाता है। और दूसरे ए'तिबार से नप्स को कंजूसी के रोग से पाक करने वाली चीज़ है और गुनाहों से भी पाक करती है और इस्लाम का ये तीसरा अज़ीम रुक्न है। इब्नुल अरबी ने कहा कि लफ़्ज़ ज़कात, सदक़-ए-फ़र्ज़ और सदक़-ए-नप्स और दीगर अतिया पर भी बोला जाता है।

इसकी शरई ता'रीफ़ ये कि मुकर्रर निस्साब पर साल गुज़रने के बाद फ़ुकराअ व दीगर मुस्तहिक्कीन को उसे अदा करना फ़ुकरा हाशमी और मुत्तलिबी न हो कि उनके लिये अम्वाले ज़कात का इस्ते'माल नाजाइज़ है। ज़कात के लिये भी कुछ और शराइत हैं। अव्वल इसकी अदायगी के वक़्त इख़लास होना ज़रूरी है। रिया व नमूद के लिये ज़कात अदा करे तो वो इन्दल्लाह ज़कात नहीं होगी। ये भी ज़रूरी है कि एक हद्दे मुकर्ररह के अंदर वो माल हो और उस पर साल गुज़र जाए और ज़कात आक़िल बालिग़, आज़ाद पर वाजिब है। इससे दुनिया में वजूब की अदायगी और आख़िरत में प्रवाब हासिल करना मक्त्सूद है और इसमें हिवमत ये है कि ये इंसानों को गुनाहों के साथ ख़साइल व रज़ालत से भी पाक करती है और दर्जात बुलन्द करती है।

और ये इस्लाम में एक बेहरीतन अमल है मगर जिस पर ये वाजिब है उसकी तफ़सील में कुछ इख़ितलाफ़ है और ये इस्लाम में एक ऐसा क़तई फ़रीज़ा है कि जिसके लिये किसी और ज़्यादा दलील की ज़रूरत ही नहीं और दरअसल ये क़तई फ़र्ज़ है। जो इसकी फ़र्जियत का इन्कार करे वो काफ़िर है। यहाँ भी मुसन्निफ़ ने अपने आदत के मुताबिक़ शरई दलीलों से इसकी फ़र्जियत

प्राबित की है। वो दलीलें जो मुत्तफ़क़ अलैह हैं जिनमें पहले आयते शरीफ़ा फिर छः अह्दादीष हैं।

1395. हमसे अबुल आसिम ज़हाक़ ने बयान किया, उनसे ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन सैफ़ी ने बयान किया, उनसे अबू मअबद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब मअज़ (रज़ि.) को यमन (का हाकिम बनकर) भेजा तो फ़र्माया तुम उन्हें इस कलिमे की गवाही की दा'वत देना कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अगर वो लोग ये बात मान लें तो फिर उन्हें बतलाना कि अल्लाह तआला ने उन पर रोज़ाना पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। अगर वो लोग ये बात भी मान लें तो फिर उन्हें बताना कि अल्लाह तआला ने उनके माल पर कुछ स़दका फ़र्ज़ किया है जो उनके मालदार लोगों से लेकर उन्हीं के मुहताजों में लौटा दिया जाएगा।

(दीगर मक्राम : 1458, 1496, 2448, 4347, 7371, 7372)

۱۳۹۵- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الْمُشَحَّكُ بْنُ مَخْلَدٍ عَنْ زَكْرِيَّا بْنِ إِسْحَاقَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَفِيٍّ عَنْ أَبِي مَعْبُدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ مُعَاذًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: ((ادْعُهُمْ إِلَى شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لِذَلِكَ فَأَعْلِمْنَهُمْ أَنَّ اللَّهَ اقْرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لِذَلِكَ فَأَعْلِمْنَهُمْ أَنَّ اللَّهَ اقْرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً فِي أَمْوَالِهِمْ تُوْخَذُ مِنْ أَغْنِيَائِهِمْ وَتُرَدُّ عَلَى فُقَرَائِهِمْ)).

[أطرافه في : ۱۴۵۸، ۱۴۹۶، ۲۴۴۸]

[۷۳۷۲، ۷۳۷۱، ۴۳۴۷]

۱۳۹۶- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ ابْنِ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبٍ عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ. قَالَ: مَالُهُ مَالُهُ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرَبَ مَالَهُ، تَعْبُدُ اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا، وَتُقِيمُ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِي الزَّكَاةَ وَتَصِلُ الرَّحِمَ)). وَقَالَ يَهُزْ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُثْمَانَ وَأَبُوهُ عُثْمَانُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّهُمَا سَمِعَا مُوسَى بْنَ طَلْحَةَ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا. قَالَ أَبُو عَبْدِ

1396. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने मुहम्मद बिन इप्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मोहब से बयान किया है, उनसे मूसा बिन तल्हा ने और उनसे अबू अय्यूब (रज़ि.) ने कि एक शख्स ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि आप मुझे कोई ऐसा अमल बताएँ जो मुझे जन्नत में ले जाए। इस पर लोगों ने कहा कि आखिर ये क्या चाहता है? लेकिन नबी करीम (ﷺ) फ़र्माया ये तो बहुत अहम ज़रूरत है। (सुनो) अल्लाह की इबादत करो और उसका कोई शरीक न ठहराओ। नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और सिलारहमी करो और बहज़ ने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया कि हमसे मुहम्मद बिन इप्मान और उनके बाप इप्मान बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि उन दोनों साहिबान ने मूसा बिन तल्हा से सुना और उन्होंने अबू अय्यूब से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से इसी हदीष की तरह (सुना) अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी)

ने कहा कि मुझे डर है कि मुहम्मद से रिवायत ग़ैर महफूज़ है और रिवायत अग्र बिन इब्मान से (महफूज़ है)

(दीगर मक़ाम : 5982, 5983)

1397. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे अफ़फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया, हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद बिन हथ्यान ने, उनसे अबू जरआ ने और उनसे अबू हुसैह (रज़ि.) ने कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया कि आप मुझे कोई ऐसा काम बताएँ, जिस पर मैं हमेशगी करूँ तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की इबादत कर, उसका किसी को शरीक न ठहरा, फ़र्ज़ नमाज़ क़ायम कर, फ़र्ज़ ज़कात दे और रमज़ान के रोज़े रख। देहाती ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, इन अमलों पर कोई ज़्यादाती नहीं करूँगा। जब वो पीठ मोड़कर जाने लगा तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर कोई ऐसे शख्स को देखना चाहे जो जन्नत वालों में से हो तो वो उस शख्स को देख ले।

हमसे मुसहद बिन मुस्हद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उनसे अबू हथ्यान ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू जरआ ने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीष रिवायत की।

तशीह : मगर यह्या बिन सईद क़त्तान की ये रिवायत मुसल है क्योंकि अबू जरआ ताबेई है। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से नहीं सुना। वुहैब की रिवायत जो ऊपर गुज़री वो मौसूल है और वुहैब शिफ़ा हैं। उनकी ज़ियारत मक्बूल हैं। इसलिये हदीष में कोई इल्लत नहीं। (वहीदी)

इस हदीष के जेल में हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, क़ालल्कुतुबी फ़ी हाज़ल्हदीषि व क़जा हदीषु तल्हत फ़ी किस्सतिल्आराबी व ग़ैरहुमा दलालतुन अला जवाज़ि तर्किस्तत्त्वआति लाकिन मन दावम अला तर्किस्सुननि काम नक्कसन फ़ी दीनिही फइन कान तरकहा तहावुनन बिहा व रगबतन अम्नहा कान ज़ालिक फिस्कन लिवुरुदिल्वईदि अलैहि हैषु कालन्निबिय्यु (ﷺ) मन रगिब अन सुन्ती फलैस मिन्नी व क़द कान सदरुस्सहाबति व मन तबिअहुम युवाज़िबून अलस्सुननि मुवाजबतुहुम अलल्फ़राइज़ि व ला युफरिक्न बैनहुमा फ़ी इगतिनामि षवाबिहिमा. (फ़तुहल बारी)

या'नी कुतुबी ने कहा कि इस हदीष में और नीज़ हदीषे तलहा में जिसमें एक देहाती का ज़िक्र है उस पर दलील है कि नफ़्लियात का छोड़ देना भी जाइज़ है। मगर जो शख्स सुन्नतों के छोड़ने पर हमेशगी करेगा वो उसके दीन में नक्कस होगा और बेरबती और सुस्ती से तर्क कर रहा हो तो ये फ़िस्क (नाफ़रमानी) होगा इसलिये तर्क सुन्नत के बारे में वईद आई है जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो मेरी सुन्नतों से बेरबती करे वो मुझसे नहीं। और सद्दे अब्बल में सहाबा किराम और ताबेईने

اللّهِ: أَخَشَى أَنْ يَكُونَ مُحَمَّدٌ غَيْرَ مَحْفُوظٍ، إِنَّمَا هُوَ عَمْرَوٌ.

[طرفه ١، ٥٩٨٢، ٥٩٨٣.]

١٣٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ حِثَّانٍ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ أَهْرَابِيًّا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ: ذُلِّي عَلَى عَمَلٍ إِذَا عَمَلْتُهُ دَخَلْتُ الْجَنَّةَ. قَالَ: ((مَعَدُ اللَّهُ لَا تَشْرِكْ بِهِ شَيْئًا، وَتَقِيمِ الصَّلَاةَ الْمَكْتُوبَةَ، وَتُؤَدِّي الزَّكَاةَ الْمَقْرُوعَةَ، وَتَصُومِ رَمَضَانَ)). قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا أَرِنَا عَلَى هَذَا. فَلَمَّا وَلَّى قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ سَرَهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى هَذَا)).

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي حِثَّانٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو زُرْعَةَ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.

इजाम सुन्नतों पर फर्जों ही की तरह हमेशगी किया करते थे और प्रवाब हासिल करने के ख्याल में वो लोग फर्ज और सुन्नतों में फर्क नहीं करते थे।

ऊपर की हदीष में हज्ज का जिक्र नहीं है इस पर हाफिज़ फ़र्माते हैं लम्बे यज़्कुरिल्हज्ज लिअन्नहू कान हीन इज़िन हाज्जन व लअल्लहू ज़करहू लहू फ़ख़्तसरहू. या'नी हज्ज का जिक्र नहीं। फ़र्माया इसलिये कि वो उस वक़्त हाजी था। या आपने जिक्र किया मगर रावी ने बतौर इख़्तिसार उसका जिक्र छोड़ दिया।

कुछ मुहतरम हनफ़ी हज़रात ने अहले हदीष पर इल्जाम लगाया है कि ये लोग सुन्नतों का एहतिमाम नहीं करते। ये इल्जाम सरासर ग़लत है। अल्हम्दुलिल्लाह अहले हदीष का बुनियादी उ़सूल तौहीद और सुन्नत पर कारबन्द होना है। सुन्नत की मुहब्बत अहले हदीष का शौवा है। लिहाज़ा ये इल्जाम बिल्कुल बेहक़ीक़त है। हाँ! मुआनिदीने अहले हदीष के बारे में अगर कहा जाए कि उनके यहाँ अक्वाले अइम्मा अक़्फ़र सुन्नतों पर मुक़द्दम समझे जाते हैं तो ये एक हद तक दुरुस्त है। जिसकी तफ़्सील के लिये ईलामुल मुकिर्ईन अज़ अल्लामा इब्ने क़थ़ीम का मुतालज़ा (अध्ययन) मुफ़ीद होगा।

1397. हमसे हज़ाज बिन मिन्हाल ने हदीष बयान की, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू हम्ज़ा नस्र बिन इमरान ज़बई ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, आपने बतलाया कि क़बीला अब्दे क़ैस का वफ़्द नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अज़्र की किया रसूलल्लाह (ﷺ)! हम रबीआ क़बीला की एक शाख़ हैं और क़बीला मुज़र के काफ़िर हमारे और आपके दरम्यान पड़ते हैं। इसलिये हम आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ हुर्मत के महीनों ही में हाज़िर हो सकते हैं (क्योंकि इन महीनों में लड़ाइयाँ बन्द हो जाती हैं और रास्ते पुरअम्न हो जाते हैं) आप हमें कुछ ऐसी बातें बतला दीजिए जिस पर हम खुद भी अमल करें और अपने क़बीले वालों से भी उन पर अमल करने के लिये कहें, जो हमारे साथ नहीं आ सके हैं। औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार बातों का हुक्म देता हूँ और चार चीज़ों से रोकता हूँ। अल्लाह तआला पर ईमान लाने और उसकी वहदानियत की शहादत देने का (ये कहते हुए) आपने अपनी अंगुली की तरफ़ इशारा किया। नमाज़ क़याम करना, फिर ज़कात अदा करना और माले-ग़नीमत से पाँचवाँ हिस्सा अदा करने (का हुक्म देता हूँ) और मैं तुम्हें कद्दू के तुम्बे से और हन्तुम (सब्ज़ रंग का छोटा सा मर्तबान जैसा घड़ा) नक़ीर (खजूर की जड़ से खोदा हुआ एक बर्तन) के इस्तेमाल से मना करता हूँ। सुलैमान और अबू नोअमान ने हम्माद के वास्ते से यही रिवायत इस तरह बयान की है, अल ईमानु बिल्लाहि शहादतन अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु या'नी अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब ला इलाह इल्लल्लाह की गवाही देना। (राजेअ: 53)

۱۳۹۸- حَدَّثَنَا حَبَاجٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((لَيْسَ وَلَدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ هَذَا الْحَيَّ مِنْ رِبْعَةٍ لَمْ تَحَلَّتْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كَقَارِ مُضَرَ، وَلَسْنَا نَعْلَمُ إِلَيْكَ إِلَّا فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ، لَمْ نَرْنَا بِشَيْءٍ نَأْخُذُ عَنْكَ وَنَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ وَرَاءِنَا. قَالَ: ((أَمَرْتُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمُ عَنْ أَرْبَعٍ. الْإِيمَانُ بِاللَّهِ وَشَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ - وَحَقْدُ يَدَيْهِ هَكَذَا - وَإِقَامُ الصَّلَاةِ، وَإِتْيَاءُ الزَّكَاةِ، وَأَنْ تَزُودُوا خُمُسَ مَا غَنِمْتُمْ. وَأَنْهَاكُمُ عَنِ الدِّبَاءِ، وَالْحَقْمِ وَالنَّقِيرِ وَالْمَرْزَلَةِ)). وَقَالَ سُلَيْمَانُ وَأَبُو النُّعْمَانِ عَنْ حَمَادٍ: ((الْإِيمَانُ بِاللَّهِ شَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ)). [راجع: ۵۳]

तशरीह : ये हदीस पहले कई बार गुजर चुकी है। सुलेमान और अबन नोअमान की रिवायत में ईमान बिल्लाह के बाद वाव अत्फ नहीं है और हज्जाज की रिवायत में वो अत्फ थी, जैसे ऊपर गुजरी। ईमान बिल्लाह और शहादत अल्ला इलाहा इल्लल्लाह दोनों एक ही हैं। अब ये ए' तिराज न होगा कि ये पाँच बातें हो गई और हज्ज का जिक्र नहीं किया क्योंकि उन लोगों पर शायद हज्ज फर्ज न होगा। इस हदीस से भी जकात की फर्जियत निकलती है क्योंकि आपने इसका अम्र किया और अम्र वजूब के लिये हुआ करता है। मगर जब कोई दूसरा क़रीना हो जिसमें अदमे वजूब प्राबित हो। हाफ़िज़ ने कहा कि सुलेमान की रिवायत को खुद मुअल्लिफ़ ने मग़ाज़ी में और अबन नोअमान की रिवायत को भी खुद मुअल्लिफ़ ने ख़मीस में वस्ल किया। (वहीदी)

चार किस्म के बर्तन जिनके इस्ते' माल से आपने उसको मना किया, वो ये थे जिनमें अरब लोग शराब बतौर जखीरा (स्टॉक के तौर पर) रखा करते थे और अक़रर उन्हीं से सुराही और जाम का काम लिया करते थे। इन बर्तनों में रखने से शराब और ज़्यादा नशाआवर हो जाया करती थी। इसलिये आपने उसके इस्ते' माल से मना किया था। ज़ाहिर है कि ये मुमानअत वक्ती मुमानअत थी। इससे ये भी मा'लूम हुआ कि न सिर्फ़ गुनाहो से बचना बल्कि उनके अस्बाब और दवाई से भी परहेज़ करना चाहिये। जिनसे उन गुनाहों के लिये आमदगी पैदा हो सकती हो। इसी आधार पर कुर्आन मजीद में कहा गया कि ला तक्लबुज्जिना या'नी इन कामों के भी क़रीब न जाओ जिनसे ज़िना के लिये आमदगी का इम्कान हो।

1399. हमसे अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब बिन अबी हम्ज़ा ने ख़बर दी, उनसे जुस्री ने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इब्बा बिन मस्ऊद ने बयान किया कि अबू हु़रैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) फौत हो गये और अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए तो अरब के कुछ क़बीले काफ़िर हो गये। (और कुछ ने ज़कात से इन्कार कर दिया और हज़रत अबूबक्र रज़ि. ने उनसे लड़ना चाहा) तो इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) के इस फ़र्मान की मौजूदगी में क्योंकर जंग कर सकते हैं, मुझे हुक्म है लोगों से उस वक़्त तक जंग करूँ जब तक कि वो ला इलाह इलल्लाह की शहादत न दे दें और जो शख़्स इसकी शहादत दे दे तो मेरी तरफ़ से उसका माल व जान महफूज़ हो जाएगा। सिवा किसी के हक़ के) (या'नी क़िसास वग़ैरह की सूरतों के) और उसका हिसाब अल्लाह तआला के ज़िम्मे होगा।

(दीगर मक़ाम : 1457, 6924, 7284)

1400. इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने जवाब दिया कि क़सम अल्लाह की, मैं हर उस शख़्स से जंग करूँगा जो ज़कात और नमाज़ में तफ़रीक़ करेगा। (या'नी नमाज़ तो पढ़े मगर ज़कात के लिये इन्कार कर दे) क्योंकि ज़कात माल का हक़ है। अल्लाह की क़सम! अगर उन्होंने ज़कात में चार महीने की (बकरी के) बच्चे को देने से भी इन्कार किया जिसे वो रसूलुल्लाह (ﷺ) को देते थे तो

١٣٩٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حُمْزَةَ عَنْ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنَا حَبِيبُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُتَيْبَةَ بْنِ مَسْنُودٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((لَمَّا تَوَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، وَكَفَرُوا مِنْ كُفَرٍ مِنَ الْقُرَيْبِ، فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : كَيْفَ تَقْبَلُ النَّاسَ وَلَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((أَمِرْتُ أَنْ أَقْبَلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، لَمَنْ قَالَهَا فَقَدْ حَصَمَ بَيْنِي مَالَهُ وَنَفْسَهُ إِلَّا بِحَقِّهِ، وَحِسَابُهُ عَلَى اللَّهِ)).

[أطرافه : ١ : ١٤٥٧، ٦٩٢٤، ٧٢٨٤].

١٤٠٠- فَقَالَ : ((وَاللَّهِ لَا أَقْبَلُ مَنْ فَرَقَ بَيْنَ الصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ، فَإِنَّ الزَّكَاةَ حَقُّ الْمَالِ. وَاللَّهُ لَوْ مَتَعَنِي عَنَّا لَأَكَانُوا يُؤْثِرُونَهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لِقَاتِلَتِهِمْ عَلَى مَنَاسِكِهِمْ. قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : فَوَاللَّهِ

में उनसे लड़ूंगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम ये बात इसका नतीजा थी कि अल्लाह तैआला ने अबूबक्र (रज़ि.) का सीना इस्लाम के लिये खोल दिया था और बाद में मैं भी इस नतीजे पर पहुँचा कि अबूबक्र (रज़ि.) हक़ पर थे। (दीगर मक़ाम : 1406, 6925, 7285)

مَا هُوَ إِلَّا أَنْ لَدَّ شَرَحَ اللَّهُ صَنْزَ أَبِي بَكْرٍ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَعَزَّتْ أَلَةُ الْحَقِّ).

[اطرافه في : ١٤٥٦ ، ٦٩٢٥ ، ٧٢٨٥]

तशरीह : वफाते नबी के बाद मदीने के अतराफ़ में मुख्तलिफ़ कबीले जो पहले इस्लाम ला चुके थे। अब उन्होंने समझा कि इस्लाम ख़त्म हो गया लिहाज़ा उनमें कुछ बुतपरस्त बन गये। कुछ मुसैलमा कज़ाब के ताबेअ हो गए। जैसे यमामा वाले और कुछ मुसलमान रहे। मगर ज़कात की फ़र्जियत का इन्कार करने लगे और कुआन की यूँ तावील करने लगे कि ज़कात लेना आँहज़रत (ﷺ) से ख़ास था क्योंकि अल्लाह ने फ़र्माया, **يُخْرِجُ مِثْلَ مِثْلِهِمْ** अर्थात् तुम जैसा जो तुम ज़क़ीहिम बिहा व मल्लि अलैहिम इन्न मल्लातक सकनुल लहुम अत्ताबा और पैगम्बर के सिवा और किसी की दुआ से उनको तसल्ली नहीं हो सकती। व हिसाबुहू अलल्लाह का मतलब ये है कि दिल में उसके इमान है या नहीं उससे हमको गर्ज नहीं। उसकी पूछ क़यामत के दिन अल्लाह के सामने होगी और दुनिया में जो कोई जुबान से ला इलाहा इल्लल्लाह कहेगा उसको मोमिन समझेंगे और उसके माल और जान पर हमला न करेंगे। सिद्दीकी अल्फ़ाज़ में फ़र्रक बैन इस्लालात व ज़कात का मतलब ये है कि जो शख्स नमाज़ को फ़र्ज कहेगा मगर ज़कात की फ़र्जियत का इन्कार करेगा हम ज़रूर ज़रूर उससे जिहाद करेंगे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने भी बाद में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की राय से इतिफ़ाक़ किया और सब सहाबा मुत्फ़िक् हो गए और ज़कात न देने वालों से जिहाद किया। ये हज़रत सिद्दीके अकबर (रज़ि.) की फ़हमो-फ़रासत थी। अगर वो इस अज़म से काम न लेते तो उसी वक़्त इस्लामी निज़ाम दरहम-बरहम हो जाता मगर हज़रत सिद्दीके अकबर (रज़ि.) ने अपने अज़मे मुसम्म से इस्लाम को एक बड़े फ़िले से बचा लिया। आज भी इस्लामी क़ानून यही है कि कोई शख्स सिर्फ़ कलिमा पढ़ने से मुसलमान नहीं हो जाता जब तक कि वो नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात की फ़र्जियत का इकरारी न हो और वक़्त आने पर उनको अदा न करे। जो कोई किसी भी इस्लाम के रुक्न की फ़र्जियत का इन्कार करे वो मुत्फ़क़ तौर पर इस्लाम से ख़ारिज और काफ़िर हैं। नमाज़ के लिये तो साफ़ मौजूद है मन तरकस्सलात मुतअम्मिदन फ़क़द कफ़र, जिसने जान-बूझकर बिला किसी बहाने के एक वक़्त की नमाज़ भी छोड़ दी तो उसने कुफ़्र का इर्तीकाब किया।

अदमे ज़कात के लिये हज़रत सिद्दीके अकबर (रज़ि.) का फ़त्त्व-ए-जिहाद मौजूद है और हज्ज के बारे में फ़ारुके आजम का वो फ़र्मान क़ाबिले गौर है जिसमें आपने मल्लिकते इस्लामिया से ऐसे लोगों की फ़ेहरिस्त तलब की थी जो मुसलमान हैं और जिन पर हज्ज फ़र्ज है मगर वो फ़र्ज नहीं अदा करते हैं तो आपने फ़र्माया था कि उन पर ज़िन्ना क़ायम कर दो वो मुसलमानों की जमाअत से ख़ारिज हैं।

बाब 2 : ज़कात देने पर बैअत करना और अल्लाह पाक ने (सूरह बराअत में) फ़र्माया कि अगर वो (कुफ़्रार व मुश्रिकीन) तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात देने लगें तो फिर वो तुम्हारे दीनी भाई हैं

1401. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया कि जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से नमाज़ क़ायम करने, ज़कात देने और हर मुसलमान के साथ ख़ैरख़वाही करने पर बैअत की थी।

٢- بَابُ الْبَيْعَةِ عَلَى إِيْتَاءِ الزَّكَاةِ
وَلَمَّا تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا الزَّكَاةَ
لَاخَوْاكُمْ فِي الدِّينِ [العروة : ١٦١]

١٤٠١- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ : حَدَّثَنَا
أَبِي قَالَ : حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ قَتَسٍ قَالَ :
« قَالَ جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ :
بَايَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى إِقَامِ الصَّلَاةِ ، وَإِيْتَاءِ
الزَّكَاةِ وَالْخَيْرِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ ».

(राजेअ : 57)

[راجع : ५७]

मा'लूम हुआ कि दीनी भाई बनने के लिये कुबूलियते ईमान व इस्लाम के साथ साथ नमाज़ कायम करना और साहिबे निसाब होने पर ज़कात अदा करना भी ज़रूरी है।

बाब 3 : ज़कात न अदा करने वाले का गुनाह

और अल्लाह तआला ने (सूरह बराअत में) फ़र्माया,

कि जो लोग सोना और चाँदी जमा करते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते आखिर आयत फ़ज़ूकू मा कुन्तु तक्निज़ून तक। या'नी अपने माल को गाड़ने का मज़ा चखो। (अत्तौबा : 34-35)

आयत में कन्ज़ का लफ़्ज़ है। कन्ज़ उसी माल को कहेंगे जिसकी ज़कात न दी जाए। अक़्षर सहाबा और ताबेईन का यही क़ौल है कि आयत अहले किताब और मुश्किनी और मोमिनीन सबको शामिल है। इमाम बुखारी (रह.) ने भी इसी तरफ़ इशारा किया है और कुछ सहाबा ने इस आयत को काफ़िरी के साथ खास किया है। (वहीदी)

1402. हमसे अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब बिन अबी हम्ज़ा ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अबुज्जिनाद ने बयान किया कि अब्दुरहमान बिन हुमुज़ अल अअरज ने उनसे बयान किया, कहा कि उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आप ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि कैंट (क्रयामत के दिन) अपने मालिकों के पास जिन्होंने उनका हक़ (ज़कात) न अदा किया कि उससे ज़्यादा मोटे-ताज़े होकर आएँगे (जैसे दुनिया में थे) और उन्हें अपने खुरों से रौंदेंगे। बकरियाँ भी अपने उन मालिकों के पास जिन्होंने उनके हक़ नहीं दिये थे, पहले से ज़्यादा मोटी-ताज़ी होकर आएँगी और उन्हें अपने खुरों से रौंदेंगी और अपने सींगों से मारेंगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसका हक़ ये भी है कि उसे पानी ही पर (या'नी जहाँ वो चारागाह में चर रही हो) दुहा जाए। आपने फ़र्माया कि कोई शख्स क्रयामत के दिन इस तरह न आएगा कि वो अपनी गर्दन पर एक ऐसी बकरी उठाए हुए हो जो चिल्ला रही हो और वो मुझसे कहे कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! मुझे अज़ाब से बचाइये। मैं उसे ये जवाब दूँ कि तेरे लिये मैं कुछ नहीं कर सकता (मेरा काम पहुँचाना था) सो मैंने पहुँचा दिया। इसी तरह कोई शख्स अपनी गर्दन पर कैंट ले हुए

۳- بَابُ إِنْ مَنَعَ الزَّكَاةَ، وَقَوْلِ
اللّهِ تَعَالَى

هُوَ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا
يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِلَى قَوْلِهِ فَلَوْلُوا مَا
كُنتُمْ تَكْتُمُونَ [التوبة: ३४-३५]

۱۴۰۲- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ الْحَكَمُ بْنُ
نَافِعٍ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ أَنَّ
عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ هُرْمَزٍ الْأَعْرَجَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ
سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ
النَّبِيُّ ﷺ: ((يَأْتِي الْإِبِلُ عَلَى صَاحِبِهَا
عَلَى غَيْرِ مَا كَانَتْ إِذَا هُوَ لَمْ يُعْطِ فِيهَا
حَقَّهَا، تَطَوُّهُ بِأَخْفَالِهَا. وَيَأْتِي الْغَنَمُ عَلَى
صَاحِبِهَا عَلَى غَيْرِ مَا كَانَتْ إِذَا لَمْ يُعْطِ
فِيهَا حَقَّهَا تَطَوُّهُ بِأَخْلَافِهَا وَتَتَخَبَّطُ
بِقُرُونِهَا)). قَالَ: ((وَمِنْ حَقِّهَا أَنْ تُخَلَبَ
عَلَى الْمَاءِ)). قَالَ: ((وَلَا يَأْتِي أَحَدُكُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ بِشَاةٍ يَخْمِلُهَا عَلَى رَقَبَتِهِ لَهَا يُعَارَ
فَيَقُولُ: يَا مُحَمَّدُ، فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ
شَيْئًا، فَيَذَرُهَا. وَلَا يَأْتِي بِبَعِيرٍ يَخْمِلُهَا
عَلَى رَقَبَتِهِ لَهُ رُغَاءٌ فَيَقُولُ: يَا مُحَمَّدُ،
فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا، فَيَذَرُهَا)).

क्रयामत के दिन न आए कि ऊँट चिल्ला रहा हो और वो खुद मुझसे फ़रियाद करे, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! मुझे बचाइये और मैं ये जवाब दे दूँ कि तेरे लिये मैं कुछ नहीं कर सकता। मैंने तुझको (अल्लाह का हुक्म ज़कात) पहुँचा दिया।

(दीगर मक़ाम : 2378, 3073, 9685)

तशरीह : (मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि मुँह से काटेंगे। पचास हजार बरस का जो दिन होगा उस दिन यही करते रहेंगे। यहाँ तक कि अल्लाह बन्दों का फ़ैसला करे और वो अपना ठिकाना देख लें। बहिश्त में या जहन्नम में। इस हद्दीष में आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी उम्मत को चेतावनी फ़र्माई है कि जो लोग अपने अम्बाले ऊँट या बकरी वगैरह में से मुक़र्रा निसाब के तहत ज़कात नहीं अदा करेंगे। क्रयामत के दिन उनका ये हाल होगा जो यहाँ मज़कूर हुआ फ़िल व़ाक्नेअ वो जानवर इन हालात में आएँगे और उस शख्स की गर्दन पर ज़बरदस्ती सवार हो जाएँगे। वो शख्स हुज़ूर (ﷺ) को मदद के लिये पुकारेगा मगर आपका ये जवाब होगा जो मज़कूर हुआ। बकरी को पानी पर दुहने से गर्ज ये है कि अरब में पानी पर अक़षर ग़रीब मुहताज लोग जमा रहते हैं। वहाँ वो दूध निकालकर मिस्कीन—फ़क़रा को पिलाया जाए। कुछ ने कहा कि ये हुक्म ज़कात की फ़र्ज़ियत से था। जब ज़कात फ़र्ज़ हो गई तो अब तो ये सदक़ा या हक़ वाजिब नहीं रहा। एक हद्दीष में है कि ज़कात के सिवा माल में दूसरा हक़ भी है। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। एक हद्दीष में है कि ऊँट का भी यही हक़ है कि उनका दूध पानी के किनारे पर दुहा जाए।

हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं, व इन्नमा ख़स्सल हल्ब बिमौज़इल माइ लियकून अस्हलु अलल्मुहताजि मिन क्रसदिल मनाज़िलि व अफ़्कु बिल माशियति या'नी पानी पर दूध दुहने की खुसूसियत का ज़िक्र इसलिये किया कि वहाँ मुहताज और मुसाफ़िर लोग आराम के लिये क्रयाम पज़ीर रहते हैं।

इस हद्दीष से ये भी प्राबित होता है कि क्रयामत के दिन गुनाह मिषाली जिस्म इख़्तियार कर लेंगे वो जिस्मानी शक्तों में सामने आएँगे। इसी तरह नेकियाँ भी मिषाली शक्तें इख़्तियार करके सामने लाई जाएँगी। दोनों किस्म की तफ़सीलात बहुत सी अह्दादीष में मौजूद है। आइन्दा अह्दादीष में भी एक ऐसा ही ज़िक्र मौजूद है।

1403. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हाशिम बिन कासिम ने बयान किया कि हमसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने अपने वालिद से बयान किया, उनसे अबू स़ालेह समान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसने उसकी ज़कात नहीं अदा की तो क्रयामत के दिन उसका माल निहायत ज़हरीले गंजे साँप की शक्त इख़्तियार कर लेगा। उसकी आँखों के पास दो स्याह नुक़ते होंगे। जैसे साँप के होते हैं, फिर वो साँप उसके दोनों जबड़ों से उसे पकड़ लेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल और ख़ज़ाना हूँ। इसके बाद आपने ये आयत पढ़ी और वो लोग ये गुमान न करे कि अल्लाह तआला ने उन्हें जो कुछ अपने फ़ज़ल से दिया है वो उस पर बुख़ल से काम लेते हैं कि उनका माल उनके लिये बेहतर है। बल्कि वो बुरा है जिस

١٤٠٣ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَنْ آتَاهُ اللَّهُ مَالًا فَلَمْ يَدُرْ زَكَاةَ مَقْلٍ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَجَاعًا أَفْرَغَ لَهُ زَبَبَانِ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُمَّ يَأْخُذُ بِلَهْرِمَتَيْهِ - يَنْهِي شِدْقَيْهِ - ثُمَّ يَقُولُ : أَنَا مَالِكُ، أَنَا كَنْزُكَ. ثُمَّ تَلَا : هُوَلَا يَخْسِنُ اللَّيْنُ يَتَخَلَّوْنَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ

माल के मामले में उन्होंने बुखल किया है। क़यामत में उसका तौक बना कर उनकी गर्दन में डाला जाएगा।

(दीगर मक़ाम : 4565, 4689, 4957)

غَنَرًا لَهُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَهُمْ مِّمَّا يَكْتُمُونَ مَا
يَكْتُمُونَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ﴿٤٩﴾. [آل

عمران : ١٨٠]

[الطّحطا : ٤٩٥٧, ٤٩٥٩, ٤٩٦٥]

तशरीह : निसाई में ये अल्फ़ाज़ और हैं, व यक़्नु कन्ज़ु अहदिकुम यौमल्लिक़ियामति शुआअन अवरअ यफ़िर्क़ु मिन्हु माहिबुहु व यत्लुबुहु अना कन्ज़ुक फला यजालु हत्ता युल्किमुहु इस्बअहू. या'नी वो गंजा सांप उसकी तरफ़ लपकेगा और वो शरूस उससे भागेगा। वो सांप कहेगा कि मैं तेरा ख़जाना हूँ। पस वो उसकी डँगलियों का लुक्मा बना लेगा। ये आयते करीमा उन मालदारों के हक़ में नाज़िल हुई जो साहिबे निसाब होने के बावजूद ज़कात अदा नहीं करते बल्कि दौलत को ज़मीन में बतौर ख़जाना ग़ड़ देते थे। आज भी उसका हुक्म यही है जो मालदार मुसलमान ज़कात हज़म कर जाएँ उनका भी यही हसर होगा। आज सोना-चाँदी की जगह करंसी ने ले ली है जो चाँदी और सोने ही के हुक्म में दाख़िल है। अब ये कहा जाएगा कि जो लोग उन नोटों की गड़ियाँ बना-बनाकर रखते हैं और ज़कात नहीं अदा करते उनके वही नोट उनके लिये जहन्नम का सांप बनकर उनके गर्लों का हार बनाए जाएँगे।

बाब 4 : जिस माल की ज़कात दे दी जाए वो कंज़ (ख़जाना) नहीं है क्योंकि नबी (ﷺ) करीम ने फ़र्माया कि पाँच औक्रिया से कम चाँदी में ज़कात नहीं है

1404. हमसे अहमद बिन शबीब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मेरे वालिद शबीब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे शिहाब ने, उनसे ख़ालिद बिन असलम ने, उन्होंने बयान किया कि हम अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) के साथ कहीं जा रहे थे। एक अज़राबी ने आपसे पूछा कि मुझे अल्लाह तआला के इस फ़र्मान की तपसीर बतलाइये, जो लोग सोने और चाँदी का ख़जाना बनाकर रखते हैं। हज़रत इब्ने इमर (रज़ि.) ने इसका जवाब दिया कि अगर किसी ने सोना चाँदी जमा किया और उसकी ज़कात न दी तो उसके लिये वैल (ख़राबी) है। ये हुक्म ज़कात के अहक़ाम नाज़िल होने से पहले था, लेकिन जब अल्लाह तआला ने ज़कात का हुक्म नाज़िल कर दिया तो अब वही ज़कात माल-दौलत को पाक करने वाली है।

(दीगर मक़ाम : 4661)

٤- بَابُ مَا أَدَّى زَكَاتُهُ فَلَيْسَ
بِكَنْزٍ لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَيْسَ فِيمَا
دُونَ خَمْسَةِ أَوَاقٍ صَدَقَةٌ))

١٤٠٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ بْنُ
سَعْدٍ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ يُونُسَ بْنِ أَبِي
شَيْبَةَ عَنْ غَالِبِ بْنِ أَسْلَمَ قَالَ: سَمِعْتُ
مَنْعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا.
قَالَ الْهَرَابِيُّ: أَخْبَرَنِي قَوْلُ اللَّهِ:
لِلَّذِينَ يَكْتُمُونَ الْكُنُوزَ وَالْأَمْوَالَ
يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ. قَالَ ابْنُ عُمَرَ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: مَنْ كَتَمَهَا فَلَمْ يَدَّ
زَكَاتَهَا قَتِلَ لَهُ. إِنَّمَا كَانَ هَذَا قَبْلَ أَنْ
تَنْزَلَ الْوَكَاةُ. فَلَمَّا أَنْزَلَتْ جَعَلَهَا اللَّهُ
طَهْرًا لِلْأَمْوَالِ. [طرفه : ٤٦٦١]

तशरीह : ग्रा'ज़ी इस माल के बारे में ये आयत नहीं है, वल्लज़ीन यज़्निज़ून ज़हब वल फ़िज़त (अतूतबा: 34) मा'लूम हुआ कि अगर कोई माल जमा करे तो गुनाहगार नहीं बशर्ते कि ज़कात दिया करे। गो तज़वा और फ़ज़ीलत के ख़िलाफ़ है। ये बाब का तर्जुमा खुद एक हदीष है। जिसे इमाम मालिक ने इब्ने इमर (रज़ि.) से मौकूफ़न निकाला है और अबू दाऊद ने एक मर्फूअ हदीष निकाली जिसका मतलब यही है। हदीष लैस फ़ीमा दून ख़मिस अवाक़ सदक़ह ये हदीष इसी बाब में आती है।

इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से दलील ली कि जिस माल की ज़कात अदा की जाए वो कन्ज़ नहीं है। उसका दबाना और रख छोड़ना दुरुस्त है क्योंकि पाँच ओक्रिया से कम चाँदी में हदीष की दलील की बुनियाद पर ज़कात नहीं है। पस इतनी चाँदी का रख छोड़ना और दबाना कन्ज़ न होगा और आयत में से उसको ख़ास करना होगा और ख़ास करने की वजह यही हुई कि ज़कात उस पर नहीं है तो जिस माल की ज़कात अदा कर दी गई वो भी कन्ज़ न होगा क्योंकि इस पर भी ज़कात (बाकी) नहीं रही। एक ओक्रिया चालीस दिरहम का होता है पाँच ओक्रियों के दो सौ दिरहम हुए या'नी साढ़े बावन तौला चाँदी। यही चाँदी का निसाब है उससे कम में ज़कात नहीं है।

कन्ज़ के बारे में बैहकी में अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की रिवायत में है कुल्लु भा अदैत ज़कातहू व इन कान तहत सब्इ अर्ज़ीन फलैस बिकन्ज़िन व कल्लु भा ला तुअही ज़कातहू फहुव कन्ज़ुन व कान ज़ाहिरन अला वज़्हिल अर्ज़ि. (फ़तुहल बारी)

या'नी हर वो माल जिसकी तुने ज़कात अदा कर दी है वो कन्ज़ नहीं है अगरचे वो सातवीं ज़मीन के नीचे दफ़न हो और हर वो माल जिसकी ज़कात नहीं अदा की वो कन्ज़ है अगरचे वो ज़मीन की पीठ पर रखा हुआ हो। आपका ये क़ौल भी मरबी है मा उबाली लौ कान ली मिस्लु उहुदिन ज़हबन आलमु अददहू उज़क्कीहि व आमलु फीहि बिताअतिस्लहितअलाला. (फ़तुहल कदीर) या'नी मुझको कुछ परवाह नहीं जबकि मेरे पास उहुद पहाड़ जितना सोना हो और मैं ज़कात अदा करके उसे पाक करूँ और उसमें अल्लाह की इताअत के काम करूँ या'नी इस हालत में इतना ख़ज़ाना भी मेरे लिये मुज़िर (नुक़सानदायक) नहीं है।

1405. हमसे इस्हाक़ बिन यज़ीद ने हदीष बयान की, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब बिन इस्हाक़ ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे यह्या बिन अबी क़बीर ने ख़बर दी कि अम्र बिन यह्या बिन इमारह ने उन्हें ख़बर दी अपने वालिद इमारह बिन अबुल हसन से और उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से उन्होंने बयान किया कि रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया पाँच ओक्रिया से कम चाँदी में ज़कात नहीं है और पाँच ऊँटों से कम में ज़कात नहीं है और पाँच वस्त्र से कम (अनाज) में ज़कात नहीं है।

(दीगर मक़ाम : 1447, 1459, 1474)

١٤٠٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ بْنُ إِسْحَاقَ قَالَ الْأَوْزَاعِيُّ أَخْبَرَنِي بِحَدِيثِ بْنِ أَبِي كَبِيرٍ أَنَّ عَمْرُو بْنَ مَتَّى بْنَ عَمَّارَةَ أَخْبَرَهُ عَنْ أَبِيهِ مَتَّى بْنَ عَمَّارَةَ بْنِ أَبِي الْحَسَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «لَيْسَ بَيْنَمَا دُونِ خَمْسِي أَوْاقٍ صَدَقَةٌ، وَلَيْسَ بَيْنَمَا دُونِ خَمْسِي دَوْدُ صَدَقَةٌ، وَلَيْسَ بَيْنَمَا دُونِ خَمْسِي أَوْسُي صَدَقَةٌ».

[أطرافه في : ١٤٨٤، ١٤٥٩، ١٤٤٧]

तशरीह : एक ओक्रिया चालीस दिरहम का होता है। पाँच ओक्रिया के दो सौ दिरहम हम या'नी साढ़े बावन तौला चाँदी होती है, ये चाँदी का निसाब है। वस्त्र साठ साअ का होता है साअ चार मुह का। मुह एक रतल और तिहाई रतल का। हिन्दुस्तान के वज़न (इसी तौला सेर के हिसाब से) एक वस्त्र साढ़े चार मन या पाँच मन के करीब होता है। पाँच वस्त्र बाईस मन या 25 मन हुआ। उससे कम में ज़कात (उस्र) नहीं है।

1406. हमसे अली बिन अबी हाशिम ने बयान किया, उन्होंने हुज़ैम से सुना, कहा कि हमें हुज़ैम ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन वुहैब ने कहा कि मैं मक़ामे-रबज़ह से गुज़र रहा था कि अबू ज़र (रज़ि.) दिखाई दिये। मैंने पूछा कि आप यहाँ क्यों आ गए हैं? उन्होंने जवाब दिया कि मैं शाम में था तो मुआविया (रज़ि.) से भेरा

١٤٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مَسْعٍ هُشَيْمًا قَالَ أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ قَالَ: (مَرَّتْ بِالرَّبَذَةِ، فَإِذَا أَنَا بِأَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَقُلْتُ لَهُ: مَا أَتَرَاكَ مَرَرْتَكَ

इखितलाफ़ (कुआन की आयत) जो लोग सोना-चाँदी जमा करते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते; के मुता'ल्लिक हो गया। मुआविया का कहना था कि ये आयत अहले किताब के बारे में नाज़िल हुई है और मैं ये कहता था कि अहले किताब के साथ हमारे मुता'ल्लिक भी नाज़िल हुई है। इस इखितलाफ़ के नतीजे में मेरे और उनके दरम्यान कुछ तलखी पैदा हो गई। चुनाँचे उन्होंने इब्मान (रज़ि.) (जो उन दिनों खलीफ़तुल-मुस्लिमीन थे) के यहाँ मेरी शिकायत लिखी। इब्मान (रज़ि.) ने मुझे लिखा कि मैं मदीना चला आऊँ। चुनाँचे मैं चला आया। (वहाँ जब पहुँचा) तो लोगों का मेरे यहाँ इस तरह हुजूम होने लगा, जैसे उन्होंने मुझे पहले देखा ही न हो। फिर जब मैंने लोगों के इस तरह अपनी तरफ़ आने के मुता'ल्लिक इब्मान (रज़ि.) से कहा तो उन्होंने फ़र्माया कि अगर मुनासिब समझो तो यहाँ का क्रयाम छोड़कर मदीना के करीब ही कहीं अलग क्रयाम इखितयार कर लो। यही बात है जो मुझे यहाँ (रब्ज़ह) तक ले आई है। अगर वो मेरे ऊपर एक हब्शी को भी अमीर मुकर्रर कर दें तो मैं उसकी भी सुनूँगा और इताअत करूँगा। (दीगर मक़ाम : 4660)

هَذَا قَالَ: كُنْتُ بِالشَّامِ لَمَّا عَطَلْتُ أَنَا وَمُعَاوِيَةُ فِي: «الَّذِينَ يَكْتُمُونَ الذِّمَّةَ وَالْفِئْتَةَ وَلَا يُفْقَوْنَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ». قَالَ مُعَاوِيَةُ: نَزَلَتْ فِي أَهْلِ الْكِتَابِ، فَقُلْتُ: نَزَلَتْ فِيْنَا وَفِيهِمْ، فَكَانَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ فِي ذَلِكَ. وَكُتِبَ إِلَى عُثْمَانَ وَرَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِشُكُوبِي، فَكُتِبَ إِلَيَّ عُثْمَانُ أَنَّ الْفِتْمَ الْمَدِينَةَ، فَدِيمَتُهَا، فَكَثُرَ عَلَيَّ النَّاسُ حَتَّى كَانَهُمْ لَمْ يَرَوْني قَبْلَ ذَلِكَ، فَلَاكُوتُ ذَلِكَ لِثَمَانٍ، فَقَالَ لِي: إِنْ جِئْتَ تَصَحَّيْتُ، فَكُنْتُ قَرِيبًا. فَذَلِكَ الَّذِي أَنْزَلَنِي هَذَا الْمَنْزِلَ، وَلَوْ أَمَرُوا عَلَيَّ حَتَّى لَسِيفْتُ وَأَطَقْتُ».

[طرفه في : 4660].

तशरीह : हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी (रज़ि.) बड़े आलीशान सज़ाबी और जुहद व दरवेशी में अपनी नज़ीर नहीं रखते थे, ऐसी बुजुर्ग शख्सियत के पास ख़्वाह-मख़्वाह लोग बहुत जमा होते हैं। हज़रत मुआविया ने उनसे ये अदेशा किया कि कहीं कोई फ़साद न उठ खड़ा हो। हज़रत इब्मान (रज़ि.) ने उनको वहाँ बुला भेजा तो फ़ौरन चले आए। खलीफ़ा और हाकिमे इस्लाम की इताअत फ़र्ज़ है। अबू ज़र ने ऐसा ही किया। मदीना आए तो शाम से भी ज़्यादा उनके पास मज्मअ होने लगा। हज़रत इब्मान (रज़ि.) को भी वही अदेशा हुआ जो मुआविया (रज़ि.) को हुआ था। उन्होंने स़ाफ़ तो नहीं कहा कि तुम मदीना से निकल जाओ मगर इस्लाम के तौर पर बयान किया। अबू ज़र (रज़ि.) ने उनकी मज़ी पाकर मदीना को भी छोड़ा और रब्ज़ा नामी एक मक़ाम पर जाकर रह गए और तादमे वफ़ात (मरते दम तक) वहीं मुक़ीम रहे। आपकी क़ब्र भी वहीं है।

इमाम अहमद और अबू यअला ने मर्फूअन निकाला है कि आँहज़रत (रज़ि.) ने अबू ज़र से फ़र्माया था जब तू मदीना से निकाला जाएगा तो कहीं जाएगा? तो उन्होंने कहा शाम के मुल्क में। आपने फ़र्माया कि जब तू वहाँ से भी निकाला जाएगा? उन्होंने कहा कि मैं फिर मदीना शरीफ़ में आ जाऊँगा। आपने फ़र्माया जब फिर वहाँ से निकाला जाएगा तो क्या करेगा? अबू ज़र ने कहा मैं अपनी तलवार सम्भाल लूँगा और लड़ूँगा। आपने फ़र्माया बेहतर बात ये है कि इमामे वक़्त की बात सुन लेना और मान लेना। वो तुमको जहाँ भेजें चले जाना। चुनाँचे हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने उसी इशार्द पर अमल किया और दम न मारा और आख़िर दम तक रब्ज़ा ही में रहे।

जब आपके इतिफ़ाल का वक़्त करीब आया तो आपकी बीवी जो साथ थीं उस मौते गुर्बत का तसव्वुर करके रोने लगीं। कफ़न के लिये भी कुछ न था। आख़िर अबू ज़र (रज़ि.) को एक पेशीनगोई याद आई और बीवी से फ़र्माया कि मेरी वफ़ात के बाद इस टीले पर जा बैठना कोई काफ़िला आएगा वही मेरे कफ़न का इतिज़ाम करेगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) अचानक एक काफ़िला के साथ इधर से गुजरे और सूस्तेहाल मा'लूम करके रोने लगे, फिर कफ़न-दफ़न का इतिज़ाम किया। कफ़न में अपना अमामा उनको दे दिया। (रज़ि.)

अल्लामा हाफिज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं,

व फ़ी हाज़लहदीय़ि मिनल्फ़वाइदि ग़ैस्मा तक्रहम् अन्नल्कुफ़्फ़ार मुखातबून बिफ़ुरूइशरीअति लिइत्तिफ़ाकि अबी ज़रिन व मुआवियत अन्नल्आयत नज़लत फ़ी अहलिल्किताबि व फ़ीहि मुलातफ़तुल्अइम्मति लिउल्लमाइ फ़इन्न मुआवियत लम यज़सुर अलल्इन्कारि अलैहि हता कातब मन हुब आला मिन्हु फ़ी अमिही व उम्मानु लम यहनुक अला अबी ज़रिन मिनशिश़ाकि वल्बुरुजि अलल्अइम्मति वत्तर्ग़ीबि फ़ित्ताअति लिउल्लिल्अमि व अम्फ़ल्अफ़ज़लि बिताअतिल्मफ़ज़ूलि ख़श्यतल्मप्सति व जवाज़ल्इख़ितलाफ़ि फ़िल्इज्तिहादि वल्अख़िज बिशिश़ादि फ़िल्अमि बिल्मअरूफ़ि व इन अहा ज़ालिक इला फ़ि राक़िल्बतनि व तक्रदीमि दफ़इल्मुप्सदति अला ज़ल्बिल्मन्फ़अति लिअन्न फ़ी बक्राइ अबी ज़रिन बिल्मदीनति मस्तलहतुहु कबीरतुन मम्बश्श अमलहु फ़ी तालिबिल्इल्मि व मज़ ज़ालिक फ़रजअ इन्द उम्मान दफ़अ मा यतयक्कड़ इन्दल्मप्सदति मिनल्अख़िज बिमज़हबिश़दीद फ़ी हाज़िहिल्मस्अलति व लम यअमुहु बअद ज़ालिक बिर्ज़ुइ अन्हु लिअन्न कुल्लम्मिन्हुमा मुज्ताहिदन.

या 'नो इस हदीस से बहुत से फ़ायदे निकलते हैं। हज़रत अबू ज़र और हज़रत मुआविया यहाँ तक मुत्ताफ़िक़ थे कि ये आयत अहले किताब के हक़ में नाज़िल हुई है पस मा'लूम हुआ कि शरीअत के फ़ुरूई अहक़ामात के कुफ़्फ़ार भी मुखातब हैं और इससे ये भी निकला कि हुक्कामे इस्लाम को उलमा के साथ मेहरबानी से पेश आना चाहिये। हज़रत मुआविया ने ये ज़सारत नहीं की कि खुल्लम खुल्ला हज़रत अबू ज़र की मुखातब करे बल्कि ये मुआमला हज़रत उम्मान तक पहुँचा दिया जो उस वक़्त मुसलमानों के ख़लीफ़-ए-बरहक़ थे और वाकिआत मा'लूम होने पर हज़रत उम्मान (रज़ि.) ने भी हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) के साथ कोई सख़्ती नहीं की हालाँकि वो उनकी तावील के ख़िलाफ़ थे। उससे ये भी निकला कि अहले इस्लाम को बाहमी निफ़ाक़ व शिक्का से डरना ही चाहिये और अइम्म-ए-बरहक़ पर ख़ुरूज नहीं करना चाहिये बल्कि उलुल-अम् की इताअत करनी चाहिये और इज्तिहादी उमूर में उससे इख़िलाफ़ का जवाज़ भी प्राबित हुआ और ये भी कि अम् बिल्मअरूफ़ करना ही चाहिये ख़वाह उसके लिये वतन छोड़ना पड़े और फ़साद की चीज़ को दफ़ा ही करना चाहिये अगरचे वो नफ़ा के ख़िलाफ़ भी हो। हज़रत उम्मान (रज़ि.) जो हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) को हुक्म दिया उसमें बड़ी मस्तिलहत थीं कि ये यहाँ मदीने में रहेंगे तो लोग उनके पास बक़रत इल्म हासिल करने आएँगे और इस मसल-ए-तनाज़आ में उनसे इसी शिद्दत का अप़र लेंगे। हज़रत उम्मान (रज़ि.) ने हज़रत अबू ज़र को उस शिद्दत से रज़ूअ करने का भी हुक्म नहीं दिया इसलिये कि ये सब मुज्ताहिद थे और हर मुज्ताहिद अपने-अपने इज्तिहाद का ख़ुद जिम्मेदार है।

ख़ुलासा-ए-कलाम ये है कि हज़रत अबू ज़र अपने जुहद व तक्वा की बुनियाद पर माल के मुता'ल्लिक बहुत शिद्दत बरतते थे और वो अपने ख़याल पर अटल थे। मगर दीगर अकाबिर सहाबा ने उनसे इत्तिफ़ाक़ नहीं किया और न उनसे ज़्यादा तज़रीज़ किया। हज़रत उम्मान (रज़ि.) ने ख़ुद उनकी मज़ी देखकर उनको रब्बा में आबाद फ़र्माया था। बाहमी नाराज़गी न थी। जैसा कि बाज़ ख़वारिज ने समझा। तप्सील के लिये फ़तहूलबारी का मुतालआ किया जाए।

1407. हमसे अयाश बिन ख़लीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल अज़ला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद ज़रीरी ने अबू अलाअ यज़ीद से बयान किया, उनसे अह्नफ़ बिन कैस ने, उन्होंने कहा कि मैं बैठा हुआ था

١٤٠٧- حَدَّثَنَا عَاشِقُ بْنُ حَذَّافٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ حَذَّافٍ قَالَ حَدَّثَنَا الْحُجْرِيُّ عَنْ أَبِي الْقَلَاءِ عَنْ الْأَخْنَفِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ: ((جَلَسْتُ)) ح.

(दूसरी सनद) और इमाम बुखारी ने फ़र्माया कि मुझसे इस्हाक़ बिन मन्ज़ूर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सईद ज़रीरी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अलाअ बिन शख़री ने बयान किया,

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ حَذَّافٍ قَالَ حَدَّثَنَا الْحُجْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْقَلَاءِ بْنُ الشَّخِيرِ أَنَّ الْأَخْنَفَ بْنَ قَيْسٍ حَدَّثَهُمْ

उन्से अहन्फ बिन कैस ने बयान किया कि मैं कुरैश की एक मजलिस में बैठा हुआ था। इतने में सख्त बाल, मोटे कपड़े और मोटी-झोटी हालत में एक शख्स आया और खड़े होकर सलाम किया और कहा कि खज़ाना जमा करने वालों को उस पत्थर की बशारत हो जो जहन्नम की आग में तपाया जाएगा और उसकी छाती पर रख दिया जाएगा जो मूँढ़े की तरफ से पार हो जाएगा और मूँढ़े की पतली हड्डी पर रख दिया जाएगा तो सीने की तरफ से पार हो जाएगा। इस तरह वो पत्थर बराबर ढलकता रहेगा। ये कह कर वो साहब चले गये और एक सुतून (खम्भे) के पास टेक लगाकर बैठ गये। मैं भी उनके साथ चला और उनके करीब बैठ गया। अब तक मुझे ये मा'लूम न था कि ये कौन साहब हैं। मैंने उनसे कहा कि मेरा खयाल है कि आपकी बात क्रौम ने पसन्द नहीं की। उन्होंने कहा ये सब तो बेवकूफ हैं।

1408. (उन्होंने कहा) मुझसे मेरे खलील ने कहा था। मैंने पूछा कि आपके खलील कौन हैं? जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ)। आप (ﷺ) ने फ़र्माया था, ऐ अबूज़र क्या उहुद पहाड़ तू देखता है? अबूज़र (रज़ि.) का बयान था कि उस वक़्त मैंने सूरज की तरफ नज़र उठाकर देखा कि कितना दिन अभी बाक़ी है? क्योंकि मुझे (आपकी बात से) ये खयाल गुज़रा कि आप अपने किसी काम के लिये मुझे भेजेंगे। मैंने जवाब दिया जी हाँ! (उहुद पहाड़ मैंने देखा है)। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना हो, मैं इसके सिवा दोस्त नहीं रखता कि सिर्फ़ तीन दीनार बचाकर बाक़ी का तमाम (अल्लाह के रास्ते में) दे डालूँ। (अबूज़र रज़ि. ने फिर फ़र्माया कि) उन लोगों को कुछ मा'लूम नहीं, ये दुनिया जमा करने की फ़िक्र करते हैं, हर्गिज़ नहीं अल्लाह की क्रसम न में उनकी दुनिया उनसे माँगता हूँ और न दीन का कोई मसला उनसे पूछता हूँ यहाँ तक कि मैं अल्लाह से जा मिलूँ। (राजेअ: 1237)

तशरीह: शायद तीन अशरफ़ियाँ उस वक़्त आप पर कर्ज़ होंगी या ये आपका रोज़ाना का खर्च होगा। हाफ़िज़ ने कहा कि इस हदीस से ये निकलता है कि माल जमा न करे। मगर ये उलुवियत पर महमूल है क्योंकि जमा करने वाला गो ज़कात दे तब भी उसको क़यामत के दिन हिसाब देना होगा। इसलिये बेहतर यही है कि जो आए खर्च कर डाले मगर इतना भी नहीं कि कुआन पाक की आयात के खिलाफ़ हो जिसमें फ़र्माया, **وَلَا تَبْسُتُهَا كُتْلُهَا** बसति फ़तक़उद मलूमम महसूरा (बनी इस्राईल: 29) या 'नी इतने भी हाथ कुशाद न करो कि तुम खाली होकर शर्मिन्दा और आजिज़ बन जाओ। खुद

قَالَ: ((جَلَسْتُ إِلَى مَلَا مِنْ قُرَيْشٍ، فَبَعَا رَجُلٌ خَشِينَ الشَّغَرِ وَالْيَابِ وَالْهَيْفَةِ، حَتَّى قَامَ عَلَيْهِمْ فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: بَشِّرِ الْكَافِرِينَ بِرَضْفٍ يُخَمِّي عَلَيْهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ثُمَّ يُوضَعُ عَلَى حَلَمَةٍ فَنَذِي أَحْبَبَهُمْ حَتَّى يَخْرُجَ مِنْ نَفْصِ كَبْهِهِ، وَتُوضَعُ عَلَى نَفْصِ كَبْهِهِ حَتَّى يَخْرُجَ مِنْ حَلَمَةٍ فَيَنْدِي يَتَوَلَّوْنَ. ثُمَّ وَلَّى فَبَجَسَ إِلَى سَارِيَةٍ. وَبَعَثَهُ وَجَلَسْتُ إِلَيْهِ وَأَنَا لَا أَذْرِي مَنْ هُوَ، فَقُلْتُ لَهُ: لَا أَرَى الْقَوْمَ إِلَّا قَدْ كَرِهُوا الَّذِي قُلْتُ. قَالَ: إِنَّهُمْ لَا يَقْبَلُونَ شَيْئًا)).

١٤٠٨ - قَالَ لِي خَلِيلِي - قَالَ قُلْتُ: مَنْ خَلِيلُكَ؟ قَالَ: النَّبِيُّ ﷺ. ((يَا أَبَا ذَرٍّ أَتَبْصِرُ أَحَدًا؟)) قَالَ فَظَرْتُ إِلَى الشَّمْسِ مَا بَقِيَ مِنَ النَّهَارِ، وَأَنَا أَرَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُوسِّلُنِي فِي حَاجَةٍ لَهُ، قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((مَا أَحْبَبَ أَنْ لِي مِثْلُ أَحَدٍ ذَهَبًا أَنْفَقَهُ كُلَّهُ إِلَّا ثَلَاثَةَ دَنَانِيرٍ. وَإِنْ هَؤُلَاءِ لَا يَقْبَلُونَ شَيْئًا، إِنَّمَا يَجْمَعُونَ الدُّنْيَا. لَا وَاللَّهِ، لَا أَسْأَلُهُمْ دُنْيَا وَلَا أَسْتَفْنِيهِمْ عَنْ دِينٍ حَتَّى أَلْقَى اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ)). [راجع: ١٢٣٧]

आँहजरत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक ज़माना ऐसा भी आएगा कि एक मुसलमान के लिये उसके ईमान को बचाने के लिये उसके हाथ में माल का होना मुफ़ीद होगा। इसीलिये कहा गया है कि कुछ दफ़ा मुहताजगी काफ़िर बना देती है। खुलासा ये है कि दरम्यानी रास्ता बेहतर है।

बाब 5 : अल्लाह की राह में माल खर्च करने

की फ़ज़ीलत का बयान

1409. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद ने इस्माईल बिन अबी ख़ालिद से बयान किया, कहा कि मुझसे क्रैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, और उनसे इब्ने मस्ज़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हसद (रश्क) करना सिर्फ़ दो ही आदमियों के साथ जाइज़ हो सकता है। एक तो उस शख्स के साथ जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसे हक़ और मुनासिब जंगहों में खर्च करने की तौफ़ीक़ दी। दूसरे उस शख्स के साथ जिसे अल्लाह तआला ने हिकमत (अक़ल, कुआन-हदीष का इल्म और मामला फ़हमी) दी और वो अपनी हिकमत के मुताबिक़ हक़ फ़ैसला करता है और लोगों को इसकी ता'लीम देता है। (राजेज़ : 73)

तशरीह : अमीर और आलिम दोनों अल्लाह के यहाँ मक़बूल भी हैं और मदद भी। मक़बूल वो जो अपनी दौलत को अल्लाह की राह में खर्च करें, ज़कात और सदकात से मुस्तहिक्कीन (हक़दारों) की ख़बरगिरी करें और इस बारे में रिया नमूद से भी बचें, ये मालदार इस क़ाबिल हैं कि हर मुसलमान को उन जैसा मालदार बनने की तमन्ना करनी जाइज़ है। इसी तरह आलिम जो अपने इल्म पर अमल करें और लोगों को इल्मी फ़ैज़ पहुँचाएँ और रिया नमूद से दूर रहे, ख़ाशियत व मुहब्बत इलाही बहरहाल मुक़दम रखें, ये आलिम भी क़ाबिले रश्क हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद ये कि अल्लाह के लिये खर्च करने वालों का बड़ा दर्जा है ऐसा कि उन पर रश्क करना जाइज़ है जबकि आम तौर पर हसद करना जाइज़ नहीं मगर नेक निय्यती के साथ उन पर हसद करना जाइज़ है।

बाब 6 : सद्के में रियाकारी करना,

क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि

ऐ लोगों! जो ईमान ला चुके हो अपने सदकात को एहसान जताकर और (जिस ने तुम्हारा सद्का ले लिया है उसे) ईज़ा देकर बर्बाद मत करो, जैसे वो शख्स (अपने सद्के बर्बाद करता है) जो लोगों को दिखाने के लिये माल खर्च करता है और अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान नहीं लाता। (से) अल्लाह तआला के इर्शाद और अल्लाह अपने मुन्किरों को हिदायत नहीं करता (तक)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (कुआन मजीद) में लफ़ज़ मल्दन से मुराद साफ़ और चिकनी चीज़ है। इक्रमा (रज़ि.) ने कहा (कुआन मजीद) में लफ़ज़ वाबिल से मुराद ज़ोर की बारिश

٥- بَابُ إِنْفَاقِ الْمَالِ فِي حَقِّهِ

١٤٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ

حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي

قَيْسٌ عَنْ ابْنِ مَسْرُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ

سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَا حَسَدَ إِلَّا لِي

اِثْنَيْنِ: رَجُلٍ آتَاهُ اللَّهُ مَالًا فَسَلَّطَهُ عَلَى

هَلَكَائِهِ فِي الْحَقِّ، وَرَجُلٍ آتَاهُ اللَّهُ حِكْمَةً

فَهُوَ يَقْضِي بِهَا وَيُعَلِّمُهَا)). [راجع: ٧٣]

٦- بَابُ الرِّيَاءِ فِي الصَّدَقَةِ، لِقَوْلِهِ

تَعَالَى:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا

صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَى كَالَّذِي يُنْفِقُ

مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

الْآخِرِ- إِلَى قَوْلِهِ - وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

الْكَاذِبِينَ﴾ [البقرة: ٢٦٤، ٢٦٥].

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا:

﴿مَثَلُهُ﴾: قَيْسٌ عَلَيْهِ شِهَةٌ، وَقَالَ

है और लफ़्ज़ तुल से मुराद शबनम (ओस) है।

عِكرِمَةُ: ﴿وَابِلٌ﴾: مَطَرٌ شَدِيدٌ.
﴿الطَّلُ﴾: النَّدى.

तशरीह:

यहाँ फ़र्ज़ सद्का या 'नी ज़कात और नफ़ल सद्का या 'नी ख़ैरात दोनों शामिल है। रियाकारी के दख़ल से दोनों बजाय प्रवाब के अज़ाब के बाज़िअ (कारक) होंगे। जैसा कि दूसरी हदीष में आया है कि क़यामत के दिन रियाकार को दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा और उससे कहा जाएगा कि तूने नामवरी के लिये ख़र्च किया था सो तेरा नाम दुनिया में ज़वादा सख़ी मशहूर हो गया अब यहाँ आख़िर तेरे लिये क्या रखा है। रियाकार से बदतर वो लोग हैं जो ग़रीबों व मिसकीनों पर एहसान जतलाते हैं और उनको रूहानी ईज़ा पहुँचाते हैं। इस तरह के ज़कात व सद्कात इन्दल्लाह बातिल हैं।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ बाब में उन आयात ही पर इक्तिफ़ा किया और आयात में एहसान जतलाने और ईज़ा देने वाले रियाकार काफ़िरी के सद्का के साथ तश्बीह देकर उनकी इतिहाई क़बाहत पर दलील ली है। सल्दन वो साफ़ पत्थर जिस पर कुछ भी न हो हाज़ा मज़लुन ज़रबहुल्लाहु लिआमालिल्कुफ़फ़ारि यौमल्क़ियामति बिकौलि ला यन्दिरून अला शयइम्मिमा कसबू यौमइज़िन कमा तरक हाज़ल्मतस्सल्दन नक्किथ्यन लैस अलैहि शैउन. या 'नी ये मिषाल अल्लाह ने उन काफ़िरी के लिये बयान की कि क़यामत के दिन उनके आमाल कलअदम (निरस्त) हो जाएँगे और वो वहाँ कुछ भी न पा सकेंगे जैसा कि बारिश ने उस पत्थर को साफ़ कर दिया।

बाब 7 : अल्लाह पाक चोरी के माल में से ख़ैरात नहीं कुबूल करता और वो सिर्फ़ पाक कमाई से कुबूल करता है

क्योंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है, भली बात करना और फ़क़ीर की सख़्त बातों को माफ़ कर देना उस सद्के से बेहतर है जिसके नतीजे में (उस शख़्स को जिसे सद्का दिया गया है) अज़िय्यत (तकलीफ़) दी जाए कि अल्लाह बड़ा बेनियाज़, निहायत बुर्दबार है।

इस आयत से इमाम बुखारी (रह.) ने बाब का मतलब यूँ निकाला कि जब कोई चोर, चोरी के माल में से ख़ैरात करेगा तो जिन लोगों पर ख़ैरात करेगा उनको जब उसकी ख़बर होगी तो वो रंजीदा होंगे, उनको ईज़ा होगी।

बाब 8 : हलाल कमाई में से ख़ैरात कुबूल होती है

क्योंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि

अल्लाह तआला सूद को घटाता है और सद्के को बढ़ाता है और अल्लाह तआला किसी नाशुके गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल किये, नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, उन्हें इन आमाल का उनके परवरदिगार के यहाँ प्रवाब मिलेगा और न उन्हें कोई ख़ौफ़ होगा और न वो शम्मीन होंगे।

٧- بَابُ لَا يَقْبَلُ اللَّهُ صَدَقَةً مِنْ غُلُولٍ، وَلَا يَقْبَلُ إِلَّا مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ لِقَوْلِهِ: ﴿قَوْلٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أذى، وَاللَّهُ غَنِيٌّ خَلِيمٌ﴾ [البقرة: ٢٦٣].

٨- بَابُ الصَّدَقَةِ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ، لِقَوْلِهِ تَعَالَى: [البقرة: ٢٧٦-٢٧٧] ﴿وَتَرْبِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يَجِبُ كُلَّ كَفَّارٍ إِلَيْكُمْ إِنْ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾

1410. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने अबू नज़र सालिम बिन अबी उमय्या से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझसे अब्दुरहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू मालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख्स हलाल कमाई से एक खजूर के बराबर स़दका करे और अल्लाह तआला सिर्फ़ हलाल कमाई के स़दके को कुबूल करता है तो अल्लाह तआला उसे अपने दाहिने हाथ से कुबूल करता है। फिर स़दका करने वाले के फ़ायदे के लिये उसमें ज़्यादाती करता है। बिल्कुल उसी तरह जैसे कोई अपने जानवर के बच्चे को खिला-पिलाकर बढ़ाता है, यहाँ तक कि उसका स़दका पहाड़ के बराबर हो जाता है। अब्दुरहमान के साथ इस रिवायत की मुताब़ात सुलैमान ने अब्दुल्लाह बिन दीनार की रिवायत से की है। और वरकाअ ने इब्ने दीनार से कहा, उनसे सईद बिन यसार ने कहा, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने और इसकी रिवायत मुस्लिम बिन अबी मरयम, ज़ैद बिन अस्लम और सुहैल ने अबू मालेह से की, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने।

(दीगर मक़ाम : 7430)

तशरीह : हदीष में है कि अल्लाह के दोनों हाथ दाहिने हैं या'नी ऐसा नहीं कि उसका एक हाथ दूसरे हाथ से कुव्वत में कम हो जैसे मख़लूक़ात में हुआ करता है। अहले हदीष इस किस्म की आयतों और हदीषों की तावील नहीं करते और उनको उनके ज़ाहिर मा'नी पर महमूल रखते हैं। सुलैमान की रिवायत मज़कूर को खुद मुअल्लिफ़ ने और अबू अवाना ने बर्रल किया है। और वरकाअ की रिवायत को इमाम बेहकी और अबूबक्र शाफ़िई ने अपने फ़वाइद में और मुस्लिम की रिवायत को काज़ी यूसुफ़ बिन यज़कूब ने किताबुज्जकात में और ज़ैद बिन असलम और सुहैल की रिवायतों को इमाम मुस्लिम ने बर्रल किया। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ाल अहलुल इल्मि मिन अहलुस्सुन्नति वल जमाअति नूमिनु बिहाज़िहिल अहादीषि वला नतवहहमु फ़ीहा तशबीहन वला नक़लु कैफ़ या'नी अहले-सुन्नत वल जमाअत के तमाम अहले-इल्म का क़ौल है कि हम बिला चूँ व चरा अहादीष पर ईमान लाते हैं और इसमें तशबीह का वहम नहीं करते और न हम कैफ़ियत की बहस में जाते हैं।

बाब 9 : स़दका उस ज़माने से पहले किलेने वाले

कोई बाक़ी न रह जाए

1411. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने

١٤١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ أَبَا النَّضْرِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ - هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ - عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((مَنْ تَصَدَّقَ بِعَذَلٍ فَمَرَّةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ - وَلَا يَقْبَلُ اللَّهُ إِلَّا الطَّيِّبَ - فَإِنَّ اللَّهَ يَقْبَلُهَا بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يَرْتَبِّهَا لِمَصْحَابِهِ كَمَا يَرْتَبِي، أَخَذَكُمْ فَلَوْهَ، حَتَّى تَكُونَ مِثْلَ الْجَبَلِ)).

فَأَبَقَهُ سُلَيْمَانُ عَنْ ابْنِ دِينَارٍ. وَقَالَ وَرَقَاءُ عَنْ ابْنِ دِينَارٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَرَوَاهُ مُسْلِمٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ وَسُهَيْلٌ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طوله ي : ٧٤٣٠]

٩- بَابُ الصَّدَقَةِ قَبْلَ الرُّدِّ

١٤١١- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद बिन खालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हारिष बिन वुहैब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना था कि सद्का करो, एक ऐसा ज़माना भी तुम पर आने वाला है जब एक शख्स अपने माल का सद्का लेकर निकलेगा और कोई उसे कुबूल करने वाला नहीं पाएगा।

(दीगर मक़ाम : 1424, 7120)

तथरीह :

जिसके पास सद्का लेकर जाएगा वो ये जवाब देगा कि अगर तुम कल उसे लाए होते तो मैं ले लेता। आज तो मुझे इसकी ज़रूरत नहीं। क़यामत के करीब ज़मीन की सारी दौलत बाहर निकल आएगी और लोग बहुत कम रह जाएंगे। ऐसी हालत में किसी को माल की हाज़त न होगी। हदीष का मतलब ये है कि इस वक़्त को ग़नीमत जानो जब तुममें मुहताज हैं और जितनी हो सके ख़ैरात दो। इस हदीष से ये भी निकला कि क़यामत के करीब ऐसे जल्दी-जल्दी इक़िलाब होंगे कि आज आदमी मुहताज है कल मालदार होगा। आज इस दौर में ऐसा ही हो रहा है। सारी रूए ज़मीन पर एक तूफ़ान बरपा है मगर वो ज़माना अभी दूर है कि लोग ज़कात व सद्कात लेने वाले बाक़ी न रहेंगे।

1412. हमसे अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अबुज्जिनाद ने बयान किया, उनसे अब्दुरहमान बिन हुमुज़ अल अरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत आने से पहले माल-दौलत की इस क़दर क़षरत हो जाएगी और लोग इस क़दर मालदार हो जाएंगे कि उस वक़्त साहिबे-माल को इसकी फ़िक्र होगी कि उसकी ज़कात कौन कुबूल करे और अगर किसी को देना भी चाहेगा तो उसको ये जवाब मिलेगा कि मुझे इसकी हाज़त नहीं है।

(राजेअ : 80)

क़यामत के करीब जब ज़मीन अपने ख़जाने उगल देगी, तब ये हालत पेश आएगी।

1413. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम नबील ने बयान किया, कहा कि हमें सअदान बिन बिश्र ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अबू मुजाहिद सअद ताई ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहिल बिन खलीफ़ा ताई ने बयान किया, कहा कि मैंने अदी बिन हातिम ताई (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद था कि दो शख्स आए, एक फ़क्रो-फ़ाक्रा की शिकायत लिये हुए था और दूसरे को रास्तों के ग़ैर-महफूज़ होने की शिकायत थी। इस

قَالَ حَدَّثَنَا مَعْبُدُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ : سَمِعْتُ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((اصْدُقُوا، لِأَنَّهُ يَأْتِي عَلَيْكُمْ زَمَانٌ يَمْشِي الرَّجُلُ بِصَدَقِهِ فَلَا يَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهَا، يَقُولُ الرَّجُلُ: لَوْ جِئْتُ بِهَا بِالْأَمْسِ لَقَبِلْتُهَا، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَلَا حَاجَةَ لِي بِهَا)). [طرفاء : ١٤٢٤، ٧١٢٠].

١٤١٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمْ الْمَالُ، فَيَفْنِيَهُ، حَتَّى يَهُمَّ رَبُّ الْمَالِ مِنْ يَقْبَلُ صَدَقَتَهُ، وَحَتَّى يَفْرُطَهُ فَيَقُولَ الَّذِي يَفْرُطُهُ عَلَيْهِ: لَا أَرَبَ لِي)). [راجع : ٨٥]

١٤١٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ النَّبِيلُ قَالَ أَخْبَرَنَا سَعْدَانُ بْنُ بَشِيرٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُجَاهِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُجِلُّ بْنُ خَلِيفَةَ الطَّائِي قَالَ : سَمِعْتُ عَدِيَّ بْنَ حَاتِمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: كُنْتُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لَجَاءَهُ

पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया कि जहाँ तक रास्तों के ग़ैर-महफूज़ होने का ता'ल्लुक है तो बहुत जल्द ऐसा ज़माना आने वाला है कि जब एक क़ाफ़िला मक्का से किसी मुहाफ़िज़ के बग़ैर निकलेगा (और उसे रास्ते में कोई ख़तरा न होगा) और रहा फ़क्करो-फ़ाक्का तो क़यामत उस वक़्त तक नहीं आएगी जब तक (माल-दौलत की क़सरत की वजह से ये हाल न हो जाए कि) एक शख्स अपना सदका लेकर तलाश करे लेकिन कोई उसे लेने वाला न मिले। फिर अल्लाह तआला के सामने एक शख्स इस तरह खड़ा होगा कि उसके और अल्लाह तआला के दरम्यान कोई पर्दा न होगा और न तर्जुमानी के लिये कोई तर्जुमान होगा। फिर अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि क्या मैंने तुझे दुनिया में माल नहीं दिया था? वो कहेगा कि हाँ दिया था। फिर अल्लाह तआला पूछेगा कि क्या मैंने तेरे पास पैग़म्बर नहीं भेजा था? वो कहेगा कि हाँ भेजा था। फिर वो शख्स अपनी दाईं तरफ़ देखेगा तो आग के सिवा और कुछ नज़र नहीं आएगा फिर बाईं तरफ़ देखेगा, उधर भी आग ही आग होगी। पस तुम्हें जहन्नम से डरना चाहिये, ख़वाह एक खजूर के टुकड़े ही (का सदका करके उससे अपना बचाव कर सको) अगर ये भी मयस्सर न आ सके तो अच्छी बात ही मुँह से निकाले।

(दीगर मक़ाम : 1417, 3595, 6032, 6539, 6540, 6563, 7443, 7512)

رَجُلَانِ : أَحَدُهُمَا يَشْكُو الْغَنَةَ، وَالْآخَرُ يَشْكُو قَطْعَ السَّبِيلِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((أَنَا قَطْعُ السَّبِيلِ لِأَنَّهُ لَا يَأْتِي عَلَيْكَ إِلَّا قَلِيلٌ حَتَّى تَخْرُجَ الْغَيْرُ إِلَى مَكَّةَ بِغَيْرِ خَفِيرٍ. وَأَمَّا الْغَنَةُ فَإِنَّ السَّاعَةَ لَا تَقُومُ حَتَّى يَطُوفَ أَحَدُكُمْ بِصَدَقَتِهِ فَلَا يَجِدَ مَنْ يَقْبَلُهَا مِنْهُ. ثُمَّ لَيَقْفَنَ أَحَدُكُمْ تَحْتَ يَدَيِ اللَّهِ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ حِجَابٌ وَلَا تَرْجُمَانٌ يَرْجُمُ لَهُ، ثُمَّ لَيَقُولَنَّ لَهُ : أَلَمْ أَرْسِلْ إِلَيْكَ رَسُولًا؟ فَلَيَقُولَنَّ : بَلَى. لَيَنْظُرَ عَنْ يَمِينِهِ فَلَا يَرَى إِلَّا النَّارَ، ثُمَّ يَنْظُرُ عَنْ شِمَالِهِ فَلَا يَرَى إِلَّا النَّارَ. فَلَيَقِينَ أَحَدُكُمْ النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَإِنَّ تَمَّ يَجِدُ فِكْلِمَةً طَيِّبَةً)).

[أطرافه ب : ١٤١٧ ، ٣٥٩٥ ، ٦٠٢٣ ،

٦٥٣٩ ، ٦٥٤٠ ، ٦٥٦٣ ، ٧٤٤٣ ،

[٧٥١٢]

तर्जुमह : ये भी एक बड़ा सदका है या'नी अगर ख़ैरात न दे तो उसको नरमी से ही जवाब दे कि इस वक़्त मैं मजबूर हूँ, मुआफ़ कर दो, लड़ना-झगड़ना मना है। तर्जुमान वो है जो तर्जुमा करके बन्दे का कलाम अल्लाह से अर्ज़ करे और अल्लाह का इश्राद बन्दे को सुनाए बल्कि खुद अल्लाह पाक कलाम फ़र्माएगा। इस हदीष से उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह क कलाम में आवाज़ और हुरूफ़ नहीं, अगर आवाज़ और हुरूफ़ न हों तो बन्दा सुनेगा कैसे और समझेगा कैसे? (वहीदी)

इस हदीष में ये पेशगोई भी है कि एक दिन अरब में अमनो-अमान आम होगा, चोर-डाकू आम तौर पर ख़त्म हो जाएँगे, यहाँ तक कि क़ाफ़िले मक्का शरीफ़ से (ख़फ़ीर) के बग़ैर निकला करेंगे। ख़फ़ीर उस शख्स को कहा जाता था जो अरब में हर हर क़बीले से क़ाफ़िला के साथ सफ़र करके अपने क़बीले की सरहद अमन व आफ़ियत के साथ पार करा देता था वो रास्ता भी बतलाता और लूटमार करने वालों से भी बचाता था।

आज इस चौदहवीं सदी में हुकूमते अरबिया सज़्ज़दिया ने हरमैन-शरीफ़ेन को अमन का इस क़दर गहवारा बना दिया है कि मजाल नहीं कि कोई किसी पर दस्तअंदाज़ी कर सके। अल्लाह पाक इस हुकूमत को कायम रखे और हासिदीन (ईर्ष्या करने वालों) व मुआनिदीन (बुराई करने वालों) के ऊपर इसको हमेशा ग़लबा अज़ा करे। आमीन!

1414. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَلَاحِ قَالَ

कि हमसे अबू उसामा (हम्माद बिन उसामा) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे बुर्दा बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अबूबुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि लोगों पर ज़रूर एक ज़माना ऐसा आएगा कि एक शख्स सोने का स़दका लेकर निकलेगा लेकिन कोई उसे लेने वाला नहीं मिलेगा और ये भी होगा कि एक मर्द की पनाह में चालीस-चालीस औरतें हो जाएंगी क्योंकि मर्दों की कमी हो जाएगी और औरतों की ज्यादाती होगी।

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَطُوفُ الرَّجُلُ فِيهِ بِالصَّدَقَةِ مِنَ الذَّهَبِ ثُمَّ لَا يَجِدُ أَحَدًا يَأْخُذُهَا مِنْهُ، وَيُرَى الرَّجُلُ الْوَاحِدُ يَتَّبِعُهُ أَرْبَعُونَ امْرَأَةً يُلْذَنَ بِهِ، مِنْ قِلَّةِ الرِّجَالِ وَكَثْرَةِ النِّسَاءِ)).

क़यामत के करीब या तो औरतों की पैदाइश बढ़ जाएगी, मर्द कम हो जाएंगे या लड़ाइयों की क़हरत से मर्दों की क़िल्लत हो जाएगी। ऐसा कई दफ़ा हो चुका है।

बाब 10 : इस बारे में कि जहन्नम की आग से बचो ख़वाह ख़जूर के एक टुकड़े या किसी मा'मूली स़दके के ज़रिये हो

١٠ - بَابُ اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقْ تَمْرَةٍ، وَالْقَلِيلِ مِنَ الصَّدَقَةِ

और (कुआन मजीद में है) व मज़लुलज़ीन युन्फ़िक्कून अम्वालहुम उन लोगों की मिश्राल जो अपना माल ख़र्च करते हैं, से फ़र्माने बारी व मिन कुल्लिषमराति तक

﴿وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ - وَالْيَ قَوْلِهِ - ﴿وَمَنْ كُلُّ التَّمْرَاتِ﴾﴾

ये आयत सूरह बकरः के रूकूअ 35 में है। इस आयत और हदीष से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि स़दका थोड़ा हो या बहुत हर तरह उस पर प्रवाब मिलेगा क्योंकि आयत में मुत्लक अम्वालहुम का ज़िक्र है जो क़लील और क़रीर सबको शामिल है।

1415. हमसे अबू कुदामा उबैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबुन नोअमान हकम बिन अब्दुल्लाह बसरी ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे सुलैमान आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मस्ऊद अन्सारी (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब आयत स़दका नाज़िल हुई तो हम बोझ ढोने का काम किया करते थे। (ताकि इस तरह जो मज़दूरी मिले उसे स़दका कर दिया जाए) इसी ज़माने में एक शख्स (अब्दुरह्मान बिन औफ़) आया और उसने स़दके के तौर पर काफ़ी चीज़ें पेश कीं। इस पर लोगों ने कहना शुरू किया कि ये आदमी रियाकार है। फिर एक और शख्स (अबू अक़ील नामी) आया और उसने सिर्फ़ एक साअ का स़दका किया। उसके बारे में लोगों ने ये कह दिया कि अल्लाह तआला को एक साअ स़दका की क्या हाज़त है? इस पर ये आयत नाज़िल हुई, वो लोग जो उन

١٤١٥ - حَدَّثَنَا أَبُو قُدَامَةَ عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ الْحَكَمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْبَصْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلِمَانَ عَنْ أَبِي وَإِلٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «لَمَّا نَزَلَتْ آيَةُ الصَّدَقَةِ كُنَّا نَحَامِلُ، فَجَاءَ رَجُلٌ قَصْدَقَ بِشَيْءٍ كَثِيرٍ، فَقَالُوا: مُرَاءٍ. وَجَاءَ رَجُلٌ قَصْدَقَ بِصَاعٍ، فَقَالُوا: إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنْ صَاعٍ هَذَا. فَنَزَلَتْ: ﴿الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ، وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ﴾ (الآية)).

मोमिनों पर ऐब लगाते हैं जो सद्का ज्यादा देते हैं और उन पर भी जो मेहनत से कमाकर लाते हैं। (और कम सद्का करते हैं) आखिर तक। (दीगर मक़ाम : 1416, 2272, 6468, 4669)

[أطرافه في : ٤٦٦٨ ، ٢٢٧٢ ، ٤٦٦٦ : ٤٦٦٩]

तशरीह : ये ता'ना मारनेवाले कमबख्त मुनाफ़िकीन थे, उनको किसी तरह चैन न था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने अपना आधा माल आठ हज़ार दिरहम सद्का कर दिया तो उनको रियाकार कहने लगे। अबू अक़ील (रज़ि.) बेचारे ग़रीब ने मेहनत मजदूरी से कमाई करके एक साअ खजूर अल्लाह की राह में दी तो इस पर ठठा मारने लगे कि अल्लाह को उसकी ज़रूरत न थी।

अरे मर्दों! अल्लाह को तो किसी चीज़ की एहतियाज (ज़रूरत) नहीं। आठ हज़ार क्या आठ करोड़ हो तो उसके आगे बेहक़ीक़त है। वो दिल की निर्यत को देखता है। एक साअ खजूर भी बहुत है। एक खजूर भी कोई खुलूस के साथ हलाल माल से दे तो वो अल्लाह के नज़दीक़ मक्बूल है। इंजील शरीफ़ में है कि एक बुढ़िया ने ख़ैरात में एक दमड़ी दी, लोग उस पर हँसे। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़र्माया कि इस बुढ़िया की ख़ैरात तुम सबसे बढ़कर है। (वहीदी)

1416. हमसे सईद बिन यह्या ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अम'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे अबू मस्क़द अन्सारी (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब हमें सद्का करने का हुक्म दिया तो हम में से बहुत से बाज़ार जाकर बोझ उठाने की मजदूरी करते और इस तरह एक मुद (अनाज या खजूर वग़ैरह) हासिल करते। (जिसे सद्का कर देते) लेकिन आज हम में से बहुत सों के पास लाख-लाख (दिरहमो-दीनार) मौजूद है। (राजेअ : 1415)

١٤١٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أَمَرَنَا بِالصَّدَقَةِ انْطَلَقَ أَحَدُنَا إِلَى السُّوقِ لِيَحْمِلَ، فَيَصِيبُ الْمُدَّ، وَإِنْ تَغَضِبَهُمُ الْيَوْمَ لِمَا نَأْتِيهِمْ)). [راجع: ١٤١٥]

1417. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया और उनसे अबू इस्हाक़ अग्र बिन अब्दुल्लाह सबीई ने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन मअक़िल से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अदी बिन हातिम (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये कहते सुना कि जहन्नम से बचो अगरचे खजूर का एक टुकड़ा दे कर ही सही। (मगर ज़रूर सद्का करके दोज़ख की आग से बचने की कोशिश करो)

١٤١٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَقْبِلٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَدِيَّ بْنَ حَالِمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ)). [راجع: ١٤١٣]

तशरीह : इन दोनों अह्दादीष से सद्के की फ़ज़ीलत ज़ाहिर है और ये भी कि दौरे अव्वल में सहाबा किराम (रिज) जबकि वो खुद निहायत तंगी की हालत में थे, उस पर भी उनको सद्का ख़ैरात का किस दर्जा शौक था कि खुद मजदूरी करते, बाज़ार में कुली बनते, खेतों में काम करते, फिर जो हासिल होता उसमें ग़रीबों व मिस्कीन मुसलमानों की इमदाद करते। अहले इस्लाम में ये जज़्बा उस चीज़ का यकीनी घुबूत है कि इस्लाम ने अपने पैरोकारों में बनी नोअे इंसान के लिये हमदर्दी व सुलूक का जज़्बा कूट-कूटकर भर दिया है। कुर्आन मजीद की आयत हत्ता तुन्फ़िकू मिम्मा तुहिब्बून (आले इमरान : 92) में अल्लाह पाक ने रबबत दिलाई है कि सद्का व ख़ैरात में घटिया चीज़ न दो बल्कि प्यारी से प्यारी चीज़ों का सद्का करो। बरख़िलाफ़ उसके बख़ील की हददर्जा मुजम्मत की गई और फ़र्माया कि बख़ील ज़न्नत की बूतक न पा सकेंगे। यही सहाबा किराम (रिज) थे जिनका हाल आपने सुना फिर अल्लाह ने इस्लाम की बरकत से उनको इस क़दर बढ़ाया कि लाखों के मालिक बन गए।

हदीष लौ बिशिक्रि तम्पतिन में मुख्तलिफ तरीकों से वारिद हुई है। तबरानी में है, इज्जअलु बैनकुम व बैनज़ारि हिजाबन व लौ बिशिक्रि तम्पतिन (और जहन्नम के दरम्यान सदका करके हिजाब पैदा करो अगरचे सदका एक खजूर की फांक ही क्यूँ न हो। नीज़ मुस्नद अहमद में यूँ है कि लियत्तकि अहदुकुम वज्जहू व लौ बिशिक्रि तम्पतिन या'नी तुमको अपना चेहरा आग से बचाना चाहिये जिसका वाहिद ज़रिया सदका है अगरचे वो आधी खजूर ही क्यूँ न हो और मुस्नद अहमद ही में हदीषे आइशा (रज़ि.) से यूँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने खुद हज़रत आइशा (रज़ि.) को खिताब फ़र्माया या आइशतु इस्तततिरी व लौ बिशिक्रि तम्पतिन अल्हदीष या'नी ऐ आइशा! जहन्नम से पर्दा करो चाहे वो खजूर की एक फांक ही के साथ क्यूँ न हो।

आखिर में अल्लामा हाफिज़ इब्ने हज़र (रह.) फर्माते हैं, व फिल हदीषि अल्हदुषु अलमुसदकति बिमा कल्ल व मा जल्ल व अल्ला यहतक्रि मा यतसहकु बिही व अज़ल यसीर मिन मुसदकति यस्तिरुल मुतसदिक मिनज़ारि (फ़तहल बारी) या'नी हदीष में तर्ज़ीब है कि थोड़ा हो या ज़्यादा सदका बहरहाल करना चाहिये और थोड़े सदके का हकीर न जानना चाहिये कि थोड़े से थोड़ा सदका मुतसदिक (सदका करने वाले) के लिये दोज़ख से हिजाब बन सकता है।

1418. हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें मज़मर ने जुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन हज़म ने बयान किया, उनसे इर्वा बिन जुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि एक औरत अपनी दो बच्चियों को लिये माँगती हुई आई। मेरे पास एक खजूर के सिवा उस वक़्त कुछ भी नहीं था, मैंने वही दे दी। वो एक खजूर उसने अपने दोनों बच्चों में तक्रसीम कर दी और खुद नहीं खाई। फिर वो उठी और चली गई। इसके बाद नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने आपसे उसका हाल बयान किया। आपने फ़र्माया कि जिसने बच्चों की वजह से खुद को मा'मूली सी भी तकलीफ़ में डाला तो बच्चियों उसके लिये दोज़ख़ से बचाव के लिये आड़ बन जाएंगी।

(दीगर मक़ाम : 5995)

तशरीह : इस हदीष की मुनासबत बाब के तर्जुमे से यूँ है कि औरत ने एक खजूर के दो टुकड़े करके अपनी दोनों बेटियों को दे दिये जो निहायत क़लील (छोटा) सदका था और बावजूद उसके आँहज़रत (ﷺ) ने उसको दोज़ख़ से बचाव की बशारत दी। मैं कहता हूँ इस तकल्लुफ़ की हाज़त नहीं। बाब में दो मज़मून थे एक तो खजूर का टुकड़ा देकर दोज़ख़ से बचना, दूसरे क़लील सदका देना। तो अदी की हदीष से पहला मतलब प्राबित हो गया और हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष से दूसरा मतलब। उन्होंने बहुत क़लील सदका दिया या'नी एक खजूर। (वहीदी)

इससे हज़रत आइशा (रज़ि.) की सदका ख़ैरात के लिये हिस्स भी प्राबित हुई और ये इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ला यज़िअ मिन इन्दिकि साइलुन व लौ बिशिक्रि तम्पतिन रवाहुल बज़ार मिन हदीषि अबी हुरैरत (फ़तह) या'नी तुम्हारे पास से किसी साइल को ख़ाली हाथ न जाना चाहिये, अगरचे खजूर की आधी फांक ही क्यूँ न हो।

बाब 11 : तन्दुरुस्ती और माल की ख़्वाहिश के **۱۱ - بَابُ أَيِّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ**

जमाने में सद्का देने की फ़ज़ीलत

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि जो रिज़क मैंने तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो इससे पहले कि तुमको मौत आ जाए

और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि ऐ ईमान वालों! मैंने तुम्हें जो रिज़क दिया है उसमें से खर्च करो, इससे से पहले की वो दिन (क़यामत) आ जाए जब न ख़रीद-फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती और न शफ़ाअत आख़िर तक।

इन दोनों आयतों से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि सद्का करने में जल्दी करनी चाहिये ऐसा न हो कि मौत आ दबोचे। उस वक़्त अफ़सोस से हाथ मलता रहे कि अगर मैं और ज़िन्दा रहता तो सद्का देता, ये करता वो करता। बाब का मतलब भी क़रीब-क़रीब यही है। (वहीदी)

1419. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल मन्सूर बिन क़अकाअ ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू ज़रआ ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख्स नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! किस तरह के सद्के में ज़्यादा प्रवाब है? आपने फ़र्माया कि उस सद्के में जिसे तुम स्नेह के साथ मुख़ल के बावजूद करो। तुम्हें एक तरफ़ तो फ़कीरी का डर हो और दूसरी तरफ़ मालदार बनने की तमन्ना और उम्मीद हो और (उस सद्का-ख़ैरात में) डील न होनी चाहिये कि जब जान हलक़ तक आ जाए तो उस वक़्त तू कहने लगे कि फलों के लिये इतना और फलों के लिये इतना, हालाँकि वो तो अब फलों का हो चुका। (दीगर मक़ाम : 2748)

وَصَدَقَةُ الشَّحِيجِ الصَّحِيجِ

لَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَأَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ﴾ إِلَى آخِرِهَا [المالكون : १०] الآية.

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا تَنْفَعُ فِيهِ﴾ [البقرة : २०४] الآية.

١٤١٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ الْقُعْقَاعِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَكْثَرُ أَجْزَاءً؟ قَالَ: ((أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيجٌ شَحِيجٌ تَخْشَى الْفَقْرَ وَتَأْمَلُ الْبَيْتَ، وَلَا تَنْهَلُ حَتَّى إِذَا بَلَغْتَ الْخُلُقُومَ قُلْتَ: لِفُلَانٍ كَذَا وَلِفُلَانٍ كَذَا، وَقَدْ كَانَ لِفُلَانٍ)).

[طرفه ب : २७४८]

तशरीह : हदीष में तर्गीब है कि तन्दरुस्ती की हालत में जबकि माल की मुहब्बत भी दिल में मौजूद हो, सद्का ख़ैरात की तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहिये, न कि जब मौत क़रीब आ जाए और जान हलक़ में पहुँच जाए। मगर ये शरीअत की मेहरबानी है कि आख़िर वक़्त तक भी जबकि होश व ह्वासा क़ायम हों, मरने वालों को तिहाई माल की वसियत करना जाइज़ करार दिया है, वरना अब वो माल तो मरने वाले की बजाय वारिषों का हो चुका है। पस अक्लमन्दी का तकाज़ा यही है कि तन्दरुस्ती में हस्बे तौफ़ीक़ सद्का व ख़ैरात में जल्दी करनी चाहिये और याद रखना चाहिये कि गया वक़्त फिर वापस हाथ नहीं आता।

बाब 12 :

- بَاب -

1420. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे

١٤٢٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ

अबू अवाना वज़ाहस्करी ने बयान किया, उनसे फरास बिन यहा ने, उनसे शुअबी ने, उनसे मस्कक ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की बाज़ बीवियों ने आपसे पूछा कि सबसे पहले हममें से आखिरत में आपसे कौन जाकर मिलेगी तो आपने फ़र्माया, जिसका हाथ सबसे ज़्यादा लम्बा होगा। अब हमने लकड़ी से नापना शुरू कर दिया तो सौदा (रज़ि.) सबसे लम्बे हाथ वाली निकली। हमने बाद में समझा कि लम्बे हाथ वाली होने से आपकी मुराद सद्का ज़्यादा करने वाली से थी। और सौदा (रज़ि.) ही सबसे पहले नबी करीम (ﷺ) से जाकर मिलीं, सद्का करना आपको बहुत महबूब था।

قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ فِرَاسٍ عَنْ
الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ
اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ بَعْضَ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ قُلْنَ
لِلنَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّا أَسْرَعُ بِكَ لِحَقِّكَ))
قَالَ: ((أَطْوَلُكُمْ يَدًا)). فَأَخَذُوا قَمِيصَهُ
يَلْمِزُغُونَهَا، لَكَانَتْ مَوْدَّةً أَطْوَلَهُنَّ يَدًا.
فَعَلِمْنَا بَعْدَ ذَلِكَ إِنَّمَا كَانَتْ طَوَّلَ يَدِهَا
الصَّدَقَةَ، وَكَانَتْ أَسْرَعَنَا لِحَقِّهَا بِهِ ﷺ
وَكَانَتْ نَجِبَ الصَّدَقَةَ)).

तरीह: अक़्बर इलमा ने कहा कि तूले यदहा और कानत की ज़मीरों में से हज़रत ज़ैनब मुराद हैं मगर उनका ज़िक्र इस रिवायत में नहीं है क्योंकि इस अम्र से इतिफ़ाक़ है कि आहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद बीवियों में से सबसे पहले हज़रत ज़ैनब का ही इतिक़ाल हुआ था। लेकिन इमाम बुखारी (रह.) ने तारीख़ में जो रिवायत की है उसमें उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा (रज़ि.) की सराह्त है और यहाँ भी इस रिवायत में हज़रत सौदा (रज़ि.) का नाम आया है और ये मुश्किल है और मुम्किन है यूँ जवाब देना कि जिस जल्से में ये सवाल आहज़रत (ﷺ) से हुआ था वहाँ हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) मौजूद न हों और जितनी बीवियाँ वहाँ मौजूद थीं, उन सबसे पहले हज़रत सौदा (रज़ि.) का इतिक़ाल हुआ। मगर इब्ने हिब्बान की रिवायत में यूँ है कि उस वक़्त आपकी सब बीवियाँ मौजूद थीं, कोई बाकी न रही थी, उस हालत में ये अन्देशा भी नहीं चल सकता। चुनाँचे हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं,

क्राल लना मुहम्मदुब्नु उमर यज़नी अल्वाकिदी हाज़लहदीषु व हल फ़ी सौदत इन्नमा हुब फ़ी ज़ैनब बन्ति जहश
फहिय अव्वलु निसाइही बिही लुहूकन व तुवफ़ियत फ़ी ख़िलाफ़ति उमर व बक्रियत सौदतु इला अन तुवफ़िय
फ़ी ख़िलाफ़ति मुआवियत फ़ी शव्वाल सनत अब्दुव ख़म्सीन क्राल इब्नु बत्ताल हाज़लहदीषु सुक्रित मिन्हु
ज़िकर ज़ैनब लिइत्तिफ़ाकि अहलिस्सियर अला अन्न ज़ैनब अव्वलु मम्मात मिन अज्वाजिन्नबिय्य (ﷺ)
यज़नी अन्नस्वाब व कानत ज़ैनबु अस्इना (अल्ख) व लाकिन युन्कर अला हाज़त्ताबीलि तिल्क
रिवायातुल्मुतक़दमतु लमुस्रीहु फ़ीहा बिअन्नज़मीर लिसौदत व किरातु बिख़त्तिल्हाफ़िज़ि अबी अली अस्सदफ़ी
ज़ाहिरु हाज़ल्लफ़िज़ अन्न सौदत कानत अस्अव हुब ख़िलाफ़ुल्मअरूफ़ि इन्द अहलिल्इल्मि अन्न ज़ैनब अव्वलु
मम्मात मिन्अज्वाति शुम्म नक़लहू अन मालिक मिन रिवायतिही अनिल्वाकिदी क्राल युक्रव्वीहि रिवायतु
आइशत बन्ति तल्हत व क्राल इब्नुल्जौजी हाज़लहदीषु गलतुन मिम्बअज़िर्वातिल्अजबि मिनल्बुख़ारी कैफ़
लम युनब्बिह अलैहि व इल्ला अस्हाबुहू अत्तआलीकु व ला ज़लिम बिफ़सादिन ज़ालिकल्ख़त्ताबी फइन्नह
फस्सरहू व क्राल लुहूकनु सौदत बिही इल्मुन मिन आलामिन्नुबुव्वति व कुल्लु ज़ालिक वहमुन इन्नमा कमा र्वाहु
मुस्लिम मिन्न तरीकि आइशत बिल्फ़िज़ कान अत्तवलुनायदन ज़ैनबु लिन्नहा कानत तअमलु व तत्सहक़ व फ़ी
रिवायति कानत ज़ैनबु इम्पातन सन्नाअतन बिल्यदि व कानत तदबगु व तख़ज़ु व तसहक़ फ़ी सबीलिल्लाहि.

या'नी हमसे वाकिदी ने कहा कि इस हदीष में रावी से भूल हो गई है। दरहकीक़्त सबसे पहले इतिक़ाल करने वाली ज़ैनब ही हैं जिनका इतिक़ाल हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में हुआ और हज़रत सौदा (रज़ि.) का इतिक़ाल ख़िलाफ़ते मुआविया (रज़ि.) 54 में हुआ। इब्ने बत्ताल ने कहा कि इस हदीष में हज़रत ज़ैनब का ज़िक्र साक्रित हो गया है क्योंकि अहले सीरत का इतिफ़ाक़ है कि उम्माहातुल मोमिनीन में सबसे पहले इतिक़ाल करनेवाली ख़ातून हज़रत ज़ैनब बन्ति जहश ही हैं और

जिन रिवायतों में हज़रत सौदा (रज़ि.) का नाम आया है उनमें रावी से भूल हो गई है। इन्हे जौज़ी ने कहा है कि उसमें कुछ रावियों ने गलती से हज़रत सौदा (रज़ि.) का नाम ले लिया है और तअज्जब है कि हज़रत इमाम बुखारी (रह.) को इस पर इत्तिला न हो सकी और न उन अइद्हाबे तआलीक को जिन्होंने यहाँ हज़रत सौदा (रज़ि.) का नाम लिया है और वो हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ही है जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत आइशा (रज़ि.) का बयान है कि हममें सबसे ज़्यादा दराज़ हाथ वाली (या'नी सद्का-ख़ैरात करने वाली) हज़रत ज़ैनब थीं। वो सूत काता करती थीं और दीगर मेहनत और मशक़त दबागत बग़ैरह करके पैसा हासिल करतीं और फ़ी सबीलिल्लाह सद्का-ख़ैरात किया करती थीं। कुछ लोगों ने ये भी कहा है कि नाप के लिहाज़ से हज़रत सौदा (रज़ि.) के हाथ लम्बे थे, नबी (ﷺ) की बीवियों ने शुरू में यही समझा कि दराज़ हाथ वाली बीवी का इतिक़ाल पहले होना चाहिये। मगर जब हज़रत ज़ैनब का इतिक़ाल हो गया तो ज़ाहिर हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) की मुराद हाथों का दराज़ होना न था बल्कि सद्का-ख़ैरात करने वाले हाथ मुराद थे और ये सबक़त हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) को हासिल थी, पहले उन्हीं का इतिक़ाल हुआ, मगर कुछ रावियों ने अपनी लाइल्मी की वजह से सौदा (रज़ि.) का नाम ले लिया। कुछ इलमा ने ये तब्बीक भी दी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जिस वक़्त ये इश़ाद फ़र्माया था इस मज्मअे में हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) न थीं, आपने उस वक़्त की हाज़िर होने वाली बीवियों के बारे में फ़र्माया और उनमें से पहले हज़रत सौदा (रज़ि.) का इतिक़ाल हुआ मगर इस तब्बीक पर भी कलाम किया गया है।

हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी फ़र्माते हैं। बल्हदीषु यूहिमु ज़ाहिरुह अन्न अब्वल मम्मातत मिन उम्महातिलमुमिनीन बअद बफ़ातिही (ﷺ) सौदत बलैस कज़ालिक फतअम्मल बला तअज्जल फ़ी हाज़लमक़ाम फइन्नुहू मिम्मज़ालिकिलअक़दाम. (शरह तराजुम अब्बाबे बुखारी)

बाब 12 : सबके सामने सद्का करना जाइज़ है और अल्लाह तआला ने (सूरह बकर: में) फ़र्माया कि जो लोग अपने माल ख़र्च करते हैं रात में और दिन में, पोशीदा तौर पर और ज़ाहिर, उन सबका उनके रब के पास प्रवाब मिलेगा, उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उन्हें किसी क्रिस्म का ग़म होगा

इस आयत से ऐलानिया ख़ैरात करने का जवाज़ निकला। गो पोशीदा (छुपाकर) ख़ैरात करना बेहतर है क्योंकि उसमें रिया का अंदेशा नहीं। कहते हैं कि ये आयत हज़रत अली (रज़ि.) की शान में उतरी। उनके पास चार अशराफ़ियाँ थीं। एक दिन को दी, एक रात को दी, एक ऐलानिया, एक छुपकर (वहीदी)

यहाँ हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने बाब के मज़मून को मुदल्लल करने के लिये सिर्फ़ आयते कुआनी का नक़ल करना काफ़ी समझा। जिनमें ज़ाहिर लफ़्ज़ों में बाब का मज़मून मौजूद है।

बाब 13 : छुपकर ख़ैरात करना अफ़ज़ल है

और अबू हुसैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है कि, एक शख्स ने सद्का किया और उसे इस तरह छुपाया कि उसके बाएँ हाथ को ख़बर नहीं हुई कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया है। और अल्लाह तआला ने फ़र्माया, अगर तुम सद्के को ज़ाहिर कर दो तो ये भी अच्छा है और अगर पोशीदा तौर पर दो और दो फुकरा को तो ये भी तुम्हारे लिये बेहतर है और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे पूरी तरह

١٢ - بَابُ صَدَقَةِ الْعَلَانِيَةِ

وَقَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿الَّذِينَ يَنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ [البقرة: ٢٧٤].

١٣ - بَابُ صَدَقَةِ السِّرِّ

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتَّى لَا تَعْلَمَ جِمَالَتُهَا مَا تَفِقُ بِمِثْلِهِ)).
وَقَوْلُهُ: ﴿إِنْ تَدْنُوا الصَّدَقَاتِ فَيَعْمَا هِيَ وَإِنْ تَعْفَوْهَا وَتَوَدُّوْهَا الْفُقَرَاءَ فَهِيَ خَيْرٌ لَكُمْ وَتَكْفُرُ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ بِمَا

खबरदार है। (अल बकर: : 271)

تَعْمَلُونَ خَيْرًا [البقرة : २७१] الآية.

तशरीह:

यहाँ हज़रत इमाम ने बाब के मज़मून को प्रामाणिक करने के लिये हदीषे नबवी और आयते कुर्आनी दोनों से इस्तिदलाल फ़र्माया, मक़सद रियाकारी से बचना है। अगर उससे दूर रहकर सद्का दिया जाए तो ज़ाहिर हो या पोशीदा हर तरह से दुरुस्त है और अगर रिया का एक शाइबा भी नज़र आए तो फिर इतना पोशीदा दिया जाए कि बाएँ हाथ को भी ख़बर न हो। अगर सद्का ख़ैरात ज़कात में रिया नमूद का कुछ दख़ल हुआ तो वो सद्का व ख़ैरात व ज़कात मालदार के लिये उलटा वबाले जान हो जाएगा।

बाब 14 : अगर लाइल्मी में किसी ने मालदार को सद्का दे दिया (तो उस को प्रवाब मिल जाएगा)

1421. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अउरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने किरसुलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक शख़्स ने (बनी इस्राईल में से) कहा कि मुझे ज़रूर सद्का (आज रात) देना है। चुनौचे वो अपना सद्का लेकर निकला और (नावाक्रिफ़ी से) एक चोर के हाथ में रख दिया। सुबह हुई तो लोगों ने कहना शुरू किया कि आज रात किसी ने चोर को सद्का दे दिया। उस शख़्स ने कहा कि ऐ अल्लाह! तमाम ता'रीफ़ तेरे ही लिये है। (आज रात) मैं फिर ज़रूर सद्का करूँगा। चुनौचे वो दोबारा सद्का लेकर निकला और इस मर्तबा एक फ़ाहिशा (बदकार औरत) के हाथ में दे आया। जब सुबह हुई तो फिर लोगों में चर्चा हुआ कि आज रात किसी ने फ़ाहिशा औरत को सद्का दे दिया। उस शख़्स ने कहा ऐ अल्लाह! तमाम ता'रीफ़ तेरे ही लिये है, मैं ज़ानिया को अपना सद्का दे आया। अच्छा आज रात फिर ज़रूर सद्का निकालूँगा। चुनौचे अपना सद्का लिये हुए वो फिर निकला और इस मर्तबा एक मालदार के हाथ पर रख दिया। सुबह हुई तो लोगों की ज़बान पर ज़िक्र था कि एक मालदार को किसी ने सद्का दे दिया है। उस शख़्स ने कहा कि ऐ अल्लाह! हम्द तेरे ही लिये है। मैंने अपना सद्का (लाइल्मी से) चोर, फ़ाहिशा और मालदार को दे आया। (अल्लाह तआला की तरफ़ से) बतलाया गया कि जहाँ तक चोर के हाथ में सद्का चले जाने का सवाल है तो उसमें इसका इम्कान है कि वो चोरी से रुक जाए, इसी तरह फ़ाहिशा को सद्के का माल मिल जाने पर इसका इम्कान है कि वो ज़िना से रुक जाए और मालदार के हाथ में पड़

١٤ - بَابُ إِذَا تَصَدَّقَ عَلَى غَنِيٍّ وَهُوَ لَا يَعْلَمُ

١٤٢١ - حَدَّثَنَا أَبُو الِیْمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ رَجُلٌ لِاتَّصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ. فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ سَارِقٍ، فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تَصَدَّقَ عَلَى سَارِقٍ. فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، لِاتَّصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ. فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ زَانِيَةٍ، فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تَصَدَّقَ عَلَى زَانِيَةٍ. فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، عَلَى زَانِيَةٍ، لِاتَّصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ. فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ غَنِيٍّ، فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ: تَصَدَّقَ عَلَى غَنِيٍّ. فَقَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، عَلَى سَارِقٍ، وَعَلَى زَانِيَةٍ، وَعَلَى غَنِيٍّ، فَأَيُّ فَعِيلٍ لَهُ: أَمَا صَدَقْتُكَ عَلَى سَارِقٍ فَلَعَنَّا أَنْ يَسْتَعِفَّ عَنْ سَرِقَتِهِ، وَأَمَا الزَّانِيَةُ فَلَعَنَّا أَنْ تَسْتَعِفَّ عَنْ زَنَاهَا، وَأَمَا الْغَنِيُّ فَلَعَنَّا أَنْ يَتَغَيَّرَ، فَيَنْفِقَ مِنْهَا أَغْطَاهُ اللَّهُ)).

जाने का ये फायदा है कि उसे इबरत हो और फिर जो अल्लाह अज़्ज

व जल्ल ने उसे दिया है, वो खर्च करे।

तशरीह: इस हदीष बनी इस्राईल के एक सखी का जिक्र है जो सद्का ख़ैरात तक्सीम करने की निय्यत से रात को निकला मगर उसने लाइल्मी में पहली रात में अपना सद्का एक चोर के हाथ पर रख दिया और दूसरी रात में एक फ़ाहिशा औरत को दे दिया और तीसरी रात में एक मालदार को दे दिया, जो मुस्तहिक न था। ये सब कुछ लाइल्मी में हुआ। बाद में जब ये वाकिआत उसको मा'लूम हुए तो उसने अपनी लाइल्मी का इक्कार करते हुए अल्लाह की हम्द बयान की गोया ये कहा अल्लाहुम्म लकल्हम्दु अय ला ली इन्न सद्कती वक्क़अत बियदि मल्ला यस्तहिकुहा फलकल्हम्दु हैषु कान ज़ालिक बिइरादतिक अय ला बिइरादती फइन्न इरादतल्लाहि कुल्लहा जमीलतुन. या'नी या अल्लाह! हम्द तेरे लिये ही है न कि मेरे लिये। मेरा सद्का ग़ैर मुस्तहिक के हाथ में पहुँच गया पस हम्द तेरे ही लिये है। इसलिये कि ये तेरे ही इरादे से हुआ न कि मेरे इरादे से और अल्लाह पाक जो भी चाहे और वो जो इरादा करे वो सब बेहतर ही है।

इमाम बुखारी (रह.) का मक़सदे बाब ये है कि उन हालात में अगरचे ग़ैर मुस्तहिक को मिल गया मगर इन्दल्लाह वो कुबूल हो गया। हदीष से भी यही ज़ाहिर हुआ कि नावाकिफ़ी से अगर किसी ग़ैर मुस्तहिक को सद्का दे दिया जाए तो उसे अल्लाह कुबूल कर लेता है और देने वाले को फ़वाब मिल जाता है।

लफ़्जे सद्का में नफ़ली सद्का और फ़र्ज़ी सद्का या'नी ज़कात दोनों दाख़िल है।

इस्राईली सखी को ख़्वाब में बतलाया गया या हातिफ़े ग़ैब ने ख़बर दी या उस ज़माने के पैग़म्बर ने उससे कहा कि जिन ग़ैर मुस्तहिकीन को तूने ग़लती से सद्का दे दिया, शायद वो इस सद्के से इबरत हासिल करके अपनी ग़लतियों से बाज़ आ जाएँ। चोर, चोरी से और ज़ानिया, ज़िना से रुक जाए और मालदार को खुद उसी तरह ख़र्च करने की राबत हो। इन सूरतों में तेरा सद्का तेरे लिये बहुत कुछ मोजिबे अज़ो फ़वाब हो सकता है। हाज़ा हुवल मुराद।

बाब 15 : अगर बाप नावाकिफ़ी से अपने बेटे को ख़ैरात दे दे कि उसे मा'लूम न हो?

1422. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्राईल बिन यूनस ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू जुवैरिया (हज़ान बिन ख़प्फ़ाफ़) ने बयान किया कि मअन बिन यज़ीद ने उनसे बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने और मेरे वालिद और दादा (अख़फ़श बिन हबीब) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के हाथ पर बैअत की थी। आपने मेरी मंगनी भी करवाई और आप ही ने मेरा निकाह भी पढ़ाया था और मैं आपकी ख़िदमत में एक मुकद्दमा लेकर हाज़िर हुआ था। वो ये कि मेरे वालिद यज़ीद ने कुछ दीनार ख़ैरात की निय्यत से निकले और उनको उन्होंने मस्जिद में एक शख्स के पास रख दिया। मैं गया और मैंने उनको उससे ले लिया, फिर जब मैं उन्हें लेकर वालिद साहब के पास आया तो उन्होंने फ़र्माया कि क्रसम अल्लाह की! मेरा इरादा तुझे देने का नहीं था।

١٥ - بَابُ إِذَا تَصَدَّقَ عَلَى ابْنِهِ

وَهُوَ لَا يَشْعُرُ

١٤٢٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْحُوَيْرِثَةِ أَنَّ مَعْنَ بْنَ يَزِيدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ: ((بَايَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنَا وَأَبِي وَجَدِي، وَخَطَبَ عَلَيَّ فَأَتَكْفُو وَخَاصَمْتُ إِلَيْهِ. وَكَانَ أَبِي يَزِيدُ أَخْرَجَ دَنَائِيرَ يَتَصَدَّقُ بِهَا، فَوَضَعَهَا عِنْدَ رَجُلٍ فِي الْمَسْجِدِ، فَجِئْتُ فَأَخَذْتُهَا فَأَتَيْتُ بِهَا فَقَالَ: وَاللَّهِ مَا إِلَيْكَ أَرَدْتُ. فَخَاصَمْتُهُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: ((لَكَ مَا نَوَيْتُ

यही मुकद्दमा मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में लेकर हाजिर हुआ और आपने ये फ़ैसला दिया कि देखो यज़ीद जो तुमने निय्यत की थी उसका प्रवाब तुमको मिल गया और मअन! जो तूने ले लिया वो अब तेरा हो गया।

يَا يَزِيدُ، وَلَكَ مَا أَخَذْتَ يَا مَعْنُ

तारीह:

इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद का यही क़ौल है कि अगर नावाकिफ़ी में बाप बेटे को फ़र्ज़ ज़कात भी दे दे तो ज़कात अदा हो जाती है और दूसरे इलमा कहते हैं कि इआदा (दुहराना) वाजिब है और अहले हदीष के नज़दीक बहरहाल अदा हो जाती है बल्कि अज़ीज़ और करीब लोगों को जो मुहताज हो ज़कात देना और ज़्यादा प्रवाब है। सय्यद अल्लामा नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान साहब मरहूम ने कहा कि अनेक दलाइल इस पर कायम हैं कि अज़ीज़ों को ख़ैरात देना ज़्यादा अफ़ज़ल है, ख़ैरात फ़र्ज़ हो या नफ़ल और अज़ीज़ों में शौहर, औलाद की सराहत अबू सईद खुदरी (रज़ि) की हदीष में मौजूद है। (मौलाना वहीदी)

मज़मूने हदीष पर गौर करने से मा'लूम होता है कि नबी करीम (ﷺ) किस क़दर शफ़ीक़ और मेहरबान थे और किस वुस्अते क़ल्बी के साथ आपने दीन का तसव्वुर पेश फ़र्माया था। बाप और बेटे दोनों को ऐसे तौर पर समझा दिया कि दोनों का मक्सद हासिल हो गया और कोई झगड़ा बाकी न रहा। आपका इशार्द उस बुनियादी उसूल पर मब्नी था। जो हदीष इन्नमलआमालु बिन्निय्यात में बतलाया गया है कि अमलों का दरोमदार निय्यतों पर है।

आज भी ज़रूरत है कि इलमा व फ़ुक़हा ऐसी वसीइय़ाफ़ी (अत्यधिक गम्भीरता) से काम लेकर उम्मत के लिये बजाय मुश्किलात पैदा करने के शरई हुद्दू में आसानियाँ बहम पहुँचाएँ और दीने फ़ितरत का ज़्यादा से ज़्यादा फ़राख़ क़लबी (बड़े दिल) के साथ मुतालआ करें कि हालाते हाज़रा में उसकी शदीद ज़रूरत है। फ़ुक़हा का वो दौर गुज़र चुका जब एक-एक जुज़ पर मैदाने मुनाज़रा कायम कर दिया जाता था। जिनसे तंग आकर हज़रत शैख़ सअदी को कहना पड़ा,

फकीहाँ तरीकि जदल साख़तन्द लम ला नुसल्लिम दर अन्दाखतन्द

बाब 16 : ख़ैरात दाहिने हाथ से देना बेहतर है

1423. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यहा बिन सईद क़त्तान ने बयान किया अब्दुल्लाह उमरी से, उन्होंने कहा कि मुझसे खुबैब बिन अब्दुरहमान ने हफ़स बिन आसिम से बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सात क़िस्म के आदमियों को अल्लाह तआला अपने (अर्श के) साथे में रखेगा, जिस दिन उसके सिवा और कोई साथी न होगा। इन्साफ़ करने वाला हाकिम, वो नौजवान जो अल्लाह तआला की इबादत में जवान हुआ हो, वो शख़्स जिसका दिल हर वक़्त मस्जिद में लगा रहे, दो ऐसे शख़्स जो अल्लाह के लिये मुहब्बत रखते हैं, उसी पर जमा हुए और उसी पर जुदा हुए, ऐसा शख़्स जिसे किसी ख़ूबसूरत और इज़्ज़तदार औरत ने बुलाया लेकिन उसने ये जवाब दिया कि मैं अल्लाह से डरता हूँ, वो इन्सान जो मदक़ा करे

١٦ - بَابُ الصَّدَقَةِ بِالْيَمِينِ

١٤٢٣ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي حَنْبَلٌ بْنُ عُثَيْبٍ الرَّحْمَنُ عَنْ حَفْصِ بْنِ غَاوِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَبْعَةٌ يُظَاهِرُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ: إِمَامٌ عَدْلٌ، وَحَابٌ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ اللَّهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُغْلَقٌ فِي الْمَسَاجِدِ، وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللَّهِ اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالَ فَقَالَ: إِلَيَّ أَعِيشُ

और उसे इस दर्जा छुपाए कि बाएँ हाथ को भी खबर न हो कि दाएँ हाथ ने क्या खर्च किया और वो शख्स जो अल्लाह को तन्हाई में याद करे और उसकी आँखें आँसुओं से बहने लगे।

(राजेअ : 660)

اللَّهُ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقُ بِمَدْلَةٍ لَّا خَفَافًا حَتَّى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللَّهَ عَالِيًا لَّفَاضَتْ عَيْنَاهُ)).

[راجع : 110]

तशरीह : क़यामत के दिन अर्शे अज़ीम का साया पाने वाले ये सात खुश किस्मत इंसान मर्द हा या औरत इन पर हसर नहीं है। कुछ अह्दादीष में और भी ऐसे नेक आमाँल का जिक्र आया है जिनकी वजह से अश अज़ीम का साया मिल सकेगा। कुछ इलमा ने इस मौजूअ पर मुस्तक़िल रिसाले तहरीर फ़र्माए हैं और उन सारे आमाँल सालिहा का जिक्र किया है जो क़यामत के दिन अर्शे इलाही के नीचे साया मिलने का ज़रिया बन सकेंगे। कुछ ने इस फ़हरिस्त को चालीस तक भी पहुँचा दिया है।

यहाँ बाब और हदीष में मुताबकत उस मुतसद्दिक से है जो अल्लाह की राह में इस क़दर पोशीदा खर्च करता है कि दाएँ हाथ से खर्च करता है और बाएँ हाथ को भी खबर नहीं होती। उससे ग़ायते खुलूस मुराद है।

इस्लाम करने वाला हाकिम, चौधरी, पंच, अल्लाह की इबादत में मशगूल रहने वाला जवान और मस्जिद से दिल लगाने वाला नमाज़ी और दो बाहमे-इलाही मुहब्बत रखने वाले मुसलमान और साहिबे इस्मत व इफ़्फ़त मर्द या औरत मुसलमान और अल्लाह के डर से आंसू बहाने वाली आँखें ये तमाम आमाँले हुसना ऐसे हैं कि उन पर कारबन्द होनेवालों को अर्शे इलाही का साया मिलना ही चाहिये। इस हदीष से अल्लाह के अर्श और उसके साये का भी इस्बात हुआ जो कि बिना कैफ़ व क़मो तावील तस्लीम करना ज़रूरी है। कुआन पाक की बहुत सी आयात में अर्शे अज़ीम का जिक्र आया है। बिला शक व शुब्हा अल्लाह पाक साहिबे अर्शे अज़ीम है। उसके लिये अर्श का इस्तिवा और जिहते फ़ौक़ प्राबित और बरहक़ है जिसकी तावील नहीं की जा सकती और न उसकी कैफ़ियत मा'लूम करने के हम मुक़ल्लफ़ हैं।

1424. हमसे अली बिन जअद ने बयान किया, कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मअबद बिन ख़ालिद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हारिष बिन वुहैब खुज़ाई (रजि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि सद्का किया करो पस अनक़रीब एक ऐसा ज़माना आने वाला है जब आदमी अपना सद्का लेकर निकलेगा (कोई उसे कुबूल करले, मगर जब वो किसी को देगा तो वो) आदमी कहेगा कि अगर उसे तुम कल लाए होते तो मैं ले लेता लेकिन आज मुझे इसकी हाजत नहीं रही। (राजेअ : 1411)

١٤٢٤ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْفَرِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَعْبُدُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ : سَمِعْتُ خَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ الْغَزَامِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((تَصَدَّقُوا، فَيَتَأْتِي عَلَيْكُمْ زَمَانٌ يَمْشِي الرُّجُلُ بِصَدَقَتِهِ يَقُولُ الرُّجُلُ : لَوْ جِئْتُ بِهَا بِالْأَمْسِ لَقَبِلْتُهَا مِنْكَ، فَلَمَّا الْيَوْمَ فَلَا حَاجَةَ لِي فِيهَا)). [راجع : 1411]

प्राबित हुआ कि मर्दे मुख़िलस अगर सद्का ज़कात ऐलानिया लेकर तक्सीम के लिये निकले बशर्ते कि खुलूस व लिल्लाहियत मद्देनज़र हो तो ये भी मज़मूम (निन्दनीय) नहीं है। यूँ बेहतर है कि जहाँ तक हो सके रिया व नमूद से बचने के लिये पोशिदा तौर पर सद्का ज़कात ख़ैरात दी जाए।

बाब 17 : इस बारे में कि जिसने अपने ख़िदमतगार को सद्का देने का हुक्म दिया और खुद अपने हाथ से नहीं दिया

١٧ - بَابُ مَنْ أَمَرَ خَادِمَهُ بِالصَّدَقَةِ وَلَمْ يُنَاقِلْ بِنَفْسِهِ

और अबू मूसा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यूँ बयान किया कि ख़ादिम भी सद्का देने वालों में समझा जाएगा।

1425. हमसे इब्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे शक्कीक ने, उनसे मस्रूक ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर औरत अपने शौहर के माल से कुछ खर्च करे और उसकी निर्य्यत शौहर की पूँजी बर्बाद करने की न हो तो उसे खर्च करने का प्रवाब मिलेगा और शौहर को भी उसका प्रवाब मिलेगा कि उसने कमाया है और ख़ज़ान्ची का भी यही हुक्म है। एक का प्रवाब दूसरे के प्रवाब में कोई कमी नहीं करता।

(दीगर मक़ाम : 1437, 1439, 1440, 1441, 2065)

وَقَالَ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((هُوَ أَحَدُ الْمُتَصَدِّقِينَ))

١٤٢٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا أَنْفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ طَعَامٍ بَيْنَهَا غَيْرُ مُفْسِدَةٍ كَانَ لَهَا أَجْرُهَا بِمَا أَنْفَقَتْ وَلَزَوَّجُهَا أَجْرُهُ بِمَا كَسَبَ، وَلِلْعَارِئِ مِثْلُ ذَلِكَ، لَا يَنْقُصُ بَعْضُهُمْ أَجْرَ بَعْضٍ شَيْئًا)).

[أطرافه في : ١٤٣٧، ١٤٣٩، ١٤٤٠]

[١٤٤١، ٢٠٦٥].

तशरीह : मतलब ज़ाहिर है कि मालिक के माल की हिफ़ाज़त करने वाले और उसके हुक्म के मुताबिक़ उसी में से सद्का ख़ैरात निकालने वाले मुलाज़िम, ख़ादिम, ख़ज़ान्ची सब ही अपनी अपनी हैशियत के मुताबिक़ प्रवाब के मुस्तहिक़ होंगे। यहाँ तक कि बीवी भी जो शौहर की इजाज़त से उसके माल में से सद्का ख़ैरात करे वो भी प्रवाब की मुस्तहिक़ होगी। इसमें एक तरह से खर्च करने की तर्गीब है और दयानत व अमानत की ता'लीम व तल्कीन है। आयते शरीफ़ा में लन तनालुल बिर्क का एक मफ़हूम ये भी है।

बाब 18 : सद्का वही बेहतर है जिसके बाद भी आदमी मालदार रह जाए
(बिल्कुल ख़ाली हाथ न हो बैठे)

और जो शख़्स ख़ैरात करे कि खुद मुहताज हो जाए या उसके बाल-बच्चे मुहताज हो (तो ऐसी ख़ैरात दुरुस्त नहीं) इसी तरह अगर क़र्ज़दार हो तो सद्का और आज़ादी और हिबा पर क़र्ज़ अदा करना मुक़द्दम होगा और उसका सद्का उस पर फेर दिया जाएगा और उसको ये दुरुस्त नहीं कि (क़र्ज़ न अदा करे और ख़ैरात देकर) लोगों (क़र्ज़ देने वालों) की रक़म तबाह कर दे और औहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स लोगों का माल (बतौर क़र्ज़) तल्फ़ करने (या) नी न देने की निर्य्यत से ले तो अल्लाह उसको बर्बाद कर देगा। अलबत्ता अगर स़ब्र व तकलीफ़ उठाने में मशहूर हो तो अपनी ख़ास़ हाज़त पर (क़र्ज़ की हाज़त को) मुक़द्दम कर सकता है। जैसे अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अपना सारा माल ख़ैरात में दे

١٨- بَابُ لَا صَدَقَةَ إِلَّا عَنْ ظَهْرِ غِنًى

وَمَنْ تَصَدَّقَ وَهُوَ مُحْتَاجٌ أَوْ أَهْلُهُ مُحْتَاجٌ أَوْ عَلَيْهِ دَيْنٌ فَالَّذِينَ أَحَقُّ أَنْ يُفْضَى مِنْ الصَّدَقَةِ وَالْبَقَى وَالْهَبَةِ، وَهُوَ رَدُّ عَلَيْهِ، لَيْسَ لَهُ أَنْ يُتْلَفَ أَمْوَالُ النَّاسِ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَخَذَ أَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ إِبْطَالَهَا أَتْلَفَهُ اللَّهُ))، إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَعْرُوفًا بِالصَّبْرِ فَيُزَيَّرَ عَلَى نَفْسِهِ وَلَوْ كَانَ بِهِ خِصَاصَةٌ، كَفَعَلَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حِينَ تَصَدَّقَ بِمَالِهِ. وَكَذَلِكَ آثَرُ الْإِنْتَصَارِ

दिया और इसी तरह अन्सार ने अपनी ज़रूरत पर मुहाजिरीन की ज़रूरियात को मुकद्दम किया और आँहज़रत (ﷺ) ने माल को तबाह करने से मना फ़र्माया है, तो जब अपना माल तबाह करना मना हुआ तो पराये लोगों का माल तबाह करना किस तरह जाइज़ होगा। और कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने (जो जंगे तबूख़ से पीछे रह गये थे) अर्ज़ की, या रसूलल्लाह (ﷺ) मैं अपनी तौबा को इस तरह पूरा करता हूँ कि अपना सारा माल अल्लाह और उसके रसूल पर तमद्दक़ (सदका) कर दूँ। आपने फ़र्माया कि नहीं कुछ थोड़ा माल रहने भी दे, वो तेरे हक़ में बेहतर है। कअब ने कहा, बहुत ख़ूब मैं अपने ख़ैर का हिस्सा रहने देता हूँ।

الْمُهَاجِرِينَ.
وَنَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ إِصْنَاعِ الْمَالِ، فَلَيْسَ لَهُ أَنْ يُضَيِّعَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِعِلَّةِ الصَّدَقَةِ.
(وَقَالَ كُتَيْبٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنْ مِنْ تَوَقُّي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ. قَالَ: ((أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ، فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ)). قُلْتُ : لِأَنِّي أَمْسِكُ سَهْمِي اللَّيْلِ بِخَيْرٍ.

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस बाब में अहादीसे नबवी और आपारे सहाबा की रोशनी में बहुत से अहम उमूर मुता'ल्लिके सदका—ख़ैरात पर रोशनी डाली है। जिनका खुलासा ये है कि इंसान के लिये सदका ख़ैरात करना उसी वक़्त बेहतर है जबकि वो शरई हुदूद को मदेनज़र रखे। अगर एक शख्स के अहल व अयाल खुद ही मुहताज हैं या वो खुद दूसरों का कर्ज़दार है फिर इन हालात में भी सदका करे और न ये अहलो अयाल का ख़याल रखे न दूसरों का कर्ज़ अदा करे तो वो ख़ैरात उसके लिये बाज़िअे अज़्र न होगी बल्कि वो एक तरह से दूसरों की हक़तलफ़ी करना और जिनको देना ज़रूरी था उनकी रक़म को तल्फ़ करना होगा। इशदि नबवी (ﷺ) मन अखज़ अम्यालन्नासि युरीदु अत्लाफ़हा का यही मंशा है। हाँ सज़ और ईषार अलग चीज़ है। अगर कोई हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) जैसा साबिर व शाकिर मुसलमान हो और अन्सार जैसा ईषार पेशा हो तो उसके लिये ज़्यादा से ज़्यादा ईषार पेश करना जाइज़ होगा। मगर आजकल ऐसी मिषालें तलाश करना बेकार है। जबकि आजकल ऐसे लोग नापैद (दुर्लभ) हो चुके हैं।

हज़रत कअब बिन मालिक (रज़ि.) वो बुजुर्गतरून जलीलुल क़द्र सहाबी थे जो जंगे तबूक में पीछे रह गये थे। बाद में उनको जब अपनी ग़लती का एहसास हुआ तो उन्होंने अपनी तौबा की कुबूलियत के लिये अपना सारा माल फ़ी सबीलिल्लाह दे देने का ख़याल ज़ाहिर किया। आँहज़रत (ﷺ) ने सारे माल को फ़ी सबीलिल्लाह देने से मना कर दिया तो उन्होंने अपनी जायदादे ख़ैबर को बचा लिया, बाक़ी ख़ैरात कर दिया। उससे भी अंदाज़ा लगाना चाहिये कि कुआन व हदीष की ये गर्ज़ हर्गिज़ नहीं कि कोई मुसलमान अपने अहलो—अयाल से बेनियाज़ होकर अपनी जायदाद फ़ी सबीलिल्लाह बख़श दे और वारिषीन को मुहताज मुफ़लिस करके दुनिया से जाए। ऐसा हर्गिज़ न होना चाहिये कि ये वारिषीन की हक़तलफ़ी होगी। अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष सय्यिदना हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का यही मंशा-ए-बाब है।

1426. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनस ने, उन्हें जुहरी ने, उन्होंने कहा मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बेहतरीन ख़ैरात वो है जिसके देने के बाद आदमी मालदार रहे। फिर सदका पहले उन्हें दो जो तुम्हारे ज़ेरे परवरिश हैं।

١٤٢٦ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسْتَبِيرِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((خَيْرُ الصَّدَقَةِ مَا كَانَ عَنْ ظَهْرِ غِنَى، وَابْتَدَأَ بِمَنْ تَعُولُ)).

(दीगर मकाम : 1428, 5355, 5356)

इस हदीष से साफ़ ज़ाहिर होता है कि अपने अज़ीज़ों अज़रबा जुम्ला मुता'ल्लिकीन अगर वो मुस्तहिक़ हैं तो सद्का-ख़ैरात ज़कात में सबसे पहले उन्हीं का हक़ है। इसलिये ऐसे सद्के करने वालों को दोगुने ष़ाबाब की बशारत दी गई है।

1427. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने अपने बाप से बयान किया, उनसे हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है और पहले उन्हें दो जो तुम्हारे बाल-बच्चे और अज़ीज़ हैं और बेहतरीन सद्का वो है जिसे देकर आदमी मालदार रहे और जो कोई सवाल से बचना चाहेगा उसे अल्लाह तआला भी महफूज़ रखता है और जो दूसरों (के माल) से बेनियाज़ रहता है, उसे अल्लाह तआला बेनियाज़ ही बना देता है।

1428. और वुहैब ने बयान किया कि हमसे हिशाम ने अपने वालिद से बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने ऐसा ही बयान फ़र्माया। (राजेअ : 1426)

1429. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, (दूसरी सनद) और हमसे अब्दुल्लाह बिन मसलमा ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जबकि आप मिम्बर पर तशरीफ़ रखे थे। आपने सद्का और किसी के सामने हाथ न फैलाने का और दूसरों से माँगने का ज़िक्र फ़र्माया और फ़र्माया कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। ऊपर का हाथ ख़र्च करने वाले का है और नीचे का हाथ माँगने वाले का।

١٤٢٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْيَدُ الْغَلِيَّةُ خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى، وَأَبْدَأُ بِمَنْ تَعُولُ، وَخَيْرُ الصَّدَقَةِ عَنْ ظَهْرِ غِنًى، وَمَنْ يَسْتَغْفِرْ يَغْفِرَ اللَّهُ، وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ اللَّهُ)).

١٤٢٨- وَعَنْ وَهْبٍ: قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِهَذَا. [راجع: ١٤٢٦]

١٤٢٩- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ وَهَوَّ عَلَى الْجَبْرِ - وَذَكَرَ الصَّدَقَةَ وَالصَّغْفَ وَالْمَسْأَلَةَ)) ((الْيَدُ الْغَلِيَّةُ خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى. فَالْيَدُ الْغَلِيَّةُ هِيَ الْمُتَغَفُّةُ، وَالسُّفْلَى هِيَ السَّائِلَةُ)).

तशरीह :

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने मुनअक़िद किये हुए बाब के तहत इन अह्दादीष को लाकर प्राबित फ़र्माया कि हर एक मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वो साहिबे दौलत बनकर और दौलत में से अल्लाह का हक़ ज़कात अदा करके ऐसा रहने की कोशिश करे कि उसका हाथ हमेशा ऊपर का हाथ रहे और ताज़ीसत नीचे वाला न बने या नीचे देने वाला बनकर

रहे न कि लेने वाला और लोगों के सामने हाथ फैलाने वाला। हदीष में इसकी भी तरगीब है कि एहतिyाज के बावजूद भी लोगों के सामने हाथ न फैलाना चाहिये बल्कि सब्र व इस्तिक्लाल से काम लेकर अपने तवक्कल अल्लाह और खुदारी को कायम रखते हुए अपनी कुव्वते बाजू की मेहनत पर गुजारा करना चाहिये।

बाब 19 : जो देकर एहसान जताए उसकी मज़म्मत क्योंकि अल्लाह तअाला ने फ़र्माया कि जो लोग अपना माल अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं और जो कुछ उन्होंने खर्च किया है उसकी वजह से न एहसान जताते हैं और न तकलीफ़ देते हैं

۱۹- بَابُ الْمَنَانِ بِمَا أُعْطِيَ، لِقَوْلِهِ : [البقرة : २११] :

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَدْنَىٰ ﴿۱﴾ الْآيَةُ

बाब 20 : ख़ैरात करने में जल्दी करना चाहिये

۲۰- بَابُ مَنْ أَحَبَّ تَعْجِيلَ الصَّدَقَةِ مِنْ يَوْمِهَا

1430. हमसे अबू आसिम नबील ने ड़मर बिन सईद से बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि इब्नबा बिन हारिष (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अम्र की नमाज़ अदा की फिर जल्दी से आप घर में तशरीफ़ ले गये। थोड़ी देर बाद बाहर तशरीफ़ ले आए। इस पर मैंने पूछा या किसी और ने पूछा तो आपने फ़र्माया कि मैं घर के अन्दर स़दक़े के सोने का एक टुकड़ा छोड़ आया था, मुझे ये बात पसन्द नहीं आई कि उसे तक्सीम के बग़ैर रात गुज़ारूँ, पस मैंने उसको बाँट दिया।

(राजेअ : 851)

۱۴۳۰- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ غَمَرَ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِي أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ عُقْبَةَ بْنَ الْحَارِثِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ قَالَ : صَلَّى بِنَا النَّبِيِّ ﷺ الْفَصْرَ فَأَسْرَعَ، ثُمَّ دَعَلَ أَتَيْتُ فَلَمْ يَلْبِثْ أَنْ خَرَجَ، فَقُلْتُ - أَوْ لَيْلٍ - لَهُ فَقَالَ : ((كُنْتُ خَلَفْتُ فِي أَتَيْتُ بَيْتًا مِنَ الصَّدَقَةِ فَكُرِهْتُ أَنْ أَتَيْتُهُ، فَسَمَنْتُهُ)). [راجع : ۸۵۱]

(हदीष से प्राबित हुआ कि ख़ैरात और स़दका करने में जल्दी करना बेहतर है। ऐसा न हो कि मौत आ जाए या माल बाक़ी न रहे और प्रवाब से महकूम रह जाए। बाब का एक मफ़हूम ये भी हो सकता है कि साहिबे निसाब साल में तमाम होने से पहले ही अपने माल की ज़कात अदा कर दे। इस बारे में मज़ीद वज़ाहत इस हदीष में है, अन अलिख्बिन अन्नलअब्बास सअल रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी तअजीलि स़दक़तिन कबूल अन तहिल्ल फरखखस लहू फ़ी ज़ालिक रवाहु अबू दाऊद वत्तिर्मिज़ी वब्नु माजा वद्दारमी या'नी हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने रसूले करीम से पूछा कि क्या वो अपनी ज़कात साल गुज़रने से पहले भी अदा कर सकते हैं? इस पर आपने उनको इजाज़त दे दी। क़ाल इब्नु मालिक हाज़ा यदुल्लु अला जवाज़ि तअजीलिज़्जकाति बअद हुसूलिन्निसाबि क़बूल तमामिल्हौलि (मिअांत) या'नी इब्ने मालिक ने कहा कि ये हदीष दलालत करती है कि निसाबे मुक़र्रर हासिल होने के बाद साल पूरा होने से पहले भी ज़कात अदा की जा सकती है।

बाब 21 : लोगों को स़दका की तरगीब दिलाना और इसके लिये सिफ़ारिश करना

۲۱- بَابُ التَّخْرِيسِ عَلَى الصَّدَقَةِ، وَالشَّفَاعَةِ فِيهَا

1471. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अदी बिन श्राबित ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईद के दिन निकले। पस आपने (ईदगाह में) दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। न आपने उससे पहले कोई नमाज़ पढ़ी और न उसके बाद। फिर आप औरतों की तरफ आए, बिलाल (रज़ि.) आपके साथ थे। उन्हें आपने वा'ज व नसीहत की और उनको सदका करने के लिये हुक्म फ़र्माया। चुनौचे औरतें कंगन और बालियाँ (बिलाल रज़ि. के कपड़े में) डालने लगीं। (राजेअ : 98)

۱۴۳۱- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَدِيُّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ عِيدٍ لَصَلَّى وَكُتِبَ لَمْ يُصَلِّ قَبْلَ وَلَا بَعْدَ. ثُمَّ مَالَ عَلَى النَّسَاءِ - وَبَلَّانَ مَعَهُ - فَوَعظَهُنَّ، وَأَمَرَهُنَّ أَنْ يُصَدَّقْنَ، فَجَعَلَتِ الْمَرْأَةُ تُلْقِي الْقَلْبَ وَالْمَرْصَنَ)). [راجع: ۹۸]

बाब की मुताबकत ज़ाहिर है क्योंकि आँहजरत (ﷺ) ने औरतों को ख़ैरात करने के लिये रखत दिलाई। उससे सदका और ख़ैरात की अहमियत पर भी इशारा है। हदीष में आया है कि सदका अल्लाह पाक के ग़ज़ब और गुस्से को बुझा देता है। कुआन पाक में जगह जगह इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह के लिये तर्गीबात मौजूद हैं। फ़ी सबीलिल्लाह का मफ़हूम बहुत आम है।

1432. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबूबुर्दा बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने बयान किया, कहा कि हमसे अबूबुर्दा बिन अबी मूसा ने बयान किया, और उनसे उनके बाप अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास अगर कोई माँगने वाला आता या आपके सामने कोई हाज़त पेश की जाती तो आप सहाबा किराम से फ़र्माते कि तुम सिफ़ारिश करो कि इसका प्रवाब पाओगे और अल्लाह पाक अपने नबी की ज़बान से जो फ़ैसला चाहेगा वो देगा। (दीगर मक़ाम : 6027, 6028, 7472)

۱۴۳۲- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو بُرَيْدَةَ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بُرَيْدَةَ حَدَّثَنَا أَبُو بُرَيْدَةَ بْنُ أَبِي مُوسَى عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا جَاءَهُ السَّائِلُ أَوْ طَلِبَتْ إِلَيْهِ حَاجَةٌ قَالَ: ((اضْفَعُوا تَوَجَرُوا، وَيَقْضِيَ اللَّهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ مَا شَاءَ)). [أطرافه في: ۶۰۲۷, ۶۰۲۸, ۷۴۷۲]

मा'लूम हुआ कि हाज़तमन्दों की हाज़त और ग़र्ज़ पूरी कर देना या उनके लिये सई और सिफ़ारिश कर देना बड़ा प्रवाब है। इसीलिये आँहजरत (ﷺ) सहाबा किराम (रज़ि.) को सिफ़ारिश करने की रखत दिलाते और फ़र्माते कि अगरचे ये ज़रूरी नहीं है कि तुम्हारी सिफ़ारिश ज़रूर कुबूल हो जाए। होगा वही जो अल्लाह को मंज़ूर है। मगर तुमको सिफ़ारिश का प्रवाब ज़रूर मिल जाएगा।

1433. हमसे सिद्दीक़ बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दह ने हिशाम से ख़बर दी, उन्हें उनकी बीवी फ़ातिमा बिनत मुन्ज़िर ने और उनसे अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ैरात को मत रोक वरना तेरा रिज़क़ भी रोक दिया जाएगा।

۱۴۳۳- حَدَّثَنَا حَذَفَةُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تُوَكِّي فَيُوكِّي عَلَيْكَ)).

हमसे इप्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, और उनसे अब्दह

حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ عَنْ عَبْدَةَ

وَقَالَ: ((لَا تُخْصِي فَيُخْصِيَ اللَّهُ عَلَيْكَ)).
 ने यही हदीष रिवायत की कि गिनने न लग जाना वरना फिर अल्लाह भी तुझे गिन गिन कर ही देगा।

(दीगर मक़ाम : 1438, 2590, 2591)

[أطرافه في : ١٤٣٤, ٢٥٩٠, ٢٥٩١]

मक़सद सद्का के लिये सब्त दिलाना और बुखल से नफ़रत दिलाना है। ये मक़सद भी नहीं है कि सारा घर लुटाके कंगाल बन जाओ। यहाँ तक फ़र्माया कि तुम अपने वरषा को ग़नी छोड़कर जाओ कि वो लोगों के सामने हाथ न फैलाते फिरें। लेकिन कुछ लोगों के लिये कुछ इस्तिस्ना भी होता है जैसे सय्यिदना हज़रत अबूबक्र सिदीक़ (रज़ि.) जिन्होंने अपना तमाम ही अज़ाषा (सम्पत्ति) फ़ी सबीलिल्लाह पेश कर दिया था और कहा था कि घर में सिर्फ़ अल्लाह और रसूल (ﷺ) का नाम बाक़ी छोड़कर आया हूँ बाक़ी सब कुछ ले आया हूँ। ये सिदीक़े अक़बर (रज़ि.) जैसे मुतवक़िले आज़म ही को शान हो सकती है हर किसी का ये मक़ाम नहीं। बहरहाल अपनी त़ाक़त के अंदर-अंदर सद्का-ख़ैरात करना बहुत ही मोज़िबे बरकात है। दूसरा बाब इस मज़मून की मज़ीद वज़ाहत कर रहा है।

बाब 22 : जहाँ तक हो सके ख़ैरात करना

1434. हमसे अबू आसिम (ज़िहाक) ने बयान किया और उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुरहीम ने बयान किया, उनसे हज़ाज बिन मुहम्मद ने किया कि मुझे इब्ने अबी मुलैका ने ख़बर दी, उन्हें अब्बाद बिन अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने अस्मा बन्ते अबीबक्र (रज़ि.) से ख़बर दी के वो नबी करीम (ﷺ) के यहाँ आई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि (माल को) थैली में बन्द करके न रखना वरना अल्लाह पाक भी तुम्हारे लिये अपने ख़ज़ाने बन्द कर देगा। जहाँ तक हो सके लोगों में ख़ैरात तक्रसीम करती रहो।

(राजेअ : 1433)

٢٢- بَابُ الصَّدَقَةِ فِيمَا اسْتَطَاعَ

١٤٣٤- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ. ح. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ عَنْ حُجَّاجِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَبْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَهَا جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ. فَقَالَ: ((لَا تَوْعِي قَوْمِي اللَّهَ عَلَيْكَ. أَوْضَحِي مَا اسْتَطَعْتِ)). [راجع: ١٤٣٣]

बाब 23 : सद्का ख़ैरात से गुनाह माफ़ हो जाते हैं

1435. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर ने आ'मश से बयान किया, उनसे अबू वाइल ने, उन्होंने हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) से कि इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फ़िल्ने से मुता'ल्लिक़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीष आप लोगों में से किसको याद है? हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा कि मैं इस तरह याद रखता हूँ, जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने उसको बयान फ़र्माया था। इस पर हज़रत इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम्हें उसके बयान पर जुअत है। अच्छा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़िल्नों के बारे में क्या फ़र्माया था? मैंने कहा कि (आपने फ़र्माया था)

٢٣- بَابُ الصَّدَقَةِ تُكَفِّرُ الْخَطِيئَةَ

١٤٣٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَيْكُمْ يَحْفَظُ حَدِيثَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْفِتَنِ؟ قَالَ: قُلْتُ أَنَا أَحْفَظُهُ كَمَا قَالَ. قَالَ: إِنَّكَ عَلَيْهِ لَجَرِيمَةٌ، فَكَيْفَ قَالَ؟ قُلْتُ: ((فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ تُكَفِّرُهَا الصَّلَاةُ وَالصَّدَقَةُ

इन्सान की आजमाइश (फ़िल्ना) उसके खानदान, औलाद और पड़ौसियों में होती है और नमाज़, सद्का और अच्छी बातों के लिये लोगों को हुक्म देना, बुरी बात से रोकना, ये उस फ़िल्ने को मिटा देने वाले नेक काम हैं। फिर उस फ़िल्ने के बारे में पूछना चाहता हूँ जो समन्दर की तरह ठाठे मारता हुआ फैलेगा। हुजैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने कहा कि अमीरुल मोमिनीन आप उस फ़िल्ने की फ़िक्र न कीजिए आपके और उस फ़िल्ने के दरम्यान एक बन्द दरवाज़ा है। इमर (रज़ि.) ने पूछा कि वो दरवाज़ा तोड़ दिया जाएगा या सिर्फ़ खोला जाएगा। उन्होंने बतलाया नहीं बल्कि दरवाज़ा तोड़ दिया जाएगा तो फिर कभी भी बन्द हो सकेगा। अबू वाइल ने कहा कि हाँ! फिर हम रौब की वजह से हुजैफ़ा (रज़ि.) से ये न पूछ सके कि वो दरवाज़ा कौन है? इसलिये हमने मस्रूक से कहा कि तुम पूछो। उन्होंने कहा कि मस्रूक (रह.) ने पूछा तो इमर (रज़ि.) जानते थे कि आपकी मुराद कौन थी? उन्होंने कहा, हाँ जैसे दिन के बाद रात के आने को जानते हैं और ये इसलिये कि मैंने जो हदीष बयान की वो ग़लत नहीं थी।

(राजेअ : 525)

وَالْمَغْرُوفُ)) - قَالَ سَلِيمَانُ : قَدْ كَانَ يَقُولُ : ((الصَّلَاةُ وَالصَّدَقَةُ وَالْأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ)) - قَالَ : لَيْسَ هَذِهِ أَرِيدُ، وَلَكِنِّي أَرِيدُ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ الْبَحْرِ. قَالَ : قُلْتُ لَيْسَ عَلَيْكَ مِنْهَا يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ بَأْسٌ، يَتَنَكَّرُ وَبَيْنَهَا بَابٌ مُغْلَقٌ. قَالَ : فَيُكْسَرُ الْبَابُ أَمْ يَفْتَحُ؟ قَالَ قُلْتُ : لَا، بَلْ يُكْسَرُ. قَالَ : فَإِنَّهُ إِذَا كُسِرَ لَمْ يُغْلَقْ أَبَدًا. قَالَ قُلْتُ : أَجَلٌ. قَالَ : فَهِيَ أَنْ نَسْأَلَهُ مِنَ الْبَابِ. فَقُلْنَا لِمَسْرُوقٍ : سَلْهُ. قَالَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ : عَمْرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. قَالَ : قُلْنَا : أَلَعَلِمَ عَمْرُ مَنْ تَعْنِي؟ قَالَ : نَعَمْ، كَمَا أَنَّ دُونَ غَدٍ لَيْلَةٌ. وَذَلِكَ أَنِّي حَدَّثْتُ حَدِيثًا لَيْسَ بِالْأَغْلَبِ)) - [راجع : ٥٢٥]

तशरीह : हज़रत इमर (रज़ि.) ने हज़रत हुजैफ़ा (रज़ि.) के बयान की ता'रीफ़ की क्योंकि वो अक़्ब़र आँ हज़रत (ﷺ) से फ़िल्नों और फ़साद के बारे में जो आपके बाद होने वाले थे, पूछते रहा करते थे। जबकि दूसरे लोगों को इतनी जुअरत न होती थी। इसलिये हज़रत इमर (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया कि बेशक तू दिल खोलकर उनको बयान करेगा क्योंकि तू उनको ख़ूब जानता है। इस हदीष को हज़रत इमाम बुखारी (रह.) यहाँ ये प्राबित करने के लिये लाए कि सद्का गुनाहों का कफ़फ़ारा है।

बाब 24 : इस बारे में कि जिसने शिर्क की हालत में सद्का दिया और फिर इस्लाम ले आया

1436. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि हमें मअमर ने जुहरी से ख़बर दी, उन्हें इब्ना ने और उनसे हकीम बिन हिज़ाम

٢٤ - بَابُ مَنْ تَصَدَّقَ فِي الشِّرْكِ ثُمَّ أَسْلَمَ

١٤٣٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنْ

(रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उन नेक कामों से मुता'ल्लिक आप क्या फ़र्माते हैं, जिनमें जहालत के ज़माने में सद्का, गुलाम आज़ाद करने और सिलारहमी की सूरत में किया करता था। क्या उनका मुझे प्रवाब मिलेगा? नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम अपनी उन तमाम नेकियों के साथ इस्लाम लाए हो जो पहले गुज़र चुकी है।

(दीगर मक़ाम : 2220, 2538, 5992)

الرّهري عَنْ غَزْوَةٍ عَنْ حَكِيمٍ فِي حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَرَأَيْتَ أَشْيَاءَ كُنْتُ أَتَحْتَ بِهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ مِنْ مَدَنَةٍ أَوْ عَقَاةٍ وَصَلَةٍ رَحِمَ، فَهَلْ فِيهَا مِنْ أَجْرٍ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((اسْتَمْت عَلَى مَا سَلَفَ مِنْ خَيْرٍ)).

[أطرافه في : ٢٠٣٨، ٢٢٢٠، ٥٩٩٢]

तशरीह : इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष से ये प्राबित किया है कि अगर काफ़िर मुसलमान हो जाए तो कुफ़्र के ज़माने की नेकियों का भी प्रवाब मिलेगा। ये अल्लाह पाक की इनायत है। उसमें किसी का क्या इजारा है। बादशाह हकीकी के पैगम्बर ने जो कुछ फ़र्मा दिया वही क़ानून है। इससे ज़्यादा सराहत दारे कुत्नी की रिवायत में है कि जब काफ़िर इस्लाम लाता है और अच्छी तरह मुसलमान हो जाता है तो उसकी हर नेकी जो उसने इस्लाम लाने से पहले की थी, लिख ली जाती है और हर बुराई जो इस्लाम से पहले की थी मिटा दी जाती है। उसके बाद हर नेकी का प्रवाब दस गुनाह से सात सौ गुनाह तक मिलता रहता है और हर बुराई के बदले एक बुराई लिखी जाती है। बल्कि मुम्किन है अल्लाह पाक उसे भी मुआफ़ कर दे।

बाब 25 : खादिम-नौकर का प्रवाब, जब वो मालिक के हुक्म के मुताबिक़ ख़ैरात देने और कोई बिगाड़ की निय्यत न हो

٢٥- بَابُ أَجْرِ الْخَادِمِ إِذَا تَصَدَّقَ

بِأَمْرِ صَاحِبِهِ غَيْرِ مُفْسِدٍ

١٤٣٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ

حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْأَعْمَشِيِّ عَنْ أَبِي وَائِلٍ

عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِذَا تَصَدَّقْتَ

الْمَرْأَةُ مِنْ طَعَامٍ وَزَوْجَهَا غَيْرِ مُفْسِدٍ كَانَ

لَهَا أَجْرُهَا، وَلِزَوْجِهَا بِمَا كَسَبَ،

وَلِلْخَادِمِ مِثْلُ ذَلِكَ)).

1437. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरिर ने आ'मश से बयान किया, उनसे अबूवाइल ने, उनसे मस्रूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब बीवी अपने खाविन्द के खाने में से कुछ सद्का करे और उसकी निय्यत उसे बर्बाद करने की नहीं होती तो उसे भी उसका प्रवाब मिलता है और उसके खाविन्द को कमाने का प्रवाब मिलता है। इस तरह ख़ज़ान्ची को भी इस का प्रवाब मिलता है।

तशरीह : या'नी बीवी की शौहर के माल को बेकार तबाह करने की निय्यत न हो तो उसको भी प्रवाब मिलेगा। खादिम के लिये भी यही हुक्म है। मगर बीवी और ख़िदमतगार में फ़र्क़ है। बीवी बग़ैर शौहर की इजाज़त के उसके माल में से ख़ैरात कर सकती है लेकिन ख़िदमतगार ऐसा नहीं कर सकता। अक़़र उलमा के नज़दीक बीवी को भी उस वक़्त तक शौहर के माल से ख़ैरात दुरुस्त नहीं जब तक कि इज्मालन या तफ़सीलन उसने इजाज़त न दी हो और इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक भी यही मुख़्तार है। कुछ ने कहा ये उर्फ़ और दस्तूर पर मौकूफ़ है या'नी बीवी पका हुआ खाना बग़ैरह ऐसी थोड़ी चीज़ें जिनके देने से कोई नाराज़ नहीं होता, ख़ैरात कर सकती है गो शौहर की इजाज़त न मिले।

1438. हमसे मुहम्मद बिन अत्ताअ ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुरैदा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम

١٤٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْأَعْلَاءِ قَالَ

حَدَّثَنَا أَبُو أَسَمَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ

(ﷺ) ने फर्माया। ख़ाज़िन मुसलमान अमानतदार जो कुछ भी खर्च करता है और बाज़ दफ़ा फर्माया वो चीज़ पूरी तरह देता है, जिसका उसे सरमाये के मालिक की तरफ से हुक्म दिया गया और उसका दिल भी उससे खुश है और इसी को दिया है जिसे देने के लिये मालिक ने कहा था तो वो देने वाला भी सदका देने वालों में से एक है। (दीगर मक़ाम: 2260, 2319)

बाब 26 : औरत का प्रवाब जब वो अपने शौहर की चीज़ में से सदका दे या किसी को खिलाए और इरादा घर बिगाड़ने का न हो

1439. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, कहा कि हमें मन्सूर बिन मअमर और आ'मश दोनों ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने, उनसे मस्रूक ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से कि जब कोई औरत अपने शौहर के घर (के माल) से सदका करे।

1440. (दूसरी सनद) इमाम बुखारी ने कहा और मुझसे इमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा कि मुझ से मेरे बाप हफ़्स बिन गयास ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू वाइल शक्कीक ने, उनसे मस्रूक ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया जब भी वी अपने शौहर के माल में से किसी को खिलाए और उसका इरादा घर को बिगाड़ने का भी न हो तो उसे उसका प्रवाब मिलता है और शौहर को भी वैसा ही प्रवाब मिलता है और खज़ान्ची को भी वैसा ही प्रवाब मिलता है। शौहर को कमाने की वजह से प्रवाब मिलता है और औरत को खर्च करने की वजह से।

عَنْ أَبِي بُرْزَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْخَارِجُ الْمُسْلِمُ الْأَمِينُ الَّذِي يُنْفِدُ - وَرَبَّمَا قَالَ: يُعْطَى - مَا أَمَرَ بِهِ كَامِلًا مُؤَقَّرًا طَيِّبٌ بِهِ نَفْسُهُ لِيُذَقَّهُ إِلَى الَّذِي أَمَرَ لَهُ بِهِ أَحَدُ الْمُتَصَدِّقِينَ)).

[طرفاه في: ٢٢٦٠، ٢٣١٩]

٢٦- بَابُ أَجْرِ الْمَرْأَةِ إِذَا تَصَدَّقَتْ أَوْ أَطْعَمَتْ مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا غَيْرَ مُفْسِدَةٍ

١٤٣٩- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ وَالْأَعْمَشُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ تَعْنِي إِذَا تَصَدَّقَتْ الْمَرْأَةُ مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا ح.

١٤٤٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا أَطْعَمَتْ الْمَرْأَةُ مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا غَيْرَ مُفْسِدَةٍ لَهَا أَجْرُهَا وَلَهُ مِثْلُهُ وَلِلْخَارِجِ مِثْلُ ذَلِكَ، لَهُ بِمَا اكْتَسَبَ وَلَهَا بِمَا أَنْفَقَتْ)).

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष को तीन तरीकों से बयान किया और ये तकरार नहीं है क्योंकि हर एक बाब के अल्फ़ाज़ जुदा हैं। किसी में इज़ा तम सदकतिल मअर्तु है किसी में इज़ा अत्तअमतिल मअर्तु है किसी में मिम बैति ज़ौजिहा है और ज़ाहिर हदीष से ये निकलता है कि तीनों को बराबर-बराबर मिलेगा। दूसरी रिवायत में है कि औरत को मर्द का आधा प्रवाब मिलेगा। क़स्तलानी ने कहा कि दारोगा को भी प्रवाब मिलेगा। मगर मालिक की तरह उसको दोगुना प्रवाब न होगा। (वहीदी)

इन्ने अबी हातिम की रिवायत में इतना ज्यादा है। तब अल्लाह पाक ने ये आयत उतारी फ़अम्मा मन आता वक्तका आखिर तक और इस रिवायत को बाब में उस आयत के तहत जिक्र करने की वजह भी मा'लूम हो गई।

बाब 28 : सद्का देने वाले की और बखील की मिषाल का बयान

1443. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन ताऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ताऊस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बखील और सद्का देने वाले की मिषाल ऐसे दो शख्सों की तरह है जिनके बदन पर लोहे के दो कुर्ते हैं। (दूसरी सनद) इमाम बुखारी ने कहा और हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने खबर दी, कहा कि हमें अबुज्जिनाद ने खबर दी कि अब्दुल्लाह बिन हुमुर्ज अल अअरज़ ने उनसे बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) को ये कहते हुए सुना कि बखील और खर्च करने वाले की मिषाल ऐसे दो शख्सों की सी है जिनके बदन पर लोहे के दो कुर्ते हों, छातियों से हंसली तक, जब खर्च करने का आदी (सखी) खर्च करता है तो उसके तमाम जिस्म को (वो कुर्ता) छुपा लेता है या (रावी ने ये कहा कि) तमाम जिस्म पर फैल जाता है और उसकी अंगुलियाँ उसमें छुप जाती है और चलने में उसके पाँव के निशान भिंटता जाता है। लेकिन बखील जब भी खर्च करने का इरादा करता है तो उस कुर्ते का हर हल्का अपनी जगह से चिमट जाता है। बखील उसे कुशादा करने की कोशिश करता है लेकिन वो कुशादा नहीं हो पाता। अब्दुल्लाह बिन ताऊस के साथ इस हदीस को हसन बिन मुस्लिम ने भी ताऊस से रिवायत किया, उसमें दो कुर्ते हैं।

(दीगर मक़ाम : 1444, 2917, 5299, 5797)

1444. और हन्ज़ला ने ताऊस से दो ज़िरहें नक़ल किया है और लैस बिन सअद ने कहा मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उन्होंने अब्दुरहमान बिन हुमुर्ज से सुना कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने औहज़रत (ﷺ) से फिर यही हदीस बयान की उसमें दो ज़िरहें हैं। (राजेअ : 1443)

٢٨- بَابُ مَثَلِ الْمُتَصَدِّقِ وَالْبَخِيلِ

١٤٤٣- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا وَهَبٌ

قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:

((مَثَلُ الْبَخِيلِ وَالْمُتَصَدِّقِ كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ

عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ)). ح. وَحَدَّثَنَا

أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ قَالَ أَخْبَرَنَا

أَبُو الزِّنَادِ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ حَدَّثَهُ أَنَّهُ

سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ

رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَثَلُ الْبَخِيلِ

وَالْمُنْفِقِ كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ

حَدِيدٍ مِنْ ثِيَابِهِمَا إِلَى تَرَاقِيهِمَا. فَأَمَّا

الْمُنْفِقُ فَلَا يُنْفِقُ إِلَّا سَبْعَتْ - أَوْ ثَمَنَ

- عَلَى جُلْدِهِ حَتَّى تُخْفِيَ بَنَاتُهُ وَتَقْفُوا

أَثَرَهُ. وَأَمَّا الْبَخِيلُ فَلَا يُرِيدُ أَنْ يُنْفِقَ شَيْئًا

إِلَّا لَرِقَتْ كُلُّ خَلْقَةٍ مَكَانَهَا، فَهُوَ يَوْمَعُهَا

وَلَا تَسْعُ)). تَابَعَهُ الْحَسَنُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ

طَاوُسٍ فِي الْجُبَّتَيْنِ.

[أُطْرَافُهُ فِي : ١٤٤٤، ٢٩١٧، ٥٢٩٩، ٥٧٩٧]

١٤٤٤- وَقَالَ حَنْظَلَةُ عَنْ طَاوُسٍ

((جُبَّتَانِ)). وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ

عَنْ ابْنِ هُرَيْرَةَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ

اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((جُبَّتَانِ)).

[راجع : ١٤٤٣]

तशीह:

इस हदीष में बखील और मुत्सद्दिक की हदीषें बयान की गई हैं। सखी की ज़िरह इतनी नीची हो जाती है जैसे बहुत नीचा कपड़ा आदमी जब चले तो वो ज़मीन पर घिसटता रहता है और पांव के निशान मिटा देता है। मतलब ये है कि सखी आदमी का दिल रुपया खर्च करने से खुश होता है और कुशादा हो जाता है। बखील की ज़िरह पहले ही मरहले पर उसके सीने से चिमटकर रह जाती है और उसको सखावत की तौफ़ीक़ ही नहीं होती। उसके साथ ज़िरह के अंदर मुकय्यिद होकर रह जाते हैं।

हसन बिन मुस्लिम की रिवायत को इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल्लिबास में और हज़ला की रिवायत को इस्माईल ने वस्ल किया और लैष बिन सअद की रिवायत इस सनद से नहीं मिली। लेकिन इब्ने हिब्बान ने उसको दूसरी सनद से लैष से निकाला। जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने बयान किया है।

बाब 29 : मेहनत और सौदागरी के माल में से ख़ैरात करना प्रवाब है

क्योंकि अल्लाह तआला ने (सूरह बकर: में) फ़र्माया कि ऐ ईमान वालों! अपनी कमाई की उम्दा पाक चीज़ों में से (अल्लाह की राह में) खर्च करो और उनमें से भी जो तुमने तुम्हारे लिये ज़मीन से पैदा की है। आखिर आयत ग़नियुन हमीद तक।

٢٩ - بَابُ صَدَقَةِ الْكَسْبِ

وَالْتِجَارَةِ، لِقَوْلِهِ تَعَالَى :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿إِنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ حَكِيمٌ﴾﴾
[البقرة: 267].

तशीह:

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इशारा किया उस रिवायत की तरफ़ जो मुजाहिद से मन्कूल है कि कस्ब और कमाई से इस आयत में तिजारात और सौदागरी मुराद है और ज़मीन से जो चीज़ उगाई उनसे अनाज और खजूर वगैरह मुराद है।

अल्लामा इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, हाक़ज़ा औरदहू हाज़त्तजुमत मुक्त्तसिरन अललआयति बिगैरि हदीषिन व कअन्नहू अशार इला मा रवाहू शुअबतु अनिल्हकमि अन मुजाहिद फी हाज़ल्आयति वाअय्युहल्लज़ीन आमनु अन्फ़िक्कू मिन तय्यिबाति मा कसब्तुम (अल्आयह) क़ाल मिनत्तिजारतिल्हलालि अखरजहुत्तब्बी वब्नु अबी हातिम मिन तरीक्कि आदम अन्हू व अखरजहुत्तब्बी मिन तरीक्कि हुशैम अन शुअबत व लफ़्ज़ुहू मिनत्तय्यिबाति मा कसब्तुम क़ाल मिनत्तिजारति व मिम्मा अखरज्ना लकुम मिनल्अर्ज़ि क़ाल मिनल्लिमारी व मिन तरीक्कि अबी बकर अल्हज़ली अन मुहम्मदिब्नि सीरीन अन उबैदिब्नि अमिन अन अलिथ्यिन क़ाल फ़ी क़ौलिही व मिम्मा अखरज्ना लकुम मिनल्अर्ज़ि क़ाल यअनी मिनल्हुब्बि वत्तमि व कुल्लु शैइन अलैहि ज़कातुन व क़ालज़ज़ीनुब्नुल्मुनीरु लम युक्थियदिल्कसब फ़ित्तजुमति बित्तय्यिबि कमा फ़िल्आयति इस्तिगनाउन अन ज़ालिक बिमा तक्हम फ़ी तजुमतिन बाबुस्सदक़ति मिन कस्बिन तय्यिबिन. (फ़तहूल बारी)

या'नी यहाँ इस बाब में हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने सिर्फ़ इस आयत के नक़ल कर देने को काफ़ी समझा और कोई हदीष यहाँ नहीं लाए। गोया आपने उस रिवायत की तरफ़ इशारा किया जिसे शुअबा ने हक़म से और हक़म ने मुजाहिद से इस आयत की तफ़सीर में नक़ल किया है कि मिन तय्यिबाति मा कसब्तुम से मुराद हलाल तिजारात है। उसे तबरांनी ने रिवायत किया है और इब्ने अबी हातिम ने तरीक्क आदम से और तबरांनी ने तरीक्के हशैम से भी शुअबा से उसे रिवायत किया है। और उनके अल्फ़ाज़ ये कि तय्यिबाति मा कसब्तुम मुराद तिजारात है और मिम्मा अखरज्ना लकुम से मुराद फल वगैरह हैं जो ज़मीन से पैदा होते हैं। और तरीक्क अबूबक्र हुज़ली में मुहम्मद बिन सीरीन से, उन्होंने उबैदा बिन अमर से, उन्होंने हज़रत अली से कि मिम्मा अखरज्ना लकुम से मुराद दाने और खजूर हैं और हर वो चीज़ जिस पर ज़कात वाजिब है, मुराद है। ज़ैन इब्ने मुनीर ने कहा कि यहाँ बाब में इमाम बुखारी ने कसब को तय्यिब के साथ मुकय्यिद नहीं किया। जैसा कि आयत मज़कूर में है, ये इसलिये कि हज़रत इमाम पहले एक बाब में कस्ब के साथ तय्यिब की कैद लगा चुके हैं।

बाब 30 : हर मुसलमान पर सद्का करना ज़रूरी है अगर (कोई चीज़ देने के लिये) न हो तो उसके लिये अच्छी बात पर अमल करना या अच्छी बात दूसरे को बतला देना भी ख़ैरात है

1445. हमसे मुस्लिम बिन इब्नाहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी बुर्दा ने बयान किया, उनसे उनके बाप अबू बुर्दा ने उनके दादा अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर मुसलमान पर सद्का करना ज़रूरी है। लोगों ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! अगर किसी के पास कुछ न हो? आपने फ़र्माया कि फिर अपने हाथ से कुछ कमाकर जो खुद भी नफ़ा पहुँचाए और सद्का भी करे। लोगों ने कहा अगर इसकी ताक़त न हो? फ़र्माया कि फिर किसी हाज़तमन्द फ़रियादी की मदद करे। लोगों ने कहा कि अगर इसकी भी सकत न हो। फ़र्माया फिर अच्छी बात पर अमल करे और बुरी बातों से बाज़ रहे उसका यही सद्का है।

(दीगर मक़ाम : 6022)

۳۰- بَابُ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ
فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيَعْمَلْ بِالْمَعْرُوفِ

۱۴۴۵- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي بَرْزَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ)). فَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللَّهِ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: ((يَعْمَلْ بِيَدِهِ فَيَنْفَعُ نَفْسَهُ وَيَصَدِّقَ)). فَقَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: ((يُعِينُ ذَا الْحَاجَةِ الْمَلْهُوفَ)). فَقَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: ((فَلْيَعْمَلْ بِالْمَعْرُوفِ، وَلْيَمْنِكِ الشَّرُّ، فَإِنَّهَا لَهُ صَدَقَةٌ)).

[طرفه ب : ۶۰۲۲.]

तशरीह : इमाम बुखारी (रह.) ने अदब में जो किताब निकाली है उसमें यँ है कि अच्छी या नेक बात का हुक्म करे। अबू दाऊद त्रियालिसी ने इतना और ज़्यादा किया और बुरी बात से मना कर। मा'लूम हुआ जो शख्स नादार हो उसके लिये वा'ज़ और नज़ीहत में सद्के का प्रवाब मिलता है। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं,

क़ालशशैखु अबू मुहम्मद बिन अबी जम्त नफअल्लाहुबिही तर्तीब हाज़लहदीषि अन्नहू नुदुबुन इलज़सदक़ति व इन्दलज़ज़ि अन्हा नुदुबुन इला मा यन्नबु मिन्हा औ यकूम मक़ामहा व हुवलअमलु वलइन्तिफाउ व इन्दलज़ज़ि अन ज़ालिक नुदुबुन इला मा यकूम मक़ामहू व हुवलइगाषतु व इन्द अदमि ज़ालिक नुदुबुन इला फिअलिल् मअरूफि अय मिन सिवा मा तकहम कइमाततिल्अज़ा इन्द अदमि ज़ालिक आखिरुल्मरातिबि क़ाल व मअनशशरि हाहुना मा मजअशशरउ फफीहि तसल्लियतुन लिल्आज़िज़ि अन फिअलिल्मन्दूबाति इज़ा कान अजज़हु अन ज़ालिक अन ग़ैरि इख्तियारिन. (फ़तुल बारी)

मुख्तसर ये कि इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष को लाकर यहाँ दर्जा-ब-दर्जा सद्का करने की तर्तीब दिलाई है। जब माली सद्का की तौफ़ीक़ न हो तो जो भी काम उसके कायम मुकाम हो सके वही सद्का है। मसलन अच्छे काम करना और दूसरों को अपनी ज़ात से नफ़ा पहुँचाना, जब उसकी भी तौफ़ीक़ न हो तो किसी मुसीबतज़दा की फ़रियाद-रसी करना और ये भी न हो सके तो कोई और नेक काम कर देना मसलन ये कि रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ को हटा देना। फिर नमाज़ की तरफ़ रबत दिलाई कि ये भी बेहतरीन काम है। आख़िरी बार ये कि बुराई को तर्क करना जिसे शरीअत ने मना किया है। ये भी प्रवाब के काम हैं और उसमें उस शख्स के लिये तसल्ली दिलाना है जो नेक कामों से बिल्कुल आजिज़ है। इशदि बारी तज़ाला है, व मा यफ़अलू मिन ख़ैरिन फ़लय्यवफ़ुरूहु (आले इमरान : 115) लोग जो कुछ भी नेक काम करते हैं वो बर्बाद नहीं

होते। बल्कि उसका बदला किसी न किसी शक्ल में मिल ही जाता है। क़ुदरत का यही क़ानून है, फ़र्मय्यअमल मिष्क़ाल ज़र्रतिन ख़ैरय्यरह व मंय्यअमल मिष्क़ाल ज़र्रतिन शरय्यरह (अल ज़िलज़ाल : 99) जो एक ज़र्र बराबर भी नेकी करेगा वो उसे भी देख लेगा और एक ज़र्र बराबर भी बुराई करेगा वो उसे भी देख लेगा।

बाब 31 : ज़कात या सदक़े में कितना माल देना दुरुस्त है और अगर किसी ने एक पूरी बकरी दे दी?

1446. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू शिहाब ने बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे हफ़्सा बिनते सीरीन ने और उनसे उम्मे अत्तिया (रज़ि.) ने नुसैबा नामी एक अन्सारी औरत के यहाँ किसी ने एक बकरी भेजी (ये नुसैबा नामी अन्सारी खुद उम्मे अत्तिया ही का नाम है) उस बकरी का गोश्त उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ भी भेज दिया। फिर नबी करीम (ﷺ) ने उनसे दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे पास खाने को कोई चीज़ है? आइशा (रज़ि.) ने कहा कि और तो कोई चीज़ नहीं अलबत्ता उस बकरी का गोश्त जो नुसैबा ने भेजा था, वो मौजूद है। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि वही लाओ अब उसका खाना दुरुस्त हो गया।

(दीगर मक़ाम : 1494, 2579)

तशरीह :

बाब का मतलब यूँ साबित हुआ कि पूरी बकरी बत्तौर सदक़ा नुसैबा को भेजी गई। अब उम्मे अत्तिया ने जो थोड़ा गोश्त उस बकरी में से हज़रत आइशा (रज़ि.) को तोहफ़ा के तौर पर भेजा। उससे ये निकला कि थोड़ा गोश्त भी सदक़ा दे सकते हैं क्योंकि उम्मे अत्तिया का हज़रत आइशा (रज़ि.) को भेजना गो सदक़ा न था मगर हदिया था। पस सदक़ा को उस पर क़यास किया। इब्ने मुनीर ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर उन लोगों का रद्द किया है जो ज़कात में एक फ़क़ीर को इतना दे देना मकरूह समझते हैं कि वो साहिबे निज़ाब हो जाए। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) से ऐसा ही मन्कूल है लेकिन इमाम मुहम्मद ने कहा उसमें कोई क़बाहूत नहीं। (वहीदी)

आँहज़रत (ﷺ) ने उस बकरी के गोश्त को इसलिये खाना हलाल करार दिया कि जब फ़क़ीर ऐसे माल से तोहफ़ा के तौर पर कुछ भेज दे तो वो दुरुस्त है क्योंकि मिल्क के बदल जाने से हुक्म भी बदल जाता है। यही मज़मून बरीरा की हदीस में भी वारिद है। जब बरीरा ने सदक़ा का गोश्त हज़रत आइशा (रज़ि.) को तोहफ़ा भेजा था तो आपने फ़र्माया था। हुब लहा सदक़तुन व लना हदयतुन (वहीदी) वो उसके लिये सदक़ा है और हमारे लिये उसकी तरफ़ से तोहफ़ा है।

बाब 23 : चाँदी की ज़कात का बयान

1447. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अग्र बिन माज़िनी ने, उन्हें उनके बाप यह्या ने, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ)

۳۱- بَابُ قَدْزُرُ كَمْ يُعْطَى مِنَ الزَّكَاةِ وَالصَّدَقَةِ؟ وَمَنْ أُعْطِيَ شَاةً

۱۴۴۶- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو شَيْهَابٍ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ مِيرْنٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((بُعِثَ إِلَى نُسَيْبَةَ الْأَنْصَارِيَّةِ بِشَاةٍ، فَأُرْسِلَتْ إِلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا مِنْهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عِنْدَكُمْ شَيْءٌ؟)) فَقُلْتُ: لَا، إِلَّا مَا أُرْسِلْتُ بِهِ نُسَيْبَةَ مِنْ بَلَدِ الشَّامِ، فَقَالَ: ((هَاتِ، فَقَدْ بَلَغَتْ مَجْلَهَا)).

[طرفاء في : ۱۴۹۴، ۲۵۷۹.]

۳۲- بَابُ زَكَاةِ الْوَرِقِ

۱۴۴۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى الْمَازِنِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ

ने फ़र्माया कि पाँच ऊँट से कम में ज़कात और पाँच औकिया से कम (चाँदी) में ज़कात नहीं। इसी तरह पाँच वस्क से कम (अनाज) में ज़कात नहीं।

हमसे मुहम्मद बिन मुषत्रा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल वहहाब प्रक़फ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यहा खिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझे अम्र बिन यहा ने ख़बर दी, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से इस हदीस को सुना। (राजेज़: 1405)

قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((لَيْسَ فِيمَا دُونَ خَمْسِ دَوْنِ صَدَقَةٍ مِنَ الْإِبِلِ، وَلَيْسَ فِيمَا دُونَ خَمْسِ أَوَاقٍ صَدَقَةٌ، وَلَيْسَ فِيمَا دُونَ عَشْرَةِ أَوْسُقٍ صَدَقَةٌ)).

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ مَسْعَدٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ

بِهَذَا. [راجع: 1405]

तशरीह:

ये हदीस अभी ऊपर बाब मा उद्दिय ज़कातुह फ़लैस बिकन्ज़िन में गुज़र चुकी है और वस्क और औकिया की मिक्दार भी वहीं मज़कूर हो चुकी है। पाँच औकिया दो सौ दिरहम के होते हैं। हर दिरहम छः दौक़ का। हर दौक़ 8 जौ और 2/5 जौ का। तो दरम 50 जौ या 2/5 जौ का हुआ। कुछ ने कहा कि दिरहम चार हज़ार और दो सौ राई के दानों का होता है। और एक दीनार एक दरम और 3/7 दरम का या छः हज़ार राई के दानों का। एक क़ीरात 3/8 दौक़ का होता है।

मौलाना काज़ी षनाउल्लाह पानीपती मरहूम फ़र्माते हैं कि सोने का निज़ाब बीस मिस्क़ाल है जिसका वज़न साढ़े सात तौला होता है और चाँदी का निज़ाब दो सौ दिरहम है जिनके सिक्के राइजुल वक़््त देहली से 56 रुपये का बनते हैं।

व क़ाल शैख़ मशाइख़िना अलल्लअल्लामतुशशैख़ अब्दुल्लाह अल्गाज़ीफ़ुरी फ़ी रिसालतिही मा मुअरिबुहू निसाबुल्लिज़काति मिअता दिरहमिन अय खम्सून व इफ़्तानि तौलजतन व निस्फ़ु तौलजतु व हिय तसावी सिक्तीन रूबिध्यतन मिनरूबिध्यतिलइन्कलैजियह अल्मुनाफ़ज़तु फिलिह्दि फ़ी जमनिलइन्कलैजिल्लती तकूनु बिकदरि अशर माहिजह व निस्फ़ुन माहिजह व क़ालशैख़ बहरुलउलूम अल्लवन्वी अल्हनफ़ी फ़ी रसाइलिलअर्कानिलअर्बइ सफ़ा 178 वज़नु मिअतय दिरहमिन वज़नु खम्सुव खम्सून रूबिध्यतन व कुल्लु रूबिध्यतिन अहद अशर माशिज. (मिअत जिल्द 3, पेज 41)

हमारे शैख़ुल मशाइख़ अल्लामा हाफ़िज़ अब्दुल्लाह गाज़ीपुरी फ़र्माते हैं कि चाँदी का निज़ाब दो सौ दिरहम है या'नी साढ़े बावन तौला और ये अंग्रेज़ी दौर के मुख़व्जा चाँदी के रुपये से साठ रुपयों के बराबर होती है। जो रुपया तक्रीबन साढ़े ग्यारह माशा का मुख़व्ज था। मौलाना बहरुल इलूम लखनवी फ़र्माते हैं कि दो सौ दिरहम वज़न चाँदी 55 रुपये के बराबर है और हर रुपया ग्यारह माशा का होता है। हमारे ज़माने में चाँदी का निज़ाब औज़ाने हिन्दिया की मुनासबत से साढ़े बावन तौला चाँदी है।

ख़ुलासा ये कि अनाज में पाँच वस्क से कम पर उश्र नहीं है और पाँच वस्क इक्कीस मन साढ़े सैंतीस सेर वज़न 80 तौला के सेर के हिसाब से होता है क्योंकि एक वस्क साठ साअ का होता है और साअ 234 तौले (6 तौला कम 3 सेर) का होता है। पस एक वस्क चार मन साढ़े पन्द्रह सेर का होगा।

औकिया चालीस दिरहम का होता है इस हिसाब से साढ़े सात तौला सोना पर चालीसवाँ हिस्सा ज़कात फ़र्ज़ है और चाँदी का निज़ाब साढ़े बावन तौला है। वल्लाहु आलम!

बाब 33 : ज़कात में (चाँदी-सोने के सिवा और)

۳۳- بَابُ الْعَرَضِ فِي الزَّكَاةِ

अस्बाब का बयान

जुम्हूर उलमा के नज़दीक ज़कात में चाँदी-सोने के सिवा दूसरे अस्बाब का लेना दुरुस्त नहीं लेकिन हन्फिया ने इसको जाइज़ कहा है और इमाम बुखारी (रह.) ने भी इसको इख्तियार किया है।

और ताऊस ने बयान किया कि मुआज़ (रज़ि.) ने यमन वालों से कहा था कि मुझे तुम इदक़े में जौ और ज्वार की जगह सामान और असबाब या 'नी खमीसा (धारीदार चादरें) या दूसरे लिबास दे सकते हो, जिसमें तुम्हारे लिये भी आसानी होगी और मदीने में नबी करीम (ﷺ) के अस्बाब के लिये भी बेहतर होगी और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ख़ालिद ने तो अपनी ज़िरहें और हथियार और घोड़े सब अल्लाह की रास्ते में वक़फ़ कर दिये हैं। (इसलिये उनके पास कोई ऐसी चीज़ नहीं जिस पर ज़कात वाजिब होती। ये हदीष का टुकड़ा है वो आइन्दा तफ़्सील से आएगी) और नबी करीम (ﷺ) ने (ईद के दिन औरतों से) फ़र्माया कि इदक़ा करो, ख़्वाह तुम्हें अपने ज़ेवर ही क्यों न देने पड़ जाए तो आपने ये नहीं फ़र्माया था कि अस्बाब का इदक़ा दुरुस्त नहीं। चुनौचे (आपके इस फ़र्मान पर) औरतें अपनी बालिया और हार डालने लगीं औहज़रत (ﷺ) ने (जकात के लिये) सोने-चाँदी की भी कोई तख़सीस नहीं फ़र्माई।

وَقَالَ طَاوُسٌ: قَالَ مُعَاذٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لِأَهْلِ الْيَمَنِ: اتَّوَلَّيْتُ بَعْضَ رِجَالِ غَمِيضٍ أَوْ لَيْسَ لِي الصَّدَقَةُ مَكَانَ الشَّعِيرِ وَالذَّرَّةِ، أَفَوْنُ عَلَيْكُمْ، وَخَيَّرَ لِأَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ.

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَأَمَّا خَالِدٌ فَقَدْ اخْتَسَنَ أَذْرَاعَهُ وَأَعْتَدَهُ لِي سَبِيلَ اللَّهِ)). وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَصَدَّقُوا وَلَوْ مِنْ خَلْيُكُنْ)) فَلَمْ يَسْتَنْ صَدَقَةَ الْغَرَضِ مِنْ غَيْرِهَا. فَجَمَلَتِ الْمَرْأَةُ تَلْقَى غُرُصَهَا وَمِخَابَهَا. وَلَمْ يَخْصُ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ مِنَ الْغُرُوضِ.

तशरीह: हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने यमन वालों को इसलिये ये फ़र्माया कि अब्बल तो जौ और ज्वार का यमन से मदीना तक लाने में ख़र्च बहुत पड़ता। फिर उस वक़्त मदीना में इस्बाबा को ग़ल्ले से भी ज़्यादा कपड़ों की हाज़त थी तो मुआज़ (रज़ि.) ने ज़कात में कपड़ों वगैरह अस्बाब ही का लेना मुनासिब जाना। ख़्वाह हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के अस्बाब को वक़फ़ करने से हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि ज़कात में अस्बाब देना दुरुस्त है। अगर ख़ालिद (रज़ि.) ने इन चीज़ों को वक़फ़ नहीं किया होता तो जरूर उनमें से कुछ ज़कात में देते। कुछ ने तो यूँ तौज़ीह की है कि जब ख़ालिद (रज़ि.) ने मुजाहिदीन की सरबराही सामान से ही की और ये भी ज़कात का एक मसरफ़ है तो गोया ज़कात में सामान दिया। वहुवल मत्लूब। ईद में औरतों के ज़ेवर इदक़ा में देने से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि ज़कात में अस्बाब का देना दुरुस्त है क्योंकि उन औरतों के सब ज़ेवर चाँदी-सोने के न थे। जैसे कि हार व मस्क और लौंग से बनाकर गलों में डालतीं।

मुखालिफ़ीन ये जवाब देते हैं कि ये नफ़ल इदक़ा था न कि फ़र्ज़ ज़कात क्योंकि ज़ेवर में अक़सर उलमा के नज़दीक ज़कात फ़र्ज़ नहीं है। (वहीदी)

ज़ेवर की ज़कात के बारे में हज़रत मौलाना अबैदुल्लाह शैख़ुल हदीष साहब ने हज़रत शैख़ुल मुहदिषुल कबीर मौलाना अब्दुर्रहमान साहब मुबारकपुरी (रह.) के क़ौल पर फ़त्वा दिया कि ज़ेवर में ज़कात वाजिब है। मौलाना फ़र्माते हैं (वहुवल हक़) (मिअ़त)

वाक़िया हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के बारे में हज़रत मौलाना अबैदुल्लाह साहब (रह.) फ़र्माते हैं,

क्रिस्मतु ख़ालिदिन तूविल अला बुजूहिन अहदुहा अन्नहुम तालबू ख़ालिदिन बिज़्जकाति अन उम्मानिल्आतादि अलअदरइ बिजन्निन अन्नहा लिच्चिज़रति व इन्नज़्जकात फ़ीहा वाजिबतुन फ़क्राल लहुम ला ज़कात फ़ीहा अलथ्य फ़क्रालू लिन्नबिथ्य (ﷺ) अन्न ख़ालिदिन मनअज़्जकात फ़क्राल इन्नकुम तज़िलमूनहु लिअन्नहु हबसहा व वक़क़फ़हा फ़ी सबीलिल्लाहि क़बलल्हौलि फ़ला ज़कात फ़ीहा. (मिअ़त)

या'नी वाक़िय-ए-ख़ालिद (रज़ि.) की कई तरह से तावील की जा सकती है। एक तो ये कि मुख़िलसीने ज़कात ने ख़ालिद (रज़ि.) से उनके हथियारों और ज़िरह वगैरह की इस गुमान से ज़कात तलब की कि ये सब अम्वाले तिजारात है। और उनमें ज़कात अदा करना वाजिब है। उन्होंने कहा कि मुझ पर ज़कात वाजिब नहीं। ये मुक़द्दमा औहज़रत (ﷺ) तक पहुँचा तो आपने फ़र्माया कि तुम लोग ख़ालिद पर जुल्म कर रहे हो। उसने तो साल के पूरा होने से पहले ही अपने तमाम सामान को फ़ी सबीलिल्लाह वक़फ़ कर दिया है। पस उस पर इस माल में ज़कात वाजिब नहीं है।

अअतुदहू के बारे में मौलाना फ़र्माते हैं, बिजम्मिल्मुषन्नाति जम्उ अतदिन बिफ़त्हतैनि व फ़ी मुस्लिमिन अतादुहू बिजियादतिल्अलिफ़ बअदत्ताइ व हुव अयज़न जम्उहू व क़ालन्नववी वाहिदुहू अतादुन बिफ़त्हिल्लेनि व क़ालजज़ी अल्आतद अल्आतादु जम्उ अतादिन व हुव मा उदुहू मिस्सलाहि वहवाब्बि वल्आलातिल्हबि व यज़मउ अला आतिदहू बिक्स्तिताइ अयज़न व क़ील हुवलख़ैलु ख़ास्सतन युक़ालु फ़र्सुन अतीद सुल्बुन औ मुदहुन लिर्कूबि व सरीउल्चुषूबि.

ख़ुलासा ये है कि अअतिदुन अतिदुन की जमा है और मुस्लिम में इसकी जमा (बहुवचन) अलिफ़ के साथ अअतिदा भी आई है। नववी ने कहा कि इसका वाहिद इताद है। जज़री ने कहा कि इअतिदा और इताद इतादुन की जमा है। हर वो चीज़ हथियार से और जानवरों से उन आलाते जंग से जो कोई जंग के लिये उनको तैयार करे और उसकी जमा इअतदहू भी है। और कहा गया है कि इससे ख़ास घोड़ा ही मुराद है। फ़रसुन अतीदुन उस घोड़े पर बोला जाता है जो बहुत ही तेज़ मंज़बूत सवारी के क़ाबिल हो। नीज़ क़दम जल्द कुदाने और दौड़ने वाला हो।

1448. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि मुझसे शुमामा बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने कि अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने उन्हें (अपने दौरे-ख़िलाफ़त में फ़र्ज़ ज़कात से मुता'ल्लिक़ हिदायत देते हुए) अल्लाह और रसूल के हुक्म के मुताबिक़ ये फ़र्मान लिखा कि जिसका स़दका बिन्त मजाज़ तक पहुँच गया हो और उसके पास बिन्ते मजाज़ नहीं बल्कि बिन्ते लबून है। तो उससे वही ले लिया जाएगा और उसके बदले में स़दका वसूल करने वाला बीस दिरहम या दीनार या दो बकरियाँ जाइद दे देगा और अगर उसके पास बिन्ते मजाज़ नहीं है बल्कि इब्ने लबून है तो ये इब्ने लबून ही ले जाएगा और उस मूरत में कुछ नहीं दिया जाएगा। वो मादा या नर कैंट जो तीसरे साल में लगा हो।

(दीगर मक़ाम : 1450, 1451, 1453, 1454, 1455, 2478,

١٤٤٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ. حَدَّثَنِي ثُمَامَةُ أَنَّ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ أَيْيَ أَمَرَ اللَّهُ رَسُولُهُ ﷺ ((وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بِنْتُ مَخَاضٍ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ وَعِنْدَهُ لَبُونٌ فَإِنَّهَا يُقْبَلُ مِنْهُ وَيُعْطِيهِ الْمَصْدُوقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ بِنْتُ مَخَاضٍ عَلَى وَحْهَيَا وَعِنْدَهُ ابْنٌ لَبُونٌ فَإِنَّهُ يُقْبَلُ مِنْهُ وَلَيْسَ مِنْهُ شَيْءٌ)).

[أطرافه في : ١٤٥٠، ١٤٥١، ١٤٥٣،

١٤٥٤، ١٤٥٥، ١٤٥٥، ٢٤٨٧،

٣١٠٦، ٥٨٧٨، ٦٩٥٥.]

1449. हमसे मुअम्मिल बिन हिशाम ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल ने अय्यूब से बयान किया और उनसे अत्ताअ बिन अबी रबाह ने कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बतलाया। उस वक़्त मैं मौजूद था जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुत्बे से पहले नमाज़ (ईद) पढ़ी। फिर आपने देखा कि औरतों तक आपकी आवाज़ नहीं

١٤٤٩ - حَدَّثَنَا مُؤَمَّلٌ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَاحٍ قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا. ((أَشْهَدُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

पहुँची, इसलिये आप उनके पास भी आए। आपके साथ बिलाल (रज़ि.) थे जो अपना कपड़ा फैलाए हुए थे। आप ने औरतों को वा'ज सुनाया और उनसे सद्का करने के लिये फ़र्माया और औरतें (अपना सद्का बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में) डालने लगीं। ये कहते वक़्त अय्यूब ने कान और गले की तरफ़ इशारा किया। (राजेअ: 97)

لَصَلَّى قَبْلَ الْخُطْبَةِ فَرَأَى أَنَّهُ لَمْ يَسْمَعْ
النِّسَاءَ، فَأَتَاهُنَّ وَمَعَهُ بِلَالٌ نَاشِئٌ قُوْبُهُ
فَوَعَّظَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ أَنْ يَتَصَدَّقْنَ، فَجَعَلَتْ
الْمَرْأَةُ تَلْفِيًّ. وَأَشَارَ أَيُّوبُ إِلَى أُذُنِهِ
وَأَلَى خَلْفِهِ. [راجع: ٩٨]

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने मक्कादे बाब के लिये इससे ये भी इस्तिदलाल किया कि औरतों ने सद्का में अपने ज़ेवरात पेश किये जिनमें बाज़ ज़ेवर चाँदी-सोने के न थे।

बाब 34 : ज़कात लेते वक़्त जो माल जुदा-जुदा हो वो इकट्ठे न किये जाएँ और जो इकट्ठे हों वो जुदा-जुदा न किये जाएँ और सालिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से ऐसा ही रिवायत किया है

٣٤- بَابُ لَا يُجْمَعُ بَيْنَ مُتَفَرِّقٍ،
وَلَا يَفْرَقُ بَيْنَ مُجْمَعٍ وَيُذَكَّرُ عَنْ
سَالِمٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ

1450. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अन्सारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि मुझसे बुमामा ने बयान किया, और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र स़िदीक़ (रज़ि.) ने उन्हें वही चीज़ लिखी थी जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़रूरी क़रार दिया था। ये कि ज़कात (की ज़्यादाती) के ख़ौफ़ से जुदा-जुदा माल को एकजा और एकजा माल को जुदा-जुदा न किया जाए।

١٤٥٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ
الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي
لُثَمَّةُ أَنَّ أَنَسَ بْنَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا
بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ الْبَيِّنَاتُ فَرَضَ
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((وَلَا يُجْمَعُ بَيْنَ مُتَفَرِّقٍ،
وَلَا يَفْرَقُ بَيْنَ مُجْمَعٍ عَشِيَةِ الصَّدَقَةِ)).

तशरीह: सालिम की रिवायत को इमाम अहमद और अबू यज़ला और तिर्मिज़ी वग़ैरह ने वज़ल किया है। इमाम मालिक ने मौता में इसकी तफ़सीर यूँ बयान की है मज़लन तीन आदमियों की अलग अलग 40-40 बकरियाँ हों तो हर एक पर एक बकरी ज़कात की वाजिब है। ज़कात लेने वाला जब आया तो तीनों ने अपनी बकरियाँ एक जगह कर दी। उस सूरत में एक ही बकरी देनी पड़ेगी। इसी तरह दो आदमियों की शिकत के माल में मज़लन दो सौ बकरियाँ हों तो तीन बकरियाँ ज़कात की लाज़िम होगी और अगर वो ज़कात लेने वाला जब आए उसको अलग अलग कर दें तो दो ही बकरियाँ देनी होंगी। इससे मना किया गया है क्योंकि ये हक़ तआला के साथ फ़रेब करना है, मआज़ अल्लाह वो तो सब जानता है। (वहीदी)

बाब 35 : अगर दो आदमी साझी हो तो ज़कात का खर्चा हिसाब से बराबर-बराबर एक दूसरे से मजरा कर लें

और ताऊस और अत्ताअ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब दो शरीकों के जानवर अलग-अलग हों, अपने-अपने जानवर को पहचानते हों

٣٥- بَابُ مَا كَانَ مِنْ خِلَاطَيْنِ
فَانَّهُمَا يَتَرَا جَعَانِ بَيْنَهُمَا بِالسُّوِيَةِ
وَقَالَ طَاوُسٌ وَعَطَاءُ: إِذَا عَلِمَ الْخِلَاطَانِ
أَمْوَالَهُمَا فَلَا يُجْمَعُ مَالُهُمَا وَقَالَ سُفْيَانُ:

तो उनको इकट्ठा न करें और सुफ़यान ब़ौरी ने फ़र्माया कि ज़कात उस वक़्त तक वाजिब नहीं हो सकती कि दोनों शरीकों के पास चालीस-चालीस बकरियाँ न हो जाएँ। (राजेअ : 1448)

1451. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि मुझसे घुमामा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उन्हें फ़र्ज़ ज़कात में वही बात लिखी थी जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुकर्रर फ़र्माई थी, इसमें ये भी लिखवाया गया कि जब दो शरीक हो तो वो अपना हिसाब बराबर कर लें। (राजेअ : 1448)

لَا تَجِبُ حَتَّى يَتِمَّ لِهَذَا أَرْبَعُونَ شَاةً وَلِهَذَا أَرْبَعُونَ شَاةً [راجع: ١٤٤٨]

١٤٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي ثُمَامَةُ بْنُ أَنَسٍ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ أَنِّي فَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((وَمَا كَانَ مِنْ خَلِيطَيْنِ فَلَهُمَا يَتْرَاجَعَانِ بَيْنَهُمَا بِالسُّوَيْدِ)). [راجع: ١٤٤٨]

तशरीह : अत्ता के क़ौल को अबू उबैद ने किताबुल अम्वाल में वस्ल किया। उनके क़ौल का मतलब ये है कि जुदा-जुदा रहने देंगे और अगर हर एक का माल बक़द्रे निज़ाब होगा तो उसमें से ज़कात लेंगे वरना न लेंगे। मज़लन दो शरीकों की 40 बकरियाँ हैं मगर हर शरीक को अपनी अपनी बीस बकरियाँ अलग और मुअय्यिन तौर से मा'लूम है तो किसी पर ज़कात न होगी और ज़कात लेने वाले को ये नहीं पहुँचता कि दोनों के जानवर एक जगह करके चालीस बकरियाँ समझकर एक बकरी ज़कात की ले और सुफ़यान ने जो कहा इमाम अबू हनीफ़ा का भी यही क़ौल है लेकिन इमाम अहमद, इमाम शाफ़िई और अहले हदीष का ये क़ौल है कि जब दोनों शरीकों के जानवर मिलकर हद्दे निज़ाब को पहुँच जाए तो ज़कात ली जाएगी। (वहबीदी)

बाब 36 : ऊँटों की ज़कात का बयान

इस बाब में हज़रत अबूबक्र, अबूज़र और अबूहुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है

1452. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह बिन मदीनी ने बयान किया, कहा कि मुझसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अत्ताअ बिन यज़ीद ने और उनसे अबूसईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि एक देहाती ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से हिजरत के मुता'ल्लिक पूछा (या'नी ये कि आप इज़ाज़त दें तो मैं मदीना में हिजरत कर आऊँ) आपने फ़र्माया, अफ़सोस! इसकी तो शान बड़ी है। क्या तेरे पास ज़कात देने के लिये कुछ ऊँट हैं जिनकी तू ज़कात दिया करता है? उसने कहा हाँ! इस पर आपने फ़र्माया कि फिर क्या है समन्दरों के पार (जिस मुल्क में तू रहे वहाँ) अमल करता रह अल्लाह तेरे किसी अमल का प्रवाब कम नहीं करेगा।

٣٦- بَابُ زَكَاةِ الْإِبِلِ كَرُهُ أَبُو بَكْرٍ وَأَبُو ذَرٍّ وَأَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

١٤٥٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ أَعْرَابِيًّا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْهَجْرَةِ فَقَالَ : ((وَيْحَكَ، إِنَّ شَأْنَهَا هَدِيدٌ، فَهَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ تُؤَدِّي صَدَقَتَهَا؟)) قَالَ : نَعَمْ. قَالَ : ((وَلَا عَمَلٍ مِنْ وَرَاءِ الْبَحَارِ لِإِنَّ اللَّهَ لَنْ يَبْرِكَ مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا)).

(दीगर मक़ाम : 2633, 3923, 6165)

तशरीह :

मतलब आपका ये था कि जब तुम अपने मुल्क में अरकाने इस्लाम आज़ादी के साथ अदा कर रहे हो यहाँ तक कि ऊँट की ज़कात तक भी बाक़ायदा निकालते रहते हो तो ख़्वाह-मख़्वाह हिजرات का ख़याल करना ठीक नहीं, हिजرات कोई मा' मूली काम नहीं है। घर-दर छोड़ने के बाद जो तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं उनको हिजرات करने वाले ही जानते हैं। मुसलमानाने हिन्द को इस हदीस से सबक़ लेना चाहिये। अल्लाह नेक समझ अज्ञा करे, आमीन!

बाब 37 : जिसके पास इतने ऊँट हो कि ज़कात में एक बरस की ऊँटनी देना हो और वो उसके पास न हो

1453. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अन्सारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अनस (रज़ि.) ने कि अबूबक्र (रज़ि.) ने उनके पास फ़र्ज़ ज़कात के उन फ़र्ज़ों के मुता'ल्लिक लिखा था जिनका अल्लाह ने अपने रसूल (ﷺ) को हुक्म दिया है। ये कि जिसने ऊँटों की ज़कात जज़आ तक पहुँच जाए और वो जज़आ उसके पास न हो बल्कि हिक़का हो तो उससे ज़कात में हिक़का ही लिया जाएगा लेकिन उसके साथ दो बकरियाँ भी ली जाएगी, अगर उनके देने में उसे आसानी हो, वरना बीस दिरहम लिये जाएंगे (ताकि हिक़का की कमी पूरी हो जाए) और अगर किसी पर ज़कात में हिक़का वाजिब हो जाए और हिक़का उसके पास न हो बल्कि जज़आ हो तो उससे जज़आ ही ले लिया जाएगा और ज़कात वसूल करने वाला ज़कात देने वाले को बीस दिरहम या दो बकरियाँ दे देगा और अगर किसी पर ज़कात हिक़का के बराबर वाजिब हो गई और उसके पास सिर्फ़ बिन्त लबून है तो उससे बिन्त लबून ले ली जाएगी और ज़कात देने वाले को दो बकरियाँ या बीस दिरहम साथ में और देने पड़ेंगे और अगर किसी पर ज़कात बिन्त लबून वाजिब हो और उसके पास हिक़का हो तो हिक़का ही उससे ले लिया जाएगा और इस सूरत में ज़कात वसूल करने वाला बीस दिरहम या दो बकरियाँ ज़कात देने वाले को देगा और किसी के पास ज़कात में बिन्त लबून वाजिब हो और बिन्त लबून उसके पास नहीं बल्कि बिन्त मख़ाज़ है तो उससे बिन्त मख़ाज़ ही ले लिया जाएगा। लेकिन ज़कात देने वाला उसके साथ बीस दिरहम या दो बकरियाँ देगा।

(राजेअ : 1448)

۳۷- بَابُ مَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ صَدَقَةُ بَنْتٍ مَخَاضٍ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ

۱۴۵۳- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي لُثَمَّةُ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ فَرِيعَةُ الصَّدَقَةِ إِلَيْهِ أَمَرَ اللَّهُ رَسُولَهُ ﷺ ((مَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ مِنَ الْإِبِلِ صَدَقَةُ الْجَذَعَةِ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ جَذَعَةٌ وَعِنْدَهُ حِقَّةٌ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ الْحِقَّةُ وَيَجْعَلُ مَعَهَا شَاتَيْنِ إِنْ اسْتَبْرَأَ لَهُ أَوْ عِشْرِينَ دِرْهَمًا. وَمَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ صَدَقَةُ الْحِقَّةِ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ الْحِقَّةُ وَالْجَذَعَةُ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ الْجَذَعَةُ وَيُعْطِيهِ الْمُصَدَّقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ. وَمَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ صَدَقَةُ الْحِقَّةِ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ إِلَّا بَنْتُ لَبُونٍ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ بَنْتُ لَبُونٍ وَيُعْطِي شَاتَيْنِ أَوْ عِشْرِينَ دِرْهَمًا. وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بَنْتُ لَبُونٍ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ وَعِنْدَهُ بَنْتُ مَخَاضٍ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ بَنْتُ مَخَاضٍ وَيُعْطِي مَعَهَا عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ

شَاتَيْنِ)). [راجع: ۱۴۴۸]

तशरीह :

ऊँट की जकात पाँच रास से शुरू होती है, इससे कम पर जकात नहीं। पस इस सूत्र में चौबीस ऊँट तक एक बन्त मखाज़ वाजिब होगी या'नी वो ऊँटनी जो एक साल पूरा करके दूसरे में लग रही हो वो ऊँटनी हो या ऊँट 36 पर बन्ते लबून या'नी वो ऊँट जो दो साल का हो। तीसरे में चल रहा हो। फिर चालीस पर एक हिक़ा या'नी वो ऊँट जो तीन साल का होकर चौथे में चल रहा हो। फिर 61 पर जिज़आ या'नी वो ऊँट जो चार साल का होकर पाँचवें में चल रहा हो। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि ऊँट की जकात मुख्तलिफ़ उग्र के ऊँट जो वाजिब हुए हैं अगर किसी के पास इस उग्र का ऊँट न हो जिसका देना स़दका के तौर पर वाजिब हुआ था तो उससे कम या ज़्यादा उग्र वाला ऊँट भी लिया जा सकेगा। मगर कम देने की सूत्र में खुद अपनी तरफ़ से और ज़्यादा देने की सूत्र में स़दका वसूल करने वालों की तरफ़ से रुपया या कोई और चीज़ इतनी मालियत की दी जाएगी जिससे इस कमी या ज़्यादाती का हक़ अदा हो जाए। जैसा कि तफ़सीलात हदीषे मज़कूर में दी गई है और मज़ीद तफ़सीलात हदीषे ज़ेल में आ रही है।

बाब 38 : बकरियों की जकात का बयान

1454. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुब्रआ अन्सारी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे बुमामा बिन अब्दुल्लाह बिन अनस ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि अबूबक्र (रज़ि.) ने जब उन्हें बहरीन (का हाकिम बनाकर) भेजा तो उनको ये परवाना लिखा।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है। ये जकात का वो फ़रीज़ा है, जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुसलमानों के लिये फ़र्ज़ करार दिया है और रसूलुल्लाह (ﷺ) को अल्लाह तआला ने इसका हुक्म दिया। इसलिये जो शख्स मुसलमानों से इस परवाने के मुताबिक़ जकात माँगे तो मुसलमानों को उसे दे देना चाहिये और अगर कोई इससे ज़्यादा माँगे तो हर्गिज़ न दे। चौबीस या इससे कम ऊँटों में हर पाँच ऊँट पर एक बकरी दी जाएगी। (पाँच से कम में कुछ नहीं) लेकिन जब ऊँटों की ता'दाद पच्चीस तक पहुँच जाए तो पच्चीस से पैतीस तक एक-एक बरस की ऊँटनी वाजिब होगी जो मादा होती है। जब ऊँट की ता'दाद छत्तीस तक पहुँच जाए (तो छत्तीस से) पैतालीस तक दो बरस की मादा वाजिब होगी। जब ता'दाद छियालीस तक पहुँच जाए (तो छियालीस से) साठ तक में तीन बरस की ऊँटनी वाजिब होगी जो जुफ़्ती के काबिल होती है। जब ता'दाद इकसठ तक पहुँच जाए (तो इकसठ से) पचहत्तर तक चार बरस की मादा वाजिब होगी। जब ता'दाद छिहत्तर तक पहुँच जाए (तो पचहत्तर से) नब्बे तक दो

۳۸- بَابُ زَكَاةِ الْغَنَمِ

۱۴۵۴- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْمُثَنَّى الْأَنْصَارِيُّ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ : حَدَّثَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَنَسٍ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ هَذَا الْكِتَابَ لَمَّا وَجَّهَهُ إِلَى الْبَحْرَيْنِ ((بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - هَذِهِ قَرِيبَةُ الصَّدَقَةِ الَّتِي فَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى الْمُسْلِمِينَ، وَالَّتِي أَمَرَ اللَّهُ بِهَا رَسُولُهُ، لَمَنْ سَبَّلَهَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى وَجْهِهَا فَلْيُعْطِهَا، وَمَنْ سَبَّلَ لَوْفَهَا فَلَا يُعْطَ : فِي أَرْبَعٍ وَعِشْرِينَ مِنَ الْإِبِلِ لَمَّا دُونَهَا مِنَ الْغَنَمِ مِنْ كُلِّ خَمْسٍ شَاةٌ، إِذَا بَلَغَتْ خَمْسًا وَعِشْرِينَ إِلَى خَمْسٍ وَثَلَاثِينَ فَفِيهَا بَنْتُ مَخَاضٍ أَثْنَى، فَإِذَا بَلَغَتْ سِتًّا وَثَلَاثِينَ إِلَى خَمْسٍ وَأَرْبَعِينَ فَفِيهَا بَنْتُ لَبُونٍ أَثْنَى، فَإِذَا بَلَغَتْ سِتًّا وَأَرْبَعِينَ إِلَى سِتِّينَ فَفِيهَا حِقَّةٌ طَرَوْقَةٌ الْجَمَلِ، فَإِذَا بَلَغَتْ وَاحِدَةً وَسِتِّينَ إِلَى خَمْسٍ وَسِتِّينَ فَفِيهَا جَذَعَةٌ، فَإِذَا بَلَغَتْ

बरस की दो ऊँटनियाँ वाजिब होगी। जब ता'दाद इक्यानवे तक पहुँच जाए तो (इक्यानवे से) एक सौ बीस तक तीन तीन बरस की दो ऊँटनियाँ वाजिब होगी। जो जुप्ती के काबिल हो। फिर एक सौ बीस से भी ता'दाद आगे बढ़ जाए तो हर चालीस पर दो बरस की ऊँटनी वाजिब होगी और हर पचास पर एक तीन बरस की। और अगर किसी के पास चार ऊँट से ज्यादा नहीं तो उस पर जकात वाजिब न होगी। मगर उनका मालिक अपनी खुशी से कुछ दे और उन बकरियों की जकात (साल के अक्सर हिस्से जंगल या मैदान वगैरह में) चर कर गुजारती है, अगर उनकी ता'दाद चालीस तक पहुँच गई हो तो (चालीस से) एक सौ बीस तक एक बकरी वाजिब होगी और जब एक सौ बीस से ता'दाद बढ़ जाए (तो एक सौ बीस से) से दो सौ तक दो बकरियाँ वाजिब होगी। अगर दो सौ से भी ता'दाद बढ़ जाए तो (दो सौ से) तीन सौ तक तीन बकरियाँ वाजिब होगी और जब तीन सौ से भी ता'दाद आगे निकल जाए तो अब हर एक सौ पर एक बकरी वाजिब होगी। अगर किसी शख्स की चरने वाली बकरियाँ चालीस से एक भी कम हो तो उन पर जकात वाजिब नहीं होगी। मगर अपनी खुशी से मालिक कुछ देना चाहे तो दे सकता है। और चाँदी में जकात चालीसवाँ हिस्सा वाजिब होगी लेकिन अगर किसी के पास एक सौ नौ (दिरहम) से ज्यादा नहीं है तो उस पर जकात वाजिब नहीं होगी मगर खुशी से कुछ अगर मालिक देना चाहे तो और बात है। (राजेअ: 6448)

तशरीह: जकात उन्हीं गाय, बैल या ऊँटों या बकरियों में वाजिब है जो आधे साल से ज्यादा जंगल में चर लेती हों और अगर आधे साल से ज्यादा उनको घर से निकालना पड़ता है तो उन पर जकात नहीं है। अहले हदीष के नज़दीक सिवाए इन तीन जानवरों या'नी ऊँट, गाय, बकरी के सिवा और किसी जानवर में जकात नहीं है। मषलन घोड़ों या खच्चरों या गधों में (वहीदी)

बाब 39 : जकात में बूढ़ा या ऐबदार जानवर न लिया जाएगा मगर जब जकात वसूल करने वाला मुनासिब समझे तो ले सकता है

يَغْنَى سِتَا وَسَتَيْنِ - إِلَى سِتَيْنِ فِيهَا بِنْتَا تَبُونِ فَإِذَا بَلَغَتْ إِحْدَى وَسِتَيْنِ إِلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ فِيهَا حِقَّتَانِ طَرُوقَتَا الْجَمَلِ. فَإِذَا زَادَتْ عَلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ فِي كُلِّ أَرْبَعِينَ بِنْتُ كَبُونٍ وَكُلُّ خَمْسِينَ حِقَّةٌ. وَمَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ إِلَّا أَرْبَعٌ مِنَ الْإِبِلِ فَلَيْسَ فِيهَا صَدَقَةٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا، فَإِذَا بَلَغَتْ خَمْسًا مِنَ الْإِبِلِ فِيهَا شَاةٌ. وَكُلُّ صَدَقَةِ الْفَسَمِ فِي سَائِمَتِهَا إِذَا كَانَتْ أَرْبَعِينَ إِلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ شَاةٌ. فَإِذَا زَادَتْ عَلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ إِلَى مِائَتَيْنِ شَاتَانِ، فَإِذَا زَادَتْ عَلَى مِائَتَيْنِ إِلَى ثَلَاثِمِائَةٍ فِيهَا ثَلَاثُ شِيَاهٍ فَإِذَا زَادَتْ عَلَى ثَلَاثِمِائَةٍ فِي كُلِّ مِائَةٍ شَاةٌ، فَإِذَا كَانَتْ سَائِمَةُ الرَّجُلِ نَاصِئَةً مِنْ أَرْبَعِينَ شَاةً وَاحِدَةً فَلَيْسَ فِيهَا صَدَقَةٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا. وَكُلُّ الرُّقْعَةِ رُبْعُ الْفُسْرِ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ إِلَّا سِتَيْنِ وَمِائَةً فَلَيْسَ فِيهَا شَيْءٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا. [راجع: ٦٤٤٨]

٣٩ - بَابُ لَا تُوْخَذُ فِي الصَّدَقَةِ هَرِمَةٌ وَلَا ذَاتُ عَوَارٍ وَلَا تَيْسٌ، إِلَّا مَا شَاءَ الْمُصَدِّقُ

कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे बुमामा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) के बयानकर्दा अहकाम ज़कात के मुताबिक लिखा कि ज़कात में बूढ़े, ऐबी और नर न लिये जाएँ, अलबत्ता अगर स़दका वसूल करने वाला मुनासिब समझे तो ले सकता है।

मसलन ज़कात के जानवर सब मादाएं ही मादाएं हो। नर की ज़रूरत हो तो नर ले सकता है। या किसी इमदा नस्ल के ऊँट या गाय या बकरी की ज़रूरत हो और गो इसमें ऐब हो उसकी नस्ल लेने में आइन्दा फ़ायदा हो तो ले सकता है।

बाब 40 : बकरी का बच्चा ज़कात में लेना

1456. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ख़बर दी और उन्हें जुहरी ने (दूसरी सनद) और लैज़ बिन सअद ने बयान किया कहा कि मुझसे अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्बदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन इत्बा बिन मस्ऊद ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बतलाया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने (औहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के फौरन बाद ज़कात देने से इन्कार करने वालों के मुता'ल्लिक फ़र्माया था) क़सम अल्लाह की! अगर ये मुझे बकरी के एक बच्चे को भी देने से इन्कार करेंगे जिसे ये रसूलुल्लाह (ﷺ) को दिया करते थे तो मैं उनके इस इन्कार पर उनसे जिहाद करूँगा। (राजेअ: 1400)

1457. इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया इसके सिवा और कोई बात नहीं थी जैसा कि मैं समझता हूँ कि अल्लाह तआला ने अबूबक्र (रज़ि.) को जिहाद के लिये शरहे-सज़्र अज़ा फ़र्माया था और फिर मैंने भी यही समझा कि फ़ैसला उन्हीं का हक़ था।

(राजेअ: 1399)

तशरीह:

बकरी का बच्चा उस वक़्त ज़कात में लिया जाएगा कि तहसीलदार मुनासिब समझे या किसी शाख्स के पास सिर्फ़ बच्चे ही बच्चे रह जाए। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हदीष के उन्वान में ये इशारा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के उन लफ़्ज़ों से निकाला कि अगर ये लोग बकरी का एक बच्चा जिसे औहज़रत (ﷺ) के ज़माने में दिया करते थे। इससे भी इन्कार करेंगे तो मैं उन पर जिहाद करूँगा। पहले पहल हज़रत इमर (रज़ि.) को उन लोगों से जो ज़कात न देते थे लड़ने में तअम्मुल हुआ क्योंकि वो कलिमा-गो थे। लेकिन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को उनसे ज़्यादा इल्म था। आखिर में हज़रत इमर (रज़ि.) भी इनसे मुत्तफ़िक़ हो गए। इस हदीष से ये साफ़ निकलता है कि सिर्फ़ कलिमा पढ़ लेने से आदमी का इस्लाम पूरा नहीं होता

حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ : حَدَّثَنِي ثُمَامَةُ أَنَّ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَتَبَ لَهُ الْيَاقِينُ أَمْرَ اللَّهِ رَسُولُهُ ﷺ «وَلَا يُخْرَجُ فِي الصَّدَقَةِ هَرَمَةٌ وَلَا ذَاتُ عَوَارٍ وَلَا تَسْرٍ إِلَّا مَا شَاءَ الْمُصَدَّقُ».

٤- باب أَخَذِ الْعَنَاقِ فِي الصَّدَقَةِ
١٤٥٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ الزُّهْرِيِّ. ح. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: «وَاللَّهِ لَوْ مَنَعُونِي عَنَاقًا كَانُوا يُؤْذُونَهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ لَقَاتَلْتُهُمْ عَلَى مَنَعِهَا».

[راجع: ١٤٠٠]

١٤٥٧- قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: «رَفَعْنَا هُوَ إِلَّا أَنْ رَأَيْتُ أَنَّ اللَّهَ شَرَحَ صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِالْقِتَالِ فَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَقُّ».

[راجع: ١٣٩٩]

जब तक कि इस्लाम के तमाम उसूल और क़तई फ़राइज़ को न मानें। अगर इस्लाम के एक क़तई फ़राइज़ का कोई इन्कार करे जैसे नमाज़ या रोज़ा या ज़कात या जिहाद या हज्ज तो काफ़िर हो जाता है और उस पर जिहाद करना दुरुस्त है। (वहीदी)

बाब 41 : ज़कात में लोगों से उम्दा और छंटे हुए माल न लिये जाएंगे

1458. हमसे उमय्या बिन बिस्ताम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ैद बिन ज़रीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे रौह बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन उमय्या ने, उनसे यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन सैफ़ी ने, उनसे अबू मअबद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुआज (रज़ि.) को यमन भेजा तो उनसे फ़र्माया कि देखो! तुम एक ऐसी क़ौम के पास जा रहे हो जो अहले किताब (ईसाई-यहूदी) हैं। इसलिये सबसे पहले उन्हें अल्लाह की इबादत की दा'वत देना। जब वो अल्लाह तआला को पहचान लें (या'नी इस्लाम कुबूल कर लें) तो उन्हें बताना कि अल्लाह तआला ने उनके लिये दिन और रात में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। जब वो इसे भी अदा करें तो उन्हें बतलाना कि अल्लाह तआला ने उन पर ज़कात फ़र्ज़ करार दी है जो उनके सरमाएदारों से ली जाएगी (जो साहिबे निसाब होंगे) और उन्हीं के फ़क़ीरों में तक्सीम कर दी जाएगी। जब वो इसे भी मान लें तो उनसे ज़कात वसूल कर। अलबत्ता उनकी उम्दा चीज़ें (ज़कात के तौर पर लेने से) परहेज़ करना। (राजेअ : 1390)

41 - بَابُ لَا تُؤْخَذُ كَرَائِمُ أَمْوَالِ النَّاسِ فِي الصَّدَقَةِ

1458 - حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ بَسْطَامٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ الْقَاسِمِ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَالِحٍ عَنْ أَبِي مَعْبُدٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمَّا بَعَثَ مُعَاذًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَى الْيَمَنِ قَالَ: ((إِنَّكَ تَقْدُمُ عَلَى قَوْمٍ أَهْلُ كِتَابٍ، فَلَتَكُنْ أَوَّلُ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ عِبَادَةُ اللَّهِ، فَإِذَا عَرَفُوا اللَّهَ فَانْخَبِرْهُمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي يَوْمِهِمْ وَلَيْلِهِمْ، فَإِذَا فَعَلُوا الصَّلَاةَ فَانْخَبِرْهُمْ أَنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ زَكَاةً تُؤْخَذُ مِنْ أَمْوَالِهِمْ وَتُرَدُّ عَلَى فُقَرَائِهِمْ، فَإِذَا أَطَاعُوا بِهَا فَخُذْ مِنْهُمْ، وَتَوَقَّ كَرَائِمَ أَمْوَالِ النَّاسِ)). (راجع: 1390)

तशरीह : उनके फ़क़ीरों में बांटने का मतलब ये है कि उन्हीं के मुल्क के फ़क़ीरों को इस मा'नी के तहत एक मुल्क की ज़कात दूसरे मुल्क के फ़क़ीरों को भेजना नाजाइज़ करार दिया गया है। मगर जुम्हूर इलमा कहते हैं कि मुराद मुसलमान फ़क़ीर हैं। ख़वाह वो कहीं हों और किसी भी मुल्क के हों, इस मा'नी के तहत ज़कात का दूसरे मुल्क में भेजना दुरुस्त रखा गया है। हदीष और बाब की मुताबक़त जाहिर है। हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब (रह.) फ़र्माते हैं, व क़ाल शैख़ुन फ़ी शर्हि तिमिज़ी वज्जाहिर् इन्दी अदमुन्नक़ल इल्ला इज़्जा फकदल्मुस्तहिक्कून लहा औ तकूनु फिन्नक़ल मस्तलहतुन अन्फ़उ व अहम्मु मिन अदमिही वल्लाहु तआला आलमु. (मिअत)

या'नी हमारे शैख़ मौलाना अब्दुर्हमान साहब शरह तिमिज़ी में फ़र्माते हैं कि मेरे नज़दीक़ जाहिर यही है कि सिर्फ़ इसी सूरत में वहाँ से ज़कात दूसरी जगह दी जाए जब वहाँ मुस्तहिक़ लोग न हों या वहाँ से नक़ल करने में कोई मस्लिहत हो या बहुत ही अहम हो और ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा-बख़्श हो कि वो न भेजने की सूरत में हासिल न हो तो ऐसी हालत में दूसरी जगह में ज़कात भेजी जा सकती है।

बाब 46 : पाँच ऊँटों से कम में

42 - بَابُ لَيْسَ فِيمَا دُونَ خَمْسٍ

ज़कात नहीं

ذُو دِ صَدَقَةٍ

1459. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि हमें इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी सअसआ माज़नी ने, उन्हें उनके बाप ने और उन्हें हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि पाँच वस्क़ से कम खजूरों में ज़कात नहीं और पाँच औक़िया चाँदी से कम चाँदी में ज़कात नहीं। इसी तरह पाँच ऊँटों से कम में ज़कात नहीं।

(राजेअ : 1405)

١٤٥٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَفْصَةَ الْمَازِنِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((لَيْسَ فِيْمَا ذُوْنَ خُمْسَةٍ أَوْسَقِي مِنَ التَّمْرِ صَدَقَةً، وَلَيْسَ فِيْمَا ذُوْنَ خُمْسٍ أَوْاقٍ مِنَ الْوَرَقِ صَدَقَةً، وَلَيْسَ فِيْمَا ذُوْنَ خُمْسٍ ذُوْدٌ مِنَ الْإِبِلِ

صَدَقَةً)). [راجع: ١٤٠٥]

इस हदीष के ज़ेल हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, अन अबी सईदिन खम्मस अवाक़ मिन्लवरकि सदक़तुन व हुव मुताबिकुन लिलफ़िज्जतर्जुमति व कान लिलमुसन्निफ़ि अराद अंय्युबय्यिन बित्तर्जुमति मा अबहम फ़ी लफ़िज्जल्हदीषि इतिमादन अला तरीक्लिउख़रा व अवाकुन बित्तनवीनि व बिइफ़्बातित्तहतानिय्यति मुशहदन व मुखक्कफ़न जम्ड ऊक्रिय्यतिन बिजम्मिल्लहम्जति व तश्दीदित्तहतानिय्यति व हकल्जयानी व फ़ीहि बिहज़िफ़्लअलिफ़ि व फ़हिल्लावि व मिक्दारुलऊक्रिय्यति फ़ी हाज़ल्हदीषि अर्बऊन दिहमन बिल्इत्तिफ़ाकि वल्मुरादु बिदिहमिल्लखास्सि मिन्लिफ़ज़्जति सवाअन कान मज़रूबन औ गैर मज़रूबिन.

औसक जम्ड वसकिन बिफ़हिल्लावि व यजूजु कस्रूहा कमा हकाहू साहिबुल्मुहकम व जम्डहू हीनइज़िन औसाक़ कहम्लिन व अहमाल व क़द वकअ कज़ालिक फ़ी रिवायतिल्मुस्लिम व हुव सिन्न साअन बिल्इत्तिफ़ाकि व वकअ फ़ी रिवायतिब्नि माजा मिन् तरीकि अबिल्बख़तरी अन अबी सईदिन नहव हाज़ल्हदीषि व फ़ीहि वल्वसकु सिन्न साअन व कद उज्मड अला ज़ालिक फ़ी खम्मसति औसकिन फ़मा ज़ाद अज्मअल्लमाड अला इशतिरातिल्हौलि फिल्माशिय्यति वन्नक्दु दूनल्मअशराति वल्लाहु आलमु. (फ़तुल बारी)

इबारत का खुलासा ये है कि पाँच औक़िया चाँदी में ज़कात है। यही लफ़ज़ बाब के बारे में है और दूसरी रिवायत पर ए'तिमाद करते हुए लफ़ज़े हदीष में जो इब्नाम था, उसे तर्जुमा के ज़रिये बयान कर दिया। और लफ़ज़ अवाक़ औक़िया का बहुवचन है। जिसकी मिक्दार मुत्फ़का तौर पर चालीस दिरहम है। दिरहम से ख़ालिस चाँदी का सिक्का मुराद है जो मज़रूब हो या गैर मज़रूब।

लफ़ज़ औसक वस्क़ की जमा है और वो मुत्फ़का तौर पर साठ साअ पर बोला गया है। इस पर इज्माअ है कि उश्र के लिये पाँच वस्क़ का होना ज़रूरी है और जानवरों के लिये नक़दी के लिये एक साल का गुज़र जाना भी शर्त है। इस पर इल्मा का इज्माअ है। अज्नास जिनसे उश्र निकाला जाता है उनके लिये साल गुज़रने की शर्त नहीं है। हज़रत मौलाना अबैदुल्लाह साहब फ़र्माते हैं, कुल्तु हाज़ल्हदीषु सरीहुन फ़ी अन्नन्निसाब शर्तुन लिवुजूबिल्अशरि औ निस्फुल्अशरि फ़ला तजिबुज्ज़कातु फ़ी शैइन मिन्ज़ुज़ुइ वषिमारि हत्ता तब्लुग़ खम्मसत औसक व हाज़ा मज़हबु अक्षरि अहलिल्इल्मि वस्माइ अर्बअत अम्दाद वल्मुदुर्त्तुन औ धुलुधुर्त्तुन फ़म्माउ खम्मसत अर्तालिन व धुलुधुर्त्तुन ज़ालिक बिर्तलिल्लज़ी मिअत दिरहम व प्रमानियत इशरुन दिरहमन बिह्राहिमुल्लती कुल्लु उशरतिम्निहा वज़्नु सब्अति मषाकील. (मिआत)

या'नी मैं कहता हूँ कि ये हदीष स़ाह़त के साथ बतला रही है कि उश्र या निस्फ़े उश्र के लिये निस्साब शर्त है पस खेती और फलों में कोई ज़कात फ़र्ज न होगी जब तक वो पाँच वस्क़ को न पहुँच जाए और अक़षर अहले इल्म का यही मज़हब है

और एक वस्क साठ साअ का होता है और साअ चार मुद का होता है और मुद एक रत्ल और तिहाई रत्ल का। पस साअ के पाँच और तिहाई रत्ल हुए और ये हिसाब रत्ल से है जिसका वजन एक सौ अठ्ठाईस दिरहम के बराबर हों और दिरहम से मुराद वो जिसके लिये दस दिरहम का वजन सात मिफ्काल के बराबर हो।

कुछ उलम-ए-अहनाफ़ हिन्द ने यहाँ की ज़मीनियों से उश्र को साकिन्न करार देने की कोशिश की है जो यहाँ कि अराज़ी को खिराज़ी करार देते हैं। इस बारे में हज़रत मौलाना शैखुल हदीष उबैदुल्लाह (रह.) फ़र्माते हैं, इख़तलफ़ अस्हाबुल्फ़त्वा मिनल्हन्फिय्यति फी अराज़िल्मुस्लिमीन फी बिलादिल्हिन्दि फी ज़मनिल्इन्कलैज़ि व तख़बतू फी ज़ालिक फ़क़ाल बअज़हुम अन्न अराज़िल्हिन्दि लैसत बिउशरिय्यतिन वला खराजिय्यतिन बल अराज़िल्हौज़ि अय अराज़ी बैतिल्मालि व अराज़िल्मम्लिकति वल्हक्कु इन्दन बुजूबुलुशरि फी अराज़िल्हिन्दि मुत्तलक़न अय अला सिफ़तिन कानत फयजिबुलुशर अराज़िल्हिन्दि मुत्तलक़न अय अला सिफ़तिन कानत फयजिबुलुशर औ निस्फ़ुह अलल्मुस्लिमि फ़ीमा यहसुलु लहू मिनल्अर्ज़ि इज़ा बलगन्निसाब सवाअन कानतिल्अर्जु मिल्कन लहू औ लिगैरिही ज़र्दन फीहा अला सबीलिल्ज़ारति अविल्आरिय्यति अविल्मुज़ारति लिअन्नल्उशर फिल्हब्बि वज़ज़रइ वल्इबरति लिमध्यम्लिकुहू फयजिबुलुशर फ़ीहि अला मालिकिल्हिल्मुस्लिम व लैस मिम्पूनतिल्अर्ज़ि फला युहबु अन सिफ़तिहा वल्फरबिय्यतुल्लती ताखुजुहल्मम्लिकतु मिन अस्हाबिल्मज़ारिड फिल्हिन्दि लैसत खराजन शरइय्यन व ला मिम्मा यस्कुतु फ़ीज़तुलुशरि कमा ला यख़फ़ा वर्ज़िअ इल्मुगनी. (पेज 728, जिल्द 2, मिज़ांत : जिल्द 3, पेज 38)

या'नी अंग्रेज़ी, उर्दू में हिन्दी मुसलमानों की अराज़ियात के बारे में उलम-ए-अहनाफ़ ने जो साहिबाने फ़त्वा थे कुछ ने ये ख़ब्त इख़्तियार किया कि इन ज़मीनियों की पैदावार में उश्र नहीं है। इसलिये कि ये आराज़ी दारुल हरब हैं। कुछ ने कहा कि ये ज़मीनें न तो उशरी हैं और न खिराज़ी बल्कि ये हुकूमत की ज़मीनें हैं और हमारे नज़दीक अम्मे हक्क ये है कि आराज़िये हिन्द में मुत्तलक़न पैदावार निज़ाब पर मुसलमानों के लिये उश्र वाजिब है और इस बारे में ज़मीन पर अख़ाजात और सरकारी मालियाना वग़ैरह का कोई प'तिबार नहीं किया जाएगा क्योंकि हिन्दुस्तान में सरकार जो टैक्स लेती है, वो खिराजे शरई नहीं है और न उससे उश्र साकिन्न हो सकता है।

बाब 43 : गाय-बैल की ज़कात का बयान

और अबू हुमैद साएदी ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तुम्हें (क्रयामत के दिन इस हाल में) वो शख़्स दिखाऊँगा जो अल्लाह की बारगाह में गाय के साथ इस तरह आएगा कि वो गाय बोलती हुई होगी। (सूरह मोमिनून में लफ़ज़) ज्वार (ख़वार के हम मा'नी) यज़ारून (उस वक़्त कहते हैं जब) इस तरह लोग अपनी आवाज़ बुलन्द करें जैसे गाय बोलती है।

1460. हमसे इमर बिन हफ़स बिन ग़या़्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने मअरूर बिन सुवैद से बयान किया, उनसे अबूजर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के करीब पहुँच गया था और आप फ़र्मा रहे थे। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है या (आप ने क़सम इस तरह खाई) उस ज़ात की क़सम, जिसके

٤٣- بَابُ زَكَاةِ الْبَقَرِ

وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا غَرَفَنَ مَا جَاءَ اللَّهَ رَجُلٌ بِبَقَرَةٍ لَهَا حَوَارٌ)) وَيُقَالُ: ((جَوَارٌ)). تَجَارُونَ: أَيِ تَرْفَعُونَ أَصْوَاتَكُمْ كَمَا تَجَارُ الْبَقَرَةُ

١٤٦٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ حَفْصٍ بْنُ غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ الْمَعْرُورِ بْنِ سُوَيْدٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: انْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ))

सिवा कोई मा'बूद नहीं। या जिन अल्फ़ाज़ के साथ भी आपने क़सम खाई हो (इस ताकीद के बाद फ़र्माया) कोई भी ऐसा शख्स जिसके पास ऊँट, गाय या बकरी हो और वो उसका हक़ अदा न करता हो तो क़यामत के दिन उसे लाया जाएगा, दुनिया से बड़ी और मोटी-ताज़ी करके। फिर वो अपने मालिक को अपने खुरों से रौंदेगी और सींग मारेगी। जब आख़िरी जानवर उस पर से गुज़र जाएगा तो पहला जानवर फिर लौट कर आएगा (और उसे अपने सींग मारेगा और खुरों से रौंदेगा) उस वक़्त तक (ये सिलसिला बराबर क़ायम रहेगा) जब तक लोगों का फ़ैसला नहीं हो जाता। इस हदीष को बुक़ैर बिन अब्दुल्लाह ने अबू सालेह से रिवायत किया है, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (दीगर मक़ाम : 6638)

इस हदीष से बाब का मतलब या'नी गाय-बैल की ज़कात देने का वुजूब प्राबित हुआ क्योंकि अज़ाब इस अम्म के तर्क पर होगा जो वाजिब है। मुस्लिम की रिवायत में इस हदीष के ये लफ़्ज़ भी हैं और वो इसकी ज़कात न अदा करता हो। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) की शराइत के मुताबिक़ उन्हें गाय की ज़कात के बारे में कोई हदीष नहीं मिली। इसलिये इस बाब के तहत आपने इस हदीष को ज़िक्र करके गाय की ज़कात की फ़र्जियत पर दलील पकड़ी।

बाब 44 : अपने रिश्तेदारों को ज़कात देना

और नबी करीम (ﷺ) ने (ज़ैनब के हक़ में फ़र्माया जो अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद की बीवी थी) उसको दोगुना प्रवाब मिलेगा, नाता जोड़ने और सदक़े का।

अहले हदीष के नज़दीक ये मुल्लक़न जाइज़ है। जब अपने रिश्तेदार मुहताज हों तो बाप बेटे को या बेटा बाप को, या शौहर बीवी को या बीवी शौहर को दे। कुछ ने कहा अपने छोटे बच्चे को फ़र्ज़ ज़कात देना बिल इन्माअ दुस्त नहीं और इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक (रह.) ने अपने शौहर को भी देना दुस्त नहीं रखा और इमामे शाफ़िई, इमाम अहमद ने हदीष के मुवाफ़िक़ इसको जाइज़ रखा है। मुतर्जिम (मौलाना वहीदुज़्ज़मौ मरहूम) कहते हैं कि रिश्तेदारों को अगर वो मुहताज हों ज़कात देने में दुहरा प्रवाब मिलेगा। नाजाइज़ होना कैसा? (वहीदी)

रायह का मा'नी बेख़टके आमदनी का माल या बेमेहनत और मशक़त की आमदनी का ज़रिया रूह की रिवायत खुद इमाम बुखारी (रह.) ने किताबुल बुयूअ में और यद्वा बिन यद्वा की किताब किताबुल वसाया में और इस्माईल की किताबुत्तप्सीर में वस्ल की। (वहीदी)

1461. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा ने, कि उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि अबू तल्हा (रज़ि.) मदीना में अन्सार में सबसे ज़्यादा मालदार थे। अपने खज़ूर के बाग़ात की वजह से। और अपने बाग़ात में सबसे ज़्यादा पसन्द उन्हें बीरेहा का बाग़ था।

غَيْرُهُ، أَوْ كَمَا خَلَفَ - مَا مِنْ رَجُلٍ تَكُونُ لَهُ إِبِلٌ أَوْ بَقَرٌ أَوْ غَنَمٌ لَا يُؤَدِّي حَقَّهَا إِلَّا أَتَى بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَكْظَمَ مَا تَكُونُ وَأَسَمَنَهُ، تَطَوُّهُ بِأَخْفَافِهَا وَتَنْطَحُهُ بِقُرُونِهَا، كُلَّمَا جَاوَزَتْ عَلَيْهِ أُخْرَاهَا رُدَّتْ عَلَيْهِ أَوْلَاهَا، حَتَّى يُقْضَى بَيْنَ النَّاسِ)).
رَوَاهُ بُكَيْرٌ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.
[طرنه في : ٦٦٣٨]

٤٤ - بَابُ الزَّكَاةِ عَلَى الْأَقَارِبِ
وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَهُ أَجْرَانِ: أَجْرُ الْقَرَابَةِ وَالْمُتَدَلِّي))

١٤٦١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((كَانَ أَبُو تَلْحَةَ أَكْثَرَ الْأَنْصَارِ بِالْمَدِينَةِ مَالًا مِنْ نَخْلٍ، وَكَانَ

ये बाग़ मस्जिदे-नबवी के बिल्कुल सामने था और रसूलुल्लाह (ﷺ) इसमें तशरीफ़ ले जाया करते थे और इसका मीठा पानी पिया करते थे। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई, लन तनालुल बिर हत्ता तुन्फिकू मा तुहिब्बून या'नी तुम नेकी को उस वक़्त तक नहीं पा सकते जब तक तुम अपनी प्यारी से प्यारी चीज़ न खर्च कर दो। ये सुनकर अबू तलहा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह तबाराक व तआला फ़र्माता है कि तुम उस वक़्त तक नेकी को नहीं पा सकते जब तक तुम अपनी प्यारी से प्यारी चीज़ न खर्च कर दो। और मुझे बीरेहा का बाग़ सबसे ज़्यादा प्यारा है। इसलिये मैं उसे अल्लाह तआला के लिये ख़ैरात करता हूँ इसकी नेकी और इसके ज़ाख़ीर-ए-आख़िरत होने का उम्मीदवार हूँ। अल्लाह के हुक्म से जहाँ आप मुनासिब समझें इसे इस्ते'माल कीजिए। राबी ने बयान किया कि ये सुनकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़ूब! ये तो बड़ा ही आमदनी का माल है। ये तो बहुत ही नफ़ाबख़श है। और जो बात तुमने कही है मैंने वो सुन ली। और मैं मुनासिब समझता हूँ कि तुम इसे अपने नज़दीकी रिश्तेदारों को दे डालो। अबू तलहा ने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैं ऐसा ही करूँगा। चुनौने उन्होंने उसे अपने रिश्तेदारों और चचा के लड़कों को दे दिया। यह्या बिन यह्या और इस्माईल ने मालिक के वास्ते से (राबेह के बजाय) राबेह नक़ल किया है। (दीगर मक़ाम: 2318, 2852, 2858, 2869, 4554, 4555, 5611)

أَحَبُّ أَمْوَالِهِ إِلَيْهِ بَرُوحَاءُ، وَكَانَتْ مُسْتَقْبَلَةَ الْمَسْجِدِ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيهَا طَيِّبٍ. قَالَ أَنَسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: فَلَمَّا أُنْزِلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ لَمْ أَبْرَأْ طَلْعَةَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يَقُولُ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ وَإِنْ أَحَبُّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بَرُوحَاءُ، وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ لِلَّهِ أَرْجُو بَرُوحًا وَذُخْرًا عِنْدَ اللَّهِ، فَصَنَعْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ حَيْثُ أَرَادَ اللَّهُ. قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((بَخ! ذَلِكَ مَالٌ رَابِعٌ، ذَلِكَ مَالٌ رَابِعٌ، وَقَدْ سَوِّفْتُ مَا قُلْتُ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الْأَفْرَيْنِ)). فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَعْمَلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَكَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقْرَبِيهِ وَتَبِيِّ هَمُو).

تَابَعَهُ رَوْحٌ. وَقَالَ يَحْيَى بْنُ يَحْيَى وَإِسْمَاعِيلُ عَنْ مَالِكٍ رَابِعٌ بِأَلْفٍ)).

[أطرافه ب: ٢٣١٨، ٢٧٥٢، ٢٧٥٨]

[٢٧٦٩، ٤٥٥٤، ٤٥٥٥، ٥٦١١].

तशरीह: इस हदीष से साफ़ निकला कि अपने रिश्तेदारों पर खर्च करना दुरुस्त है। यहाँ तक कि बीवी भी अपने मुफ़्लिस शौहर और मुफ़्लिस बेटे पर ख़ैरात कर सकती है और गोया ये स़दक़ा फ़र्ज़ ज़कात न था मगर फ़र्ज़ ज़कात को भी इस पर क़यास किया है। कुछ ने कहा जिसका नफ़का आदमी पर वाजिब हो जैसे बीवी का या छोटे लड़के का तो उसको ज़कात देना दुरुस्त नहीं और चूँकि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ज़िन्दा थे इसलिये उनके होते हुए बच्चे का खर्च माँ पर वाजिब न था। लिहाज़ा माँ को उस पर ख़ैरात खर्च करना जाइज़ हुआ। वल्लाहु आलम (वहीदी)

1462. हमसे सईद बिन अबू मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे ज़ैद बिन असलम ने ख़बर दी, उन्हें अयाज़ बिन अब्दुल्लाह

١٤٦٢- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي

ने, और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया, कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ईदुल अज़हा या ईदुल फ़ित्र में ईदगाह तशीफ़ ले गये। फिर (नमाज़ के बाद) लोगों को वा'ज़ फ़र्माया और स़दका का हुक्म दिया। फ़र्माया, लोगों! स़दका दो। फिर आप (ﷺ) औरतों की तरफ़ गये और उनसे भी यही फ़र्माया कि औरतों! स़दका दो कि मैंने जहन्नम में बक़रत तुम्ही को देखा है। औरतों ने पूछा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! ऐसा क्यों है? आपने फ़र्माया, इसलिये कि तुम ल'अन व त'अन ज़्यादा करती हो और अपने शौहर की नाशुकी करती हो। मैंने तुमसे ज़्यादा अक़ल और दीन के ऐतबार से नाक़िस ऐसी कोई मख़लूक नहीं देखा जो कारआज़मूदा मर्द की अक़ल को भी अपनी मट्टो में ले लेती हो। हौं ऐ औरतों! फिर आप वापस घर पहुँचे तो इब्ने मस्ऊद (रज़ि.) की बीवी ज़ैनब (रज़ि.) आई और इजाज़त चाही। आप (ﷺ) से कहा गया कि ये ज़ैनब आई हैं। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कौनसी ज़ैनब? (क्योंकि ज़ैनब नाम की बहुत सी औरतें थी) कहा गया कि इब्ने मस्ऊद (रज़ि.) की बीवी। आपने फ़र्माया, अच्छा उन्हें इजाज़त दे दो। चुनौचे इजाज़त दी गई, उन्हाने आकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आज आपने स़दका का हुक्म दिया था। और मेरे पास भी कुछ ज़ेवर है जिसे मैं स़दका करना चाहती हूँ। लेकिन (मेरे खाविन्द) इब्ने मस्ऊद ये ख़याल करते हैं कि वो और उनके लड़के उन (मिस्कीनों) से ज़्यादा मुस्तहिक़ है जिन पर मैं स़दका करूँगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि इब्ने मस्ऊद ने सहीह कहा। तुम्हारे शौहर और तुम्हारे लड़के इस स़दके के उनसे ज़्यादा मुस्तहिक़ है, जिन्हें तुम स़दके के तौर पर दोगी। (मा'लूम हुआ कि अक्रारिब अगर मुहताज हो तो स़दका के अव्वलीन मुस्तहिक़ वही है।)

(राजेअ: 304)

رَبِّدَ عَنْ عِيَاضِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ ((خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي أَصْحَابِي أَوْ لَطْرِ إِلَى الْمُصَلَّى، ثُمَّ انْصَرَفَ فَوَعظَ النَّاسَ وَأَمَرَهُمْ بِالصَّدَقَةِ فَقَالَ: ((أَيُّهَا النَّاسُ، تَصَدَّقُوا)). فَمَرَّ عَلَى النِّسَاءِ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ تَصَدَّقْنَ، فَإِنِّي أَرَيْتُكُمْ أَكْثَرَ أَهْلِ النَّارِ)). فَقُلْنَ: وَبِمَ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: ((تَكُونَنَّ اللَّعْنُ، وَتَكْفُرَنَّ الْمَشِيرَ مَا رَأَيْتُ مِنْ نَاقِصَاتِ عَقْلِ وَدِينٍ أَذْهَبَ لِلْبَّ الرَّجُلِ الْخَارِمِ مِنْ إِحْدَاكُنَّ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ)). ثُمَّ انْصَرَفَ، فَلَمَّا صَارَ إِلَى مَنْزِلِهِ جَاءَتْ زَيْنَبُ امْرَأَةُ ابْنِ مَسْعُودٍ تَسْأَلُونِ عَلَيْهِ، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَلِيهِ زَيْنَبُ. فَقَالَ: ((أَيُّ الزَّيْنَبِ؟)) فَقِيلَ: امْرَأَةُ ابْنِ مَسْعُودٍ. قَالَ: ((نَعَمْ، اذْثَبُوا لَهَا)), فَأَذِنَ لَهَا. قَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ، إِنَّكَ أَمَرْتَ الْيَوْمَ بِالصَّدَقَةِ، وَكَانَ عِنْدِي خَلِيٌّ لِي فَأَرَدْتُ أَنْ أَتَصَدَّقَ بِهِ، فَرُغِمَ ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ وَوَلَدُهُ أَحَقُّ مِنْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَلَيْهِمْ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ، وَوَجَلَكَ وَوَلَدُكَ أَحَقُّ مِنْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَلَيْهِمْ)).

[راجع: 304]

बाब 45 : मुसलमान पर उसके घोड़ों की ज़कात देना ज़रूरी नहीं

٤٥ - بَابُ لَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِ فِي فَرَسِهِ صَدَقَةٌ

1463. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने सुलैमान बिन यसार से सुना, उनसे ईराक बिन मालिक ने और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया मुसलमान पर उसके घोड़े और गुलाम की जकात वाजिब नहीं।

बाब 46 : मुसलमान को अपने गुलाम (लौण्डी) की जकात देनी जरूरी नहीं है

1464. हमसे मुसइद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे खुशैम बिन इराक बिन मालिक ने, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से (दूसरी सनद) और हमसे सुलैमान बिन हरब ने बयान किया, कहा कि हमसे से वुहैब बिन खालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे खुशैम बिन इराक बिन मालिक ने बयान किया, उन्होंने अपने बाप से बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया मुसलमान पर न उसके गुलाम में जकात फर्ज है और न घोड़े में।

(राजेअ : 1463)

١٤٦٣- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ يَسَارٍ عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِ فِي فَرَسِهِ وَغُلَامِهِ صَدَقَةٌ)).

٤٦- بَابُ لَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِ فِي عَبْدِهِ صَدَقَةٌ

١٤٦٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ خُثَيْمِ بْنِ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَحَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ وَحَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا خُثَيْمُ بْنُ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِ صَدَقَةٌ فِي عَبْدِهِ وَلَا فِي فَرَسِهِ)).

[راجع: ١٤٦٣]

अहले हदीष का मुहकक मजहब यही है कि गुलामों और घोड़ों में मुत्लकन जकात नहीं है भले ही वे तिजारत के लिये हों। मगर इब्ने मुंजिर ने इस पर इज्माअ नकल किया है कि अगर तिजारत के लिये हो तो उनमें जकात है। असल ये है कि उन्हीं जिनसों पर लाजिम है जिनका बयान आँहजरत (ﷺ) ने फर्मा दिया। या'नी चौपायों में से ऊँट, गाय और बैल-बकरियों में और नकदी माल से सोने-चाँदी में और अनाजों में से गेहूँ और जौ और ज्वार और मेवों में से खजूर और सूखी अंगूर में। बस इनके सिवा और किसी माल में जकात नहीं। भले तिजारत और सौदागरी ही के लिये हो और इब्ने मुंजिर ने जो इज्माअ इसके खिलाफ पर नकल किया है वो सही नहीं है। जब ज़ाहिरिया और अहले हदीष इस मसले में मुख्तलिफ हैं तो इज्माअ क्यूँकर हो सकता है और अबू दाऊद की हदीष और दारे कुत्नी की हदीष की जिस माल को हम बेचने के लिये रखें उसमें आपने जकात का हुक्म दिया या कपड़ों में जकात है, जईफ़ है। हुज्जत के लिये लायक नहीं।

और आयते कुआन ख़ुज मिन अम्वालिहिम सदक़ में अम्वाल से वही माल मुराद हैं जिनकी जकात की तसरीह हदीष में आई है ये इमाम शौकानी (रह.) की तहकीक है और सय्यिद अल्लामा ने इसकी ताईद की है इस आधार पर जवाहरात, मोती, मूंगा, याकूत, अलमास और दूसरी सैंकड़ों तिजारती चीजों में जैसे घोड़े, गाड़ियाँ, किताबें, कागज़ में जकात वाजिब न होगी। मगर चूँकि अइम्म-ए-अरबआ और जुम्हूर इलमा अम्वाले तिजारती में वुजूबे जकात की तरफ़ गए हैं लिहाज़ा

एहतियात और तक्वा यही है कि इनमें से जकात निकाले। (वहीदी)

बाब 47 : यतीमों पर सद्का करना

1465. हमसे मुआज बिन फज़ाला ने बयान किया, कहा कि मुझसे हिशाम दस्तवाई ने यहा से बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबू मैमूना ने बयान किया, कहा कि हमसे अताअ बिन यसार ने बयान किया, और उन्होंने अबू सईद खुदरी (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) एक दिन मिम्बर पर तशीफ़ फ़र्मा हुए हम भी आपके इर्दगिर्द बैठ गये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारे मुता'ल्लिक इस बात से डरता हूँ कि तुम पर दुनिया की खुशहाली और उसकी ज़ेबाइश व आराइश के दरवाज़े खोल दिये जाएँगे। एक शख्स ने अज़ा किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या अच्छाई बुराई पैदा करेगी? इस पर नबी करीम (ﷺ) ख़ामोश हो गये। इसलिये उस शख्स से कहा जाने लगा कि क्या बात थी? तुमने नबी करीम (ﷺ) से एक बात पूछी लेकिन औहज़रत (ﷺ) तुमसे बात नहीं करते। फिर हमने महसूस किया कि आप (ﷺ) को वह नाज़िल हो रही है। बयान किया गया कि फिर औहज़रत (ﷺ) ने पसीना साफ़ किया (जो वह नाज़िल होते वक़्त आपको आता था) फिर पूछा कि सवाल करने वाले साहब कहों है। हमने महसूस किया कि आप (ﷺ) ने उसके (सवाल की) ता'रीफ़ की फिर आपने फ़र्माया कि अच्छाई बुराई पैदा नहीं करती (मगर बेमौक़ा इस्ते'माल से बुराई पैदा होती है) क्योंकि मौसमे-बहार में बाज़ ऐसी घास भी उगती है जो जानलेवा या तकलीफ़देह प्राबित होती है। अलबत्ता हरियाली चरने वाला वो जानवर बच जाता है कि ख़ूब चरता है और जब उसकी दोनों कोखें भर जाती हैं तो सूरज की तरफ़ रुख़ करके पाखाना-पेशाब कर देता है और फिर चरता है। इसी तरह ये माल-दौलत भी एक खुशगवार सब्ज़ा ज़ार है। और मुसलमान का वो माल कितना उम्दा है जो मिस्कीन, यतीम और मुसाफ़िर को दिया जाए। या जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने इश्राद फ़र्माया। हौ अगर कोई शख्स ज़कात हक़दार होने के बग़ैर लेता है तो उसकी मिमाल ऐसे शख्स की सी है जो खाता है लेकिन उसका पेट नहीं भरता। और क़यामत के दिन ये माल

٤٧ - بَابُ الصَّدَقَةِ عَلَى الْيَتَامَى

١٤٦٥ - حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يَحْيَى عَنْ هِلَالِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَلَسَ ذَاتَ يَوْمٍ عَلَى الْمِنْبَرِ وَجَلَسْنَا حَوْلَهُ فَقَالَ : ((إِنِّي مِمَّا أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِنْ بَغْيِي مَا يَفْتَحُ عَلَيْكُمْ مِنْ زُحْرَةِ الدُّنْيَا وَزِينَتِهَا)). فَقَالَ رَجُلٌ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَوْ يَأْتِي الْغَنَرُ بِالشَّرِّ؟ فَسَكَتَ النَّبِيُّ ﷺ. فَقِيلَ لَهُ : مَا خَالَكَ؟ تَكَلَّمُ النَّبِيُّ ﷺ وَلَا يُكَلِّمُكَ؟ فَأَبْنَأْنَا أَنَّهُ يُنْزَلُ عَلَيْهِ. قَالَ فَمَسَحَ عَنْهُ الرُّحُضَاءُ، وَقَالَ : ((أَيُّنَ السَّائِلِ؟)) - وَكَانَ حَمْدُهُ - فَقَالَ : ((إِنَّهُ لَا يَأْتِي الْغَنَرُ بِالشَّرِّ، وَإِنْ مِمَّا يُنْبِئُ الرَّبِيعُ بِقَتْلِ أَوْ يُلِمُّ، إِلَّا أَكَلَةَ الْغَضَرَاءِ، أَكَلْتُ حَتَّى إِذَا امْتَدَّتْ خَاصِرَتَاهَا اسْتَفْقَلْتُ غَيْنَ الشَّنْسِ فَلَنَطَلْتُ وَتَأَلْتُ وَرَقَعْتُ. وَإِنْ هَذَا الْمَالُ غَضِيرَةٌ خُلُوفَةٌ، فَبَيْنَ صَاحِبِ الْمُسْلِمِ مَا أُغْطِيَ مِنْهُ الْمُسْكِينُ وَالْيَتِيمُ وَابْنُ السَّبِيلِ)) - أَوْ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((وَإِنَّهُ مَنْ يَأْخُذْهُ بِغَيْرِ حَقِّهِ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ، وَيَكُونُ شَهِيدًا عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

(راجع: ٩٢١)

उसके खिलाफ गवाह होगा। (राजेअ: 921)

तशरीह: इस लम्बी हदीष में आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी उम्मत के मुस्तज़िबल की बाबत कई एक इशारे फ़र्माए जिनमें ज़्यादातर बातें वजूद में आ चुकी हैं। इस सिलसिले में आपने मुसलमानों के डरूजो इक़बाल के दौर पर भी इशारा किया और ये भी बतलाया कि दुनिया की तरक्की माल व दौलत की फ़रावानी यहाँ का ऐशो-आराम ये चीज़ें बज़ाहिर ख़ैर हैं मगर कुछ मर्तबा इनका नतीजा शर से भी तब्दील हो सकता है। इस पर कुछ ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) क्या ख़ैर कभी शर का सबब बन जाएगी। इस सवाल के जवाब के लिये आँहज़रत (ﷺ) बह्य के इतिज़ार में खामोश हो गए। जिससे कुछ लोगों को ख़याल हुआ कि आप इस सवाल से नाराज़ हो गए हैं। काफ़ी देर बाद जब अह्लाह ने आपको बज़रिये बह्य जवाब से आगाह कर दिया तो आप (ﷺ) ने ये मिशाल देकर जो हदीष में मज़कूर है समझाया और बतलाया कि भले ही दौलत हक़ तज़ाला की नेअमत और अच्छी चीज़ है लेकिन जब बेनौक़ा और गुनाहों में सफ़ की जाए तो यही दौलत अज़ाब बन जाती है। जैसे फ़ंसल की हरी घास वो जानवरों के लिये बड़ी इम्दा नेअमत है मगर जो जानवर एक ही मर्तबा गिरकर उसको हद से ज़्यादा खा जाए तो उसके लिये यही घास ज़हर का काम देती है। जानवर पर क्या मुन्हसिर है। यही रोटी जो आदमी के लिये ज़िन्दगी का सबब है अगर इसमें बे-ए'तिदाली की जाए तो मौत का सबब बन जाती है। तुमने देखा होगा कि क़ह्ज़ से मुता'प्पिर (अकालग्रस्त) भूखे लोग जब एक ही बार खाना पा लेते हैं और हद से ज़्यादा खा जाए तो कुछ दफ़ा ऐसे लोग पानी पीते ही दम तोड़ देते हैं और हलाक हो जाते हैं। ये खाना उनके लिये ज़हर का काम देता है।

पस जो जानवर एक ही मर्तबा रबीअ की पैदावार पर नहीं गिरता बल्कि सूखी घास पर जो बारिश से ज़रा ज़रा हरी निकलती है उसके खाने पर क़नाअत करता है और फिर खाने के बाद सूरज की तरफ़ मुँह करके खड़े होकर उसके हज़म होने का इतिज़ार करता है। पाखाना-पेशाब करता है तो वो हलाक नहीं होता।

उसी तरह दुनिया का माल भी है जो ए'तिदाल से हुराम व हलाल की पाबन्दी के साथ उसको कमाता है उससे फ़ायदा उठाता है आप खाता है। मिस्कीन, यतीम, मुसाफ़िरों की मदद करता है तो वो बचा रहता है। मगर जो हरीस कुत्ते की तरह दुनिया के माल व अस्बाब पर गिर पड़ता है और हलाल व हुराम की क़ैद उठा देता है। आख़िर वो माल उसको हज़म नहीं होता। और इस्तिफ़ाग़ की ज़रूरत पड़ती है। कभी बदहज़्मी होकर उसी को माल की धुन में अपनी जान भी गंवा देता है। पस माल दुनिया की ज़ाहिरी ख़ूबसूरती पर फ़रेब मत खाओ, होशियार रहो, हलवे के अंदर ज़हर लिपटा हुआ है।

हदीष के आख़िरी अल्फ़ाज़ फ़निअम साहिबुल्मुस्लिमि मा आता मिन्हुल्भिस्कीन वल्यतीम वब्नस्सबील में ऐसे लालची तिमाम लोगों पर इशारा है जिनको जूटल बकर की बीमारी हो जाती है और किसी तरह उनकी हिस्सी नहीं जाती।

बाब 48 : औरत का खुद अपने शौहर को या अपनी ज़ेरे तर्बियत यतीम बच्चों को जकात देना

इसको अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

1466. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़याष ने बयान किया, कहा कि हमसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने, उनसे अम्र बिन अल हारिष ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मस्ज़द (रज़ि.) की बीवी ज़ैनब ने (आ'मश ने)

٤٨ - بَابُ الزَّكَاةِ عَلَى الزَّوْجِ

وَالْأَيَّامِ فِي الْحَجْرِ

قَالَ أَبُو سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

١٤٦٦ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ

عِيَّاتٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ

قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ عَنْ عُمَرُو بْنِ

कहा कि मैंने इस हदीष का जिक्र इब्राहीम नखई से किया। तो उन्होंने भी मुझसे अबू उबैदा से बयान किया। उनसे अम्र बिन हारिष ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की बीवी ज़ैनब ने, बिल्कुल इसी तरह हदीष बयान की (जिस तरह शक्वीक़ ने की कि) ज़ैनब ने बयान किया कि मैं मस्जिदे नबवी में थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) को मैंने देखा। आप ये फ़र्मा रहे थे, स़दका करो, ख़्वाह अपने ज़ेवर ही में से दो। और ज़ैनब अपन स़दका अपने शौहर हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद और चन्द यतीमों पर भी जो उनकी परवरिश में थे ख़र्च किया करती थी। इसलिये उन्होंने अपने ख़ाविन्द से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछिये कि क्या वो स़दका भी किफ़ायत करेगा जो मैं आप पर और उन चन्द यतीमों पर ख़र्च करूँ जो मेरी सुपुर्दगी में हैं। लेकिन अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ने कहा कि तुम ख़ुद जाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछ लो। आख़िर मैं ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उस वक़्त मैंने आपके दरवाज़े पर एक अन्सारी ख़ातून को पाया। जो मेरी ही जैसी ज़रूरत लेकर मौजूद थीं। (जो ज़ैनब अबू मस्ऊद अन्सारी की बीवी थी) फिर हमारे सामने से बिलाल गुज़रे। तो हमने उनसे कहा कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये मसला दरयाफ़्त कीजिए कि क्या वो स़दका मुझसे किफ़ायत करेगा जिसे मैं अपने शौहर और अपनी ज़ेरे तहवील चन्द यतीमों पर ख़र्च करदूँ। हमने बिलाल से ये भी कहा कि हमारा नाम न लिया जाए। वो अन्दर गये और आपसे अज़्र किया कि दो औरतें मसला दरयाफ़्त करती है। तो हज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये दोनों कौन हैं? बिलाल (रज़ि.) ने कह दिया कि ज़ैनब नाम की है। आपने फ़र्माया कि कौन सी ज़ैनब? बिलाल ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद की बीवी। आपने फ़र्माया कि हाँ! बेशक दुरुस्त है और उन्हें दोगुना प्रवाब मिलेगा। एक कराबतदारी का और दूसरा ख़ैरात का।

तशरीह: इस हदीष में स़दका या'नी ख़ैरात का लफ़्ज़ है जो फ़ज़्र स़दका या'नी ज़कात और नफ़ल ख़ैरात दोनों को शामिल है। इमाम शाफ़ई (रह.) और प्रौरी (रह.) और साहेबन और इमाम मालिक (रह.) और इमाम अहमद (रह.) से एक रिवायत ऐसी ही है अपने शौहर को और बेटों को (बशर्ते कि वो ग़रीब-मिस्कीन हों) देना दुरुस्त है। कुछ कहते हैं कि माँ-बाप और बेटे को देना दुरुस्त नहीं। और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक शौहर को भी ज़कात देना दुरुस्त नहीं। वो कहते हैं कि उन हदीषों में स़दका से नफ़ल स़दका मुराद है। (वहीदी)

الْحَارِثُ عَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ وَحِينَ
اللَّهُ عَنْهُمْ. قَالَ فَذَكَرْتُهُ لِإِبْرَاهِيمَ
فَعَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ عَنْ
عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ عَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ
اللَّهُ بِمِثْلِهِ سَوَاءً قَالَتْ: ((كُنْتُ لِي
الْمَسْجِدِ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((وَصَدَقَ
وَلَوْ مِنْ خَلِيكُنْ)). وَكَانَتْ زَيْنَبُ تَتَفَقَّ
عَلَى عَبْدِ اللَّهِ وَأَيْتَامٍ لِي حَجَرًا. فَقَالَتْ
لِعَمْرِو بْنِ: سَلْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَيَحْزِي
عَنِّي أَنْ أَتَفَقَّ عَلَيْكَ وَعَلَى أَيْتَامِي لِي
حَجَرِي مِنَ الصَّدَقَةِ؟ فَقَالَ: سَلِي أَنْتِ
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ. فَأَبْطَلْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ
فَوَجَدْتُ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ عَلَى الْبَابِ
حَاجَتَهَا مِثْلَ حَاجَتِي. فَمَرَّ عَلَيْنَا بِلَالٌ
فَقُلْنَا: سَلِ النَّبِيَّ ﷺ أَيَحْزِي عَنِّي أَنْ
أَتَصَدَّقَ عَلَى زَوْجِي وَأَيْتَامٍ لِي لِي
حَجَرِي. وَقُلْنَا: لَا تُغَيِّرُ بِنَا. فَدَخَلَ فَسَأَلَهُ
فَقَالَ: ((مَنْ هُمَا؟)) فَقَالَ زَيْنَبُ. قَالَ:
((أَيُّ الزَّيْنَبِ؟)) قَالَ: امْرَأَةُ عَبْدِ اللَّهِ.
قَالَ: ((نَعَمْ، وَلَهَا أَجْرَانِ: أَجْرُ الْفَرَاةِ
وَأَجْرُ الصَّدَقَةِ)).

लेकिन खुद हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने यहाँ ज़कात फ़र्ज़ को मुराद लिया है। जिससे उनका मसलक ज़ाहिर है हदीष के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ से भी हज़रत इमाम के ख़याल ही की ताईद होती है।

1467. हमसे इब्मन बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्द ने, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने, उनसे ज़ैनब बिन्त उम्मे सलमा ने, उनसे उम्मे सलमा ने, उन्होंने कहा कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अगर मैं अबू सलमा (अपने पहले ख़ाविन्द) के बेटों पर ख़र्च करूँ तो दुरुस्त है या नहीं, क्योंकि वो मेरी भी औलाद हैं। आपने फ़र्माया कि हाँ उन पर ख़र्च कर। तू जो कुछ भी उन पर ख़र्च करेगी, उसका प्रवाब तुझको मिलेगा। (दीगर मक़ाम : 5369)

١٤٦٧- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُهُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبِ ابْنَةِ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَيْ أَجْرٌ أَنْ أَنْفِقَ عَلَى بَنِي أَبِي سَلَمَةَ إِنَّمَا هُمْ بَنِي. فَقَالَ : ((أَنْفِقِي عَلَيْهِمْ، فَلَكَ أَجْرُ مَا أَنْفَقْتِ عَلَيْهِمْ)).

[طرفه في : ٥٣٦٩]

मुहताज औलाद पर सद्का ख़ैरात यहाँ तक कि ज़कात का माल देने का जवाज़ प्रामाणिक हुआ।

बाब 49 : अल्लाह तआला के फ़र्मान

(ज़कात के मसाराफ़ बयान करते हुए कि ज़कात) गुलाम आज़ाद कराने में, मक़रूज़ के क़र्ज़ अदा करने में और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च की जाए।

٤٩- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَلِي الرِّقَابِ وَالْفَارِصِينَ وَلِي سَبِيلِ اللَّهِ﴾ [التوبة : ٦٠]

वफ़िरि़काब से यही मुराद है। कुछ ने कहा मुकातब की मदद करना मुराद है और अल्लाह की राह से मुराद शाज़ी और मुजाहिद लोग हैं। और इमाम अहमद (रह.) और इस्हाक़ ने कहा कि हाज़ियों को देना भी फ़ी सबीलिल्लाह में दाख़िल है। मुकातब वो गुलाम जो अपनी आज़ादी का मामला अपने मालिक से तै कर ले और मामले की तपस्रीलात लिख जाएँ।

और इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मन्कूल है कि अपनी ज़कात में से गुलाम आज़ाद कर सकता है और हज्ज के लिये दे सकता है। और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा कि अगर कोई ज़कात के माल से अपने आप को जो गुलाम हो ख़रीद कर आज़ाद करदे तो जाइज़ है। और मुजाहिदीन के अख़राजात के लिये भी ज़कात दी जाए। इसी तरह उस शख्स को भी ज़कात दी जा सकती है जिसने हज्ज न किया हो। (ताकि उसकी इमदाद से हज्ज कर सके) फिर उन्होंने सूरह तौबा इन्तमस्सदकातु लिल फ़ुक़राए आख़िर तक की तिलावत की और कहा कि (आयत में बर्धानशुदा तमाम मसाराफ़ि- ज़कात में से) जिसको भी ज़कात दी जाए काफ़ी है। और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ख़ालिद (रज़ि.) ने तो

وَيَذْكُرُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : يُعْفَقُ مِنْ زَكَاةٍ مَالِهِ وَيُعْطَى فِي الْحَجِّ. وَقَالَ الْحَسَنُ : إِنْ اشْتَرَى أَبَاهُ مِنَ الزَّكَاةِ جَارًا، وَيُعْطَى فِي الْمَجَاهِدِينَ وَالَّذِي لَمْ يَخْجَ ثُمَّ تَلَا : ﴿إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ﴾ الآية. فِي أَيِّهَا أُعْطِيَتْ أَجْزَأَتْ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِنْ خَالِدًا احْتَسَنَ أَذْرَاعَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ)). وَيَذْكُرُ عَنْ أَبِي لَاسٍ : (حَمَلْنَا النَّبِيُّ ﷺ عَلَى إِبِلِ الصَّدَقَةِ

अपनी जिरहें अल्लाह तआला के रास्ते में वक्तफ कर दी हैं। अबुल आस (ज़ियादा ख़ुज़ाई सहाबी रज़ि.) से मन्कूल है कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें ज़कात के ऊँटों पर सवार करके हज्ज कराया।

((للخج))

तशरीह: कुआन शरीफ़ में ज़कात के आठ मसारिफ़ मज़कूर हैं। फ़ुकरा, मसाकीन, आमिलीने ज़कात, मुअल्लिफ़तुल कुलूब, रिक्काब, ग़ारेमीन फ़ी सबीलिल्लाह, इब्नुस्सबील या'नी मुसाफ़िर। इमाम हसन बसरी (रह.) के क़ौल का मतलब ये है कि ज़कात वाला उनमें से किसी में भी ज़कात का माल ख़र्च करे तो काफ़ी होगा। अगर हो सके तो आठों किस्मों में दे मगर ये ज़रूरी नहीं है हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और जुम्हूर इलमा और अहले हदीस का यही क़ौल है और शाफ़िअ से मन्कूल है कि आठों मस्रफ़ में ज़कात ख़र्च करना वाजिब है भले ही किसी मस्रफ़ का एक ही आदमी मिले। मगर हमारे ज़माने में इस पर अमल मुश्किल है। अक़बर मुल्कों में मुजाहिदीन और मुअल्लिफ़तुल कुलूब और रिक्काब नहीं मिलते। इसी तरह आमिलीने ज़कात। (वहीदी) आयत मसारिफ़े ज़कात के तहत इमामुल हिन्द हज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह.) फ़र्माते हैं, 'ये आठ मसारिफ़ जिस तर्तीब से बयान किये गये हैं हकीकत में मामला की क़ुदरती तर्तीब भी यही है सबसे पहले फ़ुकरा और मसाकीन का ज़िक्र किया जो इस्तिहकाक़ में सबसे मुक़द्दम हैं फिर आमिलीन का ज़िक्र आया जिनकी मौजूदगी के बग़ैर ज़कात का निज़ाम कायम नहीं रह सकता। फिर उनका ज़िक्र आया जिनका दिल हाथ में लेना ईमान की तक्विबत और हक़ की इशाअत के लिये ज़रूरी था। फिर गुलामों को आज़ाद कराने और क़र्ज़दारों को क़र्ज़ के भार से सुबुकदोश कराने के मक़सिद नुमायाँ हुए फिर फ़ी सबीलिल्लाह का मक़सद रखा गया जिसका ज़्यादा इत्लाक़ दिफ़ाअ पर हुआ। फिर दीन के और उम्मत के आम मसालेह उसमें शामिल हैं। मसलन कुआन और उलूमे दीनी की तर्वीज व इशाअत, मदारिस का इजरा व क़ायाम, दअवात व मुबल्लिगीन के ज़रूरी मसारिफ़, हिदायत व इशादात के तमाम मुफ़ीद व साईल।

फ़ुकरा व मुफ़स्सरीन का एक ग़िरोह उस तरफ़ गया है। कुछ ने मस्जिद, कुआ, पुल जैसी ता'मीराते ख़ैरिया को भी उसमें दाख़िल कर दिया। (नेलुल औतार) फ़ुकरा-ए-हन्फ़िया में से साहिबे फ़तावा ज़हीरिया ये लिखते हैं, अल्मुरादु तलबुल इल्म और साहिबे बदाए के नज़दीक वो तमाम काम जो नेकी और ख़ैरात के लिये हों उसमें दाख़िल हैं। सबके आख़िर में इब्नुस्सबील या'नी मुसाफ़िर को जगह दी।

जुम्हूर के मज़हब का मतलब ये है कि तमाम मसारिफ़ में एक ही वक़्त में तक्सीम करना ज़रूरी नहीं है। जिस वक़्त जैसी हालत और जैसी ज़रूरत हो उसी के मुताबिक़ ख़र्च करना चाहिये और यही मज़हब कुआनो सुन्नत की तफ़सील और रूह के मुताबिक़ भी है। अइम्म-ए-अरबअ में सिफ़ इमाम शाफ़िई (रह.) उसके ख़िलाफ़ गए हैं। (इक्तिबास अज़ तफ़सीर तर्जुमानुल कुआन आज़ाद जिल्द 2 पेज नं. 130)

फ़ी सबीलिल्लाह की तफ़सीर में नवाब सिदीक़ हसन ख़ाँ मरहूम लिखते हैं: व अम्मा सबीलुल्लाहि फल्मुरादु हाहुनत्तरीकु इलैहि अज़्ज़ व जल्ल वल्लिहादु व इन कान आज़मुत्तरीकि इलल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल लाकिन ला दलील अला इख़ितासि हाज़स्सहमि बिही बल यसिहसु सर्फ़ ज़ालिक़ फ़ी कुल्लि मा कान तरीक़न इलल्लाहि हाज़ा मअनलआयति लुग़तन वल्वाज़िबु अल्लुक्फ़ु अलल्मअनल्लु गविय्यति हैषु लम यसिहहन्नक्तु हुन शअन व मिन जुम्लति सबीलिल्लाहिस्सर्फ़ फिलउल्माइल्लज़ीन यकूमून बिमसालिहिल् मुस्लिमीनदीनिय्यति फइन्न लहुम फ़ी मालिल्लाहि नसीबन बिलिस्सर्फ़ फ़ी हाज़िहिल्लिजहति मिन अहम्मिलउमूर लिअन्नल्माउ वरषतुलअम्बिया व हम्लतुदीनि व बिहिम तहफ़ज़ु बैजतुलइस्लामि व शरीअतु सव्यिदिल्आनाम व क़द कान उलमाउस्सहाबति याख़ुज़ून मिनलअताइ मा यक़्मु बिमा यहताज़ून इलैहि

और अल्लामा शौकानी अपनी किताब वबुलुल ग़ामाम में लिखते हैं, वमिन जुम्लति फ़ी सबीलिल्लाहि अस्सर्फ़ फिलउल्माइ फइन्न लहुम फ़ी मालिल्लाहि नसीबन सवाअन कानू अगनियाउ औ फ़ुकराउ बलिस्सर्फ़ फ़ी हाज़िहिल्लिजहति मिन अहम्मिलउमूर व क़द कान उलमाउस्सहाबति याख़ुज़ून मिन जुम्लति हाज़िहिल्लिजहति कानत तुफ़रकु बैनल्मुस्लिमीन अला हाज़िहिल्लिजहति मिन ज़काति. (मुलख़स अज़ किताबु दलीलित्तलिब, पेज 432) खुलासा ये कि यहाँ सबीलिल्लाह से मुराद जिहाद है जो वसूल इल्लाह का बहुत ही बड़ा

रास्ता है। मगर उस हिस्से के साथ सबीलल्लाह की तछ्सीस करने पर कोई दलील नहीं है। बल्कि हर वो नेक जगह मुराद है जो तरीक इल्लाह के बारे में हो। आयत के लुखी मअानी यही हैं। जिन पर वाकिफियत जरूरी है और सबीलल्लाह में उन उलमा पर खर्च करना भी जाइज है जो खिदमाते मुस्लिमीन में दीनी हैशियत से लगे हुए हैं। उनके लिये अल्लाह के माल में यकीनन हिस्सा है बल्कि ये अहम्मुल उमूर है। इसलिये कि उलमा अंबिया किराम के वारिष हैं। उन ही की नेक कोशिशों से इस्लाम और शरीअते सय्यिदुल अनाम महफूज है। उलम-ए-सहाबा भी अपनी हाजात के मुताबिक उससे अत्रिया लिया करते थे।

अल्लामा शौकानी (रह.) कहते हैं कि फ्री सबीलल्लाह में उलम-ए-दीन के मसाराफ में खर्च करना भी दाखिल है। उनका अल्लाह के माल में हिस्सा है अगरचे वो गनी भी क्यों न हों। इस मसराफ में खर्च करना बहुत ही अहम है और उलम-ए-सहाबा भी अपनी हाजात के लिये इस सिफत पर जकात के माल में से अत्रिये लिया करते थे। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

1468. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने खबर दी, कहा कि हमसे अबुज्जिनाद ने अअरज से खबर दी और उनसे अबू हुदैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जकात वसूल करने का हुक्म दिया। फिर आप से कहा गया कि इब्ने जमील और खालिद बिन वलीद और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ने जकात देने से इन्कार कर दिया है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया कि इब्ने जमील ये शुक्र नहीं करता कि कल तक तो वो फ़क़ीर था। फिर अल्लाह तआला ने अपने रसूल की दुआ की बरकत से उसे मालदार बना दिया। बाक़ी रहे खालिद, तो उन पर तुम लोग जुल्म करते हो। उन्होंने तो अपनी ज़िन्हें अल्लाह तआला की राह में वक्फ़ कर रखी हैं और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के चचा हैं। और उनकी जकात उन्हीं पर सदक़ा हैं और उतना ही और उन्हें मेरी तरफ से देना है। इस रिवायत की मुताबिअत अबुज्जिनाद ने अपने वालिद से की और इब्ने इस्हाक़ ने अबुज्जिनाद से ये अल्फ़ाज़ बयान किये हिय अलैहा व मिश्लुहा मअहा (सदक़ा के लफ़्ज़ के बग़ैर) और इब्ने जुरैज ने कहा कि मुझसे अअरज से इसी तरह ये हदीष बयान की गई।

١٤٦٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالصَّدَقَةِ، فَقِيلَ: مَنَعَ ابْنُ جَمِيلٍ وَخَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ وَعَبَسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا يَنْقِمُ ابْنُ جَمِيلٍ إِلَّا أَنَّهُ كَانَ فَقِيرًا فَأَغْنَاهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ، وَأَمَّا خَالِدٌ فَإِنَّكُمْ تَطْلُمُونَ خَالِدًا، قَدْ احْتَسَنَ أَذْرَاعُهُ وَأَخَذَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، وَأَمَّا الْعَبَسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَمِمَّنْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَهِيَ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ وَمِثْلُهَا مَعَهَا)). تَابَعَهُ ابْنُ أَبِي الزُّنَادِ عَنْ أَبِيهِ. وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ: ((هِيَ عَلَيْهِ وَمِثْلُهَا مَعَهَا)). وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: حَدَّثْتُ عَنِ الْأَعْرَجِ بِمِثْلِهِ.

तशरीह: इस हदीष में तीन अस्हाब का वाक़िया है। पहला इब्ने जमील है जो इस्लाम लाने से पहले महज़ कल्लाश और मुफ़्लिस (गरीब) था। इस्लाम की बरकत से मालदार बन गया तो उसका बदला ये है कि अब वो जकात देने में कराहता है और ख़फ़ा होता है और हज़रत खालिद (रज़ि.) के बारे में औहज़रत (ﷺ) ने खुद फर्मा दिया जब उन्होंने अपना सारा माल व अस्बाब हथियार वगैरह फ्री सबीलल्लाह वक्फ़ कर दिया है जो अब वक्फ़ी माल की जकात क्यों देने लगा? अल्लाह की राह में मुजाहिदीन को देना ये खुद जकात है। कुछ ने कहा कि मत्तलब ये है कि खालिद तो ऐसा सखी है कि उसने हथियार थोड़े वगैरह सब अल्लाह की राह में दे डाले हैं। वो भला फ़ज़्र जकात कैसे न देगा तुम गालत कहते हो कि वो जकात नहीं देता? हज़रत अब्बास (रज़ि.) के बारे में आप (ﷺ) ने फर्माया न सिर्फ़ जकात बल्कि उससे दोगुना में उन पर खर्च करूंगा। मुस्लिम

की रिवायत में यूँ है कि अब्बास (रज़ि.) की ज़कात बल्कि उसका दोगुना रुपया मैं दूँगा। हज़रत अब्बास (रज़ि.) दो बरस की ज़कात पेशगी आँ हज़रत (ﷺ) को दे चुके थे। इसलिये उन्होंने उन तद्दुल्लाल करने वालों को ज़कात न दी। कुछ ने कहा मतलब ये है कि बिल फ़ेअल उनको मुहलत दो। अगले साल उनसे दोहरी या 'नी दो बरस की ज़कात वसूल करना। (मुख्तसर अज्वहीदी)

बाब 50 : सवाल से बचने का बयान

1469. हमसे अब्दुल्लाह बिन युसूफ़ ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने, इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्हें अत्ताअ बिन यज़ीद लैषी ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि अन्सार के कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया तो आपने उन्हें दिया। फिर उन्होंने सवाल किया और आपने फिर दिया। यहाँ तक कि जो माल आप के पास था अब वो ख़त्म हो गया। फिर आपने फ़र्माया कि अगर मेरे पास जो माल-दौलत हो तो मैं उसे बचाकर नहीं रखूँगा मगर जो शख्स सवाल करने से बचता है तो अल्लाह तआला उसे बेनियाज़ बना देता है और जो शख्स अपने ऊपर ज़ोर डालकर भी सन्न करता है तो अल्लाह तआला भी उसे सन्न व इस्तिफ़ाल दे देता है। और किसी को भी सन्न से ज़्यादा बेहतर और उससे ज़्यादा पायेदार चीज़ नहीं मिली। (सन्न तमाम नेअमतों से बढ़कर है) (दीगर मक़ाम : 6470)

٥٠- بَابُ الْإِسْتِغْفَافِ عَنِ الْمَسْأَلَةِ

١٤٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّخْمِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ أَنَسًا مِنَ الْأَنْصَارِ سَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَأَعْطَاهُمْ، ثُمَّ سَأَلُوهُ فَأَعْطَاهُمْ، حَتَّى نَفِدَ مَا عِنْدَهُ فَقَالَ : ((مَا يَكُونُ عِنْدِي مِنْ غَيْرٍ فَلَنْ أَذْغِوَهُ عَنْكُمْ، وَمَنْ يَسْتَغْفِرْ لِنَفْسِهِ اللَّهُ، وَمَنْ يَسْتَعِزْ بِغَيْرِ اللَّهِ، وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَيِّرْهُ اللَّهُ، وَمَا أُعْطِيَ أَحَدٌ عَطَاءً غَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ)).

[طرفه ١ : ٦٤٧٠.]

तशरीह : शरीअते इस्लामिया के बेशुमार खूबियों में से एक ये खूबी भी किस क़दर अहम है कि लोगों के सामने हाथ फैलाने, सवाल करने से मुख्तलिफ़ तरीकों के साथ मुमानअत की है और साथ ही अपने दो बाजुओं से कमाने और रिज़क हासिल करने की तर्गीबात दिलाई है। मगर फिर भी कितने ही ऐसे मअज़ूर मर्द—औरत होते हैं जिनको बग़ैर सवाल किये चारा नहीं। उनके लिये फ़र्माया व अम्मस्साइल फ़ला तन्हूर या 'नी सवाल करने वालों को न डाँटो बल्कि नमी से उनको जवाब दे दो।

इस हदीष के रावी हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) हैं जिनका नाम सअद बिन मालिक है और ये अंसारी हैं। जो कुत्रियत ही से ज़्यादा मशहूर हैं। हाफ़िजे हदीष और साहब फ़जल व अक्ल उलमा-ए-किबार सहाबा किराम (रज़ि.) में उनका शुमार होता है। 84 साल की उम्र पाई और 74 हिजरी में इंतिकाल कर गए और जन्नतुल बक़ीअ में सुपुर्दे खाक किये गये। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अज़ाह)

1470. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसूफ़ ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअरब्ज ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उसज़ात की क्रसम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर कोई शख्स रस्सी से लकड़ियों का बोझ बाँधकर कर अपनी पीठ पर जंगल से उठा लाए (फिर उन्हें बाज़ार में बेचकर अपना रिज़क हासिल करे) ता

١٤٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((وَاللَّيْ نَفْسِي بِيَدِهِ، لَأَنْ يَأْخُذَ أَحَدُكُمْ حَبْلَةَ قَبْطِيبٍ عَلَى ظَهْرِهِ

वो उस शख्स से बेहतर है जो किसी के पास आकर सवाल करे।
फिर जिससे सवाल किया गया है वो दे या न दे।

(दीगर मक़ाम : 1480, 2074, 2374)

خَيْرَ لَهٗ مِنْ أَنْ يَأْتِيَ رَجُلًا يَسْأَلُهُ، أَعْطَاهُ
أَوْ مَنَعَهُ).

[أطرافه في : ٢٣٧٤، ٢٠٧٤، ١٤٨٠]

तशरीह : इस हदीष से ये निकलता है कि हाथ से मेहनत करके खाना कमाना निहायत अफ़ज़ल है। इलमा ने कहा है कि कमाई के तीन उसूल होते हैं। एक ज़राअत, दूसरी तिजारत, तीसरी सनअत व हिफ़त। कुछ ने कहा इन तीनों में तिजारत अफ़ज़ल है। कुछ ने कहा ज़राअत अफ़ज़ल है क्योंकि उसमें हाथ से मेहनत की जाती है और हदीष में है कि कोई खाना उससे बेहतर नहीं है जो हाथ से मेहनत करके पैदा किया जाए, ज़राअत के बाद फिर सनअत अफ़ज़ल है। उसमें भी हाथ से काम किया जाता है और नौकरी तो बदतरीन कस्ब है। इन अह्दादीष से ये भी ज़ाहिर होता है कि रसूले करीम (ﷺ) ने मेहनत करके कमाने वाले मुसलमान पर किस कदर मुहब्बत का इज़हार किया कि उसकी ख़ूबी पर आपने अल्लाह पाक की क़सम खाई। पस जो लोग महज़ निकम्मे बनकर बैठे रहते हैं और दूसरों के दस्तेनिगार रहते हैं। फिर किस्मत का शिकवा करने लगते हैं। ये लोग इन्दलाह व इन्दरसूल अच्छे नहीं हैं।

1481. हमसे मुसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे युहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे जुबैर बिन अवाम (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम में से कोई भी अगर (ज़रूरतमन्द हो तो) अपनी रस्सी लेकर आए और लकड़ियों का गट्टर बाँध कर अपनी पीठ पर रख कर लाए और उसे बेचे। इस तरह अल्लाह तआला उसकी इज़ज़त को महफूज़ रख ले तो ये उससे अच्छा है कि वो लोगों से सवाल करता फिरे, उसे वो दे या न दे।

(दीगर मक़ाम : 2075, 3373)

١٤٧١- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ
قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ الزُّبَيْرِ بْنِ
الْعَوَّامِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:
(إِن يَأْخُذْ أَحَدُكُمْ خَيْلَهُ قَبَائِلَ يَخْرُجُ
الْحَطَبُ عَلَى ظَهْرِهِ يَبِيعُهَا فَبَيْعُهَا خَيْرٌ لَّهِ
بِهَا وَجْهَةٌ، خَيْرٌ لَّهِ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ النَّاسَ
أَعْطَوْهُ أَوْ مَنَعُوهُ).

[طرافه في : ٢٣٧٣، ٢٠٧٠]

इस हदीष के राबी हज़रत जुबैर बिन अवाम हैं जिनकी कुत्रियत अबू अब्दुल्लाह कुरैशी है। उनकी वालिदा हज़रत सफ़िया अब्दुल मुत्तलिब की बेटी और आँहज़रत (ﷺ) की फूफी हैं। ये और इनकी वालिदा शुरु में ही इस्लाम ले आए थे जबकि उनकी उम्र सोलह साल की थी। इस पर उनके चचा ने धुँए से उनका दम घोटकर उन्हें तकलीफ़ पहुँचाई ताकि ये इस्लाम छोड़ दें मगर उन्होंने इस्लाम को न छोड़ा। ये तमाम ग़ज़वात में आँहज़ूर (ﷺ) के साथ रहे और ये वो हैं जिन्होंने सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में तलवार के जोहर दिखलाए और आँहज़ूर (ﷺ) के साथ जंगे उहुद में डटे रहे और अशर-ए-मुबशशरा में इनका भी नाम शुमार है। 64 साल की उम्र में बसरा में शहीद कर दिये गये। ये हादसा 36 हिजरी में पेश आया। अव्वल वादी सबाअ में दफ़न हुए। फिर बसरा में मुत्तकिल कर दिये गये। (रज़ि.)

1472. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें उर्वा बिन जुबैर और सईद बिन मुसय्यिब ने कि हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुछ माँगा। आपने अज़ा फ़र्माया। मैंने फिर माँगा तो आपने फिर

١٤٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ
اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ
عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ
حَكِيمَ بْنَ جِرَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:

अता फ़र्माया। मैंने फिर माँगा आपने फिर भी अता फ़र्माया। इसके बाद आपने इशार्द फ़र्माया, ऐहकीम! ये दौलत बड़ी सरसब्ज और शीरीं है। लेकिन जो शख्स इसे अपने दिल को सखी रखकर ले तो उसकी दौलत में बरकत होती है और जो लालच के साथ लेता है तो उसकी दौलत में कुछ भी बरकत नहीं होगी। उसका हाल उस शख्स जैसा होगा जो खाता है लेकिन आसूदा नहीं होता (याद रखो) ऊपर वाला हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है। हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) ने कहा कि मैंने अर्ज़ की उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको सच्चाई के साथ मक़र्रफ़ किया है, अब मैं इसके बाद किसी से कोई चीज़ नहीं लूँगा यहाँ तक कि दुनिया ही से मैं जुदा हो जाऊँ। चुनाँचे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) हकीम (रज़ि.) को उनका मा'मूल देने को बुलाते तो वो लेने से इन्कार कर देते। फिर जब हज़रत उमर (रज़ि.) ने भी उन्हें उनका हिस्सा देना चाहा तो उन्होंने उसके लेने से इन्कार कर दिया। इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुसलमानों! मैं तुम्हें हकीम बिन हिज़ाम के मामले में गवाह बनाता हूँ कि मैंने उनका हक़ उन्हें देना चाहा लेकिन उन्होंने लेने से इन्कार कर दिया। ग़र्ज़ हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसी तरह किसी से भी कोई चीज़ लेने से हमेशा इन्कार ही करते रहे। यहाँ तक कि वफ़ात पा गये। हज़रत उमर (रज़ि.) माले-फ़ैया'नी मुल्की आमदनी से उनका हिस्सा उनको देना चाहते थे मगर उन्होंने वो भी नहीं लिया।

(दीगर मक़ाम : 2750, 3243, 6441)

((سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي ثُمَّ قَالَ: ((يَا حَكِيمُ، إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَيْرٌ خُلُوةً، لِمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةِ نَفْسٍ يُورِثُكَ لَهُ فِيهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافٍ نَفْسٍ لَمْ يَمُوتْ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ. الْيَدُ الْغَلِيَّةُ خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى)). قَالَ حَكِيمٌ : قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا أَرِزَا أَحَدًا بِعَدْلِكَ شَيْئًا حَتَّى أَفَارِقَ الدُّنْيَا. فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَدْعُو حَكِيمًا إِلَى الْقَطَاءِ فَيَأْتِي أَنْ يَقْبَلَهُ مِنْهُ. ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ دَعَاهُ لِيُعْطِيَهُ فَيَأْتِي أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا، فَقَالَ عُمَرُ: إِنِّي أَشْهَدُكُمْ يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى حَكِيمٍ أَنِّي أَعْرَضْتُ عَلَيْهِ حَقَّهُ مِنْ هَذَا الْقَمِيءِ فَيَأْتِي أَنْ يَأْخُذَهُ، فَلَمْ يَرِزَا حَكِيمًا أَحَدًا مِنَ النَّاسِ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ حَتَّى تَوَفَّيَ)).

[أطرافه ١ : ٢٧٥٠ ، ٣١٤٣ ، ٦٤٤١.]

तशरीह : हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.) की कुत्रियत अबू ख़ालिद कुरैशीं असदी है। ये हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा (रज़ि.) के भतीजे हैं। वाक़िया फ़ैल से तेरह साल पहले का'बा में पैदा हुए। ये कुरैश के मुअज़्ज़जतरीन लोगों में से हैं। जाहिलियत और इस्लाम दोनों ज़मानों में बड़ी इज्जत व मंज़िलत के मालिक रहे। फ़तहे मक्का के दिन इस्लाम लाए। 64 हिजरी में अपने मकान के अंदर मदीना में वफ़ात पाई। उनकी उम्र 120 साल की हुई थी। साठ साल अहदे जाहिलियत में गुजारे और साठ साल ज़मान-ए-इस्लाम में ज़िन्दगी पाई। बड़े ज़ेरक और फ़ाज़िल मुतक़ी सहाबा में से थे ज़मान-ए-जहिलियत में सौ गुलामों को आज़ाद किया और सौ ऊँट सवारी के लिये बख़्शे। वफ़ाते नबी के बाद ये मुद्दत तक ज़िन्दा रहे यहाँ तक कि मुआविया (रज़ि.) के अहद में भी दस साल की ज़िन्दगी पाई। मगर कभी एक पैसा भी उन्होंने किसी से नहीं लिया। जो बहुत बड़े दर्जे की बात है।

इस हदीष में हकीमे इंसानियत रसूले करीम (ﷺ) ने क़ानेअ (सब्र करने वाले) और हरीस (लालची) की मिशाल बयान फ़र्माई कि जो भी कोई दुनियावी दौलत के सिलसिले में क़नाअत से काम लेगा और हिर्स और लालच की बीमारी से बचेगा उसके लिये बरकतों के दरवाज़े खुलेंगे और थोड़ा माल भी उसके लिये काफी होगा। उसकी ज़िन्दगी बड़े ही इत्मीनान

और सुकून की ज़िन्दगी होगी। और जो शख्स हिंस की बीमारी और लालच के बुखार में मुब्तला होगा उसका पेट भर ही नहीं सकता ख्वाह उसको सारी दुनिया की दौलत ही क्यों न मिल जाए वो फिर भी उसी चक्कर में रहेगा कि किसी न किसी तरह से और ज्यादा माल हासिल कर लूँ। ऐसे लालची लोग न अल्लाह के नाम पर खर्च करना जानते हैं न मख्लूक को फायदा पहुँचाने का ज़च्चा रखते हैं। न कुशादगी के साथ अपने और अपने अहलो-अयाल ही पर खर्च करते हैं। अगर सरमायादारों की ज़िन्दगी का मुतालआ किया जाए तो एक बहुत ही भयानक तस्वीर नज़र आती है। फ़ख़्रे मौजूदात (ﷺ) ने उन्हीं हकाइक को इस हदीषे मुकद्दस में बयान किया है।

बाब 51 : अगर अल्लाह पाक किसी को बिन माँगे और बिन दिल लगाये और उम्मीदवार रहे कोई चीज़ दिला दे (तो उसको ले ले) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, इनके मालों में माँगने वाले और ख़ामोश रहने वाले दोनों का हिस्सा है।

٥١- بَابُ مَنْ أَعْطَاهُ اللَّهُ شَيْئًا مِنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ وَلَا إِشْرَافٍ نَفْسِي
﴿وَلِيْ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّابِلِ
وَالْمَسْكُوْمِ﴾ [الْمَائِيَات : ١٩]

इस आयत से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि बिन माँगे जो अल्लाह दे दे उसका लेना दुरुस्त है। वरना महकूम ख़ामोश फ़कीर का हिस्सा कुछ न रहेगा। फ़स्तलानी (रह.) ने कहा कि बग़ैर सवाल जो आए उसका ले लेना दुरुस्त है बशर्ते कि हलाल का माल हो अगर मशकूक माल हो तो वापस कर देना ही परहेज़गारी है।

1473. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे जुस्री ने, उनसे सालिम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मुझे कोई चीज़ अता फ़र्माते तो मैं अर्ज़ करता कि आप मुझसे ज्यादा मुहताज को दे दीजिए। लेकिन ओहज़रत (ﷺ) फ़र्माते कि ले लो, अगर तुम्हें कोई ऐसा माल मिले जिस पर तुम्हारा ख़याल न लगा हुआ हो और न तुमने उसे माँगा हो तो उसे कुबूल कर लिया करो और जो न मिले तो उसकी परवाह न करो और उसके पीछे न पड़ो।

(दीगर मक़ाम : 7163, 716)

١٤٧٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُعْطِيهِ الْفُتْلَةَ قَالُوا: أَعْطَاهُ مِنْ هُوَ أَفْقَرُ إِلَيْهِ مِنِّي، فَقَالَ: ((عَلَيْهِ، إِذَا جَاءَكَ مِنْ هَذَا الْمَالِ حَيَّةٌ وَأَنْتَ خَيْرٌ مُّشْرَفٍ وَلَا سَابِلٍ، فَخُذْهُ، وَمَا لَا فَلَا تَبِعَهُ نَفْسَكَ)).

[طرقه في : ٧١٦٣، ٧١٦٤].

बाब 52 : अगर कोई शख्स अपनी दौलत बढ़ाने के लिये लोगों से सवाल करे?

٥٢- بَابُ مَنْ سَأَلَ النَّاسَ تَكْتَرًا

1474. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी जा'फ़र ने कहा, कि मैंने हज़ा बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से सुना, उन्होंने कहा

١٤٧٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُثَيْدٍ أَنَّ ابْنَ أَبِي جَعْفَرٍ قَالَ: سَمِعْتُ حَمْزَةَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ

कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, आदमी हमेशा लोगों के सामने हाथ फैलाता रहता है यहाँ तक कि वो क़यामत के दिन इस तरह उठेगा कि उसके चेहरे पर ज़रा भी गोश्त न होगा।

1475. और आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत के दिन सूरज इतना करीब हो जाएगा कि पसीना आधे बदन तक पहुँच जाएगा। लोग इसी हाल में अपनी मुख़िलसी के लिये हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से फ़रियाद करेंगे। फिर पूसा अलैहिस्सलाम से। फिर मुहम्मद (ﷺ) से। अब्दुल्लाह ने अपनी रिवायत में ये ज़्यादाती की है कि मुझसे लैज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, फिर आँहज़रत (ﷺ) शफ़ाअत करेंगे कि मख़लूक का फ़ैसला किया जाए। फिर आप बढ़ेंगे और जन्नत के दरवाज़े का हल्का धाम लेंगे। और इसी दिन अल्लाह तआला आपको मक़ामे-महमूद अता फ़र्माएगा। जिसकी तमाम अहले-महशर ता'रीफ़ करेंगे। और मुअल्ला बिन असद ने कहा कि हमसे बुहैब ने नोअमान बिन राशिद से बयान किया, उनसे जुहरी के भाई अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम ने, उनसे हमज़ा बिन अब्दुल्लाह ने और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से फिर इतनी ही हदीष बयान की जो सवाल के बाब में है।

(दीगर मक़ाम : 4817)

तशरीह : हदीष के बाब में भी सवाल करने की मज़म्मत की गई है और बतलाया गया है कि ग़ैर-मुस्तिह्वीक़ीन सवाल करने वालों का हश्श में ये हाल होगा कि उनके चहरे पर गोश्त न होगा और इस ज़िल्लत व ख़वारी के साथ मैदाने हश्श में महशूर होंगे।

सवाल करने की तफ़सील में अल्लामा ऐनी (रह.) फ़र्माते हैं, व हिय अला प्रलाषति औजहिन हरामुन व मक्रूहुन व मुबाहुन फलहरामु लिमन सअल वहुव गनिथ्युन मिन ज़कातिन औ अज़हर मिनल्फ़किरि फौक मा हुव बिही वल्मक्रूहु लिमन सअल मा इन्दहू मा यम्नउहू अन ज़ालिक वलम यज़हर मिनल्फ़किरि फौक मा हुव बिही वल्मुबाहु लिमन सअल बिल्मअरूफ़ि करीबन औ सदीक़न व अम्मस्सुवाल् इन्दज़ज़रूरति वाजिबुन लिइहयाइन्नफ़िस व अदखलहुहावुदी फिल्मुबाहि व अम्मल्अरुजु मिन ग़ैरि मस्अलतिन व ला अशरफ़ि नफ़्सिन फला बास बिही. (ऐनी)

या'नी सवाल की तीन किस्में हैं। हराम, मक्रूह और मुबाह। हराम तो उसके लिये जो मालदार होने के बावजूद ज़कात में से माँगे और ख़वाह-मख़वाह अपने को मुहताज ज़ाहिर करे। मक्रूह उसके लिये जिसके पास वो चीज़ मौजूद है जिसे वो माँग रहा है, वो ये नहीं सोचता कि ये चीज़ तो मेरे पास मौजूद है। साथ ही ये भी कि अपने आपको मुहताज भी ज़ाहिर नहीं करता फिर भी सवाल कर रहा है और मुबाह उसके लिये है जो इक़रीबी हज़त के वक़्त अपने किसी ख़ास दोस्त या रिश्तेदार से सवाल करे। कुछ मर्तबा सख़्ततरतीन ज़रूरत के तहत जहाँ मौत व ज़िन्दगी का सवाल आ जाए सवाल करना भी ज़रूरी हो जाता है और

قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَسْأَلُ النَّاسَ حَتَّى يَأْتِيَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَيْسَ فِي وَجْهِهِ مِزْعَةٌ لَحْمٍ)).

١٤٧٥- وَقَالَ: ((إِنَّ الشَّمْسَ تَلْتَوِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يَبْلُغَ الْعَرَقُ يَصْفَ الْأَذُنَ. فَيَتِمَّا هُم كَذَلِكَ اسْتَعَاثُوا بِأَدَمَ، ثُمَّ بِمُوسَى، ثُمَّ بِمُحَمَّدٍ ﷺ)). وَزَادَ عَبْدُ اللَّهِ: قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ: ((فَيَنْفَعُ لِقَضَى بَيْنَ الْخَلْقِ، فَيَنْشِي حَتَّى يَأْخُذَ بِحَلْقَةِ الْبَابِ. فَيَوْمَئِذٍ يَبْعَثُهُ اللَّهُ مَقَامًا مَحْمُودًا يَحْمَدُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ كُلُّهُمْ)). وَقَالَ مُعْلَى حَدَّثَنَا وَهَبٌ عَنِ الثَّعْمَانِ بْنِ وَهْبٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُسْلِمٍ أَخِي الزُّهْرِيِّ عَنْ حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ سَمِعَ ابْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْمَسْأَلَةِ.

[طرفه في : ٤٧١٨].

बगैर सवाल किये और ताँके-झाँके कोई चीज़ अज़बुद मिल जाए तो उसके लेने में कोई हर्ज नहीं है।

ग़ौर— मुस्तहिक्कीन सवाल करने वाले की सज़ा के बयान के साथ इस हदीष में आँहज़रत की शफ़ाअते कुबरा का भी बयान किया गया है जो क़यामत के दिन आपको हासिल होगी। जहाँ किसी भी नबी व रसूल को कलाम करने की मजाल न होगी वहाँ आप (ﷺ) नोअे इंसान के लिये शफ़ेअ और मुशफ़ेअ बनकर तशरीफ़ लाएँगे। अल्लाहुम्मजुबना शफ़ाअत हबीबिक (ﷺ) यौमल्लिक़ियामति आमीन

बाब 53 : (सूरह बक्रर: में) अल्लाह तआला का इशार्द

कि जो लोगों से चिमटकर नहीं मांगते और कितने माल से आदमी मालदार कहलाता है। इसका बयान और नबी (ﷺ) का ये फ़र्माना कि वो शख्स जो बक्रदे-किफ़ायत नहीं पाता (गोया उसको ग़नी नहीं कह सकते) और (अल्लाह तआला ने इसी सूरह में फ़र्माया है कि) मदक़ा—ख़ैरात तो उन फ़ुकरा के लिये हैं जो अल्लाह के रास्ते में धिर गये हैं। किसी मुल्क में जा नहीं सकते कि वो तिजारत ही कर लें। नावाकिफ़ लोग उन्हें सवाल न करने की वजह से ग़नी समझते हैं। आख़िर आयत फ़इज़ल्लाह बिही अलीम तक (या'नी वो हद बया है जिससे सवाल नाजाइज़ हो) (अल बक्रर: 273)

बाब की हदीष में उसकी तसरीह नहीं है। शायद इमाम बुखारी (रह.) को इसके बारे में कोई हदीष ऐसी नहीं मिली जो उनकी शर्त पर हो।

1476. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मिस्कीन वो नहीं जिसे दो लुक़मे दर-दर फिरीये। मिस्कीन तो वो है जिसके पास माल नहीं। लेकिन उसे सवाल से शम आती है और वो लोगों से चिमट कर नहीं माँगता (मिस्कीन वो जो कमाए मगर बक्रदे-ज़रूरत न पा सके)

(दीगर मक़ाम: 1479, 4539)

तशरीह: अबू दाऊद ने सहल बिन हज़ल्ला से निकाला कि सहाबा ने पूछा तवंगरी क्या है (जिसमें सवाल करना मना हो)? आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब सुबह शाम का खाना उसके पास मौजूद हो। इन्ने खुज़ैमा की रिवायत में यूँ है जब दिन-रात का पेटभर खाना उसके पास हो। कुछ ने कहा ये हदीष मन्सूख है दूसरी हदीषों से जिसमें मालदार उसको फ़र्माया है जिसके पास पचास दिरहम हों या इतनी मालियत की चीज़ें। (वहीदी)

1477. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन इलय्या ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद हज़्जाअ ने बयान किया, उनसे इब्ने अश्वआ ने, उनसे

٥٣- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى:

﴿لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا﴾ [البقرة: ٢٧٣] وَكَمْ الْفَنَى، ١ وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَلَا يَجِدُ غَنِيٌّ يُغْنِيهِ)) (لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْتَسِبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ) - إِلَى قَوْلِهِ - ﴿فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ﴾ [البقرة: ٢٧٣].

١٤٧٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ قَالَ حَدَّثَنَا طَبَقَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ الْمُسْكِينُ الَّذِي تَرُدُّهُ الْأَكْلَةُ وَالْأَكْلَتَانِ، وَلَكِنَّ الْمُسْكِينَ الَّذِي لَيْسَ لَهُ غِنًى وَتَسْتَحْيِي وَلَا يَسْأَلُ النَّاسَ إِلْحَافًا)).

[طرفاء في: ١٤٧٩، ٤٥٣٩].

١٤٧٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِبرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عُثَيْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ

आमिर शुअबी ने, कहा कि मुझे मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) के मुन्शी वराद ने बयान किया, कि मुआविया (रज़ि.) ने मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) को लिखा कि उन्हें कोई ऐसी हदीष लिखिये जो आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी हो। मुगीरह (रज़ि.) ने लिखा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिये तीन बातें पसन्द नहीं करता, बिला वजह की गपशप, फ़िज़ूलखर्ची, लोगों से बहुत माँगना।

(राजेअ : 844)

तशरीह : फ़िज़ूल कलामी भी ऐसी बीमारी है जिससे इंसान का वक्फ़ा खाक में मिल जाता है। इसलिये कम बोलना और सोच समझकर बोलना अक्लमन्दों की अलामत है। इसी तरह फ़िज़ूलखर्ची करना भी इंसान की बड़ी भारी हिमाक़त है जिसका एहसास उस वक़्त होता है जब दौलत हाथ से निकल जाती है। इसलिये कुआनी ता'लीम ये है कि न बख़ील बनो और न इतने हाथ कुशादा कर लो कि परेशान हाली में मुब्तला हो जाओ। दरम्यानी चाल बहरहाल बेहतर है। तीसरा ऐब क़शरत के साथ दस्ते-सवाल दराज़ करना (माँगने के लिये हाथ फैलाना) ये भी इतना ख़तरनाक मर्ज़ है कि जिसको लग जाए उसका पीछा नहीं छोड़ता और वो बुरी तरह से उसमें गिरफ़्तार हो जाता है और दुनिया व आख़िरत में ज़लील व ख़वार हो जाता है। हज़रत मुगीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने ये हदीष लिखकर हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) को पेश की। इशारा था कि आपकी कामयाबी का राज़ इस हदीष में मुज़मर है जिसे मैं आपको लिख रहा हूँ। आँहज़रत (ﷺ) के जवामिज़ल कलाम में इस हदीष शरीफ़ को भी बड़ा मक़ाम हासिल है। अल्लाह पाक हमको ये हदीष समझने और अमल करने की तौफ़ीक़ दे। आमीन!

1478. हमसे मुहम्मद बिन गु़रैर जुहरी ने बयान किया, कहा कि हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने अपने बाप से बयान किया, उनसे सालेह बिन कैसान ने उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने ने कहा कि मुझे आमिर बिन सअद बिन अबी वक्क्रास ने अपने बाप सअद बिन अबी वक्क्रास (रज़ि.) से ख़बरी दी, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द अश़्खास को कुछ माल दिया। उस जगह मैं भी बैठा हुआ था। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके साथ ही बैठे हुए शख़्स को छोड़ दिया और उन्हें कुछ नहीं दिया। हालाँकि उन लोगों में वही मुझे ज़्यादा पसन्द था। आख़िर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के करीब जाकर चुपके से अर्ज़ किया, फलों शख़्स को आपने कुछ भी नहीं दिया? वल्लाह मैं उसे मोमिन ख़याल करता हूँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, या मुसलमान? उन्होंने बयान किया कि इस पर मैं थोड़ी देर तक ख़ामोश रहा। लेकिन मैं उनके मुता'ल्लिक़ जो कुछ जानता था उसने मुझे मजबूर किया और मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप फलों

الْحَدَاءُ عَنْ ابْنِ أَشْوَعٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي كَاتِبُ الْمُفِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: ((كُتِبَ مُعَاوِيَةَ إِلَى الْمُفِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ أَنْ أَكْتُبَ إِلَيْهِ بِشَيْءٍ سَمِعْتَهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ. فَكُتِبَ إِلَيْهِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللَّهَ كَرِهَ لَكُمْ ثَلَاثًا: قِيلَ وَقَالَ، وَإِضَاعَةَ الْمَالِ، وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ)). (راجع: ٨٤٤)

١٤٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غُرَيْرٍ الزُّهْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ صَالِحٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي غَابِرُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((أَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رَهْطًا وَأَنَا جَالِسٌ فِيهِمْ، قَالَ فَتَرَكْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنْهُمْ رَجُلًا لَمْ يُعْطِهِ - وَهُوَ أَغْنَاهُمْ إِلَيَّ - فَقُمْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَسَارَرْتُهُ فَقُلْتُ: مَا لَكَ عَنْ فَلَانٍ، وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَاهُ مُؤْمِنًا. قَالَ: ((أَوْ مُسْلِمًا)). قَالَ: فَسَكَتُ قَلِيلًا، ثُمَّ غَلْبَنِي مَا أَغْلَمَ لِي بِهِ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لَكَ عَنْ فَلَانٍ، وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَاهُ مُؤْمِنًا. قَالَ: ((أَوْ مُسْلِمًا)). قَالَ: فَسَكَتُ قَلِيلًا،

शख्स से क्यों खफा हैं, वल्लाह! मैं उसे मोमिन समझता हूँ। आपने फर्माया, या मुसलमान? तीन मर्तबा ऐसा ही हुआ। आपने फर्माया कि एक शख्स को देता हूँ (और दूसरे को नज़रअंदाज कर जाता हूँ) हालाँकि वो दूसरा मेरी नज़र में पहले से ज्यादा प्यारा होता है। क्योंकि (जिसको मैं देता हूँ न देने की सूरत में) मुझे डर इस बात का रहता है कि कहीं इसे चेहरे के बल धसीट कर जहन्नम में न डाल दिया जाए। और (यअक़ूब बिन इब्राहीम) अपने वालिद से, वो झालेह से, वो इस्माईल बिन मुहम्मद से, उन्होंने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना कि वो यही हदीस बयान कर रहे थे। उन्होंने कहा कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अपना हाथ मेरी गर्दन और मूँढ़ों के बीच में मारा। और फर्माया, सअद! इधर सुनो, मैं एक शख्स को (कुआन मजीद में लफ़्ज़) कुब्किबू औंधे लिटा देने के मा'ने में है। और सूरह मुल्क में जो मुकिब्बन का लफ़्ज़ है वो अकब्ब से निकला है। अकब्ब लाज़िम है या'नी औंधा गिरा। और उसका मतअदी कब्बा है। कहते हैं कि कब्बहुल्लाहु लिवजहिही या'नी अल्लाह ने उसे औंधे मुंह गिरा दिया। और कब्बुहू या'नी मैंने उसको औंधे मुंह गिराया। इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि झालेह बिन कैसान इमर जुहरी से बड़े थे वो अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) से मिले हैं।

(राजेअ: 27)

तफ़्सीह: ये हदीस किताबुल ईमान में गुजर चुकी है। इब्ने इस्हाक ने मराज़ी में निकाला, आँहज़रत (ﷺ) से कहा गया कि आपने इययना बिन हसन और अक़्रअ बिन हाबिस को सौ-सौ रुपये दे दिये। और जईल सुराका को कुछ नहीं दिया। आपने फर्माया, कसम उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है जईल बिन सुराका इययना और अक़्रअ ऐसे सारी ज़मीन भर लोगों से बेहतर है। लेकिन मैं इययना और अक़्रअ को रुपया देकर दिल मिलाता हूँ और जईल के ईमान पर तो मुझको भरोसा है। (वहीदी)

1479. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने अबुज्ज़िनाद से बयान किया, उनसे अज़रज ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया, मिस्कीन वो नहीं है जो लोगों का चक्कर काटता फिरता है ताकि उसे दो-एक लुकमे या दो-एक खजूर मिल जाए बल्कि अम्ली मिस्कीन वो है जिसके पास इतना माल नहीं कि वो उसके ज़रिये से बेपरवाह हो जाए। इस हाल में भी किसी को

ثُمَّ خَلَّنِي مَا أَخْلَمَ إِلَيْهِ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لَكَ عَنْ فَلَانٍ، وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَاهُ مُؤْمِنًا. قَالَ: ((أَوْ مُسْلِمًا)) فَلَا تَمْرَاتٍ فَقَالَ: ((إِنِّي لَأُعْطِي الرَّجُلَ وَغَيْرَهُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْهُ، خَشْيَةً أَنْ يَكْبُ فِي النَّارِ عَلَى وَجْهِهِ)). وَعَنْ أَبِيهِ عَنْ صَالِحٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُحَمَّدٍ أَنَّهُ قَالَ : سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ هَذَا فَقَالَ فِي حَدِيثِهِ: ((لَعَزَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِيَدِهِ فَوَجَعَ بَيْنَ عُنُقِي وَتَحْتِي ثُمَّ قَالَ: ((أَقْبِلْ أَيْ سَعْدُ، إِنِّي لَأُعْطِي الرَّجُلَ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ : ((لَكُنْ كُنُوا: قُلُوبًا. «مُكِنًا» أَكْبَرُ الرَّجُلِ إِذَا كَانَ لَمَلَةً غَيْرَ وَاقِعٍ عَلَى أَحَدٍ، فَإِذَا وَقَعَ الْبَلَاءُ قُلْتُ : كَبَّةٌ اللَّهُ لِيُوجِهُهُ، وَكَبْتُهُ أَنَا، قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ صَالِحٌ بْنُ كَيْسَانَ هُوَ أَكْبَرُ مِنَ الزُّهْرِيِّ وَهُوَ لَمْ أَذْكُرْ أَنَّ غُمَرَ. [راجع: ٢٧]

١٤٧٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزُّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((لَيْسَ الْمِسْكِينُ الَّذِي يَطْلُوفُ عَلَى النَّاسِ تَرْدُةَ اللَّفْمَةِ وَاللَّفْمَتَانِ وَالْمَرْتَانِ، وَلَكِنْ

मा'लूम नहीं कि कोई उसे सदका ही दे दे और न वो खुद हाथ फैलाने के लिये उठाता है। (राजेअ: 1476)

1480. हमसे इमर बिन हफ़स बिन गियास ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, कहा कि हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू सालेह जकवान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (رضي الله عنه) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुम में से कोई शख्स अपनी रस्सी लेकर (मेरा खयाल है कि आपने यूँ फ़र्माया) पहाड़ में चला जाए फिर लकड़ियाँ जमा करके उन्हें फ़रोख्त करे। उससे खाए भी और सदका भी करे। ये उसके लिये इससे बेहतर है कि लोगों के सामने हाथ फैलाए।

(राजेअ: 1470)

الْمُسْكِينُ الَّذِي لَا يَجِدُ غِنًى يُعِينُهُ، وَلَا يُفْطِنُ بِهِ فَيَصَدَّقَ عَلَيْهِ، وَلَا يَقُومَ فَيَسْأَلَ النَّاسَ. (راجع: ١٤٧٦)

١٤٨٠ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ بْنُ غِيَاثٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَأْخُذُ أَحَدُكُمْ حَبْلُهُ ثُمَّ يَفْتَنُو - أَحْسِبُهُ قَالَ إِلَى الْجَبَلِ - فَيَحْتَطِبُ فَيَبِيعَ قَبَاكِلَ وَيَصَدَّقَ غَيْرَ لَهُ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ النَّاسَ)). (راجع: ١٤٧٠)

बाब 54 : खजूर का पेड़ पर अंदाज़ा कर लेना दुरुस्त है

٥٤ - بَابُ غَرْصِ النَّخْلِ

तशरीह: जब खजूर या अंगूर या और कोई मेवा पेड़ पर पक जाए तो एक जानने वाले को बादशाह भेजता है वो जाकर अंदाज़ा लगाता है कि उसमें इतना मेवा उतरेगा। फिर उसी का दसवाँ हिस्सा जकात के तौर पर लिया जाता है उसको खरस कहते हैं। औहज़रत (رضي الله عنه) ने हमेशा ये जारी रखा और खुलफ़ा-ए-राशिदीन ने भी। इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद और अहले हदीष सब इसको जाइज़ कहते हैं। लेकिन हन्फ़िया ने बरख़िलाफ़ अह्लादीषे सहीहा के सिर्फ़ अपनी राय से उसको नाजाइज़ करार दिया है। उनका क़ौल दीवार पर फेंक देने के लायक़ है। (अज़ मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम)

अंदाज़ा लगाने के लिये खजूर का ज़िक्र इसलिये आ गया कि मदीना शरीफ़ में बक़रत खजूर ही हुआ करती हैं वरना अंगूर वग़ैरह का अंदाज़ा भी किया जा सकता है जैसा कि हदीषे ज़ेल से ज़ाहिर है।

अन इताबिब्नि उसैदिन अन्नन्नबिय्य (رضي الله عنه) कान यब्अषु अलन्नासि अलैहिम कुरुमहुम व बिमारहुम रवाहुत्तिर्मिजी वब्नु माजा रवाहू अबू दाऊद व तिमिजी) या'नी नबी करीम (ﷺ) लोगों के पास अन्दाज़ा करने वालों को भेजा करते थे, जो उनके अंगूरों और फलों का अन्दाज़ा लगाते। व अन्हु अयज़न क़ाल अमर रसूलुल्लाहि (ﷺ) अय्यखरसल्इनब अल्हदीष रवाहु अबू दाऊद व तिमिजी) या'नी औहज़रत (رضي الله عنه) ने हुक्म दिया कि खजूरों की तरह अंगूरों का भी अंदाज़ा लगा लिया जाए फिर उनके ख़ुश्क होने पर उनमें से उसी अंदाज़े के मुताबिक़ इश् में मुनक्का लिया जाएगा।

हज़रत इमाम शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, वल्अहदीषुल्मज्कूरतु तदुल्लु अला मशरूइयतिलखसिं फिलएनबि वन्नखलि व क़द कालशशाफ़िइ फ़ी अहदि क़ौलिही बिबुजूबिही मुस्तदिल्लन बिमा फ़ी हदीषि इताबिन मिन अन्नन्नबिय्य (رضي الله عنه) अमर बिज़ालिक वजहबतिल्अतरतु व मालिक व रवशशाफ़िइ अन्नहू जाइज़ुन फ़क़त व जहबतिल्हादविय्यतु व रूबिय अनिशशाफ़िइ अयज़न इला अन्नहू मन्दूबुन व क़ाल अबू हनीफ़त ला यज़ूज़ लिअन्नहु रम्ज़ुम्बिल्ग़िबि वल्अहदीषुल्मज्कूरतु तरहु अलैहि. (नेलुल औतार)

या'नी बयान की गई अह्लादीष खजूर और अंगूरों में अंदाज़े करने की मशरूइयत पर दलालत करती हैं और इताब की हदीषे मज्कूर से दलील पकड़ते हुए इमाम शाफ़िई (रह.) ने अपने एक क़ौल में उसे वाजिब करार दिया है और अतत और इमाम

मालिक और एक क़ौल में इमाम शाफ़िई (रह.) ने भी उसे सिर्फ़ जवाज़ के दर्जे में रखा है और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) उसे नाजाइज़ कहते हैं इसलिये कि ये अंदाज़ा एक ग़रीबी अंदाज़ा है और अहादीषे मज़क़ूरा उनके इस क़ौल की तर्दीद करती हैं।

इस हदीष के ज़ेल में हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़रमाते हैं, हक़तिमिज़ी अन बअज़ि अहलिल्इल्मि अन्न तप्सीरहू अन्न ष्शिमार इज़ा अदरकत मिन रूतबि वल्इनबि मिम्मा तजिबु फ़ीहिज़्ज़कातु बअप्सुसुल्तानु ख़ारिसन यन्ज़ुरू फयकुलू यख़रुजु मिन हाज़ा कज़ा व कज़ा तमरन फयुहसीहि व यन्ज़ुरू मब्लगल्डशरि फयुस्बितुहू अलैहिम व यख़ला बैनहुम व बैन ष्शिमारि फइज़ा जाअ वक्नुल्जज़ाज़ि उख़िज़ मिन्हुमुल्डशरू इला आख़िरिही. (फ़तुहल बारी)

या'नी ख़रस की तप्सीर कुछ अहले इल्म से यँ मन्कूल है कि जब अंगूर और खज़ूर इस हाल में हों कि उन पर ज़कात लागू हो तो बादशाह एक अंदाज़ा लगाने वाला भेजेगा। जो उन बाग़ों में जाकर उनका अंदाज़ा करके बतलाएगा कि उसमें इतना अंगूर और इतनी इतनी खज़ूर निकलेगी। इसका सही अंदाज़ा करके देखेगा कि इशर के निज़ाब को ये पहुँचता है या नहीं। अगर इशर का निज़ाब मौजूद है तो फिर वो उन पर इशर प्राबित कर देगा और मालिकों को फलों के लिये इख़्तियार दे देगा कि वो जो चाहें करें। जब कटाई का वक़्त आएगा तो उसी अंदाज़े के मुताबिक़ उससे ज़कात वसूल की जाएगी। अगरचे उलमा का अब इसके बारे में इख़्तिलाफ़ है मगर सहीह बात यही है कि ख़रस अब भी जाइज़ है और इस बारे में अस्हाबुराय़ा का फ़त्वा दुरुस्त नहीं है। हदीषे ज़ेल में जंगे तबूक 9 हिज़री का ज़िक्र है। उसी मौक़े पर ऐला के ईसाई हाकिम ने आँहज़रत (ﷺ) से सुलह कर ली थी जो इन लफ़्ज़ों में लिखी गई थी, बिस्मिल्लाहिर्हमानिर्हीम हाज़िही अमनतुम्मिनल्लाहि व मुहम्मदिन्नबिद्यि रसूलिल्लाहि लयोहन्ना बिन रूबा व अहलु ईला सुफुनुहुम व सध्यारतुहुम फिलबरि वल्बहरि लहुम जिम्मतुल्लाहि व मुहम्मदुन्नबिद्यु (ﷺ)

या'नी अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद (ﷺ) की तरफ़ से ये यूहन्ना बिन रूबा और अहले ऐला के लिये अमन का परवाना है। खुश्की और तरी में हर जगह उनके सफ़ीने और उनकी गाड़ियाँ सब के लिये अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से अमन व अमान की गारण्टी है।

1481. हमसे सहल बिन बक्कार ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने, उनसे अम्र बिन यह्या ने, उनसे अब्बास बिन सहल साअदी ने, उनसे अबू हुमैद साएदी ने बयान किया कि हम ग़ज़्व-ए-तबूक के लिये नबी करीम (ﷺ) के साथ जा रहे थे। जब आप वादी-ए-कुआ (मदीना मुनव्वरा और शाम के दरम्यान एक क़दीम आबादी) से गुज़रे तो हमारी नज़र एक औरत पर पड़ी जो अपने बाग़ में खड़ी थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा-किराम से फ़र्माया कि इसके फलों का अंदाज़ा लगाओ (कि इसमें कितनी खज़ूरें निकलेंगी) हुज़ूरे-अकरम (ﷺ) ने दस वस्क्र का अंदाज़ा लगाया। फिर उस औरत से फ़र्माया कि याद रखना इसमें से जितनी खज़ूरें निकले। जब हम तबूक पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि याद रखना इसमें से जितनी खज़ूर निकले। जब हम तबूक पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि आज रात बड़े ज़ोर की आँधी चलेगी इसलिये कोई शख्स खड़ा न रहे और जिसके पास कैंट हो तो वो उसे बाँध दे। चुनौचे हमने कैंट बाँध लिये और आँधी बड़े ज़ोर की आई। एक शख्स खड़ा हुआ था, तो हवा ने जबले-तै पर जा फेंका। और

۱۴۸۱- حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ بَكَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ غَمْرٍو بْنِ يَحْيَى عَنْ عَثَمِ السَّاعِدِيِّ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَزْوَةَ تَبُوكَ، فَلَمَّا جَاءَ وَادِي الْقُرَى إِذَا امْرَأَةٌ فِي حَدِيقَةٍ لَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِأَصْحَابِهِ: ((اغْرُضُوا))، وَغَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَشْرَةَ أَوْسَى، فَقَالَ لَهَا: ((أَخْصِي مَا تَخْرُجُ مِنْهَا)). فَلَمَّا أَتَيْنَا تَبُوكَ قَالَ: ((أَمَّا إِنِّي سَتَهَبُ اللَّيْلَةَ رِيحٌ شَدِيدَةٌ، فَلَا يَقُومَنَّ أَحَدٌ، وَمَنْ كَانَ مَعَهُ بَعِيرٌ فَلْيَتَّقِلْهُ، فَهَقَلْنَاهَا، وَهَبَتْ رِيحٌ شَدِيدَةٌ فَغَامَ رَجُلٌ فَأَلْقَتْهُ بِحَبْلِ طَبَعٍ)). وَأَهْدَى مَلِكٌ ابْنَةً

ऐलिया के हाकिम (यूहन्ना बिन रूबा) ने नबी करीम (ﷺ) को सफ़ेद खच्चर और एक चादर का तोहफ़ा भेजा। आँहुज़ूर (ﷺ) ने तहरीरी तौर पर उसे उसकी हुकूमत पर बरकरार रखा फिर जब वादी-ए-कुर्आ (वापसी में) पहुँचे तो आपने उसी औरत से पूछा कि तुम्हारे बाग़ में कितना फल आया था। उसने कहा कि आपके अंदाज़े के मुताबिक़ दस वस्क्र आया था। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं मदीना जल्दी जाना चाहता हूँ। इसलिये जो कोई मेरे साथ जल्दी चलना जाहे वो मेरे साथ जल्दी खाना हो फिर जब (इब्ने बक्कार इमाम बुखारी रह. के शैख़ ने एक ऐसा जुम्ला कहा जिसके मा'ने ये थे) कि मदीना दिखाई देने लगा तो आपने फ़र्माया कि ये है तूबा! फिर आपने उहुद पहाड़ दिखा तो फ़र्माया कि ये पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है और हम भी उससे मुहब्बत रखते हैं। फिर आपने फ़र्माया क्या मैं अन्सार के सबसे अच्छे खानदान की निशानदही न करूँ? सहाबा ने अज़्र किया कि ज़रूर कीजिए। आपने फ़र्माया कि बनू नज़ार का खानदान। फिर अबू अब्दे अशहल का खानदान, फिर अबू सअद का या (ये फ़र्माया कि) बनी हारिष बिन खज़रज का खानदान। और फ़र्माया कि अन्सार के तमाम ही खानदानों में ख़ैर है, अबू अब्दुल्लाह (कासिम बिन सलाम) ने कहा कि जिस बाग़ की चारदीवारी हो उसे हदीका कहेंगे और जिस की चारदीवारी न हो उसे हदीका नहीं कहेंगे।

(दीगर मक़ाम : 1782, 3161, 3791, 4422)

1482. और सुलैमान बिन बिलाल ने कहा कि मुझसे अग्र ने इस तरह बयान किया कि फिर बनी हारिष बिन खज़रज का खानदान और फिर बनू सअद का खानदान। और सुलैमान ने सअद बिन सईद से बयान किया, उनसे अम्पारा गज़निय्या ने, उनसे अब्बास ने, उनसे उनके बाप (सहल) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उहुद वो पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत रखता है और हम उससे मुहब्बत रखते हैं।

तशरीह :

इस लम्बी हदीस में जहाँ खज़ूरों का अंदाज़ा कर लेने का ज़िक्र है वहाँ और भी बहुत से हक़ाइक़ का बयान है। ग़ज़-ए-तबूक 9 हिजरी में ऐसे वक़्त में पेश आया कि मौसम गर्मी का था और अपने पूरे शबाब पर था और मदीना में खज़ूर की फ़सल बिल्कुल तैयार थी। फिर भी सहाबा किराम (रज़ि.) ने बड़ी जाँ-निषारी का धुबूत दिया और हर परेशानी

لِلنَّبِيِّ ﷺ بَمَلَّةٍ بَيْضَاءَ وَكَمَاهُ بُرْدًا، وَكَتَبَ لَهُ تَبَخْرِهِمْ. فَلَمَّا أَتَى وَادِيَ الْفُرَيْ قَالَ لِلْمَرَأَةِ: «كَمْ جَاءَتْ خَدِيقَتُكَ؟» قَالَتْ: عَشْرَةٌ أَوْ ثَمَنِي عَشْرَةً رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «إِنِّي مُتَعَجِّلٌ إِلَى الْمَدِينَةِ، لَمَنْ أَرَادَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَعَجَّلَ مَعِيَ فَلْيَتَعَجَّلْ» فَلَمَّا - قَالَ إِنَّ بَكَارٍ كَلِمَةً مَعْنَاهَا - أَشْرَفَ عَلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: «هَلْ يَوْمَ طَابَتْ» فَلَمَّا رَأَى أَحَدًا قَالَ: «هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ، إِلَّا أَغْبَرَكُمْ بِخَيْرٍ دُورٍ الْأَنْصَارِ» قَالُوا: بَلَى. قَالَ: «(دُورٌ بَنِي النَّجَارِ، ثُمَّ دُورٌ بَنِي عَتِيدِ الْأَشْهَلِ، ثُمَّ دُورٌ بَنِي سَاعِدَةَ أَوْ دُورٌ بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْعُزْزَجِ، وَلِي كُلِّ دُورٍ الْأَنْصَارِ يَغْنِي غَوْرًا قَالَ أَبُو عَتِيدٍ اللَّهُ كُلُّ بُسْتَانٍ عَلَيْهِ خَاطِطٌ فَهُوَ خَدِيقَةٌ وَمَا لَمْ يَكُنْ عَلَيْهِ خَاطِطٌ لَا يَمُوتُ خَدِيقَةً».

[أطرافه في : 1872, 3161, 3791]

[4422]

١٤٨٢ - وَقَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ حَدَّثَنِي عُمَرُو (ثُمَّ دَارَ بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْعُزْزَجِ ثُمَّ بَنِي سَاعِدَةَ)). وَقَالَ سُلَيْمَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ غَزِيَّةٍ عَنْ عَتَابٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «(أَخَذَ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ».

का मुकाबला करते हुए वो इस तवील (लम्बे) सफ़र में शरीक हुए। सरहद का मुआमला था, आप दुश्मन के इतिज़ार में वहाँ काफ़ी देर ठहरे रहे मगर दुश्मन मुकाबले को न आए बल्कि करीब ही ऐला शहर के ईसाई हाकिम यूहन्ना बिन रुबा ने आपको सुलह का पैग़ाम भेजा। आपने उसकी हुकूमत उसके लिये बरकरार रखी क्योंकि आपका मंशा मुल्कगिरी (साम्राज्यवाद) हाज़िज़ न था। वापसी में आपको मदीना की मुहब्बत ने सफ़र में ज़ुलत (जल्दी) पर आमादा कर दिया तो आपने मदीना जल्द से जल्द पहुँचने का ऐलान फ़र्मा दिया। जब ये पाक शहर नज़र आने लगा तो आप इस क़द्र खुश हुए कि आपने इस मुकद्दस शहर को लफ़्ज़े तौबा से मौसूम किया। जिसका मतलब पाकीज़ा और इम्दा के हैं। उहुद पहाड़ के हक़ में भी अपनी इतिहाई मुहब्बत का इज़हार किया फिर आप (ﷺ) ने क़बाईले अंसार की दर्जा-ब-दर्जा फ़ज़ीलत बयान की जिनमें अव्वलीन दर्जा बनू नज़्ज़ार को दिया गया। उन्हीं लोगों में आपकी ननिहाल थी और सबसे पहले जब आप मदीना तशरीफ़ लाए थे ये लोग हथियार बाँधकर आपके इस्तिक्बाल के लिये हाज़िर थे। फिर तमाम क़बाइले अंसार ता'रीफ़ के काबिल हैं जिन्होंने दिलो-जान से इस्लाम की ऐसी मदद की कि तारीख़ में हमेशा के लिये याद रह गए। (रजियल्लाहु अन्हु ब रज़ू अन्ह)

बाब 55 : उस ज़मीन की पैदावार से दसवाँ हिस्सा लेना होगा जिसकी सैराबी बारिश या जारी (नहर, दरया वगैरह) पानी से हुई हो और हज़रत इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने शहद में जकात को ज़रूरी नहीं जाना

1483. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन बुहैब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनस बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्हें शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन इमर ने, उन्हें उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। वो ज़मीन जिसे आसमान (बारिश का पानी) या घश्मा सैराब करता हो। वो वो ख़ुद ब ख़ुद नमी से सैराब हो जाती हो तो उसकी पैदावार से दसवाँ हिस्सा लिया जाएगा और वो ज़मीन जिसे कुओं से पानी खींचकर सैराब किया जाता हो तो उसकी पैदावार से बीसवाँ हिस्सा लिया जाए। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी) ने कहा कि ये हदीष या'नी अब्दुल्लाह बिन इमर की हदीष या'नी अबू सईद की हदीष की तफ़्सीर है। इसमें जकात की कोई मिक्दार मज़कूर नहीं है और इसमें मज़कूर है। और ज़्यादाती कुबूल की जाती है और गोलमोल हदीष का हुक्म साफ़-साफ़ हदीष के मुवाफ़िक़ लिया जाता है। जब उसका रावी बिल्हा हो। जैसे फ़ुज़ैल बिन अब्बास (रज़ि.) ने रिवायत किया कि नबी करीम (ﷺ) ने का'बा में नमाज़ नहीं पढ़ी। लेकिन बिलाल

۵۵- بَابُ الْعَشْرِ فِيمَا يُسْقَى مِنْ
مَاءِ السَّمَاءِ وَمِائِ الْمَاءِ الْجَارِي
وَلَمْ يَرَوْهُمَا مِنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ فِي الْمَسَلِ
هَذَا

۱۴۸۳- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ
حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بُهَيْبٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي
يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ
عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ
ﷺ قَالَ : ((فِيمَا سَقَتْ السَّمَاءُ وَالْغَيُوثُ
أَوْ كَانَ غَرِيهَا الْعَشْرُ، وَمَا سَقَى بِالنَّضْحِ
بِصَفِّ الْعَشْرِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ : هَذَا
تَفْسِيرُ الْأَوَّلِ لِأَنَّهُ لَمْ يُؤَقَّتْ فِي الْأَوَّلِ،
يُخْبِرُ حَدِيثُ ابْنِ عُمَرَ ((فِيمَا سَقَتْ
السَّمَاءُ الْعَشْرُ)) وَبَيَّنَّ فِي هَذَا وَوَقَّتْ.
وَالرِّيَادَةُ مَقْبُولَةٌ، وَالْمُفَسَّرُ يَقْضَى عَلَى
الْمَنْتَهَمِ إِذَا رَوَاهُ أَهْلُ الثَّبَتِ، كَمَا رَوَى
الْفَضْلُ بْنُ عَسَاةٍ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يُصَلِّ
فِي الْكَعْبَةِ)) وَقَالَ بِلَالٌ : ((قَدْ صَلَّيْ))

(रज़ि.) ने बतलाया कि आपने नमाज़ (का'बा में) पढ़ी थी। इस मौक़े पर बिलाल (रज़ि.) की बात कुबूल की गई और फुज़ैल (रज़ि.) का क़ौल छोड़ दिया गया।

فَاعِذْ بِقَوْلِ بِلَالٍ وَتَرْكِ قَوْلِ الْفَضْلِ

तशरीह: उसूल हदीष में ये प्राबित हो चुका है कि षिका और ज़ाबित शख्स की ज़्यादती मक्बूल है। इसी बिना पर अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की हदीष है जिसमें ये मज़कूर है कि ज़कात में माल का कौनसा हिस्सा लिया जाएगा या'नी दसवाँ हिस्सा या बीसवाँ हिस्सा इस हदीष या'नी इब्ने उमर की हदीष में ज़्यादती है तो ये ज़्यादती वाजिबुल मक्बूल होगी। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है ये हदीष या'नी अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की हदीष पहली हदीष या'नी इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष की तफ़सीर करती है क्योंकि इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष में निज़ाब की मिक्दार मौजूद नहीं है। बल्कि हर एक पैदावार से दसवाँ हिस्सा या बीसवाँ हिस्सा लिये जाने का ज़िक्र है। चाहे पाँच वस्क़ हो या कम हो। अबू सईद (रज़ि.) की हदीष में तफ़सील है कि पाँच वस्क़ से कम में ज़कात नहीं है। तो ये ज़्यादती है और ज़्यादती षिका और मो'तबर राबी की मक्बूल है। (वहीदी)

बाब 56 : पाँच वस्क़ से कम में ज़कात फ़र्ज नहीं है।

٥٦- بَابُ لَيْسَ لِيَمَّا دُونَ خَمْسَةِ أَوْسُقٍ صَدَقَةٌ

1474. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यहा बिन सईद क़ज़ान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुरहमान बिन अबी सअसआ ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पाँच वस्क़ से कम में ज़कात नहीं है और पाँच ऊँटों से कम में ज़कात नहीं है और चाँदी के पाँच औक्रिया से कम में ज़कात नहीं है।

(राजेअ : 1405)

١٤٨٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي شُعْبَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «لَيْسَ لِيَمَّا أَلَّا مِنْ خَمْسَةِ أَوْسُقٍ صَدَقَةٌ، وَلَا لِي أَقَلُّ مِنْ خَمْسَةِ مِنَ الْإِبِلِ الْوَرْدِ صَدَقَةٌ، وَلَا لِي أَقَلُّ مِنْ خَمْسِ أَوْاقٍ مِنَ الْوَرْدِ صَدَقَةٌ». (راجع: ١٤٠٥)

तशरीह: अहले हदीष का मज़हब ये है कि गेहूँ और जौ और जवार और खजूर और अंगूर में जब उनकी मिक्दार पाँच वस्क़ या ज़्यादा हो तो ज़कात वाजिब है। और उनके सिवा दूसरी चीज़ों में जैसे तरकारियाँ और मेवे वगैरह में मुत्तक़न ज़कात नहीं ख़्वाह वो कितने ही हों। क़स्तलानी (रह.) ने कहा मेवों में से सिर्फ़ खजूर और अंगूर में और अनाजों में से हर एक अनाज में जो ज़ख़ीरा रखे जाते हैं जैसे गेहूँ, जौ, जवार, मसूर, माश, या बाजरा, चना, लोबिया वगैरह उन सब में ज़कात है और हन्फिया के नज़दीक पाँच वस्क़ की कैद भी नहीं है, क़लील हो या क़पीर सब में ज़कात वाजिब है। और इमाम बुखारी (रह.) ने ये हदीष लाकर उनका रद्द किया। (वहीदी)

बाब 57 : खजूर के फल तोड़ने के वक़्त ज़कात ली जाए

٥٧- بَابُ أَخَذِ الصَّدَقَةِ التَّمْرِ عِنْدَ حَرَامِ النَّخْلِ

और ज़कात की खजूर को बच्चे का हाथ लगाना और उसमें से कुछ खालेना

وَقَلَّ يُتْرَكَ الصَّبِيُّ فَيَمْسُ تَمْرَ الصَّدَقَةِ ؟

1485. हमसे इमर बिन हसन असदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मेरे बाप ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन तहमान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास तोड़ने के वक़्त ज़कात की खजूर लाई जाती, हर शख्स अपनी ज़कात लाता और नौबत यहाँ तक पहुँचती कि खजूर का एक ढेर लग जाता। (एक मर्तबा) हसन और हुसैन (रज़ि.) ऐसी ही खजूरों से खेल रहे थे कि एक ने एक खजूर उठाकर अपने मुँह में रख ली। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज्यों ही देखा तो उनके मुँह से खजूर निकाल ली। और फ़र्माया कि क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि मुहम्मद (ﷺ) की औलाद ज़कात का माल नहीं खा सकती।

(दीगर मक़ाम : 1491, 3082)

١٤٨٥ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ الْحَسَنِ الْأَسَدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَيَْادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُؤْتِي بِالْعَمْرِ عِنْدَ مِرَامِ النَّخْلِ، فَيَجِيءُ هَلَا بِعَمْرِهِ وَهَلَا مِنْ تَمْرِهِ، حَتَّى يَصِيرَ عِنْدَهُ كَوْمًا مِنْ تَمْرٍ، فَيَجْعَلُ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَلْعَبَانِ بِذَلِكَ التَّمْرِ، فَأَخَذَ أَحَدُهُمَا تَمْرَةً فَيَجْعَلُهُ فِي فِيهِ، فَظَهَرَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَخْرَجَهَا مِنْ فِيهِ فَقَالَ: ((أَنَا عَلِمْتُ أَنَّ آلَ مُحَمَّدٍ لَا يَأْكُلُونَ الصَّدَقَةَ)).

[طرقه في : ١٤٩١، ٣٠٧٢]

मा'लूम हुआ कि ये फ़र्ज़ ज़कात थी क्योंकि वही आँहज़रत (ﷺ) की आल पर हाराम है। हदीष से ये निकला कि छोटे बच्चों को दीन की बातें सिखाना और उनको तम्बीह करना ज़रूरी है।

बाब 57 : जो शख्स अपना मेवा या खजूर का पेड़ या खेत बेच डाले

हालाँकि उसमें दसवाँ हिस्सा या ज़कात वाजिब हो चुकी हो अब वो अपने दूसरे माल से ये ज़कात करे तो ये दुरुस्त है या वो मेवा बेचे जिसमें सदका वाजिब ही न हुआ हो और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मेवा उस वक़्त तक न बेचो जब तक उसकी पुख़्तगी न मा'लूम हो जाए और पुख़्तगी मा'लूम हो जाने के बाद किसी को बेचने से आपने मना नहीं फ़र्माया। और यहाँ फ़र्माया कि ज़कात वाजिब हो गई हो तो न बेचे और वाजिब न हुई हो तो बेचे।

٥٨ - بَابُ مَنْ بَاعَ لِمَاوَةً أَوْ نَخْلَةً أَوْ أَرْضَةً أَوْ زَرْعَةً

وَقَدْ وَجِبَ فِيهِ الْفَتْرُ أَوْ الصَّدَقَةُ فَأَدَّى الزَّكَاةَ مِنْ غَيْرِهِ، أَوْ بَاعَ لِمَاوَةً. وَلَمْ تَجِبْ فِيهِ الصَّدَقَةُ وَقَوْلُ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَا تَبِيعُوا الْفَتْرَةَ حَتَّى يَتَدَوَّ صَلَاحُهَا)) فَلَمْ يَخْطُرِ الْبَيْعُ بَعْدَ الصَّلَاحِ عَلَى أَحَدٍ، وَلَمْ يَخْصُ مِنْ وَجِبَ عَلَيْهِ الزَّكَاةَ مِنْ لَمْ تَجِبْ.

तशरीह: इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि हर हाल में मालिक को अपना माल बेचना दुरुस्त है ख़वाह उसमें ज़कात और इशर वाजिब हो गया हो या न हुआ हो। इस हदीष से इमाम बुखारी (रह.) ने इमाम शाफ़िई (रह.) के क़ौल को रद्द किया जिन्होंने ऐसे माल का बेचना जाइज़ नहीं रखा जिसमें ज़कात वाजिब हो गई हो, जब तक ज़कात अदा न करे। इमाम बुखारी (रह.) ने फ़र्मा निबवी (ﷺ) ला तबीहुष्षमत अलख़ के अमूम से दलील ली कि मेवे की पुख़्तगी के जब आधार मा'लूम हो जाएँ तो उसका बेचना आँहज़रत (ﷺ) ने मुतलक़न दुरुस्त रखा है और ज़कात के वुजूब या अदमे वुजूब की आपने कोई

क़ैद नहीं निकाली। (वहीदी)

1486. हमसे हज्जाज मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने ख़बर दी, कहा मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने खजूर को (पेड़ पर) उस वक़्त तक बेचने से मना फ़र्माया है जब तक उसकी पुख़्तगी ज़ाहिर न हो और इब्ने उमर (रज़ि.) से जब पूछते कि उसकी पुख़्तगी क्या है, वो कहते कि जब ये मा'लूम हो जाए कि अब ये फल आफ़त से बच रहेगा।

(दीगर मक़ाम : 2183, 2194, 2199, 2247, 2249)

1487. हमसे अब्दुल्लाह बिन युसूफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे अत्ताअ बिन रबाह ने बयान किया कि उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फल को उस वक़्त तक बेचने से मना फ़र्माया जब तक कि उनकी पुख़्तगी खुल न जाए।

(दीगर मक़ाम : 2189, 2196, 2381)

1488. हमसे कुतैबा ने इमाम मालिक से बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब तक फल पर सुख़ी न आए, उन्हें बेचने से मना फ़र्माया है। उन्होंने बयान किया कि मुराद ये है कि जब तक वो पक कर सुख़ न हो जाएँ।

(दीगर मक़ाम : 2190, 2197, 2198, 2208)

या'नी ये यक़ीन न हो जाए कि अब मेवा ज़रूर उतरेगा और किसी आफ़त का डर न रहे। पुख़्त होने का मतलब ये कि उसके रंग से उसकी पुख़्तगी ज़ाहिर हो जाए। उससे पहले बेचना इसलिये मना हुआ कि कभी कोई आफ़त आती है तो सारा मेवा ख़राब हो जाता है या गिर जाता है। अब गोया मुश्तरी का माल मुफ़्त खा लेना ठहरा।

बाब 59 : क्या आदमी अपनी चीज़ जो स़दका में दी हो फिर ख़रीद सकता है? और दूसरे का दिया हुआ स़दका ख़रीदे तो कोई हर्ज

नहीं, क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ास स़दका देने वाले को फिर उसके

۱۴۸۶- حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دِينَارٍ سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((لَيْسَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَيْعِ التَّمْرِ حَتَّى يَنْتَوِ صَلَاحُهَا)). وَكَانَ إِذَا سُئِلَ عَنْ صَلَاحِهَا قَالَ: ((حَتَّى تَلْغَبَ عَاقَتُهُ)).

[أطرافه في : ۲۱۸۳، ۲۱۹۴، ۲۱۹۹، ۱۴۸۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ، قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَاحٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَيْسَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَيْعِ التَّمْرِ حَتَّى يَنْتَوِ صَلَاحُهَا)).

[أطرافه في : ۲۱۸۹، ۲۱۹۶، ۲۲۸۱، ۱۴۸۸- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَنْ بَيْعِ التَّمْرِ حَتَّى تَرْهَمَ)). قَالَ: ((حَتَّى تَعْمَلَنَّ)).

[أطرافه في : ۲۱۹۵، ۲۱۹۷، ۲۱۹۸، ۲۲۰۸]

۵۹- بَابُ مَنْ يَشْتَرِي صَدَقَتَهُ وَلَا بَأْسَ أَنْ يَشْتَرِيَ صَدَقَةَ غَيْرِهِ
لَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ إِنَّمَا نَهَى الْمُتَصَدِّقَ خَاصَّةً

खरीदने से मना फ़र्माया। लेकिन दूसरे शख्स को मना नहीं फ़र्माया।

1489. हमसे यहा बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक्रील ने, उनसे शिहाब ने, उनसे सालिम ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते थे कि उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) ने एक घोड़ा अल्लाह के रास्ते में स़दका किया, फिर उसे आपने देखा कि वो बाज़ार में फ़रोख्त हो रहा है, इसलिये उनकी ख़्वाहिश हुई कि उसे वो खुद ही ख़रीद ले। और इजाज़त लेने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपना स़दका वापस न लो। इस वजह से अगर इब्ने उमर (रज़ि.) अपना दिया हुआ कोई स़दका ख़रीद लेते, तो फिर उसे स़दका कर देते थे। (अपने इस्ते'माल में न रखते थे) बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है।

(दीगर मक़ाम : 2775, 2971, 3002)

1490. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया, कि मैंने उमर (रज़ि.) को ये कहते सुना कि उन्होंने एक घोड़ा अल्लाह तआला के रास्ते में एक शख्स को सवारी के लिये दे दिया। लेकिन उस शख्स ने घोड़े को ख़राब कर दिया। इसलिये मैंने चाहा कि उसे ख़रीद लूँ। मेरा भी ये ख़याल था कि वो उसे सस्ते दामों में बेच डालेगा। चुनौचे मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसके मुता'ल्लिक पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपना स़दका वापस न लो। ख़्वाह वो तुम्हें एक दिरहम में क्यों न दे क्योंकि दिया हुआ स़दका वापस लेने वाले की मिश्राल कै करने के चाटने वाले की सी है।

(दीगर मक़ाम : 2623, 2636, 2970, 3003)

बाब की हदीषों से बज़ाहिर ये निकलता है कि अपना दिया हुआ स़दका तो ख़रीदना ह़राम है लेकिन दूसरे का दिया हुआ स़दका फ़कीर से फ़रागत के साथ ख़रीद सकता है।

عَنِ الشَّرَاءِ وَلَمْ يَنْهَ عَنْهُ

١٤٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا كَانَ يُحَدِّثُ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ تَصَدَّقَ بِفَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، لَوْجَدَهُ يَتَاعُ، فَأَرَادَ أَنْ يَشْتَرِيَهُ، ثُمَّ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَاسْتَأْذَنَهُ فَقَالَ: ((لَا تَعُدْ لِي صَدَقَتِكَ)). فَبِذَلِكَ كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا لَا يَغْرُلُ أَنْ يَتَاعَ شَيْئًا تَصَدَّقَ بِهِ (إِلَّا جَعَلَهُ صَدَقَةً)).

[أطرافه ن: ٢٧٧٥، ٢٩٧١، ٣٠٠٢.]

١٤٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَاحْتَاةُ الْيَدِ كَانَ عِنْدَهُ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَشْتَرِيَهُ - وَظَنَنْتُ أَنَّهُ نَيْفَةٌ بِرُخْصٍ - فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لَا تَشْتَرِ، وَلَا تَعُدْ لِي صَدَقَتِكَ وَإِنْ أَطْعَاكَ بِبِرْمٍ فَإِنَّ الْعَالِدَ فِي صَدَقَتِهِ كَالْعَالِدِ فِي تَيْسٍ)).

[أطرافه ن: ٢٦٢٣، ٢٦٣٦، ٢٩٧٠.]

[٣٠٠٣.]

बाब 60 : नबी करीम (ﷺ) और आपकी आल

٦٠- بَابُ مَا يُذَكَّرُ فِي الصَّدَقَةِ

पर सद्का का हाराम होना

لِلنَّبِيِّ ﷺ

1491. हमसे आदम इब्ने अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुदैर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने ज़कात की खजूरों के ढेर से एक खजूर उठाकर अपने मुँह में डाल ली तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, छी-छी! निकालो इसे! फिर आपने फ़र्माया कि क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि हम लोग सद्के का माल नहीं खाते। (राजेअ: 1475)

क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि हमारे अस्हाब के नज़दीक सहीह ये है कि फ़र्ज़ ज़कात आप (ﷺ) की आल के लिये हाराम है। इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) का भी यही क़ौल है। इमाम जा'फ़र सादिक से शाफ़िई (रह.) और बैहकी (रह.) ने निकाला कि वो सबीलों में से पानी पिया करते। लोगों ने कहा कि ये तो सद्के का पानी है, उन्होंने कहा हम पर फ़र्ज़ ज़कात हाराम है।

बाब 61 : नबी करीम (ﷺ) की लौण्डी-गुलामों को सद्का देना दुरुस्त है

٦١- بَابُ الصَّدَقَةِ عَلَى مَوَالِي أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ

1492. हमसे सईद बिन इफ़ैर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उनसे यूनस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मैमूना (रज़ि.) की बान्दी को जो बकरी सद्का में किसी ने दी थी वो मरी हुई देखी। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग इसके चमड़े को क्यों नहीं काम में लाए। लोगों ने कहा कि ये तो मरी हुई है। आपने फ़र्माया कि हाराम तो सिर्फ़ इसका खाना है।

(दीगर मक़ाम: 3221, 5531, 5532)

١٤٩٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زَيَْادٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَخَذَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا تَمْرَةً مِنْ تَمْرِ الصَّدَقَةِ لِيَجْعَلَهَا لِي يَبْرُحَهَا. ثُمَّ قَالَ: ((أَنَا شَعَرْتُ أَنَّنَا نَأْكُلُ الصَّدَقَةَ)). (راجع: ١٤٧٥)

١٤٩٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَفْوٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((وَجَدَ النَّبِيُّ ﷺ شاةً مَيْتَةً أُعْطِيَتْهَا مَوْلَاةٌ لِيَتَمَوَّهَ مِنَ الصَّدَقَةِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَلَأَ التَّطْعَمُ بِجَلْبَعًا)) قَالُوا: إِنَّهَا مَيْتَةٌ. قَالَ: ((أَنَا حَرَمُ أَكْلِهَا)).

[طرايه في: ٣٢٢١, ٥٥٣١, ٥٥٣٢]

1493. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे हकम बिन इतैबा ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नखई ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उनका इरादा हुआ कि बरीरा (रज़ि.) जो बान्दी थीं) आज़ाद कर देने के लिये खरीद लें। लेकिन उसके

١٤٩٣- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا الْحَكَمُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ الْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّهَا أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيرَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَرَادَ

असल मालिक ये चाहते थे कि बलाउ उन्हीं के लिये रहे। इसका जिक्र आइशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से किया। तो आपने फ़र्माया कि तुम ख़रीद कर आज़ाद कर दो, बलाउ उसी की होती है जो आज़ाद करे। उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में गोश्त पेश किया गया। मैंने कहा कि ये बरीरा (रज़ि.) को किसी ने स़दका के तौर पर दिया है तो आपने फ़र्माया कि ये उनके लिये स़दका था, लेकिन अब हमारे लिये ये हदिया है। (राजेअ: 456)

مَوَالِيهَا أَنْ يَشْتَرُوا وَلَاءَهَا، فَلَا كَرْتَ عَائِشَةُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ: ((اشْتَرِنَهَا، فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَهْتَقَ)). قَالَتْ: وَأَيُّ النَّبِيِّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقُلْتُ: هَذَا مَا تُصَدِّقُ بِهِ عَلَى بَرِيْرَةٍ، فَقَالَ: ((هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ)). [راجع: 456]

गुलाम के आज़ाद कर देने के बाद मालिक और आज़ादशुदा गुलाम में भाईचारे के रिश्ते को बलाउ कहा जाता है। गोया गुलाम आज़ाद होने के बाद भी असल मालिक से कुछ न कुछ रिश्ता रहता है। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो उस शख्स का हक़ है जो उसे ख़रीदकर आज़ाद कर रहा है अब भाईचारे का रिश्ता असल मालिक की बजाय इस ख़रीदकर आज़ाद करने वाले से होगा। बाब और हदीष में मुताबकत ज़ाहिर है।

बाब 62 : जब स़दका मुहताज की मिल्क हो जाए

1494. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़रीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ख़ालिद हज़ज़ाअ ने बयान किया, उनसे हफ़्स बिनते सीरीन ने और उनसे उम्मे अत्तिया अन्सारिया (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ लाए और दरयाफ़्त फ़र्माया कि क्या तुम्हारे पास कुछ है? आइशा (रज़ि.) ने जवाब दिया कि नहीं कोई चीज़ नहीं। हाँ नुसैबा (रज़ि.) का भेजा हुआ उस बकरी का गोश्त है जो उन्हें स़दके के तौर पर मिली है। तो आपने फ़र्माया लाओ ख़ैरात तो अपने ठिकाने पहुँच गई। (राजेअ: 1446)

٦٢- بَابُ إِذَا تَحَوَّلَتِ الصَّدَقَةُ
١٤٩٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْجٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةٍ الْأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَقَالَ: ((هَلْ جِئْتُمْ شَيْئًا؟)) فَقَالَتْ: لَا، إِلَّا شَيْئًا بَعَثَ بِهِ إِلَيْنَا نُسِيئُهُ مِنَ الشَّاةِ الَّتِي بَعَثَتْ بِهَا مِنَ الصَّدَقَةِ. فَقَالَ: ((إِنَّهَا قَدْ بَلَغَتْ مَجْلَهَا)). [راجع: 1446]

मा'लूम हुआ कि स़दका का माल यज़ीनी तौर पर मालदारों की तहवील में भी आ सकता है क्योंकि वो मुहताज आदमी की मिल्कियत में होकर अब किसी को भी मिस्कीन की तरफ़ से दिया जा सकता है।

1495. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वकीअ ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, क़तादा से और वो अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में वो गोश्त पेश किया गया जो बरीरा (रज़ि.) को स़दका के तौर पर मिला था। आपने फ़र्माया कि ये गोश्त उन पर स़दका था। लेकिन हमारे लिये ये हदिया है। अबू दाऊद ने कहा कि हमें शुअबा ने ख़बर दी। उन्हें क़तादा ने कि उन्होंने अनस (रज़ि.)

١٤٩٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَتَى بِلَحْمٍ تُصَدِّقُ بِهِ عَلَى بَرِيْرَةٍ فَقَالَ: ((هُوَ عَلَيْهَا صَدَقَةٌ، وَهُوَ لَنَا هَدِيَّةٌ)). وَقَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَتَانَا شُعْبَةُ عَنْ قَادَةَ

से सुना, वो नबी करीम (ﷺ) से बयान करते थे।

(दीगर मक़ाम : 2577)

سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه بی : ۲۵۷۷]

मज़हब ये है कि सद्का मिस्कीन की मिल्कियत में आकर अगर किसी को बतौर तोहफ़ा पेश कर दिया जाए तो जाइज़ है अगरचे वो तोहफ़ा पाने वाला ग़नी ही क्यों न हो।

**बाब 63 : मालदारों से ज़कात वसूल की जाए
और फ़ुकरा पर खर्च कर दी जाए ख़वाह
वो कहीं भी हो**

۶۳- بَابُ اخْذِ الصَّدَقَةِ مِنَ
الْأَغْنِيَاءِ، وَتَرْكُ فِي الْفُقَرَاءِ حَيْثُ
كَانُوا

1496. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें ज़करिया इब्ने इस्हाक़ ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन सैफ़ी ने, उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) के गुलाम अबू मअबद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मअज़ज़ (रज़ि.) को जब यमन भेजा, तो उनसे फ़र्माया कि तुम एक ऐसी क़ौम के पास जा रहे हो जो अहले किताब हैं। इसलिये जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो पहले उन्हें दा'वत दो कि वो इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। वो इस बात में जब तुम्हारी बात मान लें तो उन्हें बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर रोज़ाना दिन रात में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। जब वो तुम्हारी ये बात भी मान लें तो उन्हें बताओ कि उनके लिये अल्लाह तआला ने ज़कात देना ज़रूरी करार दिया है, ये उनके मालदारों से ली जाएगी और उनके ग़रीबों पर खर्च की जाएगी। फिर जब वो उसमें भी तुम्हारी बात मान लें तो उनके अच्छे माल लेने से बचो और मज़लूम की आह से डरो कि उसके और अल्लाह तआला के बीच कोई रुकावट नहीं होती। (राजेअ : 1395)

۱۴۹۶- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ إِسْحَاقَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَفِيٍّ عَنْ أَبِي مَعْبُدٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ حِينَ بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ: ((إِنَّكَ سَتَلْبِي قَوْمًا أَهْلَ كِتَابٍ، فَإِذَا جِئْتَهُمْ فَادْعُهُمْ إِلَى أَنْ يَشْهَدُوا أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لَكَ بِذَلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ إِقْرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لَكَ بِذَلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ إِقْرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً تَوْخَلُ مِنَ أَغْنِيَائِهِمْ فَرُدَّ عَلَى فَقَرَائِهِمْ. فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لَكَ بِذَلِكَ فَلْيَاكُ وَكْرَائِمَ أَمْوَالِهِمْ، وَاتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ، فَإِنَّهُ تَسَنُّ بَيْنَهُ وَبَيْنَ اللَّهِ حِجَابًا)). [راجع: ۱۳۹۵]

तशरीह : इस हदीष के ज़ेल मौलाना अबैदुल्लाह साहब (रह.) फ़र्माते हैं क़ालल्लाहिफ़िज्जु उस्तुदिल्ल बिही अला अन्नल्इमाम हुवल्लज़ी यतवल्ला क़ब्ज़ज़ज़काति व सफ़िहा अम्मा बिनफ़िसही व अम्मा बिनाइबिही फ़मन इम्तनअ मिन्हा उख़िज़त मिन्हु क़हरन या'नी हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने कहा कि इस हदीष के जुम्ले तूख़ज़ु मिन अमनियाइहिम से दलील ली गई है कि ज़कात इमामे वक़्त वसूल करेगा और वही उसे उसके मस़ारिफ़ में खर्च करेगा। वो

खुद करे या अपने नायब से कराए। अगर कोई जकात उसे न दे तो वो जबरदस्ती उससे वसूल करेगा। कुछ लोगों ने यहाँ जानवरों की जकात मुराद ली है और सोने-चाँदी की जकात में मुख्तार करार दिया है। फइन् उहिय जकातुहुमा बुप्पयतन यज्जउल्लाहु लेकिन हज़रत मौलाना अबैदुल्लाह (रह.) फर्माते हैं, वज्जाहिरु इन्दी अन्न विलायत अख़िज़ल् इमामि ज़ाहिरतुन बातिनतुन फइल्लम यकुन इमामुन फरकहल्मालिकु फ़ी मसारिफ़िहा व क़द हक्क़ क़ ज़ालिक इशौकानी फिस्सैलिल जरारि बिमा ला मज़ीद अलैहि फल्यज़िअ इलैहि. या'नी मेरे नज़दीक तो ज़ाहिर व बातिन हर किस्म के अम्वाल के लिये इमामे वक़्त की तौलियत ज़रूरी है। और अगर इमाम न हो (जैसे कि दौरे हाज़रा में कोई इमाम ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन नहीं) तो मालिक को इख़्तियार है कि उसके मसारिफ़ में खुद उस माले जकात को ख़र्च कर दे इस मसले को इमाम शौकानी (रह.) ने सैलुल जरार में बड़ी ही तफ़्सील के साथ लिखा है जिससे ज़्यादा मुम्किन नहीं। जो चाहे उधर रुजूअ कर सकता है।

ये मसला कि अम्वाले जकात को दूसरे शहरों में भेजना जाइज़ है या नहीं, इस बारे में भी हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मसलक इस बाब से ज़ाहिर है कि मुसलमान फुकरा जहाँ भी हों उन पर वो ख़र्च किया जा सकता है। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) के नज़दीक तुरहु अला फुकरा इहिम की ज़मीर अहले इस्लाम की तरफ़ लौटती है, क़ाल इब्नुल्मुनीर इख़्तारल्बुखारी जवाज़ नक़्िलज़्ज़काति मिम्बलदिल्मालि लिउमूमि कौलिही फतुरहु फ़ी फुकरा इहिम लिअन्नज़्ज़मीर यऊदु लिल्मुस्लिमीन फअय्यु फकीरिन मिन्हुम रूह्त फीहिस्सदकुतु फ़ी अय्यि जिहातिन कान फक्कद वाफ़क़ उमूमल्हदीषि इन्तिहा.

अल मुहदिषुल कबीर अब्दुर्रहमान साहब (रह.) फर्माते हैं, वज्जाहिरु इन्दी अदमुन्नक़्िल इल्ला इज़ा फक्कदल्मुस्तहिक्कुन लहा औ तकूनु फिन्नाक़्िल मस्तहतुन अन्फउव अहम्मुमिन अदमिही वल्लाहु तआला आलामु. (मिज़ात, जिल्द 3, पेज 4) या'नी जकात नक़्ल न होनी चाहिये मगर जब मुस्तहिक्कीन मफ़कूद हों या नक़्ल करने में ज़्यादा फ़ायदा हो।

٦٤- بَابُ صَلَاةِ الْإِمَامِ وَدُعَائِهِ لِصَحَابِ الصَّنَدَةِ

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿عُذُّ مِنْ أَقْوَابِهِمْ صَنْدَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا، وَصَلِّ عَلَيْهِمْ﴾
[الآية: التوبة: ١٠٣].

١٤٩٧- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ غَمْرٍو عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا آتَاهُ قَوْمٌ بِصَنْدَقِهِمْ قَالَ: «اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ فَلَانٍ». فَأَتَاهُ أَبِي بِصَنْدَقِهِ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي أَوْفَى».

[أطرافه ٣: ٤١٦٦، ٦٢٣٢، ٦٣٥٩].

बाब 64 : इमाम (हाकिम) की तरफ़ से जकात देने वाले के हक़ में दुआ-ए-खैरो-बरकत करना

अल्लाह तआला का (सूरह तौबा में) इशार्द है कि आप उनके माल से खैरात लीजिए जिसके जरिये आप उन्हें पाक करें और उनका तज़किया करें और उनके हक़ में खैरो-बरकत की दुआ आखिर आयत तक.

1497. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने अमर बिन मुरह से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब कोई क़ौम अपनी जकात लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर होती तो आप उनके लिये दुआ फर्माते। ऐ अल्लाह! आले फ़लों को खैरो-बरकत अता फर्मा, मेरे वालिद भी अपनी जकात लेकर हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने फर्माया कि ऐ अल्लाह! आले अबी औफ़ा को खैरो-बरकत अता फर्मा। (दीगर मक़ाम: 4166, 6232, 6359)

तशरीह: हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने साबित किया है कि रसूले करीम (ﷺ) के बाद भी खुलफ़-ए-इस्लाम के लिये मुनासिब है कि वो जकात अदा करने वालों के हक़ में खैरो-बरकत की दुआएँ करें। लफ़्ज़ इमाम से ऐसे ही ख़लीफ़-ए-इस्लाम मुराद हैं जो फ़िल वाक़ेअ मुसलमानों के लिये इन्नमल इमामु जुन्नतुन युक्क़ातिलु मिन्वराइही (इमाम लोगों के लिये ढाल है जिसके पीछे होकर लड़ाई की जाती है) के मिस्दाक़ हों।

जकात इस्लामी स्टेट के लिये और उसके बैतुलमाल के लिये एक अहम जरिय-ए-आमदनी है जिसके वजूद पज़ीर होने से मिल्लत के कितने ही मसाइल हल होते हैं। अहदे रिसालत और फिर अहदे ख़िलाफ़ते राशिदा के तजुर्बात इस पर शाहिदे आदिल हैं। मगर सद अफ़सोस कि अब न तो कहीं वो सहीह इस्लामी निज़ाम और न वो हक्कीक़ी बैतुलमाल है। इसलिये ख़ुद मालदारों के लिये जरूरी है कि वो अपनी दयानत के पेशे-नज़र जकात निकालें और जो मसारिफ़ हैं उनमें दयानत के साथ खर्च करें। दौरे हाज़िर में किसी मौलवी या मस्जिद के पेश इमाम या किसी मदरसे के मुदरिस को इमामे वक़्त ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम तसव्वुर करके और ये समझकर के उनको दिये बग़ैर जकात अदा न होगी, जकात उनके हवाले करना बड़ी नादानी बल्कि अपनी जकात को ग़ैर मसरूफ़ में खर्च करना है।

बाब 65 : जो माल समुन्दर से निकाला जाए

और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अम्बर को रिकाज़ नहीं कह सकते अम्बर तो एक चीज़ है जिसे समुन्दर किनारे पर फेंक देता है।

और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा अम्बर और मोती में पाँचवाँ हिस्सा लाज़िम है। हालाँकि औहज़रत (रह.) ने रिकाज़ में पाँचवाँ हिस्सा मुकरर फ़र्माया है तो रिकाज़ उसको नहीं कहते जो पानी में मिले।

1498. और लैज़ ने कहा कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उन्होंने अब्दुर रहमान बिन हुर्मुज़ से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने औहज़रत (रह.) से कि बनी इस्राईल में एक शख्स था जिसने दूसरे बनी इस्राईल के शख्स से हजार अशरफ़ियाँ क़र्ज़ माँगीं। उसने अल्लाह के भरोसे पर उसको दे दीं। अब जिसने क़र्ज़ लिया था वो समुन्दर पर गया कि सवार हो जाए और क़र्ज़ ख़्वाह का क़र्ज़ अदा करे लेकिन सवारी न मिली। आख़िर उसने क़र्ज़ ख़्वाह तक पहुँचने से नाउम्मीद होकर एक लकड़ी ली उसको कुरैदा और हजार अशरफ़ियाँ उसमें भरकर वो लकड़ी समुन्दर में फेंक दी। इतिफ़ाक़ से क़र्ज़ ख़्वाह काम काज को बाहर निकला, समुन्दर पर पहुँचा तो एक लकड़ी देखी और उसको घर में जलाने के ख़याल से ले आया। फिर पूरी हदीस बयान की। जब लकड़ी को चीरा तो उसमें अशरफ़ियाँ पाईं।

(दीगर मक़ाम : 2063, 2291, 2430, 2734, 6261)

٦٥- بَابُ مَا يُسْتَفْرَجُ مِنَ الْبَحْرِ
وَلَقَدْ اَتَى عَتَابَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : تَيْسَ
الْفَتْرِ بِرَكَاةٍ، هُوَ هَيَّةٌ ذُتْرَةُ الْبَحْرِ.
وَلَقَدْ اَلْحَسَنُ: فِي الْفَتْرِ وَاللُّؤْلُؤِ
الْخُمْسُ: فَإِنَّمَا جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ فِي الرِّكَازِ
الْخُمْسَ، تَيْسَ فِي الْيَدِ يُصَابُ فِي
الْمَاءِ.

١٤٩٨- وَلَقَدْ اَلَّتْ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ
بْنُ رَيْغَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزٍ عَنْ
أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ
(أَن رَجُلًا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ سَأَلَ بَعْضَ
نَبِيِّ إِسْرَائِيلَ بَأَن يُسَلِّفَهُ أَلْفَ دِينَارٍ،
فَدَفَعَهَا إِلَيْهِ، فَخَرَجَ فِي الْبَحْرِ فَلَمْ يَجِدْ
مَرْكَبًا، فَأَخَذَ حَشَبَةً فَفَرَّهَا فَأَذْعَلَ فِيهَا
أَلْفَ دِينَارٍ فَرَمَى بِهَا فِي الْبَحْرِ، فَخَرَجَ
الرَّجُلُ الَّذِي كَانَ أَسْلَفَهُ فَإِذَا بِالْحَشَبَةِ،
فَأَخَذَهَا لِأَهْلِهِ حَطَبًا - فَذَكَرَ الْحَدِيثَ -
فَلَمَّا نَشَرَهَا وَجَدَ الْمَالَ).

[أطرافه ١ : ٢٠٦٣، ٢٢٩١، ٢٤٣٠،

٢٧٣٤، ٦٢٦١].

तशरीह : हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ये प्राबित फ़र्माना चाहते हैं कि दरिया में से जो चीज़ें मिलें अम्बर, मोती वग़ैरह उनमें जकात नहीं है और जिन हज़रात ने ऐसी चीज़ों को रिकाज़ में शामिल किया है उनका क़ौल सहीह नहीं। हज़रत

इमाम इस दलील में ये इसाईली वाकिया लाए हैं जिसके बारे में हाफिज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं,

कालल् इस्माईली लैस फ़ी हाज़ल् हदीषि शैउन युनासिबुत्तर्जुमत रज़ुलुन इक्तरज़ कर्ज़न फर्तजअ कर्ज़हू व कज़ा कालहावुदी हदीषुल्लख़शबति लैस मिन हाज़ल्बाबि फ़ी शैइन व अज़ाब अब्दुल्मलिक बिअन्नहू अशार बिही इला अन्न कुल्ल माअल्काहूल्बहरू जाज़ अख़ज़ुहू व ला खुम्स फ़ीहि... (फ़तुहल बारी)

या'नी इस्माईली ने कहा कि इस हदीष में बाब से कोई वजहे मुनासबत नहीं है ऐसा ही दाऊदी ने भी कहा कि हदीष ख़शबा को (लकड़ी जिसमें रुपया मिला) उससे कोई मुनासबत नहीं। अब्दुल मलिक ने उन हज़रात को ये जवाब दिया है कि उसके जरिये से इमाम बुखारी (रह.) ने ये इशारा किया है कि हर वो चीज़ जिसे दरिया बाहर फेंक दे उसका लेना जाइज़ है और उसमें खुम्स नहीं है इस लिहाज़ से हदीष और बाब में मुनासबत मौजूद है।

हाफिज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, **यजहबलज़ुम्हूरु इला अन्नहू ला यजिबु फ़ीहि शैउन या'नी जुम्हूर इस तरह गए हैं कि दरिया से जो चीज़ें निकाली जाएँ उनमें ज़कात नहीं है।**

इसाईली हज़रात का ये वाकिया क़ाबिले इबरत है कि देने वाले ने महज़ अल्लाह की ज़मानत पर उसको एक हज़ार अशरफ़ियाँ दे डालीं और उसकी अमानत व दयानत को अल्लाह ने इस तरह प़ाबित रखा कि लकड़ी को अशरफ़ियों के साथ कर्ज़ देने वाले तक पहुँचा दिया और उसने इसी तरह अपनी अशरफ़ियों को वसूल कर लिया। फ़िल वाक़ेअ अगर कर्ज़ लेने वाला वक़्त पर अदा करने की सही निय्यत दिल में रखता हो तो अल्लाह पाक ज़रूर ज़रूर किसी न किसी जरिये से ऐसे सामान मुहय्या करा देता है कि वो अपने इरादे में कामयाब हो जाता है। ये मज़मून एक हदीष में भी आया है। मगर आजकल ऐसे दयानतदार ओनका हैं। इल्ला माशा अल्लाह वबिल्लाहितौफ़ीक़।

बाब 66 : रिकाज़ में पाँचवाँ हिस्सा वाजिब है

और इमाम मालिक (रह.) और इमाम शाफ़िई (रह.) ने कहा रिकाज़ जाहिलियत के ज़माने का ख़ज़ाना है। उसमें थोड़ा माल निकले या बहुत पाँचवाँ हिस्सा लिया जाएगा और ख़ान रिकाज़ नहीं है। और आहज़रत (ﷺ) ने ख़ान के बारे में फ़र्माया उसमें अगर कोई गिर कर या काम करता हुआ मर जाए तो उसकी जान मुफ़्त गई। और रिकाज़ में पाँचवाँ हिस्सा है। और इमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़लीफ़ा ख़ानों में से चालीसवाँ हिस्सा लिया करते थे। दो सौ रुपयों में से पाँच रुपया। और इमाम हुसैन बसरी (रह.) ने कहा जो रिकाज़ दारुल हरब मे पाए तो उसमें से पाँचवाँ हिस्सा लिया जाए और जो अमन और सुलह के मुल्क मे मिले तो उसमें से ज़कात चालीसवाँ हिस्सा ली जाए। और अगर दुश्मन के मुल्क में पड़ी हुई चीज़ मिले तो उसको पहुँचवा दे (शायद मुसलमान का माल हो) अगर दुश्मन का माल हो तो उसमें से पाँचवाँ हिस्सा अदा करे। और कुछ लोगों ने कहा मअदिन भी रिकाज़ है जाहिलियत के दफ़ीने की तरह क्योंकि अरब लोग कहते हैं अरकज़ल मअदिन जब उसमें से कोई चीज़ निकले। उनका जवाब ये है अगर किसी

٦٦- بَابُ فِي الرِّكَازِ الْخُمْسُ
وَقَالَ مَالِكٌ وَابْنُ إِدْرِيسَ: الرِّكَازُ ذَلِكُمُ الْجَاهِلِيَّةِ، فِي قَلِيلِهِ وَكَثِيرِهِ الْخُمْسُ، وَلَيْسَ الْمَغْنَمُ بِرِّكَازٍ. وَقَدْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فِي الْمَغْنَمِ جَبَازٌ، وَفِي الرِّكَازِ الْخُمْسُ)). وَأَخَذَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْقَرِيزِ مِنَ الْمَغَانِمِ مِنْ كُلِّ مِائَتَيْنِ عَمْسَةً. وَقَالَ الْحَسَنُ: مَا كَانَ مِنْ رِّكَازٍ فِي أَرْضِ الْعَرَبِ فَفِيهِ الْخُمْسُ، وَمَا كَانَ مِنْ أَرْضِ السُّلْمِ فَفِيهِ الزَّكَاةُ. وَإِنْ وَجَدْتَ اللَّفْظَةَ فِي أَرْضِ الْقَتْلِ فَزَكَّاهَا، وَإِنْ كَانَتْ مِنَ الْقَتْلِ فَفِيهَا الْخُمْسُ.

وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: الْمَغْنَمُ وَكَازٌ مِثْلُ ذَلِكُمُ الْجَاهِلِيَّةِ، لِأَنَّهُ يُقَالُ: أَرْكَزَ الْمَغْنَمُ

शख्स को कोई चीज़ हिबा की जाए या वो नफ़ा कमाए या उसके बाग़ में मेवा बहुत निकले। तो कहते हैं अरक़ज़त (हालाँकि ये चीज़ें बिल इत्तिफ़ाक़ रिकाज़ नहीं हैं) फिर उन लोगों ने अपने क़ौल के आप इख़लाफ़ किया। कहते हैं रिकाज़ का छुपा लेना कुछ बुरा नहीं पाँचवाँ हिस्सा न दे।

إِذَا خَرَجَ مِنْهُ شَيْءٌ. قِيلَ لَهُ: لَدَىٰ نَفَاقٍ
لِّمَنْ وَهَبَ لَهُ شَيْءٌ وَ رِبْحٌ وَ رِبْحًا كَثِيرًا
أَوْ كَثُرَ لَمَرُّهُ أَرْكَزَتْ. ثُمَّ نَاقَضَهُ وَ قَالَ:
لَا بَأْسَ أَنْ يَكْتُمَهُ وَ لَا يُؤَدِّيَ الْخُمْسَ.

तशरीह: ये पहला मौक़ा है कि इमामुल मुहदिषीन अमीरुल मुज्ताहिदीन हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने लफ़्ज़े 'बअजुनास' का इस्ते'माल किया है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ाल इब्नुत्तीनु अल्मुरादु बिबअजिन्नासि अबू हनीफ़त कुलतु व हाज़ा अव्वलु मौज़इन जकरहू फीहिल्बुखारी बिहाजिहिस्सीगति व यहतमिलु अय्युरीद बिही अबा हनीफ़त व ग़ैरिही मिनल्कूफ़ीयीन म्मिन क़ाल बिज़ालिक काल अबू हनीफ़त वष़ौरी व ग़ैरुहमा इला अन्नल्मअदिन करिकाज़ि वहतज्ज लहुम बिकौलिलअरबि रकज़लिरजुलिन इज़ा असाब रकाज़न व हिय कित्उम्मिनज़जहबि तख़रजु मिनल्मअदिनि व हुज्जतुल्लिल्जुम्हूरि व तप्मरकंतुन्नबिय्यि (ﷺ) बैनल्मअदिनि वरिकाज़ि बिवाबिल्अत्तिफ़ फ़सह्द अन्नहू ग़ैरुहू (फत्हुल बारी)

या'नी इब्ने तीन ने कहा कि मुराद यहाँ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) हैं। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) कहते हैं कि ये पहला मौक़ा है कि इनको इमाम बुखारी (रह.) ने इस स़ेगे के साथ बयान किया है और ये भी अन्देशा है कि उससे मुराद इमाम अबू हनीफ़ा और उनके अलावा दूसरे कूफ़ी भी हों जो ऐसा कहते हैं। इब्ने बत्ताल ने कहा कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और प्रौरी वग़ैरह हमने कहा कि मअदिन या'नी खान भी रिकाज़ (दफ़ीना, भूमिगत खज़ाना) में दाख़िल है क्योंकि जब कोई शख्स खान से कोई सोने का डला पा ले तो अरब लोग बोलते हैं, रकज़रज़ुलु फ़लां को रिकाज़ मिल गया और वो सोने का टुकड़ा होता है जो खान से निकलता है। और जुम्हूर की दलील इस बारे में ये है कि नबी करीम (ﷺ) ने मअदिन और रिकाज़ का वाव अतफ़ के साथ अलग अलग ज़िक्र किया गया है। पस सहीह ये हुआ कि मअदिन और रिकाज़ दो अलग अलग हैं।

रिकाज़ वो पुराना दफ़ीना जो किसी को मिल जाए उसमें से बैतुलमाल में पाँचवाँ हिस्सा दिया जाएगा और मअदिन खान को कहते हैं। दोनों में फ़र्क़ ज़ाहिर है। पस उनका हुक्म भी अलग अलग है। खुद रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्मा दिया कि जानवर से जो नुक्सान पहुँचे उसका कुछ बदला नहीं और कुँए का भी मुआफ़ है और खान के ह्रादषे में कोई मर जाए तो उसका भी यही हुक्म है और रिकाज़ में पाँचवाँ हिस्सा है। इस हदीष से स़ाफ़ ज़ाहिर है कि मअदिन और रिकाज़ दो अलग अलग हैं।

हज़रत मौलाना अबैदुल्लाह साहब शैखुल हदीष (रह.) फ़र्माते हैं,

वहतज्जल्जुम्हूरु अयजन बिअन्नरिकाज़ फी अहलि लुगतिल्हिजाज़ि हुब दफ़ीनुल्जाहिलिय्यति व ला शक़ फी अन्नन्नबिय्यिल्हिजाज़ी (ﷺ) तकल्लम बिलुगतिल्हिजाज़ि व अराद बिही मा युरीदून मिन्हु काल इब्नुअप्पीरुल्जौज़ी फिन्निहायति अरिकाज़ु इन्द अहलिल्हिजाज़ि कुनूजुल्जाहिलिय्यतिल्मदफूना फिल्अर्ज़ि व इन्द अहलिल्इराक़ि अल्मआदिनु वल्कौलानि तहतमिलुहुमल्लगतु लिअन्न कुल्लमिन्हुमा मक्क़ुजुन फिल्अर्ज़ि अय प्राबितुन युक़ालु रकज़हू युक्क़ुजुहू रकज़न इज़ा दफ़नहू व अर्कज़रज़ुलु इज़ा वजदरिकाज़ वल्हदीषु इन्नमा जाअ फित्तप्सीरिल्अव्वलि व हुवल्कन्जुल्जाहिलिय्यु व इन्नमा कान फ़ीहि अल्खुम्सु लिक्फरति नपइही व सुहूलति अख़िज़ही. (मिआत, जिल्द 3, पेज 63)

या'नी जुम्हूर ने इससे भी हुज्जत पकड़ी है कि हिजाज़ियों की लुगत में रिकाज़ जाहिलियत के दफ़ीने पर बोला जाता है। और कोई शक नहीं कि रसूले करीम (ﷺ) भी हिजाज़ी हैं और आप अहले हिजाज़ ही की लुगत में कलाम फ़र्माते थे। इब्ने अप्पीर जज़री ने कहा कि अहले हिजाज़ के नज़दीक रिकाज़ जाहिलियत के गड़े हुए खज़ानों पर बोला जाता है और अहले इराक़ के यहाँ खानों पर भी और लुग्वी ए'तिबार से दोनों का एहतिमाल है इसलिये कि दोनों ही ज़मीन में गड़े हुए होते हैं और हदीषे

मज्कूर तपस्रीरे अव्वल (या'नी अहदे जाहिलियत के दफ्तीनों) ही के बारे में है और वो कन्जे जाहिली है और उसमें खुम्स है इसलिये उसका नफ़ा कफ़ीर है और वो आसानी से हासिल हो जाता है।

इस सिलसिले में अहनाफ़ के भी कुछ दलाइल हैं जिनकी बिना पर वो मअदिन को भी रिकाज़ में दाखिल करते हैं क्योंकि लुगत में अरकज़ल मअदिनु इस्तेमाल हुआ है जब खान से कोई चीज़ निकले तो कहते हैं, अरकज़ल मअदिनु हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने उसका इल्ज़ामी जवाब दिया है कि लफ़्ज़े अरकज़ तो मिजाज़न कुछ बार बड़े नफ़े पर भी बोला जाता है। वो बड़ा नफ़ा किसी को किसी की बख़्शिश से हासिल हो या तिजारी मुनाफ़े से हो या कषरते पैदावार से ऐसे मौकों पर भी लफ़्ज़ अर्कज़ बोल देते हैं या'नी मुझे ख़ज़ाना मिल गया। तो क्या इस तरह बोल देने से उसे भी रिकाज़ में दाखिल नहीं है। उसका मज़ीद धुबूत खुद हनफ़ी हज़रात का ये फ़त्वा है कि खान कहीं पोशीदा जगह में मिल जाए तो पाने वाला उसे छुपा भी सकता है और उनके फ़त्वे के मुताबिक़ जो पाँचवाँ हिस्सा उसे अदा करना ज़रूरी था, उसे वो अपने ही ऊपर ख़र्च कर सकता है। ये फ़त्वा भी दलालत कर रहा है कि रिकाज़ और मअदिन दोनों अलग अलग हैं। चंद रिवायात भी हैं जो मसलके इन्फ़िया की ताईद में पेश की जाती हैं। लेकिन सनद के ए'तिबार से वो बुखारी शरीफ़ की रिवायाते मज्कूर के बराबर नहीं हैं। लिहाज़ा उनसे इस्तिदलाल ज़ईफ़ है।

सारे तूले-तवील मबाहिष (लम्बी-चौड़ी बहस) के बाद हज़रत शैख़ुल हदीष मौसूफ़ फ़र्माते हैं,

वलकौलुराजिहु इन्दना हुव मा ज़हब इलैहिल्जुम्हूरु मिन अन्नरिकाज़ हुव कन्ज़ुल्जाहिलियति अल्मौज़ूद फिलअर्जि व अन्नहू ला यउम्मुल्मअदिनु बल हुव गैरूहु वल्लाहु तआला आलम या'नी हमारे नज़दीक रिकाज़ के बारे में जुम्हूर ही का क़ौल राजेह है कि वो दौरे जाहिलियत के दफ्तीनें हैं जो पहले लोगों ने ज़मीन में दफ़न कर दिये हैं। और लफ़्ज़ रिकाज़ में मअदिन दाखिल नहीं है बल्कि दोनों अलग अलग हैं और रिकाज़ में खुम्स है।

रिकाज़ के बारे में और भी बहुत सी तपस्रीलात है कि उसका निज़ाब क्या है? क़लील या क़रीर में कुछ फ़र्क़ है या नहीं? और उस पर साल गुज़रने की कैद है या नहीं? और वो सोने-चाँदी के अलावा लोहा, तांबा, सीसा, पीतल वगैरह को भी शामिल है या नहीं? और रिकाज़ का मसूफ़ क्या है? और क्या हर पाने वाले पर इसमें खुम्स वाजिब है? पाने वाला गुलाम हो या आज़ाद हो, मुस्लिम हो या ज़िम्मी हो? रिकाज़ की पहचान क्या है? क्या ये ज़रूरी है कि उसको सिक्कों पर पहले किसी बादशाह का नाम या उसकी तस्वीर या कोई और अलामत होनी ज़रूरी है वगैरह वगैरह इन सारी बहसों के लिये अहले इल्म हज़रात मिर्जात जिल्द नं. 3 पेज 64, 65 का मुतालआ करें जहाँ हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह (रह.) ने तपस्रीले के साथ रोशनी डाली है जज़ाहुल्लाह खैरुल जज़ा फ़िदारेन। मैं अपने मुख्तसर सफ़हात में तपस्रीले मज़ीद से कासिर हूँ और अवाम के लिये मैंने जो लिख दिया है वो काफ़ी समझता हूँ।

1499. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुलहमान ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जानवर से जो नुक़सान पहुँचे उसका कुछ बदला नहीं और कुँए का भी यही हाल है और कान का भी यही हुक्म है और रिकाज़ से पाँचवाँ हिस्सा लिया जाए।

١٤٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَعَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((الْغَنَمَاءُ جَبَارٌ، وَالْبُئْرُ جَبَارٌ، وَالْمَغْدِنُ جَبَارٌ، وَلِيَ الرِّكَازِ الْخُمْسُ)).

[أطراف ٣ : ٢٣٠٠، ٦٩١٢، ٦٩١٣]

बाब 67 : अल्लाह तआला ने सूरह तौबा में

٦٧ - يَابَ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

फर्माया जकात के तहसीलदारों को भी
जकात से दिया जाएगा।

﴿وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا﴾ [العوبة: १०]
وَمُخَاصِمَةِ الْمُصَدِّقِينَ مَعَ الْإِمَامِ

1500. हमसे यूसुफ बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया, उनसे उनके बाप इर्वा बिन जुबैर ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी असद के एक शख्स अब्दुल्लाह बिन लत्बिबा को बनी सुलैम की जकात वसूल करने पर मुकर्रर किया। जब वो आए तो आपने उनसे हिसाब लिया। (राजेअ: 925)

١٥٠٠- حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((اسْتَعْمَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ رَجُلًا مِنَ الْأَسَدِ عَلَى حَقَّاتِ نَبِيِّهِمْ يُدْعَى ابْنُ اللَّحْيَةِ فَلَمَّا جَاءَ خَاسِبَةً)). [راجع: ٩٢٥]

तशरीह: जकात वसूल करने वालों से हाकिमे इस्लाम हिसाब लेगा ताकि मामला साफ रहे, किसी को बदगुमानी का मौका न मिले। इब्ने मुनीर ने कहा कि अन्देशा है कि आमिले मज़कूर ने जकात में से कुछ अपने मसारिफ में खर्च कर दिया हो, लिहाज़ा उससे हिसाब लिया गया। कुछ रिवायात से ये भी जाहिर है कि कुछ माल के बारे में उसने कहा था कि ये मुझे बतौर तोहफ़ा मिला है, लिहाज़ा उस पर हिसाब लिया गया और तोहफ़े के बारे में फर्माया गया कि ये सब बैतुलमाल ही का है जिसकी तरफ से तुमको भेजा गया था। तोहफ़े में तुम्हारा कोई हक़ नहीं।

बाब 68 : जकात के ऊँटों से मुसाफ़िर लोग काम ले सकते हैं और उनका दूध पी सकते हैं

٦٨- بَابُ اسْتِعْمَالِ إِبِلِ الْمُصَدِّقَةِ وَآلِبَائِهَا لِأَنْبَاءِ السَّبِيلِ

1501. हमसे मुसहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यहया कज़ान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने कहा कि हमसे क़तादा ने बयान किया, और उनसे अनस (रज़ि.) ने किज़्रैना के कुछ लोगों को मदीना की आबो हवा मुवाफ़िक़ नहीं आई। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें उसकी इजाज़त दे दी कि वो जकात के ऊँटों में जाकर उनका दूध और पेशाब इस्ते'माल करें (क्योंकि वो ऐसे मर्ज़ में मुक्तला थे जिसकी दवा यही थी) लेकिन उन्होंने (उन ऊँटों के) चरवाहे को मार डाला और ऊँटों को लेकर भाग निकले। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके पीछे आदमी दौड़ाए आखिर वो लोग पकड़ लिये गये। औहुज़ूर (ﷺ) ने उनके हाथ और पाँव कटवा दिये और उनकी आँखों में गर्म सलाइयाँ फिरवा दीं फिर उन्हें धूप में डलवा दिया (जिसकी शिद्दत की वजह से) वो पत्थर चबाने लगे थे। इस

١٥٠١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا قَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ نَاسًا مِنَ غُرَبَاءِ اجْتَرَوْا الْمَدِينَةَ، فَرَحَصَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَأْتُوا إِبِلَ الْمُصَدِّقَةِ فَيُشْرَبُوا مِنْ أَلْبَائِهَا وَأَنْبَائِهَا. فَفَعَلُوا الرَّاعِي وَاسْتَأْفُوا اللُّؤْدَ. فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِي بِهِمْ لِقَطْعِ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلِهِمْ وَسَمَرَ أَعْيُنِهِمْ وَتَرَكَهُمْ بِالْحَرَةِ يَقْطُونَ الْحِجَارَةَ)). تَابِعَهُ أَبُو قِلَابَةَ وَحُمَيْدٌ وَكَاتِبٌ عَنْ أَنَسٍ.

रिवायत की मुताबअत अबू क़लाबा प्राबित और हुमैद ने अनस (रज़ि.) के वास्ते से की है। (राजेअ : 233)

तशरीह : आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मुसाफ़िर और बीमार जानकर ज़कात के ऊँटों की चरागाह में भेज दिया क्योंकि वो मर्जे इस्तिस्का के मरीज़ थे। मगर वहाँ उन ज़ालिमों ने न सिर्फ़ ऊँटों के मुहाफ़िज़ को क़त्ल किया बल्कि उसका मुषला कर डाला और ऊँटों को लेकर भाग गए। बाद में पकड़े गए और क़िसास में उनको ऐसी ही सज़ा दी गई।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने इससे प्राबित फ़र्माया कि मुसाफ़िरों के लिये ज़कात के ऊँटों का दूध वगैरह दिया जा सकता है और उनकी सवारी भी उन पर हो सकती है। गरज़ुल्मुसन्निफ़ि फ़ी हाज़लबाबि इष्बातु वज्जिस्सदक़ति फ़ी सिन्फ़िन वाहिदिन लिमन क़ाल यज़िबु इस्तीआबुलअस्नाफ़िष्मानियह (फ़तहुल बारी) या'नी मुसन्निफ़ का मक्सद इस बाब से ये निकलता है कि अम्बाले ज़कात को सिर्फ़ एक ही मस्रफ़ पर भी खर्च किया जा सकता है बरख़िलाफ़ उनके जो आठों मस़ारिफ़ का इस्तीआब ज़रूरी जानते हैं। उन लोगों की ये संगीन सज़ा क़िसास ही में थी और बस।

बाब 69 : ज़कात के ऊँटों पर हाकिम का अपने हाथ से दाग़ देना

٦٩- بَابُ وَنَسَمِ الْإِمَامِ إِبْنِ الصَّدَقَةِ بِدَوِي

1502. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अम्र औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने बयान किया, कहा कि मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा को लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ कि आप उनकी तहनीक कर दें। (या'नी अपने मुँह से कोई चीज़ चबाकर उनके मुँह में डाल दें) मैंने उस वक़्त देखा कि आपके हाथ में दाग़ लगाने का आला था और आप ज़कात के ऊँटों पर दाग़ लगा रहे थे।

(दीगर मक़ाम : 5542, 5824)

١٥٠٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْزِرِ قَالَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ قَالَ حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((حَدَّثْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ لِيَحْكُمَهُ، فَأَوَلَّعَهُ فِي بَدْوِ الْجَنَسِ نَسَمَ إِبْنِ الصَّدَقَةِ)).

[طرفاء في : ٥٥٤٢، ٥٨٢٤.]

मा'लूम हुआ कि जानवर को ज़रूरत से दाग़ देना दुस्त है और इससे हन्फिया का रह हुआ जिन्होंने दाग़ देने को मकरूह और उसको मुषला समझा है। (वहीदी) और बच्चों के लिये तहनीक भी सुन्नत है कि खज़ूर वगैरह कोई चीज़ किसी नेक आदमी के मुँह से कुचलवाकर बच्चे के मुँह में डाली जाए ताकि उसको भी नेक फ़ितरत हासिल हो।

बाब 70 : सदक-ए-फ़ित्र का फ़र्ज होना

अबुल आलिया, अत्ता और इब्ने सीरीन (रह.) ने भी सदक-ए-फ़ित्र को फ़र्ज समझा है।

٧٠- بَابُ فَرَضِ صَدَقَةِ الْفِطْرِ وَرَأَى أَبُو النَّعَالِيَةِ وَغَطَاءُ وَابْنُ سَبْرِينَ صَدَقَةَ الْفِطْرِ فَرِيضَةً

तशरीह : हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने किताब ज़कात को ख़त्म फ़र्माते हुए सदक-ए-फ़ित्र के मसाइल भी पेश कर दिये, मन तज़क्का व जकरस्म रब्बिही फ़सल्लै रुबिय अन इब्नि उमर व अमिन्नि औफ़िन काला नज़लत फ़ि जकातिलिफ़्ति व रुबिय अन अबिलआलियह व इब्निल्मुसय्यिब व इब्नि सीरीन व गैरिहिम क़ालू युअता

सदकतुल्फिति धुम्म युसल्ली रवाहुल्बैहकी व गैरूहू (मिआत) या'नी कुआनी आयत, फ़लाह पाई उस शख्स ने जिसने तज़किया हाज़िल किया और अपने रब का नाम याद किया और नमाज़ पढ़ी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) और अम्र बिन औफ़ (रज़ि.) कहते हैं कि ये आयात सदक-ए-फ़ित्र के बारे में नाज़िल हुई हैं। ये हज़रत ये भी कहते हैं कि पहले सदक-ए-फ़ित्र अदा किया जाए और फिर नमाज़ पढ़ी जाए। लफ़्ज़ तज़किया से रोज़ों को पाक साफ़ करना मुराद है जिसके लिये सदक-ए-फ़ित्र अदा किया जाता है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) रिवायत करते हैं फ़रज़ रसूलुल्लाहि (ﷺ) ज़कातुल्फ़िति तुहरतुल्लिस्माइमि मिनल्लगवि वरफ़ि वल्हदीष रवाहु अबू दाऊद वब्नु माज्जा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़काते फ़ित्र को फ़र्ज़ करार दिया जो रोज़ेदार को लाव और गुनाहों से (जो उससे हालते रोज़ा में सादिर होते हैं) पाक-साफ़ कर देती है। पस आपका लफ़्ज़ तज़किया से मुराद सदक-ए-फ़ित्र अदा करना हुआ। इस हदीष के तहत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं: फ़ोहि दलीलुन अला अन्न सदकतुल्फ़िति मिनल्फ़राइज़ि व कद नकलब्नुल्मुन्ज़िर व गैरूहू अल्इज्माइज़ ज़ालिक व लाकिन्नल्हनफ़िय्यत यकूलून बिल्बुजूबि दूनल्फ़र्ज़िय्यति अला क़ाइदतिहिम फ़ित्तफ़रक़ति बैनल्फ़र्ज़ि वल्बुजूबि (नैलुल औतार)

या'नी इस हदीष में दलील है कि सदक-ए-फ़ित्र फ़राइज़े इस्लामिया मे से है। इब्ने मुंज़िर वगैरह ने इस पर इज्माअ किया है मगर इन्फ़िया उसे वाजिब करार देते हैं क्योंकि उनके यहाँ उनके कायदे के तहत फ़र्ज़ और वाजिब में फ़र्क़ है इसलिये वो उसको फ़र्ज़ नहीं बल्कि वाजिब के दर्जे में रखते हैं। अल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) फ़र्माते हैं कि ये सिर्फ़ लफ़्ज़ी निज़ाअ है।

कुछ कुतुबे फ़िक्हा इन्फ़िया में इसे सदकतुल फ़ित्र या'नी ता की ज़्यादती के साथ लिखा गया है और उससे मुराद वो फ़ितरत ली गई है जो आयते शरीफ़ा फ़ितरतुल्लाहिल्लती फ़तरन्नास अलैहा में है। मगर हज़रत मौलाना इबैदुल्लाह (रह.) फ़र्माते हैं,

व अम्मा लफ़्ज़ुल्फ़िति बिदूनि ताइन फ़ला क़लाम फ़ी अन्नहू मअन लुगविद्युन मुस्तअमलुन कब्लशशरइ लिअन्नहू जिहस्सौमि व युकालु लहा अयज़न ज़कातुल्फ़िति व ज़कातु रमज़ान व ज़कातुस्सौमि व सदकतु रमज़ान व सदकतुस्सौमि (मिआत)

लेकिन लफ़्ज़ फ़ित्र बगैर ताअ के कोई शक़ नहीं कि ये लावी मा'नी मे मुश्तमिल है, शरीअत के नुज़ूल से पहले भी ये रोज़ा की ज़िद पर बोला जाता रहा है। उसे ज़कातुल फ़ित्र, ज़कातुरमज़ान, ज़काते सोम व सदक़ा, रमज़ान व सदक़-ए-सौम के नामों से भी पुकारा गया है।

1503. हमसे यहा बिन मुहम्मद बिन सकन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जहज़म ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे इमर बिन नाफ़ेअ ने उनसे उनके बाप ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ित्र की ज़कात (सदक़-ए-फ़ित्र) एक साअ खजूर या एक साअ जौ फ़र्ज़ करार दी थी। गुलाम, आज़ाद, मर्द, औरत, छोटे और बड़े तमाम मुसलमानों पर। आपका हुक्म ये था कि नमाज़े (ईद) के लिये जाने से पहले ये सदक़ा अदा कर दिया जाए।

(दीगर मक़ाम : 1504, 1507, 1509, 1511, 1512)

١٥٠٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ
السَّكَنِ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ
حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ هَمَزِ بْنِ
نَافِعٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ هَمَزٍ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمَا قَالَ: ((فَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ زَكَاةَ
الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ حَبِّ
عَلَى الْفَتَى وَالْحُرِّ وَالذَّكْرِ وَالْأُنثَى
وَالصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَأَمَرَ بِهَا
أَنْ تُؤَدَّى قَبْلَ خُرُوجِ النَّاسِ إِلَى
الصَّلَاةِ)).

[أُضْرَفَ فِي : ١٥٠٩, ١٥٠٧, ١٥٠٨]

बाब 71 : सदक-ए-फ़ित्र का मुसलमानों पर
यहाँ तक कि गुलाम लौण्डी पर भी फ़र्ज़ होना

۷۱- بَابُ صَدَقَةِ الْفِطْرِ عَلَى الْعَبْدِ
وغيره من المسلمين

1504. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ित्र की ज़कात आज़ाद या गुलाम, मर्द या औरत तमाम मुसलमानों पर एक साअ खजूर या जौ फ़र्ज़ की थी। (राजेअ : 1504)

۱۵۰۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَرَضَ زَكَاةَ الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ عَلَى كُلِّ حُرٍّ أَوْ عَبْدٍ ذَكَرَ أَوْ أُنْثَى مِنْ الْمُسْلِمِينَ)). [راجع: ۱۵۰۴]

तशरीह: गुलाम और लौण्डी पर सदक-ए-फ़ित्र फ़र्ज़ होने से ये मुराद है कि उनका मालिक उनकी तरफ़ से सदका दे। कुछ ने कहा ये सदका पहले गुलाम लौण्डी पर फ़र्ज़ होता है फिर मालिक उनकी तरफ़ से अपने ऊपर उठा लेता है। (वहीदी)

सदक-ए-फ़ित्र की फ़र्ज़ियत यहाँ तक है कि ये उस पर भी फ़र्ज़ है जिसके पास एक दिन की ख़ुराक से ज़ा़द अनाज या खाने की कोई चीज़ मौजूद हो क्योंकि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, साउमिन् बुरिन् औ कुम्हिन् अन कुल्तिन् इज़् नैनि सगीरुन् औ कबीरुन् हुर्रुन् औ अब्दुन् ज़क़रुन् औ उन्ना अम्मा ग़निय्युकुम् फ़युज्ज़ी हुल्लाहु व अम्मा फ़क़ीरुकुम् फ़युरहु अलैहि अक़््शर मिम्मा आताहु (अबू दाऊद) या'नी एक साअ गेहूँ छोटे-बड़े दोनों आदमियों आज़ाद-गुलाम, मर्द-औरत की तरफ़ से निकाला जाए इस सदके की वजह से अल्लाह पाक मालदार को गुनाहों से पाक कर देगा (उसका रोज़ा पाक हो जाएगा) और गरीब को उससे भी ज़्यादा देगा जितना कि उसने दिया है।

साअ से मुराद साअे हिजाज़ी है जो रसूले करीम (ﷺ) के ज़माने में मदीना मुनव्वरा में मुरव्वज (प्रचलित) था, न कि साअे इराक़ी मुराद है। साअे हिजाज़ी का वज़न उसी तौले के सेर के हिसाब से पौने तीन सेर के करीब होता है, हज़रत उबैदुल्लाह (रह.) शैख़ुल हदीष फ़र्माते हैं कि,

व हुव खम्सतु अर्तालिन व धुलुषु रत्लिन बग़दादी व युक़ालु लहुस्साउल्हिजाज़ी कान मुस्तअमलन फ़ी ज़मनिन्निबिय्यि (ﷺ) व बिही कानू युख़रिजून सदक़तल्फ़ित्ति व ज़कातल्मुअशराति व गैरहुमा मिनलहुकूकिल् वाजिबतिल्मुक़दरति फ़ी अहदिन्निबिय्यि (ﷺ) व बिही क़ाल मालिक वश़ाफ़िइ व अहमद व अबू यूसुफ़ व उलमाउल्हिजाज़ि व क़ाल अबू हनीफ़त व मुहम्मद बिस्साइल् इराक़ी व हुव प्रमानियत अर्ताल बिर्त्तिलमज्कूरि व इन्नमा क़ील लहुल् इराक़ी लिअन्नहु कान मुस्तअमलन फ़ी बिलादिल् इराक़ि व हुवल्लज़ी युक़ालु लहुस्साउल्हिजाज़ी लिअन्नहुल्हज्जाजुल्वाली व कान अबू यूसुफ़ यकूलु ककौलि अबी हनीफ़त धुम्म रजअ इला कौलिल्जुम्हूरि लम्मा तनाज़र मअ मालिक बिल्मदीनति फ़अराहुल्मी आनल्लती तवारप्रहा अहलुल्मदीनति अन अस्ताफ़िहिम फ़ी ज़मनिन्निबिय्यि (ﷺ) (मिर्ज़ात जिल्द 3, पेज 93)

साअ का वज़न पाँच रत्ल और तीन रत्ल बग़दादी है, इसी को साअे हिजाज़ी (अरब का पैमाना) कहते हैं जो रसूले करीम (ﷺ) के ज़माने में हिजाज़ में मुरव्वज था और अज़दे रिसालत में सदक़-ए-फ़ित्र और इश्र का अनाज और दीगर हुकूके वाजिबा बसूरत अज्नास उसी साअ से वज़न करके अदा किये जाते थे। इमाम मालिक (रह.) और इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) और इमाम अबू यूसुफ़ (रह.) और उलम-ए-हिजाज़ का यही क़ौल है। और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) और इमाम मुहम्मद (रह.) साअे इराक़ी मुराद लेते हैं जो इराक़ के इलाक़ों में मुरव्वज था जिसे साअे हिजाज़ी भी कहा जाता है। उसका वज़न आठ रत्ल मज्कूर के बराबर होता है इमाम अबू यूसुफ़ (रह.) भी अपने उस्तादे गिरामी अबू हनीफ़ा (रह.) के

कौल पर फ़त्वा देते थे मगर जब आप मदीना तशरीफ़ लाए और इस बारे में इमामुल मदीना इमाम मालिक (रह.) से तबादला-ए-ख़याल (विचार-विमर्श) फ़र्माया तो इमाम मालिक (रह.) ने मदीना के बहुत से पुराने साअ (पैमाने) जमा कराए। जो अहले मदीना को ज़मान-ए-रिसालते मआब (ﷺ) से बतौर विरासत मिले थे और जिनका अहदे नबवी में रिवाज था, उनका वज़न किया गया तो 5 रतल और तीन रतल बग़दादी था। चुनाँचे हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ (रह.) ने इस बारे में कौले जुम्हूर की तरफ़ रुजूअ किया। साअे हिजाज़ी इसलिये कहा गया कि उसे हिजाज वालों ने जारी किया था।

ऊपर बताए गये हिसाब की रू से हिजाज़ी का वज़न 234 तौला होता है जिसके तौले कम तीन सेर होते हैं जो अस्सी (80) तौला वाले सेर के मुताबिक़ होते हैं।

बाब 72 : सद्क-ए-फ़ित्र में अगर जौ दे तो एक साअ अदा करे

1505. हमसे क़बीसा बिन इब्नबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अयाज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम एक साअ जौ का सद्का दिया करते थे।

(दीगर मक़ाम : 1506, 1508, 1510)

तफ़सील से बतलाया जा चुका है कि साअ से मुराद साअे हिजाज़ी है जो अहदे रिसालत (ﷺ) में मुरव्वज था, जिसका वज़न तीन सेर से कुछ कम होता है।

बाब 73 : गेहूँ या दूसरा अनाज भी सद्क-ए-फ़ित्र में एक साअ होना चाहिये

1506. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अयाज़ बिन अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सिरह आमरी ने बयान किया, कि उन्होंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना। आप फ़र्माते थे कि हम फ़ित्रा की ज़कात एक साअ अनाज या गेहूँ या एक साअ जौ या एक साअ ख़जूर या एक साअ पनीर या एक साअ ज़बीब (ख़ुश्क अंगूर या अंजीर) निकाला करते थे। (राजेअ : 1505)

तशरीह : तआम से अक़सर लोगों के नज़दीक गेहूँ ही मुराद है। कुछ ने कहा जौ के सिवा दूसरे अनाज और अहले हदीष और शाफ़िइया और जुम्हूर उलमा का यही कौल है कि अगर सद्क-ए-फ़ित्र में गेहूँ दे तो भी एक साअ देना काफ़ी समझा। इब्ने ख़ुज़ैमा और हाकिम ने अबू सईद (रज़ि.) से निकाला। मैं तो वही सद्का दूँगा जो नबी करीम (ﷺ) के ज़माने

٧٢- بَابُ صَدَقَةِ الْفِطْرِ صَاعٌ مِنْ شَعِيرٍ

١٥٠٥- حَدَّثَنَا قُيَيْصَةُ بْنُ عَقَبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عِيَّاضِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((كُنَّا نَطْعِمُ الصَّدَقَةَ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ)).

[أطرافه في : ١٥٠٦، ١٥٠٨، ١٥١٠.]

٧٣- بَابُ صَدَقَةِ الْفِطْرِ صَاعٌ مِنْ طَعَامٍ

١٥٠٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُونُسَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عِيَّاضِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : ((كُنَّا نَخْرُجُ زَكَاةَ الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ طَعَامٍ أَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ أَطْعَمٍ أَوْ صَاعًا مِنْ زَبْذَبٍ)). [راجع : ١٥٠٥]

में दिया करता था। या'नी एक साअ खजूर या गेहूँ या पनीर या जौ। एक शख्स ने कहा या दो मुद निस्फ साअ गेहूँ, उन्होंने कहा नहीं ये मुआविया (रज़ि.) की ठहराई हुई बात है। (वहीदी)

बाब 74 : सदक-ए-फ़ितर में खजूर भी एक साअ निकाली जाए

1507. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैथ ने नाफ़ेअ के वास्ते से बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने किरसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक साअ खजूर या एक साअ जौ की जकात फ़ितरा देने का हुक्म फ़र्माया था। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर लोगों ने उसी के बराबर दो मुद (आधा साअ) गेहूँ कर लिया था। (राजेअ : 1506)

बाब 75 : सदक-ए-फ़ितर में मुनक्का भी एक साअ देना चाहिये

1508. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने यज़ीद बिन अबी हकीम अदनी से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान ज़ौरी ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अयाज़ बिन अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह ने बयान किया और उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में सदक-ए-फ़ितर एक साअ गेहूँ या एक साअ खजूर या एक साअ जौ या एक साअ ज़बीब (ख़ुश्क अंगूर या ख़ुश्क अंजीर) निकालते थे। फिर जब मुआविया (रज़ि.) मदीना में आए और गेहूँ की आमदनी हुई तो कहने लगे मैं समझता हूँ उसका एक मुद दूसरे अनाज के दो मुद के बराबर है। (राजेअ : 1505)

बाब 76 : सदक-ए-फ़ितर नमाज़ ईद से पहले अदा करना

1509. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हज़फ़ बिन मैसरा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मूसा बिन इब्रबा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) से सदक-ए-फ़ितर नमाज़े (ईद) के लिये जाने से पहले निकालने का हुक्म दिया था। (राजेअ : 1503)

٧٤- بَابُ صَدَقَةِ الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ

١٥٠٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ قَالَ: ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِزَكَاةِ الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ)) قَالَ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: لَجَعَلَ النَّاسَ حِدَّةً مُدَيْنٍ مِنْ جَنْطَةٍ)). (راجع: ١٥٠٣)

٧٥- بَابُ صَاعٍ مِنْ زَبِيبٍ

١٥٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَيْمُونٍ سَمِعَ يَزِيدَ ابْنَ حَكِيمٍ الْقَدَنِيَّ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ قَالَ: حَدَّثَنِي عِيَّاضُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي سَرْحٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُعْطِيهَا لِي زَمَانَ النَّبِيِّ ﷺ صَاعًا مِنْ طَعَامٍ أَوْ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ زَبِيبٍ، فَلَمَّا جَاءَ مُعَاوِيَةُ وَجَاءَتِ السُّمَرَاءُ، قَالَ: ((أَرَى مُدًا مِنْ هَذَا يُعَدُّلُ مُدَيْنٍ)). (راجع: ١٥٠٥)

٧٦- بَابُ الصَّدَقَةِ قَبْلَ الْعِيدِ

١٥٠٩- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ مَسْرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ بِزَكَاةِ الْفِطْرِ قَبْلَ خُرُوجِ النَّاسِ إِلَى الصَّلَاةِ)). (راجع: ١٥٠٣)

1510. हमसे मुआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू इमर हफ़्स बिन मैसरा ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अयाज़ बिन अब्दुल्लाह बिन सअद ने, उनसे अबू सईद खुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में ईदुल फ़ित्र के दिन (खाने के अनाज से) एक साअ निकालते थे। अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि हमारा खाना (उन दिनों) जौ, ज़बीब, पनीर और खजूर था।

(राजेअ: 1505)

١٥١٠- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عُمَرَ عَنْ زَيْدٍ عَنْ عِيَّاضِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَعْدٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا نُخْرِجُ لِي عَهْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ طَعَامٍ - وَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ - وَكَانَ طَعَامَنَا الشَّعِيرُ وَالزَّبِيبُ وَالْأَفْطُ وَالْعَمْرُ)).

[راجع: ١٥٠٥]

तशरीह: सदक-ए-फ़ित्र ईद से एक दो दिन पहले भी निकाला जा सकता है मगर नमाज़ से पहले तो उसे अदा कर देना चाहिये। जैसा कि दूसरी रिवायत में साफ़ मौजूद है, फ़मन अद्वाहा क़बूलस्सलाति फ़हिय ज़कातुन मक्बूलतुन व मन अद्वाहा बअदस्सलाति फ़हिय सदकतुम्मिनस्सदकाति (अबू दाऊद व इब्ने माजा) या'नी जो उसे नमाज़ से पहले अदा कर देगा उसकी ये ज़कातुल फ़ित्र मक्बूल होगी और जो नमाज़ के बाद निकालेगा उस सूत्र में ये ऐसा ही मा'मूली सदका होगा जैसे आम सदकात होते हैं।

बाब 77 : सदक-ए-फ़ित्र, आज़ाद और गुलाम पर वाजिब होना

٧٧- بَابُ صَدَقَةِ الْفِطْرِ عَلَى الْحُرِّ وَالْمَمْلُوكِ

और जुहरी ने कहा जो गुलाम-लौण्डी, सौदागरी का माल हों तो उनकी सालाना ज़कात भी दी जाएगी और उनकी तरफ़ से सदक-ए-फ़ित्र भी अदा किया जाए।

وَقَالَ الزُّهْرِيُّ فِي الْمَمْلُوكِينَ لِلْعَجَاوِ: يُزَكَّى فِي الْعَجَاوِ، وَيُزَكَّى فِي الْفِطْرِ

तशरीह: पहले एक बाब इस मज़मून का गुज़र चुका है कि गुलाम वगैरह पर जो मुसलमान हों सदक-ए-फ़ित्र वाजिब है फिर इस बाब के दोबारा लाने से क्या गर्ज़ है? इब्ने मुनीर ने कहा कि पहले ये बाब से इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये था कि काफ़िर की तरफ़ से सदक-ए-फ़ित्र न निकालें। इसलिये इसमें मिनल मुस्लिमीन की कैद है। और इस बाब का मतलब ये है कि मुसलमान होने पर सदक-ए-फ़ित्र किस-किस पर और किस-किस तरफ़ से वाजिब होता है। (वहीदी)

1511. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) से सदक-ए-फ़ित्र या ये कहा कि सदक-ए-रमज़ान मर्द, औरत, आज़ाद और गुलाम (सब पर) एक साअ खजूर या एक साअ जौ फ़र्ज़ करार दिया था। फिर लोगों ने आधा साअ गेहूँ उसके बराबर करार दे लिया। लेकिन इब्ने इमर (रज़ि.) खजूर दिया करते थे।

١٥١١- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((فَرَضَ النَّبِيُّ ﷺ صَدَقَةَ الْفِطْرِ - أَوْ قَالَ: رَمَضَانَ - عَلَى الذَّكَرِ وَالْأُنْثَى وَالْحُرِّ وَالْمَمْلُوكِ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ، فَذَلَّ النَّاسُ بِهِ يَصْنَعُ صَاعٍ مِنْ

एक बार मदीना में खजूर का क़हत पड़ा तो आपने जौ सदक़ा में निकाला। इब्ने उमर (रज़ि.) छोटे बड़े सबकी तरफ़ से यहाँ तक कि मेरे बेटों की तरफ़ से भी सदक़-ए-फ़ित्र निकालते थे। इब्ने उमर (रज़ि.) सदक़-ए-फ़ित्र हर फ़क़ीर को जो उसे कुबूल करता, दे दिया करते थे। और लोग सदक़-ए-फ़ित्र एक या दो दिन पहले ही दे दिया करते थे। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा मेरे बेटों से नाफ़ेअ के बेटे मुराद हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा वो ईद से पहले जो सदक़ा दे देते थे तो इकट्ठा होने के लिये न कि फ़क़ीरों के लिये (फिर वो जमा करके फ़क़ीर में तक्सीम कर दिया जाता)

(राजेअ: 1503)

بُرِّ، فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُعْطِي التَّمْرَ، فَأَعْوَزَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ مِنَ التَّمْرِ فَأَعْطَى خَيْرًا، فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يُعْطِي عَنِ الصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ حَتَّى إِنْ كَانَ يُعْطِي عَنْ بَنِي. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُعْطِيهَا الْبَيْنَ يَقْبَلُونَهَا. وَكَانُوا يَقْطُونَ قَبْلَ الْفِطْرِ يَوْمَ (أَوْ يَوْمَيْنِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَنْفَعُ بَنِي نَافِعٍ قَالَ كَانُوا يَقْطُونَ لِيَجْمَعَ لَا لِلْفُقَرَاءِ.

[راجع: ١٥٠٣]

बाब 78 : सदक़-ए-फ़ित्र बड़ों और छोटों पर वाजिब है

और अबू अम्द ने बयान किया, कि उमर, अली, इब्ने उमर, जाबिर, आइशा, ताऊस, अत्ता और इब्ने सीरीन (रज़ि.) का इयाल ये था कि यतीम के माल से भी ज़कात दी जाएगी। और जुहरी दीवाने के माल से ज़कात निकालने के क़ाइल थे।

1512. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमसे यहा क़त्तान ने अब्दुल्लाह के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक साअ जौ या एक साअ खजूर का सदक़-ए-फ़ित्र, छोटे, बड़े, आज़ाद और गुलाम सब पर फ़र्ज़ करार दिया।

(राजेअ 1503)

٧٨- بَابُ صَدَقَةِ الْفِطْرِ عَلَى الصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ قَالَ أَبُو عُمَرَ وَرَأَى عُمَرُ وَعَلِيٌّ وَابْنُ عُمَرَ وَجَابِرٌ وَهَابِشَةُ وَطَاوُسٌ وَعَطَاءٌ وَابْنُ سَبْرَةَ أَنَّ يُزَكَّى مَالُ الْيَتِيمِ وَ قَالَ الزُّهْرِيُّ يُزَكَّى مَالُ الْمَحْشُونِ.

١٥١٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((فَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ذَلِكَ الْفِطْرَ صَاعًا مِنَ خَيْرِ أَوْ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ عَلَى الصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ وَالْحُرِّ وَالْمَمْلُوكِ)).

[راجع: ١٥٠٣]

25. किताबुल हज्ज

हज्ज के मसाइल के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 : हज्ज की फ़र्जियत और उसकी फ़ज़ीलत का बयान

۱- بَابُ وَجُوبِ الْحَجِّ وَفَضْلِهِ.

وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى:

और अल्लाह पाक ने (सूरह आले इमरान में) फ़र्माया, लोगों पर फ़र्ज़ है कि अल्लाह के लिये ख़ान-ए-का'बा का हज्ज करें जिसको वहाँ तक राह मिल सके और जो न माने (और बावजूद कुदरत के हज्ज को न जाए) तो अल्लाह सारे जहाँ से बेनियाज़ है।

﴿وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حَجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ﴾ [آل عمران 97]

तशरीह:

अपने मा'मूल के मुताबिक़ अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने हज्ज की फ़र्जियत प्राबित करने के लिये कुआन पाक की आयत मज़क़ूर को नक़ल किया। ये सूरह आले इमरान की आयत है जिसमें अल्लाह ने इस्तिताअत (सामर्थ्य) वालों के लिये हज्ज को फ़र्ज़ करार दिया है। हज्ज के लफ़्ज़ी मा'नी क़स्द (इरादा) करने के है, व अस्लुलहज्जि फिल्लुगति अल्कस्दु व फिशशरइ अल्कस्दु इलल्बैतिल्हरामि बिआमालिन मख्सूसतिन मा'नी हज्ज के क़स्द (इरादे) के हैं और शरई मा'नी ये है कि बैतुल्लाह शरीफ़ का कुछ मख्सूस आमाल के साथ क़स्द करना। इस्तिताअत का लफ़्ज़ इतना ज़ामेअ है कि उसमें माली, जिस्मानी, मिलकी हर किस्म की ताक़त होनी चाहिये। हज्ज इस्लाम का पाँचवां रुक्न है और वो सारी उम्र में एक बार फ़र्ज़ है। इसकी फ़र्जियत 9 हिजरी में हुई। कुछ का ख़याल है कि 5 हिजरी या 6 हिजरी में हज्ज फ़र्ज़ हुआ। हज्ज की फ़र्जियत का इन्कार करने वाला काफ़िर है और बावजूद कुदरत के हज्ज न करने वालों के हक़ में कहा गया है कि कुछ ता'ज़ुब नहीं अगर वो यहूदी या नसरानी होकर मरे। हज्ज का फ़रीज़ा हर मुसलमान पर उसी वक़्त आइद होता है जबकि उसको जिस्मानी और माली और मुल्की तौर पर ताक़त हासिल हो। जैसा कि आयत शरीफ़ा मनिस्तताअ इलैहि सबीला से ज़ाहिर है।

हज़रत इमाम बुखारी (रह.) कुआन की आयत लाने के बाद वो हदीष लाए जिसमें साफ़-साफ़ इन्न फ़रीज़तल्लाहि अला इबादिही फिल्हज्जि अदकरत अबी के अल्फ़ाज़ मौजूद हैं। अगरचे ये एक क़बीला ख़ास की मुसलमान औरत के अल्फ़ाज़ हैं मगर आँहज़रत (ﷺ) ने उनको सुना और आपने उन पर कोई ए'तिराज़ नहीं किया। इस लिहाज़ से ये हदीष तक़रीरी हो गई और इससे फ़र्जियत हज्ज का वाजेह लफ़्ज़ों में पुबूत हो गया।

तिर्मिजी शरीफ़ बाब मा जाअ मिनत्तग़लीजि तर्किल हज्जि में हज़रत अली (रजि.) से रिवायत है, क़ाल क़ाल

रसूलुल्लाहि (ﷺ) मम्मलक जादन व राहिलतन तुबल्लिगुहू इला बैतिल्लाहि व लम यहुज फला अलैहि अय्यमूत यहूदियन औ नसरानियन. या'नी आँहजरत (ﷺ) फर्माते हैं कि जिस शख्स को खर्च अखराजात, सवारी वगैरह बैतुल्लाह के सफर के लिये रुपया मयस्सर हो (और वो तन्दरुस्त हो) फिर उसने हज्ज न किया तो उसको इख्तियार है यहूदी होकर मरे या नसरानी होकर। ये बड़ी से बड़ी वईद (चेतावनी) है जो एक सच्चे मर्द मुसलमान के लिये हो सकती है। पस जो लोग बावजूद ताक़त रखने के मक्का शरीफ का रुख नहीं करते हैं बल्कि यूरोप और दूसरे मुल्कों की सैर सपाटे में हजारों रुपये बर्बाद कर देते हैं मगर हज्ज के नाम से उनकी रूह सूख जाती है, ऐसे लोगों को अपने ईमान व इस्लाम की खैर मनानी चाहिये। इसी तरह जो लोग दिन-रात दुनियावी धंधों में खोए रहते हैं और इस पाक सफर के लिये उनको फुर्सत नहीं होती। उनका भी दीनो-ईमान सख्त खतरे में है। आँहजरत (ﷺ) ने फर्माया कि जिस शख्स पर हज्ज फर्ज हो जाए उसको उसकी अदायगी में हतल इम्कान जल्दी करनी चाहिये और काश और शायद में वक़्त नहीं टालना चाहिये।

हजरत उमर फारूक (रज़ि.) ने अपने अहदे खिलाफ़त में ममालिके महरूसा में मन्दर्जाजेल पैगाम शाय़ा कराया था, लक़द हममन्तु अन अबअष रिजालन इला हाज़िहिल अम्मारि फ़यन्ज़ुरु कुल्ल मन कान लहू जिह्दतन व ला यहुज फ़यज़िबू अलैहिमुल्जिज्यत मा हुम बि मुस्लिमीन मा हुम बिमुस्लिमीन (नैलुल औतार जिल्द 4 पेज 865) मेरी दिली ख्वाहिश है कि मैं कुछ आदमियों को शहरों और देहातों में तफ़्तीश के लिये ख़ाना करूँ जो उन लोगों की लिस्ट तैयार करें तो ताक़त रखने के बावजूद इज्तिमाए हज्ज में शिर्कत नहीं करते। उन पर कुफ़्रार की तरह टैक्स मुकरर कर दें क्योंकि उनका दा'वा-ए-इस्लाम फ़िज़ूल और बेकार है वो मुसलमान नहीं है।

वो मुसलमान नहीं है। इससे ज़्यादा बदनज़ीबी और क्या होगी कि बैतुल्लाह शरीफ़ जैसी बुजुर्ग और मुकद्दस जगह इस दुनिया में मौजूद हो। वहाँ तक जाने की हर तरह से आदमी ताक़त भी रखता हो और फिर कोई मुसलमान उसकी ज़ियारत को न जाए जिसकी ज़ियारत के लिये बाबा आदम (अलैहिस्सलाम) सैंकड़ों बार पैदल सफ़र करके गए। अख़रजब्नु ख़ुज़ैमत व अबुशशैख़ फ़िल्अज्मति वदैलमी अनिब्नि अब्बासिन अनिन्नबिय्यि (ﷺ) क़ाल इन्न आदम अता हाज़लबैत अल्फ़ आतियतिन लम यर्कब क़त्तु फ़ीहिन्न मिनल हिन्दि अला रिहलतिही या'नी इब्ने अब्बास (रज़ि.) मफ़ूअन रिवायत करते हैं कि आदम (अलैहिस्सलाम) ने बैतुल्लाह शरीफ़ का मुल्के हिन्द से एक हजार बार पैदल चलकर हज्ज किया। इन हज्जों में आप कभी सवारी पर सवार नहीं होकर गए।

आँहजरत (ﷺ) ने जब काफ़िरों के जुल्मों से तग आकर मक्का मुअज्जमा से हिजरत की तो रुख़सती के वक़्त आपने हज़रे अस्वद को चूमा और आप मस्जिद के बीच में खड़े होकर बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुतवज्जह हुए। आबदीद-ए-नम होकर (भीगी आँखों से) आपने फर्माया कि अल्लाह की क़सम तू अल्लाह के नज़दीक तमाम जहाँ से प्यारा और बेहतर घर है और ये शहर भी अल्लाह के नज़दीक बहुत पसदीदा शहर है। अगर कुफ़ारे कुरैश मुझको हिजरत पर मजबूर न करते तो मैं तेरी जुदाई हर्गिज इख्तियार नहीं करता। (तिर्मिज़ी)

जब आप मक्का शरीफ़ से बाहर निकले तो फिर आपने अपनी सवारी का मुँह मक्का की तरफ़ करके कहा, वल्लाहि इन्नकि लखैर अर्ज़िल्लाहि व अहब्बु अर्ज़िल्लाहि इलल्लाहि व लौ ला उख़िरज्जु मिन्कि मा ख़रज्जु (अहमद, तिर्मिज़ी व इब्ने माजा) अल्लाह की क़सम! ऐ शहरे मक्का! तू अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन शहर है, तेरी ज़मीन अल्लाह को तमाम रूप ज़मीन से प्यारी है। अगर मैं यहाँ से निकलने पर मजबूर न किया जाता तो कभी यहाँ से न निकलता।

फ़ज़ीलते हज्ज के बारे में आँहजरत (ﷺ) फर्माते हैं मन हज्ज हाज़ललबैत फ़लम यर्फ़स व लम यफ़सुक रजअ कमा वलदतहु उम्पुहू (इब्ने माजा पेज 213) या'नी जिसने पूरे अदबो-शराइत के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ का हज्ज किया, न जिमाअ के करीब गया और न कोई बेहूदा हरकत की, वो शख्स गुनाहों से ऐसे पाक साफ़ होकर लौटता है जैसे माँ के पेट से पैदा होने के दिन पाक-साफ़ था।

अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायत में ये भी आया कि आँहजरत (ﷺ) ने फर्माया जो कोई हज्जे बैतुल्लाह के इरादे से ख़ाना होता है उस शख्स की सवारी जितने क़दम चलती है हर क़दम के बदले अल्लाह उसके एक गुनाह को मिटाता है। उसके

लिये एक नेकी लिखता है और एक दर्जा जन्नत में उसके लिये बुलन्द करता है। जब वो शख्स बैतुल्लाह शरीफ में पहुँच जाता है और वहाँ पर तवाफ़े बैतुल्लाह और सफ़ा व मरवह की सई करता है फिर बाल मुँडवाता या कतरवाता है तो गुनाहों से इस तरह पाक-साफ़ हो जाता जैसे माँ के पेट से पैदा होने के दिन था। (तर्गीब व तरहीब पेज 224)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मर्फूअन इब्ने खुज़ैमा की रिवायत है कि जो शख्स मक्का मुअज्जमा से हज्ज के लिये निकला और पैदल अरफ़ात गया फिर वापस भी वहाँ से पैदल ही आया तो उसको हर क़दम के बदले करोड़ों नेकियाँ मिलती हैं।

बैहक्की ने हज़रत उमर (रज़ि.) से रिवायत की है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हज्ज, उम्रह साथ-साथ अदा करो। इस पाक अमल से फ़क्र (ग़रीबी) को अल्लाह तआला दूर कर देता है और गुनाहों से इस तरह पाक कर देता है जैसे भट्टी लोहे को मैल से पाक कर देती है।

मुस्नद अहमद में इब्ने अब्बास (रज़ि.) की रिवायत है कि आपने फ़र्माया कि जिस मुसलमान पर हज्ज फ़र्ज़ हो जाए उसको अदायगी में जल्दी करनी चाहिये और फुर्सत को ग़नीमत जानना चाहिये। नामा'लूम कल क्या पेश आए। मैदाने अरफ़ात में जब हाजी साहबान अपने रब के सामने हाथ फैलाकर दीन-दुनिया की भलाई के लिये दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला आसमानों पर फ़रिश्तों में उनकी ता'रीफ़ करता है।।

अबू यअला की रिवायत में ये अल्फ़ाज़ है कि जो हाजी रास्ते में इतिक़ाल कर जाएँ उसके लिये क़यामत तक हर साल हज्ज का ष़बाब लिखा जाता है।

अल ग़र्ज़ फ़र्ज़ियते हज्ज के बारे में और फ़ज़ाइल के बारे में और भी बहुत सी मरबियात हैं। मोमिन मुसलमान के लिये इसी क़दर काफ़ी वाफ़ी है। अल्लाह तआला जिस मुसलमान को इतनी त़ाक़त दे कि वो हज्ज को जा सके उसको ज़रूर बिल ज़रूर वक़्त को ग़नीमत जानना चाहिये और तौहीद की इस अज़ीमुशान सालाना कॉन्फ़्रेंस में बिला हीलो-हुज्जत शिर्कत करनी चाहिये। वो कॉन्फ़्रेंस जिसकी बुनियाद आज से चार हज़ार साल पहले ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने हाथों से रखी थी उस दिन से आज तक हर साल ये कॉन्फ़्रेंस होती चली आ रही है। पस उसकी शिर्कत के लिये हर मुसलमान हर इब्राहीमी और मुहम्मदी को मुतमन्नी (आरज़ूमंद) रहना चाहिये।

हज्ज की फ़र्ज़ियत के शराइत क्या हैं ? हज्ज फ़र्ज़ होने के लिये नीचे लिखी शर्तें हैं, उनमें से अगर एक चीज़ भी फ़ौत हो जाए तो हज्ज के लिये जाना फ़र्ज़ नहीं है। क़ायदा कुल्लिया है **इज़ा फ़ातशशर्तु फ़ातल्मशरूतु** शर्त के फ़ौत हो जाने से मशरूत भी साथ ही फ़ौत हो जाता है। शराइत ये हैं (1) मुसलमान होना (2) आक़िल होना (3) रास्ते में अमन व अमान का पाया जाना (4) अख़राजाते सफ़र के लिये पूरी रक़म का मौजूद होना (5) तन्दुरुस्त होना (6) औरतों के लिये उनके साथ किसी महरम का होना, महरम उसको कहते हैं जिससे औरत के लिये निकाह करना हमेशा के लिये क़तअन ह़राम हो जैसे बेटा या सगा भाई या बाप या दामाद बग़ैरह। महरम के अलावा मुनासिब तो यही है कि औरत के साथ उसका शौहर हो। अगर शौहर न हो तो किसी महरम का होना ज़रूरी है। अन अबी हुरैरत क़ाल क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) ला तुसाफ़िरु इम्रातुन मसीरत यौमिन व लैलतिन व मअहा ज़ूमहरमिन (मुतफ़क़ अलैहि) अबू हुरैरह (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, औरत एक रात-दिन की मुसाफ़त का सफ़र भी न करे जब तक उसके साथ कोई महरम न हो।

अनिब्नि अब्बासिन क़ाल क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) ला यख़लुवन्न रज़ुलुन बिइम्रातिन व ला तुसाफ़िरन्न इम्रातुन इला व मअहा महरमुन अल्हदीष (मुतफ़क़ अलैहि) इब्ने अब्बास (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्मा दिया। मर्द किसी ग़ैर औरत के साथ हर्गिज़ तंहाई में न हो और न हर्गिज़-हर्गिज़ कोई औरत बग़ैर शौहर या किसी ज़िम्मी महरम को साथ लिये सफ़र करे। एक शख्स ने कहा, हुज़ूर! मेरा नाम मुजाहिदीन की फ़ेहरिस्त में आ गया और मेरी औरत हज्ज के लिये जा रही है। आपने फ़र्माया, जाओ तुम अपनी औरत के साथ हज्ज करो।

हज के महीनों और अय्याम (दिनों) का बयान : चूँकि हज के लिये उमूमन माहे शव्वाल से तैयारी शुरू हो जाती है। इसलिये शव्वाल व ज़िक्र अदा व अशरा ज़िल्हिज्ज को अशहल हज था'नी हज के महीने कहा जाता है। अरकाने हज की अदायगी के लिये ख़ास दिन मुकरर हैं जो आठ ज़िल्हिज्ज से शुरू होते हैं और तेरह ज़िल्हिज्ज पर खत्म होते हैं। जाहिलियत के दिनों में कुफ़ारे अरब अपने अम्राज़ (कामों) के हिसाब से हज के महीनों का उलट-फेर कर लिया करते थे। कुआन पाक ने उनके इस काम को कुफ़्र में ज़्यादाती से ता'बीर किया है और सख्ती के साथ उस हरकत से रोका है। उम्ह मुल्लक़न जियारत को कहते हैं। इसलिये ये साल भर में हर महीने में हो सकता है। इसके लिये दिनों की ख़ास कैद नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी पूरी उम्र में चार बार उम्ह किया। जिसमें तीन उम्ह आपने ज़िक्र अद के महीने में किये और एक उम्ह आप (ﷺ) का हजतुल विदाअ के साथ हुआ। (मुत्फ़क़ अलेह)

1513. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सुलैमान बिन यसार ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़ज़ल बिन अब्बास (हजतुल विदाअ में) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सवारी के पीछे बैठे हुए थे कि क़बीला ख़ज़अम की एक ख़ूबसूरत औरत आई। फ़ज़ल उसको देखने लगे वो भी उन्हें देख रही थी। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़ज़ल (रज़ि.) का चेहरा बार बार दूसरी तरफ़ मोड़ देना चाहते थे। उस औरत ने कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! अल्लाह का फ़रीज़ा हज मेरे वालिद के लिये अदा करना ज़रूरी हो गया है। लेकिन वो बहुत बूढ़े हैं कैंटनी पर बैठ नहीं सकते। क्या मैं उनकी तरफ़ से हज (बदल) कर सकती हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। ये हजतुल विदाअ का वाक़िया था।

(1854, 1855, 4399, 6228)

١٥١٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ ((كَانَ الْفَضْلُ رَدِيفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَجَاءَتْ امْرَأَةٌ مِنْ خَتَمِهِ، فَجَعَلَ الْفَضْلُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا وَتَنْظُرُ إِلَيْهِ، وَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْرِفُ وَجْهَ الْفَضْلِ إِلَى الشَّقِّ الْأَخْرَى، فَقَالَتْ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لَرِيضَةَ اللَّهِ عَلَى عِبَادِهِ فِي الْحَجِّ أَذْرَكَتْ أَبِي شَيْخًا كَبِيرًا لَا يَثْبُتُ عَلَى الرَّاحِلَةِ، أَفَأَحْجُ عَنْهُ؟ قَالَ : ((نَعَمْ)). وَذَلِكَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ)).

[أطرافه في : ١٨٥٤، ١٨٥٥، ٤٣٩٩]

[٦٢٢٨]

तशरीह : इस हदीष से ये निकला कि दूसरे की तरफ़ से हज किया जा सकता है। मगर वही शख्स दूसरे की तरफ़ से हज कर सकता है जो अपना फ़र्ज़ हज अदा कर चुका हो और हन्फ़िया के नज़दीक मुतलक़न दुरुस्त है और उनके मज़हब को वो हदीष रद्द कर देती है जिसको इब्ने ख़ुज़ैमा और अरुहबाबे सुनन ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक शख्स को शिब्रमा की तरफ़ से लब्बैक पुकारते हुए सुना, फ़र्माया क्या तू अपनी तरफ़ से हज कर चुका है? उसने कहा नहीं। आपने फ़र्माया तो पहले अपनी तरफ़ से हज कर फिर शिब्रमा की तरफ़ से कर लेना। इसी तरह किसी शख्स के मर जाने के बाद भी उसकी तरफ़ से हज दुरुस्त है। बशर्ते कि वो वसियत कर गया हो और कुछ ने माँ-बाप की तरफ़ से बिला वसियत भी हज दुरुस्त रखा है। (वहीदी)

हज की एक किस्म हज्जे बदल है। जो किसी मज़हूर या मुतवफ़्फ़ा (मय्यित) की तरफ़ से नियाबतन किया जाता है। उसकी नियत करते वक़्त लब्बैक के साथ जिसकी तरफ़ से हज के लिये आया है उसका नाम लेना चाहिये। मज़लन एक शख्स ज़ैद की तरफ़ से हज के लिये गया तो वो यूँ पुकारेगा, 'लब्बैक अन ज़ैद नियाबत' की तरफ़ से हज करना

जाइज है। इसी तरह किसी भरे हुए की तरफ से भी हज्जे बदल कराया जा सकता है। एक सहाबी ने नबी करीम (ﷺ) से कहा था कि मेरा बाप बहुत ही बूढ़ा हो गया है वो सवारी पर भी चलने की ताकत नहीं रखता। आप इजाजत दें तो मैं उनकी तरफ से हज्ज अदा कर लूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! कर लो (इब्ने माजा) मगर उसके लिये ये ज़रूरी है कि जिस शख्स से हज्जे बदल कराया जाए वो खुद पहले अपना हज्ज अदा कर चुका हो। जैसा कि नीचे लिखी हदीष से ज़ाहिर है।

अनिब्नि अब्बासिन अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) समिअ रजुलन यकूलु लब्बैक अन शिब्रमत फ़क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) मन शिब्रमः क़ाल क़रीबुन ली क़ाल हल हजज्त कतु क़ाल ला क़ाल फज्जअल हाज़िही अन नफ़्सिक् वुम्म हुज्ज अन शिब्रमा (रवाहु इब्ने माजा) या'नी इब्ने अब्बास (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख्स को सुना वो लब्बैक पुकारते वक़्त किसी शख्स शिब्रमा नामी की तरफ से लब्बैक पुकार रहा है। आपने उससे पूछा कि भाई ये शिब्रमा कौन है? उसने कहा कि शिब्रमा मेरा एक क़रीबी है। आपने पूछा तूने कभी हज्ज अदा किया है? उसने कहा नहीं। आपने फ़र्माया, पहले अपने नफ़्स की तरफ से अदा कर, फिर शिब्रमा की तरफ से अदा करना।

इस हदीष से साफ़ ज़ाहिर होता है कि हज्जे बदल वही शख्स कर सकता है जो पहले अपना हज्ज कर चुका हो। बहुत से अइम्मा और इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अहमद (रह.) का यही मज़हब है। लम्दात मे मुल्ला अली क़ारी मरहूम लिखते हैं, अल्अम्रु यदुल्लु बिज़ाहिरिही अला अन्नन्याबत इन्नमा यजुजु बअद अदाइ फ़ज़िल्हज्जि व इलैहि ज़हब जमाअतुम्मिनल्अइम्मित वश़ाफ़िइ व अहमद या'नी अम्मे नबवी बज़ाहिर इस बात पर दलालत करता है कि न्याबत उसी के लिये जाइज है जो अपना फ़र्ज़ हज्ज अदा कर चुका हो। अल्लामा शौकानी (रह.) ने अपनी मायानाज़ किताब नैलुल औतार में ये बाब नक़ल किया है, बाबुन मन हुज्ज अन गैरिही व लम यकुन हुज्ज अन नफ़्सिही या'नी जिस शख्स ने अपना हज्ज नहीं किया वो ग़ैर का हज्जे बदल कर सकता है या नहीं? इस पर आप हदीषे बाला शिब्रमा वाली लाए हैं और उस पर फ़ैसला दिया है कि व लैस फि हाज़ल्बाबि असहहु मिन्हु या'नी हदीष शिब्रमा से ज़्यादा इस बाब में और कोई सहीह हदीष वारिद नहीं हुई है। फिर फ़र्माते हैं, व ज़ाहिरुलहदीषि अन्नहू ला यजुजु लिमन लम यहुज्ज अन नफ़्सिही अंध्यहुज्ज अन गैरिही सवाअन कान यस्तफ़सिल हाज़ा लिरजुल्लिजी समिअहू युलब्बी अन शिब्रमा व हुब यन्जि लु मन्ज़िलतलठमूमि व इला ज़ालिक ज़हबश़ाफ़िइ वन्नासिर (जिल्द 4, नैलुल औतार पेज 173) या'नी इस हदीष से ज़ाहिर है कि जिस शख्स ने नफ़्स की तरफ से पहले हज्ज न किया हो वो हज्जे बदल किसी दूसरे की तरफ से नहीं कर सकता। ख़वाह वो अपना हज्ज करने की ताक़त रखने वाला हो या ताक़त न रखने वाला हो। इसलिये कि नबी करीम (ﷺ) ने जिस शख्स को शिब्रमा की तरफ से लब्बैक पुकारते हुए सुना था उससे आपने ये तफ़्सील नहीं पूछी थी। पस ये बमज़िला उम्मू है और इमाम शाफ़िई और नासिर (रह.) का यही मज़हब है।

पस हज्जे बदल करने और कराने वालों को सोच-समझ लेना चाहिये। अम्पर ज़रूरी यही है कि हज्जे बदल करने के लिये ऐसे आदमी को तलाश करना चाहिये जो अपना हज्ज अदा कर चुका हो ताकि बिला शक व शुब्हा हज्ज के फ़रीजे की अदायगी हो सके। अगर किसी बग़ैर हज्ज किये हुए को भेज दिया तो ऊपर बयान हुई हदीष के ख़िलाफ़ होगा। नीज़ हज्ज की कुबूलियत और अदायगी में पूरा-पूरा तरदुद भी बाकी रहेगा। कोई अक्लमन्द आदमी ऐसा काम क्यूँ करेगा जिसमें काफ़ी ह्पया ख़र्च हो और कुबूलियत में तरदुद शक व शुब्हा हाथ आए।

बाब 2 : अल्लाह पाक का सूरह हज्ज में ये इशार्द

कि लोग पैदल चलकर तेरे पास आएँ और दुबले ऊँटों पर दूर दराज़ रास्तों से इसलिये कि दीन और दुनिया के फ़ायदे हासिल करें। इमाम बुखारी ने कहा सूरह नूह में जो फ़िजाजा का लफ़्ज़ आया है उसके मा'नी खुले और कुशादा रास्ते के हैं।

٢- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿يَأْتُونَكَ رِجَالًا وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ يَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ﴾
فِي جَا: الطَّرِيقِ الرَّاسِخَةِ. [الصحيح: ٢٧].

अगली आयत सूरह हज्ज की इस बाब के बारे में थी और चूँकि उसमें फ़ज्ज का लफ़्ज़ है और फ़िजाजा उसी की जमा (बहुवचन) है जो सूरह नूह में वारिद है इसलिये उसकी भी तफ़्सीर बयान कर दी।

तशरीह: इस आयते करीमा के ज़ैल मुफ़स्सिरीन लिखते हैं, फ़नादा अला जबलि अबू कैस या अय्युहन्नासु इन्ना रब्बकुम बना बैतन व औजब अलैकुम लहज्ज इलैहि फ अजीबू रब्बकुम वलतफत बिवजिही यमीन व शिमालन व शर्कन व गर्बन फ़ज़ाबहू कुल्लू मन कतब लहू अय्यहुज्ज भिन अस्लाबिरिंजालि व अर्हामिल्उम्महाति लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक (जलालैन) या'नी हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जबले अबू कुबैस पर चढ़कर पुकारा, ऐ लोगों! तुम्हारे रब ने अपनी इबादत के लिये एक घर बनवाया है और तुम पर हज्ज फ़र्ज़ किया है। आप ये ऐलान करते हुए शिमाल व जुनूब (उत्तर-दक्षिण), मशिक् व मशिब (पूरब-पश्चिम) की तरफ़ मुँह करते जाते और आवाज़ बुलन्द करते जाते थे। पस जिन इंसानों की किस्मत में हज्जे बैतुल्लाह की सआदते अज़्ली लिखी जा चुकी है। उन्होंने अपने बापों की पुस्त से और अपने माँओं के अरहाम (कोखों) से इस मुबारक निदा को सुनकर जवाब दिया, लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक या अल्लाह! हम हाज़िर हैं। या अल्लाह हम तेरे पाक घर की ज़ियारत के लिये हाज़िर हैं।

कुर्आन मजीद की मज़्फ़ूरा पेशगोई की झलक तौरात में आज भी मौजूद है। जैसा कि नीचे लिखी आयात से ज़ाहिर है, कैटनियाँ क़हरत से तुझे आकर छुपा लेगी मद्यान और ऐफ़ा की जो कैटनियाँ हैं और वो सब जो सबा की हैं आएँगी। (सअयाह : 6/60)

'क़ैदार की सारी भेड़ें (क़ैदार इस्माईल अलैहिस्सलाम के बेटे का नाम है) तेरे पास जमा होंगी। नबीत (इस्माईल के बेटे) के मेंढे तेरी ख़िदमत में हाज़िर होंगे। वो मेरी मंजूरी के वास्ते मेरे मज्बह पर चढ़ाए जाएँगे। अपने शौकत के घर को बुजुर्गी दूँगा। ये कौन हैं जो बदली की तरह उड़ते हैं और कबूतर की तरह अपने काबुक की तरफ़ जाते हैं। यक़ीनन बहरी मुमालिक तेरी राह तर्केंगे और नरसीस के जहाज पहले आएँगे। (सअयाह 13/60)

इन सारी पेशीनगोइयों से अज़मत का बा ज़ाहिर है। वलित्तफ़्सील मुकामे आख़र

1514. हमसे अहमद बिन ईसा ने बयान किया, कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें बिन शिहाब ने कि सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर ने फ़र्माया, कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को जुल हुलैफ़ह में देखा कि अपनी सवारी पर चढ़ रहे हैं। फिर जब वो सीधी खड़ी हुई तो आप (ﷺ) ने लब्बैक कहा।

(राजेअ : 166)

۱۵۱۴- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عِمْسَى قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ بْنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَهُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَرْكَبُ رَاحِلَتَهُ بِلِيِ الْخَلِيفَةِ ثَمَّ يُهَلُّ حِينَ تَسْتَوِي بِهِ قَائِمَةً)).

[راجع: ۱۶۶]

1515. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमें वलीद बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने अत्ता बिन अबी रिबाह से सुना, वो जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुल हुलैफ़ह से एहराम बाँधा। जब सवारी आपको लेकर सीधी खड़ी हो गई। इब्राहीम बिन मूसा की ये

۱۵۱۵- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا الْوَيْلِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ مِمَّنْ عَطَاءٌ يُحَدِّثُ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ إِبْرَاهِيمَ بْنَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مِنْ دِي الْخَلِيفَةِ حِينَ اسْتَوَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ)).

हदीष इब्ने अब्बास और अनस (रज़ि.) से भी मरवी है।

رَوَاهُ أَنَسُ وَأَبْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
يَعْنِي حَدِيثُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مُوسَى

इमाम बुखारी (रह.) की गर्ज इन हदीषों के लाने से ये हैं कि हज्ज पैदल हो या सवार होकर दोनों तरह दुस्त है। कुछ ने कहा उन लोगों पर रद्द है जो कहते हैं कि हज्ज पैदल अफ़ज़ल है, अगर ऐसा होता तो आप भी पैदल हज्ज करते मगर आपने ऊँटनी पर सवार होकर हज्ज किया और आँहज़रत (ﷺ) की पैरवी सबसे अफ़ज़ल है। (वहीदी) ऊँट की जगह आजकल मोटर-कारों ने ले ली है और अब हज्ज बेहद आरामदेह हो गया है।

बाब 3 : पालान पर सवार होकर हज्ज करना

1516. और अबान ने कहा हमसे मालिक बिन दीनार ने बयान किया, उनसे कासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके साथ उनके भाई अब्दुर्रहमान को भेजा और उन्होंने आइशा (रज़ि.) को तनईम से इमरह कराया और पालान की पिछली लकड़ी पर उनको बिठा लिया। हज़रत इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हज्ज के लिये पालानें बाँधो क्योंकि ये भी एक जिहाद है। (राजेअ: 294)

1517. मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया कि हमसे ज़ैद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा कि हमसे अज़रा बिन ब्राबित ने बयान किया, उनसे सुमामा बिन अब्दुल्लाह बिन अनस ने बयान किया कि हज़रत अनस (रज़ि.) एक पालान पर हज्ज के लिये तशरीफ़ ले गये और आप बख़ील नहीं थे। आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) भी पालान पर हज्ज के लिये तशरीफ़ ले गये थे, उसी पर आपका अस्बाब भी लदा हुआ था।

۳- بَابُ الْحَجِّ عَلَى الرَّحْلِ

۱۵۱۶- حَدَّثَنَا أَبَانُ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ دِينَارٍ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ مَعَهَا أَخَاهَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ فَأَعْتَمَرَهَا مِنَ التَّعْمِيمِ، وَحَمَلَهَا عَلَى قَعْبٍ)). وَلَقَدْ عَمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: شَدُّوا الرَّحَالَ فِي الْحَجِّ، فَإِنَّهُ أَخَذَ الْجِهَادَيْنِ. [راجع: ۲۹۴]

۱۵۱۷- وَلَقَدْ مَحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ قَابَسٍ عَنْ لُصَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: ((حَجَّ أَنَسٌ عَلَى رَحْلٍ، وَلَمْ يَكُنْ حَمِيمًا، وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ حَجَّ عَلَى رَحْلٍ وَكَانَتْ زَائِلَةً)).

तशरीह: मतलब ये है कि हज्ज में तकल्लुफ़ करना और आराम की सवारी ढूँढ़ना सुन्नत के खिलाफ़ है। सादे पालान पर चढ़ना काफी है। शुग़फ़ और महमल और इम्दा कज़ावे और गद्दे और तकिये इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं। इबादत में जिस क़दर मशक़त हो उतना ही ज़्यादा षवाब है। (वहीदी) ये बातें आज के सफ़र में ख़वाब व ख़याल बनकर रह गई हैं। अब हर जगह मोटर-कार, हवाई जहाज़ दौड़ते फिर रहे हैं। हज्ज का मुबारक सफ़र भी रेल, पानी के जहाज़, मोटर-कार और हवाई जहाज़ से हो रहा है। फिर ज़्यादा से ज़्यादा आराम हर क़दम पर मौजूद है। इन तकल्लुफ़ात के साथ हज्ज उस हदीष की तस्दीक़ करता है जिसमें कहा गया है आख़िर ज़माने में सफ़रे हज्ज भी एक तफ़रीह का ज़रिया बन जाएगा। लेकिन सुन्नत के शैदाई उन हालात में भी चाहें तो सादगी के साथ ये मुबारक सफ़र करते हुए क़दम-क़दम पर अल्लाह की रज़ा और सुन्नत शिआरी का शुबूत दे सकते हैं। मक्का शरीफ़ से पैदल चलने की इजाज़त है। हुकूमत मजबूर नहीं करती कि हर शख्स मोटर-कार ही का सफ़र करें मगर आराम तलाबी की दुनिया में ये सब बातें दक़ियानूसी समझी जाती है। बहरहाल हकीक़त है कि सफ़रे हज्ज जिहाद से कम नहीं है बशर्ते कि हकीक़ी हज्ज नसीब हो।

लफ्जे जामिला ऐसे कूट पर बोला जाता है जो हालते सफ़र में अलग से सामान अस्बाब और खाने-पीने की चीज़ों को उठाने के लिये इस्ते'माल में आता हो, यहाँ रावी का मकसद ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये सफ़रे मुबारक इस क़दर सादगी से किया कि एक ही कूट से सवारी और सामान उठाना दोनों काम ले लिये गए।

1518. हमसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा कि हमसे ऐमन बिन नाबिल ने बयान किया। कहा कि हमसे कासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप लोगों ने तो उम्रह कर लिया लेकिन मैं न कर सकी। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अब्दुर्रहमान अपनी बहन को ले जा और उन्हें तन्ईम से उम्रह करा ला। चूनाँचे उन्होंने आइशा (रज़ि.) को अपने कूट के पीछे बिठा लिया और आयशा (रज़ि.) ने उम्रह अदा किया। (राजेअ: 294)

١٥١٨- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّمَنُ بْنُ نَابِلٍ قَالَ حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَلَيْهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفْضَرْتُمْ وَلَمْ أَفْضِرْ. فَقَالَ: ((يَا عَائِدَةُ الرَّحْمَنِ، اذْهَبِي بِأَخَوِكَ فَأُفْضِرْهَا مِنَ الْقَتِيمِ)) فَأَخْبَهَا عَلِيٌّ نَاقِلًا، فَأَفْضَرْتِ)).

[راجع: ٢٩٤]

तशरीह: आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) को उम्रह का एहराम बाँधने के लिये तन्ईम भेजा। इस बारे में हज़रत अल्लामा नवाब सिद्दीक हसन खान (रह.) फ़र्माते हैं,

”مِلَانَسْ حَلِ اسْتِ اِزْ بَرَا لَے مَکِی بِحَدِیْثِ صَحِیْحِیْنِ وَغَیْرِہَا کَہْ اَنْحَضَرْتُ صَلٰی اللّٰہِ عَلَیْہِ وَسَلَمَ عِبْدَالرَّحْمٰنِ بِنِ ابِی بَکْرٍ رَاہِیْ فَرَمُوْدُ بَا عَائِشَہُ سَوَّ لَے تَعْمِیْمَ بَرِ اَیْدِ وَّوَّے اِزْ اَنْجَا عَمْرَہُ بَرِ اَیْدِ وَہَرْ کَہْ اَنْرَا اِلْ مَسْکِنَ وَمَکَہِ صَحِیْحِ گَوِیْدِ جَوَابِ دَادَہِ کَہْ اَیْنِ اَمْرِ بِنَابِرِ نَطِبَ خَاطِرِ عَائِشَہُ بِرَدِّ نَا اِزْ حَلِ بِکَہْ دَرِ اَیْدِ چَہَا کَہْ دِیْگَرِ اَزْوَاجِ کَرْدَنْدِ وَاِیْنِ وَاجِبِ حِلَالِ ظاہِرِ اسْتِ۔ ہَاصِلِ اَنْکَہِ اَلْوَّے صَلٰی اللّٰہِ عَلَیْہِ وَسَلَمَ تَعْمِیْمَ مِیْلَاتِ عَمْرَہُ وَاقِعِ نَشْدَہُ وَتَعْمِیْمَ مِیْلَاتِ حِجِّ اِزْ بَرَا لَے اہْلِ بَرِ حِجَّتِ ثَابِتِ گِشْتِ ہِیْ اِگَرِ عَمْرَہُ دُوْنِ مَوَالِیْتِ ہِمُچُو حِجِّ ہَا شَدِ اَنْحَضَرْتُ صَلٰی اللّٰہِ عَلَیْہِ وَسَلَمَ دَرِ حَدِیْثِ صَحِیْحِ گِشْتِ لَمَنْ کَانَ دُوْنِہِمُ فِیْہِلَہُ مِنْ اَہْلِہِ وَکَالْمَلِکِ اَہْلِ مَکَہِ یَہْلُوْنَ مِیْہَا وَاِیْنِ دَرِ صَحِیْحِیْنِ اسْتِ بَلْکَہُ دَرِ حَقِیْقَتِ اَیْنِ عَمَاسِ بَعْدِ ذِکْرِ مَوَالِیْتِ اہْلِ بَرِ مَحَلِّ تَصْرِیْحِ اَمَدَہُ بَا اَنْکَہِ رَسُوْلُ عِلٰہِ عَلَیْہِ وَسَلَمَ فَرَمُوْدُ حَدِیْثِ لَہِنِ لَا اَہْلُوْنَ وَلَمَنْ اَتٰی عَلَیْہِمُ مِنْ غَیْرِ اَہْلُوْنَ لَمَنْ کَانَ بِرِدِّ الْحَجِّ وَالْعَمْرَہِ وَاِیْنِ حَدِیْثِ دَرِ صَحِیْحِیْنِ اسْتِ وَدَوَّیْ تَصْرِیْحِ بَعْمِیْ ہَا اسْتِ (بِرُوْرِ اَلْمَلِہِ ص: ١٥٢)

(बुदूरुल अह्ला, पेज 152)

अहले मक्का के लिये उम्रह का मीकात हल है। जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) को फ़र्माया कि वो अपनी बहन आइशा (रज़ि.) को तन्ईम ले जाएँ और वहाँ से उम्रह का एहराम बाँधकर आएँ और जिन इलमा ने ये कहा कि उम्रह का मीकात अपना घर और मक्का ही है, उन्होंने उस हदीष के बारे में जवाब दिया कि ये आँहज़रत (ﷺ) ने सिर्फ़ हज़रत आइशा (रज़ि.) की दिलजोई के लिये फ़र्माया था ताकि वो हल से कर आएँ जैसा कि दीगर अज़्वाजे मुतहहरात ने किया था और ये जवाब ज़ाहिर के खिलाफ़ है। हासिल ये कि आँहज़रत (ﷺ) से उम्रह के लिये मीकात का तअय्युन वाक़ेअ नहीं हुआ और मीकाते हज्र का तअय्युन हर ज़िहत वालों के लिये प्राबित हुआ है। पस अगर उम्रह उन मवाक़ीत में हज्र की तरह हो तो आँहज़रत (ﷺ) ने सहीह हदीष में फ़र्माया है कि जो लोग मीकात के अंदर हों उनका मीकात उनका घर है वो अपने घरों से एहराम बाँधें, इसी तरह मक्कावाले भी मक्का ही से एहराम बाँधें और हदीष सहीह में है। बल्कि हदीषे इब्ने अब्बास (रज़ि.) में हर जगह की मीकात का ज़िक्र करने के बाद सराहतन आया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया पस ये मीकात उन लोगों के लिये हैं जो उनके अहल हैं और जो भी उधर से गुज़रें हालाँकि वो यहाँ के बाशिन्दे न हों। फिर उनके लिये मीकात यही मुकामात हैं जो भी हज्र और उम्रह का इरादा करके आएँ। पस इस हदीष में सराहतन उम्रह लफ्ज़ मौजूद है।

नवाब मरहूम का इशारा यही मा'लूम होता है कि जब हज का एहराम मक्का वाले मक्का ही से बाँधेंगे और उनके घर ही उनके मीकात होंगे तो उम्रह के लिये भी यही हुक्म है क्योंकि हदीसे हाजा में रसूल करीम (ﷺ) ने हज और उम्रह का एक ही जगह जिक्र किया है। मीकात के सिलसिले में जिस क़दर अहकामात हज के लिये हैं वही सब उम्रह के लिये हैं। उनकी बिना पर सिर्फ मक्का शरीफ से उम्रह का एहराम बाँधनेवालों के लिये तर्जूम जाना ज़रूरी नहीं है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

बाब 4 : हज्जे मबरूर की फ़ज़ीलत का बयान

1519. हमसे अब्दुल अजीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) से किसी ने पूछा कि कौन्सा काम बेहतर है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना। पूछा गया कि फिर उसके बाद? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। फिर पूछा गया कि फिर उसके बाद? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज्जे मबरूर। (राजेअ : 26)

4- باب فضل الحج المبرور

١٥١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعْدِ بْنِ مُسَيَّبٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ: أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((إِيمَانٌ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ)). قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: ((جِهَادٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ)). قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: ((حَجٌّ مَبْرُورٌ)). (راجع: ٢٦)

तशरीह : मबरूर लफ्ज़े बिर से बना है जिसके मा'नी नेकी के हैं। कुआन मजीद में लैसल बिरा में या'नी लफ्ज़ है। यही वो हज है जिसमें शुरू से आखिर तक सिर्फ नेकियाँ ही नेकियाँ की गई हों, उसमें गुनाह का शायबा भी न हो। ऐसा हज किस्मत वालों को ही नसीब होता है। इन्दल्लाह यही हज मक्बूल है फिर ऐसा हाजी उम्रभर के लिये मिशाली मुसलमान बन जाता है और उसकी ज़िन्दगी सरापा इस्लाम और ईमान के रंग में रंग जाती है। अगर ऐसा हज नसीब नहीं तो वही मिशाल होगी, खरे ईसा गर बमक्का खद चूँ बयाद हनूज खर बाशद.

हज्जे मबरूर की ता'रीफ में हाफ़िज़ फ़र्माते हैं, अल्लजी ला युख़ालितुहु शैउन मिनल इब्मि या'नी हज्जे मबरूर वो है जिसमें गुनाह का मुल्लक़न दख़ल न हो। हदीसे जाबिर में है खाना खिलाना और सलाम फैलाना जो हाजी अपना शिआर बना ले उसका हज, हज्जे मबरूर है। यही हज वो है जिससे गुज़िस्ता सग़ीरा व कबीरा गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं और ऐसा हाजी उस हालत में लौटता है गोया वो आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ हो। अल्लाह पाक हर हाजी को ऐसा हज करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन!

मगर अफ़सोस है कि आज की माही (भौतिक) तरक़ियों ने नई नई ईजादात ने रूहानी आलम को बिलकुल मस्ख़ करके रख दिया है। बेशतर हाजी मक्का शरीफ़ के बाज़ारों में जब मरिबी साज़ो-सामान देखते हैं, उनकी आँखें चकाचौंध हो जाती है। वो जाइज़ और नाजाइज़ से उठकर ऐसी चीज़ें ख़रीद लेते हैं कि वापस अपने वतन आकर हाजियों की बदनामी का कारक बनते हैं। हुक्मत की नज़रों में ज़लील होते हैं।

1520. हमसे अब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ख़ालिद बिन अबी अम्र ने ख़बर दी, उन्हें आइशा बिनते तलहा ने और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिदीका (रज़ि.) ने कहा कि उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)!

١٥٢٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ ((عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ

हम देखते हैं कि जिहाद सब नेक कामों से बढ़कर है। फिर हम भी क्यों न जिहाद करें? आँहुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं बल्कि सबसे अफ़ज़ल जिहाद हज्ज है जो मबरूर हो।

(दीगर मक़ाम : 1861, 2784, 2875)

1521. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे सय्यार बिन अबुल हक़म ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हज़म से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना कि आपने फ़र्माया जिस शख्स ने अल्लाह के लिये उस शान के साथ हज्ज किया कि न कोई फ़हश बात हुई और न कोई गुनाह तो वो उस दिन की तरह वापस होगा जैसे उसकी माँ ने उसे जना था। (दीगर मक़ाम :

1819, 1820)

हदीषे बाला में लफ़्ज़े मबरूर से मुराद वो हज्ज है जिसमें रियाकारी का दख़ल न हो, ख़ालिस अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये हो जिसमें शुरू से आख़िर तक कोई गुनाह न किया जाए और जिसके बाद हाजी की पहले वाली ह़लत बदलकर अब वो सरापा नेकियों का मुजस्समा बन जाए। बिला शक़ उसका हज्ज, हज्जे मबरूर है हदीषे मज़कूर में हज्जे मबरूर के कुछ औसाफ़ खुद ज़िक्र में आ गए हैं, उसी तफ़सील के लिये हज़रत इमाम इस हदीष को यहाँ लाए।

बाब 5 : हज्ज और उम्रह की मीक़ातों का बयान

1522. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जुहैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे ज़ैद बिन जुबैर ने बयान किया कि वो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की क़यामगाह पर हाज़िर हुए। वहाँ क़नात के साथ शामियाना लगा हुआ था (ज़ैद बिन जुबैर ने कहा कि) मैंने पूछा कि किस जगह से उम्रह का एह़राम बाँधना चाहिये। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नज्द वालों के लिये क़र्न, मदीना वालों के लिये जुल हुलैफ़ह और शाम वालों के लिये जोहफ़ा मुक़रर किया है। (राजेअ : 133)

मीक़ात उस जगह को कहते हैं जहाँ हज्ज और उम्रह के लिये एह़राम बाँधे जाते हैं और वहाँ से बग़ैर एह़राम बाँधे आगे बढ़ना नाजाइज़ है और इधर हिन्दुस्तान की तरफ़ से जानेवालों के लिये यलमलम पहाड़ के मुहाज़ि से एह़राम बाँध लेना चाहिये। जब

اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّهُ قَالَتْ : يَا رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ ، نَرَى الْجِهَادَ أَفْضَلَ الْعَمَلِ ، أَلَا نُجَاهِدُ ؟ قَالَ : ((لَا ، لَكِنَّ أَفْضَلَ الْجِهَادِ حَجٌّ مُّبَرُورٌ)).

[أطرافه في : ١٨٦١ ، ٢٧٨٤ ، ٢٨٧٥ ،

١٥٢١ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سَيَّارُ أَبُو الْحَكَمِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((مَنْ حَجَّ لِلّٰهِ فَلَمْ يَرْفُثْ وَلَمْ يَفْسُقْ رَجَعَ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ)).

[طرفاه في : ١٨١٩ ، ١٨٢٠ -]

٥- بَابُ فَرَضِ مَوَاقِيتِ الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ

١٥٢٢ - حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ جُبَيْرٍ أَنَّهُ أَتَى عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا فِي مَنْزِلِهِ وَلَهُ فُسْطَاطٌ وَسَرَادِقٌ - فَسَأَلَتْهُ مِنْ أَيْنَ يَحْجُرُونَ أَنْ أُعْتَمِرَ؟ قَالَ : فَرَضَهَا رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ لِأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنًا ، وَلِأَهْلِ الْمَدِينَةِ ذَا الْخُلَيْفَةِ ، وَلِأَهْلِ الشَّامِ

الْجُحَفَةِ)). [راجع : ١٣٣]

जहाज़ यहाँ से गुज़रता है तो कप्तान खुद सारे हाजियों को खबर कर देता है कि ये जगह अदन के करीब पड़ती है। कर्ने-मनाज़िल मक्का से दो मंज़िल पर तार्इफ़ के करीब है और जुल हुलैफ़ा मदीना से छः मील पर है और जुहफ़ा मक्का से पाँच-छः मंज़िल पर है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा अब लोग जुहफ़ा के बदले राबेअ से एहराम बाँध लेते हैं जो जुहफ़ा के बराबर है और अब जुहफ़ा वीरान है वहाँ की आबो-हवा ख़राब है न वहाँ कोई जाता है और न उतरता है। (वहीदी) वख़्तस्सतिल्जुहफ़तु बिल्हुमा फ़ला यन्ज़िल्हुहा अहदुन इल्ला हम्म (फ़तह) या'नी जुहफ़ा बुख़ार के लिये मशहूर है। ये वो जगह है जहाँ अमालिका ने क़याम किया था जबकि उनको यस्त्रिब से बनू अबील ने निकाल दिया था मगर यहाँ ऐसा सैलाब आया कि उसने उनको बर्बाद कर दिया। इसीलिये इसका नाम जुहफ़ा पड़ा। ये भी मा'लूम हुआ कि उम्ह्र के मीकात भी वही है जो हज्ज के हैं।

बाब 6 : फ़र्मानि बारी तआला

कि तौशा साथ में ले लो और सबसे बेहतर तौशा तक्वा है।

٦- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَتَزَوَّدُوا، لِأَنْ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى﴾

[البقرة : ١٩٧]

1523. हमसे यह्या बिन बिश्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शबाबा बिन सवार ने बयान किया, उनसे वरका बिन अमर ने, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे इकिमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि यमन के लोग रास्ते का खर्च साथ लाए बग़ैर हज्ज के लिये आ जाते थे। कहते तो ये थे कि हम तवक्कल करते हैं लेकिन जब मक्का आते तो लोगों से माँगने लगते। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, और तौशा ले लिया करो सबसे बेहतर तौशा तो तक्वा ही है। इसको इब्ने उययना ने अमर से बवास्ता इकिमा मुरसलन नक़ल किया है।

١٥٢٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بِشْرِ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ عَنْ وَرْقَاءَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ أَهْلُ الْيَمَنِ يَخْبُونَ وَلَا يَتَزَوَّدُونَ، وَيَقُولُونَ: نَحْنُ الْمُتَوَكِّلُونَ، فَإِذَا لَقِمُوا مَكَّةَ سَأَلُوا النَّاسَ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَتَزَوَّدُوا لِأَنْ خَيْرَ الزَّادِ

तशरीह : मुसल उस हदीष को कहते हैं कि ताबेई आँहज़रत (ﷺ) की हदीष बयान करे और जिस सहाबी से वो नक़ल कर रहा है उसका नाम न ले। सहाबी का नाम लेने से यही हदीष फिर मरफूअ कहलाती है जो कुबूलियत के दर्जे में ख़ास मुकाम रखती है। या'नी सहीह मरफूअ हदीषे नबवी (ﷺ)

आयते शरीफ़ा में तक्वा से मुराद माँगने से बचना और अपने मस़ारिफ़े सफ़र का खुद इंतज़ाम करना मुराद है और ये भी कि उस सफ़र से भी ज़्यादा अहम सफ़रे आख़िरत दरपेश है। उसका तौशा भी तक्वा परहेज़गारी, गुनाहों से बचना और पाक ज़िन्दगी गुज़ारना है। ब-सिलसिला-ए-हज्ज तक्वा की तल्कीन यही हज्ज का मा हसल है। आज भी लोग जो हज्ज में माँगने के लिये हाथ फैलाते हैं, उन्होंने हज्ज का मक़सद ही नहीं समझा। क़ालल्मुहल्लब फ़ी हाज़ल्हदीषि मिनल्फ़िक्हि अन्न तर्कस्सुवालि मिनत्तक्वा व युअय्यिदुह अन्नल्लाह भदह लम यस्अलिन्नास इल्हाफ़न फ़इन्न कौल्हू फ़इन्न खैरज़ादि अत्तक्वा अय तज़व्वदू वत्तकू अज़न्नासि बिसुवालिक्म इय्याहुम वल्इझम फ़ी ज़ालिक (फ़तह) या'नी मेह्लब ने कहा कि इस हदीष से ये समझा गया कि सवाल न करना तक्वा से है और उसकी ताईद उससे होती है कि अल्लाह-पाक ने उस शख्स की तारिफ़ की है जो लोगों से चिमटकर सवाल नहीं करता। ख़ैर जादित्तक्वा का मतलब ये कि साथ में तौशा लो और सवाल कर करके लोगों को तकलीफ़ न पहुँचाओ और सवाल करने के गुनाह से बचो।

मांगने वाला मुतवक्किल नहीं हो सकता। हकीकी तवक्कल यही है कि किसी से भी किसी चीज़ में मदद न मांगी जाए और अस्बाब मुहय्या करने के बावजूद भी अस्बाब से क़त्अ-नज़र करना ये तवक्कल से है जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने ऊँट वाले से फ़र्माया था कि उसे मज़बूत बाँध फिर अल्लाह पर भरोसा रख।

बाब 7 : मक्का वाले हज्ज और उम्रह का एहराम कहाँ से बाँधें

1524. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे बुहैब ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना वालों के एहराम के लिये जुल हुलैफ़ह, शाम वालों के जुहफ़ा, नज्द वालों के लिये क़र्नुल मनाज़िल, यमन वालों के लिये यलमलम मुतअय्यन किया। यहाँ से इन मक्कामात वाले भी एहराम बाँधें और उनके अलावा वो लोग भी जो इन रास्तों से आएँ और हज्ज या उम्रह का इरादा रखते हों। लेकिन जिनकी क़याम मीक़ात और मक्का के बीच है तो वो एहराम उसी जगह से बाँधें जहाँ से उन्हें सफ़र शुरू करना है। यहाँ तक कि मक्का के लोग मक्का ही से एहराम बाँधें।

(दीगर मक्काम : 1526, 1529, 1530)

मा'लूम हुआ कि हज्ज और उम्रह की मीक़ात में कोई फ़र्क नहीं है। यही हज़रत इमाम बुखारी (रह.) का मक़सदे बाब है।

बाब 8 : मदीना वालों का मीक़ात और उन्हें जुल हुलैफ़ह से पहले एहराम न बाँधना चाहिये

1526. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मदीना के लोग जुल हुलैफ़ा से एहराम बाँधें, शाम के लोग जुहफ़ा से और नज्द के लोग क़र्नुल मनाज़िल से। अब्दुल्लाह ने कहा कि मुझे मा'लूम हुआ है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया और यमन के लोग यलमलम से एहराम बाँधें।

(राजेअ : 133)

۷- بَابُ مَهَلِّ أَهْلِ مَكَّةَ لِلْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ

۱۵۲۴- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَلَّتْ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ ذَا الْحُلَيْفَةِ، وَلِأَهْلِ الشَّامِ الْحُلَيْفَةَ، وَلِأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنَ الْمَنَازِلِ، وَلِأَهْلِ الْيَمَنِ يَلَمْلَمَ، مَنْ لَهَا وَلِمَنْ أَتَى عَلَيْهِمْ مِنْ غَيْرِهِمْ مِمَّنْ أَرَادَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ، وَمَنْ كَانَ دُونَ ذَلِكَ فَمِنْ حَيْثُ أَتَى، حَتَّى أَهْلُ مَكَّةَ مِنْ مَكَّةَ)).

[اطرافه لي : ۱۵۲۶، ۱۵۲۹، ۱۵۳۰]

۸- بَابُ مَيْقَاتِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ، وَلَا يُهَلُّونَ قَبْلَ ذِي الْحُلَيْفَةِ

۱۵۲۵- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((يَهَلُّ أَهْلُ الْمَدِينَةِ مِنْ ذِي الْحُلَيْفَةِ، وَأَهْلُ الشَّامِ مِنَ الْحُلَيْفَةِ، وَأَهْلُ نَجْدٍ مِنْ قَرْنَ)) قَالَ عَبْدُ اللَّهِ ((وَيَلَمْلَمُ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((وَيَهَلُّ

أَهْلُ الْيَمَنِ مِنْ يَلْمَمَ)). [راجع: ١٢٣]

तशरीह: शायद हज़रत इमाम बुखारी का मज़हब ये है कि मीकात से पहले एहराम बाँधना दुस्त नहीं है, इस्लाम और दाऊद का भी यही कौल है। जुम्हूर के नज़दीक दुस्त है। ये मीकात मकानी में इख़िलाफ़ है लेकिन मीकात ज़मानी या नौ हज के महीनों से पहले हज का एहराम बाँधना बिल इतिफ़ाक़ दुस्त नहीं है। नज्द वो मुल्क है जो अरब का बालाई हिस्सा तहामा से इराक़ तक वाक़ेअ है। कुछ ने कहा कि जरश से लेकर कूफ़ा के नवाह तक उसकी मरिबी हद हिजाज़ है। (वहीदी)

बाब 9 : शाम के लोगों के एहराम बाँधने की जगह कहाँ है?

1526. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, उनसे त़ाऊस ने बयान किया, और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना वालों के लिये जुल हुलैफ़ा को मीकात मुकरर किया। शाम वालों के लिये जुहफ़ा, नज्द वालों के लिये क़र्नुल मनाज़िल और यमन वालों के लिये यलमलम। ये मीकात उन मुल्क वालों के हैं और उन लोगों के लिये भी जो इन मुल्कों से गुज़र कर हरम में दाख़िल हों और हज या इम्रह का इरादा रखते हों। लेकिन जो लोग मीकात के अंदर रहते हों उनके लिये एहराम बाँधने की जगह उनके घर हैं। यहाँ तक कि मक्का के लोग एहराम मक्का ही से बाँधें। (राजेअ: 1524)

٩- بَابُ مَهَلِّ أَهْلِ الشَّامِ

١٥٢٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((وَقَتَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ ذَا الْخَلِيفَةِ، وَلِأَهْلِ الشَّامِ الْجُحَفَةَ، وَلِأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنَ الْمَنَازِلِ، وَلِأَهْلِ الْيَمَنِ يَلْمَمَ، فَهُنَّ لَهُنَّ وَلِمَنْ أَتَى عَلَيْهِنَّ مِنْ غَيْرِ أَهْلِيهِنَّ لِمَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ، فَمَنْ كَانَ ذُوْنَهُنَّ فَمَهَلُّهُ مِنْ أَهْلِهِ وَكَذَلِكَ حَتَّى أَهْلُ مَكَّةَ يَهْلَوْنَ مِنْهَا)). [راجع: ١٥٢٤]

जो हज़रात इम्रह के लिये तन्ईम जाना ज़रूरी जानते हैं ये हदीष उन पर हज्जत है बशर्ते कि बनज़रे तहक़ीक़ मुतालआ फ़र्माएँ।

बाब 10 : नज्द वालों के लिये एहराम बाँधने की जगह कौनसी है?

1527. हमसे अली बिन मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमने जुस्री से ये हदीष याद रखी, उनसे सालिम ने कहा और उनसे उनके वालिद ने बयान किया था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मीकात मुतअय्यन कर दिये थे। (राजेअ: 133)

1528. (दूसरी सनद) और इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अहमद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना,

١٠- بَابُ مَهَلِّ أَهْلِ نَجْدٍ

١٥٢٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مِنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ ((وَقَتَّ النَّبِيُّ ﷺ ح.))

[راجع: ١٢٣]

١٥٢٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَهَلُّ

आपने फ़र्माया था कि मदीना वालों के लिये एहराम बाँधने की जगह जुल हुलैफ़ा और शाम वालों के लिये मध्य आ या'नी जुहफ़ा और नज्द वालों के लिये क़र्नुल मनाज़िल। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि लोग कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि यमन वाले एहराम यलमलम से बाँधें लेकिन मैंने इसे आपसे नहीं सुना। (राजेअ: 133)

أَهْلُ الْمَدِينَةِ ذُو الْحُلَيْفَةِ، وَمُهَلُّ أَهْلِ الشَّامِ مَهَبَةُ وَهْيَ الْجُحْفَةِ، وَأَهْلُ نَجْدٍ قَرْنٌ، قَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا زَعَمُوا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ - وَلَمْ أَسْمَعْ - : ((وَمُهَلُّ أَهْلِ الْيَمَنِ يَلْمَلَمُ)).

[راجع: 133]

बाब 11 : जो लोग मीक्रात के इधर रहते हों उनके एहराम बाँधने की जगह

11- بَابُ مُهَلٍّ مَنْ كَانَ ذُوْنَ الْمَوَاقِفِ

1529. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अमर बिन दीनार ने, उनसे ताऊस ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना वालों के लिये जुल हुलैफ़ा मीक्रात ठहराया और शाम वालों के लिये जुहफ़ा, यमन वालों के लिये यलमलम और नज्द वालों के लिये क़र्नुल मनाज़िल। ये उन मुल्कों के लोगों के लिये हैं और दूसरे उन तमाम लोगों के लिये भी जो उन मुल्कों से गुज़रें। और हज और उम्रह का इरादा रखते हों। लेकिन जो लोग मीक्रात के अंदर रहते हों। तो वो अपने शहरों से एहराम बाँधें, यहाँ तक कि मक्का के लोग मक्का से एहराम बाँधें।

١٥٢٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ عُمَرَ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَقَفَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ ذَا الْحُلَيْفَةِ، وَلِأَهْلِ الشَّامِ الْجُحْفَةَ، وَلِأَهْلِ الْيَمَنِ يَلْمَلَمُ، وَلِأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنًا، فَهُمْ لَهُمْ وَلَمْ يَأْتِ عَلَيْهِمْ مِنْ غَيْرِ أَهْلِيهِمْ مِمَّنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ، فَمَنْ كَانَ ذُوهُمْ فَمَنْ أَهْلُهُ، حَتَّى إِنْ أَهْلَ مَكَّةَ يُهْلُونَ مِنْهَا)).

(राजेअ 1524)

[راجع: 1524]

बाब 12 : नज्द वालों के लिये एहराम बाँधने की जगह कौनसी है?

12- بَابُ مُهَلِّ أَهْلِ الْيَمَنِ

1530. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन खालिद ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन ताऊस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना वालों के लिये जुल हुलैफ़ा को मीक्रात मुक़रर किया, शाम वालों के लिये जुहफ़ा, नज्द वालों के लिये क़र्नुल मनाज़िल और यमन वालों के लिये यलमलम। ये उन मुल्कों के बाशिन्दों के मीक्रात हैं और तमाम उन दूसरे मुसलमानों के भी जो उन मुल्कों से

١٥٣٠- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَقَفَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ ذَا الْحُلَيْفَةِ، وَلِأَهْلِ الشَّامِ الْجُحْفَةَ، وَلِأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنًا، وَلِأَهْلِ الْيَمَنِ يَلْمَلَمُ، فَمَنْ أَهْلُهُمْ وَلِكُلِّ آتٍ أَتَى عَلَيْهِمْ مِنْ غَيْرِهِمْ

गुजरकर आएँ और हज और उम्रह का इरादा रखते हों। लेकिन जो लोग मीकात के अंदर रहते हैं तो (वो एहराम वहीं से बाँधें) जहाँ से सफ़र शुरू करें यहाँ तक कि मक्का के लोग एहराम मक्का ही से बाँधें। (राजेअ 1524)

बाब 13 : इराक़ वालों के एहराम बाँधने की जगह ज़ाते इर्क़ है

1531. हमसे अली बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह ने नाफ़ेअ से बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि जब ये दो शहर (बसरा और कूफ़ा) फ़तह हुए तो लोग हज़रत उमर (रज़ि.) के पास आए और कहा कि या अमीरल मोमिनीन! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नज्द के लोगों के लिये एहराम बाँधने की जगह क़र्नुल मनाज़िल क़रार दी है और हमारा रास्ता उधर से नहीं है, अगर हम क़र्न की तरफ़ जाएँ तो हमारे लिये बड़ी दुश्वारी होगी। इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि फिर तुम लोग अपने रास्ते में इसके बराबर कोई जगह तज़वीज़ कर लो। चुनौचे उनके लिये ज़ाते इर्क़ की तअय्यन कर दी।

तशरीह : ये जगह मक्का शरीफ़ से 42 मील पर है। बज़ाहिर ये मा'लूम होता है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये जगह अपनी राय और इज्तिहाद से मुक़र्र किया। मगर जाबिर (रज़ि.) की रिवायत में आँहज़रत (ﷺ) से इराक़ वालों का मीकात ज़ाते इर्क़ मरवी है गो उसके मफ़ूअ होने में शक़ है। इस रिवायत से ये भी निकला कि अगर कोई मक्का में हज या उम्रह की निव्यत से और किसी रास्ते से आए जिसमें कोई मीकात राह में न पड़े तो जिस मीकात के मुक़ाबिल पहुँचे वहाँ से एहराम बाँध ले। कुछ ने कहा कि अगर कोई मीकात की बराबरी मा'लूम न हो सके तो जो मीकात सबसे दूर है इतनी दूर से एहराम बाँध ले। मैं कहता हूँ कि अबू दाऊद और निसाई ने सहीह सनदों से हज़रत आइशा (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने इराक़ वालों के लिये ज़ाते इर्क़ मुक़र्र कर दिया और अहमद और दारे कुत्नी ने अब्दुल्लाह बिन अम्म बिन आस से भी ऐसा ही निकाला है। पस हज़रत उमर (रज़ि.) का इज्तिहाद हदीष के मुताबिक़ पड़ा। (मौलाना वहीदुज्जमा)

इस बारे में हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने बड़ी तफ़सील से लिखा है। आख़िर में आप फ़र्माते हैं, लाकिनन् लम्मा सन्न उमरु ज़ात इर्क़ व तबिअहू अलैहिस्सहाबतु वस्तमर्र अलैहिल्अमल कान औला बिल्इत्तिबाइ या'नी हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसे मुक़र्र फ़र्मा दिया और सहाबा-ए-किराम ने इस पर अमल किया तो अब उसकी इतिबाअ ही बेहतर है।

बाब 14 : जुल हुलैफ़ा में एहराम बाँधते वक़्त नमाज़ पढ़ना

1532. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मक्कामे जुल हुलैफ़ा के पथरीले मैदान में अपनी सवारी रोकी और फिर

مِمَّنْ أَرَادَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ، فَمَنْ كَانَ دُونَ ذَلِكَ فَمِنْ حَيْثُ أَتَى، حَتَّى أَهْلَ مَكَّةَ مِنْ مَكَّةَ)). (راجع: 1524)

۱۳- بَابُ ذَاتِ عِرْقٍ لِأَهْلِ الْعِرَاقِ
۱۵۳۱- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «لَمَّا فَتَحَ هَذَانِ الْمَدِينَتَانِ أَتَوْا عُمَرَ فَقَالُوا: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ حَذَّ لِأَهْلِ نَجْدٍ قَرْنًا وَهُوَ جَوَزٌ عَنْ طَرَفَيْنَا، وَإِنَّا إِنِ ارْتَدْنَا قَرْنًا حَقَّ عَلَيْنَا. قَالَ: فَانظُرُوا حَذَّوْهَا مِنْ طَرَفَيْكُمُ. فَحَذَّ لَهُمُ ذَاتَ عِرْقٍ».

۱۴- بَابُ الصَّلَاةِ بِإِذِي الْحُلَيْفَةِ

۱۵۳۲- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَتَاكَ بِالنَّطْحَاءِ بِإِذِي الْحُلَيْفَةِ

वहीं आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) भी ऐसा ही किया करते थे। (राजेज़ 484)

बाब 15 : नबी करीम (ﷺ) का शजरह पर से गुज़रकर जाना

1533. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन अघाज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) शजरह के रास्ते से गुज़रते हुए, मुअरिस के रास्ते से मदीना आते। नबी करीम (ﷺ) जब मक्का जाते तो शजरह की मस्जिद में नमाज़ पढ़ते लेकिन वापसी में जुलहुलैफ़ा के नशीब में नमाज़ पढ़ते। आप रात वहीं गुज़ारते यहाँ तक कि सुबह हो जाती।

शजरह एक पेड़ था जुल हुलैफ़ा के पास। आँहज़रत (ﷺ) उसी रास्ते से आते और जाते। अब वहाँ एक मस्जिद बन गई है। आजकल उस जगह का नाम बीरे अली है, ये अली हज़रत अली बिन अबी तालिब नहीं हैं बल्कि कोई और अली हैं जिनकी तरफ़ से जगह और यहाँ का कूँआ मन्सूब है। मुअरिस अरबी में उस जगह को कहते हैं जहाँ मुसाफ़िर रात को उतरे और वहाँ डेरालगाएँ। ये मज़कूरा मुअरिस जुल हुलैफ़ा की मस्जिद तले वाक़ेअ है और यहाँ से मदीना बहुत ही करीब है। अल्लाह हर मुसलमान को बार-बार इन जगहों की ज़ियारत नज़ीब फ़र्माए, अमीन! आप दिन की रोशनी में मदीना में दाख़िल हुआ करते थे। पस सुन्नत यही है।

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि वादी अक्कीक़ मुबारक वादी है

1534. हमसे अबूबक्र अब्दुल्लाह हुमैदी ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद और बिश्र बिन बक्र तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन अबी क़प्पीर ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने उमर (रज़ि.) से सुना, उनका बयान था कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से वादी अक्कीक़ में सुना। आपने फ़र्माया था कि रात मेरे पास रब का एक फ़रिश्ता आया और कहा कि इस मुबारक वादी में नमाज़ पढ़ और ऐलान कर

فَصَلِّ بِهَا، وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَفْعَلُ ذَلِكَ)). [راجع: ٤٨٤]
١٥- بَابُ خُرُوجِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى طَرِيقِ الشَّجَرَةِ

١٥٣٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَخْرُجُ مِنْ طَرِيقِ الشَّجَرَةِ وَيَدْخُلُ مِنْ طَرِيقِ الْمَعْرَسِ، وَأَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ إِلَى مَكَّةَ يُصَلِّي فِي مَسْجِدِ الشَّجَرَةِ، وَإِذَا رَجَعَ صَلَّى بِبَيْتِ الْحَلِيفَةِ بِطَرَفِ الْوَادِي وَتَابَتْ حَتَّى يُصْبِحَ)).

١٦- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ ((الْعَقِيقُ وَادٍ مُبَارَكٌ))

١٥٣٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ وَبِشْرُ بْنُ بَكْرِ التَّنِيسِيِّ قَالَا حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنِي عِكْرَمَةُ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : إِنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : إِنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِوَادِي

कि उम्रह हज में शरीक हो गया।

الْعَقِيقُ يَقُولُ : ((أَتَانِي اللَّيْلَةُ آتٍ مِنْ رَبِّي فَقَالَ: صَلُّ فِي هَذَا الْوَادِي الْمَبَارَكِ وَقُلْ: عُمْرَةٌ فِي حَجَّةٍ)).

हज के दिनों में उम्रह अहदे जाहिलियत में सख्त ऐब समझा जाता था। इस्लाम ने इस ग़लत खयाल की भी इस्लाह की और ऐलान कराया कि अब अय्यामे हज में उम्रह भी दाखिल हो गया। या'नी जाहिलियत का खयाल ग़लत और झूठा था।

अय्यामे हज में उम्रह किया जा सकता है। इसीलिये तमतोअ को अफ़ज़ल करार दिया गया कि उसमें पहले उम्रह करके जाहिलियत की रस्म की रद्द करता है। फिर उसमें जो आसानियाँ हैं कि यौमे तर्विया तक एहराम खोलकर आज़ादी मिल जाती है। ये आसानी भी इस्लाम को मतलूब है। इसीलिये तमतोअ हज की बेहतरीन सूरत है।

1535. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा कि हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि हमसे मूसा बिन इब्बबा ने बयान किया, कहा कि हमसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से कि मुअरिस के करीब जुल हुलैफ़ा की बतने वादी (वादी-ए-अक़ीक़) में आप (ﷺ) को ख़वाब दिखाया गया। (जिसमें) आपसे कहा गया था कि आप उस वक़्त बतहा मुबारका में हैं। मूसा बिन इब्बबा ने कहा कि सालिम ने हमको भी वहाँ ठहराया वो उस मुक़ाम को ढूँढ़ रहे थे जहाँ अब्दुल्लाह ऊँट बिठाया करते थे या'नी जहाँ आँहज़रत (ﷺ) रात को उतरा करते थे। वो मुक़ाम उस मस्जिद के नीचे की तरफ़ में है जो नाले के नशीब में है। उतरने वालों और रास्ते के बीचों बीच (वादी अक़ीक़ मदीना से चार मील बक़ीअ की जानिब है।

(राजेअ: 483)

١٥٣٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا فَضْلُ بْنُ سَلِيمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((عَنْ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ رُبِّيَ وَهُوَ مُغْرَسٌ بِوَدْيِ الْخَلِيفَةِ بَيْطَنِ الْوَادِي قِيلَ لَهُ: إِنَّكَ بَيْطَحَاءَ مَبَارَكَةٍ، وَقَدْ آتَاكَ بِنَا سَالِمٌ يَتَوَخَّى بِالْمَنَاخِ الَّذِي كَانَ عَبْدُ اللَّهِ يَبْتَغِي يَتَخَرَّى مُغْرَسَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَهُوَ أَسْفَلُ مِنَ الْمَسْجِدِ الَّذِي يَبْطِنُ الْوَادِي بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الطَّرِيقِ وَسَطٌ مِنْ ذَلِكَ)).

[راجع: ٤٨٣]

हदीष से वादी की फ़जीलत ज़ाहिर है। उसमें क़याम करना और यहाँ नमाज़ें अदा करना बाअिषे अज़ो-प्रवाब और इतिबाअे सुन्नत है। तिबअ जब मदीना से वापस हुआ तो उसने यहाँ क़याम किया था और उस ज़मीन की खूबी देखकर कहा था कि ये तो अक़ीक़ की तरह है। उसी वक़्त से उसका नाम अक़ीक़ हो गया (फ़तुहल बारी)

बाब 17 : अगर कपड़ों पर ख़लूक (एक किस्म की खुश्बू) लगी हो तो उसको तीन बार धोना

1536. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम जिहाक बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अता बिन अबी रिबाह ने ख़बर

١٧ - بَابُ غَسْلِ الْخَلْقِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِنَ الثَّيَابِ

١٥٣٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ النَّبِيلُ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي

दी, उन्हें सफ़वान बिन यअला ने, कहा कि उनके बाप यअला बिन उमय्या ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा कि कभी आप मुझे नबी करीम (ﷺ) को इस हाल में दिखाइये जब आप पर वह नाज़िल हो रही हो। उन्होंने बयान किया कि एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) जिअराना में अपने अस्हाब की एक जमाअत के साथ ठहरे हुए थे कि एक शख्स ने आकर पूछा या रसूलुल्लाह (ﷺ)! उस शख्स के बारे में आपका क्या हुक्म है जिसने उम्रह का एहराम इस तरह बाँधा कि उसके कपड़े खुशबू में बसे हुए हों। नबी करीम (ﷺ) उस पर थोड़ी देर के लिये चुप हो गये। फिर आप पर वह नाज़िल हुई तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने यअला (रज़ि.) को इशारा किया। यअला आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) पर एक कपड़ा था जिसके अंदर आप तशरीफ़ रखते थे। उन्होंने कपड़े के अंदर अपना सर बाहर किया तो क्या देखते हैं कि रूए मुबारक सुख है और आप खरटि ले रहे हैं। फिर ये हालत खत्म हुई तो आपने फ़र्माया कि वो शख्स कहाँ है जिसने उम्रह के बारे में पूछा था। शख्स मज़कूर हाज़िर किया गया तो आपने फ़र्माया कि जो खुशबू लगा रखी है उसे तीन बार धो ले और अपना जुब्बा उतार दे। उम्रह में भी इसी तरह कर जिस तरह हज्र में करते हो। मैंने अत्ता से पूछा कि क्या आँहुज़ूर (ﷺ) के तीन बार धोने के हुक्म से पूरी तरह सफ़ाई मुराद थी? तो उन्होंने कहा कि हाँ।

(दीगर मक़ाम: 1789, 1847, 4329, 4985)

عَطَاءُ أَنَّ صَفْوَانَ بْنَ يَعْلَى أَخْبَرَهُ أَنَّ يَعْلَى قَالَ لِعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَرِنِي النَّبِيَّ ﷺ حِينَ يُوحَى إِلَيْهِ. قَالَ: فَبَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ بِالْجِعْرَانَةِ - وَمَعَهُ نَفَرٌ مِنْ أَصْحَابِهِ - جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، كَيْفَ تَرَى فِي رَجُلٍ آخَرَ بِعُمْرَةٍ وَهُوَ مُتَضَمِّحٌ بِطَيْبٍ؟ فَسَكَتَ النَّبِيُّ ﷺ سَاعَةً، لَجَاءَهُ الْوَحْيُ، فَأَشَارَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِلَى يَعْلَى، فَجَاءَ يَعْلَى - وَعَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ثَوْبٌ قَدْ أَظْلَمَ بِهِ - فَأَدْخَلَ رَأْسَهُ، فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مُحَمَّرُ الْوَجْهِ وَهُوَ يَقِطُّ، ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ فَقَالَ: ((إِنَّ الَّذِي سَأَلَ عَنِ الْعُمْرَةِ؟)) فَأَتَيْتُ بِرَجُلٍ فَقَالَ: ((اغْسِلِ الطَّيْبَ الَّذِي بَكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، وَانْزِعْ عَنْكَ الْجُبَّةَ، وَاصْنَعْ فِي عُمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فِي حَجَّتِكَ)). فَقُلْتُ لِعَطَاءٍ: أَرَادَ الْإِنْقَاءَ حِينَ أَمَرَهُ أَنْ يَغْسِلَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ؟ فَقَالَ: ((نَعَمْ)).

[أطرافه في: ١٧٨٩، ١٨٤٧، ٤٣٢٩]

[٤٩٨٥]

तशरीह:

इस हदीष से उन लोगों ने दलील ली है जो एहराम के समय खुशबू लगाना जाइज़ नहीं जानते क्योंकि आँहुज़ूरत (ﷺ) ने उस खुशबू के अप्र को तीन बार धोने का हुक्म फ़र्माया। इमाम मालिक और इमाम मुहम्मद का यही क़ौल है और जुम्हूर उलमा के नज़दीक एहराम बाँधते वक़्त खुशबू लगाना दुरुस्त है भले ही उसका अप्र एहराम के बाद बाक़ी रहे। वो कहते हैं कि यअला की हदीष 8 हिजरी की है और 10 हिजरी में या'नी हज्जतुल बिदा में हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एहराम बाँधते वक़्त आप (ﷺ) के खुशबू लगाई और ये आखिरी काम पहले का नासिख है। (वहीदी)

हाफ़िज़ इब्ने हज़र फ़र्माते हैं व अजाबलजुम्हूरू बिअन्न किस्सत यअला कानत बिल्जिअराना कमा प्रबत फ़ी हाज़लहदीषि व हिय फ़ी सनत प्रमानिन बिला ख़िलाफ़िन व कद प्रबत अन आइशत अन्नहा तय्यिबतु रसूलिल्लाहि (ﷺ) बियादिहा इन्द इहरामिहा कमा सयाती फ़िल्लज़ी बअदहू व कान ज़ालिक फ़ी हज्जतिल्वदाइ सनत अशर बिला ख़िलाफ़िन व इन्नमा बिल्आख़िरी फ़लआख़िरी मिनलअम्नि (फ़तुहलबारी) खुलासा इस इबारात का वही है जो ऊपर मज़कूर हुआ।

बाब 18 : एहराम बाँधने के वक़्त खुशबू लगाना
और एहराम के इरादे के वक़्त क्या पहनना चाहिये और कंधा करे और तैल लगाए और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुहरिम खुशबूदार फूल सूँघ सकता है। इसी तरह आईना देख सकता है और उन चीज़ों को जो खाई जाती हैं बतौर दवा भी इस्तेमाल कर सकते हैं। मषलन जैतून का तैल और घी वगैरह। और अत्ता ने फ़र्माया कि मुहरिम अंगूठी पहन सकता है और हमयानी बाँध सकता है। इब्ने उमर ने तवाफ़ किया उस वक़्त आप मुहरिम थे लेकिन पेट पर एक कपड़ा बाँध रखा था। आइशा (रज़ि.) ने जाँगिये में कोई मुजायका नहीं समझा था। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह) ने कहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) की मुराद इस हुक्म से उन लोगों के लिये थी जो कि होदज को कैंट पर कसा करते थे।

इसको सईद बिन मंसूर ने वस्ल किया। दारे कुत्नी की रिवायत में यूँ है और इम्माम मे जा सकता है और दाढ़ में दर्द हो तो उखाड़ सकता है; फोड़ा फोड़ सकता है, अगर नाखून टूट गया हो तो उतना टुकड़ा निकाल सकता है। जुम्हूर उलमा के नज़दीक एहराम में जांगिया पहनना दुरुस्त नहीं है क्योंकि ये पायजामा ही के हुक्म में है।

1537. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान श़री ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि इब्ने उमर (रज़ि.) सादा तैल इस्तेमाल करते थे (एहराम के बावजूद) मैं ने उसका ज़िक्र इब्राहीम नखई से किया तो उन्होंने फ़र्माया कि तुम इब्ने उमर (रज़ि.) की बात नक़ल करते हो।

1538. मुझसे तो अस्वद ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मुहरिम हैं और गोया मैं आपकी मांग में खुशबू की चमक देख रही हूँ।

١٨ - بَابُ الطِّيبِ عِنْدَ الْإِحْرَامِ، وَمَا يَلْبَسُ إِذَا أَرَادَ أَنْ يُحْرِمَ، وَيَتَرَجَّلُ وَيَتَّخِذُ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: يَسْمُمُ الْمُحْرِمُ الرَّيْحَانَ، وَيَنْظُرُ فِي الْمِرَاةِ، وَيَتَدَاوَى بِمَا يَأْكُلُ الزَّيْتِ وَالسَّمْنِ. وَقَالَ عَطَاءٌ: يَتَحَنَّنُ وَيَلْبَسُ الْهَيْمَانَ. وَخَالَفَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا وَهُوَ مُحْرِمٌ وَقَدْ حَرَّمَ عَلَى نَبِيِّهِ يَتَوَبَّ وَتَمَّ قَرْنُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا بِالنِّيَّانِ نَاسًا قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ تَعْنِي لِلنِّبْنَ يُرَحِّلُونَ هَوْدَجَهَا.

١٥٣٧ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَتَّخِذُ بِالزَّيْتِ، فَلَا تَكْرَهُهُ لِإِبْرَاهِيمَ لَقَالَ: مَا تَصْنَعُ بِقَوْلِهِ:

١٥٣٨ - حَدَّثَنِي الْأَسْوَدُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبْنِ الطِّيبِ لِي مَقَارِقِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ)).

तशरीह: इब्राहीम नखई का मतलब ये है कि इब्ने उमर ने जो एहराम लगाते वक़्त खुशबू से परहेज़ किया और सादा बगैर खुशबू का तैल डाला तो हमें उस फ़ेअल से कोई गर्ज़ नहीं जब आँहज़रत (ﷺ) की हदीष मौजूद है। जिससे ये प्राबित होता है कि एहराम बाँधते वक़्त आपने खुशबू लगाई। यहाँ तक कि एहराम के बाद भी उसका अषर आपकी मांग में रहा। इस रिवायत से इनफ़िया को सबक लेना चाहिये। इब्राहीम नखई हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के उस्ताज़ुल उस्ताज़ हैं उन्होंने हदीष के खिलाफ़ इब्ने उमर (रज़ि.) का कौल व फ़ेल रद्द कर दिया तो और किसी मुज्ताहिद और फ़कीह का कौल हदीष के खिलाफ़ कब काबिले कुबूल हो गया। (मौलाना वहीदुज्जमाँ)

इस मुकाम पर हदीषे नबवी लौ कान मूसा हय्थन वक्तब अतुमूहु भी याद रखनी ज़रूरी है। या'नी आपने फ़र्माया कि अगर आज मूसा (अलैहिस्सलाम) ज़िन्दा हों और तुम मेरे खिलाफ़ उनकी इत्तिबाअ करने लगो तो तुम गुमराह हो जाओगे मगर मुकल्लिदीन का हाल इस क़दर अजीब है कि वो अपने इमामों की मुहब्बत में न कुआन को काबिले ग़ौर समझते हैं न अह्लादीष को। उनका आखिरी जवाब यही होता है कि हमको बस कौले इमाम काफ़ी है। ऐसे मुकल्लिदीन जामेदीन के लिये हज़रत इमाम महदी (अलैहिस्सलाम) ही शायद रहनुमा बन सकें वरना सरासर नाउम्मीदी है।

1539. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन कासिम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) एहराम बाँधते तो मैं आपके एहराम के लिये और इसी तरह बैतुल्लाह के तवाफ़े ज़ियारत से पहले हलाल होने के लिये खुशबू लगाया करती थी।

(दीगर मक़ाम: 1754, 5922, 5928, 5930)

١٥٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ : ((كَتَبْتُ أَطِيبُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لِإِحْرَامِهِ حِينَ يُحْرِمُ، وَلَجَلُّهُ قَبْلَ أَنْ يَطُوفَ بِالنِّبْتِ)).

[أطرافه في: ١٧٥٤، ٥٩٢٢، ٥٩٢٨]

[٥٩٣٠]

बाब 19 : बालों को जमाकर एहराम बाँधना

एहराम बाँधते वक्त इस ख़याल से कि बाल परेशान न हों, उनमें गर्दों गुबार न समाए, बालों को गूंद या ख़त्मी या किसी और लुआब से जमा लेते हैं। अरबी जुबान में उसे तल्बीद कहते हैं।

1540. हमसे अब्दुल्लाह बिन फ़र्ज ने बयान किया। कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने और उनसे उनके वालिद ने फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से तल्बीद की हालत में लब्बैक कहते सुना।

(दीगर मक़ाम: 1549, 5914, 5915)

١٥٤٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَهْلُ مُلَبَّدًا)).

[أطرافه في: ١٥٤٩، ٥٩١٤، ٥٩١٥]

या'नी किसी लैसदार चीज़ गूंद वगैरह से आपने बालों को इस तरह जमा लिया था कि एहराम की हालत में वो परागन्दा न होने पाएँ (या'नी उलझें नहीं)। उसी हालत में आपने एहराम बाँधा था।

बाब 20 : जुल हुलैफ़ा की मस्जिद के पास एहराम बाँधना

1541. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मूसा बिन उक्बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने सालिम बिन अब्दुल्लाह से सुना, उन्होंने कहा कि

٢٠- بَابُ الْإِهْلَالِ عِنْدَ مَسْجِدِ ذِي الْحُلَيْفَةِ

١٥٤١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: سَمِعْتُ

मैंने इब्ने इमर (रज़ि.) से सुना (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा कअम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे मूसा बिन उक्बा ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उन्होंने अपने बाप से सुना, वो कह रहे थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मस्जिद जुल हुलैफ़ा के करीब ही पहुँचकर एहराम बाँधा था।

इसमें इखितलाफ़ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने किस जगह से एहराम बाँधा था। कुछ लोग जुल हुलैफ़ा की मस्जिद से बताते हैं जहाँ आपने एहराम का दोगाना अदा किया। कुछ कहते हैं जब मस्जिद से निकलकर कैटनी पर सवार हुए। कुछ कहते हैं जब आप बैदाअ की बुलन्दी पर पहुँचे। ये इखितलाफ़ दर हक़ीक़त इखितलाफ़ नहीं है क्योंकि इन तीनों मुक़ामों में आपने लम्बैक पुकारी होंगी। कुछ ने अव्वल और दूसरे मुक़ाम की न सुनी होगी कुछ ने अव्वल की न सुनी होगी दूसरे की सुनी होगी तो उनको यही गुमान हुआ कि यहीं से एहराम बाँधा। (वहीदी)

बाब 21 : मुहरिम को कौनसे कपड़े पहनना दुरुस्त नहीं

1542. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि एक शख़्स ने पूछा कि या रसूलुल्लाह! मुहरिम को किस तरह के कपड़े पहनना चाहिये? आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया न कुर्ता पहने न अमामा बाँधे न पाजामा पहने न बारान कोट न मोज़े। लेकिन अगर उसके पास जूती न हो तो वो मोज़े उस वक़्त पहन सकता है जब टख़नों के नीचे से उनको काट लिया हो। (और एहराम में) कोई ऐसा कपड़ा न पहनो जिसमें जा'फ़रान या विर्स लगा हुआ हो। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुहरिम अपना सर धो सकता है लेकिन कँधा न करे। बदन भी न खुजलाना चाहिये और जूँ सर और बदन से निकालकर डाली जा सकती है। (राजेअ: 134)

٢١- بَابُ مَا لَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ مِنَ الْثِيَابِ

١٥٤٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنْ رَجُلًا قَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ مِنَ الثِّيَابِ؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا يَلْبَسُ الْقُمُصَ وَلَا الْقَمَائِمَ وَلَا السَّرَاوِيْلَاتِ وَلَا الثَّرَائِسَ وَلَا الْخِفَافَ، إِلَّا أَحَدٌ لَا يَجِدُ نَعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسْ خُفَيْنِ وَلْيَقُطِّعْهُمَا اسْتِغْلَ مِنَ الْكَتْمَيْنِ. وَلَا تَلْبِسُوا مِنَ الثِّيَابِ شَيْئًا مَسَّهُ الزَّغْفَرَانُ أَوْ زَرْسٌ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ ﷺ يَنْسِلُ الْمُحْرِمُ رَأْسَهُ وَلَا يَتَرَجَّلُ وَلَا يَحْكُ جَسَدَهُ وَيَلْبِغِي الْقَمْلَ مِنْ رَأْسِهِ وَجَسَدِهِ فِي الْأَرْضِ. [راجع: ١٣٤]

विर्स एक पीली घास होती है ख़ुशबूदार और उस पर सबका इतिफ़ाक़ है कि मुहरिम को ये कपड़े पहनने नाजाइज़ हैं। हर सिला हुआ कपड़ा पहनना मर्द को एहराम में नाजाइज़ है लेकिन औरतों को दुरुस्त है। खुलासा ये कि एक लुन्गी और एक चादर,

मर्द का यही एहराम है। ये एक फकीरी लिबास है, अब ये हाजी अल्लाह का फकीर बन गया, उसको उस लिबासे फकर का ताजिन्दगी लिहाज रखना जरूरी है। इस मौके पर कोई कितना ही बड़ा बादशाह क्यों न हो सबको यही लिबास ज़ैबतन करके मसावाते इसानी (बराबरी) का एक बेहतरीन नमूना पेश करना है और हर अमीर व गरीब को एक ही सतह पर आ जाना है ताकि वहदते इसानी का ज़ाहिरन और बातिनन बेहतर मुजाहिरा हो सके और उमरा के दिमागों से नखवते अमीरी निकल सके और गुरबा को तसल्ली व इत्मीनान हो सके। अलगर्ज लिबासे एहराम के अंदर बहुत से रूहानी व मादी व समाजी फ़वाइद मुज़्मर हैं मगर उनका मुतालआ करने के लिये बसीरत वाली आँखों की ज़रूरत है और ये चीज़ हर किसी को नहीं मिलती।

इन्नमा यतजक्करु उलुलअल्बाब

बाब 22 : हज के लिये सवार होना या सवारी पर किसी के पीछे बैठना दुरुस्त है

1543, 44. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे वहब बिन जरिर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे वालिद जरिर बिन हाज़िम ने बयान किया। उनसे यूनस बिन ज़ैद ने, उनसे जुहरी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि अरफ़ात से मुजदलिफ़ा तक उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की सवारी पर पीछे बैठे हुए थे। फिर मुजदलिफ़ा से मिना तक हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास (रज़ि.) पीछे बैठ गये थे, दोनों हज़रत ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जमरह इक़बा की रमी तक बराबर तल्बिया कहते रहे।

(दीगर मक़ाम : 1686, 1670, 1685, 1687)

۲۲- بَابُ الرُّكُوبِ وَالْإِثْدَافِ فِي الْحَجِّ

۱۵۴۳، ۱۵۴۴- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنِیْ أَبِي عَنْ یُونُسَ الْأَنْبِیِّ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ أُسَامَةَ رَضِیَ اللَّهُ عَنْهُ كَانَ يَرْفَدُ النَّبِيَّ ﷺ مِنْ عَرَفَةَ إِلَى الْمُزْدَلِیَّةِ، ثُمَّ أَرْدَفَ الْفَضْلُ مِنَ الْمُزْدَلِیَّةِ إِلَى مِنَى، قَالَ فَكَلَاهُمَا قَالَ: لَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُلِيّ حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ)). [طرفه ی : ۱۶۸۶].

[أطرافه ی : ۱۶۷۰، ۱۶۸۵، ۱۶۸۷].

बाब 23 : मुहरिम चादरें और तहबन्द और कौन कौनसे कपड़े पहने

और हज़रत आइशा (रज़ि.) मुहरिम थीं लेकिन कस्म (कैसू के फूल) में रंगे हुए कपड़े पहने हुए थी। आपने फ़र्माया कि औरतें एहराम की हालत में अपने होंठ न छुपाएँ न चेहरे पर नक्काब डालें और न विर्स या ज़ा'फ़रान का रंगा हुआ कपड़ा पहनें और जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने औरतों के लिये ज़ेवर स्याह या गुलाबी कपड़े और मोज़ों के पहनने में कोई मुजायका नहीं समझा और इब्राहीम नख्ई ने कहा कि औरतों को एहराम की हालत में कपड़े बदल लेने में कोई हर्ज नहीं।

۲۳- بَابُ مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ مِنَ الثِّيَابِ وَالْأَرْدِيَةِ وَالْأُزْرِ

وَلَبِستْ عَائِشَةُ رَضِیَ اللَّهُ عَنْهَا الثِّيَابَ الْمُعْصَفَرَةَ - وَهِيَ مُحْرِمَةٌ - وَقَالَتْ : لَا تَلْبَسْنَ وَلَا تَتَرَفَعْنَ وَلَا تَلْبَسْنَ قُبُورًا نَوْرَسَ وَلَا زَعْفَرَانًا. وَقَالَ جَابِرٌ : لَا أَرَى الْمُعْصَفَرَ طَيِّبًا. وَلَكَمْ تَرَى عَائِشَةَ نَاسًا بِالْحُلِيِّ وَالثُّوبِ الْأَسْوَدِ وَالْمَوْزِدِ وَالْخُفِّ لِلْمَرْأَةِ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ : لَا نَاسَ أَنْ يَبْدَلَ

ثَابِتٌ.

1545. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मुकद्दमी ने बयान किया, कहा कि हमसे फुजैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि हमसे मूसा बिन इब्बा ने बयान किया, कहा कि मुझे कुरैब ने खबर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि.) ने बयान किया कि हज्जतुल विदाअ में जुहर और अस्र के बीच हफ्ता के दिन) नबी करीम (ﷺ) कैंघा करने और तैल लगाने और इज़ार और रिदा (चादर) पहनने के बाद अपने सहाबा के साथ मदीना से निकले। आपने उस वक़्त जा'फ़रान में रंगे हुए ऐसे कपड़े के सिवा जिसका रंग बदन पर पर लगता हो किसी क्रिस्म की चादर या तहबन्द पहनने से मना नहीं किया। दिन में आप जुल हुलैफ़ा पहुँच गये (और रात वहीं गुजारी) फिर आप सवार हुए और बैदा से आपके और आपके साथियों ने लब्बैक कहा और एहराम बाँधा और अपने कँटों को हार पहनाया। ज़ीक़अदा के महीने में अब पाँच दिन रह गये थे। फिर आप जब मक्का पहुँचे तो ज़िल्हिज्ज के चार दिन गुजर चुके थे। आपने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और सफ़ा व मरवा की सई की, आप अभी हलाल नहीं हुए क्योंकि कुर्बानी के जानवर आपके साथ थे और आपने उनकी गर्दन में हार डाल दिया था। आप हिजून पहाड़ के नज़दीक मक्का के बालाई हिस्से में उतरे। हज्ज का एहराम अब भी बाक़ी था। बैतुल्लाह के तवाफ़ के बाद फिर आप वहाँ उस वक़्त तक तशरीफ़ नहीं ले गये जब तक मैदाने अरफ़ात से वापस न हो लिये। आपने अपने साथियों को हुक्म दिया था कि वो बैतुल्लाह का तवाफ़ करें और सफ़ा व मरवा के बीच सई करें, फिर अपने सरों के बाल तरश्वा कर हलाल हो जाएँ। ये फ़र्मान उन लोगों के लिये था जिनके साथ कुर्बानी के जानवर न थे। अगर किसी के साथ उसकी बीवी थी तो वो उससे हम बिस्तर हो सकता था। इसी तरह खुशबूदार और (सिले हुए) कपड़े का इस्तेमाल भी उसके लिये जाइज़ था।

(दीगर मक़ाम : 1625, 1731)

١٥٤٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا لُصَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ قَالَ حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي كُرَيْبٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((انْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْمَدِينَةِ بَعْدَ مَا تَرَجَّلَ وَادْفَنَ وَلَبَسَ إِزَارَةً وَرِدَاءَهُ هُوَ وَأَصْحَابُهُ، فَلَمْ يَنْهَ عَنْ شَيْءٍ مِنَ الْأَزْيَةِ وَالْأَزْرِ ثَلَاثِينَ إِلَّا الْمَرْغَفَةَ الَّتِي تُرَدَّغُ عَلَى الْجَلْدِ، فَأَصْبَحَ بِلَدِي الْخَلِيفَةِ، رَكِيبٌ رَاحِلَتُهُ حَتَّى اسْتَوَى عَلَى الْبَيْدَاءِ أَهْلٌ هُوَ وَأَصْحَابُهُ، وَقَدْ بَدَلَتْ، وَذَلِكَ لِخَمْسِ بَعَيْنٍ مِنْ دِي الْقَعْدَةِ، فَقَدِمَ مَكَّةَ لِأَرْبَعِ لَيَالٍ خَلَوْنَ مِنْ دِي الْحَجَّةِ، فَطَافَ بِالنِّبْتِ، وَسَعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَلَمْ يَحِلَّ مِنْ أَجْلِ بُدْيِهِ لِأَنَّهُ قَلَدَهَا. ثُمَّ نَزَلَ بِأَعْلَى مَكَّةَ عِنْدَ الْحَبُونِ وَهُوَ مُهْلٌ بِالسَّحَجِ، وَلَمْ يَقْرَبِ لِكَمْبَةِ بَعْدَ طَوَائِفِ بِهَا حَتَّى رَجَعَ مِنْ عَرَفَةَ، وَأَمَرَ أَصْحَابَهُ أَنْ يَطُوفُوا بِالنِّبْتِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، ثُمَّ يَقْصُرُوا مِنْ رُؤُوسِهِمْ ثُمَّ يَحِلُّوا، وَذَلِكَ لِإِمْنٍ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ بَدَنَةٌ قَلَدَهَا، وَمَنْ كَانَتْ مَعَهُ مَرَاتُهُ فَبَيْتُ لُحْلَاحٍ وَالطَّنْبِ وَالنِّبَابِ)).

(طرقاه في : ١٦٢٥، ١٧٣١).

तशरीह : नबी करीम (ﷺ) हफ्ते के दिन मदीना मुनव्वरा से बतारीख 25 ज़ीक़अदा को निकले थे। अगर महीना तीस दिन का होता तो पाँच दिन बाक़ी रहे थे। लेकिन इत्तिफ़ाक़ से महीना 29 दिन का हो गया और ज़िल्हिज्ज की

पहली तारीख जुमेरात को वाक़ेअ हुई। क्योंकि दूसरी रिवायतों से प्राबित है कि आप अरफ़ात में जुम्आ के दिन ठहरे थे। इब्ने हज़म ने जो कहा कि आप जुम्आरात के दिन मदीना से निकले थे ये ज़हन में नहीं आता। अल्बत्ता आप जुम्आ को मदीना से निकले हों। मगर सहीहैन की रिवायतों में है कि आपने उस दिन जुहर की नमाज़ मदीना में चार रकअतें पढ़ीं और अस्र की जुल हुलैफ़ा में दो रकअतें। इन रिवायतों से साफ़ मा'लूम होता है कि वो जुम्आ का दिन था। हज़ून पहाड़ मुहस्सब के करीब मस्जिद उक्बा के बराबर है।

बाब 24 : (मदीना से चलकर) जुल हुलैफ़ा में सुबह तक ठहरना

ये अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) से नक़ल करते हैं

1546. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन मुकदिर ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना में चार रकअतें पढ़ीं लेकिन जुल हुलैफ़ा में दो रकअत अदा फ़र्माई फिर आपने रात वहीं गुज़ारी। सुबह के वक़्त जब आप अपनी सवारी पर सवार हुए तो आपने लब्बैक पुकारी। (राजेअ : 1089)

1547. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वहाब ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना में जुहर चार रकअत पढ़ी लेकिन जुल हुलैफ़ा में अस्र दो रकअत। उन्होंने कहा कि मेरा ख़याल है कि रात सुबह तक आपने जुल हुलैफ़ा में ही गुज़ार दी। (राजेअ : 1089)

٢٤- بَابُ مَنْ بَاتَ بِبَيْتِ الْخَلِيفَةِ

حَتَّى أَصْبَحَ، قَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ

اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

١٥٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ

حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ

جُرَيْجٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُكَبِّرِ عَنْ

أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:

((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا، وَبِئِ

الْخَلِيفَةِ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ بَاتَ حَتَّى أَصْبَحَ

بِئِ الْخَلِيفَةِ، فَلَمَّا رَكِبَ رَاحِلَهُ

وَأَسْعَوْتُ بِهِ أَهْلًا)). [راجع: ١٠٨٩]

١٥٤٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ((أَنَّ

النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى الظُّهْرَ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا،

وَصَلَّى الْمَصْرَ بِبَيْتِ الْخَلِيفَةِ رَكْعَتَيْنِ،

ثُمَّ بَاتَ بِهَا حَتَّى أَصْبَحَ)).

[راجع: ١٠٨٩]

जुल हुलैफ़ा वही जगह है जो आजकल बीरे अली के नाम से मशहूर है आज भी हाजी साहिबान का यहाँ पड़ाव होता है।

बाब 25 : लब्बैक बुलन्द आवाज़ से कहना

1548. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस बिन मालिक ने कि नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़े जुहर मदीना मुनव्वरा में चार रकअत

٢٥- بَابُ رَفْعِ الصَّوْتِ بِالْإِفْلَاحِ

١٥٤٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ

حَدَّثَنَا هَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي

قِلَابَةَ عَنْ أَنَسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:

पढ़ी। लेकिन नमाज़े अस्स जुल हुलैफ़ा में दो रकअत पढ़ी। मैंने खुद सुना कि लोग आवाज़ से हज्ज और उम्रह दोनों के लिये लब्बैक कह रहे थे।

((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ الظُّهْرَ أَرْبَعًا وَالْعَصْرَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ رَكَعَتَيْنِ وَسَمِعْتُهُمْ يَصْرُخُونَ بِهِمَا جَمِيعًا)).

तशरीह:

जुम्हूर उलमा का यही कौल है कि लब्बैक पुकार कर कहना मुस्तहब है। मगर ये मर्दों के लिये है, औरतें आहिस्ता कहें। इमाम अहमद (रह.) ने मर्फूअन हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से नक़ल किया है कि अल्लाह तआला ने मुझको लब्बैक पुकारकर कहने का हुक्म दिया है। अब लब्बैक कहना इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद के नज़दीक सुन्नत है और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक बग़ैर लब्बैक कहे एहराम पूरा न होगा। आखिरी जुम्हूला का मतलब ये है कि हज्जे किरान की नियत करने वाले लब्बैक बिहज्जतिन व उम्रतिन पुकार रहे थे। पस किरान वालों को जो हज्ज व उम्रह दोनों मिलाकर करना चाहते हों वो ऐसे ही लब्बैक पेश करें और ख़ाली हज्ज करने वाले लब्बैक बिहज्जतिन कहें। और ख़ाली उम्रह करनेवाले लब्बैक बि उम्रतिन के अल्फ़ाज़ कहें। हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं फ़ीहि हुज्जतुन लिल्लजुम्हूरि फ़ी इस्तिहबाबि रफ़इलअस्वाति बित्तल्बिथ्यति व कद रवा मालिक फिल्मुअता व अस्हाबुस्सुननि व सहहुत्तिर्मिजी व इब्नु खुज़ैमा वल्हाकिम मिन तरीक़ि ख़ल्लाद बिन अस्साइब अन अबीहि मर्फूअन जाअनी जिब्रीलु फअमरनी अन आमुर अस्हाबी यर्फूऊन अस्वातहुम बिल्इहलालिया' नी लब्बैक के साथ आवाज़ बुलन्द करना मुस्तहब है। मौता वौरह में मर्फूअन मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे पास जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आए और फ़र्माया कि अपने अस्हाब से कह दीजिए कि लब्बैक के साथ आवाज़ बुलन्द करें। पस अस्हाबे किराम (रज़ि.) इस क़दर बुलन्द आवाज़ से लब्बैक कहा करते थे कि पहाड़ गूँजने लग जाते। लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक के मा'नी या अल्लाह! मैं तेरी इबादत पर कायम हूँ और तेरे बुलाने पर हाज़िर हुआ हूँ या मेरा इख़लास तेरे ही लिये है। मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जह हूँ, तेरी बारगाह में हाज़िर हूँ। लब्बैक उस दा'वत की कुबूलियत है जो तक्मीले इमारते काबा के बाद हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने व अज़िन फ़िन्नासि बिल्हजि की ता'मील में पुकारी थी कि लोगो! आओ अल्लाह का घर बन गया है पस इस आवाज़ पर हर हाजी लब्बैक पुकारता है कि मैं हाज़िर हो गया हूँ या ये कि गुलाम हाज़िर है।

बाब 26 : तल्बिया का बयान

٢٦ - بَابُ التَّلْبِيَةِ

हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का तल्बिया ये था, हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! हाज़िर हूँ मैं, तेरा कोई शरीक नहीं। हाज़िर हूँ, तमाम हम्द तेरे ही लिये है और तमाम नेअमते तेरी ही तरफ़ से हैं, मुल्क तेरा ही है, तेरा कोई शरीक नहीं। (रजिअ 1540)

١٥٤٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنْ تَلْبِيَةَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ: لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكُ، لَا شَرِيكَ لَكَ)).

[راجع: ١٥٤٠]

1550. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान प्रौरी ने आ'मश से बयान किया, उनसे अम्मार ने, उनसे अतिया ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि मैं जानती हूँ कि किस तरह नबी करीम (ﷺ) तल्बिया कहते थे। आप तल्बिया यूँ कहते थे लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक लब्बैक

١٥٥٠ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ الْأَعْمَشِ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ أَبِي عَطِيَّةٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((إِنِّي لِأَعْلَمُ كَيْفَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ

ला शरीक लका लब्बैक इन्नल हम्द वन्निअमत लक (तर्जुमा गुजर चुका है) इसकी मुताबअत सुफयान प्रोरी की तरह अबू मुआविया ने आ'मश से भी की है और शुअबा ने कहा कि मुझको सुलैमान आ'मश ने खबर दी कि मैंने खैषमा से सुना और उन्होंने अबू अज्रिया से, उन्होंने हजरत आइशा (रजि.) से सुना। फिर यही हदीष बयान की।

बाब 27 : एहराम बाँधते वक़्त जब जानवर पर सवार होने लगे तो लब्बैक से पहले अल्हम्दुलिल्लाह, सुब्हानल्लाह, अल्लाहु अकबर कहना

1551. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन खालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब सुखितयानी ने बयान किया, उनसे अबू कलाबा ने और उनसे अनस ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना में... हम भी आपके साथ थे... जुहर की नमाज़ चार रकअत पढ़ी और जुल हुलैफ़ा में असर की नमाज़ दो रकअत। आप रात को वहीं रहे। सुबह हुई तो मक़ामे बैदा से सवारी पर बैठते हुए अल्लाह तआला की हम्द, उसकी तस्बीह और तक्बीर कही। फिर हज्ज और उम्रह के लिये एक साथ एहराम बाँधा और लोगों ने भी आपके साथ दोनों का एक साथ एहराम बाँधा (या'नी क़िरान किया) जब हम मक्का आए तो आपके हुक्म से (जिन लोगों ने हज्जे तमत्तोअ का एहराम बाँधा था उन) सबने एहराम खोल दिया। फिर आठवीं तारीख़ में सबने हज्ज का एहराम बाँधा। उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ से खड़े होकर बहुत से क़ैट नहर किये। हुज़ूर अकरम ने (ईदुल अज्हा के दिन) मदीना में भी दो चितकबरे सींगों वाले मेंढे ज़िबह किये थे। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि कुछ लोग इस हदीष को यूँ रिवायत करते हैं अय्यूब से, उन्होंने एक शख्स से, उन्होंने अनस से। (राजेअ : 1089)

बाब 28 : जब सवारी सीधी लेकर खड़ी हो उस वक़्त लब्बैक पुकारना

بَلَّيْ : لَيْكَ اللَّهُمَّ لَيْكَ، لَيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ...
تَابَعَهُ أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ وَقَالَ شُعْبَةُ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ مَنِعْتُ قَالَ خُفَيْمَةُ عَنْ أَبِي عَطِيَّةٍ قَالَ مَنِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا.

۲۷- بَابُ التَّحْمِيدِ وَالْتَسْبِيحِ
وَالْتَكْبِيرِ قَبْلَ الْإِهْلَالِ عِنْدَ الرُّكُوبِ
عَلَى الدَّائِمَةِ

۱۵۵۱- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : ((صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ - وَتَعَزَّوْا مَعَهُ بِالْمَدِينَةِ - الظُّهْرَ أَرْبَعًا وَالْمَصْرُ بِرَبِي الْحَلِيفَةِ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ بَاتَ بِهَا حَتَّى أَصْبَحَ، ثُمَّ رَكِبَ، ثُمَّ رَكِبَ حَتَّى اسْتَوَتْ بِهِ عَلَى الْيَدَاءِ حِمْدُ اللَّهِ وَسَبْحُ وَكَبْرُ، ثُمَّ أَهْلُ بَحْجَ وَغُمَرَةَ وَأَهْلُ النَّاسِ بِهِمَا، فَلَمَّا قَدِمْنَا أَمَرَ النَّاسَ فَخَلُّوا، حَتَّى كَانَ يَوْمَ التَّرْوِيَةِ أَهَلُّوا بِالْحَجِّ. قَالَ وَتَعَزَّوْا النَّبِيَّ ﷺ بِذُنَاتٍ بِيَدِهِ قِيَامًا، وَذَبَحَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْمَدِينَةِ كَتَبَتَيْنِ أَمْلَحَيْنِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ : قَالَ بَعْضُهُمْ هَذَا عَنْ أَيُّوبَ عَنْ رَجُلٍ عَنْ أَنَسٍ. [راجع : ۱۰۸۹]

۲۸- بَابُ مَنْ أَهْلَ مِنْ أَهْلٍ حِينَ اسْتَوَتْ بِهِ
رَاحِلَتُهُ قَائِمَةً

1552. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने खबर दी, कहा कि मुझे मालेह बिन कैसान ने खबर दी, उन्हें नाफेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को लेकर आपकी सवारी पूरी तरह खड़ी हो गई थी, तो आपने उस वक़्त लब्बैक पुकारा। (राजेअ: 166)

बाब 29 : क़िब्ला रुख होकर एहराम बाँधते हुए लब्बैक पुकारना

1553. और अबू मअमर ने कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब सुखितयानी ने नाफेअ से बयान किया, उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) जब जुल हुलैफ़ा में सुबह की नमाज़ पढ़ चुके तो अपनी कैंटनी पर पालान लगाने का हुक्म फ़र्माया, सवारी लाई गई तो आप उस पर सवार हुए और जब वो आपको लेकर खड़ी हो गई तो आप खड़े होकर क़िब्ला रू हो गये और फिर लब्बैक कहना शुरू किया यहाँ तक कि हरम में दाख़िल हो गये। वहाँ पहुँचकर आपने लब्बैक कहना बंद कर दिया। फिर ज़ी तुवा में तशरीफ़ लाकर रात वहीं गुज़ारते सुबह होती तो नमाज़ पढ़ते और गुस्ल करते (फिर मक्का में दाख़िल होते) आप यक़ीन के साथ ये जानते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी इसी तरह किया था। अब्दुल वारिष की तरह इस हदीस को इस्माईल ने भी अय्यूब से रिवायत किया। उसमें गुस्ल का ज़िक्र है।

(दीगर मक़ाम: 1554, 1573, 1574)

1554. हमसे अबूरबीअ सुलैमान बिन दाऊद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे नाफेअ ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) जब मक्का जाने का इरादा करते थे पहले खुशबू के बग़ैर तैल इस्तेमाल करते। उसके बाद मस्जिदे जुल हुलैफ़ा में तशरीफ़ लाते यहाँ सुबह की नमाज़ पढ़ते, फिर सवार होते, जब कैंटनी आप (ﷺ) को लेकर पूरी तरह खड़ी हो जाती तो एहराम बाँधते। फिर फ़र्माते कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसी तरह करते देखा था। (राजेअ: 1553)

۱۵۵۲- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ أَخْبَرَنِي صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَقْبَلَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ اسْتَوَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ قَائِمَةً)). [راجع: ۱۶۶]

۲۹- بَابُ الْإِهْلَالِ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ
۱۵۵۳- وَقَالَ أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِذَا صَلَّى بِالْعِدَاةِ بِإِذْنِ الْخَلِيفَةِ أَمَرَ بِرَاحِلَتِهِ فَرُحِلَتْ، ثُمَّ رَكِبَ، فَإِذَا اسْتَوَتْ بِهِ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ قَائِمًا ثُمَّ يَلْبَسُ حَتَّى يَلْبَسَ الْحَرَمَ، ثُمَّ يُعَسِّكُ، حَتَّى إِذَا جَاءَهُ ذَا طَوًى بَاتَ بِهِ حَتَّى يُصْبِحَ، فَإِذَا صَلَّى الْعِدَاةَ اغْتَسَلَ وَزَعَمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَعَلَ ذَلِكَ)).

تَابِعَهُ إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ: فِي الْفَسْلِ.

[أُظْهِرَ فِي: ۱۵۵۴، ۱۵۷۳، ۱۵۷۴].

۱۵۵۴- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيعِ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِذَا أَرَادَ الْخُرُوجَ إِلَى مَكَّةَ إِذْهَبَ بِدُهْنٍ لَيْسَ لَهُ رَائِحَةٌ طَيِّبَةٌ، ثُمَّ يَلْبَسُ مَسْجِدَ الْخَلِيفَةِ فَيُصَلِّي، ثُمَّ يَرُكِبُ. وَإِذَا اسْتَوَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ قَائِمَةً أَحْرَمَ ثُمَّ قَالَ: هَكَذَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَفْعَلُ)). [راجع: ۱۵۵۳]

बाब 30 : नाले में उतरते वक़्त लब्बैक कहे

۳۰- بَابُ التَّلْبِيَةِ إِذَا انْحَدَرَ فِي

الْوَادِي

1555. हमसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने अदी ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन औन ने, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, कहा कि हम अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर थे। लोगों ने दज्जाल का ज़िक्र किया कि आँहज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया है कि उसकी दोनों आँखों के बीच काफ़िर लिखा हुआ होगा। तो इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने तो ये नहीं सुना। हाँ! आपने ये फ़र्माया था कि गोया मैं मूसा (अलैहिस्सलाम) को देख रहा हूँ कि जब आप नाले में उतरे तो लब्बैक कह रहे थे। (दीगर मक़ाम . 3355, 5913)

۱۵۵۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: ((كُنَّا عِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، فَذَكَرُوا الدَّجَالَ أَنَّهُ قَالَ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ: كَافِرٌ. فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمْ أَسْمَعْهُ، وَلَكِنَّهُ قَالَ: أَمَا مُوسَى كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ إِذَا انْحَدَرَ فِي الْوَادِي يَلْبِي.)) [طرفاء في: ۳۳۵۵، ۵۹۱۳]

तशरीह: मा'लूम हुआ कि आलमे मिशाल में आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को हज के लिये लब्बैक पुकारते हुए देखा। एक रिवायत में ऐसे ही हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का भी ज़िक्र है। इस हदीष में हज़रत ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) का फ़ज्जुरौहा से एहराम बाँधने का ज़िक्र है। ये भी अन्देशा है कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को आपने इस हालत में ख़्वाब में देखा हो। हाफ़िज़ ने इसी पर ए'तिमाद किया है। मुस्लिम शरीफ़ में ये वाक़िया हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यूँ मरवी है कि कअन्नी अन्ज़ुरु इला मूसा हाबितन मिन षषनियति वाज़िअन इस्बैहि फ़ी उज़्ज़ैहि मा रआ बिहाज़ल्वादी व लहू जवारुन इलल्लाहि बित्तल्बियति या'नी आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया गोया कि मैं हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को देख रहा हूँ। आप घाटी से उतरते हुए कानों में उँगलियाँ डाले हुए लब्बैक बुलन्द आवाज़ से पुकारते हुए इस वादी से गुज़र रहे हैं। उसके ज़ेल में हाफ़िज़ साहब की पूरी तक्रीर ये है, वख़्तलफ़ अहलुत्तहक़ीक़ि फ़ी मअना क़ौलिही कअन्नी अन्ज़ुरु अला औजहिन अल्लअव्वलु हुव अलल्हक़ीक़ति वल्लअम्बियाउ अहयाउन इन्द रब्बिहिम युज़्जकून फ़ला मानिअ अय्यहुज़्जू फ़ी हाज़ल्हालि कमा षबत फ़ी सहीहि मुस्लिम मिन हदीषि अनसिन अन्नहू (ﷺ) राअ मूसा काइमन फ़ी क़ब्बिही युसल्ली कालल्कुतुबी हुब्बिबत इलैहिमुल्इबादतु फ़हुम यतअब्बदून बिमा यजिदूनहू मिन दवाई अन्फुसिहिम बिमा ला यलज़िमून बिही कमा युल्हमु अहलुल्जन्नति अज़िज़र व युअय्यिदुहू अन्न अमलल्आख़िरति ज़िज़रन व दुआउन लिक्ौलिही तआला दअवाहुम फ़ीहा सुब्हानक अल्लाहुम्म अल्लाया लियकून तमाम हाज़तौजीहि अय्युकाल अन्नल्मन्ज़ूर इलैहि हिय अर्वाहुहुम फलअल्लाहा मुषल्लतुन लहू (ﷺ) फ़िहुनिया कमा मुषल्लतुन लहू लैलतलअस्रा व अम्मा अज्सादुहुम फहिय फिल्कुबूरि काल इब्नुल्मुनीर व गैरुहु यज्जअलुल्लाहु लिस्हिही मिशालन फयरा फिल्यक्ज़ति कमा यरा फिन्नौमि प़ानीहा कअन्नहु मुषल्लतुन लहू अहवालुहुमल्लती कानत फिल्हयातिहुनिया कैफ़ तअब्बदू व कैफ़ हज्जू व कैफ़ लब्बू व लिहाज़ा क़ाल कअन्नी अन्ज़ुरु प़ालिषुहा कअन्नहू उख़िबर बिल्बहयि अन ज़ालिक फलिशिहति कत्इही बिही क़ाल कअन्नी अन्ज़ुरु इलैहि राबिउहा कअन्नहा रूयतु मनामिन तक्दमत लहू तुकुदिमत लहू फउख़िबर अन्हा लिमा हज्ज इन्द मातज़क्र ज़ालिक व रूयलअम्बियाइ वहयुन व हाज़ा हुवलमुअतमदु इन्दी कमा सयाती फ़ी अहादीषिलअम्बियाइ मिनत्तसीहि बिनहवि ज़ालिक फ़ी अहादीषिन आख़र व कौनु ज़ालिक फिल्मनामि वल्लज़ी कब्लहू लैस बिबइदिन वल्लाहु आलामु (फ़तुल बारी)

या'नी आँहज़रत (ﷺ) के फ़र्मान कअन्नी अन्ज़ुरु इलैहि (गोया कि मैं उनको देख रहा हूँ) अहले तहक़ीक़ ने मुख़्तलिफ़ तौजीहात की है। अव्वल तो ये है कि ये हक़ीक़त पर मन्बी है कि क्योंकि अंबिया किराम अपने रब के यहाँ से रिज़क

दिये जाते हैं और अपने कुबूर में ज़िन्दा हैं पस कुछ मुश्किल नहीं कि वो इस हालत में हज भी करते हों जैसा कि सहीह मुस्लिम में हदीसे अनस (रज़ि.) से पाबित है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने मूसा (अलैहिस्सलाम) को देखा कि वो अपनी कन्न में नमाज़ पढ़ने के लिये खड़े हुए थे। कर्तुबी (रह.) ने कहा कि इबादत उनके लिये महबूबतरीन चीज़ थी पस वो आलमे आखिरत में भी इसी हालत में बतय्यिबे खातिर मशगूल हैं हालाँकि ये उनके लिये वहाँ लाज़िम नहीं। ये ऐसा ही है जैसे कि अहले जन्नत को ज़िक्रे इलाही का इल्हाम होता रहेगा और उसकी ताईद इससे भी होती है कि अमल आखिरे ज़िक्र और दुआ है। जैसा कि आयते शरीफ़ा **دَعَا هُم فَجَاءَهُمُ الْمَوْتُ** (यूनस : 10) में मज़कूर है। लेकिन इस तौजीह की तक्मील इस पर है कि आपको उनकी रूहें नज़र आई और आलमे मिर्ज़ाल में उनको दुनिया में आपको दिखलाया गया जैसा कि मेअराज में आपकी तम्बीली शक्लों में उनको दिखलाया गया था। हालाँकि उनके जिस्म उनकी कन्नों में थे। इब्ने मुनीर ने कहा कि अल्लाह पाक उनकी पाक रूहों को आलमे मिर्ज़ाल में दिखला देता है। ये आलमे बेदारी में भी ऐसे ही दिखाई दिये जाते हैं जैसे आलमे ख़्वाब में। दूसरी तौजीह ये है कि इनकी तम्बीली हालात दिखलाए गए। जैसा कि वो दुनिया में इबादत और हज और लब्बैक वगैरह किया करते थे। तीसरी ये कि वह्य से ये हाल मा'लूम कराया गया जो इतना क़तई था कि आपने कअत्री अन्ज़ुर इलैहि से उसे ता'बीर फ़र्माया। चौथी तौजीह ये कि ये आलमे ख़्वाब का मुआमला जो आपको दिखलाया गया और अंबिया के ख़्वाब भी वह्य के दर्जे में होते हैं और मेरे नज़दीक इसी तौजीह को तर्जीह है जैसा कि अह्मदीयुल अंबिया में स़राहत आएगी और उसका हालाते ख़्वाब में नज़र आना कोई बर्इद चीज़ नहीं है।

ख़ुलासतुल मराम ये है कि आलमे ख़्वाब में या आलमे मिर्ज़ाल में आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को सफ़रे हज में लब्बैक पुकारते हुए और मज़कूर वादी में से गुज़रते हुए देखा। (ﷺ)

बाब 31 : हैज वाली और निफ़ास वाली औरतें किस तरह एहराम बाँधें

۳۱- بَابُ كَيْفَ تَهْلُ الْحَائِضُ وَالنَّفَسَاءُ؟

अरब लोग कहते हैं अहल्ल या'नी बात मुँह से निकाल दी व अस्तहल्लना व अहल्लल्ल हिलाल इन सब लफ़्ज़ों का मा'नी ज़ाहिर होना है और अस्तहल्लल मतर का मा'नी पानी अब्र में से निकला। और कुर्आन शरीफ़ (सूरह माइदह) में जो वमा उहिल्ला लिगैरिल्लाह बिही) है इसके मा'नी जिस जानवर पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम पुकारा जाए और बच्चा के इस्तिहलाल से निकला है। या'नी पैदा होते वक़्त उसका आवाज़ करना।

1556. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्हें उर्वा बिन जुबैर ने, उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम हजतुल विदाअ में नबी करीम (ﷺ) के साथ रवाना हुए। पहले हमने उम्रह का एहराम बाँधा लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसके साथ कुर्बानी हो तो उसे उम्रह के साथ हज का भी एहराम बाँध लेना चाहिये। ऐसा शख्स दरम्यान में हलाल नहीं हो सकता बल्कि हज और उम्रह दोनों से एक साथ हलाल होगा। मैं भी

أَهْلًا: تَكَلَّمَ بِهِ. وَاسْتَهْلَلْنَا وَأَهْلَلْنَا الْهَلَالَ: كَلَّمَهُ مِنَ الظُّهُورِ. وَاسْتَهْلَلْنَا الْمَطَرُ: خَرَجَ مِنَ السَّحَابِ. وَهُوَ أَهْلٌ لِغَيْرِ اللَّهِ بِوَيْهِ وَهُوَ مِنَ اسْتِهْلَالِ الصَّبِيِّ

۱۵۵۶- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لِي حَبَّةِ الْوَدَاعِ فَأَهْلَلْنَا بِعُمْرَةٍ، ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ كَانَ مَعَهُ هَذِي فَلْيَهْلُ بِالْحَجِّ مَعَ الْعُمْرَةِ ثُمَّ لَا يَحِلُّ حَتَّى

मक्का आई थी उस वक्त मैं हाइज़ा हो गई, इसलिये न बैतुल्लाह का तवाफ़ कर सकी और न सफ़ा व मरवा की सई। मैंने उसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से शिकवा किया तो आपने फ़र्माया कि अपना सर खोल डाल, कैधा कर और इम्रह छोड़कर हज का एहराम बाँध ले। चुनौचे मैंने ऐसा ही किया। फिर जब हम हज से फ़ारिग हो गये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे मेरे भाई अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र के साथ तन्ईम भेजा। मैंने वहाँ से इम्रह का एहराम बाँधा (और इम्रह अदा किया) आँहज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तुम्हारे उस इमरे के बदले में है। (जिसे तुमने छोड़ दिया था) हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जिन लोगों ने (हजतुल विदाअ में) सिर्फ़ इम्रह का एहराम बाँधा था, वो बैतुल्लाह का तवाफ़ सफ़ा और मरवा की सई करके हलाल हो गये। फिर मीना से वापस होने पर दूसरा तवाफ़ (या'नी तवाफ़े ज़ियारा) किया लेकिन जिन लोगों ने हज और इम्रह का एक साथ एहराम बाँधा था, उन्होंने सिर्फ़ एक ही तवाफ़ किया या'नी तवाफ़े ज़ियारा किया (राजेअ 294)

يَجْلُ مِنْهُمَا جُمُوعًا)). فَقَدْتُ مَكَّةَ وَأَنَا حَائِضٌ وَلَمْ أَطِفْ بِالنِّسَاءِ وَلَا بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَشَكَوْتُ ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((انْقَضَى رَأْسُكَ وَامْتَشِطِي وَأَعْلِي بِالْحَجِّ وَدَعِي الْمَرْوَةَ))، فَقُلْتُ: فَلَمَّا قَعَمْنَا بِالْحَجِّ أَرْسَلَنِي النَّبِيُّ ﷺ مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ إِلَى التَّغِيمِ فَاطْهَرْتُ. فَقَالَ: هَلْوَ مَكَانٌ حُرْمَةٌ. قَالَتْ: لَطَافُ اللَّيْلِ كَانُوا أَهْلُوا بِالْمَرْوَةِ بِالنِّسَاءِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ حَلُّوا، ثُمَّ طَافُوا طَوَّالًا وَاحِدًا فَقَدْ أَنْ رَجَعُوا مِنْ مِثْنِ، وَأَمَّا اللَّيْلُ جَمَعُوا الْحَجَّ وَالْمَرْوَةَ فَلَمَّا طَافُوا طَوَّالًا وَاحِدًا)).

[راجع: 294]

तशरीह: हज़रत नबी करीम (ﷺ) ने इस मौके पर हज़रत आइशा (रज़ि.) को इम्रह छोड़ने के लिये फ़र्माया। यहीं से बाब का तर्जुमा निकला कि हैज़वाली औरत को सिर्फ़ हज का एहराम बाँधना दुरुस्त है, वो एहराम का दोगाना न पड़े। सिर्फ़ लम्बैक कह कर हज की नियत कर ले। इस रिवायत ये साफ़ निकला कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इम्रह छोड़ दिया और हज मुफ़रद का एहराम बाँधा। हुनफ़िया का यही क़ौल है और शाफ़िई कहते हैं कि मतलब ये है कि इम्रह को बिल फ़ेअल रहने दे। हज के अरकान अदा करना शुरू कर दे, तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने किरान किया, और सर खोलने और कैधी करने में एहराम की हालत में क़बाहत नहीं। अगर बाल न गिरे मगर ये तावील ज़ाहिर के खिलाफ़ है। (वहीदी)

व अम्मल्लज़ीन जमउलहज वलइम्रत से मा'लूम हुआ कि किरान को एक ही तवाफ़ और एक ही सई काफ़ी है और इमे के अफ़आल हज में शरीक हो जाते हैं। इमाम शाफ़िई और इमाम मालिक और इमाम अहमद और जुम्हूर इलमा का यही क़ौल है। उसके खिलाफ़ कोई पुख़्ता दलील नहीं।

बाब 32 : जिसने आँहज़रत (ﷺ) के सामने एहराम में ये नियत की जो नियत आँहज़रत (ﷺ) ने की है

ये अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से नक़ल किया है।

1557. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अत्ता बिन रिबाह ने बयान किया कि जाबिर (रज़ि.) ने फ़र्माया नबी करीम (ﷺ) ने अली (रज़ि.) को हुक्म

۳۲- بَابُ مَنْ أَهَلَ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ

كَإِهْلَالِ النَّبِيِّ ﷺ

قَالَ ابْنُ عُمرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

۱۵۵۷- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ

ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ عَطَاءٌ قَالَ جَابِرٌ رَضِيَ

اللَّهُ عَنْهُ ((أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ

दिया था कि वो अपने एहराम पर कायम रहें। उन्होंने सुराका का कौल भी जिक्र किया था। और मुहम्मद बिन अबीबक्र ने इब्ने जुरैज से यूँ रिवायत किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पूछा अली! तुमने किस चीज का एहराम बाँधा है? उन्होंने अर्ज किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जिसका एहराम बाँधा हो (उसी का मैंने भी बाँधा है) आँहुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर कुर्बानी कर और अपनी इसी हालत पर एहराम जारी रख।

(1568, 1570, 1785, 2506, 4352, 7230, 7367)

1558. हमसे हसन बिन अली खल्लाल हुजली ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वारिष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुलैम बिन हय्यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मरवान अल्लफ़र से सुना और उनसे अनस बिन मालिक ने बयान किया था कि हज़रत अली (रज़ि.) यमन से नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने पूछा कि किस तरह का एहराम बाँधा है? उन्होंने कहा कि जिस तरह का आँहुजूर (ﷺ) ने बाँधा हो। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मेरे साथ कुर्बानी न होती तो मैं हलाल हो जाता।

1559. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बौरी ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने, उनसे तारिक़ बिन शिहाब ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने मेरी क़ौम के पास यमन भेजा था। जब (हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) मैं आया तो आपसे बतहा में मुलाक़ात हुई। आपने पूछा कि किसका एहराम बाँधा है? मैंने अर्ज किया कि आँहुजूर (ﷺ) ने जिसका बाँधा हो आपने पूछा क्या तुम्हारे साथ कुर्बानी है? मैंने अर्ज किया नहीं, इसलिये आपने मुझे हुक्म दिया कि मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा व मरवा की सई करूँ। उसके बाद आपने एहराम खोल देने का हुक्म फ़र्माया। चुनौचे में अपनी क़ौम की एक ख़ातून के पास आया। उन्होंने मेरे सर का कँघा किया या मेरा सर धोया। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) का

عَنْهُ أَنْ يَقِيمَ عَلَى إِحْرَامِهِ، وَذَكَرَ قَوْلَ سُرَاقَةَ) وَزَادَ مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ لَه النَّبِيُّ ﷺ بِمَا أَهْلَلْتُ بِهَا عَلَيَّ قَالَ يَا أَهْلُ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ فَأَهْدِي وَأَمَكْتُ حَرَامًا كَمَا أَنْتَ.

[اطرافه في: ١٥٦٨، ١٥٧٠، ١٧٨٥،

٢٥٠٦، ٤٣٥٢، ٧٢٣٠، ٧٣٦٧.]

١٥٥٨- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْخَلَّالُ الْهَدْيِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمُ بْنُ حَيَّانَ قَالَ: سَمِعْتُ مَرْوَانَ الْأَصْفَرَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَيْمَنِ فَقَالَ: ((بِمَا أَهْلَلْتُ؟)) قَالَ: بِمَا أَهْلُ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ لَا أَنَا مَعِيَ الْهَدْيُ لَأَخْلَلْتُ)).

١٥٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شَهَابٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى قَوْمٍ بِالْأَيْمَنِ لَجِئْتُ وَهُوَ بِالْبَطْحَاءِ فَقَالَ: ((بِمَا أَهْلَلْتُ؟)) قُلْتُ أَهْلَلْتُ كِبَاحِلَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((هَلْ مَعَكَ مِنْ هَدْيٍ؟)) قُلْتُ: لَا. فَأَمَرَنِي أَنْ أَطُوفَ بِالْأَيْمَنِ فَطُفْتُ بِالْأَيْمَنِ وَبِالْصَّفَا وَالْمَرْوَةِ. ثُمَّ أَمَرَنِي فَأَخْلَلْتُ، فَأَتَيْتُ امْرَأَةً مِنْ قَوْمِي فَمَنَظَّتْنِي أَوْ غَسَلَتْ رَأْسِي. فَقَدِمَ عُمَرُ

जमाना आया तो आपने फ़र्माया कि अगर हम अल्लाह की किताब पर अमल करें तो वो ये हुक्म देती है कि हज और उम्रह पूरा करो। अल्लाह तआला फ़र्माता है, और हज और उम्रह पूरा करो अल्लाह की रज़ा के लिये। और अगर हम आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत को लें तो आँहज़रत (ﷺ) ने उस वक़्त तक एहराम नहीं खोला जब तक आपने कुर्बानी से फ़रागत नहीं हासिल कर ली।

(1565, 1724, 1795, 4346, 4397)

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ : إِنْ نَأَخَذَ بِكِتَابِ اللَّهِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُنَا بِالتَّامِّ، قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ﴾. وَإِنْ نَأَخَذَ بِسُنَّةِ النَّبِيِّ ﷺ فَإِنَّهُ لَمْ يَحِلَّ حَتَّى نَحْرِمَ الْهَذْيَ)).

[أطرافه في : ١٥٦٥، ١٧٢٤، ١٧٩٥،

٤٣٤٦، ٤٣٩٧.]

तशरीह: हज़रत उमर (रज़ि.) की राय इस बाब में दुरुस्त नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने एहराम नहीं खोला इसकी वजह भी आपने खुद बयान की थी कि आपके साथ हदी थी। जिनके साथ हदी नहीं थी उनका एहराम खुद आँहज़रत (ﷺ) ने खुलवाया। पस जहाँ स़ाफ़ स़रीह हदीष नबवी मौजूद हो वहाँ किसी की भी राय कुबूल नहीं की जा सकती ख़वाह हज़रत उमर (रज़ि.) ही क्यों न हों। हज़राते मुकल्लिदीन को ग़ौर करना चाहिये कि जब हज़रत उमर (रज़ि.) जैसे खलीफ़ा-ए-राशिद जिनकी पैरवी करने का ख़ास हुक्म नबवी (ﷺ) है, इक़तदू बिल्लज़ीन मिम्बअदी अबी बकर व उमर हदीष के ख़िलाफ़ काबिले इज़्तिदा न ठहरे तो और किसी इमाम या मुज्ताहिद की क्या बिसात है। (वहीदी)

बाब 33 : अल्लाह पाक का सूरह बकर: में ये फ़र्मा कि

हज के महीने मुकरर हैं जो कोई इनमें हज की ठान ले तो शहवत की बातें न करे न गुनाह और झगड़े के करीब जाए क्योंकि हज में ख़ास तौर पर ये गुनाह और झगड़े बहुत ही ख़ुरे हैं। ऐ रसूल (ﷺ)! लोग आपसे चाँद के बारे में पूछते हैं। कह दीजिए कि चाँद से लोगों के कामों के और हज के औक्रात मा'लूम होते हैं। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि हज के महीने शव्वाल, ज़िक्रअदा और ज़िल्हिज्ज के दस दिन हैं।

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा सुन्नत ये है कि हज का एहराम सिर्फ़ हज के महीनों ही में बाँधें और हज़रत उम्मान (रज़ि.) ने कहा कि कोई ख़ुरासान या करमान से एहराम बाँधकर चले तो ये मकरूह है।

٣٣- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَقْلُومَاتٌ، فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ﴾. (١٧٩: البقرة)، ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ﴾. وَقَالَ ابْنُ عُثْمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَشْهُرُ الْحَجِّ شَوَّالٌ وَذُو الْقَعْدَةِ وَعَشْرٌ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ.

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا : ((مِنْ السُّنَّةِ أَنْ لَا يُحْرِمَ بِالْحَجِّ إِلَّا فِي أَشْهُرِ الْحَجِّ)). وَكَرِهَ عُثْمَانُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنْ يُحْرِمَ مِنْ خُرَاسَانَ أَوْ كَرْمَانَ.

तशरीह: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के अपर को इब्ने जरीर और तबरी ने वस्ल किया। उसका मतलब ये है कि हज का एहराम पहले से पहले गुरा शव्वाल से बाँध सकते हैं। लेकिन उससे पहले दुरुस्त नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के अपर को इब्ने ख़ुज़ैमा और दारे कुत्नी ने वस्ल किया है। हज़रत उम्मान (रज़ि.) के क़ौल का मतलब ये है कि मीक़ात या मीक़ात के करीब से एहराम बाँधना सुन्नत और बेहतर है चाहे मीक़ात से पहले भी बाँध लेना दुरुस्त

है। उसको सईद बिन मंसूर ने बयान किया और अबू अहमद बिन सय्यार ने तारीखे मर्व में निकाला कि जब अब्दुल्लाह बिन अमीर ने खुरासान फतह किया तो उसके शुक्रिया में उन्होंने मन्त्र मा'नी कि मैं यहीं से एहराम बाँधकर निकलूँगा। हज़रत इब्मान (रज़ि.) के पास आए तो उन्होंने उनको मलामत की। कहते हैं उसी साल हज़रत इब्मान (रज़ि.) शहीद हो गए। हदीष में आया हुआ मुक़ाम सफ़े मक्का से दस मील की दूरी पर है। उसे आजकल वादी-ए-फ़ातिमा कहते हैं।

एहराम में क्या हिक्मत है :

शाही दरबारों के आदाब में से एक खास लिबास भी है जिसको ज़ेबतन किये बग़ैर जाना सूअे अदबी समझा जाता है। आज इस रोशन तहज़ीब के ज़माने में भी हर हुक्मत अपने निशानात मुक़रर किये हुए है और अपने दरबारों, ऐवानों के लिये खास-खास लिबास मुक़रर किये हुए है। चुनाँचे उन ऐवानों में शरीक होने वाले मेम्बरों को एक खास लिबास तैयार कराना पड़ता है। जिसको ज़ेबतन करके वो शरीके इज़्लास होते हैं। हज़्ज अहक़मुल हाकिमीन रब्बुल आलमीन का सालाना जश्न है। उसके दरबार की हाज़िरी है। पस उसके लिये तैयारी न करना और ऐसे ही गुस्ताख़ाना चले आना क्यूँकर मुनासिब हो सकता है? इसलिये हुक्म है कि मीक़ात से इस दरबार की हुज़ूर की तैयारी शुरू कर दो और अपनी वो हालत बना लो जो पसंदीदा बारगाहे इलाही है, या'नी आजिज़ी, मिस्कीनी, तर्क ज़ीनत, तबत्तुल इलल्साह इसलिये एहराम का लिबास भी ऐसा ही सादा रखा जो सबसे आसान और सहलुल हुसूल है और जिसमें मुसावात इस्लाम का बख़ूबी ज़हूर होता है। उसमें कफ़न की भी मुशाबिहत होती है जिससे इंसान को ये भी याद आ जाता है कि दुनिया से रुख़्सत होते वक़्त उसको इतना ही कपड़ा नज़ीब होगा। नीज़ उससे इंसान को इतनी इब्तिदाई हालत भी याद आती है जबकि वो इब्तिदाई दौर में था और हज़रो-शजर के लिबास से निकलकर उसने अपने लिये कपड़े का लिबास ईजाद किया था। एहराम के इस सादे लिबास में एक तरफ़ फ़कीरी की तल्कीन है तो दूसरी तरफ़ एक फ़कीरी फ़ौज में डिसीप्लिन भी क़ायम करना मवसूद है।

लब्बैक पुकारने में क्या हिक्मत है :

लब्बैक का नारा अल्लाह की फ़ौज का क़ौमी नारा है। जो जश्ने खुदावन्दी की शिक़त के लिये अक़साए आलम से खींची चली आ रही है। एहराम बाँधने से खोलने तक हर हाजी को निहायत खुशूअ व ख़ुजूअ के साथ बार-बार लब्बैक का नारा पुकारना ज़रूरी है। जिसके मुक़द्दस अल्फ़ाज़ ये हैं, 'लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक लब्बैक लर शरीक लक लब्बैक इन्नल्लहुम्द वन्निअमत लक वलमुल्क ला शरीक लक हाज़िर हूँ। इलाही! फ़कीराना व गुलामाना ज़म्बात में तेरे जश्न की शिक़त के लिये हाज़िर हूँ। हाज़िर हूँ तुझे वाहिद बेमिषाल समझकर हाज़िर हूँ। तेरा कोई शरीक नहीं है। मैं हाज़िर हूँ। तमाम तअरीफ़ें तेरे ही लिये ज़ैबा हैं और सब नेअमतें तेरी ही अता की हुई हैं। राज-पाठ सबका मालिक हकीक़ी तू ही है। उसमें कोई तेरा शरीक नहीं। इन अल्फ़ाज़ों की गहराई पर अगर गौर किया जाए तो बेशुमार हिक्मतें उनमें नज़र आएंगी। इन अल्फ़ाज़ में एक तरफ़ सच्चे बादशाह की खुदाई का ए'तिराफ़ है तो दूसरी तरफ़ अपनी खुदी को भी एक दर्ज-ए-खास में रखकर उसके सामने पेश किया गया है।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक्दीर से पहले खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है

- (01) बार बार लब्बैक कहना ये इक़रार करना है कि ऐ अल्लाह! मैं पूरे तौर पर तस्लीम व रज़ा का बन्दा बनकर तेरे सारे अहक़ाम को मानने के लिये तैयार होकर तेरे दरबार में हाज़िर हूँ।
- (02) ला शरीक लका में अल्लाह की तौहीद का इक़रार है जो असले उसूल ईमान व इस्लाम है और जो दुनिया मे क़यामे अमन का सिर्फ़ एक ही रास्ता है। दुनिया में जिस क़द्र तबाही व बरबादी, फ़साद, बदअम्नी फैली हुई है वो सब तर्क तौहीद की वजह से है।
- (03) फिर ये ए'तिराफ़ है कि सब नेअमतें तेरी ही दी हुई हैं। लेना-देना सिर्फ़ तेरे ही हाथ में है। लिहाज़ा हम तेरी ही हम्दो-घना करते हैं और तेरी ही ता'रीफ़ों के गीत गाते हैं।
- (04) फिर इस बात का इक़रार है कि मुल्क व हुक्मत सिर्फ़ अल्लाह ही की है। हकीक़ी बादशाह सच्चा हाकिम असल

मालिक वही है। हम सब उसके आजिज़ बन्दे हैं। लिहाज़ा दुनिया में उसी का क़ानून नाफ़िज़ होना चाहिये और किसी को अपनी तरफ़ से नया क़ानून बनाने का इख़्तियार नहीं है। जो कोई क़ानून इलाही से हटकर क़ानून-साज़ी करेगा वो अल्लाह का हरीफ़ उधरेगा। दुनियावी हुक़ाम सिर्फ़ अल्लाह तआला के खलीफ़ा हैं। अगर वो समझे तो उन पर बड़ी भारी जिम्मेदारी है, उनको अल्लाह ने इसलिये बइख़्तियार बनाया है कि वो अल्लाह तआला के क़वानीन का निफ़ाज़ करें। इसलिये उनकी इताअत बन्दों पर उसी वक़्त तक फ़र्ज़ है जब तक वो हुदूदे इलाही क़वानीने फ़ितरत से आगे न बढ़ें और खुद अल्लाह न बन बैठें उसके बरअक्स उनकी इताअत हराम हो जाती है। ग़ौर करो जो शरूअस बार-बार उन सब बातों का इक़रार करेगा तो हज के बाद किस किस्म का इंसान बन जाएगा। बशर्ते कि उसने ये तमाम इक़रार सच्चे दिल से किये हों और समझ बूझ कर ये अल्फ़ाज़ मुँह से निकाले हों।

1560. हमसे मुहम्मद बिन बश़ार ने बयान किया, कहा कि हमसे अबूबक्र हनफ़ी ने बयान किया, कहा कि हमसे अफ़लह बिन हुमैद ने बयान किया, कहा कि मैंने क़ासिम बिन मुहम्मद से सुना, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हज के महीनों में हज की रातों में और हज के दिनों में निकले। फिर सरिफ़ में जाकर उतरे। आपने बयान किया कि फिर नबी करीम (ﷺ) ने सहाबा को ख़िताब किया जिसके साथ हदी न हो और वो चाहता हो कि अपने एहराम को सिर्फ़ उम्रह का बना ले तो उसे ऐसा कर लेना चाहिये लेकिन जिसके साथ कुर्बानी है वो ऐसा न करे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहुज़ूर (ﷺ) के कुछ अरहाब ने इस फ़र्मान पर अमल किया और कुछ ने नहीं किया। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके कुछ अरहाब जो इस्तिताअत व हौसला वाले थे (कि वो एहराम के मम्नूआत से बच सकते थे) उनके साथ हदी भी थी, इसलिये वो तंहा उम्रह नहीं कर सकते थे (पस उन्होंने एहराम नहीं खोला) आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैं रो रही थी। आपने पूछा कि (ऐ भोली भाली औरत! तु) क्यों रो रही है? मैंने अर्ज़ किया कि मैंने आपके अपने सहाबा से इश्राद को सुन लिया अब तो मैं उम्रह न कर सकूंगी। आपने पूछा क्या बात है? मैंने कहा मैं नमाज़ पढ़ने के क़ाबिल न रही (या) नी हाइज़ा हो गई) आपने फ़र्माया कोई हर्ज नहीं। आख़िर तुम भी तो आदम की बेटियों की तरह एक औरत हो और अल्लाह ने तुम्हारे लिये भी वो मुक़दर किया है जो तमाम औरतों के लिये किया है। इसलिये (उम्रह छोड़कर) हज करती

۱۵۶۰- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ الْحَنْفِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَفْلَحُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي أَشْهُرِ الْحَجِّ، وَلَيَالِي الْحَجِّ، وَحَرَمِ الْحَجِّ، فَتَزَلْنَا بِسَرَفٍ، قَالَتْ: فَخَرَجَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: ((مَنْ لَمْ يَكُنْ مِنْكُمْ مَعَهُ هَدْيٌ فَأَحَبُّ أَنْ يَجْعَلَهَا غُمْرَةً فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ كَانَ مَعَهُ الْهَدْيُ فَلَا)). قَالَتْ: فَلَاخِذْ بِهَا وَالتَّارِكُ لَهَا مِنْ أَصْحَابِهِ. قَالَتْ فَأَمَّا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَرَجُلَانِ مِنْ أَصْحَابِهِ فَكَانُوا أَهْلَ قُوَّةٍ وَكَانَ مَعَهُمُ الْهَدْيُ فَلَمْ يَقْدِرُوا عَلَى الْغُمْرَةِ. قَالَتْ: فَدَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَنَا أَبْكِي فَقَالَ: ((مَا يُتَكَلِّمُكَ يَا هَتَاة؟)) قُلْتُ: سَمِعْتُ قَوْلَكَ لِأَصْحَابِكَ فَمَنْعْتَ الْغُمْرَةَ. قَالَ: ((وَمَا شَأْنُكَ؟)) قُلْتُ: لَا أَصَلِّي. قَالَ: ((فَلَا يَمْنَعُكَ، إِنَّمَا أَنْتِ امْرَأَةٌ مِنْ بَنَاتِ آدَمَ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكَ مَا كَتَبَ عَلَيْهِنَ، فَكُونِي فِي حُجَّتِكَ لِقَسَى اللَّهِ أَنْ يَرْزُقَكِيهَا)).

रह अल्लाह तआला तुम्हें जल्द ही उम्ह की तौफ़ीक़ दे देगा। आइशा (रज़ि.) ने ये बयान किया कि हम हज के लिये निकले। जब हम (अरफ़ात से) मिना पहुँचे तो मैं पाक हो गई। फिर मिना से जब मैं निकली तो बैतुल्लाह का तवाफ़े ज़ियारत किया। आपने बयान किया कि आख़िर में आँहुज़ूर (ﷺ) के साथ जब वापस होने लगी तो आप वादी मुहम्मद में आकर उतरे। हम भी आपके साथ ठहरे। आपने अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र को बुलाकर कहा कि अपनी बहन को लेकर हरम से बाहर जा और वहाँ से उम्ह का एहराम बाँध फिर उम्ह से फ़ारिग होकर तुम लोग यहीं वापस आ जाओ, मैं तुम्हारा इंतज़ार करता रहूँगा। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम (आँहुज़ूर ﷺ की हिदायत के मुताबिक़) चले और जब मैं और मेरे भाई तवाफ़ से फ़ारिग हो लिये तो मैं सेहरी के वक़्त आपकी ख़िदमत में पहुँची। आपने पूछा कि फ़ारिग हो लीं? मैंने कहा हाँ, तब आपने अपने साथियों से सफ़र शुरू कर देने के लिये कहा। सफ़र शुरू हो गया और आप मदीना मुनव्वरा वापस हो रहे थे। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुखारी रह.) ने कहा कि जो ला यज़ीरुका है वो ज़ारा यज़ीरु ज़यरन से मुश्तक़ है ज़ारा यज़ीरु ज़यरन भी इस्तेमाल होता है और जिस रिवायत में ला यज़ीरुका है वो ज़ारा यज़ीरु ज़यरन से निकला है। (राजेअ: 294)

बाब 34 : हज में तमत्तोअ, क़िरान और इफ़राद का बयान और जिसके साथ हदी न हो, उसे हज फ़स्ख़ करके उम्ह बना देने की इजाज़त है

1561. हमसे इमाम बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि हम हज के लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले। हमारी नियत हज के सिवा और कुछ न थी। जब हम मक्का पहुँचे तो (और लोगों ने) बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। आँहुज़ूर (ﷺ) का हुक्म था कि जो कुर्बानी अपने साथ न लाया हो वो हलाल हो जाए। चुनाँचे जिनके पास हदी न थी वो हलाल हो गये। (अफ़आले उम्ह के बाद) आँहुज़ूर (ﷺ) की अज़्वाजे मुतहहरात हदी नहीं

قَالَتْ: فَخَرَجْنَا فِي حَجَّتِهِ حَتَّى قَلَبْنَا مِنِّي فَطَهَرْتُ ثُمَّ خَرَجْتُ مِنْ مِنِّي فَأَلْبَسْتُ بِالنِّسَاءِ. قَالَتْ: ثُمَّ خَرَجْتُ مَعَهُ فِي النَّفَرِ الْآخِرِ حَتَّى نَزَلَ الْمُحَصَّبُ وَنَزَلْنَا مَعَهُ، لَدَعَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ: ((أَخْرِجْ بِأَخِيكَ مِنَ الْحَرَمِ فَلْتَهْلُ بِغَمْرَةٍ ثُمَّ افْرَغَا ثُمَّ انِيَا هَا هُنَا فَإِنِّي أَنْظَرُ كَمَا حَتَّى تَأْتِيَانِي)). قَالَتْ فَخَرَجْنَا حَتَّى إِذَا فَرَعْتُ وَفَرَعَ مِنَ الطَّوَافِ ثُمَّ جِئْتُ بِسَحَرٍ فَقَالَ: ((هَلْ فَرَعْتُمْ؟)) فَقُلْتُ: نَعَمْ، فَأَذَنَ بِالرَّحِيلِ فِي أَصْحَابِهِ، فَأَرْتَحَلَ النَّاسُ، فَمَرَّ مُتَوَجِّهًا إِلَى الْمَدِينَةِ.

قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ اللَّهُ ضَيَّرَ مِنْ ضَارٍ يَضِيرُ ضَيْرًا. وَيُقَالُ ضَارٌ يَضُورُ ضُورًا، وَضَرَّ يَضُرُّ ضَرًّا. [راجع: 294]

٣٤- بَابُ التَّمَتُّعِ وَالْإِفْرَادِ

وَالْإِفْرَادِ بِالْحَجِّ وَفَسْخَ الْحَجِّ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَدْيٌ

١٥٦١- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْأَسْوَدِ عَنْ غَابِثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، وَلَا نَرَى إِلَّا أَنَّهُ الْحَجُّ، فَلَمَّا قَدِمْنَا نَطَوَّفْنَا بِالنِّسَاءِ، فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ مَنْ لَمْ يَكُنْ سَاقِ الْهَدْيِ أَنْ يَحِلَّ، فَعَلَّ مَنْ لَمْ يَكُنْ سَاقِ الْهَدْيِ وَيَسَاوُهُ لَمْ يَسْقَنْ

ले गई थीं, इसलिये उन्होंने भी एहराम खोल डाले, आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैं हाइज़ा हो गई थी इसलिये मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ न कर सकी (या'नी उम्रह छूट गया और हज्ज करती चली गई) जब मुहम्मद की रात आई, मैंने कहा या रसूलल्लाह! और लोग तो हज्ज और उम्रह दोनों करके वापस हो रहे हैं लेकिन मैं सिर्फ़ हज्ज कर सकी हूँ। इस पर आपने फ़र्माया क्या जब हम मक्का आए थे तो तुम तवाफ़ न कर सकी थी? मैंने कहा कि नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने भाई के साथ तन्ईम तक चली जा और वहाँ से उम्रह का एहराम बाँध (फिर उम्रह अदा कर) हम लोग तुम्हारा फ़र्ला जगह इतिज़ार करेंगे और सफ़िया (रज़ि.) ने कहा कि मा'लूम होता है मैं भी आप (लोगों) को रोकने का सबब बन जाऊँगी। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मुरदार सर मुँडी क्या तूने यौमुन्नहर का तवाफ़ नहीं किया था? उन्होंने कहा क्यों नहीं मैं तो तवाफ़ कर चुकी हूँ। आपने फ़र्माया फिर कोई हर्ज नहीं चल कूचकर। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर मेरी मुलाक़ात नबी करीम (ﷺ) से हुई तो आप मक्का से जाते हुए ऊपर के हिस्से पर चढ़ रहे थे और मैं नशीब में उतर रही थी या ये कहा कि मैं ऊपर चढ़ रही थी और आँहुज़ूर (ﷺ) इस चढ़ाव के बाद उतर रहे थे। (राजेअ: 294)

فَاخْلَلْنَ. قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: فَحِصْتُ، فَلَمْ أَطِفْ بِالنَّبِيِّ. فَلَمَّا كَانَتْ لَيْلَةُ الْخَصَةِ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، يَرْجِعُ النَّاسُ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ وَأَرْجِعُ أَنَا بِحَجَّتِي. قَالَ: ((وَمَا طُفْتُ لَيْلِي قَدِمْنَا مَكَّةَ)) قُلْتُ: لَا. قَالَ: ((فَإَذْهَبِي مَعَ أَخِيكَ إِلَى التَّنِيمِ فَأَهْلِي بِعُمْرَةٍ، ثُمَّ مَوْعِدُكَ كَذَا وَكَذَا)). قَالَتْ صَفِيَّةُ: مَا أَرَانِي إِلَّا حَابِسَتِكُمْ. قَالَ: ((عَفْوَى خَلْفِي، أَوْ مَا طُفْتُ يَوْمَ النَّحْرِ)). قَالَتْ: قُلْتُ: بَلَى. قَالَ: ((لَا بَأْسَ، انْفِرِي)). قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: فَلَقِينِي النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ مُصْعِدٌ مِنْ مَكَّةَ وَأَنَا مُنْهَبِطَةٌ عَلَيْهَا، أَوْ أَنَا مُصْعِدَةٌ وَهُوَ مُنْهَبِطٌ مِنْهَا. [راجع: 294]

तशरीह: हज्ज की तीन किस्में हैं। एक तमतोअ वो ये है कि मीक़ात से उम्रह का एहराम बाँधे और मक्का में जाकर तवाफ़ और सई करके एहराम को खोल डाले। फिर आठवीं तारीख को हरम ही से हज्ज का एहराम बाँधे। दूसरा क़िरान वो ये है कि मीक़ात से हज्ज और उम्रह दोनों का साथ एहराम बाँध ले या पहले सिर्फ़ उम्रह का बाँधे फिर हज्ज को भी उसमें शरीक कर ले। इस सूरत में उम्रे के अफ़आल, हज्ज में शरीक हो जाते हैं और उम्रह के अफ़आल अलग से नहीं करने पड़ते। तीसरा हज्जे इस्पाद या'नी मीक़ात से सिर्फ़ हज्ज का एहराम बाँधे और जिसके साथ हदी न हो उसका हज्ज फ़सख़ करके उम्रह बना देना। ये हमारे इमाम अहमद बिन हंबल और जुम्ला अहले हदीष के नज़दीक जाइज़ है और इमाम मालिक और शाफ़िई और अबू हनीफ़ा और जुमहूर उलमा के नज़दीक ये अम्र ख़ास था उन सहाबा से जिनको आँहुज़रत (ﷺ) ने उसकी इजाजत दी थी और दलील लेते हैं हिलाल बिन हारिष की हदीष से जिसमें ये है कि ये तुम्हारे लिये ख़ास है और ये रिवायत ज़ईफ़ है ए'तिमाद के लायक नहीं। इमाम इब्ने क़य्यिम और शौकानी और मुहक्किकीने अहले हदीष ने कहा है कि फ़सख़े हज्ज को चौबीस सहाबा ने जिक्र किया है। हिलाल बिन हारिष की एक ज़ईफ़ रिवायत इनका मुकाबला नहीं कर सकती। आपने उन सहाबा को, जो कुर्बानी नहीं लाए थे, उम्रह करके एहराम खोल डालने का हुक्म दिया। उससे तमतोअ और हज्ज फ़सख़ करके उम्रह कर डालने का जवाज़ प्राबित हुआ और हज़रत आइशा (रज़ि.) को जो हज्ज की नियत कर लेने का हुक्म दिया उससे क़िरान का जवाज़ निकला। भले ही इस रिवायत में उसकी सराहत नहीं है मगर जब उन्होंने हज्ज की वजह से उम्रह अदा नहीं किया था और हज्ज करने लगीं तो ये मत्तलब निकल आया। ऊपर वाली रिवायतों में उसकी सराहत मौजूद है। (वहीदुजमाँ मरहूम)

1562. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने खबर दी, उन्हें अबुल अस्वद मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन नौफ़िल ने, उन्हें इर्वा बिन जुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम हजतुल विदाअ के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले। कुछ लोगों ने उम्रह का एहराम बाँधा था, कुछ ने हज और उम्रह दोनों का और कुछ ने सिर्फ़ हज का। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (पहले) सिर्फ़ हज का एहराम बाँधा था, फिर आपने उम्रह भी शरीक कर लिया, फिर जिन लोगों ने हज का एहराम बाँधा था या हज या उम्रह दोनों का, उनका एहराम दसवीं तारीख तक न खुल सका।

(राजेअ 294)

1563. हमसे मुहम्मद बिन बशशार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हक़म ने, उनसे अली बिन हुसैन (हज़रत ज़ैनुल आबेदीन) ने और उनसे मरवान बिन हक़म ने बयान किया कि हज़रत इम्रान और अली (रज़ि.) को मैंने देखा है। इम्रान (रज़ि.) हज और उम्रह को एक साथ करने से रोकते थे लेकिन हज़रत अली (रज़ि.) ने उसके वाबजूद दोनों का एक साथ एहराम बाँधा और कहा लब्बैक बिउम्रतिन व हजतिन आपने फ़र्माया था कि मैं किसी एक शख्स की बात पर रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीस को नहीं छोड़ सकता।

١٥٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الْأَسْوَدِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ : ((عَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَمَّ حَجَّةِ الْوَدَاعِ، فَمِنَّا مَنْ أَهَلَ بِعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَ بِحَجَّةٍ وَعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَ بِالْحَجِّ، وَأَهَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالْحَجِّ، فَأَمَّا مَنْ أَهَلَ بِالْحَجِّ أَوْ جَمَعَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لَمْ يَجْلُوا حَتَّى كَانَ يَوْمُ النَّحْرِ)). [راجع: ٢٩٤]

١٥٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ الْحَكَمِ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ قَالَ : ((شَهِدْتُ عُمَانَ وَعَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، وَعُفْمَانَ يَنْهَى عَنْ الْمُتَعَةِ وَإِنْ يُجْمَعُ تَنْهَى، فَلَمَّا رَأَى عَلِيٌّ أَهْلًا بِهِمَا: كَبِكَ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ، قَالَ: مَا كُنْتُ لِأَدْعِ مِنْهُ النَّبِيَّ ﷺ لِقَوْلِ أَخِي)). [طرفه في: ١٥٦٩]

तशरीह: हज़रत इम्रान (रज़ि.) शायद हज़रत उमर (रज़ि.) की तक्लीद से तमतोअ को बुरा समझते थे उनको भी यही ख़याल हुआ आँहज़रत (ﷺ) ने हज को फ़स्ख़ कराकर जो हुक्म उम्रह का दिया था वो ख़ास था सहाबा (रज़ि.) से। कुछ ने कहा मकरूहे तंजीही समझा और चूँकि हज़रत इम्रान (रज़ि.) का ये ख़याल हदीष के खिलाफ़ था। इसलिये हज़रत अली (रज़ि.) ने इस पर अमल नहीं किया और फ़र्माया कि मैं आँहज़रत (ﷺ) की हदीष को किसी के क़ौल से नहीं छोड़ सकता।

मुसलमान भाइयों! ज़रा हज़रत अली (रज़ि.) के इस क़ौल को ग़ौर से देखो, हज़रत इम्रान (रज़ि.) ख़लीफ़-ए-वक़््त और ख़लीफ़ा भी कैसे? ख़लीफ़ा-ए-राशिद और अमीरुल मोमिनीन। लेकिन हदीष के खिलाफ़ उनका क़ौल भी फ़ैक़ दिया गया और खुद उनके सामने उनका खिलाफ़ किया गया। फिर तुमको क्या हो गया है जो तुम इमाम अबू हनीफ़ा या शाफ़िई के क़ौल को लिये रहते हो और सहीह हदीष के खिलाफ़ उनके क़ौल पर अमल करते हो, ये सरीह गुमराही है। अल्लाह के लिये

इससे बाज़ आ जाओ और हमारा कहना मानो हमने जो हक बात थी वो तुमको बता दी आइन्दा तुमको इख्तियार है। तुम कयामत के दिन जब आँहज़रत (ﷺ) के सामने खड़े होंगे अपना उज़्र बयान कर लेना वस्सलाम (मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम)

1564. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन खालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन ताउस ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि अहले अरब समझते थे कि हज्ज के दिनों में इम्रह करना रूए ज़मीन पर सबसे बड़ा गुनाह है। ये लोग मुहर्रम को सफ़र बना लेते और कहते कि जब ऊँट की पीठ सुस्ता ले और उस पर खूब बाल उग जाएँ और सफ़र का महीना ख़त्म हो जाए (या'नी हज्ज के अय्याम गुज़र जाएँ) तो इम्रह हलाल होता है। फिर जब नबी करीम (ﷺ) अपने सहाबा के साथ चौथी की सुबह को हज्ज का एहराम बाँधे हुए आए तो आपने उन्हें हुक्म दिया कि अपने हज्ज को इम्रह बना लें, ये हुक्म (अरब के पुराने रिवाज के आधार पर) आम सहाबा पर बड़ा भारी गुज़रा। उन्होंने पूछा, या रसूलल्लाह! इम्रह करके हमारे लिये क्या चीज़ हलाल हो गई? आपने फ़र्माया कि तमाम चीज़ें हलाल हो जाएँगी। (राजेअ: 1085)

١٥٦٤ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «كَانُوا يَزَوْنُ أَنَّ الْعُمْرَةَ فِي أَشْهُرِ الْحَجِّ مِنَ الْجَبْرِ الْفَجْرِ فِي الْأَرْضِ، وَيَجْعَلُونَ الْمَحْرَمَ صَفْرًا، وَيَقُولُونَ: إِذَا بَرَأَ الذَّيْرُ، وَعَفَا الْأَثَرُ، وَأَسْلَخَ صَفْرُ، حَلَّتِ الْعُمْرَةُ لِمَنْ اعْتَمَرَ. قَلِيمَ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابَهُ صَبِيحَةَ رَابِعَةِ مَهَلَتْنِ بِالْحَجِّ، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَجْعَلُوهَا عُمْرَةً، فَتَعَاظَمَ ذَلِكَ عَنْهُمْ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَيُّ الْحِلِّ؟ قَالَ: ((حِلٌّ كُلُّهُ)). [راجع: ١٠٨٥]

तशरीह: हर आदमी के दिल में क़दीमी रस्मों-रिवाज का बड़ा अषर रहता है। जाहिलियत के ज़माने से उनका ये ए'तिकाद चला आता था कि हज्ज के दिनों में इम्रह करना बड़ा गुनाह है, उसी वजह से आपका ये हुक्म उन पर गिरा गुज़रा।

ईमान अफ़रोज़ तक्रीर: इस हदीष के तहत हज़रत मौलाना वहीदुज्जमाँ मरहूम ने एक ईमान अफ़रोज़ तक्रीर हवाला-ए-किरतास फ़र्माई है (या'नी कागज़ पर लिखा है) जो अहले बज़ीरत के मुतालआ के काबिल है।

सहाबा-ए-किराम ने जब कहा या रसूलल्लाहि अय्युल्हल्लिन क़ाल हल्ल कुल्लुहू या'नी या रसूलल्लाह! इम्रह करके हमको क्या चीज़ हलाल होगी। आपने फ़र्माया सब चीज़ें या'नी जितनी चीज़ें एहराम में मना थीं वो सब दुरुस्त हो जाएँगी। उन्होंने ये खयाल किया कि शायद औरतों से जिमाअ दुरुस्त न हो। जैसे रमी और हलक़ और कुर्बानी के बाद सब चीज़ें दुरुस्त हो जाती हैं लेकिन जिमाअ दुरुस्त नहीं होता जब तक तवाफ़ुज्जियारत न करे तो आप (ﷺ) ने इश्राद फ़र्माया कि नहीं! बल्कि औरतें भी दुरुस्त हो जाएँगी।

दूसरी रिवायत में है कि कुछ सहाबा को उसमें तअम्मुल (भ्रम, असमंजस) हुआ और उनमें से कुछ ने ये भी कहा कि क्या हम हज्ज को इस हाल में जाएँ कि हमारे ज़कर से मनी टपक रही हो। आँहज़रत (ﷺ) को उनका ये हाल देखकर सख़्त मलाल हुआ कि मैं हुक्म देता हूँ और ये उसकी ता'मील में तअम्मुल करते हैं और किन्तु-परन्तु करते हैं। लेकिन जो सहाबा कबिय्युल ईमान (ठोस ईमानवाले) थे उन्होंने फ़ौरन आँहज़रत (ﷺ) के इश्राद पर अमल कर लिया और इम्रह करके एहराम खोल दिया। पैग़म्बर (ﷺ) जो कुछ हुक्म दें वही अल्लाह का हुक्म है और ये सारी मेहनत और मशक़त उठाने से गर्ज़ क्या है? अल्लाह और रसूल की खुशनुदी। इम्रह करके एहराम खोल डालना तो क्या चीज़ है? आप (ﷺ) जो भी हुक्म दे उसकी ता'मील करना हमारे लिये ऐन सआदत (सौभाग्य) है। जो हुक्म आप दें उसी में अल्लाह की मर्ज़ी है, भले ही सारा ज़माना उसके खिलाफ़ बकता रहे। उनका क़ौल और खयाल उनको मुबारक रहे। हमको मरते ही अपने पैग़म्बर (ﷺ) के साथ रहना है। अगर बिल फ़र्ज़ दूसरे मुज्ताहिद या इमाम या पीर व मुर्शिद, दुर्वेश, कुतुब, अब्दाल अगर पैग़म्बर की पैरवी करने में हमसे

खफ़ा हो जाएँ तो हमको उनकी नाराज़गी की ज़रा भी परवाह नहीं है। हमको क़यामत में हमारे पैग़म्बर का साया-ए-आतिफ़त बस करता है। सारे वली और दुर्वेश और गौष और कुतुब और मुज्ताहिद और इमाम उस बारगाह के एक अदना कफ़श बरदार (क़ैदी) हैं। कफ़श बरदारों को राज़ी रखें या अपने सरदार को अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद व अला अस्हाबिही व ज़ुक्ना शफ़ा अतहू यौमल्लिक़यामति वहशुर्ना फ़ी जुम्ति इत्तिबाइही व षब्बितना अला मुताब अतिही व लअमलु बिसुन्नतिही आमीन।

1565. हमसे मुहम्मद बिन मुबन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क्रैस बिन मुस्लिम ने, उनसे तारिक बिन शिहाब ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (हजतुल विदाअ के मौक़े पर यमन से) हाज़िर हुआ तो आपने (मुझको इम्रह के बाद) एहराम खोल देने का हुक्म दिया। (राजेअ 155)

1566. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया (दूसरी सनद) और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि हुज़ूर (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा था रसूलुल्लाह! क्या बात है और लोग तो इम्रह करके हलाल हो गये लेकिन आप हलाल नहीं हुए? औ हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने अपने सर की तलबीद (बालों को जमाने के लिये एक लैसदार चीज़ का इस्ते'माल) की है और अपने साथ हदी (कुर्बानी का जानवर) लाया हूँ इसलिये मैं कुर्बानी करने से पहले एहराम नहीं खोल सकता। (दीगर मक़ाम: 1697, 1725, 4398, 5916)

1567. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू जमरा नसर बिन इमरान ज़ब्ई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हज्ज और इम्रह का एक साथ एहराम बाँधा तो कुछ लोगों ने मुझे मना किया। इसलिये मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इसके बारे में पूछा। आपने तमत्तोअ करने के लिये कहा। फिर मैंने एक शख़्स को देखा कि मुझसे कह रहा है, हज्ज भी मबरूर हुआ और इम्रह भी कुबूल हुआ मैंने ये ख़वाब इब्ने अब्बास (रज़ि.) को सुनाया, तो आपने फ़र्माया कि ये नबी करीम (ﷺ) की

۱۵۶۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَأَمَرَهُ بِالْحَجِّ)).

[راجع: ۱۵۵]

۱۵۶۶- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ عَنْ حَفْصَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَهَا قَالَتْ: ((يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا شَأْنُ النَّاسِ خَلُّوا بِعُمْرَةٍ وَلَمْ يَخْلُلُوا أَنْتَ مِنْ عُمْرَتِكَ؟ قَالَ: ((أَنِّي كَذَبْتُ رَأْسِي، وَقَلَبْتُ هَذِي، فَلَا أَجِلُ حَتَّى أَنْحَرُ)).

[أطرافه في ۱، ۱۶۹۷، ۱۷۲۵، ۴۳۹۸، ۵۹۱۶]

۱۵۶۷- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو جَمْرَةَ نَصْرُ بْنُ عِمْرَانَ الصُّعْمِيُّ قَالَ: ((تَمَنَعْتُ قَهَائِي نَاسًا، فَسَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَأَمَرَنِي، فَرَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ رَجُلًا يَقُولُ لِي: حَجٌّ مَبْرُورٌ وَعُمْرَةٌ مُقْبَلَةٌ، فَأَخْبَرْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ

फिर यौमे तरविया में मक्का ही से हज का एहराम बाँधो और इस तरह अपने हजे मुफरद को जिसकी तुमने पहले निय्यत की थी, अब उसे तमतोअ बना लो। सहाबा ने अर्ज किया कि हम उसे तमतोअ कैसे बना सकते हैं? हम तो हज का एहराम बाँध चुके हैं। इस पर आँहजूर (ﷺ) ने फर्माया कि जिस तरह मैं कह रहा हूँ वैसे ही करो। अगर मेरे साथ हदी न होती तो खुद मैं भी इसी तरह करता जिस तरह तुमसे कह रहा हूँ। लेकिन मैं क्या करूँ अब मेरे लिये कोई चीज उस वक्त तक हलाल नहीं हो सकती जब तक मेरे कुर्बानी के जानवरों की कुर्बानी न हो जाए चुनौचे सहाबा ने आपके हुक्म की ता'मील की। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि अबू शिहाब की इस हदीष के सिवा और कोई मफूअ हदीष मरवी नहीं है। (राजेअ 1556)

اقْبِرُوا حَلَالًا حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقَرْبَةِ فَامِلُوا بِالْحَجِّ وَاجْعَلُوا إِلَيْهِ قَلْبَكُمْ بِهَا مَحْفَةً، فَقَالُوا: كَيْفَ نَجْعَلُهَا مَحْفَةً وَقَدْ سَمِعْنَا الْحَجَّ؟ فَقَالَ: ((افْعَلُوا مَا أَمَرْتُكُمْ، فَلَوْ لَا أَنِّي سَفْتُ الْهَدْيَ لَفَعَلْتُ بِفُلٍ إِلَى أَمْرَتِكُمْ، وَلَكِنْ لَا يَحِلُّ مِنِّي حَرَامٌ حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ)). فَفَعَلُوا لَمَّا أَمَرَ عَبْدُ اللَّهِ أَبُو هُرَيْرَةَ لَمَّا لَهُ حَلِيفَتٌ مُسْنَدٌ إِلَّا هَذَا.

[راجع: 1006]

मक्की हज से ये मुराद है कि मक्का वाले जो मक्का ही से हज करते हैं उनको चूँकि तकलीफ और मेहनत कम होती है लिहाजा प्रवाब भी ज्यादा नहीं मिलता। उन लोगों की गर्ज ये थी कि जब तमतोअ किया और हज का एहराम मक्का से बाँधा, तो अब हज का प्रवाब इतना न मिलेगा जितना हजे मुफरद में मिलता जिसका एहराम बाहर से बाँधा होता। जाबिर (रज़ि.) ने ये हदीष बयान करके मक्का वालों का रद्द किया और अबू शिहाब का शुब्हा दूर कर दिया कि तमतोअ में प्रवाब कम मिलेगा। तमतोअ तो सब किस्मों में अफ़ज़ल है और उसमें इफ़राद और क़िरान दोनों से ज्यादा प्रवाब है।

1569. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे हज्जाज बिन मुहम्मद आ'वर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अमर बिन मुरह ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने कि जब हज़रत इम्रान और हज़रत अली (रज़ि.) इस्फ़ान आए तो उनमें बाहम तमतोअ के सिलसिले में इख़ितलाफ़ हुआ तो हज़रत अली (रज़ि.) ने फर्माया कि जिसको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया है इससे आप क्यूँ रोक रहे हैं? इस पर इम्रान (रज़ि.) ने फर्माया कि मुझे अपने हाल पर रहने दो। ये देखकर अली (रज़ि.) ने हज और इम्रह दोनों का एहराम एक साथ बाँधा।

١٥٦٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا خَبَّاجُ بْنُ مَخْمَرٍ الْأَخَوَزِيُّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَمْرٍو بْنِ مَرْثُةٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسْتَبِيرِ قَالَ: ((اِخْتَلَفَ عَلِيٌّ وَغُهْمَانُ وَحُجْرَةُ ابْنُ أَبِي هُرَيْرَةَ وَهُمَا بِمُسْنَدَانِ فِي الْمَنْعَةِ، فَقَالَ عَلِيٌّ: مَا تَوَيْدُ إِلَى أَنْ تَنْهَى عَنْ أَمْرِ لَعَلَّه رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. قَالَ: فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ عَلِيٌّ أَقْبَلَ بِهِمَا جَمْعًا)). [راجع:

(राजेअ 1563)

[1063]

तशरीह: इस्फ़ान एक जगह है मक्का से 36 मील पर यहाँ के तरबूज मशहूर हैं। आँहजूर (ﷺ) ने गो खुद तमतोअ नहीं किया था मगर दूसरे लोगों को उसका हुक्म दिया तो गोया खुद किया। यहाँ ये ए'तिराज़ होता है कि बहस तो तमतोअ में थी फिर हज़रत अली (रज़ि.) ने क़िरान किया, उसका मतलब क्या है। जवाब ये है कि क़िरान और तमतोअ दोनों का एक ही हुक्म है। हज़रत इम्रान (रज़ि.) दोनों को नाजाइज़ समझते थे। अजीब बात है कुर्आन शरीफ़ में साफ़ ये मौजूद है। फ़मन तमतोअ बिल्इमरति इलल्हज्जि और अहादीष सहीहा मुतअहिद सहाबा की मौजूद है। जिनसे ये बात प्राबित होती है कि आँहजूर (ﷺ) ने तमतोअ का हुक्म दिया। फिर उन साहिबों का उससे मना करना समझ में नहीं आता। कुछ ने कहा कि हज़रत इमर और इम्रान (रज़ि.) इस तमतोअ से मना करते थे कि हज की निय्यत करके हज का फ़स्ख़ कर देना

उसको उम्ह बना देना। मगर ये भी सराहतन अहादीष से प्राबित है। कुछ ने कहा कि ये मुमानअत बतौर तंजीह के थी, या'नी तमतोअ को फ़ज़ीलत के खिलाफ़ जानते थे। ये भी सहीह नहीं है, इसलिये कि हदीष से साफ़ ये प्राबित होता है कि तमतोअ सबसे अफ़ज़ल है। हासिले कलाम ये कि ये मुकाम मुश्किल है और यही वजह है कि हज़रत उम्मान (रज़ि.) को हज़रत अली (रज़ि.) के मुकाबिल कुछ जवाब न बन पड़ा। इस सिलसिले में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं,

व फ़ी किस्सति उम्मान व अली मिनल्फ़वाइदि इशाअतुल्इल्मि मा इन्दहू मिनल्इल्मि व इज़हारिही व मुनाज़रति वुलातिल्उमूरि व गैरिहिम फ़ी तहंकीकिही लिमन कविय्युन अला ज़ालिक लिक्कसदिम्मिन्ना सिह्त्तुल्मुस्लिमीन वल्बयानि बिल्फ़ैअलि मअल्कौलि व जवाज़ि इस्तिम्बातिम्मिन्सिस्सि लिअन्न उम्मान लम यख़फ़ अलैहि अन्तयत्तुअ वल्किरान जाइज़ानि व इन्नमा नहा अन्हुमा लियअमला बिल्अफ़ज़लि कमा वक्रअ लिउमर व लाकिन ख़शिय अला अय्यहमिल गैरहू अन्नहयु अलत्तहरीमि फ़अशाअ जवाज़ ज़ालिक व कुल्लम्मिन्हुपा मुज्त्हिदुन माज़ज़ुन (फ़तुल बारी)

या'नी हज़रत उम्मान और हज़रत अली (रज़ि.) के बयान किये गये वाक़िये में बहुत से फ़वाइद हैं। मसलन जो कुछ किसी के पास इल्म हो उसकी इशाअत करना और अहले इस्लाम की ख़ैर-ख़्वाही के लिये अम्ने हक़ का इज़हार करना यहाँ तक कि अगर मुसलमान हाकिमों से मुनाज़रा तक की नौबत आ जाए तो ये भी कर डालना और किसी अम्ने हक़ का सिर्फ़ बयान ही न करना बल्कि उस पर अमल भी करके दिखलाना और नफ़्स से किसी मसले का इस्तिम्बात करना। क्योंकि हज़रत उम्मान (रज़ि.) से ये चीज़ छुपी हुई न थी हज़े तमतोअ और किरान भी जाइज़ हैं मगर उन्होंने अफ़ज़ल पर अमल करने के ख़याल से तमतोअ को मना फ़र्माया। जैसा कि हज़रत उमर (रज़ि.) से भी वाक़िया हुआ और हज़रत अली (रज़ि.) ने उसे इस पर महमूल कर लिया कि अबामुन्नास कहीं इस नहीं को तहरीम पर महमूल न कर ले। इसलिये उन्होंने उसके जवाज़ का इज़हार किया बल्कि अमल भी करके दिखला दिया। पस उनमें दोनों ही मुज्त्हिद हैं और दोनों को अज़ो-ववाब मिलेगा।

इससे ये भी ज़ाहिर हुआ कि नेक निय्यती के साथ कोई फ़ुरूई इख़ितलाफ़ वाक़ेअ हो तो उस पर एक-दूसरे को बुरा-भला नहीं कहना चाहिये। बल्कि सिर्फ़ अपनी तहकीक़ पर अमल करते हुए दूसरे का मुआमला अल्लाह पर छोड़ देना चाहिये। ऐसे फ़ुरूई उमूर में इख़ितलाफ़े फ़हम (समझ का फेर) का होना कुदरती चीज़ है। जिसके लिये सैकड़ों मिशालें सलफ़े-सालेहीन में मौजूद हैं। मगर सद् अफ़सोस कि आज के दौर के कम-फ़हम इलमा ने ऐसे ही इख़ितलाफ़ात को राई का पहाड़ बनाकर उम्मत को तबाह व बर्बाद करके रख दिया। अल्लाहुम्माहम अला उम्पति हबीबिक

बाब 35 : अगर कोई लब्बैक में हज का नाम ले

۳۵- بَابُ مَنْ لَبَّى بِالْحَجِّ وَسَمَاءُ

या'नी लब्बैक हज की पुकारे और हज का एहराम बाँधे तब भी मक्का में पहुँचकर हज को फ़सख़ कर सकता है और उम्ह करके एहराम खोल सकता है।

1570. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, कहा कि मैंने मुजाहिद से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ आए तो हमने हज की लब्बैक पुकारी। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया तो हमने उसे उम्ह बना लिया।

۱۵۷۰- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ قَالَ : سَمِعْتُ مُجَاهِدًا يَقُولُ حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((لَبَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَنَحْنُ نَقُولُ : كَلِمَةُ اللَّهِ كَلِمَةُ اللَّهِ بِالْحَجِّ، فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَعَمَلْنَا عُمْرَةً)).

[راجع: ۱۵۵۹]

बाब 36 : नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में

۳۶- بَابُ التَّمَتُّعِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ

तमत्तोअ का जारी होना

ﷺ

1571. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माम बिन यह्या ने क़तादा से बयान किया, कहा कि मुझसे मुत्तरिफ़ ने इमरान बिन हुसैन से बयान किया, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में हमने तमत्तोअ किया था और खुद कुर्आन में तमत्तोअ का हुक्म नाज़िल हुआ था। अब एक शख्स ने अपनी राय से जो चाहा कह दिया।

(दीगर मज़तम : 4518)

١٥٧١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي مُطَرِّفٌ عَنْ عِمْرَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((تَمَتَّنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، وَنَزَلَ الْقُرْآنُ، قَالَ رَجُلٌ بِرَأْيِهِ مَا شَاءَ)).

[طرمه في : ٤٥١٨]

बाब 37 : अल्लाह का सूरह बक़र: में ये फ़र्मांना

तमत्तोअ या कुर्बानी का हुक्म उन लोगों के लिये है जिनके घर वाले मस्जिदे हुराम के पास न रहते हों

٣٧- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ:

لَهُذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ [البقرة: ١٩٦]

तशरीह : इब्तिलाफ़ है कि हाज़िरिल मस्जिदिल हुराम कौन लोग हैं। इमाम मालिक के नज़दीक अहले मक्का मुराद हैं। कुछ के नज़दीक अहले हरम। हमारे इमाम अहमद बिन हंबल और शाफ़िई का क़ौल है कि वो लोग मुराद हैं जो मक्का से मसाफ़ते क़स्र के अंदर रहते हों। इन्फ़िया के नज़दीक मक्का वालों को तमत्तोअ दुरुस्त नहीं और शाफ़िई वग़ैरह का क़ौल है कि मक्का वाले तमत्तोअ कर सकते हैं लेकिन उन पर कुर्बानी या रोज़े वाजिब नहीं और ज़ालिक का इशारा उसी तरफ़ है या'नी ये कुर्बानी और रोज़ा का हुक्म। इन्फ़िया कहते हैं कि ज़ालिक का इशारा तमत्तोअ की तरफ़ है या'नी तमत्तोअ उसी को जाइज़ है जो मस्जिदे हुराम के पास न रहता हो या'नी आफ़ाक़ी हो। (वहीदी)

1572. और अबू कामिल फुज़ैल बिन हुसैन बज़री ने कहा कि हमसे अबू मज़अशर यूसुफ़ बिन यज़ीद बरा ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्माम बिन गयाज़ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने, इब्ने अब्बास (रज़ि.) से हज्ज में तमत्तोअ के बारे में पूछा गया। आपने फ़र्माया कि हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर मुहाज़िरीन अंसार नबी करीम (ﷺ) की अज़्वाज और हम सबने एहराम बाँधा था। जब हम मक्का आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने एहराम को हज्ज और उम्ह दोनों के लिये कर लो लेकिन जो लोग कुर्बानी का जानवर अपने साथ लाए हैं (वो उम्ह करने के बाद हलाल नहीं होंगे) चुनाँचे हमने बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा मरवा की सई कर ली तो अपना एहराम खोल डाला और हम अपनी बीवियों के पास गये और सिले हुए कपड़े पहने। आपने फ़र्माया था कि जिसके साथ कुर्बानी का जानवर है उस वक़्त तक हलाल नहीं हो सकता जब तक हदी अपनी जगह न पहुँच ले (या'नी

١٥٧٢- وَقَالَ أَبُو كَامِلٍ فَضَيْلُ بْنُ حُسَيْنٍ الْبَصْرِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو مَعْشَرٍ الْهَرَمِيُّ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عِيَّاثٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَأَلَ عَنْ مَنَعَةِ الْحَجِّ فَقَالَ ((أَهْلُ الْمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارِ وَأَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ فِي حَبَّةِ الْوُدَاعِ وَأَهْلُنَا، فَلَمَّا قَدِمْنَا مَكَّةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((اجْعَلُوا إِغْلَاكُكُمْ بِالْحَجِّ عُمْرَةً إِلَّا مَنْ قَلَّدَ التَّهْدِي، طَفْنَا بِالنِّسَاءِ وَتَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ وَآتَيْنَا النِّسَاءَ وَلَبَسْنَا الْقِيَابَ))، وَقَالَ: ((مَنْ قَلَّدَ التَّهْدِي فَإِنَّهُ لَا يَجِزُّ لَهُ حَتَّى يَبْلُغَ التَّهْدِي

कुर्बानी न हो ले) हमें (जिन्होंने हदी साथ नहीं ली थी) आप (ﷺ) ने आठवीं तारीख की शाम को हुक्म दिया कि हम हज का एहराम बाँध लें। फिर जब हम मनासिके हज से फ़ारिश हो गये तो हमने आकर बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा मरवा की सई की, फिर हमारा हज पूरा हो गया और अब कुर्बानी हम पर लाजिम हुई। जैसा कि अल्लाह तआला का इशार्द है, जिसे कुर्बानी का जानवर मयस्सर हो (तो वो कुर्बानी करे) और अगर किसी को कुर्बानी की ताकत न हो तो तीन रोजे हज में और सात दिन घर वापस होने पर रखे (कुर्बानी में) बकरी भी काफ़ी है। तो लोगों ने हज और इम्रह दोनों इबादतें एक ही साल में एक साथ अदा कीं। क्योंकि अल्लाह तआला ने खुद अपनी किताब में ये हुक्म नाज़िल किया था और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस पर खुद अमल करके तमाम लोगों के लिये जाइज़ करार दिया था। अल्बत्ता मक्का के बाशिन्दों का इससे इस्तिज़्ना है। क्योंकि अल्लाह तआला का फ़र्मान है, ये हुक्म उन लोगों के लिये है जिनके घर वाले मस्जिदुल हुराम के पास रहने वाले न हों और हज के जिन महीनों का कुर्बान में ज़िक्र है वो शव्वाल, ज़ीक़अद और ज़िल्हिज्ज हैं। इन महीनों में जो कोई भी तमत्तोअ करे वो या कुर्बानी दे या अगर मक्दूर (सामर्थ्य) न हो तो रोज़े रखे और रफ़ुन का मा'नी जिमाअ (या फ़हश बातें) और फुसूक गुनाह और जिदाल लोगों से झगड़ना।

बाब 38 : मक्का में दाखिल होते वक़्त गुस्ल करना

1573. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अलिया ने बयान किया, उन्हें अथ्यूब सुखितयानी ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्होंने बयान किया कि जब अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) हरम की सरहद के पास पहुँचते तो तल्बिया कहना बन्द कर देते। रात ज़ी तवा में गुज़ारते, सुबह की नमाज़ वहीं पढ़ते और गुस्ल करते (फिर मक्का में दाखिल होते) आप बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) भी इसी तरह किया करते थे। (राजेअ : 1553).

مَجْلَةً)). ثُمَّ أَمَرْنَا عَشِيَّةَ التَّوْبَةِ أَنْ نَهْلَ بِالنَّحْيِ، فَإِذَا قَرَعْنَا مِنَ الْمَنَاسِكِ جَنَّا لَطْفًا يَأْتِيَتُ وَالْمَتَا وَالْمَرْوَةَ فَقَدْ تَمَّ حَجُّنَا وَعَلَيْنَا الْهَدْيُ كَمَا قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَمَّا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ، لَمَنْ لَمْ يَجِدْ لَصِيَامَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ﴾ إِلَى أَصْغَارِكُمْ، الشَّاءَ تَجْزِي. فَجَمَعُوا لُسْكِينَ فِي غَامِ بَيْنِ النَّحْيِ وَالْعَمْرَةِ، فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى أَنْزَلَهُ فِي كِتَابِهِ وَسَنَّهُ نَبِيُّهُ ﷺ وَأَبَاحَهُ لِلنَّاسِ غَيْرَ أَهْلِ مَكَّةَ. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿وَذَلِكَ لِأَنَّ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾ وَأَشْهُرُ النَّحْيِ الَّتِي ذَكَرَ اللَّهُ تَعَالَى: شَوَّالٌ وَذُو الْقَعْدَةِ وَذُو الْحِجَّةِ، لَمَنْ تَمَتَّعَ فِي هَذِهِ الْأَشْهُرِ لَعَلَّهِ دَمٌ أَوْ صَوْمٌ)). وَالرَّفْتُ الْجَمَاعَ، وَالْفُسُوقَ الْمُعَاصِي، وَالْجِدَالَ الْمِرَاءَ.

۳۸- بَابُ الْإِغْيَسَالِ عِنْدَ دُخُولِ

مَكَّةَ

۱۵۷۳- حَدَّثَنَا يَنْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: ((كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا إِذَا دَخَلَ أَذَى الْحَرَمِ أَمْسَكَ عَنِ التَّلْبِيَةِ. ثُمَّ بَيَّتَ بِذِي طَوِيٍّ، ثُمَّ يُصَلِّي بِالصُّبْحِ وَيَتَغَسَّلُ، وَيُحَدِّثُ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ)). [راجع: ۱۵۵۳]

ये गुस्ल हर एक के लिये मुस्तहब है गोया वो हाइज़ा हो या निफ़ास वाली औरत हो। अगर कोई तन्दूम से उम्रे का एहराम बाँधकर आए तो मक्का में घुसते वक़्त फिर गुस्ल करना मुस्तहब नहीं क्योंकि तन्दूम मक्का से बहुत करीब है। अल्बत्ता अगर दूर से एहराम बाँधकर आया हो जैसे जिअराना या हुदैबिया से तो फिर गुस्ल कर लेना मुस्तहब है। (क़स्तलानी रह)

३९- بَابُ دُخُولِ مَكَّةَ نَهَارًا أَوْ لَيْلًا : बाब 39 : मक्का में रात और दिन में दाखिल होना

नुस्खा मत्बूआ मिस्र में उसके बाद इतनी इबारत ज़्यादा है, बातन्नबिय्यु (ﷺ) बिज़ीतवा हत्ता अस्बह धुम्म दखल मक्कत या'नी आप रात को ज़ी तुवा में रह गए सुबह तक फिर मक्का में दाखिल हुए। बाब के तर्जुमा में रात को भी दाखिल होना मज़कूर है। लेकिन कोई हदीस इस मज़मून की हज़रत इमाम बुखारी (रह.) नहीं लाए। अस्हाबे सुन्न ने रिवायत किया कि आप जिअराना के इम्रह में मक्का में रात को दाखिल हुए और शायद इमाम बुखारी (रह.) ने इस तरफ़ इशारा किया। कुछ ने यूँ जवाब दिया कि ज़ी तुवा खुद मक्का में है और आप शाम को वहाँ पहुँचे थे तो उससे रात में दाखिल होने का जवाज़ निकल आया। बहरहाल रात हो या दिन दोनों हाल में दाखिल होना जाइज़ है।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, व अम्महुख़लू लैलन फ़लम यकअ मिन्हु (ﷺ) इल्ला फ़ी उमरतिल्जिअरानति फइन्नहू (ﷺ) अहरम मिनल्जिअरानति व दखल मक्कत लैलन फ़कज़ा अमरल्उमरति धुम्म रजअ लैलन फअस्बह बिल्जिअरानति कबाइतिन कमा रवाहुस्सुननिष्बलाषति मन हदीषि मिअरशिल्कअबी व तरज्जम अलैहिन्नसई दुखूल मक्कत लैलन व रवा सअदुब्नु मन्सूरिन अन इब्राहीम अन्नखइ क़ाल कानू यस्तहिब्बून अंय्यदखूलू मक्कत नहारन व यखरूजु मिन्हा लैलन व अख्रज अन अताइन इन शिअतुम फदखूलू लैलन इन्नकुम लस्तुम करसूलिह्नाहि (ﷺ) अन्नहू कान इमामुन फअहब्बु अंय्यदखूलुहा नहारन लियराहुन्नास इन्तिहा व कज़िय्यतु हाज़ा इन्न मन कान इमामन युक्तदा बिही अस्तहिब्बु लहू अंय्यदखूलुहा नहारन

या'नी अहज़रत (ﷺ) का मक्का शरीफ़ में रात को दाखिल होना ये सिर्फ़ उम्रह-ए-जजअराना में फ़ाबित है जबकि आपने जजअराना से एहराम बाँधा और रात को आप मक्का शरीफ़ में दाखिल हुए और उसी वक़्त उम्रह करके रात ही को वापस हो गए और सुबह आपने जजअराना ही में की। गोया आपने सारी रात यहीं गुज़ारी है जैसा कि अस्हाबे सुन्न ने प्रलाषट ने रिवायत किया है। बल्कि निसाई ने इस पर बाब बाँधा कि मक्का में रात को दाखिल होना और इब्राहीम नखई से मरवी है कि वो मक्का शरीफ़ में दिन को दाखिल होना मुस्तहब जानते थे और रात को वापस होना और अत्ता ने कहा कि अगर तुम चाहो रात को दाखिल हो जाओ तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) जैसे नहीं हो, आप (ﷺ) इमाम और मुक्तदा थे, आपने इसी को पसंद किया कि दिन में आप दाखिल हों और लोग आपको देखकर मुत्मईन हों। खुलासा ये कि जो कोई भी इमाम हो उसके लिये यही मुनासिब है कि दिन में मक्का शरीफ़ में दाखिल हो।

1574. हमसे मुसद्द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे माफ़ेअ ने इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान किया, आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़ी तुवा में रात गुज़ारी। फिर जब सुबह हुई तो आप मक्का में दाखिल हुए। इब्ने उमर (रज़ि.) भी इसी तरह किया करते थे।

(राजेअ: 1553)

बाब 40 : मक्का में किधर से दाखिल हों

1575. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उनसे

١٥٧٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

عَنْ عُثَيْبِ بْنِ أَبِي رَبِيعٍ قَالَ : حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ

عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : «بَاتَ النَّبِيُّ

ﷺ بِلَدِي طَوًى حَتَّى أَمْتَحَ ثُمَّ دَخَلَ

مَكَّةَ، وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

يَقُولُ:» [راجع: ١٥٥٣]

٤٠- بَابُ مِنْ أَيْنَ يَدْخُلُ مَكَّةَ

١٥٧٥- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ :

मअन बिन ईसा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे नाफेअ ने और उनसे इब्ने इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में बुलंद घाटी (या'नी जन्नतुल मुअल्ला) की तरफ से दाखिल होते और निकलते प्रनिय्या सुफ्ला की तरफ से या'नी नीचे की घाटी (बाबे शबीकत) की तरफ से। (दीगर मक़ाम 1576)

बाब 41 : मक्का से जाते वक्त कौनसी राह से जाए
1576. हमसे मुसहद बिन मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह इमरी ने, उनसे नाफेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) प्रनिय्या उलिया या'नी मुक़ामे कदाअ की तरफ से दाखिल होते जो बट्हा में है। और प्रनिय्या सुफ्ला की तरफ से निकलते थे या'नी नीचे वाली घाटी की तरफ से।

(राजेअ 1575)

तशरीह : इन हदीषों से मा'लूम हुआ कि मक्का में एक राह से आना और दूसरी राह से जाना मुस्तहब है। नुस्खा मत्बूआ मिस्र में यहाँ इतनी इबारत ज़्यादा है, क़ाल अबू अब्दिल्लाहि कान युक़ालु हुव मुसहद कइस्मिही क़ाल अबू अब्दिल्लाहि समिअतु यह्या बिन मईन यक़ूलु समिअतु यह्या बिन सईद अलक़त्तान यक़ूलु लौ अन्न मुसहद अतैतुहू फ़ी बैतिही फहदष्टुहू लिइस्हाक़ ज़ालिक व मा उबाली कुतुबी कानत इन्दी ओ इन्द मुसहद या'नी इमाम बुखारी (रह.) ने कहा मुसहद इस्मे बामुस्मा थे या'नी मुसहद के मा'नी अरबी जुबान में मज़बूत और दुरुस्त के हैं तो वो हदीष की रिवायत में मज़बूत और दुरुस्त थे और मैंने यह्या बिन मुईन से सुना, वो कहते हैं मैंने यह्या क़त्तान से सुना, वो कहते थे अगर मैं मुसहद के घर जाकर उनको हदीष सुनाया करता तो वो इसके लायक़ थे और मेरी किताबें हदीष की मेरे पास रहीं या मुसहद के पास मुझे कुछ परवाह नहीं। गोया यह्या क़त्तान ने मुसहद की बेहद तारीफ़ की।

1577. हमसे हुमैदी और मुहम्मद बिन मुशत्रा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में तशरीफ़ लाए तो ऊपर की बुलन्द जानिब से शहर के अंदर दाखिल हुए और (मक्का से) वापस जब गये तो नीचे की तरफ़ से निकल गये। (दीगर मक़ाम 1578, 1579, 1580, 1581, 4290, 4291)

حَدَّثَنِي مَعْنُ قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدْخُلُ مَكَّةَ مِنَ النَّبِئَةِ الْعُلْيَا، وَيَخْرُجُ مِنَ النَّبِئَةِ السُّفْلَى)).
[طرفه في : 1076]

41- باب من أين يخرج من مكة
1076- حَدَّثَنَا مُسَدَّدُ بْنُ مُسْرَهَدٍ الْبَصْرِيُّ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ دَخَلَ مَكَّةَ مِنْ كِنَاءِ مِنَ النَّبِئَةِ الْعُلْيَا الَّتِي بِالْبَطْحَاءِ، وَيَخْرُجُ مِنَ النَّبِئَةِ السُّفْلَى)). [راجع : 1075]

1577- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَا حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ غَزْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمَّا جَاءَ إِلَى مَكَّةَ دَخَلَ مِنْ أَعْلَاهَا وَخَرَجَ مِنْ أَسْفَلِهَا)).

[أطرافه في : 1078, 1079, 1080]

1081, 4290, 4291- [4291]

1578. हमसे महमूद बिन गीलान मरवज़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन इर्वा ने बयान किया। उनसे उनके वालिद इर्वा बिन जुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे मक्का के मौक़े पर शहर में कदाअ की तरफ़ से दाख़िल हुए और कुदा की तरफ़ से निकले जो मक्का के बुलन्द जानिब है। (राजेअ 1577)

कदाअ बिल मद एक पहाड़ है मक्का के नज़दीक और कुदाअ बिज़्जाम काफ़ भी एक दूसरा पहाड़ है जो यमन के रास्ते है। ये रिवायत बज़ाहिर अगली रिवायतों के खिलाफ़ है। लेकिन किरमानी ने कहा कि ये फ़तहे मक्का का ज़िक्र है और अगली रिवायतों में हज्जतुल बिदाअ का। हाफ़िज़ ने कहा ये रावी की ग़लती है और ठीक ये है कि आप कदाअ या नबी बुलन्द जानिब से दाख़िल हुए थे ये इबारत मिअ़ाला कदा मक्कत के बारे में है न कदाअ बिल क़सर से। (वहीदी)

1579. हमसे अहमद बिन ईसा ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह इब्ने वहाब ने बयान किया, कहा कि हमें अम्र बिन हारि़्म ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन इर्वा ने, उन्हें उनके वालिद इर्वा बिन जुबैर ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे मक्का के मौक़े पर दाख़िल होते वक़्त मक्का के बालाई इलाक़े कदाअ से दाख़िल हुए। हिशाम ने बयान किया कि इर्वा अगरचे कदाअ और कुदा दोनों तरफ़ से दाख़िल होते थे लेकिन अक़़र कदाअ से दाख़िल होते क्योंकि ये रास्ता उनके घर से करीब था। (राजेअ: 1577)

1580. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हातिम बिन इस्माईल ने हिशाम से बयान किया, उनसे इर्वा ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे मक्का के मौक़े पर मक्का के बालाई इलाक़े कदाअ की तरफ़ से दाख़िल हुए थे। लेकिन इर्वा अक़़र कदाअ की तरफ़ से दाख़िल होते थे क्योंकि ये रास्ता उनके घर से करीब था। (राजेअ: 1577)

1581. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने अपने बाप से बयान किया, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे मक्का के मौक़े पर कदाअ से दाख़िल

۱۵۷۸- حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غِيْلَانَ الْمَرْوَزِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ غُرُوةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ مِنْ كَدَاءٍ وَخَرَجَ مِنْ كُدَا مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ)). [راجع: ۱۵۷۷]

۱۵۷۹- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَمْرُو عَنْ هِشَامِ بْنِ غُرُوةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ مِنْ كَدَاءٍ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ)). قَالَ هِشَامُ وَكَانَ غُرُوةَ يَدْخُلُ عَلَى كِلَيْهِمَا - مِنْ كَدَاءٍ وَكُدَا - وَأَكْثَرُ مَا يَدْخُلُ مِنْ كَدَاءٍ، وَكَانَتْ أَقْرَبَهُمَا إِلَى مَنْزِلِهِ. [راجع: ۱۵۷۷]

۱۵۸۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ غُرُوةَ قَالَ ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ مِنْ كَدَاءٍ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ، وَكَانَ غُرُوةَ أَكْثَرُ مَا يَدْخُلُ مِنْ كَدَاءٍ، وَكَانَ أَقْرَبَهُمَا إِلَى مَنْزِلِهِ)). [راجع: ۱۵۷۷]

۱۵۸۱- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا وَهْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ مِنْ كَدَاءٍ وَكَانَ غُرُوةَ

हुए थे। उर्वा खुद अगरचे दोनों तरफ से (कदाअ और कुदा) दाखिल होते लेकिन अक़्बर कदाअ की तरफ से दाखिल होते थे क्योंकि ये रास्ता उनके घर से करीब था। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि कदाअ और कुदा दो मक़ामात के नाम हैं।

बाब 42 : फ़ज़ाइले मक्का और का'बा की बिना का बयान

और अल्लाह तआला का इर्शाद, और जबकि मैंने ख़ान-ए-का'बा को लोगों के लिये बार बार लौटने की जगह बना दिया और उसको अमन की जगह कर दिया और (मैंने हुक्म दिया) कि मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बनाओ और मैंने इब्राहीम और इस्माईल से अहद लिया कि वो दोनों मेरे मकान को तवाफ़ करने वालों और ए'तिकाफ़ करने वालों और रुकूअ सज्दा करने वालों के लिये पाक कर दें। ऐ अल्लाह! इस शहर को अमन की जगह कर दे और यहाँ के इन रहने वालों को फलों से रोज़ी दे जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान लाएँ सिर्फ़ उनको, उसके जवाब में अल्लाह तआला ने फ़र्माया और जिसने कुफ़्र किया उसको मैं दुनिया में चंद रोज़ मज़े करने दूँगा फिर उसे दोज़ख़ के अज़ाब में खींच लाऊँगा और वो बुरा ठिकाना है। और जब इब्राहीम व इस्माईल (अलैहिमस्सलाम) ख़ान-ए-का'बा की बुनियाद उठा रहे थे (तो वो यूँ दुआ कर रहे थे) ऐ हमारे रब! हमारी इस कोशिश को कुबूल फ़र्मा। तू ही हमारी (दुआओं को) सुनने वाला और (हमारी निर्यतों को) जानने वाला है। ऐ हमारे रब! हमें अपना फ़र्माबरदार बना और हमारी नस्ल से एक जमाअत बना जो तेरी फ़र्माबरदार हो। हमको अहकामे हज़्ज सिखा और हमारे ह्वाल पर तवज्जह फ़र्मा कि तू बहुत ही तवज्जह फ़र्माने वाला है और बड़ा रहीम है। (अल बक़र : 125-128)

1582. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम नबील ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी, कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि (ज़मान-ए-जाहिलियत में) जब का'बा की ता'मीर हुई तो नबी करीम (ﷺ) और अब्बास (रज़ि.) भी पत्थर उठाकर ला रहे थे। अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ)

يَدْخُلُ مِنْهُمَا كِلَاهُمَا، وَكَانَ أَكْثَرُ مَا يَدْخُلُ مِنْ كَدَاءِ أَلْفَرَبْهُمَا إِلَى مَنْزِلِهِ)).
قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ : كَدَاءٌ وَكَدَاءٌ مُوَضِعَانِ.
[راجع: 1077]

42 - بَابُ فَضْلِ مَكَّةَ وَبَنِيَانِهَا

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمَّا وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ. وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ. وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ. رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا، إِنَّكَ أَنْتَ الْعَوَّابُ الرَّحِيمُ﴾ [البقرة: 125-128]

128-125

1582 - حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ اللَّهِ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ اللَّهِ وَصِيَّ اللَّهِ عَنْهُمَا يَقُولُ : ((لَمَّا بُنِيَتِ الْكَعْبَةُ ذَهَبَ

स कहा कि अपना तहबन्द उतारकर काँधे पर डाल लो (ताकि पत्थर उठाने में तकलीफ न हो) आँहुजूर (ﷺ) ने ऐसा किया तो नंगे होते ही बेहोश होकर आप ज़मीन पर गिर पड़े और आपकी आँखें आसमान की तरफ लग गई। आप कहने लगे मुझे मेरा तहबन्द दे दो। फिर आप (ﷺ) ने उसे मजबूत बाँध लिया। (राजेअ: 126)

तशरीह:

उस जमाने में मेहनत-मजदूरी के समय नंगे होने में बुराई नहीं समझी जाती थी। लेकिन चूँकि ये काम मुरुब्बत और गैरत के खिलाफ था, अल्लाह ने अपने हबीब के लिये उस वक़्त भी ये गवारा न किया हालांकि उस वक़्त तक आपको पैग़म्बरी नहीं मिली थी।

1583. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने कि अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र ने उन्हें ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की पाक बीवी हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि आँहुजूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया क्या तुझे मा'लूम है जब तेरी क़ौम ने का'बा की ता'मीर की तो बुनियादे इब्राहीम को छोड़ दिया था मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर आप बुनियादे इब्राहीम पर उसको क्यूँ नहीं बना देते? आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी क़ौम का ज़माना कुफ़्र से बिलकुल नज़दीक न होता तो मैं बेशक ऐसा कर देता।

अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कहा कि अगर आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने ये बात रसूलल्लाह (ﷺ) से सुनी है (और यक़ीनन हज़रत आइशा रज़ि. सच्ची हैं) तो मैं समझता हूँ यही वजह थी जो आँहुज़रत (ﷺ) हत्तीम से मुत्तसिल (लगी हुई) दीवारों के जो कोने हैं उनको नहीं चूमते थे क्योंकि ख़ान-ए-का'बा इब्राहीमी बुनियादों पर पूरा न हुआ था। (राजेअ: 126)

तशरीह:

क्योंकि हत्तीम हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की बिना में का'बा में दाख़िल था। कुरेश ने पैसा कम होने की वजह से का'बा को छोटा कर दिया और हत्तीम को ज़मीन का'बा के बाहर छूटी हुई रहने दी। इसलिये तवाफ़ में हत्तीम को शामिल कर लेते हैं। (वहीदी)

1584. हमसे मुसहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबुल अहवस सलाम बिन सुलैम ने बयान किया, उनसे

النَّبِيُّ ﷺ وَعَبَّاسُ بْنُ قُلَافٍ الْجِطَارِيُّ، قَالَ: أَمْسَسَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: اجْعَلَ لِأَرْكَ عَلَى رَقَبِكَ، فَعَمَرَ إِلَى الْأَرْضِ، فَطَمَحَتْ عَيْنُهُ إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ: أُرِي لِي إِدَارِي، فَشَنَّةٌ عَلَيْهِ)). [راجع: ١٢٦]

١٥٨٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مُحَمَّدٍ بْنَ أَبِي بَكْرٍ أَخْبَرَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ رَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ لَهَا: ((أَلَمْ تَرَيِ أَنْ قَوْمَكَ جَنَنُوا الْكَلِمَةَ أَقْصَرُوا عَنْ قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَا تَرْفَعَا عَلَى قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ؟ قَالَ: ((لَوْ لَا جِدَّتَانِ قَوْمِي بِالْكَفْرِ لَفَعَلْتُ)).

فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: لَيْنَ كَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا مَسُوفَةً هَذَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مَا أَرَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ تَوَلَّى اسْتِلَامَ الرُّكْنَيْنِ اللَّذَيْنِ بَيْنَ التَّحْفَرِ إِلَّا أَنْ أَتَيْتُ لَمْ يُعِمْ عَلَى قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ. [راجع: ١٢٦]

١٥٨٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَخْوَصِ قَالَ حَدَّثَنَا أَهْمْتُ عَنْ الْأَسْوَدِ

अशअष ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि क्या हत्तीम भी बैतुल्लाह में दाखिल है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, फिर मैंने पूछा कि फिर लोगो ने उसे का'बा में क्यों नहीं शामिल किया? आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि तुम्हारी क़ौम के पास खर्च की कमी पड़ गई थी। फिर मैंने पूछा कि ये दरवाज़ा क्यों ऊँचा बनाया? आपने फ़र्माया कि ये भी तुम्हारी क़ौम ही ने किया ताकि जिसे चाहें अंदर आने दें और जिसे चाहें रोक दें। अगर तुम्हारी क़ौम की जाहिलियत का ज़माना ताज़ा-ताज़ा न होता और मुझे इसका डर न होता कि उनके दिल बिगड़ जाएँगे तो इस हत्तीम को भी मैं ख़ान-ए-का'बा में शामिल कर देता और का'बा का दरवाज़ा ज़मीन के बराबर कर देता। (राजेअ 126)

1585. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, अगर तुम्हारी क़ौम का ज़माना कुफ़्र से अभी ताज़ा न होता तो मैं ख़ान-ए-का'बा को तोड़कर उसे इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की बुनियाद पर बनाता क्योंकि कुरैश ने उसमें कमी कर दी है। उसमें एक दरवाज़ा और उस दरवाज़े के मुक़ाबिल रखता। अबू मुआविया ने कहा हमसे हिशाम ने बयान किया। हदीज़ में ख़ल्फ़ से दरवाज़ा मुराद है। (राजेअ 126)

तशीह: अब का'बा में एक ही दरवाज़ा है वो भी आदमी के क़द से ज़्यादा ऊँचा है। दाखिले के वक़्त लोग बड़ी मुश्किल से सीढ़ी पर चढ़कर का'बा के अंदर जाते हैं और एक ही दरवाज़ा होने से उसके अंदर ताज़ी हवा मुश्किल से आती है। दाखिले के लिये का'बा शरीफ़ को हज़ के दिनों में बहुत थोड़ी मुदत के लिये खोला जाता है। अल्हम्दुलिल्लाह कि 1351 हिजरी के हज़ में का'बा शरीफ़ में मुतजिम् को दाखिला नज़ीब हुआ था। वल्हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक

1586. हमसे बयान बिन अमर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यज़ीद बिन रूमान ने बयान किया, उनसे इर्बा ने और उनसे

بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْجَنْزِ أَمِنَ الْبَيْتَ هُوَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قُلْتُ: فَمَا لَهُمْ لَمْ يُدْخِلُوهُ فِي الْبَيْتِ؟ قَالَ: ((إِنْ قَوْمَكَ قَصُرَتْ بِهِمُ النِّفَقَةُ)).

قُلْتُ: فَمَا شَأْنُ بَابِهِ مُرْتَفِعًا؟ قَالَ: ((فَعَلَ ذَلِكَ قَوْمَكَ لِيَدْخُلُوا مِنْ شَاءُوا وَيَخْرُجُوا مِنْ شَاءُوا، وَلَوْلَا أَنْ قَوْمَكَ حَدِيثَ عَهْلِهِمْ بِالْجَاهِلِيَّةِ فَخَافَ أَنْ تُتَكَبَّرَ قُلُوبُهُمْ أَنْ أَدْخَلَ الْجَنْزَ فِي الْبَيْتِ وَأَنْ أَلْصَقَ بَابَهُ بِالْأَرْضِ)). [راجع: ١٢٦]

١٥٨٥- حَدَّثَنَا عُمَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَوْ لَا حَدَاثَةُ قَوْمِكَ بِالْكَفْرِ لَنَقَضْتُ الْبَيْتَ ثُمَّ لَبَيْتُهُ عَلَى أَسَاسِ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ، لِأَنِّي قُرَيْشًا اسْتَقْصَرْتُ بِنَاءَهُ، وَجَعَلْتُ لَهُ خَلْفًا)). قَالَ أَبُو مُعَاوِيَةَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ:

خَلْفًا يَعْنِي بَابًا. [راجع: ١٢٦]

١٥٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَمْرِو قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ حَازِمٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ رُوْمَانَ عَنْ غُرْوَةَ عَنْ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, आइशा (रज़ि.)! अगर तेरी क़ौम का ज़माना जाहिलियत अभी ताज़ा न होता, तो मैं बैतुल्लाह को गिराने का हुक्म दे देता ताकि (नई ता'मीर में) इस हिस्से को भी दाखिल कर दूँ जो उससे बाहर रह गया है और उसकी कुर्सी ज़मीन के बराबर कर दूँ और उसके दो दरवाज़े बना दूँ, एक मशरिक में और एक मग़िब में। इस तरह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की बुनियाद पर उसकी ता'मीर हो जाती। अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) का का'बा को गिराने से यही मक़सद था। यज़ीद ने बयान किया कि मैं उस वक़्त मौजूद था जब अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने उसे गिराया था और उसकी नई ता'मीर करके हत्तीम को उसके अंदर कर दिया था। मैंने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की ता'मीर के पाए भी देखे जो ऊँट की कोहान की तरह थे। जरिर बिन हाज़िम ने कहा कि मैंने उनसे पूछा, उनकी जगह कहाँ है? उन्होंने फ़र्माया कि मैं अभी दिखाता हूँ। चुनाँचे मैं उनके साथ हत्तीम में गया और आपने एक जगह की तरफ़ इशारा करके कहा कि ये वो जगह है। जरिर ने कहा कि मैंने अंदाज़ा लगाया कि वो जगह हत्तीम में से छः हाथ होगी या ऐसी ही कुछ।

(राजेअ 126)

عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: «يَا عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ تَوْ لَا أَنْ قَوْمَكَ حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَةٍ لَأَمَرْتُ بِأَنْتِهِمْ فَهَدِمَ، فَأَدْخَلْتُ فِيهِ مَا أَخْرَجَ مِنْهُ، وَالزُّوْفَةَ بِالْأَرْضِ، وَجَعَلْتُ لَهُ بَابَيْنِ بَابًا شَرْقِيًّا وَبَابًا غَرْبِيًّا فَبَنَيْتُ بِهِ أَسَاسَ إِبْرَاهِيمَ»، فَذَلِكَ الَّذِي حَمَلَ ابْنُ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَلَى هَدْمِهِ. قَالَ يَزِيدُ: وَشَهِدْتُ ابْنَ الزُّبَيْرِ حِينَ هَدَمَهُ وَبَنَاهُ وَأَدْخَلَ فِيهِ مِنَ الْحِجْرِ، لَقَدْ رَأَيْتُ أَسَاسَ إِبْرَاهِيمَ حِجَارَةً كَأَسْنِمَةِ الْإِبِلِ. قَالَ جَرِيرٌ: فَقُلْتُ لَهُ أَيْنَ مَوْضِعُهُ؟ قَالَ: أَرِنَاكَ الْآنَ. فَدَخَلْتُ مَعَهُ الْحِجْرَ، فَأَشَارَ إِلَى مَكَانٍ فَقَالَ: هَا هُنَا؟ قَالَ جَرِيرٌ فَخَرَزْتُ مِنَ الْحِجْرِ سِتَّةَ أَذْرُعٍ أَوْ نَحْوَهَا.

[راجع: ١٢٦]

तशरीह: मा'लूम हुआ कि कुल हत्तीम की ज़मीन का'बा में शरीक न थी क्योंकि परनाले से लेकर हत्तीम की दीवार तक सत्रह हाथ जगह है और एक तिहाई हाथ दीवार का अर्ज दो हाथ और तिहाई है। बाक़ी 5 हाथ हत्तीम के अंदर है। कुछ कहते हैं कुल हत्तीम की ज़मीन का'बा में शरीक थी और हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में इस्तियाज़ (फ़र्क) के लिये हत्तीम के गिर्द एक छोटी सी दीवार उठा दी। (वहीदी)

जिस मुक़द्दस जगह पर आज खान-ए-का'बा की इमारत है ये वो जगह है जहाँ फ़रिश्तों ने पहले-पहल इबादत इलाही के लिये मस्जिद ता'मीर की थी। कुआन मजीद में है, इन्न अब्बन बैतिन वुज़िअ लिन्नासि लल्लज्जी बिबक़त मुबारकव्व हुदन लिल आलमीन (आले इमरान : 96) या'नी अल्लाह की इबादत के लिये और लोगों की हिदायत के लिये बरकत वाला घर जो सबसे पहले दुनिया के अंदर ता'मीर हुआ वो मक्का शरीफ़ वाला घर है।

इन्ने अबी शौबा, इस्हाक़ बिन राहवै, अब्द बिन हुमैद, हर्ष बिन अबी उसामा, इन्ने जरिर, इन्ने अबी हातिम और बैहक्की ने हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) से रिवायत किया है, इन्न रज़ुलन क़ाल लहू अ ला तुख़िबरनी अनिलबैति वुज़िअ फिल्अर्ज़ि क़ाल ला व लाकिन्नहू अब्वलु बैतिन वुज़िअ लिन्नासि फीहिल्बर्कतु वल्हुदा व मक्कामु इब्राहीम व मन दख़लहू कान अमन्नएक शख्स ने हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) से पूछा कि आया वो सबसे पहला मकान है जो रूप ज़मीन पर बनाया गया तो आपने इशार्द फ़र्माया कि ये बात नहीं है बल्कि ये मुतबर्क मुकामात में सबसे पहला मुक़ाम है जो लोगों के लिये ता'मीर किया गया इसमें बरकत और हिदायत है और मुक़ामे इब्राहीम है जो शख्स वहाँ दाखिल हो जाए उसको अमन मिल जाता है।

हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) का बैतुल्लाह को ता'मीर करना :

अब्दुर्रज़ाक़, इब्ने ज़रार, इब्ने मुज़िर, हज़रत अता से रिवायत करते हैं कि आपने फ़र्माया, क़ाल आदमु अय रब्बि मा ली ला अस्मउ अस्वातल्मलाइकति क़ाल लिखती अतिक व लाकिन इहबित इलल्अर्ज़ि फन्नि ली बैतन घुम् अहफिफ बिही कमा राइतल्मलाइकत तहुप्फु बैतियल्लज़ी फिस्समाइ फज़अमन्नासु अन्नहू खम्सत अज्बुलिन मिन हरा व लबनान व तूरिज़ीता व तूरि सीना वल्जूदी फकान हाज़ा बना आदमु हत्ता बनाहु इब्राहीमु बअद (तर्जुमा) हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि परवरदिगार क्या बात है कि मुझे फ़रिश्तों की आवाज़ें सुनाई नहीं देती। इशादि इलाही हुआ ये तुम्हारी उस लज़ि़श का सबब है जो शज़रे मम्नूआ के इस्ते'माल के बाअि़श तुमसे हो गई। लेकिन एक सूत अभी बाक़ी है कि तुम ज़मीन पर उतरो और हमारे लिये एक मकान तैयार करो और उसको घेरे रहो जिस तरह तुमने फ़रिश्तों को देखा है कि वो हमारे मकान को जो आसमान पर है घेरे हुए हैं। लोगों का ख़याल है कि इस हुक्म की बिना पर हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) ने कोहे हिरा, तूरे ज़ेता, तूरे सीना और जूदी ऐसे पाँच पहाड़ों के पत्थरों से बैतुल्लाह शरीफ़ की ता'मीर की, यहाँ तक कि उसके आषार मिट गए तो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उसके बाद नये सिरे से उसकी ता'मीर की। इब्ने ज़रार, इब्ने अबी हातिम और तब्रानी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्म बिन आस (रज़ि.) से रिवायत की है कि आपने फ़र्माया लम्मा अहबतल्लाहु आदम मिनल्जन्नति क़ाल इन्नी मुहबितन मअक बैतन युताफु हौलहु कमा युताफु हौल अशीं व युसल्ली इन्दहु कमा युसल्ली इन्द अशीं फलम्मा कान जमनत्तूफानि रफअहुल्लाहु इलैहि फकानतिल्अम्बिया यहुज्ज़नहू व ला यअलमून मकानहू हत्ता तवल्लाहुल्लाहु बअद लिइब्राहीम व आलामहू महानहू फबनाहु मिन खम्सति अज्बुलिन हरा व लबनान व ब़बीर व जबलुत्तूर व जबलुल्हमर व हुव जबलु बैतिल्मक्दिस

(तर्जुमा) अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने जब आदम (अलैहिस्सलाम) को जन्नत से ज़मीन पर उतारा तो इशाद फ़र्माया कि मैं तुम्हारे साथ एक घर भी उतारूँगा। जिसका तवाफ़ उसी तरह किया जाता है जैसा कि मेरे अर्श का तवाफ़ होता है और उसके पास नमाज़ उसी तरह अदा की जाएगी जिस तरह की मेरे अर्श के पास अदा की जाती है। फिर जब तूफ़ाने नूह का ज़माना आया तो अल्लाह तआला ने उसको उठा लिया। उसके बाद अंबिया (अलैहिस्सलाम) बैतुल्लाह शरीफ़ का हज़ज तो किया करते थे मगर उसका मुक़ाम किसी को मा'लूम न था। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उसका पता हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को दिया और उसकी जगह दिखा दी तो आपने उसको पाँच पहाड़ों से बनाया। कोहे हिरा, लिब्नान ब़बीर, जबलुल हम्र, जबलुत्तूर (जबलुल हम्र को जबले बैतुल मक्दिस भी कहते हैं)।

अज़रकी और इब्ने मुज़िर ने हज़रत वहब बिन मुनब्बह से रिवायत की है कि आपने फ़र्माया अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने जब आदम (अलैहिस्सलाम) की तौबा कुबूल की तो उनको मक्का मुकर्रमा जाने का इशाद हुआ। जब वो चलने लगे तो ज़मीन और बड़े-बड़े मैदान लपेटकर मुख़्तसर कर दी गई। यहाँ तक कि एक एक मैदान जहाँ से वो गुज़रते थे एक क़दम के बराबर हो गया और ज़मीन में जहाँ कहीं समुन्दर या तालाब थे उनके दहाने में इतने छोटे कर दिए गये कि एक क़दम में उस तरफ़ पार हों। लेकिन दूसरा ये लुप्त था कि आपका क़दम ज़मीन पर जिस जगह पड़ता वहाँ एक एक बस्ती हो जाती और उसमें अजीब बरकत नज़र आती। चलते-चलते आप मक्का मुकर्रमा पहुँच गये। मक्का आने से पहले आदम (अलैहिस्सलाम) की आह व ज़ारी और आपका रंज व ग़म जन्नत से चले आने की वजह से बहुत था, यहाँ तक कि फ़रिश्ते भी आपके गिर्या की वजह से गिर्या करते और आपके रंज में शरीक होते थे। इसलिये अल्लाह तआला ने आपके गम दूर करने के लिये जन्नत का एक ख़ैमा इनायत फ़र्माया था जो मक्का में का'बा शरीफ़ के मुक़ाम पर नज़ब किया गया था। ये वक़्त वो था कि अभी का'बतुल्लाह को का'बा का लक़ब नहीं दिया गया था। उसी दिन का'बतुल्लाह के साथ रुक्न भी नाज़िल हुआ। उस दिन वो सफ़ेद याक़ूत और जन्नत का एक टुकड़ा था। जब हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) मक्का शरीफ़ आए तो अल्लाह तआला ने उनकी हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ले ली और उस ख़ैमे की हिफ़ाज़त फ़रिश्तों के ज़रिये कराई। ये ख़ैमा आपके आखिरी वक़्त तक वहीं लगा रहा। जब अल्लाह तआला ने आपकी रूह क़ब्ज़ फ़र्माई तो उस ख़ैमे को अपनी तरफ़ उठा लिया और आदम (अलैहिस्सलाम) के साहबज़ादों ने उसके बाद उस ख़ैमे की जगह मिट्टी और पत्थर का एक मकान बनाया। जो हमेशा आबाद रहा। आदम (अलैहिस्सलाम) के साहबज़ादे और उनके बाद वाली नस्लें एक के बाद एक उसकी आबादी का

इतिजाम करती रहीं जब नूह (अलैहिस्सलाम) का ज़माना आया तो वो इमारत गर्क हो गई और उसका निशान छुप गया। हज़रत हूद और स़ालेह (अलैहिमस्सलाम) के सिवा तमाम अंबिया-ए-किराम ने बैतुल्लाह की ज़ियारत की है : इब्ने इस्हाक़ और बैहकी ने हज़रत उर्वह (रज़ि.) से रिवायत की है कि आपने फ़र्माया, मामिन नबिय्यिन इल्ला व क़द हज्जलबैत इल्ला मा कान मिन हूदिन व सालिहिन व लक़ हज्जहू नूहन फलम्मा कान फिलअर्जि मा कान मिनल्गर्कि अ साबलबैत मा असाबलअर्ज रब्वतन हम्राअ फबअप्रल्लाहु अज़्ज़ व जल्ल हूदन फतगाशल बिमि कौमिही हत्ता क़ब्बजहुल्लाहु इलैहि फलम यहज्जहू हत्ता मात फलम्मा बब्वाहुल्लाहु लिइब्राहीम अलैहिस्सलाम हज्जहु धुम्म लम यब्क़ नबिय्युन बअदहू इल्ला हज्जहू (तर्जुमा) जिस क़दर अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) मब्रूफ़ हुए सबने बैतुल्लाह शरीफ़ का हज्ज किया, मगर हज़रत हूद और हज़रत स़ालेह (अलैहिमस्सलाम) को इसका मौक़ा न मिला। हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) ने भी हज्ज अदा किया है लेकिन जब आपके ज़माने में ज़मीन पर तूफ़ान आया और सारी ज़मीन पानी में डूब गई तो बैतुल्लाह को भी उससे हिस्सा मिला। बैतुल्लाह शरीफ़ एक लाल रंग का टीला रह गया था। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) को मब्रूफ़ फ़र्माया तो आपने हुक्मे इलाही के मुताबिक़ फ़रीज़ा-ए-तब्लीग़ की अदाएगी में मशगूल रहे और आपकी मशग़ुलियत इस दर्जा रही कि आपको आख़िर दम तक हज्ज करने का मौक़ा न मिला। फिर जब हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को बैतुल्लाह शरीफ़ बनाने का मौक़ा मिला तो उन्होंने हज्ज अदा किया और आपके बाद जिस क़दर अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) तशरीफ़ लाए सबने हज्ज अदा किया।

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का बैतुल्लाह को ता'मीर करना :

तब्कात इब्ने सअद में हज़रत अबू जहम बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि जनाब नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया औहल्लाहु अज़्ज़ व जल्ल इला इब्राहीम यामुरूहू बिल्मसीरि इला बलदिहिल्हरामि फरकिब इब्राहीमुल्बुराक़ व जअल इस्माइलु अमामहू व हुब इब्नु सनतनि व हाजिर खल्फ़हू व मअहू जिब्रइल यदुल्लुहू अला मौज़िल्बैति हत्ता क़दिम बिही मक्कत फअज़ल इस्माइल व उम्महू इला जानिबल्बैति धुम्म इन्सरफ़ इब्राहीमु इलइशामि धुम्म औहल्लाहु इला इब्राहीम अन तब्नियल्बैत व हुब यौमइज़िन इब्नु मिअति सनतिन व इस्माइलु यौमइज़िन इब्नु सलासीन सनतन फबनाहू मअहू व तुवफ़िक़य इस्माइलु बअद अबीहि फदुफिन दाख़िलल्हुज्जि मिम्मा यली या'नी अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को बज़रिये वद्दा हुक्म भेजा कि बलदुल हराम मक्का की तरफ़ चले। चुनौचे आप हुक्मे इलाही की ता'मील में बुराक़ पर सवार हो गए। अपने प्यारे नूर नज़र हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) को जिनकी उम्र शरीफ़ दो साल की थी, को अपने सामने और बीबी हाजरा को अपने पीछे ले लिया। हज़रत जिब्रइल (अलैहिस्सलाम) बैतुल्लाह शरीफ़ की जगह बतलाने की गर्ज से आपके साथ थे। जब मक्का मुकर्रमा पहुँचे तो हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) और आपकी वालिदा माजिदा को बैतुल्लाह के एक जानिब उतारा और हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) शाम को वापस हुए। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को जबकि आपकी उम्र शरीफ़ पूरे एक सौ साल थी, बज़रिये वद्दा बैतुल्लाह शरीफ़ बनाने का हुक्म फ़र्माया। उस वक़्त हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) की उम्र मुबारक तीस बरस थी। चुनौचे अपने साहबज़ादे को साथ लेकर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने का'बा की बुनियाद डाली। फिर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की वफ़ात हो गई और हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) ने भी आपके बाद वफ़ात पाई जो हुज़े अस्वद और का'बा शरीफ़ के बीच अपनी वालिदा माजिदा हज़रत हाजरा के साथ दफ़न हुए और आपके साहबज़ादे हज़रत श़ाबित बिन इस्माइल (अलैहिस्सलाम) अपने वालिदे मुहतरम के बाद अपने मामु'ओं के साथ मिलकर जो बनी ज़ुरहम से थे का'बा शरीफ़ के मुतवल्ली क़रार पाए।

इब्ने अबी शैबा, इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम और बैहकी की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को का'बतुल्लाह बनाने का हुक्म हुआ तो आपको मा'लूम न हो सका कि उसको किस तरह बनाएँ। इस नौबत पर अल्लाह पाक ने सकीना या'नी एक हवा भेजी जिसके दो किनारे थे। उसने बैतुल्लाह शरीफ़ के मुकाम पर तौक़ की तरह एक हलका बाँध दिया। इधर आपको हुक्म हो चुका था कि सकीना जहाँ ठहरे पस वहीं ता'मीर होनी चाहिये। चुनौचे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उस मुकाम पर बैतुल्लाह शरीफ़ को ता'मीर किया।

देलमी ने हज़रत अली (रज़ि.) से मफ़ूअन रिवायत की है। ज़ेरे तफ़सीर आयत व इज़ यफ़उ इब्राहीमुल क़वाइद

(अल बकर: : 127) कि बैतुल्लाह शरीफ जिस तरह मुरब्बअ (चौकोर) है उसी तरह एक चौकोनी अब्र (चार कोने वाला बादल) नमूदार हुआ उसमें से आवाज़ आती थी कि बैतुल्लाह का इतिफ़ाअ ऐसा ही चौकूना होना चाहिये जैसा कि मैं या'नी अब्र हूँ। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने बैतुल्लाह को उसी तरह मुरब्बअ फ़र्माया।

सईद बिन मंसूर ने अब्दुल्लाह बिन हुमैद, इब्ने अबी हातिम वगैरह ने सईद बिन मुसय्यिब से रिवायत किया है कि हज़रत अली (रज़ि) ने फ़र्माया कि हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने हवा के डाले हुए निशान के नीचे खोदना शुरू किया पस बैतुल्लाह शरीफ़ के सुतून बरामद हो गए। जिसको तीस-तीस आदमी भी हिला नहीं सकते थे।

आयते बाला की तफ़सीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, अलक्वाइदुल्लती कानत क़वाइदुल्लैत क़ब्ल ज़ालिक सुतून जिनको हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने बनाया, ये वही सुतून हैं जो बैतुल्लाह शरीफ़ में पहले के बने हुए थे। उन्हीं को हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने बुलन्द किया।

इस रिवायत से मा'लूम होता है कि बैतुल्लाह शरीफ़ अगरचे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का ता'मीर किया हुआ है लेकिन उसकी संगे बुनियाद उन हज़रात ने नहीं रखी है बल्कि उसकी बुनियाद क़दीम है आपने सिर्फ़ उसकी तज़दीद फ़र्माई (पुनर्निर्माण किया)। जब हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ता'मीर का'बा फ़र्मा रहे थे तो ये दुआएँ आपकी जुबान पर थीं, रब्बना तक्व्वल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउलअलीम ऐ रब! हमारी इस ख़िदमते तौहीद को कुबूल फ़र्मा, तू जाननेवाला सुननेवाला है।

रब्बना वजअल्लना मुस्लिमैनि लक व मिन ज़ुरियातिना उम्मतमुस्लिमतल्लक व अरिना मनासिकना व तुब अलैना इन्नक अन्तत्तव्वाबुरहीम (अल बकर: : 128) ऐ रब! हमें अपना फ़रमाँबरदार बना ले और हमारी औलाद में से भी एक जमाअत हमेशा इस मिशन को जिन्दा रखने वाली बना दे और मनासिके हज्ज से हमें आगाह कर दे और हमारे ऊपर अपनी इनायात की नज़र कर दे तू निहायत ही तव्वाब और रहीम है।

व इज़ क़ाल इब्राहीमु रब्बिजअल हाज़लबलद आमिन्वज्जुब्नी व बनिय्य अन नअबुदल अस्नाम (सूरह इब्राहीम. 35) ऐ रब! इस शहर को अमन व अमान वाला मकान बना दे और मुझे और मेरी औलाद को हमेशा बुतपरस्ती की हिमाक़त से बचाते रहना।

रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन ज़ुरिय्यती बिवादिन ग़ैरिन ज़ी ज़अिर्न इन्द बैतिकल मुहर्रमि रब्बना लियुक्कीमुस्सलात फ़जअल अफ़इदतम मिनत्रासि तह्वी इलैहिम वज़ुक्हुम मिनषषमराति लअल्लहुम यश्कुरून (सूरह इब्राहीम : 37) ऐ रब! मैं अपनी औलाद को एक बंजर नाकाबिले काश्त बयाबान में तेरे पाक घर के करीब आबाद करता हूँ। ऐ रब! मेरी गुज़ उनको यहाँ बसाने से सिर्फ़ यही है कि ये तेरी इबादत करें। नमाज़ क़ायम करें। मेरे मौला! लोगों के दिल उनकी तरफ़ फेर दे और उनको मेवों से रोज़ी अत्ता कर ताकि ये तेरी शुक्रगुजारी करें।

क़ाल इब्नु अब्बास बना इब्राहीमुल्बैत मिन खम्सति अजबुलिम्पिन तूरि सीना व तूरि जैता व लबननान जबलुन बिश्शामि वल्जूदी जबनुल बिल्जज़ीरति बना क़वाइदहू मिन हरा जबलुन बिमक्कत फ़लम्मा इन्तहा इब्राहीमु इला मौज़ल्इल्हज़िलअस्वदि क़ाल लिइस्माइल इतीनी बिहज़रिन हसनिन यकूनु लिन्नासि अलमन फअताहू बिहज़रिन फ़क़ाल इतीनी बिअहसनिम्पिन्हु फमज़ा इस्माइलु लियतलुब हज़रन अहसनु मिन्हु फसाह अबू कुबैस या इब्राहीमु इन्न लका इन्दी घदीअतुन फख़्जहा फ़कज़फ़ बिल्हज़िलअस्वदि फअख़ज़हू इब्राहीमु फवज़अहू मकानहू (खाज़िन जिल्द 1 पेज 94) या'नी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने तूरे सीना और तूरे जैता व जबलुल लिबान जो शाम में है और जबले जूदी जो जज़ीरह में हैं उन चारों पहाड़ों के पत्थरों का इस्ते'माल किया। जब आप हज़रे अस्वद के मुक़ाम पर पहुँच गए तो आपने हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माया कि एक खूबसूरत सा पत्थर लाओ जिसको निशानी के तौर पर (तवाफ़ों की गिनती के लिये) मैं क़ायम कर दूँ। हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) एक पत्थर लाए, उसको आपने वापस कर दिया और फ़र्माया कि और मुनासिब पत्थर लाओ। हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) पत्थर तलाश कर ही रहे थे कि जबले अबू कुबैस से एक ग़ैबी आवाज़ बुलन्द हुई कि ऐ इब्राहीम! मेरे पास आपको देने की एक अमानत है, उसे ले जाइये। चुनाँचे उस पहाड़ ने हज़रे अस्वद को

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के हवाले कर दिया और आपने पत्थर को उसके मुकाम पर रख दिया। कुछ रिवायात में यूँ भी है कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने हज़रे अस्वद को लाकर आपके हवाले कर दिया। (इब्ने कप्रीर) और शर्की गोशा (पूर्वी हिस्से) में बाहर की तरफ ज़मीन से डेढ़ गज़ की बुलन्दी पर एक ताक़ में उसको नसब किया गया। ता'मीरे इब्राहीमी बिलकुल सादा थी न उस पर छत थी, न दरवाज़ा, न चूना। मिट्टी से काम लिया गया था। सिर्फ पत्थर की चार दीवारी थी।

अल्लामा अज़रक़ी ने ता'मीरे इब्राहीमी की लम्बाई चौड़ाई हस्बे ज़ैल लिखा है, बुलन्दी ज़मीन से छत तक नौ गज़, लम्बाई हज़रे अस्वद से रुक्ने शामी तक 32 गज़। अज़र रुक्ने शामी से गर्बी तक 22 गज़।

घर बन चुका। हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने मनासिके हज्ज से आगाह कर दिया। अब इशादि बारी तआला हुआ, व तह्हिर बैतिय लिताइफीन वल्काइमीन वर्कइस्सुजूद व अज़िन फ़िन्नसि बिल्हज्जि यातूक रिजालन व अला कुल्लि ज़ामिरिन यातीन मिन कुल्लि फ़ज्जिन अमीक़ (अल हज्ज : 27) या'नी मेरा घर तवाफ़ करनेवालों, नमाज़ में क़ायम करने वालों, रूकूअ करने वालों और सज़्दा करने वालों के लिये पाक कर दे और तमाम लोगों को पुकार दे कि हज्ज को आएँ पैदल भी और दुबली कँटनियों पर भी हर दूर दराज़ गोशा से आएँगे। उस ज़माने में ऐलान व इश्तिहार के वसाइल (साधन) नहीं थे। वीरान जगह थी, आदमज़ाद का कोसों तक पता न था। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की आवाज़ हृदये हरम से बाहर नहीं जा सकती थी। लेकिन इस मा'मूली आवाज़ को कुदरते हक़ तआला ने मश्रिक से मरिब (पूरब से पश्चिम) तक और शिमांल से जुनूब (उत्तर से दक्षिण) तक और ज़मीन से आसमान तक पहुँचा दिया।

मुफ़स्सिरीन आयते बाला के ज़ैल में लिखते हैं, फ़नादा अला जबलिन अबू कैस या अय्युहन्नासु इन्न रब्बकुम बना बैतन व औजब अलैकु मुल्हज्ज इलैहि फअजीबू रब्बकुम वल्तफ़त बिवजिहही यमीनन व शिमांलन व शर्कन व गर्बन फअजाबहू कुल्लु मन कतब लहू अय्यहुज्ज मिन अस्लाबिरिंजालि व अर्हामिल्उम्महाति लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक (जलालैन)

या'नी हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जबले अबू कुबैस पर चढ़कर पुकारा ऐ लोगों! तुम्हारे रब ने अपनी इबादत के लिये एक मकान बनवाया और तुम पर उसका हज्ज फ़र्ज़ किया है। आप ये ऐलान करते हुए शिमांल व जुनूब और मश्रिक व मरिब की तरफ़ मुँह करते जाते और आवाज़ बुलन्द करते जाते थे। पस जिन इंसानों की किस्मत में हज्ज बैतुल्लाह की सआदते अज़ली लिखी जा चुकी है। उन्होंने अपने बापों की पुस्त से और अपनी माँओं के अरहाम से इस मुबारक निदा को सुनकर जवाब दिया, लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक या अल्लाह! हम हाज़िर हैं, या अल्लाह! हम तेरे पाक घर की ज़ियारत के लिये हाज़िर हैं।

बिनाए इब्राहीमी के बाद : इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की ये ता'मीर एक मुद्दत तक क़ायम रही और उसकी तौलियत व निगरानी सय्यिदना इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद में मुंतक़िल होती चली आई, यहाँ तक कि उसकी मरम्मत की ज़रूरत पेश आई। तब बनू ज़ुरहुम ने उसी इब्राहीमी नक्शे व हियत पर मरम्मत का काम अंजाम दिया न कोई छत बनवाई और न कोई तगायूर किया। बनू ज़ुरहुम के बाद अमालिका ने तजदीद की मगर ता'मीर में कोई इजाफ़ा नहीं किया।

ता'मीर कुसई बिन किलाब : इब्राहीमी ता'मीर के बाद चौथी बार खाना का'बा को कुसई बिन किलाब कुरैशी ने ता'मीर किया। कुसई कुरैश के मुम्ताज़ अफ़राद में से थे ता'मीर का'बा के साथ साथ क़ौमी ता'मीर के लिये भी उसने बड़े बड़े अहम काम अंजाम दिये। तमाम कुरैश को जमा करके तक्रीरों के ज़रिये उनमें इत्तिहाद की रूह फूँकी। दारुन्नदवा का बानी भी यही शख़्स है जिसमें कुरैश अपने क़ौमी इज्तिमाआत को अंजाम देते थे व मज़हबी तक्रीबात वग़ैरह के लिये वहाँ जमा होते थे। सिकाया (हाज़ियों को आबे ज़मज़म पिलाना) और रिफ़ादा (या'नी हाज़ियों के खाने पीने का इंतजाम करना) ये महकमे उसी ने क़ायम किये कुरैश के क़ौमी फण्ड से एक सालाना रक़म मिना और मक्का मुअज्जमा में लंगरखानों के लिये मुकरर की। उसके साथ चिरमी हौज़ बनवाए जिनमें हुज़ाज के लिये हज्ज के दिनों में पानी भरवा दिया जाता था। कुसई ने अपने सारे खानदान कुरैश को मुन्तमज़ करके का'बा शरीफ़ के पास बसाया। ख़िदमते का'बा के बारे में पेड़ों की बाड़ लगा दी और उस पर स्याह ग़िलाफ़ डाला। ये ता'मीर हज़रत रसूल पाक (ﷺ) के ज़मान-ए-तिफ़्लियत (बाल्यकाल) तक बाक़ी रही थी आपने अपने बचपन में इसको मुलाहज़ा फ़र्माया।

ता'मीरे कुरैश : ये ता'मीर नुबुव्वते मुहम्मदी (ﷺ) से पाँच साल पहले जब आँहज़रत (ﷺ) की उम्र 35 साल की थी,

हुई उस ता'मीर में और बिनाए इब्राहीमी में 1675 साल का ज़माना बयान किया जाता है। उसकी वजह ये हुई कि एक औरत का'बा के पास बख़र जला रही थी, जिससे पर्दा शरीफ़ में आग लग गई और फैल गई, यहाँ तक कि का'बा शरीफ़ की छत भी जल गई और पत्थर भी चटक गए, जगह-जगह से दीवारें फट गईं। कुछ ही दिनों बाद सैलाब आया। जिसने उसकी बुनियादों को हिला दिया कि गिर जाने का बड़ा ख़तरा हुआ। कुरैश ने उस ता'मीर के लिये चन्दा जमा किया। मगर शर्त ये रखी कि सूद, उजरते जिना, ग़ारतगिरी और चोरी का पैसा न लगाया जाए इसलिये खर्च में कमी हो गई। जिसका तदारुक ये किया गया कि शिमाली ख़ूब से छः सात ज़िराअ ज़मीन बाहर छोड़कर इमारत बना दी। इस छोड़े गये हिस्से का नाम हतीम है।

आयते शरीफ़ा व इज़ यर्फउ इब्राहीमुल कवाइद (अल बकर: : 127) की तफ़सीर में इब्ने क़श़ीर में यूँ तफ़सीलात आई हैं, क़ाल मुहम्मदुब्नु इस्हाक़ इब्नि यसारिन फिस्सीरत व लम्मा बलग़ रसूलुल्लाहि (ﷺ) खम्संवषलाषीन सनतन इज्मअत कुरैश लिबुन्यानिल्कअबति व कानू यहम्मून बिज़ालिक यस्क्फूहा व यहाबून हदमहा व इन्नमा कानत रज़्मन फौक्लक्कामति फअराद व अर्फ़अहा व तस्कीफ़हा व ज़ालिक अन्न नफ़रन सरकू कन्ज़ल्कअबति व इन्नमा व इन्नमा कानल्कन्ज़ु जौफल्कअबति व कानल्लज़ी वुजिद इन्दहूल्कन्ज़ दवैक मौला बनी मुलैहि ब्नि अम्मिन मिन ख़ुज़ाअत फकतअत कुरैश यहदू व यजअमुन्नासु अन्नल्लज़ीन सरकूहु वज़ऊहु इन्द दवैक व कानल्बहलू क्रद रमा बिसफीनिही इला जद्दा लिरज़ुलिन मिन तुज्जारिल्म फतहतत फअख़ज़ू ख़शबहा किब्तिद्युन नज़्ज़ारुन फहयालहुम फ़ी अन्फु सिहिम बअज़ु मा युस्लिहुहा व कानत हय्यतुन तख़ज़ु मिम्बिरिल्कअबतिल्लती कानत तत्तहु फ़ीहा मा यहदी लहा कल्ल यौमिन फतशरफ़ अला जिदारिल्कअबति व कानत मिम्मा यहाबून व ज़ालिक अन्नहू कान ला यदनू मिन्हा अहदुन इल्ला रज़्ज़ुन अलत व कशत व फतहत फाहा फकानू यहाबूनहा फबनयाहा यौमिन तशरफ़ अला जिदारिल्कअबति कमा कानत तस्नइ बअषल्लाहु इलैहा ताइरन फखतफहा फज़हब बिहा फक्रालत कुरैश इन्ना नर्ज़ू अय्यकूनल्लाहु क्रद रज़िय मा अर्दना इन्दना आमिलुन रफ़ीकुन व इन्दना ख़शबुन व क्रद फकानल्लाहुल्हय्यत फलम्मा उज्मऊ अम्हम फ़ी हदमिहा व बुनयानिहा काम इब्नु वहबु ङ्नु अम्मिन फतनावल मिनल्कअबति हज़रन फवषब मिन यदिही हत्ता रजअ इला मौजिइही फक्राल या मअशर कुरैशिन ला तदख़लूहा फ़ी बुनयानिहा मिन कस्बिक् इल्ला तय्यिबन ला युदख़लु फ़ीहा महरुन बशिय्युन वला बैउन रिबा व ला मुज़्लमतु अहदिम्मिन्नासि इला आख़िरिही

ख़ुलासा इबारत का ये है कि नबी करीम (ﷺ) की उम्र शरीफ़ 35 साल की थी कि कुरैश ने का'बा की अज़सर नौ ता'मीर का फ़ैसला किया और उसकी दीवारों को बुलन्द करके छत डालने की तज्वीज़ पास की। कुछ दिनों के बाद और हादशात के साथ-साथ का'बा शरीफ़ में चोरी का भी हादसा हो चुका था। इतिफ़ाक़ से चोर पकड़ा गया, उसका हाथ काट दिया गया और ता'मीरी प्रोग्राम में मज़ीद पुख़्तगी हो गई। हुस्ने इतिफ़ाक़ से बाकूम नामी एक रूमी ताजिर की क़स्ती तूफ़ानी मौज़ों से टकराती हुई जद्दा के किनारे आ पड़ी और लकड़ी का सामान अरज़ों मिल जाने की अहले मक्का को तवक्कअ हुई। वलीद बिन मुगीरा लकड़ी खरीदने के ख़याल से जद्दा आया और सामाने ता'मीर के साथ ही बाकूम को जो फ़ने मिअमारी में उस्ताद था अपने साथ ले गया। उन्हीं दिनों का'बा शरीफ़ की दीवारों में एक ख़तरनाक अज़्दहा (अजगर साँप) पाया गया जिसको मारने की किसी को हिम्मत न होती थी। इतिफ़ाक़ वो एक दिन दीवारे का'बा पर बैठा हुआ था कि अल्लाह तआला ने एक ऐसा परिन्दा भेजा जो उसको देखते ही देखते उसे उचककर ले गया। अब कुरैश ने समझा कि अल्लाह तआला की मज़ी व मशिय्यत हमारे साथ है इसलिये ता'मीर का काम फ़ौरन शुरू कर दिया जाए मगर किसी की हिम्मत न होती थी कि छत पर चढ़े और बैतुल्लाह को मुन्हदिम करे। आख़िर जुरअत करके इब्ने वहब आगे बढ़ा और एक पत्थर जुदा किया तो वो पत्थर हाथ से छूटकर फिर अपनी जगह पर जा ठहरा। उस वक़््त इब्ने वहब ने प्रेलान किया कि नाजाइज़ कमाई का पैसा हर्गिज़-हर्गिज़ ता'मीर में न लगाया जाए। फिर वलीद बिन मुगीरा ने कुदाल लेकर ये कहते हुए कि ऐ अल्लाह! तू जानता है हमारी निय्यत बख़ैर है उसका हदम शुरू कर दिया। बुनियाद निकल आई तो उसके मुख़्तलिफ़ हिस्सों की ता'मीर मुख़्तलिफ़ कबीलों में बांट दी गई और काम शुरू हो गया। -

आँहज़रत (ﷺ) भी अपने चचा हज़रत अब्बास (रज़ि.) के साथ शरीकेकार थे और क़न्धों पर पत्थर रखकर लाते थे। जब हज़रे अस्वद रखने का वक़््त आया तो कबीलों में इख़िलाफ़ पड़ गया। हर ख़ानदान इस शर्फ़ के हुसूल करने का

दावेदार था। आखिर मरने मारने तक नौबत पहुँच गई, मगर कलीद बिन मुगीरह ने ये तज्वीज़ पेश की कि कल सुबह को जो शख्स भी सबसे पहले हरम में क़दम रखे, उसके फ़ैसले को वाजिबुल अमल समझो। चुनाँचे सुबह को सबसे पहले हरम शरीफ़ में आने वाले सय्यिदना मुहम्मद (ﷺ) थे। सबने एक जुबान होकर आपके फ़ैसले को बख़ुशी मानने का ए'तिराफ़ किया आपने हज़रे अस्वद को अपनी चादर मुबारक के बीच में रखा और हर क़बीले के एक-एक सरदार को उस चादर के उठाने में शरीक कर लिया जब वो चादर गोश-ए-का'बा तक पहुँच गई तो आपने अपने दस्ते मुबारक से हज़रे अस्वद को उठाकर दीवार में नज़ब फ़र्मा दिया। दीवारें 18 हाथ ऊँची कर दी गईं। अंदरूनी फ़र्श भी पत्थर का बनाया। अपनी इम्तियाज़ी शान कायम रखने के लिये दरवाज़ा इन्सानी क़द से ऊँचा रखा। बैतुल्लाह के अन्दर उत्तरी दक्षिणी ओर तीन-तीन सुतून कायम किये। जिन पर शहतीर डालकर छत पाट दी और रुक्ने इराक़ी की तरफ़ अंदर ही अंदर ज़ीना चढ़ाया कि छत पर पहुँच सकें और शिमाली सिम्त (उत्तरी छोर) पर परनाला लगाया ताकि छत का बारिश पानी हज़र में आकर पड़े।

बाब हरम की ज़मीन की फ़ज़ीलत और अल्लाह ने
सूरह नमल में फ़र्माया

٤٣- بَابُ فَضْلِ الْحَرَمِ، وَقَوْلُهُ
تَعَالَى :

मुझको तो यही हुक्म है कि इबादत करूँ इस शहर के रब की जिसने इसको हुर्मत वाला बनाया और हर चीज़ उसी के क़ब्ज़े व कुदरत में है और मुझको हुक्म है ताबेदार बनकर रहने का।

और अल्लाह तआला ने सूरह क़सस में फ़र्माया, क्या हमने आपको जगह नहीं दी हरम में जहाँ अमन है उनके लिये और खींचे चले आते हैं उसकी तरफ़, मेवे हर किस्म के जो रोज़ी है हमारी तरफ़ से लेकिन बहुत से उनमें नहीं जानते। (अल क़सस : 57)

1587. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने मंसूर से बयान किया, उनसे मुजाहिद ने, उनसे त़ाउस ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तहे मक्का पर फ़र्माया था कि अल्लाह तआला ने इस शहर (मक्का) को हुर्मत वाला बनाया है (या'नी इज़्जत दी है) पस उसके (पेड़ों के) कांटे तक भी नहीं काटे जा सकते यहाँ के शिकार भी नहीं हाँके जा सकते और उनके अलावा जो ऐलान करके (मालिक तक पहुँचाने का इरादा रखते हों) कोई शख्स यहाँ की गिरी पड़ी चीज़ भी नहीं उठा सकता है। (रज़ेअ 1349)

तशरीह : मुस्नद अहमद (रह.) वगैरह में अयाश बिन अबी रबीआ से मरवी है कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हाज़िहिलुम्मतु ला तज़ालु बिखैरिम्मा अज़्ज़मुहु हाज़िहिलहुर्मत यअनी अल्कअबत हक्क तअज़ीमिहा फइज़ा जय्यअ ज़ालिक हलकू या'नी ये उम्मत हमेशा ख़ैर-भलाई के साथ रहेगी जब तक कि पूरे तौर पर का'बा की ता'ज़ीम करती रहेगी और जब इसको ज़ाया कर देंगे, हलाक हो जाएँगे। मा'लूम हुआ कि का'बा शरीफ़ और उसके अत्राफ़ की सारी ज़मीने हरम है बल्कि सारा शहर उम्मत मुस्लिमा के लिये इतिहाई मुअज़्ज़ व मुअक्कर मुक़ाम है। उनके बारे

﴿إِنَّمَا أَمْرُهُ أَنْ تَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَلَدِ
الَّذِي حَرَّمَهَا، وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ، وَأَمْرُهُ أَنْ
تَكُونُوا مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾. [النمل : ٩١].

وَقَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿أَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَهُمْ
حَرَمًا آمِنًا يُجَنَّبِي إِلَٰهَ فَسَمَاتٍ كُلِّ شَيْءٍ
رِزْقًا مِنْ لَدُنَّا، وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ﴾ [القصاص : ٥٧].

١٥٨٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ
حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بْنُ عَبْدِ الْحَكَمِ عَنْ مَنْصُورٍ
عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ
ﷺ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ : ((إِنَّ هَٰذَا الْبَلَدَ مَحْرَمَةٌ
لِلَّهِ، لَا يُغْنَدُ حَوْكُهُ، وَلَا يُفَرَّ صَيْدُهُ،
وَلَا يُلْقَطُ لُقَطَتُهُ إِلَّا مَنْ عَرَفَهَا)).

[راجع : ١٣٤٩]

में जो भी ता'जीम व तक्रीम के बारे में हिदायात किताबो-सुन्नत में दी गई हैं, उनको हर वक्त मल्हूज रखना बेहद जरूरी है बल्कि हकीकत ये है कि हुर्मते का'बा के साथ मिल्लते इस्लामिया की हयात वाबस्ता है। बाब के तहत जो आयाते कुर्आनी हजरत इमाम बुखारी (रह.) लाए हैं उन्हें बहुत से हकाइक का बयान है खास तौर पर उसका कि अल्लाह पाक ने शहरे मक्का में ये बरकत रखी है यहाँ चारों ओर से हर क्रिस्म के मेवे, फल, अनाज खिंचे चले आते हैं। दुनिया का हर एक फल यहाँ के बाजारों में दस्तयाब हो जाता है। खास तौर पर आज के ज़माने में हुकूमते सऊदिया खल्लदल्लाहु तआला ने उस मुकद्दस शहर को जो तरक्की दी है और उसकी ता'मीरे जदीद जिन-जिन खुतूत पर की है और कर रही है वो पूरी मिल्लते इस्लामिया के लिये हद दर्जा काबिले तशक्कुर हैं। अय्यदहुमुल्लाहु बिनस्लिल अज़ीज़

बाब 44 : मक्का शरीफ़ के घर मकान मीराष हो सकते हैं उनका बेचना और ख़रीदना नाजाइज़ है

٤٤- بَابُ تَوْرِيثِ دُورِ مَكَّةَ وَبَيْعِهَا وَشِرَائِهَا

मस्जिद हुराम में सब लोग बराबर हैं या'नी खास मस्जिद में क्योंकि अल्लाह तआला ने (सूरह हज्ज) में फ़र्माया, जिन लोगों ने कुफ़्र किया और जो लोग अल्लाह की राह और मस्जिद हुराम से लोगों को रोकते हैं कि जिसको मैंने तमाम लोगों के लिये यक्साँ मुक़रर किया है। ख़वाह वो वहीं के रहने वाले हों या बाहर से आने वाले और जो शख्स वहाँ शरारत के साथ हद से तजावुज करे, मैं उसे दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखाऊँगा। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि लफ़्ज़े बादी बाहर से आने वाले के मा'नी में है और मअकूफ़ा का लफ़्ज़ रुके हुए के मा'नी में है।

وَأَنَّ النَّاسَ فِي مَسْجِدِ الْحَرَامِ مَوَءَاةٌ، لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصْلُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ مَوَءَاةً الْعَاقِبَةُ فِيهِ وَالْبَادُ، وَمَنْ يُؤْذِ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُدِقُهُ مِنْ عَذَابِ آتِمٍ﴾ [الحج: ٢٥]. الهادي: الطاريء. مفكوكاً. محسوساً.

158. हमसे अस्वग बिन फ़रज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वहाब ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अली बिन हुसैन ने, उन्हें अमर बिन इब्मान ने और उन्हें हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप मक्का में क्या अपने घर में क़याम फ़र्माएँगे। इस पर आपने फ़र्माया कि अक़ील ने हमारे लिये मुहल्ला या मकान छोड़ा ही कब है। (सब बेचकर बराबर कर दिये) अक़ील और तालिब, अबू तालिब के वारिष हुए थे। जा'फ़र और अली (रज़ि.) को विरासत में कुछ नहीं मिला था, क्योंकि ये दोनों मुसलमान हो गये थे और अक़ील रज़ि. (इब्तिदा में) और तालिब (अंत तक) इस्लाम नहीं लाए थे। उसी बुनियाद पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) फ़र्माया करते थे कि मुसलमान काफ़िर का वारिष नहीं होता। इब्ने शिहाब ने कहा कि लोग अल्लाह तआला के उस इश्राद स

١٥٨٨- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيٍّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ عَنْ أَسَمَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: ((يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيْنَ تَوَلَّى فِي ذَارِكِ بِمَكَّةَ؟ فَقَالَ: ((وَهَلْ تَرَكَ عَقِيلٌ مِنْ رِبَاعٍ أَوْ دُورٍ)) وَكَانَ عَقِيلٌ وَرِثَ أَبَا طَالِبٍ هُوَ وَطَالِبٌ، وَلَمْ يَرِثْهُ جَعْفَرٌ وَلَا عَلِيٌّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا شَيْئاً، لِأَنَّهُمَا كَانَا مُسْلِمَيْنِ وَكَانَ عَقِيلٌ وَطَالِبٌ كَافِرَيْنِ، فَكَانَ عَمْرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ: لَا يَرِثُ الْمُؤْمِنُ الْكَافِرَ)) قَالَ ابْنُ

दलील लेते हैं कि, जो लोग ईमान लाए, हिजरत की और अपने माल और जान के साथ अल्लाह की राह में जिहाद किया और वो लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वही एक-दूसरे के वारिष होंगे।

(दीगर मक़ाम : 3058, 4282, 6764)

شَهَابٌ وَكَانُوا يَتَأَوَّلُونَ قَوْلَ اللَّهِ تَعَالَى :
هُوَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ
أَوَّوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ
بَعْضٍ الْآيَةُ. [الأنفال : ٧٢].

[أطرافه في : ٣٠٥٨ ، ٤٢٨٢ ، ٦٧٦٤].

तशरीह : मुजाहिद से मन्कूल है कि तमाम मक्का मुबाह है न वहाँ के घर को बेचना दुस्त है और न किराया पर देना और इब्ने इमर (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्कूल है और इमाम अबू हनीफा और इमाम शौरी (रह.) का यही मज़हब है और जुम्हूर उलमा के नज़दीक मक्का के घर मकान मिल्क हैं और मालिक के मर जाने के बाद वो वारिषों की मिल्कियत हो जाते हैं। इमाम अबू यूसुफ (रह.) (शागिद इमाम अबू हनीफा रह.) का भी ये क़ौल है और इमाम बुखारी (रह.) ने भी इसी को इख़्तियार किया है। हाँ ख़ास मस्जिद हाराम में मुसलमानों का हक़ बराबर है जो जहाँ बैठ गया उसको वहाँ से कोई उठा नहीं सकता। ऊपर की आयत में चूँकि अक़िफ़ और मअकूफ़ का मादा एक ही है। इसलिये मअकूफ़ की भी तफ़सीर बयान कर दी।

हदीषे बाब में अक़ील का ज़िक्र है। अबू तालिब के चार बेटे थे, अक़ील, तालिब, जा'फ़र और अली। अली और जा'फ़र ने तो आँहज़रत (ﷺ) का साथ दिया और आपके साथ मदीना आ गये, मगर अक़ील मुसलमान नहीं हुए थे। इसलिये अबू तालिब की सारी जायदाद के वारिष वो हुए, उन्होंने उसे बेच डाला। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी का ज़िक्र फ़र्माया था जो यहाँ मज़कूर है। कहते हैं कि बाद में अक़ील मुसलमान हो गए थे। दाऊदी ने कहा जो कोई हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चला जाता उसका अज़ीज़ जो मक्का में रहता वो सारी जायदाद दबा लेता। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के बाद इन मुआमलात को कायम रखा ताकि किसी की दिल शिकनी न हो। कहते हैं कि अबू तालिब के ये मकानात लम्बे अरसे बाद मुहम्मद बिन यूसुफ़, हज्जाज ज़ालिम के भाई ने एक लाख दीनार में ख़रीद लिये थे। असल में ये जायदाद हाशिम की थी, उनसे अब्दुल मुत्तलिब को मिली। उन्होंने सब बेटों को बांट दी, उसी में आँहज़रत (ﷺ) का हिस्सा भी था।

आयते मज़कूर-ए-बाब शुरू इस्लाम में मदीना मुनव्वरा में उतरी थी। अल्लाह पाक ने मुहाजिरिन और अंसार को एक-दूसरे का वारिष बना दिया था। बाद में ये आयत उतरी व उलुल अर्हामि बअज़ुहुम औला बिबअज़िन (अन्फ़ाल : 75) या'नी ग़ैर आदिमियों की निस्बत रिश्तेदार ज़्यादा हक़दार हैं। ख़ैर इस आयत से मोमिनों का एक दूसरों का वारिष होना निकलता है। उसमें ये ज़िक्र नहीं है कि मोमिन काफ़िर का वारिष न होगा और शायद इमाम बुखारी (रह.) ने उस मज्मून की तरफ़ इशारा किया जो उसके बाद है। वल्लज़ीन आमनू व लम युहाज़िरु (अन्फ़ाल : 72) या'नी जो लोग ईमान ले आए मगर काफ़िरों के मुल्क से हिजरत नहीं कि तो तुम उनके वारिष नहीं हो सकते। जब उनके वारिष न हुए तो काफ़िरों के बतरीके औला वारिष न होंगे। (वहीदी)

बाब 45 : नबी करीम (ﷺ) मक्का में कहाँ उतरे थे?

1589. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमसे शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने कहा कि मुझसे अबू सलमा ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब (मिना से लौटते हुए हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर) मक्का आने का इरादा किया तो फ़र्माया कि कल

٤٥ - بَابُ نَزُولِ النَّبِيِّ ﷺ : مَكَّةُ

١٥٨٩ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا

شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو

سَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ :

قَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ حِينَ أَرَادَ قُدُومَ مَكَّةَ

इंशाअल्लाह हमारा क़याम उसी ख़ैफ़े बनी किनाना (या'नी मुहम्मद) में होगा जहाँ (कुरैश ने) कुफ़्र पर अड़े रहने की क़सम खाई थी।

(दीगर मक़ाम: 1590, 3882, 4284, 4285, 4289)

1590. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे जुहरी ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि ग्यारहवीं की सुबह को जब आँहुज़ूर (ﷺ) मीना में थे तो ये फ़र्माया था कि कल हम ख़ैफ़े बनी किनाना में क़याम करेंगे जहाँ कुरैश ने कुफ़्र की हिमायत की क़सम खाई थी। आपकी सुराद मुहम्मद से थी क्योंकि यहीं कुरैश और किनाना ने बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब या (रावी ने) बनू अल मुत्तलिब (कहा) के ख़िलाफ़ हत्यार उठाया था कि जब तक वो नबी करीम (ﷺ) को उनके हवाले न कर दें, उनके यहाँ ब्याह शादी न करेंगे और न उनसे ख़रीद व फ़रोख़्त करेंगे और सलामा बिन रौह ने अक़ील और यह्या बिन जिह्नाक से रिवायत किया, उनसे इमाम औज़ाई ने बयान किया कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्होंने (अपनी रिवायत में) बनू हाशिम और बनू अल मुत्तलिब कहा। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि बनू अल मुत्तलिब ज़्यादा सहीह है।

(राजेअ: 1589)

((مَنْزِلًا عَدَا إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى بِخَيْرٍ))
بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)).

[أطرافه ي: ١٥٩٠، ٣٨٨٢، ٤٢٨٤]

[٤٢٨٩، ٧٤٨٩]

١٥٩٠ - حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مِنْ الْعَدُوِّ يَوْمَ النُّحْرِ - وَهُوَ بَيْنِي - نَحْنُ نَأْزِلُونَ عَدَاً يَعْتَمِدُونَ بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ بِغَيْرِ بِلَدٍ الْمَحْصَبِ وَذَلِكَ أَنْ قُرِشًا وَكِنَانَةُ تَحَالَفَتْ عَلَى بَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ - أَوْ بَنِي الْمُطَّلِبِ - أَنْ لَا يَبْكَحُوهُمْ وَلَا يَبَايَعُوهُمْ حَتَّى يُسَلِّمُوا إِلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ)). وَقَالَ سَلَامَةُ عَنْ عُقَيْلٍ، وَيَحْتَمِلُ مِنَ الضَّحَّاكِ عَنْ الْأَوْزَاعِيِّ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ.

وَقَالَ: بَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي الْمُطَّلِبِ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: بَنِي الْمُطَّلِبِ أَهْلُهُ.

तशरीह:

कहते हैं कि इस मज़मून की एक तहरीरी दस्तावेज़ मुरतब की गई थी। उसको मंसूर बिन इक्रमा ने लिखा था। अल्लाह तआला ने उसका हाथ शल (सुन्न, लकवाग्रस्त) कर दिया। जब ये मुआहिदा बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब ने सुना तो वो घबराए मगर अल्लाह की कुदरत कि उस मुआहिदे के कागज़ को दीमक ने खा लिया। जो का'बा शरीफ़ में लटका हुआ था। कागज़ में फ़क़त वो मुक़ाम रह गया जहाँ अल्लाह का नाम था। आँहुज़रत (ﷺ) ने उसकी ख़बर अबू तालिब को दी। अबू तालिब ने उन काफ़िरों को कहा कि मेरा भतीजा ये कहता है कि जाकर उस काग़ज़ को देखो अगर उसका बयान सही निकले तो उसकी ईज़ादेही से बाज़ आ जाओ, अगर झूठ निकले तो मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँगा फिर तुमको इख़्तियार है। कुरैश ने जाकर देखा तो जैसा आँहुज़रत (ﷺ) ने कहा था वैसा ही हुआ था कि सारी तहरीर को दीमक ने खा लिया था, सिर्फ़ अल्लाह का नाम रह गया था। तब वो बहुत शर्मिन्दा हुए। आँहुज़रत (ﷺ) जो उस मुक़ाम पर जाकर उतरे तो आपने अल्लाह का शुक्र किया और याद किया कि एक दिन तो वो था। आज मक्का पर इस्लाम की हुकूमत है।

बाब 46 : अल्लाह तआला ने सूरह इब्राहीम में फर्माया

और जब इब्राहीम ने कहा मेरे रब! इस शहर को अमन का शहर बना और मुझे और मेरी औलाद को उससे महफूज रखियो कि हम तुम्हें की इबादत करें। मेरे रब! इन बुतों ने बहुतों को गुमराह किया है अल्लाह तआला के फर्मान (लअल्लहुम यश्कुरून) तक. (अल बक्रर : 35)

तशरीह:

इस बाब में इमाम बुखारी (रह.) ने सिर्फ आयते कुआनी पर इक्तिफा किया और इर्शाद फर्माया कि कुआन मजीद की रू से मक्का शहर अमन का शहर है। यहाँ बदअम्नी कतअन हुराम है और इस शहर को बुतपरस्ती जैसे जुर्म से पाक रहना है और यहाँ के इस्माईली खानदान वालों को बुतपरस्ती से दूर ही रहना है। अल्लाह पाक ने एक लम्बे अर्से के बाद अपने खलील की दुआ कुबूल की कि सय्यिदना मुहम्मद (ﷺ) तशरीफ लाए और आपने हजरत खलीलुल्लाह की दुआ के मुताबिक इस शहर को अमन वाला शहर बना दिया।

हाफिज इब्ने हजर (रह.) फर्माते हैं, लम यज़कुर फी हाजिहित्जुमति हदीथन व कअन्नहू अशार इला हदीथि इब्नि अब्बासिन फी किस्सति इस्कानि इब्राहीम लिहाजिर व बनाहा फी मक्कत हजरत इमाम बुखारी (रह.) ने गोया इस आयत को लाकर हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के हजरत हाजर और उनके बेटे को यहाँ लाकर आबाद करने की तरफ इशारा फर्माया। आगे खुद मौजूद है, रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन जुर्इयती बिवादिन गैरिन् ज़ि ज़िअिन इन्द बैतिकल मुहर्रमि रब्बना लियुकीमुस्सलात फ़जअल अफ़इदतम मिनत्रासि तहवी इलैहिम वर्ज़कहुम मिनषमराति लअल्लहुम यश्कुरून (इब्राहीम : 37) या'नी या अल्लाह! मैंने इस बंजर बयाबान में अपनी औलाद को लाकर सिर्फ इसलिये आबाद किया है ताकि यहाँ ये तेरे घर का'बा की खिदमत करें। यहाँ नामाज़ कायम करें। पस तू लोगों के दिलों को इनकी तरफ फेर दे (कि वो सालाना हज के लिये बड़ी ता'दाद में यहाँ आया करें, जिनकी आमद इनका ज़रिया-ए-मुआश बन जाए) और इनको फलों से रोज़ी अत्ता कर ताकि ये शुक्र करें। हज़ारों साल गुजर जाने के बाद भी ये इब्राहीमी दुआ आज भी फ़िजाए मक्का की लहरों में गूँजती नज़र आ रही है। इसकी कुबूलियत के पूरे-पूरे अषरात दिन-ब-दिन मुस्तहकम ही होते जा रहे हैं।

बाब 47 : अल्लाह तआला ने सूरह माइदह में फर्माया

अल्लाह ने का'बा को इज्जत वाला घर और लोगों के क़याम की जगह बनाया है और इस तरह हुर्मत वाले महीने को बनाया। अल्लाह तआला के फर्मान, व इन्नल्लाह बिकुल्लि शैइन अलीम तक (साथ ही ये भी है जो हदीथे ज़ेल में मज़कूर है)

हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ियाद बिन सअद ने बयान किया, उनसे जुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फर्माया कि का'बा को दो पतली पिण्डलियों वाला एक हकीर हब्शी तबाह कर देगा। (दीगर मकाम : 1596)

٤٦- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ. رَبِّ إِنَّهُمْ أَضَلُّونَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ. إِلَى قَوْلِهِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ﴾ الآية. [إبراهيم : ٣٥].

٤٧- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى :

﴿اجْعَلْ اللَّهُ لَكُمْ الْقِبْلَةَ أَيَّتُهَا الْحَرَامَ قِبْلًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ إِلَى قَوْلِهِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾. [المائدة : ٩٧].

١٥٩٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُخْرَبُ الْقَعْبَةُ ذُو السُّوَيْتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ)). [طريقه في : ١٥٩٦].

मगर ये क्रयामत के करीब उस वक़्त होगा जब ज़मीन पर एक भी मुसलमान बाक़ी न रहेगा। उसका दूसरा मतलब ये है कि जब तक दुनिया में एक भी मुसलमान कलिमा-गो बाक़ी है का'बा शरीफ़ की तरफ़ कोई दुश्मन आँख उठाकर नहीं देख सकता। ये भी ज़ाहिर है कि अहले इस्लाम ता'दाद के लिहाज़ से हर ज़माने में बढ़ते ही रहे हैं। अल्लाह का शुक्र है कि आज भी साठ सत्तर करोड़ मुसलमान दुनिया में मौजूद हैं। (सन् 2011 में इस किताब का हिन्दी तर्जुमा मुकम्मल हो जाने तक दुनिया में मुस्लिमों की ता'दाद बढ़कर 175 करोड़ हो गई है।)

1592. हमसे यहाा बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इवनि और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया (दूसरी सनद इमाम बुखारी रह. ने कहा) और मुझसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें मुहम्मद बिन अबी हफ़्सा ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्हें इवनि ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने बयान किया कि रमज़ान (के रोज़े) फ़र्ज़ होने से पहले मुसलमान आशूरा का रोज़ा रखते थे। आशूरा ही के दिन (जाहिलियत में) का'बा पर ग़िलाफ़ चढ़ाया जाता था। फिर जब अल्लाह तआला ने रमज़ान फ़र्ज़ कर दिया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों से फ़र्माया कि अब जिसका जी चाहे आशूरा का रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे छोड़ दे।

(रज्जेज़ 1893, 2001, 2002, 3831, 4502, 4504)

١٥٩٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ غُفَيْرٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ح. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مِقَاتٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ هُوَ ابْنُ الْمُبَارَكِ قَالَ : أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي حَفْصَةَ عَنْ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كَانُوا يَصُومُونَ عَاشُورَاءَ قَبْلَ أَنْ يَفْرَحَ رَمَضَانُ، وَكَانَ يَوْمًا تُسْتَرَى فِيهِ الْكُفَّةُ. فَلَمَّا فَرَحَ اللَّهُ رَمَضَانُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((مَنْ شَاءَ أَنْ يَصُومَهُ فَلْيَصُومْهُ، وَمَنْ شَاءَ أَنْ يَفْرَحَهُ فَلْيَفْرَحْهُ)).

[أطرافه في : ١٨٩٣، ٢٠٠١، ٢٠٠٢، ٣٨٣١]

[٢٠٠٢، ٢٠٠٤، ٣٨٣١]

इस हदीष की मुनासबत बाब के तर्जुमे से यूँ है कि इसमें आशूरा के दिन का'बा पर पर्दा डालने का जिक्र है जिससे का'बा शरीफ़ की अज़मत षाबित हुई जो कि बाब का मक्सूद है।

1593. हमसे अहमद बिन हफ़्सा ने बयान किया, कहा कि हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन तह्मान ने बयान किया, उनसे हज़ाज बिन हज़ाज असलमी ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी उत्बा ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बैतुल्लाह का हज और उम्रह याजूज और माजूज के निकलने के बाद भी होता रहेगा। अब्दुल्लाह बिन अबी उत्बा के साथ इस हदीष को अबान और इमरान ने क़तादा से रिवायत किया और अब्दुर्रहमान ने शुअबा के वास्ते से यूँ बयान किया

١٥٩٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْحَبَّاجِ بْنِ حَبَّاجٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي عُثَيْبَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((لَيَخْرُجَنَّ النَّبِيُّ وَلَيَعْمَرَنَّ بَعْدَ خُرُوجِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ)). تَابِعَهُ أَبَانُ وَعِمْرَانُ عَنْ قَتَادَةَ. وَقَالَ عَبْدُ

कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक बैतुल्लाह का हज्ज बन्द न हो जाए। इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि पहली रिवायत को ज़्यादा रावियों ने रिवायत की है और क़तादा ने अब्दुल्लाह बिन उतबा से सुना और अब्दुल्लाह ने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना।

الرَّحْمَنِ عَنْ شُعْبَةَ ((لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى لَا يُحْجَ النَّبِيُّ)) وَالْأَوَّلُ أَكْثَرُ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ سَمِعَ قَتَادَةَ عَبْدَ اللَّهِ وَعَبْدَ اللَّهِ أَبَا سَعِيدٍ.

तशरीह:

याजूज माजूज दो काफ़िर क्रौमें याफ़स बिन नूह की औलाद में से हैं जिनकी औलाद में रूसी और तुर्क भी हैं क़यामत के करीब वो सारी दुनिया पर काबिज़ होकर बड़ा कोहराम मचाएंगी। पूरा ज़िक्र अलामाते क़यामत में आया। इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीस को यहाँ इसलिये लाए कि दूसरी रिवायत में बज़ाहिर तज़ारुज़ है और फ़िल हकीकत तज़ारुज़ नहीं, इसलिये कि क़यामत तो याजूज-माजूज के निकलने और हलाक होने के बहुत दिनों बाद क़ायम होगी तो याजूज और माजूज के वेक़्त में लोग हज्ज और उम्ह्र कर रहे होंगे। उसके बाद फिर क़यामत के करीब लोगों में कुफ़ फैल जाएगा और हज्ज और उम्ह्र मौक़ूफ़ (स्थगित) हो जाएगा। अबान की रिवायत को इमाम अहमद (रह.) और इमरान की रिवायत को अबू यअला और इब्ने ख़ुज़ैमा ने वस्ल किया है। हज़रत हुसैन बसरी (रह.) ने कहा ला यज़ालुन्नासु अला दीनिम्मा हज्जुल्बैत वस्तवबलुल्लिक्क़बलत (फ़तह) या'नी मुसलमान अपने दीन पर उस वक़्त तक क़ायम रहेंगे जब तक कि वो का'बा का हज्ज और उसकी तरफ़ मुँह करके नमाज़ें पढ़ते रहेंगे।

बाब 48 : का'बा पर ग़िलाफ़ चढ़ाना

٤٨ - بَابُ كِسْوَةِ الْكَعْبَةِ

इमाम बुखारी (रह.) का मतलब ये है कि का'बा पर ग़िलाफ़ चढ़ाना जाइज़ है या उसके ग़िलाफ़ का तक्सीम करना। कहते हैं सबसे पहले तबअ हमीरी ने उस पर ग़िलाफ़ चढ़ाया, इस्लाम से नौ सौ बरस पहले। कुछ ने कहा अदनान ने और रेशमी ग़िलाफ़ अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने चढ़ाया और आँहज़रत (ﷺ) के अहद में उसका ग़िलाफ़ इन्ताअ और कम्बल का था। फिर आपने यमनी कपड़े का ग़िलाफ़ चढ़ाया।

1594. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वट्टहाब ने बयान किया; कहा कि हमसे ख़ालिद बिन हारिष ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान प्रौरी ने बयान किया, कहा कि हमसे वासिल अहदब ने बयान किया और उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि मैं शैबा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ (दूसरी सनद) और हमसे कुबैसा ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने वासिल से बयान किया और उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि मैं शैबा के साथ का'बा में कुर्सी पर बैठा हुआ था तो शैबा ने फ़र्माया कि उसी जगह बैठकर उमर (रज़ि.) ने (एक मर्तबा) फ़र्माया कि मेरा इरादा ये होता है कि का'बा के अंदर जितना सोना चाँदी है उसे न छोड़ूँ (जिसे ज़मान-ए-जाहिलियत में कुफ़कार ने जमा किया था) बल्कि सबको निकालकर (मुसलमानों में) तक्सीम कर दूँ। मैंने अर्ज़ किया कि आपके साथियों (आँहज़रत ﷺ और अबूबक्र रज़ि.) ने तो ऐसा नहीं किया। उन्होंने फ़र्माया कि मैं भी उन्हीं की पैरवी कर रहा हूँ (इसीलिये मैं उसके हाथ नहीं लगाता) (दीगर मक़ाम : 7275)

١٥٩٤ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا وَاصِلُ الْأَخَذْبُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ : جِئْتُ إِلَى شُعْبَةَ. ح وَحَدَّثَنَا قَبِيصَةُ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ وَاصِلٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ : ((جَلَسْتُ مَعَ شُعْبَةَ عَلَى الْكُرْسِيِّ فِي الْكَعْبَةِ فَقَالَ : لَقَدْ جَلَسَ هَذَا الْمَجْلِسَ عُمَرُ وَرَحِمَ اللَّهُ عَنْهُ فَقَالَ : لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ لَا أَدْعَ فِيهَا صَفْرَاءَ وَلَا بَيْضَاءَ إِلَّا قَسَمْتُهُ. قُلْتُ إِنَّ صَاحِبَيْكَ لَمْ يَفْعَلَا. قَالَ : هُمَا الْمَرَّانِ الْقَدِي بِهِمَا)). [طرف ٣ : ٧٢٧٥].

तशरीह : काललइस्माईली लैस फ़ी हदीथिलबाबि लिक्स्वतिल्कअबति ज़िकरुन यअनी फ़ला युताबिकुत्तर्जुमत व काल इब्नु बत्ताल मअनत्तर्जुमति महीहुन व वज्हुहा अन्नहू मअलूमन अन्नल्मुलूक फ़ी कुल्लि ज़मानिन कानू यतफ़ाखरून बिकिस्वतिल्कअबति बिरफ़ीइषिबिल्मन्सूजति बिज़्जहबि व गैरिही कमा यतफ़ाखरून बितस्बीलिल्अम्वालि लहा फअरादल्बुख़ारी अन्न उमर लम्मा राअ किस्मतज़्जहबि वलिफ़ज़्जति सवाबन कान हुक्मुल्किस्वति तजूज़ु किस्मतुहा बल मा फ़ज्जल मिन किस्वतिहा औला व काल इब्नुल्मुनीर फिल्हाशिय्यति यहतमिलु अन्न मन्नसूदहू अत्तम्बीहु अला अन्न किस्वतिल्कअबति मश्रूउन वल्हुज्जतु फ़ीहि अन्नहा लम तज़ल तक्सुदु बिल्मालि यूजद फ़ीहा अला मअनज़्ज़ीनति इअज़ामन लहा फल्किस्वतु मिन हाज़ल्कबीलि (फ़तहल्बारी)

बैतुल्लाह शरीफ़ पर ग़िलाफ़ डालने का रिवाज क़दीम ज़माने से है। मुअरिख़ीन (इतिहासकार) लिखते हैं कि जिस शख्स ने सबसे पहले ग़िलाफ़ का 'बा' मुकद्दस को पहनाया वो हिमयर का बादशाह अस्अद अबू कुर्ब था। ये शख्स जब मक्का शरीफ़ आया तो निहायत बुर्द यमानी से ग़िलाफ़ तैयार कराकर अपने साथ लाया और भी मुख्तलिफ़ किस्म की सूती और रेशमी चादरों के पर्दे साथ थे।

कुरैश जब ख़ान-ए-का'बा के मुतवल्ली हुए तो आम चन्दा से उनका नया ग़िलाफ़ सालाना तैयार कराकर का'बा शरीफ़ को पहनाने का दस्तूर हो गया। यहाँ तक कि अबू रबीआ बिन मुगीरह मख़ज़ूमि का ज़माना आया जो कुरैश में बहुत ही सखी और साहिबे षरवत था। उसने ऐलान करवाया कि एक साल चन्दे से ग़िलाफ़ तैयार किया जाए और एक साल में अकेला उसके सारे अख़राजात बर्दाश्त किया करूँगा। इसी बिना पर उसका नाम अदले कुरैश पड़ गया।

हज़रत अब्बास (रज़ि.) की वालिदा माजिदा नबीला बन्ते हुराम ने क़ब्ल अज़ इस्लाम एक ग़िलाफ़ चढ़ाया था जिसकी सूरत ये हुई कि नौ उम्र बच्चा या'नो हज़रत अब्बास (रज़ि.) का भाई ख़वार नामी गुम हो गया था और उन्होंने मन्नत मा'नी थी कि मेरा बच्चा मिल गया तो का'बा पर ग़िलाफ़ चढ़ाऊँगी चुनौचे मिलने पर उन्होंने अपनी मन्नत पूरी की।

8 हिजरी में मक्का दारुल इस्लाम बन गया और आँहज़रत (ﷺ) ने यमनी चादर का ग़िलाफ़ डाला। आपकी वफ़ात के बाद अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने आपकी पैरवी की। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) के अहदे ख़िलाफ़त में जब मिस्र फ़तह हो गया तो आपने क़बाती मिस्री का जो कि बेशक़ीमती कपड़ा है, बैतुल्लाह पर ग़िलाफ़ चढ़ाया और सालाना उसका एहतिमाम फ़र्माया। आप पिछले साल का ग़िलाफ़ हाजियों पर तक्सीम कर देते और नया ग़िलाफ़ चढ़ा दिया करते थे। शुरू में हज़रत इब्माम ग़नी (रज़ि.) के ज़माने में भी यही अमल रहा। एक बार आपने ग़िलाफ़े का'बा का कपड़ा किसी हाइज़ा औरत को पहने हुए देखा तो बांटने की आदत बदल दी और क़दीम ग़िलाफ़ दफ़न किया जाने लगा। उसके बाद उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने मश्वरा दिया कि ये माल की बर्बादी है, इसलिये बेहतर है कि पुराना पर्दा बेच दिया जाए। चुनौचे उसकी क़ीमत ग़रीबों में तक्सीम होने लगी। धीरे-धीरे बनू शैबा बिला शिर्कते ग़ैर उसके मालिक बन गए।

अक़्बर सलातीने इस्लाम का'बा पर ग़िलाफ़ डालने को अपना फ़ख़्र समझते रहे और किस्म-किस्म के क़ीमती ग़िलाफ़ का'बा पर सालाना चढ़ाते रहे हैं। हज़रत मुआविया (रज़ि.) की तरफ़ से एक ग़िलाफ़ दीबा का 10 मुहर्रम को और दूसरा क़बाती का 29 रमज़ान को चढ़ा दिया गया था। ख़लीफ़ा मामून् रशीद ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में बजाय एक के तीन ग़िलाफ़ भेजे। जिनमें एक मिस्री पारचा का था और दूसरा सफ़ेद दीबा का और तीसरा सुर्ख़ दीबा का था ताकि पहला यकुम रजब को और दूसरा 27 रमज़ान को और तीसरा आठवीं जिल्हिज्ज को बैतुल्लाह पर चढ़ाया जाए। ख़ुलफ़ा-ए-अब्बासिया को इसका बहुत ज़्यादा एहतिमाम था और स्याह कपड़ा उनका शिआर था। इसलिये अक़्बर स्याह रेशम ही का ग़िलाफ़ का'बा के लिये तैयार होता था। सलातीन के अलावा दीगर उम्मा व अहले षरवत भी इस ख़िदमत में हिस्सा लेते थे और हर शख्स चाहता था कि मेरा ग़िलाफ़ देर तक लिपटा रहे। इसलिये ऊपर-नीचे बहुत से ग़िलाफ़ बैतुल्लाह पर जमा हो गए।

160 हिजरी में सुल्तान महदी अब्बासी जब हज्ज के लिये आए तो ख़ुदामे का'बा ने कहा कि बैतुल्लाह पर इतने ग़िलाफ़ जमा हो गए हैं कि बुनियादों को उनके बोझ का तहम्मूल दुश्वार है। सुल्तान ने हुक्म दिया कि तमाम ग़िलाफ़ उतार दिये जाएँ और आइन्दा एक से ज़्यादा ग़िलाफ़ न चढ़ाया जाए।

अब्बासी हुक्मत जब ख़त्म हो गई तो 659 हिजरी में शाहे यमन मलिक मुज़फ़्फ़र ने इस ख़िदमत को अंजाम दिया। उसके बाद मुद्त तक ख़ालिस् यमन से ग़िलाफ़ आता रहा और कभी शाहाने मिस्र की शिर्कत में मुशतरक़ा। ख़िलाफ़त

अब्बासिया के बाद शाहाने मिस्र में सबसे पहले इस खिदमत का फ़ख्र मलिक जाहिर बैरिस को नसीब हुआ। फिर शाहाने मिस्र ने मुस्तक़िल तौर पर उसके औकाफ़ कर दिये और ग़िलाफ़े का'बा सालाना मिस्र से आने लगा। 751 हिजरी में मलिक मुजाहिद ने चाहा कि मिस्री ग़िलाफ़ उतार दिया जाए और मेरे नाम का ग़िलाफ़ चढ़ाया जाए मगर शरीफ़ मक्का के ज़रिये जब ये ख़बर शाहे मिस्र को पहुँची तो मलिक मुजाहिद गिरफ़्तार कर लिया गया।

का'बा शरीफ़ को बैरूनी ग़िलाफ़ पहनाने का दस्तूर तो ज़मान-ए-क़दीम से चला आ रहा है मगर अंदरूनी ग़िलाफ़ के बारे में तफ़्तीउद्दीन फ़ारसी के बयान से मा'लूम होता है कि सबसे पहले मलिक नासिर हुसैन चरकसी ने 761 हिजरी में का'बा का अंदरूनी ग़िलाफ़ रवाना किया था जो तफ़रीबन 817 हिजरी तक का'बा के अंदर की दीवारों पर लटका रहा। उसके बाद मलिक अशरफ़ अबू नस्र सैफ़ुद्दीन सुल्ताने मिस्र ने 825 हिजरी में सुर्ख़ रंग का अंदरूनी ग़िलाफ़ का'बा के लिये रवाना किया। आजकल ये ग़िलाफ़ खुद हुकूमते सऊदिया अरबिया ख़ल्लदल्लाह तआला के ज़ेरे एहतिमाम तैयार कराया जाता है।

बाब 49 : का'बा के गिराने का बयान

और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया एक फ़ौज़ बैतुल्लाह पर चढ़ाई करेगी और वो ज़मीन में धंसा दी जाएगी।

1595. हमसे अमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन अरुनस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गोया मेरी नज़रों के सामने वो पतली टांगों वाला स्याह आदमी है जो ख़ान-ए-का'बा के एक एक पत्थर को उखाड़ फेंकेगा।

1596. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया का'बा को दो पतली पिण्डलियों वाला हब्शी ख़राब करेगा।

(राजेअ: 1591)

तशरीह:

ऊपर वाली हदीष में अफ़हज का लफ़ज़ है। अफ़हज वो है जो अकड़ता हुआ चले या चलते में दोनों पजे तो नज़दीक रहें और दोनों ऐड़ियों में फ़ासला रहे। वो हब्शी मर्द जो क़यामत के करीब का'बा ढहाएगा वो उसी शक्ल का होगा। दूसरी रिवायत में है कि उसकी आँखें नीली, नाक फैली हुई होगी, पेट बड़ा होगा। उसके साथ और लोग होंगे, वो का'बा का एक-एक पत्थर उखाड़ डालेगा और समुन्दर में ले जाकर फेंक देगा। ये क़यामत के बिल्कुल नज़दीक होगा। अल्लाह हर फ़ितने से बचाए आमीन!

व वक्रअ हाज़लहदीषु इन्द अहमद मिन तरीकि सईद बिन समआन अन अबी हुरैरत बिअतम्मि मिन हाज़स्सिमाकि व लफ़िज़ही युबायिउ लिर्ज़ुलि बैनरूकिन् वल्मक्रामि व लन यस्तहिल्ल हाज़लबैतु इल्ला अहलुहु फ़इज़ा इस्तहल्लुहु फ़ला

٤٩- بَابُ هَذِمِ الْكَعْبَةِ

قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَهْزُو جَنْشَ الْكَعْبَةِ لِيُخَسَفَ بِهِ)).

١٥٩٥- حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعْيُودٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْأَعْثَمِ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَأَنِّي بِيَأْسُودَ الْحَجِّ يَلْقَاهَا حَجْرًا حَجْرًا)).

١٥٩٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يُخَرَّبُ الْكَعْبَةُ ذُو السُّوَيْفَتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ)). [راجع: ١٥٩١]

तुस्अलु अन हलकतिलअरबि शुम्म तजीउल्हबशतु फयुखरिबूनहू खराबन ला युअम्मरू बअदहू अबदन व हुमुल्लजीन यस्तखिरजून कन्जहू व लिअबी कुरंत फिस्सुफुनि मिन वज्हेन आखर मिन अन अबी हुँरैत मर्फूअन ला यस्तखिरजु कन्जल्कअबति इल्ला जवस्सवीकतैनि मिनल्हबशति व नहवुहू लिअबी दाऊद मिन हदीषि अब्दिल्लाहिबिनि अम्बिल्लाआसि व जाद अहमद व ज़बानी मिन तरीक़ि मुजाहिद अन्हु फयस्लिबुहा हियल्लहा व युजरिदुहा मिन किस्वतिहा कअन्नी अन्जुरू इलैहि उसैलउ उफैदअ यक्लूबु अलैहा बिमस्हातिही औ बिमुअव्वलिही क़ील हाज़ल्हदीषु युखालिफु कौलहू तआला अव लम यरौ अन्ना जअल्ना हरामन आभिन्न व लिअन्नल्लाह हबस अन मक्कत अल्फ़ील व लम युमक्किन अस्हाबुहू मिन तखरीबिल्कअबति व लम तकुन इज़ ज़ाक कबलतन फकैफ़ युसल्लतु अलैहल्हबशतु बअद इन सारत किल्लतल्मुस्लिमीन व उजीब बिअन्न ज़ालिक महमूलुन अला अन्नहू यकउ फ़ी आखिरिज़मानि कुर्ब क्रियामिस्साअति ला यब्क़ फ़िल्अर्ज़ि अहदुन यकूलु अल्लाह अल्लाह कमा षबत फ़ी सहीहि मुस्लिम ला तकूमस्साअतु हत्ता ला युकाल फ़िल्अर्ज़ि अल्लाह अल्लाह वअतरज़ बअज़ुल्मुल्हिदीन अलल्हदीषिल्माजी फ़काल कैफ़ सवहत्तु ख़तायल्मुश्किनी व लम तबयज्जत ताआतु अहलिचौहीद व उजीब बिमा क़ाल इब्नु कुतैबत लौ शाअल्लाहु लकान ज़ालिक व इन्नमा अजरल्लाहुल्आदत बिअन्नस्सवाद यस्बिगु व ला यन्सबिगु अलल्अक्सि मिनल्बयाज़ि (फ़तुहलबारी)

बाब 50 : हज़रे अस्वद का बयान

1597. हमसे मुहम्मद बिन क़सीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें सुफ़यान श़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें आबिस ने, उन्हें रबीआ ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) हज़रे अस्वद के पास आए और उसे बोसा दिया और फ़र्माया मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू सिर्फ़ एक पत्थर है, न किसी को नुक़सान पहुँचा सकता है न नफ़ा। अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) को तुझे बोसा देते हुए मैं न देखता तो मैं भी कभी तुझे बोसा न देता। (दीगर मक़ाम : 1605, 1610)

٥٠- بَابُ مَا ذُكِرَ فِي الْحَجَرِ الْأَسْوَدِ

١٥٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَابِسِ بْنِ رَبِيعَةَ عَنْ غَمْرٍ وَصْنِ اللَّهِ عَنْهُ ((أَنْهُ جَاءَ إِلَى الْحَجَرِ الْأَسْوَدِ فَقَبَّلَهُ فَقَالَ : إِنِّي أَعْلَمُ أَنَّكَ حَجَرٌ لَا تَنْفَعُ وَلَا تَضُرُّ، وَلَوْ لَا أَنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يُبَاسُّكَ مَا قَبَّلْتُكَ)).

[طرف ١ : ١٦٠٥، ١٦١٠.]

तशरीह :

हज़रे अस्वद वो काला पत्थर है जो का'बा के मशरिकी (पूर्वी) कोने में लगा हुआ है। सहीह हदीष में है कि हज़रे अस्वद जन्नत का पत्थर है। पहले वो दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद था फिर लोगों के गुनाहों ने उसको काला कर दिया। हाकिम की रिवायत में है कि हज़रत उमर (रज़ि.) को ये बात सुनकर अली (रज़ि.) ने फ़र्माया था ऐ अमीरुल मोमिनीन! ये पत्थर बिगाड़ और फ़ायदा कर सकता है, क़यामत के दिन उसकी आँखें हांगी और जुबान और होंठ और वो ग़याही य़ुसूफ़ हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये सुनकर फ़र्माया, अबुल हसन! जहाँ तुम न हो वहाँ अल्लाह मुझको न रखे। ज़हबी ने कहा कि हाकिम की रिवायत साकि़त है। खुद मर्फूअन हदीष में आँहज़रत (ﷺ) से प्राबित है कि आप (ﷺ) ने भी हज़रे अस्वद को बोसा देते वक्त ये कहा था और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने भी ऐसा ही कहा। अख़रजहू इब्नु अबी शैबा उसका मतलब ये है कि तेरा चूमना सिर्फ़ आँहज़रत (ﷺ) की इतिबाअ की निय्यत से है।

इस रिवायत से साफ़ ये निकला कि क़ब्रों की चौखट चूमना या क़ब्रों की ज़मीन चूमना या खुद क़ब्र को चूमना ये सब नाजाइज काम हैं। बल्कि बिदआते सइय्या हैं क्योंकि हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रे अस्वद को सिर्फ़ इसलिये चूमा कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसे चूमा था और आँहज़रत (ﷺ) से या सहाबा से कहीं मन्कूल नहीं है कि उन्होंने क़ब्रों का बोसा लिया हो। ये सब काम जाहिलों ने निकाले हैं और शिर्क हैं क्योंकि जिनकी क़ब्रों को चूमते हैं उनको अपने नफ़ा—नुक़सान का मालिक जानते हैं और उनकी दुहाई देते हैं और उनसे मुरादे मांगते हैं, लिहाज़ा इसके शिर्क होने में क्या कलाम है? कोई ख़ालिस मुहब्बत से चूमे तो ये भी ग़लत और बिदअत होगा इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) और आपके सहाबा से कहीं किसी क़ब्र को चूमने का पुबूत नहीं है।

अल्लामा हाफिज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं, क़ालत्तबी इन्मा क़ाल ज़ालिक उमरू लिअन्ननास कानू हदीषि अहदिम्बिइबादल्अस्नामि फख़शिय उमरू अय्यजुज़ल्जुह्हालु अन्न इस्तिलामल्हज़ि मिम्बाबि तअज़ीमि बअजिलअहज़ारि कमा कानतिल्अरबू तफ़अलु फिल्ज़ाहिलिय्यति फअराद उमरू अय्युअल्लिमन्नास अन्न इस्तिलामहू इत्तिबाअ लिफिअलि रसूलिल्लाहि (ﷺ) ला लिअन्नल्हज़र यन्फउ और यज़ुरू बिज़ातिही कमा कानतिल्ज़ाहिलिय्यतु तअतक्रिदुहू फिल्औषानि. (फ़तहुल्बारी)

ये वो तारीख़ी पत्थर है जिसे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और आपके बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के मुबारक जिस्मों से छुए होने का शर्फ़ हासिल है। जिस वक़्त ख़ाना का'बा की इमारत बन चुकी तो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) से कहा कि एक पत्थर उठा लाओ ताकि उसको उस जगह लगा दूँ जहाँ से तवाफ़ शुरू किया जाए। तारीख़े मक्का में है फ़क़ाल इब्राहीमु लिइस्माईल अलैहिस्सलाम या इस्माईलु इतीनी बिहज़िन अज़अहू हत्ता यकून अलमल्लिन्नासि यब्तदून मिन्हुत्तवाफ़ या'नी हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) से कहा कि एक पत्थर लाओ ताकि उसे उस जगह रख दूँ जहाँ से लोग तवाफ़ शुरू करें।

कुछ लोगों की रिवायात के आधार पर इस पत्थर की तारीख़ हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) के जन्नत से निकलने के साथ साथ शुरू होती है। चुनाँचे तूफ़ाने नूह के वक़्त ये पत्थर बहकर कोहे अबू कब्बीस पर चला गया। इस मौक़े पर कोहे अबू कब्बीस से सदा बुलन्द हुई कि ऐ इब्राहीम! ये अमानत एक मुद्दत से मेरे सुपुर्द है। आपने वहाँ से उस पत्थर को हासिल करके का'बा के एक कोने में नज़ब कर दिया और का'बा का तवाफ़ करने के लिये उसको शुरू करने और ख़त्म करने की जगह ठहराया।

हज़ायों के लिये हज़रे अस्वद को बोसा देना हाथ लगाना ये काम मस्नून और कारे प़वाब हैं। क़यामत के दिन ये पत्थर उन लोगों की गवाही देगा जो अल्लाह के घर की ज़ियारत के लिये आते हैं और उसको हाथ लगाकर हूज़ या उम्ह की शहादत प़ब्त (दर्ज) कराते हैं।

कुछ रिवायात की बिना पर ज़माना-ए-इब्राहीमी में पैमान लेने का ये आम दस्तूर था कि एक पत्थर रख दिया जाता जिस पर लोग आकर हाथ मारते। इसका मतलब ये होता कि जिस ज़माने के लिये वो पत्थर गाढ़ा गया है उसको उन्होंने तस्लीम कर लिया बल्कि अपने दिलों में उस पत्थर की तरह मज़बूत गाड़ लिया। इसी दस्तूर के मुवाफ़िक़ हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने मुक्तदा क्रौम के लिये ये पत्थर नज़ब किया ताकि जो शख़्स बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हो उस पत्थर पर हाथ रखे। जिसका मतलब ये है कि उसने तौहीदे इलाही के बयान को कुबूल कर लिया। अगर जान भी देनी पड़ेगी तो उससे मुन्हरिफ़ न होगा। गोया हज़रे अस्वद का इस्तिलाम अल्लाह तआला से बैअत करना है। इस तम्घील की तशरीह़ एक हदीष में यूँ आई है, अनिब्नि अब्बासिन मफ़ूअन अल्हज़रल्अस्वदु यमीनुल्लाहि फ़ी अज़िही युसाफ़िहु बिही ख़ल्क़हू (तबरानी) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) मफ़ूअन रिवायत करते हैं कि हज़रे अस्वद ज़मीन में गोया अल्लाह का दायौ हाथ है जिसे अल्लाह तआला अपने बन्दों से मुसाफ़ा फ़र्माता है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की दूसरी रिवायत में ये अल्फ़ाज़ आए हैं, नज़लल्हज़रल्अस्वदु मिनल्जन्नति व हुव अशहु बयाज़न मिनल्लबनि फ़सवदतु ख़ताया बनी आदम (खाहुत्तिर्मिज़ी कअहमद) या'नी हज़रे अस्वद जन्नत से नाज़िल हुआ तो दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद था मगर इंसानों की ख़ताकारियों ने उसको स्याह कर दिया। इससे हज़रे अस्वद की शराफ़त व बुजुर्गी मुराद है।

एक रिवायत में यूँ आया है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला इस तारीख़ी पत्थर को नुक्क़ और बस़ारत से सरफ़राज़ फ़र्माएगा। जिन लोगों ने हक्क़ानिय्यत के साथ तौहीदे इलाही का अहद करते हुए उसको चूमा है उन पर ये गवाही देगा। इन फ़ज़ाइल के बावजूद किसी मुसलमान का ये अक़ीदा नहीं है कि ये पत्थर मा'बूद है उसके इख़्तियार नफ़ा और ज़रर है।

एक बार हज़रत फ़ारूके आज़म (रज़ि.) ने हज़रे अस्वद को बोसा देते हुए साफ़ ऐलान किया था इन्नी आलमु इन्नक हज़रुन ला तज़ुरू व ला तन्फ़उ व लौला इन्नी राइतु रसूलिल्लाहि (ﷺ) युक्बिलुक मा कब्बलतुक (खाहुस्सित्तु व अहमद) या'नी मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू सिर्फ़ एक पत्थर है, तेरे कब्ज़े में न किसी का नफ़ा है और नुक़सान

और अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) को मैंने तुझे बोसा देते हुए न देखा होता तो मैं तुझे कभी भी बोसा न देता।

अल्लामा तबरी मरहूम लिखते हैं, इन्मा काल जालिक उमरू लिअन्नन्नास कानू हदीषि अहदि बिइबादतिल्अस्नामि फखशियं उमरू अय्यजुत्रल्हुहहालु अन्न इस्तिलामल्हज्जि मिम्बाबि तअजीमि बअज़िल्अहजारि कमा कानतिल्अरबु तफ़अलु फिल्जाहिलिय्यति फ़अराद उमरू अय्यअल्लिमन्नास अन्न इस्तिलामहू इत्तिबाउ लिफिअलि रसूलिल्लाहि (ﷺ) कानल्हज्जु यन्फउ व यज़ुरू बिज़ातिही कमा कानतिल्जाहिलिय्यतु तअतक्रिदुहू फिल्औषानि या'नी हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये ऐलान इसलिये किया कि अक़षर लोग बुतपरस्ती से निकलकर करीबी ज़माने में इस्लाम के अंदर दाखिल हुए थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस ख़तरे को महसूस कर लिया कि जाहिल लोग ये न समझ बैठे कि ज़मान-ए-जाहिलियत के दस्तूर के मुताबिक पत्थरों की ता'ज़ीम है। इसलिये आपने लोगों को आगाह किया है कि हज़रे अस्वद का इस्तिलाम सिर्फ़ अल्लाह के रसूल (ﷺ) की इत्तिबाअ में किया जाता है। वरना हज़रे अस्वद अपनी ज़ात में नफ़ा या नुक़सान पहुँचाने की ताक़त नहीं रखता जैसा कि अहदे जाहिलियत के लोग बुतों के बारे में ए'तिकाद रखते थे।

इब्ने अबी शैबा और दारे कुत्नी ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के भी यही अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं कि आपने भी हज़रे अस्वद के इस्तिलाम करने के समय यूँ फ़र्माया, मैं जानता हूँ कि तेरी हक़ीक़त एक पत्थर से ज़्यादा कुछ नहीं। नफ़ा या नुक़सान की कोई ताक़त तेरे अंदर नहीं। अगर मैंने आँहज़रत (ﷺ) को तुझे बोसा देते हुए न देखा होता तो मैं भी तुझको बोसा न देता।

कुछ मुहदिप्पीन ने खुद नबी करीम (ﷺ) के अल्फ़ाज़ भी नक़ल करते हैं कि आप (ﷺ) ने हज़रे अस्वद को बोसा देते हुए फ़र्माया, मैं जानता हूँ कि तू एक पत्थर है जिसमें नफ़ा व नुक़सान की तार्ज़ीर नहीं है। अगर मुझे मेरे रूब का हुक्म न होता तो मैं तुझे बोसा न देता।

इस्लामी रिवायत की रोशनी में हज़रे अस्वद की हैषियत एक तारीख़ी पत्थर की है जिसको अल्लाह के ख़लील इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने ख़ान-ए-का'बा की ता'मीर के वक़्त एक बुनियादी पत्थर की हैषियत से नसब किया। इस लिहाज़ से दीने हनीफ़ की हज़ारों साल का इतिहास इस पत्थर के साथ जुड़ जाता है। अहले इस्लाम इसकी जो भी ता'ज़ीम इस्तिलाम वग़ैरह की शक़ल में करते हैं वो सब कुछ सिर्फ़ इसी बिना पर है मिल्लते इब्राहीमी का अल्लाह के यहाँ मक्बूल होना और मज़हबे इस्लाम की हक़ानियत पर भी ये पत्थर एक तारीख़ी शाहिदे आदिल की हैषियत से बड़ी अहमियत रखता है जिसको हज़ारों साल के बेशुमार इंक़लाब फ़ना न कर सके। वो जिस तरह हज़ारों साल पहले नसब किया गया था आज भी उसी शक़ल में उसी जगह तमाम दुनिया के हादिषात, इंक़लाबों का मुकाबला करते हुए मौजूद है। उसको देखने से, उसको चूमने से एक सच्चे मुसलमान मुबहिहद की नज़रों के सामने दीने हनीफ़ के चार हज़ार साला तारीख़ी औराक़ एक के बाद एक उलटने लग जाते हैं। हज़रत ख़लीलुल्लाह और हज़रत ज़बीहुल्लाह अलैहिमस्सलाम की पाक ज़िन्दगियाँ सामने आकर मअरिफ़ते हक़ की नई-नई राहें दिमाग़ों के सामने खोल देती हैं। रूहानियत वज्द में आ जाती है। तौहीद परस्ती का ज़ब्बा जोश मारने लगता है। हज़रे अस्वद बिनाए तौहीद का एक बुनियादी पत्थर है। दुआए ख़लील व नबीदे मसीहा हज़रत सय्यिदुल अंबिया (ﷺ) की सदाक़त के इज़हार के लिये एक ग़ैर फ़ानी यादगार है। इस मुख़्तसर से तब्सर के बाद किताबुल्लाह सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) की रोशनी में इस हक़ीक़त को अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लेना चाहिये कि मस्नूआते इलाहिया में जो चीज़ भी मुहतरम है वो बिज्जात मुहतरम नहीं है बल्कि पैग़म्बरे इस्लाम की ता'लीमे इशाद की वजह से मुहतरम है। इसी कुल्लिया के ख़ातिर ख़ान-ए-का'बा, हज़रे अस्वद, सफ़ा-मरवा वग़ैरह मुहतरम करार पाए। इसीलिये इस्लाम का कोई फ़ेअल भी जिसको वो इबादत या लायक़े अज़मत करार देता हो ऐसा नहीं है जिसकी सनद सय्यिदना मुहम्मदुरसूलुल्लाह (ﷺ) के वास्ते से हक़ तआला तक न पहुँचती हो। अगर कोई मुसलमान ऐसा फ़ेअल ईजाद करे जिसकी सनद पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) तक न पहुँचती हो तो वो फ़ेअल नज़रों में कैसा भी अच्छा और अक्ल के नज़दीक़ कितना ही मुस्तहसन क्यों न हो, इस्लाम फ़ौरन इस पर बिदअत होने का हुक्म लगा देता है और सिर्फ़ इसलिये उसको नज़रों से गिरा देता है कि उसकी सनद हज़रत रसूलुल्लाह (ﷺ) तक नहीं पहुँचती बल्कि वो एक ग़ैर मुल्हम इंसान का ईजाद किया हुआ फ़ेअल है।

उसी पाक ता'लीम का अफ़र है कि सारा का'बा बावजूद ये कि एक घर है मगर हज़रे अस्वद और रुक्ने यमानी व

मुल्तजिम पर पैगम्बरे इस्लाम (अलैहिस्सलाम) ने जो तरीक़-ए-इस्तिलाम या चिमटने का बतलाया है मुसलमान उससे इंच भर आगे नहीं बढ़ते न दूसरी दीवारों के पत्थरों को चूमते हैं क्योंकि मुसलमान मख़्लूक़ाते इलाहिया के साथ रिश्ता कायम करने में पैगम्बर (ﷺ) के इशार्द व अमल के ताबेअ हैं।

बाब 51 : का'बा का दरवाज़ा अंदर से बन्द कर लेना और उसके हर कोने में नमाज़ पढ़ना जिधर चाहे

1598. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ), उसामा बिन जैद और बिलाल व इम्रान बिन अबी तलहा चारों ख़ान-ए-का'बा के अंदर गये और अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया। फिर जब दरवाज़ा खोला तो मैं पहला शख्स था जो अंदर गया। मेरी मुलाक़ात बिलाल से हुई। मैंने पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) ने (अंदर) नमाज़ पढ़ी है? उन्होंने बतलाया कि हाँ! दोनों यमनी सतूनों के दरम्यान आपने नमाज़ पढ़ी है। (राजेअ 397)

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है। हज़रत इमाम ये बतलाना चाहते हैं कि का'बा शरीफ़ में दाख़िल होकर और दरवाज़ा बन्द करके जिधर चाहे नमाज़ पढ़ी जा सकती है। दरवाज़ा बन्द करना इसलिये ज़रूरी है कि अगर वो खुला रहे तो उधर मुँह करके नमाज़ी के सामने का'बा को कोई हिस्सा नहीं रह सकता जिसकी तरफ़ रुख़ करना ज़रूरी है। आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों यमनी सुतून के बीच नमाज़ पढ़ी जो इत्तिफ़ाक़ी चीज़ थी

बाब 52 : का'बा के अंदर नमाज़ पढ़ना

1599. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने ने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें मूसा बिन इब्बा ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) जब का'बा के अंदर दाख़िल होते तो सामने की तरफ़ चलते और दरवाज़ा पीठ की तरफ़ छोड़ देते। आप उसी तरह चलते रहते और जब सामने की दीवार तक़रीबन तीन हाथ रह जाती तो नमाज़ पढ़ते थे। इस तरह आप उस जगह नमाज़ पढ़ने का एहतिमाम करते थे जिसके बारे में बिलाल (रज़ि.) से मा'लूम हुआ था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वहीं नमाज़ पढ़ी थी। लेकिन उसमें कोई हर्ज नहीं का'बा में जिस जगह भी कोई चाहे नमाज़ पढ़ ले।

(राजेअ 397)

५१- بَابُ إِغْلَاقِ الْبَيْتِ، وَتُصَلِّي فِي أَيِّ تَوَاحِيِ الْبَيْتِ شَاءَ

١٥٩٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ : ((دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْبَيْتَ هُوَ وَأَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ وَبِلَالٌ وَعُثْمَانُ بْنُ طَلْحَةَ فَأَغْلَقُوا عَلَيْهِمْ، فَلَمَّا فَتَحُوا كُنْتُ أَوَّلَ مَنْ وَلَجَ فَلَقِيتُ بِلَالًا فَسَأَلْتُهُ: هَلْ صَلَّى فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ؟ قَالَ : نَعَمْ، بَيْنَ الْعَمُودَيْنِ الْيَمَانِيَيْنِ)).

[راجع: ٣٩٧]

५२- بَابُ الصَّلَاةِ فِي الْكَعْبَةِ

١٥٩٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقَّةٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ غُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّكَ كَانَ إِذَا دَخَلَ الْكَعْبَةَ مَشَى قِبَلَ الْوُجْهِ حَتَّى يَدْخُلَ وَيَجْعَلَ الْبَابَ قِبَلَ الظَّهْرِ يَمْشِي حَتَّى يَكُونَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِدَارِ الَّذِي قِبَلَ وَجْهِهِ قَرِيبًا مِنْ ثَلَاثِ أَذْرُعٍ فَيُصَلِّي، يَتَوَخَّى الْمَكَانَ الَّذِي اخْتَرَهُ بِلَالٌ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ صَلَّى فِيهِ، وَلَيْسَ عَلَى أَحَدٍ بِأَمْرٍ أَنْ يُصَلِّيَ فِي أَيِّ

बाब 53 : जो का'बा में दाखिल न हुआ

और हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) अक़षर हज्ज करते मगर का'बा के अंदर नहीं जाते थे.

1600. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह इब्ने अबी औफ़ा ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इम्ह किया तो आपने का'बा का तवाफ़ करके मक़ाम इब्राहीम के पीछे दो रकअतें पढ़ीं। आपके साथ कुछ लोग थे जो आपके और लोगों के दरम्यान आड़ बने हुए थे। उनमें से एक साहब ने इब्ने अबी औफ़ा से पूछा क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) का'बा के अंदर तशरीफ़ ले गये थे तो उन्होंने बताया कि नहीं।

(दीगर मक़ाम : 1791, 4188, 4255)

या'नी का'बा के अंदर दाखिल होना कोई लाज़िमी स्वन नहीं। न हज्ज की कोई इबादत है। अगर कोई का'बा के अंदर न जाए तो कुछ क़बाहत नहीं। आँहुज़ूर (ﷺ) खुद हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर अंदर नहीं गए न इम्तुल क़ज़ाअ में आप अंदर गए और न इम्-ए-जिअराना के मौक़े पर। ग़ालिबन इसलिये भी नहीं कि उन दिनों का'बा में बुत रखे हुए थे। फिर फ़तहे मक्का के वज़्त आपने का'बा शरीफ़ की तह्नीर की और बुतों को निकाला। तब आप (ﷺ) अंदर तशरीफ़ ले गए। हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर आप (ﷺ) अंदर नहीं गए हालाँकि उस समय का'बा के अंदर बुत भी नहीं थे। ग़ालिबन इसलिये भी कि लोग उसे लाज़िम न समझ लें।

बाब 54 : जिसने का'बा के चारों कोनों में तक्बीर कही

1601. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, कहा कि हमसे इक्रिमा ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से बयान किया, आपने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब (फ़तहे मक्का के दिन) तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) ने का'बा के अंदर जाने से इसलिये इंकार फ़र्माया कि उसमें बुत रखे हुए थे। फिर आप (ﷺ) ने हुक्म दिया और वो निकाले गये, लोगों ने इब्राहीम और इस्माईल (अलैहिमस्सलाम) के बुत भी निकाले उनके हाथों में फ़ाल निकालने के तीर दे रखे थे। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह उन मुश्रिकों को ग़ारत करे, अल्लाह की

نَوَاحِي الثَّيْتِ شَاءَ)). [راجع: ٢٩٧]

٥٣- بَابُ مَنْ لَمْ يَدْخُلِ الْكَعْبَةَ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَحُجُّ كَثِيرًا وَلَا يَدْخُلُ

١٦٠٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: ((اِعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَطَافَ بِالثَّيْتِ، وَصَلَّى خَلْفَ الْمَقَامِ رَكْعَتَيْنِ وَمَعَهُ مَنْ يَسْتُرُهُ مِنَ النَّاسِ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: أَدْخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْكَعْبَةَ؟ قَالَ: لَا)).

[أطرافه في : ١٧٩١، ٤١٨٨، ٤٢٥٥]

٥٤- بَابُ مَنْ كَبَّرَ فِي نَوَاحِي الْكَعْبَةِ

١٦٠١- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ قَالَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ لَمَّا قَدِمَ أُمِّي أَنْ يَدْخُلَ الثَّيْتِ وَفِيهِ الْإِلَهَةُ، فَأَمَرَ بِهَا فَأُخْرِجَتْ، فَأَخْرَجُوا صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ فِي أَيْدِيهِمَا الْأَزْلَامَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((فَاتْلُوهُمْ

कसम! उन्हें अच्छी तरह मा'लूम था कि उन बुजुर्गों ने तीर से फ़ाल कभी नहीं निकाली। उसके बाद आप का'बा के अंदर तशरीफ़ ले गये और चारों तरफ़ तक्बीर कही। आपने अंदर नमाज़ नहीं पढ़ी। (राजेअ : 398)

اللَّهُ، أَنَا وَاللَّهُ قَدْ عَلِمُوا أَنَّهُمَا لَمْ يَسْتَقْسِمَا بِهَا قَطُّ)). فَلَحَلَّ أَلَيْتَ فَكَبَّرَ فِي نَوَاحِيهِ، وَلَمْ يُصَلِّ فِيهِ)).

[راجع : ٣٩٨]

मुशिकीने मक्का ने खान-ए-का'बा में हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) व हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के बुतों के हाथों में तीर दे रखे थे और उनसे फ़ाल निकाला करते। अगर इफ़अल (उस काम को कर) वाला तीर निकलता तो करते अगर लातफ़अल (न कर) वाला होता तो वो काम न करते। ये सब कुछ हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर उनका इफ़तिरा था। कुआन ने उनको रिज्सुम्मिन अमलिशैतान कहा कि ये गन्दे शैतानी काम है। मुसलमानों को हर्गिज-हर्गिज ऐसे काम में न पड़ना चाहिये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़तहे मक्का में का'बा को बुतों से पाक किया। फिर आप अंदर दाख़िल हुए और खुशी में का'बा के चारों कोनों में आपने नारा-ए-तक्बीर बुलन्द फ़र्माया। जाअल हक्क व ज़हक़ल बातिल (बनी इस्राईल: 81)

बाब 55 : रमल की इब्तिदा कैसे हुई?

1602. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि (उम्रतुल क़ज़ा 7 हिजरी में) जब रसूलुल्लाह (ﷺ) (मक्का) तशरीफ़ लाए तो मुशिकों ने कहा कि मुहम्मद (ﷺ) आए हैं, उनके साथ ऐसे लोग आए हैं जिन्हें यज़िब (मदीना मुनव्वरा) के बुख़ार ने कमज़ोर कर दिया है। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया कि तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में रमल (तेज़ चलना जिससे इज़हारे कुव्वत हो) करें और दोनों यमानी रुक्नों के दरम्यान हस्बे मा'मूल चलें और आपने ये हुक्म नहीं दिया कि सब्र फ़ेरों में रमल करें इसलिये कि उन पर आसानी हो। (दीगर मक़ाम : 4252)

٥٥- بَابُ كَيْفَ كَانَ بَدْءُ الرَّمَلِ؟

١٦٠٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((قَلِيمٌ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ، فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ : إِنَّهُ يَفْتَنُكُمْ عَلَيْكُمْ وَقَدْ وَهَنَهُمْ حُمَى يَغْرِبُ. فَأَمَرَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَرْمِلُوا الْأَشْوَاطَ الْفَلَاةَ، وَأَنْ يَمْشُوا مَا بَيْنَ الرُّكْنَيْنِ، وَلَمْ يَمْنَعَهُ أَنْ يَأْمُرَهُمْ أَنْ يَرْمِلُوا الْأَشْوَاطَ كُلَّهَا إِلَّا الْإِنْفَاءَ عَلَيْهِمْ)). [طرفه في : ٤٢٥٦].

तशरीह :

रमल का सबब हदीषे बाला में खुद ज़िक्र है। मुशिकीन ने समझा था कि मुसलमान मदीने की मरतूब आबो हवा से बिलकुल कमज़ोर हो चुके हैं। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) को हुक्म दिया कि तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में ज़रा अकड़कर तेज़ चाल चलें, मूँढ़े को हिलाते हुए ताकि कुफ़ारे मक्का देखें और अपने ग़लत ख़याल को वापस ले लें। बाद में ये अमल बतौर सुन्नत रसूल (ﷺ) जारी रहा और अब भी जारी है। अब यादगार के तौर पर रमल करना चाहिये ताकि इस्लाम के उरूज की तारीख़ याद रहे। उस वक़्त कुफ़ारे मक्का दोनों शामी रुक्नों की तरफ़ जमा हुआ करते थे, इसलिये इसी हिस्से में रमल सुन्नत क़रार पाया।

बाब 56 : जब कोई मक्का में आए तो पहले हजे अस्वद को चूमे तवाफ़ शुरू करते वक़्त और

٥٦- بَابُ اسْتِئْلَامِ الْحَجَرِ الْأَسْوَدِ حِينَ يَفْتَنُ مَكْنَأُولَ مَا يَطُوفُ،

तीन फेरों में रमल करे

1603. हमसे अब्दुल्लाह बिन फरज ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वहब ने खबर दी, उन्हें यूनस ने, उन्हें जुहरी ने, उन्हें सालिम ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा। जब आप मक्का तशरीफ लाते तो पहले तवाफ शुरू करते वक़्त हज़रे अस्वद को बोसा देते और सात चक्करों में से पहले तीन चक्करों में रमल करते थे।

(दीगर मक़ाम: 1604, 1616, 1617, 1644)

बाब 57 : हज्ज और उम्रह में रमल करने का बयान

1604. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुरैज बिन नोअमान ने बयान किया, कहा कि हमसे फुलैह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पहले तीन चक्करों में रमल किया और बक्रिया चार चक्करों में हस्बे मा'मूल चले, हज्ज और उम्रह दोनों में। सुरैज के साथ इस हदीथ को लैस ने रिवायत किया है। कहा कि मुझसे क़सीर बिन फ़र्रद ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से। (राजेअ: 1603)

मुराद हज्जतुल विदाअ और उम्रतुल क़ज़ाअ है। हुदैबिया में आप का'बा तक पहुँच ही न सके थे और जिअराना में इब्ने उमर (रज़ि.) आपके साथ न थे।

1605. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा कि हमें मुहम्मद बिन जा'फ़र ने खबर दी, कहा कि मुझे ज़ैद बिन असलम ने खबर दी, उन्हें उनके वालिद ने कि इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हज़रे अस्वद को ख़िताब करके फ़र्माया। अल्लाह की क़सम! मुझे ख़ूब मा'लूम है कि तू म़िफ़्र एक पत्थर है जो न कोई नफ़ा पहुँचा सकता है न नुक़्सान और अगर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को तुझे बोसा देते न देखा होता तो मैं कभी बोसा न देता

وَيَوْمَلُ ثَلَاثًا

١٦٠٣- حَدَّثَنَا صَيْحٌ بْنُ الْقَرْجِ قَالَ: أَخْبَرَنِي بْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ابْنِ جِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ جِئَ يَمْتُمُّ مَكَّةَ إِذَا اسْتَلَمَ الرُّكْنَ الْأَسْوَدَ أَوَّلَ مَا يَطُوفُ يَحْبُ ثَلَاثَةَ أَطْوَالٍ مِنَ السَّجْعِ».

[أطرافه في: ١٦٠٤, ١٦١٦, ١٦١٧]

[١٦٤٤]

٥٧- بَابُ الرَّمْلِ فِي الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ

١٦٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ثَلَاثَةَ أَطْوَالٍ وَمَشَى أَرْبَعَةً فِي الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ».

[رابع: ١٦٠٣]

١٦٠٥- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ «أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لِلرُّكْنِ: أَمَّا وَاللَّهِ إِنِّي لَا أَغْلَمُ أَنَّكَ حَجَرٌ لَا تَنْصُرُ وَلَا تَنْفَعُ، وَلَوْ

उसके बाद आपने बोसा दिया। फिर फ़र्माया और अब हमें रमल की भी क्या ज़रूरत है? हमने उसके ज़रिये मुशिकों को अपनी कुव्वत दिखाई थी तो अल्लाह ने उनको तबाह कर दिया, फिर फ़र्माया जो अमल रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया है उसे अब छोड़ना भी हम पसंद नहीं करते। (राजेअ: 1597)

لَا أَلِيَّ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ اسْتَلَمَكَ مَا اسْتَلَمَكَ. فَاسْتَلَمْتُهُ ثُمَّ قَالَ: مَا لَنَا وَلِلرُّمْلِ؟ إِنَّمَا كُنَّا رَأَيْنَا بِهِ الْمُشْرِكِينَ، وَقَدْ أَهْلَكَهُمُ اللَّهُ ثُمَّ قَالَ: شَيْءٌ مِّنَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَلَا نَحِبُّ أَنْ تَرْكِبَهُ.

[راجع: ١٥٩٧]

हज़रत उमर (रज़ि.) ने पहले रमल की इल्लत और सबब पर ख़याल करके उसको छोड़ देना चाहा। फिर उनको ख़याल आया कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये फ़ेअल किया था। शायद इसमें और कोई हिकमत हो और आपकी पैरवी ज़रूरी है। इसलिये इसको जारी रखा। (वहीदी)

1606. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह इमरी ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया। जबसे मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उन दोनों रुक्ने यमानी को चूमते हुए देखा मैंने भी उसके चूमने को ख़्वाह सख़्त हालात हों या नरम नहीं छोड़ा। मैंने नाफ़ेअ से पूछा क्या इब्ने उमर (रज़ि.) उन दोनों यम्नी रुक्नों के दरम्यान मा'मूल के मुत्ताबिक़ चलते थे? तो उन्होंने बताया कि आप मा'मूल के मुत्ताबिक़ इसलिये चलते थे ताकि हज़रे अस्वद को छूने में आसानी रहे। (दीगर मक़ाम: 1611)

١٦٠٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((مَا تَرَكْتُ اسْتِئْلَامَ هَذَيْنِ الرُّكْنَيْنِ فِي حَيْدٍ وَلَا رَحَاءٍ مُنْذُ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَسْتَلِمُهُمَا، فَقُلْتُ لِنَافِعٍ: أَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَمْشِي بَيْنَ الرُّكْنَيْنِ؟ قَالَ: إِنَّمَا كَانَ كَانَ يَمْشِي لِيَكُونَ أَيْسَرَ لاسْتِئْلَامِهِ)). [طرفه في: ١٦١١].

बाब 58 : हज़रे अस्वद को छड़ी

से छूना और चूमना.

٥٨- بَابُ اسْتِئْلَامِ الرُّكْنَيْنِ

بِالْمِخْجَنِ

1607. हमसे अहमद बिन मॉलेह और यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि हमें यूनस ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़तुल वदाअ के मौके पर अपनी कैंटनी पर तवाफ़ किया था और आप हज़रे अस्वद का इस्तिलाम एक छड़ी के ज़रिये कर रहे थे और उस छड़ी को चूमते थे। और यूनस के साथ इस हदीस को दरावदी ने जुहरी के भतीजे से रिवायत किया और उन्होंने अपने चचा (जुहरी) से।

١٦٠٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَالِكٍ وَيَحْيَى بْنُ سَلِيمَانَ قَالَا: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((طَافَ النَّبِيُّ ﷺ فِي حَبَّةِ الْوَدَاعِ عَلَى بَعِيرٍ يَسْتَلِمُ الرُّكْنَيْنِ بِمِخْجَنِ)) تَابِعَهُ الزُّهْرِيُّ عَنْ ابْنِ أَبِي الزُّهْرِيِّ عَنْ عَمِّهِ.

(दीगर मक़ाम: 1612, 1613, 1632, 5293)

[أطرافه في: ١٦١٢, ١٦١٣, ١٦٣٢]

जुम्हूर उलमा का ये कौल है कि हजरे अस्वद को मुँह लगाकर चूमना चाहिये। अगर ये न हो सके तो हाथ लगाकर हाथ को चूम ले, अगर ये भी न हो सके तो लकड़ी लगाकर उसको चूम ले। अगर ये भी न हो सके तो जब हजरे अस्वद के सामने पहुँचे हाथ से उसकी तरफ इशारा करके उसको चूम ले।

जब हाथ या लकड़ी से दूर से इशारा किया जाए जो हजरे अस्वद को लग न सके तो उसे चूमना नहीं चाहिये।

बाब 59 : उस शख्स के बारे में जिसने सिर्फ़ दोनों अरकाने यमानी का इस्तिलाम किया

بَابُ مَنْ لَمْ يَسْتَلِمِ الرُّكْنَيْنِ الْيَمَانِيَيْنِ

1608. और मुहम्मद बिन बक्र ने कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझको अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी कि अबुशशअप्पा ने कहा बैतुल्लाह के किसी भी हिस्से से भला कौन परहेज़ कर सकता है और मुआविया (रज़ि.) चारों रुकनों का इस्तिलाम करते थे, इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने उनसे कहा कि हम इन दो अरकाने शामी और इराक़ी का इस्तिलाम नहीं करते तो मुआविया (रज़ि.) ने फ़र्माया कि बैतुल्लाह का कोई हिस्सा ऐसा नहीं जिसे छोड़ दिया जाए और अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) भी तमाम अरकान का इस्तिलाम करते थे।

١٦٠٨- وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ أَبِي الشَّعْثَاءِ أَنَّهُ قَالَ: ((وَمَنْ يَتَّقِ شَيْئًا مِنَ التَّنْبِئَةِ وَكَانَ مُعَاوِيَةَ يَسْتَلِمُ الْأَرْكَانَ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: إِنَّهُ لَا يَسْتَلِمُ هَذَانِ الرُّكْنَيْنِ. فَقَالَ لَهُ لَيْسَ شَيْءٌ مِنَ التَّنْبِئَةِ مَهْجُورًا. وَكَانَ ابْنُ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَسْتَلِمُهُنَّ كُلَّهُنَّ)).

1609. हमसे अबुल वलीद तयालिसी ने बयान किया, उनसे लैज़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे उनके वालिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को सिर्फ़ दोनों यमानी अरकान का इस्तिलाम करते देखा। (राजेअ : 166)

١٦٠٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمْ أَرِ النَّبِيَّ ﷺ يَسْتَلِمُ مِنَ التَّنْبِئَةِ إِلَّا الرُّكْنَيْنِ الْيَمَانِيَيْنِ)). [راجع: ١٦٦]

का'बा के चार कोने हैं हजरे-अस्वद, रुकने यमानी, रुकने शामी, रुकने इराक़ी। हजरे अस्वद और रुकने यमानी को रुकने यमानीयैन और शामी और इराक़ी को शामैन कहते हैं। हजरे अस्वद के अलावा रुकने यमानी को छूना यही रसूले करीम (ﷺ) और आपके सहाबा-ए-किराम का तरीका रहा है। उसी पर अमल-दरामद है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने जो कुछ फ़र्माया वो उनकी राय थी मगर फ़ेअले नबवी (ﷺ) मुक़द्दम है।

बाब 60 : हजरे अस्वद को बोसा देना

٦٠- بَابُ تَقْبِيلِ الْحَجَرِ

1610. हमसे अहमद बिन सिनान ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्हें वरक़ा ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने देखा हज़रत इमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हजरे

١٦١٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ قَالَ أَخْبَرَنَا وَرْقَاءُ قَالَ أَخْبَرَنَا زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ:

अस्वद को बोसा दिया और फिर फर्माया कि अगर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को तुझे बोसा देते न देखता तो मैं कभी तुझे बोसा न देता।

(राजेअ: 1597)

1611. हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन जैद ने बयान किया, उनसे जुबैर बिन अरबी ने बयान किया कि एक शख्स ने इब्ने उमर (रजि.) से हज्जे अस्वद के बोसा देने के बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उसको बोसा देते देखा है। उस पर उस शख्स ने कहा अगर हुजूम हो जाए और मैं आजिज हो जाऊँ तो क्या करूँ? इब्ने उमर (रजि.) ने फर्माया कि इस अगर-वगर को यमन में जाकर रखो मैंने तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप उसको बोसा देते थे।

बाब 61 : हज्जे अस्वद के सामने पहुँचकर उसकी तरफ इशारा करना (जब चूमना न हो सके)

1612. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वहहाब ने बयान किया, कहा कि हमसे खालिद हज्जाअ ने इक्रिमा से बयान किया, उनसे इब्ने अब्बास (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक ऊँटनी पर (सवार होकर का'बा का) तवाफ कर रहे थे और जब भी आप हज्जे अस्वद के सामने पहुँचते तो किसी चीज से उसकी तरफ इशारा करते थे।

(राजेअ: 1607)

बाब 62 : हज्जे अस्वद के सामने आकर तक्बीर कहना हमसे मुसद्द ने बयान किया, कहा कि हमसे खालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे खालिद हज्जाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रजि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने बैतुल्लाह का तवाफ एक ऊँटनी पर सवार रहकर किया। जब भी आप हज्जे अस्वद के सामने पहुँचते तो किसी चीज से उसकी तरफ इशारा करते और तक्बीर कहते। खालिद तहान के साथ इस हदीष को

رَأَيْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
كَلَّمَ الْحَجَرَ وَقَالَ: ((لَوْ لَا أَنِي رَأَيْتُ
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَبْلَكَ مَا قَبَّلْتُ)).

[راجع: 1597]

١٦١١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا
حَمَّادٌ عَنْ الزُّبَيْرِ بْنِ عَرَبِيِّ قَالَ: ((سَأَلَ
رَجُلٌ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ
اسْتِلَامِ الْحَجَرِ فَقَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ
ﷺ يَسْتَلِمُهُ وَيَقْبَلُهُ)).

قَالَ قُلْتُ: أَرَأَيْتَ إِنْ رُجِفَتْ، أَرَأَيْتَ إِنْ
غُلِبَتْ؟ قَالَ: اجْعَلْ ((أَرَأَيْتَ)) بِالْيَمَنِ،
رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَسْتَلِمُهُ وَيَقْبَلُهُ)).

٦١- بَابُ مَنْ أَشَارَ إِلَى الرُّكْنِ إِذَا
أَتَى عَلَيْهِ

١٦١٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ:
حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ
عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
قَالَ: ((طَافَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْبَيْتِ عَلَى بَعِيرٍ،
كَلَّمَا أَتَى عَلَى الرُّكْنِ أَشَارَ إِلَيْهِ بِشَيْءٍ)).

[راجع: 1607]

٦٢- بَابُ التَّكْبِيرِ عِنْدَ الرُّكْنِ

١٦١٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ
بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ الْحَدَّاءُ عَنْ
عِكْرَمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
قَالَ: ((طَافَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْبَيْتِ عَلَى بَعِيرٍ.
كَلَّمَا أَتَى الرُّكْنَ أَشَارَ إِلَيْهِ بِشَيْءٍ كَلَّمَ

عَنْهُ وَكَرَّ). تَابِعَةُ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ إِبْرَاهِيمَ بْنَ تَهْمَانَ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ. [راجع: ١٦٠٧]

तशरीह: या'नी छड़ी से इशारा करते। इमाम शाफ़िई (रह.) और हमारे इमाम अहमद बिन हंबल ने यही कहा कि तवाफ़ शुरू करते वक़्त जब हज़रे अस्वद चूमे तो ये कहे बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर अल्लाहुम्म ईमानन बिक व तस्दीकन बिकिताबिक व वफ़ाअन बिअहदिक व इत्तिबाअन लिसुन्नति नबिख्यिक मुहम्मदिन (ﷺ) इमामे शाफ़िई (रह.) ने अबू नजीह से निकाला कि सहाबा ने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा कि हज़रे अस्वद को चूमते वक़्त हम क्या कहें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया यूँ कहो, बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर ईमानन बिल्लाहि व तस्दीकन लिइजाबति मुहम्मदन (ﷺ) (वहीदी)

बाब 63 : जो शख़्स (हज्ज या उम्रह की नियत से) मक्का में आए तो अपने घर लौट जाने से पहले तवाफ़ करे, फिर दोबारा तवाफ़ अदा करे फिर सफ़ा पहाड़ पर जाए.

1614, 1615. हमसे अब्दुल्लाह बिन फ़रज ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया कि मुझे अम्र बिन हारिष ने मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अबुल अस्वद से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने इर्वा से (हज्ज का मसला) पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.) ने मुझे ख़बर दी थी कि नबी करीम (ﷺ) जब (मक्का) तशरीफ़ लाए तो सबसे पहला काम आपने ये किया वुजू किया फिर तवाफ़ किया और तवाफ़ करने से उम्रह नहीं हुआ। उसके बाद अबूबक्र और उमर (रज़ि.) ने भी इसी तरह हज्ज किया। फिर इर्वा ने कहा कि मैंने अपने वालिद जुबैर के साथ हज्ज किया, उन्होंने भी सबसे पहले तवाफ़ किया। मुहाजिरीन और अंसार को भी मैंने इसी तरह करते देखा था। मेरी वालिदा (अस्मा बिनते अबीबक्र रज़ि.) ने भी मुझे बताया कि उन्होंने अपनी बहन (आइशा रज़ि.) और जुबैर और फ़लाँ फ़लाँ के साथ उम्रह का एहराम बाँधा था। जब उन लोगों ने हज़रे अस्वद को बोसा दे लिया तो एहराम खोल डाला था। (दीगर मक़ाम : 1641, 1642, 1796)

٦٣- بَابُ مَنْ طَافَ بِالنِّبْتِ إِذَا قَدِمَ مَكَّةَ قَبْلَ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى بَيْتِهِ ثُمَّ صَلَّى رَكَعَتَيْنِ، ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الصَّفَا

١٦١٥، ١٦١٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ عَنْ ابْنِ وَهْبٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُمَرُو عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ : ذَكَرْتُ لِعُرْوَةَ قَالَ فَأَخْبَرَنِي عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ أَوَّلَ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ حِينَ قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ أَنَّهُ تَوَضَّأَ ثُمَّ طَافَ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ عُمْرَةً. ثُمَّ خَجَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا مِثْلَهُ)). ((ثُمَّ حَجَّجَتْ مَعَ أَبِي الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَأَوَّلُ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ الطَّوَافُ. ثُمَّ رَأَيْتُ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارَ يَخْلُوْنَ. وَقَدْ أَخْبَرَنِي أُمِّي أَنَّهَا أَهَلَّتْ مِنْ وَأَخْتِهَا وَالزُّبَيْرِ وَفُلَانٍ وَفُلَانٍ بِعُمْرَةٍ، فَلَمَّا مَسَحُوا الرُّكْنَ خَلَوْا.

[طرفه ن: ١٦٤١]

[طرفاه ن: ١٦٤٢، ١٧٩٦]

तशरीह: इमाम बुखारी (रह.) का ये मतलब है कि उम्रह में सिर्फ़ तवाफ़ कर लेने से आदमी का उम्रह पूरा नहीं होता जब तक सफ़ा व मरवा की सई न करे। भले ही इब्ने अब्बास (रज़ि.) से उसके खिलाफ़ मन्कूल है, लेकिन ये कौल जुम्हूर उलमा के खिलाफ़ है और इमाम बुखारी (रह.) ने भी उसका रद्द किया है। कुछ कहते हैं इब्ने अब्बास (रज़ि.) का मज़हब यही है कि जो कोई हज़रे मुफ़र्रद की नियत करे वो जब बैतुल्लाह में दोखिल हो तो तवाफ़ न करे जब तक कि वो

अरफात से लौटकर न आए। अगर तवाफ कर लेगा तो हलाल हो जाएगा। ये कौल (और सफा व मरवा दौड़े और सर मुँडायें) भी जुम्हूर इलमा के खिलाफ है और इमाम बुखारी (रह.) ने ये बाब लाकर इस कौल का खद किया। (वहीदी)

1616. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू जम्हूर अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मूसा बिन इब्बा ने बयान किया, उन्होंने नाफ़ेअ से बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मक्का) आने के बाद सबसे पहले हज्ज और उम्ह का तवाफ़ किया था। उसके तीन चक्करों में आपने सई (रमल) की और बाक़ी चार में हस्बे मा' मूल चले। फिर तवाफ़ की दो रकअत नमाज़ पढ़ी और सफ़ा मरवा की सई की।

(राजेअ: 1603)

1617. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह इमरी ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब बैतुल्लाह का पहला तवाफ़ (या नी तवाफ़े कुदूम) करते तो उसके तीन चक्करों में आप दौड़कर चलते और चार में मा' मूल के मुवाफ़िक़ चलते फिर जब सफ़ा और मरवा की सई करते तो बत्ने मसील (वादी) में दौड़कर चलते।

(राजेअ: 1603)

बाब 64 : औरतें भी मर्दों के साथ तवाफ़ करें

1618. इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुझसे अमर बिन अली ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया और उन्हें अत्ता ने ख़बर दी कि जब इब्ने हिशाम (जब वो हिशाम बिन अब्दुल मलिक की तरफ़ से मक्का का हाकिम था) ने औरतों को मर्दों के साथ तवाफ़ करने से मना कर दिया तो उससे उन्होंने कहा कि तुम किस दलील पर औरतों को इससे मना कर रहे हो? जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) की पाक बीवियों ने मर्दों के साथ तवाफ़ किया था। इब्ने जुरैज ने पूछा ये पर्दा (की आयत नाज़िल होने)

١٦١٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَقَبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا طَافَ فِي الْحَجِّ أَوِ الْعُمْرَةِ أَوَّلَ مَا يَفْتَدِمُ سَعَى ثَلَاثَةَ أَطْوَافٍ وَمَشَى أَرْبَعَةَ، ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ، ثُمَّ يَطُوفُ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ)).

[راجع: ١٦٠٣]

١٦١٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا طَافَ بِالنِّسَاءِ الطَّوَّافِ الْأَوَّلِ يَحْبُ ثَلَاثَةَ أَطْوَافٍ وَيَمْشِي أَرْبَعَةَ، وَأَنَّهُ كَانَ يَسْعَى بَطْنِ الْمَسِيلِ إِذَا طَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ)).

[راجع: ١٦٠٣]

٦٤- بَابُ طَوَافِ النِّسَاءِ مَعَ الرِّجَالِ

١٦١٨- وَقَالَ لِي عُمَرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو هَاشِمٍ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: أَخْبَرَنَا غَطَاءٌ - إِذْ مَعَ ابْنِ هِشَامِ النِّسَاءِ الطَّوَّافِ مَعَ الرِّجَالِ - قَالَ: كَيْفَ تَمْنَعُهُنَّ وَقَدْ طَافَ نِسَاءُ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ الرِّجَالِ؟ قُلْتُ: أَبَعَدَ الْحِجَابِ أَوْ قَبْلُ؟ قَالَ: إِي لَعْمَرِي لَقَدْ أَدَكْتُه بَعْدَ

के बाद का वाकिया है या उससे पहले का? उन्होंने कहा मेरी उम्र की कसम! मैंने उन्हें पर्दा (की आयत नाज़िल होने) के बाद देखा। इस पर इब्ने जुरैज ने पूछा कि फिर मर्द औरत मिल-जुल जाते थे। उन्होंने फ़र्माया कि इख़्तिलात नहीं होता था, आइशा (रज़ि.) मर्दों से अलग रहकर एक अलग कोने में तवाफ़ करती थीं, उनके साथ मिलकर नहीं करती थीं। एक औरत (वक्ररह नामी) ने उनसे कहा उम्मुल मोमिनीन! चलिये (हज्जे अस्वद को) ब्रोसा दें। तो आपने इंकार कर दिया और कहा तू जा चूम, मैं नहीं चूमती और अज़वाजे मुतहहरात रात में पर्दा करके निकलती थीं कि पहचानी न जातीं और मर्दों के साथ तवाफ़ करती थीं। अल्बत्ता औरतें जब का'बा के अंदर जाना चाहतीं तो अंदर जाने से पहले बाहर खड़ी हो जातीं और मर्द बाहर आ जाते (तो वो अंदर जातीं) मैं और अबू द बिन उमैर आइशा (रज़ि.) की खिदमत में उस वक़्त हाज़िर हुए जब आप सबीर (पहाड़) पर ठहरी हुई थीं, (जो मुज़दलिफ़ा में है) इब्ने जुरैज ने कहा कि मैंने अत्ता से पूछा कि उस वक़्त पर्दा किस चीज़ से था? अत्ता ने बताया कि एक तुर्की कुब्बा में ठहरी हुई थीं। उस पर पर्दा पड़ा हुआ था। हमारे और उनके दरम्यान उसके सिवा और कोई चीज़ हाइल न थी। उस वक़्त मैंने देखा कि उनके बदन पर एक गुलाबी रंग का कुर्ता था।

الْحَبَابِ. قُلْتُ: كَيْفَ يُحَالِطُنَ الرِّجَالُ؟ قَالَ: لَمْ يَكُنْ يُحَالِطُنَ، كَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا تَطُوفُ حَجْرَةَ مِنَ الرِّجَالِ لَا تُحَالِطُهُمْ، فَقَالَتْ امْرَأَةٌ: انْطَلِقِي نَسْتَلِمُ يَا أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَتْ: انْطَلِقِي عَنْكَ، وَأَبْتُ. لَكُنْ يَخْرُجْنَ مُتَكَرِّاتٍ بِاللَّيْلِ فَيَطْفَنَ مَعَ الرِّجَالِ، وَلَكِنَّهُنَّ كُنَّ إِذَا دَخَلْنَ الْبَيْتَ فَمَنْ جِئْنَ يَدْخُلْنَ وَأَخْرَجَ الرِّجَالُ، وَكُنْتُ آتِي عَائِشَةَ أَنَا وَعَبِيدُ بْنُ عَمِيرٍ وَهِيَ مُجَارِدَةٌ فِي جَوْفِ نَبْرٍ، قُلْتُ وَمَا حِجَابُهَا؟ قَالَ: هِيَ فِي قُبَّةٍ تُرَكِّبُ لَهَا عِشَاءً، وَمَا بَيْنَنَا وَبَيْنَهَا غَيْرُ ذَلِكَ، وَرَأَيْتُ عَلَيْهَا دِرْعًا مُورَدًا».

1619. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन नौफ़िल ने बयान किया, उनसे इव्रा बिन जुबैर ने बयान किया, उनसे ज़ैनब बन्ते अबी सलमा ने, उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने बीमार होने की शिकायत की (कि मैं पैदल तवाफ़ नहीं कर सकती) तो आपने फ़र्माया कि सवारी पर चढ़कर और लोगों से अलग रहकर तवाफ़ कर ले। चुनौचे मैंने आम लोगों से अलग रहकर तवाफ़ किया। उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) का'बा के बाज़ू में नमाज़ पढ़ रहे थे और आप

١٦١٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ زَيْنَبِ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ - قَالَتْ «شَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنِّي أَشْكِي فَقَالَ: «طُوفِي مِنْ وَرَاءِ النَّاسِ وَأَنْتِ رَاكِبَةٌ»، فَطُفْتُ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ جَنِينًا يُصَلِّي الصُّبْحَ إِلَى حُتَيْبِ النَّبْتِ وَهُوَ يَقْرَأُ: «هُوَ الطُّورُ وَكِتَابُ

सूरह (वज्र व किताबिम् मस्तूर) किरात कर रहे थे। (राजेअः 464)

مُسْتَوْرٍ. [راجع: 464]

मत्ताफ का दायरा वसीअ है। हजरत आइशा (रजि.) एक तरफ अलग रहकर तवाफ करतीं और मर्द भी तवाफ करते रहते। कुछ नुस्खों में हजिजहू के साथ है या'नी आइ में रहकर तवाफ करतीं। आजकल तो हुकूमते सरूदिया ने मत्ताफ ही नहीं बल्कि सारे हिस्से को इस क़दर वसीअ और शानदार बनाया कि देखकर हैरत होती है।

बाब 65 : तवाफ में बातें करना

1620. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे हिशाम ने बयान किया कि इब्ने जुरैज ने उन्हें खबर दी, कहा कि मुझे सुलैमान अहवल ने खबर दी, उन्हें ताउस ने खबर दी और उन्हें इब्ने अब्बास (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) का'बा का तवाफ करते हुए एक ऐसे शख्स के पास से गुजरे जिसने अपना हाथ एक—दूसरे शख्स के हाथ से तस्मा या रस्सी या किसी और चीज़ से बाँध रखा था। नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ से उसे काट दिया और फिर फ़र्माया कि अगर साथ ही चलना है तो हाथ पकड़ के चलो।

(दीगर मक़ाम : 1621, 6702, 6703)

शायद वो अँधा होगा मगर तबरानी की रिवायत से मा'लूम होता है कि वो बाप—बेटे थे। या'नी तल्क बिन शब्ब और एक रस्सी से दोनों बँधे हुए थे। आपने हाल पूछा तो शब्ब कहने लगा कि अगर अल्लाह तआला मेरा माल और मेरी औलाद दिला देगा तो मैं बँधा हुआ हज्ज करूँगा। आँ हजरत (ﷺ) ने रस्सी काट दी और फ़र्माया दोनों हज्ज करो मगर ये बाँधना शैतानी काम है। हदीष से ये निकला कि तवाफ में कलाम करना दुरुस्त है क्योंकि आपने ऐन तवाफ में फ़र्माया कि हाथ पकड़कर ले चल। (वहीदी)

बाब 66 : जब तवाफ में किसी को बाँधा देखे या कोई और मकरूह चीज़ तो उसको काट सकता है

1621. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे सुलैमान अहवल ने, उनसे ताउस ने और उनसे इब्ने अब्बास (रजि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने देखा कि एक शख्स का'बा का तवाफ रस्सी या किसी और चीज़ के ज़रिये कर रहा है तो आपने उसे काट दिया। (राजेअः 1620)

बाब 67 : बैतुल्लाह का तवाफ कोई नंगा आदमी नहीं कर सकता और न कोई मुशरिक हज्ज कर सकता है

٦٥- بَابُ الْكَلَامِ فِي الطَّوَافِ

١٦٢٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ : حَدَّثَنَا هِشَامُ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ : أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ الْأَخْوَلُ أَنَّ طَاوُسًا أَخْبَرَهُ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ بِإِنْسَانٍ رَبَطَ يَدَهُ إِلَى إِنْسَانٍ يَسْتَرُ - أَوْ يَحْطِ أَوْ بِشَيْءٍ غَيْرِ ذَلِكَ - فَقَطَعَهُ النَّبِيُّ ﷺ، يَدَهُ ثُمَّ قَالَ : ((فَدَةُ يَدَيْهِ)).

[أطرافه في : ١٦٢١، ٦٧٠٢، ٦٧٠٣].

٦٦- بَابُ إِذَا رَأَى مَرًّا أَوْ شَيْئًا

يُكْرَهُ فِي الطَّوَافِ قَطْعُهُ

١٦٢١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَخْوَلِ عَنْ طَاوُسٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَجُلًا يَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ بِرِمَامٍ أَوْ غَيْرِهِ فَقَطَعَهُ)). [راجع: ١٦٢٠]

٦٧- بَابُ لَا يَطُوفُ بِالنِّبْتِ غُرَبَاءُ،

وَلَا يَحُجُّ مُشْرِكٌ

1622. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूसुस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उस हज्ज के मौक़े पर जिसका अमीर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बनाया था। उन्हें दसवीं तारीख़ को एक मजमे के सामने ये ऐलान करने के लिये भेजा था कि इस साल के बाद कोई मुशरिक हज्जे बैतुल्लाह नहीं कर सकता और न कोई शख्स गंगा रहकर तवाफ़ कर सकता है। (राजेअ 369)

١٦٢٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنَا قَالِ بْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بَخَّهَ فِي الْحَجَّةِ الَّتِي أَمَرَهُ عَلَيْهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ يَوْمَ النَّحْرِ فِي رَقِطٍ يُؤَدِّنُ فِي النَّاسِ: ((أَلَا لَا يَحُجُّ بَعْدَ الْقَامِ مُشْرِكًا، وَلَا يَطُوفُ بِأَيْتِ غُرَيَّانِ)) [راسع: ٣٦٩]

अहदे जाहिलियत में आम अहले अरब ये कहकर कि हमने इन कपड़ों में गुनाह किए हैं उनको उतार देते और फिर या तो कुरैश से कपड़े मांग कर तवाफ़ करते या फिर गंगे ही तवाफ़ करते। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने ये ऐलान कराया।

बाब 68 : अगर तवाफ़ करते करते बीच में ठहर जाए तो क्या हुक्म है? एक ऐसे शख्स के बारे में जो तवाफ़ कर रहा था कि नमाज़ खड़ी हो गई या उसे उसकी जगह से हटा दिया गया, अत़ा ये फ़र्माया करते थे कि जहाँ से उसने तवाफ़ छोड़ा वहीं से बिनाअ (या) नी दोबारा वहीं से शुरू कर दे। इब्ने उमर और अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) से भी इस तरह मन्कूल है।

٦٨- بَابُ إِذَا وَقَفَ فِي الطَّوَافِ وَقَالَ غَطَاءٌ لِمَنْ يَطُوفُ فَتَقَامُ الصَّلَاةُ، أَوْ يُدْفَعُ عَنْ مَكَانِهِ: إِذَا سَلَّمَ يَوْجِعُ إِلَى حَيْثُ قُطِعَ عَلَيْهِ. وَيَذْكُرُ نَحْوَهُ عَنْ ابْنِ عُمَرَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ.

तशरीह: इमाम हसन बसरी (रह.) से मन्कूल है कि अगर कोई तवाफ़ कर रहा हो और नमाज़ की तक्बीर हो तो तवाफ़ छोड़ दे नमाज़ में शरीक हो जाए और बाद में नये सिरे से तवाफ़ करे। इमाम बुखारी (रह.) ने अत़ा का क़ौल लाकर उन पर रद्द किया। इमाम मालिक (रह.) और शाफ़िई (रह.) ने कहा कि फ़र्ज़ नमाज़ के लिये अगर तवाफ़ छोड़ दे तो बिनाअ कर सकता है या नी पहले चक्करों की गिनती से मिला ले। लेकिन नफ़्ल नमाज़ के वास्ते छोड़े तो नये सिरे से शुरू करना औला है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक बिनाअ हर हाल में दुस्त है। इनाबिला कहते हैं तवाफ़ में मवालात वाजिब है अगर अम्दन (जान-बूझकर) या सह्वन (भूलकर) मवालात छोड़ दे तो तवाफ़ सहीह न होगा। मगर नमाज़ फ़र्ज़ या जनाज़े के लिये क़रअन करना दुस्त जानते हैं। (वहीदी)

या नी जितने फेरे कर चुका उनको कायम रखकर सात फेरे पूरे करे। अत़ा के क़ौल को अब्दुर्रज़ाक़ ने और इब्ने उमर (रज़ि.) के क़ौल को सईद बिन मसूर (रज़ि.) ने और अब्दुर्रहमान के क़ौल को भी अब्दुर्रज़ाक़ ने वस्ल किया है।

बाब 69 : नबी करीम (ﷺ) का तवाफ़ के सात चक्करों के बाद दो रकअतें पढ़ना

٦٩- بَابُ صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ لِسَبْعَةِ رَكَعَتَيْنِ

और नाफ़ेअ ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.)

وَقَالَ نَافِعٌ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ

हर सात चक्करोँ पर दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे। इस्माईल बिन उमय्या ने कहा कि मैंने जुहरी से पूछा कि अत्ता कहते थे कि तवाफ़ की नमाज़ दो रकअत फ़र्ज़ नमाज़ से भी अदा हो जाती है तो उन्होंने फ़र्माया कि सुन्नत पर अमल ज्यादा बेहतर है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सात चक्कर पूरे किये हों और दो रकअत नमाज़ न पढ़ी हो।

ये दोहरा तवाफ़ कहलाता है जो जुम्हूर के नज़दीक सुन्नत है।

1623. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अमर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से पूछा कि क्या कोई उम्रह में सफ़ा मरवा की सई से पहले अपनी बीवी से हमबिस्तर हो सकता है? उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए और का'बा का तवाफ़ सात चक्करोँ से पूरा किया। फिर मक्कामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ी और सफ़ा मरवा की सई की। फिर अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) के तरीक़े में बेहतरीन नमूना है।

(राजेअ: 295)

अमर ने कहा कि फिर मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से इसके बारे में मा'लूम किया तो उन्होंने बताया कि सफ़ा मरवा की सई से पहले अपनी बीवी के करीब भी न जाए।

(राजेअ: 396)

बाब 70 : जो शरूअ पहले तवाफ़ या'नी तवाफ़े कुदूम के बाद फिर का'बा के नज़दीक न जाए और अरफ़ात में हज्ज करने के लिये जाए

या'नी इसमें कोई क़बाहत नहीं अगर कोई नफ़ल तवाफ़ हज्ज से पहले न करे और का'बा के पास भी न जाए फिर हज्ज से फ़ारिग होकर तवाफ़ ज़ियारत करे जो फ़र्ज़ है।

عَنْهُمَا يُصَلِّي لِكُلِّ سَبْعٍ رَكَعَيْنِ. وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ : قُلْتُ لِلزُّهْرِيِّ إِنَّ عَطَاءً يَقُولُ تُجْزِئُهُ الْمَكْتُوبَةُ مِنْ رَكَعَتَي الطَّوَافِ، فَقَالَ: السُّنَّةُ أَفْضَلُ، لَمْ يَطْفِئِ النَّبِيُّ ﷺ سَبْعًا قَطُّ إِلَّا صَلَّى رَكَعَتَيْنِ.

۱۶۲۳- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ عُمَرُو قَالَ: سَأَلْنَا ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَيْفَعُ الرَّجُلُ عَلَى أَمْرِهِ فِي الْمَرْوَةِ قَبْلَ أَنْ يَطُوفَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ؟ قَالَ ((قَدِيمَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَطَافَ بِأَثْنَيْتَيْ سَبْعًا ثُمَّ صَلَّى خَلْفَ الْمَقَامِ رَكَعَتَيْنِ وَطَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَقَالَ: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾)) [الاحزاب

[۲۹۵]. [راجع: ۲۹۵]

۱۶۲۴- قَالَ : وَسَأَلْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ : ((لَا يَقْرُبُ امْرَأَتَهُ حَتَّى يَطُوفَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ)). [راجع: ۳۹۶]

۷۰- بَابُ مَنْ لَمْ يَقْرُبِ الْكَعْبَةَ وَلَمْ يَطْفِئْ حَتَّى يَخْرُجَ إِلَى عَرَفَةَ وَيَرْجِعُ بَعْدَ الطَّوَافِ الْأَوَّلِ

1625. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्होंने

۱۶۲۵- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ قَالَ:

कहा कि हमसे फुजैल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मूसा बिन उक्बा ने बयान किया, कहा कि मुझे कुरैब ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से खबर दी, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का तशरीफ़ लाए और सात (चक्करी के साथ) तवाफ़ किया। फिर सफ़ा मरवा की सई की। उस सई के बाद आप का'बा उस वक़्त तक नहीं गये जब तक अरफ़ात से वापस न लौटे। (राजेअ : 1545)

خَدَّثَنَا فَضِيلٌ قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي كُرَيْبٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ فَطَافَ سَبْعًا وَسَعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَلَمْ يَقْرَبِ الْكَعْبَةَ بَعْدَ طَوَافِهِ بِهَا حَتَّى رَجَعَ مِنْ عَرَفَةَ)).

[راجع: ١٥٤٥]

इससे कोई ये न समझे कि हाजी को तवाफ़े कुदूम के बाद फिर नफ़ल तवाफ़ करना मना है, नहीं बल्कि आँहज़रत (ﷺ) दूसरे कामों में मशगूल होंगे और आप का'बा से दूर ठहरे थे या'नी मुहम्मद में। इसलिये हज्ज से फ़ारिग होने तक आपको का'बा में आने की और नफ़ल तवाफ़ करने की फ़र्सत न थी।

बाब 71: उस शख्स के बारे में जिसने तवाफ़ की दो रकअतें मस्जिदुल हुराम से बाहर पढ़ीं
उमर (रज़ि.) ने भी हुराम से बाहर पढ़ी थीं

٧١- بَابُ مَنْ صَلَّى رَكَعَتَيِ

الطَّوَافِ خَارِجًا مِنَ الْمَسْجِدِ

وَصَلَّى عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ خَارِجًا مِنَ الْحَرَمِ

1626. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने, उन्हें उर्वा ने, उन्हें जैनब ने और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शिकायत की। (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू मरवान यह्या बिन अबी जक्रिया ग़स्सानी ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उर्वा ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मक्का में थे और वहाँ से चलने का इरादा हुआ तो... उम्मे सलमा (रज़ि.) ने का'बा का तवाफ़ नहीं किया और वो भी रवानगी का इरादा रखती थीं... आपने उनसे फ़र्माया कि जब सुबह की नमाज़ खड़ी हो और लोग नमाज़ पढ़ने में मशगूल हो जाएँ तो तुम अपनी कैंटनी पर तवाफ़ कर लेना। चुनाँचे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ऐसा ही किया

١٦٢٦- خَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ غُرْوَةَ عَنْ زَيْنَبَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((شَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ. قَالَ وَخَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مَرْوَانَ يَحْيَى بْنُ أَبِي زَكَرِيَاءَ الْفَسَّانِيُّ عَنْ هِشَامٍ عَنْ غُرْوَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ. ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ وَهُوَ بِمَكَّةَ وَأَرَادَ الْخُرُوجَ - وَلَمْ تَكُنْ أُمُّ سَلَمَةَ طَافَتْ بِالنِّسْتِ وَأَرَادَتْ الْخُرُوجَ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا أَقِمْتَ الصَّلَاةَ الصُّبْحَ فَطُوفِي عَلَى بَيْتِكَ

और उन्होंने बाहर निकलने तक तवाफ़ की नमाज़ नहीं पढ़ी।
(राजेअ: 464)

बाब 72 : उसके बारे में जिसने तवाफ़ की दो रकअतें मक़ामे इब्राहीम के पीछे पढ़ीं

1627. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अमर बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) (मक्का में) तशरीफ़ लाए तो आपने खान-ए-का'बा का सात चक्करो से तवाफ़ किया और मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ी फिर सफ़ा की तरफ़ (सई करने) गये और अल्लाह तआला ने फ़र्माया है कि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है। (राजेअ: 395)

बाब 73 : सुबह और अस्र के बाद तवाफ़ करना

सूरज निकलने से पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) तवाफ़ की दो रकअत पढ़ लेते थे। और हज़रत उमर (रज़ि.) ने सुबह की नमाज़ के बाद तवाफ़ किया फिर सवार हुए और (तवाफ़ की) दो रकअतें ज़ी तुवा में पढ़ीं।

1628. हमसे हसन बिन उमर बस्री ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे हबीब ने, उनसे अत्ता ने, उनसे उर्वा ने, उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने कि कुछ लोगों ने सुबह की नमाज़ के बाद का'बा का तवाफ़ किया। फिर एक वा'ज करने वाले के पास बैठ गये और जब सूरज निकलने लगा तो वो लोग नमाज़ (तवाफ़ की दो रकअत) पढ़ने के लिये खड़े हो गये। इस पर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने (नागवारी के साथ) फ़र्माया जबसे तो ये लोग बैठे थे और जब वो वक़्त आया कि जिसमें नमाज़ मकरूह है तो नमाज़ के लिये खड़े हो गये।

وَالنَّاسُ يُصَلُّونَ)). لَفَعَلْتُ ذَلِكَ، فَلَمْ
تُصَلَّ حَتَّى خَرَجْتُ)). [راجع: 464]

۷۲- بَابُ مَنْ صَلَّى رَكَعَتَيِ

الطَّوَّافِ خَلْفَ الْمَقَامِ

۱۶۲۷- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ
قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ
ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ ((قَدِمَ
النَّبِيُّ ﷺ فَطَافَ بِالْبَيْتِ سَبْعًا وَصَلَّى
خَلْفَ الْمَقَامِ رَكَعَتَيْنِ ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْهِ
الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ إِلَى الصَّفَا، وَقَدْ قَالَ اللَّهُ
عَزَّوَجَلَّ: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ
أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾)). [راجع: 395]

۷۳- بَابُ الطَّوَّافِ بَعْدَ الصُّبْحِ

وَالْعَصْرِ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا
يُصَلِّي رَكَعَتَيِ الطَّوَّافِ مَا لَمْ تَطْلُعِ
الشَّمْسُ وَطَافَ عُمَرُ بَعْدَ صَلَاةِ الصُّبْحِ
فَرَكِبَ حَتَّى صَلَّى الرَّكَعَتَيْنِ بِبَيْتِ طَوًى

۱۶۲۸- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ
الْبَصْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ
حَبِيبٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ((أَنَّ نَاسًا طَافُوا بِالْبَيْتِ
بَعْدَ صَلَاةِ الصُّبْحِ، ثُمَّ قَعَدُوا إِلَى
الْمَذَكْرِ، حَتَّى إِذَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ قَامُوا
يُصَلُّونَ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا:
قَعَدُوا، حَتَّى إِذَا كَانَتِ السَّاعَةُ الَّتِي تُكْرَهُ
فِيهَا الصَّلَاةُ قَامُوا يُصَلُّونَ)).

1629. हमसे इब्राहीम बिन मुंजिर ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू जम्ह ने बयान किया, कहा कि हमसे मूसा बिन उक्बा ने बयान किया, उनसे नाफेअ ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आप (ﷺ) सूरज तुलूअ होते और गुरुब होते वक़्त नमाज़ पढ़ने से रोकते थे।

1630. हमसे हसन बिन मुहम्मद जा'फ़रानी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबैदह बिन हुमैद ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल अज़ीज़ बिन रुफ़ेअ ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को देखा कि आप फ़ज्र की नमाज़ के बाद तवाफ़ कर रहे थे और फिर आपने दो रकअत (तवाफ़ की) नमाज़ पढ़ी।

1631. अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को अज़्र के बाद भी दो रकअत नमाज़ पढ़ते देखा था। वो बताते थे कि आइशा (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब भी उनके घर आते (अज़्र के बाद) तो ये दो रकअत ज़रूर पढ़ते थे। (राजेअ : 590)

बाब 74 : मरीज़ आदमी सवार होकर तवाफ़ कर सकता है

1632. हमसे इस्हाक़ वास्ती ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद तिहान ने ख़ालिद हज़ज़ाअ से बयान किया, उनसे इकिस्मा ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बैतुल्लाह का तवाफ़ ऊँट पर सवार होकर किया। आप जब भी (तवाफ़ करते हुए) हजे अस्वद के नज़दीक आते तो अपने हाथ को एक चीज़ (छड़ी) से इशारा करते और तक्बीर कहते। (राजेअ : 1607)

इस हदीष में चाहे ये जिज़्र नहीं है कि आप बीमार थे और बज़ाहिर बाब के तर्जुमा से मुताबिक नहीं है मगर इमाम बुखारी (रह.) ने अबू दाऊद की रिवायत की तरफ़ इशारा किया जिसमें साफ़ ये है कि आप बीमार थे। कुछ ने कहा जब बग़ैर बीमारी या उज़्र के सवारी पर तवाफ़ दुरुस्त हुआ तो बीमारी में ब़तरीके औला दुरुस्त होगा। इस तरह बाब का मतलब निकल आया।

1633. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा कअम्बी ने बयान

١٦٢٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو سَمُرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((سَجَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَنْهَى عَنِ الصَّلَاةِ عِنْدَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَعِنْدَ غُرُوبِهَا))

١٦٣٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ هُوَ الرَّغْفَرَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ رَفِيعٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَطُوفُ بَعْدَ الْفَجْرِ وَيُصَلِّي رَكَعَتَيْنِ)).

١٦٣١- قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ ((وَرَأَيْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ يُصَلِّي رَكَعَتَيْنِ بَعْدَ الْفَجْرِ وَيُخْبِرُ أَنْ غَابَتْ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَدْخُلْ بَيْتَهَا إِلَّا صَلَاةً))

[راجع: ٥٩٠]

٧٤- بَابُ الْمَرِيضِ يَطُوفُ رَاكِبًا ١٦٣٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ خَالِدِ بْنِ خَالِدٍ الْخَدَّاءِ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ طَافَ بِالنَّبْتِ وَهُوَ عَلَى نَعِيرٍ كَلَّمَا آتَى عَلَى الرُّمْنِ أَشَارَ إِلَيْهِ بِشَيْءٍ فِي يَدِهِ وَكَبَّرَ)). [راجع: ١٦٠٧]

١٦٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ

किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुलहमान बिन नौफ़िल ने, उनसे उर्वा ने बयान किया, उनसे ज़ैनब बिनते उम्मे सलमा ने, उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शिकायत की कि मैं बीमार हो गई हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर लोगों के पीछे सवार होकर तवाफ़ कर ले। चुनाँचे मैंने जब तवाफ़ किया तो उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) बैतुल्लाह के बाज़ू में (नमाज़ के अंदर) (वज़ू व किताबिम्मस्तूर) की क़िरअत कर रहे थे।

(राजेअ: 464)

बाब 75 : हाजियों को पानी पिलाना

1634. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबुल अस्वद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू ज़मरह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने पानी (ज़मज़म का हाजियों को) पिलाने के लिये मिना के दिनों में मक्का ठहरने की इजाज़त चाही तो आप (ﷺ) ने उनको इजाज़त दे दी।

(दीगर मक़ाम . 1743, 1744, 1745)

मा'लूम हुआ कि अगर कोई उज़्र न हो तो 11वीं 12वीं शब को मिना ही में रहना ज़रूरी है। हज़रत अब्बास (रज़ि.) का उज़्र मा'कूल था। हाजियों को ज़मज़म से पानी निकालकर पिलाना उनका क़दीमी ओहदा था। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनको इजाज़त दे दी।

1635. हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन ने बयान किया, कहा कि हमसे ख़ालिद तिहान ने ख़ालिद हज़्ज़ाअ से बयान किया, उनसे इकिरमा ने, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पानी पिलाने की जगह (ज़मज़म के पास) तशरीफ़ लाए और पानी मांगा (हज के मौक़े पर) अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि फ़ज़ल! अपनी माँ के यहाँ जा और उनके यहाँ से खज़ूर का शरबत ला। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे (यही) पानी पिलाओ। अब्बास (रज़ि.) ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हर शख़्स अपना हाथ इसमें डाल देता है। इसके बावजूद रसूलुल्लाह (ﷺ) यही कहते रहे कि मुझे (यही)

قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ عَنْ غُرْوَةَ عَنْ زَيْنَبِ ابْنَةِ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ ((شَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ أَنِّي أَشْكِي فَقَالَ: ((طَوْبِي مِنْ وَرَاءِ النَّاسِ وَأَنْتِ رَاكِبَةٌ)). فَطُفْتُ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي إِلَى جَنْبِ ابْنَتِي وَهُوَ يَقْرَأُ بِالطُّورِ وَكِتَابِ مَنْطُورٍ)). [راجع: ٤٦٤]

٧٥- بَابُ سِقَايَةِ الْحَاجِّ

١٦٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ أَبِي الْأَسْوَدِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو صَمْرَةَ قَالَ حَدَّثَنَا غُبَيْرُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اسْتَأْذَنَ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنْ يَبْنِيَ بِمَكَّةَ لِيَأْتِيَ مِنْهُ مِنْ أَجْلِ سِقَايَتِهِ، فَأَذِنَ لَهُ)).

[أطرافه في ١٧٤٣، ١٧٤٤، ١٧٤٥.]

١٦٣٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ شَاهِينَ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ خَالِدِ بْنِ خَالِدٍ الْحَدَّاءِ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ حَاءَ إِلَى السَّقَايَةِ فَاسْتَسْقَى. فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا فَضْلُ اذْهَبْ إِلَى أُمِّكَ فَأْتِ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بِشَرَابٍ مِنْ عِنْدِهَا. فَقَالَ: ((اسْقِينِي)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ إِنَّهُمْ يَخْضَلُونَ أَيْدِيَهُمْ فِيهِ.

पानी पिलाओ। चुनौचे आपने पानी पिया फिर ज़मज़म के करीब आए। लोग कुएँ से पानी खींच रहे थे और काम कर रहे थे। आपने (उन्हें देखकर) फ़र्माया काम करते जाओ कि एक अच्छे काम पर लगे हुए हो। फिर फ़र्माया (अगर ये ख़याल न होता कि आइन्दा लोग) तुम्हें परेशान कर देंगे तो मैं भी उतरता और रस्सी अपने इस पर रख लेता। मुराद आपकी शाना से थी, आपने उसकी तरफ़ इशारा करके कहा था।

قَالَ: ((اسْقِيْنِي)). فَشَرِبَ مِنْهُ. ثُمَّ آتَى زَمْزَمَ وَهُمْ يَسْتَفْتُونَ وَيَعْمَلُونَ فِيهَا فَقَالَ: ((اعْمَلُوا فَإِنَّكُمْ عَلَى عَمَلٍ صَالِحٍ)). ثُمَّ قَالَ: ((لَوْ لَا أَنْ تَغْلِبُوا لَنَزَلْتُ حَتَّى أَضَعَ الْحِجْلَ عَلَى هَلْدِهِ)). يَغْنِي غَائِقُهُ. وَأَشَارَ إِلَى غَائِقِهِ.

मतलब ये है कि अगर मैं उतरकर खुद पानी खींचूँगा तो सैंकड़ों आदमी मुझको देखकर पानी खींचने के लिये दौड़ पड़ेंगे और तुमको तकलीफ़ होगी।

बाब 76 : ज़मज़म का बयान

٧٦- بَابُ مَا جَاءَ فِي زَمْزَمَ

तशरीह: ज़मज़म वो मशहूर कुँआ है जो का'बा के सामने मस्जिदे हुराम में हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) के पर मारने से फूट निकला था। कहते हैं ज़मज़म उसको इसलिये कहते हैं कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने वहाँ बात की थी। कुछ ने कहा कि उसमें पानी बहुत होने से उसका नाम ज़मज़म हुआ। ज़मज़म अरब की जुबान में बहुत पानी को कहते हैं। एक हदीस में है कि ज़मज़म जिस मक़सद के लिये पिया जाए वो हासिल होता है।

ज़मज़म का कुँआ दुनिया का वो क़दीम तारीखी कुँआ है जिसकी इब्तिदा सय्यिदना इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की शीर-ख़वारी से शुरू होती है। ये मुबारक चश्मा प्यास की बेताबी में आपकी ऐडियाँ रगड़ने से फ़व्वारे की तरह उस पथरीली ज़मीन में उबला था। आपकी वालिदा हज़रत हाजरा पानी की तलाश में सफ़्रा और मरवा के सात चक्कर लगाकर आई तो बच्चे के ज़ेरे क़दम ये नेअमते ग़ैर मुतरक़बा देखकर बाग़ बाग़ हो गईं। तौरात में इस मुबारक कुँए का ज़िक्र इन लफ़्ज़ों में है,

'अल्लाह के फ़रिश्ते ने आसमान से हाजरा को पुकारा और उससे कहा कि ऐ हाजरा! तुझको क्या हुआ मत डर कि उस लड़के की आवाज़ जहाँ वो पड़ा है अल्लाह ने सुनी, उठ और लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से सम्भाल कि मैं उसको बड़ी क़ौम बनाऊँगा। फिर अल्लाह ने उसकी आँखें खोलीं और उसने पानी का एक कुँआ देखा और जाकर अपनी मशक को पानी से भर लिया और लड़के को पिला लिया।' (तौरात सफ़रे पैदाइश बाब 21)

कहते हैं कि सय्यिदना इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के बाद कई दफ़ा ऐसा हुआ कि ज़मज़म का चश्मा ख़ुशक हो गया, ज्यों-ज्यों ये ख़ुशक होता गया लोग इसे और गहरा करते गए यहाँ तक कि वो एक गहरा कुँआ बन गया।

मुद्तों तक ख़ान-ए-का'बा की तौलियत बनू ज़ुरहुम के हाथों में रही। जब बनू ख़ुज़ाआ को इक़तिदार मिला तो बनू ज़ुरहुम ने हज़रे अस्वद और ग़िलाफ़े का'बा को ज़मज़म में डाल दिया और उसका मुँह बन्द करके भाग गये। बाद में मुद्तों तक ये मुबारक चश्मा ग़ायब रहा। यहाँ तक कि अब्दुल मुत्तलिब ने बहुक्मे इलाही ख़वाब में इसके सही मुक़ाम को देखकर इसको निकाला। उसके बारे में अब्दुल मुत्तलिब का बयान है कि मैं सोया हुआ था कि ख़वाब में मुझे एक शख्स ने कहा तय्यिबा को खोदो। मैंने कहा कि तय्यिबा क्या चीज़ है? वो शख्स बग़ैर जवाब दिये चला गया और मैं बेदार हो गया। दूसरे दिन सोया तो ख़वाब में फिर वही शख्स आया और कहा कि मज़नूना को खोदो। मैंने कहा कि मज़नूना क्या चीज़ है? इतने में मेरी आँख खुल गई और वो शख्स ग़ायब हो गया। तीसरी रात फिर वही वाक़िया पेश आया और अबकी दफ़ा उस शख्स ने कहा कि ज़मज़म को खोदो। मैंने कहा कि ज़मज़म क्या है? उसने कहा तुम्हारे दादा इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का चश्मा है। उसमें बहुत पानी निकलेगा और खोदने में तुमको ज़्यादा परेशानी भी न होगी। वो उस जगह है जहाँ लोग कुर्बानियाँ करते

हैं। (अहदे जाहिलियत में यहाँ बुतों के नाम पर कुर्बानियाँ होती थीं) वहाँ चींटियों का बिल है। तुम सुबह को एक कौआ वहाँ चोंच से ज़मीन कुरेदता हुआ देखोगे।

सुबह होने पर अब्दुल मुत्तलिब खुद कुदाल लेकर खड़े हो गए और खोदना शुरू किया। थोड़ी ही देर में पानी नमूदार हो गया। जिसे देखकर उन्होंने ज़ोर से तक्बीर कही। कहा जाता है कि ज़मज़म के कुँए में से दो सोने के हिरण और बहुत सी तलवारें और ज़िरहें भी निकलीं। अब्दुल मुत्तलिब ने हिरणों का सोना तो खाना का'बा के दरवाजों पर लगा दिया। तलवारें खुद रख लीं। अल्लामा इब्ने खल्दून लिखते हैं कि ये हिरण ईरानी ज़ायरीनों ने का'बा पर चढ़ाए थे।

ज़मज़म का कुँआ पानी की कमी की वजह से कई बार खोदा गया। 223 हिजरी में उसकी अक़्बर दीवारें मुन्हदिम हो गई (गिर गई) और अंदर बहुत सा मलबा जमा हो गया था। उस वक़्त त्राईफ़ के एक शख्स मुहम्मद बिन बशीर नामी ने उसकी मिट्टी निकाली और ज़रूरत के अनुसार उसकी मरम्मत की कि पानी भरपूर आने लगा।

मशहूर मुअरिख अज़रकी कहते हैं कि उस वक़्त में भी कुँए के अंदर उतरा था। मैंने देखा कि उसमें तीन तरफ़ से चश्में जारी हैं। एक हज़रे अस्वद की जानिब से दूसरा जबले क़बीस की तरफ़ से और तीसरा मरवह की तरफ़ से, तीनों मिलकर कुँए की गहराई में जमा होते हैं और रात दिन कितना ही खींचो मगर पानी नहीं टूटता।

इसी मुअरिख का क़ौल है कि मैंने कअरे आब की भी पैमाइश की तो 40 हाथ कुँए की ता'मीर में और 29 हाथ पहाड़ी ग़ार में, कुल 69 हाथ पानी था। मुम्किन है आजकल ज़्यादा हो गया हो।

145 हिजरी में अबू ज़ा'फ़र मंसूर ने इस पर क़ब्ज़ा बनाया और अंदर संगे-मरमर का फ़र्श लगाया। फिर मामून रशीद ने चाहे ज़मज़म की मिट्टी निकलवाकर उसको गहरा किया।

एक बार कोई दीवाना कुँए के अंदर कूद पड़ा था। उसके निकालने के लिये साहिले जिद्दा (जद्दा के समुद्र तट) से ग़व्वास (गोताखोर) बुलाए गए। बमुश्किल उसकी नअश मिली और कुँए को पाक-साफ़ करने के लिये बहुत सा पानी निकाला गया। इसलिये 1020 हिजरी में सुल्तान अहमद ख़ाँ के हुक्म से चाहे ज़मज़म के अंदर पानी की सतह से सवा तीन फीट नीचे लोहे का जाल डाल दिया गया। 1039 हिजरी मुराद ख़ाँ मरहूम ने जब का'बा शरीफ़ को नये सिरे से ता'मीर किया तो चाहे ज़मज़म की भी नई बेहतरीन ता'मीर की गई। पानी की तह से ऊपर तक संगमरमर से मुज़य्यन कर दिया और ज़मीन से एक गज़ ऊँची 2 गज़ चौड़ी मुँडेर बनवा दी। आसपास चारों तरफ़ दो-दो गज़ तक संगमरमर का फ़र्श बनाकर दीवारें उठा दीं और उन पर छत पाटकर एक कमरा बनवा दिया जिसमें सबज़ (हरी) जालियाँ लगा दीं।

1636. और अब्दान ने कहा कि मुझको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें यूनस ने ख़बर दी, उन्हें जुहरी ने, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू ज़र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब मैं मक्का में था तो मेरी (घर की) छत खुली और ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) नाज़िल हुए। उन्होंने मेरा सीना चाक किया और उसे ज़मज़म के पानी से धोया। उसके बाद एक सोने का त़श्त लाए जो हिकमत और ईमान से भरा हुआ था। उसे उन्होंने मेरे सीने में डाल दिया और

۱۶۳۶- وَقَالَ عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَانَ أَبُو فَرَجٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُعَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «فَرَجٌ سَقْفِي وَأَنَا بِمَكَّةَ. فَزَلَّ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَفَرَجَ صَدْرِي، ثُمَّ غَسَلَهُ بِمَاءِ زَمْزَمَ، ثُمَّ جَاءَ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مُتَمَلِّئٍ حِكْمَةً وَإِيمَانًا. فَافْرَغَهَا

फिर सीना बन्द कर दिया। अब वो मुझे हाथ से पकड़कर आसमाने दुनिया की तरफ ले चले। आसमाने दुनिया के दारोगा से जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने कहा दरवाज़ा खोलो। उन्होंने पूछा कौन है? कहा जिब्रईल (अ.)! (राजेअ: 349)

1637. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें मरवान बिन मुआविया फ़जारी ने ख़बर दी, उन्हें आसिम ने और उन्हें शअबी ने कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने उनसे बयान किया, कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ज़मज़म का पानी पिलाया था। आपने पानी खड़े होकर पिया था। आसिम ने बयान किया कि इक्सिमा ने क़सम खाकर कहा कि आँहुज़ूर (ﷺ) उस दिन ऊँट पर सवार थे। (दीगर मक़ाम: 5617)

तशरीह: ये मेअराज की हदीष का एक टुकड़ा है। यहाँ इमाम बुखारी (रह.) उसको इसलिये लाए कि इसमें ज़मज़म के पानी की फ़ज़ीलत निकलती है। इसलिये कि आपका सीना उसी पानी से धोया गया था। उसके अलावा और भी कई अहदादीष ज़मज़म के पानी की फ़ज़ीलत में वारिद हैं मगर हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष की शर्त पर यही हदीष थी। सहीह मुस्लिम में आबे ज़मज़म को पानी के साथ खुराक भी क़रार दिया गया है और बीमारों के लिये दवा भी फ़र्माया गया है। हदीष इब्ने अब्बास (रज़ि.) में मफूअन ये भी है कि माउ ज़मज़म लिमा शुर्बि लहू कि ज़मज़म का पानी जिस लिये पिया जाता है, अल्लाह वो देता है।

हफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़र्माते हैं व सुम्मियत ज़मज़म लिक्फ़तिहा युक्कालु माउ ज़मज़म अय कषीरुन व क़ील लिइज्तिमाइहा या'नी उसका नाम ज़मज़म इसलिये रखा गया कि ये बहुत है और ऐसे ही मुक़ाम पर बोला जाता है। माअे ज़मज़म अय कषीर या'नी ये पानी बहुत बड़ी मिक्कदार में है और उसके जमा होने की वजह से भी उसे ज़मज़म कहा गया है।

मुजाहिद ने कहा कि ये लफ़ज़ हज़म: से मुश्तक़ है। लफ़ज़ हज़मा के मा'नी हैं ऐडियों से ज़मीन में इशारे करना। चूँकि मशहूर है कि हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के ज़मीन में ऐड़ी रगड़ने से ये चश्मा निकला लिहाज़ा उसे ज़मज़म कहा गया, वल्लाहु आलम

बाब 77 : क़िरान करने वाला एक तवाफ़ करे या दो करे

1638. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्हें उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज्जतुल विदाअ में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (मदीना से) निकले और हमने उम्रह का एहराम बाँधा। फिर आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसके साथ कुर्बानी का जानवर हो वो हज्ज और उम्रह दोनों का एक साथ एहराम बाँधे। ऐसे लोग दोनों के एहराम से एक साथ

فِي صَلَاتِي ثُمَّ أَطْفَقَ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي فَخَرَجَ بِي إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا، قَالَ جِبْرِيلُ لِعَارِنِ السَّمَاءِ الدُّنْيَا : اقْبَحْ. قَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: (جِبْرِيلُ)). [راسع: 349]

١٦٣٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا الْقَزَائِيُّ عَنْ عاصِمٍ عَنْ الشَّعْبِيِّ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا حَدَّثَهُ قَالَ: ((سَكَنَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنْ زَفْرَمٍ فَشَرِبْتُ وَمَوْ قَائِمٍ. قَالَ عاصِمٌ: فَخَلَفَ حِكْمَةُ مَا كَانَ يَوْمَئِذٍ إِلَّا عَلَى نَجِيٍّ)). [طرف في: 5617]

٧٧- بَابُ طَوَافِ الْقَارِنِ

١٦٣٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ غُرَّةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَ ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَاهْلَلْنَا بِعُمْرَةٍ ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ كَانَ مَعَهُ هَذِي فَلْيَهْلُ بِالْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ ثُمَّ لَا يَهْلُ حَتَّى

हलाल होंगे। मैं भी मक्का आई थी लेकिन मुझे हैज आ गया था इसलिये जब हमने हज के काम पूरे कर लिये तो आँहुजूर (ﷺ) ने मुझे अब्दुर्रहमान के साथ तन्ईम की तरफ भेजा। मैंने वहाँ से उम्रह का एहराम बाँधा। आँहुजूर (ﷺ) ने फ़र्माया ये तुम्हारे उस उम्रह के बदले में है (जिसे तुमने हैज की वजह से छोड़ दिया था) जिन लोगों ने उम्रह का एहराम बाँधा था उन्होंने सई के बाद एहराम खोल दिया और दूसरा तवाफ़ मीना से वापसी पर किया लेकिन जिन लोगों ने हज और उम्रह का एहराम एक साथ बाँधा था उन्होंने सिर्फ़ एक तवाफ़ किया।

(राजेअ: 294)

तशरीह: तन्ईम एक मशहूर मुक़ाम है जो मक्का से तीन मील दूर है। आँहुजरत (ﷺ) ने हजरत आइशा (रज़ि.) की तत्बीब के लिये वहाँ भेजकर उम्रह का एहराम बाँधने के लिये फ़र्माया था। आखिर हदीस में ज़िक्र है कि जिन लोगों ने हज और उम्रह का एक ही एहराम बाँधा था। उन्होंने भी एक ही तवाफ़ किया और एक ही सई की। जुम्हूर इलमा और अहले हदीस का यही क़ौल है कि कारिन के लिये एक ही तवाफ़ और एक ही सई हज और उम्रह दोनों की तरफ से काफ़ी है और हजरत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने दो तवाफ़ और दो सई लाज़िम रखा है और जिन रिवायतों से दलील ली है, वो सब ज़ईफ़ हैं। (वहीदी)

1639. हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कह कि हमसे इस्माईल बिन उलदया ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने उमर (रज़ि.) के लड़के अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह उनके यहाँ गये। हज के लिये सवारी घर में खड़ी हुई थी। उन्होंने कहा कि मुझे ख़तरा है कि इस साल मुसलमानों में आपस में लड़ाई हो जाएगी और आपको वो बैतुल्लाह से रोक देंगे। इसलिये अगर आप न जाते तो बेहतर होता। इब्ने उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) भी तशरीफ़ ले गये थे (उम्रह करने सुलह हुदेबिया के मौक़े पर) और कुफ़ारे कुरैश ने आपको बैतुल्लाह तक पहुँचने से रोक दिया था। इसलिये अगर मुझे भी रोक दिया गया तो मैं भी वही काम करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था और तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िंदगी बेहतरीन नमूना है। फिर आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने उम्रह के साथ हज (अपने ऊपर) वाजिब कर लिया है। उन्होंने बयान

يَجِلُّ مِنْهُمَا)). فَقَدَرْتُ مَكَّةَ وَأَنَا حَائِضٌ، فَلَمَّا قَضَيْتُمَا حَجَّيَا أَرْسَلَنِي مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِلَى التَّنِيمِ فَأَعْتَمَرْتُ، فَقَالَ ﷺ: ((هَلَاكِ مَكَانِ عُمْرَتِكِ)). فَطَافَ الَّذِينَ أَهْلُوا بِالْعُمْرَةِ ثُمَّ حَلُّوا ثُمَّ طَافُوا طَوَافًا آخَرَ بَعْدَ أَنْ رَجَعُوا مِنْ مَنًى. وَأَمَّا الَّذِينَ جَمَعُوا بَيْنَ الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ فَإِنَّمَا طَافُوا طَوَافًا وَاحِدًا)).

[راجع: ٢٩٤]

١٦٣٩- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُثَيْمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ ((أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا دَخَلَ ابْنَةُ عَبْدِ اللَّهِ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ وَظَهَرَتْ فِي الدَّارِ فَقَالَ: إِنِّي لَا أَتَمَنُّ أَنْ يَكُونَ الْعَامَ بَيْنَ النَّاسِ فَيَنْتَ قَتْلُوكَ عَنِ النَّبِيِّ، فَلَوْ أَقَمْتُ. فَقَالَ: قَدْ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَحَالَ كَفَّارٌ فُرَيْشِي بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّبِيِّ، فَإِنْ جِئْتُ بَيْنِي وَبَيْنَهُ أَفْعَلَ كَمَا فَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَلَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ثُمَّ قَالَ: أَشْهَدُكُمْ أَنِّي قَدْ أَوْجَبْتُ مَعَ عُمْرَتِي حَجًّا. قَالَ: ثُمَّ قَدِمَ فَطَافَ لِهَيْمًا طَوَافًا وَاحِدًا)).

किया कि फिर आप मक्का आए और दोनों इम्रह और हज्ज के लिये एक ही तवाफ़ किया। (दीगर मक़ाम: 1640, 1693, 1708, 1729, 1806, 1807, 1808, 1810, 1812, 1813, 4183, 4184, 4185)

1640. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे लैष बिन सअद ने नाफ़ेअ से बयान किया कि जिस साल हज्जाज, अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के मुक़ाबले में लड़ने आया था। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने जब उस साल हज्ज का इरादा किया तो आपसे कहा गया कि मुसलमानों में बाहम जंग होने वाली है और ये भी ख़तरा है कि आपको हज्ज से रोक दिया जाए। आपने फ़र्माया तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िंदगी बेहतरीन नमूना है। ऐसे वक़्त में भी वही काम करूंगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था। तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने ऊपर इम्रह वाजिब कर लिया है। फिर आप चले और जब बैदा के मैदान में पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि हज्ज और इम्रह तो एक ही तरह के हैं। मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने इम्रह के साथ हज्ज भी वाजिब कर लिया है। आपने एक कुर्बानी भी साथ ले ली जो मक़ामे कुदैद से ख़रीदी थी। उसके सिवा और कुछ नहीं किया। दसवीं तारीख़ से पहले न आपने कुर्बानी की न किसी ऐसी चीज़ को अपने लिये जाइज़ किया जिससे (एहराम की वजह से) आप रुक गये थे। न सर मुँडवाया न बाल तरशवाए। दसवीं तारीख़ में आपने कुर्बानी की और बाल मुँडवाए। आपका यही ख़याल था कि आपने एक तवाफ़ से हज्ज और इम्रह दोनों का तवाफ़ अदा कर लिया है। अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी इसी तरह किया था। (राजेअ: 1639)

पहले अब्दुल्लाह बिन इमर (रज़ि.) ने सिर्फ़ इम्रह का एहराम बाँधा था। फिर उन्होंने ख़याल किया कि सिर्फ़ इम्रह करने से हज्ज और इम्रह दोनों या'नी किरान करना बेहतर है तो हज्ज की भी निय्यत कर ली और पुकारकर लोगों को इसलिये कह दिया ताकि लोग भी उनकी पैरवी करें। बैदा मक्का और मदीना के बीच जुल हुलैफ़ा से आगे एक मुक़ाम है। कुदैद भी जुहफ़ा के नज़दीक एक जमह का नाम है।

बाब 78 : (का'बा का) तवाफ़ वुजू करके करना

[أطرافه في : ١٦٩٣، ١٦٤٠، ١٧٠٨]

١٧٢٩، ١٨٠٦، ١٨٠٧، ١٨٠٨

١٨١٠، ١٨١٢، ١٨١٣، ٤١٨٣

[٤١٨٥، ٤١٨٤]

١٦٤٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ (رَأَى ابْنَ عُمَرَ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَرَادَ الْحَجَّ عَامَ نَزَلَ

الْحَجَّاجُ بِابْنِ الزُّبَيْرِ، فَقِيلَ لَهُ إِنَّ النَّاسَ

كَانُوا يَنْهَوْنَهُمْ فَقَالَ وَإِنَّا نَخَافُ أَنْ يَصُدُّوكَ،

فَقَالَ : هَلْ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ

أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ إِذَا أَمْنَعُ كَمَا صَنَعَ

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. إِنِّي أَشْهَدُكُمْ أَنِّي قَدْ

أَوْجَبْتُ غَمْرَةَ. ثُمَّ خَرَجَ حَتَّى إِذَا كَانَ

بِظَاهِرِ الْبَيْدَاءِ قَالَ: مَا شَأْنُ الْحَجِّ

وَالْعُمْرَةِ إِلَّا وَاحِدٌ، أَشْهَدُكُمْ أَنِّي قَدْ

أَوْجَبْتُ حَجًّا مَعَ عُمْرَتِي. وَأَعْلَى مَدِينًا

اِشْتَرَاهُ بِقَدِيدٍ، وَلَمْ يَزِدْ عَلَى ذَلِكَ، فَلَمْ

يَنْحَرْ وَلَمْ يَحِلَّ مِنْ شَيْءٍ حَرَّمَ مِنْهُ وَلَمْ

يَخْلُقْ وَلَمْ يَقْصُرْ حَتَّى كَانَ يَوْمَ النَّحْرِ

فَنَحَرَ وَخَلَقَ، وَرَأَى أَنْ قَدْ قَضَى طَوَافَ

الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ بِطَوَافِهِ الْأَوَّلِ. وَقَالَ ابْنُ

عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: كَذَلِكَ فَقَالَ

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ. (راجع: ١٦٣٩)

٧٨- بَابُ الطَّوَافِ عَلَى وَضُوءٍ

1641. हमसे अहमद बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अमर बिन हारिष ने खबर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अब्दुरहमान बिन नौफिल कुरशी ने, उन्होंने इर्वा बिन जुबैर से पूछा था, इर्वा ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने जैसा कि मा'लूम है हज किया था। मुझे उम्मुल मोमिनीन हजरत आइशा (रजि.) ने उसके बारे में खबर दी कि जब आप मक्का मुअज्जमा आए तो सबसे पहला काम ये किया कि आपने वुजू किया, फिर का'बा का तवाफ किया। ये आपका उम्रह नहीं था। उसके बाद अबूबक्र (रजि.) ने हज किया और आपने भी सबसे पहले का'बा का तवाफ किया जबकि ये आपका भी उम्रह नहीं था। उमर (रजि.) ने भी इसी तरह किया। फिर इब्मान (रजि.) ने हज किया मैंने देखा कि सबसे पहले आपने भी का'बा का तवाफ किया। आपका भी ये उम्रह नहीं था। फिर मुआविया और अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) का जमाना आया। फिर मैंने अपने वालिद अज् जुबैर बिन अवाम (रजि.) के साथ भी हज किया। ये (सारे अकाबिर) पहले का'बा ही के तवाफ से शुरू करते थे जबकि ये उम्रह नहीं होता था। उसके बाद मुहाजिरिन व अंसार को भी मैंने देखा कि वो भी इसी तरह करते रहे और उनका भी ये उम्रह नहीं होता था। आखिरी ज्ञात, जिसे मैंने इस तरह करते देखा, वो हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) की थी, उन्होंने भी उम्रह नहीं किया था। इब्ने उमर (रजि.) अभी मौजूद हैं लेकिन उनसे लोग इसके बारे में पूछते नहीं। इसी तरह जो हजरत गुजर गये, उनका भी मक्का में दाखिल होते ही सबसे पहला कदम तवाफ के लिये उठता था। फिर ये भी एहराम नहीं खोलते थे। मैंने अपनी वालिदा (अस्मा बिन्ते अबीबक्र रजि.) और खाला (आइशा सिद्दीका रजि.) को भी देखा कि जब वो आतीं तो सबसे पहले तवाफ करतीं और ये उसके बाद एहराम नहीं खोलती थीं।

(राजेअ: 1614)

1642. और मुझे मेरी वालिदा ने खबर दी कि उन्होंने अपनी

۱۶۴۱- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عِيسَى قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي غَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ الْقُرَشِيِّ أَنَّهُ سَأَلَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ فَقَالَ: ((قَدْ حَجَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَأَخْبَرَنِي عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ أَوَّلَ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ حِينَ قَدِمَ أَنَّهُ تَوَضَّأَ ثُمَّ طَافَ بِالْبَيْتِ، ثُمَّ لَمْ تَكُنْ غُمْرَةً. ثُمَّ حَجَّ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَكَانَ أَوَّلَ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ الطَّوْفَ بِالْبَيْتِ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ غُمْرَةً. ثُمَّ غَمَرْتُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مِثْلَ ذَلِكَ. ثُمَّ حَجَّ عُفْمَانُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَأَوَّيْتُهُ أَوَّلَ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ الطَّوْفَ بِالْبَيْتِ، ثُمَّ لَمْ تَكُنْ غُمْرَةً. ثُمَّ مَعَاوِيَةُ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ. ثُمَّ حَجَجْتُ مَعَ أَبِي الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ - فَكَانَ أَوَّلَ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ الطَّوْفَ بِالْبَيْتِ، ثُمَّ لَمْ تَكُنْ غُمْرَةً. ثُمَّ رَأَيْتُ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارَ يَفْعَلُونَ ذَلِكَ، ثُمَّ لَمْ تَكُنْ غُمْرَةً. ثُمَّ آجِرُ بْنُ رَأَيْتُ فَعَلَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُضْهَا غُمْرَةً. وَهَذَا ابْنُ عُمَرَ عَلَيْهِمْ فَلَا يَسْأَلُونَهُ وَلَا أَحَدٌ مِنْهُمْ مَضَى مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ بِشَيْءٍ حَتَّى يَضَعُوا أَقْدَامَهُمْ مِنَ الطَّوْفِ بِالْبَيْتِ ثُمَّ لَا يَحِلُّونَ. وَقَدْ رَأَيْتُ أُمِّي وَخَالَي حِينَ تَقْدَمَانِ لَا تَحْدِثَانِ بِشَيْءٍ أَوَّلَ مِنَ الْبَيْتِ تَطُوفَانِ بِهِ ثُمَّ إِنَّهُمَا لَا تَحِلَّانِ. [راجع: ۱۶۱۴]

۱۶۴۲- وَقَدْ أَخْبَرَنِي أُمِّي: ((أَنَّهَا

बहन और जुबैर और फ़लाँ फ़लाँ (रज़ि.) के साथ उम्ह किया है ये सब लोग हजे अस्वद का बोसा ले लेते तो उम्ह का एहराम खोल देते।

(राजेअ: 1615)

أَهْلَتْ هِيَ وَأَخْتَهَا وَالزُّبَيْرِ وَفُلَانٍ وَفُلَانٍ
بِعُمْرَةٍ، فَلَمَّا فَسَحُوا الرُّكْنَ حَلُّوا).

[راجع: ١٦١٥]

तशरीह: जुम्हूर उलमा के नज़दीक तवाफ़ में तहारत या 'नी बावजू होना शर्त' है। मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन नौफ़िल ने उर्वह से क्या पूछा इस रिवायत में ये मज़कूर नहीं है। लेकिन इमाम मुस्लिम की रिवायत में उसका बयान है कि एक इराक़ी ने मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान से कहा कि तुम उर्वह से पूछो अगर एक शख्स हज का एहराम बाँधे तो तवाफ़ करके वो हलाल हो सकता है? अगर वो कहें नहीं हो सकता तो कहना कि एक शख्स तो कहते हैं हलाल हो जाता है। मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान ने कहा मैंने उर्वह से पूछा, उन्होंने कहा तो कोई हज का एहराम बाँधे वो जब तक हज से फ़ारिग न हो हलाल नहीं हो सकता। मैंने कहा एक शख्स तो कहते हैं कि वो हलाल हो जाता है। उन्होंने कहा उसने बुरी बात कही। आखिर हदीस तक.

बाब 79 : सफ़ा और मरवा की सई वाजिब है कि ये अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं

٧٩- بَابُ وَجُوبِ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ
وَجَعَلَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ

1643. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें शुऐब ने जुहरी से ख़बर दी कि उर्वह ने बयान किया कि मैंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) से पूछा कि अल्लाह तआला के इस फ़र्मान के बारे में आपका क्या ख़याल है (जो सूरह बक्रः में है कि) सफ़ा और मरवा अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं। इसलिये जो बैतुल्लाह का हज या उम्ह करे उसके लिये उनका तवाफ़ करने में कोई गुनाह नहीं। क़सम अल्लाह की फिर तो कोई हर्ज न होना चाहिये अगर कोई सफ़ा और मरवा की सई न करनी चाहे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, भतीजे! तुमने ये बुरी बात कही। अल्लाह का मतलब ये होता तो कुआन में यूँ उतरता, उनके तवाफ़ न करने में कोई गुनाह नहीं। बात ये है कि ये आयत तो अंसार के लिये उतरी थी जो इस्लाम से पहले मनात बुत के नाम पर जो मुशल्लल में रखा हुआ था, और जिसकी ये पूजा किया करते थे, एहराम बाँधते थे। ये लोग जब (ज़मान-ए-जाहिलियत में) एहराम बाँधते तो सफ़ा मरवा की सई को अच्छा नहीं ख़याल करते थे। अब जब इस्लाम लाए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसके बारे में पूछा और कहा कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम सफ़ा और मरवा

١٦٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْهَمَانَ قَالَ أَخْبَرَنَا
شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ عُرْوَةُ: ((سَأَلْتُ
عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَقُلْتُ لَهَا: أَيُّ أَيِّ
قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: هَذَانِ الصَّفَا وَالْمَرْوَةُ مِنْ
شَعَائِرِ اللَّهِ، فَمَنْ حَجَّ التَّيْتِ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطُوفَ بِهِمَا؟)) قَالَتْ مَا
عَلَى أَحَدٍ جُنَاحَ أَنْ لَا يَطُوفَ بِالصَّفَا
وَالْمَرْوَةِ. قَالَتْ: بَشَرٌ مَا قُلْتُ يَا ابْنَ
أَخْتِي، إِنْ هَذِهِ لَوْ كَانَتْ كَمَا أَوْلَتْهَا عَلَيْهِ
كَانَتْ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ لَا يَطُوفَ بِهِمَا،
وَلَكِنْهَا أُنْزِلَتْ فِي الْأَنْصَارِ، كَانُوا قَبْلَ أَنْ
يُسَلِّمُوا يُهْلُونَ لِمَنَاةَ الطَّاعِيَةِ الَّتِي كَانُوا
يَعْبُدُونَهَا بِالْمُشَلَّلِ، فَكَانَ مَنْ أَهْلُ
يَخْرُجُ أَنْ يَطُوفَ بِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَلَمَّا
أَسْلَمُوا سَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنْ ذَلِكَ
قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا كُنَّا نَخْرُجُ أَنْ

की सई अच्छी नहीं समझते थे। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि सफ़ा और मरवा दोनों अल्लाह की निशानियाँ हैं आख़िर आयत तक। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो पहाड़ों के बीच सई की सुन्नत जारी की है। इसलिये किसी के लिये मुनासिब नहीं है कि उसे तर्क कर दे। उन्होंने कहा कि फिर मैंने उसका ज़िक्र अबूबक्र बिन अब्दुर्रहमान से किया। तो उन्होंने फ़र्माया कि मैंने तो ये इल्मी बात अब तक नहीं सुनी थी, बल्कि मैंने बहुत से अज़्हाबे इल्म से तो ये सुना है वो यूँ कहते थे कि अरब के लोग उन लोगों के सिवा जिनका हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ज़िक्र किया जो मनात के लिये एहराम बाँधते थे सब सफ़ा मरवा का फेरा करते थे। जब अल्लाह पाक ने कुआन शरीफ़ में बैतुल्लाह के तवाफ़ का ज़िक्र किया और सफ़ा मरवा का ज़िक्र नहीं किया तो वो कहने लगे या रसूलुल्लाह (ﷺ)! हम तो जाहिलियत के ज़माने में सफ़ा मरवा का फेरा करते थे और अब अल्लाह ने बैतुल्लाह के तवाफ़ का ज़िक्र तो किया लेकिन सफ़ा और मरवा का ज़िक्र नहीं किया तो क्या सफ़ा और मरवा की सई करने में हम पर कुछ गुनाह होगा? तब अल्लाह ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई। सफ़ा मरवा अल्लाह की निशानियाँ हैं आख़िर आयत तक। अबूबक्र ने कहा मैं सुनता हूँ कि ये आयत दोनों फ़िक्रों के बाब में उतरी है या'नी उस फ़िक्र के बाब में जो जाहिलियत के ज़माने में सफ़ा और मरवा का तवाफ़ बुरा जानता था और उसके बाब में जो जाहिलियत के ज़माने में सफ़ा मरवा का तवाफ़ किया करते थे। फिर मुसलमान होने के बाद उसका करना इस वजह से कि अल्लाह ने बैतुल्लाह के तवाफ़ का ज़िक्र किया और सफ़ा मरवा का नहीं किया, बुरा समझे। यहाँ तक कि अल्लाह ने बैतुल्लाह के तवाफ़ के बाद उनके तवाफ़ का भी ज़िक्र फ़र्मा दिया।

نَطُوفَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ حَقَائِرِ اللَّهِ﴾ الآية. فَأَلَّتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: وَقَدْ سَنَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الطَّوْفَ بَيْنَهُمَا فَلَيْسَ لِأَحَدٍ أَنْ يَتْرَكَ الطَّوْفَ بَيْنَهُمَا. ثُمَّ أَخْبَرْتُ أَبَا بَكْرٍ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا لِعِلْمٍ مَا كُنْتُ سَمِعْتُهُ، وَلَقَدْ سَمِعْتُ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ يَذْكُرُونَ أَنَّ النَّاسَ - إِلَّا مَنْ ذَكَرَتْ عَائِشَةُ مِنْهُمْ كَانَ يَهْلُ بِمَنَاءَ - كَانُوا يَطُوفُونَ كُلُّهُمْ بِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَلَمَّا ذَكَرَ اللَّهُ تَعَالَى الطَّوْفَ بِالنِّسْبِ وَلَمْ يَذْكُرِ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ فِي الْقُرْآنِ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، كَمَا نَطُوفُ بِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَإِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ الطَّوْفَ بِالنِّسْبِ فَلَمْ يَذْكُرِ الصَّفَا، فَهَلْ عَلَيْنَا مِنْ حَرَجٍ أَنْ نَطُوفَ بِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ؟ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ حَقَائِرِ اللَّهِ﴾ الآية. قَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَاسْمَعْ هَلِيهِ الْآيَةُ نَزَلَتْ فِي الْقَرِيقَيْنِ كِلَاهُمَا: فِي الدِّينِ كَانُوا يَخْرُجُونَ أَنْ يَطُوفُوا فِي الْجَاهِلِيَّةِ بِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَالَّذِينَ يَطُوفُونَ ثُمَّ تَخَرَّجُوا أَنْ يَطُوفُوا بِهِمَا فِي الْإِسْلَامِ مِنْ أَجْلِ أَنْ اللَّهُ تَعَالَى أَمَرَ بِالطَّوْفِ بِالنِّسْبِ وَلَمْ يَذْكُرِ الصَّفَا، حَتَّى ذَكَرَ ذَلِكَ بَعْدَ مَا ذَكَرَ الطَّوْفَ بِالنِّسْبِ)).

(दीगर मक़ाम: 1790, 4495, 4861)

बाब 80 : सफ़ा और मरवा के बीच किस तरह दौड़े

और इब्ने उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि बनी अब्बाद के घरों से लेकर बनी अबी हुसैन की गली तक दौड़कर चले (बाक़ी राह में मा'मूली चाल से)

1644. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ईसा बिन यूनस ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पहला तवाफ़ करते तो उसके तीन चक्करों में रमल करते और बक्रिया चार में मा'मूल के मुताबिक़ चलते और जब सफ़ा और मरवा की सई करते तो आप नाले के नशीब में दौड़ा करते थे। अब्दुल्लाह ने कहा मैंने नाफ़ेअ से पूछा, इब्ने उमर (रज़ि.) जब रुकने यमानी के पास पहुँचते तो क्या हस्बे मा'मूल चलने लगते थे? उन्होंने फ़र्माया कि नहीं। अल्बत्ता अगर रुकने यमानी पर हुजूम होता तो हज़रे अस्वद के पास आकर आप आहिस्ता चलने लगते क्योंकि वो बग़ैर चूमे उसको नहीं छोड़ते थे। (राजेअ: 1603)

बनी अब्बाद का घर और बनी अबी अल हुसैन का कूचा उस ज़माने में मशहूर होगा। अब हाजियों की शिनाख़्त के लिये दौड़ने के मुक़ाम में दो सबज़ मिनारे बना दिये गये हैं।

1645. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने अमर बिन दीनार से बयान किया कि हमने इब्ने उमर (रज़ि.) से एक ऐसे शख्स के बारे में पूछा जो उमरह में बैतुल्लाह का तवाफ़ तो कर ले लेकिन सफ़ा और मरवा की सई नहीं करता, क्या वो अपनी बीवी से सहमत कर सकता है। उन्होंने जवाब दिया नबी करीम (ﷺ) (मक्का) तशरीफ़ लाए तो आपने बैतुल्लाह का सात चक्करों के साथ तवाफ़ किया और मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ी। फिर सफ़ा और मरवा की सात मर्तबा सई की और तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िंदगी बेहतरीन नमूना है।

[أطرافه في : ١٧٩٠، ٤٤٩٥، ٤٨٦١]

٨٠- بَابُ مَا جَاءَ فِي السَّعْيِ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: السَّعْيُ مِنْ دَارِ بَنِي عَبْدِ رِقَابٍ بَنِي أَبِي حُسَيْنٍ
١٦٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُثَيْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا طَافَ الطَّوَافَ الْأَوَّلَ حَبَّ ثَلَاثًا وَمَشَى أَرْبَعًا. وَكَانَ يَسْعَى بَطْنَ الْمَسِيلِ إِذَا طَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ. فَقُلْتُ لِنَافِعٍ: أَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ يَمْشِي إِذَا بَلَغَ الرُّكْنَ الثَّمَانِي؟ قَالَ: لَا، إِلَّا أَنْ يُزَاحِمَ عَلَى الرُّكْنِ، لِأَنَّهُ كَانَ لَا يَدْعُهُ حَتَّى يَسْتَلِمَهُ)). [راجع: ١٦٠٣]

١٦٤٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُمَرُو بْنِ دِينَارٍ قَالَ ((سَأَلْنَا ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ رَجُلٍ طَافَ بِالنِّسَةِ فِي غَمْرَةٍ وَلَمْ يَطُفْ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ أَيَّامِي أَمْرَانِ؟ فَقَالَ: قَدِيمُ النَّبِيِّ ﷺ فَطَافَ بِالنِّسَةِ سَبْعًا وَصَلَّى خَلْفَ الْمَقَامِ رَكْعَتَيْنِ فَطَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبْعًا: «لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ»)).

(राजेअ: 395)

1646. हमने इसके बारे में जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से भी पूछा तो आपने फ़र्माया कि सफ़ा और मरवा की सई से पहले बीवी के करीब भी न जाए।

(राजेअ: 396)

1647. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मुझे अमर बिन दीनार ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) जब मक्का तशरीफ़ लाए तो आपने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और दो रक़अत नमाज़ पढ़ी, फिर सफ़ा और मरवा की सई की। उसके बाद अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ये आयत तिलावत की, तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है।

(राजेअ: 395)

1648. हमसे अहमद बिन मुहम्मद मरवज़ी ने बयान किया; उन्होंने कहा कि हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमें आसिम अहवल ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा क्या आप लोग सफ़ा और मरवा की सई को बुरा समझते थे? उन्होंने फ़र्माया, हाँ! क्योंकि ये अहदे जाहिलियत का शिआर था। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्मा दी, सफ़ा और मरवा अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं। पस जो कोई बैतुल्लाह का हज या उम्रह करे उस पर उनकी सई करने में कोई गुनाह नहीं।

(दीगर मक़ाम: 4496)

मज़मून इस रिवायत के मुवाफ़िक़ है जो हज़रत आइशा (रज़ि.) से ऊपर गुज़री कि अंसार सफ़ा और मरवा की सई बुरी समझते थे।

1649. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अमर बिन दीनार ने, उनसे अत्ता बिन अबी रिबाह ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा मरवा की सई इस तरह की कि

[راجع: 395]

١٦٤٦- وَسَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ: ((لَا يَفْرَتْنَهَا حَتَّى يَطُوفَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ)).

[راجع: 396]

١٦٤٧- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ فَطَافَ بِالنِّبْتِ ثُمَّ صَلَّى رَكَعَتَيْنِ، ثُمَّ سَعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ. ثُمَّ تَلَا: «لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ» [الاحزاب: ٢١])).

[راجع: 395]

١٦٤٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ قَالَ: ((قُلْتُ لَأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. أَكُنْتُمْ تَكْرَهُونَ السَّعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ؟ قَالَ: نَعَمْ، لِأَنَّهَا كَانَتْ مِنْ شَعَائِرِ الْجَاهِلِيَّةِ، حَتَّى أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ، فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطُوفَ بِهِمَا﴾ [طرفة في: ٤٤٩٦]).

١٦٤٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُمَرُو بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّمَا سَعَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالنِّبْتِ

मुश्रिकीन को आप अपनी कुव्वत दिखला सकें। हुमैदी ने ये इजाफा किया है कि हमसे सुफयान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्म बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मैंने अत्ता से सुना और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यही हदीष सुनी।

وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ يُرَى الْمُشْرِكِينَ
فَوُتُّهُ. زَادَ الْحُمَيْدِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا
سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو قَالَ: سَمِعْتُ
عَطَاءَ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ مِثْلَهُ.

तशरीह: हजरे अस्वद को चूमने या छूने के बाद तवाफ करना चाहिये। तवाफ क्या है? अपने आपको महबूब पर फिदा करना, कुर्बान करना और परवाने की तरह घूमकर अपने इशको—मुहब्बत का पुबूत पेश करना। तवाफ क' फज़ीलत में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि अन्नन्नबिय्य (ﷺ) क़ाल मन ताफ़ बिल्बैति सबअन व ला यतकल्लमु इल्ला बिसुब्हानिल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि मुहियत अन्हु अशर सय्यआतिन व कुतिब लहू अशर हसनातिन व रुफ़िअ लहू अशर दरजातिन व मन ताफ़ फतकल्लम व हुव फ़ी तिलकल्हालि खाज़ फिरहमति बिरिज़लयहि कखाइज़िल्माइ बिरिज़लैहि (स्वाहु इब्नु माजा) या'नी आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने बैतुल्लाह शरीफ़ का सात बार तवाफ़ किया और सिवाए तस्बीह व तहमीद के कोई फ़िज़ूल कलाम अपनी जुबान से न निकाला। उसके दस गुनाह मुआफ़ होते हैं और दस नेकियाँ उसके नामा-ए-आमाल में लिखी जाती हैं और उसके दस दर्जे बुलन्द होते हैं और अगर किसी ने हालाते तवाफ़ में तस्बीह व तहमीद के साथ लोगों से कुछ कलाम भी किया तो वो रहमत इलाही में अपने दोनों पैरों तक दाख़िल हो जाता है जैसे कोई शख्स अपने पैरों तक पानी में दाख़िल हो जाए।

मुल्ला अली क़ारी फ़र्माते हैं कि मक्क़सद ये है कि सिवाय तस्बीह व तहमीद के और कुछ कलाम न करने वाला अल्लाह की रहमत में अपने क़दमों से सर तक दाख़िल हो जाता है और कलाम करने वाला सिर्फ़ पैरों तक।

तवाफ़ की तर्कीब ये है कि हजरे अस्वद को चूमने के बाद बैतुल्लाह शरीफ़ को अपने बाएँ हाथ करके रुकने यमानी तक ज़रा तेज़ तेज़ इस तरह चलें कि क़दम क़रीब-क़रीब पड़ें और कंधे हिलें। इसी अफ़्ना में सुब्हानिल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि इन मुबारक कलिमात को पढ़ता रहे और अल्लाह तआला की अज़मत, उसकी शान का कामिल ध्यान रखे। उसकी तौहीद को पूरे तौर पर दिल में जगह दे। उस पर पूरे पूरे तवक्क़ल का इज़हार करे। साथ ही ये दुआ भी पढ़े। अल्लाहुम्म कनअनी बिमा रज़क़्तनी व बारिक ली फ़ीहि वख़िलफ़ अला कुल्लि गाइबतिन ली बिख़ैरिन (नैलुलऔतार) इलाही मुझको जो कुछ तूने नसीब किया उस पर क़नाअत करने की तौफ़ीक़ अत्ता कर और उसमें बरकत भी दे और मेरे अहलो अयाल व माल और मेरी हर पोशिदा चीज़ की तू ख़ैरियत के साथ हिफ़ाज़त फ़र्मा। अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनश़क़ि वश़िर्क़ि वन्निफ़ाक़ि वश़िर्क़ाक़ि व सइल अख़लाक़ि (नैल) इलाही! मैं शिर्क़ से, दीन में शक़ करने से और निफ़ाक़ व दोगलेपन और नाफ़रमानी और तमाम बुरी आदतों से तेरी पनाह चाहता हूँ।

तस्बीह व तहमीद पढ़ता हुआ और इन दुआओं को बार बार दोहराता हुआ रुकने यमानी पर दुलकी चाल से चले रुकने यमानी खाना का'बा के जुनूबी (दक्षिणी) कोने का नाम है जिसको सिर्फ़ छूना चाहिये, बोसा नहीं देना चाहिये। हदीष शरीफ़ में आया है कि इस कोने पर सत्तर फ़रिश्ते मुक़रर हैं। जब तवाफ़ करने वाला हजरे अस्वद से मुल्लज़िम, रुकने इराकी और मीज़ाबे रहमत पर से होता हुआ यहाँ पहुँचकर दीन व दुनिया की भलाई के लिये बारगाहे इलाही में खुलूस दिल के साथ दुआएँ करता है तो ये फरिश्ते आमीन कहते हैं। रुकने यमानी पर ज़्यादातर ये दुआएँ पढ़नी चाहिये, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल्अफ़्व वल्आफ़ियत फिहुनिया वल्आख़िरति. रब्बना आतिना फिहुनिया हसनतन व फिल्आख़िरति हसनतन व किना अज़ाबन्नार (मिशकात शरीफ़) या'नी या अल्लाह! मैं तूझसे दुनिया और आख़िरत में सलामती चाहता हूँ, ऐ मा'बूदे बरहक़! तू मुझको दुनिया व आख़िरत की तमाम नेअमतेँ अत्ता कर और दोज़ख़ की आग

से हमको बचा ले। रमल फ़क़त तीन चक्करों में करना चाहिये। रमल ये मतलब है कि तीन पहले चक्करों में ज़रा अकड़कर शाना हिलाते हुए चला जाए। ये रमल हज़रे अस्वद से तवाफ़ शुरू करते हुए रुकने यमानी तक होता है। रुकने यमानी पर रमल को मौकूफ़ किया जाए और हज़रे अस्वद तक बाक़ी हिस्से में नीज़ बाक़ी चार फेरों में मा'मूली चाल चला जाए। इस तवाफ़ में इज्तिबाअ भी किया जाता है जिसका मतलब ये है कि एहराम की चादर को दाहिनी बग़ल के नीचे से निकालकर बाएँ शाने पर डाल लिया जाए। एक चक्कर पूरा करके जब वापस हज़रे अस्वद पर आओ तो हज़रे अस्वद की दुआ पढ़कर उसको चूमा या हाथ लगाया जाए और एक चक्कर पूरा हुआ। इसी तरह दूसरा और तीसरा चक्कर करें। इन तीनों फेरों में रमल करें। उसके बाद चार फेरे बग़ैर रमल के करें। एक तवाफ़ के लिये ये सात फेरे होते हैं। जिनके बाद बैतुल्लाह का एक तवाफ़ पूरा हो गया।

आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि बैतुल्लाह का तवाफ़ नमाज़ की तरह है। उसमें बातें करना मना है। अल्लाह का ज़िक्र जितना चाहे करे। एक तवाफ़ पूरा कर चुकने के बाद मुक़ामे इब्राहीम पर तवाफ़ की दो रकअत नमाज़ पढ़े। इस पहले तवाफ़ का नाम तवाफ़े कुदूम है। रमल और इज्तिबाअ उसके सिवा और किसी तवाफ़ में न करना चाहिये। मुक़ामे इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ पढ़ने के लिये आते हुए मुक़ामे इब्राहीम को अपने और का'बा शरीफ़ के दरम्यान करके ये आयत पढ़ें, **वत्तख़िज़्जू मिम्मक़ामि इब्राहीम मुसल्ला** फिर दो रकअत नमाज़ पढ़े। पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह काफ़िरून और दूसरी में सूरह इख़लास पढ़े। अगर इज्तिबाअ किया हुआ है उसको खोल दे। सलाम फेरकर नीचे लिखी दुआ निहायत आजिज़ी व इंकिसारी से पढ़ें और खुलूसे दिल से अपने और दूसरों के लिये दुआ करें। दुआ ये है,

अल्लाहुम्म इन्नक तअलमु सिरीं व अलानिय्यती फ़क्बल मअज़रती व तअलमु हाजती फअतिनी सुवाली व तअलमु मा फी नफ़्सी फग़फ़िलीं जुनूबी अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईमानन युबाशिरू क़लबी व यक़ीनन स़ादिक़न हत्ता आलमु अन्नहू ला युसीबुनी इल्ला मा कुतिब वरिज़न बिमा कस्सम्त ली या अहमरॉहिमीन (तबरानी)

या अल्लाह! तू मेरी ज़ाहिर और पोशीदा हालत से वाक़िफ़ है। पस मेरे उज़्रों को कुबूल कर ले। तू मेरी हाजतों से भी वाक़िफ़ है, पस मेरे सवाल को पूरा कर दे। तू मेरे नफ़्स की हालत को जानता है, पस मेरे गुनाहों को बख़्श दे। ऐ मौला! मैं ऐसा ईमान चाहता हूँ जो मेरे दिल में रच जाए और यक़ीने स़ादिक़ का तलबगार हूँ यहाँ तक कि मेरे दिल में जम जाए कि मुझे वही दुख पहुँच सकता है जो तू लिख चुका है और मैं क़िस्मत के लिखे पर हर वक़्त राज़ी ब-रिज़ा हूँ। ऐ सबसे बड़े मेहरबान! तू मेरी दुआ कुबूल कर ले, आमीन!

तवाफ़ की फ़ज़ीलत में अम्र बिन शुऐब अपने बाप से वो अपने दादा से रिवायत करते हैं कि जनाबे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, **अल्प्रउ युरीदुतवाफ़ बिल्बैति अक्बल यख़्जुरहमत फइज़ा दख़लहु गमरतहु शुम्म यफ़्कउ क़दमन व ला यज़उ क़दमन इल्ला कतबल्लाहु लहु बिकुल्लि क़दमिन ख़म्स मिअत हसनतन व हत्त अन्हु ख़म्सत मिअत सय्यअतन व रूफ़िअत लहु ख़म्स मिअत दरजतन (अल्हदीष) (दुर्रे मन्धूर जिल्द 1, पेज 120)**

या'नी इंसान जब बैतुल्लाह शरीफ़ के तवाफ़ का इरादा करता है जो रहमत इलाही में दाख़िल हो जाता है फिर तवाफ़ शुरू करते वक़्त रहमत इलाही उसको ढांप लेती है फिर वो तवाफ़ में जो भी क़दम उठाता है और ज़मीन पर रखता है; हर क़दम के बदले उसको पांच सौ नेकियाँ मिलती हैं और पांच सौ गुनाह मुआफ़ होते हैं और पाँच सौ दर्जे बुलन्द किए जाते हैं।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **मन ताफ़ बिल्बैति सठअन व सल्ला खल्फल्मक़ामि रकअतैनि व शरिब मिम्माइ ज़मज़म गुफ़िरत जुनूबहू कुल्लुहा बालिगतुन मा बलगत या'नी जिसने बैतुल्लाह का सात बार तवाफ़ किया फिर मक़ामे इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ी और ज़मज़म का पानी पीया उसके जितने भी गुनाह हों सब मुआफ़ कर दिये जाते हैं। (दुर्रे मंसूर)**

मसला : तवाफ़ शुरू करते वक़्त हाजी अगर मुफ़रद या'नी सिर्फ़ हज्ज का एहराम बाँधकर आया है तो दिल में तवाफ़े कुदूम की निय्यत करे और अगर क़ारिन या तमत्तोअ है तो तवाफ़े उम्ह की निय्यत करके तवाफ़ शुरू करे। याद रहे कि निय्यत दिल

का फेअल है जुबान से कहने की ज़रूरत नहीं। बहुत से नावाकिफ़ हाजी जब शुरू में हज़रे अस्वद को आकर बोसा देते हैं और तवाफ़ शुरू करते हैं तो तकबीर तहरीमा की तरह तकबीर कहकर रफ़उलयदेन करके जुबान से नियत करते हैं। ये बेपुबूत है, लिहाज़ा इससे बचना चाहिये। (ज़ादुल मआद)

बैहक़ी की रिवायत में इस क़दर ज़रूर आया है कि हज़रे अस्वद को बोसा देकर दोनों हाथ को उस पर रखकर फिर उन हाथों को मुँह पर फेर लेने में कोई मुजायका नहीं है।

तवाफ़ करने में मर्द व औरत का एक सा हुक्म है। इतना फ़र्क़ ज़रूर है कि औरत किसी तवाफ़ में रमल और इज़्तिबाअ न करे। (जलीलुल मनासिक)

हैज और निफ़ास वाली औरतें सिर्फ़ तवाफ़ न करे बाक़ी हज के तमाम काम कर ले। हज़रत आइशा (रज़ि.) को हाइज़ा होने की हालत में आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था, **फ़फ़अली मा यफ़अलुल्हाज्जु ग़ैर अल्ला ततूफी बिल्बैति हत्ता ततहुरी** (मुत्तफ़क़ अलैहि) या 'नी तवाफ़े बैतुल्लाह के सिवा और सब काम कर जो हाजी करते हैं यहाँ तक कि तू पाक हो। अगर हालत हैज व निफ़ास में तवाफ़ कर लिया तो तवाफ़ हो गया मगर फ़िदया में एक बकरी या एक ऊँट ज़िन्ह करना लाज़िम है। (फ़तहुल बारी) मुस्तहाज़ा औरत और सलसले बोल वाले को तवाफ़ करना दुरुस्त है। (मिशकात)

बैतुल्लाह शरीफ़ में पहुँचकर सिवाय उज़े हैज व निफ़ास के बाक़ी किसी तरह और कैसा ही उज़्र क्यूँ न हो जब तक होश व हवास सही तौर पर कायम हैं और रास्ता साफ़ है तो मुहरिम को तवाफ़े कुदूम और सई करना ज़रूरी है।

तवाफ़ की क्रिस्में : तवाफ़ चार तरह का होता है,

(01) **तवाफ़े कुदूम :** जो बैतुल्लाह शरीफ़ में पहली दफ़ा आते ही हज़रे अस्वद को चूमने के बाद किया जाता है।

(02) **तवाफ़े उम्मह :** जो उम्मह का एहराम बाँधकर किया जाता है।

(03) **तवाफ़े इफ़ाज़ा :** जो दसवीं ज़िल्हिज्ज को यौमे नहर में कुर्बानी वग़ैरह से फारिग होकर और एहराम खोलकर किया जाता है उसको तवाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं।

(04) **तवाफ़े वदाअ :** जो बैतुल्लाह शरीफ़ से रुख़सत होते आख़िरी तवाफ़ किया जाता है।

मसला : बेहतर तो यही है कि हर सात फेरों का जो एक तवाफ़ कहलाता है, उसके बाद मुकामे इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ पढ़ी जाए। लेकिन अगर चन्द तवाफ़ मिलाकर आख़िर में सिर्फ़ दो रकअत पढ़ ली जाएँ तो भी काफ़ी हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने कभी ऐसा भी किया है। (ईज़ाहुल हज)

मसला : तवाफ़े कुदूम, तवाफ़े उम्मह, तवाफ़े वदाअ में उन दो रकअतों के बाद भी हज़रे अस्वद को बोसा देना चाहिये।

तम्बीह : अइम्म-ए-अरबअ और तमाम उलमा-ए-सलफ़ व ख़लफ़ का मुत्तफ़का फैसला है कि चूमना चाटना छूना सिर्फ़ हज़रे अस्वद और रुक्ने यमानी के लिये है। जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर है, **अनिब्बि उमर क़ाल लम अरन्निब्य (ﷺ) यस्तलिमु मिनल्बैति इल्लरुक्नैनिल्यमानिय्यैनि** (मुत्तफ़क़ अलैहि) या 'नी इब्ने उमर (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि मैंने सिवाय हज़रे अस्वद और रुक्ने यमानी के बैतुल्लाह की किसी और चीज़ को छूते हुए कभी भी नबी करीम (ﷺ) को नहीं देखा। पस इस्तिलाम सिर्फ़ उन दो ही के लिये है। उनके अलावा मसाजिद हों या मक़ाबिरे औलिया व सुलहा हों या हुज़रात व मग़ाराते रुसुल हों या और तारीख़ी यादगारें हों किसी को चूमना चाटना छूना हर्गिज़-हर्गिज़ जाइज़ नहीं बल्कि ऐसा करना बिदअत है। जमाअते सलफ़े उम्मत (रह.) मुकामे इब्राहीम और अहज़ारे मक्का को बोसा देने से क़तअन मना किया करते हैं। पस हाजी साहबान को चाहिये कि हज़रे अस्वद और रुक्ने यमानी के सिवा और किसी जगह के साथ ये मुआमलात बिल्कुल न करें वरना नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम की मिषाल सादिक़ आएगी।

बहुत से नावाकिफ़ भाई मुकामे इब्राहीम पर दो रकअत पढ़ने के बाद मुकामे इब्राहीम के दरवाजे की जालियों को

पकड़कर और कड़ों में हाथ डालकर दुआएँ करते हैं। ये भी अवाम की ईजाद है जिसका सलफ़ से कोई धुबूत नहीं। पस ऐसी बिदात से बचना ज़रूरी है। बिदात एक ज़हर है जो तमाम नेकियों को बर्बाद कर देती है। हजरत उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) रिवायत करती हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, **मन अहदष फ़ी अम्नि हाज़ा मा लैस मिन्हु फ़हुव रहुन** (मुत्फ़क़ अलैहि) या'नी जिसने हमारे इस दीन में अपनी तरफ़ से कोई नया काम ईजाद किया जिसका पता इस दीन में न हो वो मर्दूद है।

मुक़ामे इब्राहीम पर दो रक़अत नमाज़ अदा करके मुक़ामे मुल्तज़िम पर आना चाहिये। ये जगह हज़रे अस्वद और ख़ान-ए-का'बा के दरवाज़े के बीच में है। यहाँ पर सात फ़ेरों के बाद दो रक़अत नमाज़ के बाद आना चाहिये। ये दुआ की कुबूलियत का मुक़ाम है यहाँ का पर्दा पकड़कर ख़ाना का'बा से लिपटकर दीवार पर गाल रखकर हाथ फैलाकर दिल खोलकर ख़ूब रो-रो कर दीन व दुनिया की भलाई के लिये दुआएँ करें। उस मुक़ाम पर ये दुआ भी मुनासिब है,

अल्लाहुम्म लकल्हम्दु हम्दन युवाफ़ी निअमक व युकाफ़ी मज़ीदक अहमदुक बिजमीइ महामदिक मा अलिम्तु व मा लम आलम अला जमीइ निअमिक मा अलिम्तु मिन्हा व मा लम आलम व अला कुल्लि हालिन अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन अल्लाहुम्म अज़्ज़नी मिन कुल्लि सूइन व कनअनी बिमा रज़्ज़तनी व बारिक ली फ़ीहि अल्लाहुम्मजअल्नी मिन अक्रमि वफ़दिक इन्दक व अल्जिम्नी सबीलल्इस्ति कामति हत्ता अल्काक़ या रब्बल्आलमीन (अज़्कार नववी)

(तर्जुमा) या अल्लाह! कुल ता'रीफ़ों का मुस्तहिक़ तू ही है मैं तेरी वो ता'रीफ़ें करता हूँ जो तेरी दी हुई नेअमतों का शुक्रिया हो सकें और उस शुक्रिया पर जो नेअमतें तेरी जानिब से ज़्यादा मिली उनका बदला हो सकें। फिर मैं तेरी उन नेअमतों को जानता हूँ और जिनको नहीं जानता, सब ही का उन ख़ूबियों के साथ शुक्रिया अदा करता हूँ जिनका मुझको इल्म है और जिनका नहीं। गर्ज़ हर हाल में तेरी ही ता'रीफ़ करता हूँ। ऐ अल्लाह! तू अपने हबीब मुहम्मद (ﷺ) और आपकी आल पर दरूदो सलाम भेज। या अल्लाह! तू मुझको शैतान मर्दूद से और हर बुराई से पनाह में रख और जो कुछ तूने मुझको दिया है उस पर क़नाअत की तौफ़ीक़ अता कर और उसमें बरकत दे। या अल्लाह! तू मुझको बेहतरीन मेहमानों में शामिल कर और मरते दम तक मुझको तू सीधे रास्ते पर णाबित क़दम रख यहाँ तक कि मेरी तुझसे मुलाक़ात हो।

ये तवाफ़ जो किया गया तवाफ़े कुदूम कहलाता है। जो मक्का शरीफ़ या मीकात के अंदर रहते हैं, उनके लिये ये सुन्नत नहीं है और जो इम्रह की निव्यत से मक्का में आएँ उन पर भी तवाफ़े कुदूम नहीं है। इस तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर फिर हज़रे अस्वद का इस्तिलाम किया जाए कि ये इफ़तिताह सई का इस्तिलाम है। फिर कमानीदार दरवाज़े से निकलकर सीधे बाबे सफ़ा की तरफ़ जाएँ और बाबे सफ़ा से निकलते वक़्त ये दुआ पढ़ें, **बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि रब्बिग़ फ़िली जुनूबी वफ़्तहली अब्बाब फ़ज़िलक** (तिर्मिज़ी)

(तर्जुमा) 'अल्लाह के मुक़द्दस नाम की बरकत से और अल्लाह के प्यारे रसूल पर दरूदो-सलाम भेजता हुआ बाहर निकलता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरे लिये अपने फ़ज़लो-क़रम के दरवाज़े खोल दे। इस दुआ को करते हुए पहले बायाँ क़दम मस्जिदे ह़राम से बाहर किया जाए फिर दायीं।

कोहे सफ़ा पर चढ़ाई : बाबे सफ़ा से निकलकर सीधे कोहे सफ़ा पर जाएँ। क़रीब होने पर आयते शरीफ़ा **इन्नस्सफ़ा वल्मर्वत शआइरिल्लाहि तिलावत** करें फिर कहें **अब्दउ बिमा बदअल्लाहु** (चूँकि अल्लाह तआला ने ज़िक्र में पहले सफ़ा का नाम लिया है इसलिये मैं भी पहले सफ़ा ही से सई शुरू करता हूँ) ये कहकर सीढ़ियों से पहाड़ी के ऊपर इतना चढ़ जाएँ कि बैतुल्लाह शरीफ़ का पर्दा दिखाई देने लगे। नबी करीम (ﷺ) ने ऐसा ही किया था। जैसा कि इस रिवायत से जाहिर है,

अन अबी हुरैरत क़ाल अक्बल रसूलुल्लाहि (ﷺ) फदख़ल मक्कत फअक्बल इलल्हजि फस्तलमहू घुम्म ताफ़ बिल्बैति घुम्म ताफ़ बिल्बैति घुम्म अतस्मफ़ा फअलाहू हत्ता यन्ज़ुर इलल्बैति अल्हदीष (रवाहु अबू दाऊद) या'नी अल्लाह के रसूल (ﷺ) जब मक्का शरीफ़ में दाख़िल हुए तो आपने हज़रे अस्वद का इस्तिलाम किया फिर तवाफ़

किया, फिर आप सफ़ा के ऊपर चढ़ गये यहाँ तक कि बैतुल्लाह आपको नज़र आने लगा।

पस अब किल्ला रू होकर दोनों हाथ उठाकर पहले तीन बार खड़े खड़े अल्लाहु अकबर कहें। फिर ये दुआ पढ़ें,

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदुहु अल्लाहु अकबरु ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदुहु ला शरीक लहू लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन कदीर ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदुहु अन्जिज़ व अदहू व नसर अब्दहू व हजमल अहज़ाब वहदहू (मुस्लिम)

या'नी अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वो अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क का असली मालिक वही है, उसी के लिये तमाम तारीफें हैं। वो जो चाहे सो हो सकता है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, वो अकेला है जिसने इस्लाम के ग़लबे की बाबत अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की इम्दाद की और उस अकेले ने तमाम कुफ़्फ़ार व मुश्रिकों के लश्क़रों को भगा दिया।

इस दुआ को पढ़कर फिर दरूद शरीफ़ पढ़ें फिर ख़ूब दिल लगाकर जो चाहें दुआ मांगें, तीन दफ़ा उसी तरह नारा तक्बीर तीन-तीन बार बुलन्द करके मज़फ़ूरा बाला दुआ पढ़कर दरूद शरीफ़ के बाद दुआएँ करें, ये दुआ की कुबूलियत की जगह है। फिर वापसी से पहले नीचे लिखी दुआ पढ़कर हाथों को मुँह पर फेर लें।

अल्लाहुम्म इन्नक कुलत उदक़नी अस्तजिब लकुम व इन्नक ला तुख़िल फुल्मी आद इन्नी अस्अलुक कमा हदैतनी लिल्इस्लाम अल्ला तन्जिअहू मिन्नी हत्ता तवफ़्फ़नी व अना मुस्लिम (मुअता) या अल्लाह! तूने दुआ कुबूल करने का वादा किया है तू कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता। पस तू ने जिस तरह मुझे इस्लामी ज़िन्दगी नसीब की है उसी तरह मौत भी मुझको इस्लाम की हालत में नसीब फ़र्मा, आमीन!

सफ़ा और मरवा के दरम्यान सई : सफ़ा और मरवा के दरम्यान दौड़ने को सई कहते हैं (ﷺ), ये फ़राइजे हज में दाख़िल है जैसा कि मन्दर्जा ज़ेल हदीष से जाहिर है।

अन सफ़यत बिन्ति शैबत क़ालत अख़बर्तनी बिन्तु अबी तुजारत क़ालत दख़लतु मअ निस्वति मिन कुरैश दार आलि अबी हुसैन नन्ज़ुरू इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) व हुव यस्आ बैनस्सफ़ा वल्मर्वा फ़रायतुह यस्आ व इन्न मीज़रहू लियदूर मिन शिहतिस्सअयि व समिअहु यकूलु इस्औ फ़इन्नल्लाह कतब अलैकुमस्सअय (रवाहू फ़ी शर्हिस्सुन्नति) या'नी सफ़िया बिन्ते शैबा रिवायत करती हैं कि मुझे बिन्ते अबी तजराह ने ख़बर दी कि मैं कुरैश की चन्द औरतों के साथ आले अबू हुसैन के घर दाख़िल हुई। हम नबी करीम (ﷺ) को सफ़ा व मरवा के दरम्यान सई करते हुए देख रही थीं। मैंने देखा कि आप सई कर रहे थे और शिद्दते सई की वजह से आपकी इज़ारे मुबारक हिल रही थी। आप फ़र्माते जाते थे लोगों! सई करो, अल्लाह ने इस सई को तुम पर फ़र्ज किया है।

पस अब सफ़ा से उतरकर रब्बिग़फ़िर वहैम इन्नक अन्तलअइज़्ज़ुल्अकरम (तब्रानी) पढ़ते हुए आहिस्ता आहिस्ता चलें। जब सब्ज़ मील के पास पहुँच जाएँ (जो बाएँ तरफ़ मस्जिदे हुराम की दीवार से मिली हुई मन्सूब है) तो यहाँ से रमल करे या'नी तेज़ रफ़्तार दौड़ते हुए दूसरे सब्ज़ मील तक जाएँ (जो कि हज़रत अब्बास रज़ि. के घर के मुकाबिल है) फिर यहाँ से आहिस्ता-आहिस्ता अपनी चाल पर चलते हुए मरवा पहुँचें। रास्ते में ऊपर ज़िक्र की गई दुआ पढ़ते रहें। जब मरवा पहुँचें तो पहले दूसरी सीढ़ी पर चढ़कर बैतुल्लाह की जानिब रुख़ करके खड़े हों और थोड़ा सा दाहिनी तरफ़ माइल हो जाएँ ताकि का'बा का इस्तिक्बाल अच्छी तरह हो जाए अगरचे यहाँ से बैतुल्लाह बवजहे इमारत के नज़र नहीं आता। फिर सफ़ा की दुआएँ यहाँ भी उसी तरह पढ़ें जिस तरह सफ़ा पर पढ़ी थीं। और काफ़ी देर तक ज़िक्र-दुआ में मशगूल रहें कि ये भी दुआ की कुबूलियत की जगह है। फिर वापस सफ़ा को रब्बिग़फ़िर वहैम पूरी दुआ पढ़ते हुए मा'मूली चाल से सब्ज़ मील तक चलें। फिर यहाँ से दूसरे मील तक तेज़ चलें। इस मील पर पहुँचकर मा'मूली चाल से सफ़ा पर पहुँचें। सफ़ा से मरवा तक आना सई का एक चक्कर कहलाता है। सफ़ा पर वापस पहुँचने से सई का दूसरा चक्कर पूरा हो जाएगा। इसी तरह सात चक्कर पूरे करने होंगे। सातवां चक्कर मरवा पर ख़त्म होगा। हर चक्कर में ऊपर ज़िक्र की गई दुआओं के अलावा सुब्हानल्लाहि

वलहम्दुलिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु खूब दिल लगाकर पढ़ना चाहिये। चूँकि ज़मीन ऊँची होती चली गई इसलिये सफ़ा मरवा की सीढ़ियाँ ज़मीन में दब गई हैं और अब पहली ही सीढ़ी पर खड़े होने से बैतुल्लाह का नज़र आना मुम्किन है। लिहाजा अब कई दर्जों पर चढ़ने की ज़रूरत नहीं रही। सई में किसी किसिम की तख़सीस औरत के लिये नहीं आई। मर्द—औरत एक ही हुक्म में हैं।

ज़रूरी मसाईल : तवाफ़ या सई की हालत में नमाज़ की जमाअत खड़ी हो जाए तो तवाफ़ या सई को छोड़कर जमाअत में शामिल हो जाना चाहिये। नीज पेशाब या पायखाना या और कोई ज़रूरी हज़त दरपेश हो तो उससे फ़ारिग होकर बावुजू जहाँ तवाफ़ या सई को छोड़ा था वहीं से बाकी को पूरा करे। बीमार को पकड़कर या चारपाई या सवारी पर बिठाकर तवाफ़ व सई करानी जाइज है। कुदामा बिन अब्दुल्लाह बिन अम्मार रिवायत करते हैं, राइतु रमूल्लाहि () यस्आ बैनस्सफ़ा वल्मर्वा अला बईरिन (मिशकात) मैंने नबी करीम () को देखा। आप ऊँट पर सवार होकर सफ़ा मरवा के दरम्यान सई कर रहे थे। इस पर हाफ़िज़ इब्ने हज़र (रह.) फ़तहूल बारी में लिखते हैं कि उज़्र की वजह से आपने तवाफ़ व सई में सवारी का इस्तेमाल किया था।

फ़ारिन हज्ज और उम्रह का तवाफ़ और सई एक ही करे। हज्ज व उम्रह के लिये अलग अलग दोबार तवाफ़ व सई करने की ज़रूरत नहीं है। (मुत्तफ़क़ अलैहि) औरतें तवाफ़ व सई में मर्दों में खलत-मलत होकर न चलें। (सहीहैन)

सई के बाद : सफ़ा और मरवा की सई से फ़ारिग होने के बाद अगर हज्जे तमतोअ का इरादा से एहराम बाँधा गया था तो अब हज़ामत कराकर इलाल हो जाना चाहिये और एहरामे हज्ज क़िरान या हज्जे इफ़राद का था तो न तो हज़ामत करानी चाहिये न एहराम खोलना चाहिये। हज्जे तमतोअ करने वाले के लिये मुनासिब है कि मरवा पर बाल कतरवा दे और दसवीं ज़िल्हिज्ज को मिना में बाल मुँडवाए। औरत को बाल मुँडवाने मना है। हाँ चुटिया की थोड़ी सी नोक कतर देनी चाहिये। जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मफूअन मरवो है, लैस अलन्निसाइ अल्हलकु इन्नमा अलन्निसाइ अत्तन्नसीर (अबू दाऊद) या'नी औरतों के लिये सर मुँडवाना नहीं है बल्कि सिर्फ़ चुटिया में से चन्द बाल काट डालना काफ़ी है। इन सब कामों से फ़ारिग होकर ज़मज़म के कुँए पर आकर ज़मज़म का पानी पीना चाहिये। इस क़दर कि पेट और पसलियाँ खूब तन जाएँ। आँहज़रत () फ़मति हैं कि मुनाफ़ि़क़ इतना नहीं पीता कि उसकी पसलियाँ तन जाएँ। आबे ज़मज़म जिस इरादे से पीया जाए वो पूरा होता है। शिफ़ा के इरादे से पीया जाए तो शिफ़ा मिलती है। भूख-प्यास की दूरी के लिये पीया जाए तो भूख-प्यास दूर होती है और अगर दुश्मन के डर से, किसी आफ़त के डर से, रोज़े महशर की घबराहट से महफूज़ रहने की निव्यत से पीया जाए तो उससे अल्लाह तआला अमन देता है। (हाकिम, दारे कुत्नी वग़ैरह)

आबे ज़मज़म पीने के आदाब : ज़मज़म शरीफ़ का पानी क़िब्ला रुख़ होकर खड़े होकर पीना चाहिये। दरम्यान में तीन सांस लें। हर दफ़ा में शुरू में बिस्मिल्लाह और आख़िर में अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ना चाहिये और पीते वक़्त ये दुआ पढ़नी चाहिये।

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक इल्मन नाफ़ि़अन व रिज़क़न वासिअन व शिफ़ाअन मिन कुल्लि दाइन (हाकिम, दारकुत्नी) या अल्लाह! मैं तुझसे नफ़ा देने वाला इल्म और फ़राख़ रोज़ी और हर बीमारी से शफ़ा चाहता हूँ।

बाब 81 : हैज़ वाली औरत बैतुल्लाह के तवाफ़ के सिवा तमाम अरकान बजा लाए

और अगर किसी ने सफ़ा और मरवा की सई बग़ैर वुजू कर ली तो क्या हुक्म है?

٨١- بَابُ تَقْضِي الْحَائِضِ

الْمَسَائِكُ كُلُّهَا إِلَّا الطَّوَافَ بِالنَّبِيِّ

وَلَدَا سَتَى عَلَى غَيْرِ وَثْوَةٍ تَنْ الْعَصَا

وَالْمَرْوَةَ

तशरीह : बाब की हदीषों से पहला हुक्म षाबित होता है लेकिन दूसरे हुक्म का उनमें ज़िक्र नहीं है और शायद ये इमाम बुखारी (रह.) ने इस हदीष के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है जिस में इमाम मालिक (रह.) से इतना ज्यादा मन्कूल है कि सफ़ा व मरवा का तवाफ़ भी न करे। इब्ने अब्दुल बर्र ने कहा इस ज़्यादात को सिर्फ़ यह्या बिन यह्या

नीसापूरी ने नकल किया है और इब्ने अबी शैबा ने ब-इस्नादे सहीह इब्ने उमर (रजि.) से नकल किया कि हैज वाली औरत सब काम करे मगर बैतुल्लाह और सफा मरवा का तवाफ न करे। इब्ने बत्ताल ने कहा इमाम बुखारी (रह.) ने दूसरा मतलब बाब की हदीष से यूँ निकाला कि उसमें यूँ है सब काम करे जैसे हाजी करते हैं सिर्फ बैतुल्लाह का तवाफ न करे, तो मा'लूम हुआ कि सफा-मरवा का तवाफ बेवजू और बेतहाहत दुस्त है और इब्ने अबी शैबा ने इब्ने उमर (रजि.) से निकाला कि अगर तवाफ के बाद औरत को हैज आ जाए सफा मरवा की सई से पहले तो सफा मरवा की सई करे (वहीदी)

1650. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने खबर दी, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उन्हें उनके बाप ने और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हजरत आइशा सिद्दीका (रजि.) ने उन्होंने फ़र्माया कि मैं मक्का आई तो उस वक़्त में हाइज़ा थी। इसलिये बैतुल्लाह का तवाफ न कर सकी और न सफा मरवा की सई। उन्होंने बयान किया कि मैंने उसकी शिकायत रसूलुल्लाह (ﷺ) से की तो आपने फ़र्माया कि जिस तरह दूसरे हाजी करते हैं तुम भी उसी तरह (अरकाने हज) अदा कर लो। हाँ! बैतुल्लाह का तवाफ पाक होने से पहले न करना। (राजेअ : 294)

1651. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वह़ाब ब्रक़फ़ी ने बयान किया। (दूसरी सनद) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया कि हमसे अब्दुल वह़ाब ब्रक़फ़ी ने बयान किया, कहा कि हमसे हबीब मुअल्लम ने बयान किया, उनसे अत्ता बिन अबी रिबाह ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रजि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) और आपके अर्रहाब ने हज का एहराम बाँधा। आँहुज़ूर (ﷺ) और तलहा के सिवा और किसी के साथ कुर्बानी नहीं थी, हजरत अली (रजि.) यमन से आए थे और उनके साथ भी कुर्बानी थी। इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया कि (सब लोग अपने हज के एहराम को) उम्रह का कर लें। फिर तवाफ और सई के बाद बाल तरशवा लें और एहराम खोल डालें लेकिन वो लोग इस हुक्म से मुस्तज़ना (अलग) हैं जिनके साथ कुर्बानी हो। इस पर सहाबा ने कहा कि क्या हम मिना में इस तरह जाएँगे कि हमारे ज़कर से मनी टपक रही हो। ये बात जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को मा'लूम हुई तो आपने फ़र्माया, अगर मुझे पहले से मा'लूम होता तो मैं कुर्बानी का जानवर साथ न लाता और जब कुर्बानी का जानवर साथ न होता तो मैं भी (उम्रह

۱۶۵۰- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: قَدِمْتُ مَكَّةَ وَأَنَا حَائِضٌ، وَلَمْ أَطْفِ بِأَيْتِ وَلَا بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ قَالَتْ: فَشَكَوْتُ ذَلِكَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، قَالَ: ((الْفُطْيُ كَمَا يَفْعَلُ الْحَاجُّ غَيْرَ أَنْ لَا تَطُوفِي بِأَيْتِ حَتَّى تَطْهُرِي)). [راجع: ۲۹۴]

۱۶۵۱- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ. ح. وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا حَبِيبُ الْمُعَلَّمِ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَهْلُ النَّبِيِّ ﷺ هُوَ وَأَصْحَابُهُ بِالْحَجِّ، وَلَيْسَ مَعَ أَحَدٍ مِنْهُمْ هَدْيٌ غَيْرَ النَّبِيِّ ﷺ وَطَلْحَةَ وَقَلِيمَ عَلِيٍّ مِنَ الْيَمَنِ - وَمَعَهُ هَدْيٌ - فَقَالَ: أَهْلَلْتُ بِمَا أَهْلُ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ. فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَصْحَابَهُ أَنْ يَجْعَلُوهَا عُمْرَةً وَيَطُوفُوا ثُمَّ يَقْصِرُوا وَيَحْلُوا، إِلَّا مَنْ كَانَ مَعَهُ الْهَدْيُ. فَقَالُوا نَطْلُقُ إِلَى مَنِي وَذَكَرَ أَحَدُنَا يَقْطُرُ مَنِيًّا فَلَبَّغَ ذَلِكَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا

और हज के दरम्यान) एहराम खोल डालता और आइशा (रजि.) (उस हज में) हाइजा हो गई थीं। इसलिये उन्होंने बैतुल्लाह के तवाफ के सिवा और दूसरे अरकाने हज अदा किये, फिर जब पाक हो लीं तो तवाफ भी किया। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शिकायत की कि आप सब लोग तो हज और उम्रह दोनों करके जा रहे हैं लेकिन मैंने सिर्फ हज ही किया है। चुनौचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र को हुक्म दिया कि उन्हें तनईम ले जाएँ (और वहाँ से उम्रह का एहराम बाँधें) इस तरह आइशा (रजि.) ने हज के बाद उम्रह किया।

(राजेअ: 1557)

हमसे मुअम्मल बिन हिशाम ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन अलिया ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुखितयानी ने और उनसे हप्सा बिनते सीरीन ने बयान किया कि हम अपनी कुंवारी लड़कियों को बाहर निकलने से रोकते थे। फिर एक खातून आई और बनी खल्फ के महल में (जो बसरे में था) ठहरी। उन्होंने बयान किया कि उनकी बहन (उम्मे अत्रिया रजि.) नबी करीम (ﷺ) के एक सहाबी के घर में थीं। उनके शौहर ने आँहुजूर (ﷺ) के साथ बारह जिहाद किये थे और मेरी बहन छः जिहादों में उनके साथ रही थीं। वो बयान करती थीं कि हम (मैदाने जंग में) जखिमियों की मरहम पट्टी करती थीं और मरीजों की तीमारदारी करती थीं। मेरी बहन ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि अगर हमारे पास चादर न हो तो क्या कोई हरज है, अगर हम ईदगाह जाने के लिये बाहर न निकलें? आँहुजूर (ﷺ) ने फर्माया, उसकी सहेली को अपनी चादर उसे ओढ़ा देनी चाहिये और फिर मुसलमानों की दुआ और नेक कामों में शिर्कत करनी चाहिये। फिर जब उम्मे अत्रिया (रजि.) खुद बसरा आई तो मैंने उनसे भी यही पूछा या ये कहा कि हमने उनसे पूछा उन्होंने बयान किया कि उम्मे अत्रिया (रजि.) जब भी रसूलुल्लाह (ﷺ) का जिक्र करतीं तो कहतीं मेरे बाप आप पर फ़िदा हों। हाँ तो मैंने उनसे पूछा, क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस तरह सुना है? उन्होंने फर्माया कि हाँ मेरे बाप आप पर फ़िदा हों। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फर्माया कि कुंवारी लड़कियाँ और पर्दा वालियाँ भी बाहर

اسْتَدْبَرْتُ مَا أَفْدَيْتُ، وَلَوْ لَا أَن مَعِيَ
الْهَدْيَ لَأَخْلَلْتُ)). وَحَاصَتْ عَائِشَةُ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا فَسَبَكَتِ الْمَنَاسِكَ كُلَّهَا،
غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ تَطْفُ بِأَيِّتٍ. فَلَمَّا طَهَّرَتْ
طَافَتْ بِأَيِّتٍ، قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ،
تَطْلُقُونَ بِحَجَّةٍ وَغَمْرَةٍ وَأَنْطَلِقُ بِحَجٍّ!
فَأَمَرَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ أَنْ يَخْرُجَ
مَعَهَا إِلَى التَّعِيمِ، فَاعْتَمَرَتْ بَعْدَ
الْحَجِّ)). [راسع: 1007]

١٦٥٢- حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ
حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حَفْصَةَ
قَالَتْ: ((كُنَّا نَمْنَعُ عَوَائِقَنَا أَنْ يَخْرُجْنَ،
فَقَدِمَتْ امْرَأَةٌ فَزَلَّتْ قَصْرَ بَيْتِي خَلْفِي،
فَحَدَّثَتْ أَنَّ أُخْتَهَا كَانَتْ تَحْتَ رَجُلٍ مِنْ
أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَدْ غَوَا مَعَ
رَسُولِ اللَّهِ ﷺ بِنْتِي عَشْرَةَ غَزَوَاتٍ،
وَكَانَتْ أُخْتِي مَعَهُ فِي سِتِّ غَزَوَاتٍ
قَالَتْ: كُنَّا نَدَاوِي الْكَلْمَى، وَنَقُومُ عَلَى
الْمَرْضَى. فَسَأَلْتُ أُخْتِي رَسُولَ اللَّهِ ﷺ
هَلْ عَلَى إِحْدَانَا بَأْسٌ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا
جِلْبَابٌ أَنْ لَا تَخْرُجَ؟ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِهَا
صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا وَلْتَشْهَدْ الْغَيْرَ
وَدَغْوَةَ الْمُؤْمِنِينَ)). فَلَمَّا قَدِمَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ أَوْ قَالَتْ: سَأَلْنَاهَا
- فَقَالَتْ: وَكَانَتْ لَا تَذْكُرُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ
إِلَّا قَالَتْ: بِأَيِّ - فَقُلْتُ: أَسْمِعْنِي
رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ كَذَا وَكَذَا؟ قَالَتْ: نَعَمْ

निकलें या ये फ़र्माया कि पर्दा वाली दोशीज़ाएँ और हाइज़ा औरतें सब बाहर निकले और मुसलमानों की दुआ और ख़ैर के कामों में शिकंठ करें। लेकिन हाइज़ा औरतें नमाज़ की जगह से अलग रहें। मैंने कहा और हाइज़ा भी निकलें? उन्होंने फ़र्माया कि हाइज़ा औरत अरफ़ात और फ़लाँ फ़लाँ जगह नहीं जाती हैं? (फिर ईदगाह ही जाने में क्या हर्ज है)

(राजेअ: 324)

بَابُ فَقَالَ: ((لَيُخْرَجَ الْفَوَاقِ ذَوَاتُ
الْخُدُورِ - أَوِ الْفَوَاقِ وَذَوَاتُ الْخُدُورِ
- وَالْحَيْضُ فَتَشْهَدْنَ الْحَيْضَ وَذَغْوَةَ
الْمُسْلِمِينَ، وَتَعْتَزِلُ الْحَيْضُ الْمُصَلِّيَّ)).
فَقُلْتُ: الْحَائِضُ؟ فَقَالَتْ: أَوَّلَيْسَ تَشْهَدُ
عَرَفَةَ وَتَشْهَدُ كَذَا وَتَشْهَدُ كَذَا؟))

[راجع: 324]

तशरीह: इस हदीस से इमाम बुखारी (रह.) ने ये निकाला कि हैज़ वाली तवाफ़ न करे जो तर्जुमा बाब का एक मतलब था क्योंकि हैज़ वाली औरत को जब नमाज़ के मुकाम से अलग रहने का हुक्म हुआ तो का'बा के पास जाना भी उसको जाइज़ नहीं होगा। कुछ ने कहा बाब का दूसरा मतलब भी उससे निकलता है। या'नी सफ़ा मरवा की सई हाइज़ा कर सकती है क्योंकि हाइज़ा अरफ़ात में ठहर सकती है और सफ़ा मरवा अरफ़ात की तरह है। (वहीदी)

तर्जुमा में खुली हुई तहरीफ: किसी भी मुसलमान का किसी भी मसले के बारे में मसलक कुछ भी हो। मगर जहाँ कुआन मजीद व अह्दादीषे नबवी का खुला हुआ मतन सामने आ जाए दयानतदारी का तकाज़ा ये है कि उसका तर्जुमा बिला कम व कैफ़ बिल्कुल सहीह किया जाए। ख़्वाह इससे हमारे मज़हमा मसलक पर कैसी ही चोट क्यूँ न लगती हो। इसलिये कि अल्लाह और उसके हबीब (ﷺ) का कलाम बड़ी अहमियत रखता है और ज़र्रा बराबर भी तर्जुमा व तशरीह के नाम पर बेशी करना वो बदतरीन जुर्म है जिसकी वजह से यहूदी तबाह व बर्बाद हो गए। अल्लाह पाक ने साफ़ लफ़्ज़ों में उनकी हरकत का नोटिस लिया है। जैसा कि इशार्द है **युहरिफून्लकलिम अम्मवाजिइही** (अल माइद: 13) या'नी अपनी मक़ाम से आयाते इलाही की तहरीफ़ करना उलमा-ए-यहूद का बदतरीन शौबा था। मगर सद अफ़सोस कि यही शौबा हमें कुछ उलमा-ए-इस्लाम की तहरीरों में नज़र आता है। जिससे इस कलामे नबवी (ﷺ) की तस्दीक़ होती है जो आपने फ़र्माया कि तुम पहले लोगों यहूद व नसारा के क़दम ब क़दम चलोगे और गुमराह हो जाओगे।

अमल मसला: औरतों का ईदगाह में जाना यहाँ तक कि कुंवारी लड़कियाँ और हैज़वाली औरतों का निकलना और ईद की दुआओं में शरीक होना ऐसा मसला है जो मुतअद्दिद अह्दादीषे नबवी से षाबित है और ये मुसल्लम अम्प है कि अहदे रिसालत में सख़्ती के साथ इस पर अमल दरामद था और तमाम ख़्वातीने इस्लाम ईदगाह जाया करती थीं। बाद में मुख़्तलिफ़ फ़िक्ही ख़यालात वजूद में आए और मुहतरम उलमा-ए-अहनाफ़ ने औरतों का मैदाने ईदगाह जाना मुतलकन नाजाइज़ करार दिया है। बहरहाल अपने ख़यालात के वो खुद ज़िम्मेदार हैं मगर जिन अह्दादीष में अहदे नबवी में औरतों का ईदगाह में जाना मज़कूर है उनके तर्जुमा में रद्दीबदल करना इतिहाई ग़ैर ज़िम्मेदारी है।

और सद अफ़सोस कि हम मौजूदा तराजिमे बुखारी शरीफ़ में जो उलमा-ए-देवबन्दी के क़लम से निकल रहे हैं ऐसी ग़ैर ज़िम्मेदारियों की बक़़रत मिशालें देखते हैं। तफ़्हीमुल बुखारी हमारे सामने है। जिसका तर्जुमा व तशरीहात बहुत मुहताज़ अंदाज़े पर लिखा गया है। मगर मसलकी तअस्सुब ने कुछ जगह हमारे मुहतरम फ़ाज़िल मुतर्जिम तफ़्हीमुल बुखारी को भी जादा ए'तिदाल (संतुलन के केन्द्र बिन्दु) से दूर कर दिया है।

यहाँ हदीसे हफ़्सा के सियाक़ व सबाक़ से साफ़ जाहिर है कि रसूले करीम (ﷺ) से ऐसी औरत के ईदगाह जाने न जाने के बारे में पूछा जा रहा है कि जिसके पास ओढ़ने के लिये चादर नहीं है। आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि उसकी सहेली को चाहिये कि अपनी चादर में उसको आरियतन ओढ़ा दे ताकि वो उस ख़ैर और दुआए मुस्लिमीन के मौक़े पर (ईदगाह में) मुसलमानों के साथ शरीक हो सके। उसका तर्जुमा मुतर्जिम मौसूफ़ ने यूँ किया है, 'अगर हमारे पास चादर (बुर्का) न हो तो

क्या कोई हर्ज है अगर हम (मुसलमानों के दीनी इज्तिमाआत में शरीक होने के लिये) बाहर न निकलें? एक बदीउत्रज़र से बुखारी शरीफ का मुतालआ करनेवाला इस तर्जुमा को पढ़कर ये सोच भी नहीं सकता कि यहाँ ईदागाह जाने न जाने के बारे में पूछा जा रहा है। दीनी इज्तिमाआत से वा'ज़ व नसीहत की मजालिस मुराद हो सकती हैं और उन सब में औरतों का शरीक होना बिला इख़िलाफ़ जाइज़ है और अहदे नबवी में भी औरतें ऐसे इज्तिमाआत में बराबर शिकत करती थीं। फिर भला इस सवाल का मत्तलब क्या हो सकता है?

बहरहाल ये तर्जुमा बिल्कुल ग़लत है। अल्लाह तौफ़ीक़ दे कि इलमा-ए-किराम अपने मज्ज़ुमा मसालिक से बुलन्द होकर एहतियात से कुआन व हदीष का तर्जुमा किया करें। वबिल्लाहि तौफ़ीक़।

बाब 82 : जो शख्स मक्का में रहता हो वो मिना को जाते वक़्त बत्हा वगैरह मुक़ामों से एहराम बाँधे

और इसी तरह हर मुल्क वाला हाजी जो उम्रह करके मक्का रह गया हो और अत्ता बिन अबी रिबाह से पूछा गया जो शख्स मक्का ही में रहता हो वो हज के लिये लब्बैक कहे तो उन्होंने कहा कि इब्ने उमर (रज़ि.) आठवीं ज़िल्हिज्ज में नमाज़ जुहर पढ़ने के बाद जब सवारी पर अच्छी तरह बैठ जाते तो लब्बैक कहते। अब्दुल मलिक बिन अबी सुलैमान ने अत्ता से, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हम हज्जतुल वदाअ में मक्का आए। फिर आठवीं ज़िल्हिज्ज तक के लिये हम हलाल हो गये और (उस दिन मक्का से निकलते हुए) जब हमने मक्का को अपनी पुश्त पर छोड़ा तो हज का तल्बिया कह रहे थे। अबुज्जुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से यूँ बयान किया कि हमने बत्हा से एहराम बाँधा था और इबैद बिन जुरैज ने इब्ने उमर (रज़ि.) से कहा कि जब आप मक्का में थे तो मैंने देखा और तमाम लोगों ने एहराम चाँद देखते ही बाँध लिया था लेकिन आप (ﷺ) ने आठवीं ज़िल्हिज्ज से पहले एहराम नहीं बाँधा। आपने फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा जब तक आप मिना जाने को कैंटनी पर सवार न हो जाते एहराम उ बाँधते।

तशरीह: यहाँ ये इश्काल पैदा होता है कि आँहज़रत (ﷺ) तो जुलहुलैफ़ा ही से एहराम बाँधकर आए थे और मक्का में हज से फ़ारिग़ होकर आपने एहराम खोला ही नहीं था तो इब्ने उमर (रज़ि.) ने कैसे दलील ली? उसका जवाब ये है कि इब्ने उमर (रज़ि.) का मत्तलब ये है कि आपने एहराम बाँधते ही हज या उमरे के आमाल शुरू कर दिये और एहराम में और हज के कामों में फ़ासला नहीं किया। पस उससे ये निकल आया कि मक्का का रहने वाला या मुतमतेअ आठवीं तारीख़ से एहराम बाँधे क्योंकि उसी तारीख़ को लोग मिना खाना होते हैं और हज के काम शुरू होते हैं। इब्ने उमर (रज़ि.) के अपर को

٨٢-بَابُ الْإِهْلَالِ مِنَ الْبَطْحَاءِ وَغَيْرِهَا لِمَكِّيٍّ وَلِلْحَاجِّ إِذَا خَرَجَ إِلَى مَنَى

وَسُئِلَ عَطَاءٌ عَنِ الْمَجَاوِرِ يُكَيِّ بِالْحَجِّ، قَالَ: وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يُكَيِّ يَوْمَ التَّوْبَةِ إِذَا صَلَّى الظُّهْرَ وَاسْتَوَى عَلَى رَاحِلَتِهِ. وَقَالَ عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: قَبِمْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَأَخْلَلْنَا حَتَّى يَوْمَ التَّوْبَةِ وَجَعَلْنَا مَكَّةَ يَطْهَرُ لَنَا بِالْحَجِّ. وَقَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ: أَهْلَلْنَا مِنَ الْبَطْحَاءِ. وَقَالَ عُبَيْدُ بْنُ جُرَيْجٍ لَابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: رَأَيْتُكَ إِذَا كُنْتَ بِمَكَّةَ أَهْلُ النَّاسِ إِذَا رَأَوْا الْإِهْلَالَ وَلَمْ يَهْلُ أَنْتَ حَتَّى يَوْمَ التَّوْبَةِ، فَقَالَ: لَمْ أَرِ النَّبِيَّ ﷺ يَهْلُ حَتَّى تَتِمَّتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ.

सईद बिन मंसूर ने वस्ल किया है। मतलब ये है कि मक्का का रहनेवाला तमत्तोअ करने वाला हज्ज का एहराम मक्का ही से बाँधे और कोई खास जगह की तअय्युन नहीं है कि बस हर मुकाम से एहराम बाँध सकता है और अफ़ज़ल ये है कि अपने घर के दरवाज़े से एहराम बाँधे।

बाब 83 : आठवीं ज़िल्हिज्ज को नमाज़े जुह्र कहाँ पढ़ी जाए

1653. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्हाक अज़रक ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफयान शौरी ने अब्दुल अज़ीज़ बिन रुफ़ैअ के वास्ते से बयान किया, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुह्र और अस्र की नमाज़ आठवीं ज़िल्हिज्ज में कहाँ पढ़ी थी? अगर आपको आँहज़रत (ﷺ) से याद है तो मुझे बताइए। उन्होंने जवाब दिया कि मिना में। मैंने पूछा कि बारहवीं तारीख को अस्र कहाँ पढ़ी थी? फ़र्माया कि मुहम्मसब में। फिर उन्होंने फ़र्माया कि जिस तरह तुम्हारे हुक्माम करते हैं उसी तरह तुम भी करो। (दीगर मक़ाम : 1654, 1763)

1654. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने अबूबक्र बिन अयाश से सुना कि हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन रुफ़ैअ ने बयान किया, कहा कि मैं अनस (रज़ि.) से मिला (दूसरी सनद) इमाम बुखारी (रह.) ने कहा और मुझसे इस्माईल बिन अबान ने बयान किया, कहा कि हमसे अबूबक्र बिन अयाश ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ ने कहा कि मैं आठवीं तारीख को मिना गया तो वहाँ अनस (रज़ि.) से मिला। वो गधे पर सवार होकर जा रहे थे। मैंने पूछा नबी करीम (ﷺ) ने उस दिन जुह्र की नमाज़ कहाँ पढ़ी थी? उन्होंने फ़र्माया देखो जहाँ तुम्हारे हाकिम लोग नमाज़ पढ़ें वहीं तुम भी पढ़ो। (राजेअ : 1653)

तशरीह :

मा'लूम हुआ कि हाकिम और शाहे इस्लाम की इताअत वाजिब है। जब उसका हुक्म खिलाफ़े शरअ न हो और जमाअत के साथ रहना ज़रूरी है। इसमें शक नहीं कि मुस्तहब वही है जो आँहज़रत (ﷺ) ने किया मगर मुस्तहब अम्र के लिये हाकिम या जमाअत की मुखालफ़त करना बेहतर नहीं। इब्ने मुज़िर ने कहा कि सुन्नत ये है कि इमाम जुह्र और अस्र और मरिब और इशा और सुबह फ़ज़्र की नमाज़ें मिना ही में पढ़ें और मिना की तरफ़ हर वक़्त निकलना दुरुस्त है लेकिन सुन्नत यही है कि आठवीं तारीख को निकले और जुह्र की नमाज़ मिना में जाकर अदा करें। (वहीदी)

छठा पारा पूरा हुआ और इसके बाद सातवाँ पारा शुरू होगा, इंशाअल्लाह तआला।

۸۳- بَابُ أَيَّنَ يُصَلِّي الطَّهْرَ يَوْمَ التَّرْوِيَةِ

۱۶۵۳- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْأَزْهَقِيُّ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رَجَعٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قُلْتُ: أَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ عَقَلْتَهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، أَيَّنَ صَلَّيَ الطَّهْرَ وَالْعَصْرَ يَوْمَ التَّرْوِيَةِ؟ قَالَ: بِمِنَى. قُلْتُ: فَأَيَّنَ صَلَّيَ الْعَصْرَ يَوْمَ النَّفَرِ؟ قَالَ: بِالْأَنْطَحِ. ثُمَّ قَالَ: أَفْعَلْ كَمَا يَفْعَلُ أُمَرَاؤُكَ)). [طرقه في: ۱۶۵۴، ۱۷۶۳]

۱۶۵۴- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مَسْعُودٍ أَنَا بَكْرُ بْنُ عَاصِيٍّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ لَقِيتُ أَنَسَ ح. وَحَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبَانَ حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: ((خَرَجْتُ إِلَى مِنَى يَوْمَ التَّرْوِيَةِ فَلَقِيتُ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ذَاهِبًا عَلَى حِمَارِهِ فَقُلْتُ: ((أَيَّنَ صَلَّيَ النَّبِيُّ ﷺ هَذَا الْيَوْمَ الطَّهْرَ؟ فَقَالَ: الْفَطْرَ حَتَّى يُصَلِّيَ أُمَرَاؤُكَ فَصَلَّ)).

[راجع: ۱۶۵۳]

मुनाजात (दुआएं)

हकीम मुहम्मद सिद्दीक गौरी

रब्बे-आजम अर्थ-आजम पर है तेरा इस्तवा,
तू है आली, तू है आला, तू ही है रब्बुलउला।

हमद, पाकी किबरियाई मेरे सुबहानो-हमीद
सिर्फ है तेरे लिये जितनी तू चाहे किबरिया।

लामका, बेखानमा, तू है नहीं हरगिज़ सफीअ
अर्थ पर है तू यकीनन, है पता मुझको तेरा।

अर्थ पर होकर भी तू मेरी रगो-जा से करीब
इतना मेरे पास है मैं कह नहीं सकता ज़रा।

अर्थ पर है ज्ञात तेरी, इल्मो-कुदरत से करीब
तू हमारे पास है ऐ हज़िलो-नाज़िर खुदा।

अर्थ पर है तू यकीनन और वह 'मक्तूब' भी
'तेरी रहमत है फ़जू तेरे ग़ाब से ऐ खुदा।

अरबो खरबो रहमतो हो, बरकते लाखो सलाम,
उन पर उनकी आल पर जो है मुहम्मद मुस्ताफ़।

क्राबिले-तासीफ़ तू है मेरे रब्बुल आलमीन
तू है रहमानो-रहीमो-मालिके-यौमे-जज़ा।

हम तुझी को पूजते हैं तू ही इक माबूद है
हम मदद चाहते नहीं, हरगिज़ कभी तेरे सिवा।

तू है जाहिर, तू है बातिन, अख़लो-आख़िर है तू
फ़कर भी तू दूर कर दे क़र्ज़ भी या रब मेरा।

मै ज़मीनो-आसमा पर डालता हूँ जब नज़र
कोई भी पाता नहीं हूँ मैं 'खुदा' तेरे सिवा।

चौद-तारे दे रहे हैं अपने सानेअ की ख़बर
तेरी कुदरत से अया है बिलयकीन होना तेरा।

मै तुझे कुछ जानता हूँ, तेरे कुछ औसाफ़ भी
तू कयामत में भी होगा जाना-पहचाना मेरा।

तू मेरा जाफ़िर रहे मैं भी रहूँ जाफ़िर तेरा
हो ज़मी पर ज़िक्र तेरा आसमा में हो मेरा।

क़ल्बे-मुज्जर को सुकू मिल जाए तेरी याद से
और तेरे ज़िक्र से हो मुल्मड़न ये दिल मेरा।

रोज़ो-शब, सुबह मसा, आठो पहर, चौसठ घड़ी
तू ही तू दिल में रहे कोई न हो तेरे सिवा।

मै हमेशा याद रखूँ अपनी मजलिस में तुझे
तू भी मुझको याद रख्ये अपनी मजलिस में सदा।

बन्द तेरी याद से मेरी जुबां या रब न हो
मरते दम तक, मरते दम भी ज़िक्र हो लब पर तेरा।

जिन्दगी दुश्वार हो तेरी मुहब्बत के बग़ैर
माही-ए-बेआब हो बेजिक्र्ये बन्दा तेरा।

मै दुआ के वक़्त तुझ से इतना हो जाऊँ करीब
गोया तहतुल अर्थ में हूँ तेरे क़दमों में पड़ा।

हालते सद-यास में भी ऐ खुदा तेरी क़सम
जी न हारूँ और मै करता रहूँ तुझसे दुआ।

बह रही हो मेरी आँखों मेरी गर्दन हो झुकी
नाक रगड़े, पस्त होकर, तुझसे मैं मांगू दुआ।

तेरे आगे आज़िज़ाना, दस्त बस्ता, सर नगू
मै रहूँ या रब खड़ा भी तेरे क़दमों में पड़ा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो तेरी नेअमत की क़सम
जैसे कोई तीर हो अपने निशाने पे लगा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो जिस से टल जाए पहाड़
ग़ार वालों से भी बढ़कर तेरी रहमत से खुदा।

हर मेरी तौबा हो ऐसी जो अगर तक्सीम हो
तेरे बन्दों पर तो बरस्ये जाए लाखों बे-सजा।

नेकियों में तू बदल दे और उनको बरश्श दे
उम्र भर के अगले पिछले सब मुनाहो को खुदा।

हज मेरे मबरूर हो सब कोशिशें मशकूर हो
दे तिज़ारत तू भी वह जिसमें न हो घाटा ज़रा।

तेरी मर्जी के मुवाफ़िक़ हो मेरी कुल जिन्दगी
खाना पीना, चलना फिरना, बैठना उठना मेरा।

जो क़सम खाई या खाऊँ तुझ पे करके ऐतमाद
मअ फ़लाहे दोजह के साथ पूरी हो खुदा।